Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112879

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
76278

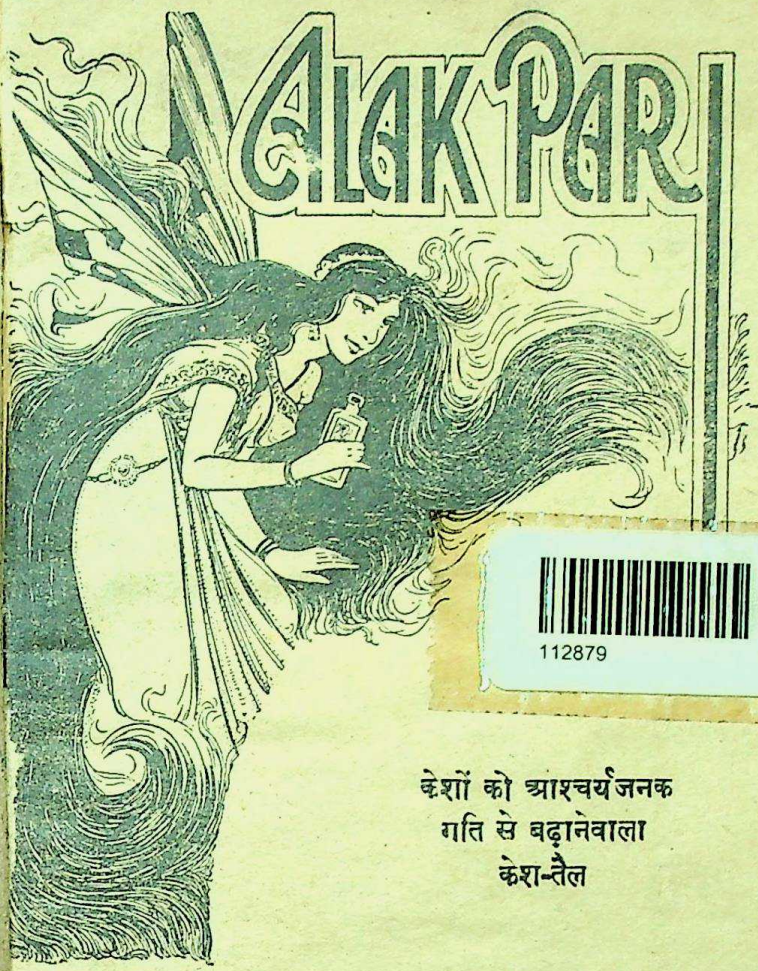

112879

केशों को आश्चर्यजनक
गति से बढ़ानेवाला
केश-तैल

शुद्ध बादामरोग़न पर बना

अलकपरी

केशों में प्रतिमास ३-४ इञ्च वृद्धि !
६ महीने में एड़ी-चुम्बी केश !

'अलकपरी' का कोर्स

पहले सप्ताह में रूसी-ख़ुश्की दूर हो जाती है।
दूसरे सप्ताह में केशों का झड़ना और उनके सिरों का फटना रुकता है।
तीसरे सप्ताह में नये केश उगते दिखाई देते हैं।
चौथे सप्ताह के अन्त तक केश ३-४ इञ्च बढ़ जाते हैं।
फिर प्रतिमास इसी औसत से बढ़ते रहते हैं।

६ महीने में केश एड़ी-चुम्बी बन जाते हैं।

मूल्य एक शीशी का २॥) है जो एक महीने को काफ़ी होती है। डाक-ख़र्च व पैकिङ्ग पृथक्। ६ से अधिक शीशियाँ डाक से नहीं भेजी जायँगी। अधिक के लिए ५) पेशगी भेजिए और अपने रेलवे स्टेशन का नाम लिखिए।

प्रतिष्ठित महिलाओं की सम्मतियाँ—

मुझे 'अलकपरी' से बहुत कुछ फ़ायदा है। ३ शीशियाँ तुरन्त भेजने की कृपा करेंगे क्योंकि मेरे पास का तेल बिलकुल ख़तम हो गया है।

२-९-४४ कुसुमकुमारी, काँकरोली (मेवाड़)।

आपके 'अलकपरी' तेल की १ शीशी इस्तेमाल की। बहुत ही लाभ हुआ। अनेक धन्यवाद। अब मैं आपकी स्थायी ग्राहिका बन जाऊँगी। कृपया एक शीशी १५ सितम्बर के अन्दर ही अन्दर भेज दें।

७-९-४४ पुष्पा श्रीवास्तव
C/o ब्रजेन्द्रनाथ श्रीवास्तव, अलीगढ़।

नम्र निवेदन यह है कि 'अलकपरी' की २ शीशियाँ लगाईं। मुझे बहुत लाभ हुआ है। कृपा कर २ शीशियाँ शीघ्र ही और भेज दीजिए।

१०-९-४४ मिस पुष्पा साहनी
C/o दीवान जियालाल साहनी,
नायब तहसीलदार, गुजरात (पंजाब)

'अलकपरी' से बहुत लाभ हुआ है। कृपया ६ शीशियाँ तुरन्त भेज दें।

१२-९-४४ मिसेज़ चौधरी सरदारसिंह सब इन्स्पेक्टर पुलिस, हरदुवागंज

'अलकपरी'—नया कटरा, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल गवर्नमेण्ट सिक्यूरिटी जिसमें

नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेट्स की क़ीमत १० रुपये है, किन्तु बारह वर्ष में इनका मूल्य १५ रुपये हो जाता है। इस प्रकार इन पर ४½ फ़ी सदी व्याज मिलता है; अर्थात् यदि आप इस समय १००० रुपये लगायें तो आपको १५०० रुपये वापस मिलेंगे और आपकी पूँजी सब समय सुरक्षित रहेगी।

इन्हें तीन बरस बाद किसी समय भी भुनाया जा सकता है।

आप इन्हें सरकार द्वारा नियुक्त एजेण्टों या किसी सेविंग्स ब्यूरो अथवा पोस्ट आफिस से ख़रीद सकते हैं।

नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेट्स ख़रीदिए

AAA 1243—Hindi

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
112879

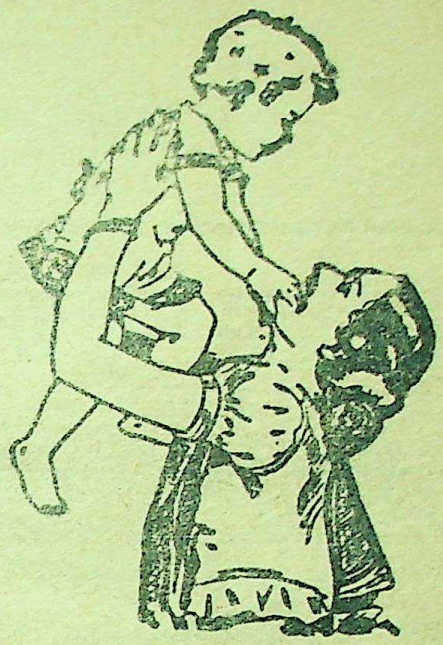

कमज़ोर और कृष बच्चे डोंगरे-बालामृत के इस्तेमाल से ताक़तवर, पुष्ट और चुस्त बनते हैं।

निर्बल, निश्चेतन और निराश क्यों रहते हो ?

भोजन को पचानेवाला, ख़ून को बढ़ानेवाला, पाण्डु और अन्य रोग के बाद की निर्बलता को नष्ट करनेवाला

झंडु रक्तो फोस्फोमाल्ट

सुमधुर शक्तिवर्धक, अमूल्य औषधि अवश्य सेवन करें

झण्डु फ़ार्मास्युटिकल वर्क्स लि०, बम्बई नं० १४

इलाहाबाद के चीफ़ एजेन्ट—एल० एम० धोलकिया एण्ड ब्रादर्स, ४६ जान्स्टनगंज।

दिल्ली और यू० पी० के सोल एजेन्ट—कान्तिलाल आर० परीख, चाँदनी चौक, देहली।

यू० पी० एजेंट—कान्तिलाल आर० परीख, चाँदनी चौक, दिल्ली।

In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मशीन तथा हाथ से सीनेवालों को

खुशखबरी

आप दर्ज़ी छाप सिलाई का धागा सभी उच्च श्रेणी की दूकानों से ख़रीद सकते हैं। यह तागा बाहर से आनेवाले सर्वोत्तम तागे के मुकाबले में है। साथ ही दाम में सस्ता है। मरम्मत तथा नई सिलाई में आप इसकी उपयोगिता की प्रशंसा करेंगे।

मैनेजिङ्ग एजेन्ट्स :—

विलियम ग्रिमशा ए० सन्स।

भारतवर्ष में बनानेवाले :—

एकमे थ्रेड कम्पनी लि०

बैंक आफ़ बरौदा बिल्डिंग,

अपोलो स्ट्रीट, बम्बई।

एजेन्सी के लिए आवेदनपत्र भेजिये।

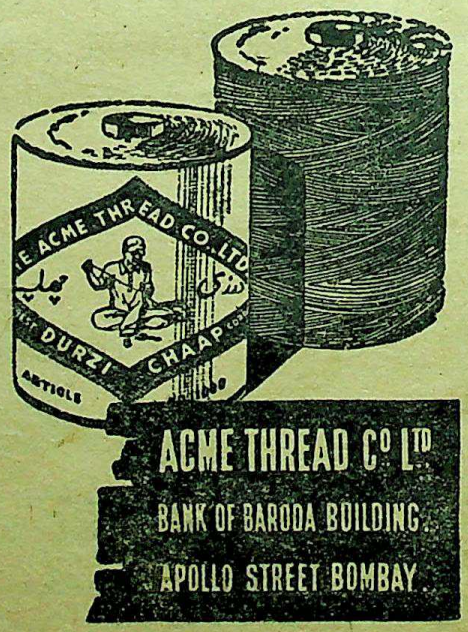

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्यारी बहिनो !

न तो मैं कोई नर्स हूँ, न कोई डाक्टर हूँ, और न वैद्यक ही जानती हूँ, बल्कि आप ही की तरह एक गृहस्थ स्त्री हूँ। विवाह के एक वर्ष बाद दुर्भाग्य से मैं लिकोरिया (श्वेत प्रदर) और मासिक-धर्म के दुष्ट रोगों में फँस गई थी। मुझे मासिक-धर्म खुलकर न आता था, अगर आता था तो बहुत कम और दर्द के साथ, जिससे बड़ा दुःख होता था। सफ़ेद पानी (श्वेत प्रदर) अधिक जाने के कारण मैं प्रति दिन बहुत कमज़ोर होती जा रही थी, चेहरे का रंग पीला पड़ गया था, घर के कामकाज से जी घबराता था, हर समय सर चकराता, कमर दर्द करती और शरीर टूटता रहता था। मेरे पतिदेव ने मुझे सैकड़ों रुपये की औषधियाँ सेवन कराईं, परन्तु किसी से रत्तीभर लाभ न हुआ। इसी प्रकार मैं लगातार दो वर्ष तक बड़ा दुःख उठाती रही। सौभाग्य से एक संन्यासी महाराज हमारे दर्वाज़े पर भिक्षा के लिए आये। मैं दर्वाज़े पर आटा डालने आई तो महात्माजी ने मेरा मुख देखकर कहा—बेटी, तुझे क्या रोग है जो इस आयु में ही चेहरे का रंग रुई की भाँति सफ़ेद हो गया है? मैंने सारा हाल कह सुनाया। उन्होंने मेरे पति को अपने डेरे पर बुलाया और उनको एक नुस्ख़ा बतलाया, जिसके केवल १५ दिन के सेवन करने से ही मेरे तमाम गुप्त रोगों का नाश हो गया। ईश्वर की कृपा से अब मैं कई बच्चों की माँ हूँ। मैंने इस नुस्ख़े से अपनी सैकड़ों बहिनों को अच्छा किया है और कर रही हूँ। अब मैं इस अद्भुत औषधि को अपनी दुखी बहिनों की भलाई के लिए असल लागत पर बाँट रही हूँ। इसके द्वारा मैं लाभ उठाना नहीं चाहती क्योंकि ईश्वर ने मुझे बहुत कुछ दे रक्खा है। एक बहिन के लिए पन्द्रह दिन का दवा तैयार करने पर २॥।=) दो रुपये चौदह आने असल लागत ख़र्च होती है और महसूल-डाक अलग है।

यदि कोई बहिन इस दुष्ट रोग में फँस गई हों तो वे मुझे ज़रूर लिखें मैं उनको अपने हाथ से औषधि बनाकर वी० पी० पार्सल द्वारा भेज दूगी। यह मेरा धर्म है कि मैं किसी बहिन से दवा की क़ीमत अपनी असल लागत से एक पैसा भी ज़्यादा न लूँगी।

ज़रूरी सूचना—

मुझे केवल स्त्रियों की इस दवाई का ही नुस्ख़ा मालूम है इसलिए कोई बहिन मुझे किसी और रोग की दवाई के लिए न लिखें।

प्रेमप्यारी अग्रवाल,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

नं० (१२) बुढलाडा, जि० हिसार (पंजाब)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय

ने इसकी मर्यादा बढ़ा दी है !

मदुरा मन्दिर, अपने खंभों, आंगन और बड़े भारी फाटक पर खुदी सुन्दर मूर्तियों के लिये संसार भर में प्रसिद्ध है। इसके हजार खंभोंवाले आंगन में जो सर्वदा शिल्पी की कला के प्रतीक रूपमें खड़ा रहेगा' सुब्रामनुयम् की एक मूर्ति है। समय इसकी सुन्दरता को जरा भी कम नहीं कर पाया वरन् समय के साथ साथ इसकी मर्यादा बढ़ गई है। सुन्दर कला की तरह दूसरी बढ़िया चीजों की लोकप्रियता भी समय के साथ साथ बढ़ती जाती है यदि उनमें सचमुच कोई गुण हो। जवाकुसुम को ही ले लीजिये—पिछले ६७ वर्षों से इसने उनलोगों को मोह रक्खा है जो इसका व्यवहार करते हैं। इसका कारण यही है कि जवाकुसुम सचमुच, अच्छा केश तैल है, इसके गुण सर्वविदित हैं और उनमें फर्क नहीं पड़ने पाता।

जवाकुसुम

सी. के. सेन ऐन्ड को. लिः जवाकुसुम हाउस, कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

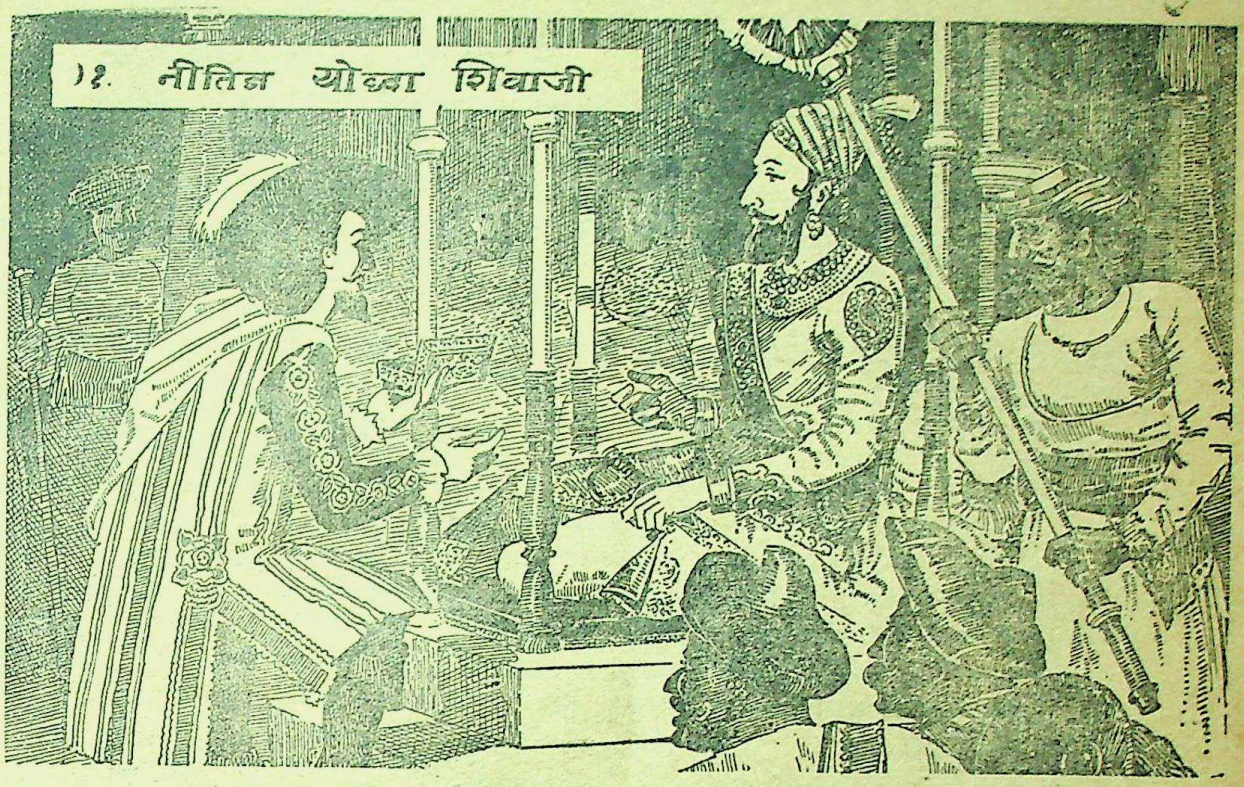

पराक्रम और शक्ति शाली कार्यों का मूल कारण स्वस्थ शरीर।

महानता और कीर्ति के लक्ष्य की सिद्धि, कार्य कुशल पुरुषोंने मस्तिष्क और शारीरिक शक्ति के सहयोग से ही की है। शिवाजी ने अपने युद्ध कौशल, असाधारण नेतृत्व शक्ति, शत्रु शक्ति का संतुलन और सैन्य संचालन, साथ ही पूर्ण शारीरिक स्वस्थता द्वारा अनेक युध्दों को जीत कर मराठा साम्राज्य की नींव डाली.

शारीरिक स्वस्थता के लिये हेमो-द्राक्षो-माल्ट का सेवन करिये।

हेमो द्रक्षो माल्ट पुरुष स्त्री और बच्चे सभी को समान लाभदायक है। उनके ग्लीसरो फ़ास्फ़ेट्स स्नायुवों को शक्ति देते हैं। उसके माल्ट पैप्सिन और अंगूरों का रस पाचन शक्ति, भोजन में रुचि तथा जठराग्नि की शक्ति को बढ़ाते हुए संपूर्ण शरीर को असाधारण शक्ति और कान्ति प्रदान करता है।

स्वास्थ रक्षा के लिये हेमो-द्राक्षो-माल्ट व्यवहार कीजिये

अलेम्बिक डिस्ट्रिब्युटर्स लि. मेसटन रोड. कानपुर

अ ले म्बि क के मि क ल व र्क्स क म्प नी लि मि टे ड व रो डा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्माजी का चमत्कार

प्रेमवटी ने अपनी ख़ूबी से सारी दुनिया में तहलक़ा मचा दिया

कांग्रेस की राय

(प्रेमवटी वास्तव में एक अद्वितीय औषधि है, पहिले हमें इस औषधि पर इतना विश्वास न था, किन्तु जब हमने इसका स्वयं परीक्षण किया तब हम इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि यह औषधि विज्ञापन में दिये गये तमाम रोगों की केवल एकमात्र अचूक औषधि है। हम आशा करते हैं कि भविष्य में यह कम्पनी इससे भी उत्तम औषधियों का निर्माण कर जनता को लाभ पहुँचायेगी।—कांग्रेस देहली)

भारत के योगियों ने वनों और पर्वतों की कन्दराओं में रहकर वह चमत्कार दिखलाये हैं जिससे बड़े-बड़े वैज्ञानिक और चिकित्सक हैरत में आ गये हैं। आधुनिक चिकित्सकों को जब कोई रोग की औषधि से सफलता नहीं मिलती तब वह लाइलाज घोषित कर देते हैं। परन्तु महात्मा लोग जड़ी-बूटियों की सहायता से मुर्दे को भी जिला देने का दावा करते हैं। भाइयो, ध्यान से पढ़ो तथा अपने इष्ट मित्रों को सुनाओ। यह लेख जो लिखा गया है, कोई गप्प नहीं है बल्कि मेरे जीवन की चन्द घटनायें हैं जो आपके सम्मुख रखता हूँ। मेरा जन्म एक धनी परिवार में हुआ। अपने पिता का लाड़ला पुत्र होने के कारण मैं धन और व्यसन में घिरा रहता था, लेकिन फिर भी मैं सुखी नहीं था। कुसङ्गत में पड़कर मुझे जरियान और प्रमेह रोग हो गया। पहले तो एक दो साल मैंने लोकलाज के कारण अपना भेद छिपाये रखा परन्तु रोग ने भयानक सूरत अख़्तियार कर ली, अब मैं घबड़ा उठा, संसार में चारों ओर अँधेरा मालूम होने लगा तब मेरी आँखें खुलीं। इलाज शुरू किया गया, बड़े-बड़े डाक्टरों, हकीमों, वैद्यों के फ़ीस रूप में रुपये और क़ीमती दवाइयों के ख़रीदने में पानी की तरह रुपया बहाने लगा, फिर भी मैं निराश ही रहा। अब मैं घबरा उठा और चारों तरफ़ से अन्धकार दिखलाई देने लगा और सोचने लगा कि इस दुःखमय जीवन से मर जाना बेहतर है।

पर यह बीस साल पहले की बात है। अब आज मैं ख़ुश हूँ। आज उस परमात्मा की कृपा से आरोग्य हूँ और मेरे तीन स्वस्थ बच्चे भी हैं जो बिलकुल आरोग्य हैं।

हुआ क्या! मुझमें इतना परिवर्तन कैसे हो गया? यह जानकर आपको आश्चर्य होगा कि मैंने एक दवा सेवन की! जो दवा मैंने सेवन की, वह एक महान् त्यागी परोपकारी साधु की बनाई हुई थी, जो समय काटने के लिए गाँव से कुछ दूर एक ईंट के खेड़े पर रम रहे थे। यह मेरा सौभाग्य था कि और लोगों के साथ मैं भी दर्शनों के लिए जा पहुँचा। दैवी शक्ति से मेरे दुःखी जीवन के पिछले अध्याय उनके हृदय-पट पर खिंच गये और मेरी आँखों ने हृदय का सारा भेद अपने आप उस महान् पुरुष पर प्रकट कर दिया। मेरी कच्ची उम्र पर महात्मा को दया आई और उन्होंने मुझे कुछ जड़ी-बूटियाँ एकत्र करने की आज्ञा दी। मैंने वैसा ही किया और तब उनके सम्मुख ही मुझे उनके आदेश और निजी देख-रेख में 'प्रेमवटी' तैयार करनी पड़ी। यद्यपि मुझसे ४० दिन लगातार 'प्रेमवटी' का सेवन करने को कहा गया था, तथापि केवल बीस दिन के सेवन से ही मुझमें परिवर्तन हो गया। मेरी कमज़ोरी और तमाम गुप्त बीमारियाँ जड़ से दूर हो गईं। पीले और उदास मुख पर लाली दौड़ने लगी, आँखों में उन्माद झूमने लगा और हृदय में जवानी का जोश उमड़ आया। महात्माजी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के साथ ही अपने वादे को पूरा करने के लिए दुःखीजनों के निमित्त पिछले बीस साल से लगातार मैं इस प्रयोग को मुफ़्त बाँट रहा हूँ। यह अनेक पत्र-पत्रिकाओं में भी छप चुका है, मुझे हर्ष है कि इस अमृत-तुल्य प्रयोग ने सैकड़ों की प्राण-रक्षा की, हज़ारों को मौत के मुँह से निकाला और लाखों का इससे भला हुआ। महात्मा-प्रदत्त 'प्रेमवटी' का नुस्ख़ा इस प्रकार है नोट कर लें—

शुद्ध त्रिफला ५ तोला, त्रिकुट चूर्ण ५ तोला, शुद्ध सूर्यतापी शिलाजीत ५ तोला, शुद्ध बङ्ग भस्म ६ माशा, असली छाप केसर ३ माशा, असली अकरकरा ६ माशा, असली नेपाली कस्तूरी ३ रत्ती। इन सब औषधियों को कूट-छानकर खरल डालकर ऊपर से शीतल चीनी का तेल २० बूँद, सन्दल तेल २० बूँद, बिरोजे का तेल २० बूँद एक-एक करके मिलाये। उसके बाद ताज़ी ब्राह्मी बूटी के अर्क़ में १२ घण्टा घोंटकर झरबेरी बेर के बराबर गोलियाँ बनावें और छाया में सुखा लें। एक-एक गोली सुबह-शाम पाव भर गाय के दूध में एक तोला शक्कर मिलाकर सेवन करें। इसकी प्रशंसा हम अपने ही मुँह से नहीं करते बल्कि बड़े-बड़े वैद्यों, डाक्टरों, हकीमों, सेठ साहूकारों तथा रईसों, ज़मींदारों, सरकारी आफ़िसरों तक ने इसकी सराहना की है। वैद्य श्रीजमुनादत्त शर्मा, झोंकर का कहना है कि यह वटी धातु का पतलापन, २० प्रकार के प्रमेह के लिए अक्सीर है।

'प्रेमवटी' में कोई हानिकारक चीज़ नहीं पड़ती और गुणकारी चीज़ें नुस्ख़े से ही प्रकट हैं। यह औषध वीर्य का पतलापन, बीसों प्रकार के प्रमेह, पेशाब के साथ चूने की तरह वीर्य का जाना, पाख़ाने के समय धातु का जाना, स्वप्नदोष, सुस्ती, कमज़ोरी, नामर्दी, डाइबीटीज़, मधुमेह, सूज़ाक, जवानी में बुढ़ापे की-सी हालत हो जाना, असली ताक़त की कमी, स्मरण-शक्ति कमज़ोर पड़ जाना तथा स्त्रियों के भी प्रदर-सम्बन्धी रोग दूर करके अत्यन्त ताक़त देती है और नस-नस में नवजीवन का सञ्चार करती है। अन्त में उन भाइयों को जिन्हें फ़ुरसत नहीं मिलती या शुद्ध औषधि प्राप्त नहीं कर सकते यह प्रयोग स्वयं बनाकर दाम के दाम में भेजने की व्यवस्था की है। ४० दिन के लिए पूरी ख़ुराक विधिवत् ८० गोलियों का मूल्य ५॥=) रु० और २० दिन के लिए ४० गोलियों के दाम ३=) डाकख़र्च ॥।-)

पता—बाबू श्यामलालजी ट्रेडर्स, प्रेमवटी आफ़िस नं० (S. A.) धनकुट्टी, कानपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

१—नरेन्द्रमण्डल का त्यागपत्र—श्रीयुत राजमल सङ्घी, बी० ए० ... ... ९७
२—काले केश—कुमारी प्रभा पारीक, बी० ए० ... १०१
३—पाश्चात्य साहित्य और वर्त्तमान सङ्कट—श्रीयुत भूपेन्द्रनाथ सान्याल १०५
४—भिक्षु—श्रीयुत मदनमोहन 'राकेश' ... १०८
५—हिन्दी साहित्य में व्यंग्यात्मक आलोचना—श्रीयुत कपिलदेवसिंह, एम० ए० ... ... १११
६—गीत (कविता)—कुमारी दिनेशनन्दिनी, एम० ए० ११४
७—भारतीय चित्र-कला—श्रीयुत मदनमोदन सिनहा 'सरोज' ११५
८—कवि दत्त का परिचय—श्रीयुत 'प्रशान्त' ... ११९
९—भाभी—श्रीयुत कृष्णचन्द्र शर्मा, बी० ए० ... १२१
१०—आचार्य द्विवेदी के पत्र—श्री राय कृष्णदास के नाम १२५
११—निर्वासित—पण्डित इलाचन्द्र जोशी ... १२८
१२—जीवन-पथ पर—श्रीयुत महेन्द्रप्रताप अज्ञात ... १३२
१३—नई पुस्तकें १३३
१४—सामयिक साहित्य १३६
१५—सम्पादकीय नोट १३९

चित्र-सूची

भारतीय चित्र-कला सम्बन्धी ६ चित्र ११५-११९

क्या यह अत्यन्त शीतल नहीं कर देता!

हाँ और वैसे ही ताजगी भी लाता है!

विनोलियाको नियमित रूपमें इस्तेमाल करनेवाले इन विलास-प्रेमी लोगोंसे पूछिये, और वे आपको बतायेंगे कि यह कैसा आश्चर्यजनक आरामदायक साबुन है—और गर्मीके मौसममें कितना आरामदायक है। इसका मक्खन-जैसा सफेद फेन तर व ताजा कर देता है। इसकी विशिष्ट सुगंध आनंदित और प्रफुल्लित रखती है। वे लोग कहते हैं कि श्रान्त मस्तिष्क और नसोंके लिए यह टॉनिककी तरह काम करता है।

और भी—यह प्रफुल्लित रखता है!

विनोलिया व्हाइट रोज साबुन

18-221 HI

VINOLIA CO., LIMITED, LONDON, ENGLAND

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है।

हमारे यहाँ की बनी क्रीमोला टाफ़ी
फ़्रूट ड्राप्स तथा
रेशमी मिठाइयों का स्वाद लीजिए।
सभी दूकानों में मिलती हैं।

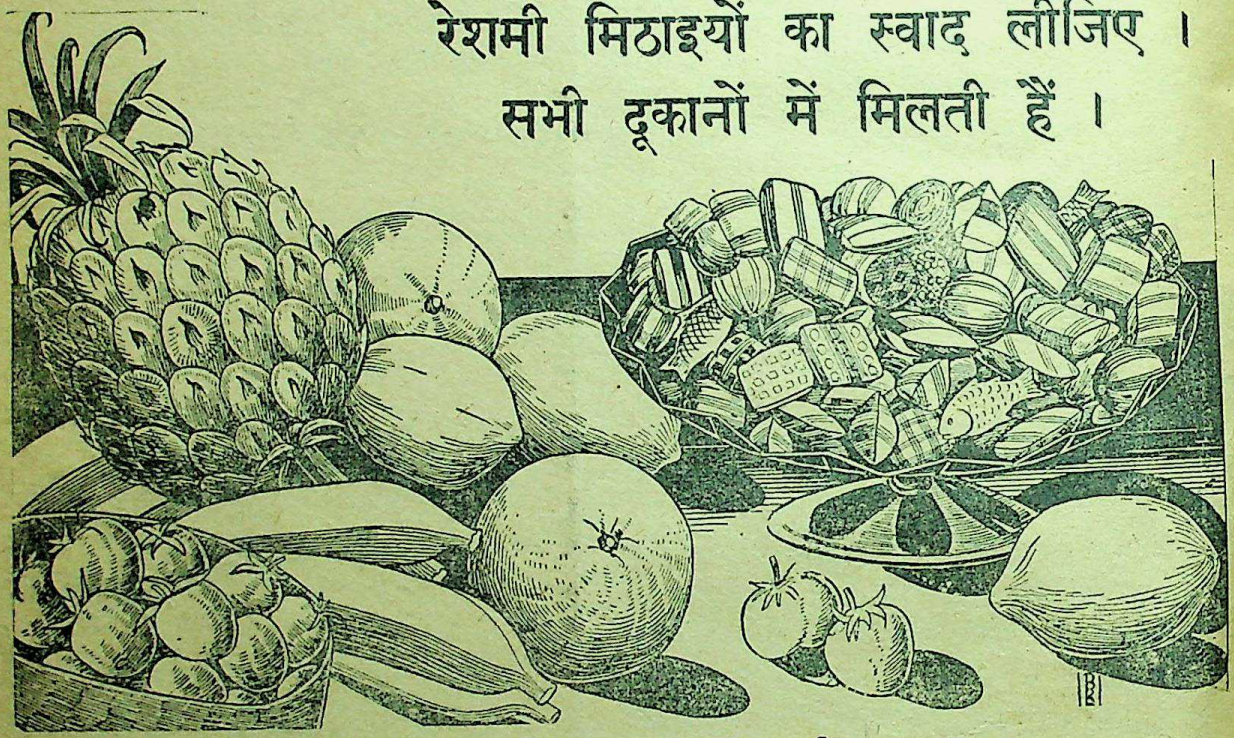

निर्माता—इण्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस,
इंडियन प्रेस, बिल्डिंग,
इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक—देवीदत्त शुक्ल : उमेशचन्द्र मिश्र

मार्च १९४५ चैत्र २००१; भाग ४६, खण्ड १ संख्या ३, पूर्ण संख्या ५४३

नरेन्द्रमण्डल का त्यागपत्र

श्रीयुत राजमल संघी, बी० ए०

नरेन्द्रमण्डल की स्थायी समिति का सामूहिक त्याग-पत्र और मण्डल के अधिवेशन का अनिश्चित समय तक स्थगित किया जाना भारतीय इतिहास की एक अभूतपूर्व एवं आश्चर्य-जनक घटना है। इसको अनेक पत्रों ने सम्राट् के प्रतिनिधि के विरुद्ध 'राजाओं का विद्रोह' कहा है और अनेक ने इसे 'वैधानिक सङ्कट' का नाम दिया है। निःसन्देह मण्डल के इतिहास में यह एक आश्चर्यजनक सर्वप्रथम घटना है। इसे राजाओं का एक प्रकार से साहस ही कहना चाहिए। राजाओं से इस प्रकार के राजनैतिक दुःसाहस की न तो भारत-सरकार के राजनैतिक विभाग को ही आशा थी और न भारतीय जनता को ही। अनेक व्यक्तियों ने इसे प्रेमी-प्रेमिकाओं का झगड़ा भी कहा है जो जल्दी या देर से अपने आप सुलझ जायगा। फिर भी इसे यों ही नहीं छोड़ा जा सकता। कारण, राजा लोगों और वायसराय के इस सङ्घर्ष का जो कुछ निर्णय होगा उसका प्रभाव भारत के भविष्य पर अवश्य पड़ेगा।

वर्तमान सङ्कटापन्न अवस्था पर विचार करने के पूर्व यह अच्छा होगा कि हमें उन परिस्थितियों का भी भली भाँति ज्ञान हो जाय जिनमें मण्डल की स्थापना की गई थी।

सन् १८५७ के विद्रोह का दमन हो जाने के पश्चात् अँगरेज़ों का ध्यान विशेष रूप से भारतीय नरेशों की ओर आकृष्ट होने लगा था और उन्हें वे अपना मित्र तथा सहायक समझने लगे थे। परवर्ती अनेक भारतीय गवर्नर-जनरलों ने इसी दृष्टिकोण को लेकर राजाओं के सङ्गठन के अनेक प्रयत्न किये। लार्ड लिटन, लार्ड कर्ज़न, लार्ड मिण्टो आदि के इस दिशा में किये हुए प्रयत्न सर्वविदित हैं। पर उन लोगों को इस कार्य में अधिक सफलता नहीं मिली। कारण था भारतमन्त्री का असहयोग। लार्ड हार्डिंज ने इस प्रयत्न को कुछ अग्रसर किया। उन्होंने सन् १९१३-१४ में राजाओं की कई सभायें भी कर डालीं। फिर भी कुछ निष्कर्ष न निकल सका।

सन् १९१४ में युद्ध छिड़ जाने पर जहाँ संसार में राजनैतिक चेतना का विस्तार हुआ, वहाँ भारत में भी राजनैतिक जागर्त्ति स्पष्ट रूप में दिखाई पड़ने लगी। यहाँ तक कि इसकी ओर ब्रिटिश शासकों का ध्यान भी आकृष्ट हुआ और जनान्दोलन की इस बढ़ती हुई शक्ति को शिथिल करने के लिए उन्हें एक प्रति-क्रियावादी आन्दोलन की आवश्यकता अनुभव हुई। राजाओं के सङ्गठन से यह कार्य सरलता से पूरा हो सकता था। राजाओं का सङ्गठन या उनका एक जगह पर बैठकर सलाह-मशविरा करना, अब ब्रिटिश सरकार के लिए भय का कारण नहीं रह गया था, क्योंकि भारत में ब्रिटिश राज्य की स्थापना अच्छी तरह हो चुकी थी और राजा लोगों की शक्ति भी पूर्ण रूप से 'परिमित' थी।

उधर राजा लोग भी अपने सङ्गठन के लिए उत्सुक थे। पर उनकी उत्सुकता के कारण दूसरे ही थे। एक तो राष्ट्रीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आन्दोलन देशी रियासतों में भी ज़ोर मारने लगा था और उसके कारण राजा लोगों की चिन्तायें बढ़ रही थीं। वे यह नहीं चाहते थे कि उनकी प्रजा पर ब्रिटिश भारत में होनेवाले राजनैतिक आन्दोलनों का प्रभाव पड़े। दूसरे भारत-सरकार के राजनैतिक विभाग ने उनकी आभ्यन्तरिक शासन-व्यवस्था में उन दिनों अधिक हस्तक्षेप करना प्रारम्भ कर दिया था जिसके कारण भी राजा लोग परेशान थे। इस प्रकार वे लोग जहाँ एक ओर सरकार से सहायता लेकर राजनैतिक आन्दोलन को कुचल डालना चाहते थे वहाँ दूसरी ओर राजनैतिक विभाग के आघातों से अपनी सुरक्षा के लिए भी सङ्गठित होना चाहते थे। नरेन्द्रमण्डल के प्रत्येक आन्दोलन में उपर्युक्त दोनों उद्देश्यों की झलक हमें मिलती है।

इस प्रकार सरकार और राजागण दोनों के समान रूप से उत्सुक होने के फलस्वरूप 'माण्टेग्यू-चेम्सफ़ोर्ड सुधार योजना' के अनुसार सन् १९२१ में नरेन्द्रमण्डल की स्थापना हुई। इसकी रिपोर्ट में ही यह स्पष्ट कर दिया गया था कि 'यह एक स्थायी परामर्शदात्री संस्था होगी। भारत-सरकार इसके निर्णय मानने को बाध्य न होगी।'

नरेन्द्रमण्डल में जैसा कि स्वाभाविक था, विशेषतया राजागण अपनी सुख-सुविधाओं और अधिकारों पर ही विचार करते थे। उन्हें प्रजा की अधिक चिन्ता नहीं थी। ब्रिटिश भारत में जब उत्तरदायी शासन की स्थापना होने की बात उठी तब राजाओं को विशेष रूप से चिन्ता हुई। दुर्भाग्य से हैदराबाद के निज़ाम साहब को लिखे गये एक पत्र में लार्ड रीडिंग ने उन्हीं दिनों यह स्पष्ट कर दिया कि "ब्रिटिश सरकार का भारतवर्ष पर पूर्ण प्रभुत्व है। अतएव किसी देशी राज्य का कोई शासक उससे बराबरी के नाते बातचीत करने का दावा नहीं कर सकता। यह प्रभुत्व ब्रिटिश सरकार को सन्धिपत्रों या सनदों से प्राप्त नहीं हुआ है। यह उनसे पृथक् है।" इससे राज-समूह में और भी बेचैनी फैल गई, क्योंकि इससे राजाओं की बची-खुची सत्ता पर भी सङ्कट आता था।

ब्रिटिश भारत में उत्तरदायी शासन की बात ज्यों-ज्यों आगे बढ़ी, राजाओं की बेचैनी भी त्यों-त्यों बढ़ी और उन्होंने सम्राट् से सीधा सम्बन्ध रखने का दावा किया। उनका कहना है—"सन्धियाँ सम्राट् से हुई हैं; सर्वोच्च सत्ता ब्रिटिश सरकार ही है, भारत-सरकार नहीं।" इस बात का निर्णय करने के लिए बटलर कमिटी नियुक्त हुई। उसने भी इसी मत का समर्थन किया जिससे स्पष्ट सिद्ध होता था कि ब्रिटिश साम्राज्यशाही भी इसी सिद्धान्त के पक्ष में है और अँगरेज़ राजनीतिज्ञ भी यही चाहते हैं। आगे चलकर कमिटी ने लाल और पीले रङ्ग के भारत के खण्ड-खण्ड करने का निश्चय किया जिसका फल १९३५ के 'भारतीय शासन-विधान' के रूप में प्रकट हुआ था।

राजन्यवर्ग और सर्वोच्च सत्ता के बीच सन्धियों से होनेवाली समस्याओं को समझ लेना यहाँ आवश्यक मुख्य बात इसमें है 'देशी राज्यों का सम्राट् से सीधा सम्बन्ध लेना', जो भारत के लिए अहितकारक ही है, हितकारक उसका केवल यही तात्पर्य है कि वायसराय सम्राट् का प्रति होने के नाते, जब जैसा उचित समझे, किसी राज्य में हस्त कर सकता है। वायसराय का निर्णय मान्य हो अथवा उन्हें शिरोधार्य करना पड़ेगा। नरेश सन्धियों की दुहाई दे सकते। उनके पास सन्धियाँ मनवाने का कोई साधन नहीं। 'सन्धियाँ क़ानूनी अधिकार की सूचक न होकर राजनै व्यवहार की निर्देशिका मात्र हैं।' यह बात निज़ाम को गये पत्र में स्पष्ट कर दी गई है। महात्मा गांधी के शब्द कहा जा सकता है कि 'जिन्हें सन्धियाँ कहा जाता है, वे बराबरवालों के सुलहनामे नहीं हैं। वे तो दान दी हुई हैं, जिनमें दाता ने अपनी इच्छा के अनुसार पाबन्दियाँ शर्तें लगा दी हैं।"

अखिल भारतीय देशी राज्य लोकपरिषद् की दृष्टि में की बदली हुई स्थिति में रियासती जनता पर सौ साल पहले सन्धियों को, जिनमें उसकी कोई चिन्ता नहीं की गई है, के लिए ज़ोर नहीं दिया जा सकता। ये अब वर्त्तमान के नितान्त प्रतिकूल और असामयिक हो गई हैं। इन्हें समाप्त कर देना चाहिए।"

सार्वभौम सत्ता और सन्धिगत अधिकार

राजाओं ने सर्वदा सम्राट् से सीधा सम्बन्ध रखने का किया है और सन्धिगत अधिकारों की रक्षा चाही है। इनकी यह बात मान ली थी। राजा लोग अब उस शिक निकलना चाहते हैं। यह स्पष्ट है कि राजाओं को सार्व सत्ता के व्यवहार से असन्तोष रहा है। वे कहते हैं कि किसी एक रियासत में और सार्वभौम सत्ता या किसी अन्य रियासत में किसी विषय पर मतभेद हो जाय तो उसका निर्ण पंचायत-द्वारा कराया जाय। वायसराय ने उनका यह प्र स्वीकार नहीं किया। वायसराय की यह अस्वीकृति सार्व सत्ता के लिए भले ही लाभदायक हो, राजाओं के लिए नहीं इस सम्बन्ध में दो राय नहीं हो सकती।

छोटे राज्यों का बड़े राज्यों में मिलाना अथवा संघबद्ध

लगभग दो साल पहले सार्वभौम सत्ता की ओर से प्रबन्ध को आधुनिक सुविधा देने के लिए छोटे राज्यों को वर्ती बड़े राज्यों में मिलाने का प्रस्ताव किया गया था। में इससे भय की लहर फैल गई। इस 'संघ-बद्ध' योजना उन राज्यों की पुलिस और हाईकोर्ट एक होने की बात मण्डल ने इस विषय पर भी अपनी सुनीति का परिचय नहीं दि हाईकोर्ट के विषय में उसने विलासपुर के महाराजा के दृष्टि को ही आगे रक्खा है कि 'इस भाँति सार्वभौम सत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से न्तरिक मामलों में हस्तक्षेप कर उनके अधिकारों पर कुठाराघात श्यक ती है।' सार्वभौम सत्ता इसे मानने को तैयार नहीं है। वन्ध ई वोवेल ने इसका बहुत सुन्दर उत्तर दिया है कि 'जिस राज्य रक न मामला हाईकोर्ट में उपस्थित होगा उसी राज्य की न्याय- प्रति ति से उस समय कार्य होगा।' राजाओं का यह भी कहना में हस्त क इस आयोजन को कार्यान्वित करने का पूर्णाधिकार मण्डल थवा दे दिया जाय। छोटी रियासतों को बड़ी रियासतों के साथ हुई नाये जाने अथवा संघ-बद्ध करने की योजना के सम्बन्ध में साध टी रियासतें डाक्टर जयकर से परामर्श कर रही हैं कि योजना राजने पूर्ण या आंशिक रूप से अस्वीकार करने के लिए क्या-क्या को ाय किये जायँ। वायसराय ने मण्डल को दिये जानेवाले शब्धिकार की माँग को भी अस्वीकार कर दिया है। वास्तव में अब वे समय आ गया है जब छोटी रियासतों को आपस में स्वयं हुई बद्ध हो जाना चाहिए। इसी में उनका हित है। या वे दयाँ हें तो अपने पास की किसी बड़ी रियासत में मिल जायँ। साथ बड़ी रियासतों को भी चाहिए कि वे अपने राज्यों में वैधानिक में "धार अधिक से अधिक करें जिससे उनके निवासियों की परिस्थिति पहले टिश भारत के प्रान्तों के निवासियों के समान हो जाय।

, म देशी राज्यों की प्रजा के सम्बन्ध में श्री० राजगोपालाचार्य न नागपुर-विश्वविद्यालय के अपने भाषण में कहा था—"अनेक इन्हें ी राज्य अपने प्रजाजनों को वे अधिकर देने में असफल रहे जो ब्रिटिश भारत के लोगों को मिले हुए हैं।" उचित तो है कि वायसराय महोदय एक तिथि निश्चित कर दें जब तक का मस्त देशी राज्यों में वाञ्छित सुधार कार्यान्वित कर दिये जायँ। सम्रा ससे सम्भव है कि वे अँगरेज़ी प्रान्तों की समानता कर सकें। शिक के लिए यह सबसे अच्छा होगा कि केवल वे ही राज्य बचें सार एक निर्धारित आर्थिक एवं जनसंख्या की सीमा में आ कि यँ। देशी राज्य लोक-परिषद् के मत से भी वे ही राज्य रहने न्य हिएँ जिनकी जनसंख्या २० लाख से अधिक अथवा वार्षिक निर्ा ाय पचास लाख रुपये से अधिक हो। इस योजना के अनुसार ह प्र रत में २१ राज्य बने रहते हैं। यदि देशी राज्यों के सन्धिगत सार धिकार इन छोटे-छोटे सुधारों के बीच में बाधक हों तो उनका नहीं ई विचार नहीं करना चाहिए। सर सी० पी० रामास्वामी द्ध य्यर के शब्दों में "यदि कोई देशी राज्य अपनी प्रजा की से लाई के हित में ब्रिटिश भारत के आगे नहीं, या बराबर भी का हीं है तो वह बचे रहने का अधिकारी नहीं।...देशी राज्य र कत्र नहीं किये जा सकते। हमें अवश्य ही किसी ऐसे निर्णय र आ जाना चाहिए जिससे यह जान लिया जाय कि किस जन यासत को अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए और कौन-सी खड़ी वाद हीं हो सकती। ऐसी अनेक रियासतें हैं जो प्रजा के कोष को दृष्टि जी कोष समझती हैं। वे हाईकोर्ट या शासन-व्यवस्था की ना थमिक प्रतिनिध्यात्मक संस्थाओं के बारे में सोच भी कैसे सकती ? निःसन्देह ऐसी रियासतों की परिस्थिति बड़ी डाँवाडोल है। साथ ही किसी रियासत को पूर्णतया या आंशिक रूप में समाप्त कर देना भी कठिन है। अच्छा तो यही हो कि रियासतें स्वयं अपनी इच्छा से किसी अन्य शक्ति के दबाव के पहले ही समाप्त हो जायँ।" म० गांधी ने भी कहा है—"छोटे राज्यों के लिए तो यही अच्छा है कि वे उन अधिकारों को, जो उन्हें मिलने ही न चाहिएँ थे, स्वयं छोड़ दें। और बड़े राज्यों के अधिकार ज़ब्ते तले आ जाने चाहिएँ।" इस वस्तु-स्थिति में वायसराय ने उनकी इस विषय की माँग से इन्कार कर उचित ही किया है।

उद्योगीकरण और आर्थिक पुनर्निर्माण

मतभेद का एक कारण आर्थिक भी है। वह है रियासतों का अखिल भारतीय उद्योगीकरण योजना में सम्मिलित होने का। रियासतों का कहना है कि उन्हें अपने इच्छानुसार कार्य करने के लिए छोड़ दिया जाय और केन्द्रीय सरकार केवल उन्हीं बातों में हस्तक्षेप करे जिनमें वे सहायता माँगें। ब्रिटिश सरकार का कहना है कि वे सामूहिक देश के लिए तैयार की गई योजना से परे नहीं रह सकते। दोनों तरफ़ से बहुत कुछ कहा जा सकता है।

देशी रियासतों की पिछड़ी हुई औद्योगिक प्रगति को देखते हुए राजाओं की माँग उचित है और उन्हें अवसर दिया जाना चाहिए कि वे इस ओर पूर्ति करें। बात यह है कि अनेक विषयों एवं परिस्थितियों में ब्रिटिश सरकार का दबाव अधिक साधक हो सकता है और अनेक में बाधक। जहाँ रियासतों के राजाओं का कुविचार हो वहाँ सरकार को हस्तक्षेप करना उचित है और यदि रियासतें त्वरित गति से अग्रसर हो रही हैं तो सरकार का हस्तक्षेप बाधक सिद्ध होगा। जकात और अन्य करों में भी उन्हें सुविधा मिलनी ही चाहिए ताकि रियासतों में उद्योग-धन्धे पर्याप्त मात्रा में फैल जायँ। इससे यह अवश्य है कि अनेक उद्योगपति सुविधा मिल जाने के कारण ब्रिटिश भारत से रियासतों में चले जायँगे, जैसा कि वे आजकल भी कर रहे हैं। इससे सरकार की आय में अन्तर अवश्य आयगा। किन्तु भावी प्रगति को देखते हुए इस ओर प्रयत्न किया जा सकता है। राजा लोग और भारत-सरकार दोनों ही अपने स्वार्थों से प्रेरित हैं। प्रायः देशी रियासतों में राजा लोग रियासत के उद्योगीकरण के विरुद्ध ही रहे हैं। वहाँ केवल वे ही उद्योग-धन्धे पनप सके हैं जिनमें स्वयं उनका एक प्रमुख भाग हो। अतः उन्हें डर है कि यदि रियासतें भी अखिल भारतीय आर्थिक योजना में आ गईं तो उनकी हानि होगी। इस विचार से राजाओं की यह माँग देश-भक्ति से प्रेरित नहीं कही जा सकती। इधर ब्रिटिश सरकार भी इस बहाने देशी रियासतों को भी ब्रिटिश भारत की भाँति ब्रिटेन के धन, व्यापार, कलपुर्ज़ों आदि के उपयोग के लिए एक क्षेत्र बनाना चाहती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संरक्षण की माँग

यह तो एक प्रकट रहस्य है कि राजाओं को भारत-सरकार के राजनैतिक विभाग से अत्यधिक असन्तोष है। यह विभाग उनके आन्तरिक मामलों में प्रायः हस्तक्षेप करता रहता है और ऐसा करते हुए वह राजाओं की इच्छाओं की परवा नहीं करता। राजा लोग उसके व्यवहार से भी सुखी नहीं थे, क्योंकि वह विभाग सदा अपने बल की पुष्टि ही का विचार करता रहता है, राजाओं या जनता का नहीं। इसी लिए राजाओं ने एक यह भी माँग रक्खी थी कि उन रियासतों का शासन पोलिटिकल एजेंट न करे जहाँ का शासक बालिग़ नहीं है। ऐसी रियासतों का शासन नरेन्द्रमण्डल द्वारा नियुक्त अधिकारियों द्वारा हो। वायसराय ने इस प्रार्थना को भी अस्वीकृत कर दिया। इसके विपरीत राजाओं ने एक यह भी माँग रक्खी कि ब्रिटिश भारतीयों के 'आक्रमण' के विरुद्ध रियासतों की रक्षा की जाय। ये दोनों परस्पर-विरोधी बातें हैं, अर्थात् एक तरफ़ तो राजा लोग प्रजा से सरकार द्वारा अपना बचाव चाहते हैं, दूसरी ओर वे उसके पञ्जे से भी निकलना चाहते हैं। इससे तो वे केवल भारत-सरकार के आश्रित ही रहेंगे। फिर राजाओं को ब्रिटिश भारतीय पत्रों की आलोचना से क्यों इतना भय है कि वे इससे बचने के लिए क़ानून की शरण लें। सर फ्रेन्सीस वाईली ने इस मामले में राजाओं से कहा है कि "जैसे-जैसे रियासतें प्रगतिशील बनेंगी, उन्हें इस बारे में कोई भय न रहेगा। उचित तो यह है कि राजा लोग पत्रों की आलोचना का स्वागत करें, जिससे उन्हें अपनी भूलें सुधारने का अवसर मिले। इससे उन्हें अपनी त्रुटियों का ही पता लगेगा। सर जदुनाथ सरकार ने मुग़ल-साम्राज्य के पतन के कारणों में सबसे बड़ा कारण यही बताया है कि उस समय राजा लोगों को अपनी त्रुटियाँ जानने का कोई साधन नहीं था। यह तो राजाओं के लिए एक अच्छी बात है।"

वैधानिक संकट

सामूहिक त्यागपत्र के कारण एक वैधानिक सङ्कट उपस्थित हो गया है। त्यागपत्र के कारण स्पष्ट रूप से नहीं बताये गये हैं। नवाब भोपाल ने इसे उचित नहीं समझा। नरेन्द्रमण्डल का देश के विधान में कोई स्थान नहीं है। अतः उसके त्यागपत्र से वैधानिक सङ्कट या गति-अवरोध नहीं होता। मण्डल एक परामर्शदात्री संस्था है। इसके बन्द हो जाने पर ब्रिटिश भारत या सार्वभौम सत्ता और उसके प्रतिनिधि के कार्यों पर कोई क़ानूनी प्रभाव नहीं पड़ता।

मण्डल के इतिहास के विद्यार्थी जानते हैं कि यद्यपि अवसर अभूतपूर्व है किन्तु पहले भी एक बार इसी प्रकार सङ्कट उपस्थित हो गया था जब छोटी और बड़ी रियासतों अन्तर में १९३६ में महाराजा बीकानेर और पटियाला ने त्य पत्र दे दिये थे। उस वर्ष मण्डल का कोई अधिवेशन नहीं था और उसके बाद फ़रवरी १९३७ ई० में हुआ। इस अवसर और पहलेवाले में यही अन्तर है कि उस मण्डल में फूट थी; किन्तु आज सामूहिक त्यागपत्र गया है जो एकता की निशानी है। वायसराय ने त्याग स्वीकार कर लिया है अथवा नहीं, इसका पता नहीं। त्य पत्र के कारण वैधानिक स्थिति भी स्पष्ट नहीं है। यह भी उठता है कि क्या मण्डल का अस्तित्व तब भी बना रहता उचित तो यह है कि लार्ड वावेल नरेन्द्रमण्डल को ही भङ्ग दें। लेफ़्टिनेंट जनरल मैकमन के मतानुसार यह बुद्धि की बात होगी कि नरेन्द्रमण्डल को भङ्ग कर दिया जा क्योंकि मण्डल ने न तो राजाओं का हित-साधन किया है देशी राज्यों की प्रजा का ही। यह एक बहु-व्यय-साध्य आ म्बरमात्र है। पी० एस० शिवस्वामी अय्यर के शब्दों में "नरेशगण भी इसके कार्य से सन्तुष्ट नहीं हैं और इसी लिए से नरेश तो इससे उदासीन रहते हैं।" इस व्यर्थ की व पिण्ड छुड़ाना अच्छा ही है।

नवाब भोपाल के एक वक्तव्यानुसार मण्डल की परि में परिवर्तन होनेवाला है और निकट भविष्य में ही उपचुना भी आशा है। इससे तो यही विदित होता है कि राज विभाग की त्यौरी बदलने मात्र से राजाओं का सारा क काफ़ूर हो जायगा। ब्रिटिश सरकार उनको अप्रसन्न र भी अपना कार्य चला सकती है जब कि राजा लोग बिना अवलम्ब के अपने अधिकार बनाये रखने में असफल

इस प्रकार राजा लोग एक बड़ी नाज़ुक परिस्थिति में हैं विशेषकर उस समय जब कि रियासतों की प्रजा भी उनके नहीं है। इसके विपरीत उनके कार्य भी उनकी प्रजा के के विरुद्ध हैं। क्या वे भारत की राजनैतिक, आर्थिक सामाजिक उन्नति में बाधक न बन कर नवाब भोपाल के को सत्य सिद्ध करेंगे? यह अवसर तो ऐसा है जब कि लोग अपनी प्रजा का हित करके अपनी स्थिति दृढ़ एवं सुरक्षित और स्थायी बना सकते हैं और भारत के भावी में अपना एक निजी गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त कर सकते हैं।

——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काले केश

कुमारी प्रभा पारीक, बी० ए०

श्वेत वसन से अपने कन्धों को ढकते हुए शिवि ने काली नीली अलकें पीठ पर फैला लीं। दर्पण पर अङ्कित बुद्ध के चित्र-चित्र को कुछ क्षण देखते-देखते उसका अशान्त विह्वल मुख आर्द्र हो उठा। पलकों में छिपी आर्द्रता बुद्धदेव की करुणा में अपने बहने का स्थान खोजने लगी। शिवि ने घुटने टेक देव के चरणों की ओर अपना मस्तक नत कर दिया। उसकी अशान्ति के करुणा बनकर बहने से पहले वासन्ती पवन मधु ऋतु का प्यार ले उसकी अलकों से उलझ वसनों को उड़ाने लगा। उसके स्पर्श से शिवि भी न बच सकी। उसकी करुणा ने कौतुक का स्थान आ घेरा। शिवि के भीगे नेत्र विस्फारित हो उठे। सोचने लगी यह स्पर्श इतना सुखद क्यों है? इसमें इतना पुलक क्यों? क्या वेदना और करुणा के अतिरिक्त और भी भाव किसी के हृदय में निवसित हैं? वातायन से बाहर दूर पाकर वृक्ष से लिपटी लता पर कोमल अरुण किसलय न जाने किस मस्ती में विभोर हो नाच रहा था। शिवि ने क्षण भर देखा और फिर देव के चित्र की ओर मुँह फेरा। सहसा वह चौंक उठी। चित्र के दर्पण में उसका मुख साकार था। उसके कपोल पर वह अरुण किसलय प्रतिबिम्बित हो नाच रहा था। नाचते-नाचते किसलय का प्रतिबिम्ब उसके ओठों को भी चूमने लगा। वह सिहर उठी। सारा रक्त कपोलों पर उतर आया मानों प्रातः रवि की किरण, प्रात का अनुराग ले, हिम पर अपनी आभा बिखेर रही हो। शिवि बेसुध-सी हो वातायन के पास जा खड़ी हुई। पुनः कलियों को चटकाता, किसलय को नचाता प्रमादी वात वातायन में घुस आया और शिवि के कानों में न जाने कौन-सा मधु उसने भर दिया कि उसके सारे शरीर में सिहरन भर गई। शिवि समझ न पाई कि मधु ऋतु का यह सन्देश बाहर फैली हुई मधुरिमा की ओर देखने के लिए है। किसी आकर्षण में खिंची शिवि ने वातायन से बाहर झाँका। वसुन्धरा के हरे आँचल पर वासन्ती प्रभा बिखरी थी। मञ्जरी ने अपना हृदय खोल सुरभित साँसें भर दी थीं। लतिका वृक्ष से लिपटी किसी आनन्द में झूम रही थी। शिवि की दृष्टि दूर क्षितिज तक पहुँच गई। सारी प्रकृति किसी आनन्द के अङ्क में छिपी मधुर-मिलन की घड़ियों में विभोर थी। मुग्धा-सी शिवि इस मधुर मिलन की चहल-पहल में अपने मधुर पलों की सुधि ले रही थी। सहसा वातायन के नीचे चीं-चीं के स्वर ने उसकी ध्यानावस्था को भङ्ग किया। उसने देखा, दो नीली-चमकीली चिड़ियाँ तिनके उठाकर पाकर वृक्ष पर ले गईं और उस पर लटकी लतिका की गोद में अपना नीड़ बनाने में व्यस्त हो गईं। कुछ देर पश्चात् फिर वैसा ही स्वर करते हुए तिनके ढूँढ़ने लगीं। बीच-बीच में मधुर स्वर कर एक दूसरे की चोंच पर चोंच रख देती थीं। शिवि की आत्मा विद्रोही हो उठी। उसे लगा, उसकी हृदय-गति जैसे बढ़ गई हो। गर्म साँसें मानों नाक के अग्र भाग को जलाये दे रही थीं। वक्षःस्थल शीघ्रता से उठ-बैठ रहा था। दोनों चिड़ियाँ फिर तिनके लेकर उड़ गईं। शिवि को लगा मानों उसके भी पङ्ख लग गये हों—वह भी उड़ जायगी। प्रकृति की इस सुरम्य छटा में—मधुर मिलन में—वह भी भाग लेगी। उसने द्वार खोला और पक्षियों के पीछे-पीछे पाकर के समीप पहुँच गई। उसने डाल से लिपटी हुई लतिका को झुकाया ही था कि दोनों चिड़ियाँ भयातुर हो विचित्र-सा स्वर कर भाग गईं। शिवि ने देखा, उस नीड़ में श्वेत धब्बों से चित्रित नीले रङ्ग का एक अण्डा रक्खा था। चिड़ियाँ कुछ दूर बैठी चीं-चीं कर रही थीं। उसने डाल छोड़ दी। कुछ दूर दृष्टि दौड़ाई तो देखा, मखमल-सी हरी घास पर एक मृगी मृग के कन्धों पर मुख रक्खे खड़ी थी। शिवि सब कुछ देखकर ठिठकी-सी खड़ी रह गई। उसके जीवन में भी मधु ऋतु आई थी और मधुर मिलन भी। अब उसके जीवन का पतझड़ था। वसन्त की कोमल मधुर भावनायें कब की शुष्क पत्र बनकर उड़ चुकी थीं। वह बौद्ध भिक्षुणी बनकर तपस्या और संयम का जीवन व्यतीत कर रही थी। पर सहसा आज वासन्ती प्रभा ने अपने जल से सींचकर अनुराग के नव किसलय को जन्म दे दिया। शिवि मतवाली-सी हो अपने प्यास बुझाने के लिए आगे बढ़ने लगी।

पीछे से कठोर स्वर आया—"शिवि, अपने सर्वनाश की ओर न दौड़। जिसे तू जल समझकर प्यास बुझाने को दौड़ रही है वह जल नहीं, उष्ण तप्त बालुका है।" कुछ क्षण रुक कर वही स्वर फिर आया—"लौट आ शिवि, सर्वनाश के कगार पर न खड़ी हो"

शिवि ने पीछे मुड़कर देखा, भिक्षु नीलमणि जिनकी दीक्षा में उसने अपने शरीर को संयम की आग में तप कर कुन्दन बनाया था, उसके सर्वनाश होने की आशङ्का में मानों नेत्रों से अग्नि-वर्षा कर रहे हैं। शिवि के पैर ठिठक गये। मणिराजि बिखरी हो और कोई चोर उस पर लुब्ध दृष्टि गड़ाये खड़ा हो, सहसा उसके हाथों में हथकड़ियाँ पड़ जायँ—वही दशा शिवि की भी हुई। जिस मधुरिमा को अपनी पलकों समेत वह कोमल प्रणय-भावना में लीन होना चाहती थी वह सहसा संयम के चरणों से कुचल दी गई। वह विधवा थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसका मनोराज्य लुट चुका था। जिस वृक्ष की छाया में उसका मधुऋतु का स्वप्न सृजित होता वह कब का काल के गाल में बिला चुका था। शिवि के नेत्रों के सम्मुख तिमिर छा गया। उस तिमिर में भी उड़ते हुए श्वेत बुदबुदे उसका उपहास कर रहे थे। उसके भावों की अलका तो मिट ही चुकी थी। सात वर्षों का गम्भीर नील गगन-सा गम्भीर संयम भी उससे दूर भागा जा रहा था। शिवि के मुख से निकल पड़ा—'पतन' और फिर उससे भी तीव्र विकम्पित स्वर में 'गुरुदेव' कहते-कहते उसका कण्ठ रुद्ध हो गया। वह उसी वसुन्धरा पर गिर पड़ी जिसने अपने वक्ष पर रँगीले-सजीले चित्र बनाकर तपस्विनी शिवि के संयम का बाँध तोड़ दिया था। नीलमणि शीघ्रता से शिवि के पास आ गये। उन्होंने बड़े स्नेह से शिवि के मस्तक पर हाथ रख दिया। शिवि को प्रतीत हुआ मानों गुरुदेव के हाथ रखते ही फिर उसका संयम लौट आया। शनैः शनैः उसके नेत्र खुलने लगे। पुनः बरौनियों के बीच पश्चात्ताप के जलकण प्रकट होने लगे। शिवि ने देखा, नीलमणि मुसकरा रहे थे। लज्जा से उसने अपने नेत्र बन्द कर लिये। गुरुदेव ने कोमल स्वर में कहा—"शिवि, आज तुम्हें क्या हो गया है?" शिवि उठने का प्रयास करने लगी। उसकी दृष्टि बिखरे हुए अलक-जाल पर पड़ गई। मधुर वात एक बार फिर उसकी अलकों को छू गया। काली घुँघराली अलकें फिर लहरा गईं। शिवि की देह पर वह सुखद स्पर्श। शिवि चिल्ला उठी—"गुरुदेव!" नीलमणि ने आश्वासन देते हुए कहा—"क्या है, शिवि?" शिवि ने कौतुक से कहा—"गुरुदेव, मधु ऋतु का मधु वात।"

नीलमणि ने दुःख-विगलित श्वास छोड़ते हुए कहा—"ओह! शिवि! आज तुझे यही पतन के कगारे की ओर ले जाकर डुबा देना चाहता था। अच्छा, चलकर विश्राम कर।" गुरुदेव की विशाल भुजाओं के आश्रय में शिवि अपने स्थान पर लौट आई। परन्तु उसे लग रहा था कि जगत् का सारा सौन्दर्य वह आज पीछे ही छोड़कर तिमिर में प्रवेश कर रही है जहाँ यदि कल्पना हो सकती है तो केवल भयावह सूरतवाली मृत आत्माओं की। गुरुदेव ने अपनी विशाल भुजा का सहारा दे शिवि को शीतलपाटी पर बैठा दिया। शिवि को इसमें सन्देह न था कि गुरुदेव उसके मन का भाव जान गये हैं। लज्जा से उसकी पलकें झुकी जा रही थीं मानों पृथ्वी अभी फट जाय और वह उसमें समा जाय। नीलमणि आर्द्र होकर बोले—"सच कह शिवि, यह भावना तेरे अन्तर में कैसे आई?" शिवि ने पश्चात्ताप के स्वर में उत्तर दिया—"मैं देव के चित्र के सम्मुख बैठी थी। सहसा मेरे बालों से उलझकर मधु वात ने मुझे स्पर्श किया। मुझे लगा कि मधुऋतु आ गई है और मैं वातायन से झाँकने लगी। धरणी पर बिखरी सारी वासन्ती प्रभा को अपने अञ्चल में समेटने की इच्छा हुई और फिर..." कहते-कहते शिवि रुक गई।

गुरुदेव ने कुछ दुःखित और चिन्तित स्वर में कहा—"शिवि, आज से पूर्व सात मधुऋतुयें बीत गईं। तू आई तब केवल सत्रह वर्ष की थी। तब तो मधुऋतु का साज सब प्रखर था। पर पगली! आज सहसा इसकी सुधि क्यों आई?"

शिवि ने काँपते हुए स्वर में कहा—"देव, मुझसे यह जीवन सहा नहीं जाता। वज्र-सा कठोर संयम पालन कर मैं स्वयं देव की प्रतिमा बनना चाहती हूँ परन्तु अनजाने में ही हृदय मोम-सा पिघल जाता है।"

नीलमणि ने चिन्तित होकर कहा—"पर पगली, सोच विचार तो कर। अब तू समाज की चहल-पहल में कैसे रहेगी? तेरा स्तम्भ तो कब का धराशायी हो चुका। तेरा सौभाग्य कुंकुम धुल चुका।" कुछ ऊँचा और गम्भीर स्वर में नीलमणि कहते गये—"उस प्रकृति की ओर भी देख जिसने तुझे सहसा मतवाला बना दिया है। क्या यह वसन्त का शृङ्गार कभी पतझड़ में न परिवर्तित होगा? ये नाचते हुए किसलय शुष्क हो पवन में उड़ जायँगे। यह लतिका-आच्छादित तरु स्वयं डण्डे हो काल का भयङ्कर स्वरूप धारण करेंगे। मधु वात आँधी बन भयङ्कर शब्द कर उन्हें गिरा देगा। जीवन की नश्वरता को सोच! यौवन की बिखरती हुई सुषमा पर विचार कर, जब ये काली-घुँघराली अलकें श्वेत बन जगत् का उपहास समझेंगी; जब लतिका-सा लचीला शरीर लाठी का सहारा लेगा, प्रत्येक श्वास में अन्तिम पल गिनेगा। जब हास्य रुदन होगा, प्यास उपहास होगी।"

शिवि अपलक नयनों से गुरुदेव की बातें सुन रही थी। गुरुदेव के जीवन की व्याख्या उसकी गम्भीरता का आह्वान कर रही थी। उसे लगा कि गुरुदेव स्नेह-विगलित हाथ उसके सिर पर फेर रहे हैं। उसकी क्षणिक भावना आँसू बनकर ढल रही थी। उसका आधार नहीं, फिर समाज में वह कैसे प्रवेश करे? एक काली घुँघराली लट उसकी गोद में पड़ी। वह चौंक उठी। आह! यह उसी की लट थी जिसमें यौवन की लहर सुषमा भरी थी। गुरुदेव ने उसकी लटें काटकर उसके समक्ष रख दीं। शिवि के अश्रु नयन-कोरों से फिर लौटकर हृदय पर पहुँच गये। वह तीव्र किन्तु रुद्ध कण्ठ से चीख उठी—"गुरुदेव, यह क्या कर डाला?" उसने सारी लटों को उठा छाती से चिपटा लिया।

गुरुदेव अब भी मुस्करा रहे थे—"बौद्ध भिक्षुणी केश न रखती। मैं तेरी दीक्षा पूरी कर देना चाहता हूँ जिससे पथविहीना न हो।"

शिवि निःशब्द उन लटों को वक्ष से चिपटाये बैठी रही। गुरुदेव वातायन के द्वार बन्द कर प्रकाश-रन्ध्रों को भी ढक बाहर चले गये। शिवि उन केशों को चिपटाये घुटनों पर सिर रखकर फफक-फफककर रोने लगी। उस तिमिर में भी वासन्ती आलोक बिखरा पड़ा था। बन्द द्वार में उसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टूटने लगा। आह! वातायन के बाहर सोने-जैसा संसार लुट रहा है, वह तिमिर में बैठी है। दोनों चिड़ियाँ अब भी वातायन के बाहर उसी मृदु स्वर में बोल रही थीं। शिवि को लग रहा था कि अब भी मृग और मृगी उसी प्रकार एक दूसरे को भोले नेत्रों से देख इस वसन्त का अनुभव कर रहे होंगे। एक बार फिर उसने अपने केशों को अपने वक्ष पर चिपटा लिया। मानों उसके सुखी जीवन की स्मृति साकार बन आई हो।

द्वार पर किसी ने खटखटाया। शिवि ने केशों को शीतल-पाटी के नीचे छिपा द्वार खोल दिया। देखा वहीं की एक अन्य भिक्षुणी खड़ी थी। उसने कहा—"देवी।" और फिर कोये में अश्रु के चिह्न पा झिझककर चुप हो गई। शिवि ने अपनी व्यथा को छिपाने के प्रयत्न में दूसरी ओर मुँह फेरकर कहा—"क्या है, नन्दिनी?"

नन्दिनी ने कहा—"देवी! भोजन का समय हो गया है। भूखे बालक और असहाय मातायें मठ के द्वार पर खड़ी आपकी राह देख रही हैं।" शिवि ने चौंककर कहा—"अच्छा चलो, मैं आती हूँ।" नन्दिनी की दृष्टि चलते समय शिवि के सिर पर पहुँच गई। शिवि को लगा, मानो उसका सारा सौन्दर्य उजड़ गया हो। शीघ्र ही वह अपनी धोती का आँचल सिर पर डाल मठ की ओर चल दी। भोजन बाँटते समय उसके मुख पर नित्य की तरह प्रसन्नता न थी। उसकी उदास मुद्रा और सूनी-सूनी आँखें देखकर किसी को अधिक माँगने का साहस न हुआ। पंक्ति के अन्त में एक विलोची युवती बैठी थी जिसके काले-काले केश वक्ष पर लहरा रहे थे। उसके अरुण कपोलों पर मानों सारा यौवन उतर आया था। शिवि ज्योंही उसे भोजन देने को आगे बढ़ी, उसका आँचल सिर से हट गया। युवती बोल उठी—"देवी, आपके केश...!" शिवि का हृदय उमड़ आया। भोजन के स्थान पर उसके पात्र में अश्रु टपक पड़े। शिवि को भय हुआ कि कहीं युवती ने उसकी दुर्बलता को पहचान तो नहीं लिया। उसने युवती की ओर देखा। युवती ने भी उसकी आँखों को देखा और म्लान मुद्रा को देख-कर कहने लगी—"देवी, क्या आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं है!" शिवि ने बड़े प्रयास से कहा, "ठीक है।" और कहते-कहते उसकी आँखें फिर भर आईं। युवती पहचान गई कि अवश्य उसके हृदय पर कोई व्यथा-भार है। सहानुभूति के लिए खोजने पर कोई शब्द उसे न मिला तो उसने कह दिया—"देवी! आपके बाल बड़े ही सुन्दर थे।" उसके इन शब्दों ने शिवि के मर्मस्थल को छू दिया। उससे वहाँ न रुका गया। वह अपने स्थान पर लौट आई।

नित्य प्रति गुरुदेव आकर 'सत्य-पीतिका' पढ़ाते। शिवि भी अपने को संयम में बाँधने का प्रयत्न करती। जब वह प्रातः-स्नान करने जाती तब पाकर वृक्ष में रक्खे घोंसले को अवश्य देख लेती। अब उस घोंसले में बच्चा था। पाकर से कुछ दूर नीम के वृक्ष पर भी वैसी ही नीली चिड़ियों का घोंसला था। शिवि को पक्षियों से खूब स्नेह हो गया था। तपती हुई ग्रीष्म के सूने पलों में वह कुछ दाने फेंककर चिड़ियों को चुगाती और बड़े कौतुक से उन्हें देखती। चिड़ियाँ कुछ दाने मुँह में लेतीं और पाकर पर उड़ जातीं। घोंसले से मुँह निकालकर बच्चे चीं-चीं करते; चिड़ियाँ उनके मुँह में दाना देतीं और फिर उड़ जातीं। जाड़े की ऋतु तक उन बच्चों के भी पङ्ख निकल आये। वे भी पाकर और नीम से चुग्गा लेने आते थे। पाकर और नीम की चिड़ियाँ एक ही जाति की थीं। दोनों के बच्चे बराबर ही थे। दोनों ही बच्चे कभी-कभी अपने नीले चमकीले परों को सगर्व देखते, कभी गर्वीली चाल में चल बड़े दुलार से अपनी-अपनी माँ के पङ्खों में अपनी चोंच छुपा देते। शिशिर ऋतु का अन्त हो चला। वृक्षों के पात पीले पड़ने लगे। बड़ी चिड़ियाँ फिर तिनके उठा-उठाकर ले जाने लगीं। प्रातः स्नान को जाते समय शिवि ने देखा कि पाकरवाले घोंसले में एक नया अण्डा रक्खा था। दोनों चिड़ियाँ उस अण्डे को अपने परों में छुपाये थीं। बच्चा भी अपनी माँ के अंक में छिप जाने को लालायित था। परन्तु दोनों चिड़ियाँ उसे चोंचें मारकर भगा रही थीं। शिवि ने नीम के पेड़वाले घोंसले पर देखा; वहाँ भी चिड़ियाँ नवशिशु की आशा में पुराने बच्चे को भगा देना चाहती थीं। शिवि स्नान करके लौटी तो देखा कि दोनों बच्चे उसके वातायन के समीप चुग रहे थे। अब वे पूर्ण रूप से बढ़ चुके थे। उनके पङ्ख लम्बे हो गये थे। कभी-कभी दोनों मस्ती में अपनी नीली चमकीली दुमों को खूब घुमाते। पहले की चिड़ियों की भाँति वे भी मधुर स्वर में कुछ कहते। शिवि को लगा कि मानों एक पुकारता 'टीची' तो दूसरा उत्तर देता 'टीवी'। उसने अपने मन में 'टीची' को नर और 'टीवी' को मादा चिड़िया का नाम समझा।

दूसरे दिन शिवि ने खिड़की के बाहर झाँका तो देखा कि दोनों बच्चे उदास-से एक दूसरे के अति समीप बैठे थे। टीची के परों से रक्त निकल रहा था और टीवी दुःख-विह्वल आँखों से उसकी ओर देख रही थी। शिवि ने सोचा, कदाचित् आज इन दोनों को घर से निकाल दिया गया है। उसे सहसा अपने जीवन का स्मरण आया। किस प्रकार वह बचपन में अपनी माँ की आँखों का तारा थी; सारे घर का दुलार थी। कुछ बड़ी होने पर वह माता-पिता के दुलार की नहीं, चिन्ता की वस्तु बन गई जिसे शीघ्रातिशीघ्र किसी को सौंपकर वे अपना भार उतारना चाहते थे। उसका विवाह हुआ, अस्फुट कली मलयवात के स्पर्श से जैसे विकसित होती है, वैसे ही वह भी अपने पति के प्रेम-आश्रय में विकसित हो उठी। कली पुष्प बनकर डाल पर नाचना चाहती है पर कुहरा पंखुरियों को बिखरा देता है। उसका विकसित यौवन प्रणय के मधुर झकोरों में झूमना चाहता था; परन्तु वैधव्य के आघात ने प्रणय-बन्धन काट डाला। वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असहाय हो गिर पड़ी थी। उसको कोई आश्रय देनेवाला न था, तब नीलमणि उसे ले आये थे और पुत्री की भाँति रखकर संयम और सेवा का मार्ग उसे दिखाते रहे थे। टीची और टीवी ने कुछ मधुर स्वर किया और दोनों कुछ तिनके लेकर दूर उड़ गये। शिवि 'सत्य-पीतिका' खोलकर अपने मन को शान्त करने लगी।

पूर्णिमा की ज्योत्स्ना से सारी पृथ्वी रजतमयी हो रही थी। शिवि को लगा मानों आज ज्योत्स्ना सुधाकर के करों पर झूलती हुई भूमि पर उतर रही थी। उसकी पूर्व-स्मृति सजग हो उठी। ऐसी चाँदी-सी रात में एक बार उसके पति ने कहा था—"चलो शिवि, आज सरिता के तट पर चलें।" और वहाँ संसार की कोई चिन्ता न थी। वे दोनों भूले-से न जाने कब तक बैठे रहे। वे उसके जीवन के सबसे सुखद क्षण थे। उस स्मृति ने सहसा शिवि को मतवाला कर दिया। उसके पास कोई भी चिह्न न था जो उसके पति की स्मृति को ठहराये रहता। सहसा उसे अपने केशों की याद आई जिनको उसके पति ने कितनी ही बार सजाया था। शिवि ने शीतलपाटी के नीचे से अपने केशों को निकाला और अपने वक्ष से चिपटा लिया और द्वार के बाहर आ खड़ी हुई। चाँदनी ने अपनी सारी हँसी उसके पैरों में उडेल दी। शिवि अपने केशों को हाथ में ले पगली-सी विस्फारित नेत्रों से देखने लगी। टीची और टीवी कुछ स्वर करते हुए आ गये और तिनके उठाने लगे। शिवि ने आश्चर्य से देखा—चिड़ियाँ रात को तो नहीं आतीं। पर ये आज बसेरा क्यों नहीं ले रही हैं? उसने सोचा, ये अपना नया घोंसला बना रही हैं और दोनों को मधुर सपनों ने समय का ज्ञान भुला दिया है। टीची और टीवी तिनके उठाकर उड़ गईं। शिवि भी पगली-सी उनके पीछे उनका नया घोंसला—नव कल्पनाओं का सुसज्जित घर देखने के लिए भागने लगी। उसने देखा, सरिता के दूसरे तट पर टीची और टीवी तिनके रखने लगीं। वह मन्त्र-मुग्धा-सी उसी ओर देखती रही। उसकी इच्छा थी कि सरिता के दूसरे तट पर जाकर दोनों के मृदु-उल्लास का भोला स्वरूप देखे। टीची और टीवी फिर वृक्ष पर से सरिता के ऊपर उड़ने लगीं। वे ऐसी आनन्दविभोर थीं मानों संसार का सारा सौन्दर्य उन दोनों के पङ्खों पर ही उतर आया हो। सरिता पर दोनों की परछाईं पड़ रही थी। सरिता में प्रतिबिम्बित तारे मानों उनके ही पङ्खों पर जड़े हीरे थे। दोनों ने अपने प्रतिबिम्ब देखे। वे अपने सौन्दर्य के गर्व में सरिता के निकट आती ही जाती थीं। नील गगन जैसे रत्न-जटित हो उनके नीले पंखों पर उतर आया हो। टीची और टीवी दोनों पुकारते-पुकारते सरिता के और निकट आती जाती थीं। सहसा एक बड़ी चिड़िया पंख फड़फड़ाती हुई उनकी ओर झपटी। उन अभागों को कुछ सुध न थी। उस चिड़िया ने शीघ्र ही टीची पर आघात कि टीची भय का-सा शब्द करती हुई उड़ी। परन्तु आघात था। वह शिवि के पैरों के निकट आ गिरी। शिवि ने हो देखा, उसके पंखों से रक्त चू रहा था; साँस तीव्र चल था। टीवी भी उसके समीप आ उतरी। उसने अपनी से टीची को सहलाया पर टीची का स्वर न निकला। विह्वल हो 'टीची टीची' पुकारने लगी। पर टीची के मुख 'टीवी' न निकला। जिस मुख से उसने टीवी को प्रेम आश्वासन देकर नया घर बनाने का सुख-स्वप्न फैलाया था नीरव था। टीवी और भी व्याकुल हो पंख फड़फड़ाने ल पर साथी का उत्तर न मिला। उसने और भी विह्वल हो की चोंच को अपनी चोंच से खोलने का प्रयास किया। आह! टीची के प्राण उस समय अज्ञात दिशा को उड़े जा थे। टीवी के प्राण इस विछुड़न को न सह सकते थे। दो ही एक साथ उड़कर अपने कल्पित सुख को अन्यत्र पूरा के लिए चल दिये। शिवि ने झुककर देखा, दोनों प्राण पक्षियों के नीले पर ज्योत्स्ना की आभा में नीलमणि-से रहे थे। शिवि चौंक उठी—क्या प्रेम का सौन्दर्य ऐसा होता है? वह चकित-सी उन भोले पक्षियों के दिव्य स्वरूप देखती रही।

मारुत का एक झोंका न जाने कितने शुष्क पत्रों को साथ उड़ा लाया और दोनों पक्षियों के पङ्खों से कुछ देर उनको झकझोर डाला। शिवि के मुख से निकल पड़ा, "कि निष्ठुर है पवन!" पवन ने अट्टहास किया और दोनों प के मृत शरीरों को सरिता में जा ढकेला। दोनों पक्षी अज्ञात दिशा की ओर बहे जा रहे थे। शिवि को स्म आया, गुरुदेव ने कहा था—"वासन्ती पवन आँधी बन है। कोमल अरुण किसलय शुष्क पत्र और मधुऋतु-पर सब नश्वर है।" उसने देखा, दोनों पक्षी किसी अज्ञात की ओर बढ़े जा रहे थे। कदाचित् उस दिशा को जहाँ मृत आत्मायें विश्राम करती हैं। उसने अपने काले घुँ लम्बे केशों को एक बार देखा और अपने जीवन की इच्छायें उनमें गूँथ उन्हें अज्ञात देश के निवासी अपने प ओर प्रवाहित कर दिया। काले केश शिवि के जीव गम्भीरता बन उसकी इच्छायें और कामनायें ले जल में चले जा रहे थे। सुधाकर ने अपना समस्त प्रकाश उन पर डाल साक्ष्य कर दिया कि शिवि का जीवन आज ही उज्ज्वल और संयमपूर्ण होगा। शिवि लौट आई। वासनाहीन शुद्ध हृदय में असीम श्रद्धा भरकर बुद्धदेव चित्र के सम्मुख उसने शीश झुका दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाश्चात्य साहित्य और वर्त्तमान सङ्कट

श्रीयुत भूपेन्द्रनाथ सान्याल

वर्त्तमान सङ्कट ने, जो अपने मूलरूप में अर्थनैतिक सङ्कट ही समस्त संसार में एक उथल-पुथल मचा दी है। इस सङ्कट के से भयानक परिणाम—महायुद्ध—के बीच से हम आज गुज़र हैं। इस सङ्कट का प्रभाव-विस्तार हमारे जीवन के प्रत्येक लू में दिखाई देता है। आज मानव की शक्ति जगत् को लमय बनाने के स्थान में ध्वंसलीला की ओर प्रवृत्त है, सका फल यह हुआ है कि आज प्राचुर्य के बीच अभाव दिखाई रहा है। सामाजिक विषमता, जो वर्त्तमान वर्गविभाजन-ाली की एक देन है, इस सङ्कट के कारण और भी स्फीत हो है। एक ओर मुट्ठी भर लोगों के पास इतना प्रचुर धन कत्र हो गया है कि वे उसके भार से दबे-से जा रहे हैं। दूसरी र अधिकांश जनता अन्न, वस्त्र और अन्य आवश्यक वस्तुओं अभाव से बुरी तरह पीड़ित है। समाज इस सङ्कट से पीड़ित कर त्राहि-त्राहि पुकार रहा है।

वर्त्तमान पाश्चात्य साहित्य इसी समाज का एक निदर्शन है। स विज्ञान का जन्म समाज के मङ्गल के लिए हुआ था वह ज एक अत्यल्पसंख्यक श्रेणी की स्वार्थ-रक्षा में लगा हुआ है र इस युग के दार्शनिक नैराश्यवाद के प्रचार में लगे हैं। ाँ का साहित्य मृत्यु-कामना में मग्न है। काव्य, उपन्यास र दर्शन सभी इसी भाव से भरे हुए हैं। यही नहीं, ोविज्ञान की धारा भी इसी दिशा में बह रही है। वस्तुस्थिति है कि आज, क्या साहित्यिक, क्या दार्शनिक और क्या ानिक, सभी सत्य से मुख मोड़कर कल्पना जगत् के आश्रय चले जा रहे हैं। आज का विश्वसमाज श्रेणी-संग्राम से क्षुब्ध हो उठा है। आज एक नवीन समाज पुरातन के न्दर से जन्म ले रहा है। जो साहित्य, जो शिल्प और जो ज्ञान इस नवीन समाज की अभ्यर्थना करे वही प्रगतिशील पर आज का विद्वत्समाज इस नवीन सृष्टि से विमुख खाई दे रहा है।

पाश्चात्य देशों में श्रेणी-संग्राम तीव्र है, अतः इसका प्रभाव वहाँ अधिक है। साहित्य, दर्शन और विज्ञान से यह भाव व्यक्त हो रहा है। इस प्रभाव के उदाहरण में विख्यात नोवैज्ञानिक फ्राइड—जिनके आविष्कारों ने मनोविज्ञान में एक न्ति पैदा कर दी है—के विचारों को उपस्थित किया जा कता है। उनके कथनानुसार जीवित वस्तु के आगे मृत्यु लक्ष्य सदा रहा है। परन्तु बाहरी अवस्थाओं के परिवर्त्तन कारण जीवन लक्ष्य-भ्रष्ट होकर सर्प की गति से मृत्युतीर्थ की ओर अग्रसर हो रहा है। मृत्यु के ये तिर्यक् मार्ग ही जीवन के पथ हैं। जीवन का उद्देश्य ही मृत्यु है।

यह मृत्यु-सन्देश ही आज के पश्चिमी जीवन की विशेषता है। स्वयं फ्राइड अपनी दूसरी पुस्तक में जिसका नाम 'सभ्यता और उससे पीड़ित' है, एक स्थान पर लिखते हैं—"जब कभी मेरे मन में अपने साथियों के बीच पैग़म्बर बनकर रहने का विचार उठता है तभी मेरा साहस क्षीण हो जाता है और मैं यह स्वीकार करता हूँ कि पीड़ित मानवता को मैं कोई सान्त्वना नहीं दे सकता।"

जर्मन दार्शनिक ओसवालु स्पेंगलेर ने इस नैराश्यवाद को चरम सीमा पर पहुँचा दिया है। इन्हीं के शब्दों में—"ख़तरा इतना बढ़ गया है कि प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक श्रेणी और प्रत्येक जाति को आशा का स्वप्न छोड़ देना पड़ेगा। क्योंकि स्वप्न में विश्वास रखने से कोई मार्ग नहीं निकल सकता। आशावाद कायरता का ही दूसरा नाम है। हमने इसी युग में जन्म लिया है। साहस के साथ निर्दिष्ट मार्ग पर हमें आगे बढ़ना होगा; दूसरा कोई उपाय नहीं है। मानव-जीवन की विशेषता है 'सम्मानपूर्वक मरना', जिसे कोई मनुष्य से छीन नहीं सकता।" इस प्रकार हम कह सकते हैं कि स्पेंगलेर का सन्देश मृत्यु का सन्देश है।

कुछ ऐसे ही भावों की अभिव्यक्ति एजरा पाउण्ड की कविता में हुई है जिसकी कुछ पंक्तियों का सारांश इस प्रकार है—

"खेत पर बकरी रात को खाँस रही है। पहाड़, काई, पथरीला अनाज, लोहा लक्कड़। औरत खाना बना रही है; चाय पकाती है—शाम को छींकती है, आँच तेज़ करती है; मैं बुड्ढा आदमी—मन्दबुद्धि, बैठा हूँ खुली हवा में...।"

अभिप्राय यही है कि बस जीवन की चक्की किसी प्रकार चल रही है—नीरस, निरुत्साह।

वेस्टलैंड नामक पुस्तक का कवि कहता है—"इस पथरीली भूमि में कौन-सी जड़ जम सकती है? यहाँ कौन शाखा उग सकती है? मानवपुत्र, तुम नहीं बता सकते; न तुम अनुमान ही कर सकते हो! क्योंकि तुम केवल भग्न प्रतिमाओं को ही जानते-पहचानते हो।"

यह निराश वाणी के अतिरिक्त क्या है?

इलियट के 'ह्वाट दि थंडर सेड" में भी इसी की पुनरावृत्ति है—"ऊँचे आसमान पर यह किसकी आवाज़ है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माता के विलाप-कलाप की ध्वनि।

कौन हैं ये झुण्ड के झुण्ड, जो असीम विस्तृति पर टूट पड़े हैं? फटी हुई भूमि पर ठोकरें खा रहे हैं और क्षितिज ही जिनका एकमात्र आवरण है। पहाड़ के ऊपर वह कौन शहर है जो टूट रहा है, फिर बन रहा है और फिर नीलाकाश में चूर-चूर हो रहा है। गिरती हुई मीनारें, जेरुसलेम, एथेन्स, अलेग्ज़ेण्ड्रिया, वियेना, लन्दन क्या सब मिथ्या हैं?"

यही रोना इलियट ने 'कोरस फ़ाम दी राक' में भी रोया है। वे कहते हैं कि "लोगों ने ईश्वर को त्याग दिया है, और देवताओं के लिए नहीं, बल्कि किसी देवता के लिए नहीं। पहले ऐसा कभी नहीं हुआ कि लोग देवताओं को अस्वीकार भी करें और उनकी पूजा भी करें। कभी बुद्धि की पूजा हुई, कभी शक्ति की और कभी उसकी जिसको जीवन, जाति या द्वन्द्वमान कहते हैं। गिरजे छोड़ दिये गये, स्तम्भ तोड़ डाले गये, घण्टे निकाल दिये गये, अब हम कर ही क्या सकते हैं। अब हमें केवल ख़ाली हाथ ऊर्ध्वबाहु होकर खड़े रहना है, क्योंकि यह युग प्रत्यावर्त्तन में ही उन्नति कर रहा है।"

अभिप्राय यह है कि आज पाश्चात्य समाज का मस्तिष्क यह अनुभव तो कर रहा है कि उसके ढाँचे में निराशा की भावना से अधिक और कुछ भी नहीं है। वह समझता तो है कि समाज के वर्त्तमान रूप में वह पंगु है; वह विकास नहीं कर सकता। आज का समाज उसके मार्ग का बहुत बड़ा अन्तराय है; फिर भी वह अपने पुरातन मोह को छोड़ नहीं पाता, या उसे छोड़ने के लिए तैयार नहीं है। देखिए न, एच० जी० वेल्स अपने 'न्यू वर्ल्ड आर्डर' में लिखते हैं—

"तुम मार्क्सवादियों के कहने में न आओ। घोड़े के आगे गाड़ी मत जोतो और न अपने को ज़ीन से बाँधो। यह कहना कि 'जिस समाज में व्यक्तिगत सम्मति की प्रधानता है, उस समाज में पूँजीपति और बुद्धिवादी का नैतिक पतन अवश्यंभावी है, और इस कारण यह ज़रूरी है कि मज़दूर और किसान उनको अपनी सम्पत्ति से बेदख़ल करें', मूर्खता मात्र है।" पर बरट्रांड रसल इस समस्या को जैसे कुछ समझ रहे हैं। अपनी पुस्तक "शिक्षा और आधुनिक संसार" में वे लिखते हैं—

"परिवार, पुरुष और नारी की समानता की कठिन समस्या का समाधान करता है—समाजवाद! वह लड़कों को ऐसी शिक्षा देता है जिसमें से प्रतियोगिता की असामाजिक भावना को दूर कर दिया गया है। उसने एक ऐसी आर्थिक प्रणाली की सृष्टि की है जिसमें गुलामों और स्वामियों का भेद मिट गया है। वह नवयुवकों और नवयुवतियों को आशा प्रदान करता है, जो मृग-मरीचिका मात्र नहीं है। यदि पृथ्वी पर समाजवाद की विजय हो, जैसी कि पूरी सम्भावना है, तो आज की अधिकांश बुराइयों का अन्त हो जाय। यही कारण है कि कुछ त्रुटियों के रहते हुए भी समाजवाद स्वागत के योग्य है।

पश्चिम के अनेक मनीषी यद्यपि समाजवाद के सिद्धान्त से प्रेम करते हैं फिर भी उसके व्यावहारिक रूप से डरते हैं। इस परित्राण के मनोभाव की पृष्ठभूमि में जो शक्ति काम कर रही है, वह है जीवन को पूर्ण रूप से उपलब्ध करने की तीव्र इच्छा। शान्ति, सौन्दर्य, स्वाधीनता और विश्वास—यही उनकी अभिलषित वस्तुयें हैं। यद्यपि समाजवादी क्रान्ति के तत्त्व भी हैं, पर ये महानुभाव क्रान्ति की कल्पना से ही डर जाते हैं। अपनी कामना की पूर्ति के लिए पिछले युग की ओर ताकते हैं। धर्म और संस्कार की रूढ़ियों में वे सन्तोष ढूँढ़ते फिरते हैं। रहस्यवाद के आवरण में वे अपने काल्पनिक जगत् की सृष्टि करते हैं। समाजवाद के विरुद्ध इन विद्वानों की आपत्ति की नींव है 'व्यक्तिगत स्वाधीनता'। उनकी समझ से समाजवादी समाज में व्यक्तिगत स्वाधीनता बहुत संकुचित हो जाती है जब कि सच यह है कि पूँजीवादी सभ्यता इसी 'व्यक्तिगत स्वाधीनता' के नाम पर सच्ची स्वाधीनता का विनाश करती है। मार्क्स ने भी इस प्रश्न का उत्तर यही दिया है। उनका कहना है कि 'बुर्जुआ समाज की दासता से लोगों को स्वाधीनता का भ्रम हो जाता है क्योंकि वे धर्म, उद्योग और सम्पत्ति के बेरोक-टोक आन्दोलन को 'व्यक्तिगत स्वाधीनता' समझ लेते हैं।'

वर्त्तमान सङ्कट का प्रभाव विज्ञान पर भी पड़ा है। औद्योगिक और पूँजीवादी विप्लव के बाद जिस वस्तुवाद की नींव पड़ी थी और हेगेल के आदर्शवाद के स्थान पर फ्रान्स में कोंत इत्यादि ने घनात्मक दर्शन और मार्क्स ने द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद का प्रचार किया, उसके स्थान पर एक नये रहस्यवाद का प्रचार आजकल होने लगा है। यह नितान्त स्वाभाविक है। वर्त्तमान राजनीति की क्रूरता और वर्त्तमान युद्धों की नृशंस लीला की यही स्वाभाविक प्रतिक्रिया थी। आज के वातावरण में विज्ञान निश्चल बन गया है। जिस समाज की मङ्गलकामना ने विज्ञान को जन्म दिया था उस समाज के लिए विज्ञान का व्यावहारिक जगत् में आज कोई स्थान नहीं है। वस्तुतः विज्ञान के क्रियात्मक रूप का आज अन्त हो गया है और उसके सैद्धान्तिक अंश का ही आज बोलबाला है। आज स्लांक जीन्स, हाल्डेन, एडिंगटन, लाज, हालडेन इत्यादि का कहना यह है कि हमारे सामने यह समस्या है कि दुनिया को कैसे इन्द्रियग्राह्य बनाया जाय; न कि इन्द्रियों को उसके उपयुक्त बनाया जाय जिससे दुनिया को ठीक तरह से समझ सकें।

वस्तुजगत् को उन लोगों ने कैसा रहस्यमय बना दिया है, इसका उदाहरण एडिंगटन की मेज़ की कल्पना से मिलता है। एडिंगटन की मेज़, जो कुछ अणु-परमाणुओं की समष्टि मात्र है, वास्तविक मेज़ के दस लाखवें भाग से भी छोटी है। लाज का कथन है कि इस दुनिया की वास्तविकता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या, जो किसी अज्ञात उद्देश्य की प्रेरणा से होती है। जीन्स कहना है कि विश्वप्रकृति मशीन के बजाय कल्पनाशक्ति के अधिक अनुरूप है। उनका विश्व गणितज्ञ की एक अविमिश्र पना है। संक्षेप में विज्ञान आज पूँजीवादी समाजरक्षकों की ली बना हुआ है।

शिल्पकला पर भी इस सङ्कट का अनुरूप प्रभाव है। इस में वर्त्तमान काल का नारा है—'शिल्पी शिल्प के लिए'। नारे को समझने के लिए शिल्पकला के सम्बन्ध में लोगों के भिन्न विचारों को जानने की, और उसके संक्षिप्त इतिहास को मझने की, आवश्यकता है। जर्मन दार्शनिक हेगेल ने यह ाया है कि शिल्पकला के तीन ऐतिहासिक विभाग किये जा कते हैं—(१) आदि, (२) उच्च स्तर का या 'क्लासिकल' और) रोमाञ्चक (रोमाण्टिक)। ऐतिहासिक युग की ये तीनों शेषतायें शिल्प के विषय और उसके अन्तर्निहित भाव के रस्परिक सम्बन्ध पर निर्भर हैं। आदि शिल्प में विषयवस्तु प्राधान्य होता है और भाव की मात्रा कम होती है। ासिकल' शिल्प में भाव और विषय की समानता होती है और ोमाण्टिक' में भाव का इतना अधिक प्राधान्य होता है कि रूप उसका प्रकाश नहीं हो पाता। हेगेल के अनुसार भाव का ह अन्तिम रूप परब्रह्म का रूप है। शिल्प, धर्म और दर्शन नों परब्रह्म के लाभ के विभिन्न मार्ग हैं। शिल्प जिस क्रिया द्वारा यह उद्देश्य साधन करना चाहता है, वह है कल्पना। स प्रकार हेगेल ने शिल्प के विभिन्न प्रकार और उसके ऐतिसिक विकास को एक में मिला दिया है। बेनेडेटो क्रोचे ने स विभाग को कृत्रिम बतलाया है। उन्होंने शिल्पकार को री स्वतन्त्रता दी है और कहा है कि कलाकार अपनी उपलब्धि अनुसार ही किसी रूप को प्रतिमूर्त्त करता है। और उसकी ली पर टीका-टिप्पणी करने का अधिकार किसी को नहीं है।

उपर्युक्त दोनों व्याख्याओं से मार्क्स की भिन्नता यह है कि न्होंने इसको समाज के प्रभाव से संयुक्त नहीं किया। मार्क्स अनुसार शिल्पी-समाज सचेतन है। वस्तु ही भाव को पैदा रती है और समाज की भिन्न अवस्था, रूप और व्यवस्था साथ शिल्पी में भी परिवर्त्तन होता रहता है। शिल्पी का र्त्तव्य है युगादर्श को रूप देना और युग-परिवर्तन के विरोधों ा प्रस्फुटित करना।

शिल्प-सम्बन्धी इन विचारों पर वर्तमान सङ्कट का यह भाव पड़ा है कि शिल्पी को दिग्भ्रम हो गया है। आर्थिक त्र में जैसे बाज़ारों के अन्धे नियमों के वश में उत्पन्न माल का भुत्व उत्पादकों पर होता है, उसी प्रकार शिल्प का प्रभुत्व शिल्पी र हो गया है। शिल्पी स्वेच्छा से समाज के कल्याण के लिए पनी शक्ति का प्रयोग नहीं कर सकता, वह शिल्प को समाज अलग कर लेता है और शिल्प एक स्वतन्त्र सत्ता बनकर अपने भ से शिल्पी को दबा देता है। वर्तमान शिल्प की संकीर्णता और अनुदारता आधुनिक समाज की विषमता का ही परिणाम है। भूख और बेकारी ने शिल्प को भी पंगु बना रक्खा है। आज शिल्पी अनुभूति की बुभुक्षा और व्यक्तित्व के विनाश का रोना रो रहे हैं। प्रतिभावान् शिल्पी वही है जो इस समाज के अन्तर्विरोधों को रूप देते हुए नये समाज के आगमन की घोषणा करता है। वर्तमान युग की निराशाओं के भीतर से आशा-किरणों को खोज निकालना और उनको प्रकाश करना ही सच्चे शिल्पियों का काम है। शिल्प, विज्ञान और समाज में आज जो घुन लग रहा है उसका कारण है वर्तमान अर्थसङ्कट।

वर्तमान सङ्कट की चक्की में पिसकर समाज आज पुञ्जीभूत व्यथा को हृदय में लेकर दिग्भ्रमित हो रहा है। प्रगतिपूर्ण साहित्य इस निराशा के अन्धकार से ज्योति विकीर्ण कर, समाज को जीवन का रास्ता दिखाता है परन्तु साधारण साहित्य साहित्यक के व्यक्तिगत दुःखों का समूह बनकर इस अन्धकार को और गम्भीर बनाता जाता है। इन साहित्यिकों के सामने मृत्यु सदा नाचती रहती है। मृत्यु की कराल विभीषिका ने इनको अभिभूत कर रक्खा है। मत्यु की विषाद-कालिमा में ही ये सुख-सन्तोष की खोज करते रहते हैं। विज्ञान मृत्यु से भयभीत होकर जीवन से भागता नहीं, वह मनुष्य को मृत्युञ्जय बनाने की चेष्टा करता है। साहित्य की सार्थकता इसी में है कि अतीत में मुँह न छिपाकर भविष्य का रास्ता उज्ज्वल करे। वर्तमान सङ्कटमय जीवन के दुःखों से त्राण पाने के लिए साहित्यिक आज धर्म में आश्वासन ढूँढ़ता है। परन्तु सच्ची सान्त्वना तो कर्म में है। कर्म-संन्यास से नहीं बल्कि कर्ममय जीवन से ही मृत्युञ्जय बना जा सकता है। और सच तो यह है कि मृत्यु कोई बुरी चीज़ नहीं है; दुनिया के गलीज़ और जञ्जाल को यह साफ़ करता रहता है; जो अपना जीवन पूरा करने के बाद भी दुनिया का भारस्वरूप बना है उसको वह चिरशान्ति की गोद में सुलाता है; मृत्यु जीवन को और सुन्दर बनाता है।

वर्तमान सङ्कट में शिल्प और साहित्य घोर व्यक्तिवादी हैं। इस व्यक्तिवाद के मूल में पूँजीवादी विचार ही है। परन्तु पूँजीवादी जीवन आज बहुत ही संकुचित है—जीवन की मुक्त धारा तो समूहवाद में ही है। सामूहिक जीवन और क्रिया ही आज साहित्य को जीवन प्रदान कर सकती है। समूह ही मानसिक शक्ति का केन्द्र है और इस केन्द्र को समृद्ध करने से ही साहित्य और शिल्प समृद्ध हो सकता है। यदि साहित्य विस्तृत और व्यापक न बनकर इने-गिने व्यक्तियों में ही सीमित रहा तो इसका विनाश अवश्यम्भावी है। यही कारण है कि आज साहित्यिक को व्यक्तिवाद और समूहवाद इन दोनों में से एक को चुन लेना होगा। इनके बीच का कोई रास्ता नहीं है। जैसे एक कवि ने कहा है कि दो सन्निकट जलती हुई अग्नि-शिखाओं के बीच मनुष्य नहीं चल सकता है—प्रेतात्मा ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचरण कर सकता है। इन मार्गों में से एक प्रगति-विरोधी है दूसरा प्रगतिशील है। व्यक्तिवाद तो वर्तमान समाज के आघातों से बचने के लिए ही व्यक्ति का निष्फल प्रयास है। इस समाज के सम्पूर्ण रूपान्तर के बाद ही व्यक्तित्व के विकास की सम्भावना है। पूँजीवादी सभ्यता के दलदल में फँसा हुआ समाज आज व्यक्तियों के बीच एक भीषण संग्रामस्थल है। व्यक्तिवाद इस सङ्घर्ष की कटुता को अनुभव कर निराशा का गीत गाता है और समाजवाद इस सङ्घर्ष की दिशा बदलकर सङ्घर्ष की शक्ति का प्रकृति की दुर्दम शक्तियों के विरुद्ध प्र करता है और प्राकृतिक शक्तियों पर विजय प्राप्त कर इ मानवहित का साधन बनाता है। इसी लिए समाजवादी सा जीवन को स्पन्दन से स्फूर्त करता है और एक नवीन आश सञ्चार करता है। भारतीय संस्कृति का भी सर्वोच्च आ यही है—'आनन्दमिदं सर्वं यद् विभाति'।

——

भिक्षु

श्रीयुत मदनमोहन 'राकेश'

विदिशा से विहार पाँच कोस पर था। इसकी भी एक कहानी है। जहाँ पर विहार था, विदिशा के आसपास सबसे रमणीय-स्थान यही था। पर दस वर्ष पहले लोग उधर जाने से डरते थे। श्रुति-परम्परा ऐसी थी कि जो अभागे कभी उधर गये, लौटकर नहीं आये। बड़े-बड़े साहसी उस ओर क़दम बढ़ाते कतरा जाते थे। दस ही वर्ष पहले बौद्ध भिक्षुणी विपाला अन्यान्य भिक्षु-भिक्षुणियों के साथ विदिशा में आई थीं। उन्होंने इसी स्थान पर विहार निर्माण करने का निश्चय किया। भिक्षुओं और भिक्षुणियों की विपाला माँ पर असीम श्रद्धा थी। जिस दिन वे सब उधर गये, लोगों को उनमें से एक के भी जीवित वापस आने में सन्देह था। पर दूसरे ही दिन अमित और अजित दो भिक्षु नगर में भिक्षा के लिए आये हुए थे। देखने-वालों ने समझा विपाला माँ कोई देवी हैं—योगिनी। कहने-वालों ने तो यहाँ तक कह डाला कि सभी सिद्धियाँ उनके वश में हैं।

विपाला माँ विहार की अधिष्ठात्री थीं। दस वर्ष वे विहार के अन्दर ही रहीं। अब वे बूढ़ी हो चली थीं। इन दस वर्षों में विदिशा का विहार विशेष ख्याति प्राप्त कर चुका था। विपाला माँ के प्रति श्रद्धा लिये हुए पाटलिपुत्र तथा अन्यान्य विहारों से भिक्षु-भिक्षुणियाँ यहाँ आते। कई बार बड़े-बड़े धर्मा-चार्यों के दर्शन करके विपाला माँ का हृदय गद्गद हो उठता।

× × × ×

उपासना-मन्दिर में प्रवेश करते हुए मृत्युञ्जय ने देखी—एक देवी-प्रतिमा बिखरे-से पत्रों को समेटती हुई। भिक्षु की आँखें अपने आप झुक गईं। वह शारदा विहार से आ रहा था। विहार में पहुँच, स्नान आदि से निवृत्त हो वह विपाला माँ के दर्शनों को चला। पूछने पर भिक्षुओं ने उपासना-मन्दिर की ओर सङ्केत कर दिया। पर वह उपासना-मन्दिर की देहली पर ही रुक गया। पत्रों को बटोरकर भिक्षुणी ने नम्र भरी आँखों से उसकी ओर देखा। सरल निष्कपट दृष्टि ने भिक्षु के स को बहुत कुछ दूर कर दिया। मृत्युञ्जय ने जल्द-गम्भीर से प्रश्न किया, 'विपाला माँ के दर्शन कहाँ होंगे, दे सिर से पाँव तक मृत्युञ्जय को देखकर भिक्षुणी ने पूछा—' विहार से, भिक्षु?'

'शारदा' कहकर उसने फिर चारों ओर देखा और कह 'उपासना-मन्दिर यही है, देवि?'

'हाँ, माँ अभी आ जायेंगी, बैठो।' अब भिक्षुणी ने आसन डाल दिया और धीरे-धीरे पीछे के पर्ण-द्वार से चली

मृत्युञ्जय आसन के पास आकर खड़ा हो गया। एक उ हुई दृष्टि उसने धम्मपद के पत्रों पर डाली जिन्हें भिक्षु समेट दिया था।

'बैठ जाओ, भिक्षु', उसके कानों ने सुना। आँखें उ विपाला माँ की सौम्य-गम्भीर मूर्त्ति को मृत्युञ्जय ने देखा। उमड़ पड़ा। दोनों हाथ जोड़कर उसने नमस्कार कि विपाला माँ आकर चौकी पर बैठ गईं। सङ्केत पा मृत्युञ्ज भी आसन ग्रहण किया।

'शारदा विहार से?'

भिक्षु ने सिर हिला दिया।

'यहाँ रहोगे?'

'यदि माँ की अनुज्ञा हो', और उसका सिर झुक कुछ देर मौन रहकर विपाला माँ ने गम्भीर कण्ठ से पू 'आज अपने लिए भिक्षाटन कर चुके?'

मृत्युञ्जय चौंक उठा। उसे जैसे कर्त्तव्य का बोध हु वह उठा और माँ को प्रणाम करते हुए बोला—'जा रहा हूँ' वह चला गया।

पर्णद्वार से भिक्षुणी फिर अन्दर आ गई। विपाला स्नेहपूर्ण दृष्टि उस पर डालते हुए बैठने के लिए सङ्केत और पूछा—'तुम्हारे मुख पर चिन्ता की रेखायें क्यों बन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं, तारा ?' तारा ने बैठते हुए माँ की ओर देखा। माँ फिर कहा—'कई दिनों से मैंने तुम्हें देखा है, तारा ! भिक्षुणी हृदय पर कैसा बोझ ?'

आँखें नीची करके तारा ने उत्तर दिया—'तुम तो सब नती हो, माँ !'

'इन गहरी स्पष्ट रेखाओं को तो कोई भी पढ़ सकता है, रा !' माँ ने उसके सिर पर हाथ फेरा।

'माँ !' तारा ने एक गहरी साँस ली।

'कहो न बेटी ! माँ से छिपाकर क्या रक्खोगी ?' माँ ने रा का मुँह ऊपर उठाया। तारा रो पड़ी। उसका सिर माँ की ती से जा लगा। किसी तरह अपने को सँभालकर धीरे से ने कहा—'मुझे किसी दूसरे विहार में भेज दो माँ, यद्यपि हारे चरणों से पृथक् होना मेरे लिए मृत्यु से कम नहीं।'

विपाला माँ चौंक उठीं। उन्होंने कहा—'स्पष्ट कहो तारा।'

कुछ रुककर तारा ने कहा—'माँ, तुम्हारे औरस पुत्र संघ- त्र—जिन्होंने बचपन से तारा को छोटी बहन की तरह प्यार या—अपनी दृष्टि में अन्तर ला रहे हैं। उन्होंने एक-आध र जो कुछ कहा, वह तारा के हृदय को मसल देने के लिए ति था। कभी-कभी मैं रात्रि को अपनी कुटी के पास पैरों आवाज़ सुनती हूँ तो सिहर उठती हूँ। मुझे उनसे डर ता है, माँ !' तारा की आँखों में आँसू फिर छलछला आये।

विपाला माँ की आकृति गम्भीर से गम्भीरतर होती जाती थी। न्त में उन्होंने कहा—'तुझे भ्रम है तारा ! संघमित्र मेरे पेट पैदा हुआ है। उससे किसी प्रकार की दुराशा तुम्हें न होनी हिए। फिर भी तुम्हारे कथन को मैं निराधार नहीं कहना हती। संघमित्र की उचित परीक्षा हो जायगी। तुम्हें हार छोड़ने की आवश्यकता नहीं।'

तारा सिर झुकाये बैठी रही। विपाला माँ ने 'धम्मपद' के को पलटना शुरू किया।

तारा के शब्दों ने विपाला माँ की नैसर्गिक शान्ति को भङ्ग दिया। संघमित्र के लिए उनके हृदय में मातृ-स्नेह या त्सल्य ही हो, ऐसी बात नहीं। विहार के सब भिक्षुओं में मित्र धम्म और संघ के सिद्धान्तों में सर्वाधिक प्रवीण था। ही नहीं, उसकी वक्तृता-शक्ति—सरल भाषा में निज सिद्धान्तों समझाने की क्षमता—अद्वितीय थी। विपाला माँ के हृदय में सके लिए सम्मान भी था। पर उनका तारा पर स्नेह कम हीं था और न उस पर अविश्वास करने का कोई कारण था। पाला माँ की अपनी धारणा थी कि तारा को किसी बात से म हो गया है। फिर भी संघमित्र पर दृष्टि रखना आवश्यक । अपने हृदय के भाव को उन्होंने संघमित्र पर प्रकट न ने देने की पूर्ण चेष्टा की।

मृत्युञ्जय को विहार में आये कई सप्ताह हो चले थे। इतने समय में सब भिक्षु-भिक्षुणियों के हृदय में उसके प्रति सहज-सौहार्द पैदा हो चला था। वह जितना ही नम्र-हँसमुख था उतना ही प्रतिभा-सम्पन्न और विचारवान्। अभिमान तो उसमें नाम-मात्र को न था। तारा का अधिक समय विपाला माँ के पास ही व्यतीत होता था। भिक्षु-भिक्षुणियों में वह रहती ही कम थी। मृत्युञ्जय को उसने कई बार देखा, उसकी प्रशंसा भी सुनी। पर विशेषतया उसे व्यक्तिगत रूप से जानने का न तो उसे अवसर मिला न आवश्यकता ही हुई।

मृत्युञ्जय विपाला माँ पर अटूट आस्था रखता था। उनके बाद वह सम्मान करता था, भिक्षु सङ्घमित्र का। भिक्षुओं में चर्चा थी कि विपाला माँ के उपरान्त मठ का अधिष्ठातृत्व भिक्षु सङ्घमित्र को ही सौंपा जायगा। पर मृत्युञ्जय के विनम्र होते हुए भी भिक्षु सङ्घमित्र न जाने क्यों उससे चिढ़ने लगा था। वह बात-बात पर उसे अल्पज्ञ प्रमाणित कर उसकी हँसी उड़ा देना चाहता। एक दिन तो उसने कुछ ऐसे शब्द कह दिये जिनसे मृत्युञ्जय के आत्माभिमान को काफ़ी ठेस लगी। धम्म की परिभाषा पर विवाद था। व्यक्तिगत आक्षेप को मृत्युञ्जय सहन न कर सका। वह विचलित हो उठा।

बात विपाला माँ के कानों तक पहुँची। यह सङ्घमित्र की दूसरी शिकायत थी। आज भी उन्होंने सङ्घमित्र को कुछ नहीं कहा। पर उसकी कठिन परीक्षा का निश्चय मन ही मन कर लिया।

मृत्युञ्जय को जीवन में पहली बार अपमान सहन करना पड़ा था। उसने शीघ्र ही वहाँ से चल देने का निश्चय किया। विहार की कुछ चीज़ों के प्रति उसका विशेष आकर्षण हो गया था। विहार के सब जड़-चेतन उसे अपने सगे-से लगते थे। उसे डर था कि प्रत्यक्ष रूप से जाने से कई अन्य भिक्षु उसके साथ न होलें। इस प्रकार विपाला माँ के हृदय को चोट लगने की सम्भावना थी। अतः उसने अर्द्धरात्रि को चल देने का निश्चय किया।

रात्रि को जब सब सो चुके, मृत्युञ्जय धीरे से उठा। मन ही मन विपाला माँ को प्रणाम कर वह निकल पड़ा। मृत्युञ्जय के पैर चलते थे तो हृदय पीछे खींच ले जाना चाहता; हृदय आगे बढ़ने को उत्साह देता तो पाँव रुक-रुक जाते। वह चलता तो रुकने के लिए; रुकता तो चलने के लिए। इसी असमञ्जस में वह कुछ ही क़दम बढ़ा था कि पत्तों की खड़खड़ाहट ने उसके पाँव बाँध दिये। इस भय से कि कोई देख न ले, वह मूर्त्तिवत् खड़ा हो गया। उसने इधर-उधर देखा। फिर पत्तों में खड़खड़ाहट हुई। साथ ही स्त्रीकण्ठ की क्षीण अस्पष्ट-सी आवाज़ सुनाई दी। मृत्युञ्जय चौकन्ना हो गया। उसने ध्यान से सुना। इस बार शब्द स्पष्ट थे—'माँ की अस्वस्थता का बहाना करके तुमने मुझे क्यों बुलाया ? तारा तुम्हारी बहन है, उसे जाने दो, सङ्घमित्र !' स्वर तारा का ही था। मृत्युञ्जय को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खड़ा रहना भारी हो गया। पत्रों की ओट में दो मूर्त्तियों को हिलते उसने देखा। उसने देखा पुरुष-मूर्ति ने तारा के दोनों हाथ पकड़ लिये। तारा के मुँह से हल्की-सी चीख़ निकली जिसमें रुदन का करुण स्वर मिश्रित था। मृत्युञ्जय के गम्भीर कण्ठ से निकला—'ठहरो।' सङ्घमित्र चौंक उठा। तारा के हाथ उसके हाथों से छूट गये। मृत्युञ्जय ने उसे देख लिया था, अतः भागने से कोई लाभ न था। मृत्युञ्जय की ओर उसने घूरकर देखा और दाँत पीसकर कहा—'तू यहाँ!' एकदम उसने मृत्युञ्जय की कनपटी पर मुष्टि-प्रहार किया। मृत्युञ्जय ने वार बचा लिया। दोनों परस्पर गुथ गये।

तारा ने दूर से उस मुष्टि-युद्ध को देखा। उसने यह भी देखा कि लड़ते-लड़ते दोनों गिरे, सङ्घमित्र भी मृत्युञ्जय भी। वह विपाला माँ की कुटी को भाग चली।

विपाला माँ ने सब कुछ सुना। आधी रात को मृत्युञ्जय के निकल पड़ने के कारण का अनुमान भी बहुत कुछ उन्होंने कर लिया। वे धैर्य के साथ उठीं पर साथ ही अचेत होकर गिर पड़ीं। तारा ने भिक्षु-भिक्षुणियों को जगा दिया। झाड़ियों से सङ्घमित्र एवं मृत्युञ्जय को चिकित्सा-शाला में पहुँचाया गया। सबने इस घटना को दोनों के परस्पर मन-मुटाव का ही फल समझा। सङ्घमित्र का सिर बुरी तरह फट गया था; मृत्युञ्जय को भी गहरी चोट लगी थी। विपाला माँ की शुश्रूषा उनकी कुटी में ही होने लगी।

शारीरिक एवं मानसिक आघात से प्रातःकाल से पहले ही सङ्घमित्र के प्राण निकल गये। मृत्युञ्जय अभी तक बेहोश था। विपाला माँ एक बार होश में आ, सङ्घमित्र की मृत्यु का समाचार सुन फिर बेहोश हो गई थीं। पर सब का ध्यान विशेष रूप से मृत्युञ्जय की ओर लगा था, क्योंकि उसके प्राण किसी भी समय निकल सकते थे। तारा ने उसकी शुश्रूषा अपने हाथ में ले ली थी।

सायङ्काल होने तक सङ्घमित्र का शव जलाया जा चुका था। विपाला माँ काँपते पैरों से आ, एक बार मृत्युञ्जय की अवस्था देख गई थीं। वह अभी तक बिल्कुल निश्चेष्ट पड़ा था। जीवन का कोई लक्षण था तो रुक-रुककर चलता हुआ श्वास-निःश्वास। तारा निरन्तर उसके पास रही। सबके कहने पर भी न उसने कुछ खाया न विश्राम किया। आधी रात को मृत्युञ्जय ने आँखें खोलीं। उसका सिर तारा की गोद में था। तारा ने आँखों में आँसू भरकर उसकी ओर देखा। मृत्युञ्जय ने फिर आँखें मूँद लीं। अब तारा ने पहली बार कुछ विश्राम करने की सोची। उसका शरीर शिथिल पड़ रहा था। वह धीरे से उठकर चली गई।

मृत्युञ्जय ने अपनी चेतना में पहली बार किसी युवती के अङ्ग-स्पर्श का अनुभव किया था। उसके हृदय में न जाने क्यों एक भावना-सी उठी जो अस्थिर [illegible] शरीर दर्द कर रहा था। फिर भी बिना चाहे ही वह ता[illegible] विषय में सोचता जा रहा था। वह चिन्तन उसे अपनी[illegible] के लिए लेपन-सा लग रहा था। मस्तिष्क पर अधिक [illegible] डालने से वह फिर बेहोश हो गया।

तारा को वहाँ से जाकर भी विश्राम नहीं मिला। [illegible] माँ की दशा बिगड़ रही थी। सूचना पा, तारा सीधी [illegible] पास पहुँची। पर वे तो अन्तिम श्वासों पर थीं। तारा ने [illegible] पैरों में सिर रख दिया। विपाला माँ ने कठिनता से [illegible] 'क्षमा करना तारा बेटी! मैंने समयानुसार तुम्हारी बातों पर [illegible] नहीं दिया, नहीं तो...'और उनका गला रुँध गया। तारा [illegible] के पैरों में मुँह छिपाये रोती रही। कुछ ही देर बाद 'धम्मं [illegible] गच्छामि' की ध्वनि ने जैसे उसे जगा दिया। विपाला [illegible] जा चुकी थीं।

विपाला माँ का अन्त्येष्टि-संस्कार हो जाने के अनन्तर [illegible] खूब जी भरकर रोई। रो चुकने पर वह उठ बैठी। [illegible] कर्तव्य उसके सामने था। वह मृत्युञ्जय की ओर चल[illegible] अभी तक बेहोश था। तारा आँखें पोंछकर उसके पास बैठ[illegible]

शोक की घड़ियाँ एकाकीपन में इतनी लम्बी हो जा[illegible] इसका तारा को अब अनुभव हुआ। इस बार मृत्युञ्ज[illegible] दिन और दो रात बेहोश ही रहा। तारा के लिए जैसे दो[illegible] बीत गये। आँखें भर आतीं तो वह पोंछ लेती। हृदय [illegible] होने लगता तो धम्म-पद के पृष्ठ उठा लेती। दो दिन के [illegible] मृत्युञ्जय की आँख जिस समय खुली, उसका सिर तारा की [illegible] में ही था। बेहोशी की अवस्था में सञ्जीवनी की जो मा[illegible] उसके अन्दर ढाली गई थीं, उनसे उसका मुख अभी [illegible] कड़ुआ था। तारा ने उसके सिर पर हाथ फेरना शुरू कि[illegible] मृत्युञ्जय को गत घटनायें याद आने लगीं। उसने तारा [illegible] ओर देखा। तारा की आँखें रो-रोकर लाल हो गई [illegible] चेहरा पीला पड़ गया था। पर मृत्युञ्जय को लगा, [illegible] सुन्दरी है—बहुत सुन्दरी। वह नहीं जानता था, ऐसे [illegible] उसके हृदय में क्यों उठ रहे थे। आज तक किसी [illegible] विषय में उसने ऐसा नहीं सोचा था। आज, जब उसका [illegible] तारा की गोद में था, उसके अपने ही विचार वश से बाहर [illegible] जा रहे थे। शरीर भारी और शिथिल था। अन्दर से [illegible] एक धिक्कार-पूर्ण-सा स्वर निकलता सुन पड़ता था—'मृत्यु[illegible] यह रास्ता मृत्यु का है।' पर वह इस मीठे अनुभव [illegible] विलीन हो जाता था। मृत्युञ्जय ने काँपते स्वर से [illegible] 'तारा!'

तारा का आवेग जैसे आश्वासन पाकर फूट पड़ा। [illegible] से रुँधे कण्ठ से उसने कहा—'भैया!'

मृत्युञ्जय के शिथिल शरीर एवं शिथिल हृदय को [illegible] लगा। शरीर में सिर से लेकर पाँव तक झनझनाहट [illegible] उसने धीरे से कम्पित स्वर में कहा—'नहीं तारा!'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तारा ने आँसू पोंछ लिये थे। मृत्युञ्जय ने क्या कहा, नहीं समझी। उसने भोलेपन से प्रश्न किया—'क्या ों, भैया ?'

मृत्युञ्जय ने तारा की आँखों में देखा। तारा ने उन आँखों वासना की विभीषिका को पढ़ा। ऐसे ही एक दिन उसने मित्र की आँखों को देखा था। वह डर गई। वह मुँह कर उठी और वहाँ से चली गई। मृत्युञ्जय को लगा जैसे सी ने उसे गहरी अतल खाइयों में ढकेल दिया हो। उसकी खों में आँसू आ गये। वह फिर बेहोश हो गया।

मृत्युञ्जय में अब शिथिलता ही बाक़ी थी। इस बार जब की आँख खुली, रात बहुत जा चुकी थी। तारा उसके पास ी थी। थोड़ी ही दूर एक भिक्षु ऊँघ रहा था। उसे तारा वहाँ न रहने का कारण समझते देर नहीं लगी। उसका दय क्षोभ और ग्लानि से भर आया। उसे अपने आपसे ही ा होने लगी। इन्हीं विचारों में प्रातःकाल हो गया। वह ात्ताप की आग से जल रहा था। उसका हृदय विपाला माँ चरणों पर सिर रखकर रो देने के लिए उतावला हो उठा। ने दिनों के बाद पहली बार वह पैरों पर खड़ा हुआ। सिर चकराने लगा। भिक्षु अभी तक सो रहा था। उसने कठिनता से मृत-सञ्जीवनी की एक मात्रा ढालकर पी और उपासना-मन्दिर की ओर चला। उपासना-मन्दिर तक उसे कोई नहीं मिला। मार्ग में दो-तीन बार उसने विश्राम किया। कठिनता से वह उपासना-मन्दिर की देहली तक पहुँचा। उसका सिर चकरा रहा था तथा आँखों में अँधेरा छा रहा था। अन्दर चौकी पर विपाला माँ की अस्पष्ट-सी मूर्ति उसने देखी। बाहर से ही उसने झुककर प्रणाम किया। माथे को देहली से छुलाते हुए उसने रुँधे कण्ठ से कहा—'मुझे क्षमा कर दो, माँ, मैंने पाप किया है।' इतना कह मृत्युञ्जय ने सिर उठाया। सामने विपाला माँ की चौकी पर तारा गम्भीर मुद्रा में बैठी थी। वह अब सर्व-सम्मति से मठ की अधिष्ठात्री बना दी गई थी। मृत्युञ्जय के उठते ही उसने गम्भीर पर सौम्य वाणी में कहा—'विपाला माँ का निर्वाण हो चुका। उनकी समाधि पर फूल चढ़ा आओ, भिक्षु !'

मृत्युञ्जय ने आँखें नहीं उठाईं। आँसू झरझर गिर रहे थे। उसने काँपते हाथों को जोड़कर प्रणाम किया और विपाला माँ की समाधि की ओर काँपते पैरों से चल पड़ा।

——

हिन्दी साहित्य में व्यंग्यात्मक आलोचना

श्रीयुत कपिलदेवसिंह, एम० ए०

अँगरेज़ी साहित्य में व्यंग्यात्मक आलोचना के निम्न-लिखित र स्थूल भेद किये गये हैं :—(१) लेंपून, (२) बर्लेस्क, (३) लीगोरी तथा (४) पैरोडी।

लेंपून को उपहासात्मक व्यक्तिगत आलोचना कहते हैं। सका लक्ष्य लेखक की रचना का छिद्रान्वेषण करना तथा उसके क्तित्व पर आक्षेप करना है। आलोच्य विषय की विधिवत् लोचना न करके लेखक की खिल्ली उड़ाना ही इसका एकमात्र द्देश्य है।

बर्लेस्क को निरुपद्रव हास्यात्मक आलोचना कहते हैं। इसका य लेखक की रचना का हास्यात्मक अनुकरण करना है। माने के अतिरिक्त लेखक का किसी तरह जी दुखाना इसका भीष्ट नहीं। इसमें मनोरञ्जन की प्रधानता रहती है।

एलीगोरी को रूपकात्मक आलोचना कहते हैं। इसका द्देश्य लेखक की रचना को किसी वस्तु के उपलक्ष्य में रखकर से छिपे-छिपे व्यंग्य का (Satire) निशाना बनाना है। रोध, विसङ्गति तथा विपर्यास के आधार पर यह आलोचना-शेष उठाई जाती है। बहुधा आलोचक अर्थान्तर से भी काम ता है।

पैरोडी को परिहासात्मक आलोचना कहते हैं। इसका प्रयोजन कवि की मूल कविता को न्यूनाधिक मात्रा में रूपान्तरित करना है। गद्य-पद्य दोनों में काव्य-परिहास प्रस्तुत किया जा सकता है। इसमें हास्य के साथ ही साथ मधुरता का भी प्रचुर परिमाण में रहना अत्यावश्यक है।

हिन्दी-साहित्य में व्यंग्यात्मक आलोचना की कमी नहीं है। व्यंग्य युग के प्रतिनिधि पण्डित प्रतापनारायण मिश्र तथा प्रमुख लेखक बाबू बालमुकुन्द गुप्त की शैली व्यंग्य-प्रधान है। किन्तु हिन्दी साहित्य में व्यंग्यात्मक आलोचना के जन्मदाता पण्डित महावीरप्रसाद द्विवेदी हैं। उनके बाद पण्डित पद्मसिंह शर्मा से लेकर पण्डित रामचन्द्र शुक्ल तक उक्त प्रकार की आलोचनायें, किसी न किसी रूप में, हिन्दी साहित्य में पाई जाती हैं।

द्विवेदीजी की व्यंग्यात्मक आलोचना बड़ी ही तीखी और चुभती हुई होती है। वे 'अनस्थिरता' शब्द की पैरवी करते हुए निम्नलिखित पंक्तियाँ लिखते हैं—

"फिर हम आलोचना कर कैसे सकते हैं ? और समालोचकों के पास आलोचना का 'लाइसेंस' है; बाबू साहब समालोचना के लाइसेंस होते हैं। इसी से उनको समालोचना करने का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अख़्तियार है।.....क्यों? समालोचकों के हाईकोर्ट का रूलिंग ही ऐसा है!

".....नायिका का नाम गुप्ता सुना गया था; पर अब गुप्ता नायक भी पैदा हो गये। गुप्ता शब्द संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, आदि सब भाषाओं के व्याकरण से सही है; पर 'अनस्थिरता' नहीं। क्यों? ज़ुबाँदानों का हुक्म! और हुक्म भी कैसा? 'स्थिर' में 'अन' लग जाय; पर स्थिरता में न लगने पावे!"

शर्माजी की व्यंग्यात्मक आलोचना जहाँ तिलमिला देनेवाली होती है वहाँ लोट-पोटकर हँसानेवाली भी। अँगरेज़ी के नक़ालों की वे इन शब्दों में ख़बर लेते हैं:—

"ख़ैर; इसकी तो शिकायत ही फ़िज़ूल है। देशी शब्दों को विदेशी के अनुकरण में अन्धा-धुन्ध बिगाड़-बिगाड़कर लिखना, हमारे अँगरेज़ीदाँ विद्वानों का 'जन्मसिद्ध अधिकार' है। भगवान् बुद्ध को, 'भगवाना बुड्ढा' और वनलता देवी को 'बोनो लोटा डेवी' लिखना और बोलना उनके फ़ैशन में दाख़िल है। भले ही इनकी इन अठखेलियों से नावाक़िफ़ अँगरेज़ी न जाननेवाले 'बुद्धू' (अशिक्षित) उर्दू-हिन्दी के पाठक भ्रम में पड़ जायँ, पर वे अपनी यह 'साहिबाना' चाल किसी तरह न छोड़ेंगे पर न छोड़ेंगे।"

शुक्लजी की व्यंग्यात्मक आलोचना भी कम प्रभावोत्पादक नहीं है। उनके व्यंग्य को हम 'मधुमिश्रित कुनैन' की तरह विनोद-चर्चित कटाक्ष कह सकते हैं। 'छायावाद' के विरुद्ध अपनी आवाज़ बुलन्द करते हुए वे कहते हैं—

"इसी अन्योक्ति-पद्धति को कवीन्द्र रवीन्द्र ने आजकल अपने विस्तृत प्रकृति-निरीक्षण के बल से और अधिक पल्लवित करके जो पूर्ण और भव्य स्वरूप प्रदान किया है वह हमारे नवीन हिन्दी साहित्य-क्षेत्र में 'गाँव में नया-नया ऊँट' हो रहा है। बहुत से नवयुवकों को अपना एक नया हौसला हो गया है।.....बहुतेरे ऊटपटाँग चित्र खड़ा करने और कुछ असम्बद्ध प्रलाप करने को ही 'छायावाद' की कविता समझ अपनी भी कुछ करामात दिखाने के फेर में पड़ गये हैं।"

हमारे हिन्दी साहित्य में उपर्युक्त चार प्रकार की व्यंग्यात्मक आलोचनाओं के भी यथेष्ट उदाहरण उपलब्ध हैं।

१—उपहासात्मक व्यक्तिगत आलोचना के अन्तर्गत 'आत्माराम तथा आत्माराम की टें टें' नामक वह प्रसिद्ध वाद-विवाद आ सकता है, जो चतुर्वेदीजी तथा पण्डित गोविन्दनारायण मिश्र के बीच सरस्वती, मर्यादा प्रभृति में वर्षों चलता रहा था। तदुपरान्त, 'साहित्य-कला और प्रेमाश्रम' के शीर्षक से 'प्रभा' में (जुलाई १९२२ से लेकर जुलाई १९२३ तक) सर्वश्री रघुपतिसहाय, हेमचन्द्र जोशी, रामदास गौड़ और 'साहित्य' के बीच, जो प्रेमचन्द के 'प्रेमाश्रम' पर आलोचना-प्रत्यालोचना चली थी, उसे भी हम इसी वर्ग में रख सकते हैं। श्री (अब डॉक्टर भी) हेमचन्द्र जोशी ने लिखा—

"मैंने समालोचना पढ़ी तो दङ्ग रह गया। यह देखकर आनन्द हुआ कि समालोचना का ढङ्ग अँगरेज़ी समालोचना-सा है—विश्व-साहित्य के कई नर-पुङ्गवों से तुलना की गई। किन्तु यह देखकर दुःख हुआ कि तौल ठीक नहीं उतरी। पारखी की आँखें धुँधली हैं। (हो सकता है कि मुझे चश्मा लगाने की ज़रूरत हो। यदि कोई निदान करके मुझे यह सुझा देगा तो मैं अपनी आँखें सुधारने की कोशिश करूँगा।)"

इसे पढ़कर स्वर्गीय अध्यापक रामदास गौड़ ने यह लिख दिया था—

'बाबू रघुपतिसहाय की समालोचना उनके नज़दीक खरी नहीं उतरी' पारखी की आँखें धुँधली हैं। मेरी भी निगाहों से जोशीजी की समालोचना एवं प्रत्यालोचना 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' से मंज़िलों दूर है.....परन्तु मैं जोशी के जोश और साहस की सराहना किये बिना नहीं रह सकता। हमारे नये जौहरी और प्रवीण पारखी स्वदेशोद्भूत साहित्य को अभी विदेशी काँटों पर तौलते हैं, उसे गोरी कसौटी पर कसते हैं, और साथ ही 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' की दुहाई भी देते हैं!"

इस पर जोशीजी ने फिर लिखा—

"एक और एक मिलाकर दो होते हैं। कोई तीन कहे तो मुझ जैसा पुरुष भी उसे ग़लत बतलाने को तैयार हो जाता। पुराने जौहरी और परम प्रवीण की तो बात ही अलग है।

"जो हो, अपने पुराने अध्यापक और नये शिक्षक गौड़ की आज्ञा शिरोधार्य करके.....क्या मैं स्वदेशोद्भूत साहित्य इन आचार्यों से आनातोले फ़्रांस के शब्दों में यह पूछूँ कि के यहाँ अपना मत रखना भी अपराध गिना जाता है? हाँ तो मैं कहूँगा कि मैं अपराधी हूँ।"

तब श्री 'साहित्य' ने यह लिखकर कि "जब किसी जाति राष्ट्र का अधःपतन हो जाता है तब उसे अपने ऊपर विश्वास रहता। उसे अपनी सभी चीज़ें दूसरे की तुलना में तुच्छ जान पड़ती हैं।.....यह इश्तहारबाज़ी का ज़माना है। अपना ढोल पीटना आता है, वह दूसरों पर अपनी सारी कीर्ति का रोब जमा देता है। चारों ओर वाह-वाह लगती है। नाम सुनकर रोब में न आइए"। इस प्रसङ्ग को समाप्त किया।

अन्त में इलाचन्द्र जोशीजी ने १९२८ की 'सुधा' में कालिदास कपूर तथा नरोत्तम व्यास की हाँ में हाँ मिलाई। १९३५ तक श्री हेमचन्द्र प्रेमचन्द की पहली रचना को 'लेटी साहित्य' कहकर 'विश्ववाणी' में विद्रूप करते रहे। साल ठाकुर श्रीनाथसिंह ने भी 'सरस्वती' में प्रेमचन्द पर बाण छोड़े और उनका मज़ाक़ उड़ाया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२—निरुपद्रव हास्यात्मक आलोचना के अन्तर्गत 'जीवन साहित्य' में प्रकाशित सियारामशरण गुप्त के 'झूठ-सच' की आलोचना आ सकती है। यह आलोचना शायद सुधीन्द्रजी की लिखी हुई है—

"प्रस्तुत पुस्तक में उनके २८ निबन्धों का सङ्कलन है। 'निबन्ध' इसलिए कहा जा रहा है कि स्वयं लेखक इन रचनाओं को निबन्ध की कोटि में रख रहा है, यद्यपि हमारा वहाँ मतभेद है। प्रस्तुत 'निबन्धों' में से 'झूठ-सच' तो—जिसे पुस्तक के नामकरण का सद्भाग्य मिला है—एक कहानी है।.....'धन्यवाद', 'नया संस्कार' आदि लेखक के अपने जीवन में घटित घटनाओं से निकट सम्बन्ध रखनेवाले प्रश्नों पर लिखे गये लेख सम्पादकीय टिप्पणियों जैसे हैं। कहने का आशय यह नहीं कि उनका कोई मूल्य नहीं.....।

प्रस्तुत संग्रह में सबसे अधिक सुन्दर, सजीव और कवित्वमय रचना है 'हिमालय की झलक'। यह रचना किसी भी पाठ्य पुस्तक की शोभा बढ़ा सकती है। पढ़ते-पढ़ते हिमालय का मनोरम चित्र आँखों के आगे आ जाता है और पाठक भी लेखक के मनोभावों से तादात्म्य अनुभव करने लगता है। यही लेखनशैली की विशेषता है।.....

दृश्यों का वर्णन करने में गुप्तजी ने कमाल किया है। व्यंग्य भी कम चुभनेवाले नहीं हैं :—

"यहाँ का तापमान जानने के लिए आतिथेय महोदय ने दिल्ली के एक इँगलिश पत्र की शरण ली। बात साधारण है, पर भी कम कौतुककर नहीं।".....कितना गहरा व्यंग्य इसमें ?

संग्रह के जैसे लेख हिन्दी में कम लिखे गये हैं और पुस्तकाकार तो प्रकाशित हुए ही नहीं।"

इस आलोचना के अतिरञ्जित व्यंग्य के कोमल उतार-चढ़ाव माधुर्य का स्वाद न ले सकने तथा गुप्तजी की शैली से अभिज्ञ रहने के कारण (क्योंकि यह आलोचना उसी शैली के अनुकरण में लिखी गई है) एक आलोचक ने इसे बुरा-भला कहा था। अस्तु, सत्रहवें बिहार-प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, पटना के सभापति श्री शिवपूजनसहाय के अभिभाषण तथा स्वागताध्यक्ष आचार्य बदरीनाथ वर्मा के भाषण की सम्यक् आलोचना करते हुए 'योगी' ने, उन्हीं की पंक्तियों का भाषान्तर करके उन्हें अपना निष्कर्ष-वाक्य बना लिया था, जैसे, "सभापति का भाषण—हँसिया के ब्याह में खुरपी का गीत"। [तुलना—साहित्य से सम्बद्ध हृदय सम्भवतः सुकुमार होता ही है। वह अपनी परम प्रिय वस्तु के बिछुड़ने से यदि व्यथित हो उठता हो तो इसमें कोई विस्मय या अस्वाभाविकता नहीं। मुझे अपनी वनसङ्गिनी के वियुक्त होने का जो दुःख है.....

आप सोचते होंगे, यह बेसुरा राग अलापनेवाला कैसा पथ-भ्रष्ट है जो हँसिया के ब्याह में खुरपी का गीत गाने लगा।

तथा, "स्वागताध्यक्ष का भाषण निःसार प्रलाप" [तु० देवियो और सज्जनो, मैंने आपका बहुत समय अपने निःसार प्रलाप में नष्ट कर दिया। भाषण, पृ० २४)] सभापति एवं स्वागताध्यक्ष की सरलता तथा विनम्रता पर निःसन्देह, वह एक गहरी चुटकी थी फिर भी इसका ध्येय मनोरञ्जन ही था। 'योगी' के 'गोलघर के मुँडेरे से', 'चाँद' के 'जगद्गुरु वृकोदरानन्द विरूपाक्ष का फ़तवा' तथा 'विशाल भारत' के 'चायचक्रम' में स्वर्गीय व्रजमोहन वर्मा द्वारा लिखित 'फूलझरियाँ' इस तरह की आलोचना के सुन्दर नमूने हैं।

३—रूपकात्मक आलोचना के अन्तर्गत 'सरस्वती' में (जुलाई १९३९) प्रकाशित उस समीक्षा की—जिसे 'निराला' के 'राम रावण अपराजेय समर' की आलोचना में व्रजेश्वर नामक 'परिहास-निपुण समालोचक' ने लिखा है—रामनरेश त्रिपाठीजी ने अपनी 'कविता-कौमुदी, द्वितीय भाग (नवीन संस्करण)' में उद्धृत कर जो प्रशंसा की है, उसे रख सकते हैं। देखिए,

"वारित-सौमित्र-भल्लपति अगणित-मल्लरोध,
गर्जित-प्रलयाब्धि-क्षुब्ध-हनुमत्-केवल प्रबोध;
उदरगीरित-वह्नि-भीम-पर्वत-कपि चतुः प्रहर—
जानकी-भीर-उर-आशाभर, रावण-सम्वर।

—निराला

और 'बस अन्त में एक छूः और जोड़ दीजिए कि भूत झाड़ने का मन्त्र बन जायगा।' (व्रजेश्वर) "एक प्रसिद्ध कवि के पद्य की इससे कम शब्दों में ऐसी ठीक बैठनेवाली मनोरञ्जक आलोचना शायद ही कभी किसी ने की हो।" उपर्युक्त कविता समस्त पद में कहा गया वीर रस का एक अच्छा काव्य है। किन्तु इसके विपरीत 'व्रजेश्वर' ने उसे भूत झाड़ने का मन्त्र सिद्ध किया अर्थात् उसके गम्भीर भाव का उपहास में विपर्यास किया। और त्रिपाठीजी ने भी उनके कथन को मनोनुकूल पाकर उससे सहमत होकर उसी के पक्ष में अपनी सम्मति दी। परन्तु 'सुधा' में (सितम्बर १९४०) चन्द्रप्रकाशजी ने त्रिपाठीजी को आड़े हाथों लिया। उन्होंने लिखा :—

"त्रिपाठीजी की यह सम्मति देखकर हमें बड़ा हर्ष होता है कि अनधिकारी समालोचकों में एक तो ऐसा निकला, जिसका परिहास त्रिपाठीजी को पसन्द आया।"

कहने की आवश्यकता नहीं कि उपर्युक्त प्रशंसाभास विरोध तथा विसङ्गति के कौशल से ही सम्पन्न हुआ है। फिर जब उसी पुस्तक में त्रिपाठीजी मैथिलीशरण गुप्त एवं 'प्रसाद' जी के भाषा सम्बन्धी कतिपय दोषों की ओर दृष्टिपात करते हैं तब उनका उल्लेख करते हुए 'सुधा' में चन्द्रप्रकाशजी लिखते हैं—

"मैथिलीशरणजी गुप्त से लगाकर 'प्रसाद' जी तक में त्रिपाठी जी को भाषागत दोष ही दोष दिखाई पड़ते हैं। इसका कारण यह है कि आप चाहते हैं कि कविता की भाषा ऐसी हो कि किस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्य का अन्वय करने पर वह व्याकरणसम्मत, शुद्ध गद्य बन जाय।"

वास्तव में त्रिपाठीजी ऐसा नहीं चाहते। वे तो विभक्ति-तद्धित-प्रत्यय प्रभृति के त्याग की प्रथा को त्याज्य समझते हैं; मगर इस तथ्य को जानते हुए भी चन्द्रप्रकाशजी एक दूसरा भ्रम उपस्थित कर त्रिपाठीजी की दिल्लगी उड़ाते हैं। इसके चलते त्रिपाठीजी को 'साहित्य-सन्देश' के दफ़्तर तक सफ़ाई देने से न चूकना पड़ा। इसी श्रेणी के अन्तर्गत हम 'प्रभा' की (सितम्बर १९२४) "भावों की भिड़न्त" शीर्षक वह भाव-प्रधान व्यंग्यात्मक आलोचना भी रख सकते हैं, जिसे श्रीयुक्त 'भावुक' ने 'मतवाला'-सम्पादक—नवजादिकलाल श्रीवास्तव—तथा 'मनोरमा'-सम्पादकों के बीच 'निराला' की 'विजयिनी' और 'तट पर' शीर्षक कविताओं के विषय में चलते हुए वाद-विवाद के उत्तर में लिखा था। दूसरा पक्ष इन कविताओं को रवीन्द्र की कविताओं की नक़ल बतलाता था और पहला पक्ष इन्हें मौलिक मानता था। श्री 'भावुक' ने निम्नांकित निर्णय देकर दोनों में समझौता करा दिया। उन्होंने भावों की भिड़न्त के चार भेद बताये। 'निराला'जी की उन दोनों कविताओं को चौथे प्रकार का बतलाया तथा कहा—

"भावों की इस भिड़न्त-लड़न्त या टक्कर का वर्णन लोग भिन्न-भिन्न भाँति से किया करते हैं। सीधे, लट्ठमार लोग कहते हैं यह चोरी है, डाकेज़नी है। शान्ति-प्रिय लोग, इतना ही कह देते हैं कि इस कविता का भाव अमुक कविता से मिलता-जुलता-सा है। और, जिन्हें आलोच्य कविता के कवि से प्रेम और उसकी कविता से पक्षपात रहता है, वे चतुर जन कहते हैं.....।

दोनों कविताओं में से अधिक पंक्तियाँ उद्धृत न करके केवल उतनी ही उद्धृत की गई हैं जितनी रवि और सूर्य की भाँति एक ही मालूम होती हैं।

".....इस प्रकार मिलान करने से यह मालूम हो गया कि .....क्या हिन्दी संसार, हिन्दी की इस गौरव-वृद्धि के लिए श्री त्रिपाठीजी को बधाई या धन्यवाद न देगा!"

उपर्युक्त आलोचना हिन्दी-साहित्य का एक अनुपम है। जो कुछ आदर्श प्रस्तुत करना था उसका स्वयं अल रूप से विसङ्गति दिखाते हुए विरोध करना तथा उसके वि अपनी हलकी-सी सम्मति देना, जो कि यथार्थ में कम चु एवं चुहल-पूर्ण न हो—यही इस आलोचना का मा रूपक है। यह कहना अप्रासङ्गिक न होगा कि 'निराला पर हिन्दी संसार में अनेक व्यंग्यात्मक आलोचनायें लि पड़ी हैं।

४—**परिहासात्मक आलोचना** का हिन्दी-साहित्य के क्षेत्र में काफ़ी अभाव है। लेकिन पद्य क्षेत्र में उसका बाहुल्य 'बच्चन' की 'मधुशाला' का काव्य-परिहास 'योगी' में 'ताड़ीशा के नाम से निकल चुका है। श्री (अब प्रिन्सिपल) मनोर जी ने भी उसके परिहास में कुछ कविताएँ लिखी हैं। उसके जवाब में एक 'टीशाला' भी निकली है। बनारसी परिहास लिखने की कला में विशेष पटु हैं। 'निराला' के गीत 'कैसी बजी बीन!' का 'बिजली', मैं बजी टीन?' के शीर्षक से विद्यार्थी जी द्वारा, जो रूप हो चुका है, वह बड़ा ही आकर्षक है। स्वर्गीय जना सहाय ने 'दिनकर' के 'परिचय' का एक अच्छा काव्य-परि लिखा था—

सबल कुछ शक्ति है मुझमें कि जिससे,
प्रलय की प्रेरणा पा चल रहा अवदात हूँ मैं,
कहा सबने यही पहचानकर मुझको,
धरा का प्राण हूँ, बरसात हूँ मैं।

श्री हरिशङ्कर शर्मा ने 'विशाल भारत' में 'परिहास पाठंत' शीर्षक एक स्वतन्त्र लेख लिखकर काव्य-परिहास उत्तम रूप से प्रकाश डाला है। 'सरस्वती' में समय-समय काव्य-परिहास के जो सुन्दर उदाहरण निकलते रहे हैं, वे परिहासात्मक आलोचना के ही वर्ग में आयँगे।

——

गीत

कुमारी दिनेशनन्दिनी, एम० ए०

किसने तुझसे प्यार किया!
नीली पलकों की प्याली में आसव का उपहार दिया!
सोने के मूर्छित सपनों पर जीवन का मधु ढार दिया!
क्यों कल्पित शृंगार किया?
किसने तुझसे प्यार किया?

किस पाषाणी प्रतिमा से मृदु स्वर उड़ तेरे टकराये?
हिमित सरोज से हिमकण झर तेरे नयनों में लहराये?
भावों का उपचार किया!
किसने तुझसे प्यार किया!

गीतों की कड़ियों में बँधकर, सुधि किसकी बरबस आई!
यह न कभी तू जान सकेगा रो आई या हँस आई!
पीड़ा का प्रतिकार किया!
किसने तुझसे प्यार किया!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय चित्र-कला

श्रीयुत मदनमोहन सिनहा 'सरोज'

"हम लोगों के यहाँ कला केवल 'ड्राइङ्ग-रूम' की सजावट की वस्तु समझी जाती है, पर प्राचीन युग में कला तत्कालीन जीवन की मूल आत्मा थी, और आध्यात्मिक भावों को प्रतिपादित करती थी।"

योरप के महान् और प्रसिद्ध कलाकार 'मिले' की लिखी हुई ये पंक्तियाँ उतनी ही सत्य हैं जितनी सत्य आये दिन होनेवाली कला के नाम पर कलाबाज़ी। आज कला का महत्त्व हमारे आगे से उठता-सा जा रहा है और हम मूक बने ताक रहे हैं। हम यह याद रखना भी भूले ही जा रहे हैं कि संसार के इतिहास में भारत का ही सबसे उच्च स्थान है। यह बात न तो कोरी दलील है और न अतिशयोक्ति ही। इतिहास के पन्ने साक्षी के रूप में तैयार हैं। भारत को ही यह श्रेय प्राप्त है कि जब दुनिया के दूसरे हिस्से के लोग लँगोटी पहनने का ज्ञान सीख रहे थे, भारत की संस्कृति मानवता की चोटी पर चढ़कर औरों को जगाने का प्रयत्न कर रही थी।

हमारे यहाँ कला को विशेष स्थान गुप्तकाल में ही मिला है। यह गुप्त-काल का समय सन् ३१९ से ५२८ ई० तक का है। इसी काल में आधुनिक युग की सभी कलाओं का नमूना तैयार हो चुका था—यह हमारा दावा है। बस, चित्र-कला का श्रीगणेश भी हम यहीं से करना चाहते हैं। क्योंकि यह ऐतिहासिक प्रमाण है, जिसे विधाता भी नहीं काट सकते। यद्यपि पौराणिक आधार पर हम कहने का दावा कर सकते हैं कि चित्र-कला हमारे यहाँ सृष्टि और मानवता के विकास के ही साथ-साथ पनपी, तथापि बात ज़रा दूर की-सी जान पड़ती है। हमारे लिए, संसार को समक्ष रखकर, उचित नहीं लगता कि हम प्रसिद्ध चित्र-कर्त्री चित्रलेखा का नाम लें, जिसने अपनी सहेली उषा के लिए, उसके प्रेमी—भगवान् कृष्ण के पोते—अनिरुद्ध का सुन्दर चित्र तैयार किया था। महाराज दुष्यन्त आदि की चित्रकारियों को भी हम योरप दुनिया के सामने महत्त्व देना नहीं चाहते और न हम यही कह सकते हैं कि महाभारत-काल के रथों में की हुई

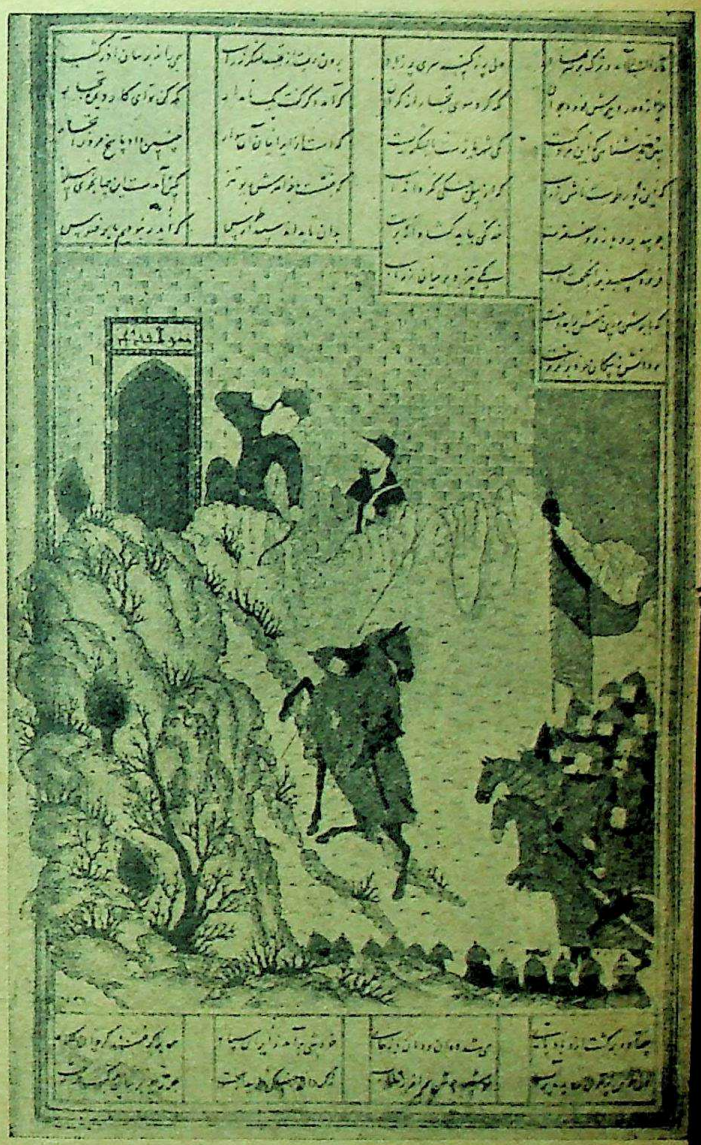

ईरानी चित्रकला का एक सुन्दर नमूना जिसमें फ़रूद-द्वारा ज़रास्प का वध दिखाया गया है

चित्रकारियाँ भारतीयता का एक अमूल्य गौरव थीं। हम तो गुप्त-काल ही से आगे बढ़ रहे हैं। अजन्ता में, जिसे लोग अजन्ता

CC-0.In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

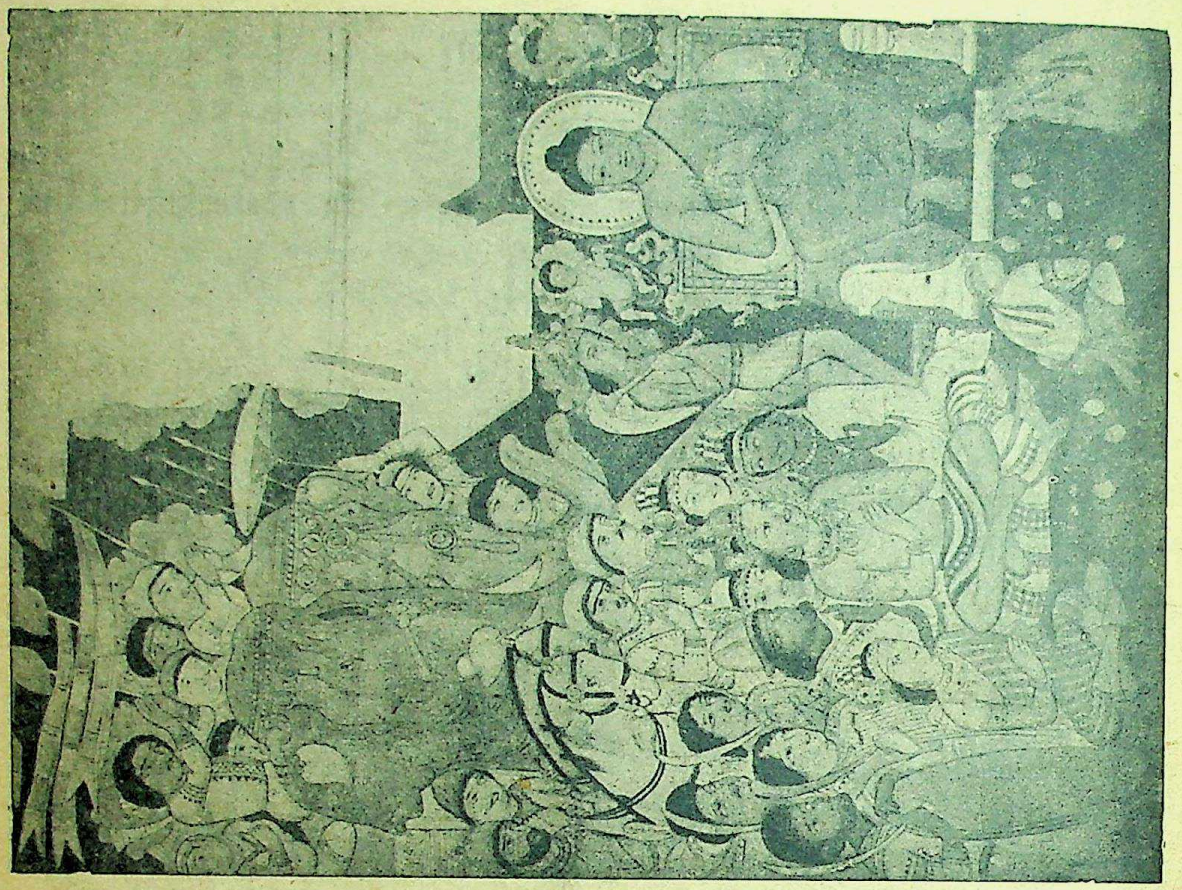

भगवान् बुद्ध का धर्मोपदेश (अजन्ता-चित्र)

हरिण के शरीर में बोधिसत्व (अजन्ता-चित्र)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहते हैं, जाकर देखने से ही पता चलता है कि हमारी चित्र-
ला कितनी उन्नत दशा में थी। अजन्ता की चित्रकारी—
थरों पर—रङ्ग-विरङ्गे रङ्गों से की हुई है। और ऐसे रङ्गों
जो १६००वर्षों तक वैसे के वैसे हैं तथा हज़ारों-लाखों वर्ष
क विद्यमान रहेंगे। भारतवर्ष का रङ्ग इतना फीका हो ही नहीं
कता जो सौ दो-सौ वर्षों में ही मिट जाय।

इस तरह कि जिस ईरानी चित्र-कला के नमूने वहाँ की पुस्तकों में पाये जाते हैं, वह लगभग तेरहवीं तथा चौदहवीं सदी में निर्मित हुई है। इसी समय की चित्रकारियाँ ईरान के महत्त्व को बढ़ा पाती हैं। इनके विषय में खोज करने पर पता चलता है कि इनका निर्माण कुछ ऐसे शीया मुसलमानों द्वारा हुआ, जो यह भी नहीं जानते थे कि उनके धर्म का क्या उद्देश्य तथा सिद्धान्त

शिव-नृत्य (कांगड़ा-क़लम)

आज भी भारत में अच्छे और मौलिकता के कर्णधार कला-
कारों की कमी नहीं है, मगर इसके उपासकों की कुछ कमी अवश्य
ड़ गई है। फिर भी हमें ऐसा लगता है कि संसार भर को
इस चित्र-कला का ज्ञान हमीं से प्राप्त हुआ है। यद्यपि दृढ़ता-
पूर्वक हम ऐसा नहीं कहना चाहते, तथापि जहाँ तक इतिहास के
सम्पर्क में आनेवाले प्रमाण हैं, उनसे प्रकट हो जाता है। जैसे
ईरान की चित्र-कला को देखकर अथवा उसके विषय में जान-
सुनकर प्रमाणित हो जाता है कि यह भारत की ही देन है। वह

हैं। क्योंकि पढ़े-लिखे और क़ुरान की आयतों को जाननेवाले मुसलमान इस तरह का चित्राङ्कन कभी और किसी दशा में कर ही नहीं सकते थे। इनमें एशिया-माइनर के प्रसिद्ध लुटेरे 'तैमूचिन' अथवा चंगेज़ ख़ाँ का नाम विशेष उल्लेखनीय है। यह वही चंगेज़ ख़ाँ है, जो सन् १२२१ ईसवी में, जब कि दिल्ली की गद्दी पर क़ुतुबुद्दीन का दामाद अलतमश था, भारत पर चढ़ आया था। इसके समय से ही ईरानी चित्र-कला का विशेष रूप से विकास हुआ। इन मङ्गोलों का सम्बन्ध चीन के उत्तर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाग से अधिकतर था। यही कारण है कि ईरानी चित्रों में चीन की सभ्यता का पुट मिलता है। और चीन, भारत के सम्मुख सम्राट् अशोक के ही समय में नतमस्तक हो चुका था। इसलिए यह कहने में सङ्कोच नहीं होता कि चित्र-कला भारत से चीन और चीन से ईरान में फैली होगी और तब सारी दुनिया में। क्योंकि कम से कम योरप के विषय में तो हम कह ही सकते हैं कि वहाँ की चित्र-कला सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी के बीच में ही प्रकाश में आ पाई है। उसी समय के 'कोरो' और उनके गुरु 'मिशालो' तथा 'वर्त्यां', आदि प्रसिद्ध चित्रकारों का नाम भी आदर से लिया जाता है, तथा उनके ही चित्रों पर पाश्चात्य जातियाँ अभिमान भी करती हैं। फिर हम यह क्यों नहीं कह सकते कि चित्र-कला सारे संसार को भारतवर्ष से ही मिली होगी। अँगरेज़ी भाषा आज एक व्यापक भाषा बन रही है, इसके कवि की उत्पत्ति सातवीं सदी में हुई है। इस भाषा का सबसे प्रथम कवि 'कीडमन' माना जाता है। फिर चित्रकारी की कला को जानना तो ज़रा कठिन ही है। हाँ, यह सच है कि समय के अनुसार आज वहाँ और यहाँ की चित्रकला में अत्यधिक अन्तर है, परन्तु सब तरह से जाँचकर देखने से लगता है कि यह देन हमारी ही है। योरप और भारत के बीच की भिन्नता के विषय में पण्डित इलाचन्द्र जोशी का कथन है—"प्राच्य चित्र-कला भाव-प्रधान है और पाश्चात्य चित्र-कला रूप-प्रधान। हमारे कलाविद् रूप के अन्तर्गत प्राण की खोज करते आये हैं और पाश्चात्य चित्रकार बाह्य रूप पर मुग्ध हैं। हमारे कलाकार शरीर-विज्ञान तथा गठन के नियमों के प्रति उदासीनता का भाव प्रकाशित करते हैं। पाश्चात्य कलाविदों का मूल उद्देश्य शारीरिक सौन्दर्य को पूर्णतया रञ्जित करने का रहा है। हमारे यहाँ अभिव्यक्ति पर ज़ोर दिया जाता है और पाश्चात्य कलाविदों ने प्रतिकृति को महत्त्व दिया है।" यह बात बिल्कुल नपी-तुली है। किसी को महान् बताकर दूसरे की निन्दा करना हमें अच्छा नहीं लगता, परन्तु इतना कहने के लिए हमें बाध्य होना पड़ता है कि सुन्दरता से आध्यात्मिकता का स्थान कहीं ऊँचा है और

आखेट (राजपूत क़लम)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ली रूप भी हमें इसी आध्यात्मिकता के ार पर टिका हुआ दिखाई पड़ता है। इस तरह न भी गुरु के रूप में भारत ही है। ईरान के द्ध चित्रकार 'मानी' के चित्रों को सामने कर कोई यह नहीं कह सकता कि उनमें भारती- का पुट नहीं है। मानी ने अपने चित्रों में कहीं- भूले का जो दृश्य उपस्थित किया है वह तो त के सिवा और कहीं का हो ही नहीं सकता। ा भारतीयों की अपनी चीज़ है। इस तरह यह हो जाता है कि भारतीय चित्रकला दूसरे स्थानों कलाओं की माता नहीं तो दादी अथवा परदादी श्य है।

खेद है कि भारत में एक भी ऐसा सर्वाङ्गपूर्ण -गृह नहीं है जहाँ अपनी पुरानी कलाओं को कर रक्खा गया हो और जो संसार के सामने जीता-जागता उदाहरण पेश कर सके। फ्रांस राजधानी पेरिस के 'लुव्र' नामक जगत्-विख्यात गृह की चर्चा, युद्ध के प्रारम्भ के प्रायः कुछ ही पूर्व तक नित्य सुनाई पड़ती थी। विदेशी यात्री वित होकर प्रायः हमेशा अपने देश के पत्रों में की बड़ाई किया करते थे। क्या हमारे देश में भी ऐसी चित्रशाला का निर्माण सम्भव नहीं है जो शी यात्रियों को आकर्षित और उत्साहित कर सके?

ब्रिटेन के गिल्डफोर्ड चित्रकला स्कूल के एक विद्यार्थी द्वारा निर्मित एक चित्र, जिसमें १५वीं शताब्दी का पहनावा दिखलाया गया है।

कवि दत्त का परिचय

श्रीयुत 'प्रशान्त'

उन्नीसवीं शताब्दी का प्रारम्भ-काल एक ऐसा समय है जिसमें दी कवियों का कुछ अभाव-सा दिखलाई पड़ता है। परन्तु समय एक ऐसा कवि भी हो चुका है, जिसकी रचनायें पढ़- हमें आश्चर्यान्वित ही होना पड़ेगा, क्योंकि हिन्दी उसकी भाषा नहीं थी। पञ्जाब को भी लाँघकर, जम्मू रियासत की र पहाड़ियों में, अलग-थलग बैठकर, वह विशुद्ध हिन्दी में ता-कर गया है, और सो भी व्रजभाषा में! परन्तु साथ ही यह खेद से लिखना पड़ता है कि पूरे दो सौ वर्ष व्यतीत हो जाने भी किसी ने उसे हिन्दी संसार के सामने लाने का प्रयत्न नहीं किया। अब इसका श्रेय प्रोफ़ेसर गौरीशङ्करजी (गवर्नमेंट कॉलेज लाहौर) को है, जिन्होंने उस कवि का प्रथम ग्रन्थ 'वीर-विलास' छपवाकर हिन्दी-साहित्य का उपकार किया है। प्रोफ़ेसर साहब ने जो अनुसन्धान किया है वह बहुत ही प्रशंसनीय है।

इस कवि का नाम दत्त था, परन्तु ग्रन्थों में उसने अपना नाम दत्त ही लिखा है। वह जम्मू रियासत के किसी भड्डू ग्राम का रहनेवाला था। उस समय भड्डू में पृथ्वीपाल राज्य कर रहा था। वह जम्मू के अधीन नहीं था। वह स्वतन्त्र शासक था। पृथ्वीपाल की मैत्री जम्मू के राजा रणजीतदेव के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुपुत्र ब्रजराजदेव से थी। रणजीतदेव का राज्य-काल १७७२ से १८३२ है अतः कवि दत्त का समय भी इसके आस-पास ही है। परन्तु कवि के जन्मकाल का ठीक-ठीक पता नहीं मिल सका। पण्डित रामचन्द्र शुक्ल ने भी अपने हिन्दी-साहित्य के इतिहास में दत्त का वर्णन किया है। इस कवि की जीवनी बड़ी विचित्र है। कहते हैं, दत्त निरक्षर था। साथ ही मूर्ख भी था। उस समय दक्षिण-प्रदेश के एक तेजस्वी ब्राह्मण भड्डू पधारे। उनका नाम सूर्यनारायण था। उन्होंने वहाँ भगवती का एक यन्त्र स्थापित किया, जिसकी महिमा आज तक है। आज भी हज़ारों स्त्री-पुरुष देवी सुकराला के दर्शनों के लिए नङ्गे पाँवों वहाँ जाते हैं।

दत्त ने सूर्यनारायण जी की बड़ी सेवा की थी, परन्तु अपनी मन्द बुद्धि के कारण वह विद्या प्राप्त न कर सका।

जब सूर्यनारायण वहाँ से प्रस्थान करने लगे तब दत्तू की आँखों से आँसू निकल आये। वह रो रहा था अपनी मन्दबुद्धि पर! पण्डितजी को उस पर बड़ी दया आई। उन्होंने दत्त की जिह्वा पर एक बीज मन्त्र लिखकर कहा—"बेटा, संस्कृत व्याकरण पढ़ लेना, बस तुम कवि हो जाओगे।" दत्त भड्डू से नूरपुर चला आया। वहाँ सारस्वत व्याकरण पढ़ा। फिर वह एक अच्छा कवि हो गया। दत्त को गुरुदेव की कृपा से ही प्रतिभा प्राप्त हुई थी। वह बार-बार सूर्यनारायणजी को श्रद्धाञ्जलि भेंट करता है।

पिङ्गल मैं पंगू अङ्ग भाषा कौ न जानत हूँ,
बड़े गूढ़ ग्रन्थनि के पन्थ में थकत हौं।
बैठ्यो न समाज कविराजन के ताकी पुनि,
सुनी है न मीठी बानी-ऐसो मन्द मत हौं।
एक है आधार गुरु सूरजनरायन के,
चरनन की धूरि पूर शीष में धरत हौं।
देव देव मानी ऐसी तीन लोक रानी जू कि,
कृपा हुँ ते भारत कहानी उचरत हौं॥

एक और ग्रन्थ में लिखते हैं—

पूजों श्री गुरुदेव सकल देव मूरति विमल।
जा प्रसाद कछु भेव पायो दत्त कवि दत्त को॥

वीरविलास के प्रारम्भ में लिखा है—

चरन कमल गुरुदेव के बिमल ज्ञान की खान।
निसि दिन दत्त हियै बसैं करत दुरित की हान॥
तिहिं प्रसाद कविता करौं अपनी मत अनुसार।
शब्द अर्थ चूकै तहाँ कोविद लेहु सम्हार॥

दत्त पृथ्वीपाल के दरबारी कवि भी रहे होंगे, तभी उन्होंने राजा का गुण-गान भी किया है।

भड्डू देश नरेश है पृथ्वीपाल अभिधान।
ब्रजबासी दासी भई जाकी मत जुत ज्ञान॥
लाज दया गुन रूप निधाना। राषत गुरु लोकन की आ
राजनीति उत्तम अति राषै। कटुक वचन कबहूँ नहिं भ

दत्त ने वीरविलास, ब्रजराजपञ्चासिका, बारा माह, चन्द्रिका, दत्तसंग्रह, भूपवियोग, कृष्णमहिम्नस्तोत्र, कृष्ण रूप पञ्चक ज्योतिष प्रकाश, ऋतुवर्णन, गोपीवियोग। इनमें केवल प्रथम चार ग्रन्थ ही उपलब्ध हुए हैं। आश प्रोफ़ेसर साहब ये पुस्तकें भी प्रकाशित करने का प्रयत्न 'वीरविलास' संस्कृत द्रोणपर्व का हिन्दी पद्यानुवाद है। राज-पञ्चासिका' में ब्रजराजदेव की काँगड़े पर चढ़ाई का है। यह वीररस का ग्रन्थ है। 'बारा माह' विप्रलम्भ की पुस्तक है।

दत्त की कविता में सबसे विशेष बात सरसता है और सता में है स्वाभाविकता। भाषा तथा भावों में तनिक भी कृ नहीं है। कविता में एक विचित्र चलतापन है, जो रीति के प्रसिद्ध कवियों की भाषा में देखा गया है। अधिकतर कविता वीररस में ही की है। परन्तु उनकी पदा कोमल है। भाषा रस स्निग्ध है। फिर भी जहाँ भाषा ओजस्विनी बनाने की आवश्यकता पड़ी है, उसे ओजपूर्ण ही दिया है।

भीरुन कौं भयदायक है अरु सूरन को अति ही सुखदा
साइक वारि तरङ्ग तुरङ्ग मतङ्गज नक्रिनि के गन छाई
मीन भये करवाल सुकच्छप भेर मृदङ्ग सरौत्र सुहा
यौं विध सौणित की सरिता यम के पुर को द्विजराज वह

हिन्दी दत्त की मातृभाषा नहीं थी। परन्तु दत्त को इ पूर्ण अधिकार था। वाक्य-रचना में कहीं भी गड़बड़ नहीं न शब्दों का अङ्ग-भङ्ग ही इतना हुआ है, न प्रान्तीयता की ही पड़ने पाई है। प्राचीन परिपाटी के कवियों की तरह भाषा में पण्डिताऊपन भी नहीं है।

जैसे दुजराज बिन राजत न रैन जैसे,
बिन भरतार बरनार दुति फीकी है।
आपगा विहीन आप सोहत न जैसे पाँच
वदनविहीन जैसे कंदरा गिरी की है॥

अन्त में इतना ही कहना है कि दत्त कवि का हिन्दी में अच्छा स्थान है। पद्माकर, मतिराम तथा भूषण कवियों से वे किसी तरह कम नहीं हैं। अब उनका काव्य विलास प्रकाशित भी हो चुका है और हर एक आदमी आनन्द ले सकता है। यह ग्रन्थ हिन्दीभवन, लाहौर ने छा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाभी

श्रीयुत कृष्णचन्द्र शर्मा, बी० ए०

बचपन में छेड़ख़ानियाँ करती हुई भाभियाँ कहा करती थीं आज तो हमारे देवर बाबू की सगाई आवेगी और फिर शीघ्र ब्याह कर एक सुन्दर-सी दुल्हन लावेंगे। छोटी भाभी बड़ी ङ्कर और हँसोड़ थीं। वे भयङ्कर छेड़ख़ानी के ही विषय में । वे सुन्दरी थीं और चपल भी। चञ्चल आँखें सदा की घनी तनी हुई भवों के नीचे नर्त्तन करती रहती थीं। बत्ती लौ-सी पतली सुन्दर तीखी नासिका को हर समय टिमटिमाते नेवाले उन नीलम के दीपकों पर निज पार्श्ववर्त्ती होने के रण गर्व था। कहने का अभिप्राय यह है कि वे मुझे तब सुन्दर लगती थीं। और अब ? वे बदली थोड़े ही हैं, मैं ही दल गया। हाँ तो अपने ब्याह की चर्चा सुनकर मैं स्वभावतः, मेरी वय के अन्य सब लड़के लजा जाते हैं, लजा जाता था। चुपके से कह देता था कि नहीं, मैं ब्याह नहीं करूँगा। ने को तो कह देता था पर निगोड़ी आँखें स्वतः उद्भूत उस को छिपाने में असमर्थ रहती थीं। भाभी की तीक्ष्ण दृष्टि यह सब कुछ छिप न पाता था। वे तभी चुटकला छेड़ देतीं— हो, बाबू साहब ! आप ब्याह न करेंगे। कभी न करेंगे ! ीं देवर, ब्रह्मचारी ही रहोगे क्या जन्म भर ? धन्य हो, चारीजी महाराज ! और फिर अल्हड़पन भरी हुई निर्मल लखिलाहट।

मुझे यह कहने में सङ्कोच नहीं कि अब मैं भाभी के नोद एवं खिलवाड़ की ही सामग्री था। वे मनोनीत ढङ्ग से हँसा-रुला सकती थीं। मैं निर्देशक से निर्देश पाये हुए भिनेता की भाँति अभिनय करता रहता था और सफल भी तरता था।

मेरी अवस्था बढ़ रही थी और उधर भाभी के हर समय मते रहनेवाले ब्रह्मचारीजी के भाव से छोड़े गये चुटकले। रे धीरे मेरे दिमाग़ में भी सनक आ गई। मैंने सोचा शादी क्या है। अन्य भाइयों का तो विवाह हो ही चुका है, रोटियाँ लती ही रहेंगी। फिर व्यर्थ एक को अपने गले मढ़ने से ा लाभ ! और कहीं वह भी हुई छोटी भाभी की-सी ही, तो...। मैं घबड़ा जाता। विवाह के, सुन्दर पत्नी पाने के, सब चार हवा हो जाते। वास्तव में मैं छोटी भाभी को बड़ा ङ्कर जीव समझता था। बस मैंने निश्चय कर लिया ; तेज्ञा कर ली आजन्म अविवाहित रहने की। ऐसी धारणाओं अँगरेज़ी शिक्षा भी बहुत सहायक होती है। फिर मैं तो ० ए० में पढ़ रहा था। अपने को पश्चिमी सभ्यता का ज्वलन्त प्रतीक ही समझता था और मुझे उस सभ्य देश का अनुयायी होने का गर्व भी था।

मैं छुट्टियों में घर आया। कहना न होगा कि मेरे आने का समाचार सबसे पहले छोटी भाभी को ही मिला था। उन्होंने घर भर में ब्रह्मचारीजी आ गये, ब्रह्मचारीजी आ गये की धूम मचा दी थी। मैंने माता-पिता आदि के चरण छुए; सबके साथ यथायोग्य व्यवहार किया, पर जान-बूझकर छोटी भाभी की ओर देखा तक नहीं। इसलिए नहीं कि मैं उनसे चिढ़ने या विद्वेष करने लगा था, पर अब मुझे भी उनके बनाने में आनन्द आता था। वे मेरे पास आईं। एक-आध बात उठाई भी। पर मैंने सुनी-अनसुनी कर दी, उनकी ओर से मुँह तक फेर लिया। इससे उनके हृदय पर चोट लगी। रुँधे स्वर में बोलीं—"ऐसा मुझसे कौन-सा अपराध हो गया बाबूजी—" और वे रो पड़ीं। मैं अब और अधिक चुप न रह सका। इस सुअवसर का सदुपयोग करता हुआ बोला—"बाबू नहीं, ब्रह्मचारीजी कहो भाभी—" और बस शक्ति भर खिलखिलाकर हँस पड़ा। विचक्षणा भाभी मेरा ढोंग समझ गईं। पर आज मेरे उपहास ने उन्हें परास्त कर दिया था। उन्हें रुलाकर ही छोड़ा। बस, अब वे भी हँस पड़ीं। धीरे से ही, माँ जो थीं। पर आँखों से लाज की छाया दूर न कर सकीं। मैं अपनी इस एक ही विजय के आगे भाभी की पूर्व समस्त विजयों को क्षुद्र समझने लगा। मैं समझने लगा कि अब कम से कम मुझे भाभी से सदा की भाँति मुँह की तो न खानी पड़ा करेगी। मैंने भाभी का विनोद का नाम रोनी भाभी रख लिया। स्वर भारी करके मैं कहा करता "मत रो, रानी मुन्नी, मत रो। पैसा देंगे, मिठाई देंगे।" पर व्युत्पन्नमति भाभी दबनेवाली थोड़े ही थीं। वे चट से कह जातीं—"देवर बी० ए० में पढ़ने पर भी तुम भाषा की ऐसी-ऐसी भद्दी भूलें कर जाते हो। रोनी भाभी नहीं, रानी भाभी कहो, रानी भाभी।" और मेरे 'चुप हो जा मुन्नी' के दाँव को काटती हुई कहने लगतीं—"ब्रह्मचारीजी का विवाह कब हुआ, जो मुन्नी को चुप करने के झमेले में पड़ गये ?" और फिर हम सब पर प्रच्छन्न हँसी रङ्ग जमा लेती। इस कुश्ती में जोड़ बराबर ही छुटती। मैंने तो हार मानना छोड़ ही दिया था, और रहीं भाभी, वे तो कभी हार माननेवाली थीं नहीं।

मैं नहीं समझता था कि इस विनोद के पीछे भाभी मुझसे स्नेह करती हैं। वही स्नेह जो किसी बच्चे को अपने सर्व-प्रिय खिलौने से होता है। पर इनके स्नेह में स्थायित्व की पुट थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस बात का पता मुझे तब लगा जब मैं कालेज जाने लगा। मैं ताँगे में जा बैठा और चल दिया। अचानक मेरी दृष्टि ऊपरवाले कमरे की खिड़की पर जा पड़ी। देखा, भाभी मेरी ही ओर देख रही थीं और आँसू झर रहे थे वेग से। मैंने इसे भी उनका विनोद समझना चाहा था, पर समझ न सका था।

वास्तव में भाभी का हृदय विशाल था। वह मेरे लिए अगाध वारिधि की भाँति सदा स्नेह से परिपूर्ण रहता था। मेरे पीछे वह शान्त तथा गम्भीर हो जाता था। पर मुझे देखते ही वह शरत्पूर्णिमा का आनन्द अनुभव करने लगता था। यह सब मुझे ही देखकर होनेवाले विनोदों से पता चलता था।

× × ×

इसी प्रकार हास्य एवं विनोद-तरङ्गों से तरङ्गित मैंने बी० ए० पास कर लिया और दो वर्ष बाद हिन्दी से एम० ए० भी। बी० ए० पास करते ही चारों ओर से देखनेवाले आने लगे। मुझे उस समय की उनकी उतावली देखकर यही शङ्का होती थी कि उन सबके घरों में लड़कियाँ बेकार पड़ी मालूम होती हैं जो किसी के गले मढ़कर पिण्ड छुड़ाना चाहते हैं। यदि आज मेरी बहन भी जीती होती...मुझे साहित्य से प्रेम था। अतएव दिनोंदिन भावुक होता जा रहा था। भावना का पंछी उड़ता-उड़ता मेरी अनुजा के शव तक जा पहुँचा। भावुकता जाग उठी और आँसू बह चले। खैर, इस बार तो इन सबसे पिताजी ने मेरी जान छुड़ा दी। उन्होंने स्पष्ट कह डाला कि जब तक लड़का पूर्णतया पढ़-लिखकर कमाने नहीं लगता, मैं उसे झञ्झट में नहीं डालूँगा। माताजी ने चाहा, अन्य भाभियों ने उकसाया, भाइयों ने योग दिया, पर पिताजी अपने निश्चय से टस से मस न हुए। हाँ, स्नेहशीला छोटी भाभी भी हमारी ही पार्टी की थीं।

तो अब मैंने एम० ए० भी पास कर लिया और सौभाग्य से वहीं कालेज में हिन्दी का प्रोफ़ेसर भी हो गया। मैं धीरे-धीरे गम्भीर एवं भावुक होता जा रहा था। वास्तव में लोगों ने अभी से मुझे आदमी समझना शुरू कर दिया था। वे मुझे आतङ्क-युक्त आदर की दृष्टि से देखते थे। पर छोटी भाभी? उनके लिए तो मैं पहले-जैसा ही खिलौना था।

अब फिर विवाह की बात चली। पिताजी ने भी चाहा और घर भर ने ज़ोर दिया। पर मैंने विवाह के विरुद्ध तुमुल घोषणा कर दी थी। बहुतेरा वाद-विवाद चला, जग की रीति समझाई-बुझाई, भला-बुरा चिताया। माँ-बाप की अभिलाषा जताई, कुल की मर्यादा का ध्यान दिलाया, यहाँ तक कि यह भी कह डाला कि हमारे बाद तेरी भाभियाँ ही तुझे रोटी तक को न पूछेंगी। पर मैं नाम को न माना। मैंने किवाड़ की ओट में खड़ी हुई भाभी के अश्रुप्लावित नयनों को देखा। सम्भव है, भाभियों पर कसे गये व्यंग्य से वे आहत हुई थीं।

एक दिन जब मैं कुछ पढ़ रहा था, भाभी मेरे पीछे आ हुईं। मैंने बिना दृष्टि घुमाये ही कहा—"क्या है, रोनी म पर उधर से सदा का-सा खिलखिलाता उत्तर न आया। उठाकर देखा। भाभी रो रही थीं। आवेगपूर्वक पू "यह क्या भाभी!"

बोलीं—"एक बात बताओगे, देवर!"

मैंने कहा—"क्यों नहीं?"

"तो तुम विवाह क्यों नहीं कर लेते। क्या देव लड़कपन की अपनी प्रतिज्ञा के कारण ही ऐसा नहीं कर रहे देखो भैया, ऐसा न करना। इसका शाप मेरे ऊपर प विवाह कर लो. भैया। नहीं जानते माताजी कितनी दुः और पिताजी कितने अधिक क्षुब्ध। तुम्हें मेरी..."

"नहीं भाभी, नहीं। क़सम न दो मैं शपथपूर्वक हूँ कि इसमें लड़कपन का विनोद नाम को भी कारण नहीं

भाभी के सिर का बोझ जैसे उतर गया। आवेग घट गई और जी हल्का हो गया। वे कभी भी अधिक दुःखित नहीं रह सकती थीं। अपनी वास्तविकता पर बोलीं—"तुम्हारा किसी से प्रेम तो नहीं है, देवर! अरे तुम्हारे कालेज में तो सहशिक्षा थी न। वहीं कहीं किसी को तो नहीं दिल दे बैठे हो?"

उन्होंने इस तरह की बहुत-सी बातें कहीं। पर मैं तो एक छोटा-सा उत्तर था 'ना'; और उन्होंने मान भी पिताजी को भी यही शङ्का हुई। एक दिन एकान्त पाकर बोले—"अच्छा, तुम्हीं बता दो, बेटा; तुम कहीं और कराना तो नहीं चाहते।" पिताजी ने बड़े ही स्पष्ट बिना कोई भूमिका बाँधे ही कह दिया था। मैंने भी कह डा 'क्या आप मुझसे ऐसी ही आशा करते हैं?' उनसे कोई न बन पड़ा। वे सब समझ गये और फिर कभी चर्चा न चलाई। माताजी भी निराश हो गईं। मैंने नहीं कराया।

× × ×

पाँच वर्ष बीत गये। माताजी बेटे के विवाह की को मन में दबाये चल बसीं। पिताजी ने भी सब खाता-कमाता छोड़ सदा के लिए आँखें बन्द कर लीं। अवस्था सत्ताईस वर्ष की हो चुकी थी।

इधर योरप में युद्धाग्नि भड़क उठी। भारत की मित्रों के सहायतार्थ जाने लगीं। मेरे बड़े भाई फ़ौज में नेंट थे। वे भी गये। मैं भाभी के साथ इन्हें विदा करने तक गया था।

भाई को विदा करके लौट आया। भैया भाभी ही सहारे छोड़ गये थे। पर मुझे ऐसा जान पड़ा कि भाभी की समस्त स्फूर्ति, समस्त उल्लास समुद्र में डुबो हूँ। केवल उनका शरीर ही मेरे साथ आया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर उस दिन से कभी भाभी को प्रसन्न-चित्त न देखा। का जीवन दूर सात समुद्र पार कच्चे तागे में झूल रहा था र गोद थी सूनी। मैं कुछ उपहास करना चाहता भी पर भी सूखे आँसू बहा चुप हो जातीं। उनकी चपलता जाती । अङ्गों में कान्ति थी और शरीर में सौन्दर्य। पर इस में सजीवता न थी। बिम्ब के स्थान पर प्रतिबिम्ब मात्र रह ा था। पच्चीस-छब्बीस वर्ष की अवस्था में ही भाभी ने यास धारण कर लिया था। एकान्त में बैठ वे घण्टों रोया तीं। इस बार ही मैं भाईजी के प्रति उनके अगाध प्रेम को न सका था।

× × ×

दिन बीत ही रहे थे। भाभी में कोई परिवर्त्तन न हुआ। भावुकता बढ़ी। दुखिया भाभी के निष्प्रभ नेत्र मुझे रुलाते । खाना खाने थाली पर बैठता और चुपचाप खाकर उठ ता। न मैं बोल पाता और न भाभी ही। हम दुःख की ाधि में अवतरित हो चुके थे। भाभी का साध्य स्थायी था, पूर्ण था और था महत्त्वपूर्ण। उनकी लौ अपने आराध्यदेव ओर ही लगी थी।

और मैं? मेरी साधना का बिन्दु बड़े निम्न तल का था। ने आपको हर समय भाभी के परिहास में, सुन्दर पवित्र तवन में और मीठी-मीठी बातों में भुलाये रखना चाहता था। वह सब तो भैया के साथ जा चुका था। फिर भी मैं अपने नोदार्थ, हृदय की शान्ति एवं आनन्दार्थ उस रिक्त हृदय से पूर्ण हृदयवेधी वस्तुओं की आशा करता था। बस यही ख के आवरण में ढँकी हुई मेरी साधना का बिन्दु था। बड़ा क्षुद्र बिन्दु।

अब मैं इधर-उधर हृदय की शान्ति खोजने लगा। मेले- नों में जाता तथा एक ओर खड़ा होकर युवतियों के स्वच्छन्द चरण, हास-परिहास, भ्रू-नर्त्तन एवं स्निग्ध मुसकराहट से अपने तृप्त हृदय को तृप्त करना चाहता। वे एक के बाद एक चली तीं, बिना मेरे हृदय की आग को, मानसिक व्यथा को समझे । मैं वहीं एक जगह खड़ा रहता। सबके चले जाने पर क पर भारी हृदय से घर लौटता। पर इससे तृप्ति न हुई और क आग-सी भड़क उठी। मैं उस आग को न समझ सका। , समझा तब जब वह आग मेरे आसपास के वातावरण को भी ध करने लगी। फिर मैं उसी की ओर लपका। उस आग आग से बुझाना चाहा। पर ऐसा कभी हुआ भी है। आग हती ही गई।

मैं अपने अन्यतम बन्धु साहित्य की ओर लपका। छाँट- टकर नग्न शृङ्गार का अध्ययन किया। अपने को उसमें बो डाला। क्षणिक शान्ति मिली, पर फिर वही आग की ाँच, ज्वाला का जाला एवं तृप्ति का तर्पण। बहुत दिन बीत ये। मैं पतन की ओर अग्रसर होता गया।

मैं आगे बढ़ रहा था एक साधक के उत्साह से। बस हाथों में मदिरा की बोतल नाच उठी। सुरा के प्याले अधर चूमने लगे। मैं सुरापान करता। थोड़ी देर के लिए मदहोश होकर अपने आपको, अपनी वेदना को भूल-सा जाता। प फिर वही। परिणाम-स्वरूप चलने लगते दौर। प्याले पर प्याले। रात-दिन इसी में डूबा रहता। सुरा सङ्गिनी को अधरों से लगाये शान्त न होता। मैं सुरा के सुर में अलापा करता। साक़ी बाला सम पर ताल देती।

कालेज में भी मेरी यही दशा रही। लोग मेरे गिरते स्वास्थ्य को देखते और देखते मेरी जेब की बोतल को। मैं हँस- कर कह देता—"यह आसव है। आजकल स्वास्थ्य बहुत गिर गया है। अतएव वैद्यजी की राय से इसी का सेवन कर रहा हूँ।" और बस कालेज के बचे समय में भी फिर वही।

पर वहाँ यह सब कुछ कैसे चल सकता था। अधिकारियों के कान भनके। उन्होंने नौकरी का डर दिखाते हुए मेरी कादम्बरी पर रोक लगा दी। पर यह ऐसी वस्तु थोड़े ही थी जो रोक से हट जाती। मैं बढ़ता ही गया और एक दिन मेरे पास त्यागपत्र दे देने के लिए नोटिस भी आ गया।

मैं अपने एकान्त कमरे में बैठा था। सामने ही मेरी प्रेयसी कादम्बरी सुराही दार गर्दन उठाये बैठी थी। प्यालों में उसके मदमाते रागमय नेत्र छलक रहे थे। मैं मुग्ध हो गया। मैं चिहुँक ही तो उठा—"क्या ऐसी अलभ्य सुन्दरी सुरा सङ्गिनी का सम्प्रदान! असम्भव! मैं त्यागपत्र ही दूँगा।" मैंने उसकी सुराहीदार गर्दन पर आसक्त होकर, मदमातेपन पर मुग्ध होकर, त्यागपत्र दे डाला। सब ओर से ध्यान हटाकर उस ओर, केवल उसी ओर, प्रियतमा सुरा की ओर पूर्ण इन्द्रियनिग्रह कर, भावनाओं को जड़ बना, बढ़ चला। मैं और वह अभिन्न मित्र थे।

पर मुझे मालूम न था कि दो व्यथित नेत्र और एक भग्न हृदय मेरे सब कृत्यों को देखते हैं और रक्त के आँसू बहाते हैं पर मुझे इसके परिज्ञान से भी क्या!

× × ×

दिन बीतते गये। एक दिन मैं सुरालय से उसके प्रेमियों के मनोहारी प्रवचन श्रवण कर लौटा तो देखा मेरी आराध्य देवी सुरा, मेरे हृदय की शान्ति कादम्बरी मेरा मन्दिर छोड़ चली गई। मेरी समझ में न आया, कुछ न आया। क्यों चली गई कैसे चली गई? किधर को चली गई? मैं खिड़की के पास आया। थोड़ी देर के लिए प्राकृतिक सुन्दरता ने मेरा मन ह लिया। मेरे मकान से सटी हुई उर्मिल नदी बहती थी। उसके वाम पार्श्व पर खड़ा हुआ नग उस सुविस्तृत हरी-भरी वन-भू नग-सा ही जड़ा हुआ था। द्वैज का चाँद पर्वत की ओट स्वतन्त्ररूपा एवं उन्मत्तयौवना उर्मिला की ओर ललक-ललक कर देख रहा था। धीरे-धीरे वह कुछ और आगे बढ़ा और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना एक कृत्रिम रूप वहीं आकाश छोड़ भू पर आ उर्मिला की तरल तरङ्गों से क्रीड़ा करने लगा। अचानक मुझे भी अपनी प्रेय सङ्गिनी कादम्बरी की याद आई। मैंने विदग्ध की भाँति उस दृश्य की ओर से अपनी आँखें हटा लीं। खिड़की के नीचे बाग़ में देखा तो मेरी प्रेयसी कादम्बरी वहीं अनादृता हो भू-भ्रष्टा-सी पड़ी थी। गर्दन टूट चुकी थी। नेत्रों की मदिरा छलक चुकी थी। मुझे समझते देर न लगी कि यह दुस्साहस किसका है। मेरे पीछे मेरे कमरे में आकर यों मनमानी करना! मैं क्षुब्ध हो उठा। 'भाभी, भाभी', चिल्लाता हुआ कमरे के बाहर आया। भाभी रसोईघर में थीं। बाहर आकर बोलीं—"कौन, देवर बाबू? क्या मुझे पुकारा?"

मैं कह बैठा—"बताओ भाभी, मेरे कमरे में आज कौन गया। किसने जाकर वहाँ ऊधम मचाया?'

"मेरे अतिरिक्त और तो कोई नहीं गया था, देवर"—करुण स्वर में भाभी ने कहा।

"तुम! क्यों? तुमने ठीक नहीं किया भाभी!" मैंने अधिकार-भरे स्वर में कहा।

भाभी के मुख से आप ही निकल पड़ा—"ठीक!" और वे विदग्धों की भाँति रो पड़ीं। फिर कुछ स्वस्थ होकर बोलीं—"आज मैं तुम्हारे मुँह से पहली ही बार ऐसा सुन रही हूँ, बाबू।"

"पहली बार! नहीं, फिर सुनोगी यदि मेरे बीच में टाँग अड़ाई तो।" मैंने तड़पकर कहा।

"देवर!" भाभी ने अनुनय-सी की।

"मैं और कुछ नहीं सुनना चाहता", कहकर मैं कमरे में आ गया।

दीना भाभी स्तब्ध थीं। उस रात हम भूखे ही सोये।

× × ×

सुबह हुई। शराब के लिए जेब में हाथ डाला तो जेब ख़ाली थी। नौकरी तो छूट ही चुकी थी। शेष बचा-खुचा भी सुरादेवी के अर्पण हो चुका था। निराश होकर बैठ गया। सब ओर अन्धकार ही अन्धकार दिखाई देने लगा। इसी तरह दो दिन बीत गये। मदिरा देवी के दर्शन तक न हुए। वियोग हृदय में हूक पैदा कर रहा था। हवस लग रही थी। 'क्या करूँ, क्या न करूँ' सोचते-सोचते ध्यान आया कि भाभी के नाम जो भैया का वेतन आता है उसे क्यों न किसी प्रकार हस्तगत कर लूँ। पर वह तो बैङ्क में जमा है। तो फिर पासबुक ही क्यों न उड़ा लूँ! मैं रात्रि की प्रतीक्षा करने लगा।

रात के बारह बजे के लगभग भाभी के कमरे में घुसा। वे किवाड़ तो बन्द कर लेती थीं पर सिरहाने की खिड़की खुली रखती थीं। खिड़की फाँदकर ही धीरे से घर में घुस गया। चन्द्रमा की तरल किरणें झरोखे में से छन-छनकर आ रही थीं। भाभी बेसुध पड़ी थीं। तालियों का गुच्छा उनके आँचल से बँधा पड़ा मेरी ललचाई आँखें उस गुच्छे पर पड़ीं। पर निर्मला भाभी शान्त मुख को देखकर सहम गया। भाभी के प्रति विश्वास ने भय दिलाया। रणक्षेत्र में युद्ध करते अर्जुन का चित्र आँखों में खिंच गया। हृदय काँप उठा। आत्मा मूक हो कर उठी और मैंने लौटने के लिए पैर बढ़ाया।

भाभी का कमरा मेरे कमरे की ही बग़ल में पड़ता दोनों की बाग़ की ओर की खिड़कियाँ एक रुख़ भी पड़ती ज्योंही बाहर आने को हुआ, बाग़ की ओर की खिड़की में से फूटी सुरा की बोतलें और प्याले दिखाई दिये। मेरा उनसे मोह हो गया। सुविचार दब गये। भाभी के आँचल तालियों का गुच्छा खोल ही तो लिया। चाबी छोरते लगी। ताला खोलने को जैसे ही चाबी घुमाई, खटाक आवाज़ हुई। भाभी की नींद उचट गई। हड़बड़ाहट में हाथ बड़े स्विच पर जा पहुँचा। कमरा बिजली की रोशनी जगमगाने लगा। भाभी के मुख से निकला 'चोर' पर देखकर आधा ही कह पाईं। ट्रंक खुला पड़ा था और मैं एक में ताला और ताली का गुच्छा तथा दूसरे में पास बुक खड़ा था। एक क्षण तक हम स्तब्ध रहे। फिर मैं सब वहीं छोड़ कमरे के बाहर जाने लगा। भाभी ने पुकारा "बाबू!" मैं रुक गया। वे आगे बढ़ीं और पासबुक मेरी ओर बढ़ाती हुई बोलीं—"इसे ले जाओ न, भैया! सब ही तो तुम्हारा है। मुझ ही से न माँग लेते। ख़ैर!" स्वस्थ रूप से एवं अबाधगति से सब कुछ कह गईं। मैं ही था। पासबुक की ओर बिना देखे ही लौट आया। की बात मेरे हृदय में बुरी तरह चुभ चुकी थी।

रातभर नींद न आई। तरह-तरह के विचारों में सबेरे आया। तभी दो घड़ी के लिए मेरी आँखें भी लग जागा तो काफ़ी दिन चढ़ चुका था। मैंने सब कामों से कर एक सफ़री बेग लिया और उसमें कुछ आवश्यक रखकर चल दिया। मैंने भाभी को अपना काला मुँह न का निश्चय कर लिया था। कमरे के बाहर पैर निकाला था कि भाभी दौड़ी आईं। उनके हाथ में एक पत्र मुझे जाता देखकर ठिठककर रह गईं। पत्र छूटकर पास गिर पड़ा। उन्होंने क्षीण स्वर में कहा—"अच्छा तुम भी छोड़ चले मुझे", और सूनी आँखों से मेरी ओर लगीं। उनकी उस दृष्टि को देखने की मुझमें शक्ति पत्र उठाया और पढ़ा। पत्र का भाव था—"मि०... अधीन सेना सहित शत्रु-द्वारा गिरफ़्तार हो गये हैं। मास से उनका वेतन आना बन्द हो जायगा।" मैं पा हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

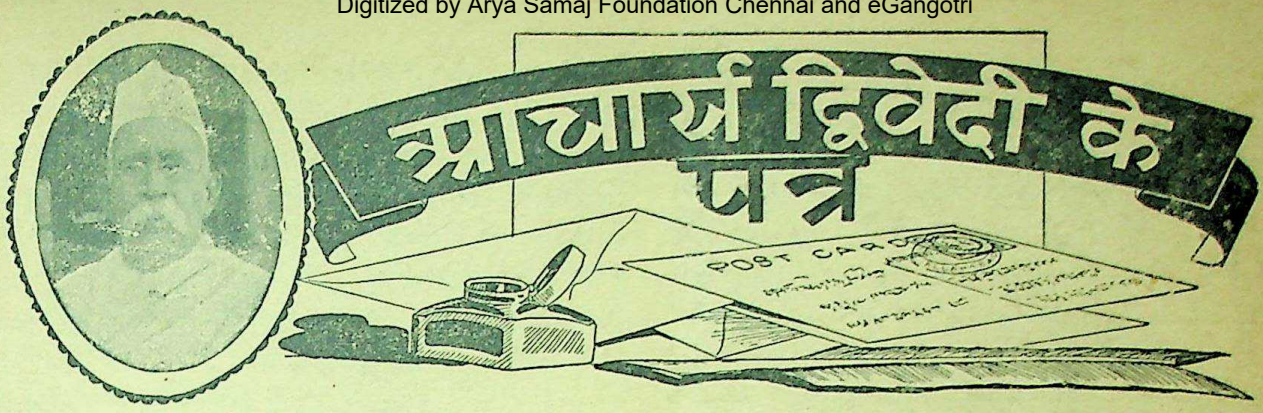

श्री राय कृष्णदास के नाम

जुही, कानपुर
२७-९-२०

आयुष्मन्

२४ का पोस्ट कार्ड मिला। नागरीप्रचारिणी सभा के कार्यकर्ताओं ने मेरे ठहरने और आतिथ्य आदि का प्रबन्ध कर दिया है। पर आप अपने ही यहाँ ठहराना चाहते हैं तो मैं वहीं चला आऊँगा। हाँ, यदि उन लोगों ने इसरार किया और न आने दिया तो लाचारी होगी। मैं बहुत करके १३ आक्टोबर की शाम को "काशी" पहुँचूँगा। शुभैषी

[करण को दुहराने के लिए द्विवेदीजी बुलाए गये थे।] म० प्र० द्विवेदी

जुही, कानपुर
७-११-२०

आयुष्मन्,

आपका कार्ड मिल गया।

आशा है कुँवर कीर्तिशाह ने आपको ख़ुद ही लिखा होगा। उनके पत्र से तो जान पड़ता है, वे आपकी चित्रों से सहायता लेंगे।

गिरिजादत्त वाजपेयी किसी समय बनारस सिटी में पोस्टमास्टर थे। उनके चचेरे भाई शिवदत्त कोई ८ वर्ष तक Excise Inspector रहे। अपने अफ़सर से लड़े। इससे ख़ास्त हो गये। ये तब इराक़ चले गये। बीमार होकर अब लौट रहे हैं। मुझे लिखा है, कहीं कोई काम दिला दो जिसमें Mesopotamia फिर न जाना पड़े। उम्र कोई ३२ साल की होगी। अँगरेज़ी उर्दू ख़ासी जानते हैं, कुछ हिन्दी भी। कहीं बनारस में इनके लिए कोई काम मिल सके तो ढूँढ़ दीजिए। ६०) ७०) में गुज़र हो जायगी। ज्ञानमण्डल या बाबू शिवप्रसाद की ज़मींदारी में या कहीं और ही जगह। स्वयं भी बाबू शिवप्रसाद को लिखा है। बहुत कष्ट न पाइएगा। सहज ही काम होने की सम्भावना हो तो कष्ट किजिएगा।

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

दौलतपुर, रायबरेली
६-१२-२०

आयुष्मन्,

पोस्ट कार्ड मिला। पढ़कर सख़्त अफ़सोस हुआ। दुःख की बात ही है। आपने मुक़दमे का मुझसे ज़िक्र नहीं किया। ऐसे समय में आन्तरिक दुःख को दबा डालना चाहिए। कुटुम्बियों के दिलबहलाव का विशेष यत्न कीजिए, अपने का कम। हम लोग रोज़ १२, १ बजे भोजन करते हैं। जिस दिन चोरी हुई थी उस दिन १० बजे भोजन किया था और बाद भी उसी वक़्त। तब से एक महीने तक बाल-बच्चों के साथ ही हँसने-बोलने में मेरा समय अधिक लगा था।

उत्तरार्ध मेघदूत की साफ़ कापी भेज दीजिए। सामने रहेगा तो धीरे-धीरे देखूँ हीगा। मेरे संशोधन पसन्द भी हैं?

बाबू शिवप्रसादजी का न तो 'स्वार्थ' ही मुझे मिलता है, न 'आज' ही। पहले दोनों आते थे, अब नहीं। मिलें तो कह दीजिए, वे कापियाँ तो मुझे भेज दी जाया करें जिनमें मेरे लेख छपें। जिसमें "देसाई का दबदबा" छपा हो उसकी एक कापी आप ही भेज दीजिए। मैंने नहीं देखा। शुभैषी

म० प्र० द्विवेदी

दौलतपुर, रायबरेली
१२-२-२१

आयुष्मन्,

बहुत दिनों से आपके समाचार नहीं मिले। आशा है, आप अच्छी तरह हैं।

सरस्वती से तो किसी तरह नजात मिली। पर काम अभी थोड़ा-बहुत बना ही है। धीरे-धीरे कम हो जाने की उम्मेद है। नींद का वही हाल है। क़ब्ज़ और भी बढ़ गया है। १८ फ़रवरी तक कानपुर चला जाऊँगा।

रायबरेली के जंट साहब महाशय देसाई की अदालत में 'प्रताप' पर मुक़दमा दायर हो गया। फ़ौजदारी। १ मार्च की पेशी है। आशा है, न्याय होगा। शुभैषी

म० प्र० द्विवेदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दौलतपुर, रायबरेली
२४ फ़रवरी २१

शुभाशीर्वचांसि विलसन्तु

कोई डेढ़ महीने से मेरी आँखें विकृत हो रही हैं। कभी बिजली सी चमकती मालूम होती है। कभी बादल से छाये जान पड़ते हैं। लिखना-पढ़ना प्रायः बन्द है। होली बाद इलाज के लिए कानपुर और ज़रूरत हुई तो लखनऊ जाने का विचार है।

बहुत समय से आपके समाचार नहीं मिले। आशा है आप सकुटुम्ब अच्छी तरह हैं।

शुभाभिलाषी
म० प्र० द्विवेदी

दौलतपुर
३१-५-२१

आशीष

१७ मई का कार्ड यथासमय मिल गया था। तम्बाकू आज आई। अनेक धन्यवाद।

तम्बाकू पत्ती (ज़र्दा) है। बहुत नरम है। बाज़ारू है तेज़, दानेदार, जैसी पहले आई थी वैसी नहीं और भिजवाने की ज़रूरत नहीं। इसी से काम चल जायगा। फिर कभी माँगूँ तो अपने यहाँ मँगवाकर 'चखकर' तेज़ होने पर ख़ुद पारसल करवाइएगा।

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

दौलतपुर, रायबरेली
२-६-२१

शुभाशिषो विलसन्तु,

रास्ते की थकावट और नींद न आने से घर लौटने पर मेरी तबीयत बिगड़ गई। ज्वर आ गया। आज कुछ अच्छा हूँ।

आपकी चिट्ठी मिली। यह आपकी उदारता और सुशीलता है जो आपने मेरे विषय में प्रशंसात्मक बातें लिखीं। मैं कोई चीज़ नहीं, एक असभ्य और असहाय ग्रामीण हूँ। आप मुझ पर कृपा करते हैं— आपका प्रेम मुझ पर है वही रस इस प्रशंसा का प्रेरक है। किसी कवि की उक्ति है—'वसन्ति हि प्रेम्णि गुणा न वस्तुनि'—प्रेमास्पद वस्तु में प्रेमी को गुण ही गुण देख पड़ते हैं, चाहे उसमें अनन्त दोष ही क्यों न हों।

आपने मुझे बड़े आराम से रक्खा। मेरा हद से अधिक सत्कार किया। मैं आपकी शालीनता पर मुग्ध हूँ। आप ही की कृपा मुझे बनारस खींच ले गई थी। मुझे आपकी और केशवजी की सङ्गति और प्रेम-सम्भाषण से जैसा आनन्द मिला वैसा बहुत दिनों से नहीं मिला था। विश्वनाथ के दर्शन न करके भी मैंने अपनी काशीयात्रा सफल समझी।

ईश्वर करे आपकी वर्तमान चिन्ता दूर हो जाय। दूरी की चेष्टा जारी रखिएगा।

मेरा ख़याल है कि रियासतदारों और ज़मींदारों को जायदाद की देखभाल ख़ुद करनी चाहिए। आप समय पर अपने गाँवों में घूमने जाया कीजिए। चाहिए तो आप प्रत्येक काश्तकार से, उसके जोत से, उसके सुख-दु परिचित हो जायँ। देखने भालने से आमदनी के ज़रिये सूझते हैं। कुछ तरीक़े ये हैं—

(१) परती ज़मीन जो जोतने-बोने लायक़ हो उसे करना चाहिए—कुवें तालाब खुदाकर, जङ्गल साफ़ करके दो वर्ष बिला लगान ज़मीन देकर।

(२) बुरी ज़मीन और बीहड़ों या ऊसरों में नीम, सरसई के पेड़ लगाकर उनकी हालत सुधारना चाहिए।

(३) बबूल कहीं बहुत हों तो उनकी लकड़ी का कोयला बनाकर आमदनी बढ़ाना चाहिए।

(४) सौ-पचास एकड़ ज़मीन में फ़ार्म खोलकर नई की वैज्ञानिक कृषि करके धनोत्पत्ति करनी चाहिए।

(५) सुधरे हुए गन्ने की खेती करके Sroadhs मैशीनों से शक्कर बनाकर बेचना चाहिए। इत्यादि—

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

दौलतपुर, रायबरेली
१०-७-२१

शुभाशिषः सन्तु,

१ जूलाई का छपा हुआ पत्र मिला। 'साहित्य' के नि का समाचार सुनकर ख़ुशी हुई। लेखक-सूची में आप नाम लिख सकते हैं।

शिल्प और सङ्गीत आपके आश्रय में थे ही। साहि उदय से तीनों का साङ्गोपाङ्ग सम्मेलन हो जायगा।

[इस पत्र का प्रकाशन हुआ ही नहीं]

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

दौलतपुर, रायबरेली
९-१२-२१

शुभाशिषः सन्तु,

मैं यहाँ २ दिसम्बर को आया। ५ से बुख़ार आने बराबर रहता है। उतरता नहीं। सुबह ९८ शाम को दरजे का। मेरे शरीर का स्वाभाविक तापमान ९६ है। वाली किताब आज रजिस्टर्ड पारसल से भेजता हूँ। लिखिएगा। शरीर का कुछ ठिकाना नहीं। ऐसा न कृत प्रतिज्ञा का पालन हुए बिना ही रह जाय।

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दौलतपुर, रायबरेली
२६-६-२२

भाशिषः सन्तु,

आमों के पारसल की पहुँच कृतज्ञताज्ञापनपूर्वक स्वीकार रता हूँ। धन्यवाद।

दस-ग्यारह आम सड़ गये। १५ आम स्टेशनवालों ने काल लिये। टाट को सुतली से फिर सी दिया। एक तो ह जगह स्टेशन से १० मील, फिर चिट्ठी के साथ रसीद मिलने ३ दिन की देरी होती है। इसी से नुक़सान होता है। शनवालों की बेईमानी ऊपर से।

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

दौलतपुर, रायबरेली
२४-११-२२

ाशीष,

पत्र मिला। चित्रों के मालिक का नाम और पता प्रेस के र्मचारियों से पूछा है। मिलने र आपको लिखूँगा।

मैं दो दिन अच्छा तो चार दिन बीमार रहता हूँ। शायद हायात्रा की तैयारी के सामान जुट रहे हैं

शुभाकांक्षी
म० प्र० द्विवेदी

दौलतपुर, रायबरेली
२९-१२-१९२२

भाशिषः सन्तु,

एक कृपा कीजिए। एक छोटे बच्चे को दूध पिलाने की क शीशी (Feeding Bottle) किसी से मँगाकर डाक ज़रिए भेज दीजिए—पारसल करके। शीशी छोटे मेल की । साथ ही मुँह में दाबने की रबर की बुड्डी दो फ़ालतू भी मेरी भानजा के लड़की हुई है। उसी के लिए चाहिए। ड़की अभी पन्द्रह ही दिन की है। कानपुर में इस समय कोई जनेवाला नहीं। इससे आपको कष्ट दिया।

शुभेच्छु
म० प्र० द्विवेदी

दौलतपुर, रायबरेली
११-४-२३

भाशिषः सन्तु,

५ तारीख़ का पोस्ट कार्ड मिला। मैं स्वयं अपने फोटो हीं उतरवाता। उस साल जयपुर गया था। पुरोहित राम-ताप के यहाँ ठहरा था। उन्होंने ख़ुद मेरे फोटो अपने स्टूडियो में लिये थे। उन्हीं से प्रभावालों ने वे फोटो मँगाकर छापे हैं और शायद सरस्वतीवाले भी वहीं से मँगाकर छापें। मैं पुरोहितजी को लिखता हूँ कि उनकी एक-एक कापी मुझे भेजें। आने पर दस्तख़त करके आपको भेज दूँगा।

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

दौलतपुर, रायबरेली
१७-७-१९२३

आशीष,

मसहरी मिल गई। पत्र भी मिला। कृतज्ञ हुआ। धन्यवाद कष्ट देने और ख़र्च कराने के लिए क्षमा आपसे मुझे माँगनी चाहिए।

मसहरी चौड़ाई में नाप से डेढ़ बालिश्त बड़ी है। मगर काम दे सकेगी। ज़रूरत होगी तो छोटी करा लूँगा।

शुभाकांक्षी
म० प्र० द्विवेदी

जुही-कलाँ, कानपुर
१४-११-२३

शुभाशिषः सन्तु,

आपका पत्र आये कई दिन हुए। कला परिषद को मैंने नहीं देखा। पर आपसे मैं किसी तरह बाहर नहीं। आपके उपयोग योग्य मेरे पास पुरातत्त्व महकमे के डाइरेक्टर-जनरल की कुछ सालाना रिपोर्टें हैं। उनको मैंने किसी को नहीं दिया, न देने का विचार ही है। उन्हें आप समय पर ले लीजिएगा अभी कभी-कभी काम पड़ जाता है।

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

दौलतपुर, रायबरेली
२०-११-१९२३

आशीष,

१६ नवम्बर का कृपापत्र मिला।

बाबू वासुदेवसहाय से पुस्तकें मिलने पर अपने ही पास रहने दीजिएगा। यदि कभी ज़रूरत होगी तो मैं ख़ुद ही आपसे दो-चार रोज़ के लिए माँग लूँगा।

विक्रीते करिणि किमंकुशे विवादः?

आपका
महावीरप्र० द्विवेदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपन्यास

निर्वासित

पण्डित इलाचन्द्र जोशी

[नीलिमा आदि महीप को एक जलसे में मिली थीं । इन्हीं के सम्पर्क में ठा० लक्ष्मीनारायणसिंह से उसका परिचय हुआ और ठाकुर स यहाँ वह कई दिन तक टिका रहा। एक दिन वहीं पर दावत में खन्ना बहनें आईं। मौक़ा पाकर एकान्त में नीलिमा ने महीप से अपने घर, ७ की सन्ध्या को, आने के लिए कहा। ७ तारीख़ को नीलिमा की माँ और बहन न्यौते में गई थीं। वह बहाना करके महीप से बातें करने के लिए रह गई थी। यथासमय महीप के पहुँचने पर नीलिमा ने उसका स्वागत चाय-पानी से करके अपने विवाह के सम्बन्ध में उससे राय माँगी तथा साहब को पात्रता के सम्बन्ध में भी प्रश्न किया। उत्तर-प्रत्युत्तर में बातें इतनी बढ़ीं कि शिष्टता की सीमा पार होने लगी। इस दशा में नीलि चेहरे पर खिन्नता की छाप देखकर महीप सकपका गया। उसे पछतावा हुआ। अपनी खीझ के लिए उसने नीलिमा से क्षमा माँगी।]

बीसवाँ परिच्छेद

महीप की बातों के अनोखे और अप्रत्याशित ढङ्ग के कारण नीलिमा के मुख पर भय और भ्रांति के जो घने बादल घिर आये थे वे सहसा उसी के भीतर की एक अदृश्य आँधी के वेग से फट पड़े, और उनके भीतर से उसके सहज स्वभावानुकूल तीखे व्यंग्य की वही मार्मिक मुसकान एक कोने में झलक उठी जिससे महीप भली भाँति परिचित था। अत्यन्त धीर, शान्त, किन्तु सहज कटीले स्वर में वह बोली—"मुझे मालूम है कि आपने आई० सी० एस० की परीक्षा में न बैठकर जो त्याग किया है वह किसी उच्च आदर्श की प्राप्ति के ही लिए किया है।"

महीप कुछ देर तक प्रश्न-भरी तीखी दृष्टि से नीलिमा की ओर देखता रहा, उसके बाद बोला—"आपने यह अनुमान कैसे लगाया, क्या मैं जान सकता हूँ?"

"हम लोग कूड़-मग़ज़ अवश्य हैं, महीप बाबू! पर उस हद तक नहीं, जिस हद तक आप समझते हैं।" यह कहते हुए नीलिमा की व्यंग्य-भरी मुसकान और अधिक मार्मिक तीव्रता से, सान पर चढ़ी तलवार की तेज़ धार की तरह झलझला उठी। उसके तीखे सौन्दर्य का निखार आज आरम्भ ही से महीप को असाधारण और अप्रत्याशित आकर्षण से भरा लग रहा था। पर इस समय, जब उसके व्यंग्य की मार्मिकता चरम अवस्था को पहुँच चुकी थी, उसके निखरे हुए सौन्दर्य का वह तेज भी जैसे पराकाष्ठा को पहुँच गया था। उसकी चकाचौंध महीप को असह्य मालूम हो रही थी। उससे बचने के लिए उसने अपनी आँखों को जैसे ओट में कर लिया। पूरी दृष्टि से उसकी ओर न देखकर बोला—"मैं आपको चाहे और कुछ भी समझूँ, नीलिमाजी, पर कूड़-मग़ज़ कभी नहीं समझ सकता। यदि यही समझता होता, तो विश्वास मानिए, आपके सौ बार निमन्त्रित करने पर भी आज आपके दरवाज़े पर न आया होता और न मैं अपने को इस क़दर ज़लील होने देता, जिसकी वजह से आज मैं स्वयं अपनी नज़रों में गिर गया हूँ। आप यदि सचमुच मेरी दृष्टि में कूड़-मग़ज़ होतीं, तो आज यह स्थिति ही न आती कि मैं इस तरह की कड़ी बातें करने का साहस आपसे करता। कल्पना नहीं कर सकतीं कि आपकी बुद्धि और समझदारी कितनी बड़ी श्रद्धा का भाव मेरे मन पर भूत की तरह सवा और वही भाव मेरे जीवन की डोर बरबस कहाँ से कहाँ लिये जा रहा है। मैं कैसे आपको समझाऊँ कि यही श्रद्धा प्रति मेरी खीझ और मेरे अन्तर्दाह का कारण है।"

नीलिमा का व्यंग्यात्मक भाव पल में फिर भ्रांति बादलों के भीतर अन्तर्हित हो गया और उसकी मुखाकृति मान प्रश्न बनकर स्तब्ध रह गई। पर वह बोली एक भी नहीं।

महीप जैसे अपने में खोया हुआ-सा कहता चला "आपने मेरी सारी कविता, मेरे सारे ज्ञान, मेरी सारी आद कल्पना को अपने में समाहित कर लिया है। इधर दिनों के भीतर आपके व्यक्तित्व का जो प्रभाव मेरे ऊपर इसके पहले वर्षों के परिचय से भी उसका चौथाई प्रभाव पड़ पाया था। इसके कुछ कारण तो मैं जानता हूँ और नहीं जानता। इस बार आपके व्यक्तित्व की परिपक्वता सहसा पूरे ज़ोरों से एक अप्रत्याशित आँधी के प्रबल झ तरह मेरे प्राणों को हिला दिया। मैं स्वयं अपने मन बदली हुई दशा को देखकर चकराया हुआ हूँ। इसमें साहब का हाथ कहाँ तक है, मैं ठीक कुछ कह नहीं फिर भी मुझे ऐसा लगता है कि यदि ठाकुर साहब आप मेरे बीच में न आये होते तो सम्भवतः आपके व्यक्तित्व रूप मेरे सामने न आया होता जो इस बार बरबस .."

"ज़रा ठहरिए, मैं एक बात आपसे पूछना चाह मैं अभी तक जान न पाई कि आप किस उद्देश्य से ये कर रहे हैं। एक बार मुझे लगता है कि आपका आ बहुत कुछ समझ लिया है, पर दूसरी बार आप कोई ऐ कह बैठते हैं जो मेरी धारणा को एकदम उलट देती है। जानना चाहिए कि हम नये युग की लड़कियाँ लड़कों की अधिक यथार्थवादिनी हो गई हैं और कविता के घुमाव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपेक्षा स्पष्टवादिता को अधिक पसन्द करती हैं। इसलिए मैं आप से प्रार्थना करती हूँ कि आप साफ़-साफ़ बतावें कि आपके मन में क्या बात है, तब मैं निश्चित रूप से अपनी ओर से कोई उत्तर दूँगी।"

महीप के काव्योत्साह पर सहसा घड़ों ठण्ढा पानी—बर्फ़ से भी ठण्ढा—पड़ गया। उसने नीलिमा के मुख के भाव पर ग़ौर किया—देखा, पत्थर की मूर्ति की तरह निश्चल निर्विकार और निरुद्वेग भाव उसके मुख पर छाया हुआ है। अत्यन्त मर्मभेदी होने पर भी वह भाव अत्यन्त सुन्दर था।

कुछ देर तक महीप स्तब्ध दृष्टि से, काठ के पुतले की तरह, नीलिमा की ओर देखता रहा। इतनी देर तक भावावेश में उसने जो-जो बातें कही थीं वे उसे भट्ठी की तेज़ आँच में तपाई हुई लाल-लाल लोहे की छड़ों से उसके हृदय को ग्लानि और लज्जा से दागने लगीं। वह सहसा उठ खड़ा हुआ। विषाद की एक गाढ़ी अँधेरी छाया ने उसके गोरे मुख की सहज दीप्ति को राहु ग्रहण की तरह ढक लिया था।

उसे खड़े होते देखकर नीलिमा भी चकित-सी उठ खड़ी हुई। महीप का वह अनोखा व्यवहार उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था।

अत्यन्त दीन भाव से, मुरझाई हुई-सी आवाज़ में महीप ने कहा—"मुझे क्षमा कीजिएगा, नीलिमाजी। मुझे इस समय स्वयं याद नहीं है कि मैं क्या ऊटपटाँग बक गया। यदि मेरी किसी बात से आपका जी दुखा हो तो मैं क्षमा चाहता हूँ। आपने कहा है कि आप यथार्थवादिनी हैं और साफ़-साफ़ बातें पसन्द करती हैं। पर मैं अभी तक छायावादी प्रभाव से पूरी तरह मुक्त नहीं हुआ हूँ। मेरे स्वभाव की यह विचित्रता अभी तक वैसी ही बनी हुई है कि मैं किसी बात को जितना ही अधिक समझाने और स्पष्ट करने की चेष्टा करता हूँ वह उतना ही अधिक उलझती और अस्पष्ट होती जाती है। किसी ज़माने में मैं अपनी इस शैली पर स्वयं मुग्ध रहा करता था और उसे अपनी प्रतिभा की महत्ता का प्रमाण मानता था, पर अब मेरे मन में यह निश्चित विश्वास जम गया है कि यह अस्पष्टता मेरी प्रतिभा का नहीं, बल्कि मेरी मूर्खता का—मेरे उलझे हुए मन की जड़ता का—परिचायक है। यह जानते हुए भी मैं अपनी आदत को नहीं छोड़ पाऊँगा, यह भी निश्चित है। इसलिए आपका समय अधिक नष्ट करना मैं व्यर्थ समझता हूँ। आप.....अच्छा, नमस्—"

नीलिमा के मुख पर एक भयावनी मुर्दनी-सी छा गई थी। उसने महीप को बीच ही में टोकते हुए घबराई हुई आवाज़ में कहा—"महीपजी, क्या आप सचमुच नाराज़ होकर चले जा रहे हैं? मैंने तो कोई ऐसी बात नहीं कही!"

महीप ने देखा, मूर्तिमती करुणा की तरह नीलिमा व्याकुल दृष्टि से उसकी ओर देख रही है। वह यह सोचकर हैरान हो रहा था कि वह साक्षात् पहेली कितनी जल्दी अपने मुख के भावों को बदल देती है। इस समय नीलिमा के उस करुण भाव में कृत्रिमता का लेश भी नहीं था। महीप न चाहने पर भी फिर एक बार बरबस पिघल गया। रोनी-सी सूरत बनाते हुए बोला—"मैं नाराज़ होकर नहीं जा रहा हूँ। आपसे नाराज़ होने का कोई अधिकार मुझे नहीं है। पर.....मुझे दुःख इतना ही है कि इतनी देर तक आपसे बातें होने पर भी न मैं आपको अपनी बात समझा पाया न आपकी ही बात समझ पाया। आप मुझे एक पहेली लग....."

"मैं पहेली ही सही, महीपजी",—बीच ही में बात काटती हुई नीलिमा बोली—"इसकी आप तनिक भी चिन्ता न कीजिए। केवल इतनी-सी कृपा हम ग़रीबों पर कीजिए कि हम लोगों से नाराज़ न रहा कीजिए। मैं जानती हूँ कि मेरे स्वभाव में बहुत सी ऐसी बातें हैं जो आपको कभी प्रिय नहीं लग सकतीं। पर यह जानती हुई मैं लाचार हूँ—अपने स्वभाव को मैं बदल नहीं सकती। फिर भी इतना आप जाने रहिए कि आपका नाराज़ रहना मुझे कभी अच्छा नहीं लग सकता। इसलिए आपसे प्रार्थना करती हूँ कि आप खाना खाकर यहाँ से जायँ। खाना तैयार है। अकेले खाना मुझे कभी अच्छा नहीं लगता। मैं और प्रतिमा खाना खाकर आवेंगी। आप यदि मेरा साथ देने की कृपा करें तो आपकी बहुत कृतज्ञ रहूँगी। मँगाऊँ आपके लिए भी भोजन?"

ऐसी उत्सुकता से नीलिमा ने यह बात कही कि महीप का विद्रोही मन फिर एक बार जैसे किसी मन्त्रबल से ठीक उसी प्रकार शान्त हो उठा जिस प्रकार फन को ऊपर उठाकर फुफकारता हुआ साँप मदारी की जादू-भरी पुचकार से एकदम शान्त होकर सिर झुका लेता है।

उसके मुख पर से मौन विषाद की छाया क्षण-भर के लिए जैसे विलीन हो गई। शान्त और सहज भाव से उसने उत्तर दिया—"अच्छी बात है। हालाँकि मुझे विशेष भूख नहीं है फिर भी आप जब चाहती हैं तब आपका साथ देने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है।"

नीलिमा का मुख अप्रत्याशित प्रसन्नता से प्रदीप्त हो उठा। उसके उस दीप्त भाव ने महीप के अँधेरे हृदय को क्षण-भर के लिए ठीक उसी प्रकार जगमगा दिया जिस प्रकार अस्तगामी सूर्य के ऊपर से बादलों के अकस्मात् हट जाने पर कुछ काल के लिए सारी प्रकृति आलोकित हो उठती है। वह आलोक बहुत तीव्र न होने पर भी उस समय अत्यन्त तीक्ष्ण और आँखों को चकाचौंध लगानेवाला जान पड़ता है। पर उस क्षणिक चकाचौंध के साथ यह अनुभूति पल भर के लिए भी साथ नहीं छोड़ती कि कुछ ही क्षण बाद से अंधकार सघन से सघनतर होता चला जायगा और एक अनन्त पातालव्यापी सन्नाटा महामृत्यु की तरह समस्त विश्व-प्रकृति को छा देगा। तब केवल रह जायगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर अनुभूतिशील किन्तु वाणी-रहित तारों का टिमटिमाना और
ीचे गहनतम अन्धकार के सघन पर्दों के भीतर छिपे हुए निपट
केले हृदय का धुकधुकाना। रह-रहकर महीप के भीतर अपने
ावन के भावी आकाश में उसी अगम अन्धकार के छाने की
स्पष्ट आशङ्का न जाने किस रहस्यमयी प्रेरणा से फड़फड़ा रही
ी। यह निश्चित अनुभूति उसके मन में धीरे-धीरे घर करती
ली जाती थी कि शीघ्र ही—निकटतम भविष्य में—नीलिमा
और उसके बीच महाकालरात्रि का वही आकाश-पाताल-
ापी अगम अन्धकार एक अच्छेद्य व्यवधान का सघन पर्दा
ाल देगा, जो सम्भवतः मृत्यु-पर्यन्त नहीं हट पावेगा। तब इस
स्तगामी सूर्य के क्षणिक प्रकाश की तीव्रता का क्या मूल्य उसके
ए हो सकता है? यह केवल उस आनेवाले सर्वग्रासी अँधेरे
ो प्रगाढ़ता को गाढ़तर और भीषणतर रूप देने में ही सहायक
द्ध होगा। महीप के तीव्र अनुभूतिशील कवि-हृदय को ऐसा
नुभव होने लगा जैसे विषाद की हिमालयाकार चट्टान उसके
ाटे-से हृदय में किसी जादू की माया से समा गई हो और उसके
ारों ओर एक अचल, अटल और दुर्लंघ्य दीवार खड़ी कर
ी हो।

इक्कीसवाँ परिच्छेद

नीलिमा ने दो व्यक्तियों के लिए भोजन मँगाया। महीप
मरे मन से उसका साथ दिया। ऐसी उदासीनता—बल्कि
दासी—का भाव जताते हुए महीप ने खाना खाया कि नीलिमा
ा हृदय जैसे एकदम नीचे धँसकर बैठ गया। भोजन करते
मय महीप ने केवल दो ही-एक बातें मुँह से निकाली होंगी,
ौर वे भी आटे-दाल के विषय में—नितान्त गद्य-भरी।

खा-पी चुकने पर ज्योंही महीप सिगरेट जलाने लगा और
लिमा ने दो बीड़े पान के मुँह में डाले त्योंही बाहर फाटक के
स से मोटर का भोंपू बजने की आवाज़ आई। अचानक
हीप को लगा कि इतनी देर तक नीलिमा के साथ उसका अकेले
ा रहना उचित नहीं रहा—इसके पहले ही यदि वह चला
या होता तो व्यर्थ के सङ्कोच से बच जाता। नीलिमा का
ाग्रह मानकर वह मूर्खों की तरह भोजन करने क्यों बैठ गया,
ह सोचकर वह मन ही मन ग्लानि से पीड़ित होने लगा। पल
यह प्रचण्ड सत्य बिजली की तरह उसके सामने उद्घाटित हो
या कि आज नीलिमा के अत्यन्त निकट सम्पर्क में आने का
ल केवल यह हुआ कि दोनों ने अपने को एक-दूसरे से बहुत
र पाया। यह बात भी आज महीप से छिपी न रही कि वह
री किसी सामाजिक विवशता के कारण उतनी नहीं है जितनी
नों के मन के भीतरी विरोधों के कारण। इस अनुभव के
लस्वरूप वह पहले ही से विषाद की जड़ता और सङ्कोच की
ानि का अनुभव करने लगा था, उस पर जब फाटक के भीतर
ाटर ने प्रवेश किया तब उसकी बेचैनी और अधिक बढ़ गई।
सके मन की प्रवृत्ति उस समय किसी से बातें करने या नीलिमा के
साथ एकान्त में बैठे रहने के सम्बन्ध में किसी प्रकार की
सफ़ाई देने की नहीं थी। पर अब सम्भवतः उसे बाध्य
ऐसा करना पड़ेगा, यह सोचकर वह घबरा उठा। यदि
होता तो वह चुपचाप चोरों की तरह उठकर, सबकी नज़र
कर, चल देता। पर कार भीतर आ चुकी थी। प्रतिमा
उसकी माँ ने भीतर प्रवेश किया।

"हल्लो मिस्टर प्रा—महीप बाबू! आप यहाँ कब से
रक्खे हुए हैं?" प्रतिमा ने अत्यन्त उल्लसित भाव मुख
झलकाते हुए कहा।

महीप ने देखा कि वह चोरी करते हुए पकड़ा गया
यद्यपि वह कुछ भी चुराने में असमर्थ रहा। एक बार
झूठ बोलने का विचार किया और कहना चाहा कि अभी
हूँ। पर इतनी बड़ी झूठ एक तो यों भी छिपी न रहती,
वह स्वभाव से सच बोलने के लिए लाचार था। उसने
"मैं सात बजे से यहाँ आया हुआ हूँ।"

"ओः ठीक! दीदी, तुम्हारा सिर-दर्द तो बढ़ गया
बेचारे ठाकुर साहब! उन्हें बड़ी निराशा हुई।"

प्रतिमा की बात आधी स्पष्ट थी और आधी पहेली।
महीप न उस पहेली को स्पष्ट कराना चाहता था, न अपनी
से उस चर्चा को आगे बढ़ाने की इच्छा रखता था।

श्रीमती खन्ना ने वक्र दृष्टि से महीप की ओर देखते
अत्यन्त रूखे स्वर में कहा—"तुम अभी यहीं हो, महीप?
तो कानपुर जानेवाले थे! कब जा रहे हो?"

निपट ग्लानि की कड़वी घूँट को बरबस गटकते हुए
बोला—"जल्दी ही जाऊँगा—वैसे ठीक कुछ भी नहीं कह
सकता। एक दिन के लिए यहाँ आया था, पर इतने दिन
गये अभी तक पूरी बेतकल्लुफ़ी से ठाकुर साहब के यहाँ
हुआ हूँ!'

"हाँ, ठाकुर साहब कह तो रहे थे।" विचित्र मुखमुद्रा
श्रीमती खन्ना ने कहा।

"क्या कह रहे थे?" अत्यन्त उत्सुकता से महीप ने पू
"कुछ नहीं – यही कि – तुम अभी गये नहीं – यहीं हो।

प्रतिमा बोली—"जब ठाकुर साहब के समान 'हास्पि
होस्ट' मिल जायँ तब कौन उस आराम को छोड़कर
चाहेगा! मैं आपसे अनुरोध करती हूँ, महीपजी, कि ज
ठाकुर साहब अपने मुँह से स्पष्ट शब्दों में आप से चले
लिए न कहें तब तक आप आराम से उनके यहाँ जमे रहें।
चाहती हूँ कि उनके धैर्य की पूरी परीक्षा हो।"

श्रीमती खन्ना ने आक्रोश-भरी दृष्टि से प्रतिमा की
देखा। पर प्रतिमा तनिक भी विचलित नहीं हुई।
"आपको अभी जाने की जल्दी क्या है? कुछ दिन
ठहरिए, और एक कवि की क्रान्तदर्शी दृष्टि से इस बात
सूक्ष्म निरीक्षण करते रहिए कि जिस प्रकार के समाज के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप आ भटके हैं उसके मूल में कौन-सी प्रवृत्तियाँ काम कर रही हैं और किस प्रकार के रहस्यों का खेल चल रहा है।"

"प्रतिमा, फ़िज़ूल की बातें न करो। जाओ, कपड़े बदल आओ।" घबराहट के साथ श्रीमती खन्ना ने कहा।

प्रतिमा ने कहा—"अभी जाती हूँ, माँ।" पर वह खड़ी रही।

महीप सहसा उठ खड़ा हुआ और प्रतिमा को लक्ष्य करके बोला—"मैं आपके सुझाव के लिए आपको हृदय से धन्यवाद देता हूँ। इस समय आज्ञा दीजिए।" अब उसने पहले श्रीमती खन्ना की ओर हाथ जोड़े और तब नीलिमा और प्रतिमा की ओर। पर श्रीमती खन्ना ने उसके नमस्कार का कोई भी उत्तर न दिया, बल्कि मुँह फेर लिया। नीलिमा और प्रतिमा ने मौन भाव से प्रति-नमस्कार किया।

महीप फाटक के बाहर कुछ ही दूर पहुँचा होगा कि खन्ना परिवार का एक नौकर दौड़ा हुआ आया और महीप के आगे खड़ा हो गया और बोला—"बड़ी बीबी आपको बुलाती हैं।"

महीप जानता था कि खन्ना परिवार के नौकर नीलिमा को 'बड़ी बीबी' कहते हैं। उसने एक बार आश्चर्य से नौकर की ओर देखा और फिर कुछ क्षण सोचकर लौट चला। फाटक के बाहर, इमली के एक घने पेड़ के नीचे, धुँधली चाँदनी में महीप ने देखा, सफ़ेद पत्थर पर खुदी हुई स्तब्ध किन्तु भौतिक और रहस्यमय विषाद की एक मूर्त्ति उसके सामने खड़ी है। क्षण भर के लिए महीप सहम गया। नौकर चला गया था। नीलिमा ने बहुत ही धीमी आवाज़ में, प्रायः फुसफुसाते हुए, कहा—"मुझे क्षमा करना, महीप, मैं विवश हूँ।" [illegible] जाता है जहाँ उन्होंने अभी किसी मज़दूर के उसकी पूर्ण गर्भवती दुर्बलकाय पत्नी के साथ नारकीय अत्याचारों का आँखों-देखा-सा विशद वर्णन किया है। कविजी यह दृश्य देखकर 'छत पर मौन' पड़े विचार कर रहे हैं—

जीवित रह गई उदर के भीतर शिशुतन की जाली।
उठकर छत पर टहल रहा किस प्रगति-शिखा की यह माया।
इतनी बड़ी सृष्टि मेरी उलझन की प्रतिबिम्बित छाया।

प्रगतिशीलता के द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की फिलासफ़ी में 'अंचल' जी ने प्रगति-शिखा के मायावाद का समावेश करके 'वाद' को भी अन्य भारतीय अध्यात्मवादों की पंक्ति में ला दिया है। भारतीय कवि का यह विचार-प्रदान सराहनीय होना चाहिए।

तीसरी कविता में कविजी पुनः घोषणा करते हैं :—

एक नूतन सृष्टि का पर मैं दहकता क्रुद्ध गायक
सद्य विधवा-सा नये अभिशाप रौरव का विधायक।
है यही ललकार मेरी, है यही हुङ्कार भासी।
व्यक्ति के झूठे अहम् की सर्वहारा है न दासी।

इसी प्रकार एक के बाद दूसरी कविता में 'अपने दहकते गायन' के द्वारा अञ्चलजी ने किसी न किसी प्रकार के 'नये

"यह कैसे हो सकता है, महीप, कैसे?"—अत्यन्त अस्फुट स्वर में फुसफुसाती हुई नीलिमा बोली—"तुम किस ख़याल में बातें कर रहे हो?"

महीप का उन्मादग्रस्त व्यक्ति का-सा उतावलापन बढ़ता चला जाता था। उसी उतावलेपन के साथ वह उसी तरह फुसफुसाता हुआ बोला—"मैं ख़याल में बातें नहीं कर रहा हूँ, मैं घोर यथार्थ को ध्यान में रखते हुए ऐसा कह रहा हूँ। तुम्हारे समान समझदार नारी को जीवन के आमूल परिवर्तन के लिए निश्चय करने में एक क्षण से अधिक समय नहीं लग सकता। इसी क्षण अपने सारे पिछले जीवन को, समाज को और संसार को ऐसा भूल जाओ जैसे उनसे तुम्हारा सम्बन्ध कभी रहा ही न हो, और इसी हालत में, इन्हीं कपड़ों में, बिना और किसी दूसरे सामान के, मेरे साथ चली चलो—मुझपर पूर्ण विश्वास करके बोलो नीलिमा, चलोगी, चलोगी?..."

क्षण भर के लिए नीलिमा स्तब्ध खड़ी रही। न उसने अपना हाथ छुड़ाया, न वह कुछ बोली। सम्भवतः पल भर के लिए उसका मन वास्तव में कुछ डगमगाया और महीप के उस विचित्र पागलपन के-से प्रस्ताव को मानने के लिए उसका मन का एक अज्ञात कोना शायद कुछ विचलित हो उठा। पर उसके बाद ही सहसा एक हलके झटके से उसने हाथ छुड़ा लिया और अत्यन्त आकुलता के साथ बोली—"नहीं महीप, यह सम्भव नहीं है। तुम नहीं जानते मेरी विवशताओं को। [illegible] मैं [illegible] बात 'दहकते क्रुद्ध गायन' की अपेक्षा अधिक समझ में आ सके।

परन्तु इस दहकते गायन में पावस की सन्ध्यायें भी हैं जहाँ कवि देखता है :—

'पहन लहरिया आज खड़ी होगी तुम उसी अटारी पर फिर'

विदा के क्षण भी हैं, जब वह पूछता है :—

'रक्त-भरे आँसू छलकाकर प्रणयिनि क्यों दे रहीं विदाई?'

मनुहारें भी हैं, जब वह याचना करता है :—

'आज ले लो प्राण, पावन तो करो तृष्णा हृदय की' और 'अपरिचिता' से वादा करता है :—

मैं न बोलूँगा करो विश्वास ओ पगली दुलारी!
बस जलूँगा मौन कातर-सा अचंचल प्राणप्यारी।
मैं दरस का हूँ भिखारी आज पावस के प्रलय में;
दूर ही से दान दो, उद्दीप्त हो आकुल हृदय में,
मैं न जीभर भी निहारूँगा तुम्हें ओ रूपवाली!

मिलन-वेलायें भी हैं, जहाँ :—

'मैं आज अहं खोकर अपना फिर लेटा उसके चरणों पर'

शाम को टहलते-टहलते वह सिविल लाइन्स की ओर भी चला जाता है जहाँ वह आधुनिकाओं के लाल गाल, और लाल अधर निरखता है और कामदेव की भगिनियों' 'रँगीली तितलियों' और 'अलकापुरी की अप्सराओं' को देखकर कहता है :—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षण में अपने विचित्र व्यवहार से उनके मन की उदास किन्तु
गाढ़ अवस्था में अचानक जो एक अनोखी उथल-पुथल मचा दी
थी और एक ऐसी दुस्साहसिकता जगा दी थी जिसकी कल्पना उस
क्षण के पहले वह कभी नहीं कर सकता था, उस पर एक बार
वह शान्त चित्त से, निर्विकार भाव से, धैर्य के साथ विचार
करना चाहता था। क्योंकि किसी अज्ञात, रहस्यमय प्रेरणा से
वह दृढ़ विश्वास उसके मन में जम गया था कि आज की उस
अप्रत्याशित और क्षणिक घटना ने उसके भावी जीवन पर चाहे
हित के लिए हो या अहित के लिए—एक ऐसी छाप मार दी है
जो अब कभी किसी उपाय से मिट नहीं सकती। उस छाप का
प्रभाव उसके जीवन पर क्या और किस रूप में पड़ेगा, उसका
कणमात्र आभास उसके अन्तर्जगत के किसी छिपे कोने में खोजने
पर भी मिल सकेगा, इसकी तनिक भी आशा यद्यपि महीप को
नहीं हो सकती थी, तथापि उसके अज्ञात महत्त्व की सघन
गम्भीरता ने बरबस उसके प्राणों को छा दिया था। उसी सघन
छाया के अन्धकार में अपने को पूर्णतः छिपाने की चेष्टा करता
हुआ महीप बँगले पर पहुँचा।

उसने सोचा था कि बँगले पर जाकर चुपचाप लेट जायगा।
पर वह यह भूल गया था कि धीराज का पलँग बाहर—उसके पलँग
के पास ही—बिछा रहता है। धीराज अभी सोया नहीं था।
सम्भवतः उसी का इन्तज़ार कर रहा था; क्योंकि उसके पहुँचते ही
अत्यन्त उत्सुकता से उसका स्वागत करता हुआ बोला—
"हृदय जैसे एकदम [illegible] बैठ गया [illegible] थे?"
समय महीप ने केवल दो ही-एक बातें मुँह से निकाली होंगी,
और वे भी आटे-दाल के विषय में—नितान्त गद्य-भरी।

खा-पी चुकने पर ज्योंही महीप सिगरेट जलाने लगा और
नीलिमा ने दो बीड़े पान के मुँह में डाले त्योंही बाहर फाटक के
पास से मोटर का भोंपू बजने की आवाज़ आई। अचानक
महीप को लगा कि इतनी देर तक नीलिमा के साथ उसका अकेले
बैठा रहना उचित नहीं रहा—इसके पहले ही यदि वह चला
गया होता तो व्यर्थ के सङ्कोच से बच जाता। नीलिमा का
आग्रह मानकर वह मूर्खों की तरह भोजन करने क्यों बैठ गया,
यह सोचकर वह मन ही मन ग्लानि से पीड़ित होने लगा। पल
भर यह प्रचण्ड सत्य बिजली की तरह उसके सामने उद्घाटित हो
गया कि आज नीलिमा के अत्यन्त निकट सम्पर्क में आने का
फल केवल यह हुआ कि दोनों ने अपने को एक-दूसरे से बहुत
दूर पाया। यह बात भी आज महीप से छिपी न रही कि वह
दूरी किसी सामाजिक विवशता के कारण उतनी नहीं है जितनी
दोनों के मन के भीतरी विरोधों के कारण। इस अनुभव के
फलस्वरूप वह पहले ही से विषाद की जड़ता और सङ्कोच की
ग्लानि का अनुभव करने लगा था, उस पर जब फाटक के भीतर
मोटर ने प्रवेश किया तब उसकी बेचैनी और अधिक बढ़ गई।
उसके मन की प्रवृत्ति उस समय किसी से बातें करने या नीलिमा के

"टहलने चला गया था।" मरे मन से, मुरझाई
आवाज़ में, महीप ने उत्तर दिया। उसके बाद जल्दी-जल्दी
उतारकर और उन्हें अपने सिरहाने रखकर वह चारों
चित लेट गया।

धीराज उसकी ओर मुँह करके, पाँव चारपाई के
लटकाकर इधर-उधर की बातें करने लगा। महीप केवल
या 'ना' करके चुप रह जाता था। वह बातें करने की मान
स्थिति में क़तई नहीं था। पर धीराज भी जैसे क़सम
बैठा था कि महीप को अभी सोने नहीं देगा। इसका
बाद में स्पष्ट हो गया। कुछ देर तक निरर्थक बातें क
बाद वह धीरे से बोला—"आज रूपा से खुलकर बातें कर
मौक़ा मिल गया।"

उदासीन महीप के कान कुछ खड़े हुए। उसने पू
"क्या कहा उसने?"

"उसने साफ़ कह दिया है कि मैं पिछली सब बातें
भूल जाऊँ और भविष्य में उससे किसी प्रकार का कोई सम
रक्खूँ—यहाँ तक कि उससे बातें करने का कोई
भी न छूँछूँ।"

"और कोई ख़ास बात?"

"कोई ख़ास बात नहीं।"

"ठाकुर साहब के सम्बन्ध में?"

(क्रम

[illegible]
बोला—"जल्दी ही जाऊँगा—वैसे ठीक कुछ भी नहीं कहा
सकता। एक दिन के लिए यहाँ आया था, पर इतने दिन
गये अभी तक पूरी बेतकल्लुफ़ी से ठाकुर साहब के यहाँ
हुआ हूँ!'

"हाँ, ठाकुर साहब कह तो रहे थे।" विचित्र मुखमु
श्रीमती खन्ना ने कहा।

"क्या कह रहे थे?" अत्यन्त उत्सुकता से महीप ने पू

"कुछ नहीं—यही कि—तुम अभी गये नहीं—यहीं हो

प्रतिमा बोली—"जब ठाकुर साहब के समान 'हाश्
होस्ट' मिल जायँ तब कौन उस आराम को छोड़कर
चाहेगा! मैं आपसे अनुरोध करती हूँ, महीपजी, कि ज
ठाकुर साहब अपने मुँह से स्पष्ट शब्दों में आप से चले
लिए न कहें तब तक आप आराम से उनके यहाँ जमे रहें
चाहती हूँ कि उनके धैर्य की पूरी परीक्षा हो।"

श्रीमती खन्ना ने आक्रोश-भरी दृष्टि से प्रतिमा की
देखा। पर प्रतिमा तनिक भी विचलित नहीं हुई।
"आपको अभी जाने की जल्दी क्या है? कुछ दिन
ठहरिए और एक कवि की क्रान्तदर्शी दृष्टि से इस बात
सूक्ष्म निरीक्षण करते रहिए कि जिस प्रकार के समाज के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

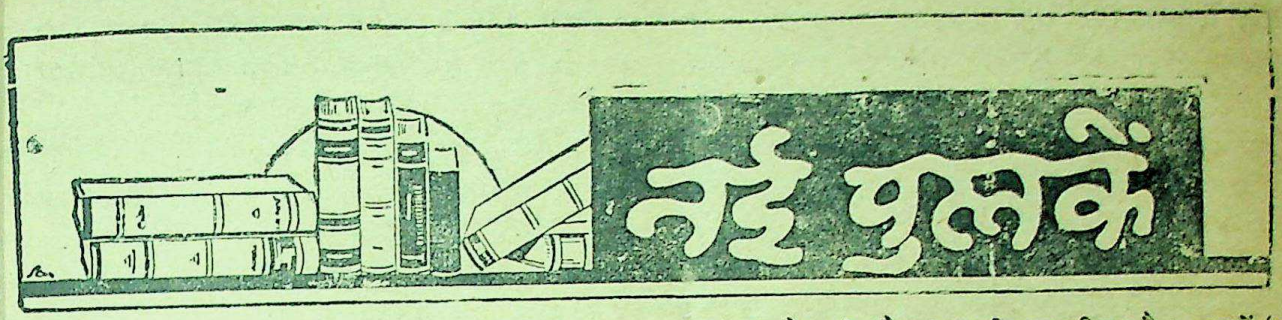

१-२—पण्डित रामेश्वर शुक्ल 'अञ्चल' के २ कविता-संग्रह।

(१) करील—प्रकाशक, रामनारायणलाल पब्लिशर और सेलर, प्रयाग हैं। मूल्य १) और पृष्ठ-संख्या ९६ है। यह भिन्न शीर्षकों की ३८ कविताओं का संग्रह है। छपाई, अप आदि साधारण है।

कवि महोदय के लेखानुसार यह उनकी कविताओं का संग्रह है।

पहली कविता में ही हम 'पराजय का क्रन्दन', 'असफल न की पूर्ण तबाही' और 'आशाहीन कल्पना' का राग सुनते कविजी का निश्चय है :—

जगती के रौरव की नङ्गी आँच सदा साँसों में साधे।
मैं आगे बढ़ता जाऊँगा प्रलय अग्नि अङ्गों में बाँधे।

कविजी के कल्पना-जगत् के रौरव की नङ्गी (!) आँच का नाच हमें दूसरी कविता में ही मिल जाता है जहाँ उन्होंने मी किसी मज़दूर के उसकी पूर्ण गर्भवती दुर्बलकाय पत्नी थ नारकीय अत्याचारों का आँखों-देखा-सा विशद वर्णन ा है। कविजी यह दृश्य देखकर 'छत पर मौन' पड़े विचार रहे हैं—

जीवित रह गई उदर के भीतर शिशुतन की जाली।
उठकर छत पर टहल रहा किस प्रगति-शिखा की यह माया।
इतनी बड़ी सृष्टि मेरी उलझन की प्रतिबिम्बित छाया।

प्रगतिशीलता के द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की फिलासफ़ी में चल' जी ने प्रगति-शिखा के मायावाद का समावेश करके 'वाद' को भी अन्य भारतीय अध्यात्मवादों की पंक्ति में ला या है। भारतीय कवि का यह विचार-प्रदान सराह-होना चाहिए।

तीसरी कविता में कविजी पुनः घोषणा करते हैं :—

एक नूतन सृष्टि का पर मैं दहकता क्रुद्ध गायक
सद्य विधवा-सा नये अभिशाप रौरव का विधायक।
है यही ललकार मेरी, है यही हुङ्कार भासी।
व्यक्ति के झूठे अहम् की सर्वहारा है न दासी।

इसी प्रकार एक के बाद दूसरी कविता में अपने 'दहकते गायन' के द्वारा अञ्चलजी ने किसी न किसी प्रकार के 'नये अभिशाप' और नये 'रौरव' का विधान किया है। उन्हें 'चारों ओर अँधेरा' और 'अन्धकार का कारवाँ' बढ़ता दिखाई देता है। इस अन्धकार को दूर करने का उपाय वे 'नारी' के द्वारा बताते हैं :—

मुक्ति चाहती हैं हम—
धन के असम औ' अनियमित वितरण से
मानव द्वारा मानव के नारकीय शोषण से,
दुःख ग़रीबी और बढ़ती बेकारी से—
और युगों से बँधे, सड़ते, घिनावने पुंस्त्वहीन प्रेम से।
इंद्रियों के विकृत, विकारमय निग्रह से,
अपने अवाञ्छनीय 'सेक्स' के दमन से।
होगी नवयुग की अवतारणा धरा पर तब।

हमारी तुच्छ सम्मति से तो कविजी को कविता लिखने के बजाय अपने एक-एक सुझाव पर स्वतन्त्र निबन्ध लिखना चाहिए, जिससे उनके तर्क के सहारे उनकी बात 'दहकते क्रुद्ध गायन' की अपेक्षा अधिक समझ में आ सके।

परन्तु इस दहकते गायन में पावस की सन्ध्यायें भी हैं जहाँ कवि देखता है :—

'पहन लहरिया आज खड़ी होगी तुम उसी अटारी पर फिर'

विदा के क्षण भी हैं, जब वह पूछता है :—

'रक्त-भरे आँसू छलकाकर प्रणयिनि क्यों दे रहीं विदाई ?'

मनुहारें भी हैं, जब वह याचना करता है :—

'आज ले लो प्राण, पावन तो करो तृष्णा हृदय की' और 'अपरिचिता' से वादा करता है :—

मैं न बोलूँगा करो विश्वास ओ पगली दुलारी!
बस जलूँगा मौन कातर-सा अचंचल प्राणप्यारी।
मैं दरस का हूँ भिखारी आज पावस के प्रलय में;
दूर ही से दान दो, उद्दीप्त हो आकुल हृदय में,
मैं न जीभर भी निहारूँगा तुम्हें ओ रूपवाली!

मिलन-वेलायें भी हैं, जहाँ :—

'मैं आज अहं खोकर अपना फिर लेटा उसके चरणों पर'

शाम को टहलते-टहलते वह सिविल लाइन्स की ओर भी चला जाता है जहाँ वह आधुनिकाओं के लाल गाल, और लाल अधर निरखता है और कामदेव की भगिनियों' 'रँगीली तितलियों' और 'अलकापुरी की अप्सराओं' को देखकर कहता है :—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बादलों के टुकड़ों सी फूटी तक़दीर,
टूट-टूटकर उड़ रही।

× × × ×

किन्तु ये नमक की पुतलियाँ
पैदा करतीं रक्त में,
कैसी रस-भरी झनझनाहट एक
कुछ-कुछ बिजली के 'शाक' सी।

कविजी के इस सस्ते पलायन के साथ-साथ लाल रूस की जीत के नारे, क्रांति की पुकार, जनगीत की ज्वाला, किसानों के शोषण का क्रंदन और वेदना की सृष्टि भी है। सब कुछ है, पर मन में बार-बार प्रश्न उठते हैं, क्या यही प्रगति है? यही कविता है? क्या प्रगतिशील कवि यही हैं?

(२) **लाल चूनर**—प्रकाशक, अवध-पब्लिशिंग हाउस लखनऊ, मूल्य २) और पृष्ठ-संख्या ७२। इस पाँचवें संग्रह में २७ कवितायें हैं। काग़ज़ और छपाई तथा गेट अप सुन्दर और आकर्षक हैं।

इस पुस्तक में हमें उन प्रश्नों का आंशिक उत्तर मिलता है, जो करील को पढ़कर हमारे मन में उठे थे। कवि स्वयं स्वीकार करता है कि 'जब मैं ईमानदारी से सोचता हूँ तो मुझे लगता है है मेरे पास जनता के हृदय की वेदना या जनता के प्रति वह संवेदना कहाँ है जो उसके सहस्रधार जीवन को सहस्रधार प्रेरणायें दे सके। काव्य में प्रगतिशीलता कहलानेवाले उस उपयोगी सामूहिक रस को, सामाजिक स्वतन्त्रता की उस महान् तरङ्ग को, जनता कीमहत्त्वाकांक्षाओं और स्वार्थों के उस सर्वदेशीय साधारणीकरण को अपनी कविताओं में एक कठोर जीवन देने के लिए जिस क्रान्तिकारी मनोबल और जनता के साथ सक्रिय अभिन्नता की आवश्यकता है वह मुझमें नहीं है।" उसने अपनी कविताओं को रोमांस और सौन्दर्यासक्ति की कवितायें माना है। कवि महोदय की इस ईमानदारी का हम अभिनन्दन करते हैं। परन्तु अपने आत्म-स्पष्टीकरण में जीवन दर्शन और समाजशास्त्र का अपने जैसा विवेचन करते-करते उन्होंने अपने विषय में यह निर्धारित किया है कि वे प्रगति के सक्रिय सैनिक और सेना का कूच सङ्गीत गानेवाले कवि अभी नहीं बन पाये हैं, अपितु प्रगति सेना के विराम-स्थलों और पड़ावों के कवि हैं। किसी दिन उन्हें विवश होकर प्रगति-संग्राम में अग्रणी भी बनना पड़ेगा ऐसा उनका विश्वास है।

इस प्रकार 'लाल चूनर' में संगृहीत कविताओं को पाठक दो दृष्टियों से पढ़ सकते हैं—एक तो उनके रोमांस और सौन्दर्यासक्ति के विचार से और दूसरे प्रगति सेना के पड़ावों के जनगीतों या विश्रामगायनों के विचार से। 'प्रगति सेना' को यदि हम रूपक अलङ्कार युक्त पद न समझकर वास्तविक सेना के रूप में समझें तब तो इन दोनों विचारों को हम मिला भी सकते हैं, क्योंकि सैनिकों के पड़ावों में आसन्न भविष्यत् की भयावह कल्पना के प्रतिक्रियाजनक मनोरञ्जनों में रामा सौन्दर्यासक्ति के गानों की प्रचुरता रहती है।

फूल काँटों में खिला था
सेज पर मुरझा गया।

में कवि ने रोमांस और अपनी तथा कथित प्रगति मिश्रण करने की चेष्टा की है। ये दो पंक्तियाँ काफ़ी प्रवाह

कवि 'निवेदन' करता है—

चुका तुम्हारा स्नेह और मैं
डूबा मरण-तिमिर में
तुम निज छवि-मन्त्रित अधरों से
एक बूँद छहरा दो।
मुझे जलाओ मुझे बुझाओ
मैं ममता का मारा।

'मनुहार' में वह अपनी प्रेयसी का 'कौमार्य' लालसा करता है।

कवि की यह उद्धत उदार भावुकता 'नहीं जाती' की पूर्ति या कहना चाहिए 'काफ़िया और रदीफ़' के बन्दों अधिक उभार तथा वेग के साथ व्यक्त हुई है। पंक्तियाँ देखिए :—

किसी की मदभरी चितवन
कलेजे से नहीं जाती
× × ×
नहीं जाती किसी की याद
प्राणों से नहीं जाती।
× × ×
छिपाने को छिपा लेता
विकल चीत्कार मैं सारा
मगर अभिव्यक्ति की मानव-
सुलभ तृष्णा नहीं जाती।

परन्तु 'अभिव्यक्ति की मानव-सुलभ तृष्णा' ने सारा विकल चीत्कार' यहाँ अत्यधिक 'साधारणीकरण' को मुखरित कर दिया है।

इसी प्रकार की निस्सङ्कोच मुखरता 'ठहर जाओ और तुमको देख लें आँखें' में व्यक्त हुई है।

'अन्तिम भेंट' में, प्रेयसी भी लज्जा का आवरण हटा की बात खुलकर कहती है :—

अब तक प्रिय मैं रही तुम्हारी
अब हो गई पराई!
× × ×
शेष हो गया प्राणों का
सुख-स्रोत—हृदय की बातें;
मधुर जागरण-मादक
निद्रा की वे क्वारी रातें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज शिथिल बाँहों के बन्धन
चुम्बन मन्त्र न गाते;
लगता यों प्राणेश ! मुझे
मैं उमड़ी बरस न पाई ।

कवि निश्चय ही अत्यधिक संवेदनशील और भाव-प्रवण सौन्दर्य का बाह्य आवरण उसे सहज ही मोह लेता है और दुरन्त अपनी संवेदना को अपनी बन्धनहीन वाचालता के में बहा देता है। उसका हृदय और मस्तिष्क दोनों दो ओं में कार्य करते हैं। हृदय इन्द्रियों की रूप-रसादि की क्ति के साथ सौन्दर्य पर ललचाता है और उसी में अपनी खोजना चाहता है; परन्तु मस्तिष्क से वह इन आकर्षणों का क्रमण करके लोक के दुःख-सुख समझना चाहता है। ाम-स्वरूप उसकी सौन्दर्यानुभूति उसके मस्तिष्क की अशांति अव्यवस्था के साथ मिश्रित होकर व्यक्त होती है और जब स अशांति और दुश्चिन्ता से छुटकारा पाना चाहता है तो कविता में पलायन की भावना ओतप्रोत हो जाती है। शीर्षक कविता में उसकी इंद्रियासक्ति और मस्तिष्क के का सङ्घर्ष स्पष्ट दिखाई देता है। नारी के आकर्षणों मुख अपने को अशक्त और विवश पाकर वह बौखला है—

तुम वही हो गा जगाती
जो हृदय की कोंपलों को,
जानता हूँ मैं तुम्हारे
इन नशीले चोचलों को।

× × × ×

इन कुलेलों में न कोई
रह गया मुझको प्रलोभन;
एक से निष्प्राण हैं
सारे तुम्हारे ये प्रसाधन।

मध्ययुगीन कवि भी नारी के आकर्षणों से सावधान रहने का देते थे। सूरदास ने 'नारी नागिन एक स्वभाव' कहकर मनोवृत्ति का परिचय दिया है। परन्तु मध्ययुगीन कवि प्रतिगामी थे और आज का कवि प्रगतिशील है।

प्रगतिशील है फिर भी
सम्पूर्ण गगन को घेरे है
जल का मटियारा धुँधलापन,
मेरी आत्मा पर छाया है
कैसा भयावना उजड़ापन।

कवि की निराशा में ही कदाचित् प्रगति का कोई रहस्य है। कवि महोदय के इस संग्रह में जहाँ भावों के विषय ानदारी और निष्कपटता है, वहाँ भाषा में भी प्रवाह और गुण हैं। आधुनिक कवि लाक्षणिक पदावली का प्रयोग करके शैली में जहाँ रोचकता लाते हैं, वहाँ कभी-कभी मिश्रित और अव्यवस्थित रूपकों का ऐसा अनगढ़ बेजोड़ प्रयोग करते हैं कि उनकी शैली से अपरिचित पाठक उनके भावों में किसी रहस्य को खोज, करने लगते हैं। परन्तु उन्हें उसकी 'छाया' भी नहीं मिल पाती। 'अंचल' में इस प्रकार के मिश्रित और अव्यवस्थित रूपकों के प्रयोग की प्रचुरता है। 'लाल,चूनर' में इस प्रकार के प्रयोग अनायास ही मिल जायँगे। अनभ्यासी पाठक 'शोषितों की सिसकती बिजलियाँ', 'चिर प्या चाँद को ममता से बुझाना', 'रेशमी चितवन का हृदय पर उतर आना', 'घुटे अरमान का जगाना' तथा 'पतझड़ के छिन्न बादलों की दुख-भरी प्रभाती' समझने में यदि कठिनाई अनुभव करें तो आश्चर्य नहीं। केवल हिन्दी के पाठकों को ये प्रयोग किसी अहिन्दी शैली के असफल अनुकरण अनुवाद से लगेंगे।

उर्दू की चलताऊ कविता और शैली का भी कवि की भावना और शैली दोनों पर काफ़ी असर है। इससे जहाँ उसकी भावना की अभिव्यंजना में एक ओर कुछ सस्तापन-सा आ गया है वहाँ प्रसाद और ओज गुणों ने मिलकर उसकी शैली को आकर्षक भी बना दिया है। नीचे की पंक्तियों में पाठक कवि की देशभक्ति का भी परिचय पा सकते हैं :—

पड़ी शमशीर दुल्हन-सी
छिपी क्यों म्यान में साथी ?
चला करती क़ज़ा थी
छाँह में जिसकी बनी दासी,
नहीं दिखती वही सूरज
किरन-सी ख़ून की प्यासी।

× × ×

तुम्हारे देश की सरहद
घिरी है आज चोरों से,
बहन कहती बचाओ
लाज जापानी लुटेरों से

× × ×

तुम्हें सौगन्ध अस्मत के
रुपहले इन सितारों की;
तुम्हें सौगन्ध है कय्यूर
के उन जाँनिसारों की।
तुम्हें सौगन्ध अन्धड़
और तूफ़ानी नज़ारों की

'अस्मत के रुपहले सितारों' के बावजूद इस कविता में काफ़ी जोश और रवानी है।

'लाल चूनर' को पढ़कर पाठकों का मनोरञ्जन होगा, ऐसी हमें आशा है।

—ब्रजेश्वर वर्मा, एम० ए०

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'बम्बई योजना' का द्वितीय भाग

भारत के कुछ प्रमुख उद्योगपतियों ने देश की आर्थिक समृद्धि के लिए एक १५ वर्षीय योजना गत वर्ष प्रस्तुत की थी। उस योजना का दूसरा भाग अब तैयार हो गया है। इसके निर्माण में सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास, श्री ताता, श्री घनश्यामदास बिड़ला, सर श्रीराम, श्री कस्तूराबाई लालभाई, श्री ए० डी० श्रौफ़ और डाक्टर जानमथाई का प्रमुख हाथ है। साप्ताहिक 'वीर अर्जुन' में उसका सारांश इस प्रकार छपा है :--

"भविष्य में आय के समान न्यायोचित विभाजन के लिए सम्पत्ति व धन की असमानता दूर की जानी चाहिए तथा स्वामित्व का आधार विस्तृत किया जाना चाहिए। धन-सम्पत्ति की असमानता को दूर करने के लिए मृत्युकर व ज़मीन की मियादों में सुधार मुख्य साधन हैं। विकेन्द्रीकरण को विशेषत: औद्योगिक क्षेत्र में, गृह व स्वल्प उद्योगों के विकास, ज्वायंट स्टाक कम्पनियों में हिस्सों का व्यापक वितरण, उद्योगों के प्रादेशिक वितरण और को-आपरेटिव उद्योगों के विकास के द्वारा प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

न्यायोचित आय-विभाजन की नीति के दो लक्ष्य होने चाहिए—(१) एक समुचित जीवन-स्तर पर रहने के लिए आवश्यक न्यूनतम आय हरेक व्यक्ति को हो (२) तथा विभिन्न वर्गों और व्यक्तियों में आय की जो असमानता है वह दूर हो। प्रथम उद्देश्य की पूर्ति के लिए (१) आय के आम स्तर को ऊँचा किया जाय तथा (२) जीवन-यापन के ख़र्च को घटाया जाय और इस असमानता को दूर करने के लिए सीधे टैक्सों को मुख्य साधन बनाया जाय।

बेकारी का सर्वथा अभाव, कार्य की योग्यता में वृद्धि, नागरिक व देहाती मज़दूरियों में सुधार, कृषिजन्य वस्तुओं के मूल्यों का संरक्षण और बहु-प्रयोजन, को-आपरेटिव सोसाइटियों का विकास तथा ज़मींदारी-सम्बन्धी प्रणाली में सुधार इस योजना के मुख्य स्तम्भ हैं और उनसे देश का आम आय का स्तर ऊँचा उठने की आशा है।

उद्योगों में यथासम्भव अधिकतम व्यक्तियों को काम दिया जाय और इसके लिए सभी उद्योगपतियों में एकता व सङ्गठन होना तथा स्वल्प एवं गृह उद्योगों का विकास ज़रूरी है।

बेकारी के सर्वथा अभाव की समस्या हल करने के लिए कृषकों को भी बीच-बीच में फ़सल से अतिरिक्त दिनों में उत्पन्न बेकारी को दूर करने के लिए [illegible] काम देने के महत्त्वपूर्ण प्रश्न को हल करना होगा। इसके लिए [illegible] तीन उपाय सुझाये गये हैं—(१) मिश्रित कृषि की [illegible] (२) सिंचाई के अधिक अच्छे साधनों व खादों से साल [illegible] ही ज़मीन में एकाधिक फ़सलें तैयार करना और (३) साबुन तथा काग़ज़ आदि सहायक उद्योगों की व्यवस्था।

औद्योगिक मज़दूरों तथा कृषक मज़दूरों की मज़दूरि[illegible] भारी अन्तर है उसे दूर करने के लिए न्यूनतम उचित द[illegible] प्रस्थापित किये जाने चाहिए। इस दिशा में वस्त्र, [illegible] एञ्जीनीयरिंग, खानें, सीमेंट आदि सुव्यवस्थित व जमे हुए [illegible] में प्रथम क़दम उठाया जाना चाहिए।

किसानों की सुरक्षा तथा उनकी कार्यपटुता को उन्न[illegible] के लिए प्रमुख फ़सलों के उचित मूल्य को सरकार निर्ध[illegible] और इस काम को सरलतर बनाने के लिए खाद्य-सामा[illegible] उचित कोष सुरक्षित रक्खे। साथ ही इस बात को [illegible] रखकर कि उपभोक्ताओं द्वारा चुकाये गये मूल्य की उचि[illegible] किसानों को प्राप्त हो सके, विभिन्न कार्यों के लिए को[illegible] सोसाइटियाँ खुलें।

ज़मींदारी प्रथा कृषि-सुधार की योजना को सफल [illegible] बाधक है। इसको सफल बनाने के लिए यह आवश्य[illegible] ज़मीन पर कृषक का ही पूर्ण अधिकार हो और इस अ[illegible] क़ानून बने कि कृषक ग़ैर कृषक को अपनी ज़मीन न [illegible] साथ ही भूमिकर को विभिन्न स्थानों में एक सा कर दि[illegible] तथा आयकर को इन्कम टैक्स के उसूलों का पालन [illegible] यथाशक्ति कम किया जाय।

समाज में जनता के जीवन-स्तर को सुधारने के लि[illegible] में प्रारम्भिक स्कूल, मिडिल स्कूल तथा वयस्क पाठशाल[illegible] तथा देहाती औषधालयों एवं बड़े अस्पतालों में लोगों [illegible] औषधियाँ मिला करें। साथ ही जन-सेवा की आवश्य[illegible] जैसे बिजली, गैस इत्यादि को इस भाँति सस्ता बनाया [illegible] साधारण जनता उनका उपभोग कर सके।

भारत में तब तक पूर्ण सुरक्षा की योजना नहीं [illegible] सकती जब तक कि बेकारी को दूर करने की नीति [illegible] जाय और अधिकांश जनता को स्थायी काम मिलने की [illegible] हो जाय अर्थात् बेकारी पैदा करनेवाली विभिन्न अ[illegible] अवस्थाओं के ख़िलाफ़ समुचित बीमा-व्यवस्था न हो [illegible] प्रत्येक व्यक्ति की आय इतनी न बढ़ जाय कि वह बीम[illegible] के अनुसार बीमा में कुछ पैसे दे सके। फिर भी प्रारम्भ[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ाव किया जाता है कि सङ्गठित उद्योगों में बीमारी का बीमा या जाय तथा वेतन के साथ छुट्टियाँ दी जायँ।

सम्पत्ति की वर्तमान असमानता को दूर करने के लिए बिना की उपार्जित आय पर श्रम से उपार्जित आय से अधिक आय- लगाया जाय तथा कृषि-आय कर एवं मृत्युकर भी लागू ये जायँ।

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सावधानी से काम किया जाय, कि हमने जो कर के सुझाव रक्खे हैं वे निस्सन्देह देश पर एक तिरिक्त बोझ का काम करेंगे, अगर यह कर लगाने के लिए ता के प्रति एक उत्तरदायी सरकार न हो।

किसी भी विशाल आर्थिक योजना को सफल बनाने के लिए कार का हाथ आवश्यक है। अगर प्रजातन्त्र राष्ट्र युद्ध के ए अपनी सम्पत्ति एवं साधनों को लगा सकते हैं तो वे उन्हीं धनों को एक देश में व्यापक दरिद्रता, बीमारी तथा निरक्षरता लड़ने के लिए भी लगा सकते हैं, ऐसी कल्पना करना कुछ युक्तियुक्त नहीं।

योजना के रचयिता अपने आर्थिक सङ्गठन को निम्न आधार बनाना चाहते हैं—(१) व्यक्तिगत व्यापार को काफ़ी क्षेत्र मिले, २) व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के कुप्रयोग से जाति को जो नुक़सान सकता है उससे उसकी सुरक्षा का ध्यान रक्खा जाय। (३) र्थिक साधनों की वृद्धि के निर्देशन में सरकार का प्रमुख हाथ रहे।

जनता के हित के लिए यह आवश्यक है कि स्वामित्व, न्त्रण तथा उद्योगों के प्रबन्ध में सरकार का काम और विस्तृत पर वह सरकार राष्ट्रीय सरकार हो। जिन उद्योगों का सरकारी न्त्रण के बिना चल सकना कठिन हो उनमें सरकार ही पूँजी ाये और अपना नियन्त्रण रक्खे जैसे कि बुनियादी उद्योग, ाधिकार या अन्य ऐसे उद्योग जिनको सरकारी सहायता मिल हो। पर यह आवश्यक नहीं कि जिन उद्योगों पर सरकारी न्त्रण हो उनका प्रबन्ध भी सरकार ही करे। उनका प्रबन्ध ता की कारपोरेशन द्वारा या व्यक्तिगत आयोजन द्वारा भी वश्यकतानुसार किया जा सकता है। पर प्रारम्भ में स्वामित्व, न्त्रण तथा प्रबन्ध के लिए सरकार को अस्थायी रूप में कुछ य नियन्त्रण भी करने आवश्यक होंगे।

साथ ही इस योजना को सफल बनाने के लिए यह नितान्त वश्यक है कि देशी रियासतों समेत सम्पूर्ण भारत एक आर्थिक ाई हो।

साहित्यकार-संसद्

हिन्दी के कुछ अग्रणी-साहित्यकारों ने विशेष उद्देश्यों लेकर एक 'साहित्यकार-संसद्' की स्थापना की है जिसका स्तर परिचय संसद् के प्रधान मन्त्री के शब्दों में ही वे दिया जा रहा है। कहने की आवश्यकता नहीं कि आज युग में इस प्रकार की संस्था हिन्दी-साहित्यकार के लिए बहुत बड़ा आधार सिद्ध होगी। हम समस्त हिन्दी-हितैषियों से अपील करते हैं कि वे इसकी सहायता मुक्तहस्त होकर करें।

गत पचीस वर्षों से हिन्दी का साहित्य जितना समृद्ध हुआ है, साहित्यकार की लौकिक स्थिति उतनी ही अधिक दीन होती गई है। युग की विविध विषमताओं को देखते हुए किसी अन्य परिणाम की कल्पना की भी नहीं जा सकती। साहित्य-कार लौकिक दृष्टि से विशेष सतर्क प्राणी नहीं हो पाता और यह स्वभाव उसे साहित्य के जीवन-व्यापी कल्याणोन्मुख लक्ष्य से मिलता है। किन्तु प्रत्येक स्वतन्त्र और विकासशील राष्ट्र अपने चिन्तकों तथा कलाकारों के हितों का सजग प्रहरी होता है, क्योंकि उनकी कृतियाँ युग-विशेष में जीवित मानव-समष्टि के मानसिक तथा बौद्धिक विकास की सीमायें हैं।

हम, परतन्त्र देश के हीन भावनाओं के भार से आक्रान्त प्राणी हैं। इसी से हमें अपने प्रतिभा-सम्पन्न कलाकार अपवाद जैसे जान पड़ते हैं। उन्हें व्यक्ति के रूप में देखकर उनकी सुख-सुविधा का ध्यान रखना हम एक प्रकार से भूल चुके हैं। ऐसे साहित्यकारों की संख्या कम नहीं जिन्होंने जीवन की साधारण सुविधाओं से वञ्चित रहकर ही असाधारण साहित्य का अनन्य सृजन किया। भाषा की दृष्टि से हिन्दी के महत्त्व के साथ-साथ उनकी कृतियों का महत्त्व भी बढ़ा; किन्तु उसने आज की व्यव-साय-बुद्धि को जितना आकर्षित किया उतना न्याय-बुद्धि को नहीं। परिणामतः, पुस्तक-व्यवसाय की बाढ़ में पुस्तकों में सञ्चित ज्ञान के द्रष्टा भी बह गये। उनके साहित्य का मूल्याङ्कन करने में अथक आलोचकों ने भी उनके जीवन का मूल्य आँकने की कभी आवश्यकता नहीं समझी। आज तो स्थिति इस सीमा तक पहुँच गई है कि यदि कोई विशिष्ट साहित्य-कार बिना भोजन, बिना आच्छादन तथा बिना उपचार के, खुले आकाश के नीचे जीवन-लीला संवरण कर दे तो हम इसे दुर्घटना ही न मानेंगे! हमें अपने प्रति ग्लानि न होकर साहित्य-कार की उस मन्द बुद्धि पर दया आयेगी जिसके कारण वह इस व्यवसायोन्मत्त युग की सुविधाओं से लाभ उठाकर अपने लिए सुख के साधन न जुटा सका। ऐसी अस्वस्थ मानसिक स्थिति सामूहिक रूप से हानिकर है। किन्तु इसके उपचार के लिए हमारे पास अवकाश कम और साधन अल्प हैं।

साहित्यकार, अपनी विकलाङ्गता के प्रदर्शन पर जीनेवाला भिक्षुक न होकर, जीवन के सुन्दरतम आदर्शों का विधाता है। अपने व्यक्तिगत दुःख तथा अभावों का विज्ञापन कर दूसरों की दया पर जीवन-निर्वाह करना उसके लिए सब प्रकार से अशोभन है।

हमारी साहित्यिक संस्थायें प्रचार के कार्य में इतनी उलझी हैं कि वे इस बढ़ती हुई विषमता तथा अन्याय की रोक-थाम करने का अवकाश ही नहीं पातीं। साहित्यकारों की भी ऐसी कोई सहयोग समिति नहीं, जो उन्हें एक दूसरे के सुख-दुःख से परिचित करा सके तथा परस्पर सहयोग और सहायता की सुविधा दे सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी अभाव की पूर्ति के लिए हिन्दी के विशिष्ट साहित्यकारों ने साहित्यकार-संसद् की स्थापना की है, जो मतभेदों की नींव पर न बनकर लेखकों की उद्देश्यगत एकता के आधार पर बनी है। व्यक्तिगत आस्था, दर्शन, राजनीति आदि की दृष्टि से एक साहित्यकार दूसरे की अनुकृति मात्र नहीं होता, प्रत्युत सामूहिक कल्याण की दृष्टि से उन सब के जीवन में 'एकोऽहं बहु स्याम' की भावना ही व्याप्त रहती है। संसद् का आधार साहित्यकारों की अनेक रूपों में व्यक्त कल्याणैषी महान् आत्मा है, और उसका लक्ष्य पारस्परिक सहयोग तथा सहानुभूति को सहज और स्वाभाविक बनाना है।

संसद् ऐसी "लेखक-सहायक निधि" की स्थापना करेगी जिससे सङ्कट-ग्रस्त लेखकों तथा उनके परिवार को सहायता दी जा सके। वह प्रकाशकों के निकट साहित्यकारों के हितों की संरक्षक रहेगी। प्रकाशन का कार्य भी उसके क्षेत्र के अन्तर्गत है। लेखकों को पर्याप्त पुरस्कार देने के उपरान्त शेष आय सहायक निधि में सम्मिलित कर ली जायगी जिसका उपयोग आवश्यकतानुसार लेखक कर सकेगा। जो साहित्यकार इस समय अस्वस्थ और साहित्य-सृजन में असमर्थ हैं उनके स्वास्थ्य लाभ करने तक संसद् उन्हें सहयोग और सहायता पहुँचाने का प्रबन्ध करेगी।

संसद् को अपना कार्य आरम्भ करने लिए कम से कम ५०००) रु० की आवश्यकता है जो हिन्दी-प्रेमियों का विशाल परिवार देखते हुए नगण्य ही कहा जायगा।

संसद् के पदाधिकारी, निम्नलिखित साहित्यकार रहेंगे :—

अध्यक्ष—राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त। उपाध्यक्ष—श्री माखनलाल चतुर्वेदी। प्रधान मन्त्री—श्रीमती महादेवी वर्मा। सहायक मन्त्री—श्री हजारीप्रसाद द्विवेदी। कोषाध्यक्ष—श्री राय कृष्णदास।

संसद् के आगामी ६ मास के कार्यक्रम को निश्चित करने के लिए श्री भदन्त आनन्द कौसल्यायन, श्री गुलाबराय, श्री सियारामशरण गुप्त, श्री इलाचन्द्र जोशी, श्रीमती महादेवी वर्मा (संयोजक) की एक उपसमिति निर्वाचित हुई है। यह उपसमिति सहायक निधि, प्रकाशन आदि से सम्बन्ध रखनेवाले प्रश्नों पर अनेक दृष्टियों से विचार-विनिमय करके एक निश्चित कार्यक्रम संसद् की आगामी बैठक में उपस्थित करेगी।

इस पुण्य कार्य में सहायता और सहयोग देने के इच्छुकों को "प्रधान मन्त्री, साहित्यकार संसद्, १ एलगिन रोड, प्रयाग" के पते से पत्र-व्यवहार करना चाहिए।

स्वतन्त्र भारत शासन विधान

हिन्दू महासभा ने भी एक शासन-विधान बनाया है जो उसके गत अधिवेशन में स्वीकृत हो चुका है। 'सिद्धान्त' के अनुसार उसकी रूप-रेखा इस प्रकार है :—

भारत (जिसको 'हिन्दुस्थान' कहना चाहिए) घोषित कर दिया जाय और युद्ध के शान्त होते ही 'हि के स्वतन्त्र राज्य' की स्थापना हो जानी चाहिए। वि निम्नलिखित मौलिक सिद्धान्त होने चाहिएँ—"(क) जनता का यह जन्मसिद्ध अधिकार है कि वह स्वतन्त्र रहे। ऐतिहासिक, राजनीतिक, भाषा सम्बन्धी तथा सांस्कृतिक दि एक तथा अखण्ड है और भविष्य में भी रहेगा। (ग) प्रजातन्त्रवादी हो और उसकी सत्ता केन्द्र में रहे। (घ) सभा दोहरी हों। (ङ) सभाओं का चुनाव बालिगों के हो, प्रत्येक बालिग एक वोट दे सके। चुनाव सम्मि और अल्पसंख्यकों के लिए उनकी संख्या के अनुसार कुछ सुरक्षित रहना चाहिए। (च) केन्द्रीय सरकार को ही अधिकार रहें। (छ) सरकार के अधिकार—शासन न्याय—इन दो विभागों में बाँटना चाहिए और न्याय-वि शासन-विभाग से सर्वथा स्वतन्त्र रखना चाहिए। (ज) और गैरजड़ाकू जातियों में कोई भेदभाव नहीं माना ज (झ) हिन्दुस्थान के फेडरेशन (सङ्घ) में देशी रियास सम्मिलित रहेंगी और वे उसका एक अङ्ग ही मानी ज उनमें भी इसी प्रकार की उत्तरदायी सरकार की स्था जायगी। (ञ) यदि आवश्यकता हो, तो भाषा के प्रान्तीय सीमाओं में परिवर्तन किया जा सकता है। (ट) का यह कर्तव्य होगा कि वह सब की, जिसमें अल्पसंख्यक भी हैं, धर्म, भाषा और संस्कृति की रक्षा करे।" आगे मौलिक अधिकारों का विवेचन किया गया है, जो इस प्रकार "(क) क़ानून के आगे समस्त मनुष्य बराबर हैं। (ख) मनुष्य अपने परिश्रम की कमाई को भले प्रकार भोग (ग) जनता के स्वास्थ्य और उसे काम करने योग्य लिए राज्य नियम बनावेगा। (घ) प्रत्येक मनुष्य को प्रारम्भिक शिक्षा दी जायगी। (ङ) प्रत्येक मनुष्य अस्त्र रख सकेगा। (च) कोई भी मनुष्य केवल ज तथा धर्म के कारण किसी भी नौकरी तथा किसी प्रकार के से वञ्चित न रक्खा जायगा। (छ) कोई भी मनु क़ानूनी कार्यवाही के निर्वासित न किया जा सकेगा। (भी व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के अधिकार से बिना किसी वञ्चित न किया जा सकेगा। (झ) कोई भी मनुष्य सम्मति स्वतन्त्रता से दे सकेगा। उसे अधिकार होगा शान्तिपूर्वक इकट्ठा हो या अपनी कोई संस्था बना ऐसी संस्था शान्ति अथवा सदाचार में बाधक न हो। प्रत्येक मनुष्य जनता की शान्ति तथा सदाचार को दृष्टि हुए कोई भी धर्म मान सकता है। सब को धार्मिक रहेगी और किसी प्रकार हस्तक्षेप न किया जायगा। स्वतन्त्र होगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

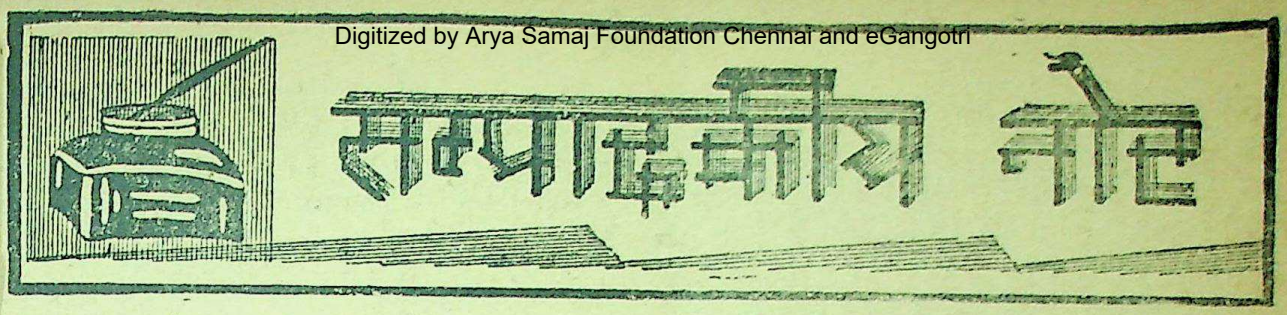

'बम्बई योजना' का दूसरा भाग

'बम्बई-योजना' का दूसरा भाग भी इस वर्ष प्रकाशित हो है। इसका सारांश 'सरस्वती' की इसी संख्या में हम अन्यत्र दे हैं। पाठकों को स्मरण होगा कि गत वर्ष इस योजना का व भाग जब प्रकाशित हुआ था तब इसके आलोचकों का क सम्बन्ध में सबसे बड़ा आक्षेप यह था कि इसका निर्माण कगत पूँजीवाद के समर्थकों द्वारा हुआ है, अतएव इसमें दूरों और किसानों की चिन्ता नहीं की गई है।

प्रस्तुत भाग से उक्त आक्षेप का आंशिक उन्मूलन हो जाता कारण, इस भाग में प्रधानतः किसानों और मज़दूरों के पर ही विचार किया गया है। योजना के निर्माताओं ने भ में ही अपने दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हुए कह दिया है देश की आर्थिक समृद्धि के लिए बड़े-बड़े धन्धों के विकास राष्ट्रीय आय की वृद्धि को ही पर्याप्त समझ लेना ठीक नहीं प्रत्युत उस बढ़ी हुई आय का समुचित वितरण भी श्यक है। क्योंकि यदि किसी आर्थिक योजना का फल हो कि उससे कुछ धनवान् अधिक धनवान् बन जायँ, तो सफल नहीं कहा जा सकता। ऐसी योजना जनसाधारण वन स्तर को ऊँचा नहीं उठा सकती है।' इस प्रकार इस ना में साम्यवाद और पूँजीवाद के समन्वय का प्रयत्न गया है।

योजना में दो मूलभूत सिद्धान्त स्वीकार किये गये हैं। तो यह कि रहन-सहन का न्यूनतम मापदण्ड स्थिर कर जाय और ऐसी व्यवस्था की जाय कि देश के प्रत्येक निवासी ल्पतम आय इतनी अवश्य हो जिससे वह मापदण्ड स्थिर इसके लिए कुछ सुझाव भी उपस्थित किये गये हैं। की आय बढ़ाने के लिए यह सुझाव दिया गया है कि भूमि पर खेती करनेवाले का ही अधिकार रहना चाहिए। कार ज़मींदारी प्रथा का अन्त करने पर ज़ोर दिया गया है। ों के सम्बन्ध में भी ऐसी ही बात कही गई है। साथ ही नों-मज़दूरों का व्यय कम करने के लिए यह सिफ़ारिश की है कि उनकी महत्त्वपूर्ण आवश्यकताओं—जैसे निःशुल्क क और माध्यमिक शिक्षा, चिकित्सा आदि की पूर्त्ति सरकार ोर से हो।

दूसरा मूलभूत सिद्धान्त यह है कि यतः प्रत्येक क्षेत्र में वाद का प्रयोग न सम्भव है और न आवश्यक, न वर्त्तमान क ढाँचे को सहसा उखाड़ फेंकना ही अभीष्ट है, अतः योग्यता और कार्यक्षमता के आधार पर पारिश्रमिक में अन्तर रहना आवश्यक है। फिर भी यह अभीष्ट नहीं है कि देश में असमानता की वृद्धि होती ही जाय। इसलिए प्रत्यक्ष कर, क्रमानुसार आयकर, अनुपार्जित आय पर उपार्जित आय से अधिक कर लगाने तथा मृत्यु-कर लगाने की सिफ़ारिश की गई है।

बड़े-बड़े कल-कारख़ानों के नियन्त्रण पर भी इस योजना में ध्यान रक्खा गया है क्योंकि आर्थिक विषमता के मूल कारण वे ही हैं। योजना के अनुसार कुछ महत्त्वपूर्ण बड़े धन्धे सरकारी नियन्त्रण में रहेंगे और कुछ व्यवसाय व्यक्तिगत उद्योगपतियों के स्वयं विकास के लिए खुले रहेंगे।

इस प्रकार इस योजना में समय के साथ चलने का और देश के प्रत्येक वर्ग की स्वार्थरक्षा का प्रत्येक सम्भव प्रयत्न किया गया है। सबसे बड़ी विशेषता इस योजना की यह है कि इसमें वर्गयुद्ध को बचाया गया है। यह स्पष्ट सत्य है कि भविष्य के संसार में पूँजीवाद अपनी समस्त बुराइयों के साथ जीवित नहीं रह सकता। दूसरी ओर यह भी सत्य है कि रूस का साम्यवाद आज के भारत के जलवायु में नहीं पनप सकता, हाँ, कुछ समय पश्चात् भले ही वातावरण उसके अनुकूल हो जाय, इसलिए—जैसा कि योजना के निर्माताओं का भी मत है—मध्यममार्ग का अनुसरण करना ही श्रेयस्कर है।

योजना में राष्ट्रीय सरकार की स्थापना पर भी विशेष ज़ोर दिया गया है क्योंकि यह स्वयंसिद्ध है कि ऐसी योजनायें राष्ट्रीय सरकार की संरक्षकता में फूल-फल सकती हैं।

देखना यह है कि देश के ज़मींदारवर्ग और पूँजीपतिवर्ग पर इसकी क्या प्रतिक्रिया होती है और वे इसका स्वागत किस रूप में करते हैं।

बृहत्त्रय की घोषणा

काले तट का त्रिनायक-सम्मेलन समाप्त हो गया। इस सम्मेलन ने जो संयुक्त घोषणा की है उसका प्रभाव संसार की राजनीति पर पड़ना अनिवार्य है। उक्त घोषणा के अनुसार 'कर्ज़न लाइन' को पोलैण्ड की पूर्वीय सीमा माना गया है। इस प्रकार पोलैण्ड की जो क्षति होगी उसकी पूर्त्ति के लिए उसे अन्य भूमि दी जायगी। पोलैण्ड की अस्थायी सरकार को अभी स्वीकार कर लिया गया है, पर शीघ्र ही वहाँ एक आम चुनाव होगा और उस चुनाव द्वारा निर्मित सरकार को अन्तिम रूप से पोलैण्ड की सरकार मान लिया जायगा। बाल्कन प्रदेशों पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ निर्णय नहीं दिया गया है। केवल युगोस्लाविया के लिए कहा गया है कि वहाँ टीटो-सुबासिक समझौते के अनुसार सरकार बनाई जायगी। घोषणा में यह भी कहा गया है कि तीनों महान् देश जर्मनी को तीन भागों में बाँट लेंगे। जर्मनी के बिना शर्त्त आत्मसमर्पण कर देने पर वहाँ का शासन-प्रबन्ध त्रिनायकों की एक सम्मिलित समिति द्वारा होगा जिसका प्रधान कार्यालय बर्लिन में रहेगा। फ्रान्स यदि चाहेगा तो जर्मनी के कुछ भाग पर उसका भी अधिकार स्वीकार कर लिया जायगा। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि फ्रान्स को भविष्य में योरप में द्वितीय श्रेणी का राष्ट्र माना जायगा।

यह ध्यान देने की बात है कि इस घोषणा में पूर्वीय देशों के और जापान से होनेवाले युद्ध के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं कहा गया है। सम्भवतः इसका कारण यह है कि रूस के साथ जापान की जो अनाक्रमण-सन्धि सन् १९४१ में हुई थी उसका पालन स्टालिन महोदय वफ़ादारी के साथ कर रहे हैं। वह सन्धि पाँच वर्ष के लिए थी और उसमें एक शर्त्त यह थी कि दोनों देशों में जो देश सन्धि को तोड़ना चाहे वह कम से कम एक वर्ष पूर्व अपने इरादे की सूचना दूसरे को अवश्य दे। आगामी वर्ष—१९४६ में—उस सन्धि के पाँच वर्ष पूरे हो जायँगे। २५ अप्रैल को सेनफ्रांसिस्को में फिर मन्त्रणा होने की बात घोषणा में कही गई है और यह भी बतलाया गया है कि उक्त अवसर पर फ्रांस और चीन को भी मन्त्रणा में सम्मिलित किया जायगा। स्टालिन महोदय चीनी प्रतिनिधियों के साथ सन्धि-विग्रह सम्बन्धी बातें करने से गत १९४१ से अब तक बराबर बचते आये हैं। यदि सेनफ्रांसिस्को में चीनी प्रतिनिधि सम्मिलित हुए तो चीन तथा अन्य पूर्वीय देशों के सम्बन्ध में भी अवश्य विचार होगा। सम्भव है, जैसा कि राजनीतिज्ञों का अनुमान है, कि उसके बाद रूस जापान से अपनी अनाक्रमण-सन्धि के भङ्ग होने की भी घोषणा कर दे और फिर तीनों महती शक्तियाँ जापान को हराने के लिए एक साथ प्रयत्न करें। यदि ऐसा हुआ तो जापान के हारने में अधिक देर न लगेगी और सन् १९४६ के अन्त तक युद्ध का आतंक संसार से उठ जायगा।

घोषणा की सब से महत्त्वपूर्ण बात एक ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय संघ की स्थापना है जो समस्त विश्व की शान्ति और सुरक्षा के लिए उत्तरदायी होगा और जिसका उद्देश्य होगा आक्रमणों को रोकना और साथ ही उन बातों को दूर करने का प्रयत्न करना जो आर्थिक, सामाजिक या राजनैतिक दृष्टि से युद्ध का कारण हुआ करती हैं।

रेडियो की भाषानीति

पिछले दिनों रेडियो की भाषानीति के सम्बन्ध में निम्नलिखित सरकारी विज्ञप्ति प्रकाशित हुई है :—

"रेडियो समाचार, समाचार-टीकाओं और घोषणाओं के सम्बन्ध में हिन्दी-उर्दू समस्या पर भारत-सरकार के निर्णय—

(१) समाचार आदि हिन्दी-उर्दू में पृथक्-पृथक् आ नहीं किये जायँगे, बरन उनके लिए ऐसी सरलतम भा प्रयोग किया जायगा जो सभी हिन्दुस्तानी-क्षेत्र के श्रोता समझ में आ सके।

(२) जहाँ हिन्दुस्तानी का कोई शब्द नहीं मिलेगा देशी भाषा फ़ारसी, अरबी, अँगरेज़ी आदि से शब्द लिये

(३) जिन विदेशी शब्दों का प्रयोग होगा वे हिन्द के व्याकरण से अनुशासित होंगे, अर्थात् स्टेशन का स्टेशन्स नहीं, स्टेशनों होगा; इसी तरह 'क़ायदा' का 'क़वायद' न होकर 'क़ायदे' होगा। कोई शब्द इस पर नहीं हटाया जायगा कि उसी अर्थ का एक दूसरा है। जो शब्द अधिक व्यापक ढङ्ग से समझा जायगा, विशेषता दी जायगी।

(४) साहित्यिक एवं व्युत्पत्तिशास्त्रीय उच्चारण की व्यावहारिक उच्चारण को प्रधानता दी जायगी। किसी नाम को उसके अपने ढङ्ग पर ही प्रयुक्त किया जायगा। और नदियों के प्रचलित नाम ही प्रयुक्त होंगे।

(५) स्त्रियों और बच्चों के प्रोग्राम अनिवार्य रूप एक समाज या वातावरण से नहीं लिये जायँगे।

(६) बातचीत कहनेवालों की भाषा वही होगी बोला करते हैं। परन्तु उनसे सरलतम भाषा बोलने आग्रह किया जा सकता है, जिससे अधिकतम लोग उ सकें। प्रत्येक वर्ग और समाज से, प्रत्येक रेडियो स्टेशन के क्षेत्र में सांस्कृतिक एवं सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति रेडियो पर यथासम्भव बराबर-बराबर वक्ता बुलाये जायँ

यों देखने में यह विज्ञप्ति काफ़ी सुलझी हुई है। ठीक है कि यदि इसका ठीक-ठीक अनुसरण किया गया तो की भाषा में अवश्य सुधार हो जायगा। पर मुख्य बात ठीक अनुसरण' है। रेडियो का प्रोग्राम-विभाग जिनके है वे पिछले दिनों अपनी हिन्दी की जानकारी का पूरा-पूरा दे चुके हैं। जहाँ तक व्यावहारिक उच्चारणों का प्र वे 'देश' को 'देस' कहेंगे, पर 'काग़ज़' को 'कागद' कहेंगे, क्योंकि शीन-क़ाफ़ की रक्षा उनका मिशन है तरह 'संकराचारिया', 'हिमालिया' और 'दत्तातिरिया' तक अवश्य 'व्यावहारिक' माने जाते रहेंगे जब तक उनके उच्चारण करनेवाले वहाँ प्रतिष्ठित नहीं होते।

हिन्दुस्तानी में न मिलनेवाले शब्द की पूर्त्ति देशी फ़ारसी और अँगरेज़ी के तदर्थवाची शब्द द्वारा करना अनोखी-सी बात है। ऐसी कठिनाई प्रायः पारिभाषिक के लिए उपस्थित होती है। उसके लिए देशी भाषाओं जनपदीय बोलियों से अभिप्राय है।) की ओर देखना ही अस्वाभाविक है जितना कि अरबी-फ़ारसी की ओर ही, इसके लिए, जैसा कि सम्मेलन के प्रतिनिधियों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राती, मराठी या बँगला से अवश्य सहायता ली जा सकती ये भाषायें संस्कृत से निकली हैं। इनमें व्यवहृत शब्द रत के शिष्ट समाज द्वारा बोले-समझे जाते हैं, क्योंकि उनके पीछे दू धर्म और भारतीय संस्कृति की परम्परा है। फिर जब संस्कृत का अक्षय्य शब्द-भाण्डार प्रस्तुत है, अरबी से कोई शब्द लेना कहाँ तक उचित है। अरबी तो भारतवासियों लिए सभी दृष्टियों से विदेशी भाषा है।

अभिप्राय यह है कि यदि सरकार वास्तव में रेडियो को साधारण के लिए उपयोगी बनाना चाहती है तो उसे उक्त ज्ञप्ति के अनुसरण पर पूरा-पूरा ध्यान देना चाहिए और इसी दृष्टिकोण से रेडियो के कर्मचारीवर्ग की नियुक्ति करनी चाहिए। अन्यथा विज्ञप्ति फ़ायलों की शोभा बढ़ाती रहेगी और रेडियो में ी होगा जो अब तक हुआ है।

'सेण्ट्रल एडवाइज़री बोर्ड' और शिक्षाप्रसार योजना

युक्त प्रान्तीय सरकार की 'युद्धोत्तर शिक्षाप्रसार योजना' के बन्ध में कहा गया है कि वह 'सेण्ट्रल एडवाइज़री बोर्ड' की क्षाप्रसार योजना पर आधारित है। पिछले दिनों लखनऊ श्वविद्यालय में दीक्षान्त भाषण करते हुए डाक्टर जान सार्जेण्ट उक्त केन्द्रीय योजना पर पर्याप्त प्रकाश डाला है। उनके कथन सारांश यह है कि उक्त योजना के अनुसार समस्त भारत को वर्ष में साक्षर किया जा सकता है और उसे कार्यान्वित करने लगभग २७७ करोड़ रुपये व्यय होंगे। अपने भाषण में डाक्टर र्जेण्ट ने यह घोषणा भी की है कि यदि कोई विशेषज्ञ ऐसे ाय बता सके जिससे अपेक्षाकृत कम व्यय से कम समय में को साक्षर बनाया जा सके तो वह न केवल देश का भारी कार करेगा, उक्त योजनानिर्माताओं के निकट भी धन्यवाद पात्र होगा।

जहाँ तक व्यय का सम्बन्ध है, यही कहा जा सकता है कि स्त देश को साक्षर बनाने के लिए जो व्यय कूता गया है, अधिक नहीं है। 'बम्बई योजना' के निर्माताओं ने भी कार किया है कि समस्त देश को साक्षर करने में अनुमानतः ० करोड़ रुपये व्यय होंगे। प्रश्न यह है कि उक्त योजना क्या ी कार्यान्वित भी होगी, जब कि सरकार ने भी उसे अभी अन्तिम रूप से 'पास' नहीं किया है। योजना के निर्माताओं भी शायद ऐसी आशङ्का है। डाक्टर सार्जेण्ट ने भी ारान्तर से इसे स्वीकार किया है। पर उन्होंने, जैसा कि उस के लोगों की आदत होती है, इसका सारा दोष यहाँ की जनता सिर मढ़ने का प्रयत्न किया है। उनका कथन है "हमारे तीय मित्रों में एक प्रकार की पराजित भावना है। अर्थात् वे बात पर विश्वास नहीं करते कि इतनी बड़ी योजना सफलता- क और उचित गति से सञ्चालित भी की जा सकती है।"

भारतीयों की मनोवृत्ति का जहाँ तक प्रश्न है, डाक्टर सार्जेण्ट कथन असत्य नहीं है। पर ऐसी मनोवृत्ति के लिए भारतीयों को ज़िम्मेदार भी नहीं ठहराया जा सकता। १५० वर्ष के लम्बे समय में, अनेक सरकारी योजनाओं और उपायों के फल-स्वरूप भारत में केवल १५ प्रतिशत साक्षर हो पाये हैं। उधर रूस का उदाहरण भारतीयों के सामने है, जिसने केवल ५ वर्ष में निरक्षरता का उन्मूलन कर डाला था। क्या भारत भी नहीं चाहता कि उसके भीतर से अज्ञान-अन्धकार को शीघ्र से शीघ्र मिटा दिया जाय? पर सरकार राधा को नचाने के लिए नौ मन तेल की व्यवस्था सचमुच करेगी और पर्याप्त कोष के अभाव का बहाना ऐन मौक़े पर योजना के कार्यान्वित होने में बाधक न होगा, इस पर इन्हें सहज ही विश्वास नहीं होता। अन्धे को आँखें मिलने का विश्वास तभी तो होगा जब उसे दिखाई देने लगे।

उद्योगीकरण अनिवार्य

भारत की जनसंख्या प्रतिवर्ष ५० लाख के औसत से बढ़ रही है। युद्धोत्तर भारत की सुख-सुविधाओं की कल्पना करते हुए इस औसत में और भी वृद्धि होने की सम्भावना है। सम्भव है, जीवन की सुव्यवस्था हो जाने पर और बालमृत्यु तथा अकालमृत्यु में कमी आ जाने पर वृद्धि का औसत प्रतिवर्ष १ करोड़ या १½ करोड़ तक पहुँच जाय। इस बढ़ी हुई आबादी के खाने-पीने का क्या प्रबन्ध होगा, इसकी ओर विशेषज्ञों का ध्यान अभी से आकृष्ट होने लगा है। क्योंकि जीवन के स्तर को उच्च बनाने से पहले उदरपूर्त्ति की चिन्ता की निवृत्ति अनिवार्य है।

इस चिन्ता का सामना करने के लिए अब तक जितने सुझाव सामने आये हैं, कृषिशास्त्र एवं अर्थशास्त्र के विशेषज्ञ सर फ़ीरोज़ खरेगाट महोदय का सुझाव भी उनमें एक है। आपने कहा है कि भारत को अपनी बढ़ती हुई आबादी के लिए चिन्ता नहीं करनी चाहिए। साधारण उपायों से ही यहाँ की कृषि की उपज में ५० प्रतिशत की वृद्धि हो सकती है, और यदि विशेष उपायों से काम लिया जाय, अर्थात् किसान को उसकी फ़सल का आकर्षक मूल्य मिले तो उपज में १०० फ़ीसदी वृद्धि भी सम्भव है। इतना अन्न भारत की बढ़ती हुई आबादी के लिए पर्याप्त होगा।

जहाँ तक उदर-पूर्ति मात्र का प्रश्न है, सम्भव है खरेगाट महोदय का यह सुझाव उपयोगी हो। पर जब आज किसान अपनी उपज से अपना पेट नहीं भर पाता तब भविष्य में भी उसकी बढ़ी हुई उपज उस बढ़ी हुई आबादी का पेट भर लेगी, इसमें सन्देह है। क्योंकि यह सम्भव नहीं है कि यहाँ की समस्त उपज यहीं रहे; उसका निर्यात न हो और न उसका एक बड़ा अंश विशेष आवश्यकताओं के लिए सुरक्षित रक्खा जाय।

पर प्रश्न केवल पेट भरने का ही नहीं है। युद्धोत्तर-काल के कृषक का जीवन-स्तर भी ऊँचा उठाना है, जैसा कि अनेक वक्तव्यों द्वारा विश्वास दिलाया जा रहा है। उसके लिए केवल कृषि पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं हो सकता। विशेषज्ञों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ ऐसे सुझाव उपस्थित करने चाहिएँ जिससे युद्ध के पश्चात् देश का उद्योगीकरण बड़े पैमाने पर हो सके और यहाँ की बढ़ी हुई जन-संख्या को दाम और काम मिल सके। जीवन-स्तर को उच्च बनाने के लिए यह आवश्यक है। कुछ ऐसे छोटे-छोटे उद्योग-धन्धों का भी यहाँ विस्तार होना चाहिए जिनसे किसान अपने फ़ालतू समय का सदुपयोग कर सके। इस कार्य में हमें उन देशों से शिक्षा लेनी चाहिए जिनके पास नाममात्र को कृषि-भूमि है, पर जिनके निवासियों का जीवन-स्तर काफ़ी ऊँचा है—गृह-उद्योगों के बल पर।

दूध की बेहद कमी

पिछले दिनों समाचारपत्रों में एक तालिका छपी थी जिसमें युद्ध के दिनों में प्रत्येक देश के प्रति व्यक्ति को मिलनेवाले दुग्ध का परिमाण दिखाया गया था। इस तालिका में भारत का स्थान नगण्य था। भारत दूध की कमी का अनुभव बहुत दिनों से कर रहा है। इधर जब से युद्ध का आरम्भ हुआ है, दुग्ध यहाँ सर्वथा दुर्लभ हो गया है। बड़े-बड़े शहरों में आजकल रुपये का केवल २ सेर दूध मिल रहा है; और उसमें भी अधिक से अधिक मिलावट रहती है। मद्रास में १९४३ में दुग्ध के कुछ अभिन्न नमूनों की जाँच की गई थी तब पता चला था कि उस दुग्ध में, जिसे साधारणतया अच्छा समझा जाता है, मिलावट का औसत प्रतिशत ४७ तक है। सन् १९४१ में ऐसे ही नमूनों में मिलावट का औसत प्रतिशत २७ ही था। इससे ज्ञात होता है कि दूध की कमी जैसे-जैसे बढ़ती जाती है, मिलावट भी अधिक होती जाती है। इन दिनों यदि दूध के नमूनों की जाँच की जाय तो कोई कारण नहीं कि मिलावट का औसत ५०-६० प्रतिशत से कम निकले। शहर के किसी हलवाई से दूध लेकर देखिए तो आप इसी परिणाम पर पहुँचेंगे।

इस अमूल्य पोषक पदार्थ की कमी ने भारतवासियों के स्वास्थ्य को चौपट कर दिया है। यहाँ के निवासी अधिकांश में शाकाहारी हैं। इन्हें भोजन के जान्तव पौष्टिक तत्त्व दुग्ध द्वारा ही प्राप्त हो सकते हैं। पर दुग्ध की यथेष्ट प्राप्ति के लिए सरकार या धार्मिक नेताओं की ओर से विशेष प्रयत्न नहीं हो रहे हैं। हम यह नहीं कहते कि सरकार ने इस दिशा में कुछ किया ही नहीं। हाँ, यह अवश्य है कि उसने जो कुछ किया है, सरकारी ढङ्ग से ही किया है। अब से आठ वर्ष पूर्व डाक्टर राइट ने डेयरी व्यवसाय-सम्बन्धी अपनी रिपोर्ट में बतलाया था कि भारतीयों के गिरते हुए स्वास्थ्य को सँभालने और उनके खाद्य में पोषक तत्त्वों की मात्रा ठीक करने का एकमात्र उपाय यही है कि उनके दैनिक भोजन में दूध का परिमाण बढ़ा दिया जाय। युद्ध आरम्भ होने पर भारत-सरकार ने एक 'राष्ट्रीय दुग्ध-योजना' भी बना डाली थी जिसके अनुसार प्रत्येक बच्चे को, जिसकी आयु ५ वर्ष के भीतर हो, और प्रत्येक माता तथा गर्भिणी को पाइण्ट (लगभग २॥ सेर) दूध प्रतिदिन देने की व्यवस्था थी, और वह भी २ पैन्स प्रति पाइंट के नाममात्र मूल्य युद्ध को चलते हुए ६ वर्ष हो चुके, पर उक्त दोनों योजनाएँ अभी तक विचाराधीन ही हैं।

रही धार्मिक नेताओं की बात, उन्हें आजकल 'विश्वकल्याण' की आध्यात्मिक योजनाओं से ही फ़ुर्सत नहीं है, इस तुच्छ चिन्ता के चक्कर में कौन पड़े।

दुग्ध की इस कमी से भारतीय जनता कितनी चिन्तित है, इसका पता जनता द्वारा संचालित उन दुग्ध-आन्दोलनों से चलता है जो गत कुछ दिनों से अस्तित्व में आ रहे हैं। और कलकत्ते में पिछले दिनों 'दुग्ध-दिवस' मनाये गये। कलकत्ते की सभा में एक प्रमुख वक्ता ने यह सुझाव भी दिया था कि प्रत्येक भारतीय गृहस्थ को अपने घर में एक गाय अवश्य रखनी चाहिए। सुझाव निस्सन्देह उपयोगी है पर उसका कार्यान्वित होना आजकल कठिन है। आज औसत गाय का मूल्य, जो ५-६ सेर दूध दे सकती है, दो-ढाई रुपये है और उसे पालने का औसत ख़र्च १॥) प्रतिदिन। मध्यवित्त गृहस्थ केवल दूध के लिए इतना व्यय कैसे कर सकता है, जब कि उसे जीवन की अन्य आवश्यकताओं को जुटाना पड़ता है। इस प्रकार यह निश्चय है कि इस दिशा में सफलतापूर्वक कोई क़दम तब तक नहीं उठाया जा सकता जब तक सरकार जनता की आवश्यकता को अपनी आवश्यकता अनुभव न करे और इस कार्य को स्वयं अपने हाथ में न ले।

उन्मुक्त ब्रह्मा में भारतीय

ब्रह्मा पर मित्र-सेनाओं का क्रमशः अधिकार होता जा रहा है। उसका एक तिहाई भाग अब तक मुक्त हो चुका है। यह निश्चित-सा है कि शेष भाग भी अनतिकाल में ही मुक्त हो जायगा। अतएव भारतीय जनता के सामने यह प्रश्न स्वाभाविक और सामयिक है कि उन्मुक्त ब्रह्मा में उनकी स्थिति होगी।

इस सम्बन्ध में 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के एक विशेष प्रतिनिधि ने जो संवाद पिछले दिनों छपाया है उसे पढ़कर भारतीयों में एक विशेष प्रकार की निराशा और क्षोभ का वातावरण उत्पन्न हो गया है। उक्त संवाददाता का कथन है—"ब्रह्मा पर अधिकार का पुनः अधिकार होने के बाद उसके पुनर्निर्माण में विदेशी पूँजी तथा भारतीय श्रम का किस प्रकार प्रयोग होगा, भारतीय व्यापारियों एवं उद्योगपतियों को किस तरह से रक्खा जायगा, यह अभी से प्रकट होने लगा है। ब्रह्मा का जितना भाग उन्मुक्त हो चुका है उसमें दक्षिण एशिया कमान 'ग़ैर फ़ौजी मामलात सर्विस' के द्वारा इसका प्रबन्ध चला रही है। भूतपूर्व बर्मी सिविल सर्विस को फ़ौजी दिये गये हैं। जो भारतीय ब्रह्मा को लौटना चाहते हैं उन्हें उस देश में प्रवेश करने की आज्ञा नहीं दी जाती। सार्वजनिक निर्माण के ठेके योरपीय व्यापारियों को दिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिनमें 'स्टील ब्रदर्स' का नाम सबसे पहले आता है। ये ग केवल भारतीय मज़दूरों और क्लर्कों को लेते हैं। उच्च पद किसी भारतीय की नियुक्ति नहीं करते।" भारतीयों के बन्ध में इस प्रकार की उपेक्षापूर्ण मनोवृत्ति की पृष्ठभूमि में— ा कि 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के उक्त संवाददाता का अनुमान —'ब्रिटेनवासियों का अपना स्वार्थ है' अर्थात् वे यह चाहते हैं 'ब्रिटिश व्यापारियों और उद्योगपतियों की सहायता की जाय र इससे पहले ही कि भारतीय व्यापारी और नागरिक वहाँ चें, ब्रिटिश हितों को दृढ़ता से स्थापित कर दिया जाय।'

'युद्धोत्तर संसार में किसी जाति या देश द्वारा अन्य जाति या का शोषण नहीं होगा,' हमें ऐसा आश्वासन अनेक वक्तव्यों र घोषणाओं द्वारा बारम्बार दिलाया गया है और उसी के धार पर यद्यपि हम नहीं चाहते कि भारतीय ब्रह्मा में जाकर के निवासियों के शोषण में भाग बँटावें, पर यह भी नहीं हते कि भारतीय उन्मुक्त ब्रह्मा में क़दम भी न मारने पावें। ैतिहासिक काल से ही ब्रह्मा भारत का एक अंग रहा है। की सभ्यता और संस्कृति भारत की ही देन है। यही नहीं, टिश राज्य के एक अङ्ग के रूप में ही सही, ब्रह्मा को अपने में लाने के लिए भारत तीन-तीन युद्धों का व्यय उठा चुका है चौथी बार फिर उठा रहा है। वहाँ के निर्माण में भी भारत पूँजी और परिश्रम का व्यय कम नहीं हुआ है। साथ ही, प्रदेश पर जापान का अधिकार होने से भारतीयों की भी बहुत हानि हुई है—उन्हें अपनी करोड़ों-अरबों की सम्पत्ति छोड़कर ली हाथ भागना पड़ा है। यही नहीं, आज भी उस देश के निर्माण और पुनरुद्धार में भारत अपना ख़ून, धन र पसीना बहा रहा है।

इस वस्तुस्थिति में अपने अधिकारों का अपहरण भारतीयों लिए चुपचाप सहन कर लेने की वस्तु नहीं है। इसके लिए धक नहीं तो इतना तो वे कर ही सकते हैं कि केन्द्रीय व्यव- पिका सभा में वे इस सम्बन्ध में प्रश्न उठावें और भारत सर- से अनुरोध करें कि वह भारतीय क्लर्कों और मज़दूरों को भी तक वहाँ न भेजे जब तक ब्रह्मा की सरकार यह आश्वासन न कि उन्मुक्त ब्रह्मा में वह भारतीयों को फिर से बसने देगी और के साथ अँगरेज़ों के समान ही व्यवहार होगा।

युक्तप्रान्त में वस्त्र-संकट

युक्तप्रान्त के बाज़ारों से मिल के वस्त्रों का ग़ायब हो जाना ता के लिए आश्चर्य और परेशानी की बात है। जानकारों कहना है कि वस्त्र-वितरण की ग़लत योजना इस वस्त्राभाव लिए उत्तरदायी है। उक्त योजना में युक्तप्रान्त के लिए प्रति व्य प्रतिवर्ष १० गज़ का कोटा नियत किया गया है, जब कि ब में यही कोटा १६ गज़ है और बम्बई में २४ गज़। इन तीनों प्रान्तों के जलवायु में बहुत अन्तर नहीं है। इस दशा में कोटे में इतना अन्तर रहना समझ में न आनेवाली बात है।

पर कोटे की कमी से वस्त्र में कमी हो सकती थी, उसका सर्वथा अभाव नहीं। सर्वथा अभाव के नितान्त दूसरे कारण होंगे। युक्तप्रान्त की मिलें जनता के लिए प्रतिमास २१ हज़ार गाँठ वस्त्र बनाती हैं। इतनी ही गाँठें प्रतिमास यहाँ बाहर से आती हैं। फिर भी बाज़ार में मिल का वस्त्र नहीं मिलता। हाँ, यह अवश्य देखा जा रहा है कि कुछ लोग अधिक दाम देकर चोर बाज़ार से मनमाना वस्त्र प्राप्त कर लेते हैं। समझ में यह आ रहा है कि तिकड़मी लोगों और मुनाफ़ाख़ोरों के हथकंडों से वस्त्र का अधिकांश चोर-बाज़ार में चला जाता है। इसी लिए वह सामान्य नागरिकों को नहीं मिलता।

इस अवस्था में केवल एक चारा यही रह गया है कि सरकार इस दिशा में शीघ्र ही प्रभावशाली क़दम उठायें और अधिक से अधिक सख़्ती से काम लेकर चोर बाज़ार का अन्त कर दे। ऐसा करने के लिए उसे निश्चय ही वस्त्र-वितरण की वर्तमान योजना में उलटफेर करना पड़ेगा जिससे कुछ लोगों की बहुत बड़ी हानि भी होगी; पर ऐसा करना ही उचित है। अन्यथा स्वार्थी मुनाफ़ाख़ोर अपनी करतूतों से बाज़ नहीं आवेंगे और न जनता ही जीवन की इस अत्यन्त आवश्यक वस्तु को सरलता से प्राप्त कर सकेगी।

चीनी की कमी

युद्धजन्य परिस्थिति ने जीवनोपयोगी जिन वस्तुओं को दुर्लभ बना दिया है, उनमें एक चीनी भी है। युद्ध के पूर्व की अपेक्षा उसका न केवल भाव बहुत अधिक बढ़ गया है, उसकी प्राप्ति भी एक समस्या बन रही है। यह समस्या इस वर्ष और जटिलतर होने जा रही है। 'भारतीय चीनी-उत्पादक समिति' के अध्यक्ष मिस्टर पील येट्स ने पिछले दिनों अपने भाषण में बतलाया है कि सन् १९४५ में भारतीय फ़ैक्टरियों में जितनी चीनी बनेगी वह माँग की अपेक्षा २५ प्रतिशत कम होगी।

इस कमी के दो कारण बतलाये गये हैं। एक यह है कि गन्ने की पैदावार का प्रति एकड़ औसत कम हो गया है। दूसरा यह है कि गन्ने की खेती किसानों ने कम कर दी है।

पहले कारण के सम्बन्ध में यह बतलाया गया है कि गन्ने की औसत उपज प्रतिवर्ष गिरती जा रही है। हमारी समझ से प्रान्तीय सरकारें इस कठिनाई को सरलतापूर्वक दूर कर सकती हैं। उनके लिए, यदि वे चाहें तो, गन्ने की किसी ऐसी जाति का बीज, जिसकी उपज का औसत अधिक हो और जिसमें शकर की मात्रा भी अपेक्षाकृत अधिक हो, प्रचलित करना ज़रा भी कठिन नहीं। गन्ने की खेती करनेवाले किसान ऐसे बीज का स्वागत करेंगे और गन्ना अधिक उत्पन्न करने के लिए प्रोत्साहित भी होंगे। दूसरे कारण के सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि किसानों के लिए यह स्वाभाविक है कि वे उसकी खेती करें जिसमें उन्हें अधिक लाभ हो। यदि गन्ने की खेती में कमी हो रही है तो इसका कारण यही हो सकता है कि किसान को उसकी खेती करना अपेक्षाकृत कम लाभदायक समझ पड़ता है। किसानों के एक नेता ने भी गन्ने की खेती के सम्बन्ध में पिछले दिनों कुछ ऐसी ही बात कही थी। उसका मत था कि गन्ने का प्रतिमन जो भाव सरकार ने निश्चित किया है, वह अपर्याप्त है। इस सम्बन्ध में अधिकारियों का कथन यह है कि गन्ने की जो दर निर्धारित की गई है वह चीनी के मूल्य और गन्ने के व्यय को ध्यान में रखकर ही की गई है। यही नहीं, उस दर में आवश्यकतानुसार वृद्धि भी होती रही है। उदाहरणार्थ १९४२-४३ में गन्ने का भाव ८ आना प्रतिमन रक्खा गया था, दिसम्बर १९४२ में ही इसे बढ़ाकर १० आना प्रतिमन कर दिया गया। नवम्बर १९४३ में यही भाव १२ आना प्रतिमन और आक्टोबर १९४४ में १४ आना प्रतिमन कर दिया गया। दिसम्बर १९४४ से बिहार सरकार ने इस भाव को १५ आना प्रतिमन कर दिया।

किसानों का कथन है कि यह मूल्य भी अपर्याप्त है। कम से कम बीस आना प्रति मन मूल्य निर्धारित होना चाहिए तब किसान गन्ने की खेती अधिक करने के लिए प्रोत्साहित होंगे।

भारतीय शकर फ़ैक्टरियाँ प्रतिवर्ष १५ लाख टन शकर उत्पन्न कर सकती हैं। गत वर्ष उनकी उपज केवल १२·१६ लाख टन थी। शकर की कमी दूर करने के लिए और विदेशी शकर की प्रतिस्पर्धा में भारतीय शकर के ठहरने के लिए भी, यह नितान्त आवश्यक है कि देशी शकर फ़ैक्टरियाँ पूरे वेग से काम करें। ऐसा तभी सम्भव है जब उन्हें आवश्यकतानुसार गन्ना मिले। इस वस्तुस्थिति में सारी ज़िम्मेदारी प्रान्तीय सरकारों पर अन्ततोगत्वा आ जाती है। यदि वे चाहें तो कोई कारण नहीं कि चीनी की कमी को दूर न किया जा सके। चीनी की सम्भावित कमी को दृष्टि में रखकर बड़े-बड़े शहरों में उसके राशन में जो कमी की जा रही है, उससे जनता की चिन्ता बढ़ रही है। यदि प्रान्तीय सरकारें शीघ्र ही इस दिशा में क़दम उठायें तो आगामी वर्ष में यह कमी अवश्य दूर की जा सकती है।

दिवंगत रासविहारी बोस

जापान रेडियो के सूचनानुसार रासविहारी बोस का स्वर्गवास हो गया। उनकी मृत्यु-सूचना से हमें भारत में सन् १९०८ में घटनेवाली आतङ्कवादी घटनाओं की याद सहसा आ जाती है। रासविहारी की कार्यवाहियों का आरम्भ उन्हीं दिनों हुआ था। उसके पश्चात् रासविहारी बोस का नाम सन् १९१२ में विशेष रूप से विज्ञापित हुआ जब 'सेडीशन कमिटी' ने उन्हें और उनके दल को वायसराय लार्ड हार्डिंज पर दिल्ली में बम फेंकने के लिए उत्तरदायी ठहराया। उस समय के बाद घट अन्य आतङ्कवादी घटनाओं के सम्बन्ध में भी बराबर नाम लिया गया था। सरकार को उनकी बड़ी आक थी। उनके दो साथियों—अवधविहारी लाल और अमीरसिंह—को सन् १९१४-१५ के 'दिल्लीषड्यन्त्र-अभि फाँसी की सज़ा दे दी गई, पर रासविहारी सरकार की न आये। यद्यपि, जैसा कि कहा जाता है, वे सन् तक भारत में रहे और बनारस तथा लाहौर को केन्द्र क्रान्तिकारी कार्यों का संचालन करते रहे।

उसके पश्चात् वे जापान चले गये। उनके जापा का उद्देश्य, 'सेडीशन कमिटी' के कथनानुसार, यह था भारत के आतङ्कवादी आन्दोलन के प्रति जर्मनों की सह प्राप्त करना चाहते थे। कहते हैं कि जब वे शङ्घाई तब उन्होंने भारतीय आतङ्कवादियों के लिए चीन के कुछ शस्त्रास्त्र भी भेजे जो मार्ग में ही ब्रिटिश पुलिस द्वारा लिये गये। ब्रिटिश सरकार के अनुरोध पर जापान ने रासविहारी को ६ घण्टे के भीतर शङ्घाई छोड़ने की दी। फलतः उसके बाद ८ वर्ष तक उन्हें अज्ञातवास करना

उसके पश्चात् वे जापान में 'दि इंडिपेंडेंस लीग इण्डिया' के सञ्चालक के रूप में प्रकट हुए और भाषा में भारत के सम्बन्ध में पुस्तकें और लेख लगातार तथा व्याख्यान देते रहे। जापानी भाषा में भारत पर ५ मौलिक पुस्तकें लिखी हैं और डाक्टर सण्डरलैण्ड की 'इंडिया इन बाण्डेज' का अनुवाद किया है। इनके वे जापानी भाषा में एक साप्ताहिक पत्र भी निकालते थे भारत की सामयिक समस्याओं के सम्बन्ध में लेख रहते थे।

इतना सब करते हुए भी वे भारतवासियों के लिए विदेशी ही बन गये थे। पिछली बार उनका नाम तब सुनने को मिला जब चीन के सम्बन्ध में जा आक्रामक नीति की निन्दा डाक्टर रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने और रासविहारी बोस ने जापान का पक्ष-समर्थन करते हु पत्र लिखा था। उनका पत्र और उस पत्र का रवि दिया हुआ मुँह-तोड़ उत्तर दोनों पिछले दिनों भारतीय साथ साथ छपे थे और उन पर टीका-टिप्पणी भी हुई थी

उनका भारत-आगमन एक प्रकार से असम्भव था, उनके लिए 'सेडीशन कमिटी' का स्पष्ट निर्देश था कि भारत आवें तो उन पर राजद्रोह और षड्यन्त्र का चलाया जाय। युद्ध के पहले सुना गया था कि टोकि शिवमन्दिर बनवाने के लिए वे चन्दा इकट्ठा कर वह मन्दिर बन पाया या नहीं, इसका पता युद्ध समाप्त हो लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Printed & Published by A. Bose, at the Indian Press, Ltd., Benares-Branch, Benares.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाहित स्त्री-पुरुषों के जानने योग्य

ऑपरेशन तथा इन्जेकशन ज़रूरी नहीं है

अप्राकृतिक रहन-सहन तथा मिथ्या आहार-विहार के कारण हमारे देश की नारियाँ अधिकांश ऐसी मिलेंगी जो एक न एक स रोग से ग्रस्त हो निराश जीवन व्यतीत कर रही हैं। अधिकतर गर्भाशय का मोटा हो जाना तथा उस पर चर्बी आ जाना एक आम ग हो गया है जो गर्भ धारण करने में बाधक होता है तथा अन्य भयंकर रोगों की जिससे उत्पत्ति भी होती है। ऐसी अवस्था में प्राय: ऑपरेशन कराने से भी बहुत कम रोगियों को सफलता प्राप्त होती है।

यदि आपको ऑपरेशन कराने में असुविधा है या ऑपरेशन की अपेक्षा औषधियों द्वारा कष्ट दूर करने के अधिक पक्ष में हैं शास्त्रोक्त अंगूरों का ताज़ा रस, अशोक, अर्जुन, दशमूल, त्रिफला तथा अन्य श्रेष्ठ औषधियों से प्रस्तुत—मूँगा जिसका प्रधान अंग —१५ वर्षों से प्रचलित **गौड़ की नारी-सुधा कॉर्डियल** सेवन करें।

नारी-सुधा एक माहवारी से दूसरी महावारी तक सेवन करने से बिना ऑपरेशन गर्भाशय की चर्बी, उसका मुटापा तथा पट बाँझपन नष्ट हो जाता है और सहज ही गर्भ की स्थिति हो जाती है। जहाँ इन्जेक्शन लिकोरिया (सफ़ेदे का गिरना) रोकने में सफल होते हैं वहाँ कुछ ही ख़ुराकों में यह सदैव के लिए ठीक हो जाता है। कमज़ोरी से गर्भाशय अपनी जगह से हट जाता है ा गर्भपात होते रहते हैं—एक बोतल के सेवन से युक्त स्थान दृढ़ हो जाता है, फिर गर्भपात कभी नहीं होते। मासिक धर्म ीने में दो बार या दो महीने में एक बार के बजाय ठीक समय पर कर हँसते-खेलते होने लगते हैं, जिससे हिस्टेरिया (बेहोशी) के रे पड़ने बन्द हो जाते हैं। ख़ूब भूख लगती है, ख़ून एक बड़ी ्या में बनने लगता है। दिल की धड़कन, कमर-टाँगों का ठहरा ुआ दर्द केवल चौथे दिन दूर हो जाते हैं। जापे का संकट सहन ने तथा बाद की कमज़ोरी शीघ्र पूरी करने की यह विशेष षधि है। **नारी-सुधा** की २६ ख़ुराकों की एक बोतल का य पेकिंग—वी० पी० व्यय से पृथक् तीन रु० पाँच आने हैं। श्यकता होने पर इस मासिक पत्रिका का हवाला देकर

कुमार कुमार एन्ड को०—देहली

मँगाइए।

KUMAR KUMAR & Co. DELHI

नोट :—हमारे औषधालय से **दमे की फ़क़ीरी दवा मुफ़्त** दी जाती है जो केवल सात दिन में पुराने से पुराने दमे को कर देती है। पत्र-व्यवहार तथा विज्ञापन-व्यय के लिए १) मनीआर्डर कर के मंगा लीजिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ विचार

जिस देश में जो फल मिलते हैं मनुष्य उन्हीं में से अपने पोषण के लिए सब तत्त्व पा सकता है।

जुष्ट।

अपने तथा दूसरों के अनुभव तथा विचारने और पढ़ने से मुझे मालूम होता है कि फल उत्तम ख़ुराक है।

महात्मा गांधी।

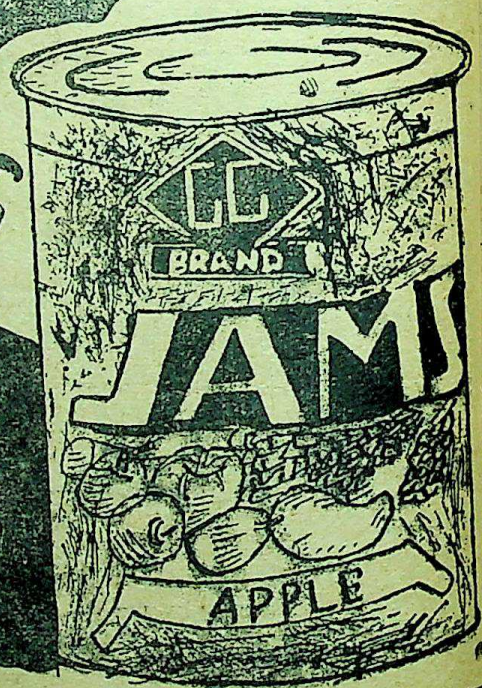

G.G
BRAND

वस्तुएं व्यवहार में लाइये

जी. जी. फ्रूट प्रिज़र्विंग फ़ैक्टरी आगरा

जी.जी.इण्ड ब्रीज़

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौंदर्य की परम्परा कायम रख रही है

जवान लड़कियों के सभी महत्वपूर्ण मामलों में केवल उनकी माँ ही उन्हें बहुमुल्य सलाह दे सकती है। इस रूपवती माँ ने अपनी सुन्द्र बेटी को अपना बढ़या गुर दिया है कि पियर्स साबुन और स्वच्छ पानी की सहायता से त्वचा के सौन्दर्य को कायम रखा जा सकता है। यह शिक्षा इस माँ ने अपनी माँ से ली थी और अपने बचपन से ही इस पर अमल करती आई है। इसी कारण उसकी त्वचा आज भी उतनी ही प्यारी और सुन्दर है। इसकी बेटी भी उसी तरह अपनी त्वचा की प्रवाह करती है। इसलिये उसकी माँ की तरह उसकी त्वचा भी बेदाग और सुन्दर रहेगी।

चालीस साल से हिन्दुस्तान की सुन्द्रयों ने पियर्स साबुन को ही इस्तेमाल किया है। स्वाभाविक खुशबू और रेशमी झाग के कारण यह साबुन साधारण साबुनों से कहीं बढ़चढ़ कर है।

पिअर्स साबुन

सौन्दर्य का मोल है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

TG. 39-172 HI

A. & F. PEARS, ISLEWORTH, ENGLAND

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री रत्नागिरी जी का अद्भुत चमत्कार

जिसने समस्त संसार को चकित कर दिया

रक्त, बल, वीर्य, उत्साह तथा उमङ्ग ही जीवन सफल बना सकती है

ध्यान देने योग्य अमूल्य उपहार

अपूर्व कायापलट (रजिस्टर्ड)

निःस्वार्थ संसारसेवी भारतीय महात्माओं ने औषध-विज्ञान को अपनी महान् खोजों और अमूल्य रत्नों से अलंकृत किया है। आधुनिक चिकित्सक मर्ज़ और मरीज़ जब दोनों को लाइलाज घोषित करके शर्मिन्दा नहीं होते, वहाँ इन्हीं महात्माओं की बिना दाम की जड़ी-बूटियाँ मुर्दों को भी जिला सकने में समर्थ हुई हैं। ऐसी सच्ची घटनायें आये दिन एक न एक पढ़ने और सुनने में आया करती हैं।

बीस वर्ष पूर्व कल्लाती पहाड़ी पर विचरण करनेवाले स्वामी रत्नागिरी जी महाराज की सेवा एक बूढ़ा ग्वाला करने लगा। योगिराज को एक दिन उस वृद्ध की कमज़ोरी पर दया आ ही गई और उन्होंने निम्नलिखित योग की ६ मात्रायें उस बूढ़े को दीं। नासमझी के कारण छहों मात्रायें एक साथ खा जाने से उस वृद्ध ग्वाले में अपूर्व शक्ति आ गई और रत्नागिरी जी के परिश्रम-पूर्वक इलाज करने पर भी बुढ़ापे के बावजूद उसे तीन विवाह करने पड़े। इस पर राजा, रईस, नवाब और रसिकजन महान् योग को जानने के लिए आतुर हो उठे। नवाब बहावलपुर के ससुर हाजी हयात मोहम्मदख़ाँ साहब ने बाबा जी की बहुत सेवा करके इसे प्राप्त कर लिया और लाहौर के पं० ठाकुरदत्त शर्मा को बतलाया। शर्मा जी ने इसे प्रथम तथा दो अन्य लिखकर तीनों से उत्तम बाजीकरण बतलानेवाले को एक हज़ार रुपये का नक़द इनाम देने की घोषणा की। इसे आज बीस साल के लगभग हो गये किन्तु अभी तक कोई पुरस्कार विजय नहीं कर सका। मथुरा के ख्यातिप्राप्त बाबू हरिदास जी ने इसे चिकित्सा-चन्द्रोदय में छपवाया और हमने भी स्वयं बनाकर सैकड़ों दुर्बल, नपुंसक, वीर्य-विकारी रोगियों पर बरता। तत्काल लक्षण-चमत्कार देख जन-साधारण के लाभार्थ अनेक पत्र-पत्रिकाओं में छपवा दिया। आप भी बनाकर लाभ उठावें।

योग—शुद्ध बुरादा फ़ौलाद २० तोला, शुद्ध श्वेत मल्ल १ तोला, शुद्ध कपूर १॥ माशा, एक घण्टा घृतकुमारी में घोटकर, मिट्टी के कुज्जे में मज़बूत बन्द कर पाँच सेर कण्डों में फूँके। दुबारा एक तोला हरताल बर्की शुद्ध १॥ माशा कपूर शुद्ध में तीसरी बार गन्धक आमलासार शुद्ध १ तोला कपूर १॥ माशा में चौथी बार शुद्ध संस्कारित पारद १ तोला, कपूर १॥ माशा को ऊपर की भाँति १६ आँच दें। फिर उसको, [illegible] जलाने

जब इन्द्रवधू जलकर राख हो जाये तो हवा देकर उड़ा दें अपूर्व कायापलट तैयार है। चार-चार चावल साथ मलाई के साथ खावें ऊपर मिश्री मिला दूध पीवें।

मथुरा के हरिदास जी लिखते हैं— इस योग के सेवन हफ़्ते में एक आदमी का वज़न चार पौंड बढ़ गया, चेहरा लाल सुर्ख़ हो गया। भूपाल के वैद्यराज पं० शर्मा ने ३५० रोगियों पर बरता और आशा से अधिक पाया। रत्नाकर सम्पादक श्री छोटेलाल जैन आयुर्वेद गृहचिकित्सा पथ-प्रदर्शक में छापा कि इतना प्रचण्ड गुण दूसरा नहीं देखा। श्री धर्मेन्द्र विद्यावतंस सिद्धान्त-शास्त्री ष्ठाता गुरुकुल बरला ज़िला मुज़फ़्फ़रनगर ने लिखा है— कायापलट" नामक औषध सेवन कर रहा हूँ। जैसी वैसा ही गुण है। बहुत लाभ हुआ। श्री चिरञ्जीव आयुर्वेदशास्त्री मालिक कल्याण औषधालय बाह (आ का कहना है कि मैंने २२५ रोगी अपूर्व कायापलट कि धातु-विकार, नपुंसकता, बवासीर, रक्त-विकार आदि से ग्रसित थे, पूर्ण स्वस्थ किये।

हमारा दावा है कि केवल सात दिन सेवन से शरीर दौड़ता नज़र आयेगा। २१ दिन में चेहरा लाल काश्मीर की तरह चमकने लगेगा। ४० दिन में नपुंसकता, डायब्टीज़, निर्बलता दूर हो जाती है। स्त्रियों के प्रदर गर्भधारण शक्ति आती है। जिगर व मेदे की शक्ति भूख दूनी करता है। कफ, तिल्ली की ख़राबी, खाँसी, ज़ुकाम, बदन दुखना, ख़ून का पतलापन, आँखों का चिनगारी-सा उड़ते दीखना, बार-बार थूक गिरना, हर तरह की कमज़ोरी तुरन्त दूर कर नव-जीवन का संचार है। जाड़ा, गरमी, बरसात सभी मौसमों में एक-सा लाभ है। योग भली भाँति समझाकर लिखा है। फिर आप न बना सकें तो बनी-बनाई १६ आँच दी हुई ४० ८० मात्रा डाक-ख़र्च सहित ६॥।=) में हम भेज देंगे। माफ़, पैकिंग, मनीआर्डर-फ़ीस अलग। कोई बात आवे तो जवाबी कार्ड भेजकर उत्तर मँगा लें।

पता—रूपबिलास कम्पनी

(रसायनशाला) नं० ४६७, धनकुट्टी, का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्मस्टारोंकी तरह त्वचा की रक्षा कीजिये!

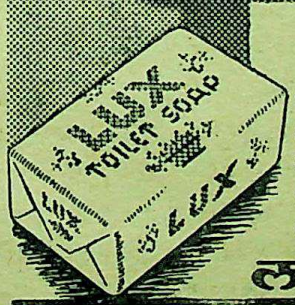

मनोरमा

"मेरी त्वचा प्रफुल्लित और कोमल दिखाई देती है इसके लिये मैं लक्स टॉयलेट साबुन की एहसानमंद हूं"—यह मनोरमा का निवेदन है। दूसरी फिल्म स्टारों की भाँति वह भी इसी साबुन का हमेशा इस्तेमाल करती है। उसके तेज फेन से त्वचा सभी पीड़ाओं से दूर रहती है। उसकी रायमें यह आश्चर्य की बात है।

लक्स टॉयलेट साबुन

LTS-182-111-40 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वस्थ जीवन के संकेत २

क्या आप को सारी रात खाँसी आती है?

गले की सहलाहट और जुकाम के बाद होने वाली खाँसी, साधारण खांसी है। शायद आप उसे भयानक न समझकर चिकित्सा और उपचार न करें। शायद सारी रात बैठ कर खांसते रहनेपर भी आप उसकी अवहेलना करें। परंतु इस अवहेलना का परिणाम भयानक है। क्योंकि आप के फेफड़े इतनी कोमल झिल्ली के बने हैं कि वे खाँसी के झटकों को नहीं सह सकते।

ग्लाइकोडीन टर्प वसाका डाक्टरों द्वारा प्रयुक्त और प्रमाणित, खांसी की औषधि है। वह खांसी को तुरंत शान्ति देती और उसके मूल कारणों को नष्ट करती है। उस के शक्ति शाली परमाणु खांसी को समूल नष्ट करने वाले हैं।

स्नायु विकार से उत्पन्न हुई हर प्रकार की खाँसी के लिये अपने डाक्टर की सलाह लीजिये

ग्लाइकोडिन टर्प-वसाका

शान्तिदायक तथा खांसी को नष्ट करती है।

अलेम्बिक डिस्ट्रिब्युटर्स लि. मखानियां कुआं लोअर रोड, बांकीपुर पटना

अलेम्बिक कैमिकल वर्क्स कम्पनी लिमिटेड, बरोडा

AL. 258

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिन आहारों को आप खूप पसन्द करते हैं . . .

उनको शक्तिदायी बनाओ !

सबसे बढिया शक्तिदायी चीजे कौनसी हैं इसकी जानकारी हरएक स्त्रीको होनीही चाहिये। डाल्डा कुक बुक (अंग्रेजी) में आहार के बारेमें लाभकारी बातें और १५० से अधिक आहारोंका बयान किया गया है। आपके पास इसकी एक कापी होनीही चाहिये। Dept. C121 P. O. Box No. 353, Bombay के पते पर चार आने के पोस्टल स्टाम्प भेजियेगा।

क्या आप जानते हैं कि हमारे चंद आहार हमारे लिये फायदेमन्द नहीं ? उनसे पेट तो भर जाता है लेकिन जितनी शक्तिका हम हररोज व्यय करते हैं उतनी उनने वापस नहीं मिलती। इसके बारेमें सोचना आवश्यक है न ? हमारा आरोग्य, सुख, कामयाबी, –सभी हमारी शक्ति पर निर्भर हैं। अगर चाहिये उतनी शक्ति हम हमारे भोजन से न पा सकें तो, आज ना सही कल, हमें पछताना होगा। वैसे सभी आहार कुछ ना कुछ शक्ति देते ही हैं। लेकिन हमारे भोजन में से कई ऐसे हैं जिनसे बहुत कम शक्ति पैदा होती है। इन आहारों के साथ ज्यादा शक्तिदायी चीजों का इस्तेमाल करके हम उन्हींसे अधिक शक्ति पा सकते हैं। जीवन सत्त्व संपूर्ण डालडा इस काममें बहुत मदद करता है। यह बढिया चीज कुछ ऐसे "अन्नांश" देती है जो प्रकृति के सबसे ऊंचे दर्जेके शक्तिदायी हैं। सभी आहार डाल्डा में बनाना फायदेमन्द है–सिर्फ सुरक्षा के लिये।

पोषक-तत्व संपन्न **डालडा** स्फूर्ति के लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसने लाइफबॉय उपयोग करने की आदत भी सीखी है!

अभी से यह बहुत सी बातें सीख रहा है परन्तु सब से ज्यादा फायदामंद लाइफबॉय साबुन के दैनिक उपयोग की आदत है। इसकी माँ को इस बात का गर्व और खुशी होती है कि उसकी दी हुई शिक्षा से उसके लड़के की 'गन्दगी के ख़तरे' से जो हर जगह हमला के लिए मौजूद है उससे रक्षा होती है।

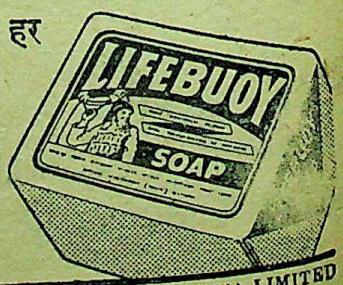

लाइफबॉय का व्यवहार करना एक ज़रूरी आदत है

L. 17-23 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर एक की पसन्द के अनुकूल

गोदरेज

टायलेट साबुन

गोदरेज द्वारा बनाये गये तरह-तरहके नहाने के साबुनों के कारण ये साबुन लोकप्रिय हो गये हैं। अपने देश के त्वचा-सौन्दर्य एवं उसकी स्वच्छता की परम्परा को क़ायम रखने में लगभग २५ वर्षों से ये साबुन सहायक रहे हैं, क्योंकि भारत के एकदम शुद्ध एवं अत्यंत लाभप्रद वनस्पति तेल एवं अन्य उपकरण—जो प्रकृति के अपने सौन्दर्य प्रसाधन हैं का उपयोग ही इन्हें सम्पूर्ण बनाने में किया जाता है। एक मात्र वनस्पति तेलों से ही साबुन बनाने की कला में हम अग्रगण्य रहे हैं और सर्वप्रथम हमने ही अनुभव किया था कि उच्च कोटि के साबुन केवल चुनी हुई वनस्पति के तेलों से ही बनने चाहिये—पशु चर्बी से नहीं। गोदरेज के नहाने के साबुनों ने इस देश में और विदेशों में काफ़ी यश कमाया है और दुनिया को यह बताने में ये साबुन गर्व करते हैं कि भारतीय पूँजी से, भारतीय श्रम से और भारतीय संचालन में बने ये स्वदेशी साबुन सस्ते होते हुए भी गुणों में विदेशी साबुनों से बढ़-चढ़कर हैं।

अन्य कहीं भी इन अतुलनीय सुन्दर नहाने के साबुनों में से अपने पसन्द का साबुन चुन लें और एक अच्छे भारतीय की तरह आप भी अपनी त्वचा को स्वच्छ, सुरक्षित और कोमल बनाये रखें।

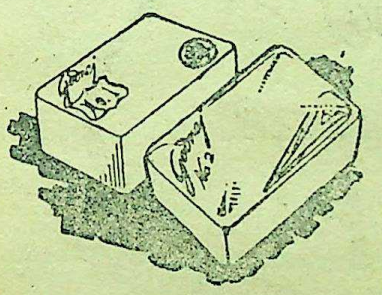

नं० १

नं० २

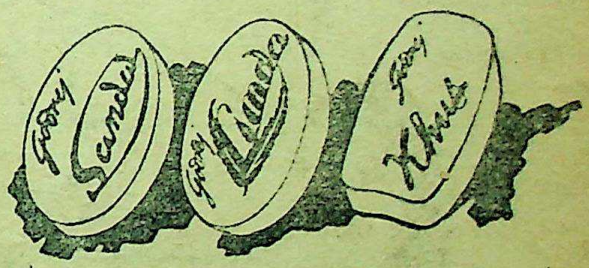

सन्दल लिमडा ख़स

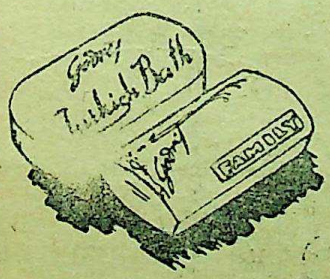

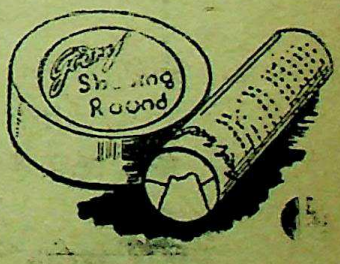

टर्किश बाथ फ़ैमिली वतनी शेविंग स्टिक शेविंग 'राउण्ड'

गो द रे ज सो प्स, लि० — ब म्ब ई ११.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थापना] ज़ुकाम, सर्दी पर अकसीर उपाय !! १९२६

आरोदा १८६६ नीलगिरि तेल — वापरो —
सूरज छाप

हैज़ा, मलेरिया, इन्फ्लुएंज़ा, टाइफाइड
आदि बीमारियों में बचानेवाला।
१ औं० शीशी ॥), दर्जन ५॥=), डा० ख़० अलग

युकॅलिप पेन बाम } सूचीपत्र मुफ़्त { युकॅलिप दाद का मरहम

खांडालेकर बन्धु, बम्बई ४.

रुका हुआ मासिक धर्म

रजोपिल्स से चालू होता है। मू० ५॥) वी० पी० ख़र्च १) रु०। जादा व एना एजे० ४४ प्रार्थना-समाज के सामने, बम्बई ४।

(१) स्टोकिस्ट :—ओरिएन्टल फ़ार्मेसी, सेन्डहर्स्ट रोड बम्बई।

(२) माधव एजेन्सी, गिरगाँव, बम्बई।

(REGISTERED)

हृदय की सर्दी

(सर्दी और कफ़)—लापरवाही करने से मामूली हृदय की सर्दी फेफड़े की सूजन (ब्रांकैटिस) हो जायगी। इससे बचे रहने का रास्ता बड़ा आसान है। थोड़ा-सा अमृतांजन लेकर छाती पर मलिए। बस, उसकी गरमी सीधे हृदय तक पहुँचती है और कफ़ को पिघला देती और तुरंत आराम मिलता है।

अमृतांजन—हमेशा सर्दी से सर्दी आराम पहुँचाता है।

अमृतांजन लिमिटेड, बम्बई और मद्रास

शाखा :—कलकत्ता, कराची, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धि से काम लीजिए

अच्छी पुस्तकों का चुनाव साधारण काम नहीं है। इसमें यदि आप अपनी बुद्धि का उपयोग न करेंगे, तो गाढ़ी कमाई के पैसों से खरीदी हुई पुस्तकें फेंक देनी होंगी। ऐसा न हो इसलिए हम काव्य और साहित्य की चुनी हुई पुस्तकें आपके सामने उपस्थित कर रहे हैं।

ाव्य की पुस्तकें

गोस्वामी तुलसीदास—संक्षिप्त रामचरितमानस (सचित्र)—रामचरितमानस का संक्षिप्त संस्करण है। संक्षेप ऐसी चतुराई किया गया है कि कहीं भी कथा-भाग टूटने नहीं पाया। मँझोले ार के ३०० पृष्ठों में यह समाप्त हुआ है। पुस्तक सचित्र सजिल्द है। मूल्य १) एक रुपया।

अयोध्याकाण्ड (मूल)—रामायण-प्रेमियों के सुभीते के यह काण्ड अलग प्रकाशित किया गया है। यह पुस्तक क स्थानों के शिक्षाविभाग-द्वारा स्वीकृत है। इससे यह ार्थी तथा साधारण जनता सभी के काम की चीज़ है। मूल्य एक रुपया। सटीक मूल्य २॥≈) दो रुपये ग्यारह आने।

सुन्दरकाण्ड (मूल)—रामायण-प्रेमियों के सुभीते के यह काण्ड असली रामचरितमानस से अलग छापा गया मूल्य ।≈) सात आने।

अरण्यकाण्ड (मूल)—रामायण-प्रेमियों के सुभीते के यह काण्ड भी असली रामचरितमानस से अलग छापा गया मूल्य ।≈) सात आने।

विनयपत्रिका (सटीक)—गोस्वामी तुलसीदास की रचनाओं विनयपत्रिका का स्थान बहुत उच्च है। इसमें गोस्वामीजी नय-सम्बन्धी पद्यों का संग्रह है। इसके टीकाकार हैं पण्डित ीधर भट्ट। मूल्य ४) चार रुपये।

कुण्डलिया रामायण—गोस्वामी तुलसीदासजी की यह रचना पिछले दिनों खोज में मिली है। इसमें उनकी न्य रचनाओं की भाँति सरस कुण्डलिया छन्दों में रामचरित- के सातों काण्डों की कथा दी गई है। मूल्य ४) चार रुपये।

मानससूक्तावली—रामचरितमानस में आये हुए कण्ठस्थ करने के योग्य चौपाइयों और दोहों का संग्रह। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

तुलसी रत्नावली—गोस्वामीजी के समस्त ग्रन्थों का अध्ययन कर इसके विद्वान् संपादक ने कुछ रत्न ढूँढ़ निकाले हैं उन्हीं का यह संग्रह है। दूसरे शब्दों में गोस्वामीजी की समस्त रचनाओं का यह निचोड़ है। मूल्य १॥) एक रुपया आठ आने।

संक्षिप्त पद्मावत—(रायबहादुर बाबू श्यामसुन्दरदास, बी० ए०-द्वारा सम्पादित) मलिक मुहम्मद जायसी के पद्मावत का संक्षिप्त संस्करण। मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने।

संक्षिप्त सूरसागर—इसमें महाकवि सूरदास के पदों का संग्रह है। इसका एक-एक पद भक्ति तथा प्रेम के रस से ओतप्रोत है। मूल्य ३।-) तीन रुपये पाँच आने।

चारण—इस पद्यमय पुस्तक में प्राकृतिक दृश्यों के मनोरञ्जक वर्णनों के अतिरिक्त राजपूताना के कुछ प्रसिद्ध वीरों का गुणगान किया गया है। मूल्य ।-) पाँच आने।

वीणा-ग्रन्थि—हिन्दी के युगान्तरकारी श्री सुमित्रानन्दन पन्त की दो पुस्तकों का सम्मिलित संस्करण। वीणा मौलिक कविताओं का संग्रह है। और ग्रन्थ में कवि ने एक छोटे-से कथानक को अपनी कल्पना द्वारा विकसित कर एक खण्डकाव्य की रचना की है। मूल्य २) दो रुपये।

कविवर पण्डित सोहनलाल द्विवेदी-रचित चार काव्य-ग्रन्थ

भैरवी—इसकी राष्ट्रीय कवितायें राष्ट्र-प्रेमियों के गौरव की वस्तु है। यहाँ तक कि पण्डित जवाहरलाल नेहरू तक ने इन्हें पसन्द किया है और खादी प्रतिष्ठानों में इसकी हज़ारों प्रतियाँ बेची

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

। विद्वानों की सम्मति है कि भैरवी 'गांधीयुग' का सर्वश्रेष्ठ काव्य है। मूल्य २॥≈) दो रुपये ग्यारह आने।

वासवदत्ता—हिन्दी का एक आधुनिक काव्य। इस काव्य की विद्वानों ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। मूल्य २) दो रुपये।

विषपान—समुद्र-मन्थन की पौराणिक कथा के आधार पर कवि ने इस खण्ड-काव्य की रचना की है। भाषा में प्रवाह तथा ओज और पात्रों का सजीव चित्रण कवि की ख़ास विशेषता है। मूल्य १) एक रुपया।

पूजागीत—द्विवेदी जी की नवीनतम राष्ट्रीय कविताओं का संग्रह। कविता का प्रत्येक शब्द हृदय में स्फूर्ति उत्पन्न करता है। पीले फ़ेदरवेट काग़ज़ पर सुन्दर छपाई हुई है। मूल्य २) दो रुपये।

हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ कवि
ठाकुर गोपालशरणसिंहजी की कृतियाँ—

माधवी—माधवी का यह नया संस्करण बड़ी ही सज-धज के साथ और बड़े आकार में प्रकाशित हुआ है। मूल्य २) दो रुपये।

ज्योतिष्मती—इस संग्रह में ठाकुर साहब की नवीन प्रकार की कवितायें संगृहीत की गई हैं, जो हिन्दी-साहित्य में अपना विशेष स्थान रखती हैं। ख़ास कर इसमें संग्रह किये गये छोटे-छोटे गीत बहुत ही मधुर और भावपूर्ण हैं। मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने।

मानवी—इस संग्रह में प्रकाशित कविताओं के द्वारा ठाकुर साहब ने भारतीय नारी के सुख-दुःखमय जीवन का बड़ा ही सुन्दर और मार्मिक चित्रण किया है। मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने।

संचिता—इस संग्रह में ठाकुर साहब ने अपनी सन् १९१४ से लेकर सन् १९३९ तक की सब प्रकार की रचनाओं का समावेश किया है। इस एक ही पुस्तक के द्वारा ठाकुर साहब के कवि-जीवन के क्रम-विकास का उत्तमतापूर्वक अध्ययन किया जा सकता है। संग्रह में कुल ७१ कवितायें हैं। मूल्य ३) तीन रुपये।

सुमना—'सुमना' ठाकुर साहब का सबसे नवीन संग्रह है जिसमें ५३ गीत हैं जिनमें प्रकृति के प्रति उनका असीम अनुराग शब्द-शब्द-द्वारा व्यञ्जित होता है। इस प्रकार के सरस भावपूर्ण गीत हिन्दी-साहित्य में अन्यत्र न मिलेंगे। मूल्य २) दो रुपये।

पद्यमाला—इस पुस्तक में अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के बारहवें अधिवेशन के सभापति हास्यरसावतार पण्डित जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी, साहित्यभूषण की फुटकर कविताओं का संग्रह किया गया है। मूल्य १) एक रुपया।

मधुस्रवा—लेखक, राजाराम श्रीवास्तव बी० एस-सी० एल० बी०। इस अनुपम और नवीन शैली की कविता में जीवन में मधु बरसाने की पूरी-पूरी क्षमता है। इसकी रचनाओं को पढ़कर जीवन को रस-सिक्त बनाइए। १।-) एक रुपया पाँच आने।

एकादशी—लेखक, श्रीयुत नत्थाप्रसाद दीक्षित 'मि'। इस पुस्तक में मिलिन्द जी की १२ कमनीय कविताओं का संग्रह किया गया है। ये सभी कवितायें पौराणिक आख्यायिका के आधार पर नये ढङ्ग से लिखी गई हैं। मूल्य केवल १।- रुपया पाँच आने।

मञ्जीर—लेखक, श्री गिरिजाकुमार माथुर। इसमें कवि की भावपूर्ण ४३ रचनायें संगृहीत हैं जिन्हें पढ़कर फड़क उठता है। मूल्य १) एक रुपया।

वेणुकी—लेखिका, श्रीमती तारा पाण्डेय। इस पुस्तक में श्रीमती तारा पाण्डेय की ६२ कविताओं का संग्रह किया गया है। इसमें संगृहीत कविताओं में भावुकता है और है सहृदय वेदनामय झङ्कार। मूल्य १) एक रुपया।

दैत्यवंश—लेखक, श्रीयुत हरदयालुसिंह। इसमें हिरण्यकश्यप से लेकर स्कन्द तक दैत्यवंश के प्रभावशाली नरेशों का व्रजभाषा के ललित छन्दों में पुरानी शैली के अनुसार किया है। इस पुस्तक पर देव-पुरस्कार दिया जा चुका है। ३।-) तीन रुपये पाँच आने।

मधूलिका—प्रगतिवादी कवि श्री रामेश्वर शुक्ल की मनोरम कविताओं का संग्रह। मूल्य २) दो रुपये।

कविता-कलाप—हिन्दी के ख्यातनामा कवि स्वर्गीय नाथूरामशङ्कर शर्मा, पण्डित कामताप्रसाद गुरु, बाबू मैथिलीशरण गुप्त तथा स्वर्गीय आचार्य पण्डित महावीरप्रसाद द्विवेदी की लिखी हुई सरस कविताओं का सचित्र संग्रह। मूल्य ४) चार रुपये।

द्विवेदी काव्यमाला—आचार्य पण्डित महावीरप्रसाद द्विवेदी की अमर कविताओं का पूर्ण संग्रह।

शनि भगवान् की कथा—इसमें ललित छन्दों में शनि भगवान् की महिमा का वर्णन किया गया है। मूल्य ॥) आठ आने।

नीरजा—सुप्रसिद्ध कवयित्री श्रीमती महादेवी वर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविताओं का संग्रह। इस पुस्तक के लिए लेखिका को दी-साहित्य-सम्मेलन से ५००) का सेक्सरियापुरस्कार मिला है। य १।-) एक रुपया पाँच आने।

तक्षशिला काव्य—सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान तक्षशिला अतीत गौरव का वर्णन। इसमें ओज, प्रसाद तथा माधुर्य्य दि काव्योचित गुणों का समुचित रूप से समावेश किया गया मूल्य ३) तीन रुपये।

कौमुदी—श्रीयुत बालकृष्णराव आई० सी० एस० की कमनीय ताओं का संग्रह। मूल्य ॥≡) ग्यारह आने।

मेघदूत—राजा लक्ष्मणसिंह द्वारा अनुवादित तथा बाबू मसुन्दरदास द्वारा संपादित मेघदूत का सर्वोत्तम संस्करण। ॥-) तेरह आने।

किंकिणी—इस पुस्तक के लेखक श्री राजाराम श्रीवास्तव उत्तमोत्तम फुटकर कविताओं का संग्रह किया गया है। कवि-ओं की भाषा इतनी मधुर और कल्पना की उड़ान इतनी आक-है कि पाठक कुछ क्षण के लिए उसमें अपनी सुध-बुध भूले ा नहीं रहता। मूल्य ।॥) बारह आने।

लक्ष्मणशक्ति—इसी लेखक द्वारा रचित एक खण्डकाव्य। की कथा का आधार रामायण का युद्ध-काल है जिसमें लक्ष्मण त हो गये थे। भाषा सुलझी हुई और मुहाविरेदार है। ॥) बारह आने।

ाहित्य-समालोचना

तुलसी के चार दल (प्रथम और द्वितीय भाग)—गोस्वामी सीदास के रामलला नहछू, बरवै रामायण, पार्वती-मंगल तथा कीमंगल का आलोचनात्मक परिचय तथा इन चारों ग्रंथों की यनपूर्ण टीका। मूल्य प्रथम भाग का ३) तीन रुपये य भाग का २॥≡) दो रुपये ग्यारह आने।

हिन्दी-भाषा की उत्पत्ति—पुस्तक का विषय उसके नाम से है। इसमें हिन्दी-भाषा की उत्पत्ति के विवेचन के अति-और भी अनेक भारतीय भाषाओं पर विचार किया गया है। ॥) आठ आने।

बाबू श्यामसुन्दरदास की कुछ पुस्तकें

रूपक-रहस्य—नाट्य-शास्त्र-सम्बन्धी एक उत्कृष्ट श्रेणी का । मूल्य २॥≡) दो रुपये ग्यारह आने।

सचित्र हिन्दी कोविद-रत्नमाला—(दो भाग) पहले भाग में भारतेन्दु से लेकर वर्तमान समय तक के हिन्दी के नामी चालीस लेखकों और सहायकों के सचित्र और संक्षिप्त जीवनचरित दिये गये हैं; और दूसरे भाग में पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी तथा पं० माधवराव सप्रे, बी० ए० आदि विद्वानों के तथा विदुषी स्त्रियों के जीवनचरित छापे गये हैं। हिन्दी में यह पुस्तक अपूर्व है। पहले भाग का मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने। दूसरे भाग का २॥≡) दो रुपये ग्यारह आने।

मेरी आत्म-कहानी—काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा के जन्म-दाता बाबू श्यामसुन्दरदास जी की आत्म-कहानी एक प्रकार से हिन्दी-साहित्य के वर्तमान युग का इतिहास है। इस पुस्तक में बाबू साहब ने केवल अपनी जीवन-घटनाओं का विवरण ही नहीं लिखा वरन् अपने समय के उन सभी साहित्य-सेवियों के कार्यों की विवेचना भी की है, जिन्होंने हिन्दी-साहित्य की अभिवृद्धि में योगदान किया है। मूल्य २) दो रुपये।

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ—लेखक, पण्डित उमेशचन्द्र मिश्र। इस पुस्तक में विश्वकवि श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर की प्रामाणिक जीवनी और उनकी समस्त कृतियों—कविता-संग्रह, नाटक-नाटिका, कहानियाँ, उपन्यास, यात्रा-वर्णन, विज्ञान के ग्रंथ, निबन्ध, साहित्यिक समालोचना, चित्रकला आदि—का विवेचनात्मक परिचय दिया गया है। उदाहरणों में कवि की प्रायः समस्त सुप्रसिद्ध और चुनी हुई रचनायें आ गई हैं। फ़ुटनोट में उनके सरल अर्थ दिये गये हैं। इसके द्वारा आप रवीन्द्रनाथ और उनकी काव्य-कृतियों का पूरा-पूरा परिचय प्राप्त कर सकते हैं। विश्वभारती (शान्तिनिकेतन) के विद्वानों ने भी इसकी प्रशंसा की है। मूल्य केवल ५) पाँच रुपये।

द्विवेदीमीमांसा—लेखक, श्रीयुत प्रेमनारायण टण्डन। हिन्दी के नवीन युग की धाराओं और प्रवृत्तियों के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। साधारण पाठकों के अतिरिक्त सम्मेलन के परीक्षार्थियों व विश्वविद्यालयों के छात्रों के लिए भी यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। मूल्य दो रुपये।

देवदर्शन—देवपुरस्कार-विजेता श्री हरदयालुसिंह द्वारा सम्पादित व्रजकाव्य-समीक्षायें—इसमें व्रजभाषा के प्रख्यात कवि देव की जीवनी और उनके समस्त काव्यों का आलोचनात्मक परिचय दिया गया है। व्रजकाव्य के प्रेमियों के अतिरिक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य के विद्यार्थियों के लिए भी यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपये पाँच आने।

पूर्ण-पराग—इसमें व्रजभाषा के प्रसिद्ध आधुनिक कवि श्री देवीप्रसाद 'पूर्ण' की जीवनी और उनके काव्य का समालोचनात्मक परिचय है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपये पाँच आने।

मतिराम-मकरन्द—इसमें काव्यालोचन के साथ-साथ कवि मतिराम के ३ प्रसिद्ध ग्रंथों—मतिराम-सतसई, ललित-ललाम और रसराज का संक्षिप्त सरस संग्रह भी कर दिया गया है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

बिहारी-विभव—इसमें महाकवि बिहारी की कविता का आलोचनात्मक परिचय, उनकी जीवनी तथा सतसई के चुने हुए दोहे संकलित हैं। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपये पाँच आने।

भूषण-भारती—इसमें महाकवि भूषण की जीवनी और उनके समस्त काव्य-ग्रन्थों का विवेचनात्मक परिचय दिया गया है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपये पाँच आने।

महादेवी का विवेचनात्मक गद्य (द्वि० सं०)—संकलनकर्त्ता श्री गंगाप्रसाद पाण्डेय, एम० ए०। साहित्य की नवीन शैली का अध्ययन करनेवालों के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य २।।।) दो रुपये बारह आने।

आल्हा—लेखक, चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा। इस पुस्तक में महोबे के प्रख्यात वीर आल्हा और ऊदल का जीवन-चरित और समस्त लड़ाइयों का वर्णन रोचक व सरस भाषा में दिया गया है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य ३।-) तीन रुपये पाँच आने।

साहित्य-समीक्षा—इस पुस्तक में हिन्दी के सुप्रसिद्ध श्रीयुत कालिदास कपूर, एम० ए०, एल० टी० के साहित्यिक समालोचनात्मक लेखों का संग्रह किया गया है। मू एक रुपया।

हास्य-कौतुक—कवीन्द्र रवीन्द्र ने इस पुस्तक में विनो भाषा में मानव-चरित के बहुत ही उत्तम-उत्तम चित्र अंकित हैं। मूल्य ।।) आठ आने।

मौलाना हाली और उनका काव्य—उर्दू के श्रेष्ठ मौलाना हाली का जीवनचरित और उनकी चुनी हुई कवि का संग्रह। प्रत्येक कविता का अर्थ सरल हिन्दी में गया है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

कवि और काव्य—श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी ने काव्य गुण-दोष से सम्बन्ध रखनेवाले कितने ही उपयोगी विषयों का विशद रूप से विवेचन किया है। मूल्य १।-) एक पाँच आने।

कहानी कैसे लिखनी चाहिए—सफल कहानी-लेखक की इच्छा रखनेवालों के लिए इसमें बहुत-सी ज्ञातव्य बातें गई हैं। मूल्य ।।≈) ग्यारह आने।

हिन्दी ग्रामर—(ई० ग्रीव्स कृत) एक अँगरेज़ लिखित यह हिन्दी का व्याकरण भाषा-विज्ञान की दृष्टि से ही महत्त्वपूर्ण है। हिन्दी न जाननेवाले विदेशी को सीखने में इससे मदद तो होगी ही साथ ही हिन्दी भाषा के विद्यार्थी भी इससे लाभ उठा सकते हैं। मूल्य ८।।≈) रुपये ग्यारह आने।

मैनेजर बुकडिपो—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

श्री काशी विद्यापीठ के बहुमूल्य प्रकाशन

समाजवाद

लेखक—सम्पूर्णानन्द

जिसकी महात्मा गान्धी ने प्रशंसा की है तथा जिसपर हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन से अपने विषय की सर्वोत्तम पुस्तक होने के कारण कारण बारह सौ रुपये का 'श्री मंगलाप्रसाद' तथा पाँच सौ रुपये का 'मुरारका' पारितोषिक प्राप्त हुआ है।

संशोधित और परिवर्द्धित तृतीय संस्करण का मूल्य केवल दो रुपये।

अन्य रचनायें—

१—हिन्दी शब्द-संग्रह

२—अफ़लातून की सामाजिक व्यवस्था

३—हिन्दू भारत का उत्कर्ष

४—मीर क़ासिम

५—अंग्रेज जाति का इतिहास

गणेश

लेखक—श्री सम्पूर्णानन्द

वेद, पुराण, तन्त्र, बौद्ध और जैन में गणेशजी का क्या रूप है और भा बाहर चीन, जापान और जावा आदि उनकी किस प्रकार पूजा होती है, ज लिये विद्वान् लेखक की नई रचना प

अनेक सुन्दर तिरंगे तथा एकरंगे सहित पुस्तक का मूल्य केवल दो आठ आने।

काशी विद्यापीठ भण्डार, विद्यापीठ रोड, बनारस छावनी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हमारे यहाँ हिन्दी भाषा की सब पुस्तकें मिलती हैं।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

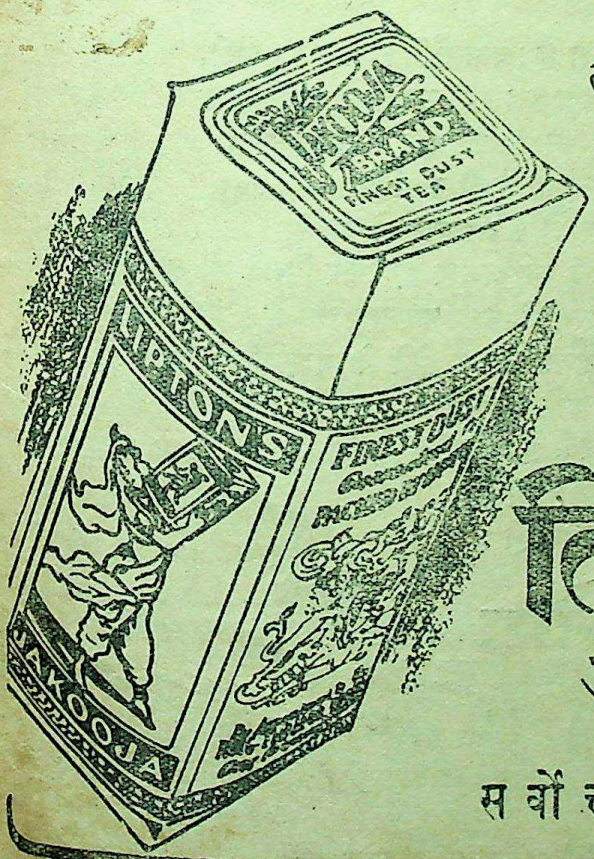

तेज व बढ़िया सुगन्ध, गहरा रंग और कम दाम इन सबने मिलकर लिपटन की जाकूजा को बाजार भर की सर्वश्रेष्ठ चाय बना रक्खा है।

लिपटन की जाकूजा चाय

सर्वोत्तम भारतीय चूरा चाय

LTK 84 !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुश्चिन्ताओं के घेरे में...

युद्ध ने सभी पर बहुत ज्यादा खिंचाव डाल दिया है। क्या सैनिक, क्या व्यापारी, क्या किसान, सभी पर इसका असर पड़ा है। खाद्यपदार्थों का मिलना मुश्किल हो रहा है और फिर मँहगी की तो हद नहीं। ठसाठस भरी हुई ट्राम, बस और रेलों में यात्रा करना कष्टप्रद तो है ही कभी कभी जोखिम में भी डाल देता है। युद्ध के पहले कपड़े के जो दाम थे उनमें और आज के दामों में आकाश पाताल का अन्तर है फिर मिलते भी कहाँ हैं! सभी को पहले से कठिन और अधिक दबाव में, काम करना पड़ता है। यही कारण है कि इतने ज्यादा आदमी, दिन भर की मेहनत से चूर होने के बाद बढ़िया चाय का आनन्द व आराम उपभोग करने को उत्कंठित हो उठते हैं। चाय स्फूर्ति लाती है, प्रसन्नता लाती है, थकावट कम करती है।

चाय सर्वोत्तम पेय है—कहीं भी हो,
किसी भी समय हो।

भारतीय

वक्त पड़ने पर **चाय** का सहारा लीजिये

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

IK 235

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अप्रेल १९४५

वार्षिक मूल्य ४॥)

सरस्वती

एक प्रति का ।=)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालों को लम्बे तथा मनमोहक

बनाने के लिए

कामिनिया आयल (रजिस्टर्ड)

का व्यवहार करें।

यह बालों के लिए सर्वोत्तम उपचार है।

यह बालों को शीघ्रतापूर्वक बढ़ाता है।

बालों का झड़ना बन्द कर उन्हें काला, चिकना, चमकीला तथा मनमोहक बनाता है। एक बार की परीक्षा पर्याप्त होगी।

खुशबू का राजा

ओटो दिलबहार (रजिस्टर्ड)

अपनी मीठी तथा मनमोहक सुगन्ध के लिए विख्यात। दो-चार बूँद कपड़ों पर डाल देने से कपड़े अधिक समय तक सुगन्धित बने रहेंगे।

दिलबहार हेयर आयल (रजिस्टर्ड)

एक दूसरा सुगन्धित केश तेल

यह तेल अत्यन्त सुगन्धित है तथा बालों की उपयोगिता के लिए 'कामिनिया आयल' के बाद इसका ही नम्बर है। बालों को बढ़ाने के लिए यह विशेष लाभदायक है। एक बार अवश्य परीक्षा करें।

एँग्लो इण्डियन ड्रग एंड केमिकल कं०,

२८५ जुमा मसजिद, बम्बई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

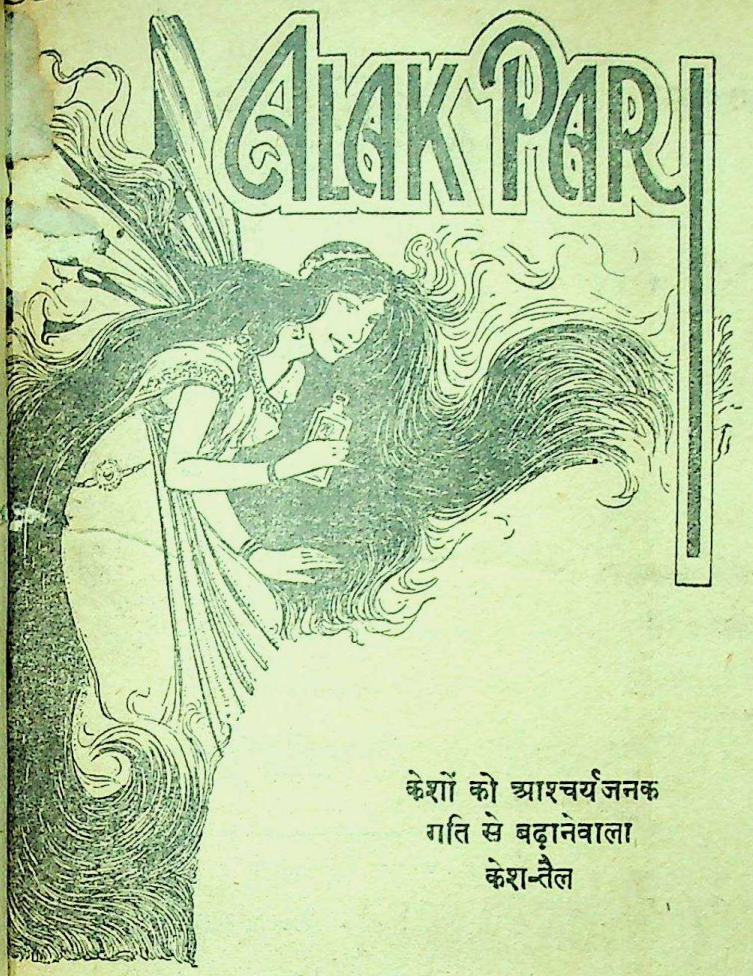

केशों को आश्चर्यजनक
गति से बढ़ानेवाला
केश-तैल

शुद्ध बादामरोग़न पर बना

अलकपरी

केशों में प्रतिमास ३-४ इञ्च वृद्धि !
६ महीने में एड़ी-चुम्बी केश !

'अलकपरी' का कोर्स

पहले सप्ताह में रूसी-ख़ुश्की दूर हो जाती है।
दूसरे सप्ताह में केशों का झड़ना और उनके सिरों का फटना रुकता है।
तीसरे सप्ताह में नये केश उगते दिखाई देते हैं।
चौथे सप्ताह के अन्त तक केश ३-४ इञ्च बढ़ जाते हैं।
फिर प्रतिमास इसी औसत से बढ़ते रहते हैं।

६ महीने में केश एड़ी-चुम्बी बन जाते हैं।

मूल्य एक शीशी का २॥) है जो एक महीने को काफ़ी होती है। डाक-ख़र्च व पैकिङ्ग पृथक्। ६ से अधिक शीशियाँ डाक से नहीं भेजी जायँगी। अधिक के लिए ५) पेशगी भेजिए और अपने रेलवे स्टेशन का नाम लिखिए।

प्रतिष्ठित महिलाओं की सम्मतियाँ—

मुझे 'अलकपरी' से बहुत कुछ फ़ायदा है। ३ शीशियाँ तुरन्त भेजने की कृपा करेंगे क्योंकि मेरे पास का तेल बिलकुल ख़तम हो गया है।

२-९-४४ कुसुमकुमारी, काँकरोली (मेवाड़)।

आपके 'अलकपरी' तेल की १ शीशी इस्तेमाल की। बहुत ही लाभ हुआ। अनेक धन्यवाद। अब मैं आपकी स्थायी ग्राहिका बन जाऊँगी। कृपया एक शीशी १५ सितम्बर के अन्दर ही अन्दर भेज दें।

७-९-४४ पुष्पा श्रीवास्तव C/o ब्रजेन्द्रनाथ श्रीवास्तव, अलीगढ़।

नम्र निवेदन यह है कि 'अलकपरी' की २ शीशियाँ लगाईं। मुझे बहुत लाभ हुआ है। कृपा कर २ शीशियाँ शीघ्र ही और भेज दीजिए।

१०-९-४४ मिस पुष्पा साहनी C/o दीवान जियालाल साहनी, नायब तहसीलदार, गुजरात (पंजाब)

'अलकपरी' से बहुत लाभ हुआ है। कृपया ६ शीशियाँ तुरन्त भेज दें।

१२-९-४४ मिसेज़ चौधरी सरदारसिंह सब इन्स्पेक्टर पुलिस, हरदुवागंज

'अलकपरी'—नया कटरा, इलाहाबाद

हमारे एजेन्ट—

नई दिल्ली—रायल स्टोर्स, ३३, गोल बाज़ार। आगरा—प्रियादास घनश्यामदास परफ़्यूमर्स, काश्मीरी बाज़ार।
लखनऊ—[illegible] सीताराम, अमीनाबाद पार्क।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

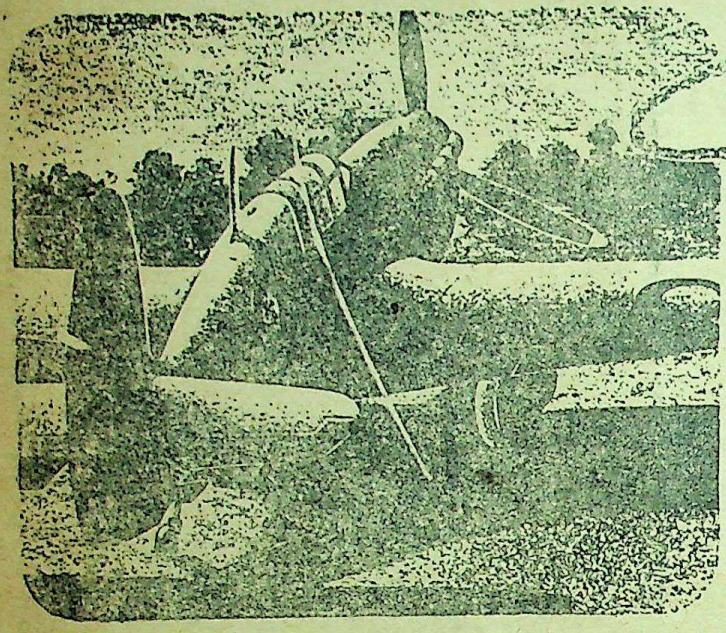

साहस...

हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े के जवान बड़े साहसी होते हैं और यही कारण है कि यह दल इतना शक्तिशाली तथा महान बन गया है। इन ऐतिहासिक दिनों में जब कि संसार की सीमाओं में परिवर्तन हो रहा है, विजय उसी देश को प्राप्त होगी जो अपनी हवाई शक्ति के द्वारा आकाश पर प्रभुत्व स्थापित कर सकेगा। हिन्दुस्तानी हवाई बेड़ा अपने मित्रराष्ट्रों के साथ जापानियों को दिखला रहा है कि साहस तथा उत्तम ट्रेनिंग के कारण हम आकाश पर नियन्त्रण कर रहे हैं।

अपने युद्धोत्तर कार्य-क्रम पर विचार करने का यही समय है!

* इसमें कोई सन्देह नहीं कि हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े में अफ़सरों को जो ट्रेनिंग दी जायगी और उन्हें जो अनुभव प्राप्त होगा, उसके कारण बहुत से जवानों में ऐसी योग्यता उत्पन्न हो जायगी जो शहरी क्षेत्र में सफल जीवन-वृत्ति के लिए बहुत आवश्यक होती है।
* सरकार ने इस बात की गारण्टी दी है कि लड़ाई के दौरान में सरकारी नौकरियों का एक भाग ख़ाली रखा जायगा और बाद में इन जगहों पर वे लोग रखे जायेंगे जो अभी फ़ौजी नौकरी में हैं।
* ऐसी योजनायें बनाई जारही हैं जिनके द्वारा फ़ौजी नौकरीसे आये हुए जवान सरकारी ख़र्च पर कोई निर्वाचित हुनर या पेशा सीख सकते हैं।
* जो उम्मीदवार अभी विश्वविद्यालयों में पढ़ रहे हैं, उन्हें लड़ाई के बाद शिक्षा सम्बन्धी विशेष रियायतें मिलेंगीं जिनके द्वारा वे युद्ध के बाद अपना अध्ययन जारी रख सकते हैं। अपने विश्वविद्यालय के अध्यक्ष से इनके सम्बन्ध में वास्तविक विवरण प्राप्त हो सकता है।

इस कूपन को काट कर अपने निकटवर्ती जी० डी० (पाइलाट्स) रिक्रूटिंग आफीसर के पास भेज दीजिए जो आपको हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े में पाइलाट (विमान चालक) की नौकरी के संबंध में पूरा विवरण और प्रार्थना पत्र का फार्म भेज देंगे।

नाम _____

पता _____

_____

_____

हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े को ऐसे जवानों की ज़रूरत है जिनकी तन्दुरुस्ती अच्छी हो, नज़र और सुनने की ताक़त ठीक हो और उम्र १७॥ और २५ साल के बीच हो; विमान चलाने के परिश्रम को सहन कर सकते हों और अच्छी शिक्षा पाई हो तथा अच्छी अंग्रेज़ी बोल और लिख लेते हों।

अपना कूपन निकटवर्ती जी. डी. रिक्रूटिंग आफ़िस को भेज दीजिए:

आई० ए० यफ़० जी० डी० (पाइलेट्स रिक्रूटिंग आफ़िसर,
५वें रोड, लखनऊ या
१५ ओल्ड कोर्ट हाउस स्ट्रीट, कलकत्ता।

AAA 1529

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमज़ोर और कृष बच्चे डोंगरे-बालामृत के इस्तेमाल से ताक़तवर, पुष्ट और चुस्त बनते हैं।

निर्बल, निश्चेतन और निराश क्यों रहते हो ?

भोजन को पचानेवाला, ख़ून को बढ़ानेवाला, पाण्डु और अन्य रोग के बाद की निर्बलता को नष्ट करनेवाला

झंडु रक्तो फोस्फोमाल्ट

सुमधुर शक्तिवर्धक, अमूल्य ओषधि अवश्य सेवन करें

झण्डु फ़ार्मास्युटिकल वर्क्स लि०, बम्बई नं० १४

इलाहाबाद के चीफ़ एजेन्ट—एल० एम० धोलकिया एण्ड ब्रादर्स, ४६ जान्सटनगंज।

दिल्ली और यू० पी० के सोल एजेन्ट—कान्तिलाल आर० परीख, चाँदनी चौक, देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

यू० पी० एजेंट—कान्तिलाल आर० पारेख, चाँदनी चौक, दिल्ली।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिलिए—

और सन्तुष्ट हूजिए

घटिया मेल के तागे से अपनी दस्तकारी नष्ट न कीजिए। सिलाई कीजिए अथवा मरम्मत, दर्ज़ी छाप तागे से आपका काम अत्यन्त सन्तोषजनक होगा। यह भारतवर्ष में तैयार किया हुआ अत्यन्त विश्वसनीय धागा है।

मैनेजिङ्ग एजेन्ट्स :—

विलियम ग्रिमशा एंड सन्स।

भारतवर्ष में बनानेवाले :—

एकमे थ्रेड कम्पनी लि०

बैंक आफ़ बरौदा बिल्डिंग,

अपोलो स्ट्रीट, बम्बई।

एजेन्सी के लिए आवेदनपत्र भेजिए।

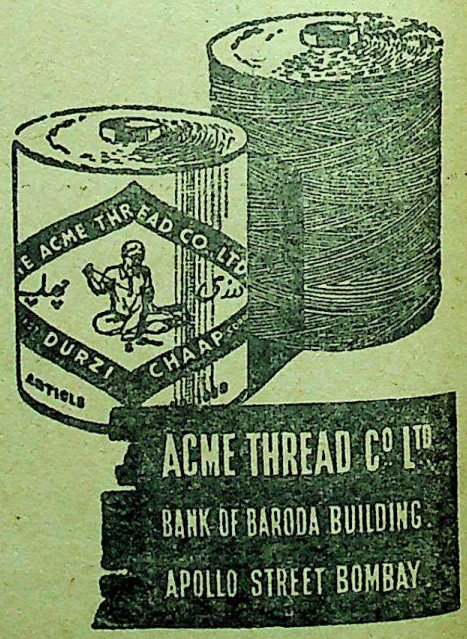

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनोलिया एक बड़ा ही आरामदायक साबुन है। इससे स्नान करनेपर हर बार आश्चर्य्यजनक शीतलता और निहायत ताजगी आ जाती है। और इस साबुनकी सुगंध इतनी स्फुर्तिदायक और प्रफुल्लित करनेवाली है कि विश्रान्त मस्तिष्क और शरीरको एक नवजीवन-सा प्राप्त हो जाता है।

यह प्रफुल्लित करता है !

विनोलिया व्हाइट रोज साबुन

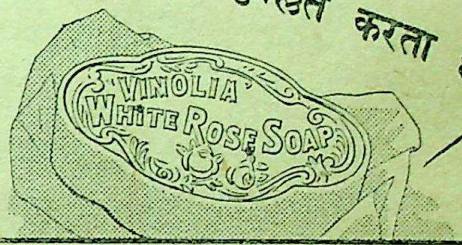

VWR. 16-221 HI

VINOLIA CO. LIMITED, LONDON, ENGLAND

प्रदर रोग स्त्रियों का भयानक शत्रु है

प्रदर रोग जिसको लोग लिकोरिया भी कहते हैं यह स्त्रियों को सुन्दरता और जवानी को नष्ट करनेवाला भयानक शत्रु है। लज्जा-बेचारी रोग को छिपाये रहती हैं और दिन-रात घुला करती हैं। यह उनकी भूल है। भयानक रोग का इलाज कराने में लापरवाही ी करना चाहिये, इस बीमारी से स्त्रियों के गुप्त शरीर से लाल, काला, धुमैला, या श्वेत रंग का बदबूदार पानी या लेस-सा कलता रहता है। महीना ठीक समय पर नहीं होता है जिसके कारण कमर, रीढ़, सिर में दर्द, शरीर में जलन, मन मलीन, उठने-ने में थकावट, भूख का कम लगना, बदन दुबला और कमज़ोर हो जाना, मूर्छा, बेहोशी आदि रोग हो जाते हैं और सन्तान नहीं ती है और यदि होती भी है तो दुबली और कमज़ोर होती है। ऐसी अवस्था में भारतविख्यात वैद्यरत्न सत्यदेव ने अपूर्व शक्ति ान करनेवाली २५ वर्ष की आज़मूदा **नारी-संजीवन** नामक दवा का आविष्कार किया जिसके द्वारा आज तक सहस्रों स्त्रियों को भयानक रोग के पंजे से छुड़ाया है। इस नारी-संजीवन के सेवन से तमाम बीमारियाँ दूर होकर स्त्रियाँ सुन्दर और तन्दुरुस्त हो जाती और सन्तानें सुन्दर, बलवान्, दीर्घायु पैदा होती हैं। यदि आवश्यकता हो तो आज ही पत्र डालकर एक डिब्बा नारी-संजीवन का ाकर इसके अपूर्व गुणों का चमत्कार देखें। क़ीमत एक डिब्बा ३=); डाकख़र्च माफ़; पैकिंग ख़र्च अलग।

मँगाने का पता—

रूपविलास कम्पनी नं० ४२७ धनकुट्टी,

कानपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुराने खून के बदले नया खून

हमारा सुरबल्ली कषाय शक्तिशाली परन्तु सम्पूर्ण निर्दोष उपादानों से प्रस्तुत है जो खून को बढ़ाते, साफ करते और नई शक्ति प्रदान करते हैं। सुरबल्ली कषाय के सेवन से आपमें नई उमंग भर जायगी। अस्वस्थ होने की भावना, थकावट, सुस्ती जो खून की खराबी और कमी की वजह से महसूस होने लगती हैं गई गुजरी कहानियाँ हो जाँयगीं। सच पूछा जाय तो सुरबल्ली कषाय आपकी धमनियों में नये व शुद्ध रक्त का प्रवाह बहाकर उनकी कायापलट कर देगा।

कठिन दोषों के लिये :

खून खराब होने से अक्सर कठिन चर्म रोग, फोड़े, फुन्सियाँ इत्यादि हो जाते हैं। ऐसे अवसरों पर हमारा वृहत् सुरबल्ली कषाय बहुत काम करता है। सुरबल्ली कषाय के समस्त उपादानों का घनीभूत रूप इसमें रहता है। और इस तरह के कठिन दोषों के लिये विशेष रूप से हितकारी है। यह आशु फलप्रद है और असाध्य रोगों में भी इससे फायदा होता देखा गया है।

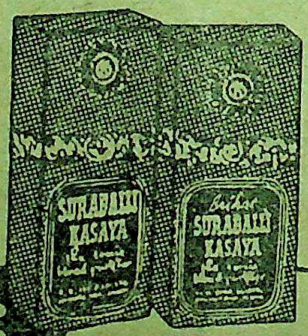

सी.के.सेनका

सी.के.सेन ऐण्ड को लिः
जवाकुसुम हाउस
कलकत्ता

सुरबल्ली कषाय व बृहत् सुरबल्ली कषाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

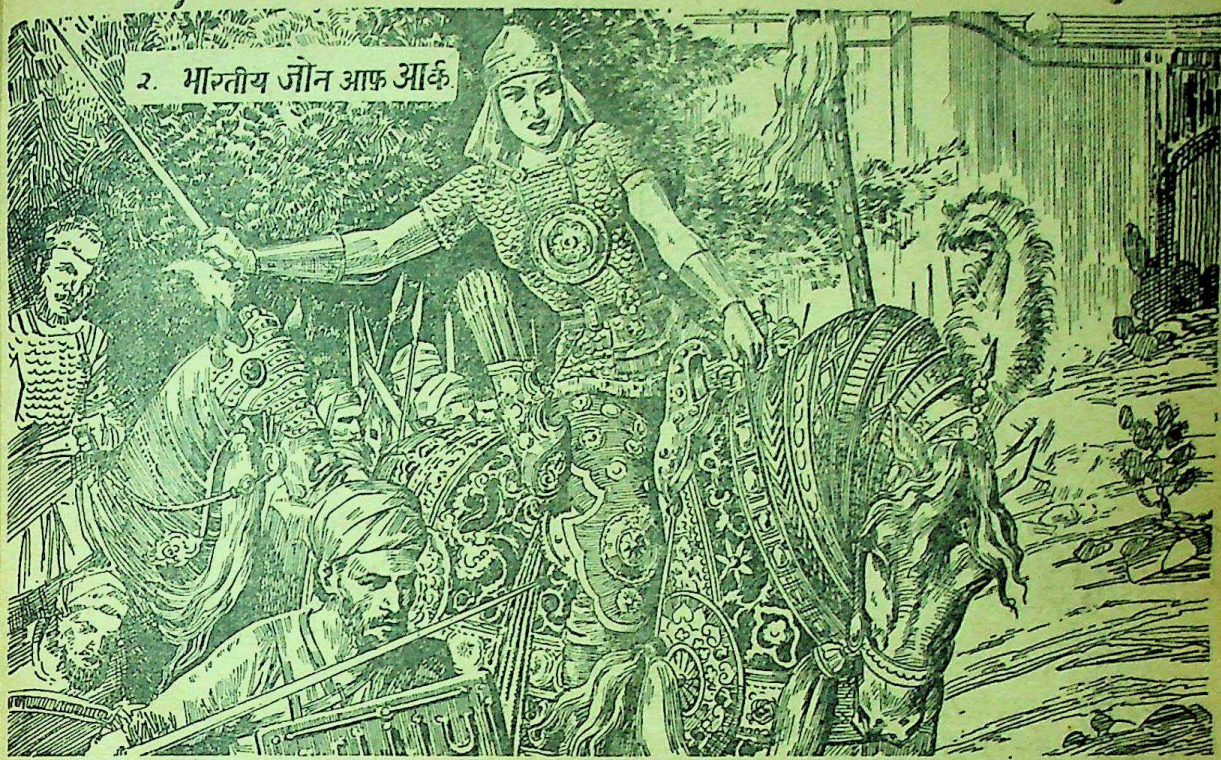

पराक्रम और शक्ति शाली कार्यों का मूल कारण स्वस्थ शरीर।

चाँदबीबी सुन्दरी ही नहीं अपितु मुस्लिम जाति की एक साहसी योद्धा भी थी। आत्म समर्पण करने कि अपेक्षा मृत्यु को अधिक सुखकर समझते हुए, क़िले में घिरी हुई, शत्रु की अपेक्षा कहीं छोटी सेना का स्वयं संचालन और वीरता पूर्वक युद्ध करते हुए वह वीर गति को प्राप्त हुई। उसके असामान्य साहस से पूर्ण सुन्दर स्वास्थ्य ने उसका नाम भारतीय इतिहास के पृष्ठों पर स्वर्णाक्षरों से लिख कर अनन्त काल के लिये अमर कर दिया।

शारीरिक स्वस्थता के लिये हेमो-द्राक्षो-माल्ट का सेवन करिये।

हेमो द्रक्षो माल्ट पुरुष स्त्री और बच्चे सभी को समान लाभदायक है। उनके ग्लीसरो-फ़ास्फ़ेट्स स्नायुवों को शक्ति देते हैं। उसके माल्ट, पैप्सिन और अंगूरों का रस पाचन शक्ति, भोजन में रुचि तथा जठराग्नि की शक्ति को बढ़ाते हुए संपूर्ण शरीर को असाधारण शक्ति और कान्ति प्रदान करता है।

स्वास्थ रक्षा के लिये हेमो-द्राक्षो-माल्ट व्यवहार कीजिये

अलेम्बिक डिस्ट्रिब्युटर्स लि. मेस्टन रोड. कानपुर

अलेम्बिक केमिकल वर्क्स कम्पनी लिमिटेड बराडा

AL.2518

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्माजी का चमत्कार

प्रेमवटी ने अपनी ख़ूबी से सारी दुनिया में तहलक़ा मचा दिया

कांग्रेस की राय

(प्रेमवटी वास्तव में एक अद्वितीय औषधि है, पहिले हमें इस औषधि पर इतना विश्वास न था, किन्तु जब हमने स्वयं परीक्षण किया तब हम इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि यह औषधि विज्ञापन में दिये गये तमाम रोगों की केवल एकमात्र औषधि है। हम आशा करते हैं कि भविष्य में यह कम्पनी इससे भी उत्तम औषधियों का निर्माण कर जनता को पहुँचायेगी।—कांग्रेस देहली)

भारत के योगियों ने वनों और पर्वतों की कन्दराओं में रहकर वह चमत्कार दिखलाये हैं जिससे बड़े-बड़े वैज्ञानिक चिकित्सक हैरत में आ गये हैं। आधुनिक चिकित्सकों को जब कोई रोग की औषधि से सफलता नहीं मिलती तब वह ला घोषित कर देते हैं। परन्तु महात्मा लोग जड़ी-बूटियों की सहायता से मुर्दे को भी जिला देने का दावा करते हैं। भाइ ध्यान से पढ़ो तथा अपने इष्ट मित्रों को सुनाओ। यह लेख जो लिखा गया है, कोई गप्प नहीं है बल्कि मेरे जीवन की घटनायें हैं जो आपके सम्मुख रखता हूँ। मेरा जन्म एक धनी परिवार में हुआ। अपने पिता का लाड़ला पुत्र होने के मैं धन और व्यसन में घिरा रहता था, लेकिन फिर भी मैं सुखी नहीं था। कुसङ्गत में पड़कर मुझे जरियान और प्रमेह रोग हो पहले तो एक दो साल मैंने लोकलाज के कारण अपना भेद छिपाये रखा परन्तु रोग ने भयानक सूरत अख़्तियार कर ली, घबड़ा उठा, संसार में चारों ओर अँधेरा मालूम होने लगा तब मेरी आँखें खुलीं। इलाज शुरू किया गया, बड़े-बड़े डा हकीमों, वैद्यों के फ़ीस रूप में रुपये और क़ीमती दवाइयों के ख़रीदने में पानी की तरह रुपया बहाने लगा, फिर भी मैं निराश ही अब मैं घबरा उठा और चारों तरफ़ से अन्धकार दिखलाई देने लगा और सोचने लगा कि इस दुःखमय जीवन से मर जाना बेह

पर यह बीस साल पहले की बात है। अब आज मैं ख़ुश हूँ। आज उस परमात्मा की कृपा से आरोग्य हूँ मेरे तीन स्वस्थ बच्चे भी हैं जो बिलकुल आरोग्य हैं।

हुआ क्या! मुझमें इतना परिवर्तन कैसे हो गया? यह जानकर आपको आश्चर्य होगा कि मैंने एक दवा सेवन जो दवा मैंने सेवन की, वह एक महान् त्यागी परोपकारी साधु की बनाई हुई थी, जो समय काटने के लिए गाँव से कुछ दू ईंट के खेड़े पर रम रहे थे। यह मेरा सौभाग्य था कि और लोगों के साथ मैं भी दर्शनों के लिए जा पहुँचा। दैवी श मेरे दुःखी जीवन के पिछले अध्याय उनके हृदय-पट पर खिंच गये और मेरी आँखों ने हृदय का सारा भेद अपने आप उस पुरुष पर प्रकट कर दिया। मेरी कच्ची उम्र पर महात्मा को दया आई और उन्होंने मुझे कुछ जड़ी-बूटियाँ एकत्र करने की दी। मैंने वैसा ही किया और तब उनके सम्मुख ही मुझे उनके आदेश और निजी देख-रेख में 'प्रेमवटी' तैयार करनी यद्यपि मुझसे ४० दिन लगातार 'प्रेमवटी' का सेवन करने को कहा गया था, तथापि केवल बीस दिन के सेवन से ही मुझमें प हो गया। मेरी कमज़ोरी और तमाम गुप्त बीमारियाँ जड़ से दूर हो गईं। पीले और उदास मुख पर लाली दौड़ने लगी, में उन्माद झूमने लगा और हृदय में जवानी का जोश उमड़ आया। महात्माजी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के साथ ही वादे को पूरा करने के लिए दुःखी जनों के निमित्त पिछले बीस साल से लगातार मैं इस प्रयोग को मुफ़्त बाँट रहा हूँ। यह पत्र-पत्रिकाओं में भी छप चुका है, मुझे हर्ष है कि इस अमृत-तुल्य प्रयोग ने सैकड़ों की प्राण-रक्षा की, हज़ारों को मौत के मुँ निकाला और लाखों का इससे भला हुआ। महात्मा-प्रदत्त 'प्रेमवटी' का नुस्ख़ा इस प्रकार है; नोट कर लें—

शुद्ध त्रिफला ५ तोला, त्रिकुट चूर्ण ५ तोला, शुद्ध सूर्यतापी शिलाजीत ५ तोला, शुद्ध बङ्ग भस्म ६ माशा, असली छाप केसर ३ माशा, असली अकरकरा ६ माशा, असली नेपाली कस्तूरी ३ रत्ती। इन सब औषधियों को कूट-छानकर डालकर ऊपर से शीतल चीनी का तेल २० बूँद, सन्दल तेल २० बूँद, बिरोजे का तेल २० बूँद एक-एक करके मिलाये। बाद ताज़ी ब्राह्मी बूटी के अर्क़ में १२ घण्टा घोंटकर झरबेरी बेर के बराबर गोलियाँ बनावें और छाया में सुखा लें। एक-एक सुबह-शाम पाव भर गाय के दूध में एक तोला शक्कर मिलाकर सेवन करें। इसकी प्रशंसा हम अपने ही मुँह से नहीं करते बड़े-बड़े वैद्यों, डाक्टरों, हकीमों, सेठ साहूकारों तथा रईसों, ज़मींदारों, सरकारी आफ़िसरों तक ने इसकी सराहना की है। श्रीजमुनादत्त शर्मा, झोंकर का कहना है कि यह वटी धातु का पतलापन, २० प्रकार के प्रमेह के लिए अक्सीर है।

'प्रेमवटी' में कोई हानिकारक चीज़ नहीं पड़ती और गुणकारी चीज़ें नुस्ख़े से ही प्रकट हैं। यह औषध वीर्य का प बीसों प्रकार के प्रमेह, पेशाब के साथ चूने की तरह वीर्य का जाना, पाख़ाने के समय धातु का जाना, स्वप्नदोष, सुस्ती, कमज़ोरी, डाइब्टीज़, मधुमेह, सूज़ाक, जवानी में बुढ़ापे की-सी हालत हो जाना, असली ताक़त की कमी, स्मरण-शक्ति कमज़ोर पड़ जा स्त्रियों के भी प्रदर-सम्बन्धी रोग दूर करके अत्यन्त ताक़त देती है और नस-नस में नवजीवन का सञ्चार करती है। अन्त भाइयों को जिन्हें फ़ुरसत नहीं मिलती या शुद्ध औषधि प्राप्त नहीं कर सकते यह प्रयोग स्वयं बनाकर दाम के दाम में भे व्यवस्था की है। ४० दिन के लिए पूरी ख़ुराक विधिवत् ८० गोलियों का मूल्य ५॥=) रु० और २० दिन के लिए ४० के दाम ३=) डाकख़र्च ॥।-)

पता—बाबू श्यामलालजी रईस, प्रेमवटी आफ़िस नं० (S. A.) धनकुट्टी, कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

—शहाबुद्दीन मुहम्मद ग़ोरी के हिन्दुस्तान पर आक्रमण—प्रिंसिपल श्रीराम शर्मा, एम० ए०, एफ़० आर० एस० ... ... १४५
—अतीत-स्मरण—श्रीयुत रजनी-रामनाथ ... १५०
—क्षितिज (कविता) —श्रीयुत इकराम सागरी ... १५३
—स्वर्गीय सर चौधरी छोटूराम—श्रीयुत शिवकुमार विद्यालङ्कार १५४
—पत्नी चाहिए—डाक्टर बाबूराम सक्सेना, एम० ए०, डि० लिट्० ... ... १२७
—नदी का गीत (कविता)—श्रीयुत तेजनारायण काक, एम० ए० ... ... १२८
—अधिनायक—श्रीमती निर्मला मित्र ... १२९
—गत शीत का हिमपात—श्रीयुत युवराजसिंह चन्देल १६२
—अच्छी हिन्दी—पण्डित किशोरीदास वाजपेयी, शास्त्री १६६
०—इतिहास का एक पृष्ठ—श्रीयुत महावीरप्रसाद
१—प्राचीन भारत में स्त्री-राज्य—पण्डित कृष्णदत्त वाजपेयी, एम० ए० ... ... १७१
१२—विवाह की उत्पत्ति—श्रीयुत श्यामनन्दनसहाय, एम० ए०, एम० इ-डी०, डिप० एल० एस-सी०, एफ़० आर० इकॉन० एस० (लन्दन) ... १७
१३—नालन्दा—श्रीयुत मलिन्द १७
१४—निर्वासित—पण्डित इलाचन्द्र जोशी ... १७
१५—नई पुस्तकें १८
१६—सामयिक साहित्य १८
१७—सम्पादकीय नोट १९

चित्र-सूची

१—स्वर्गीय सर चौधरी छोटूराम १५
२—गत शीत का हिमपात-सम्बन्धी ११ चित्र १६२-६
३—नालन्दा के ध्वंसावशेष १७

अब मैं अपने पति की प्रिय बन गई

रूप विलास रजिस्टर्ड

जब मैं विवाह के अवसर पर अपने पति-गृह गई तब मेरे पतिदेव हमारे भद्दे तथा काले चेहरे को देखकर मुझसे घृणा करने लगे। मैंने अपनी सहेलियों की सलाह से **रूप विलास** का उबटन लगाना शुरू किया। कुछ ही दिनों बाद मेरा चेहरा गुलाब के फूल की भाँति दमकने लगा और आज मैं अपने पति की प्रिय बन गई। इसके लगाने से मुँहासा, झाँई, चेचक, काले-काले दाग़, फुंसी, ख़ुश्की, बदरौनक़ी, झुर्रियाँ वग़ैरह जल्द आराम होती हैं और थोड़े ही दिनों के लगाने से मलीन मुख चमकदार होकर चेहरे पर गुलाबी छटा दमकने लगती है। यदि आप अपना चेहरा ख़ूब-सूरत बनाना चाहते हैं तो २५ वर्ष का प्रचलित जगत्प्रसिद्ध रजिस्टर्ड **रूप विलास** उबटन लगाइए। विवाह-शादियों पर वर-वधू का सौन्दर्य बढ़ाने के लिए यह बहुत ही उपयोगी साबित हुआ है और इसकी ख़ुशबू इतनी प्यारी है कि तबियत को मस्त करती है। क़ीमत एक डिब्बा २-) तीन डिब्बा ५॥) डाक ख़र्च माफ़ पैकिंग ख़र्च अलग।

रूप विलास कम्पनी धनकुट्टी नं० ४२७ कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है।

हमारे यहाँ की बनी क्रीमोला टाफ़ी
फ़्रूट ड्राप्स तथा
रेशमी मिठाइयों का स्वाद लीजिए।
सभी दूकानों में मिलती हैं।

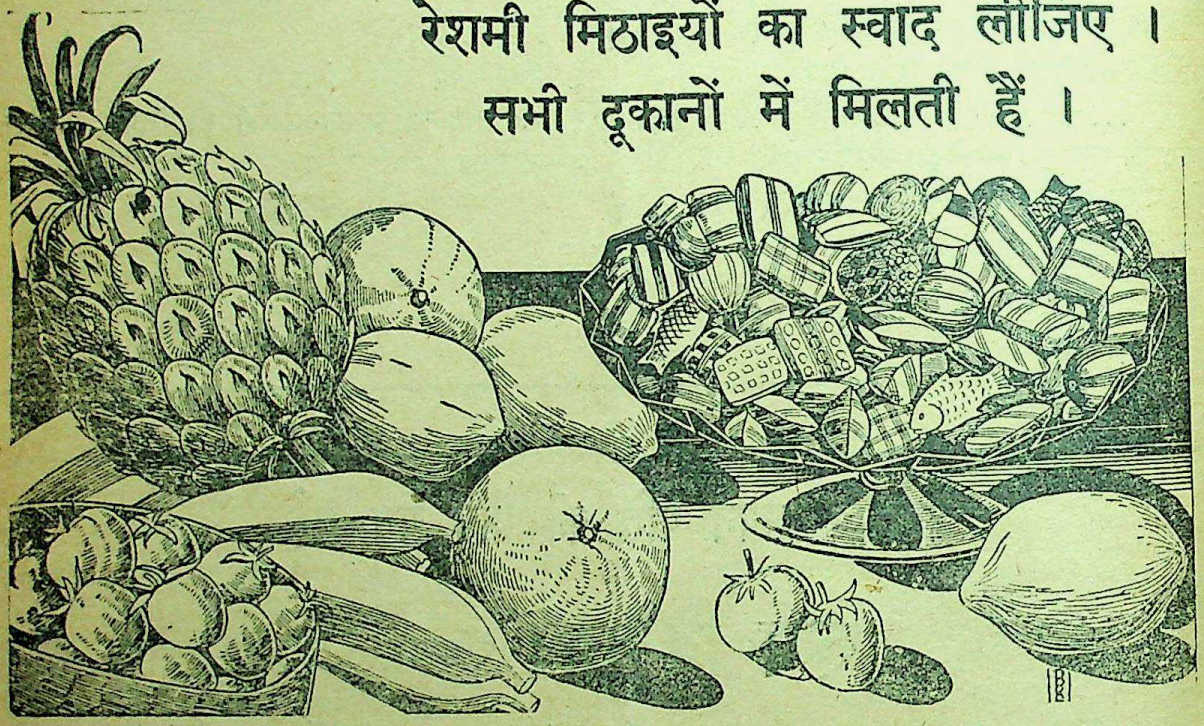

निर्माता—इण्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस,
इंडियन प्रेस, बिल्डिंग,
इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक—देवीदत्त शुक्ल : उमेशचन्द्र मिश्र

अप्रेल १९४५ अधिक चैत्र २००२; भाग ४६, खण्ड १ संख्या ४, पूर्ण संख्या ५४४

शहाबुद्दीन मुहम्मद ग़ोरी के हिन्दुस्तान पर आक्रमण

प्रिंसिपल श्रीराम शर्मा, एम० ए०, एफ़० आर० एस०

हज़रत मुहम्मद साहब की मृत्यु के थोड़े समय बाद ही अरब के मुसलमानों ने अपने धर्म के प्रचार और अपने राज्य के विस्तार के लिए आस-पास के देशों पर आक्रमण आरम्भ कर दिये। हिन्दुस्तान पर आक्रमण की बारी सन् ७१२ में आई जब मुहम्मद बिन क़ासिम ने सिन्ध पर आक्रमण किया। सिन्ध का आक्रमण अरब के मुसलमानों के लिए कुछ अधिक लाभदायक सिद्ध नहीं हुआ। इसलिए उसके ढाई सौ वर्ष बाद तक मुसलमानों ने भारत की ओर मुँह नहीं किया। दसवीं शताब्दी के अंत में पञ्जाब के हिन्दू शासकों और ग़ज़नी के बादशाह अलप्तगीन और महमूद के बीच फिर ठन गई। महमूद ने पञ्जाब, मुलतान, दुआब और गुजरात पर कई धावे किये जिनका अभिप्राय लूट-मार ही था। पञ्जाब के राजाओं ने आठ बार उसका सामना किया। महमूद ने झुँझला कर पञ्जाब पर अधिकार जमाना ही उचित समझा फलतः पञ्जाब ग़ज़नवी राज्य का एक भाग बन गया।

महमूद के उत्तराधिकारियों को अफ़ग़ानिस्तान में चैन से बैठना न मिला। ग़ोर की पहाड़ियों में रहनेवाले क़बीलों के सरदारों ने उन्हें ग़ज़नी से निकालकर ही दम लिया। पञ्जाब ग़ज़नवी वंश का अन्तिम सहारा साबित हुआ। ग़ोर में उस समय दो भाई ग़यासुद्दीन और शहाबुद्दीन शासक थे। इन दोनों का सम्बन्ध आपस में बहुत ही अच्छा था। ग़यासुद्दीन तो ग़ोर में अपने राज्य की घरेलू गुत्थियों के सुलझाने में लगा रहा और शहाबुद्दीन ने राज्य के प्रसार का कार्य अपने ऊपर लिया। ग़ज़नी और ग़ोरी शासकों के वैमनस्य ने उसे हिन्दुस्तान का मार्ग दिखाया और वह उत्तरीय भारत के विभिन्न भागों पर आक्रमण करता रहा। सन् ११५७ में उसने मुलतान पर आक्रमण करके उसे जीत लिया और वहाँ से सिन्ध में उच्छ पर जा धमका। उच्छ की रानी की अपने पति से बनती नहीं थी। उसने शहाबुद्दीन से षड्यन्त्र करके अपना देश उसके हवाले किया। सन् ११७८ में शहाबुद्दीन ने ग़ज़नी वंश के अन्तिम राजा ख़ुसरो मलिक से पेशावर छीन लिया। सन् ११८१ में जम्मू के राजा ने ख़ुसरो मलिक के विरुद्ध शहाबुद्दीन को सहायता दी। उस आक्रमण का परिणाम यह हुआ कि शहाबुद्दीन ने बढ़कर सियालकोट में अपनी छावनी स्थापित की। सन् ११८६ में शहाबुद्दीन ने फिर पञ्जाब पर चढ़ाई की और लाहौर को घेर लिया। ख़ुसरो मलिक शहाबुद्दीन का सामना करने की शक्ति तो नहीं रखता था परन्तु शहाबुद्दीन ने अपने काम को छल-कपट से और भी सुगम बना लिया। उसने ख़ुसरो मलिक को सन्धि की शर्तें निश्चित करने के लिए बुलाया और जैसे ही वह शहाबुद्दीन के शिविर में आया, उसे बन्दी बना लिया। ख़ुसरो मलिक के बन्दी बन जाने पर सारा ग़ज़नवी साम्राज्य शहाबुद्दीन के हाथ में आ गया। शहाबुद्दीन के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरदारों ने ख़ुसरो मलिक की राज्यसीमा से बढ़कर भटिण्डा पर धावा बोल दिया जो उस समय दिल्ली और अजमेर के चौहान शासक पृथ्वीराज के राज्य में था। पृथ्वीराज को ज्योंही इस आक्रमण की सूचना मिली, उन्होंने अपनी सेना की बाग सँभाली और अपने मित्र राजाओं को सहायता के लिए लिखा। अल्प-काल में ही एक भारी सेना एकत्र हो गई जिसको लेकर पृथ्वी-राज अजमेर से चल पड़े। मुहम्मद ग़ोरी उस समय (सन् ११९१) पञ्जाब में ही था। उसने पृथ्वीराज का मुक़ाबला करने की ठानी। करनाल के निकट तरावड़ी के स्थान पर दोनों सेनायें आमने-सामने हुईं। पृथ्वीराज के वीर सैनिकों ने ऐसे उत्साह से आक्रमण किया कि मुहम्मद ग़ोरी के सिपाहियों को भागते ही बना। स्वयं मुहम्मद भी घायल हो गया। एक सिपाही ने उसे मैदान में घायल पड़ा देखकर पहचान लिया और अपने घोड़े पर बिठाकर उसे मैदान से ले भागा। ग़ोर के सैनिकों ने रणभूमि से मुँह मोड़कर घोड़ों को ऐसी एड़ दी कि कहा जाता है कि उन्होंने तीस मील जाकर दम लिया। पृथ्वी-राज ने आगे बढ़कर भटिण्डा पर फिर अधिकार कर लिया।

शहाबुद्दीन ने ग़ोर लौटकर इस पराजय के धब्बे को धोने के लिए तैयारी आरम्भ कर दी। सन् ११९२ में वह हिन्दुस्तान लौटा। पेशावर तक उसने अपने साथियों को अपने उद्देश्य से परिचित नहीं किया। परन्तु यहाँ आकर उसने अपने उन सरदारों को उनके पिछले कार्यक्रम के लिए ख़ूब बुरा-भला कहा। उन्होंने लज्जित होकर इस बार पूरे उत्साह से काम लेने का वचन दिया। जब शहाबुद्दीन अपने पञ्जाबी इलाक़े से निकलकर पृथ्वीराज की सीमा में प्रविष्ट हुआ तब चौहान दूत ने उसे आगे बढ़ने से रोका और पिछली पराजय की याद दिलाकर उसे पञ्जाब तक रहने की ही सम्मति दी। उत्तर में शहाबुद्दीन ने अपनी विवशता प्रकट की और अपने भाई ग़यासुद्दीन से, जो वास्तव में ग़ोर राज्य का शासक था, सम्मति लेने की आपत्ति पेश की। पृथ्वी-राज धोखे में आ गये और उन्होंने लड़ाई का प्रबन्ध ढीला कर दिया। वे तरावड़ी तक आ चुके थे। उन्होंने वहीं डेरा डालना उचित समझा और ग़ोरी प्रदेश में हस्तक्षेप न किया। शहाबुद्दीन ने अपने सैनिकों को 'शबख़ून' के लिए उद्यत किया। पृथ्वीराज के दूत शहाबुद्दीन की सेना की गतिविधि की ख़बर न रख सके। प्रातःकाल भारतीय सैनिक अभी नित्यकर्म से निवृत्त भी न हो पाये थे कि शहाबुद्दीन ने चुपके से उन पर आक्रमण कर दिया। बहादुर राजपूतों ने जल्दी से सज-सजाकर उसकी सेना का सामना किया। शहाबुद्दीन ने अपनी सेना से कह रक्खा था कि वह कुछ देर लड़कर फिर इस ढङ्ग से पीछे हटे जिससे पृथ्वीराज को यह विदित हो कि पिछले वर्ष की तरह ग़ोरी सैनिक भागनेवाले हैं। फिर जैसे ही राजपूतों के समूह में भगोड़े ग़ोरी सिपाहियों का पीछा करने के लिए भगदड़ मच जाय, ग़ोरी सिपाही लौटकर उन पर धावा बोल दें। १२००० अश्वारोही शहाबुद्दीन ने अपने साथ रक्खे। दिन दो राजपूतों ने ग़ोरी सिपाहियों से ख़ूब जमकर लड़ाई की। संकेत पाते ही ग़ोरी सैनिकों ने पीछे भागना आरम्भ कर दि राजपूत प्रसन्न थे कि अब पौ बारह है। शत्रु को ले लि लेकिन उनके विस्मय की सीमा न रही जब ग़ोरी सिपाहि कुछ दूर जाकर फिर पाँव जमा दिये। उधर शहाबुद्दी १२००० नये सिपाहियों के साथ राजपूतों पर आक्रमण दिया। राजपूत घबरा गये। उनके दल छिन्न-भिन्न हो थे। दोनों ओर से शत्रु के पाश में आकर उनमें प्रत्या की शक्ति न रही। पृथ्वीराज रणभूमि में मारे गये और सेना ने पराजित होकर मैदान छोड़ दिया।

पर इस पराजय ने राजपूतों को निरुत्साह नहीं कि शहाबुद्दीन के हाथ तरावड़ी के आस-पास का ही प्रदेश आ दिल्ली तक पर उसका अधिकार न हो सका। वह पहुँ अजमेर तक, परन्तु वहाँ अपना शासन स्थापित करने का साहस न हुआ। पृथ्वीराज के पुत्र को अजमेर का अ धिकारी मानकर उससे कुछ कर लेना निश्चय करके वह गया। तरावड़ी में पृथ्वीराज के साथ जो अनेक पड़ोसी महाराजा थे, उन्होंने पृथ्वीराज की पराजय को अपनी नि पराजय नहीं समझा। कुछ काल के अनन्तर ही जाटों के दल ने गुजरात के राजा भीम के बूते पर हाँसी पर चढ़ा दी। मुहम्मद ग़ोरी उस समय हिन्दुस्तान में नहीं था। नायब क़ुतुबुद्दीन ऐबक़ ने जाटों से लोहा लिया और हराकर मेरठ को अपने अधीन कर लिया और फिर दि भी सन् ११९३ में अधिकार कर लिया।

सन् ११९४ में शहाबुद्दीन ने फिर भारत पर आ किया। तरावड़ी की विजय ने उसे अधिक सतर्क बना था। इस बार उसने क़न्नौज के राजा जयचन्द से लोहा का निश्चय किया। क़न्नौज पर आक्रमण किये बिना राज्य का पूर्व की ओर बढ़ना असंभव था। हमारे पा तथ्य पर विश्वास करने का कोई कारण नहीं है कि जयचन्द शहाबुद्दीन की इससे पहले भी कभी मुठभेड़ हो चुकी तरावड़ी की पहली लड़ाई में भी पृथ्वीराज की अध्यक्षता में राजाओं की सेना थी और दूसरी में भी परन्तु इस बात का पास कोई प्रमाण नहीं कि राजा जयचन्द उन राजाओं में थे। क़ुतुबुद्दीन ऐबक़ और मुहम्मद ग़ोरी के अधीन इ एक विशाल सेना थी जो संभवतः डेढ़-दो लाख के थी। फ़िरोज़ाबाद के स्थान पर जयचन्द ने ग़ोरी सामना किया। ख़ूब घमासान लड़ाई हुई। राजपूतों कौशल दिखाया कि ग़ोरी सेना के छक्के छूट गये। कि तरावड़ी की पहली लड़ाई की कहानी दुहराई जा मुसलमान भागने में ही कुशल समझते कि दुर्भाग्यव जयचन्द की आँख में तीर लगा जिससे उनकी मृत्यु हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके मरते ही राजपूतों के पाँव उखड़ गये और क़न्नौज पर शहाबुद्दीन ग़ोरी का अधिकार हो गया। ग़ोरी सेना काशी तक लूट-मार करती चली गई।

पृथ्वीराज को पराजित करने के बाद शहाबुद्दीन ने उसके चचेरे को अजमेर में करदाता बनाने पर ही बस की थी परन्तु जब मेरठ, दिल्ली, अलीगढ़ और हाँसी में राजपूत सिर उठाते रहे तब अजमेर में कब आराम से बैठनेवाले थे। पृथ्वीराज के भाई हेमराज ने अपने भतीजे को अजमेर से निकालकर वहाँ स्वयं स्वतन्त्र राज्य स्थापित कर लिया। अजमेर का राज्य पाते ही उसने दिल्ली को वापस लेने की कोशिश की और जाट राय की अध्यक्षता में एक विशाल सेना दिल्ली पर अधिकार जमाने के लिए भेजी। शहाबुद्दीन उस समय ग़ोर में था। कुतुबुद्दीन ऐबक़ ने हेमराज से लोहा लिया। दिल्ली पर राजपूतों का आक्रमण असफल रहा। कुतुबुद्दीन ने बढ़कर अजमेर पर चढ़ाई की। हेमराज पराजित हुआ और चिता पर चढ़कर जल मरा। कुतुबुद्दीन ने अजमेर अपने एक सरदार को सौंप दिया।

अजमेर के रहनेवाले आसानी से दबनेवाले नहीं थे। पृथ्वीराज और हेमराज की याद जल्दी भुलाई जानेवाली नहीं थी। दो वर्ष पश्चात् फिर मेडों ने यहाँ सिर उठाया और गुजरात के राजा भीम की सहायता से अजमेर में स्वतन्त्रता का झण्डा ऊँचा किया। कुतुबुद्दीन ऐबक़ ने नगर से बाहर निकलकर उनका सामना किया पर मेडों ने इस साहस और स्फूर्ति से आक्रमण किया कि उसको उनका लोहा मानना पड़ा। दूसरे दिन राजा भीम की सेना भी मेड़ों के साथ आ मिली। अब कुतुबुद्दीन को शहर में आश्रय लेते ही बना। उसके भाग्य से राजपूती शिविर में यह गप्प उड़ गई कि शहाबुद्दीन ग़ोरी सेना लेकर अजमेर को बचाने आ रहा है। अब तो राजपूत घबराये। वे दोनों सेनाओं से घिर जाने का भय दिखाई दिया इसलिए अजमेर के घेरे को उठाकर वहाँ से चल दिये।

मुहम्मद ग़ोरी ने गुजरात पर सबसे पहले सन् ११७८ में चढ़ाई की थी। सोमनाथ की लूटमार के कारण मुसलमानों के दिल में गुजरात के विजय का भाव बना रहा था। वैसे भी कच्छ को जीतने के बाद शहाबुद्दीन ने समझा था कि गुजरात को जीत लेना बायें हाथ का खेल होगा। सिन्ध के मरुस्थल से होते हुए शहाबुद्दीन और उसके साथी गुजरात की राजधानी अनहिलवाड़ा में पहुँचे। राजा भीम उनका स्वागत करने के लिए तैयार बैठा था। जैसे ही ग़ोरी सेना सामने आई, उसने उसको ऐसे आड़े हाथों लिया कि उसको भागते ही बना। ग़ोर बहुत दूर था। वापसी मार्ग वनों और उजाड़ मरुस्थलों में से होकर जाता था। जहाँ खाने-पीने के सामान की कमी थी वहाँ पेड़ों और सिपाहियों को आराम कहाँ? हज़ारों सिपाही मार्ग में ही भूख और प्यास के कारण मर गये। यह चढ़ाई आक्रमणकारियों को ऐसी महँगी पड़ी कि पन्द्रह वर्ष उस ओर किसी ने रुख़ नहीं किया।

राजा भीम का राज्य गुजरात तक ही न था। दूर-निकट के कई प्रदेश उसके साम्राज्य के अन्तर्गत थे। आक्रमणकारियों ने गुजरात पर आक्रमण करने से त्राहि-त्राहि की, पर जैसे ही तरावड़ी की दूसरी लड़ाई के पश्चात् ग़ोरी राज्य ने उत्तर भारत में पैर जमाने की ठानी, भीम ने उनके विरुद्ध युद्ध में भाग लेना अपना कर्तव्य समझा। दिल्ली गुजरात से थी तो दूर परन्तु राजा भीम का प्रभाव-क्षेत्र हरियाना के जाटों तक था। जब राजा जाटवान ने आक्रमणकारियों का सामना करने का निश्चय किया तब भीम ने उसकी सहायता के लिए सेना भेजी। इन मिलित सेनाओं ने सन् ११९२ में हाँसी पर चढ़ाई की। ग़ोरी हाकिम खुली रणभूमि में सामना करने की हिम्मत न करके क़िले में छिप रहा। जाटों ने फिर भी पीछा न छोड़ा। दुर्ग घेर लिया गया। यद्यपि दुर्ग को वे जीत न सके फिर भी नये शासकों के प्रभाव को इस आमक्रण से बहुत धक्का लगा।

जब सन् ११९४ में अजमेर के लोगों ने सिर उठाया तब भी उस स्वातन्त्र्य युद्ध में भीम का हाथ काम कर रहा था। हेमराज चौहान का सबसे बड़ा साथी जाट राय राजा भीम का अधीनस्थ जाटवान ही विदित होता है। अजमेर जीत लेने के पश्चात् कुतुबुद्दीन ऐबक़ ने सन् ११९५ में गुजरात पर आक्रमण करने का निश्चय किया। राजा भीम ने गुजरात में रहकर शत्रु का मुक़ाबला करने पर ही बस नहीं की अपितु अपने सेनापति कुँवर पाल को सेना देकर ऐबक़ का सामना करने के लिए भेजा। कुँवर पाल हार गया और ऐबक़ ने अनहिलवाड़ा पहुँचकर वहाँ लूट-खसोट मचा दी। भीम भी आसानी से वश में होने वाला नहीं था। वह जानता था कि ग़ोरी सेना के लिए गुजरात पर अधिकार जमाना आसान नहीं है और न वह गुजरात में अधिक देर ठहर ही सकती है। वह कतराकर एक ओर निकल गया। कुतुबुद्दीन अनहिलवाड़ा में प्रतीक्षा करता रहा कि भीम आकर अधीनता स्वीकार करे और अधिक नहीं तो थोड़ी-बहुत 'नज़र' देकर ही छुटकारा पाये। परन्तु राजा भीम अधीनता स्वीकार करनेवाला नहीं था। कुतुबुद्दीन थोड़े दिन वहाँ ठहरकर लौट गया। गुजरात ने दिल्ली के नये हाकिमों की अधीनता स्वीकार नहीं की।

शहाबुद्दीन के एक और सरदार बख़्तियार ख़िलजी ने पहले तो बिहार जीत लिया फिर वहाँ से बङ्गाल पर आक्रमण कर दिया। राजा लक्ष्मण सेन अपनी राजधानी लखनौती में बैठा शत्रुओं की प्रतीक्षा करता रहा। वह अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् पैदा हुआ था। कहा जाता है कि ज्योतिषियों के कथनानुसार उसका जन्म शुभ मुहूर्त्त में करने के लिए जन्म को कुछ देर के लिए रोक दिया गया था। फल यह हुआ कि शुभ घड़ी आने पर ज्योंही उसका जन्म हुआ त्योंही माता का स्वर्गवास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गया। इस समय वह बूढ़ा हो चुका था। जिन ज्योतिषियों के कारण उसकी माता के प्राण गये थे, उनके वंशज अब भी वर्तमान थे। उन्होंने जैसे ही विहार के विजय की सूचना सुनी, भविष्यवाणियाँ करना प्रारम्भ कर दिया। फल यह हुआ कि लोगों ने विश्वास कर लिया कि बख़्तियार का मुक़ाबला करना व्यर्थ है, क्योंकि बङ्गाल की विजय निश्चित है। उनके इस दुहाई देने से कहा जाता है कि सारी राजधानी और आस-पास का सारा प्रदेश ख़ाली हो गया था। जो कुछ सैनिक वहाँ व्यापारियों के वेश में प्रविष्ट हुए उन्हें और राजा लक्ष्मण सेन को भी ज्योतिषियों ने भागकर जान बचाने का उपदेश दिया। अब की बार लक्ष्मण सेन ने उनकी शिक्षा ग्रहण की परन्तु निकट ही विक्रमपुर में जाकर बैठ गया जहाँ वह और उसके उत्तराधिकारी कुछ काल तक बङ्गाल के स्वतन्त्र भाग पर राज्य करते रहे।

यह १२०२ की बात है। बख़्तियार ख़िलजी ने १२०५ में अपना प्रभावक्षेत्र फैलाने का निश्चय किया। एक मगराजा के भरोसे पर, जो मुसलमान हो चुका था, उसने कामरूप के मार्ग से निकट के पहाड़ी प्रदेश पर आक्रमण करने की ठानी। देवकोट से वह आगे बढ़ा तो एक बड़ी नदी सामने पाई जिसे पार करने का कोई सामान साथ नहीं था। वह नदी के किनारे-किनारे चला। कुछ दिनों बाद एक पत्थर का पुल मिला। उसी से उसने नदी पार की। फिर पुल की रक्षा के लिए कुछ सैनिकों को नियुक्त करके वह स्वयं आगे बढ़ा। प्रदेश पहाड़ी था। कई दिन की यात्रा के पश्चात् उसे एक नगर मिला जिसमें एक दुर्ग था। बिना किसी प्रत्याक्रमण के आगे बढ़ने-वाले आक्रमणकारी बहुत ही प्रसन्न हुए कि अब मारकाट की बारी आई। परन्तु जैसे ही बख़्तियार ख़िलजी ने दुर्ग को घेरा, नागरिकों ने पीछे से आक्रमण करके उसे तङ्ग करना प्रारम्भ कर दिया। सन्ध्या से पूर्व ही आक्रमणकारियों के छक्के छूट गये। रात को सूचना मिली कि पास के एक नगर से एक बड़ी भारी सेना शहरवालों की सहायता को आ रही है। अब तो बख़्तियार ख़िलजी घबराया। परन्तु अब भागना भी कठिन हो गया। मार्ग की खेतियाँ किसानों ने उजाड़ डाली थीं। मार्ग दुर्गम बना दिये गये थे। नगर वीरान कर दिये गये थे जिससे बख़्तियार ख़िलजी को रसद न मिल सके। मरते-खपते उसके सैनिक जब पुल पर पहुँचे तब देखा कि जिस सैनिक दल को पुल की रक्षा के लिए नियुक्त किया था, वह लुप्त था। पुल वहाँ के निवासियों ने तोड़ डाला था। दूर या निकट नदी को पार करने का कहीं कोई उपाय न था। कामरूप के राजा ने अपने देश की विजय का प्रतिशोध लेना उचित समझा और उसकी सेना पर आक्रमण कर दिया। बख़्तियार जब लखनौती लौटा तब केवल सौ अश्वारोही उसके साथ थे। शेष ९९०० सैनिक उसकी मूढ़ भावना की भेंट चढ़ गये थे।

दूसरे स्थानों पर भी दिल्ली के इन नये हाकिमों को चैन से नहीं बैठने दिया। क़न्नौज, काशी और मेरठ दिल्ली की सेना का अधिकार था परन्तु महोबा के चन्देल स्व थे। १२०२ में क़ुतुबुद्दीन ने उन पर चढ़ाई की। परमाल हार गया। उसने दिल्ली की अधीनता स्वीकार ली। साथ ही कर देना भी स्वीकार कर लिया। दिल्ली की सेनाएँ कर लेने के लिए कालिंजर में ही ठहरी कि किसी स्वाभिमानी चन्देल ने परमाल को मृत्यु के घाट दिया। उसके मन्त्री अजयदेव ने कर देने से इनकार दिया और कालिंजर दुर्ग में जा बैठा। क़ुतुबुद्दीन ने घेर लिया। जिस स्रोत से दुर्ग-निवासी पानी लेते थे, वह से सूख गया। उससे पहले किसी ने उस स्रोत को सूखा देखा था। प्यासे मरते राजपूतों ने सन्धि करनी ही समझी परन्तु क़ुतुबुद्दीन के क्रोध का पारा अब बढ़ चुका सहस्रों मनुष्यों को मौत के घाट उतार दिया गया। नगर दिनों तक मारकाट होती रही और महोबा जीत लिया

१२०५ में शहाबुद्दीन के मरने की ख़बर भारत में फैल कोहिस्तान का राजा इससे पहले विधर्मी बन चुका था, अ फिर हिन्दूधर्म में दीक्षित हो गया। उसने मुलतान पर मण कर दिया। ग़ोरी हाकिम हारकर भाग गया। वहाँ से लाहौर आ धमके और वहाँ ख़ूब लूट-खसोट मचा सारे पञ्जाब में हलचल मच गई। खक्खरों को दण्ड लिए शहाबुद्दीन ने स्वयं पञ्जाब आना उचित समझा। ने जमकर उसका सामना किया। सम्भव था कि शहा के पाँव उखड़ जाते परन्तु क़ुतुबुद्दीन की ताज़ी सेना ने चित्र ही बदल दिया और खक्खरों की पराजय हुई।

इसी विजय के पश्चात् १२०६ में शहाबुद्दीन ग़ोर लौट था जब कि किसी खक्खर ने उसे क़त्ल करके अपने देश विजय का प्रतिशोध लिया।

शहाबुद्दीन ३१ वर्ष भारत पर आक्रमण करने में रहा। इस काल में उसने अथवा उसके सरदारों ने मु कोहिस्तान नमक, पञ्जाब, द्वाबा, बिहार और बङ्गाल भाग जीत लिया। पश्चिम की ओर ग़ोरी सेनायें अज भी अधिकार किये बैठी थीं। जहाँ कहीं वह गया, राजाओं ने जमकर उससे लोहा लिया। एक उच्छ जहाँ घर में ही राजा-रानी में फूट पैदा हो गई थी और स्थान पर पारस्परिक वैमनस्य दिखाई नहीं दिया। इसके तरावडी और अजमेर पर कई बार राजाओं ने मिलकर सामना किया। दूर एवं निकट के सभी राजाओं ने आक्रमणकारियों को बाहर निकालने का प्रण करके आक्रमण किये। हाकिमों और जनता ने भी आसानी से स्वीकार नहीं की। दिल्ली, लाहौर, हाँसी और अजमेर बार जीतना पड़ा। कालिंजर और कामरूप में विद्रोह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई। बङ्गाल के उत्तरीय पहाड़ों में तो बख़्तियार ख़िलजी वह गति हुई कि उसे लखनौती में मुँह दिखाना दूभर हो । शहाबुद्दीन की मृत्यु भी लाहौर और पञ्जाब को दूसरी जीतने में ही हुई।

उपर्युक्त विवरण के पश्चात् यह कहना कि उत्तरी-भारत का भाग शहाबुद्दीन के हाथ आया वह सुगमता से जीत लिया , भूल होगी। न तो शहाबुद्दीन हर मुहिम में विजयी हुआ न उसकी असाधारण सैन्यशक्ति ने लोगों के हृदय पर सिक्का जमाया कि जहाँ कहीं वह गया उसके सामने ने सिर झुका लिये। उस इंच-इंच भूमि के लिए लड़ना था। बिहार और बङ्गाल की गणना उसके द्वारा विजित ों में की जाती है परन्तु यह कहना कठिन है कि इस भाग में का शासन कहाँ तक चलता था। जब दुआब को जीतने के दिल्ली, हाँसी, कालिञ्जर, मेरठ, कोइल, महोबा और बयाना ड़ना पड़ा तो यह कठिन ही नहीं अपितु असंभव भी दीखता बख़्तियार ख़िलजी की एक आध सेना ने ही सारे बङ्गाल बिहार पर ग़ोरी वंश का राज्य स्थापित किया हो। लक्ष्मण के उत्तराधिकारी मुद्दतों ढाका के निकट शासन करते रहे।

शहाबुद्दीन की विजय के कारण युद्धों के उस वर्णन में ढूँढ़े सकते हैं जो हम ऊपर दे आये हैं। तरावड़ी की दूसरी लड़ाई हाबुद्दीन की विजय के विशिष्ट कारण उसकी चिट्ठी-पत्री सूचना में छल-कपट तथा रणभूमि में लड़ाई की (धोखे निर्भर) नई विधियाँ थीं। इसी प्रकार की विधियाँ उसने भीम के साथ आबू के समीप लड़ते समय प्रयोग की थीं। भागने का बहाना करके राजपूत सैनिकों को उनके सुरक्षित वरों से निकालकर खुले मैदान में लड़ने पर विवश कर दिया। मण सेन पर आक्रमण करते समय भी छल-कपट से ही तयार ख़िलजी के सैनिक व्यापारियों के भेस में नदिया में हुए और अपने साथियों के लिए नगर के द्वार खोलने धन बने। हमारे अन्ध विश्वास ने भी बख़्तियार ख़िलजी के बङ्गाल की विजय आसान कर दी। नदिया के बहुत से रिक इस कारण नगर छोड़ गये थे क्योंकि ज्योतिषियों ने ाया था कि निकट भविष्य में नगर तुर्कों के हाथ जायगा। वार की लड़ाई में जयचन्द की आकस्मिक मृत्यु ने युद्ध चित्र ही पलट दिया और क़न्नौजी फ़ौज की विजय को पराजय रिणत कर दिया। कालिञ्जर के घेरे के समय भी दुर्ग के का पानी सूख गया था यद्यपि यह प्रायः समझा जाता था वहाँ पानी का एक अजस्र स्रोत है। इन सारी बातों के यह भी मानना पड़ेगा कि शहाबुद्दीन स्वयं एक योग्य पति था जो युद्ध की नई विधियाँ लेकर भारत में हुआ। युद्धनीति और विविध उपायों ने उसकी विजय आसान बना दिया। एक-दो लड़ाइयों में शहाबुद्दीन की भी विपक्ष की सेना से अधिक थी। खक्खरों के विरुद्ध अन्तिम लड़ाई में खक्खर न केवल दो ओर से पकड़े गये अपितु ऐबक़ और शहाबुद्दीन की सेनाओं की संख्या खक्खर सेना से कहीं अधिक थी। ग़ोरी सैनिक किसी दशा में राजपूत योद्धाओं की अपेक्षा अधिक बहादुर नहीं थे। हाँ, संभव है उनके घोड़े अधिक अच्छे हों।

बग़दाद के ख़लीफ़ा की आज्ञा से ७१२ में मुहम्मद बिन क़ासिम ने सिन्ध पर आक्रमण किया। १२१० में दिल्ली उत्तर भारत के मुसलमान शासकों की राजधानी बनी। दिल्ली के इस राज्य के अधीन लगभग आधा उत्तर भारत था। काश्मीर और जम्मू, वर्तमान होशियारपुर, काँगड़ा, गुरुदासपुर और शिमला के ज़िलों का बृहत्तर भाग, गुजरात, समस्त राजपूताना केवल अजमेर को छोड़कर, ग्वालियर को छोड़ सारा मध्य भारत, पूर्वीय बङ्गाल और उड़ीसा, यह सब भाग उस समय भी दिल्ली के हाकिमों के अधीन न था। इस तरह आधे से कम उत्तर भारत की विजय में पाँच सौ वर्ष लग गये। यह ठीक है कि इस सारे समय में भारत पर क्रमबद्ध आक्रमण नहीं होते रहे। परन्तु ढाई सौ वर्ष के लगभग भारत का इन आक्रमणों से बचा रहना इस बात का प्रमाण है कि मुसलमान विजेताओं को अन्य स्थानों,—मेसोपोटेमिया, मिस्र, मराको और स्पेन में आसानी से विजय मिल रही थी जिसके कारण वे भारत के स्थान पर पश्चिम को रुख़ किये रहे। सुबुक्तग़ीन और जयपाल में युद्ध छिड़ने के पश्चात् भी उत्तर भारत का आधा भाग लगभग ढाई सौ वर्ष में विजित हुआ। इन तिथियों को दृष्टि में रखते हुए यह कहना भूल होगी कि मुसलमानों ने भारत को सुविधा से और अत्यल्प काल में जीत लिया। ये आक्रमण न तो अनिवार्य थे और न अटल ही। आक्रमणकारी अपने धार्मिक सिद्धांतों के सहारे नहीं जीते। हाँ, इस्लामी उत्साह और स्फूर्ति ने लड़ाकू बादशाहों के लिए उनके साम्राज्य की वृद्धि के लिए असंख्य सैनिक प्रस्तुत अवश्य किये। उस समय की रणनीति के अनुसार लूट-खसोट और बन्दी बनाने के क्रम ने भी न केवल बादशाहों को ललचाया अपितु उनके सैनिकों के लिए भी धर्मान्धता और स्वार्थ-परायणता को एक समान कर दिया। आक्रमणकारियों में समझदारी की इतनी कमी थी कि वे एक-आध मूर्ति को तोड़ने और किसी मन्दिर को ध्वस्त कर डालने में ही यह समझ लेते थे कि उनके लिए स्वर्ग के कपाट खुल गये हैं। इस प्रकार धर्म और स्वार्थ की साथ-साथ प्राप्ति देखकर मध्य-एशिया से सहस्रों सैनिक ग़ोरी के झण्डे के नीचे आ गये थे। यह निर्णय करना बहुत कठिन होगा कि इन आक्रमणकारियों ने अथवा इनके आक्रमणों ने इस्लाम की कितनी सेवा की। दो-चार स्थानों पर तो आक्रमणकारियों की चमकती तलवारें शासक-कुल के धर्म-परिवर्तन का कारण बनीं; परन्तु ऐसे आक्रमणों से इस्लाम को लूट-खसोट और क्रूर काण्ड का पक्षपाती बनाकर ये आक्रमणकारी इस्लाम के वैरी ही सिद्ध हुए। वे ही साधन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो हिन्दुस्तान से बाहर बहुत लाभप्रद सिद्ध हुए, भारत में आकर व्यर्थ होकर रह गये।

दिल्ली के इस नये शासन को मुसलमान राज्य समझना अथवा भारतीय इतिहास के इस काल को इस्लामी काल कहना भी विद्वत्ता से कोसों दूर है। दिल्ली के नये शासक ख़लीफ़ाओं के अनुयायी तो बने परन्तु दो-चार बातों को छोड़कर उन्हें भारत में अपना राज्यविधान भारतीय नींव तथा भारतीय सिद्धान्तों पर ही आधारित करना पड़ा। वे बादशाह कहने को अवश्य मुसलमान थे परन्तु उनका शासन-विधान और व्यक्तिगत जीवन इस्लाम के उपयुक्त अथवा सफल नमूने नहीं माने जा सकते। मराको, फ़ारस और अफ़ग़ानिस्तान को जीतकर मुसलमान विजेताओं ने वहाँ मुसलमान काल का आरम्भ परन्तु भारत की प्रचुर जनसंख्या मुसलमान नहीं बन सकी थोड़े-बहुत मुसलमान बने वे भी हिन्दुओं के सामाजिक और प्रथाओं के अधीन रहे। हिन्दुओं के अपने न्याय और अपना क़ानून था। अभिप्राय यह है कि इस प्रसार भारत में मुसलमान शासकों के कारण सम्भव तो हुआ सर्वसाधारण रूप में उनके शासन ने भारत के धर्म अधिक प्रभाव नहीं डाला। इस स्थिति में यह कहना उचित होगा कि दिल्ली में मुसलमान राजाओं के शासन इस्लाम के इतिहास में भारतीय अध्याय आरम्भ होता के इतिहास में मुसलमानी काल नहीं।

अतीत-स्मरण

श्रीयुत रजनी-रजनी-रामनाथ

इस समय पूर्ण युवक हूँ। घर है, घरनी है, और एक-दो जीवित खिलौने भी हैं। माँ-बाप, भैया-भतीजे, भाभियाँ-बहनें सभी से यथाविधि सम्पन्न हूँ। व्यावहारिक सफलताओं के साथ प्राकृतिक सफलतायें भी एक हो गई हैं। सुनहरी आकांक्षाओं से भविष्य रङ्गीन है। आस-पास के सभी दृश्य सजीले हो उठे हैं। कहीं विकृति नहीं, कहीं असन्तोष नहीं। सभी जैसे यौवन की मधुर व्यञ्जना के सहवास में कल्याण को स्वतःसिद्ध मानकर, निःसंशय मस्ती में झूम-झूमकर आनन्द के राग अलाप रहे हैं। सारा जीवन जैसे एक अनिर्वचनीय देदीप्यमान आलोक से उज्ज्वल हो गया है।

पक्का व्यवहारी हूँ। पैसों को ठीक ठोंक-बजाकर, नोटों के मध्य के सफ़ेद स्थान में 'किंग एम्परर' की प्रतिकृति को भली भाँति देखकर, हिसाब के अनुसार नाप-जोखकर, जैसी-तैसी वस्तुयें ग्राहकों को देता हूँ। क्योंकि संभ्रम में यदि अधिक चली जाय तो कई पैसों की हानि और बच जाय तो कई पैसों का लाभ सदा सामने ही रहता है।

प्रातःकाल घर से विदा लेता हूँ और जब सन्ध्या को दुकान के नीरस व्यवहार से थककर घर आता हूँ तब बच्चे आकर साधिकार घुटनों से लिपट जाते हैं; उँगली पकड़कर खींचते हैं और बिना किसी हिचक के मेरे कपड़ों को चीर-फाड़ डालने का उपक्रम करने लगते हैं। इस अनायास आयास में बेहया कपड़े चाहे न फटें पर उनके ऊपर भूरि-धूलि-मलिन बच्चों के असाधारण उपद्रव की यत्र-तत्र छाप अवश्य रह जाती है। गृहान्तर में बैठी हुई सहवासिनी की चमकती उत्सुक आँखें जैसे छलक-छलककर मुझे पी जाना चाहती हैं। प्रसन्नता के अतिरेक से हलकी सिहरन के साथ हृदय में गुदगुदी-सी होने लगती उस मौन सहज-स्नेह-स्मिति-मुखर स्वागत से मेरे अन्दर माधुर्य नहीं भर जाता।

रात को चाँदनी खिलखिलाती है। तारे 'चोर-चोर' हैं। मान-मनौवल होती है। वसुन्धरा निःस्तब्ध निशा के अन्धकार में किसी का स्पर्श-सुख लूटती है। किसी के निःश्वासों के झकोरों से प्रकम्पित सिहरता-सा खिसका करता है। सारा बहिर्जगत् और अन्तर्जगत् बेसुध को छाती से चिपटा कर जीवन के प्याले पर प्या का उपक्रम करता है। नीरवता का राज्य है जिसमें अ ही आशङ्कित होकर कभी नासमझी के कारण कुत्ते अत्यन्त समझदारी के कारण पहरुए जब-तब भूक उ यह सुख-स्वप्नों में बाधा डाल देता है और हृदय को है। युवती स्त्री अपना सारा मादक-मधु बटोरे तृषित घुटनों के पास बैठी, मेरी ओर देखा करती है। उस अ वर्णन करना भी अपमान-सा है।

जीवन में कहीं जैसे कोई रहस्य नहीं। सब कुछ अनावृत—खुला-सा है। सब कुछ सहज ही समझ जाता है। न प्रकृति में कोई उपद्रव है, न हृदय में कोई

सभी आशायें पल्लवित हो रही हैं। धन-धान्य से यशो-विद्या से अलंकृत, गण्य-मान्य कुलीन गृहस्थ हूँ की गम्भीर मन्त्रणाओं में भी जब तब स्थान पा घर में स्नेह है, ससुराल में आदर है और नगर-नि अवज्ञा नहीं करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारांश यह कि पूर्ण सुखी, स्वस्थ, सद्गृहस्थ हूँ। सभी आवश्यकतायें किसी न किसी रूप में पूर्ण ही हैं। माँ कहती हैं गृहस्थी में कहीं कमी नहीं और इस सुदिन के लिए भगवान् भी आशीर्वाद दिया करती हैं। भाभियाँ मीठे उलहने देती हैं। परिणीता प्यार देती है और बेटे-भतीजे प्रायः अपने से दिक़ कर समय को और भी अधिक मधुर बना देते हैं। सभी अपना-अपना भाग्य सराहते हैं। कभी-कभी एक दूर से, प्यारी बहन सुमन, सोल्लास, साभिलाष आकर अपने सहज मीठी हँसी और प्यारी बातों से घर को और भी अधिक सजा देती है तो वह भी सहर्ष यही कहती है भैया की गृहस्थी संपूर्ण है। फिर कुछ दिनों के बाद ही आँखों में आँसू-अपने सुन्ने को सँभाले, उसी दूर-देश को जाने के लिए घर से सर्वथा ओझल हो जाती है। हलका-सा दुःख का आता है, सुमन वह पुरानी 'सोमा' नहीं रही। पर यह —कर्तव्य की आँच, पत्नी की सतर्कता, भैया-भाभी के स्नेह और बच्चों की मूर्खता-भरी माँगों से—शीघ्र ही समाप्त जाता है।

किन्तु इस सर्वांग-पूर्ण सुख-सहानुभूति के मध्य भी मुझे बचपन के वे थोड़े से संस्मरण नहीं भूलते जो 'सोमा' के साथ थे। वे पत्थर की लकीर बनकर दिमाग़ के बड़े भारी पत्थर पर अमर हो गये हैं। एक-एक स्मरण जब तब एकान्त में या लोगों के मध्य में, हृदय में एक विरहित माधुर्य भर देता है। नहीं है कि सोमा की वह बचपन की अबोध सहानुभूति इस समय महान् सुख-स्नेह में भी कहीं नहीं पाता हूँ। सुमन क्षमा उसमें भी अब वह स्निग्धता नहीं है। कार्य की कसौटी पर कुछ स्नेह निर्भर है। जब-तब शान्त समुद्र में पवनान्दोलित के सामने स्मृतियाँ विक्षुब्ध हो उठती हैं जिन्हें सहेज-सहेज-चुप कराना ही होता है। वह अतीत का चित्र और भविष्य नहरी है। अच्छा!

(२)

सुमन को सब सोमा नाम से ही पुकारते थे इसलिए मैं भी इसी नाम से पुकारता था और वह मुझे भैया कहती। किन्तु कभी, सोमा के कहना न मानने पर, अपने कुछ चिढ़ जाने अथवा दोनों में कुट्टी हो जाने पर मैं उसे 'सुमिया भंगन, या धोबन' कह देता। सोमा भी कम नहीं थी। वह मेरे न और दण्ड-प्रयोग का सर्वथा अनादर कर बुदबुदा उठती भैया!' बाल्य-मति के निर्णय के अनुसार गद्धा शब्द भङ्गन धिक बुरा था। मैं गुस्से से कहता 'तूने गद्धा क्यों कहा?' ही उत्तर मिलता 'तूने भङ्गन क्यों कहा?' मैं झुँझला कर —'मैंने गद्धा कब कहा?' झट सोमा कह देती—'मैं नहीं ?' इतना अपमान। छोटा-सा महाभारत मच जाता। और निर्बल होने के कारण पिट-कुटकर, सोमा रोती हुई (माँ) की शरण लेती। फल यह होता कि मुझे फटकार सुननी पड़ती। तदनन्तर शीघ्र ही मेल हो जाता, क्योंकि पाँसा बराबर हो जाता। सोमा पिटती और मुझ पर बीबी की फटकार पड़ती। हाँ जिस दिन बीबी रोष में आकर 'छिन भर भी चैन नहीं लेने देंगे' कहकर मुझे मार बैठतीं उस दिन मेल होने में अवश्य थोड़ी-बहुत अड़चन आ जाती। कभी-कभी बीबी पीस-छान रही होती थीं। सोमा के क्रन्दन से बाधा पड़ने पर उसी पर बलबला पड़तीं—'मुँहजली! तू ही घर में क्यों नहीं बैठती!' तब मुझे बहुत बुरा लगता। मैं मारता हूँ तो क्या! बीबी उस बेचारी को क्यों मारती हैं! मैं सोमा को हाथ पकड़कर भगा लाता। इसके परिणाम-स्वरूप कभी-कभी मेरी पीठ और गाल भी लाल हो जाते।

बहुत बार ऐसा भी हुआ है कि हम दोनों कोई ब्याह देख-कर चले आ रहे हैं। दोनों को कुतूहल है। दोनों को ही इसमें काफ़ी आनन्द आया है। तब सोमा कह उठती, 'एक खेल खेलें।' 'कौन-सा' मैं पूछता। सोमा कहती 'वही जो मनिया के घर देखा था—दुल्हा-दुलहिन का।' मैं भी प्रसन्न हो जाता। 'यहीं पर खेलेगी?' 'और क्या!' सोमा कहती—'तू दुल्हा मैं दुलहिन।' शीघ्र ही एक निरर्थक परम सन्तोष-जनक खेल होने लगता।

पर भटकूँगा नहीं। कथनीय ही कहूँगा।

अब तो घर बदल लिया है पर पहले जिस घर में रहते थे उसमें घुसने से पहले ही तुम्हें एक छोटा-सा मन्दिर और उसके सामने एक कुआँ दिखाई देगा। कुएँ से घर में पानी आता और मन्दिर में रोज़ बीबी पूजा करने जातीं। कभी यदि बूढ़ी दादी को भी उमङ्ग उठती तो मुझे या सोमा को फूल-पत्ते और रोली-चावल लेकर साथ-साथ जाना पड़ता।

घर के आगे काफ़ी आँगन है जो लाल ईंटों का है। तीन ओर ऊँचे-ऊँचे मकान और एक ओर उपर्युक्त कुआँ और मन्दिर। आसपास के बालकों का यह क्रीड़ा-स्थल है। मेरे जैसे लगभग सभी वहाँ खेलने आते हैं। मकानों के दरवाज़े, आसपास की दीवारें और मन्दिर भी हमारे खेल से अछूते नहीं रहते। 'चोर-चोर' में वे हमें ओट में ले लिया करते थे, उसी प्रकार जिस प्रकार बीबी कभी ओढ़नी उढ़ाकर हमें औरों से अदृश्य कर देती थी।

अमिया और गंगो दोनों पड़ोस में रहते थे। कहा नहीं जा सकता कि बचपन के वे साथी इस समय कहाँ हैं। उन्होंने भी वह मकान छोड़ दिया है। कदाचित् अमिया अंबाप्रसाद बन-कर, परिवार की चिन्ताओं से दबा हुआ किसी छोटी-सी दुकान में भाग्य को तौल रहा होगा या कहीं दफ़्तरगीरी में घुट रहा होगा और गंगादेवी बहू बनकर पति के अनुशासन और तिरस्कार-भरे प्यार के सागर में चूल्हे-चक्की में पिस रही होगी और झुँझला-झुँझलाकर, अनन्योपाय होकर बच्चों का अत्याचार सहा करती होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं और सोमा अपने इस द्वित्व में ही पूर्ण थे अर्थात् हम लोगों को खेलने के लिए तीसरे की आवश्यकता नहीं होती थी। दोनों की ख़ूब बनती थी। पर गंगो और अमिया अकेले नहीं खेल सकते थे। उनका कोई खेल हमारे बिना पूरा नहीं होता था। वे प्रायः प्रतिदिन ही आग्रह करके, बिनती चिरौरी करके अथवा ज़बरदस्ती करके हमारे खेल में घुस आया करते थे।

जैसे कुछ ही दिन की बात हो।

साँझ का समय था। धूप मैदान को छोड़कर मकानों के ऊपर चढ़ गई थी। गर्मी थी नहीं। हम दोनों कुएँ की जगत पर बाहर की ओर मुँह किये पैर लटकाये किसी तर्क में तल्लीन थे। बातों में बड़ा रस आ रहा था। तभी गंगो और अमिया आ गये। गंगो की मुझसे अधिक बनती थी और अमिया की सोमा से। गंगो ने मेरे पास आकर कहा—'खेलोगे नहीं आज ?'

'सोमा के साथ खेलूँगा' मैंने कह दिया।

अमिया ने सोमा से कहा—'खेलेगी नहीं ?'

'मैं तो भैया के साथ खेलूँगी।' सोमा ने भी कह दिया।

दोनों हमारी इस आदत से परिचित थे। बिनती करते हुए बड़े करुण स्वर में बोले—'किस्सन खिला ले न।'

'नहीं भैया ! तुम लड़ते हो।' सोमा ने कह दिया।

'अब नहीं लड़ेंगे।' दोनों बोल उठे।

'ना भैया !' मैंने जैसे निर्णय कर दिया।

दोनों रूठ गये। क्रोध में भरकर गंगो बोली—'मत खेलो। हम ख़ुद खेल लेंगे।'

अमिया—'हमारी तुम्हारी कुट्टी।'

'कुट्टी।' हम दोनों ने दाँत छूकर कहा।

कुट्टी हो गई। पर इसका यह अभिप्राय नहीं कि झगड़ा समाप्त हो गया अपितु वह तो अब आरम्भ हुआ था।

दोनों खेले नहीं। वहीं खड़े रहे। हम बातें करते तो गंगो चिल्लाने लगती। उठकर जाते तो पीछे जाती। खेलते तो अमिया बीच में आसन जमा लेता। टोकने पर कहता—'ज़मीन तुम्हारी थोड़े ही है।'

फल यह हुआ कि मार-पीट हो गई। किन्तु इससे वैर बढ़ा नहीं अपितु वह समाप्त हो गया और हम चारों खेलने को सन्नद्ध हो गये।

'चोर-चोर' खेलने का निश्चय हुआ। पर चोर बनना कोई नहीं चाहता था।

गंगो तुनककर बोली—'मैं तो चोर नहीं बनती।'

अमिया को तो जैसे चोर से कोई मतलब ही नहीं था।

सोमा बेतरह नाराज़ हो उठी—'मैं चोर क्यों ?'

मुझे यदि तब किसी बात से डर लगता था तो सोमा की इस नाराज़ी से ही। यदि तब उसकी बात नहीं रक्खी जाती थी तो वह दो-दो दिन तक मुँह फुलाये रहती और मैं उस बचपन में भी अतिशय व्याकुल हो उठता। हारकर मुझे ही चोर बनना पड़ा।

और तो सब पकड़ाई में आ गये पर गंगो का [illegible] था। सोमा और अमिया मिलकर चिढ़ा रहे थे—'हार गये, कुत्ते का मुँह चाट गये।' झुँझलाहट तो [illegible] थी पर बस नहीं था। चोर को गंगा ढूँढ़नी ही थी। [illegible] गई, गंगो जैसे कहीं समा ही गई। बहुत परेशान देख[illegible] ने चुपचाप मन्दिर की ओर इशारा कर दिया।

इतना बहुत था। मन्दिर के अन्दर घुसा। [illegible] दरवाज़े से भागी। मैं पास था, अवसर कम था। [illegible] कर उसने कुएँ की जगत पर से होकर भागना चाहा। [illegible] की जल्दी में पैर चूक गया और एक अनहोनी घटना [illegible] गंगो कुएँ के अन्दर ! कुआँ बोला—'धम।'

इतने अबोध नहीं थे कि घटना की गुरुता न समझ[illegible] कुछ क्षणों तक तीनों उसी स्थान पर कर्तव्य-मूढ़ से [illegible] फिर अमिया सहसा तारस्वर से रो उठा। पल-भर में [illegible] समुद्र उमड़ आया। मुहल्ले भर में यह समाचार फैल [illegible]

गंगो जैसे-तैसे निकाली गई और हम दोनों अभियो[illegible] के अन्दर ठेल दिये गये।

बिना ठहरे हम दोनों ऊपर आ गये। अभियोग [illegible] हमारे सामने ख़ूब प्रत्यक्ष थी और बीबी की शालीन[illegible] पूर्ण-परिचित थे। घर के एक कोने में हम दोनों एक[illegible] ख़ूब सटकर खोये-से दीवार के सहारे बैठ गये। [illegible] थे मानों इसी से सारे आरोपण का परिमार्जन हो [illegible] कितना गहरा विश्वास था तब दोनों में—कितनी सहानु[illegible] कितनी ममता।

बादल-सा गरज उठा। माँ चिल्लाती हुई आई—'[illegible] हरामज़ादो ! मुँह पर कालिख पोतने के सिवा और [illegible] कहीं डूब नहीं मरे। दिन भर खेलना, मारना, [illegible] यह नहीं होता कि घड़ी भर को तख़्ती लेकर बैठें...'

मा को क्रोध बहुत था। हम दोनों एक दूसरे को [illegible] लगे। क्या किया जाय कोई मार्ग नहीं। भय के [illegible] हाल था। तभी दोनों के गालों पर दो बलशाली चपतें [illegible]

हमने गिड़गिड़ाकर कहा—'बीबी ! हमने कुछ नहीं [illegible]

'झूठ।' माँ का क्रोध और भड़क उठा।

'सच्ची बीबी !...हाय रे।...हमने कुछ नहीं रे, [illegible] बस...तू गंगो से पूछ लेना !'

पर बीबी चिल्लाती गईं और मारती गईं।

हाथ थक गये पर क्रोध शान्त नहीं हुआ। [illegible] एक दूसरे से बुरी तरह चिपटे थे। बीबी ने दोनों को [illegible] अलग बाँध कर खूँटी में लटका दिया। दोनों ज़ोर [illegible] थे पर बीबी का दिल उस दिन नहीं पिघला। [illegible] हम दोनों रो रहे थे। आँसू टपक रहे थे, गला बैठा [illegible] था, हिचकियाँ बँध आईं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'कहो, अब नहीं करेंगे।'

'सच्ची बीबी! हमने कुछ नहीं किया।'

'तो लटके रहो थोड़ी देर और।' बीबी जाने लगीं।

सोमा झट बोली—अब नहीं बीबी! अब नहीं करूँगी। सच्ची बीबी! अब कभी दङ्गा नहीं करूँगी।

मैंने भी कहा—बड़ा दर्द हो रहा है, बीबी! छोड़ दे। अब नहीं।

'छोड़ दे बीबी! सच्ची नहीं मर जाऊँगी।' सोमा ने कहा।

माँ हँस-सी पड़ी। यह शुभ लक्षण था। दोनों खोल दिये गये।

खुलते ही हम दोनों लड़खड़ाते-से भाग खड़े हुए। हाथ-में दर्द हो रहा था। मकान के बाहर की देहली पर बैठकर दोनों ही देर तक रोये। शायद उतना हम दोनों कभी रोये।

'बीबी ने बिना बात के मारा। मैंने धक्का कहाँ दिया था। तो खुद गिर गई थी।' मैंने रोते हुए कहा।

'मैं बीबी के पास नहीं जाऊँगी।'

सच है। उस समय हम दोनों के अन्दर विद्रोह भरा था। दो के अतिरिक्त सब बुरे थे।

'बीबी बहुत बुरी हैं।'

'गंगो से भी नहीं बोलूँगी।' तू भी मत बोलना अच्छा!

'हाँ।' 'अमिया से भी नहीं।' 'अच्छा!'

यह कहकर हम दोनों हाथ में हाथ डाले बुआ के घर की ओर चल दिये। वह बहुत दूर नहीं था, गली के आख़िर में था।

× × ×

तुम कह दोगे रोज़ की बातें हैं। पर रोज़ की बातें क्या नहीं हैं?

यौवन-बुढ़ापा, विरह-मिलन, जीवन-मृत्यु सभी तो रोज़ की बातें हैं। प्रतिदिन की कह देने से क्या इनका गौरव कम हो जाता है। तुम निरर्थक कह सकते हो पर सोमा के वे स्मरण और सोमा की वह छवि मेरे लिए सुमन से भी अधिक है। क्योंकि सुमन पराई है और सोमा मेरी अपनी थी।

——

क्षितिज

श्रीयुत इकराम सागरी

आज क्षितिज ने क्यों देखो यह रङ्ग अनोखा धारा है।
रवि के छिपने पर क्या अपना भेद बताया सारा है?
चुपके-चुपके चोरी से, विहँगों ने देख लिया उसको।
फिर अपनी कविता द्वारा, सब जन पर प्रकट किया उसको।
घर से घर की बात बताओ, बाहर क्यों यह आई है?
आज क्षितिज पर देखो तो, यह लाली कैसी छाई है।

बैठे-बैठे चुपके-चुपके, यह क्या तुझको भाया है?
बोल क्रूरता का स्वरूप क्यों, तूने यह दरशाया है?
किसकी आशा का तूने यह आज अबीर उड़ाया है?
कण-कण पर आकर छाकर जो रंग गुलाबी लाया है।
यह किसके अरमानों की रे होली आज मनाई है?
आज क्षितिज पर देखो तो, यह लाली कैसी छाई है।

किसके शोणित से बोलो यह, कण-कण नभ का रञ्जित है?
किसके चीत्कारों का स्वर, उसकी भाषा में व्यञ्जित है?
किसके शोणित से तूने यह, अपनी प्यास बुझाई है?
क्योंकर तेरे होठों पर यह, गहरी लाली छाई है?
यह क्या? किसी अभागे के रे, प्राणों पर बन आई है?
आज क्षितिज पर देखो तो, यह लाली कैसी छाई है।

किसकी आहों की ज्वाला, यह आज क्षितिज पर उमड़ी है?
अरे घटा ये किसके दुख की, सारे जग पर घुमड़ी है?
झिलमिल झिलमिल करने से वे क्या है? नभ के तारे हैं?
अरे किसी प्रेमी के जी के जलते हुए अँगारे हैं।
लौट लौटकर रोदन की आती कैसी झाई है?
आज क्षितिज पर देखो तो, यह लाली कैसी छाई है।

रो-रो बिलख-बिलख करके, रे कितने सर ये फूटे हैं!
कितनी हतभागिनियों के शोणित के झरने फूटे हैं?
अरे काल के क्रूर-करों ने, किन-किन का सुहाग लूटा?
कितनी माँगों का सेंदुर है आज क्षितिज पर वह छूटा?
विहँग-वृन्द फिर-फिर ये किसको देता आज दुहाई है?
आज क्षितिज पर देखो तो, यह लाली कैसी छाई है।

——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

स्वर्गीय सर चौधरी छोटूराम

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीयुत शिवकुमार विद्यालङ्कार

पञ्जाब के व्यापारियों ने बिक्री व मण्डी क़ानून के विरुद्ध एक प्रान्तव्यापी आन्दोलन शुरू किया था। उन दिनों की एक घटना आज भी हमें नहीं भूली। पञ्जाब की सिख तथा हिन्दू महिलाओं ने स्वर्गीय सर चौधरी छोटूराम के बँगले के सामने स्यापा पीटना शुरू कर दिया था। उनकी रोने-धोने और हाय-हाय की आवाज़ को सुनकर चौधरी साहब अपने मकान से बाहर आये। उन्होंने महिलाओं को सम्बोधित करते हुए कहा—

"माताओ, बहनो और देवियो! आप लोगों का स्यापा पीटना व्यर्थ है। आप लोग मेरे लिए ईश्वर से क्या बददुआ माँगोगी! मुझे ईश्वर जो सज़ा देना चाहता था, वह दे चुका है। मुझे ईश्वर ने पुत्र-रत्न से सदा के लिए वञ्चित कर दिया है। मेरी सिर्फ़ दो लड़कियाँ हैं, और उनमें से भी एक जन्म से अन्धी है। इसलिए देवियो, जाओ। अपने घरों को चली जाओ। स्यापा करने की कोई ज़रूरत नहीं। मुझे तो पहले ही सज़ा मिल चुकी है।"

स्वर्गीय चौधरी छोटूराम

आज चौधरी छोटूराम इस संसार में नहीं रहे। उनके देहावसान के साथ पञ्जाब का एक ऐसा व्यक्ति उठ गया, जो सर्वप्रिय भी था और सर्वघृणित भी था। पञ्जाब के बनिये उसे फूटी आँखों न देखना चाहते थे। किन्तु पञ्जाब के छोटे-छोटे ज़मींदार, किसान और ऋणग्रस्त हिन्दू तथा सिख उन्हें अपना देवता समझते थे। अपने विरोधियों और पक्षपातियों के बीच नीर-क्षीर-विवेक करके सर छोटूराम ने प्रान्त के सार्वजनिक जीवन में पदार्पण किया और आख़िरी दम तक अपने आदर्श की ओर द्रुत गति से बढ़ते चले गये।

स्वर्गीय चौधरी सर छोटूराम बनिया जाति के जानी दुश्मन थे। एक छोटी-सी घटना ने उन्हें बनिया जाति का शत्रु बना दिया। बचपन में उनके पिता सदैव ऋणग्रस्त रहा करते थे। एक बार उन्हें कुछ धन की ज़रूरत हुई और वे अपने महाजन की सेवा में पहुँचे। गर्मी का मौसम था। महाजन पसीने से तरबतर हो रहा था। उसने छोटूराम के पिता से कहा कि ज़रा पङ्खा करो। मुझे गर्मी सता रही है। जब पङ्खा गर्म हवा करने लगा तो महाजन ने कहा कि इस पर ज़रा पानी छिड़क लो, ताकि हवा ठण्डी हो जाय। बालक छोटूराम यह सब देख रहा था और अन्दर ही अन्दर जल रहा था। एक बार और भी चौधरी छोटूराम के पिता को पैसे की ज़रूरत हुई। वे अपने महाजन के पास गये। महाजन कार्यव्यस्त था। उसने हैं अपनी चारपाई के पैताने बैठ जाने को कहा। बालक ाम ने देखा कि महाजन तो मसनद लगाये हुक्का गुड़गुड़ा रहा है और असामियों से ग़प्पें लड़ा रहा है और उनके उसके पैरों की तरफ़ बैठे हैं। इन दो घटनाओं से उ में बनियों के प्रति घृणा पैदा हो गई। परशुराम यदि के शत्रु थे, हर हिटलर यदि यहूदियों के शत्रु हैं तो चौधरी छोटूराम बनियाँ जाति के शत्रु हो गये!

अपने विद्यार्थी-जीवन में चौधरी छोटूराम को बनिया र्थियों से सदैव विद्वेष रहा करता था। सन् १८८२ के पश्चिम में ४४ मील परे रोहतक ज़िले के गढ़ी उनका जन्म हुआ था। १८९१ में उन्होंने प्राईमरी पढ़ना शुरू किया। बाद में वे सेन्ट स्टीफन्सन हाई कालेज दिल्ली में पढ़ते रहे। सन् १९०५ में वे हुए। इस समूचे काल में उन्होंने बनिया सहाध्यायि खुले आम विरोध जारी रक्खा। कालेज की पत्रि वे जो लेख लिखा करते थे, उनमें बनियों का विरोध र

ग्रेजुएट बनने के बाद वे अवध के रा काँकर के प्राईवेट सेक्रेटरी रहे। ६ वहाँ काम करने के बाद उन्होंने लाहौर के में प्रवेश किया। अपनी आर्थिक आ पूरी करने के लिए वे रङ्गमहल हाईस्कूल अध्यापक बने। प्लेग के कारण वे लाहौ फिर राजा कालाकाँकर के यहाँ पहुँचे। भी नौकरी छोड़कर वे आगरा के लॉ प्रविष्ट हुए। १९११ में वे एल-एल० इस समूचे काल में बनिया-विरोध की अन्दर ही अन्दर सुलगती रही।

सन् १९१६ में वे रोहतक लौट आये। यहाँ आते अपने आपको जाट जाति का रक्षक और बनियों घोषित कर दिया। उन्होंने "जाट ग़ज़ट" नामक हिक अख़बार निकालना शुरू कर दिया। सन् १९ उसके सम्पादक रहे। उस अख़बार के एक-एक पन्ने के विरोध और जाटों के पक्षपात की झलक दिखाई इसी काल में वे रोहतक ज़िला कांग्रेस कमिटी के प्र किन्तु कांग्रेस में बनियों का ज़ोर बढ़ता देखकर उन्होंने में ही उसका साथ छोड़ दिया।

उसके पश्चात् उन्होंने सरकार का आश्रय लिया जाटों का भला उनकी समझ से इसी प्रकार हो स मांट-फ़ोर्ड शासन-सुधार के अनुसार स्थापित पञ्जाब कौंसिल के वे सदस्य चुने गये। सदस्य बनने के बा अपनी आँखों देखा कि 'इन्तक़ाल आराज़ी एक्ट' ने अत्यधिक हानि पहुँचाई है। इसका उन्होंने स्थान-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोध किया। किन्तु जब उन्होंने देखा कि इस क़ानून का
र हिन्दू साहूकारों पर भी पड़ा है और उनकी साहूकारी
ल में मिल गई है तो उन्होंने सन्तोष की साँस ली।

सन् १९२५ में चौधरी छोटूराम पञ्जाब के शिक्षा मन्त्री
ये गये। १९३७ में प्रान्तीय स्वराज शासन स्थापित होने पर
उन्नति मन्त्री और सन् १९४१ में सर सुन्दरसिंह मजीठिया के
वसान पर वे मालमन्त्री बनाये गये। इस समूचे काल में
नियों की जड़ में मट्ठा देते रहे।

'एक्ट इन्तक़ाल आराज़ी' से जिन छोटे-छोटे ज़मींदारों को
म नहीं हुआ था, सबसे पहले उन्हीं पर चौधरी छोटूराम की
र गई। उन्होंने देखा कि ऐसे छोटे-छोटे ज़मींदार साहूकारों
चंगुल में फँसकर अपने बाप-दादों की ज़मीनें खो रहे हैं।
होंने पञ्जाब के ही ज़िले के ऐसे-ऐसे सिखों और हिन्दू ज़मींदारों
पत्र लिखे, जो ऋणग्रस्त थे। उन्होंने उनसे पूछा था कि
ऋणमुक्त करने के लिए क्या उपाय किये जायँ। उन
के उत्तर आ जाने के बाद चौधरी छोटूराम की कोशिशों से
जाब सरकार ने क़ानून बना कर ज़िले-ज़िले में 'क़र्ज़ा मसलहती
ड' स्थापित कर दिये। इन बोर्डों ने हज़ारों-लाखों रुपये का
ण मिनटों में साफ़ कर दिया। जो हिन्दू साहूकार अपने
दार की कुर्की कराये बिना चैन नहीं लेता था, उसी को बोर्ड
सामने हाज़िर होकर अपनी असल रक़म से भी हाथ धोने
ते थे। दस-दस हज़ार रुपये के क़र्ज़ २००) रु० में निबटे
र वह भी किश्तों में, एकमुश्त नहीं। जो हिन्दू साहूकार
ल लेकर एक मुस्लिम क़र्ज़दार का १० हज़ार का क़र्ज़ माफ़
देता था, वही हिन्दू साहूकार एक हिन्दू क़र्ज़दार के साथ
भी क़ीमत पर समझौता करने को तैयार न होता था।
तु क़र्ज़ा-बोर्ड स्थापित होते ही साहूकार लोग अपने आप
झौता करने को आने लगे। इस तरह क़र्ज़ा-बोर्ड स्थापित
कर चौधरी छोटूराम ने हज़ारों हिन्दू तथा सिख असामियों
ऋणमुक्त कर दिया।

सर छोटूराम की कोशिशों का ही यह परिणाम हुआ कि
जाब के क़र्ज़ा-क़ानून में अनेक संशोधन हुए। आज पञ्जाब
र्ज़ के दावे में डिगरी हो जाने के बाद भी क़र्ज़दार के नाम
की व वारण्ट के हुक्म जारी नहीं हो सकते। "दीवानी
में लेनदार दीवाना हो जाता है", अदालती क्षेत्रों में
कहावत अत्यधिक प्रसिद्ध हो चुकी है। कारण यह है
पञ्जाब में क़र्ज़ा क़ानून ही ऐसा हो गया है कि एक
कार अपने क़र्ज़दार का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता।
दार शक्तिशाली है तो साहूकार हाथ पर हाथ धरे बैठा
ता है।

सर छोटूराम का बनिया-विरोध मण्डी व बिक्री क़ानून के रूप
भी हमारे सामने आया। मण्डी क़ानून के अनुसार पञ्जाब
प्रत्येक मण्डी में आढ़ती को लायसेंस लेना पड़ता है। इस
लायसेंस को प्राप्त करने के लिए उसे कर देना पड़ता है। कर
की रक़म अच्छी है। बिक्री क़ानून के अनुसार पञ्जाब के
व्यापारियों व दुकानदारों को अपनी प्रतिदिन की बिक्री का
ब्योरा रखना पड़ता है और वर्ष के अन्त में उन्हें अपनी बिक्री पर
टैक्स देना होता है। इस टैक्स की रक़म भी काफ़ी है।
व्यापारियों ने इसका बहुत अधिक विरोध किया किन्तु पञ्जाब
सरकार ने उनकी एक नहीं सुनी और बिक्री क़ानून पर आज भी
वहाँ अमल हो रहा है।

बनिया-विरोधी होने के अतिरिक्त स्वर्गीय चौधरी छोटूराम
राजनीतिज्ञ भी थे। लेकिन उनकी राजनीति पञ्जाब तक ही
सीमित थी। वे पञ्जाब की राजनीति को ख़ूब समझते थे।
पञ्जाब लेजिस्लेटिव कौंसिल का सदस्य रहते हुए उन्होंने स्वर्गीय
सर फ़ज़लीहुसेन के साथ मिलकर 'यूनियनिस्ट पार्टी' स्थापित की
थी। सर फ़ज़लीहुसेन की मृत्यु के बाद उन्होंने सर सिकन्दर
के साथ मिलकर 'यूनियनिस्ट पार्टी' की शाखा-प्रशाखायें
स्थापित कीं और उसे ख़ूब मज़बूत कर दिया। यह उन्हीं के
प्रयास का परिणाम था कि 'जिन्ना सिकन्दर' और 'बलदेवसिंह
सिकन्दर' समझौते हो गये। सर सिकन्दर के देहावसान के
बाद क़ायदे आज़म मिस्टर मुहम्मद अली जिन्ना को विश्वास हो
गया था कि अब पञ्जाब में पाकिस्तान पर परीक्षण प्रारम्भ हो
सकेगा। कारण नये प्रधान मन्त्री मलिक ख़िज़र हयात ख़ाँ
तिवाना को मुस्लिम लीग में शामिल करना उनके लिए कठिन
न होगा। और इस प्रकार समूची 'यूनियनिस्ट पार्टी' के
मुस्लिम सदस्यों को वे मुस्लिम लीग में शामिल कर लेंगे। लेकिन
चौधरी छोटूराम ने क़ायदे आज़म के स्वप्नों पर पानी फेर दिया।
उन्होंने मिस्टर जिन्ना को बता दिया कि सर सिकन्दर की मृत्यु
के बाद भी यूनियनिस्ट पार्टी का झण्डा मुस्लिम लीग के झण्डे
के सामने नहीं झुकेगा। सर छोटूराम के ही प्रयासों का यह
फल था कि मलिक ख़िज़र हयातख़ाँ तिवाना ने भी क़ायदे आज़म
से कह दिया कि पञ्जाब के मुसलमान पञ्जाब के मामलों में
'यूनियनिस्ट पार्टी' का आदेश मानेंगे। लेकिन अखिलभारतीय
मामलों में उन्हें मुस्लिम लीग का आदेश मानने में कोई आपत्ति
न होगी। "पञ्जाब पञ्जाबियों के लिए है", चौ० छोटूराम
का यह सूत्र काम कर गया। यही कारण है कि पञ्जाब में
पाकिस्तान पर परीक्षण आरम्भ करने की क़ायदे आज़म की
योजनायें चौधरी छोटूराम की चट्टान से टकराकर चकनाचूर
हो गईं।

स्वर्गीय चौधरी छोटूराम किसानों का पक्ष लेनेवाले थे।
पञ्जाब मन्त्रिमण्डल में वे ही ऐसे व्यक्ति थे, जिन्हें किसानों
और ज़मींदारों के हितों का ध्यान रहता था। महँगाई बढ़ने
पर गेहूँ के भावों के सम्बन्ध में कई अफ़वाहें फैलीं। कभी
यह अफ़वाह फैली कि सरकार गेहूँ के खड़े खेतों को क़ानूनी तौर
से अपने क़ब्ज़े में कर लेगी, कभी यह सुना गया कि सरकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समूची तैयार गेहूँ की फ़सल को अपने लिए ले लेगी। सर छोटूराम अख़बारों में अपना वक्तव्य निकालकर ऐसी तमाम अफ़वाहों का प्रतिवाद कर देते थे। यह उन्हीं के वक्तव्यों का परिणाम था कि किसान भी अपने हिस्से के गेहूँ को तेज़ भावों पर बेचने के लिए सँभालकर रखने लगे थे। कण्ट्रोल युग आरम्भ होने पर पञ्जाब के ज़मींदार और किसान फिर चिन्तित हो उठे थे। व्यापारियों ने उनसे गेहूँ ख़रीदना बन्द कर दिया था। किसान व ज़मींदार निराश हो चुके थे। किसी को यह पता न था कि गेहूँ का भाव गिरते-गिरते कहाँ तक पहुँचेगा। अफ़वाह यहाँ तक फैल गई कि गेहूँ का भाव ५) मन तक पहुँच जायगा। सर छोटूराम आगे बढ़े। उन्होंने सबसे पहले अर्थ-शास्त्रियों का यह भ्रम दूर किया कि किसानों और ज़मींदारों की आय बढ़ गई है। उन्होंने आँकड़े पेश करके यह बताया कि युद्धग्रस्त होने से पहले एक किसान को ३) रुपये मन गेहूँ बेचकर कितना नुक़सान रहा करता था। सन् १९२९ से १९३९ तक एक-एक किसान और ज़मींदार पर सस्तेपन की वजह से कितना क़र्ज़ा हो चुका था, इस पर भी उन्होंने प्रकाश डाला। उन्होंने तालिका देकर यह भी समझाया कि यदि गेहूँ के भाव तेज़ हो चुके हैं तो एक किसान अथवा ज़मींदार को बैल, हल, कुदाल, बीज आदि सब वस्तुयें कितनी महँगी मिल रही हैं। उनका यह कहना था कि युद्ध के कारण जो लोग लाभ उठा रहे हैं वे बड़े पूँजीपति, व्यापारी और सरकार के ठेकेदार हैं। किसान और ज़मींदार तो ठीक उसी हालत में हैं, जिसमें पहले थे। आज कारख़ानों में काम करनेवाले मज़दूरों को महँगाई के भत्ते मिल रहे हैं, बोनस भी मिल रहे हैं, किन्तु किसान के लिए महँगाई के भत्ते व बोनस कहाँ हैं? इन सब सत्यों को सामने रखकर चौधरी छोटूराम ने अपने वक्तव्यों में यह स्पष्ट किया कि गेहूँ का भाव सस्ता नहीं होने दिया जायगा। हाँ, यदि भारत सरकार अन्य पदार्थ सस्ते कर देगी तो भी इस युद्ध में पञ्जाब का गेहूँ ७) मन से नीचे किसी सूरत में नहीं जाने दिया जायगा। उन्होंने भारत सरकार को सूचित कर दिया था कि यदि वह भारत के उद्योगपतियों के दबाव में आकर गेहूँ का भाव ५) मन निश्चित करने की कोशिश करेगी तो उसे एक भीषण आर्थिक सङ्कट का सामना करना पड़ेगा। यह चौधरी छोटूराम के प्रयत्नों का परिणाम है कि आज पञ्जाब में गेहूँ का भाव ८) मन से नीचे नहीं गिरा।

चौधरी छोटूराम किसी हद तक राशनयोजना के भी विरोधी थे। किन्तु जब उन्होंने दिल्ली आदि नगरों में लोगों को गेहूँ के लिए परेशान होते देखा और देखा कि किसान और भोक्ताओं के बीच ये आढ़ती और व्यापारी लोग मनचाहा ले रहे हैं, तब चौ० छोटूराम ने दिल्ली जैसे शहरों में प्रणाली का समर्थन किया। फिर भी वे ऐसे प्रान्तों में राशन चालू करने के कट्टर विरोधी थे, जिनमें गेहूँ चावल प्रचुर मात्रा में पैदा होता है। उन्हें यह सह्य पड़ता था कि पञ्जाब के लाहौर, अमृतसर आदि नगरों का राशन क्यों किया जाय? पर उनके विरोध करते भी भारत सरकार के आदेश से पञ्जाब सरकार ने अनेक नगरों में गेहूँ का राशन कर दिया।

किन्तु आज चौधरी छोटूराम जीवित नहीं रहे। के किसानों और ज़मींदारों को भय है कि अब सरकारी उनका पक्ष-पोषण कौन करेगा? सरकार की समूची उद्योगपतियों और बड़े-बड़े व्यापारियों के इशारों पर चल कृषिजीवियों को भय है कि उनके हितों की कहीं हत्या जाय। छोटी आमदनियोंवाले और क़र्ज़ पर जीनेवाले है कि कहीं महाजनों की फिर न बन आवे। यूनि मन्त्रिमण्डल को भय है कि कहीं क़ायदे आज़म जिन्ना लीगी फ़ौज को लेकर पञ्जाब पर धावा न बोल दें। ख़िज़र हयात ख़ाँ तिवाना को भय है कि कहीं यूनियनिस्ट चौधरी छोटूराम की चिता के साथ जलकर राख न हो ये सब ख़तरे हैं, जो उनके देहावसान से पञ्जाब में उठ हैं। किन्तु भविष्य के गर्भ में क्या है, यह आनेवाली ही बतायेगी।

स्वर्गीय चौधरी छोटूराम यूनियनिस्ट पार्टी के प्राण किसानों, ज़मींदारों तथा ऋणग्रस्तों के परित्राता थे। इच्छाशक्ति प्रबल थी। उनका सङ्कल्प दृढ़ था। वे धनी और अपने तथाकथित उसूलों पर चलनेवाले उनका राजनैतिक चरित्र अपने ही ढङ्ग का था। वे के अजेय योद्धा थे। अपने साथियों में वे ही ऐसे जो प्रान्त भर का दौरा कर एक दिन में बीसियों भाषण दे सकते थे। पञ्जाब की राजनीति में उनका प्रभावशाली था। एक व्यक्ति की दृष्टि से उनका जीवन अच्छा था। किन्तु राष्ट्रीय भारत के लिए उनका जीवन न था। उनके जीवन में यही सबसे बड़ा कलङ्क था सेवा का दायरा अत्यधिक संकुचित था। यदि कलङ्क न होता तो सर छोटूराम का जीवन किसी भी देश गौरव की वस्तु बन जाता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पत्नी चाहिए

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाक्टर बाबूराम सक्सेना, एम० ए०, डि० लिट्

आप पूछेंगे 'किसलिए'? सुनिए।

(१)

जयपुर में एक सेठजी थे। दो बड़े लड़के, उनकी बहुयें, -पूरा घर। आँगन में पोते-पोतियाँ खेला करतीं। सेठजी प्रः दिन भर दूकान पर रहते। सन्ध्या हो जाने पर घर ते, खा-पीकर सो जाते। पत्नी का देहान्त हुए कई महीने हो थे। एक दिन जब सेठजी दूकान से घर आये तब उन्होंने ज्ञा की "बड़े खाने की इच्छा है। बड़े बनाये जायँ"। ओं ने विनती की "लालाजी, पिट्ठी नहीं है, कल इन्तज़ाम कर बना देंगे"। लालाजी चुप हो गये। उनकी जाति में याओं की कमी न थी। महीने भर के भीतर नई दुलहिन आये। बेटे और बहुयें अवाक् रह गईं।

कुछ दिन के बाद सेठजी ने दूकान से आकर फिर बड़े खाने इच्छा बताई। दुर्योग से आज भी बड़े बनाने लायक़ दाल पिट्ठी न थी। पर नई दुलहिन ने कहा 'बड़े तो ज़रूर गे'। जाकर बड़ियों की मटकी उठा लाई। उनको ल पर पीसकर पिट्ठी तैयार की और बड़े बना दिये।

भोजन करते समय लालाजी ने पुत्रों और बहुओं को बोधन करके कहा "देखा! मैंने इस बुढ़ापे में क्यों विवाह या? पत्नी के ही कारण आज मेरी इच्छा पूरी हुई। पति सुख और आराम पहुँचाने का जितना ध्यान पत्नी को होता है ना और किसी को नहीं"।

(२)

दिल्ली की बात है। कोई पचास साल पहले, एक साहूकार बड़ी साख की एक फ़र्म के मालिक। स्वयं अवस्था में सी साल से ऊपर। साठ से ऊपर उम्रवाले दो-दो लड़के। ान में मख़मली गद्दे वाले तख़्त पर लेटे रहते, एक नौकर बीसों घण्टे सेवा में उपस्थित रहता। लड़के, पोते सारा काम ाले हुए थे। सेठजी कभी-कभी पड़े-पड़े ही आदेश-उपदेश देते ते। एक बार उनके 'स्वदेश' जोधपुर से एक मुनीमजी आढ़त इस फ़र्म पर काम से आये। सौदे की बात-चीत हो जाने पर ड़े सेठजी ने मुनीमजी को सम्बोधन करके कहा—"अरे ीमजी, कुछ मेरी भी फ़िक्र करो।" मुनीमजी ने विनयपूर्वक "जो हुक्म हो, सेवा करूँ।" सेठजी ने कहा "मेरे ाह के लिए देश में कोई लड़की तलाश करो, रुपये फ़िक्र न करना। जो माँगेगा दूँगा।" बेचारे मुनीम ने त समझाया कि आपका भरा-पूरा घराना है, बेटे-पोते परपोते ी सुशील और आज्ञाकारी हैं। किस बात की कमी है जो उम्र में ऐसी ज़िम्मेवारी लेने का साहस कर रहे हैं? पर जी एक भी न माने। बोले, "अरे मुनीम! तुम समझते नहीं। अरे भाई, जब मेरे प्राण छूटें तब कोई तो चूड़ियाँ फोड़ने को हो!" सेठजी का विवाह दो-तीन महीने के भीतर हो गया और केवल बीस हज़ार रुपये ख़र्च करने पड़े एक कोमलाङ्गी षोडशी के लिए। और विवाह के एक साल के भीतर ही इस बालिका ने अपनी चूड़ियाँ फोड़कर मरते हुए बुड्ढे सेठजी के प्राणों को सुख दिया।

(३)

अवध के एक प्रसिद्ध ज़िले के एक छोटे-से गाँव की घटना है। एक बहुत ऊँचे कुल के ब्राह्मण, बीस बिसवा के कनौजिया, पढ़े-लिखे नाम मात्र के, भिक्षावृत्ति, पूजा-पाठ का कर्म, अवस्था साठ के क़रीब। अकस्मात् उनकी बुढ़िया ब्राह्मणी का देहान्त हो गया। अब समस्या हुई रोटी की। कौन बनावे। कुटुम्ब में कोई न था। अन्य किसी की बनाई रसोई खाने में धर्म जाता था। जैसे-तैसे करके महीने दो महीने काटे। कुछ मसख़रों ने विवाह कर लाने की सलाह दी। एक दिन देवता देश की ओर चल ही तो पड़े। और कुछ ही दिनों बाद पण्डितजी लौटे तो नवेली दुलहिन साथ थी। अब उनको रोटी का सुख हो गया। जो सुख इनकी प्रथम जीवनसङ्गिनी चालीस साल के गृहस्थ-जीवन में न दे सकी वह सुख इन्हें अपनी नई पत्नी से साल भर के भीतर मिल गया। इन्होंने पुत्र का मुख देखा और परमेश्वर को धन्यवाद देकर पूजा-पाठ में और रत रहने लगे। परन्तु कालचक्र अपना काम निरंकुशता से करता है, किसी व्यक्ति के सुख-दुःख की परवा नहीं करता। शिशु साल भर का भी नहीं हुआ था कि पण्डितजी उस अबोध बच्चे और उसकी अबोध माँ को निःसहाय छोड़कर स्वर्ग सिधारे। गाँव में जीविका का कोई साधन न पाकर और मायके से कोई सहारा पाने की आशा खोकर यह हीन ब्राह्मणी पेट पालने शहर पहुँची। वहाँ इसकी जो हालत हुई उसका वर्णन किया ही क्या जाय।

(४)

एक रियासत की बात है। एक कायस्थ परिवार था, खाता-पीता। कई लड़कियाँ थीं। शादी-ब्याह की चिन्ता रहती थी। इधर-उधर से बराबर पत्र-व्यवहार किया जा रहा था। समाचार-पत्रों में भी विज्ञापन देकर खोज की गई। सौभाग्य से काफ़ी दूर एक शहर में बात पक्की हो गई। ऊँचा ख़ानदान, माक़ूल आमदनी, पढ़ा-लिखा लड़का। और चाहिए ही क्या था? दहेज़ भी नहीं तय हुआ। यह सोने में सुहागा समझा गया। हँसी-ख़ुशी ब्याह हो गया। लड़की जब विदा होकर घर आई तब बहुत उदास और चिन्ताकुल। मालूम हुआ कि पति बीमार हैं। पता लगाने पर निश्चय हुआ कि नवयुवक आज से नहीं, छः महीने से बीमार हैं, और बीमारी है क्षय। किसी ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माता-पिता को समझा दिया था कि ब्याह कर दो, बीमारी या तो दूर हो जायगी या बहू पर उतर जायगी। लड़का स्वस्थ हो जायगा।

साल भर के भीतर नवयुवक का शरीरान्त हो गया। परलोक जाते समय उसने पत्नी से क्षमा माँगी। और उसी पति की स्मृति लिये वह बालविधवा आज भी बैठी-बैठी बुड्ढी हो गई है।

× × ×

ये घटनायें सच्ची हैं। आदर्श रक्खा गया था कि दम्पती का बन्धन ईश्वरकृत है, वही उसे तोड़ता है। एक बार बन्धन टूट जाने पर, ऐसा मालूम पड़ता है, केवल स्त्री का ही कि स्मृति क़ायम रक्खी जाय और शायद पुरुष का उस स्मृति की रेखायें जल्दी से जल्दी मिटा दे। यदि विधवा-विवाह या तलाक़ की सहूलियत की चर्चा तो यही चार धर्मभीरु महिलायें (दोनों सेठानियाँ, महराजिन और असमय में ही सफ़ेद बालोंवाली ललाइन) पर हाथ रखकर कलियुग को कोसती हैं।

यही है न हमारे समाज की सफलता या विडम्बना!

——

नदी का गीत

श्रीयुत तेजनारायण काक, एम० ए०

(१)

ओ पहाड़! ओ रे, जड़-पत्थर! सुन तो, यह कैसा अन्धेर!
वृथा चाहता है तू रखना मुझको अपने उर में घेर!
कब वापस लौटा वह पंथी, जो बाहर निकला स्वच्छन्द?
अरे अचल! तूने कब पाया पथ पर चलने का आनन्द?
खड़ा रहा जीवन भर अपने, कब तूने यह सुख जाना—
शस्य-श्यामला हरियाली पर, चञ्चल-गति बहते जाना!

(२)

ओ अरण्य! ओ रे, अरण्य! तू बार-बार क्यों रहा पुकार—
'अरी ठहर जा'—क्यों कहता है, अपने अगणित बाहु पसार?
मेरी लहर-लहर में बिम्बित विकल-व्यथा तेरे तन की,
सुनती हूँ मुखरित मर्मर में मूक-व्यथा तेरे मन की;
पर पल भर अवकाश नहीं है यहाँ ठहरने का मुझको,
स्नेह-सलिल से सींच हरा कर जाती हूँ तेरे तन को।

(३)

अरे उपल-दल! सम्मुख आकर, मेरे पथ पर अड़कर
मुझे रोकने का करते हो क्यों प्रयत्न यह दुष्कर?
अचल-हिमाचल की तनया मैं चली उदधि से मिलने,
नील-गगन ने जगा दिये हैं नील-सिन्धु के सपने!
इन्द्रधनुष के रङ्ग उड़ाती, बुद्बुद-फूल खिलाती,
पगली-सी मैं नृत्य-निरत नित आगे बढ़ती जाती।

(४)

अरे पुलिन! मुझको पाने का तेरा व्यर्थ-प्रयास
उठा रहा है मेरे उर में कैसा चञ्चल हास!
अपनी उभय-बाहु में, रे तट! मुझे बाँधने से मुख
तेरे बाहु-पाश में बँधने क्या मैं आई गिरिवर
जितना ही तू मुझे दबाता, मैं उतना मुक्त
खिसक बाहु-बन्धन से, इठला, मैं आगे बढ़

(५)

तट की दूब, खेत-तरु-पंछी, पथ के रोड़े
मुझे देख कहने लगते हैं—'अरी, ठहर तो पल
मैं मतवाली, प्रेम-डगर पर चलना मेरा
बाँध सकेगा कौन सिन्धु-सा मेरा अल्हड़
'अरे बन्धुओ! जाती हूँ मैं, ले लो मेरा
शीतल कर लो इन छींटों से अपनी आकुल

(६)

यह आकाश मुझे देता है सागर का
उसी अनल का प्रेम-सँदेसा लाता है
जाने कौन सुदूर क्षितिज से मुझको रहा
'आओ मेरे पास प्रेयसी! आओ मेरे
मन में लहरें उमड़ रही हैं—'कब पाऊँगी
मैं जाऊँगी, मैं जाऊँगी, नहीं ठहरती पल

---

* सुश्री राधा रानी दत्त की एक बँगला कविता का हिन्दी रूपान्तर।

——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमती निर्मला मित्र

काँपता शरीर, फिसलते से पैर, धँसी हुई धुँधली आँखें और स फीका चेहरा लिये दरिद्र कृषक नेस्टफ पूरे सात कोस की ल तय कर अपने कुटीर तक आ पहुँचा। आ तो पहुँचा, अब रहेगा कहाँ ?

यह जो उसका एक छोटा कुटीर था, जिसमें वह आजीवन है, आज सुबह पुलिसवालों ने उसी को इतनी निर्दयता से टाया है कि कुछ न पूछो।

जहाँ बैल बँधते हैं उस जगह को भी खोद-खोदकर उन्होंने पाना चाहा था। फिर चलते समय झोंपड़े में आग लगा तो उनके लिए साधारण बात थी।

बेचारे नेस्टफ के ऊपर इतना अत्याचार क्यों! इसने उनका बिगाड़ा था? सम्भव है, पड़ोसिन आना पर कुछ दोष सकता हो, क्योंकि यद्यपि आना टेनिफ एक सामान्य रेलवे-चारी की बहन है, परन्तु बड़े-बड़े पदाधिकारियों तक उसकी च है। और ठीक इसी लिए अपने भाई जेन्द्रव से उसकी शा खटक जाया करती है। जिस विषय पर उनकी तनातनी ी है, वह विषय भी कुछ ऐसा-वैसा नहीं होता, एकदम दिल ला देनेवाला राजद्रोहात्मक विषय।

नेस्टफ अपढ़, मूर्ख और दरिद्र कृषक होते हुए भी उन यों को अच्छे प्रकार से समझता है, और समझता भी है इस-र कि इन दिनों रूस में इस विषय की बहुत चर्चा है। वहाँ दरिद्र से दरिद्र श्रमिक और कृषक इससे अनभिज्ञ नहीं हैं। नेस्टफ तो इन्हीं विषयों को लेकर रहनेवाली आना टेनिफ पड़ोसी है।

कभी-कभी कुछ अच्छा भोजन बन जाने पर आना इस कृषक क को अपने यहाँ खाने को बुला लिया करती थी, और उसी ने के टेबल पर उन दोनों भाई-बहनों में जो गरम-गरम बात-न छिड़ जाया करती थी, वह नेस्टफ के मन में हमेशा शङ्का जड़ें फैलाया करती थी।

तब नेस्टफ कभी-कभी यह सोचता था कि इन पड़ोसियों के प रहने में जोखिम है। कुछ दिन के लिए कहीं दूर चल ा जाय तो अच्छा। पर चला जाना भी इस बेचारे युवक के र सम्भव नहीं था, क्योंकि बाप-दादों की यह तनिक-सी न और उनकी बनाई यह कुटिया वह छोड़े कैसे? जीविका और कोई साधन नहीं, न जाने के लिए दुनिया में कोई मीय ही है।

उधर, अभी-अभी बदलकर आया हुआ पड़ोसी जेन्द्रव भी ा बदली हुए टलने का नहीं है। उसकी बदली होने न की बात तो सम्पूर्णतः रेलवे अधिकारियों के अधीन है। तः नेस्टफ की परिस्थिति 'साँप-छछूंदर'-सी हो रही थी।

फिर भी नेस्टफ को यह निश्चय था कि एक रोज़ ऐसी विपत्ति आयेगी जो आना के साथ निर्दोष जेन्द्रव को भी समूचा निगल जायेगी। इस विपत्ति को आगे बढ़-बढ़कर निमन्त्रण दे रही है जेन्द्रव की बहन आना टेनिफ।

किन्तु नेस्टफ को क्यों उनके साथ घसीटा गया? वह तो मन, वचन और कर्म से इन बातों में नहीं था। फिर उसके माथे यह अपराध क्यों!

जिस मनुष्य के सम्बन्ध में जेन्द्रव आज जेल में ठूँसा गया है, उस पुरुष को नेस्टफ नहीं पहचानता। हाँ, इतना अवश्य वह जानता है, कि चार दिन पहले आना एक सन्ध्या को उसके कुटीर तक आई थी और उसने कहा था—"ये देश के अधिनायक हैं, ग़रीबों के मुक्तिदाता; दो दिन के लिए अपने झोंपड़े में इन्हें छिपा लो; बस।"

'मुक्तिदाता' फिर 'छिपना'! इन शब्दों को वह दुर्बलहृदय युवक उस दिन समझ न सका था। वह आना के सबल मन के सामने ही थर-थर काँप उठा था। उसका चेहरा काला पड़ गया था और उसकी जीभ सूख गई थी। वह चाहता था कि बहुत कुछ कहे, गिड़गिड़ाये और आनाकानी करे लेकिन जीभ जब हिले तब तो! आना उसकी द्विविधा को समझ गई थी। उसने हाथ उठाकर कहा भी था—"बस-बस, रहने भी दो। मुल्ला की दौड़ मसजिद तक। मैं सब समझ गई हूँ। तुम्हारी इस मनःस्थिति में तुम्हारे यहाँ उनका रहना भी निरापद नहीं है।"

यद्यपि आना ने उन मुक्तिदाता को छिपाने का अत्यधिक प्रयास किया, परन्तु सब व्यर्थ गया। रूस के ख़ुफ़िया विभाग ने उन्हें पकड़ ही लिया। फिर कल शाम से आज सुबह तक पुलिसवालों ने जेन्द्रव की धरोहर को चलनी में आटा-सा छान फूँक में उड़ा दिया। महारत्न के साथ-साथ निर्दोष जेन्द्रव को भी पकड़ ले गये।

इधर आध मील दूर बसनेवाले नेस्टफ की भी हर प्रकार से बेइज़्ज़ती कर, उसकी साल भर के लिए सञ्चित खाद्य-सामग्री को उठा ले गये और साथ ही उसकी टूटी झोंपड़ी में आग लगाकर उसके फिर से बसने की आशा को मिट्टी में मिला गये।

देखते-देखते दिन ढल गया। अब रात की अँधेरी और ऊपर से जाड़ा। इनसे बचने के लिए नेस्टफ के पास क्या साधन है। नेस्टफ जी भरकर रोया, फिर किंकर्तव्य-विमूढ़ की भाँति एक ओर बैठ गया।

परन्तु विपत्ति तो रक्त-मांस-निर्मित शरीर से सम्बन्धित है। भीतर से शरीर-धर्म ने आतुरता से जतलाया "मैं भूखा हूँ और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शीत से काँप रहा हूँ। कम से कम आग के पास तो सरक कर बैठ, जिससे कँपकँपी मिटे। आज रात के तुषार हिम से तो बच, कल की कल देखी जायगी।" इस आभ्यन्तरिक प्रेरणा से नेस्टफ को उठना पड़ा। उसने अपने ही कुटीर की अधजली लकड़ियों को बटोरा और उन्हें बुझती आग में झोंक पास ही बैठ गया। बैठ-बैठे वह सोचने लगा, "आदमी विद्रोही क्यों होता है। बस इसी लिए! ऐसे-ऐसे अन्यायों पर लोग विद्रोही न हों तो क्या भले आदमी बने रहें! अच्छा, मुझे ही लिया जाय। मुझ पर सन्देह हुआ, शक हुआ ठीक; मेरे घर की ख़ाना-तलाशी ली। वह भी ठीक! पर साल भर के लिए सञ्चित मेरे अन्न को क्यों ज़ब्त किया गया? क्या उन दानों में भी विद्रोह भरा था? और इस सड़े छप्पर में गोला-बारूद छिपाने का स्थान कहाँ था? सचमुच इतने अन्याय का समर्थन कैसे किया जा सकता है!

"आज मैं घर-बार-हीन हूँ। भूख से मेरी अँतड़ियाँ जल रही हैं। पर हमारा रक्षक—रूस का ईश्वर—इस समय सेन्ट पीटर्स वर्ग के शाही महल में सुख से निद्रा ले रहा होगा।

"उफ़, इतनी बेपरवाही देश के मालिक को शोभा नहीं देती। लेकिन निकोलाई इतने ही बेपरवा हैं और इसी लिए क्षुब्ध जनता के हाथ से किसी दिन..."

नेस्टफ सोचकर काँप उठा। फिर मन में गुनगुनाया—"वह जैसा भी हो, हमारा ईश्वर है। वह शक्तिमान् है। भगवान् उसकी सदा रक्षा करे।"

ठीक उसी समय नेपथ्य से लघु पदचाप की ध्वनि आई और साथ-साथ कोई कह उठा, "यह किसे भगवान् की शरण में सौंपा जा रहा है। नेस्टफ!" और कहते-कहते आना छाया-मूर्ति सी सामने आ गई।

विस्मय से नेस्टफ कह उठा, "तुम्हें छोड़ दिया?"

आना ने धप् से काँधे पर से सेबल और खनीता पटका, फिर आग के सामने दोनों हाथ पसारकर बोली, "मैं पकड़ी ही कब गई थी, बन्धु, तुम्हारे सरीखी राजभक्त प्रजा मैं नहीं हूँ। मेरे पेट का अन्न और रहने का झोपड़ा राज-अत्याचार से तहस-नहस हो जाय और फिर भी मेरे मुँह से उसी शासक के लिए आशीर्वचन निकलें, यह नहीं हो सकता। मैं मानती हूँ, तुम्हारे जैसे अनेक निरीह प्रजागण उसका कुशल मना रहे हैं। फिर भी ऐसे अगणित प्रजाजन हैं जो उसके अत्याचार से जर्जरित होकर उसे निरन्तर कोस रहे हैं। अब सोचो, इसमें भगवान् क्या कर सकता है। न्याय-पथ का त्याग तो वह करेगा नहीं। अतएव निकोलाई को दण्ड देना ही होगा। और—अरे, मैं यह क्या कर रही हूँ, बैठना तो मुझे ज़रा भी नहीं चाहिए था।" फिर वह झट से उठ खड़ी हुई और नेस्टफ का हाथ पकड़ उसे झटके से उठाती हुई बोली, "यह खनीता उठाओ, चलो मेरे साथ।"

आना के शब्दों में कुछ ऐसा बल था कि भूखा-प्यासा और राजपुरुषों की जूतों की ठोकरों से दिल कुचला, अधमरा नेस्टफ मन्त्रमुग्धवत् खनीता उठा उ हो लिया।

कोई आधे मील तक चुपचाप चलने के बाद ऊँ पर चढ़ते हुए आना बोली, "तुम्हारा आज का उप नहीं जा सकता। समय आने पर इतिहास के पृष्ठों में उल्लेख हो तो कोई आश्चर्य नहीं। यदि आज तुम तो समझना तुमने एक ऐसे मानव को बचाया है, जो का अद्वितीय है और जिसके ऊपर सारे रूस का दा अर्थात् उसके बचने से रूसी जनता अधीनता की शृङ्खला हो जायगी।"

अब एक छोटे पुल के नीचे घोर अन्धकार में ये दो आये थे। आना ने टटोल कर पुल की भीत पर हाथ बोली, "प्रिय बन्धु, तुम्हें और हमें यह भीत खोदनी पड़ेगी

नेस्टफ मारे भय के एकाएक चीख़ पड़ा, "एँ— उनकी फाँसी हो गई! क़ब्र खोदकर तुम उनका शव चाहती हो?"

विरक्ति और कुछ झिझक के साथ आना बोली, देखते नहीं। यह पुल है।"

नेस्टफ स्तब्ध हो गया।

आना टटोलती हुई उसके पास आई, और उसके हाथ रख थपथपाती हुई बोली, "प्रिय नेस्टफ, हमारे भा शृंखलित कर टोबोलस्क भेजे जा रहे हैं। चार बजकर मिनिट पर टोबोलस्क एक्सप्रेस इसी पुल पर से गुज़रे चाहती हूँ, उन्हें यहीं से निकाल लिया जाय।"

सनसनाती रात और कड़कड़ाता जाड़ा। नेस्टफ के वैसे ही अकड़े जा रहे थे। अब तो आना की बात पर ही बन गया।

आना अत्यन्त व्यस्तता से एक बार पुल के शायद वहाँ तारकाओं के आलोक में उसने घड़ी का फिर शीघ्रता से अन्दर आकर बोली, "सुनते हो भा दस-तैंतीस हुआ है। काफ़ी समय है। एक चट्टा करने में लगता ही क्या है। लो लो, पकड़ो सेबल। शुरू कर दें।"

लेकिन नेस्टफ जैसे अकड़ा हुआ मुर्दा-सा खड़ा न डुला, न चीख़ा न चिल्लाया। भय से उसकी जड़ हो गई हो।

उसकी जड़ता को आना ने बातों में उड़ाना चाहा। "अरे, मैं यह कहना तो भूल ही गई कि उनका डिब्बा डिब्बे से सटा रहेगा। अधिकारियों को उनके भा हाथ में तो नहीं है। इधर गाड़ी में अठारह डि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया। रूप का मोहपाश तोड़ना उसके लिए सम्भव था।

× × ×

मेहरजान अत्यन्त विचलित हो रही थी। नाना साहब विद्रोही! पिता गिरफ़्तार!! यदि आज नाना साहब गिरफ़्तार जायँ तो उनकी मृत्यु निश्चित है। वही नाना साहब जिन्होंने दिन उससे कहा था—'तू मेरी दुलहिन' और जिससे उसने था—'तू मेरा दूल्हा।' नाना साहब के लिए वह बचपन खेल था—वे यह बात भूल गये। उन्होंने विवाह भी कर । किन्तु वह तो उस बात को नहीं भूली। उस दिन से तक वह उन्हें दूल्हा के स्थान पर ही स्थापित किये हुए है। ही वे चार विवाह कर लें; किन्तु रहेंगे उसके दूल्हा ही। जानती है कि उसका स्वप्न असम्भव है पर इससे क्या! जो एक बार दे दिया वह कभी लौटाया भी जा सकता है!

और नाना साहब की पत्नी आज उसके भाई के पञ्जे में है। उसे मुसलमान बनाना चाहता है। उससे निकाह करना ता है। किन्तु उसे इससे क्या? उसकी 'सौत' रास्ते से जायगी। पर नाना साहब पर इसका क्या असर पड़ेगा! अत्यधिक सन्ताप होगा। क्या उसका यह कर्त्तव्य है कि वह प्यार करती है उसे दुःख मिलने दे। नहीं; उनकी पत्नी छुड़ाना ही होगा, जैसे भी हो।

पर यह कैसे सम्भव है? रणदूलह उसके पीछे पागल है। शीघ्र ही छुड़ाना होगा। यदि कहीं उसका सर्वस्व लुट गया फिर कुछ न हो सकेगा। उसके मुँह से निकला—'या ा मदद कर।'

इन्हीं विचारों में, अशान्त हृदय लिये, मेहरजान अपने जित कमरे में इधर से उधर और उधर से इधर टहल रही क्या करे? कैसे करे? इतने में उसकी मुँहलगी दासी मा ने प्रवेश किया।

मेहरजान ने प्रश्नसूचक दृष्टि से उसकी ओर देखा।

दासी ने कहा—जान बख़्शें तो अर्ज़ करूँ, हुज़ूर।

'क्या है? कहो।'

'ख़ून, हुज़ूर ख़ून।' दासी ने हिचकिचाते हुए कहा।

'किसका ख़ून, साफ़-साफ़ कह, बात क्या है।' उसके मुँह व्यग्रता थी।

'ख़ून हुआ नहीं हुज़ूर, लेकिन आज रात को होगा। एक तहख़ाने में रक्खा गया है। मालिक ने उसको मार डालने हुक्म दिया है। अहमद कह रहा था। वही आज रात को मार डालेगा।'

'कौन आदमी है?'

'कोई बाग़ी मरहठा। लेकिन हुज़ूर, बाग़ी है तो बादशाह ुपुर्द क्यों नहीं कर देते! वे उसे क़त्ल करा डालेंगे, यहाँ महल में। कहीं भूत हो गया तो आफ़त हो जायगी। हुज़ूर मुझे छुट्टी दें! मैं यहाँ न रह सकूँगी।'

'बकबक मत कर। नाम जानती है उसका?'

'हाँ हुज़ूर, वह कोई नाना साहब है सुलतानगढ़ का। मैं...।'

'नाना साहब', मेहरजान ने आश्चर्य से कहा।

'हाँ हुज़ूर! यहाँ शहर में साधू के लिबास में घूम रहा था। अहमद पहचान गया। धोखा देकर उसे पकड़ लाया।'

× × ×

अँधेरा तहख़ाना; प्रकाश नाममात्र को नहीं। सीलन के कारण भूमि गीली; भयङ्कर दुर्गन्ध; हाथ-पैर बँधे हुए; बन्दी पड़ा है अपनी दशा पर विचार करते हुए। अपने भविष्य का अनुमान करते हुए।

सहसा द्वार खुला। बन्दी ने देखा, प्रकाश हाथ में लिये किसी ने भीतर प्रवेश किया। शरीर नक़ाब से आवृत था। किन्तु उसने यहाँ स्वयं को छिपाने की चेष्टा नहीं की। अपना नक़ाब उतार कर एक ओर रख दिया और बन्धन काटते हुए कहा, 'नाना साहब!'

नाना साहब ने देखा, एक युवती है।

युवती ने प्रश्न किया—'मुझे पहचानते हैं?'

'नहीं।'

'मैं मेहरजान हूँ, रणदूलह की बहन। कभी हम साथ-साथ खेले थे और...।'

आगे वह न कह सकी।

'क्षमा कीजिएगा। किन्तु बात भी कितनी पुरानी है।'

मेहरजान ने व्यग्रता से कहा, 'ज़्यादा बात करने का मौक़ा नहीं है। आप अब आज़ाद हैं, फ़ौरन चले जायँ। लेकिन ख़तरा अभी दूर नहीं है।'

'क्या आप बतायेंगी कि मैं कहाँ और किसकी क़ैद में हूँ?'

'मैं बता रहा हूँ, काफ़िर' कहते हुए तलवार हाथ में लिये एक व्यक्ति ने प्रवेश किया। यह अहमद था।

मेहरजान चीत्कार कर उठी।

नाना साहब विद्युत् वेग से उछल पड़े, और इसके पहले कि अहमद सँभले, उसके एक घूँसा लगाया और तलवारवाला हाथ पकड़ लिया। अहमद ने बहुत शक्ति लगाई किन्तु नाना साहब ने उसका हाथ इस प्रकार उमेठा कि तलवार छूट गई। उन्होंने उस पर अधिकार किया।

अहमद घबड़ा गया। नाना साहब ने कहा, 'अब कह, क्या कहता था?'

अहमद ने फिर भी ऐंठ के साथ कहा, 'बताता हूँ; तू रणदूलह के मकान में क़ैद है और तेरी औरत भी उसके क़ब्ज़े में है। जल्द ही वह उससे निकाह करेगा।'

इन शब्दों ने नाना साहब को और भी भयङ्कर बना दिया। आँखें लाल हो गये और अहमद के शरीर पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लात से प्रहार करते हुए मेहरजान से बोले, 'क्या इसकी बात सच्ची है ?'

भय से काँपती हुई मेहरजान बोली, 'आप मेरे यहाँ क़ैद थे, यह सच है और शायद आज आपको क़त्ल करने की भी सोची गई थी। मुझे अभी थोड़ी देर पहले यह ख़बर मिली और इसी लिए मैंने आपको छुड़ाने की कोशिश की।'

'और मेरी स्त्री के सम्बन्ध में यह जो कुछ कह रहा है ?'

'यह सच है कि आपकी स्त्री को मेरे भाई ने कहीं रक्खा है, लेकिन...।'

उसकी अधूरी बात सुनते ही नाना साहब उत्तेजित हो उठे। उन्होंने उसकी बात काटकर कहा—'आपने मुझे छुड़ाया, इसके लिए मैं आपका कृतज्ञ हूँ। किन्तु आपके भाई को मैं कभी क्षमा नहीं करूँगा। उसने मेरे वंश में कलङ्क लगाया है। उससे बदला लूँगा।' फिर आवेश में आकर वे वहाँ से चले गये।

मेहरजान एक क्षण किंकर्त्तव्यविमूढ़-सी खड़ी रही। दूसरे ही क्षण वह बाहर थी। फ़ातिमा वहीं थी। दोनों चलीं कि शब्द आया, 'कौन ?'

स्वर रणदूलह का था। मेहरजान को काटो तो ख़ून नहीं। कुछ सँभलकर उसने कहा—'मैं हूँ भाईजान, नाना साहब को छुड़ाने आई थी। छुड़ा दिया। वे चले गये।'

रणदूलह ने गहरी साँस ली। बोले—'बहन, तूने इज़्ज़त रख ली। मैं ख़ुद पछता रहा था कि उसे यहाँ क्यों रहने दिया। उसे छुड़ाने ही आया था पर डर रहा था कि कहीं मेरे आने के पहले ही सब ख़त्म न हो गया हो।'

मेहरजान अवाक् रह गई। फिर बोली—'और उसकी बीबी ?'

'मैं उसे भी आज़ाद कर देता। लेकिन वह ख़ुद रात को न जाने कहाँ चली गई।'

× × ×

इतिहास के पृष्ठ उलटिए तो ज्ञात होगा कि शिवाजी ने जो गढ़ सबसे पहले विजय किया वह था सुलतानगढ़। किन उपायों से वह उनके हाथ लगा, यह कहने का प्रयोजन नहीं। रङ्गराव अप्पा उस समय छूटकर आ गये थे और पुनः क़िलेदार थे। नाना साहब शिवाजी की सहायता कर रहे थे।

उस समय मेहरजान सुलतानगढ़ में अतिथि के रूप में थी। रणदूलह की चेष्टा से ही रङ्गराव को छुटकारा मिला था। इधर रणदूलह को ज्ञात हुआ कि उसकी बहन पर, जो अ... थी, बादशाह की दृष्टि है। और इसी लिए जब बादश... कर्नाटक भेजा तो रङ्गराव को ही विश्वासपात्र समझ... बहन को वह वहीं छोड़ गया था।

रङ्गराव शिवाजी के विरुद्ध लड़े किन्तु पराजित हुए... साहब लड़ते हुए भयङ्कर रूप से घायल हुए। इसी ... पत्नी भी क़िले में पहुँच गई, और उनकी सेवा-शु... लगी।

नाना साहब ने चैतन्य होने पर पत्नी को देखा... उन्हें अहमद के शब्द स्मरण हो आये। उनका चेहरा... लाल हो गया। उन्होंने कहा—'सतीत्व खोकर, ... रणदूलह के पास रहकर तू अपना कलङ्कित मुँह मुझे ... साहस कैसे कर सकी ?'

पत्नी अवाक् रह गई। उसने नाना साहब को ... बताने की चेष्टा की किन्तु नाना साहब पर उसका ... न पड़ा।

मेहरजान अभी क़िले में अतिथि थी। उसने ... सुना। एक बार उसने सोचा, 'यह भी अच्छा हुआ... वह तुरन्त नाना साहब के पास पहुँची और कहने लगी... एक बात कहने आई हूँ; ख़ुदा को गवाह करके कहती ... कहूँगी सच कहूँगी। क्या आप उस पर यक़ीन लाएँ...'

'यक़ीन करूँगा। मुझे आप पर पूरा भरोसा है।'

'तो सुनिए, आपकी बीबी पाक है। उसकी अस्म... धब्बा नहीं लगा है।'

'लेकिन.....।'

"मैं सच कह रही हूँ।" आँखें तरेरते हुए ... ने कहा।

नाना साहब ने देखा, मेहरजान के चेहरे पर सतीत्व... उद्दीप्त हो उठा है। वे आगे कुछ कहने का साहस न ... उनकी आँखें झुक गईं।

दूसरे दिन मेहरजान ने वहाँ से जाने की तैयारी ... उसे विदा करते हुए नाना साहब की पत्नी ने कहा... ऋण मैं कभी न चुका सकूँगी, बहन; आपने ही मेरी रक्षा...

उसका हाथ अपने हाथ में लेते हुए मेहरजान ने ... 'तेरे लिए मैंने कुछ नहीं किया है, बहन; जो कुछ किया... अपने लिए ही किया है।"

नाना साहब की पत्नी कुछ समझीं, कुछ नहीं समझीं...

——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

प्राचीन भारत में स्त्री-राज्य

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पण्डित कृष्णदत्त वाजपेयी, एम० ए०

प्राचीन भारत में स्त्रियों-द्वारा स्वतन्त्र शासन करने के रण बहुत कम मिलते हैं। हमारे अधिकांश राजनीतिकारों ह मत था कि स्त्रियाँ अपनी प्राकृतिक सुकुमारता के कारण -भार को वहन नहीं कर सकतीं। उनके हाथ में शासन की डोर देने से राज्य के ऊपर बड़ी विपत्तियों की आशङ्का है और का पतन अनिवार्य है।* किन्तु प्राचीन साहित्य से ज्ञात है कि कुछ ऐसे भी विचारक थे जो शासकों के अभाव में ों का अभिषेक करने में कोई आपत्ति न समझते थे। यण में श्रीराम को वनवास होने पर वसिष्ठ प्रजा-पालनार्थ को अभिषिक्त करने के लिए कहते हैं।† महाभारत-युद्ध के स होने पर भीष्म युधिष्ठिर को सलाह देते हैं कि पुत्र-हीन राजाओं के राज्य सँभालने के लिए उनकी कन्याओं को सनारूढ़ करो।‡

इतिहास से कुछ स्वतन्त्र शासिकाओं के विषय में पता चलता मेगस्थनीज़ ने पांड्य देश में स्त्रियों-द्वारा शासन का उल्लेख है। नवीं शताब्दी में उड़ीसा के राजा ललिताभरणदेव मृत्यु के बाद उसकी रानी त्रिभुवनदेवी ने सिंहासनारूढ़ होकर -कार्य सँभाला। प्रसिद्ध यात्री मार्को पोलो ने भी १३वीं में गुंतूर-प्रदेश में महिला-शासिकाओं का वर्णन किया है।§ प्रथम गुप्त-सम्राट् चन्द्रगुप्त की महिषी कुमारदेवी अपने पति साथ सम्मिलित-शासन करती थी। यह चन्द्रगुप्त के ांकित-सिक्कों से स्पष्ट है। हिन्दू-महिलायें अपनी पति-रणता के कारण पतियों की जीवितावस्था में उनके शासन- में हस्तक्षेप करना उचित न समझती थीं। हाँ, उनके मार्ग- होने पर या संकटापन्न होने पर उन्हें सन्मार्ग पर लाने और त्ति दूर करने का यथाशक्ति उद्योग करती थीं। मन्दोदरी, , भानुमती और द्रौपदी आदि के सैकड़ों उदाहरण हमारे ने हैं। चित्तौड़ की पद्मिनी ने जिस धैर्य और चातुर्य से ने पति की रक्षा की वह विदित ही है। लेखों से ज्ञात होता है कि चालुक्य-रानियाँ—विजयभट्टारिका, केतलादेवी, अक्कादेवी, कुमारदेवी आदि—अपने पतियों को शासन-प्रबन्ध में काफ़ी सहायता देती थीं।

पति की मृत्यु पर और पुत्रों के नाबालिग़ रहने पर हिन्दू महिलायें प्रतिभू का कार्य बड़ी योग्यता से करती थीं। हमारे इतिहास में ऐसी शासिकाओं के उदाहरण बहुत मिलते हैं। कौशाम्बी-महाराज उदयन के क़ैद कर लिये जाने पर उनकी माता ने शासनकार्य बड़ी उत्तमता से सँभाला। उसी तरह सातवाहन-महिषी नयनिका, वाकाटक-प्रभावती गुप्ता, कश्मीर की सुगन्धा और दिद्दा के नाम उल्लेखनीय हैं। राजपूतरानियाँ कुमारदेवी, कर्णवती, जवाहरबाई आदि और मरहठा-महिलायें ताराबाई, अहल्याबाई, लक्ष्मीबाई जिस चतुराई और वीरता से अपने विपक्षियों से लड़ीं और सङ्कटापन्न समय में भी उन्होंने शासन कार्य सँभालने में जिस योग्यता का परिचय दिया, उससे उनके नाम भारतीय-इतिहास में अमर हैं। भारत की प्रतिभू-शासिकाओं के शासन की प्रशंसा उनके प्रतिद्वन्द्वियों तक ने जी खोलकर की है। १७वीं और १८वीं शती के कुछ योरपीयों ने यहाँ तक लिखा है कि भारत के समृद्ध राज्यों में से ७५ फ़ीसदी राज्य स्त्रियों-द्वारा शासित हैं।

'स्त्री-राज्य' नामक देश—(क) महाभारत (अनु० पर्व) में एक स्त्री-राज्य का वर्णन है जो अर्जुन को विजय-यात्रा के अवसर पर मिला। यहाँ स्त्रियाँ ही स्त्रियाँ थीं और उन पर एक रानी शासन करती थी। अर्जुन को इस पर बड़ा आश्चर्य हुआ, क्योंकि अभी तक उन्हें ऐसा कोई राज्य नहीं मिला था। दूसरे स्थान पर सुगात नामक स्त्रीराज्य के राजा का उल्लेख है जो कलिङ्गराज चित्राङ्गद की कन्या के स्वयंवर में आया था।*

(ख) कामसूत्र (तृतीय श०) में स्त्रीराज्य का उल्लेख ३ बार करके वहाँ की प्रचलित प्रथाओं का वर्णन किया गया है। पहले स्थान में कोशल के साथ स्त्रीराज्य का उल्लेख है।†

इसी ग्रन्थ में दूसरे स्थान (२, ६, ४३) में बाह्लीक देश (बलख़) और 'ग्रामनारी विषय' के साथ स्त्रीराज्य का वर्णन किया गया है।

---

* यत्र स्त्री यत्र कितवो बालो यत्रानुशासिता।
मज्जन्ति तेऽवशा राजन्नद्यामश्मप्लवा इव॥ (महाभारत, ३८, ९२)

† आत्मा हि दारा सर्वेषां दारसंग्रहवर्तिनाम्।
आत्मेयमिति रामस्य पालयिष्यति मेदिनीम्॥ रामा० ध्याकाण्ड ३७,२४।

‡ कुमारो नास्ति येषां च कन्यास्तत्राभिषेचय। (", १२, , ३३)

§ मार्को पोलो, अध्याय ३१।

* सुगातश्च महाराजः स्त्रीराज्याधिपतिश्च यः। (शांतिपर्व ४, ७)

† का० सू० २, ५, २७। टीकाकार ने 'वज्रवन्तदेशात्पश्चिमेन स्त्रीराज्यम्' लिखा है। काशी के संस्करण में 'वङ्गप्रदेशात्पश्चिमेन स्त्रीराज्यम्' है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ग) वराहमिहिर की बृहत्संहिता (१४, २२) के आधार पर पराशर स्त्रीराज्य को उत्तर-पश्चिम में आधुनिक बलख़ देश के पास तुखार देश के आगे मानते हैं।*

(घ) मार्कण्डेय पुराण (अ० ५८, श्लो० ३८) में भी स्त्रीराज्य का वर्णन वाह्लीक देश के साथ आया है।†

(ङ) कौटिलीय अर्थशास्त्र के टीकाकार भट्टस्वामी ने (अधि० १, १५ की) टीका में लिखा है कि सोना, हीरा, पन्ना आदि स्त्रीराज्य में अधिकता से मिलते हैं।

(च) ७वीं शती के चीनी यात्री हुएनसांग ने अपने यात्रा-विवरण में भारत के दो स्त्री-राज्यों का वर्णन किया है, जिन्हें वह पश्चिमी और पूर्वी कहता है। पूर्वी-राज्य का उसने केवल उल्लेख किया है, परन्तु पश्चिमी स्त्रीराज्य के विषय में उसने लिखा है कि ब्रह्मपुर (आधुनिक गढ़वाल और कमाऊँ—कनिंघम) के उत्तर हिमालय पर्वत की मध्यभूमि में 'सुवर्णगोत्र' नामक स्थान है। यहाँ से बहुत उत्तम सोना आता है। यह पूर्व से पश्चिम की ओर फैला है। पूर्वी स्त्रियों के प्रदेश के समान यह भी स्त्रियों का राज्य है। वर्षों से यहाँ की स्वामिनी एक स्त्री है। इसका पति राजा कहाता है, परन्तु राज्य के कामों से उसका कुछ सम्बन्ध नहीं। पुरुषों का काम लड़ना और खेती करना है; शेष कार्य स्त्रियों के अधीन हैं। राज्य भर का यही दस्तूर है।... इस देश के पूर्व में तिब्बत, पश्चिम में सम्पह (?) और उत्तर में खोतान राज्य हैं। (वाटर्स १, पृ० ३३०)

(छ) राजतरङ्गिणी (तरङ्ग ४, श्लो० १६५-१८५) में ललितादित्य की दिग्विजय का वर्णन है। तुखार, काम्बोज, मौट्ट, दरद आदि देशों को जीतकर ललितादित्य ने स्त्रीराज्य पर विजय प्राप्त की, और वहाँ नृहरि की मूर्ति स्थापित की। उसके पौत्र जयापीड ने (८वीं श० के अन्त में) फिर से स्त्रीराज्य को जीता (४, ५८७)। जयापीड के बाद उसके पुत्र ललितापीड को अपने पिता की बुद्धि पर तरस आया जब उसने जाना कि जयापीड ने स्त्रीराज्य को विजय कर बिना उसका समुचित प्रबन्ध किये ही छोड़ दिया था (श्लो० ६६६)।

उपर्युक्त विवरणों से ज्ञात होता है कि भारत में ईसा की दूसरी शती या इससे भी पहले से लेकर कम से कम ९वीं शती तक दो स्त्रीराज्य अवश्य थे। एक हिमालयश्रृङ्खला के अञ्चल में वाह्लीक (बलख़) के पूर्व में या पञ्जाब के वाहीक देश के समीप आधुनिक गढ़वाल और कमाऊँ ज़िलों में रहा होगा। सम्भव है कि इन दोनों स्थानों में स्त्रीराज्य रहे हों। दूसरा स्त्रीराज्य कामसूत्र के टीकाकार के अनुसार बङ्ग देश या बज्रवन्त देश के पश्चिम में था। यही हुएनसांग का पूर्वी स्त्रीराज्य प्रतीत होता है। स्व० डा० हीरालाल ने बज्रवन्त देश को वर्तमान बैरागढ़ का क़िला बताया है, जो मध्य-प्रान्त के ज़िले में है। जायसवालजी के अनुसार मूषिक देश के साथ ही स्त्रीराज्य का उल्लेख पुराणों में मिलता है, जो दक्षिण में ही था। महाभारत की कथा का संकेत दक्षिण की ओर है। विद्वानों ने उसमें वर्णित स्त्रीराज्य की स्थिति मलाबार के निकट मिनीकाय द्वीप में बताई है। अतः यह कहा जा सकता है कि भारत के कई प्रान्तों में स्त्रीराज्य थे।

स्त्रीराज्यों की साधारण दशा—इन राज्यों में स्त्रियों को अधिक स्वातन्त्र्य था। पुरुषों की संख्या कम होती थी। उनके ज़िम्मे लड़ाई और खेती-बारी के काम थे, जैसा हुएनसांग के वर्णन से विदित होता है। रानी का पति राजा कहलाता था, परन्तु शासनाधिकार से वञ्चित रहता था। महाभारत में वर्णित राजा भी ऐसा ही था। पुरुषों की कमी के कारण इन राज्यों में बहुपतित्व-प्रथा का प्रचलित होना स्वाभाविक था। यह प्रथा तिब्बत में और कुछ अंशों में उत्तर के पहाड़ी-प्रदेशों में थी है।* उत्तरी कनारा के नैयरों में, मदुरा और त्रावनकोर के तोत्तियर और वेल्लरों में भी कुछ समय पूर्व यह प्रथा थी, अब नष्टप्राय है।† कामसूत्र से ज्ञात होता है कि स्त्रीराज्य और उसके पास के वाह्लीक तथा ग्रामनारीविषय में बहुपतित्व के साथ अन्य नाना भाँति के व्यभिचारों का बाहुल्य था। महाभारत में इन्हीं कारणों से बाह्लीकों को बुरी तरह कोसा गया है। इन देशों में धर्म के प्रति उदासीनता थी; शायद इसी के प्रति के लिए ललितादित्य ने स्त्रीराज्य में नर-नारायण की मूर्ति स्थापित कर वहाँ भी कुछ काल के लिए आर्यधर्म का सिक्का जमाया।

सामाजिक और धार्मिक दृष्टियों से अवनत होते हुए भी राज्य धन-धान्य से संपन्न थे। महाभारत, भट्टस्वामी और हुएनसांग के लेख इसकी पुष्टि करते हैं। हुएनसांग पश्चिमी स्त्रीराज्य से आगे फोलिन नामक देश के निकटस्थ टापू का वर्णन करता हुआ लिखता है कि वहाँ स्त्रियों का राज्य है। इनके बच्चे बहुत हैं, जिनका अदला-बदला वे फोलिनवालों से किया करते हैं। फोलिन-नरेश कुछ नियत समय के लिए थोड़े पुरुष भेजता है। सहवास से उत्पन्न लड़कियाँ रख ली जाती हैं, लड़के ख़त्म कर दिये जाते हैं। इन स्त्री-राज्यों का सङ्गठन अच्छा था। अर्जुन जैसे वीर पुरुष को भी इनका सङ्गठन देखकर दाँतों-तले उँगली दबानी पड़ी, जैसा कि महाभारत से स्पष्ट है। कश्मीर के ललितादित्य और जयापीड़ नरेशों ने कई बार लड़कर भी स्त्रीराज्य पर पूरी विजय नहीं की। इन राज्यों की पर्वत या समुद्र के बीच की स्थिति इनकी संरक्षा में काफ़ी सहायक थी।

* बृहत्संहिता, विजयनगरम् संस्करण, भाग १, पृ० २९२।
† 'कुन्यता लडहाश्चैव स्त्रीराज्या कलिङ्गकाः।
+ वसे पृथिव्यां वाह्लीकाः' (महा० ५, ३९, ८०)

* *Tappir :* Punjab Customary Law II, 1
† *West and Bühler :* Bombay Gazetteer I,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री-राज्य केवल भारत में रहे हों, ऐसी बात नहीं। संसार प्रायः सभी देशों की अनुश्रुतियों में ऐसे राज्यों के वर्णन मिलते हैं जिनमें से कुछ ऐतिहासिक तथ्य-पूर्ण भी हैं। हुएनसांग का भारत की सीमा के बाहर उपर्युक्त द्वीप का वर्णन ऐसा ही है। चीन के हान-वंशीय राजाओं के समय कोरिया के निकटस्थ एक द्वीप में केवल स्त्रियों की बस्ती थी। उसमें एक कुआँ था, जिसके पानी का उस समय के ऐतिहासिकों ने यह गुण बताया है कि उसको देखने से ही स्त्रियाँ गर्भवती हो जाती थीं। एक पुरानी चीनी पुस्तक में जावा द्वीप के निकटस्थ एक द्वीप का वर्णन है जहाँ की महिलायें दक्षिण का मलयानिल चलने पर गर्भ धारण कर लेती थीं, जिससे वे गर्भवती हो जाती थीं और केवल लड़कियाँ जनती थीं।

पाँचवीं सदी की एक चीनी पुस्तक में एक विचित्र कथा है जो ऐतिहासिक कही गई है। उसमें लिखा है कि फूसङ्ग से पूर्व ५ मील की दूरी पर स्त्रीराज्य है। वहाँ की स्त्रियाँ प्रत्येक वर्ष के प्रथम या द्वितीय मास में एक नदी में नहाती हैं, जिससे वे गर्भवती होकर छठे या सातवें महीने में बच्चे जनती हैं। इन स्त्रियों के गलों के सफ़ेद बालों को बच्चे चूसते हैं, और उन्हीं से उनका भरण-पोषण होता है इत्यादि।

हैमबर्ग के गिरजाघर के इतिहास में भी लिखा है कि बाल्टिक-समुद्र के पूर्वी किनारे पर एक स्त्रीराज्य है। वहाँ की स्त्रियों के जल-पान से ही गर्भ हो जाता है। परन्तु यह भी लिखा है कि उनके बालक बड़े कुरूप होते हैं, पर बालिकायें अत्यन्त सुन्दरी होती हैं।

ऊपर के वर्णनों से स्त्रीराज्यों का अस्तित्व संसार के विभिन्न देशों में सिद्ध होता है। इनमें से कुछ काल्पनिक प्रतीत होते हैं, पर कुछ राज्य ऐसे अवश्य थे, और किसी न किसी रूप में अब भी हैं, जिनमें स्त्रियों की संख्या बहुत अधिक थी और शासन-सूत्र स्त्रियों के ही हाथ में थे। कम से कम प्राचीन भारत में ऐसे राज्यों का अस्तित्व निर्विवाद सिद्ध है।

——

विवाह की उत्पत्ति

श्रीयुत श्यामनन्दनसहाय, एम० ए०, एम० इ-डी०, डिप० एल० एस-सी०,
एफ़० आर० इकॉन० एस० (लन्दन), फ़ेलो पटना-विश्वविद्यालय

गोलार्द्धों की सैर कर आइए, दोनों ध्रुव छान आइए, आप चाहे भी चले जाइए—चाहे वह चीन हो या तुर्किस्तान, अमरीका या जापान, रूस हो या इँग्लिस्तान, सभी जगहों, सभी समाजों सभी सम्प्रदायों में, हिन्दुओं के यहाँ, मुसलमानों और ईसाइयों के यहाँ, विवाह की महत्ता है, उसकी व्यापकता है। संस्था से सभी परिचित हैं। लोग जानते हैं कि विशेष प्रकार से सम्पन्न तथा समाज-द्वारा स्वीकृत होने पर पुरुष और स्त्री के संयोग को ही विवाह कहते हैं। विवाह वह मानव-संस्था है जिसकी सत्ता सामाजिक अनुमोदन पर निर्भर है। इस व्यवस्था में दो प्रकार के अधिकार एवं कर्तव्य निहित हैं, दोनों सङ्गियों तथा उनसे उद्भूत सन्तान के। सर्वप्रथम विवाह व्यवस्थित दाम्पत्य संयोग है। पर साथ ही यह आर्थिक संस्था भी है, जिसका प्रभाव सङ्गियों के साम्पत्तिक अधिकारों पर कई तरह से प्रत्यक्ष है। जहाँ तक हो सके, आवश्यकतानुसार स्त्री एवं सन्तान का पालन पति का धर्म है किन्तु उनका भी यह कर्तव्य है कि वे उसकी सेवा करें। उन पर तो उसका कुछ अधिकार होता ही है; यद्यपि सन्तान पर उसका अधिकार थोड़े ही दिनों तक रहता है। इसके अतिरिक्त विवाह के द्वारा नवजात व्यक्ति का स्थान अपने समाज में निश्चित होता है। यह ज़रूरी है कि वैवाहिक संकार की सिद्धि लौकिक एवं धर्मशास्त्र-सम्बन्धी नियमों पर आश्रित हो। इन नियमों के अनुकूल यह आवश्यक हो जाता है कि चाहे सङ्गियों की, अथवा उनके माता-पिता की, अथवा सबों की राय ली जाय। कभी-कभी वर को शुल्क भी देना पड़ता है; और बहुधा वर के सास-ससुर को ही वधू के लिए स्त्री-धन का प्रबन्ध करना पड़ता है। क़ानून-द्वारा वैवाहिक संस्कार निर्दिष्ट रहते हैं; और कोई भी पुरुष अथवा नारी, पति या पत्नी नहीं बन सकती जब तक इसकी शर्तें पूरी न की जायँ।

विवाह के मूल हमें आदि-अवस्था में मिलते हैं। सारांश यह है कि भिन्न लिङ्गों के व्यक्ति परिवार का सृजन तथा पालन करें। प्रागैतिहासिक युगों में भी, पुरुष तथा नारी (अथवा कई स्त्रियाँ) एक साथ रहती थीं। उनके बीच पारस्परिक दाम्पत्य-सम्बन्ध स्थापित होता था; उनके संयोग से सन्तान उत्पन्न होती थी। पुरुष अपने परिवार को आश्रय देता था। स्त्री उसकी सहायता तथा बच्चों की देखरेख करती थी। प्राणिवर्ग के अन्य जीवों में भी सदृश व्यवहार देखे गये हैं। उनमें भी संतति-रक्षा एवं प्राणि-विशेष के अस्तित्व के हेतु अपत्य-अन्तःप्रेरणा तथा मातृस्नेह आवश्यक होते हैं। अधिकांश पक्षियों में नर और मादा सहवास करते हैं, केवल उत्पत्ति-काल में ही नहीं, बल्कि उसके बाद भी, और उनमें माता तथा पिता दोनों में अपत्य-अन्तःप्रेरणा चरम सीमा तक पहुँच चुकी है। मिस्टर ब्रेम का तो कहना है कि वास्तविक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाह केवल पक्षियों में ही पाया जाता है। पर यह उक्ति दूध पिलानेवाले जन्तुओं पर लागू नहीं होती। इसमें सन्देह नहीं कि माता अपने बच्चों के कल्याण के लिए चिन्तित रहती है, सस्नेह उनका पालन करती है, पर साधारणतः नर और मादा का दाम्पत्य सम्बन्ध सहवास तक ही सीमित रहता है विशेष रूप से यह बात बन्दरों में, जिनमें गुरिल्ले तथा वनमानुष भी हैं, पाई जाती है। ये मनुष्यवत् बन्दर पारिवारिक झुण्डों में मिले हैं; प्रत्येक परिवार में एक युवा नर होता है और एक या अधिक युवती मादायें होती हैं; एक या एक से ज़्यादा बच्चे होते हैं जिनकी अवस्थायें भिन्न होती हैं। नर परिवार की रक्षा करता है तथा उसे चेतावनी देता रहता है। किन्तु और बड़े समुदाय भी मिले हैं। मनुष्यों में भी समान दृश्य देखे गये हैं। असभ्य एवं सभ्य दोनों श्रेणियों के मनुष्यों में माता-पिता तथा सन्तान परिवार का अङ्ग होती हैं, पिता उनकी रक्षा तथा उनका पालन करता है। वेस्टरमार्क की धारणा है कि बन्दर तथा मनुष्य दोनों के आचरणों के आधार हैं सदृश अन्तः-प्रेरणायें जिनके अनुकूल अल्पसंख्यक सन्तति, एक बच्चे की एक समय उत्पत्ति तथा दीर्घ शैशव अनिवार्य हैं। दीर्घ शैशव के कारण ही शिशु-पालन के हेतु वैवाहिक एवं पैतृक सम्बन्ध की आवश्यकता होती है।

इस मत का कि मिश्रित सहवास विश्वव्यापक है कोई भी तथ्य नहीं। डार्विन के अनुसार नर चौपायों की ईर्ष्या से यह स्पष्ट है कि प्रकृति में ऐसे जीवन का कोई स्थान नहीं।

दूसरी बात यह है कि कुछ ऐसी जातियाँ हैं जिनमें शिशु का सम्बन्ध पिता के निस्बत मामा से अधिक घनिष्ठ है। कुछ ऐसे अपवाद हैं जैसे, सुमात्रा तथा आसाम की कृषक जातियों में—जिनमें पति स्त्री के साथ न रहकर उसके मैके जाया करता है, और जनित-सन्तति माता ही के साथ रहती हैं। बहुधा पिता की अपेक्षा शिशु पर मामा का अधिकार अधिक, कभी-कभी पूर्ण रूप से, रहता है। ऐसी भी स्थितियाँ देखी गई हैं जिनमें अनेक असभ्य जातियाँ अपनी वंश-परम्परा माता ही से बतलाती हैं। पर इसका तात्पर्य यह कदापि नहीं कि सन्तान के ऊपर पिता का अधिकार माता अथवा उसके मैके के कुटुम्बों से कम होता है। किसी भी अवस्था में पैतृक धर्म विश्वमान्य रहा है, जब सब बाल-बच्चे अपने पिता के साथ रहते हैं, चाहे कि अधिकार कितना भी सीमित हो।

कहने की आवश्यकता नहीं कि पति या पिता का पारि सम्बन्ध केवल दाम्पत्य तथा जनन-क्रिया पर ही आश्रित रहता, उस पर स्त्री तथा बच्चों की रक्षा एवं पालन का है। बहुत-सी असभ्य जातियों में पुरुष उस समय तक नहीं कर सकता जब तक वह यह प्रमाण न दे कि वह योग्य है। ब्रिटिश गायना की मैकूसी जाति में युवक विवाह नहीं कर सकता जब तक वह यह न सिद्ध कर वह पुरुष है—और पुरुष का कार्य कर सकता है। बिना हुए उसे अपने शरीर में दिये हुए ज़ख्म को सहन पड़ता है अथवा उसे अपने को काटनेवाली चींटियों से में सिलवाना पड़ता है अथवा ऐसी ही कसौटियों पर पूर्वक उतरना पड़ता है। वह जङ्गल में कुछ ज़मीन एक प्रकार का अन्न उपजाता है और शिकार या मारकर लाता है, यह दिखलाने के लिए कि वह अपने तथा को पाल सकता है। ब्रिटिश ईस्ट अफ्रीका की जाति में बाल-विवाह पर अवरोध लगाने के लिए यह लगाया जाता है कि कोई पुरुष तब तक विवाह नहीं कर जब तक वह घड़ियाल न मारे और स्त्री को उसका खाने के लिए न दे। बेचुआना तथा ज़ाम्बेज़ी के दक्षि काफ़िर जातियों में विवाह के पूर्व युवक को गैंडा पड़ता है। दक्षिण-पूर्व एशिया की मस्तक-शिकारी में यह अनिवार्य है कि विवाह करने के हेतु अपनी के प्रमाण में प्रत्येक युवक कम से कम एक मस्तक लावे।

उपर्युक्त कथन से यह स्पष्ट है कि विवाह और पति घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। शिशु के कल्याण ही के हेतु मादा सहवास करते हैं। बहुत-सी असभ्य जातियों में विक विवाह उस समय तक सम्पन्न नहीं होता चाहे संस्कार ही समाप्त हो चुका हो, जब तक सन्तान उत्पन्न नहीं अथवा गर्भ के चिह्न प्रकट नहीं होते। कहीं-कहीं ऐसा देखने में आया है कि गर्भ धारण करने एवं शिशु की के अनन्तर ही विवाह होता है या उसे बाध्य कर दिया जाता अतः यह उक्ति अनुचित न होगी कि परिवार ही वि आधार है न कि विवाह परिवार का।

—·—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

नालन्दा

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीयुत मलिन्द

भावुक मन था रोक न पाया
सज आये पलकों में सावन,
नालन्दा, वैशाली के
दूहों पर बरसे पुतली के घन। (रेणुका)

× × ×

यह नालन्दा-खँडहर में
सो रहा मगध बलशाली।
-दिनकर

सैकड़ों वर्षों तक नालन्दा समस्त भारत का एक प्रसिद्ध विद्यापीठ एवं पवित्र स्थान रहा। इसकी कीर्ति सातवीं शताब्दी से पहले ही सारे पूर्वीय भूगोलार्द्ध में फैल गई थी। बख़्तियार खिलजी के आक्रमण के अनन्तर इसकी महिमा लुप्तप्राय हो गई। फिर जब सरकारी पुरातत्त्व-विभाग ने इसके भग्नावशेषों को खोद-खोदकर इसके महत्त्व को प्रकट किया तब लोगों को इसकी कीर्ति का पता लगा।

इसका नालन्दा नाम क्यों पड़ा, इसमें थोड़ा-बहुत मतभेद है। नालन्दा के आस-पास बहुत-सी झीलें हैं, जिनमें से 'नाल' निकाले जाते थे। संस्कृत में नाल कमल की जड़ को कहते हैं। इन्हीं नालों के कारण सम्भवतः इसे नालन्दा नाम दिया गया होगा। इसका शुद्ध नाम नालन्दा है, नालन्द नहीं जैसा कई लोग कहते देखे गये हैं। प्राचीन ग्रन्थों में, शिलालेखों और ताम्रपत्रों पर एवं प्राचीन मूर्तियों और मुद्राओं पर नालन्दा ही लिखा हुआ मिलता है।

स्थान-निर्देश—इस समय जहाँ पटना ज़िले का 'बड़गाँव' नामक ग्राम है, वहीं प्राचीन नालन्दा था। यह बड़गाँव राजगृह से लगभग चार कोस उत्तर की ओर है तथा बिहार बख़्तियार-पुर लाइट रेलवे के नालन्दा नामक स्टेशन से लगभग डेढ़ कोस की दूरी पर है। स्टेशन से गाँव तक सीधी एवं पक्की सड़क है। हाल में बड़गाँव से दो-ढाई कोस की दूरी पर 'नानन्द' नामक एक गाँव का पता चला है। यह नानन्द 'नालन्दा' का ही

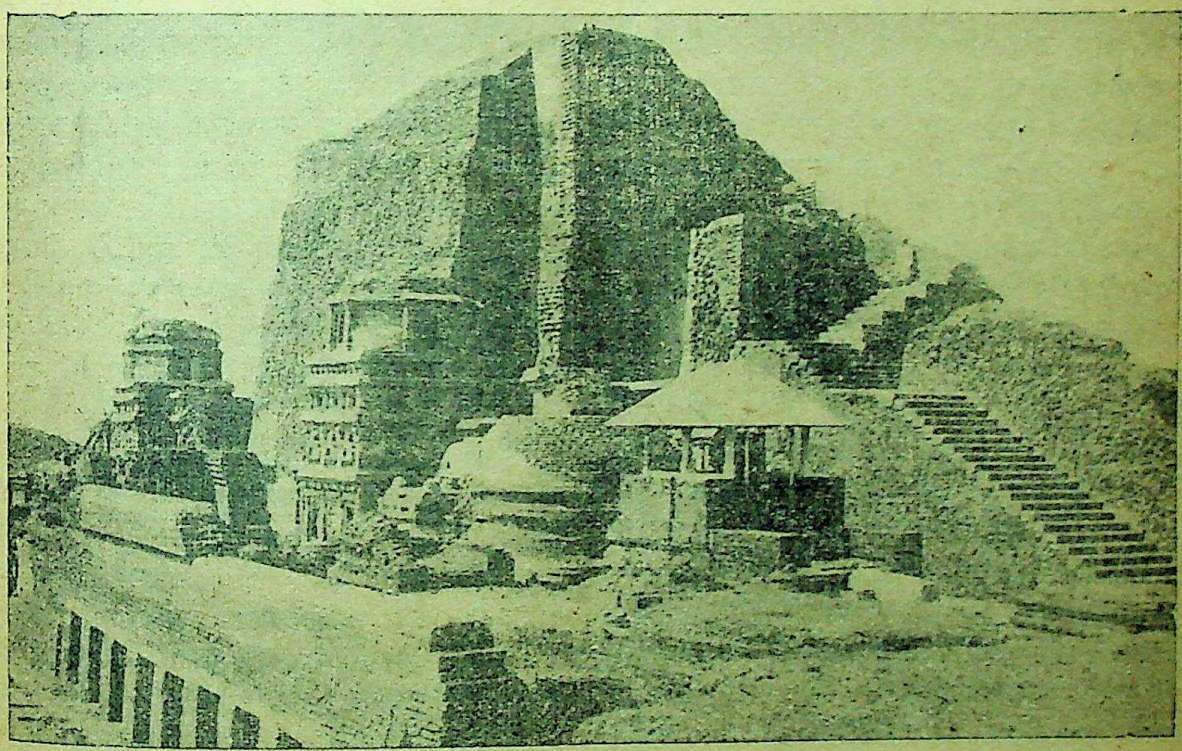

नालन्दा के ध्वंसावशेष

नाम और निर्वचन—निःसन्देह नालन्दा नाम प्रायः ढाई हजार वर्ष से भी पहले का है। महावीर स्वामी एवं गौतम बुद्ध के समय में नालन्दा का नाम प्रसिद्ध था। महावीर स्वामी ने यहाँ अपने १४ चौमासे व्यतीत किये थे और गौतम बुद्ध ने भी इसके समीप प्रावारिकाम्रवन में बहुत दिनों तक निवास किया था।

विकृत रूप जान पड़ता। यहाँ भी दूर तक विस्तीर्ण खँडहर और कई प्राचीन जलाशय हैं

नालन्दा हिन्दुओं के लिए तो तीर्थस्थान नहीं है पर पास के बड़गाँव नामक ग्राम में एक सूर्य-कुण्ड और एक सूर्य-मन्दिर है जो हिन्दुओं का तीर्थ है। यहाँ सायङ्काल में सूर्यास्त का दृश्य बहुत ही मनोरम होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राचीन ख्याति—प्राचीन जैन एवं बौद्ध ग्रन्थों में नालन्दा को राजगृह की एक बाहरी बस्ती माना है, जो उक्त दोनों महापुरुषों के समय बहुत समृद्ध थी और जहाँ अनेक धनाढ्य लोग रहते थे। इस बस्ती में सैकड़ों बड़े-बड़े मकान थे। यह स्थान लोगों से भरा रहता था। चीनी यात्री हुएनसांग ने लिखा है कि इस स्थान को पाँच सौ व्यापारियों ने दस कोटि सुवर्ण मुद्राओं में मोल लेकर भगवान् बुद्ध को भेंट कर दिया था। इसके प्रायः ३०० वर्ष पीछे मौर्य-सम्राट् अशोक के समय में भी नालन्दा की स्थिति में कोई न्यूनता नहीं आई होगी। तभी तो बौद्धों की तीसरी बैठक में, जो पाटलिपुत्र में हुई थी स्थिरवाद के अनुयायियों से पृथक् होकर सर्वास्तिवादी एवं उनके साथी और ग्यारह सम्प्रदायवाले यहाँ चले आये थे। इसके पश्चात् शुङ्गों के समय में भी यह स्थान प्रसिद्ध रहा होगा, क्योंकि शुङ्ग राजा पुष्पमित्र का उसकी सम्बन्धिनी किसी स्त्री से, जो नालन्दा से आई थी, भेंट करने का समाचार तिब्बत के इतिहास-लेखक तारानाथ ने दिया है।

इसके अनन्तर यद्यपि चौथी शताब्दी तक हमें ऐसे प्रमाण नहीं मिलते जिनसे नालन्दा की परिस्थिति पर प्रचुर प्रकाश पड़े, तथापि चीनी यात्री फ़ाहियान के वर्णन से, जो भारतवर्ष में पाँचवीं शताब्दी में आया था, अनुमित होता है कि उस समय यह स्थान उच्च स्थिति पर नहीं था, अन्यथा वह इसका वर्णन करने से न चूकता। उसने तो केवल 'नाल' नामक एक ग्राम का उल्लेख किया है, किसी विहार या स्तूप एवं किसी मन्दिर या प्रासाद का नाम तक नहीं लिया। सम्भव है, उसका ध्यान इस ओर न गया हो। यह भी सम्भव है कि हूणों के आक्रमण से यहाँ सब कुछ अस्त-व्यस्त और छिन्न-भिन्न हो गया हो। मुसलमानों के आक्रमण ने तो नालन्दा को नष्ट ही कर दिया। बालादित्य नामक किसी व्यक्ति-द्वारा एक मन्दिर का अग्निदाह के अनन्तर जीर्णोद्धार किया जाना एक शिलालेख में लिखा है। सम्भव है, यह अग्निदाह हूणों के समय में किया गया हो या कुछ अर्वाचीन हो। गुप्त साम्राज्य के अन्तिम समय में हूणों के दुःखप्रद आक्रमण उत्तर भारत में हुए थे जिनका अनुमान महाराज स्कन्दगुप्त के शिलालेख से चलता है। स्कन्दगुप्त ने ही इनका समुचित दमन भी किया था। तथापि यशोवर्म्मदेव ने उनका पूर्ण रूप से दलन किया और इस बृहत्कार्य में बालादित्य ने, जो मगध-प्रदेश का शासक था, उसका हाथ बँटाया था। नालन्दा से प्राप्त यशोवर्म्मा के शिलालेख से पता चलता है कि इस काल में नालन्दा का वैभव बहुत आगे बढ़ चुका था। इसमें लिखा है—"नालन्दा अपने शुभ्र ऊँचे चैत्यों की किरणों से बड़े-बड़े राजाओं की नगरियों को मानों हँसती है और इसके ऊँचे प्रासादों एवं विहारों की पंक्तियाँ जिनमें प्रतिष्ठित एवं धुरन्धर विद्वान् वास करते हैं, सुमेरु पर्वत की—जिसमें विद्याधर रहते हैं—शोभा रखती हैं।" इसी में उक्त राजा बालादित्य ने अपना एक जयस्तम्भ खड़ा किया था, जो शत्रुओं पर विजय का था। यह लेख डाक्टर हीरानन्द शास्त्री के अनुमान छठीं शताब्दी का है। यदि ये यशोवर्मदेव, कन्नौज महाराज हों तो आठवीं शताब्दी का है।

फ़ाहियान के पीछे हुएनसांग के समय में तो नालन्दा की पराकाष्ठा को पहुँच चुकी थी। यह मानना होगा कि मौखरी और चन्द्रवंशी राजाओं एवं आसाम के शासकों के में नालन्दा की दशा सुधरी होगी।

सम्भवतः नालन्दा महाविहार के प्रथम संस्थापक थे। पर इसका कोई निश्चित प्रमाण अभी तक नहीं है। जो हो, इसमें तो सन्देह नहीं कि गुप्तकाल में विश्वविद्यालय का पूर्ण विकास हो चुका था। तब से सात सौ वर्षों तक क्रमशः गुप्त, वर्द्धन, और पालवंश के के संरक्षण में यह विद्यालय ज्ञान का केन्द्र बना रहा।

विहाराधिपति शीलभद्र ने हुएनसांग को नालन्दा विद्यालय में प्रविष्ट होने की अनुमति दी थी। वह बुद्धभद्र दस दिन तक चार छतोंवाले मकान में ठहरा था। उक्त हुए वर्णन के अनुसार भिन्न-भिन्न ६ राजाओं ने नाना मकान बनवाये थे। ये सब विहार थे। इनके चारों ईंटों का एक परकोटा था। इसमें एक ही द्वार था, लोग महाविद्यालय में आ जा सकते थे। इस महाविहार साथ ही आठ बड़े-बड़े शालागृह थे, जिनकी खिड़कियों की नानाविध आकृतियाँ एवं सूर्य और चन्द्रमा की दिव्य दृश्य दिखाई दिया करते थे। यहाँ से लोग कमल की झीलों के मनोहर कमलों के समूह की एवं आम के अन्यान्य वृक्षों की छटा का अनुपम दृश्य देखकर अपने को शांत करते थे। आँगन के चारों ओर बने हुए साधु लोगों एवं अध्यापकों के निवास-स्थान थे।

हुएनसांग के थोड़े ही पीछे एक और चीनी बौद्ध ईत्सिंग भारत आया और बहुत दिनों तक नालन्दा में उसके लेखों से पता चलता है कि उसके समय में नालन्दा आठ बड़े-बड़े शालागृह थे और बड़े विहार के ३०० कमरे वहाँ ३००० से अधिक लोग रहते थे।

आठवीं और नवीं शताब्दी में भी नालन्दा का प्रभाव दूर तक फैला हुआ था। यहाँ तक कि जावा, सुमात्रा के वंशीय बाल-पुत्र ने, जो वहाँ का तत्कालीन राजा था, के द्वारा बङ्गाल के प्रसिद्ध महाराज देवपालदेव से पूछकर एक महाविहार बनवाया था और उसकी देख-भाल के भिक्षुओं के खान-पान, रोगियों के भैषज्य तथा बौद्ध के लेखनादिक कार्य या चरु सत्रादि के कृत्यों के महाराज से यहाँ पाँच गाँव दिलवा दिये थे। पाल धर्मावलम्बी थे। उन्होंने नालन्दा की सब प्रकार से नालन्दा से प्राप्त मुद्राओं पर जो धर्म-चक्र-प्रवर्तन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ता है—बीच में चक्र, आस-पास दोनों ओर बैठा हुआ क मृग, वही इन राजाओं के शासन-पट्टों पर भी मिलता है। प्रतीत होता है कि यह चिह्न नालन्दा महाविद्यालय का था, जो ज्ञान-प्रचार का द्योतक था।

नालन्दा में जो खँडहर खोदकर निकाले गये हैं वे या तो वशेष हैं या चैत्य अथवा स्तूप हैं या मूर्तियाँ (पूर्ण या ण्डत) लेख (पाषाणों एवं ताम्रपत्रों पर), मिट्टी की मुद्रायें, ी अथवा धातु के पात्र, और धातु, मिट्टी या पत्थर की न्य वस्तुयें हैं।

यहाँ के सभी मकान जो खोदकर निकाले गये हैं प्रायः ईंटों ी बने हुए हैं और कोई भी गुप्त काल से पहले का नहीं है। वतः ये दो भागों में बाँटे जा सकते हैं—एक विहार, स्तूप या चैत्य।

मकान (Structures) जैसा कि भग्नावशेषों से स्पष्ट होता नालन्दा के विहार प्रायः एक ही प्रकार के हैं। वे सब सम रस्र हैं। उनके अन्दर चारों ओर कोष्ठ हैं और खुला हुआ मदा है। बीच में चौकोर आँगन है, जिसमें एक कुआँ ा हुआ है। बरामदा या तो बराबर की दूरी पर बने हुए भोंवाला होगा या बिना छत का। बाहर को दीवार प्रायः ी और निरलङ्कार है, केवल सामने की ओर प्राकार-मूल के पास ईंटें विशेषरूपेण संस्कृत हैं। इन प्रकोष्ठों में कोई वातायन खिड़की होती थी या नहीं यह अनिश्चित है। इन कमरों ीवारों की सुटाई में कंक्रीट की वेदिका जैसी बनी हुई होती जो प्रायः चारपाई या आसन का काम देती थी। इन ारों में काट-काटकर आले या ताक बनाये जाते थे। उनमें ादिकार्थ मूर्तियाँ रक्खी जाती थीं। ये बहुत गहरे होते थे। ान के एक ओर प्रवेश-द्वार होता था जो प्रायः बाहरी प्रकोष्ठ ओर खुलता था। इसके ठीक सम्मुख कमरों की पंक्ति के वाले कमरे में विहार की मुख्य प्रतिमा प्रतिष्ठित होती थी, पर प्रत्येक आगन्तुक का ध्यान जाता था। यत्र-तत्र बरामदों ी पीठिकाओं पर मूर्तियाँ स्थापित होती थीं।

स्तूपों की रचना या तो भगवान् बुद्ध के किसी शारीरिक पर या किसी अन्य प्रसिद्ध बौद्ध व्यक्ति के शारीरिक धातु अवशेषों पर की जाती थी अथवा इनका निर्माण किसी पवित्र न पर स्मारक के रूप में किया जाता था। इनकी रचना -गोलाकार होती थी जिसके शिखर पर एक या अनेक छत्र थे। इनके चारों ओर प्रायः वेदिका या वेष्टन-स्तम्भ वा दीवार होती थी। बड़े स्तूप के आसपास छोटे-छोटे स्तूप दिये जाते थे, जिनमें बौद्ध-भिक्षुओं के धातु रख दिये जाते ा जो केवल उपासकों की श्रद्धा-भक्ति के चिह्न होते थे।

धातुमयी, पाषाणमयी और अन्य मूर्तियों को छोड़कर यहाँ हार नं० १) एक सिंहासन का पाया मिला है जो अष्टधातु का बना हुआ है। सम्भवतः यह पाया किसी विशाल दिव्य मूर्ति के आसन का या किसी उच्च व्यक्ति के बैठने के पर्य्यङ्क अथवा सिंहासन का भाग है। ऐसा प्रतीत होता है। इसमें हाथी का दमन करता हुआ सिंह बना है। इसके सिवा एक राजदण्ड और दो तूणीर मिले हैं। ये तीनों वस्तुयें भी प्रायः उसी सिंहासन से सम्बन्ध रखती हैं। सम्भव है कि ये किसी विशाल राज-मूर्ति के अवशेष हों, जो इस आसन पर विराजमान थीं। कवच और शिरस्त्राण के टुकड़ों का मिलना भी इसी अनुमान को पुष्ट करता है। हाथ और पाँव भी मिले हैं जो प्रायः इसी मूर्ति के होंगे। इनका निर्माण-कौशल उस समय की कारीगरी का एक बहुत बढ़िया उदाहरण है। अँगुलियों का भाव और विन्यास वास्तविक है और वितर्क या आश्चर्य का उद्बोधन करता है। सम्भवतः ये आठवीं या नवीं शताब्दी की बनी हुई हैं। पाल राजाओं के राज्य में मगध में उच्च कोटि के शिल्पी थे। यह इतिहास क्या विश्व जानता है? इसी विहार से समुद्रगुप्त, धर्मपाल, और देवपाल के ताम्रपत्र एवं महाराज यशोवर्मदेव के समकालीन शिलालेख भी प्राप्त हुए हैं जो नालन्दा के संग्रहालय में सुरक्षित हैं। इससे पता चलता है कि यह स्थान नालन्दा का प्रमुख विहार रहा होगा।

पत्थरघट्टी—विहारों के अवशेषों के साथ ही एक मन्दिर के भग्नावशेष हैं जिन्हें लोग पत्थरघट्टी के नाम से पुकारते हैं। राजा बालादित्य ने नालन्दा में एक रमणीय प्रासाद बनवाया था और उसमें गौतम बुद्ध की एक सुन्दर प्रतिमा स्थापित की थी। ऐसा ऊपर वर्णित महाराजा यशोवर्मदेव के शिलालेख से पता चलता है। सम्भव है कि यह सामग्री उसी प्रासाद की हो।

पत्थरपट्टी किसी मन्दिर का निचला भाग है। तलदर्शन में यह समचतुरस्र है। इसका प्रवेशद्वार पूर्व को है जहाँ छोटी-छोटी सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। इसमें पत्थर की उत्कीर्ण पट्टियाँ जिनकी संख्या लगभग २११ के हैं बहुत मनोहर हैं। इन सब पट्टियों में षट्कोण का आलेख एवं आधे खुले द्वार का चित्र बढ़िया कारीगरी के उदाहरण हैं। षट्कोण के सूत्रपातवाले चित्र बतलाते हैं कि नोकदार वृत्त-खण्ड के सदृश ऐसे चित्र भी मुसलमानों के आगमन से बहुत पूर्व भारतीय शिल्पी जानते थे। तो ऐसा मान लेना कि मुसलमान कारीगरों ने ही इस देश के शिल्पियों को इनका बनाना सिखाया था—भ्रान्तिमूलक है। ऐसे ही अन्यान्य आलेख हैं जो देखते ही बनते हैं। पूर्वीय भाग के उत्तर की ओर एक लेख भी है जो गुप्त-काल से कुछ पूर्व का प्रतीत होता है। इस पत्थरघट्टी के ऊपर पत्थरों के बड़े-बड़े खण्ड हैं, जिन पर अर्वाचीन ब्राह्मी लिपि के अक्षर खुदे हैं। ये शिल्पियों के सांकेतिक चिह्न प्रतीत होते हैं।

ऐसी मुद्रायें जो तीर्थस्थानों पर भेंट चढ़ाई जाती होंगी या प्रसाद के रूप में दी जाती होंगी, यहाँ बहुत-सी मिली हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये भिन्न-भिन्न आकार-प्रकार की हैं। कइयों को तोड़ने से उनके अन्दर जिस बौद्ध-मन्त्र की छाप मिलती है वह यह है—"ये धर्मा हेतु-भवा हेतुस्तेषां तथागतो ह्यवदत्। तेषाञ्च यो निरोध एवंवादी महाश्रमणः।" (यह पाली भाषा में लिखित श्लोक का संस्कृत-रूप है)। ये ठोस स्तूपाकार हैं। अन्यान्य मुद्रायें भी स्तूपों-जैसी ही मिली हैं। इन पर भी यही मन्त्र लिखा है। साथ ही दो मुख्य बोधिसत्त्वों—मैत्रेय और अवलोकितेश्वर की सुन्दर प्रतिमायें भी खचित की गई हैं।

शिक्षा एवं नियमानुशासन—नालन्दा महाविद्यालय में विद्यार्थियों की संख्या प्रायः दस हज़ार रहती थी। लब्धप्रतिष्ठ बौद्ध भिक्षु उनके अध्यापक थे। छात्र बड़े ही गुरु-भक्त थे। 'तप, ब्रह्मचर्य और श्रद्धा' इन तीनों के सुभग सम्मिश्रण से छात्रों का जीवन दीप्तिमान् रहता था। बौद्ध-धर्मग्रन्थों के अतिरिक्त वेद, हेतुविद्या, शब्दविद्या, तन्त्र, सांख्य तथा अन्य विषय भी पढ़ाये जाते थे।

यहाँ शिक्षा के दो विभाग थे—प्राथमिक और उच्च। प्राथमिक शिक्षा में सबसे पहले व्याकरण पढ़ना पड़ता था। उसके बाद क्रमशः हेतुविद्या, अभिधर्मकोष (त्रिपिटक का एक खण्ड) और जातक (बौद्ध कथायें) का अध्ययन करना पड़ता था। इस प्रकार प्राथमिक शिक्षा समाप्त कर लेने पर विद्यार्थी उच्च शिक्षा ग्रहण करने के योग्य होते थे। तब उन्हें विद्वान् अध्यापकों के साथ सम्भाव्य प्रश्नों पर शास्त्रार्थ करके ज्ञानार्जन करना पड़ता था। इस प्रकार जब उनकी शिक्षा समाप्त हो जाती थी तब वे राजसभा में जाते थे और वहाँ अपनी विद्वत्ता का परिचय देकर किसी राजकीय पद पर नियुक्त होते थे अथवा भूमि आदि का दान पाते थे। प्रखर प्रतिभाशाली विद्वानों की स्मृति-रक्षा के लिए उनका नाम प्रमुख एवं उच्च द्वारों पर धवल वर्णों में अङ्कित कर दिया जाता था।

विद्यालय का नियमानुशासन भी प्रशंसनीय था। सङ्घ के सभी निवासियों को सब काम ठीक समय पर करना पड़ता था। पूजा-पाठ, भोजन-शयन सबका समय निर्धारित था। समय-ज्ञान के लिए जलघड़ी का प्रबन्ध था। उसी के अनुसार सूचना देने के लिए घण्टा बजाया जाता था। घण्टा बजाने के लिए लड़के और कर्मदान नियुक्त थे। यदि कोई अनियमित समय पर काम करता पाया जाता था तो नियमानुसार वह दण्ड होता था। इन नियमों के अलावा विद्यार्थियों को शिष्टता के नियमों का भी पालन करना पड़ता था। दस नियमों में से पाँच ये थे—जीवहत्या, अपहरण, मिथ्या भाषण, सुरापान (निषेध)। पाँच व्यसन थे—अकाल-भोजन, नृत्य-गीतादि-अनुरक्ति, गन्ध व्यवहार, आराम शय्या-शयन, सुवर्ण रौप्य ग्रहण।) चरित्र शुद्ध और जीवन तपस्यामय था। छात्रावास कोठरियों में बनी वेदिकाओं पर उन्हें 'श्वान-निद्रा' के का पालन करना पड़ता था। वाद-विवाद के लिए कमरे बने हुए थे, जिनमें दो हज़ार भिक्षु एक सकते थे। ज्योतिष की पढ़ाई के लिए ऊँचे-ऊँचे बने हुए थे। नालन्दा की शिक्षा निःशुल्क थी विद्यार्थियों की सभी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति ओर से होती थी।

विद्यालय में एक बहुत विशाल पुस्तकालय था। लिए यहाँ के 'धम्मगज' नामक स्थान में तीन भव्य हुए थे—रत्नाकर, रत्नदधि और रत्नरञ्जक। इनमें नौ खण्डों का था। इन नौ खण्डों में असंख्य पुस्तकें रहती थीं। पुस्तकालय में बौद्ध-धर्मग्रन्थों की प्रतिलिपि तैयार करने के लिए अनेक भिक्षु नियुक्त थे। हुएनसांग दो वर्ष रहकर छः सौ सत्तावन ग्रन्थों की प्रतिलिपि करके अपने साथ ले गया था। इत्सिङ्ग भी अपने साथ चार सौ पुस्तकों की प्रतिलिपियाँ ले गया था।

नालन्दा का धार्मिक आदर्श बौद्धधर्म का महायान था। पर साम्प्रदायिक असहिष्णुता वहाँ लेशमात्र भी थी। वहाँ बौद्धमूर्तियों के साथ शिव-पार्वती आदि हिन्दू देवताओं की मूर्तियों का पाया जाना इस बात का प्रमाण है।

इस प्रकार नालन्दा महाविहार में भारतीय शिक्षा उच्चादर्श वर्तमान थे। कोलाहलपूर्ण संसार से दूर जलाशयों और सुविस्तृत आम्रकाननों से सुशोभित, सात्त्विक तपोवन में इसकी स्थापना हुई थी। 'तपोमय जीवन' यही इसकी महत्ता का रहस्य था।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्वासित

पंण्डित इलाचन्द्र जोशी

[नीलिमा आदि के सम्पर्क में ठा० लक्ष्मीनारायणसिंह से महीप का परिचय हुआ था। उन्हीं का मेहमान वह कई दिनों तक रहा। एक दिन लिमा के आमन्त्रित करने पर, उसके घर जाकर एकान्त में महीप ने बहुत-सी बातें कीं जिनके लिए अन्त में वह स्वयं लज्जित हुआ। नीलिमा के साथ जन करके वह उठा ही था कि अपनी माँ के साथ प्रतिमा उत्सव से लौटकर आ गई। नीलिमा के साथ इतनी देर तक एकान्त में रहने से अब ीप को ग्लानि हुई। श्रीमती खन्ना और प्रतिमा की बातों से वह और भी खीझा। महीप विदा होकर बाहर आया तो नीलिमा ने इमली के पेड़ के े आकर उससे अपनी विवशता व्यक्त की। उसके साथ चुपचाप चल देने को वह किसी तरह राज़ी न हुई। इससे महीप को चक्कर-सा आ ा। किसी तरह बँगले पर पहुँचा तो वहाँ धीराज ने बातचीत छेड़ दी जो महीप को तनिक भी प्रिय न थी। धीराज ने बतलाया कि रूप ली बातें भूल जाने को कहती है।]

"ठाकुर साहब के सम्बन्ध में उसने स्पष्ट कुछ कहा तो नहीं, उसकी बातों से इतना अनुमान लगा पाया हूँ कि वह ठाकुर ब की वश्यता पूर्ण रूप से स्वीकार किये हुए है और उनके सी आदेश, इच्छा या समझौते के बन्धन में बँधी हुई है।"

महीप चारपाई पर उठ बैठा। उसने पूछा—"आपने क्या ने मन की सब बातें उसके आगे खोलकर रख दी थीं?"

"मैंने कोई भी बात नहीं छिपाई, पर मेरी किसी बात का पर कोई असर नहीं पड़ा। केवल एक अन्तिम बात मैं र कहना चाहता था। कहने ही जा रहा था कि अचानक कुर साहब भीतर आ खड़े हुए। हम लोग रूपा के कमरे में ठाकुर साहब भी अचानक, चुपके से आ पहुँचे—ठीक ख़ुफ़िया स की तरह। सम्भवतः वे पहले से कहीं पास ही खड़े थे र चुपके से हम दोनों की बातें सुन रहे थे। आते ही अत्यन्त ीर भाव से मुझसे बोले—'धीराज, तुम यहाँ कैसे चले े? यह बिलकुल बेक़ायदा बात है! रूपा के कमरे में ले चले आने का कोई अधिकार तुम्हें नहीं है।' यह कहकर ोंने मेरा हाथ पकड़ा और एक प्रकार से मुझे बलपूर्वक बाहर ब ले गये।"

महीप सन्न रह गया। धीराज ने सहज शान्त भाव से जिस ारण-सी घटना का वर्णन उसके आगे किया उसे सुनकर का हृदय जैसे दहल गया। उसे ऐसा लगा कि ठाकुर ब के रहस्यपूर्ण स्वभाव की अच्छेद्य कठोरता के सम्बन्ध में इससे क भयङ्कर दृष्टान्त की कल्पना वह नहीं कर सकता। सबसे पहेली जो उसे जान पड़ती थी वह थी रूपा के सम्बन्ध में र साहब की इस क़दर बेतरह बढ़ी हुई दिलचस्पी। उसकी क में यह बात बिलकुल नहीं आ रही थी कि रूपा के सम्बन्ध धीराज के प्रति इस प्रकार का विद्वेषपूर्ण भाव क्यों रखते हैं, कि नीलिमा से उनके विवाह की बातें पक्की हो चुकी हैं। र साहब को महीप इस हद तक नासमझ नहीं समझता था वे धीराज को लफङ्गा समझते होंगे। उसके मन में यह चत विश्वास था कि ठाकुर साहब धीराज की सच्चरित्रता, न की सुशीलता और हृदय की निष्कपटता से भली भाँति परिचित हैं। यह जानते हुए भी वे रूपा के सम्बन्ध में उसके साथ इस तरह पेश क्यों आते हैं जैसे वह नम्बरी लफंगा हो? यह बात भी महीप से छिपी नहीं रह गई थी कि इस मामले में ठाकुर साहब ईर्ष्यालु हो उठे हैं। पर रूपा से सम्बन्धित इस ईर्ष्या का क्या अर्थ हो सकता है, जब नीलिमा..."मिस्ट्री! मिस्ट्री! यह एक रहस्य है जिसका समाधान इस समय कोई नहीं कर सकता, पर शीघ्र ही इस रहस्य के ऊपर का काला पर्दा फट जायगा, इसमें सन्देह के लिए तनिक भी गुञ्जाइश नहीं है।" यह सोचता हुआ महीप फिर चारों ख़ाने चित लेट गया और नीलिमा के साथ आज के अन्तिम मिलन की घटना की स्मृति को उभाड़ने की चेष्टा करता हुआ ऊपर चन्द्रमा की ओर एकटक अन्यमनस्क भाव से देखता रहा।

धीराज भी एक ऐसी निगूढ़ चिन्ता में मग्न था जिसकी कोई रूप-रेखा सम्भवतः उसके आगे भी स्पष्ट नहीं हो रही थी। वह भी लेट गया था, पर लेटने की क्रिया अपनी तत्कालीन मानसिक अवस्था में उसे क़तई सुविधाजनक नहीं मालूम हो रही थी। कुछ देर बाद वह सहसा फिर उठ बैठा और बोला—"आप जानते हैं, मैंने किंग्स कमीशन में भरती होने के लिए दरख़्वास्त दी है?"

"नहीं, मुझे इस बात की कोई ख़बर अभी तक नहीं थी।" महीप ने लेटे ही लेटे कहा।

"अच्छी तरह सोचने-समझने के बाद मैं अन्त में इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि यहाँ जिस प्रकार का निष्क्रिय जीवन मैं बिता रहा हूँ उससे किसी भी प्रकार की सक्रियता बेहतर है—चाहे वह लड़ाई में मर मिटने की ही सक्रियता क्यों न हो। प्रेम एक घातक रोग है—कितना बड़ा घातक है, इसकी कल्पना आपने कभी की होगी, इसमें मुझे सन्देह है; क्योंकि आप कवि हैं, और कवियों ने सदा प्रेम की महत्ता का राग अलापा है, जो मुझे इस क़दर मूर्खतापूर्ण लगता है कि...माफ़ कीजिएगा, एक बार पहले भी मैं इस बात की चर्चा आपसे कर चुका हू, पर तब मेरा जी नहीं भरा था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने मन की चरम अवसाद की अवस्था में भी महीप को धीराज की इस तरह की बात से मन ही मन हँसी आई और साथ ही उसका कौतूहल भी उभड़ उठा। वह फिर उठ बैठा और मुस्कराता हुआ बोला—"यदि उस दिन आपका जी न भरा हो तो अब भर लीजिए"

तेईसवाँ परिच्छेद

धीराज कुछ देर तक मौन बैठा रहा, पर उस मौन अवस्था में भी उसके भीतर की भावना की तीव्रता ईथर में तरङ्गित होती हुई जैसे महीप के अन्तर में आघात कर रही थी। उसके बाद सहसा मौन भङ्ग करता हुआ धीराज बोला—"मेरी तो यह धारणा है कि जो व्यक्ति प्रेम की मार्मिक शूल-वेदना का अनुभव करता है वह कवि हो ही नहीं सकता। मुझे इस बात पर विश्वास नहीं होता कि किसी कवि ने कभी प्रेम की इस जीवन-शोषी अनुभूति का सच्चा अनुभव किया होगा। कारण यह है कि कवियों का एकमात्र सहारा है कल्पना, और इस प्रकार की मर्मघाती अनुभूति की कल्पना नहीं की जा सकती और न उसका वर्णन ही किया जा सकता है—उसका तो केवल मौन अनुभव ही किया जा सकता है, और वह अनुभव भी कुछ विरले अभागों के भाग्य में ही बदा होता है; शेष मनुष्य अपने पशु संस्कारवश स्त्री-पुरुष के सहज पारस्परिक आकर्षण के नियम से एक साधारण-सी गुदगुदी या हलकी-सी चुभन का अनुभव करके रह जाते हैं, और उसी को 'प्रेम-प्रेम' कहकर चिल्लाने लगते हैं—उसी को लेकर गीत या कवितायें रचने लगते हैं, कहानियाँ गढ़ते हैं, दार्शनिक निबन्ध लिखने बैठ जाते हैं, कभी रोने का स्वाँग भरते हैं और कभी हँसने का। जब मैं इन स्वाँगों को देखता हूँ तो मेरी आत्मा विकट व्यंग्य-भरा अट्टहास करने लगती है ..."

महीप धीराज की इस तरह की बातें सुनकर गम्भीर भाव से मन ही मन सोचने लगा कि नीलिमा के सम्बन्ध में मेरी जो अपनी अनुभूति है वह 'साधारण-सी गुदगुदी' है, 'हलकी-सी चुभन' है या वही मर्म-शोषी अनुभूति है, जिसका सङ्केत देने की चेष्टा धीराज पहले भी कर चुका है और आज भी अपनी पीड़ित आत्मा की तेज़ाब से भी तेज़ और कोलतार से भी गाढ़ी काली स्याही द्वारा कर रहा है। वह कुछ भी ठीक निर्णय नहीं कर पाया।

धीराज कहता चला गया—"मैं अनुमान करता हूँ कि अधिकांश मनुष्यों की अपेक्षा बिच्छू या दूसरे निम्न कोटि के जीव प्रेम की वास्तविक अनुभूति के अधिक निकट हैं जो केवल एक चरम क्षण की अनुभूति के उद्देश्य से ही अपने सारे जीवन की गति को उन्मुख किये रहते हैं। उनकी अज्ञात चेतना निश्चित रूप से यह जानती होगी कि उनके जीवन का प्रत्येक पग उसी अन्तिम अनुभव की ओर अग्रसर हो रहा है, प्रत्येक क्रिया उसी की ओर प्रेरित हो रही है। अन्त में जब वह चरम क्षण आता है तो उसके बाद ही वे अत्यन्त धीरता के साथ—बिना भी शिकायत के बिना—अपने प्राणों की बलि दे देते हैं। बिच्छू के बारे में यह कहा जाता है कि वह अपनी प्रिया से प्रथम प्रेम-मिलन तत्काल आत्महत्या कर लेता है—उसके बाद वह फिर जीवन की कोई सार्थकता नहीं समझता। कुछ जीव-शास्त्री यह भी कहना है कि बिच्छू आत्महत्या नहीं करता, बल्कि प्रेमिका प्रथम मिलन के बाद ही उसका काम तमाम कर देती और उसे खा जाती है। केवल बिच्छू ही नहीं, निम्न और भी बहुत-से जीवों की परिणति इसी रूप में होती है। सब जीवों की अज्ञात चेतना निश्चय ही यह जानती है कि उनके प्रेम का परिणाम विनाश है, पर इस पूर्व-अनुभव बावजूद वे प्रेम से नहीं कतराते और इच्छापूर्वक उस विनाश को स्वीकार करते हैं, क्योंकि प्रजा-विस्तार के लिए आवश्यक है। प्रेम एक रोग है, पर वह सहज रोग है। प्रकृति ने जीवों के विनाश के लिए आकर्षक बनाया है। का बलिदान यदि महान् है तो केवल इसी पाशविक कि वह पुरानी सृष्टि का विनाश करके नये सृजन में सहायक होता है। पर कवियों ने उसे जो अपने-आप में महान को ऊँचा उठानेवाला, चिदानन्द की अलौकिक अनुभूति वाला बताया है, वह निरा झूठ और ढोंग है।"

धीराज ने प्रेम के सम्बन्ध में बहुत-सी गहरी बातें सोची हैं और अनुभव की हैं, यह बात महीप को मन स्वीकार करनी ही पड़ी। पर वह इस चर्चा को आगे बढ़ाना चाहता था, क्योंकि वह उसके मन के एक विशेष घाव को बार निर्ममता से आघात कर रही थी। उसने बात को हलका रूप देने के विचार से कहा—"तो आप किंग्स कमीशन भरती होने जा रहे हैं?"

अपने अन्तरतम प्रदेश के लम्बे और मार्मिक उद्गार धीराज महीप से इस प्रकार के प्रश्न की प्रत्याशा नहीं की उसने सोचा था कि महीप उसकी गम्भीर बात का प्रत्युत्तर ही रूप से देगा और एक कवि की हैसियत से प्रेम के अपनी आन्तरिक अनुभूति से उसे परिचित करावेगा। महीप ने ऐसा न करके किंग्स कमीशन की चर्चा चलाई एक धक्का-सा लगा। उसने मुरझाई हुई आवाज़ दिया "जी हाँ।"

"अच्छा, यह बताइए कि आप लड़ाई में केवल के लिए ही जाना चाहते हैं या उसके प्रति आपका कोई आकर्षण भी है।"

"मैं दो कारणों से लड़ाई के प्रति आकर्षित हुआ हूँ तो यह कि प्रेमिक बिच्छू की तरह यह अस्पष्ट पूर्वाभास अन्तरात्मा में छा गई है कि मेरी प्रेमाकांक्षा की विनाश में होकर रहेगी—मैं निश्चय ही किसी घात का शिकार बनकर रहूँगा। इसलिए मैं सोचता हूँ वह दुर्घटना लड़ाई के मैदान में हो तो शायद वह अधिक उन्नत और अधिक गौरवशाली हो। दूसरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि लड़ाई में मरने से कम से कम इतना तो अवश्य ही होगा मेरे भीतर का जो पौरुष कुछ जन्मगत और कुछ समाजगत रणों से इतने दिनों तक दबा रहा है, उसे एक व्यापक स्फूर्ति लेगी। मेरा कुचला हुआ व्यक्तित्व प्रतिक्रिया के रूप में इतने ीं तक भीतर ही भीतर मानव समाज के प्रति जिस घोर वक—बल्कि प्रतिहिंसक—प्रवृत्ति को पाले हुए है उसके पूर्ण स्फोट का सुयोग केवल लड़ाई में ही प्राप्त हो सकता है। इसके लावा मैं यह भी सोचता हूँ कि यदि मैं लड़ाई में संयोगवश ने से बच गया तो कम से कम मेरे वर्तमान संकुचित व्यक्तित्व आत्म-प्रसार की सुविधा तो मिलेगी ही। मैं पोप से मिलकर से विश्वशान्ति के सम्बन्ध में बातें करने का स्वप्न बहुत दिनों देखता आ रहा हूँ। यदि संयोग से मैं इटली की लड़ाई भेज दिया जाऊँ तो मेरा यह स्वप्न सफल हो सकता है। पता ं, विशेष रूप से पोप से मिलने की आकांक्षा मेरे मन में क्यों ी हुई है; क्योंकि मैं यह अच्छी तरह जानता हूँ कि पोप आज तना अक्षम और अशक्त है। विश्वव्यापी कूट राजनीति और कट सैन्यवाद के इस युग में पोप कोई हस्ती नहीं रखता। र भी उसके साथ सदियों की धार्मिक और राजनीतिक शक्ति- लिता का जो इतिहास जड़ित है उसके रोमांस की छाया-छवि मानसिक आँखों के आगे छाई हुई है। एक बार भी यदि किसी प्रकार वेटिकन के उस सुगम्भीर स्वप्नलोक के भीतर श कर पाऊँ जहाँ सदियों से अमर कलाकारों की आत्माओं की रज-भरी आकांक्षायें रङ्गीन चित्रों और पत्थरों में खुदी हुई ाकृतियों के रूप में स्तब्ध हो रही हैं, धार्मिक और राजनीतिक ाटों के प्रतीक के उस शेष चिह्न—वर्तमान पोप—के आगे वशान्ति के सम्बन्ध में अपनी ख़याली योजनाओं को रख पाऊँ अपने जड़ जीवन को सफल समझूँ, और..."

सहसा महीप ठठाकर हँस पड़ा। उसके हँसने की आवाज़ के उस सन्नाटे में भौतिक अट्टहास की तरह गूँज उठी। ाज ठिठककर रह गया। उसे ऐसा लगा जैसे वह इतनी तक स्वप्न में बड़बड़ा रहा हो और अचानक किसी ने उसे नींद धक्का देकर जगा दिया हो।

महीप अट्टहास करने के बाद धीराज की ओर से मुँह फेरकर गया।

चौबीसवाँ परिच्छेद

तीन दिन बाद धीराज ने महीप को सूचित किया कि यभारत के एक राजा साहब ने ठाकुर साहब को और उसे कार खेलने के लिए निमन्त्रित किया है और वे दोनों आज जा रहे हैं।

"आप क्या शिकार खेलने का शौक़ रखते हैं?"—महीप पूछा।

"जी हाँ, मेरा यह शौक़ वंशगत है। मेरे पिताजी अव्वल के शिकारी थे। उन्होंने कई बाघ मारे थे। उनके मारे हुए एक बाघ की खाल का ओवरकोट अभी तक मेरे पास मौजूद है।"

"ओह, तब तो आप अवश्य जाइए। पर—पर सावधानी से शिकार खेलिएगा। इस समय आपके मन की जैसी दशा है उसमें सावधान रहने की विशेष आवश्यकता है।"

धीराज अवज्ञा की हँसी हँसता हुआ बोला—"आपकी सदिच्छा के लिए धन्यवाद; पर आपको मालूम होना चाहिए, मैं बड़ा अनुभवी शिकारी हूँ—'डेड शाट'!"

इसके बाद कुछ सोचकर धीराज ने कहा—"आज ठाकुर साहब मेरे ऊपर बहुत प्रसन्न जान पड़ते हैं। इस बार आरम्भ से ही वे मेरे साथ बड़ी रुखाई से पेश आते रहे। आज पहला दिन है जब मैंने उन्हें अपने प्रति विशेष कृपालु पाया है।"

महीप एक विचित्र दृष्टि से धीराज की ओर देखता हुआ कुछ सोच में पड़ गया। धीराज ने कहा—"अच्छा, इस समय मैं जाता हूँ। चलने की तैयारी करनी है।" अब वह जाने लगा, पर एक क़दम भी न बढ़ पाया होगा कि तत्काल लौट पड़ा और बोला—"हाँ, आपको यह बताना मैं भूल गया कि रूपा और हेमा भी हम लोगों के साथ जा रही हैं। रानी साहबा ने अपने बच्चे की वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में उन्हें निमन्त्रित किया है। अब यहाँ रह जावेंगे केवल आप और शारदा देवी, जोड़ा अच्छा है!" कहकर धीराज आज बहुत दिनों बाद खुलकर मुस्कराया और उसके बाद चल दिया।

उसी दिन ठाकुर साहब और धीराज चले गये। रूपा और हेमा भी। महीप ने एक बार सोचा कि स्टेशन तक उन लोगों को पहुँचा आवे, पर फिर कुछ सोचकर रह गया।

उसी दिन तीसरे पहर शारदा देवी महीप के कमरे में चली आईं, और आते ही अत्यन्त स्निग्ध मुसकान मुख पर झलकाती हुई बोलीं—"कहिए, आज तो आपको अपने दोनों मित्रों का बिछोह बहुत सता रहा होगा?" यह कहकर वे एक सोफ़ा पर बैठ गईं।

महीप उस समय अपने पलँग पर लेटा हुआ बत्ती के प्रकाश में एक राजनीति सम्बन्धी पुस्तक पढ़ रहा था। बाहर की गरम हवा से बचने के लिए उसका कमरा चारों तरफ़ से बन्द कर दिया गया था, जिसकी वजह से दिन में ही वहाँ रात का भान हो रहा था। शारदा देवी को भीतर प्रवेश करते देखकर वह उठ बैठा और पुस्तक नीचे रखकर दोनों हाथों से नमस्कार करता हुआ बोला—"जी हाँ, ठाकुर धीराजसिंह के चले जाने से मुझे अवश्य अकेलेपन का अनुभव हो रहा है। वैसे आप इतना अनुमान तो लगा ही सकती हैं कि हम लोग, जो कविनामधारी हैं, अपने अकेलेपन में डूबे रहने के आदी होते हैं।"

"यह मैं समझ सकती हूँ, पर साथ ही आपके सम्बन्ध में एक दूसरी बात का अनुमान भी मैं लगा रही हूँ।" यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहते हुए शारदा देवी के मुख पर एक रहस्य-भरी मुसकान टिमटिमा रही थी।

महीप ने तनिक घबराहट के स्वर में पूछा—"वह क्या?"

"वह यह कि इधर कुछ दिनों से आपको अपना अकेलेपन का बोझ जैसे बहुत भारी लग रहा है।"

अपने सम्बन्ध में सहसा इस प्रकार का मन्तव्य शारदा देवी के मुँह से सुनने के लिए महीप क़तई तैयार नहीं था। सुनते ही वह भीतर ही भीतर चौंक उठा। वह सोचने लगा कि शारदा देवी के इस अनुमान का कारण क्या हो सकता है। क्या उनकी अन्तरानुभूति सचमुच इतनी मार्मिक है या उन्होंने किसी ज़रिये कोई बात सुनी है?

उसने कहा—"क्या मैं जान सकता हूँ शारदा देवी, कि आपके इस अनुमान का कारण क्या है? कुछ समय से एक ही मकान में रहने पर भी आपके निकट संपर्क में आने का सौभाग्य मुझे नहीं हुआ, फिर भी आप मेरे 'अकेलेपन के बोझ' से परिचित हैं, यह बात मुझे बड़ी रहस्यपूर्ण लग रही है।"

क्षण भर के लिए शारदा देवी महीप की ओर एकटक देखती रहीं। उनकी उस दृष्टि से महीप को ऐसा लगा जैसे उसके अन्तर की कोई भी गुप्त बात शारदा देवी से छिपी नहीं है। ऐसा क्यों लगा, इसका कोई कारण वह नहीं बता सकता था, तथापि शारदा देवी के सम्बन्ध में अपनी उस नई अनुभूति से वह सिहर उठा।

शारदा देवी इस बार अत्यन्त गम्भीर भाव से बोलीं—"आपको मेरे निकट सम्पर्क में आने का 'सौभाग्य' भले ही न मिला हो, पर मुझे आपके निकट सम्पर्क में आने का सौभाग्य अवश्य मिला है।"

महीप को यह बात भी कुछ कम भेदभरी नहीं मालूम हुई। वह हतबुद्धि-सा शारदा देवी की ओर देखता रह गया। आज पहली बार उसने ध्यानपूर्वक उनकी ओर देखा और उनके मुख की बनावट और हाव-भाव पर ग़ौर किया। उनके सत्त्वहीन मुख की ऊपरी अभिव्यक्ति के नीचे उसे एक मार्मिक छाया का आभास दिखाई दिया जिससे वह दहल उठा। वह कुछ क्षणों तक उनकी ओर विमूढ़ भाव से देखता हुआ मौन बैठा रहा और शारदा देवी भी उसी मर्मभेदी गम्भीर दृष्टि से उसकी ओर देखती रहीं।

उसके बाद सहसा महीप बोल उठा—"मैं आपसे हृदय से क्षमा चाहता हूँ, शारदा देवी। मैं सचमुच इधर किन्हीं कारणों से इतना अधिक आत्मगत रहा हूँ कि अपने 'अकेलेपन के बोझ' को सँभालने के सिवा और कोई चिन्ता ही मुझे नहीं रही है। आप उम्र में मुझसे बड़ी हैं, सयानी हैं, समझदार हैं, अन्तःकरण कहता है कि जीवन के अनुभव भी आपको चुके होंगे। इसलिए मैं विश्वास करता हूँ कि आप अपने प्रति मेरी उदासीनता के लिए मुझे क्षमा कर देंगी।

शारदा देवी के मुख का भाव और अधिक गम्भीर हो वे कुछ देर तक अपनी छोटी किन्तु भावपूर्ण आँखों और पैनी दृष्टि से महीप की ओर परीक्षक की तरह देख उसके बाद बोलीं—"अपने प्रति आपकी उदासीनता मुझे तनिक भी दुःख नहीं है, यह आप जाने रहिए दुःख यदि है तो इस बात का कि आप स्वयं अपने प्रति होते चले जा रहे हैं, जीवन का जो महान् गम्भीर लक्ष्य सामने था वह जैसे आपकी आँखों के आगे दिन पर दिन होता चला गया है और अब मिटना ही चाहता है। एक बार ख़ूब ग़ौर से और गहराई से इस विषय पर आपको यह जानकर स्वयं आश्चर्य होगा कि आपके मन स्थिति कितने तुच्छ कारण को लेकर उत्पन्न हुई है। के भीतरी स्तर को एक बार निर्मम होकर चीर डालें आपको पता चलेगा कि वास्तविकता क्या है और आप दल में फँसे हुए हैं।"

महीप ने देखा कि यह कहते हुए शारदा देवी दहक रही थीं और उनसे सुई की तरह नुकीली निकल रही थीं।

शारदा देवी उसी जलती हुई दृष्टि से उसकी ओ हुई कहती चली गईं—"बर्फ़ीले देशों में भ्रमण करनेवाले के वृत्तान्तों को पढ़ने से पता चलता है कि कभी-कभी ऐ आ जाती है कि यात्री ठण्ड से अकड़कर बर्फ़ के ऊप जाता है, और उस हालत में उसे बरबस ऐसी नी आने लगती है कि वह उठने की चेष्टा ही नहीं करता वह मीठी नींद उसके लिए घातक सिद्ध होती है। उसे बलपूर्वक जगाया जाय तो वह उसे ले बीतती है। मन की नींद इस समय उसी दशा को पहुँची हुई है।"

महीप का सिर भन्नाने लगा। उसे अपने चारों कुछ घूमता हुआ दिखाई देने लगा। उसे ऐसा अनु लगा जैसे उसके भीतर भी अचानक ज्वालामुखी का विस्फोट हुआ है और भीतर से पिघलती हुई आग नि साथ ही उस विस्फोट के धक्के के कारण उसके सिर बड़े-बड़े चट्टान ढहकर नीचे गिर रहे हैं। हुआ-सा शारदा देवी की ओर देखता रह गया—एक उसके मुँह से नहीं निकला।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

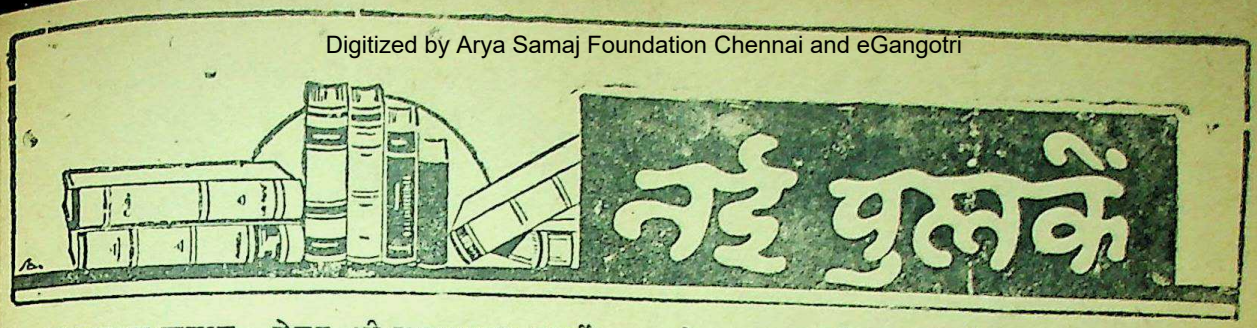

१—बङ्गाल का अकाल—लेखक, श्री श्यामाप्रसाद मुखर्जी; वादक, श्री भगवतीप्रसाद चन्दोला तथा प्रकाशक, सञ्चयिनी कत्ता हैं। पृष्ठ-संख्या १२९ और मूल्य ३) है।

प्रस्तुत पुस्तक बङ्गाल के प्रसिद्ध हिन्दू नेता श्री डाक्टर मापप्रसाद मुखर्जी के बङ्गाल के अकाल के दिनों में प्राय: रेज़ी में दिये हुए भाषणों और वक्तव्यों के बँगला संग्रह का रेज़ी अनुवाद है। बङ्गाल के अकाल के दिनों में डाक्टर र्जी ने मौजूदा सरकार की नीति की जो खरी आलोचना की उसने राजनीतिक क्षेत्रों में थोड़ी-बहुत हलचल अवश्य मचा थी। उनकी आलोचना का उद्देश्य बङ्गाल के तत्कालीन न का सुधार करके अकाल-पीड़ित जनता के कष्टों का निवारण था। परिस्थिति की प्रतिकूलता के कारण उनका उद्देश्य नहीं हो सका। फिर भी उन दिनों कही हुई बातें चित् आज भी कुछ न कुछ महत्त्व अवश्य रखती हैं। ल का अकाल भारतीय इतिहास में एक चिरस्मरणीय घटना और भावी सन्तानें वर्तमान पीढ़ी के इस घोर कलङ्क को और लज्जा के साथ याद करेंगी। डाक्टर मुखर्जी की क का भी तत्कालीन राजनीतिक साहित्य के रूप में चित् प्रयोग किया जा सकता है। यह तो भविष्य ही गा कि डाक्टर मुखर्जी ने जिन लोगों को अकाल के लिए रदायी बताया है वे किस सीमा तक उसके लिए उत्तरदायी र इस आरोप में किस अंश तक सत्य है। अभी तो उनकी बहुत कुछ विश्वसनीय और तथ्यपूर्ण जान पड़ती हैं, प उनमें अकाल के कारणों पर तटस्थ विचार की प्रवृत्ति है।

अनुवाद की भाषा साधारण है। कहीं-कहीं वाक्य- अस्पष्ट जान पड़ती है। पर यह दोष अनुवादक की मर्थ्य का सूचक नहीं है, कदाचित् ऐसे प्रयोग उसके मत क ही हैं।

अकाल-सम्बन्धी चित्रों से भावपूर्ण भाषणों का आकर्षण हो गया है।

छपाई और गेट-अप अच्छा है। पर मूल्य कुछ अधिक पड़ता है।

२—प्रतिपदा—लेखक, श्री राजेन्द्र और प्रकाशक, प्रसाद-, काशी है। पृष्ठ-संख्या ४४ और मूल्य ।।।) है

प्रकाशक ने पुस्तक के परिचय में लिखा है। 'जिस की रूप-रेखा का अङ्कन इन छन्दों में हुआ है उसके रहस्य का ऐसा अन्यतम चित्र दुर्लभ है।' 'अरूप की रूपरेखा का जो अङ्कन' इस पुस्तक में हुआ है वह किसी सिद्ध पुरुष के द्वारा नहीं, वरन कदाचित् एक भावुक नवयुवक की लेखनी से हुआ है जिसकी भावुकता सुन्दर शब्दों के मायाजाल में फँसकर रहस्य को और अधिक रहस्यमय तथा अरूप को अधिकाधिक दुर्गम बनाने में ही रहस्योद्घाटन का भ्रमपूर्ण सन्तोष प्राप्त कर लेती है। छायावादी-रहस्यवादी कविता के युग में इस प्रकार की आत्म-तुष्टि-पूर्ण कवितायें बहुत देखने में आती थीं। पर आजकल प्रगति के प्रभञ्जन में उड़कर कदाचित् वे किसी अनन्त के अन्तराल में लुप्त-सी होती जाती हैं। कवि ने प्रसादजी की देख-रेख में ही अपनी कला का विकास किया था। यह 'प्रतिपदा' उसी कला की 'पूर्णिमा के पथ की प्रबोधिनी है'। अतः हम आशा कर सकते हैं कि प्रतिपदा के बाद उसकी कला उत्तरोत्तर प्रकाशमयी और उज्ज्वल होती जायगी। प्रतिपदा में धुँधलापन रहना अनिवार्य है। उदाहरणार्थ—

ऊँचे अपने वातायन पर
आकाश चिरन्तन रुदन लिये
रह गया निरखता कौतूहल
विहँगों के कितने ध्वान पिये।
श्यामल उसके सिकता-तट पर
उतरे कुछ जलधर-शावक से
आकार चेतना के सुन्दर
कीड़ारत विद्युत पावक से।

को समझने के लिए कदाचित् असाधारण भावुकता, भाषा-ज्ञान और रहस्योन्मुख ध्यान की आवश्यकता होगी।

३—समाधान—लेखक, श्री रामसञ्जीवन तथा प्रकाशक श्री विन्ध्याचल जीवन-मन्दिर, जिहुली, पो० पदुमकेर (चम्पारण) हैं। पृष्ठ-संख्या २५ और मूल्य ६ आने हैं।

समाधान एक छोटा-सा गीतिनाट्य है जिसमें किशोर और मृदुलिन का प्रेम प्रेमी और प्रेयसी के रूप में आरम्भ करके भाई-बहन के रूप में परिणत किया गया है। कदाचित् लेखक का उद्देश्य यह सिद्ध करना है कि भाई-बहन का सम्बन्ध इन्द्रिय-लिप्सा से रहित अतएव पवित्र होने के कारण प्रेम की सर्वोच्च स्थिति का द्योतक है। प्रेम की यह परिणति सिद्ध करने के लिए लेखक ने मृदुलिन के द्वारा प्रेमोन्मत्त किशोर का अपमान और तज्जन्य विरह-ताप में दोनों का हृदय-मन्थन प्रदर्शित किया है। इस प्रेम-कथा में मनोवैज्ञानिक सङ्घर्ष या घटना-वैचित्र्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है। केवल अनगढ़ शब्दों के द्वारा सस्ते प्रमोद्गारों को व्यक्त करके ही कवि ने 'प्रत्येक पात्र में...अपना जीवन उड़ेला है, और फिर भी वह जो है सो है।' 'इसमें वह 'कुछ' तो है ही × × उस कुछ को मैं न जानूँ, तो अच्छा।'

४—ब्रजभाषा-साहित्य में नायिका-निरूपण—लेखक, श्री प्रभुदयाल मीतल और प्रकाशक, अग्रवाल प्रेस, अग्रवाल भवन, मथुरा हैं। पृष्ठ-संख्या लगभग ४०० और मूल्य २) है।

पुस्तक दो भागों में विभक्त है। पहले भाग में ब्रजभाषा, ब्रजभाषा-साहित्य, ब्रजभाषा का रीति-साहित्य, रस-निरूपण, शृङ्गार-रस-विवेचन, ब्रजभाषा काव्य का शृंगारिक रूप, नायिका-भेद की परम्परा और उसका आधार, नायिकाभेद का विकास, नायिकाभेद का वैज्ञानिक क्रम तथा नायिकाभेद का सिंहावलोकन, शीर्षकों के अन्तर्गत ब्रजभाषा-साहित्य की ऐतिहासिक भूमिका के साथ ब्रजभाषा के आचार्यों-द्वारा किये गये नायिकाभेद पर विचार किया गया है। दूसरे भाग में नायिकाओं के भेद-प्रभेदों के अनुसार अलग-अलग शीर्षकों में ब्रजभाषा-काव्य से सुन्दर-सुन्दर उदाहरणों का संग्रह किया गया है।

पुस्तक को एक सरसरी दृष्टि से देखने पर भी यह स्पष्ट विदित हो जाता है कि लेखक ने इसके निर्माण में काफ़ी परिश्रम और ब्रजभाषा-साहित्य का विस्तृत अध्ययन किया है। ब्रजभाषा और साहित्य के ऐतिहासिक और शास्त्रीय विवेचन में कोई मौलिकता और गम्भीर चिन्तन का आभास नहीं मिलता। उसने केवल तद्विषयक पुस्तकों की सहायता से एक संक्षिप्त भूमिका तैयार कर दी है। नायिकाभेद के विवेचन में लेखक ने कोई ऐसी बात नहीं छोड़ी है जिसका पूर्व आचार्यों और लेखकों ने उल्लेख किया हो। समस्त प्राप्त सामग्री और विचारों का समन्वय करके लेखक ने नायिकाभेद के विभिन्न विषयों के सम्बन्ध में एक निश्चित और निर्भ्रान्त मत स्थिर करने की चेष्टा की है। उदाहरणों के संग्रह में भी उसने कठिन परिश्रम और सुन्दर साहित्यिक रुचि का परिचय दिया है। नायिकाभेद के शास्त्रीय विवेचन की अपेक्षा पुस्तक का यह खण्ड साहित्य-रसिकों को कदाचित् अधिक पसन्द आयेगा।

नायिकाभेद के शास्त्रीय विवेचन की आवश्यकता और सामयिकता के सम्बन्ध में लोगों को सन्देह हो सकता है। लेखक को स्वयं अपने मन में इस सन्देह का आभास मालूम पड़ता है और इसी कारण भूमिका में उसने अपनी सफ़ाई देने की कोशिश की है। उसने गार्हस्थ्य जीवन को सुखी बनाने और स्त्रियों के मनोवैज्ञानिक अध्ययन के लिए नायिकाभेद की आवश्यकता सिद्ध की है। लेखक की यह चेष्टा अपने व्यसन का औचित्य प्रमाणित करने का बहाना मात्र जान है। सत्य का साहस के साथ सामना करने और उसका अर्थ समझने की शक्ति कदाचित् हममें से बहुत कम लोगों इसका और अधिक स्पष्ट प्रमाण हमें लेखक के भक्त-कवि विशेषकर सूर के सम्बन्ध में सफ़ाई पेश करने में मिलता है, कहता है कि गोपियों ने शुद्ध सात्त्विक भाव से कृष्ण से प्रे था, उसमें कामासक्ति की गन्ध भी नहीं थी तथा रायाद शृङ्गार बाल-स्वभावजनित विनोद मात्र है। हमारा विश्वा लेखक महोदय ने यह जान-बूझकर ही लिखा है।

पुस्तक का मूल्य ४०० पृष्ठों के विचार से काफ़ी छपाई और गेट-अप भी अच्छा है। ब्रजभाषा-काव्य के को इसका अवलोकन करना चाहिए।

—ब्रजेश्वर वर्मा ए

५-६—सरला पुस्तकमाला, कदमकुआँ की २ पुस्तकें

१—कान्ता—लेखक श्री गङ्गाप्रसाद गौड़ पृष्ठ-संख्या १८ है; मूल्य ।) है।

वर्तमान युग खड़ी बोली का युग है और इस युग गई 'कान्ता' बेवक़्त की बाँसुरी नहीं कही जा सकती अपनी विशेषतायें हैं। जिस शृंगारकालीन सौन्दर्य के ब्रजभाषा साहित्य आज भी मधुपूर्ण है, उस सौन्दर्य छोटा-सा कण आलोक बनकर कान्ता के छन्दों में मुस्कुरा पुस्तक पठनीय है।

२—ऐंडर्सन की कहानियाँ—(अनुवाद) अनुवा गङ्गाप्रसाद 'कौशल' हैं; पृष्ठ-संख्या ५१ है; मूल्य ॥=) है

ऐंडर्सन अपनी बालोपयोगी कहानियों के लिए वि हैं। बालोपयोगी शिशु-साहित्य-रचना की कठिनाइयों हुए यह कहना पड़ता है कि ऐसे साहित्य के स्रष्टा का मूल्य में आँका नहीं जा सकता। हिन्दी-साहित्य में ऐसे अभी अभाव है। प्रस्तुत पुस्तक सुप्रसिद्ध कहानीकार बालपयोगी कुछ कहानियों का स्वतन्त्र अनुवाद है। की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसकी भाषा सरल बोधगम्य है। कहानियों का सङ्कलन भी अच्छा पुस्तक बालकों के लिए उपयोगी है।

—पाण्डेय नर्मदेश्वरसहाय, बी० ए०,

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्तमान शिक्षा-प्रणाली

प्रयाग-विश्वविद्यालय के वायस चांसलर डाक्टर अमर-
थ झा ने गोरखपुर में 'शिक्षा के भविष्य' पर भाषण करते
वर्त्तमान शिक्षा-प्रणाली के दोषों पर पूरा-पूरा प्रकाश
ला है और यह सिद्ध कर दिया है कि अँगरेज़ी भाषा
रे देश के लिए किस प्रकार अस्वाभाविक एवं दुरूह है।
षण का उक्त अंश 'संसार' के अनुसार इस प्रकार है—

आज हमारा ध्यान जब वर्तमान शिक्षा-प्रणाली की समीक्षा
ओर जाता है तब हमें इसके दोष स्पष्ट दिखाई देते हैं। ईस्ट
या कम्पनी ने वर्तमान शिक्षाप्रणाली का प्रवर्तन अपने
न-कार्य में सहायता प्राप्त करने के लिए पर्याप्त संख्या में
तीयों को क्लर्क बनाने के ही उद्देश्य से किया था। इस
क्षा-प्रणाली का आज तक का इतिहास इस बात का साक्षी है
ईस्ट-इंडिया कम्पनी को अपने उद्देश्य में भले ही पर्याप्त
लता प्राप्त हुई हो, और इस प्रणाली ने भले ही अनेक कर्तव्य-
जजों और प्रतिभा-संपन्न वकीलों आदि का सृजन किया
भारतीयों के लिए यह प्रणाली शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति
नतान्त विफल और निराशापूर्ण रही है। वर्तमान शिक्षा
ा से सम्पर्क स्थापित रखने में पूर्णतया असमर्थ हुई है।
प्रणाली में शिक्षा पाये हुए गिनती के लोग अपने उन बहु-
क भाइयों से, जिन्हें दुर्भाग्यवश यह शिक्षा नहीं प्राप्त होती
जीवन-व्यापार में सदा के लिए विलग हो जाते हैं। इस
र इस शिक्षा-प्रणाली ने हमें भारतीय समाज के अङ्ग से
कर अलग कर दिया है और हम भारतीय-संस्कार-परम्परा से
ज्जस्य स्थापित नहीं कर सके हैं।

मैं स्वयं इस शिक्षा-प्रणाली में तीस वर्ष से ऊपर अध्यापक
हूँ और अब भी इसी की प्रतिष्ठा में सहयोग दे रहा हूँ फिर
मन में यह खेदजनक विचार उठे बिना नहीं रहता है।
कल्पना करें कि यदि रूस देश के चार-चार और पाँच-पाँच
के बालकों को इतिहास, गणित, विज्ञान और उनके देश की
ति तक की शिक्षा आज उनकी मातृभाषा में न दी जाकर
री अँगरेज़ी भाषा में दी जाय तो यह कैसी करुणाजनक
स्थिति होगी। स्वयं हमारे यहाँ इतिहास और गणित ऐसे
यों की अपनी जानकारी की परीक्षा जब विद्यार्थियों को
रेज़ी के माध्यम से देनी पड़ती है, तब प्रायः यह देखा जाता
क इन विषयों की अपेक्षाकृत कम जानकारी भी रखनेवाला
विद्यार्थी अँगरेज़ी अच्छी जानने के कारण उक्त विषयों की अधिक जानकारी रखनेवाले विद्यार्थी से अधिक सफलता प्राप्त करता है। इस प्रकार परीक्षायें ज्ञान की न होकर अँगरेज़ी भाषा की हो रही हैं।

आप लोगों में से अनेक ने जार्ज बर्नार्ड शा का बनवाया हुआ "स्पोकेन ऐंड ब्रोकेन इँगलिश" (स्पष्ट और नष्ट अँगरेज़ी) नामक ग्रामोफोन का तवा सुना होगा। यह 'रिकार्ड' सुदूर विदेश के लोगों को अँगरेज़ी का शुद्ध उच्चारण सिखलाने के लिए बनाया गया है। किन्तु अँगरेज़ी महा कठोर और जटिल भाषा है। अँगरेज़ी के कुछ शब्दों के निश्चित उच्चारण और स्वरूप की घोषणा कर देने के लिए 'ब्रिटिश-ब्राडकास्टिंग कारपोरेशन' (बी० बी० सी०) की ओर से एक समिति की स्थापना हुई थी जिसमें स्वयं बर्नार्ड शा, कवि-शिरोमणि राबर्ट ब्रिजेज आदि सदस्य थे। किन्तु उक्त समिति की 'रिपोर्ट' जब प्रकाशित हुई तब जाना गया कि उस समिति के किन्हीं दो सदस्यों का 'यस' और 'नो' (हाँ और नहीं) जैसे अँगरेज़ी के साधारण शब्दों तक के उच्चारण के सम्बन्ध में एकमत नहीं हो पाया था।

अँगरेज़ी भाषा के काठिन्य का दूसरा उदाहरण लीजिए। आप लोग फ़ाउलर की प्रसिद्ध पुस्तक 'किंग्स-इँगलिश' को जानते ही हैं जिसमें अँगरेज़ी के नये-पुराने बड़े से बड़े साहित्यकार की भाषा-सम्बन्धी भूलों का विस्तार से उल्लेख किया गया है। इसे पढ़कर आगस्टाइन बिरेल-जैसे साहित्यकार ने कहा था कि "इस पुस्तक को पढ़ने के बाद मुझे अँगरेज़ी का एक भी वाक्य लिखने में डर होता है।"

अँगरेज़ी जिनकी मातृ-भाषा है उनकी तो यह दशा है फिर भी हम भारतीयों की अँगरेज़ी कैसी है इसका मज़ाक़ उड़ाने का प्रयत्न उस वर्ग के एक व्यक्ति ने जो 'न तो इंडियन है, न सिविल न सर्वेंट' अपनी 'इंडियन इँगलिश' नामक पुस्तक में किया है। उक्त पुस्तक में उस (आई० सी० एस०—इंडियन सिविल सर्वेंट) ने भारतीयों-द्वारा बोली जानेवाली अँगरेज़ी को 'बाबू इँगलिश' नाम दिया है। यह 'बाबू इँगलिश' शब्द अत्यन्त अपमानजनक है। हमारी भूमि में दीर्घ काल तक रह-कर भी जो हमारा उपहास करते हैं वे कहाँ हमारी भाषा सीख पाते हैं? सर जार्ज ग्रियर्सन-जैसे भाषा-विज्ञान-वेत्ता तथा हिन्दी के पण्डित की बात कहता हूँ, जिस समय बिहार में, मधुबनी में वे सब-डिवीज़नल आफ़िसर (परगना अफ़सर) थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दिन की बात है कि वे एक गवाह से हिन्दी में कुछ बोल गये जिसे सुनकर उस गवाह ने बड़ी नम्रता से कहा—"हुज़ूर ! हम अँगरेज़ी नहीं जानते।"

साथ ही सबसे बड़ी दुःखदायी बात यह है कि अँगरेज़ी पढ़ाने का मिथ्या गर्व करनेवाले अध्यापकों में से ९० प्रतिशत ऐसे होते हैं जिन को अँगरेज़ के मुँह से अँगरेज़ी सुनने का कभी अवसर तक नहीं मिला रहता। फिर भी वे अँगरेज़ी के शब्दों के रूपों और उच्चारण पर बहुत उलझते रहते हैं। यह कोरे विनोद का नहीं प्रत्युत खेद का विषय है। बेकन ने ठीक ही कहा था कि भावों का महत्त्व भूलकर शब्दों पर विशेष महत्त्व दिया जाना मानस के रोगग्रस्त होने का लक्षण होता है।" आज यही बात देखने में आ रही है। आप वर्तमान परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो सकते, क्योंकि इतिहास का पर्याप्त ज्ञान आपको भले ही हो, अँगरेज़ी में इतिहास की जानकारी आपको लिखनी है और आप अँगरेज़ी भी बहुत अच्छी नहीं जानते। कभी-कभी प्रश्नपत्रों के एक-दो कठिन अँगरेज़ी शब्द न जानने से योग्य से योग्य परीक्षार्थी भी असफल रह जाते हैं। इसलिए जितनी जल्दी हो सके अँगरेज़ी का यह घटाटोप अवश्य हट जाना चाहिए। मैं यह कभी नहीं चाहता कि अँगरेज़ी एकदम त्याग दी जाय। अँगरेज़ी की सर्वथा उपेक्षा खेदजनक बात होगी, कारण अँगरेज़ी का अन्तर-राष्ट्रीय महत्त्व है। हम जो चाहते हैं वह यह है कि अँगरेज़ी की मिथ्या उपासना और अनावश्यक महत्त्व लुप्त हो जाना चाहिए। जितनी जल्दी हो सके, यह आडम्बर समाप्त होकर अँगरेज़ी की जगह मातृभाषाओं के माध्यम से शिक्षा आरम्भ हो जानी चाहिए। वास्तविक ज्ञान मातृभाषाओं के माध्यम से ही दिया जा सकता है। केवल यही सब प्रकार से कल्याणकारी है।

भारतीय मुसलमानों को रूसी मुसलमानों का सन्देश

'हिन्दी समाचार समिति' के आमन्त्रण पर 'रूसी मुस्लिम कौंसिल' के प्रधान मुफ़्ती अब्दुर्रहमान इब्न शेख़ जैनुल रसूली ने भारतीय मुसलमानों के लिए जो सन्देश भेजा है उससे भारतीय मुसलमान बहुत कुछ सीख सकते हैं। दैनिक 'जागृति' के गतांक में उक्त सन्देश का सारांश इस प्रकार छपा है :—

मास्को से मुझे भारतीय मुस्लिमों के नाम यह सन्देश भेजने में अत्यन्त प्रसन्नता है। तीन वर्ष पहले जब तुर्कों, तातारों और बशखीर मुस्लिमों ने हिटलर के विरुद्ध शस्त्र उठाया था तब हमारे मुल्ला और अल्लामाओं ने उन्हें आशीर्वाद दिया था। हाल ही में मैंने जब मास्को की जामा मस्जिद में १० हज़ार मुसलमानों की नमाज़ में हिस्सा लिया, तब दीनइलाही के बन्दों में एक भी ऐसा नहीं था, जिसका भाई या पिता लड़ाई में न मारा गया हो। मुसलमान पैग़म्बर मुहम्मद के शब्दों को नहीं भूल सकते, जिसमें कहा गया है कि दीन का तक़ाज़ा है कि अपने मादरे-वतन की इज़्ज़त जान देकर रक्खी जाय। स्त्रियाँ भी रूस को मुक्त करने के युद्ध में पीछे नहीं हैं। दिन जो नमाज़ पढ़ी गई, उसमें ६ हज़ार मुस्लिम कि रूस के मुसलमान देश को ग़ुलाम बनाने की चेष्टा को विरुद्ध युद्ध करना धर्मयुद्ध समझते हैं। जर्मन जाति की पुरानी शत्रु है। ११०० वर्ष पहले स्पेन और एक के मुस्लिम राष्ट्रों का इन्हीं ने विध्वंस किया था। इस बात के अकाट्य प्रमाण हैं कि जर्मनों ने सैकड़ों को नष्ट कर उनके सिंहद्वार पर 'स्वस्तिक' लगाया। धर्मग्रन्थ जलाये और मुस्लिम नाम बदल दिये गये सेना में १७२ क़ौमों के लोग लड़ते हैं। उनमें मुस्लि जिनमें ५९००० को वीरता के तमगे मिले हैं।

प्रश्न पूछा जा सकता है कि सोवियट मुसलमानों का क्या स्थान है ?

सोवियट भूमि यूक्रेनियन, बेलो रशियन, रूसियों सोवियट मुसलमानों की भी मातृभूमि है। मातृभूमि भी स्थान पर पड़नेवाला सङ्कट समग्र राष्ट्र का सङ्कट है। विधान के द्वारा समग्र नागरिक अधिकार समग्र रूप से जिस भूमि में हमने जन्म लिया है, हमारे पुरखे हमारी मातृभूमि है। हम क़ौमों के विचार से राष्ट्र को ही नहीं कर सकते।

स्टेलिन विधान के अन्तर्गत समग्र मुसलमानों के स जिन्हें धार्मिक मामलों में पूर्ण स्वतन्त्रता दे दी गई है।

सोवियट राष्ट्रीय नीति ने स्पष्ट कर दिया है कि के मतावलम्बी एक परिवार के सदस्यों की नाईं एक के नीचे रह सकते हैं और पारस्परिक सहयोग से राष्ट्र का कर मातृभूमि का गौरव बढ़ा सकते हैं। यही कारण सोवियट की मुक्ति और विजय-यात्रा में मुस्लिमों ने अ से सोवियट के अमरत्व की कहानी लिखी है।

भारत-सरकार का नया बजट

केन्द्रीय असेम्बली में अर्थ सदस्य-द्वारा पेश छठे युद्ध-बजट की प्रमुख मदें साप्ताहिक 'कर्मवीर' सार इस प्रकार हैं :—

चालू वर्ष में अनुमानतः १५५·७७ करोड़ रु० का वर्ष १६३·८९ करोड़ रु० का घाटा रहेगा। १९४४-४ रक्षा पर ३९७·२३ करोड़ रु० ख़र्च हुआ, जब कि अ था कि २७६·६१ करोड़ रुपया ख़र्च होगा। रक्षा-विभाग करनेवाले व्यक्तियों तथा उनके आश्रितों की ग्रेचुइ पेन्शन देने के सम्बन्ध में ब्रिटिश सरकार के साथ एक हुआ है, जिसके अनुसार राष्ट्र-रक्षा की मद में प्रति-वर्ष रु० की बचत होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चालू वर्ष में मुद्रास्फीति को कम करने के लिए किये गये नेक उपाय पर्याप्त सफल रहे। अतएव विगत १२ महीनों में र्थिक क्षेत्र में स्थिरता रही। खाद्य-अवस्था सुधर गई और व समान रहे।

'जितना आप कमाते हैं, उसके अनुरूप कर दीजिए' के द्धान्त के अनुसार ६० करोड़ रुपये की आय हुई। फ़रवरी ४४ से जनवरी १९४५ तक सार्वजनिक ऋणों से २८६ करोड़ की आय हुई।

युद्धकाल के बाद पुनर्निर्माण की योजनाओं को कार्यान्वित ने के लिए कृषि, आयकर, केन्द्रीय आबकारी, जागीर कर र बिक्री टैक्स लगाये जायँगे।

१९४३-४४ का खाता

१९४३-४४ के संशोधित बजट के अनुसार ९२४३ करोड़ रु० घाटे का अनुमान था; किन्तु राष्ट्र-रक्षा के ख़र्च के बढ़ जाने से सली घाटा १८९·७९ करोड़ रुपया रहा।

१९४४-४५ की आय

चालू वर्ष में ३५६·८८ करोड़ की आय होने की आशा है; में से १२ करोड़ रु० की आय तट-कर से, २१० करोड़ रु० आमदनी आयकर से होगी।

उधार-पट्टे की सहायता

भारत अमरीका से उधार-पट्टे के अनुसार सामान और दूसरी ायता प्राप्त करता रहा और बदले में अमरीकन सेनाओं को रत में सामान आदि दिया गया। इस तरह भारत ने बदले १९४४-४५ में ७६·३३ करोड़ रु० और १९४५-४६ में ७०·३४ ोड़ रु० दिये। १९४३-४४ में यह रक़म ३५·११ करोड़ रु० । उधार-पट्टा-समझौते के अनुसार १९४४-४५ के अन्त तक रत को ५१५ करोड़ रु० की सहायता दी गई।

राष्ट्र-रक्षा-व्यय

चालू वर्ष में राष्ट्र-रक्षा की मद में सरकारी ख़र्च बढ़ गया। ांकि—(१) १९४४-४५ का बजट तैयार करते हुए ख़याल यह कि जापान के ख़िलाफ़ भारत से बाहर आक्रमण शुरू किये ायँगे। इसलिए उक्त आक्रमणों का ख़र्च भारत पर न पड़ेगा र भारत की जो सेनायें भारत से बाहर भेजी जायँगी उनका र्च भी भारत पर न पड़ेगा। लेकिन वर्ष के आरम्भ में ही पान ने भारत पर आक्रमण कर दिया। इसलिए भारत से हर जानेवाली सेनाओं को बाहर जाने से रोक दिया गया और हर से कई फ़ौजें भारत बुला ली गईं। इन फ़ौजों के ख़र्च कोई प्रबन्ध उस समय के बजट में नहीं था। (२) गोरी र हिन्दुस्तानी पलटनों के वेतन बढ़ाये गये। (३) अमरीका की सेनायें भारत में तैनात हैं, उन्हें सामान और कर्मचारी आदि के लिए भी ख़र्चा बढ़ गया। (४) बाहर से मँगाये जानेवाले ाल का ख़र्च भी भारत पर डाला गया। (५) १५० लाख पौंड रक़म एक समझौते के अनुसार अदा की गई।

१९४४-४५ का संशोधित बजट

१९४४-४५ के राष्ट्र-रक्षा के संशोधित ख़र्च के अनुसार साधारण विभाग में ३९७·२३ करोड़ और स्थायी निर्माण की मद में ५९·४१ करोड़ रु० का ख़र्च हुआ है:

साधारण व्यय

(१) बुनियादी बजट	३६·५७	करोड़ रु०
(२) भावों की तेज़ी से	१६·९२	,, ,,
(३) भारत के युद्ध-प्रयास	३३·२२	,, ,,
(४) साधारण ख़र्च	९·३२	,, ,,
कुल जोड़	३९७·२३	,, ,,

स्थायी निर्माण

(१) हवाई अड्डे	१५·८९	करोड़ रु०
(२) औद्योगिक विस्तार	३·३४	,, ,,
(३) हवाई अड्डों के लिए बदले में सहायता	२५·२०	,, ,,
(४) नौ-सेना के लिए नवनिर्माण	१·००	,, ,,
(५) टैली-यातायात	३·९८	,, ,,
(६) साधारण-व्यय	२०·००	,, ,,
कुल	५९·४१	,, ,,

१९४४-४५ का शासन-व्यय

चालू वर्ष में संशोधित शासन-व्यय ११५·४२ करोड़ रु० हुआ, जब कि बजट में यह ख़र्च ८६·३८ करोड़ रक्खा गया था। यह ख़र्च इन महत्त्वपूर्ण मदों में बढ़ा:—

(१) बङ्गाल दुर्भिक्ष में जो ख़र्च हुआ उसका आधा हिस्सा भारत-सरकार ने अपने ऊपर लिया और वह १० करोड़ से अधिक न होने देने का निश्चय हुआ था। इसमें से १९४३-४४ में करोड़ रु० की व्यवस्था कर दी गई। इसमें फ़ैसले के फल-स्वरूप चालू वर्ष में ५॥ करोड़ रु० का ख़र्च बढ़ गया। (२) अप्रैल १९४४ में बम्बई के बन्दरगाह में विस्फोट हो जाने से मुआवज़ा देना पड़ा। इस वर्ष १०॥ करोड़ और अगले वर्ष ५॥। करोड़ रु० का मुआवज़ा देने का निश्चय किया गया है। (३) आश्रितों और उनके परिवार पर १ करोड़ रु० का अतिरिक्त ख़र्च हो गया। (४) भारत-सरकार ने यू० एन० आर० आर० ए० के लिए करोड़ रु० देने का निश्चय किया है। इसमें से १·१० करोड़ रु० का चालू वर्ष और ६·९० करोड़ रु० का अगले वर्ष इन्तज़ाम किया जायगा। (५) केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों को महँगाई का भत्ता देने तथा रियायती भावों पर देने अनाज का ख़र्च जारी रहा और वह बढ़ाया भी गया।

१९४४-४५ का राजस्व

१९४४-४५ में संशोधित राजस्व-स्थिति इस प्रकार रही:—

आय	३५५·८८	करोड़	रु०
व्यय	५२२·६५	,,	,,
घाटा	१५५·७७	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९४५-४६ की आय

१९४५-४६ में आय की आनुमानिक रक़म ३५३'७४ करोड़ रु० है, जब कि चालू वर्ष में संशोधित अनुमान के अनुसार ३५६'८८ करोड़ रु० है। तटकर से ५२'८५ करोड़ रु० और आय, कर से १९० करोड़ रु० की आय होगी। डाक और तार से १०॥ करोड़ रु० का मुनाफ़ा होगा।

१९४५-४६ का रक्षा-व्यय

सन् १९४५-४६ के रक्षा-व्यय का अनुमान आम ख़र्चों में ३९४ करोड़ २३ लाख है और स्थायी निर्माण ख़र्चों में १७ करोड़ ७६ लाख रुपया है।

आय ख़र्च करोड़ों में

१—मूल सामान्य बजट	३६'७७
२—मूल्य-वृद्धि का प्रभाव	१९'७६
३—भारत के युद्ध-कार्य	३२८'५१
४—साधारण व्यय	९'१९
कुल	३९४'२३

स्थायी निर्माण

१—हवाई अड्डे, हवाई सेना	२.४२
२—औद्योगिक विकास पर व्यय	१.५५
३—आपसी सहायता—हवाई अड्डे	१०.७४
४—भारतीय बेड़े के नये जहाज़	.५०
५—टेलीफोन आदि की नई योजना पर	२.५५
कुल	१७.७६

शासन-व्यय के अनुमान

चालू वर्ष में शासन-व्यय के संशोधित अनुमानों में ८ करोड़ रुपयों की वृद्धि हुई है।

आर्थिक स्थिति

अगले वर्ष की आर्थिक स्थिति इस प्रकार है :—

	करोड़ों में
शासन-व्यय	१२३.४०
रक्षा-व्यय	३९४.२३
आय में से कुल व्यय	५१७.६३
वर्तमान कर की दृष्टि से कुल आय	३५३.७४
घाटा	१६३.८९

अमरीका के पत्र

किसी उन्नत देश के पत्रों की कैसी अवस्था है, यह जानने की उत्सुकता हम भारतीय पत्रकारों को रहती है, विशेषतः इन दिनों, जब कि भारतीय पत्र पत्रकारिता की अग्नि-परीक्षा में से गुज़र रहे हैं। साप्ताहिक 'अर्जुन' में श्रीयुत शंकरदेव विद्यालङ्कार ने अमरीका के पत्रों का जो परिचय छपाया है उससे हमें वहाँ के पत्रों से यहाँ के पत्रों की तुलना करने का अच्छा मसाला मिला है। लेख का सारांश इस प्रकार है :—

अमरीका की तेरह करोड़ अस्सी लाख की जनसंख्या पर करोड़ चालीस लाख अख़बार पढ़े जाते हैं। इस प्रकार पर प्रति तीन आदमियों में एक व्यक्ति अख़बार ख़रीदता है।

आज से सौ वर्ष पूर्व वहाँ पर केवल दो सौ पचास अख़बार थे और उनकी कुल बिक्री सात लाख प्रतियों की। आज तो अमरीका में ऐसे भी अख़बार हैं, जिनमें प्रत्येक की सात लाख प्रतियों से अधिक है। सन् १९०० में समाचारपत्रों की संख्या २५० से बढ़कर दो हज़ार से हो गई थी। सन् १९४२ में यह संख्या घटकर १८०० आ गई थी परन्तु कुल प्रतियों की बिक्री में तो हुई है। इन अख़बारों में से ३४५ तो सवेरे और १४४ को प्रकाशित होते थे। इसके सिवा रविवार के ४७४ प्रति सप्ताह प्रकट होते हैं। युद्ध के कारण प्रायः सभी अख़बारों को अपना आकार कम करना पड़ा है। कागज़ और मशीनें प्राप्त करने की कठिनाई के कारण भारत अन्य देशों में भी बहुत-से अख़बारों को बन्द करना पड़ा। अमरीका में सन् १९४२ में १७८७ अख़बार थे। वे भी १७५४ तक आ गये हैं। तथापि कुल प्रतियों की बिक्री लाख बढ़ गई है। क्योंकि लड़ाई के कारण बहुत-से के पास पैसा ख़ूब आ गया है और कइयों की अख़बार की इच्छा भी जागी है। अतः इन दोनों प्रकार के लोगों ने पढ़ने शुरू किये हैं। बिक्री की यह वृद्धि प्रातःकालीन पत्रों में नहीं हुई अपितु दुपहर, साँझ और रविवारी में हुई है।

एक समय ऐसा था कि शहरों से दूर के स्थानों में में साप्ताहिक अख़बार अच्छी मात्रा में पढ़े जाते थे। ग्रामों तक पहुँचने में उन शहरी अख़बारों को देर लगती। ग्रामीणों की दिलचस्पी के समाचार उन अख़बारों में करते थे। परन्तु अब तो मोटरों, रेलगाड़ियों और विमानों शहरों के अख़बार ग्रामों में शीघ्रता से पहुँच जाते हैं। नहीं, ग्रामों के संवाददाताओं-द्वारा ये दैनिक अख़बार उन के भी ताज़े समाचार छापने लगे हैं, साथ ही ग्रामवासी स्वदेश और विदेश के समाचारों को जानने की भूख भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

76278
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिणाम यह हुआ है कि साप्ताहिकों की प्रकाशन-संख्या कम हो गई है। आज से पचीस वर्ष पहले सन् १९१९ में तेरह हज़ार साप्ताहिक अख़बार निकलते थे, वे घटकर नौ हज़ार पर आ गये हैं। इन साप्ताहिकों की कुल बिक्री सवा करोड़ प्रतियों पर रह गई है।

अमरीका में पचरङ्गी प्रजायें रहती हैं। अतः अँगरेज़ी के सिवा अन्य भाषाओं में भी कई अख़बार प्रकाशित होते हैं। इनमें पहला नम्बर स्पेनिश अख़बारों का है। २८० स्पेनिश अख़बार निकलते हैं। अमरीका की नैर्ऋत्य दिशा में इनका चलन अधिक है। इसके बाद क्रमशः फ्रेञ्च, जर्मन और इटालियन अख़बारों का नम्बर आता है। इन तीनों भाषाओं में इस प्रकार अख़बार छपते हैं—

१—फ्रेञ्च भाषा के दो सौ अख़बार, २—जर्मन भाषा के ६५ अख़बार, ३—इटालियन भाषा के १३० अख़बार।

अफ्रीका के मूल-निवासी हबशियों की भी संख्या अमरीका में पर्याप्त है। इन लोगों ने अँगरेज़ी भाषा को अपनी मातृभाषा बना लिया है, अतः उनके पृथक् अख़बार नहीं निकलते। चीनी और जापानी लोग भी लाखों की संख्या में अमरीका में रहते हैं। उनके भी कुछ एक अख़बार प्रकाशित होते हैं। अमरीका में भारतीयों की संख्या तीन हज़ार है। उनमें किसानों, मज़दूरों, दुकानिकों और लेखकों का समावेश होता है। वहाँ किसी भारतीय भाषा में अख़बार निकालना तो शक्य नहीं है परन्तु अमरीकनों में भारतवर्ष की समस्याओं का प्रचार करने के लिए युत अनूपसिंह तथा श्रीकृष्णलाल श्रीधराणी आदि भारतीय लोग मिलकर 'वाइस ऑफ़ इंडिया' (भारत की आवाज़) नामक एक मासिक पत्र निकालते हैं।

एक व्यक्ति अथवा संस्था की संचालकता के नीचे चलनेवाले भिन्न-भिन्न अख़बारों के गुच्छक पिछले चालीस वर्षों में अमरीका में ख़ूब बने हैं। भारत में भी इस प्रकार की शुरूआत हुई है। उदाहरण के लिए बंबई में 'क्रानिकल' और 'जन्मभूमि' तथा कलकत्ता में 'मॉडर्न रिव्यू' के मालिक लोग दो-दो भाषाओं के दैनिक और मासिक पत्र प्रकाशित करते हैं।

अमरीका में इस प्रकार के 'स्क्रिप्स हावडे' नामक अख़बारी गुच्छक की संरक्षा में कुल मिलाकर इक्कीस अख़बार अठारह भिन्न-भिन्न नगरों से प्रकाशित होते हैं। 'हार्स्ट' नामक अख़बारी गुच्छक की अधिनायकता में सोलह अख़बार चौदह नगरों से प्रकाशित होते हैं। यह तथा अन्य छोटे-बड़े गुच्छक मिलकर अमरीका के पचास तक अख़बारों पर अपना प्रभुत्व रखते हैं। इस प्रकार एक प्रभुत्व के नीचे निकलनेवाले अख़बारों की नीति का निश्चय उनके मालिक करते हैं। उसके अनुसार ही सम्पादक लोग अन्य विषयों का निर्णय कर लिया करते हैं।

सामान्यतया अमरीकन अख़बारों का आकार १६ × २३ इंच का होता है। अधिकतर अख़बार ढाई आने (पाँच सेंट) की क़ीमत में बिकते हैं। अमरीकन अख़बारों में पहले पन्ने पर विज्ञापन छापने का रिवाज नहीं है। हमारे देश में मद्रास के प्रसिद्ध दैनिक पत्र 'हिन्दू' का पहला पन्ना केवल विज्ञापनों से भरा रहता है। बम्बई का प्रख्यात दैनिक 'टाइम्स आफ़ इन्डिया' भी कुछ वर्ष पूर्व ऐसा ही करता था। अमरीका में भी भारत की तरह विज्ञापनों पर ही अख़बार का आधार होता है। वहाँ पर पाँच लाख प्रतियों की बिक्रीवाले अख़बार के इतनी प्रतियाँ छापने, लिखाने, उसे बिकवाने में जितना ख़र्च होता है उसका एक बड़ा हिस्सा विज्ञापनों द्वारा प्राप्त करना होता है। भारत की तरह अमरीका में भी विज्ञापन पर ही अख़बार के जीवन-मरण का प्रश्न आश्रित है। हमारे यहाँ महात्मा गाँधी जी के 'हरिजन' और कम्युनिस्ट दल के पत्र 'लोकयुद्ध' में इश्तिहार नहीं छापे जाते। किसी दैनिक पत्र ने बिना विज्ञापन छापे चलने का साहस अब तक नहीं किया है। समस्त अमरीका में 'पी० एम०' नामक एक ही ऐसा दैनिक पत्र है जिसमें विज्ञापन बिलकुल नहीं लिये जाते। इस पत्र की एक लाख चवालीस हज़ार प्रतियाँ छपती हैं। न्यूयार्क के कितने ही पत्रों की दो से छः लाख तक प्रतियाँ बिकती हैं। 'हार्स्ट' नामक गुच्छक की संरक्षा में निकलनेवाले 'न्यूयार्क अमरीकन जरनल' नामक रूज़वेल्ट-विरोधी दैनिक पत्र की छः लाख इकतालीस हज़ार प्रतियाँ बिकती हैं।

अमरीकन अख़बारों के ३५० संवाददाता इँगलिस्तान, फ्रांस, इटली, रूस, भारतवर्ष, चीन और प्रशान्त महासागर के द्वीपों के समाचार एकत्र करके छोटे से छोटे मार्ग-द्वारा अपने-अपने अख़बारों को पहुँचाने का काम कर रहे हैं। लड़ाई के मोर्चे पर होनेवाली घटनाओं को जानने के लिए कितने ही संवाददाताओं ने अपने प्राण भी गँवाये हैं। ये लोग समाचारों के सिवा अपने अख़बारों को फोटो भी भेजते हैं।

परन्तु लड़ाई के मोर्चे इतने लम्बे और बिखरे हुए होते हैं कि वहाँ पर संवाददाताओं का पहुँच जाना अशक्य होता है। इसलिए अमरीकन अख़बारों के मालिकों ने एक अच्छी व्यवस्था की है। भिन्न-भिन्न अख़बारों के संवाददाताओं के द्वारा विभिन्न मोर्चों के समाचार, चित्र आदि जो कुछ एकत्र किये जाते हैं, वे सब अमरीका में एक स्थान पर एकत्र किये जाते हैं। इस एकत्र हुए साहित्य में से समस्त देश के अख़बार अपनी इच्छा के अनुसार लेख, समाचार, चित्र आदि उपयोग में ले सकते हैं।

टाटा-बिड़ला योजना की रूपरेखा

टाटा-बिड़ला योजना का दूसरा भाग अभी कुछ दिन पूर्व प्रकाशित हुआ है। इस योजना के महत्त्वपूर्ण आँकड़े हिन्दी उद्यम में इस प्रकार छपे हैं :—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टाटा-बिड़ला योजना किस लिए ?

पन्द्रह वर्ष में भारत की प्रति मनुष्य सालाना आमदनी, १९३१-३९ के दरमियान जो प्रति मनुष्य सालाना आमदनी थी, उससे दुगनी बढ़ाने का प्रमुख उद्देश्य सामने रखते हुए यह योजना बनाई गई है। योजना बनानेवालों को विश्वास है कि नित्य की उपयोगी वस्तुओं के भाव १९३१ से १९३९ के दरमियान जिस अनुपात में थे, वही अनुपात यदि फिर से रहा और प्रति मनुष्य आमदनी आज की आमदनी की अपेक्षा दुगनी बढ़ गई, तो जनसाधारण के रहन-सहन का दर्जा अवश्य बढ़ जावेगा।

हर साल ५० लाख के हिसाब से भारत की जनसंख्या बढ़ती चली गई तो हर मनुष्य की सालाना आमदनी दुगनी होने के लिए समूचे राष्ट्र की आय इस कालखण्ड की औसत आमदनी की तिगुनी बढ़नी चाहिए, जिसके लिए छोटे- मोटे धन्धों का उत्पादन कम से कम पाँचगुना और कृषि का उत्पादन दुगने से कुछ अधिक बढ़ाना आवश्यक है। हमें यह न भूलना चाहिए कि प्रस्तुत योजना के अनुसार उद्योगधन्धों की वृद्धि पाँचगुना होने पर भी भारतवर्ष मुख्यतः किसानों का ही देश रहेगा।

टाटा-बिड़ला योजना में विशेष बल दिया गया है औद्योगिक पुनर्निर्माण में कारख़ानों के लिए यन्त्र-सामग्री बनाने और उन्हें चलाने के लिए बिजली-शक्ति निर्माण करने पर। कोयले की कमी को तो उन्होंने पहले से ही हिसाब में ले लिया है।

रहन-सहन के दर्जे का न्यूनतम परिमाण

इस योजना के पहले भाग में मनुष्य की कम से कम आवश्यकतायें क्या होती हैं इसकी चर्चा, भिन्न-भिन्न देशों के तुलनात्मक अङ्क देते हुए, की है। अन्न, वस्त्र, आच्छादन, स्वास्थ्य तथा शिक्षा के सम्बन्ध में प्रत्येक मनुष्य को क्या-क्या मिलना आवश्यक है इस विषय में योजना में जो विवरण दिया हुआ है, उसका उपयोग भिन्न-भिन्न व्यवसाय के लोगों का वेतन निर्धारित करने के लिए अच्छे प्रकार से हो सकता है।

प्रत्येक मनुष्य के भोजन में प्रतिदिन कौन-कौन से पदार्थ और कितनी मात्रा में होने चाहिए, इसका ब्योरा योजना में निम्न प्रकार दिया गया है—

गेहूँ, ज्वार, बाजरा	१६ औंस
दाल	३ "
शक्कर	२ "
शाक-भाजी	६ "
फल वग़ैरह	२ "
तैल या चरबी-युक्त पदार्थ	१·५ "
दूध	८ "
या मांस, मछली, अण्डे वग़ैरह	२·३ "

यदि इस हिसाब से प्रति मनुष्य प्रतिवर्ष भोजन-ख़र्च ६५ ६० लगाया जाय तो देश की कुल जनसंख्या का वार्षिक भोजन ख़र्च २१०० करोड़ रुपये होगा।

प्रत्येक मनुष्य को सालाना प्रायः ३० गज़ कपड़ा इस हिसाब से कुल जनसंख्या को हर साल २५५ करोड़ का कपड़ा लगेगा। हर एक आदमी के हिस्से में १०० जगह आवेगी और मकान हवादार और दूर-दूर बनाने उसके लिए कुल ख़र्च १४०० करोड़ रुपये (प्रति वर्ष करोड़ रुपये) होगा।

आरोग्य-रक्षा

जनता की आरोग्य-रक्षा के हेतु निम्नलिखित कार्य क्रम होना ही चाहिए—

(१) देहातों और शहरों में सफ़ाई का और स्वच्छ का प्रबन्ध।

(२) हर देहात में एक औषधालय।

(३) शहरों में अस्पताल और सूतिकागृह।

(४) क्षय, नासूर (कैन्सर), कुष्ठ, और दुर्व्याधियों के इलाज करने के लिए विशेष औषधालय।

यह सब करने के लिए शुरू में २८१ करोड़ रुपये में सालाना १८५ करोड़ रुपये ख़र्च लगेगा।

शिक्षा

रहन-सहन का कम से कम दर्जा रखने के लिए १० वय से ऊपर प्रत्येक लड़के और लड़की को तथा प्रौढ़ को लिखा-पढ़ा होना ही चाहिए और उसकी बौद्धिक इतनी चाहिए कि अपने चारों ओर के सामाजिक तथा जीवन से सम्बन्धित सर्वसाधारण समस्याओं को वह समझ इस प्राथमिक शिक्षा-कार्य्य के लिए प्रारम्भ में १५२ करोड़ और आगे चलकर प्रति वर्ष ८८ करोड़ रुपये ख़र्च लगेगा।

जनता की न्यूनतम आवश्यकताओं पर ख़र्च

जीवन के लिए न्यूनतम परिमाण में आवश्यक वस्तु जो ख़र्च करना होगा, उसका ब्योरा इस प्रकार है—

	करोड़ रु०
अन्न	२,१०
कपड़ा	२५
नये मकान और पुरानों की मरम्मत	२५
आरोग्य-रक्षा	१८५
प्राथमिक शिक्षा	८८
कुल वार्षिक ख़र्च	२,६९

इतना ख़र्च करने के लिए देश के कुल जनसंख्या आमदनी उसी मात्रा में बढ़नी चाहिए। योजना के यह वृद्धि निम्न अनुपात में चाहिए। (अङ्क देश जनसंख्या की सालाना आमदनी करोड़ रुपये में दर्शाते हैं)

१९३१-३२ पन्द्रह वर्ष के अन्त में प्रतिवर्ष

		कितनी आमदनी होगी ?
उत्पादक धन्धे	३७४	२,२४०
कृषि	१,११६	२,६७०
यातायात, व्यापार आदि जैसे अन्य उद्योग	४८४	१,४५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्योगधन्धे

नये उद्योगधन्धे स्थापित करते समय उन बड़े धन्धों को प्रथम स्थान देना चाहिए, जिन पर दूसरे कोई छोटे-मोटे धन्धे अवलम्बित हैं। लोगों की दैनिक आवश्यकता की वस्तुओं के कारखानों को अप्रधान स्थान दिया जायगा।

कृषि-सुधार

भारतीय जनता को भरपेट अन्न मिलने के लिए कम से कम छः वर्ष के लिए ही यहाँ के खेतों का अनाज विदेश भेजना बन्द करना चाहिए। कृषि-सुधार के लिए दो बातें नितान्त आवश्यक हैं। एक तो सहकारी संस्था द्वारा किसानों का ऋण-मुक्त होना और दूसरे, सामूहिक तौर पर, किन्तु किसानों के प्रभुत्व को क़ायम रखते हुए, खेती का पुनर्निर्माण। खेतों को समय सींचने के लिए नहर और कुएँ बनाने चाहिए। आधुनिक ढँग से खेती किस तरह की जाती है यह बताने के लिए गाँव में एक आदर्श खेत अवश्य होना चाहिए।

यातायात के साधनों में वृद्धि

इस सम्पूर्ण योजना को व्यावहारिक रूप देने के लिए यातायात के साधनों में वृद्धि होना नितान्त आवश्यक है। वैसे ही स्कूल और कॉलेज की उच्च शिक्षा-प्राप्त लोगों की संख्या भी कुछ बढ़ना आवश्यक है।

कुल व्यय

(सम्पूर्ण योजना का ख़र्च करोड़ रुपये में दिग्दर्शित)

	प्राथमिक व्यय	वार्षिक व्यय
उद्योगधन्धे	४,४८०	—
कृषि	८४५	४००
यातायात के साधन	८९७	४९
शिक्षा	२६७	२३७
आरोग्य	२८१	१८५
मकानात	२,२००	३१८
अन्य फुटकर काम	२००	—
	९,१७०	१,१८९

प्राथमिक ख़र्च तथा वार्षिक ख़र्च मिलाकर सम्पूर्ण योजना के लिए कुल पूँजी १०,००० करोड़ तक लगानी पड़ेगी। यह क्रमानुसार तीन पञ्चवार्षिक योजनाओं में लगेगी। पहले वर्ष में १४०० करोड़, दूसरे में २,९०० करोड़ और तीसरे में ५,७०० करोड़ रुपये लगाये जावेंगे।

पूँजी कैसे इकट्ठी होगी

इस विराट् योजना को सफल बनाने के लिए लगनेवाली विराट् पूँजी निम्न सूत्रों से प्राप्त होने की आशा है—

	करोड़ रुपये
जनता का सञ्चित धन	३००
स्टर्लिंग पावने	१,०००
आयात की अपेक्षा अधिक मात्रा में होनेवाले निर्यात माल की क़ीमत	६००
विदेश से प्राप्त क़र्ज़	७००
जनता की बचत	४,०००
सरकार द्वारा निर्मित सिक्के	३,४००
	कुल १०,०००

रेडियो और हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की स्थायी समिति ने गत २५ मार्च को दिल्ली में रेडियो की भाषा-सम्बन्धी नीति पर जो प्रस्ताव पास किया है उसमें हिन्दी-प्रेमियों की रेडियो की भाषा-सम्बन्धी नीति का स्पष्टीकरण पूर्ण रूप से हो जाता है। प्रस्ताव का मूलरूप इस प्रकार है:—

भारतीय गवर्नमेंट के रेडियो विभाग में हिन्दी भाषा के विरोध की जो नीति वर्षों से बरती जा रही है उसकी ओर हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ने बार-बार गवर्नमेंट का ध्यान दिलाया है।

यह अनुभव कर कि रेडियो विभाग के अधिकारी अपनी पक्ष-पात-नीति को नहीं छोड़ते और हिन्दी भाषा की बराबर अवहेलना करते हैं, सम्मेलन ने अपने पिछले अधिवेशन में, जो जयपुर में हुआ, यह निश्चय किया कि हिन्दी के लेखक और कवि रेडियो विभाग से सहयोग उस समय तक त्याग दें जब तक वह अपनी हिन्दी-विरोधी नीति नहीं छोड़ता। इस निश्चय का पालन कर हिन्दी के मान्य लेखकों और कवियों ने रेडियो विभाग से सहयोग त्याग दिया। सम्मेलन की स्थायी समिति आदर और प्रेम के साथ उनकी सराहना करती है और उनकी दृढ़ता पर उन्हें बधाई देती है।

पिछले दिसम्बर पास में भारतीय गवर्नमेंट की ओर से रेडियो की भाषा-सम्बन्धी नीति पर विचार करने के लिए एक कमेटी की नियुक्ति की घोषणा हुई और हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के पास पत्र आया कि वह अपने तीन प्रतिनिधि इस कमेटी में भाग लेने के लिए भेजे।

सम्मेलन की कार्यसमिति ने तीन प्रतिनिधि भेजना स्वीकार किया, किन्तु अपने उत्तर में यह स्पष्ट कर दिया कि जो कमेटी बनी है वह हिन्दी-विरोधी सरकारी नीति के चलानेवालों और उसके पोषकों से भरी है, इसलिए सम्मेलन के प्रतिनिधि इसी शर्त पर सम्मिलित होंगे कि यह कमेटी कोई निर्णय मताधिक्य से नहीं करेगी और सम्मेलन के प्रतिनिधि विषयों के विचार में इस दृष्टि से भाग लेंगे कि वह भारतीय गवर्नमेंट को भाषा-सम्बन्धी सब अंगों पर विचार करने और हिन्दी के विषय में न्याय करने में सहायता दें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस कमेटी की बैठक दिल्ली में फ़रवरी के प्रारम्भ में हुई। सम्मेलन की ओर से श्री सम्पूर्णानन्द, श्री आनन्द कौसल्यायन और श्री मालिचन्द शर्मा ने उसमें भाग लिया और सम्मेलन का दृष्टिकोण उपस्थित किया। सम्मेलन की ओर से कमेटी की माँग के अनुसार एक लिखित वक्तव्य (मेमोरेंडम) भी कमेटी के मन्त्री के पास भेजा गया। (वक्तव्य परिशिष्ट के रूप में इसके साथ दिया जाता है) गवर्नमेंट की बनाई कमेटी की बैठक में विचार-विनिमय हुआ किन्तु कोई प्रस्ताव स्वीकृति के लिए उपस्थित नहीं हुआ और कमेटी ने किसी प्रकार का निर्णय नहीं किया—उसके सभापति सर सुलतान अहमद ने कमेटी की समाप्ति के समय बताया कि विचार के बाद भारतीय गवर्नमेंट अपनी नीति केन्द्रीय एसेम्बली के बैठने के समय प्रकाशित करेगी।

१४ फरवरी की विज्ञप्ति द्वारा भारतीय गवर्नमेंट ने अपनी नीति प्रकाशित की है। उससे स्पष्ट है कि पुरानी नीति में कोई उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं हुआ है और वही उर्दू भाषा जो जो हिन्दुस्तानी के नाम से चलाई जा रही थी चलाने का निश्चय किया गया है। गवर्नमेंट के वक्तव्य के समय से अब तक जिस भाषा में रेडियो के प्रसार का काम हो रहा है उसको देखते हुए इस समिति का दृढ़ मत है कि वह भाषा हिन्दी संसार को मान्य नहीं हो सकती। वह ज्यों-की-त्यों अरबी-फारसी-मिश्रित उर्दू है।

सर सुलतान अहमद ने राज्य-परिषद् (काउन्सिल आफ़ स्टेट) में हाल में यह कहा है कि जो कमेटी गवर्नमेंट की ओर से रेडियो की भाषा पर विचार करने के लिए नियत हुई थी वह इस परिणाम पर पहुँची कि हिन्दी और उर्दू के पृथक् प्रसार न हों। इस समिति को ऐसे असत्य वक्तव्य को सुनकर आश्चर्य हुआ, क्योंकि कमेटी का कोई निर्णय इस प्रकार का नहीं हुआ था। सम्मेलन के लिखित वक्तव्य में यह स्पष्ट कहा गया था (और इसी पर सम्मेलन के प्रतिनिधियों ने भी बल दिया था) कि, "हिन्दी की दो शैलियाँ हैं—हिन्दी और उर्दू। यदि समाचार अथवा किसी दूसरे विषय के प्रसार के लिए एक ही शैली का प्रयोग करना है तो वह ऐसी हिन्दी ही हो सकती है जो न केवल संयुक्त प्रान्त, बिहार, मध्यप्रान्त, राजपूताना और पंजाब में किन्तु महाराष्ट्र, गुजरात, बंगाल, उड़ीसा और दूसरे प्रान्तों में भी समझी जा सके। इस हिन्दी में ऐसे फ़ारसी शब्दों का जो साधारण प्रयोग में हैं बहिष्कार नहीं होगा। किन्तु भाषा का आधार देशी शब्द ही हो सकता है चाहे अपने बदले हुए रूपों में या अपने मूल साहित्यिक रूपों में। नये शब्दों के बनाने में आधार या तो संस्कृत और प्राकृत हो सकती है, जो देश की आधुनिक साहित्यिक भाषाओं के समान स्रोत हैं या उनसे निकले हुए शब्द हो सकते हैं।"

साथ ही इस बात का अनुभव कर कि उर्दू के पक्षपातियों को इस प्रकार की भाषा मान्य न होगी और वे उर्दू शैली में भी रेडियो-प्रसार चाहेंगे सम्मेलन-वक्तव्य (मेमोरेंडम) में यह भी स्पष्ट कर दिया था कि उर्दू के लिए अलग प्रसार हो और इस दशा में यह निर्णय करना होगा कि हिन्दी और शैलियों के लिए समय किस अनुपात में दिया जाय।

सम्मेलन की ओर से भेजे वक्तव्य का यह समिति पूर्ण करती है और अपने इस वक्तव्य का उसको अङ्ग बनाती है।

अब जो निर्णय भारतीय गवर्नमेंट ने प्रकाशित किया उसका जिस प्रकार पालन हो रहा है उसमें सम्मेलन के सिद्धान्तों की अवहेलना की गई है और की जा रही है। यह समिति समस्त हिन्दीभाषियों की ओर से सर सुलतान के निर्णय का तीव्र विरोध करती है और समस्त हिन्दी लेखकों और कवियों से अनुरोध करती है कि वे बराबर दृढ़ता से बहिष्कार जारी रक्खें।

हिन्दी बोलनेवालों की संख्या और हिन्दी द्वारा शिक्षा वालों की संख्या उर्दू बोलनेवालों और उर्दू द्वारा शिक्षा वालों की संख्या से कई गुना अधिक है। हिन्दी को में स्थान न देना और बल-पूर्वक यत्न करना कि केवल उर्दू ही चलाई जाय रेडियो विभाग का स्पष्ट अत्याचार है। की माँग यह है कि रेडियो की मुख्य भाषा हिन्दी हो भारतवर्ष की सबसे अधिक जन-संख्या की वही मानी है। जिस प्रकार अन्य प्रान्तीय भाषाओं का स्थान प्रकार जनता के एक विशेष अंश के लिए उर्दू में भी प्रसार हो सकता है। इस नीति को ईमानदारी के साथ के लिए यह आवश्यक है कि हिन्दी के विद्वान् और रेडियो विभाग में ऊपर से नीचे तक दायित्व के पदों पर जायँ और हिन्दी विद्वानों को रेडियो से अलग रखने की इस समय चल रही है वह दृढ़ता से बदली जाय।

यह समिति भारतीय गवर्नमेंट से अनुरोध करती है सुलतान अहमद से, जो पक्षपात और अन्याय से हिन्दी कर रहे हैं और हिन्दी के विद्वानों और लेखकों का कर रहे हैं, रेडियो विभाग का दायित्व ले लिया जाय ऐसे दूसरे सदस्य को दिया जाय जो हिन्दी के साथ न्याय यह समिति केन्द्रीय व्यवस्थापिका सभा (लेजिस्लेटिव एसेम्बली) तथा राज्य-परिषद् (कौंसिल आफ़ स्टेट) के सदस्यों से करती है कि हिन्दी भाषा के साथ जो अत्याचार रेडियो में हो रहा है उसे दूर करने में सहायक हों।

परिशिष्ट

१. अखिल भारतीय रेडियो द्वारा जो भाषा उपयोग जा रही है वह उर्दू है, जिसमें अरबी और फ़ारसी प्राधान्य है, यद्यपि उक्त विभाग उसे हिन्दुस्तानी कहता है

२. यह स्पष्ट है कि जिन व्यक्तियों के हाथ में प्रोग्राम का काम है उनकी अन्य साहित्यिक योग्यतायें कुछ भी से प्रायः सब को शुद्ध हिन्दी का कोई ज्ञान नहीं है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्दों का शुद्ध उच्चारण तक नहीं कर सकते, उदाहरणार्थ स्वर्ग उच्चारण 'सुर्ग' और 'हरिश्चन्द्र' का उच्चारण 'हरिश्चन्दर' या जाता है।

३. हिन्दी की दो शैलियाँ हैं—हिन्दी और उर्दू। यदि चार अथवा किसी दूसरे विषय के प्रसार के लिए एक ही ली का प्रयोग करना है तो वह ऐसी हिन्दी ही हो सकती है जो केवल संयुक्त प्रान्त, बिहार, मध्यप्रान्त, राजपूताना और पञ्जाब किन्तु महाराष्ट्र, गुजरात, बङ्गाल, उड़ीसा, और दूसरे प्रान्तों में समझी जा सके। इस हिन्दी में ऐसे फ़ारसी शब्दों का साधारण प्रयोग में हैं बहिष्कार नहीं होगा, किन्तु भाषा का धार देशी शब्द ही हो सकते हैं चाहे अपने बदले हुए रूपों में अपने मूल साहित्यिक रूपों में। नये शब्दों के बनाने में धार या तो संस्कृत और प्राकृत हो सकती हैं जो देश की धुनिक साहित्यिक भाषाओं की समान स्रोत हैं या उनसे निकले शब्द हो सकते हैं।

४. यह बात स्पष्ट समझ लेनी चाहिए कि अरबी और फारसी रे देश की भाषायें नहीं हैं। उनसे आये हुए शब्द हमारी ा में उसी प्रकार व्यवहार में लाये जा सकते हैं जिस प्रकार देशी भाषा के शब्द या उनसे बिगड़कर बने हुए शब्द हार में आते हैं। किन्तु वे ऐसे विदेशी शब्दों की तरह ही हार में आ सकते हैं, जो हमने अपना लिये हों। हमारे में नये शब्द गढ़ने के लिए अरबी व्यवहार में नहीं लाई जा ती। फ़ारसी आर्यभाषा है अतः उसका प्रयोग वहीं तक ा जा सकता है जहाँ तक कि उसका स्वरूप संस्कृत व प्राकृत लता-जुलता हो, या उसके निकट आता हो। नये शब्दों र्माण के लिए साधारणतः देश विशेषकर उत्तर भारत के कभी-कभी अन्य प्रान्तीय भाषाओं के धातुओं और शब्दों आधार मानना चाहिए। यदि कोई कठिनाई उत्पन्न हो तो कसौटी यही हो सकती है कि जो शब्द प्रयोग में आवे वह हो जिसे देश भर में अधिक से अधिक लोग समझ सकें।

५. जो अरबी तथा फ़ारसी के शब्द व्यवहार में आ गये हैं, रूप हिन्दी व्याकरण के नियमों के अनुसार ही बनाये ो—अरबी तथा फ़ारसी व्याकरण के अनुसार नहीं। उदाहरणार्थ 'साहेब' का बहुवचन 'असहाब' नहीं आवश्यकतानुसार 'साहेब' या 'साहेबों होना चाहिए।

६. यदि किसी प्रोग्राम के लिए एक ही भाषा को व्यवहार में लाना है तो उपर्युक्त सिद्धान्त के अनुसार ही चलना पड़ेगा और भारतीय गवर्नमेंट के रेडियो विभाग द्वारा विचार-विनिमय के लिए भेजे गये इस प्रश्न का कि हफ़्ता और 'सप्ताह', 'इक्तिसादी' और 'आर्थिक' तथा 'इस्तिकबाल' और 'स्वागत' में से कौन से शब्द चुने जाने चाहिएँ, उत्तर यही है कि वे ही शब्द लिए जायँगे जो देशी हैं।

७. किन्तु आज जैसी स्थिति है, उसमें यह स्पष्ट है कि उर्दू के अनुयायी उर्दू में भी प्रसार चाहेंगे। अतएव उर्दू शैली का प्रयोग भी नाटक या साहित्यिक भाषण जैसे कुछ विशिष्ट विषयों के प्रसार के लिए करना होगा, यदि रेडियो विभाग चाहे तो समाचार तथा दूसरे विषय भी हिन्दी और उर्दू दोनों में 'प्रसार' किये जा सकते हैं। परन्तु तब यह निर्णय करना होगा कि हिन्दी तथा उर्दू के प्रोग्रामों का क्या अनुपात होना चाहिए, इसका निर्णय मोटी रीति से उस अनुपात के अनुसार हो सकता है, जो किसी भी रेडियो स्टेशन द्वारा सेवित देश-भाग में हिन्दी और उर्दू जाननेवालों की संख्या का हो, अथवा रेडियो लाइसेन्सदारों की इच्छा जानकर किया जा सकता है।

८. संक्षेप में, दिल्ली और लखनऊ से प्रस्तावित प्रोग्रामों का आधार बहुत बड़े अनुपात में देशी शब्दनिष्ठ हिन्दी होनी चाहिए। निःसन्देह वे प्रोग्राम मुख्यतः उन हिन्दीभाषी प्रदेशों के लिए होंगे जो दिल्ली और लखनऊ स्टेशनों द्वारा सेवित हैं। परन्तु उनका एक विशेष उपयोग यह भी होगा कि वे बङ्गाल, महाराष्ट्र, गुजरात, उड़ीसा तथा अन्य प्रान्तों में भी अधिकतर समझे जायँगे जहाँ हिन्दी से मिलती-जुलती भाषायें बोली और लिखी जाती हैं। उन लोगों के लिए जो उर्दू चाहते हैं कुछ प्रोग्राम उर्दू में भी दिये जाने चाहिएँ। लाहौर स्टेशन में सब प्रोग्राम हिन्दी और उर्दू में बराबर बाँटे जाने चाहिएँ। पेशावर में उर्दू को प्रधानता दी जा सकती है, यद्यपि यहाँ से हिन्दी के प्रोग्राम भी उन लोगों के लिए प्रसारित किये जाने चाहिएँ जो हिन्दी चाहते हैं।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय नोट

कोलोन का पतन

भीषण सङ्घर्ष के बाद कोलोन पर अमरीका की सेनाओं का अधिकार हो जाना जर्मनी के युद्ध-विभाग के लिए एक खुली चुनौती है। यह घटना प्रमाणित करती है कि जर्मनी की प्रतिरोध-शक्ति अब नितान्त क्षीण हो चुकी है और उसके घुटना टेकने में अब अधिक देर नहीं है। कोलोन नगर युद्ध और व्यापार दोनों की दृष्टि से जर्मनी का एक प्रमुख नगर था। इसकी जन-संख्या १० लाख के आसपास है। इसके समीपवर्त्ती प्रदेश में अगणित कल-कारख़ाने हैं जिनमें जर्मनों की युद्ध-सामग्री रात-दिन तैयार हुआ करती थी। युद्ध-कार्य में इस नगर का कितना योग था, इसका पता इसी से लगता है कि मालगाड़ी के ३ हज़ार डिब्बे प्रतिदिन इस नगर में आते-जाते थे। जर्मनी के यातायात का तो यह नगर प्रमुख केन्द्र था।

इस महत्त्वपूर्ण नगर ने अल्प काल के इतिहास में ही उत्थान-पतन के अनेक दृश्य देखे हैं। नैपोलियन का अभ्युदय होने पर यह नगर और इसका समीपवर्त्ती राइनप्रदेश फ़्रान्स के अधिकार में चला गया था। इस घटना के ६० वर्ष पश्चात्, प्रिन्स बिस्मार्क ने इस पर अपनी पताका फहराई थी। जब हिटलर का अभ्युदय हुआ तब उसने यहाँ पर अपनी तोपें जमा दीं और फ़्रान्सीसियों को वहाँ से खदेड़ दिया। आज यह नगर अमरीका की सेनाओं के अधिकार में है।

इसमें सन्देह नहीं है कि इस महत्त्वपूर्ण नगर के हाथ से निकल जाने से जर्मनी की रीढ़ टूट गई है और मित्र सेनाओं के लिए बर्लिन तक का मार्ग साफ़ हो गया है, क्योंकि दोनों ओर से बढ़ती हुई मित्र सेनाओं को रोकने के लिए जर्मनी के पास दो ही प्राकृतिक बाधायें थीं—इधर राइन और उधर डोवर। इन दोनों बाधाओं पर मित्रराष्ट्र विजय प्राप्त कर चुके हैं।

कोलोन की रक्षा में जर्मनी ने जितना प्रयत्न किया है उससे अनुमान होता है कि रूर की घाटी में स्थित अपनी फ़ैक्टरियों की रक्षा के लिए वह और भी अधिक सङ्घर्ष करेगा। उस प्रदेश में उसके फ़ौजी कारख़ाने हैं और उसकी रेलों को कोयला भी वहीं से मिलता है। इसी आधार पर विद्वानों का अनुमान है कि युद्ध अब और अधिक भीषणता से चलेगा। हर वान रिबनट्राप ने भी कहा है कि राइनप्रदेश की रक्षा के लिए जर्मनी कुछ उठा न रक्खेगा। पर साथ ही उसके यह कहने से कि 'यदि जर्मनी को घुटना टेकने के लिए विवश होना पड़ा तो वह रूस के आगे घुटना टेकेगा, अँगरेज़ों या अमरीकनों के नहीं'; यह सिद्ध होता है कि जर्मनों को अपनी पराजय स्पष्ट दिखाई देने लगी है। रही शत्रुपक्ष में से इच्छानुसार चुनाव करने की बात, इससे भी कोई अन्तर नहीं पड़ता। सब जानते हैं कि रूस, अमरीका और इँग्लैण्ड जर्मनी के लिए इस समय एकमत होकर उद्योग कर रहे हैं। इस में विजय भी सब की सम्मिलित समझी जायगी, एक की नहीं।

हैदरी मिशन

भारत-सरकार के उद्योग और नागरिक रसद-विभाग के मन्त्री सर अकबर हैदरी के नेतृत्व में जो आर्थिक मिशन भारत सरकार की ओर से व्यापार-सम्बन्धी बातचीत करने के लिए इँग्लैंड भेजा गया है, उसे लेकर यहाँ के राजनीतिज्ञों और व्यापारी वर्ग में बहुत बेचैनी पैदा हो गई है। कारण यह कि उसके उद्देश्यों का सरकार की ओर से स्पष्टीकरण नहीं हुआ है। साथ ही पिछले दिनों लन्दन से प्राप्त एक समाचार ने यह बतलाकर कि 'हैदरी मिशन की ब्रिटिश अधिकारियों के साथ वाली बातचीत को सर्वथा गोप्य रक्खा जायगा और उक्त मिशन द्वारा जो रिपोर्ट तैयार की जायगी, उसकी भी कुछ मुख्य बातें ही भारतीयों को बताई जायँगी, सब नहीं' परिस्थिति को और भी सङ्कीर्ण कर दिया है। फल-स्वरूप यहाँ के अर्थशास्त्री उक्त मिशन के सम्बन्ध में तरह-तरह की अटकलें लगाने लगे। पिछले दिनों एक सदस्य ने केन्द्रीय धारासभा में यहाँ तक कह डाला था कि हैदरी मिशन हमारे 'पौण्ड पावना' का मार्ग साफ़ करने के लिए ही भेजा गया है। सर सीतलवाद ने फ़ेडरेशन ऑफ़ इंडियन चेम्बर्स आफ़ कामर्स में भाषण देते हुए कुछ इसी प्रकार की आशङ्का प्रकट की है। उनका कहना है कि 'इस समय जब लड़ाई के कारण नये कल-कारख़ाने खुल जाने से देश में उत्पादन बढ़ गया है तब कोयले की कमी के कारण इन उद्योग-धन्धों में बाधा पड़ रही है। सरकार ने इस कोयले की कमी को लेकर ही हैदरी मिशन इँग्लैंड भेजा है जिससे ब्रिटेन का बना-बनाया माल मँगाया जा सके। आज की परिस्थिति में, जब कि मैं आशा कर रहा था कि अधिकारी सुविधायें उत्पन्न करके उद्योग-धन्धों के विकास में सहायता करेंगे, ब्रिटेन के कोयले माल को यहाँ मँगाना यहाँ के उद्योग-धन्धों के लिए घातक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगा। विशेषतः लोहा और रसायन-द्रव्यों के उद्योग पर, जिनमें कोयले की आवश्यकता बहुत अधिक होती है, इसका बहुत बुरा प्रभाव पड़ेगा। ब्रिटेन के तैयार माल के यहाँ पहुँचने पर भारतीय कल-कारख़ानों में तैयार हुए इस प्रकार के माल की आमत बन्द-सी हो जायगी। परिणाम यह होगा कि यहाँ के हज़ारों मनुष्य बेकार हो जायँगे।'

श्रीयुत सीतलवाद ने यह सिफ़ारिश भी की है कि 'इस स्थिति में भारत-सरकार का यह कर्त्तव्य है कि वह ब्रिटेन से तैयार माल मँगाने की जगह देश में कोयले का उत्पादन बढ़ाने की चेष्टा करे। उसे अमरीका और इँग्लैंड से ऐसी मशीनें मँगानी चाहिएँ जो यहाँ की खानों से अधिक परिमाण में कोयला निकाल सकें।'

सारांश यह है कि हैदरी मिशन की रहस्यात्मक कार्यवाहियों को लेकर यहाँ के व्यापारिकवर्ग में काफ़ी बेचैनी और सनसनी पैदा हो गई है। इस वस्तुस्थिति में सरकार यदि हैदरी मिशन के उद्देश्य का स्पष्टीकरण कर दे तो लोगों की आशङ्कायें और मिथ्या धारणायें निर्मूल हो जायँ। हमारी समझ से इस प्रकार का स्पष्टीकरण से सरकार की कुछ हानि भी नहीं है, क्योंकि वह स्वयं कहती है कि 'उक्त मिशन भारतीय हितों की पूर्त्ति के लिए भेजा गया है।'

भारतीय समस्या और सर ज़फ़रुल्ला

सर ज़फ़रुल्ला भारत के उन राजनीतिज्ञों में हैं जिन्हें सरकार बहुत अधिक विश्वास प्राप्त है और इसी विश्वास के आधार पर जिन्हें भारत का प्रतिनिधि बनाकर विदेशों में होनेवाले सम्मेलनों में भेजा जाता है। सर ज़फ़रुल्ला भी एक ऐसे ही सम्मेलन में भाग लेने के लिए पिछले दिनों इँग्लैंड भेजे गये थे। वहाँ के एक पत्र में उन्होंने भारत की समस्या का जो हल सुझाया है वह कई दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। आपका कथन है कि 'हिन्दुस्तान के भेद की आड़ लेकर उसकी स्वतन्त्रता को अनिश्चित काल तक रोके रहना सरासर ग़लत और अनुचित है। भेद-भाव समाप्त हो सकते हैं और आख़िरकार समाप्त होंगे। ऐसी दशा में ब्रिटिश सरकार घोषणा कर सकती है कि वह जापान से युद्ध समाप्त हो जाने पर एक वर्ष के अन्दर भारतीयों-द्वारा तैयार किये गये विधान को स्वीकृत कर लेगी, या यदि भारतवासी किसी सर्वसम्मत विधान न बना सकें तो ब्रिटिश सरकार इस अवधि के पश्चात् एक निश्चित तिथि तक भारत में ऐसा विधान जारी कर दे जिसका आधार औपनिवेशिक स्वराज्य हो।' सर ज़फ़रुल्ला की माँग है कि वह तिथि ३१ दिसम्बर १९४७ होनी चाहिए।

इस प्रकार के सुझाव ब्रिटिश सरकार के सामने अनेक बार रखे जा चुके हैं। इस बार विशेषता केवल यह है कि सुझाव देनेवाले महोदय जननेता या निर्दल नेता न होकर सरकार के एक विश्वासपात्र और सम्माननीय राजनीतिज्ञ हैं। इसमें सन्देह नहीं कि सरकार यदि सर ज़फ़रुल्ला के सुझाव को ही कार्यान्वित करने का दृढ़ संकल्प कर ले तो कोई कारण नहीं है कि भारत की अल्पमत और बहुमत की समस्यायें आप से आप न सुलझ जायँ। सम्भव है, भारतीय प्रतिनिधि आगामी सेनफ्रान्सिस्को सम्मेलन में भी ऐसे ही कुछ और भी सुझाव उपस्थित करें। पर सुझाव तब तक सुझाव ही है जब तक उन पर अमल करने का निश्चय न किया जाय।

भारत-सरकार का छठा युद्ध-बजट

केन्द्रीय धारासभा के गत अधिवेशन में अर्थसदस्य सर जेरसी रेज़मैन ने १९४५-४६ का बजट प्रस्तुत करते हुए आश्वासन दिया कि सम्भवतः यह बजट उनके समय का अन्तिम बजट है, क्योंकि युद्ध अब भारत से दूरतर चला गया है। यह बजट भी घाटे का है। प्रमुख आँकड़े इस प्रकार हैं :—

नागरिक व्यय	१२३. ४० करोड़ रुपये।
देशरक्षा का व्यय	३९४. २३ करोड़ रुपये।
कुल व्यय	५१७. ६३ करोड़ रुपये।
सम्भावित आय	३५३. ७४ करोड़ रुपये।
सम्भावित घाटा	१६३. ८९ करोड़ रुपये।

इस घाटे की आंशिक पूर्त्ति के लिए निम्न नये करों की व्यवस्था की गई है :—

(१) १५ हज़ार रुपये से अधिक की आय पर अथवा ऐसी आय पर, जिस पर अधिकतम दर से कर लगता है, लगनेवाले 'सरचार्ज' (अतिरिक्त कर) में ३ पाई प्रति रुपये की वृद्धि की गई है। (२) डाक-द्वारा देश के भीतर भेजे जानेवाले पार्सलों (पोस्ट पार्सल) की दर समान रूप से प्रति ४० तोले पर ६ आना रक्खी गई है, चाहे यह प्रथम ४० तोला या इसके बाद का प्रति ४० तोला हो। (३) टेलीफ़ोन तथा 'ट्रङ्क काल' के किराये पर लगनेवाला सरचार्ज (अतिरिक्त भाड़ा) क्रमशः एक तिहाई से आधा तथा २० प्रतिशत से ४० प्रतिशत किया गया है। साधारण और जवाबी तारों के 'सरचार्ज' में क्रमशः एक आने और दो आने की वृद्धि हुई है। (४) बिना बनी तम्बाकू पर प्रति पौंड ७॥) बिना किसी 'सरचार्ज' के कर लगेगा। सिगार, सिगरेट और बनी हुई तम्बाकू पर तदनुकूल कर लगेगा। (५) उच्च कोटि की तम्बाकू की ३ श्रेणियाँ बनाई गई हैं। प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय श्रेणी पर कर प्रति पौण्ड क्रमशः ७॥), ५) और ३॥) लगेगा।

इन करों से कुल मिलाकर ८.६० करोड़ रुपये की आय का अनुमान है जिससे घाटे की रक़म कुल १५५.२९ करोड़ रुपये रह जायगी।

युद्ध के कारण सरकार का उत्तरोत्तर बढ़ता हुआ बजट ग़रीब भारत के लिए एक दैवी मार के समान है। फिर भी भारत को इसे सहन ही करना पड़ेगा। धारासभा-स्थित भारतीय प्रतिनिधि चाहने पर भी विरोध करके इसमें परिवर्त्तन नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करा सकते और न वे इसे कार्यान्वित होने से ही रोक सकते हैं। भारतीय शासनविधान में इसके लिए पहले से ही गुञ्जाइश रक्खी गई है।

सेन फ्रान्सिस्को सम्मेलन

गत याल्टा-सम्मेलन में जिस सेनफ्रान्सिस्को सम्मेलन का निश्चय बृहत्त्रय शक्तियों द्वारा किया गया था, वह आगामी २५ अप्रैल को होने जा रहा है। युद्धकाल में जितने भी सम्मेलन हुए हैं, यह सम्मेलन उन सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण होगा। कारण यह है कि इस सम्मेलन में ही युद्धोत्तर जगत् की स्थायी शान्ति-योजना का निर्माण होगा, ऐसा राजनीतिज्ञों का विश्वास है। इस योजना में कितने राष्ट्र भाग लेंगे, यह प्रश्न आज अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व प्राप्त कर रहा है। गत डम्बर्टन ओक सम्मेलन में इस योजना के सम्बन्ध में कहा गया था कि स्थायी विश्वशान्ति की योजना का निर्माण एक 'सुरक्षा-समिति' करेगी जिसमें बृहत्त्रय के अतिरिक्त चीन, फ्रान्स तथा ६ अन्य राष्ट्रों का प्रतिनिधित्व रहेगा। पर अब ज्ञात हुआ है कि सेनफ्रान्सिस्को के सम्मेलन में लगभग ४५ राष्ट्रों का प्रतिनिधित्व रहेगा। यह संख्यावृद्धि सम्भवतः कार्य की गुरुता को ध्यान में रखकर ही की गई है क्योंकि समस्त संसार पर लागू होनेवाले विधान की रचना में प्रतिनिधित्व यथासम्भव अधिक से अधिक राष्ट्रों का होना चाहिए।

इस सम्मेलन के आमन्त्रकों में पहले रूस, इँग्लैंड, अमरीका, चीन और फ्रान्स का नाम लिया जाता था। पर याल्टा कान्फ्रेन्स में आमन्त्रित न होने से असन्तुष्ट फ्रान्स इस सम्मेलन के आमन्त्रकों में सम्मिलित होने को अभी तक राज़ी नहीं हुआ है। पोलैंड की गणना यद्यपि योरप के महत्त्वपूर्ण राष्ट्रों में है, क्योंकि उसी के प्रश्न को लेकर वर्त्तमान महायुद्ध का प्रारम्भ हुआ था पर उसे भी—यद्यपि उसका नाम ४५ नामों की सूची में है—सम्मेलन में आमन्त्रित नहीं किया गया है। कारण यह बतलाया गया है कि पोलैंड अभी तक ऐसी अस्थायी सरकार का निर्माण करने में असमर्थ रहा है जो उसका ठीक ठीक प्रतिनिधित्व कर सके। इस प्रकार इँग्लैंड-स्थित भगोड़ी पोलिश सरकार और रूस का समर्थन-प्राप्त लुबलिन सरकार दोनों बेकार हो जाती हैं। आयर्लैंड का नाम भी बहिष्कृतों की सूची में आ गया है।

इस सम्मेलन में भारत की क्या स्थिति होगी, इस प्रश्न की ओर हमारा ध्यान आकर्षित होना स्वाभाविक है। अब तक इस प्रकार के जितने विश्वसम्मेलन हुए हैं, उनमें भारत के प्रतिनिधि भी बुलाये गये हैं। इस बार भी भारत का प्रतिनिधित्व अवश्य रहेगा। विधान-निर्मात्री परिषद् में श्रीयुत टी० कृष्णामाचारी के प्रश्न करने पर सर ओलफ़ केरोज़ ने पिछले दिनों स्पष्ट कह दिया था कि भारतीय प्रतिनिधियों का चुनाव उन 'प्रतिष्ठित और देशभक्त' भारतीयों में से उनके (सर ओलफ़ केरोज़) और भारतमन्त्री के द्वारा किया जायगा जो वर्त्तमान वायसराय महोदय की कार्यकारिणी को सुशोभित कर रहे हैं। इधर हाल में इस सम्बन्ध में जो सरकारी विज्ञप्ति [illegible] उससे ज्ञात होता है कि सरकार की ओर से इस भारतीय [illegible] मण्डल का नेतृत्व सर रामस्वामी मुदालियर करेंगे और [illegible] में सर फ़ीरोज़ ख़ाँ नून और सर वी० टी० कृष्णामाचारी [illegible] सहयोगी होंगे।

यह भी कहा जाता है कि सेनफ्रान्सिस्को में उक्त [illegible] जिन दिनों होगा उन दिनों श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित [illegible] उक्त नगर में उपस्थित रहेंगी और वे एक अन्य संस्था [illegible] वधान में स्वतन्त्र रूप से भारतीय परिस्थिति पर व्याख्यान [illegible]

देखना यह है कि सरकार द्वारा प्रतिष्ठा-प्राप्त ये [illegible] भक्त सेनफ्रान्सिस्को से भारत के लिए क्या और कितना [illegible] लौटते हैं।

रेडियो की धाँधली

अखिल भारतीय रेडियो की भाषानीति के सम्बन्ध [illegible] सुल्तान अहमद द्वारा यह आश्वासन दिये जाने पर भी कि [illegible] में हिन्दी और उर्दूवालों को समान स्थान दिया जायगा [illegible] के कर्मचारियों की धाँधली बन्द नहीं हुई है, यह खेद [illegible] है। उक्त आश्वासन के पश्चात्वाले पखवारे में [illegible] जितने ब्राडकास्ट हुए हैं उनमें हिन्दी और उर्दू ब्राडकास्ट [illegible] आँकड़े दैनिक 'जागृति' की गणना के अनुसार इस प्रकार [illegible]

'फ़ीचर'-लेखक—

	हिन्दीवाले	उर्दूवाले
दिल्ली	२	४
लाहौर	०	४
लखनऊ	१	४
भाषण-प्रोग्राम		
दिल्ली	४	८
लाहौर	१	९
लखनऊ	२	७
बच्चों का प्रोग्राम		
(अ) फ़ीचर		
दिल्ली	१	४
लाहौर	१	३
लखनऊ	१	८
(ब) भाषण		
दिल्ली	०	१
लाहौर	०	१
लखनऊ	२	०
स्त्रियों का प्रोग्राम		
(अ) फ़ीचर		
दिल्ली	२	३
लाहौर	१	१
लखनऊ	१	२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ब) भाषण	हिन्दीवाले	उर्दू वाले
दिल्ली	०	२
लाहौर	२	२
लखनऊ	१	२
(द) गानेवाले	हिन्दू	मुसलमान
दिल्ली	१६	३४
लाहौर	८	२६
लखनऊ	१३	१६
गानेवाली		
दिल्ली	१०	१०
लाहौर	८	१३
लखनऊ	११	१८

यहाँ यह भी स्मरण रखना चाहिए कि हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन अधिकारियों ने भाषा-भाषियों की संख्या के आधार पर हिन्दी प्रोग्रामों के लिए दिल्ली में ७५ प्रतिशत, लखनऊ में ८० प्रतिशत, लाहौर में ५० प्रतिशत और पेशावर में २५ प्रतिशत माँग की थी। उक्त आँकड़े स्पष्टतया प्रमाणित कर रहे हैं रेडियो के वर्त्तमान कर्मचारियों को न सम्मेलन की माँग की चाहा है और न वे सर सुलतान अहमद के वचन को ही ठीक रूपों में कार्यान्वित करना चाहते हैं। हिन्दी-उच्चारणों की छालेदर भी अभी तक जारी है। प्रोग्रामों में 'इरा मैत्रा' 'इरा मोइतरा' और 'आर्त्तनाद' का 'अरातदान' छापा जाना का प्रमाण है।

इस वस्तुस्थिति में हिन्दीभाषी और हिन्दी के सपूत जब अपने अधिकारों की रक्षा के लिए अधिक सङ्गठित प्रयत्न करेंगे तब तक रेडियो में हिन्दी की बात नहीं सुनी जायगी, स्पष्ट है।

राष्ट्रभाषा

पिछले दिनों महात्मा गांधी की संरक्षकता में वर्धा में हिन्दुस्तानी-प्रचार सभा का एक अधिवेशन हुआ था। उस सम्मेलन में महात्मा गांधी ने जो वक्तव्य दिया है उससे हिन्दी-प्रेमियों का चिन्तित होना स्वाभाविक है। महात्मा गांधी के वक्तव्य का अभिप्राय यह है कि वे हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन से खफ़ा हो गये हैं। क्योंकि वह हिन्दी का प्रचार चाहता है और उन्हें डाक्टर अब्दुलहक़ की यह बात ठीक जँचने लगी है भारत की राष्ट्रभाषा 'उर्दू यानी हिन्दुस्तानी' होनी चाहिए। हिन्दुस्तानी का स्वरूप कैसा होगा, इसका पता उस कमिटी लगता है जिस पर हिन्दुस्तानी का व्याकरण और कोष लिखने भार डाला गया है। उस कमिटी में एक तो स्वयं महात्मा ही हैं, दूसरे दो विद्वान् डाक्टर ताराचन्द व मौलवी सुलेमान भी हैं। कहने की आवश्यकता नहीं कि डाक्टर ताराचन्द हिन्दुस्तानी के समर्थक हैं उसका झुकाव फ़ारसी की ओर अधिक है। रहे मौलवी साहब, वे तो मौलवी हैं ही। उधर महात्मा गांधीजी आजकल 'उर्दू यानी हिन्दुस्तानी' कहने ही लगे हैं। वस्तुस्थिति में यह पूरी आशङ्का है कि यह कमिटी हिन्दी को उसके राष्ट्रभाषा के पद से अपदस्थ कर देगी और उसके स्थान पर एक ऐसी बनावटी भाषा को ला बिठाने का प्रयत्न करेगी जैसी आजकल हिन्दुस्तानी के नाम से रेडियो में चल रही है।

जहाँ तक महात्माजी का सम्बन्ध है, भाषा के सम्बन्ध में उनके प्रयोग गत कई वर्ष से चल रहे हैं। पहले वे हिन्दी के भक्त थे और उनके द्वारा हिन्दी की बहुत बड़ी सेवा भी हुई है। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के वे सभापति भी रह चुके हैं और हिन्दी के राष्ट्रभाषा होने की वे घोषणा भी कर चुके हैं। उसके पश्चात् उन्होंने 'हिन्दी यानी हिन्दुस्तानी' कहना प्रारम्भ किया था। अब आज यदि वे 'उर्दू यानी हिन्दुस्तानी' कहने लगे हैं तो इससे किसी को आश्चर्य नहीं करना चाहिए। सम्भव है, उनकी अन्तरात्मा ने उन्हें यही प्रकाश दिया हो कि इस तरह हिन्दी को उर्दू में खपा देने से जिन्ना साहब और उनके अनुयायी प्रसन्न हो जायँगे और उन्हें 'मुस्लिमों का बहुत बड़ा हिमायती' मान लेंगे। इस तरह हिन्दू-मुस्लिम मेल सम्भव हो जायगा जिसकी आज के भारत के लिए बहुत अधिक आवश्यकता है।

रही हिन्दुस्तानी की बात, उसके लिए राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द के समय से लेकर आज तक कितने ही सरकारी और अर्ध सरकारी प्रयत्न हो चुके हैं। पर फल कुछ भी नहीं हुआ। साधारण बातचीत को छोड़कर जहाँ किसी गम्भीर विषय पर लिखने या बोलने का प्रयत्न किया गया वहीं हिन्दुस्तानी का पलड़ा या तो संस्कृत की ओर झुक गया या अरबी-फ़ारसी की ओर; या फिर एक ऐसी बेढंगी लद्धड़ भाषा बन गई जो न तीतर रही न बटेर।

हिन्दुस्तानी का व्याकरण लिखने का कार्य भी कुछ ऐसा ही झमेला रहा है। हमें ज्ञात है कि एक गण्य मान्य विद्वान् ने पिछले दिनों किसी प्रान्तीय सरकार के आदेश से एक हिन्दुस्तानी व्याकरण लिखने लिखाने का उद्योग किया था। पहले तो व्याकरण का आगे चलना ही कठिन पड़ गया, क्योंकि पारिभाषिक शब्दों की और भेद-प्रभेदों के संख्या-वैभिन्न्य की बाधा पदे-पदे सामने आई, फिर मारकूटकर जैसे-तैसे व्याकरण तैयार भी हुआ तो उसके उस रूप से उन्हें स्वयं सन्तोष न हो सका। वह व्याकरण अब भी अवकाश की प्रतीक्षा में उनके संग्रहालय को सुशोभित कर रहा होगा।

अभिप्राय यह है कि जिस प्रकार हिन्दुस्तानी को चलाने का सारा प्रयत्न अभी तक व्यर्थ ही गया है, वैसा ही आगे भी नहीं जायगा, यह कौन कह सकता है। जिस भाषा का बाहरी और भीतरी स्वरूप अनिश्चित और अनिर्दिष्ट है, जो प्रान्त-विशेष में आकार-विशेष धारण करना चाहती है, जैसा उसके एक अधिकारी समर्थक ने कहा है, साथ ही जो उद्देश्य-विशेष को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकर गढ़ी जा रही है, उसे जनता ग्रहण कर लेगी और वह भी हिन्दी और उर्दू को छोड़कर—जिनके पीछे संस्कृति, इतिहास और भावनाओं की पृथक्-पृथक् अमिट परम्परायें हैं और जिनके प्रचलन-परिमार्जन में शताब्दियों का परिश्रम व्यय हुआ है, यह समझ में नहीं आ सकता।

हिन्दी के गद्दार

इधर हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ने रेडियो-बहिष्कार का प्रस्ताव पास किया और उधर हिन्दी के प्रतिष्ठित साहित्यिकों ने रेडियो से अपना सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया। हिन्दी के लिए यह सङ्गठन वस्तुतः गौरव और सन्तोष की बात है। फिर भी, जैसा कि समाचारपत्रों से पता चला है, कुछ ऐसे लेखक और कवि हिन्दी में मौजूद हैं जिन्हें अपनी प्रतिष्ठा से अधिक पैसे का लालच है। ये समाज-द्रोही और अवसरवादी मुँह छिपाकर और कभी-कभी बुर्क़े ओढ़कर पर्दानशीनों की तरह वहाँ पहुँचे और कुछ पैसे कमा लाये। ऐसे लालचियों का कार्य न केवल सम्मेलन की उद्देश्य-प्राप्ति में बाधक हो सकता है, हिन्दी-प्रेमियों के नाम पर भी धब्बा लगाता है। इस वस्तुस्थिति में यह आवश्यक ही है कि ऐसे गद्दारों को शिक्षा दी जाय और उनका नियन्त्रण किया जाय।

प्रसन्नता की बात है कि हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन-द्वारा सङ्गठित 'रेडियो-सुधार-कमिटी' तथा 'अखिल भारतीय हिन्दी पत्रकार-सङ्घ' ने ऐसे लोगों को राह पर लाने के लिए योजना बना ली है। आशा है, हिन्दी के सभी प्रकाशक और प्रतिष्ठित पत्र इस योजना के साथ पूर्ण सहयोग करेंगे और रेडियो-सुधार-आन्दोलन के सफल बनाने में इस प्रकार हाथ बँटायेंगे। योजना इस प्रकार है—

"जो व्यक्ति रेडियो से सहयोग करेंगे उनकी एक 'काली सूची' रक्खी जायगी। यह सूची हिन्दी के समस्त प्रकाशकों के पास भेजी जायगी और उनसे अनुरोध किया जायगा कि वे इन लेखकों की कोई पुस्तक न तो छापें और न उनका नवीन संस्करण करें। अखिल भारतीय हिन्दी पत्रकार-सङ्घ के कार्यालय से प्रति पक्ष इस प्रकार बहिष्कृत लेखकवृन्द की सूची समस्त हिन्दी पत्रों में प्रकाशनार्थ भेजी जाया करेगी और सूचनार्थ भी ऐसे लेखकों की कोई रचना किसी पत्र में प्रकाशित न होगी। लेखों से उनके उल्लेख निकाल दिये जायँगे और उनकी पुस्तकों की किसी अवस्था में समालोचना न की जायगी एवं उनके चित्र प्रकाशित न होंगे।

रेडियो-सुधार-समिति का कार्यक्षेत्र इस दिशा में और आगे जाता है। उसका विचार है कि जिन प्रकाशकों की पुस्तकें हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के पाठ्य-क्रम में हैं उनके लिए तो यह अनिवार्य ही है।

ऐसे बहिष्कृत व्यक्ति हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन से सम्बन्धित सभी संस्थाओं की प्राथमिक सदस्यता और पद से पृथक् कर दिये जायँगे। असम्बद्ध साहित्यिक संस्थाओं से भी ऐसी ही करने का अनुरोध किया जायगा। किसी साहित्यिक यदि ऐसे व्यक्ति निमन्त्रित हों तो शेष उसमें सम्मिलित साहित्यिक प्लेटफ़ार्म के उपयोग से ऐसे लोग वञ्चित जायँगे।

यह अनुशासनात्मक कार्रवाई व्यापक रूप में होगी न होगा कि यदि किसी व्यक्ति ने रेडियो से असहयोग तो प्रतिबन्ध उठा लिये जायँगे। यह निर्णय इस अवलम्बित होगा कि व्यक्तिविशेष द्वारा हिन्दी का कित हुआ है। चूँकि यह कार्रवाई बड़ी व्यापक है काम में लाने के पहले दो सप्ताह या एक मास का जायगा कि अब भी रेडियो के सहयोगी रास्ते पर आ जा

मिस्र के प्रधान मन्त्री की हत्या

उस दिन मिस्र के प्रधान मन्त्री अहमद मेहर पार्लमेण्ट में किसी नवयुवक ने गोली मार दी। बात है कि मिस्र की पार्लमेण्ट ने उसी दिन अप घोषणा की थी। इस अचानक संयोग को लेकर के अनुमान लगाये जा रहे हैं। कुछ लोगों का कह मिस्र का एक दल युद्ध-घोषणा का विरोधी है। के प्रधान नहस पाशा ने भी कुछ ही दिन पहले कहा मिस्र अब तक अपनी तटस्थता की रक्षा करता आया उसके लिए युद्ध में उतरना उचित न होगा। जिस गोली मारी है, उसका नाम मुहम्मद अल ईसवी बतला है और उसका सम्बन्ध एक उग्र राजनैतिक दल से, 'तरुण मिस्र दल' है, बतलाया जाता है।

दूसरे लोगों का अनुमान है कि इस हत्या की अरब देशों की पारस्परिक प्रतिद्वन्द्विता है। युद्धो देशों का नेता कौन राष्ट्र होगा, इस प्रश्न को लेकर इन देशों में एक प्रकार की प्रतिस्पर्धा चल रही है। के पश्चात् मित्रराष्ट्रों-द्वारा यह घोषणा की जाने शान्ति-सम्मेलन में उसी राष्ट्र को सम्मिलित किया १ मार्च तक युद्ध-घोषणा कर देगा, प्रतिस्पर्धा की और भी बढ़ गई है। पिछले दिनों मिस्र में होनेवाले सम्मेलन में अरब के शाह इब्न सऊद ने अपना प्रति भेजा था, जिससे यह प्रमाणित होता है कि अरबराष्ट्रों स्पर्धा की भावना बहुत पहले से विद्यमान है। मित्र घोषणा का अनुसरण करते हुए मिस्र और टर्की ने युद्ध कर दी है। रह गया अरब, वह भी सुनते हैं, युद्ध करने का विचार कर रहा है। हाँ, इस कार्य में वह गया ही है।

जो हो, मिस्र के बीसवीं शताब्दी के इतिहास में प्रधा की हत्या की यह दूसरी घटना है। पहली घटना में हुई थी जब मिस्र-द्वारा स्वेज़ नहर की सुविधाओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रों को किये जाने पर एक उग्रवादी युवक ने तत्कालीन मन्त्री की हत्या इसी प्रकार कर दी थी।

कारण जो भी हो, पर इस प्रकार के कुकृत्य मिस्र की उन्नति बाधक ही सिद्ध होंगे, सहायक नहीं। इस सत्य में सन्देह किया जा सकता।

वस्त्र-सङ्कट

सरकार के अनेक आश्वासनों और प्रयत्नों के बावजूद जन-साधारण के लिए वस्त्र-सङ्कट जैसे का तैसा बना हुआ है। पिछले दिनों इस सम्बन्ध में पत्रों में जो समाचार छपे हैं वे दिल दहलाने वाले हैं। कहा गया है कि अनेक स्त्रियों ने केवल इसलिए आत्मघात कर लिया कि उनके पास लज्जा-निवारण के लिए वस्त्र नहीं थे। यह भी कहा गया है कि वस्त्रों के लालच में लोगों ने रात को क़ब्रें खोद डालीं और मृतकों के कफ़न चुरा लिये। ये घटनायें हमारे देश के लिए अश्रुतपूर्व और लज्जाजनक हैं। हम इन्हें पढ़ते हैं और शर्म से सिर झुका लेते हैं। चालीस करोड़ की जनसंख्यावाले इस देश की कैसी विवशता और परावलम्बता! और वह भी लज्जा-निवारण के लिए! आधुनिक सभ्यता इससे अधिक और हमें दे भी क्या सकती?

अब तक हमें विश्वास था कि यह सङ्कट अस्थायी है अर्थात् दो महीने से अधिक नहीं चल सकता। सरकार चोर बाज़ार का मटियामेट करने को तैयार हो गई है और वस्त्र-वितरण की व्यवस्था में ज्योंही सुधार हुआ त्योंही इस नग्नता का अन्त हो जायगा। साथ ही यह भी सम्भव है कि नागरिकों की आवश्यकता का अनुभव करते हुए सरकार प्रान्तों के कोटे में वृद्धि करे।

पर भारत-सरकार के टेक्सटाइल कमिश्नर श्री वेलोडी ने कुछ दिनों प्रेस-प्रतिनिधियों की कान्फ्रेंस में वस्त्र-परिस्थिति का स्पष्टीकरण किया है उसने हमारी आँखें खोल दी हैं। आप कहते हैं कि यदि बाहर भेजे जानेवाले और रक्षा-योजना में होनेवाले वस्त्र के परिमाण में कमी न हुई तो युद्ध समाप्त होने से पहले नागरिकों के लिए दिये जानेवाले वस्त्र के परिमाण में वृद्धि होने की कोई सम्भावना नहीं है। कारण यह है कि कारीगर और कुशल कारीगरों के अभाव के कारण वस्त्र का उत्पादन नहीं बढ़ सकता। इधर पैसे की अधिकता के कारण लोगों में वस्त्र की माँग भी बढ़ गई है। इस प्रसङ्ग में आँकड़े देते हुए श्री वेलोडी ने बतलाया है कि आजकल सूती वस्त्र के उत्पादन का औसत ४८००० लाख गज़ वार्षिक है। इसमें से ६००० लाख गज़ वस्त्र मध्यपूर्व, लङ्का, दक्षिण अफ्रीका और आस्ट्रेलिया आदि को जाता है और ८००० से ९००० लाख गज़ सेना के लिए व्यय होता है। साथ ही आजकल विदेश से सूती वस्त्र आना सर्वथा बन्द हो गया है जिसका औसत युद्धकाल में ८००० लाख गज़ वार्षिक था।

भारत के मनुष्यों को नङ्गा छोड़कर उस दक्षिण अफ्रीका के लिए वस्त्र भेजना जहाँ भारतीयों के साथ घोर अत्याचार हो रहा है, भारत-सरकार की चरम उदारता और परदुःखकातरता का परिचायक है! पर अभागे भारत को भी आज वह दिन याद आ रहा होगा जब बिजली और भाप के झाँसे में आकर उसने अपने गृह-उद्योगों का मटियामेट करने का निश्चय कर डाला था। आज भी यदि यहाँ घर-घर में चर्खा चलता होता और ग्राम-ग्राम में बुनकार ताना-बाना फैलाये होते तो भारत की नारियों को इस निर्लज्ज परिस्थिति का सामना क्यों करना पड़ता!

सीमाप्रान्त में कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल

सीमाप्रान्त की मुस्लिम लीगी सरकार का अन्त हो गया। उसके स्थान पर डाक्टर ख़ान की प्रधानता में कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल की प्रतिष्ठा हो गई। कांग्रेस-द्वारा पदत्याग किये जाने के पश्चात् उसके पुनः पदग्रहण की यह प्रथम घटना है। फलतः भारतीय राजनैतिक वातावरण में एक नई लहर पैदा हो गई है और तरह-तरह के अनुमान लगाये जाने लगे हैं। अब तक के गत्यवरोध से जनता ऊब गई थी और यह देखकर कि उसके निवारण के लिए भारत-सरकार कोई क्रियात्मक पग उठाने को तैयार नहीं है, उसमें निराशा और विक्षोभ की भावनायें फैल रही थीं। इस घटना को उस गत्यवरोध के अन्त की भूमिका समझा जा रहा है और आशा की जा रही है कि इसी के अनुक्रम में अन्यान्य प्रान्तों में भी तदनुकूल घटनायें घटित होंगी जिनके कारण दमघोटू परिस्थिति का अन्त हो जायगा और भारतीय राजनीति में फिर सक्रियता और प्रगति आ जायगी।

सीमाप्रान्त में कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल की पुनः स्थापना विचित्र परिस्थितियों में हुई है। सरकार की दृष्टि में कांग्रेस अभी तक अवैध है और उसके समस्त प्रमुख नेता जेलों में बन्द हैं। इस परिस्थिति में कांग्रेस के नेताओं को भी अपनी पदत्यागवाली नीति पर पुनर्मन्त्रणा का अवसर प्राप्त नहीं हुआ। इस वस्तुस्थिति में महात्मा गांधी ही एक ऐसे रह जाते हैं जो जेल की दीवालों से इस समय बाहर हैं और राजनैतिक वार्त्ताओं के सम्बन्ध में कांग्रेस का दृष्टिकोण उपस्थित कर सकते हैं—ऐसी जनता की धारणा है। यद्यपि जब-जब ऐसा अवसर आया है तब-तब महात्माजी ने कांग्रेस की ज़िम्मेवारी लेने से इनकार करते हुए अपनी सम्मति को सावधानी के साथ अपने व्यक्तित्व तक ही सीमित कर दिया है। सरदार औरङ्गज़ेब के मन्त्रिमण्डल पर अविश्वास का प्रस्ताव पास हो जाने पर जब सीमाप्रान्त के गवर्नर ने डाक्टर ख़ान को मन्त्रिमण्डल के निर्माण के लिए आमन्त्रित किया तब उन्होंने पथप्रदर्शन के लिए महात्माजी की ओर देखा। कहते हैं, महात्माजी ने अपनी सम्मति एक मुहरबन्द लिफ़ाफ़े में उनके पास भेजी थी जिसे लेकर डाक्टर ख़ान श्री अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ाँ से परामर्श करने के लिए उनकी जेल की कोठरी तक गये थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहाँ से लौटकर उन्होंने मन्त्रिमण्डल-निर्माण का अपना निर्णय घोषित कर दिया। यह घटना स्पष्ट प्रमाणित करती है कि जहाँ तक सीमाप्रान्त का सम्बन्ध है, कांग्रेस के उक्त तीनों महान् नेताओं ने, अपनी व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी पर ही सही, कांग्रेस के 'पदत्याग' वाले निश्चय को ढीला कर देना अब आवश्यक समझ लिया है जो गतिरोध-निवारण की दिशा में एक उचित और आवश्यक क़दम है।

कांग्रेस के पदत्याग से हानि अधिक हुई या लाभ, इसके लिए तर्क-वितर्क करने की अब आवश्यकता नहीं है; क्योंकि यह सर्वविदित है कि कांग्रेस के हटते ही न केवल उसकी जनतोपयोगी अनेक योजनाओं की ही अकालमृत्यु हो गई, साम्प्रदायिकता को भी प्रचार-प्रसार करने का पूरा अवसर मिल गया। लीगी-मन्त्रिमण्डलों की कार्यवाहियाँ इसके प्रमाण में उपस्थित की जा सकती हैं, सिन्धसरकार-द्वारा सत्यार्थप्रकाश पर लगाया प्रतिबन्ध जिसका एक निकृष्टतम उदाहरण है। कांग्रेस के पदत्याग करने के पश्चात् जनता को जिन-जिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा, वैसी बातें कांग्रेस के पदासीन रहते हुए शायद न होतीं—यह जनसाधारण का अनुमान है। इसी लिए सीमाप्रान्त की इस घटना से जनता में प्रसन्नता का वातावरण दिखाई देता है।

हिन्दुस्तानी कैसी होगी ?

गत १८ मार्च को हिन्दुस्तानी के सम्भावित रूप पर 'भारतीय हिन्दी परिषद्' में भाषण करते हुए डाक्टर ताराचन्द ने बतलाया है कि इस ज़ुबान की ज़रूरत इसलिए है कि इसे हिन्दू और मुसलमान दोनों आसानी से समझ सकते हैं और इसमें जो तक़रीरें होंगी या जो अदब तैयार होगा उससे दोनों फ़ायदा उठा सकेंगे और इस तरह दोनों का मेल-मिलाप मुमकिन हो जायगा। साथ ही ऐसी ज़ुबान गाँवों के बाशिन्दे अच्छी तरह समझ सकेंगे। उसकी रूप-रेखा का स्पष्टीकरण करते हुए आपने जो कुछ कहा है उसका अभिप्राय यह है—हिन्दुस्तानी में संस्कृत के तत्सम शब्दों का सर्वथा बहिष्कार कर दिया जायगा, क्योंकि ऐसे भारी भरकम शब्द जनसाधारण की समझ में नहीं आते। व्याकरण के ऐसे कठिन रूप जैसे, 'व्यवहार' से 'व्यावहारिक', 'परस्पर' से 'पारस्परिक' आदि भी नहीं चल सकते। इसी तरह उर्दू के शब्दों के प्रत्यय भी बदल दिये जायँगे। 'दर्देदिल' की जगह 'दिल का दर्द' चलेगा और 'अख़बार' की जगह 'ख़बरें'। वर्णों में जहाँ संस्कृत की कुछ ध्वनियाँ जैसे 'ऋ' आदि का निष्कासन होगा वहाँ अरबी-फ़ारसी की कुछ ध्वनियाँ जैसे, अ़, क़, ख़, ग़, ज़, फ़ आदि का समावेश भी होगा। कारण इन ध्वनियों के आ जाने पर दोनों भाषाओं के शब्द आसानी से खप सकेंगे। अभिप्राय यह कि हिन्दुस्तानी हिन्दी और उर्दू का एक 'मिश्रण' होगा।

डाक्टर साहब उर्दू के पक्के हिमायतियों में हैं। वे 'देश' का 'देस' कहलाना चाहते हैं, पर 'फ़क़ीर' का 'फ़क़ीर' नहीं। उनके उक्त स्पष्टीकरण से ही ज्ञात होता है कि उनकी [illegible] में अरबी-फ़ारसी के शब्द ज्यों के त्यों आयेंगे पर संस्कृत तद्भव रूप में ही आ सकेंगे। हिन्दी के प्रेमियों को ठण्ढे दिल से विचार करना है। महात्मा गांधी ने [illegible] सम्बन्ध में जो दो वक्तव्य दिये हैं उनमें कहा है कि 'हि[illegible] प्रचार सभा का मक़सद यह है कि ज़्यादा से ज़्यादा [illegible] और उर्दू शैलियाँ और नागरी और उर्दू बोलियाँ सीखें। हम दोनों लिपियों को सीख जायँगे तो दोनों भाषाएँ [illegible] जायँगी। भले ही लिपियाँ दो हमेशा के लिए बनी [illegible] ज़बान एक हो जानी चाहिए।' इससे यह विदित है [illegible] इस कार्य का मुख्य उद्देश्य हिन्दू-मुसलमान का मेल [illegible] जो महात्माजी का सर्व-प्रधान लक्ष्य है।

जहाँ तक हिन्दुओं और मुसलमानों के मेल का प्र[illegible] कहना कठिन है कि यह उपाय भी सफल होगा या नहीं [illegible] तो यह भी विश्वास नहीं होता कि यदि ऐसी भाषा [illegible] जिन्ना साहब और उनके साथी उसका 'हिन्दुस्तानी' [illegible] स्वीकार करने को तैयार हो जायँगे। कुछ नेताओं का [illegible] कि 'उन्हें एक ऐसी ज़ुबान की ज़रूरत है जिसे गाँवों [illegible] समझ सकें, जिससे उन्हें वहाँ कार्य करने में आसानी [illegible] काम 'हिन्दुस्तानी' से ही हो सकता है' भी युक्तियुक्त [illegible] क्योंकि हम समझते हैं, इस दिशा में भी हिन्दुस्तानी [illegible] सफल नहीं होगा। प्रचार-कार्य के लिए अब तक [illegible] चलता रहा है, वही आगे भी चल सकता है। चो[illegible] अपनी भाषा में जो कुछ कहते हैं, स्थानीय नेताओं-द्वा[illegible] स्थानीय बोलियों में अनुवाद करके किसानों और [illegible] सामने उपस्थित किया जाता है। यदि कभी किसा[illegible] को मौलाना आज़ाद जैसे नेताओं का सामना करना प[illegible] वे उनके भाषण की उतनी चिन्ता नहीं करते जितनी उ[illegible] की करते हैं। भारत के विभिन्न जनपदों की अपनी [illegible] जो वहाँ के अपढ़ों के व्यवहार का माध्यम हैं। हिन्दु[illegible] बोलियों को अपदस्थ नहीं कर सकेगी। पञ्जाब का ए[illegible] किसान आरा के निरक्षर किसान की बात नहीं समझ[illegible] पर कांग्रेस की बात दोनों के सुनने में समान रू[illegible] है। अभिप्राय यह है कि परिधान का अन्तर [illegible] विभिन्नता नहीं लाता। हिन्दू और मुसलमान [illegible] आपस में बातचीत, मेलभाव और विचार-विनिमय [illegible] हैं, आगे भी करते रहेंगे। इस कार्य के लिए [illegible] गढ़ने की किसी अन्य को ज़रूरत नहीं पड़ती; वह [illegible] गढ़ जाती है।

इस वस्तुस्थिति में शीन-क़ाफ़ से बोझिल भाषा [illegible] पर लादना क्यों आवश्यक है, यह समझ में नहीं आ[illegible] जिस भाषा के पैर जन्मकाल से ही व्याकरण और को[illegible] निर्मित जूतों में फँसाये जा रहे हैं वह कितने दिन चल [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Printed & Published by A. Bose, at the Indian Press, Ltd., Benares-Branch, Benares.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लो धोबी ने एक और हानि की!

—और इधर कपड़े इतने महंगे हैं

इस महंगी के समय में अगर धोबी आपके कपडे पटक पटक कर उनकी धज्जियां उडा दे तो कैसे काम चलेगा, आपको चाहिए कि आप इस तरह साफ करने की विधी का खोज करें जिससे वे कम फटें ताकि हरएक कपडा अधिक से अधिक चले। अब समय है कि आप अपने घर में सनलाइट की "साबुन-और-बचत" की विधी से कपडे धोयें। कपडे धोने की यह सरल विधी धोबियों की बेढंगी विधी से कहीं उत्तम है क्योंकि वह सरल है, कपडों को अधिक साफ़ करती है और उनका एक धागा भी नष्ट नहीं करती। सनलाइट की जोरदार और स्वयं-क्रियाशील झाग मैले कपडों के मैल को पटके या रगड़े बिना ही काट डालती है, इससे कपड़े अत्यंत स्वच्छ दिखाई देते हैं और अधिक समय तक चलते हैं। आज ही अपने नौकर को सनलाइट की "साबुन-और-बचत" की विधि सिखा दीजिये।

अपने नौकर को सनलाइट की "साबुन-और-बचत" रीति सिखाइये

१ कपडों को अच्छी तरह भिगो लीजिये इससे कपड़ा साबुन लगाए जाने योग्य हो जाता है। २ सनलाइट पूरे कपड़े पर मलिये जहां अधिक मैल हो वहां अधिक मलिये। ३ कपड़ों को धीरे धीरे सानिये, पटकिये नहीं, सनलाइट की स्वयं क्रियाशील झाग कपड़ें से सारे मैल को काट देगी, और उसे पकड रखेगी। ४ कपड़े को इस तरह खंगालिये कि झाग का नाम तक उसमें न रहे क्योंकि अब इस झाग के साथ मैल होगा। यदि कपड़ा अधिक मैला हो तो दो बार साबुन लगाइये।

सनलाइट साबुन कपड़ों की बचत करता है

S. 69-23 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ विचार

"कैसीमीर फंक" ने सन् १९१२ में मालूम किया कि ख़ुराक में विटामिन बहुत आवश्यक है, और फलों में विटामिन की मात्रा अधिक होती है। हमारे यहाँ वैज्ञानिकों द्वारा अँगरेजी ढङ्ग पर बनाये फलपेयों में विटामिन के अतिरिक्त केल्सियम, फासफोरस और आइरन जो बच्चों के लिये सेवन कराना ज़रूरी है, मिलते हैं, ये फलपेय बदहजमी और पेट की खराबियों को दूर करते हैं।

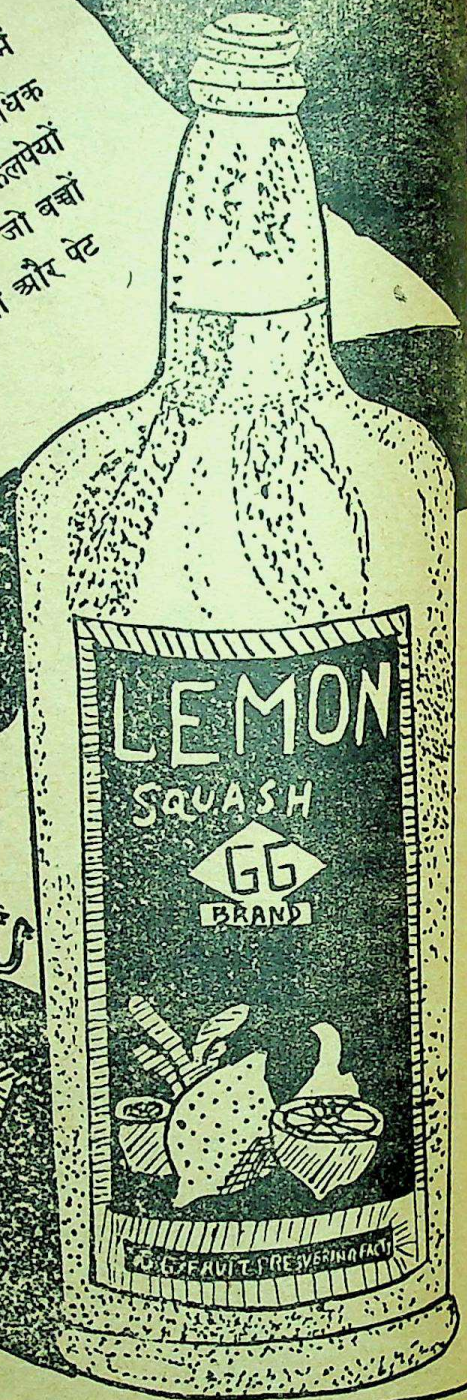

SQUASHES

GG BRAND

वस्तुएं व्यवहार में लाइए

जी. जी. फ्रूट प्रिज़र्विंग फैक्टरी आगरा

जी. जी. स्क्वैशेज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुटुम्ब में सौन्दर्य कायम रहे

माताजी कह रही हैं: "मेरी मां इतनी ही सुन्दर थी जितनी इस तसवीर में दिखाई देती है। परन्तु कोई भी तसवीर नहीं बता सकती उसकी त्वचा कितनी कोमल और सुन्दर थी।" माताजी ने अपनी त्वचा उनकी मां के तरह सुन्दर रखी। और चाहती है कि बेटी भी त्वचा के सौन्दर्य की उसी तरह रक्षा करे। उन्होंने लड़की को सौन्दर्य-रक्षा के कौटुम्बिक रहस्य को सावधानी से समझा दिया है जो है पिअर्स साबुन और स्वच्छ पानी का उपयोग। इस सबक के सहारे वे कई पीढ़ीयों तक कुटुम्ब में इस सौन्दर्य को कायम रख सकेंगी।

पिअर्स साबुन

सौन्दर्य का सेवक

TG. 40-172 HI

A. & F. PEARS, ISLEWORTH, ENGLAND

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री रत्नागिरी जी का अद्भुत चमत्कार

जिसने समस्त संसार को चकित कर दिया

रक्त, बल, वीर्य, उत्साह तथा उमङ्ग ही जीवन सफल बना सकती है

ध्यान देने योग्य अमूल्य उपहार

अपूर्व कायापलट (रजिस्टर्ड)

निःस्वार्थ संसारसेवी भारतीय महात्माओं ने औषध-विज्ञान को पनी महान् खोजों और अमूल्य रत्नों से अलंकृत किया है। ाधुनिक चिकित्सक मर्ज़ और मरीज़ जब दोनों को लाइलाज षित करके शर्मिन्दा नहीं होते, वहाँ इन्हीं महात्माओं की बिना ाम की जड़ी-बूटियाँ मुर्दों को भी जिला सकने में समर्थ हुई हैं। सी सच्ची घटनायें आये दिन एक न एक पढ़ने और सुनने में ाया करती हैं।

बीस वर्ष पूर्व कल्लाती पहाड़ी पर विचरण करनेवाले स्वामी नागिरी जी महाराज की सेवा एक बूढ़ा ग्वाला करने लगा। गिराज को एक दिन उस वृद्ध की कमज़ोरी पर दया आ ही ई और उन्होंने निम्नलिखित योग की ६ मात्रायें उस बूढ़े को । नासमझी के कारण छहों मात्रायें एक साथ खा जाने से स वृद्ध ग्वाले में अपूर्व शक्ति आ गई और रत्नागिरी जी के रिश्रम-पूर्वक इलाज करने पर भी बुढ़ापे के बावजूद उसे तीन ाह करने पड़े। इस पर राजा, रईस, नवाब और रसिकजन हान् योग को जानने के लिए आतुर हो उठे। नवाब बहावलपुर ससुर हाजी हयात मोहम्मदख़ाँ साहब ने बाबा जी की बहुत वा करके इसे प्राप्त कर लिया और लाहौर के पं० ठाकुरदत्त र्मा को बतलाया। शर्मा जी ने इसे प्रथम तथा दो अन्य खकर तीनों से उत्तम बाजीकरण बतलानेवाले को एक हज़ार ये का नक़द इनाम देने की घोषणा की। इसे आज बीस ाल के लगभग हो गये किन्तु अभी तक कोई पुरस्कार विजय हीं कर सका। मथुरा के ख्यातिप्राप्त बाबू हरिदास जी ने से चिकित्सा-चन्द्रोदय में छपवाया और हमने भी स्वयं बनाकर कड़ों दुर्बल, नपुंसक, वीर्य-विकारी रोगियों पर बरता। तत्काल क्षण-चमत्कार देख जन-साधारण के लाभार्थ अनेक पत्र-पत्रिकाओं छपवा दिया। आप भी बनाकर लाभ उठावें।

योग—शुद्ध बुरादा फ़ौलाद २० तोला, शुद्ध श्वेत मल्ल तोला, शुद्ध कपूर १॥ माशा, एक घण्टा घृतकुमारी घोटकर, मिट्टी के कुज्जे में मज़बूत बन्द कर पाँच सेर कण्डों फूँके। दुबारा एक तोला हरताल बर्की शुद्ध १॥ माशा पूर शुद्ध में तीसरी बार गन्धक आमलासार शुद्ध १ तोला पूर १॥ माशा में चौथी बार शुद्ध संस्कारित पारद १ तोला, पूर १॥ माशा को ऊपर की भाँति १६ आँच दे। फिर उसको, ढ़ाई में डालकर बराबर इन्द्रबधू डाल दे और तीन बार जलावे, जब इन्द्रबधू जलकर राख हो जावे तो हवा देकर उड़ा दे। अपूर्व कायापलट तैयार है। चार-चार चावल सायं मलाई के साथ खावें ऊपर मिश्री मिला दूध पीवें।

मथुरा के हरिदास जी लिखते हैं— इस योग के सेवन हफ़्ते में एक आदमी का वज़न चार पौंड बढ़ गया, चेहरा लाल सुर्ख़ हो गया। भूपाल के वैद्यराज पं० शर्मा ने ३५० रोगियों पर बरता और आशा से अधिक पाया। रत्नाकर सम्पादक श्री छोटेलाल जैन आयुर्वेद गृहचिकित्सा पथ-प्रदर्शक में छापा कि इतना प्रचण्ड गुण दूसरा नहीं देखा। श्री धर्मेन्द्र विद्यावतंस सिद्धान्त-शास्त्री ष्ठाता गुरुकुल बरला ज़िला मुज़फ़्फ़रनगर ने लिखा है— कायापलट" नामक औषध सेवन कर रहा हूँ। जैसी वैसा ही गुण है। बहुत लाभ हुआ। श्री चिरञ्जीव आयुर्वेदशास्त्री मालिक कल्याण औषधालय बाह (इ का कहना है कि मैंने २२५ रोगी अपूर्व कायापलट कि धातु-विकार, नपुंसकता, बवासीर, रक्त-विकार आदि से ग्रसित थे, पूर्ण स्वस्थ किये।

हमारा दावा है कि केवल सात दिन सेवन से शरीर दौड़ता नज़र आयेगा। २१ दिन में चेहरा लाल काश्मी की तरह चमकने लगेगा। ४० दिन में नपुंसकता, डायब्टीज़, निर्बलता दूर हो जाती है। स्त्रियों के प्रद गर्भधारण शक्ति आती है। जिगर व मेदे की शक्ति भूख दूनी करता है। कफ, तिल्ली की ख़राबी, खाँसी, ज़ुकाम, बदन दुखना, ख़ून का पतलापन, आँखों का चिनगारी-सा उड़ते दीखना, बार-बार थूक गिरना, हर तरह की कमज़ोरी तुरन्त दूर कर नव-जीवन का संचार है। जाड़ा, गरमी, बरसात सभी मौसमों में एक-सा ला है। योग भली भाँति समझाकर लिखा है। फिर आप न बना सकें तो बनी-बनाई १६ आँच दी हुई ४० ८० मात्रा डाक-ख़र्च सहित ६॥।=) में हम भेज देंगे। माफ़, पैकिंग, मनीआर्डर-फ़ीस अलग। कोई बात आवे तो जवाबी कार्ड भेजकर उत्तर मँगा लें।

पता—रूपबिलास कम्प

(रसायनशाला) नं० ४६७, धनकुट्टी, क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्मस्टारों की तरह त्वचा की रक्षा कीजिये!

लीला देसाई

लीला कहती है "सुन्दर होने का उपाय जो मैंने सालों तक किया है वह साधारण और शीघ्र है। यह लक्स टॉयलेट साबुन के लगातार और ठीक तरीके से इस्तेमाल करने से होता है। इस सुन्दर बनाने वाले साबुन का फेना पानी में मिलाकर बदन में धीरे धीरे थप थपाया जाये और उसको फिर दूसरे पानी से अच्छी तरह से धो डाला जाये इससे त्वचा साफ़, रेशम की तरह नरम और सुगंधित हो जाती है।

लक्स टॉयलेट साबुन

LTS. 128-111-40 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गले की सहलाहट और जुकाम के बाद उत्पन्न होने वाली खाँसी एक साधारण रोग है। परंतु यही खाँसी उपेक्षा की जाने के बाद, फेफड़े की सूजन (ब्रोंकाइटिस) श्वास और राजयक्ष्मा जैसे भयंकर रोगों का कारण होती है। अतःसमय रहते उचित चिकित्सा द्वारा इसका निराकरण प्राणरक्षा का उपाय है।

ग्लाइकोडीन टर्प वसाका डाक्टरों की राय में साधारण (चालू) खाँसी की अमोघ औषधी है। वह खांसी के मूल कारणों को नष्ट करती और उसके स्वास्थ्य दायक परमाणु शान्ति दायक और खाँसी को समूल नष्ट करने वाले हैं।

स्नायु विकार से उत्पन्न हुई किसी प्रकार की खाँसी के लिये अपने डाक्टर की सलाह लीजिये।

ग्लाइकोडिन टर्प-वसाका

शान्तिदायक तथा खांसी को नष्ट करती है।

अलेम्बिक डिस्ट्रिब्युटर्स लि. मखनियां कुआं लोअर रोड, बांकीपुर पटना

अलेम्बिक कैमिकल वर्क्स कम्पनी लिमिटेड, बरोडा

AL 257

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या आपके सभी आहार स्फूर्तिदायी होते हैं?

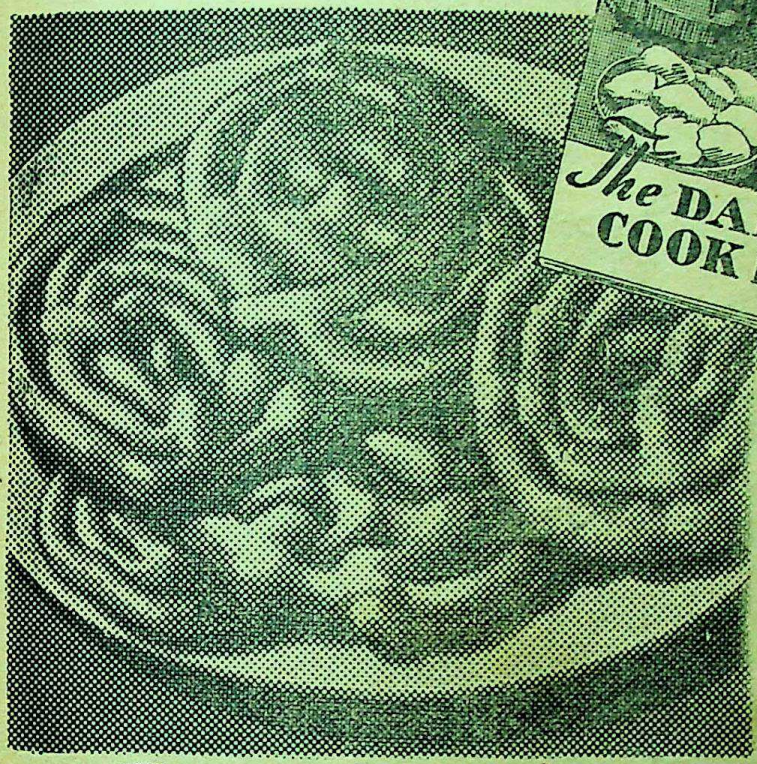

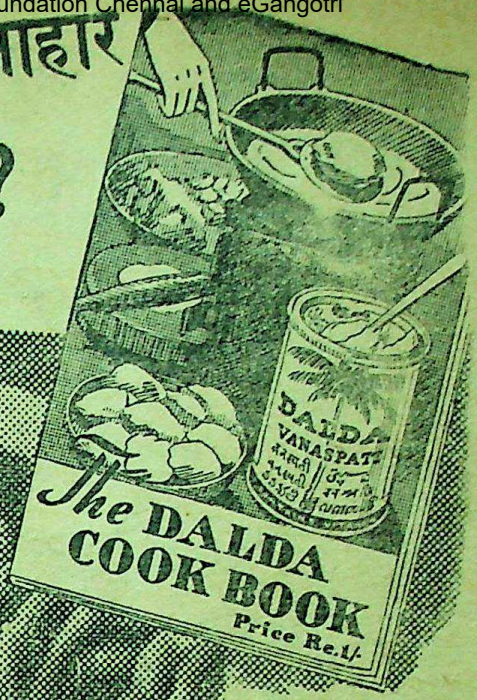

सबसे बढिया शक्तिदायी चीजें कौनसी हैं इसकी जानकारी हरएक स्त्रीको होनीही चाहिये। डाल्डा कुक बुक (अंग्रेजी) में आहार के बारेमें लाभकारी बातें और १५० से अधिक आहारोंका बयान किया गया है। Dept. D121 P. O. Box No. 353, Bombay के पते पर चार आने के पोस्टल स्टाम्प भेजियेगा।

जी, हां—उन्हींमेसे तो शक्ति पायी जाती है। लेकिन यह बात नहीं कि सभी आहारोंमेसे उतनीही शक्ति पायी जाती है। कई ज्यादा स्फूर्तिदायी होते हैं तो कई कम स्फूर्तिदायी। इसी लिये हमारा आरोग्य हमेशा खतरेमें रहता है। कई मनपसन्द आहार इस हिसाब से बिलकुल बेकार होते हैं और उनको पसन्द करनेवालोंको खेलने या काम करनेसे थकावट मालूम होये बिना नहीं रहती। सौभाग्य की बात है कि हरएक आहार को हम जीवन-सत्व संपूर्ण डाल्डामें बनाकर ज्यादा स्फूर्तिदायी बना सकते हैं। यह रसोई की बढिया चीज प्रकृतिके सर्वोत्तम स्फूर्तिदायी अन्नांश देती है। बहुतसी चीजोंमें न मिलनेवाली शक्ति उसमें है जिससे आपके हरएक आहार को वह स्फूर्तिदायी बना देती है।

पोषक-तत्व संपन्न **डालडा** स्फूर्ति के लिये

THE HINDUSTAN VANASPATI MANUFACTURING CO., LTD.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निश्चय उसने लाइफबॉय की आदत सीखी है!

वह स्कूल जा रहा है। वहाँ से वह अपने साथ क्या लाएगा? नया ज्ञान, नये तरीक़े—और शायद किसी रोग के कीटाणु भी! माँ अपने छोटे बच्चे को सुरक्षित रहने की शिक्षा देकर बाहर भेजती है—सब से अच्छी शिक्षा लाइफ़बॉय साबुन का दैनिक इस्तेमाल है—जो गंदगी के उस ख़त्रे से रक्षा करता है जो स्वस्थ से स्वस्थ बच्चे को भी रोग लगा सकता है।

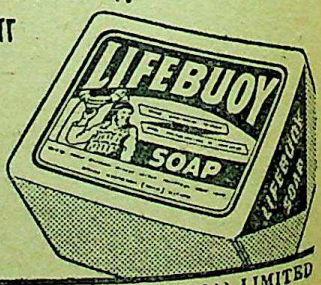

लाइफबॉय का व्यवहार करना एक ज़रूरी आदत है

L 78-23 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुन्दर बाल

सुन्दर बाल, जिसकी हर एक को अभिलाषा है, आपका भी हो सकता है। टामको कोकोनट हेयर आयल और शेम्पू के बराबर प्रयोग की आदत डालिए।

टामको सेल्स डिपार्टमेंट,

जवाहर स्क्वायर, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैज़ा, मलेरिया, इन्फ्लुएंज़ा, टाइफाइड
आदि बीमारियों में बचानेवाला।
१ औं० शीशी ॥), दर्जन ५॥=), डा० ख़० अलग

युकॅलिप पेन बाम } सूचीपत्र मुफ़्त { युकॅलिप दाद का मरहम

खांडालेकर बन्धु, बम्बई ४.

इस्लाम
की
सच्ची पूजा किसने की ? यह जानने के लिए पढ़ो

—इस्लामी—

दुनिया का सिरताज
(कमालपाशा का चरित्र)
मूल्य २) दो रुपये

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लि० प्रयाग

(REGISTERED)

हृदय की सर्दी (सर्दी और कफ़)—लापरवाही करने से मामूली हृदय की सर्दी फेफड़े की सूजन (ब्रांकैटिस) हो जायगी। इससे बचे रहने का रास्ता बड़ा आसान है। थोड़ा-सा अमृतांजन लेकर छाती पर मालिए। बस, उसकी गरमी सीधे हृदय तक पहुँचती है और कफ़ को पिघला देती और तुरंत आराम मिलता है।

अमृतांजन—हमेशा जल्दी से जल्दी आराम पहुँचाता है।

अमृताञ्जन लिमिटेड, बम्बई और मद्रास
शाखा :—कलकत्ता, कराची, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धि से काम लीजिए

अच्छी पुस्तकों का चुनाव साधारण काम नहीं है। इसमें यदि आप अपनी बुद्धि का उपयोग न करेंगे, तो गाढ़ी कमाई के पैसों से खरीदी हुई पुस्तकें फेंक देनी होंगी। ऐसा न हो इसलिए हम काव्य और साहित्य की चुनी हुई पुस्तकें आपके सामने उपस्थित कर रहे हैं

काव्य की पुस्तकें

गोस्वामी तुलसीदास—संक्षिप्त रामचरितमानस (सचित्र)—यह रामचरितमानस का संक्षिप्त संस्करण है। संक्षेप ऐसी चतुराई से किया गया है कि कहीं भी कथा-भाग टूटने नहीं पाया। मँझोले आकार के ३०० पृष्ठों में यह समाप्त हुआ है। पुस्तक सचित्र और सजिल्द है। मूल्य १) एक रुपया।

अयोध्याकाण्ड (मूल)—रामायण-प्रेमियों के सुभीते के लिए यह काण्ड अलग प्रकाशित किया गया है। यह पुस्तक अनेक स्थानों के शिक्षाविभाग-द्वारा स्वीकृत है। इससे यह विद्यार्थी तथा साधारण जनता सभी के काम की चीज़ है। मूल्य) एक रुपया। सटीक मूल्य २॥≈) दो रुपये ग्यारह आने।

सुन्दरकाण्ड (मूल)—रामायण-प्रेमियों के सुभीते के लिए यह काण्ड असली रामचरितमानस से अलग छापा गया है। मूल्य ।≈) सात आने।

अरण्यकाण्ड (मूल)—रामायण-प्रेमियों के सुभीते के लिए यह काण्ड भी असली रामचरितमानस से अलग छापा गया है। मूल्य ।≈) सात आने।

विनयपत्रिका (सटीक)—गोस्वामी तुलसीदास की रचनाओं में विनयपत्रिका का स्थान बहुत उच्च है। इसमें गोस्वामीजी के विनय-सम्बन्धी पद्यों का संग्रह है। इसके टीकाकार हैं पण्डित महेश्वर भट्ट। मूल्य ४) चार रुपये।

कुण्डलिया रामायण—गोस्वामी तुलसीदासजी की यह अमर रचना पिछले दिनों खोज में मिली है। इसमें उनकी अन्यान्य रचनाओं की भाँति सरस कुण्डलिया छन्दों में रामचरितमानस के सातों काण्डों की कथा दी गई है। मूल्य ४) चार रुपये।

संक्षिप्त सूरसागर—इसमें महाकवि सूरदास के पदों का संग्रह है। इसका एक-एक पद भक्ति तथा प्रेम के रस से ओतप्रोत है। मूल्य ३।-) तीन रुपये पाँच आने।

चारण—इस पद्यमय पुस्तक में प्राकृतिक दृश्यों के मनोरञ्जक वर्णनों के अतिरिक्त राजपूताना के कुछ प्रसिद्ध वीरों का गुणगान किया गया है। मूल्य ।-) पाँच आने।

श्री राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी०, एल-एल० बी० लिखित चार काव्य-ग्रन्थ

वनवास—यह पुस्तक एक खण्ड-काव्य है, जिसमें कवि ने राम के वन-गमन और भारत के पावन स्थल चित्रकूट पर्वत का बड़ा मनोरम वर्णन किया है। मूल्य ।॥≈) चौदह आने।

मधुस्रवा—इस अनुपम और नवीन शैली की कविता पुस्तक में जीवन में मधु बरसाने की पूरी-पूरी क्षमता है। आप भी इसकी रचनाओं को पढ़कर जीवन को रस-सिक्त बनाइए। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

किङ्किणी—इसमें लेखक की उत्तमोत्तम फुटकर कविताओं का संग्रह किया गया है। कविताओं की भाषा इतनी मधुर और कल्पना की उड़ान इतनी आकर्षक है कि पाठक कुछ क्षण के लिए उसमें अपनी सुध-बुध भूले बिना नहीं रहता। मूल्य ॥।) बारह आने।

लक्ष्मणशक्ति—यह भी एक खण्डकाव्य है। इसकी कथा का आधार रामायण का युद्ध-काल है जिसमें लक्ष्मण मूर्छित हो गये थे। भाषा सुलझी हुई और मुहाविरेदार है। मूल्य ॥। बारह आने।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ कवि

ठाकुर गोपालशरणसिंहजी की कृतियाँ—

माधवी—माधवी का यह नया संस्करण बड़ी ही सज-धज के साथ और बड़े आकार में प्रकाशित हुआ है। मूल्य २) दो रुपये।

ज्योतिष्मती—इस संग्रह में ठाकुर साहब की नवीन प्रकार की कवितायें संगृहीत की गई हैं, जो हिन्दी-साहित्य में अपना विशेष स्थान रखती हैं। ख़ास कर इसमें संग्रह किये गये छोटे-छोटे गीत बहुत ही मधुर और भावपूर्ण हैं। मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने।

मानवी—इस संग्रह में प्रकाशित कविताओं के द्वारा ठाकुर साहब ने भारतीय नारी के सुख-दुःखमय जीवन का बड़ा ही सुन्दर और मार्मिक चित्रण किया है। मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने।

संचिता—इस संग्रह में ठाकुर साहब ने अपनी सन् १९१४ से लेकर सन् १९३९ तक की सब प्रकार की रचनाओं का समावेश किया है। इस एक ही पुस्तक के द्वारा ठाकुर साहब के कवि-जीवन के क्रम-विकास का उत्तमतापूर्वक अध्ययन किया जा सकता है। संग्रह में कुल ७१ कवितायें हैं। मूल्य ३) तीन रुपये।

पद्यमाला—इस पुस्तक में अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के बारहवें अधिवेशन के सभापति हास्यरसावतार स्वर्गीय पण्डित जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी, साहित्यभूषण की फुटकर कविताओं का संग्रह किया गया है। मूल्य १) एक रुपया।

एकादशी—लेखक, श्रीयुत नत्थाप्रसाद दीक्षित 'मिलिन्द'। इस पुस्तक में मिलिन्द जी की १२ कमनीय कविताओं का संग्रह किया गया है। ये सभी कवितायें पौराणिक आख्यायिकाओं के आधार पर नये ढङ्ग से लिखी गई हैं। मूल्य केवल १।-) एक रुपया पाँच आने।

मञ्जीर—लेखक, श्री गिरिजाकुमार माथुर। इसमें नवयुवक कवि की भावपूर्ण ४३ रचनायें संगृहीत हैं जिन्हें पढ़कर हृदय फड़क उठता है। मूल्य १) एक रुपया।

दैत्यवंश—लेखक, श्रीयुत हरदयालुसिंह। इसमें हिरण्याक्ष से लेकर स्कन्द तक दैत्यवंश के प्रभावशाली नरेशों का वर्णन व्रजभाषा के ललित छन्दों में पुरानी शैली के अनुसार किया गया है। इस पुस्तक पर देव-पुरस्कार दिया जा चुका है। मूल्य ३।-) तीन रुपये पाँच आने।

द्विवेदी काव्यमाला—आचार्य पण्डित महावीरप्रसाद द्विवेदी की अमर कविताओं का पूर्ण संग्रह।

शनि भगवान् की कथा—इसमें ललित छन्दों में भगवान् की महिमा का वर्णन किया गया है। मूल्य ॥) आठ आने।

तक्षशिला काव्य—सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान तक्षशिला के अतीत गौरव का वर्णन। इसमें ओज, प्रसाद तथा माधुर्य आदि काव्योचित गुणों का समुचित रूप से समावेश किया गया है। मूल्य ३) तीन रुपये।

कौमुदी—श्रीयुत बालकृष्णराव आई० सी० एस० की कविताओं का संग्रह। मूल्य ॥≈) ग्यारह आने।

साहित्य-समालोचना

तुलसी के चार दल (प्रथम और द्वितीय भाग)—तुलसीदास के रामलला नहछू, बरवै रामायण, पार्वती-मंगल और जानकीमंगल का आलोचनात्मक परिचय तथा इन चारों का अध्ययनपूर्ण टीका। मूल्य प्रथम भाग का ३) तीन रुपये, द्वितीय भाग का २॥≈) दो रुपये ग्यारह आने।

हिन्दी-भाषा की उत्पत्ति—पुस्तक का विषय उसके नाम से स्पष्ट है। इसमें हिन्दी-भाषा की उत्पत्ति के विवेचन के अतिरिक्त और भी अनेक भारतीय भाषाओं पर विचार किया गया है। मूल्य ॥) आठ आने।

बाबू श्यामसुन्दरदास की कुछ पुस्तकें

सचित्र हिन्दी-कोविद-रत्नमाला—(दो भाग) पहले भाग में भारतेन्दु से लेकर वर्तमान समय तक के हिन्दी के नामी लेखकों और सहायकों के सचित्र और संक्षिप्त जीवनचरित दिये गये हैं; और दूसरे भाग में पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी, पं० माधवराव सप्रे, बी० ए० आदि विद्वानों के तथा विदुषियों के जीवनचरित छापे गये हैं। हिन्दी में यह पुस्तक अपूर्व है। पहले भाग का मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने। दूसरे भाग का २॥≈) दो रुपये ग्यारह आने।

मेरी आत्म-कहानी—काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा के दाता बाबू श्यामसुन्दरदास जी की आत्म-कहानी एक प्रकार से हिन्दी-साहित्य के वर्तमान युग का इतिहास है। इस पुस्तक में बाबू साहब ने केवल अपनी जीवन-घटनाओं का विवरण ही नहीं लिखा वरन् अपने समय के उन सभी साहित्य-सेवियों की विवेचना भी की है, जिन्होंने हिन्दी-साहित्य की अपूर्व योगदान किया है। मूल्य २) दो रुपये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ—लेखक, पण्डित उमेशचन्द्र मिश्र। पुस्तक में विश्वकवि श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर की प्रामाणिक नी और उनकी समस्त कृतियों—कविता-संग्रह, नाटक-नाटिका, नियाँ, उपन्यास, यात्रा-वर्णन, विज्ञान के ग्रंथ, निबन्ध, साहि- समालोचना, चित्रकला आदि—का विवेचनात्मक परिचय गया है। उदाहरणों में कवि की प्रायः समस्त सुप्रसिद्ध चुनी हुई रचनायें आ गई हैं। फ़ुटनोट में उनके सरल दिये गये हैं। इसके द्वारा आप रवीन्द्रनाथ और उनकी काव्य- यों का पूरा-पूरा परिचय प्राप्त कर सकते हैं। विश्वभारती न्तिनिकेतन) के विद्वानों ने भी इसकी प्रशंसा की है। केवल ५) पाँच रुपये।

द्विवेदीमीमांसा—लेखक, श्रीयुत प्रेमनारायण टण्डन। हिन्दी वीन युग की धाराओं और प्रवृत्तियों के वैज्ञानिक अध्ययन के यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। साधारण पाठकों के रिक्त सम्मेलन के परीक्षार्थियों व विश्वविद्यालयों के छात्रों के भी यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। मूल्य दो रुपये।

देवदर्शन—देवपुरस्कार-विजेता श्री हरदयालुसिंह द्वारा दित व्रजकाव्य-समीक्षायें—इसमें व्रजभाषा के प्रख्यात कवि की जीवनी और उनके समस्त काव्यों का आलोचनात्मक चय दिया गया है। व्रजकाव्य के मियों के अतिरिक्त त्य के विद्यार्थियों के लिए भी यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपये पाँच आने।

पूर्ण-पराग—इसमें व्रजभाषा के प्रसिद्ध आधुनिक कवि श्री प्रसाद 'पूर्ण' की जीवनी और उनके काव्य का समालोचना- परिचय है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपये आने।

मतिराम-मकरन्द—इसमें काव्यालोचन के साथ-साथ कवि राम के ३ प्रसिद्ध ग्रंथों—मतिराम-सतसई, ललित-ललाम और ज का संक्षिप्त सरस संग्रह भी कर दिया गया है। सजिल्द क का मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

बिहारी-विभव—इसमें महाकवि बिहारी की कविता का ोचनात्मक परिचय, उनकी जीवनी तथा सतसई के चुने हुए संकलित हैं। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपये आने।

भूषण-भारती—इसमें महाकवि भूषण की जीवनी और उनके त्त काव्य-ग्रन्थों का विवेचनात्मक परिचय दिया गया है। ल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपये पाँच आने।

महादेवी का विवेचनात्मक गद्य (द्वि० सं०)—संकलनकर्त्ता श्री गंगाप्रसाद पाण्डेय, एम० ए०। साहित्य की नवीन शैली का अध्ययन करनेवालों के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य २॥।) दो रुपये बारह आने।

आल्हा—लेखक, चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा। इस पुस्तक में महोबे के प्रख्यात वीर आल्हा और ऊदल का जीवन-चरित और समस्त लड़ाइयों का वर्णन रोचक व सरस भाषा में दिया गया है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य ३।-) तीन रुपये पाँच आने।

सीताराम-संग्रह—अर्थात् रायबहादुर लाला सीतारावजी के समग्र काव्यों और नाटकों का सरस संग्रह। प्रस्तुत पुस्तक में लालाजी के समग्र काव्यों और नाटकों के अनुवादों का सरस संग्रह है। पुस्तक के आरम्भ में लालाजी का परिचय और उनकी रचनाओं की आलोचना दी गई है। २॥≈) दो रुपये ग्यारह आने।

साहित्य-समीक्षा—इस पुस्तक में हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक श्रीयुत कालिदास कपूर, एम० ए०, एल० टी० के साहित्यिक तथा समालोचनात्मक लेखों का संग्रह किया गया है। मूल्य १) एक रुपया।

हास्य-कौतुक—कवीन्द्र रवीन्द्र ने इस पुस्तक में विनोदमयी भाषा में मानव-चरित के बहुत ही उत्तम-उत्तम चित्र अंकित किये हैं। मूल्य ॥) आठ आने।

मौलाना हाली और उनका काव्य—उर्दू के श्रेष्ठ कवि मौलाना हाली का जीवनचरित और उनकी चुनी हुई कविताओं का संग्रह। प्रत्येक कविता का अर्थ सरल हिन्दी में दिया गया है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

कवि और काव्य—श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी ने काव्य के गुण-दोष से सम्बन्ध रखनेवाले कितने ही उपयोगी विषयों का इसमें विशद रूप से विवेचन किया है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

कहानी कैसे लिखनी चाहिए—सफल कहानी-लेखक बनने की इच्छा रखनेवालों के लिए इसमें बहुत-सी ज्ञातव्य बातें लिखी गई हैं। मूल्य ॥≈) ग्यारह आने।

हिन्दी ग्रामर—(ई० ग्रीव्स कृत) एक अँगरेज़ द्वारा लिखित यह हिन्दी का व्याकरण भाषा-विज्ञान की दृष्टि से बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। हिन्दी न जाननेवाले विदेशी को हिन्दी सीखने में इससे मदद तो होगी ही साथ ही हिन्दी भाषा विज्ञान के विद्यार्थी भी इससे लाभ उठा सकते हैं। मूल्य ८॥≈) आठ रुपये ग्यारह आने।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मैनेजर बुकडिपो—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

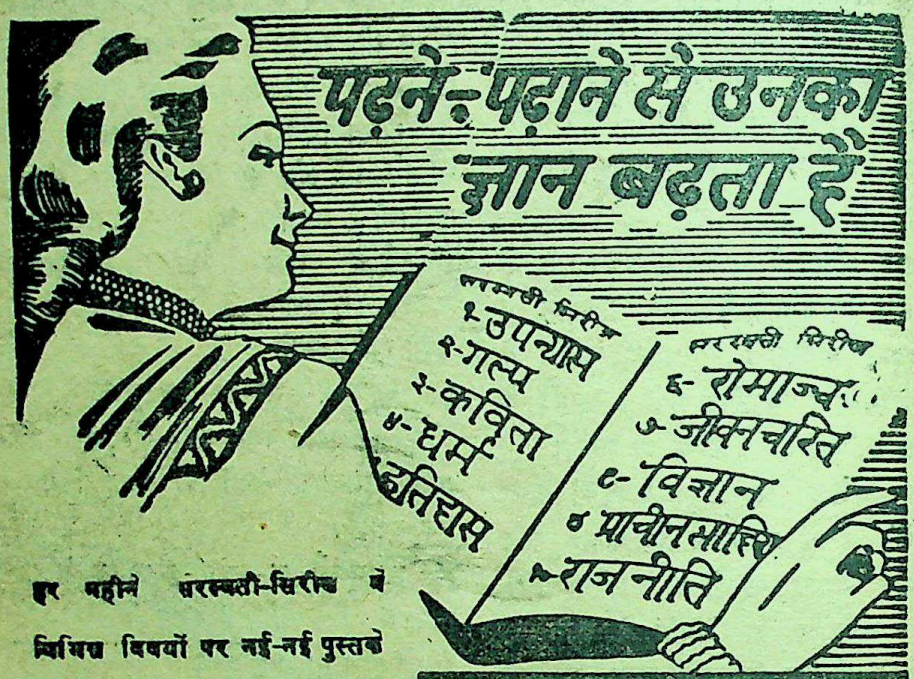

हर महीने सरस्वती-सिरीज में विभिन्न विषयों पर नई-नई पुस्तकें निकलती रहती हैं। आप इन्हें खरीद कर कुछ ही दिनों में एक अच्छा-सा पारिवारिक पुस्तकालय बहुत कम लागत में तैयार कर सकते हैं। यह पुस्तकालय आपके तथा आपके परिवार के लिए समान उपयोगी होगा।

सरस्वती सिरीज

मूल्य ॥=)

इण्डियन प्रेस

प्रयाग

सभी पुस्तक-विक्रेताओं तथा हीलर के बुक स्टाल पर पुस्तकें मिल सकेंगी। विवरण के लिए हमारा सूचीपत्र मुफ्त मंगावें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेज व बढ़िया सुगन्ध, गहरा रंग और कम दाम इन सबने मिलकर लिपटन की व्हाइट लेबुल को बाजार भर की सर्वश्रेष्ठ चाय बना रक्खा है।

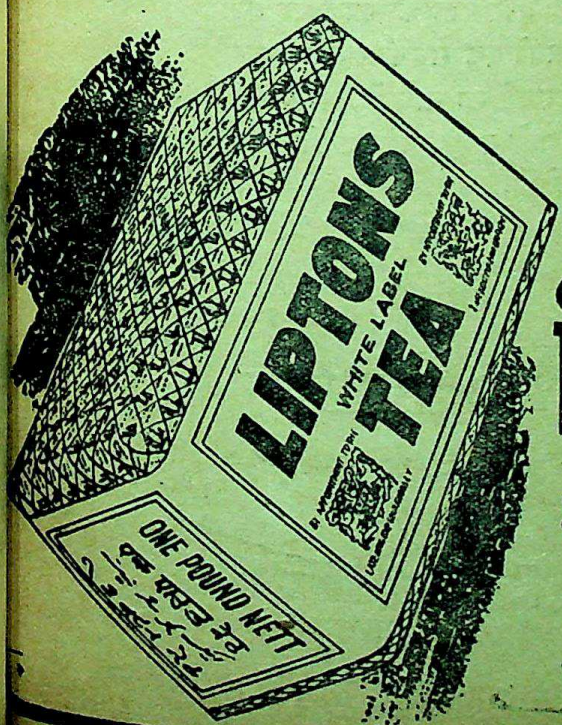

लिपटन की

व्हाइट लेबुल चाय

सर्वोत्तम भारतीय पत्ता चाय

LTK 84 W

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी झंझटें बहुत हैं

बेचारी गृहिणी पर आजकल दया आती है ; उसका जीवन चिन्ताओं व झंझटों से भर गया है। अन्न हद से ज्यादा मँहगा—कपड़ों व जलावन की समस्या निपटने में नहीं आती—बच्चों को स्कूल और पति को काम पर भेजना कुस्वप्न-सा हो गया है। परन्तु अभी भी उसकी एक सच्ची सखी बच गई है जो हमेशा उसका साथ देगी। उस सखी का नाम है, चाय।

वह कितनी ही थकी माँदी या चिन्ताग्रस्त क्यों न हो, चाय उसके बोझ को हलका कर देगी, दुश्चिन्ताओं का अन्त कर देगी, भविष्य का सामना हँसते हँसते करने के लिये उसे नई आशा, नया बल प्रदान करेगी ; चिन्ता छोड़, उसकी विचार-धारा आने वाले सुखद समय की कल्पना में प्रवाहित होने लगेगी।

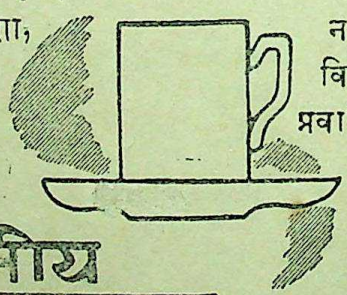

भारतीय

वक्त पड़ने पर **चाय** का सहारा लीजि

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

IK 236

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

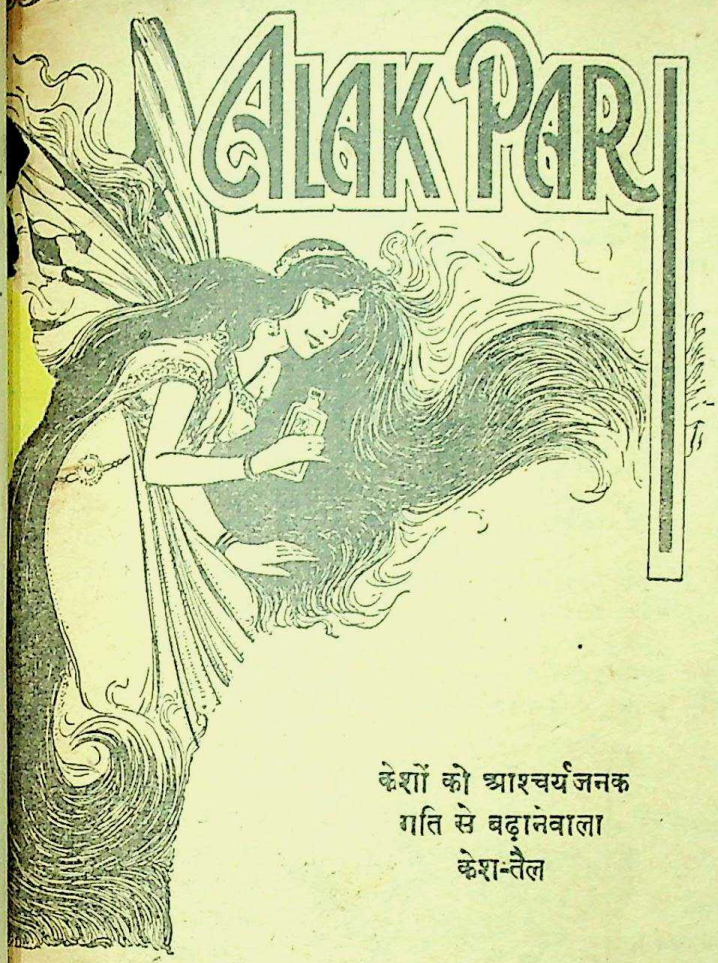

केशों को आश्चर्यजनक
गति से बढ़ानेवाला
केश-तैल

शुद्ध बादामरोग़न पर बना

अलकपरी

केशों में प्रतिमास ३-४ इञ्च वृद्धि !
६ महीने में एड़ी-चुम्बी केश !

'अलकपरी' का कोर्स

पहले सप्ताह में रूसी-खुश्की दूर हो जाती है।
दूसरे सप्ताह में केशों का झड़ना और उनके सिरों का फटना रुकता है।
तीसरे सप्ताह में नये केश उगते दिखाई देते हैं।
चौथे सप्ताह के अन्त तक केश ३-४ इञ्च बढ़ जाते हैं।
फिर प्रतिमास इसी औसत से बढ़ते रहते हैं।

६ महीने में केश एड़ी-चुम्बी बन जाते हैं।

मूल्य एक शीशी का २॥) है जो एक महीने को काफ़ी होती है। डाक-ख़र्च व पैकिङ्ग पृथक्। ३ से अधिक शीशियाँ डाक से नहीं भेजी जायँगी। अधिक के लिए ५) पेशगी भेजिए और अपने रेलवे स्टेशन का नाम लिखिए।

प्रतिष्ठित महिलाओं की सम्मतियाँ—

मुझे 'अलकपरी' से बहुत कुछ फ़ायदा है। ३ शीशियाँ तुरन्त भेजने की कृपा करेंगे क्योंकि मेरे पास का तेल बिलकुल ख़तम हो गया है।

२-९-४४ कुसुमकुमारी, काँकरोली (मेवाड़)।

आपके 'अलकपरी' तेल की १ शीशी इस्तेमाल की। बहुत ही लाभ हुआ। अनेक धन्यवाद। अब मैं आपकी स्थायी ग्राहिका बन जाऊँगी। कृपया एक शीशी १५ सितम्बर के अन्दर ही अन्दर भेज दें।

७-९-४४ पुष्पा श्रीवास्तव C/o ब्रजेन्द्रनाथ श्रीवास्तव, अलीगढ़।

नम्र निवेदन यह है कि 'अलकपरी' की २ शीशियाँ लगाईं। मुझे बहुत लाभ हुआ है। कृपा कर २ शीशियाँ शीघ्र ही और भेज दीजिए।

१०-९-४४ मिस पुष्पा साहनी C/o दीवान जियालाल साहनी, नायब तहसीलदार, गुजरात (पंजाब)

'अलकपरी' से बहुत लाभ हुआ है। कृपया ६ शीशियाँ तुरन्त भेज दें।

१२-९-४४ मिसेज़ चौधरी सरदारसिंह सब इन्स्पेक्टर पुलिस, हरदुवागंज

'अलकपरी'—नया कटरा, इलाहाबाद

हमारे एजेन्ट—

नई दिल्ली—[illegible]ल स्टोर्स, ३३, गोल बाज़ार। आगरा—प्रियादास घनश्यामदास परफ़्यूमर्स, काश्मीरी बाज़ार।
लखनऊ—भोलानाथ सीताराम, अमीनाबाद पार्क।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

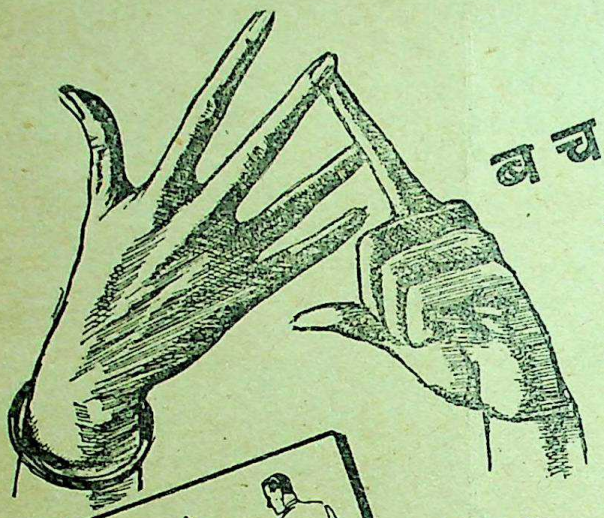

बचत के गुर
-देश के लिए!
-अपने लिए!

गरीबों की मदद के लिए, हम लोगों को इन दिनों थोड़ी चीज़ों से ही काम चला लेना होगा। कम ख़र्च करके आप उन लोगों के लिए सामान छोड़ते हैं जिन्हें इसकी वास्तव में आवश्यकता है। पैबन्द लगे हुए कालर या टीप लगे हुए जूते पहिनने में गर्व का अनुभव कीजिए। आजकल देश के प्रति आपका यही कर्त्तव्य है। सच तो यह है कि कमख़र्ची की ही आजकल क़दर है।

एक बात और भी ध्यान देने की है। पुरानी चीज़ों से काम चला लेने, हर रोज़ हर चीज़ की किफ़ायत करने से बचत होती है—इसका यह मतलब हुआ कि भाव गिरने पर ख़र्च करने को हाथ में ज़्यादा पैसे होंगे।

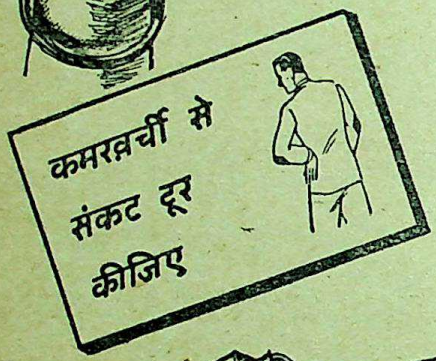

१ दन्तमंजन किफ़ायत से ख़र्च कीजिए। पुराने दयूब रद्दी-भंडार (स्क्रैप डिपो) को दे दीजिए।

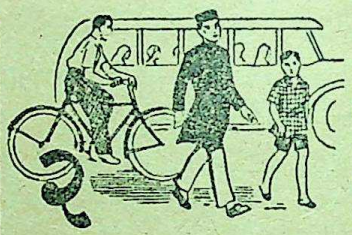

२ थोड़े सफ़र के लिए पैदल या साइकिल पर जाइए॥ एकएक आना बचाइए।

३ भोजन में कम प्रकार के खाने परोसिए।

४ लैम्प ठीक रखने से किरासिन कम जलता है।

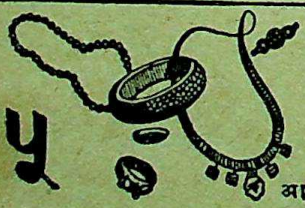

५ नये ज़ेवर मत ख़रीदिए। आपको अपने पैसे बराबर मूल्य नहीं मिलता।

६ पेन्सिल, स्याही, काग़ज़ आदि कम ख़र्च कीजिए।

जिसके बिना काम चल जाय उसे मत ख़रीदिए

भारत-सरकार के सूचना तथा प्रचार-विभाग द्वारा प्रकाशित।

AAA 2 HINDI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमज़ोर और कृष बच्चे **डोंगरे-बालामृत** के इस्तेमाल से ताक़तवर, पुष्ट और चुस्त बनते हैं।

निर्बल, निश्चेतन और निराश क्यों रहते हो ?

भोजन को पचानेवाला, ख़ून को बढ़ानेवाला, पाण्डु और अन्य रोग के बाद की निर्बलता को नष्ट करनेवाला

झंडु रक्तो फोस्फोमाल्ट

सुमधुर शक्तिवर्धक, अमूल्य औषधि अवश्य सेवन करें

झण्डु फ़ार्मास्युटिकल वर्क्स लि०, बम्बई नं० १४

इलाहाबाद के चीफ़ एजेन्ट—एल० एम० घोलकिया एण्ड ब्रादर्स, ४६ जान्स्टनगंज।

दिल्ली और यू० पी० के सोल एजेन्ट—कान्तिलाल आर० परीख, चाँदनी चौक, देहली।

यू० पी० एजेंट—कान्तिलाल आर० पारेख, चाँदनी चौक, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर.आई.ए.एफ. के बारे में लोगों की सम्मति

देखिए, श्री डी० एफ० कारका अपनी "विद दि फोर्टीन्थ आर्मी" (चौदहवीं फ़ौज के साथ) नामक पुस्तक में क्या कहते हैं।

"उनमें मैत्रीभाव था और अपने साथियों के प्रति आश्चर्यजनक सम्मान, तथा इससे भी अधिक था उनमें अपने हवाई बेड़े के प्रति प्रेम। उन्हें इस बात पर गर्व था कि वे हवाई बेड़े में काम करते हैं, और इससे भी अधिक गर्व इस बात पर था कि वह बेड़ा हिन्दुस्तानी हवाई बेड़ा है। यह किराये के टट्टुओं का हवाई बेड़ा नहीं था।

यह उन भारतीयों का हवाई बेड़ा था जिन्हें अपने देश का, अपनी शानदार विरासत का, और अपनी मातृभूमि के गौरव का ध्यान रहता है।"

AAA167

"WITH THE 14th ARMY"
(Thacker) Rs. 4-12-0

* रायल इण्डियन एअर फोर्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

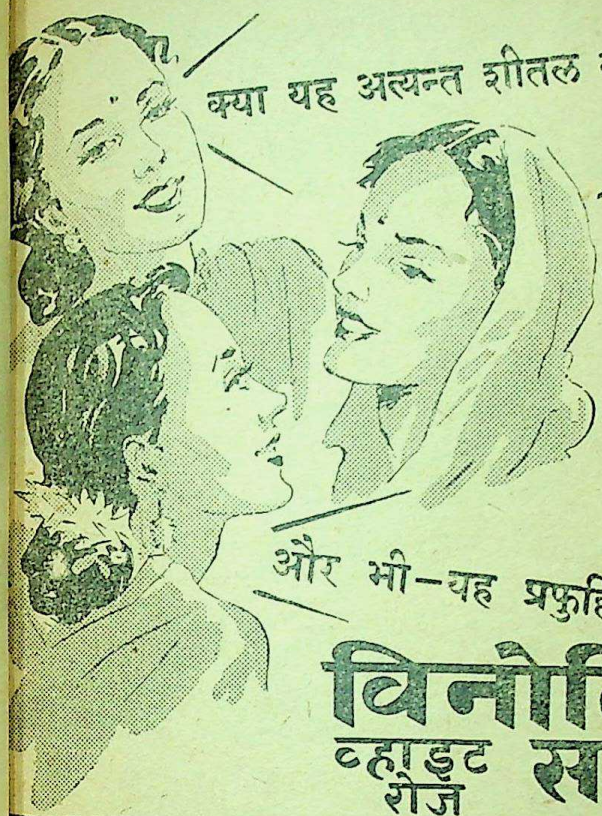

विनोलियाको नियमित रूपमें इस्तेमाल करनेवाले इन विलास-प्रेमी लोगोंसे पूछिये, और वे आपको बतायेंगे कि यह कैसा आश्चर्य्यजनक आरामदायक साबुन है—और गर्मीके मौसममें कितना आरामदायक है। इसका मक्खन-जैसा सफेद फेन तर व ताजा कर देता है। इसकी विशिष्ट सुगंध आनंदित और प्रफुल्लित रखती है। वे लोग कहते हैं कि श्रान्त मस्तिष्क और नसोंके लिए यह टॉनिककी तरह काम करता है।

विनोलिया व्हाइट रोज साबुन

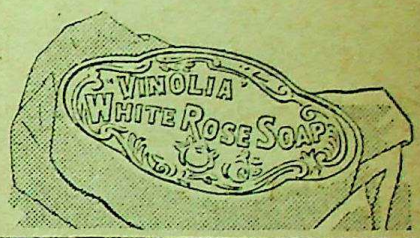

WR. 18-221 HI

VINOLIA CO., LIMITED, LONDON, ENGLAND

प्रदर रोग स्त्रियों का भयानक शत्रु है

प्रदर रोग जिसको लोग लिकोरिया भी कहते हैं यह स्त्रियों की सुन्दरता और जवानी को नष्ट करनेवाला भयानक शत्रु है। लज्जा-बेचारी रोग को छिपाये रहती हैं और दिन-रात घुला करती हैं। यह उनकी भूल है। भयानक रोग का इलाज कराने में लापरवाही करना चाहिये, इस बीमारी से स्त्रियों के गुप्त शरीर से लाल, काला, धुमैला, या श्वेत रंग का बदबूदार पानी या लेस-सा लता रहता है। महीना ठीक समय पर नहीं होता है जिसके कारण कमर, रीढ़, सिर में दर्द, शरीर में जलन, मन मलीन, उठने-में थकावट, भूख का कम लगना, बदन दुबला और कमज़ोर हो जाना, मूर्छा, बेहोशी आदि रोग हो जाते हैं और सन्तान नहीं है और यदि होती भी है तो दुबली और कमज़ोर होती है। ऐसी अवस्था में भारतविख्यात वैद्यरत्न सत्यदेव ने अपूर्व शक्ति न करनेवाली २५ वर्ष की आज़मूदा **नारी-संजीवन** नामक दवा का आविष्कार किया जिसके द्वारा आज तक सहस्रों स्त्रियों को भयानक रोग के पंजे से छुड़ाया है। इस नारी-संजीवन के सेवन से तमाम बीमारियाँ दूर होकर स्त्रियाँ सुन्दर और तन्दुरुस्त हो जाती और सन्तानें सुन्दर, बलवान्, दीर्घायु पैदा होती हैं। यदि आवश्यकता हो तो आज ही पत्र डालकर एक डिब्बा नारी-संजीवन का कर इसके अपूर्व गुणों का चमत्कार देखें। क़ीमत एक डिब्बा ३=); डाकख़र्च माफ़; पैकिंग ख़र्च अलग।

मँगाने का पता—

रूपविलास कम्पनी नं० ४२७ धनकुट्टी,
कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत से बूढ़े लोग जो रोज़गार जारी रखने पर मजबूर होते हैं भयभीत मन से यह कहते सुनाई देते हैं . . .

"मैं इतना बूढ़ा नहीं जितना कि दिखाई पड़ता हूँ।"

किन्तु वे अपने मन में अपने को उतना ही बूढ़ा, शायद उससे भी ज़्यादा बूढ़ा समझते हैं। इसका कारण यह होता है कि उन्होंने अपने भविष्य के लिए कोई आधार नहीं बनाया, हाथ में पैसा नहीं रखा। हर गिरा-पड़ा काम उन्हें स्वीकार कर लेना पड़ता है। उनका जीवन बहुत निराशापूर्ण होता है। किन्तु यह ज़रूरी नहीं कि आपको भी ऐसी मुसीबत का सामना करना पड़े। यदि आप अभी योजना बना लें, तो आप वृद्धावस्था में शान्ति एवम् सम्मान के साथ विश्राम कर सकते हैं।

बुद्धिमान लोग जिन्हें अपने भविष्य का ख़्याल है अपनी बचत के रुपये को आजकल नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेटों में लगा रहे हैं। अपने सुरक्षित भविष्य में उन्हें पूर्ण विश्वास है। आपको भी ऐसा विश्वास प्राप्त हो सकता है।

नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेट ख़रीदिए।

छोटी छोटी रक़में बचाने वाले ५ रुपये का सर्टीफिकेट अथवा ४ आने, ८ आने या १ रुपये के स्टाम्प सरकार द्वारा अधिकृत किसी एजेण्ट अथवा सेविंग्स ब्यूरो या डाकख़ाने से ख़रीद सकते हैं।

★ १२ वर्ष में १० रुपये के १५ रुपये हो जाते हैं।
★ ४½ प्रति शत साधारण ब्याज, इनकम टैक्स माफ़।
★ जमा हुऐ ब्याज के सहित तीन साल बाद इन्हें भुनाया जा सकता है (५ रुपये के सर्टीफिकेट को १८ महीने बाद)।

AAA 128 HINDI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पराक्रम और शक्ति शाली कार्यों का मूल कारण स्वस्थ शरीर।

महाराणा रणजीत सिंह, पन्द्रहवीं शताब्दि में, श्री गुरु नानक द्वारा स्थापित वीर सिक्ख जाति के उदीयमान सम्राट थे। उनके वीरता और साहस के कार्य आज भी, केवल सिक्खों को ही नहीं अपितु समस्त भारतीयों को उत्तेजना प्रदान करते हैं। रणजीत सिंह स्वयं योद्धा होने के कारण, सिक्खों को जहां बुद्धिमान् देखना चाहते थे। वहां उन्हे हृष्ट पुष्ट भी बनाना चाहते थे।

शारीरिक स्वस्थता के लिये हेमो-द्राक्षो-माल्ट का सेवन करिये।

हेमो द्रक्षो माल्ट पुरुष स्त्री और बच्चे सभी को समान लाभदायक है। उनके ग्लीसरो फ़ास्फ़ेट्स स्नायुवों को शक्ति देते हैं। उसके माल्ट पैप्सिन और अंगूरों का रस पाचन शक्ति, भोजन में रुचि तथा जठराग्नि की शक्ति को बढ़ाते हुए संपूर्ण शरीर को असाधारण शक्ति और कान्ति प्रदान करता है।

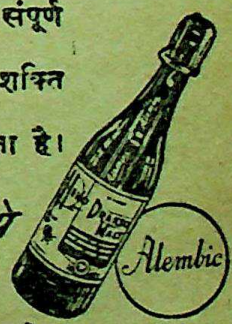

स्वास्थ रक्षा के लिये हेमो-द्राक्षो-माल्ट व्यवहार कीजिये

अलेम्बिक डिस्ट्रिब्युटर्स लि. मेटसन रोड, कानपुर

अलेम्बिक केमकल वर्क्स कम्पनी लिमिटेड बराडा

AL.295 B.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्माजी का चमत्कार

प्रेमवटी ने अपनी ख़ूबी से सारी दुनिया में तहलक़ा मचा दिया

कांग्रेस की राय

(प्रेमवटी वास्तव में एक अद्वितीय औषधि है, पहिले हमें इस औषधि पर इतना विश्वास न था, किन्तु जब हमने स्वयं परीक्षण किया तब हम इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि यह औषधि विज्ञापन में दिये गये तमाम रोगों की केवल एकमात्र औषधि है। हम आशा करते हैं कि भविष्य में यह कम्पनी इससे भी उत्तम औषधियों का निर्माण कर जनता को पहुँचायेगी।—कांग्रेस देहली)

भारत के योगियों ने वनों और पर्वतों की कन्दराओं में रहकर वह चमत्कार दिखलाये हैं जिससे बड़े-बड़े वैज्ञानिक चिकित्सक हैरत में आ गये हैं। आधुनिक चिकित्सकों को जब कोई रोग की औषधि से सफलता नहीं मिलती तब वह घोषित कर देते हैं। परन्तु महात्मा लोग जड़ी-बूटियों की सहायता से मुर्दे को भी जिला देने का दावा करते हैं। भाइ ध्यान से पढ़ो तथा अपने इष्ट मित्रों को सुनाओ। यह लेख जो लिखा गया है, कोई गप्प नहीं है बल्कि मेरे जीवन की घटनायें हैं जो आपके सम्मुख रखता हूँ। मेरा जन्म एक धनी परिवार में हुआ। अपने पिता का लाड़ला पुत्र होने से मैं धन और व्यसन में घिरा रहता था, लेकिन फिर भी मैं सुखी नहीं था। कुसङ्गत में पड़कर मुझे जरियान और प्रमेह रोग हो पहले तो एक दो साल मैंने लोकलाज के कारण अपना भेद छिपाये रखा परन्तु रोग ने भयानक सूरत अख़्तियार कर ली, घबड़ा उठा, संसार में चारों ओर अँधेरा मालूम होने लगा तब मेरी आँखें खुलीं। इलाज शुरू किया गया, बड़े-बड़े हकीमों, वैद्यों के फ़ीस रूप में रुपये और क़ीमती दवाइयों के ख़रीदने में पानी की तरह रुपया बहाने लगा, फिर भी मैं निराश अब मैं घबरा उठा और चारों तरफ़ से अन्धकार दिखलाई देने लगा और सोचने लगा कि इस दुःखमय जीवन से मर जाना अच्छा

पर यह बीस साल पहले की बात है। अब आज मैं ख़ुश हूँ। आज उस परमात्मा की कृपा से आरोग्य मेरे तीन स्वस्थ बच्चे भी हैं जो बिलकुल आरोग्य हैं।

हुआ क्या! मुझमें इतना परिवर्तन कैसे हो गया? यह जानकर आपको आश्चर्य होगा कि मैंने एक दवा जो दवा मैंने सेवन की, वह एक महान् त्यागी परोपकारी साधु की बनाई हुई थी, जो समय काटने के लिए गाँव से कुछ ईंट के खेड़े पर रम रहे थे। यह मेरा सौभाग्य था कि और लोगों के साथ मैं भी दर्शनों के लिए जा पहुँचा। दैवी मेरे दुःखी जीवन के पिछले अध्याय उनके हृदय-पट पर खिंच गये और मेरी आँखों ने हृदय का सारा भेद अपने आप उस पुरुष पर प्रकट कर दिया। मेरी कच्ची उम्र पर महात्मा को दया आई और उन्होंने मुझे कुछ जड़ी-बूटियाँ एकत्र करने को दी। मैंने वैसा ही किया और तब उनके सम्मुख ही मुझे उनके आदेश और निजी देख-रेख में 'प्रेमवटी' तैयार करनी यद्यपि मुझसे ४० दिन लगातार 'प्रेमवटी' का सेवन करने को कहा गया था, तथापि केवल बीस दिन के सेवन से ही मुझमें हो गया। मेरी कमज़ोरी और तमाम गुप्त बीमारियाँ जड़ से दूर हो गईं। पीले और उदास मुख पर लाली दौड़ने लगी, में उन्माद झूमने लगा और हृदय में जवानी का जोश उमड़ आया। महात्माजी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के साथ वादे को पूरा करने के लिए दुःखी जनों के निमित्त पिछले बीस साल से लगातार मैं इस प्रयोग को मुफ़्त बाँट रहा हूँ। पत्र-पत्रिकाओं में भी छप चुका है, मुझे हर्ष है कि इस अमृत-तुल्य प्रयोग ने सैकड़ों की प्राण-रक्षा की, हज़ारों को मौत निकाला और लाखों का इससे भला हुआ। महात्मा-प्रदत्त 'प्रेमवटी' का नुस्ख़ा इस प्रकार है; नोट कर लें—

शुद्ध त्रिफला ५ तोला, त्रिकुट चूर्ण ५ तोला, शुद्ध सूर्यतापी शिलाजीत ५ तोला, शुद्ध बङ्ग भस्म ६ माशा, अ छाप केसर ३ माशा, असली अकरकरा ६ माशा, असली नेपाली कस्तूरी ३ रत्ती। इन सब औषधियों को कूट-छानकर डालकर ऊपर से शीतल चीनी का तेल २० बूँद, सन्दल तेल २० बूँद, बिरोजे का तेल २० बूँद एक-एक करके मिलाये। बाद ताज़ी ब्राह्मी बूटी के अर्क़ में १२ घण्टा घोंटकर झरबेरी बेर के बराबर गोलियाँ बनावें और छाया में सुखा लें। एक-एक सुबह-शाम पाव भर गाय के दूध में एक तोला शक्कर मिलाकर सेवन करें। इसकी प्रशंसा हम अपने ही मुँह से नहीं कर बड़े-बड़े वैद्यों, डाक्टरों, हकीमों, सेठ साहूकारों तथा रईसों, ज़मींदारों, सरकारी आफ़िसरों तक ने इसकी सराहना की है। श्रीजमुनादत्त शर्मा, झोंकर का कहना है कि यह वटी धातु का पतलापन, २० प्रकार के प्रमेह के लिए अक्सीर है।

'प्रेमवटी' में कोई हानिकारक चीज़ नहीं पड़ती और गुणकारी चीज़ें नुस्ख़े से ही प्रकट हैं। यह औषध वीर्य का बीसों प्रकार के प्रमेह, पेशाब के साथ चूने की तरह वीर्य का जाना, पाख़ाने के समय धातु का जाना, स्वप्नदोष, सुस्ती, कमज़ोरी, डाइब्टीज़, मधुमेह, सूज़ाक, जवानी में बुढ़ापे की-सी हालत हो जाना, असली ताक़त की कमी, स्मरण-शक्ति कमज़ोर पड़ स्त्रियों के भी प्रदर-सम्बन्धी रोग दूर करके अत्यन्त ताक़त देती है और नस-नस में नवजीवन का सञ्चार करती है। भाइयों को जिन्हें फ़ुरसत नहीं मिलती या शुद्ध औषधि प्राप्त नहीं कर सकते यह प्रयोग स्वयं बनाकर दाम के दाम में व्यवस्था की है। ४० दिन के लिए पूरी ख़ुराक विधिवत् ८० गोलियों का मूल्य ५॥=) रु० और २० दिन के लिए ४० के दाम ३=) डाकख़र्च ॥।-)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पता—बाबू श्यामलालजी रईस, प्रेमवटी आफ़िस नं० (S. A.) धनकुट्टी, कानपुर

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

१—१९४५-४६ का बजट—श्रीयुत अवनीन्द्रकुमार विद्यालङ्कार २५७
२—गीत (कविता)—श्रीयुत जितेन्द्रकुमार ... २६४
३—अमरीकन पत्रकारों के साथ कुछ क्षण—श्रीयुत मङ्गलकिशोर पाण्डेय २६५
४—सुख-स्पर्श (कविता)—श्रीयुत ठाकुर गोपालशरणसिंह २६८
५—तीन रुख़—श्रीयुत प्रभाकर माचवे ... २६९
६—कांग्रेसी मन्त्रिमण्डलों की स्थापना और कांग्रेस का पुनः सङ्गठन—श्रीयुत भूपेन्द्रनाथ सान्याल ... २७१
७—सैनिक से (कविता)—श्रीयुत मदनमोहन शास्त्री राकेश, एम० ए०, एम० ओ० एल० ... २७४
८—गोष्ठी—पण्डित गणेशप्रसाद द्विवेदी, एम० ए०, एल्-एल० बी० ... ... २७५
९—सारनाथ के खँडहर में (कविता)—श्रीयुत शक्र २८१
१०—उनकी किसी से नहीं बनती—प्रिंसिपल श्रीमन्नारायण अग्रवाल, एम० ए० ... ...
११—उद्बोधन (कविता)—श्रीयुत 'अरुण' ...
१२—पोरबन्दर—श्रीयुत सन्तराम, बी० ए० ...
१३—योरप के युद्ध का प्रारम्भ और अन्त—श्रीयुत नरोत्तमप्रसाद नागर ... ...
१४—निर्वासित—पण्डित इलाचन्द्र जोशी ...
१५—सम्पादकीय नोट ... ...

चित्र-सूची

१—पोरबन्दर-सम्बन्धी ६ चित्र २८६
२—योरप के युद्ध का प्रारम्भ और अन्त सम्बन्धी ११ चित्र ... २८९-९४,२९
३—स्वर्गीय प्रेसिडेंट रूज़वेल्ट ... ...

अब मैं अपने पति की प्रिय बन गई

रूप-विलास रजिस्टर्ड

जब मैं विवाह के अवसर पर अपने पति-गृह गई तब मेरे पतिदेव हमारे भद्दे तथा काले चेहरे को देखकर मुझसे घृणा करने लगे। मैंने अपनी सहेलियों की सलाह से **रूप-विलास** का उबटन लगाना शुरू किया। कुछ ही दिनों बाद मेरा चेहरा गुलाब के फूल की भाँति दमकने लगा और आज मैं अपने पति की प्रिय बन गई। इसके लगाने से मुँहासा, झाँई, चेचक, काले-काले दाग़, फुंसी, ख़ुश्की, बदरौनक़ी, झुर्रियाँ वग़ैरह जल्द आराम होती हैं और थोड़े ही दिनों के लगाने से मलीन मुख चमकदार होकर चेहरे पर गुलाबी छटा दमकने लगती है। यदि आप अपना चेहरा ख़ूबसूरत बनाना चाहते हैं तो २५ वर्ष का प्रचलित जगत्प्रसिद्ध रजिस्टर्ड **रूप-विलास** उबटन लगाइए। विवाह-शादियों पर वर-वधू का सौन्दर्य बढ़ाने के लिए यह बहुत ही उपयोगी साबित हुआ है और इसकी ख़ुशबू इतनी प्यारी है कि तबियत को मस्त करती है। क़ीमत एक डिब्बा २-) तीन डिब्बा ५॥) डाक-ख़र्च माफ़, पैकिंग ख़र्च अलग।

रूप विलास कम्पनी धनकुट्टी नं० ४२७ कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चण्डी

शाक्तधर्म की एकमात्र मासिक पत्रिका

इसमें प्रसिद्ध-प्रसिद्ध तान्त्रिक विद्वानों के महत्त्वपूर्ण लेख प्रति मास प्रकाशित होते हैं। शाक्तधर्म के प्रेमियों को इसका ग्राहक बनकर लाभ उठाना चाहिए। वार्षिक मूल्य ३)। एक अङ्क का ।=)।

पता—चण्डी-कार्यालय, कटरा, इलाहाबाद

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है।

हमारे यहाँ की बनी क्रीमोला टाफ़ी
फ़्रूट ड्राप्स तथा
रेशमी मिठाइयों का स्वाद लीजिए।
सभी दूकानों में मिलती हैं।

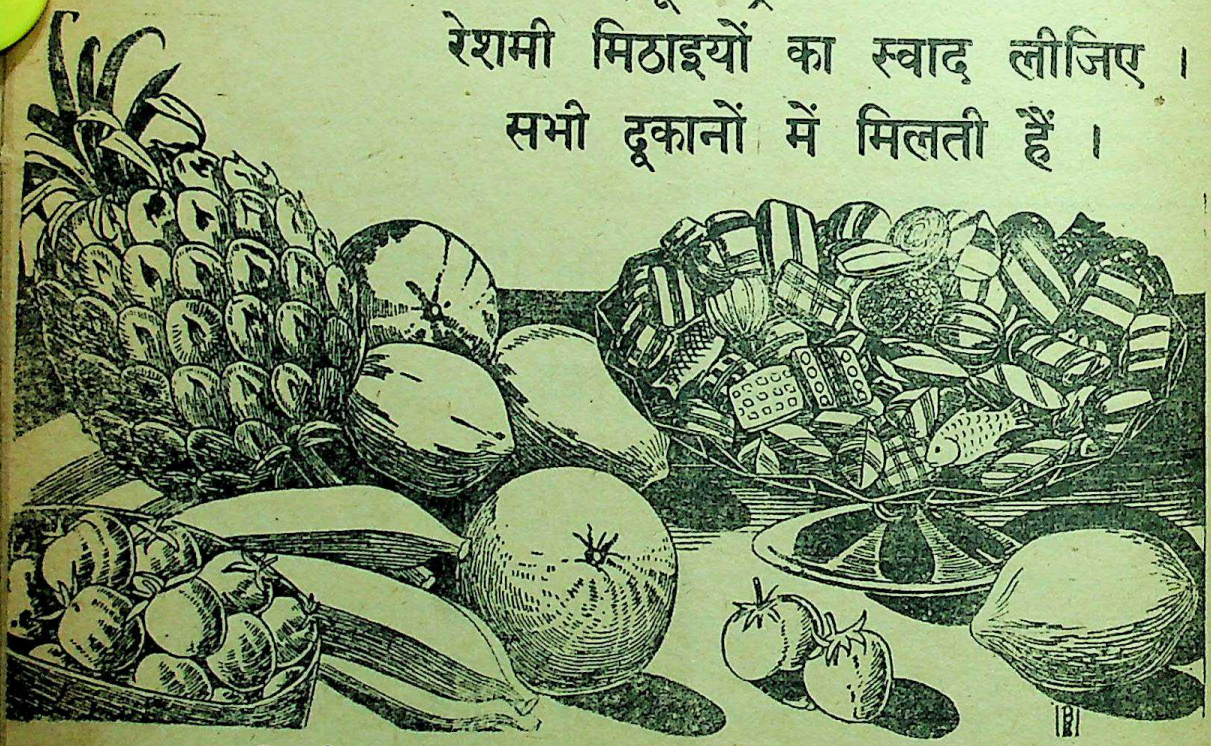

निर्माता—इण्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस,
इंडियन प्रेस, बिल्डिंग,
इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक—देवीदत्त शुक्ल : उमेशचन्द्र मिश्र

जून १९४५ ज्येष्ठ २००२; भाग ४६, खण्ड १ संख्या ६, पूर्ण संख्या ५४६

१९४५-४६ का बजट

श्रीयुत अवनीन्द्रकुमार विद्यालङ्कार

अर्थसदस्य सर जेरमी रेजमैन का छठा और विदाई का ट कल्पनाशून्य और भावनारहित है। यह बजट भी परा के अनुसार पुरानी लीक पर चलते हुए बनाया गया है। -काल में राजस्व और राज्य का जनता के योग-क्षेम और ल के प्रति उत्तरदायित्व के सम्बन्ध में विचारों में जो परिवर्तन ा है, उन भावनाओं का इस बजट में दर्शन नहीं होता। ट में नूतन दृष्टि, नवीन सङ्कल्प, नवीन साहस और व्यापक य हित का अभाव है।

अभाव

राष्ट्रीय राजस्व में सम्पूर्ण राष्ट्र का अस्तित्व निहित है, जो कि ता के वास्तविक सामाजिक और आर्थिक जीवन में परिलक्षित ा है। राज्य का धर्म और जनता के सुख-दुःख के प्रति की समुचित चिन्ता और उसकी रक्षा-भावना बजट के र्गत है। इस कारण बजट सन्तुलित है या नहीं, इसका न महत्त्व नहीं रहा है और बजट में घाटा देखकर चिन्ता और नहीं प्रकट किया जाता है। बजट में घाटा और बचत तोगत्वा क्या हैं? यही न कि करों की आय जब ख़र्च से जाती है तब बचत होती है और जब करों से होनेवाली दनी से ख़र्च बढ़ जाता है तब वह घाटा कहलाता है। दोनों शब्दों की ओर ध्यान रखने का समय गुज़र गया है। के पुराने सिद्धान्त बदल गये हैं। (१) आनवार्य आवश्यकताओं को पूरा करने भर तक राज्य का व्यय न्यूनतम रक्खा जाय और (२) राज्य की आय और उसका व्यय प्रति वर्ष सन्तुलित रहें, ये दोनों सिद्धान्त अब पुराने हो गये। अब यह विश्वास नहीं रहा है कि प्राप्त आर्थिक स्रोतों की आर्थिक शक्तियाँ स्वतः प्रभावशाली रूप में योग करेंगी। वैयक्तिक योग की सीमा है यह अब मान लिया गया है। इस अवस्था में राज्य को अब इस बात से भयभीत होने की ज़रूरत नहीं है कि यदि वह उत्पादक स्रोतों का व्यवहार करेगा, तो इससे नागरिक वैयक्तिक दृष्टि से वञ्चित रह जावेंगे। अब यह स्वीकार कर लिया गया है कि जब कभी उत्पादक का वैयक्तिक योग कम है, तो प्राप्त सब श्रम और उत्पादक स्रोतों का पूर्ण उपयोग करने के लिए जनता से करों के रूप में प्राप्त धन से भी अधिक ख़र्च कर दे, जिससे श्रम बेकार न हो और उत्पादक स्रोत बरबाद न हों। ब्रिटिश बेवरिज-योजना का आधार यही है। पर ब्रिटेन के क़दम पर क़दम रखकर चलनेवाली भारत-सरकार के अर्थसदस्य ने इस दूरदृष्टि और इस नवीन दृष्टिकोण का इस बजट को बनाते हुए उपयोग नहीं किया है।

मानव आधार है

सोवियत-प्रणाली के अन्दर एक क्रान्तिकारी क्षण में वैयक्तिक साहस और राजकीय उत्पादन के बीच भेद मिटा दिया गया और राज्य ने सम्पूर्ण राष्ट्रीय अर्थतन्त्र का उत्तरदायित्व अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊपर ले लिया। राज्य ने सामाजिक जन-मङ्गल और सब जनों की पर्याप्त आय हो और उनका जीवन-निर्वाह का उचित और सुन्दर मानदण्ड हो, इसका भार अपने ऊपर लिया। उत्पादन के साधनों के सामाजीकरण किये बग़ैर बेवरिज योजना द्वारा इँग्लैंड में यही प्रयत्न किया जा रहा है। विभागीय बजटों की जगह अब मानवीय बजट बनाये जा रहे हैं। बजट बनाने का आधार जन-शक्ति है। क्योंकि मानव को छोड़कर और किसी को आधार बनाने और उसमें मानव को किसी तरह ठीक बैठाने की चेष्टा करने से सामूहिक बेकारी या सामूहिक थकान का ख़तरा है। इसलिए बजट की कार्यक्षमता का माप अब यह है कि वह नागरिकों की बेकारी से रक्षा करे और उनको सामाजिक मङ्गल की गारंटी दे। क्या भारत-सरकार का बजट इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर बनाया गया है? अर्थ-सदस्य के सामने एक उद्देश्य है, ब्रिटेन को विजयी बनाने और खोये हुए ब्रिटिश साम्राज्य को प्राप्त करने के लिए भारतीय स्रोतों का अधिकतम उपयोग जिस तरह हो सके वह उपाय किया जाय और भारतीय राजस्व का सञ्चालन इस ढङ्ग से किया जाय जिससे ब्रिटेन का युद्ध-भार यथासम्भव अधिक से अधिक कम हो सके।

कोई लाभ नहीं

इस विश्व-युद्ध से क्या भारत को कोई लाभ हुआ है? राज्य-परिषद् में फ़ाइनांस सेक्रेटरी सर क्रिल जोन्स ने इस बात का जवाब दिया है। आपका कहना है कि भारत को इस लड़ाई से लाभ हुआ है। भारत का विदेशी क़र्ज़ चुक गया और ब्रिटेन पर भारत का एक अरब पौंड क़र्ज़ हो गया। भारतीय उद्योगों की प्रगति हुई है। भारतीय पूँजी बढ़ी है। बहुत-से नये हवाई क्षेत्र बने हैं, और बहुत से नये मिस्त्री (टेक्नेशियन) तैयार हुए हैं। भारत के बीस लाख सैनिकों ने बहुत दूर की यात्रा की है। किसान समृद्ध हुए हैं। सर क्रिल जोन्स भारतीयों को कितना मूर्ख और छोटा बच्चा समझते हैं, उनकी इन बातों से स्पष्ट है। प्रश्न यह है कि जिस देश के एक नागरिक की औसत आमदनी ६५) रुपया वार्षिक है, उस देश को अपने को भूखा और नङ्गा रखकर छः सालों में सेना पर २०२६·८३ करोड़ रुपया ख़र्च करने पर मित्रराष्ट्रों की तुलना में क्या लाभ हुआ? निस्सन्देह युद्ध में प्रचुर व्यय अनिवार्य है। पर प्रश्न यह है कि क्या २०। अरब रुपया ख़र्च की किसी दूसरे रूप में भरपाई हुई? ब्रिटेन और संयुक्त राष्ट्र में उत्पादन बढ़ा है, उनकी उत्पादन-क्षमता भी बढ़ी है। औद्योगिक टेकनीक उन्नत हुआ है। वैज्ञानिक शोधों में अभूतपूर्व उन्नति हुई है। राष्ट्रीय साहस और नेतृत्व को प्रोत्साहन मिला है और इससे वे युद्धोत्तर-कालिक विश्व में विश्व-व्यापी आर्थिक अवसरों का प्रभावोत्पादक लाभ उठाने के योग्य हो गये हैं। वहाँ अभी से लाखों की संख्या में मोटरकारें बनाने की योजना हो रही है, सर्विसों और तार, फोन, यातायात पर प्रभुत्व स्थापित करने में प्रवृत्त हैं। भारत में दूसरी ओर युद्ध का लाभ से आर्थिक तन्त्र को स्थापित और सङ्गठित करने को नहीं किया गया।

अराष्ट्रीय दृष्टि से

सर जेरमी रेजमैन का बजट पुराने सिद्धान्तों के राष्ट्रीय दृष्टि से और मुख्यतः भारत का हित ध्यान नहीं बनाया गया है, अपितु ब्रिटेन का हित ध्यान बनाया गया है। केन्द्रीय धारासभाओं में अ इस कारण से प्रशंसा की गई है कि उन्होंने भारतीय आर्थिक तन्त्र नैया का सञ्चालन सुचारु रूप से किया श्री श्रीप्रकाश और अन्य सज्जन भूल गये कि उसके को बङ्गाल के अकाल जैसे अकालों की क़ीमत चुका श्री मनु सूबेदार का कथन ही सच है कि बजट ब्रिटेन चिन्तना का ध्यान रखकर बनाया गया है और यह गु का बजट है। इस बात की सचाई परखने के लिए बीहड़ जङ्गल को पार करना आवश्यक है।

(करोड़ रुपयों में)

वर्ष	आनुमानिक आय	आनुमानिक व्यय	आनु
	रु०	रु०	
१९४४-४५ (संशोधित)	३५६·८८	५१२·६५	१५
१९४५-४६ (बजट)	३१३·७४	५१७·६३	१६

सैनिक व्यय

	आयगत	पूँजीगत
	रु०	रु०
१९४४-४५ (संशोधित)	३९७·२३	५९·४१
१९४५-४६ (बजट)	३९४·२३	१७·७६

सैनिक व्यय बढ़ जाने के कारण १९४३-४४ १८९·९७ करोड़ रु० हुआ। तीन वर्षों के अन्दर ५००·०८ करोड़ रु० हुआ जो कि भारत की आमदनी के बराबर है।—पर ये आँकड़े इस बात को असमर्थ हैं कि भारत पर लड़ाई के कारण कितना बढ़ा गया है। इसके लिए यह तालिका देखनी चाहिए :—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रति वर्ष भारत पर बढ़ता बोझ

(करोड़ रुपयों में)

	१९३१-३९	१९३९-४०	१९४०-४१	१९४१-४२	१९४२-४३	१९४३-४४ संशोधित	१९४४-४५ संशोधित	१९४५-४६ बजट
य	८४·५२	९४·८८	१०७·६५	१३४·५७	१७६·८८	२५४·५०	३५६·८८	३५३·७४
य	८५·१५	८७·१०	११४·१८	१४७·२६	२८९·०५	३४६·९३	५१२·६५	५१७·६३
) मुल्की	३८·९७	३६·८४	४०·५७	४३·३३	७४·४३	८४·२९	११५·४२	१२३·१०
) सैनिक	४६·१८	५०·२६	७३·६१	१०३·९३	२१४·६२	२६१·६४	३९७·२३	३१४·२३
यगत घाटा	–०·६१	–७·७	–६·५३	–१२·६९	–११२·१७	–१८९·९७	–१५५·७७	–१६३·८९
जीगत सैनिक व्यय	—	—	—	—	५२·५०	३८·३८	५९·४१	१७·७६
द्ध-व्यय जो ब्रिटेन से वसूल होना शेष है	—	—	—	१९४·००	३२५·४८	३९२·७१	४४२·०२	४८९
ल सरकारी सैनिक व्यय	४६·१८	—	—	२९७·९३	५१२·६०	६९३·६५	७८९·६	९०१

पर यह चित्र अधूरा है। इस युद्ध-व्यय की इस विशाल राशि को किस तरह पूरा किया गया है, और जनता की जेबों से ा और किस रूप में रुपया लिया गया है, यह जाने बग़ैर यह न मालूम होगा लड़ाई का भारतीय जनता पर कितना भारी पड़ा है। निम्न तालिका इसका कुछ आभास देने में सहायक होगी :—

(करोड़ रुपयों में)

	१९३८-३९	१९३९-४०	१९४०-४१	१९४१-४२	१९४२-४३	१९४३-४४	१९४४-४५	१९४५-४६
ों की कुल आय	७३·८४	८१·८५	७९·६६	१०३·२६	१३४·४७	१०९·१६	३५६·८८	३५३·७४
य पर कुल कर	१७·२८	१९·३७	२५·९३	४४·०६	८५·७६	१३८·००	१८२·५०	१९०·००
नुपात २ की १ से	२३	२४	३३	४३	६४	६९	७०	७२
बे की आमदनी से मात भाग	१·३७	८·८६	१२·७६	१०·१७	२०·१३	३२·२७	३१·३७	३२
ीय ऋण	१३०५·७३	—	—	—	—	१५५५·२६	१८४८·४७	२२०६·५८
(क) रुपये	७०९·९६	७२७·९९	८६१·१७	९४१·००	१२०८·४५	१३३४·६९	१७८१·३२	२१४२·९८
(ख) स्टर्लिंग	४६९·१०	४४२·४९	३४४·९३	२१०·७०	५७·४१	९१·१५	६७·१५	६३·६०

जहाँ वर्तमान पीढ़ी पर अब तक २०। अरब रु० से अधिक बोझ डाला जा चुका है, वहाँ अगली पीढ़ी पर २२ अरब रु० अधिक का बोझ लाद दिया गया है। प्रश्न यह है कि ४२। अरब रुपया बोझ सहकर भारत ने क्या पाया। बजट पर विचार करते हुए यह भी स्मरण रखना चाहिए कि कुल बजट के ८२ प्रतिशत पर असेम्बली को मत देने का अधिकार नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सैनिक व्यय

उपर्युक्त तालिकाओं का विश्लेषण अत्यन्त मनोरञ्जक सिद्ध होगा। छः वर्षों के अन्दर सैनिक व्यय हुआ या अनुमान किया गया १००० करोड रुपया जिसमें से चालू साल का ४५६ करोड़ रु० से ज्यादा है। युद्ध-पूर्व की अपेक्षा यह नौगुना अधिक है। पर १९४३-४४ के आँकड़े कुछ सन्दिग्ध हैं। फ़रवरी १९४४ में संशोधित आँकड़े २६२ करोड रुपया थे, पर वस्तुतः सैनिक व्यय हुआ ३५८ करोड रुपया। सचमुच यह आश्चर्यजनक है कि एक मास में १०० करोड का व्यय बढ़ गया और अर्थ-सदस्य इसका अनुमान तक न कर सके। इन छः वर्षों के सैनिक व्यय पर दृष्टि डालने से स्पष्ट हो जाता है कि प्रेसीडेंट रूजवेल्ट के इस सिद्धान्त की, कि हरेक राष्ट्र अपनी योग्यता और क्षमता के अनुसार सैनिक व्यय उठावे, सर्वथा उपेक्षा की गई है। निम्न तालिका से यह स्पष्ट हो जायगा :—

	करोड़ रुपया
१९३९-४०	५०·४९
१९४०-४१	७६·६६
१९४१-४२	१६०·१६
१९४२-४३	३०१·६५
१९४३-४४	४५१·९९
१९४४-४५	५१९·७८
१९४५-४६	४६६·९४
(आनुमानिक बजट)	

भारत मगर अपना ही सैनिक व्यय केवल नहीं उठा रहा है। ब्रिटेन को भारत में जो सैनिक व्यय उठाना चाहिए, वह भी इस समय भारत उठा रहा है, ब्रिटेन के हिस्से का कितना व्यय भारत उठा रहा है, यह निम्न तालिका से ज्ञात होगा :—

	कुल सैनिक व्यय (करोड रुपयों में)	ब्रिटिश भाग (करोड़ रुपयों में)
१९४३-४४	७७४	३७८
१९४४-४५	८९६	४३९
१९४५-४६	९०१	४८९

इससे स्पष्ट है कि एंग्लो-भारत आर्थिक पैक्ट पर अमल इस तरह हो रहा है, जिससे ब्रिटेन पर भार कम से कम पड़े और भारत पर अधिक पड़े। सैनिक व्यय सहसा बढ़ जाने का कारण जापान का भारत पर आक्रमण और पैट्रोल और एवीयेशन स्पिरिट का भारत में वितरण करने का भार भारत-सरकार पर आ जाना है। जापानी बर्मा की सीमा पार करके भारत में आ गये इसके लिए क्या भारत ज़िम्मेदार है? मित्र-सेना अपनी कमज़ोरी के कारण भारत की सीमा पर खड़ी रही और उसने उसको पार करके बर्मा में प्रवेश नहीं किया, या प्रवेश किया तो उसको खदेड़ने के लिए जापानी सेना भारत की सीमा के अन्दर आ गई, तो इसका दण्ड क्या भारत को दिया जा रहा है? निर्बलता पार पूर्वीय सीमा की कमज़ोरी के लिए भारत ज़िम्मेदार फिर भारत को यह दण्ड क्यों? क्या मित्र-राष्ट्रों को इसमें सहभागी न होना चाहिए? पेट्रोल और स्पिरिट को भारत के विभिन्न हवाई अड्डों पर वितरण दायित्व ब्रिटिश सरकार ने लिया था और इसका खर्च स्वीकार किया था। पर पीछे से ब्रिटिश सरकार ने भारत-सरकार पर डाल दिया और अर्थसदस्य ने विरोध किये इसको स्वीकार कर लिया। क्या यह हित के लिए किया गया है? सबसे आश्चर्य की है कि अर्थसदस्य योरप में कुछ सप्ताहों के अन्दर लड़ होते हुए और बर्मा को विजय होते हुए देख रहे हैं सैनिक व्यय में कोई विशेष कमी नहीं की गई है। सैनिक व्यय में केवल ३ करोड़ की कमी की गई है। ४५ और १९४५-४६ के तुलनात्मक अङ्क देखने से हो जायगा :—

आयगत सैनिक व्यय
(लाख रुपयों में)

	१९४४-४५ (संशोधित)	१९४५
बुनियादी नार्मल बजट	३६,७७	[illegible]
क़ीमतों के बढ़ने का प्रभाव	१६,९२	[illegible]
भारतीय युद्ध-प्रयत्न	३,३४,२२	३,[illegible]
नन-अफ़ेक्टिव व्यय (पेंशन-ग्रेच्युएटी व्यय)	९३२	[illegible]
योग	३९७२३	[illegible]

पूँजीगत सैनिक व्यय में अवश्य दर्शनीय कमी हुई ५९·४१ लाख से घटकर १७·७६ लाख रुपया रह गया यह तो मानना ही पड़ेगा कि भारत का आज का उसकी क्षमता और आमदनी से परे है।

पारस्परिक सहायता

युद्ध के प्रारम्भ से भारत का पारस्परिक सहायता व्यय १९४४-४५ के अन्त तक १२४ करोड़ हुआ। का अन्दाज़ ७०·३४ करोड़ रुपया है। भारत संयुक्त राष्ट्र को जो माल देता है, वह कंट्रोल रेट पर देता है। जो उससे पाता है, वह भी कंट्रोल रेट पर पाता है सदस्य ने कभी इसका स्पष्ट नहीं किया। अ भारतीय रेलवे और अन्य साधनों का उपयोग करती है व्यय आनुमानिक लगाया जाता है और ब्रिटेन में इसका हिसाब रक्खा जाता है, यहाँ नहीं रक्खा जाता अमरीका पर डाला जानेवाला व्यय कम करके डाला भारतीय पारस्परिक सहायता का क्षेत्र और दायरा बढ़ता जाता है। १९४४-४५ के अन्त तक भारत में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

र सेवाओं का मूल्य ५.१५ कोटि रुपया है और उधार व पट्टा सिवा भारत ने जो अपने ख़र्च से दिया उसका मूल्य १५० टि रुपया लगाया गया है। भारत में उधार व पट्टा के अन्दर या माल केवल भारतीय रक्षा में नहीं लगता, पर ब्रिटिश ौ और चीन भी उसको बरतता है। इसलिए उधार व पट्टा अन्दर १५० कोटि रुपया का जो माल भारत में आया उसमें भारत का दायित्व कितना है, यह अर्थसदस्य ने स्पष्ट ी किया है।

काग़ज़ी रियायत

अर्थसदस्य अनुभव करने लगे हैं कि उद्योगों पर और भार लादकर उनको अब 'रिलीफ़' पहुँचाना चाहिए। इसलिए नई ारतों के बनाने, नये-नये प्लांट और मैशीनरी की घिसाई के ए भत्ता दिया गया है। उद्योग को मज़बूत बनाने के लिए की ै वैज्ञानिक खोजों को व विज्ञानशाला के अन्वेषण के उत्पादन परिवर्तन और उत्पादन के पूर्ण विकास को कर मुक्त रक्खा ा है। पर ये दी गई रियायतें पर्याप्त नहीं हैं। प्लांट और ीनरी पर २० प्रतिशत और ३१ मार्च १९४५ के बाद बनी ारत पर १० प्रतिशत घिसाई भत्ता दिया गया है। यह द्धान्त स्वीकार किया गया है कि खोज पर किया गया व्यय र अन्वेषण संस्थाओं को दी गई सहायता चालू ख़र्च है। पर -मुक्त चीज़ों में इन तीनों का भी समावेश करना चाहिए था—) युद्ध से शान्ति में पुनः परिवर्तन व्यय, (२) बाद में नेवाली मरम्मत और मैशीनरी को नया करने का व्यय और ३) उद्योगों द्वारा इस समय रक्खे स्टाक का बढ़ा मूल्य गा। अतः इसपर भी छूट मिलनी चाहिए। ब्रिटेन का नुसरण करने की कोशिश की गई है, पर पूरी तरह नहीं की है। इस देश में नवीन प्लांट और मैशीनरी आयात करने नई इमारत खड़ी करने की प्राप्य सुविधायें यदि कोई हैं तो अत्यन्त सीमित हैं। विभिन्न आर्डिनेन्सों और कंट्रोलों के रण डालर-स्रोत अलभ्य है और इस कारण व्यवसायी लोग पनी मैशीनरी को पुनः साज-सज्जा से सुसज्जित नहीं कर सकते। कारण अर्थसदस्य द्वारा दी गई रियायतें काग़ज़ी हैं। इसी ह औद्योगिक वैज्ञानिक खोजों को दी गई कर-मुक्तता की दी रियायत भी अवास्तविक है। ग्रांट एक ही अवस्था में दी सकती है, यदि वे संस्थायें उसका उपयोग कर सकती हैं। ० हिल ने अपनी रिपोर्ट में इस बात पर ज़ोर दिया है कि इस ा में ऐसी संस्थायें बहुत कम हैं। रूस ने वैज्ञानिक शोधों पर ९३४ में ३० करोड़ से ५० करोड़ कनाडियन डालर ख़र्च किये, युक्त राष्ट्र अमरीका (१९३५) ने ३० करोड़ डालर, ग्रेट-टेन (१९३४) ने ३ करोड़ डालर और कनाडा (१९३८) २४ से ३३ लाख डालर ख़र्च किये। भारत जैसे पिछड़े देश लिए रूस का स्टैंडर्ड ठीक होगा। यह होते हुए भी कर-ति ऐसी नहीं है कि वैज्ञानिक खोजों के लिए एक उचित रक़म सुरक्षित रक्खी जाय। अर्थसदस्य का यह दावा कठोर व्यंग्य से अधिक नहीं है कि उनकी कर-पद्धति ने उद्योगों की महानिधि रिज़र्व फ़ण्ड को मज़बूत बनाया है, जिससे वे लड़ाई के बाद की ज़रूरत को पूरा कर सकें। भारत में कार्पोरेशन टैक्स ४५ प्रतिशत पड़ता है, जब कि ब्रिटेन में ५०, संयुक्त राष्ट्र में ३० से ४० और कनाडा में ३० प्रतिशत। यह भी स्मरण रखना चाहिए कि कोई विदेशी पूँजी लगानेवाला ब्रिटिश उद्योग पर टोल नहीं लगाता है, जैसा कि वह भारतीय पर लगाता है।

युद्धीय आर्थिक तन्त्र

तेरह देशों का युद्धीय आर्थिक तन्त्र का अध्ययन रसपूर्ण है। सरकारी ख़र्च सब जगह बढ़ा है और वह करों और ऋण से पूरा किया गया है। ब्रिटेन और जर्मनी ने युद्ध-व्यय का अधिकतम भाग करों से पूर्ण किया है। स्वीडन और स्विटज़-लैंण्ड का आधार ज़्यादातर क़र्ज़ रहा है। भारत-सरकार की कर-आय १९३८-३९ और १९४५-४६ (बजट) के बीच ८४.५२ करोड़ रुपया से ३५३.७४ करोड़ रुपया बढ़ा है। इसके मुक़ाबले ख़र्च ८६.१५ करोड़ रुपया से ५१७.६३ करोड़ रुपया बढ़ गया है। ६८ प्रतिशत से अधिक करों से पूरा किया गया है। भारतीय आय का आधार इन्कमटैक्स है जो कि कुल आय का ७० प्रतिशत है। ज़कात की आमदनी भारत में ४५.८८ करोड़ रुपया (१९३९-४०) से घटकर २८ करोड़ रुपया (१९४४-४५) रह गई, अर्थात् ३९ प्रतिशत से कुछ कमी आ गई। १९४५-४६ के लिए ज़कात की आमदनी ५२.८५ करोड़ का अनुमान किया गया है। यह १९३९-४० की अपेक्षा १४.६ प्रतिशत अधिक होगी। इसके मुक़ाबले ब्रिटेन, कनाडा, और संयुक्त राष्ट्र की ज़कात की आमदनी क्रमशः १५०, ८० और ३५ प्रतिशत बढ़ी है और जापान, आस्ट्रेलिया और स्वीडन की क्रमशः ७५.३५ और ५० प्रतिशत घटी है।

ब्रिटेन अपनी जन-शक्ति और अपने स्रोतों का पूर्णरूप से उपयोग करके मित्रों को आवश्यक गोला बारूद का $\frac{७}{१०}$ अपनी फ़ैक्टरियों से मुहैया करने में समर्थ हुआ है, संयुक्त राष्ट्र ने $\frac{२}{१०}$ और साम्राज्य देशों ने $\frac{१}{१०}$ मुहैया किया है। ब्रिटेन की जहाज़-रानी १७५ लाख रु० लड़ाई के बाद होगी, जो युद्ध-पूर्व से कुछ ही कम होगी। ब्रिटेन में हर स्त्री-पुरुष बरोज़गार है और अच्छे पैसे पा रहा है और उसको पहले से अच्छा भोजन मिलता है। भारत में मगर दूसरी तरीक़ा स्वीकार किया गया है। यहाँ अर्थसदस्य की नीति है—माँगो, क़र्ज़ लो और कर लगाओ। आर्थिक समझौते का फल भारत को यह मिला है कि बर्मा-विजय का भार भारत पर डाला गया है, भारत पर हुए जापानी आक्रमण को हटाने का व्यय 'भारतीय युद्ध-प्रयत्न' माना गया, क्योंकि कुछ अधिकारियों ने इसको प्रमाणित कर दिया है। विशाल सैनिक व्यय की एक विचित्र बात यह है कि कनाडा और आस्ट्रेलिया के असमान रक्षा के आधुनिक साधनों या हथियारों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृष्टि से भारत की रक्षात्मक शक्ति लड़ाई के बाद कुछ न रहेगी। नौ-सेना और हवाई सेना ज़रूर कुछ बनी रहेगी, पर हमारी आवश्यकता के मुक़ाबले वह नगण्य है।

ब्रिटेन से सर्वथा उलटी नीति भारत में ग्रहण की गई है। ब्रिटेन ने पहले अपनी जनता की अन्न और आवश्यक चीज़ों की ज़रूरत का अन्दाज़ा लगाया और उसको पूरा किया। उसने यह भी प्रयत्न किया कि लड़ाई में उसका भाग उसकी जनता के श्रम के उत्पादन के रूप में हो। उसने अपने नर-नारियों को बेकार नहीं रक्खा, और न उसने अपने बहुमूल्य नैसर्गिक स्रोतों का निकम्मी शर्तों पर निर्यात किया और न उनके बदले तैयार माल लिया। जब उसकी अपनी आवश्यकता से उत्पादन ज़्यादा हुआ तब उसने दूसरों की सहायता की। पर भारत में अर्थसदस्य के कथनानुसार 'मित्रदेशों के युद्ध-प्रयत्नों के लिए आवश्यक स्रोतों को ढूँढ़ने' का गवर्नमेंट ने असाधारण उत्तर-दायित्व लिया। इसका फल यह हुआ कि भारत ने अन्य देशों से बेकारी और मुद्रास्फीति का फुलाव आयत्त किया।

मुद्रा चलन की वृद्धि की राष्ट्रसङ्घ की रिपोर्ट से मालूम होता है कि अक्टूबर १९४४ में संयुक्त राष्ट्र में २४३८७० लाख डालर, कनाडा में १०१२० लाख डालर और ब्रिटेन में ११६४० लाख पौण्ड मुद्रा चलन में थी जो कि अक्टूबर १९४३ की अपेक्षा क्रमशः २७, २१ और १६ प्रतिशत ज़्यादा थी। भारत में इस अवधि के अन्दर मुद्रा में वृद्धि ७८२ करोड़ से ९५६ करोड़ रुपया अर्थात् २२ प्रतिशत हुई। यदि सम्पूर्ण युद्धकाल की तुलना की जाय तो मालूम होगा कि भारत में जितनी मुद्रा-वृद्धि हुई है, उतनी योरप के किसी देश में नहीं हुई है।

क़र्ज़

युद्ध-व्यय को पूरा करने के लिए क़र्ज़ लिया गया है। १९४३-४४ में तुर्की, फ्रांस, डेन्मार्क, जर्मनी और फ़िनलैंड में लिये गये क़र्ज़ का अनुमान कुल राष्ट्रीय ऋण का क्रमशः ७६, ७०, ५९, ५७ और ५४ प्रतिशत रहा। ब्रिटेन, संयुक्त राष्ट्र और स्विटज़रलैंड में यह २७, २५ और २७ प्रतिशत रहा। दक्षिण अफ़्रीका, कनाडा, आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैण्ड में यह ० से १५ प्रति शत रहा। भारत सरकार का सब्याज क़र्ज़ ३१ मार्च १९३९ से ३१ मार्च १९४६ के बीच ९७४ करोड़ रुपया होगा और इसी अवधि के अन्दर गवर्नमेंट की नक़दी रोकड़ और उसकी लगी पूँजी ५१७ करोड़ हो जायगी। इसलिए गवर्मेंट पर क़र्ज़ का भार ४५७ करोड़ रुपया ही होगा, जो कि १९४५-४६ की प्रत्याशित आमदनी का डेढ़ गुना है।

राष्ट्रीय ऋण पर विशेष रूप से विचार करने की ज़रूरत है। फ़रवरी १९४४ से ३१ जनवरी १९४५ तक गवर्मेंट ने सार्वजनिक ऋणों से २८६ करोड़ रुपया पाया। जनवरी के अन्त तक विभिन्न प्रकार के ऋणों से ८३३ करोड़ रुपया लिया। यह आन्तरिक क़र्ज़ है, यह कहने की ज़रूरत नहीं है। १९३९ में भारत सरकार का सब्याज क़र्ज़ १२०५·७६ करोड़ था। १९४५-४६ में वह २२०६·५० करोड़ रुपया हो गया। २२०० करोड़ रुपया इसमें उत्पादक ऋण है। गवर्नमेंट आन्तरिक ऋण पर ३ प्रतिशत सूद देना पड़ता है। गवर्नमेंट को ब्रिटेन का युद्ध व्यय पूरा करने के लिए ऋण लेना है। भारत का स्टर्लिंग पावना १४० करोड़ पौंड हो गया है। इस पर भारत को ब्याज १ प्रतिशत मिलता है। इस प्रकार भारत ने ब्रिटेन को युद्ध में सहायता देने के बदले पौंड १५०००००० पौंड नुक़सान सहा है।

राज्य परिषद् के सदस्य मि० हसन इमाम का कथन है कि १९३८-३९ में छोटी बचत १४१ करोड़ थी और १९४४ में १५७ करोड़ रुपया। यद्यपि गवर्नमेंट की ओर बचत उत्सव मनाये जाते हैं और गवर्नमेंट की सारी मैशीनरी इस आन्दोलन में लगी हुई है। इन दोनों में अन्तर ११ करोड़ रुपया का है। युद्धकाल में जनता की कितनी आमदनी है, यह उसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। मि० इमाम का यह मत है कि भारत का क़र्ज़ चुकाने में, जो कि उसने ब्रिटेन को दिया, भारत को १२ करोड़ रुपया का नुक़सान रहा।

स्टर्लिंग पावना

३१ मार्च १९४५ को स्टर्लिंग पावना १०३ करोड़ हो गया है। ब्रिटेन इसको कब और किस रूप में चुकाये, इसका निश्चय करने के लिए भारत-सरकार का एक प्रतिनिधि मण्डल लन्दन जायगा। पर वह कब जायगा, यह अभी तक निश्चय नहीं हुआ है। स्टर्लिंग पावने को चुकाने की समस्या बड़े देश विशेष रूप से चिन्तित है। ये किस तरह और कब चुकाये गये और भारत ने इनका क्या उपयोग किया यह निम्न तालिका से ज्ञात होगा :—

(करोड़ रुपया)

१—अगस्त १९३९ में रिज़र्व बैंक के पास स्टर्लिंग पूँजी

२—रिज़र्व बैंक द्वारा ख़रीदा गया स्टर्लिंग—

सितम्बर १९३९ – जनवरी १९४०	—
फ़रवरी १९४० — जनवरी ४१	—
फ़रवरी १९४१ — जनवरी ४२	—
फ़रवरी १९४२ – जनवरी ४३	—
फ़रवरी १९४३ — जनवरी ४४	—
फ़रवरी १९४४ — जनवरी ४५	—

३—ब्रिटिश सरकार द्वारा स्टर्लिंग में अनुमान—

योग

(करोड़ रुपया)

कैसे ख़र्च हुआ :—

१—प्रत्यावर्त्तन में लगी स्टर्लिंग राशि —

२—अन्य स्टर्लिंग बचत

योग

३१ जनवरी १९४५ को रिज़र्व बैंक के पास शेष जमा स्टर्लिंग—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थ-सदस्य ने स्टर्लिंग पावना के बारे में स्पष्ट रूप से कुछ ही बताया है। केवल इतना आश्वासन दिया है कि भविष्य में र्लिंग जमा होने का रेट कम हो जायगा, क्योंकि योरप की लड़ाई द हो जाने से भारतीय स्रोतों पर पड़नेवाला भार अब न पड़ेगा र अन्य स्रोतों से सप्लाई की जायगी, जो कि अब तक भारत से प्लाई होती थी। दूसरे भारत में आयात माल अधिक मात्रा में यगा। पर इस आश्वासन से कोई अर्थ सिद्ध नहीं होगा। रत की औद्योगिक योजना का आधार स्टर्लिंग पावना है। पर टेन का इरादा युद्ध समाप्त होते ही स्टर्लिंग पावना चुकाने का ा है। लड़ाई समाप्त होने के दस साल बाद भी सम्भवतः टेन स्टर्लिंग पावना को न चुकाये। प्रो० हिल कह रहे हैं भारत को उपभोक्ताओं की वस्तुओं की आवश्यकता नहीं है। को पूँजी, वस्तु या मैशीनरी व प्लांट की ज़रूरत है। पर ब्रिटेन भारत को उसी हालत में देगा जब उसको भारत के ोगों में कम से कम आधा भाग दिया जायगा। वे कहते हैं कि न उदारतावश या परोपकार-भाव से भारत के औद्योगीकरण सहायता न देगा। इसका स्पष्ट अर्थ है कि ब्रिटेन स्टर्लिंग ना को उसी हालत में चुकावेगा जब उसके भारतीय औद्योगिक ास में उसको आधा भाग दिया जायगा, अन्यथा औद्योगिक ास की योजना को तारपीडो करने से न चूकेगा। इससे स्पष्ट कि भारत महाजन होकर भी क़र्ज़दार के इशारे और उसके नुसार चलने को बाध्य होगा। यह स्टर्लिंग पावना भारत उद्धार और मुक्ति का कारण न होकर उसके बन्धन का कारण ा, जैसे कि तोते की वाणी उसके बन्धन का कारण होती है।

स्वर्ण-बिक्री

ब्रिटेन और अमरीका ने अपना युद्ध-ख़र्च पूरा करने के लिए त में विश्व बाज़ार दर से अधिक मँहगे दाम पर सोना बेचा दक्षिण अफ्रीका की यूनियन पार्लमेंट में मि० हाफ़मेयर ीकार किया है कि ब्रिटेन ने दक्षिण अफ्रीका का सारा सोना दकर भारत में बेचा और बहुत मुनाफ़ा उठाया। रिज़र्व ने भारत में ४·३९०००० औंस सोना १९४४ में बेचा । यदि ७५ रुपया प्रति तोला औसत बेचा गया तो करोड़ रुपया का सोना बेचा गया और कृत्रिम प्रिमियम देकर त को ४४ करोड़ रुपया नुक़सान उठाना पड़ा। ब्रिटेन ने प्रकार भारत को नुक़सान पहुँचाकर युद्ध-व्यय चुकाया है।

डालर फ़राड

डालर भण्डार का सब हिसाब पर्दे के पीछे रक्खा जाता है। सदस्य भारत पर ब्रिटेन की यह कृपा मानते हैं कि १९४४ ालर भण्डार से २ कोटि पौं० और इतनी ही राशि १९४५ ारत को दी गई है। पर यह चालू काम के लिए नहीं दी है। लड़ाई समाप्त होने के बाद ही इसका उपयोग किया सकेगा। भारत पर ब्रिटेन की कृपा का अनुमान तो इसी बात से किया जा सकता है कि मिस्र की अपेक्षा डालर-भण्डार में भारत का ६ गुना डालर जमा है, पर भारत को तो युद्धोत्तर-काल के लिए २ कोटि पौंड के डालर दिये गये हैं जब कि मिस्र का डालर फ़ण्ड में २० कोटि पौंड के डालर होने पर भी उसको १९४५ के वास्ते ४ कोटि पौं० के डालर दिये गये हैं। अमरीका के कामर्स डिपार्टमेंट ने हिसाब लगाकर बताया है कि ब्रिटेन पर जिन देशों का या जितना स्टर्लिंग पावना है, उसका २५ प्रतिशत भाग उन देशों द्वारा अर्जित डालर है, जो कि साम्राज्य डालर भण्डार (ऐम्पायर डालर पूल) में उनका जमा किया गया है और इसके बदले उनके नाम स्टर्लिंग जमा कर दिये गये। भारतीय व्यापार मण्डल ने इस डालर भण्डार का अन्त कर देने की माँग की है। हम समझते हैं कि रुपये का सम्बन्ध स्टर्लिंगव से न जोड़कर डालर से जोड़ना अधिक उचित होगा और भारत के कनाडा के समान डालर-क्षेत्र में आ जाने से वह ब्रिटेन की आर्थिक अधीनता से भी निकल सकेगा।

एक नया ख़तरा

सर जेरमी रेजमैन का कहना है कि यह भ्रमपूर्ण धारणा है कि लड़ाई बन्द हो जाने पर भी ऊँची क़ीमतों का बना रहना लाभ-जनक है। दूसरी बात सर जेरमी ने कही है कि उद्योगों पर राज्य का स्वामित्व होना चाहिए या व्यक्ति का, इस पर उद्योगों के समाजीकरण की दृष्टि से नहीं अपितु सरकार की आमदनी बढ़ाने के विचार से विचार करना चाहिए। अर्थसदस्य का विचार है कि भविष्य में आय का स्रोत बढ़ाने और राष्ट्रीय विकास की दृष्टि से भविष्य में राष्ट्र उद्योगों के राष्ट्रीयकरण को उचित समझें। यदि भारत में राष्ट्रीय सरकार होती, और भारत का अर्थसदस्य कोई भारतीय होता, तो भारत इस घोषणा का स्वागत करता। पर भारत पराधीन है। ब्रिटेन भारत के उद्योगीकरण में आधा भाग माँग रहा है, इसलिए भारत का सशंक होना स्वाभाविक है। भारत को भय है कि व्यापारिक या विनिमय के जादू द्वारा भारत की सारी पूँजी हवा में उड़ जायगी. युद्धोत्तर काल में दामों का उतरना और कुछ उद्योगों पर राज्य का स्वामित्व स्थापित करने की बात निरुद्देश्य नहीं कही गई है। ब्रिटेन का हित सुरक्षित रखना है और युद्धकाल में हुई ब्रिटिश हानि को पूरा करना है। ब्रिटेन की समुद्र पार ३१४८० लाख पौंड लगी पूँजी उसके हाथ से निकल चुकी है। १९३८ में ५५० लाख पौं० था। जून १९४४ तक युद्ध-प्रयत्नों में ब्रिटेन ने १०६५० पौं० लगी पूँजी बेच दी थी और ब्रिटेन पर २३० कोटि पौं० देय हो गया था। इसके बाद से ब्रिटेन की स्थिति और ख़राब हुई होगी। भारत के स्टर्लिंग ऋण का प्रत्यावर्तन और भारत का १०३ कोटि पौं० स्टर्लिंग पावना इसी क्रिया-विधि का भाग है। यही कारण है कि ब्रिटेन राजनीतिक प्रभुत्व का अन्त करने को इच्छुक नहीं है। वह पुरानी औपनिवेशिक नीति और चालू ढंग या भारत के पूँजीपतियों के सहयोग से या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महत्त्वाकांक्षी अमरीकी साम्राज्यवाद के सहयोग से अपने उद्योग और व्यापार को पुरानी अवस्था में लाना चाहता है। इसलिए सर जेरमी का यह कथन कि युद्धोत्तर-काल में क़ीमतें उतरेंगी और राज्य को कुछ उद्योगों पर अपनी आय बढ़ाने के लिए स्थायित्व स्थापित करना पड़ेगा, रहस्यपूर्ण है और ख़तरे से ख़ाली नहीं है।

कुछ ख़र्च

मुल्की ख़र्चों की कुछ मदें ध्यान देने योग्य हैं। कोयले का स्टाक रिज़र्व रखने के लिए १२५ लाख रु०, बिजली-उत्पादक प्लांट ख़रीदने के लिए ७१ लाख रु०, रबड़ के लिए ३३८ लाख रु०, मैशीन टूलों के लिए १६४ लाख रु०, बैटलवार्क के वास्ते ११॥ लाख रु०, अन्नों के लिए ७६ करोड़ ७५ लाख रु०, नम्बरी कपड़े के लिए ८८५ लाख रु०, ट्रान्सपोर्ट वीहीकल्स (मोटरगाड़ियां) की ख़रीद और निर्माण के लिए १३ कोटि ७८ लाख रु०, सिनकोना की खेती के लिए २०६०००० रु०, आवश्यक चीज़ों की सप्लाई के लिए ४० लाख रु०, सप्लाई डिपार्टमेंट द्वारा रिज़र्व स्टोर की ख़रीद के लिए ५६८ लाख रु०, मेडिकल स्टोर के लिए १३४ लाख, तटवर्त्ती जहाज़ों के लिए १२ लाख, खाद की ख़रीद के वास्ते ३ करोड़ रु०, क्यूनीन के स्थानापन्न के लिए ६८ लाख, कोयले के उत्पादन और सप्लाई के लिए २३३ लाख रु०, कोलरीस्टोर्स की ख़रीद के लिए ८० लाख, ऊनी वस्त्र के लिए २ करोड़ रु०, जूट ख़रीद योजना के लिए १ करोड़ रु० और उपभोक्ताओं की चीज़ों के लिए १ करोड़ रु० बजट में रक्खा गया है।

इस लेन-देन में भारत-सरकार २७½ लाख का घाटे का अन्दाज़ करती है। नागा पहाड़ियों की जातियों को बसाने के लिए ५५ लाख रु० और युद्ध के विविध ख़र्चे के लिए २१५७-५३००० रु०। इस पर भी असेम्बली का मत नहीं लिया गया। इसमें १३०३५००० रु० प्रेस आफ़िसर के लिए है। युद्ध-प्रचार पर ख़र्च होती है। इसमें से २३ लाख रु० १५६००० रु० श्री एम० एन० राय के द्वारा मज़दूरों ६६ लाख राष्ट्रीय मोर्चा का व्यय इसमें शामिल है। ३६ सूचना विभाग और ए० आई० आर० के नये सहकारी २२७५००० रु० और डाइरेक्टोरेट आफ़ पब्लिक ५२४०००० रु० भी इसके अन्तर्गत है। आग्नेय परि के लिए ६० लाख से ऊपर और मध्यपूर्व और भूमध्यसा ९४½ लाख रु० भी उल्लेख योग्य है। यह सब ख़र्च कारण है, पर मुल्की व्यय में डाला गया है।

डाक, तार और फोन और एक निश्चित आमदनी आयकर पर सरचार्ज लगाया गया है और आयात तम्बाकू पर ड्यूटी बढ़ाई गई है और इस प्रकार घाटा कम किया गया है। अर्थसदस्य ने यह जानते नया कर लगाना अब सम्भव नहीं है, इस वर्ष भी रु० कर भार बढ़ाना उचित समझा है।

बजट अराष्ट्रीय और निराशाजनक है। औद्योगिक योजना को अमल में लाने का शब्द भी लाना चाहिए, क्योंकि अर्थसदस्य का कहना है कि कालिक योजना है, जिसे युद्धोत्तरकालिक ही रहने इस प्रकार जो लोग आशा करते थे कि भारत के रत राष्ट्रों के उद्योगों का सामना कर सकेंगे, वे भी बजट में एक भी ऐसी चीज़ नहीं है, जो जनता को वाली हो, उद्योगों को बढ़ानेवाली हो, जनता की सुधारनेवाली हो और देश की ग़रीबी दूर करनेवाली अवस्था में यदि भारत इसको अराष्ट्रीय माने और कि ब्रिटेन का युद्ध-व्यय पूरा करने के उद्देश्य से गया है, तो क्या आश्चर्य ?

गीत

श्रीयुत जितेन्द्रकुमार

पूजा सफल हुई कब मेरी ?
वन-वन से मृदु पुष्प-चयन कर,
लाया अंजलियों में भर-भर,
और चढ़ाया पद-पद्मों पर; दृष्टि नहीं पर तुमने फेरी !
पूजा सफल हुई कब मेरी ?
उर ने रंगों से भर-भर नव—
आशा-चित्र बनाया जब-जब,
तब-तब तुमने तत्क्षण ही तूलिका निराशा की है फेरी
पूजा सफल भई कब मेरी ?
क्या आँसू को हास समझ लूँ ?
दुख को ही उल्लास समझ लूँ ?
और प्रात उसको ही जो है गहन अमा की रात अँधेरी
पूजा सफल हुई कब मेरी ?

——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमरीका पत्रकारों के साथ कुछ दिन

श्रीयुत मङ्गलकिशोर पाण्डेय

अभी हाल में अपने विश्व-व्यापी तूफ़ानी दौरे के सिलसिले में रीका के तीन प्रमुख पत्रकार (अर्थात् न्यूयार्क हेराल्ड यून के सहसम्पादक मि० विलवर स० फ़ौरेस्ट, 'अटलांटा' 'कंस्टीट्यूशन' के सम्पादक मि० राल्फ० इ० मैकजिल कोलम्बिया के पत्रकारकला-विद्यालय के प्रधान मि० कार्ल करमैन) दिल्ली आये थे और इन पंक्तियों के लेखक को पत्रकार होने के नाते उनसे मिलने का सुयोग मिला था। लेख का उद्देश्य उनके इस विश्वव्यापी भ्रमण पर कुछ प्रकाश ना है।

जब मैं उन लोगों से मिला तब मुझे ज्ञात हुआ कि वे लन्दन, , कैरो, तेहरान, मास्को तथा चुंकिंग होते हुए दिल्ली आ रहे यद्यपि मुझे उन लोगों के इस विश्वव्यापी दौरे के सम्बन्ध छ बातें ज्ञात थीं तो भी मैंने अपने चेहरे से अनभिज्ञता का प्रकट करते हुए पूछा—"क्या मैं आपके इस भ्रमण के य जानने की धृष्टता कर सकता हूँ?" मि० आकरमैन ने उत्तर दिया—"हम लोगों का उद्देश्य है—केवल दो सीधे-शब्दों में—प्रेस की स्वतंत्रता"?

एक दूसरे स्थानीय पत्रकार ने पूछा—"तो क्या मैं इसका यह लगाऊँ कि आपके देश में अब तक प्रेस की स्वतन्त्रता रही है?"

आकरमैन ने हँसते हुए कहा—"क्या ही अच्छा होता यदि स्वतन्त्रता और देशों में भी होती।"

उस दिन और अधिक बातें नहीं हो सकीं। वे लोग बहुत में थे और भारतीय पत्रकारों से मिलना उनके कार्यक्रम में ा, अन्यथा दिल्ली में वे पूरे तीन दिन सरकारी अधिकारियों बातचीत करने में क्यों व्यय कर देते। शाम को मैं अपने ालय में यों ही अन्यमनस्क भाव से कुछ पत्र-पत्रिकाओं के उलट रहा था। दिल्ली की कोलाहलमयी सड़कें भी धीरे-ान्त हो रही थीं। लेकिन मेरे कानों में आकरमैन के "यदि ऐसी..." गूँज रहे थे। मैंने सोचा, क्या मि० कार्ल मैन का यह कहना सत्य है! यदि मैं थोड़ी देर के लिए त्य मान भी लूँ तो इससे क्या निष्कर्ष निकलेगा! यही अमरीका के सिवा और किसी देश में 'प्रेस की स्वतन्त्रता' की वस्तु नहीं है। पर क्या यह बात सत्य की कसौटी पर उतर सकती है? इसे समझने के लिए वर्तमान काल की एजेन्सियों' तथा उनके परिचालन पर ध्यान देना आवश्यक । इस बात पर ध्यान देना इसलिए आवश्यक है कि प्रेस तन्त्रता पर सारे विश्व की स्वतन्त्रता निर्भर है। यदि ार के आदान-प्रदान की पूरी-पूरी स्वतन्त्रता सारे देशों में य तो बहुत सम्भव है कि संसार के राष्ट्रों में कभी मतभेद न हो। सब एक दूसरे को अच्छी रीति से समझने लगें। गुप्त कूट-नीति का पर्दा फ़ाश हो जाय और विश्व-बन्धुत्व का सम्बन्ध जल्दी से जल्दी विश्व-मानव के बीच में स्थापित हो जाय। तो क्या स्वतन्त्र कहे जानेवाले देशों में भी प्रेस की स्वतन्त्रता अब तक नहीं रही है? यह बात तो कुछ अजीब सी मालूम होती है! यदि भारत जैसे देश के विषय में ही ऐसी बात कही जाय तब तो सब की समझ में आ जाय, लेकिन इँग्लैंड, फ़्रान्स, जर्मनी, इटली, रूस तथा जापान आदि देशों के विषय में यह कहना कि 'वहाँ प्रेस की स्वतन्त्रता नहीं है', यों दुस्साहसपूर्ण कथन मालूम होता है। इसे और भी स्पष्ट करने के लिए हम संसार के प्रमुख संवाद-सूत्रों के इतिहास पर ध्यान दें।

आज तक संसार में निम्नलिखित संवाद-सूत्र संवाद-वितरण करते रहे हैं—रूटर (ग्रेट ब्रिटेन), हवास (फ़्रांस), 'वोल्फ़' (हिटलर के शक्ति में आने से पूर्व), डी० एन० बी० (हिटलरी जर्मनी), स्टेफानी (इटली), तास (रूस), दोमेय (जापान) और ए० पी० और यू० पी० (अमरीका—यू० एस० ए०)।

इन न्यूज़-एजेन्सियों में 'तास एजेन्सी' और 'ए० पी०' तथा 'यू० पी०' (यू० एस० ए०) के सिवा शेष का इतिहास इतना स्वार्थमय, धूर्त्तता तथा कपटपूर्ण रहा है कि इनके नीचता-पूर्ण हथ-कण्डों का हाल पढ़कर लोग दङ्ग हो जाते हैं। ये सारी एजेन्सियाँ अपने-अपने देश के पूँजीपतियों के हाथ की कठपुतली हैं। ये वही संवाद दूसरे देशों से अपने देश में आने देती हैं जो इनके अपने मतलब के होते हैं। अर्थात् दूसरे देशों की सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक तथा धार्म्मिक दशा के विषय में झूठे प्रचार करना, उनके सम्बन्ध में अतिरञ्जित गल्प और कहानियाँ कहते फिरना इनका पेशा रहा है। तब तक विश्व-शान्ति की बात निरी ढोंग रहेगी जब तक कि इन एजेन्सियों के मौलिक सिद्धान्तों में परिवर्तन नहीं होता। गत महायुद्ध से पूर्व जर्मनी का सबसे बड़ा संवादसूत्र 'वोल्फ़' था और इसका स्वामी और सञ्चालक था योरप का प्रसिद्ध बैंकर राथ्सचाइल्ड। इसका केन्द्रीय कार्यालय बर्लिन में था और इस संस्था का सबसे प्रमुख सदस्य द्वितीय कैसर विलियम का एक निजी मित्र था। इसका परिणाम यह हुआ कि कैसर विलियम इस संवाद सूत्र के द्वारा जर्म्मनी की जनता में जोश और उत्तेजना फैलाते रहे, जिसका भयङ्कर विस्फोट सन् १९१४ में हुआ।

बीस वर्ष बाद जब हिटलर नामक धूमकेतु का उदय जर्मनी के आकाश में हुआ तब उसने केवल वोल्फ़ का नाम भर बदला अर्थात् इसके बदले में उसने डी० एन० बी० एजेन्सी की स्थापना की लेकिन उसकी सारी मैशिनरी ज्यों की त्यों अनुरण रक्खी। अन्तर इतना ही रहा कि कैसर विलियम की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साम्राज्यशाही लिप्सा के बदले में नाज़ीवाद का प्रचार और प्रसार ज़ोरों से आरम्भ हुआ जिसका परिणाम हमारे सामने है।

अमरीका का विख्यात पत्रकार केंट कूपर अपने एक लेख में लिखता है—"जब कभी किसी राष्ट्र की सरकार युद्ध छेड़ना चाहती है तब सबसे पहले संवादों पर क़ब्ज़ा करती है। गत महायुद्ध की सन्धि के समय हमने इस मूल सिद्धान्त पर ध्यान नहीं दिया, पर इस महायुद्ध की किसी भी सन्धि-चर्चा में हमें इस बात को नहीं भूलना चाहिए"।*

जो कारनामे जर्मनी में डी० एन० बी० के हैं वही कारनामे इटली में स्टेफेनी के हैं। मुसोलिनी कहा करता था कि इटली का प्रेस मेरी 'आरकेस्ट्रा' है और मैं जो राग चाहूँगा, इससे निकालूँगा।

जापान में भी प्रेस सदा जापानी अधिकारीवर्ग के हाथ की कठपुतली रहा है। वर्त्तमान युद्ध में कूदने से पहले जापान की साम्राज्यशाही सरकार ने वहाँ के प्रमुख संवाद-सूत्र 'दोमेय एजेन्सी' की नाम मात्र की स्वतन्त्रता का भी ख़ात्मा कर दिया था। अब तो डी० एन० बी०, स्टेफेनी तथा दोमेय एजेन्सी में कोई अन्तर ही नहीं रहा। चोर-चोर सचमुच मौसेरे भाई साबित हुए।

रूटर आरम्भ में अँगरेज़ी संवाद-सूत्र नहीं था। उसका काम केवल अँगरेज़ सरकार के सरकारी संवाद तथा व्यापारी-मण्डल के बाज़ार दर को योरप के अन्य देशों में भेजना था। जब तार और समुद्री तार का आविष्कार हुआ तब उसने इँग्लैंड के कुछ पत्रों को यह सूझ दी कि वह उनके लिए बाहर के देशों से संवाद संग्रह करेगा। फिर क्या था, वह बड़े आकर्षक शब्दों में इँग्लैंड और इँग्लैंड के राजा के सम्बन्ध में ख़बरें भेजने लगा। इन संवादों को देते हुए रूटर का उद्देश्य था केएट कूपर के शब्दों में—'बुरे को अच्छा बताना और अच्छे को बहुत अच्छा सिद्ध करना।'

'रूटर' के इस प्रयास की इतनी तारीफ़ हुई कि यद्यपि वह जन्म से प्रशियन था तो भी उसे ब्रिटिश बैरन (British Baron) बना दिया गया। फिर क्या था, तब से अब तक उसकी चाँदी ही चाँदी रही है। फ्रांस में 'हवास' तथा जर्मनी में 'वोल्फ' ने भी इसी सिद्धान्त पर अपने-अपने व्यापार की स्थापना की। उनका सिद्धान्त था—'सरकार के मतलब के संवाद छापना और नफ़ा कमाना।'

इन तीन महान् एजेन्सियों (रूटर, हवास, [illegible] सन् १८७० ई० में आपस में एक समझौता [illegible] अनुसार इन लोगों ने सारे संसार का बन्दर-बिल्ली बँटवारा [illegible] चूँकि इन लोगों का अभिप्राय अपने-अपने देश के [illegible] रहकर अपना-अपना उल्लू सीधा करना था, अतः इन्होंने [illegible] ने भी इसमें हाथ बँटाया। बड़े-बड़े पूँजीपति (रा[illegible] जैसे) नफ़ा कमाने के लिए उन एजेन्सियों में शामि[illegible] इस बँटवारे में रायटर के हिस्से में—ग्रेट ब्रिटेन, [illegible] साम्राज्य और उपनिवेश, मिस्र, टर्की, जापान, चीन [illegible] भी देश जहाँ ग्रेट ब्रिटेन का प्रभाव था, आये।

'हवास' के हिस्से पड़े—फ्रांस, स्पेन, पुर्तगाल, [illegible] लैंड, इटली तथा सारा दक्षिणी अमरीका। और [illegible] हिस्से में—जर्मनी, स्कांडेनेविया, रूस, स्लाव [illegible] आस्ट्रिया।

इस तरह संवादों का बाज़ार गर्म हुआ। बड़े-[illegible] पतियों ने लाभ उठाना आरम्भ किया। पूँजीशा[illegible] मानों गोलकुण्डा के स्वर्णभण्डार का फाटक खु[illegible] पर इँग्लैंड के सामने एक अनोखा सवाल पैदा हुआ [illegible] के अन्तर्गत तो प्रेस की स्वतन्त्रता थी पर बाहर [illegible] से जो संवाद आते थे या इँग्लैंड से बाहर के देशों [illegible] वे तोड़े-मरोड़े या अतिरञ्जित होते थे। प्रसिद्ध पत्र[illegible] कूपर अपने एक विद्वत्तापूर्ण लेख में लिखता है—"[illegible] वही संवाद हम लोगों के पास भेजता था जो ब्रिटि[illegible] के मतलब के होते थे और हम लोगों के बारे में [illegible] सारे संसार में फैलाता था जिनमें ब्रिटिश सरकार [illegible] होता था।"*

गत महायुद्ध के पश्चात् जर्मनी की पराजय के [illegible] वोल्फ़ के भी पैर उखड़ गये। फिर क्या था, 'हवास' [illegible] ने मिलकर 'वोल्फ़' के हिस्से का भी बँटवारा [illegible] लिया। 'हवास' और रूटर ने अपना जाल इस [illegible] कि वे जर्मनी तथा योरप के अन्य देशों में वही संवा[illegible] थे जो उनके मतलब के होते थे और यही बात [illegible] जानेवाले संवादों के विषय में भी कही जा सकती [illegible] १९२० ई० में 'रूटर' तथा 'हवास' के अन्तर्गत २७ [illegible] ऐजेन्सियाँ भी शामिल थीं। 'रूटर' तथा 'हवास' [illegible] इतना जमा था कि यदि कोई एजेन्सी उनके चङ्गुल [illegible] की चेष्टा करती तो उसको विफलमनोरथ होना पड़ता [illegible] न्यूज़ (संवाद) के सञ्चालन के साथ-साथ उसके [illegible]

*"When a government wants to make war it first takes control of the news. In the peace conferences of world war I, we overlooked this basic element of world peace. In the peace conferences of world war II, even in the earliest discussions—we should not forget it."

*"The Reuter sent only the news that wanted us to read and sent to the rest of [illegible] only the news about us that the British [illegible] others to read.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञापन थे। यदि कोई एजेन्सी 'हवास' या 'रूटर' की ख़बरें से इन्कार करती तो उसको कोई विज्ञापन नहीं मिल सकता। फलतः लाचार होकर 'रूटर' तथा 'हवास' के ही अन्तर्गत रहना पड़ता था।

जर्मनी में जब हिटलर शक्तिशाली हुआ तब उसने जर्मन को 'हवास' और 'रूटर' के चंगुल से निकाला। किसलिए? स्वतन्त्र करने के उद्देश्य से नहीं बरन नात्सीवाद का प्रचार के लिए। मुसोलिनी ने भी 'स्टेफानी' को 'हवास' और टर' के नियन्त्रण से मुक्त किया। किन्तु उसे आज़ाद करने ग़रज़ से नहीं बरन फ़ासिस्टवाद के प्रचार के लिए। 'हवास' घृणित हथकण्डे जारी रहे। सन् १९४० में फ्रांस नात्सियों शिकार हुआ और सबसे पहला काम जो हिटलर ने फ्रांस में या वह था 'हवास' का अन्त। आज 'हवास' क़ब्र के नीचे उसके इस पतन पर कोई भी आँसू बहानेवाला नहीं। लिनी के पतन के साथ-साथ 'स्टेफानी' का भी अन्त हो और अब हिटलर के पतन के साथ-साथ डी० एन० बी० तन की बारी है। बच रहेंगे एक मात्र 'रूटर'।

फ्रांस आज स्वतन्त्र है! इसी स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़ते हुए के भूगर्भ में एक बिल्कुल स्वतन्त्र प्रेस का जन्म हुआ है का नाम है—Agence Franzaisede Presse (फ्रांसीसी एजेन्सी)। यह फ्रांस का स्वतन्त्र संवाद-सूत्र है। इस न्सी को फ्रांसीसी वीरों ने अपने रक्त से सींचा है। इसके है स्वतन्त्र फ्रांस की आत्मा और इसकी पुकार है स्वतन्त्र की पुकार। फ्रांस में आज 'हवास' का कोई नाम-नहीं है। यद्यपि अभी यह एजेन्सी छोटी है पर इसका ष्य फ्रांस के भविष्य की तरह भव्य तथा आलोकमय है।

आज जब विश्व का नव-निर्माण होने जा रहा है; जब पुराने मिट गये हैं और मिट रहे हैं; जब संसार का प्रत्येक व्यक्ति अपने को स्वतन्त्रता-प्रेमी कहता है, सच्ची स्वतन्त्रता की अक्षुण्ण डालने की योजना पर विचार कर रहा है; यह ध्यान रखना न्त आवश्यक है कि फिर कभी उन एजेन्सियों के हथकण्डों पुनरावृत्ति न होने पाये; फिर कभी 'डी० एन० बी०', कानी' और 'दोमेय' जैसी घृणित एजेन्सियाँ संसार के किसी काने में सुनने में न आयें, फिर कभी राथ्सचाइल्ड जैसे र्थियों का हाथ किसी न्यूज़ एजेन्सी में न होने पाये।

अमरीका के तीन प्रमुख पत्रकार, जैसा कि कहा गया है, उद्देश्य से विभिन्न देशों के अधिकारवर्ग तथा प्रेस-प्रति-यों से मिल रहे हैं। कहते हैं कि ये तीनों अमरीकन कार, जैसा कि उनके वक्तव्यों से प्रकट होता है, यह चाहते हैं संसार के दूसरे देशों में भी उन्हीं जैसे विचारवाले पत्रकारों का विश्व-सङ्घ स्थापित हो। उनका मत है—

हर कहीं पत्रकारों को संवाद संग्रह करने की पूरी स्वतन्त्रता चाहिए। सभी पत्रकारों को संवाद भेजने में समान रूप से सुविधा मिलनी चाहिए। बिना किसी सेन्सर के संवाद भेजने की आज़ादी मिलनी चाहिए, पत्र-पत्रिकाओं को कोई भी लेख प्रकाशित करने में रुकावट नहीं डालनी चाहिए तथा संवादों के आदान-प्रदान में भी काफ़ी सुविधा और स्वतन्त्रता रहनी चाहिए। यदि ऐसे नियम काम में लाये जायँ, तो गोयबल्स का कहीं नामोनिशान न रहे।*

पर जो मनस्वी पत्रकार संसार भर में 'प्रेस की स्वाधीनता' का प्रचार करने का संकल्प किये हुए हैं उनके अपने देश में प्रेस को कैसी स्वाधीनता प्राप्त है इसके सम्बन्ध में भी दो बातें बताना यहाँ अनुचित न होगा।

प्रेस की स्वतन्त्रता स्वायत्त शासन की आधार-शिला है, इस कथन पर सन्देह नहीं किया जा सकता। अमरीका का संयुक्त राष्ट्र स्वायत्तशासन का एक उत्कृष्ट नमूना है। पर वहाँ भी प्रेस को ऐसी स्वाधीनता प्राप्त नहीं है जिस पर गर्व करते हुए कहा जा सके कि—"क्या ही अच्छा होता यदि वैसी ही स्वतन्त्रता अन्य देशों के प्रेस को भी प्राप्त होती।" हमारी इस प्रकार की सूचना का आधार 'बहिःसाक्षियाँ' हैं। यदि अमरीकन पत्रकार कृपा करके भारतीय पत्रकारों से मिलते-जुलते और परस्पर विचार-विनिमय का अवसर देते तो इसका पता ठीक-ठीक लगता। पर वे लोग तो सरकारी अफ़सरों के साथ बातचीत और खाने-पीने में ही तीन दिन बिता गये और इधर बेचारे भारतीय पत्रकार उनसे मिलने को लालायित ही रह गये। अस्तु, अमरीका में प्रेस को जिस प्रकार की स्वतन्त्रता प्राप्त है उसके सम्बन्ध में मास्को के एक पत्र 'वार एंड दि वर्किंग क्लास' ने अपने गत १ जनवरी व १५ जनवरी के अङ्कों में कुछ भिन्न प्रकार के विचार प्रकट किये हैं। उसका कहना है कि अमरीका की अन्य महत्त्वपूर्ण संस्थाओं के समान वहाँ के प्रेस पर भी धनवानों का अधिकार है। यह सच है कि वहाँ पत्र प्रकाशित करने पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है और 'प्रेस एडवाइज़र' की भाँति का 'प्रेस सेन्सर' भी नहीं है, पर यह भी सच है कि बिना भारी पूँजी के वहाँ पत्र निकालना सम्भव नहीं है। अमरीका का पाठक वही पढ़ने को बाध्य है जो वहाँ का धनिक वर्ग उसे पढ़ाना चाहता है और उसे वह बात पढ़ने को ही नहीं मिलती, जिसे धनिक वर्ग उसे पढ़ाना

*"There should be freedom for journalists every where in the world both to seek out news—with equality of access to all—and to send it with out censorship; freedom of news organs to publish it and freedom of news agencies to compete with one another or to exchange news on an un—limited basis. If this kind of freedom is established and enforced there can never be another Goebbels

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं चाहता। उदाहरण के लिए वर्त्तमान युद्ध के प्रारम्भ होने के पूर्व अमरीका के उद्योगपति जापान को लड़ाई के अस्त्र-शस्त्र बराबर भेजते थे और वहाँ के पत्र धुरी-राष्ट्रों के अनुकूल और उनके विरोधियों के प्रतिकूल ख़बरें छाप-छापकर इस व्यापार का समर्थन करते थे। यही बात मुसोलिनी और इटली के सम्बन्ध में भी सत्य है। अमरीकन पत्र मुसोलिनी के तब तक बराबर गीत गाते रहे जब तक इटली ने अमरीका के 'हाउस आफ़ मार्गन' (House of Morgan) का क़र्ज़ चुकाने से इनकार नहीं कर दिया। इसके बाद ही अमरीका के पत्रों ने इटली के फ़ासिटीवाद की पोल खोलना प्रारम्भ किया। यह सत्य है कि अमरीका की जनता प्रेस की स्वाधीनता की समर्थक है, पर वहीं तक जहाँ तक वह पूँजीवाद के अनुकूल रहे।

यही नहीं, अमरीका के ही एक पत्र 'न्यूयार्क ट्रिब्यून' के सम्पादक मिस्टर जान स्विन्टन ने कुछ दिन पहले लिखा था—

'अमरीका में 'स्वाधीन प्रेस' जैसी कोई व्यावहारिक वस्तु नहीं है। यह मैं भी जानता हूँ और तुम भी जानते हो। तुममें से ऐसा एक भी नहीं है जो अपनी राय ईमानदारी से प्रकट कर सके। मुझे १५० डालर प्रतिसप्ताह इसी लिए मिलते हैं कि मैं अपनी निष्पक्ष सम्मति उस पत्र में प्रकट न करूँ जिससे मैं सम्बन्धित हूँ। आप लोगों को भी ऐसे ही कामों के लिए इतना ही वेतन मिलता होगा। अगर मैं अपने एक अङ्क में भी अपनी निष्पक्ष राय छाप दूँ तो २४ घण्टे में ही मेरी नौकरी छिन जाय। हम लोग पर्दे के पीछे रहनेवाले धनिकों मात्र हैं।*

पर इससे क्या, उन पत्रकारों का उद्देश्य निश्चित और महान् है। यदि वे अपने प्रयत्न में सफल हुए युद्धोत्तर संसार पर से प्रेस-प्रतिबन्ध उठ गया तो यह कहा जा सकता है कि फिर ऐसे-ऐसे विनाशकारी पुनरावृत्ति असम्भव हो जायगी। पर हम भारतीय अभी इतने ऊँचे स्वप्न भी नहीं देख सकते। 'प्रेस' की जो दयनीय दशा है, वह शायद उन्हें भी होगी। इस दिशा में भी यदि अमरीका संसार का सके तो कहना ही क्या है।

* There is no such thing in Ameri independent press unless it is in the counti You know it and I know it. There is no you who dares express an honest opinion paid 150 dollars a week for keeping my opinion out of the paper I am connecte Others of you are paid similar salaries f similar things. If I should permit honest to be printed in one issue of my paper, b hours my occupation would be gone. the tools and the vassals of rich men b scenes.

सुख-स्पर्श

श्रीयुत ठाकुर गोपालशरणसिंह

अन्धकार में रहते-रहते, तम में प्रकट प्रकाश हुआ;
धीरे-धीरे बढ़ते-बढ़ते, है विषाद उल्लास हुआ।
सूख गया जब हृदय-सरोवर, प्रेम-सरोज-विकास हुआ;
हुआ बहुत आश्चर्य, बदलकर जब निदाघ मधुमास हुआ।
नित्य वहन करने से, हल्का जग-जीवन का भार हुआ;
है सङ्गिनी भावना जिसकी, उस जीवन से प्यार हुआ।
मिटी नहीं जब तृषा हृदय की, लोचन-जल आधार हुआ;
बढ़ा विराग चित्त में ज्यों-ज्यों, त्यों-त्यों प्रिय संसार हुआ।
खोने पर भौतिक विभूतियाँ, मन में निज अभिमान हुआ;
निद्रा भङ्ग हुई जीवन की, जब उर से आह्वान हुआ।

जगी हृदय में ज्योति, हृदय का जब आदान-प्रदान
निज अस्तित्व भूलने से ही, कुछ-कुछ आत्म-ज्ञान
हुआ प्रकट उर में प्रेमानल, जब जीवन-संघर्ष
मिटी मोहमाया प्राणों की जब मन का उत्कर्ष
नहीं दुःख से दुःख, तथा जब नहीं हर्ष से हर्ष
राग-द्वेष जब रहा न मन में, तब जीवन आदर्श
तिमिरमयी थी वसुन्धरा जब, मन में नया प्रभात
निशा व्यतीत न होने पाई, विकसित उर-जल-जात
किसका हुआ प्रवेश हृदय में, यह न अभी तक ज्ञात
मृदुल करों के सुख-स्पर्श से सहसा पुलकित गात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन रुख

श्रीयुत प्रभाकर माचवे

१—प्रशान्त की डायरी से

.....अमिता को मैं समझ नहीं पाया। कितना चाहता कि भूल जाऊँ कि वह भी मेरे जीवन में एक प्राणी है पर यह नहीं माना। निर्मल मेरी बात को समझ नहीं पाता और अप्रामाणिकता का दोषी ठहराता है। उसके मज़ाक़ उड़ाने मेरे जी को जो दुःख होता है उसको वह जान नहीं पाता। जान ता तो उसे मालूम होता कि मैं इतना हलका नहीं हूँ—जैसा सोचता है। वह मानो इस बात को भुला देना चाहता है मेरे भावों में भी गहराई है। निर्मल की बात अलग रहे, ने मन का मैं क्या करूँ! वह क्यों नहीं सन्तोष पाता? ऐसा लगता है कि बिना अमिता को अपने निकट पाये—ी निकट कि साँसें एक हो जायँ—मेरा जीना सार्थक नहीं क्या यह ठीक है कि मेरे विचारों में रात-दिन एक ही क्ति डूबता-उतराता रहता है? क्या इस आकर्षण में मैं फिसला जा रहा हूँ? शक्ति रहते भी जो मैं इस भँवर में से लना नहीं चाह पा रहा हूँ यह क्या केवल भुलावा ही नहीं मन में कुछ बज उठता है कि मैं ज़रूर किसी ग़लती की बढ़ रहा हूँ।

पर बजा करे। मुझे ख़ूब मालूम है कि काग़ज़ के इन काले रों में मैं कितना ही संयत और विचारशील हो लूँ, मता की एक ही झाँकी से यह सब धुँआ बनकर रह जायगा। लिए यह कोई नई बात नहीं है। और कोई न जाने मैं तो जानता हूँ कि पिछले इन दो वर्षों में मैंने कम से पचीस बार इस आकर्षण को न कुछ समझकर अपने प को दृढ़ और निश्चल बनाने की चेष्टा की है। पर मैं सफल हो पाया हूँ? क्या मैं सदा ही अपने मन को काता नहीं रहा हूँ? अरे! मैं इसे क्यों भूल जाता हूँ कि मेरे में ये भाव खिलवाड़ की तरह से नहीं आये? जिसे आज ल (और शायद अमिता भी) तुच्छ और ध्यान न देने योग्य झता है, वह मेरी भावना मेरे अन्तस् की तह में से पनप रही और मेरे रक्त के कण-कण में प्रज्वलित और प्रस्फुटित होती क्या मैं इसे भुला सकता हूँ! समझ में नहीं आता कि मन क्यों इस प्रकार निर्मित है और मैं क्यों नहीं इस र्षण से (जो अगर रूप का नहीं है तो मुझे नहीं मालूम कि मन की भूख क्या है जो इसकी जड़ में है) उबर पाता। पर जाओ। इसका उत्तर कौन दे?

उत्तर दे सकती है अमिता। पर, वह क्यों देने लगी! सुच वह मेरे लिए पहेली है। मुझे अपने जीवन का ऐसा भी दिन याद नहीं जब मेरे मन की दुनिया में वह नहीं थी। बचपन के न जाने कितने दिन हमने साथ-साथ बिताये हैं। आज वह बड़ी हो गई है, उसकी आँखों में न जाने कैसी आर्द्रता घुल गई है। और कीट्स और कार्लायल की बातें बघारती है। पर क्या यह सब ऊपरी ही नहीं है! यदि आज की अमिता कल की अमिता का ही विकसित रूप है तो फिर यह समझ में नहीं आता कि कैसे वह मुझसे यों दूर होती चली गई है। बचपन की उन बातों को याद करने से कोई लाभ नहीं है—यह मैं मानता हूँ। पर मेरा मन आपसे आप उन तक खिंच आता है। ख़ाली समय में अक्सर आँखें बन्द कर मैं उन चित्रों में रङ्ग भरता रहता हूँ जो आज समय के धुन्ध से मैले पड़ गये हैं। क्या अमिता की वह लाल ड्रेस जिसे पहन कर वह तितली बनी थी, क्या उस दिन की शाम जब कायस्थ पाठशाला के फ़ील्ड पर हम लोग दौड़-खेल रहे थे—और मेरी जेब से मेरे सन्दूक़ की चाभी गिर गई थी। जब अमिता ने घण्टों उसे साथ-साथ ढुँढ़वाया था—यहाँ तक कि लौटते-लौटते रात हो गई थी, और घर जाकर उस पर डाँट भी पड़ी थी।—और न जाने ऐसी ही कितनी बातें क्या वे भुलाई जा सकती हैं? अरे! उस दिन का चित्र तो मेरे हृदय में अब भी उतनी ही चमक लिये हुए है जब आठ साल की अमिता अपनी मामी के यहाँ कलकत्ते में रहकर पढ़ने के लिए गई थी; उस दिन जब हम सबको उसने दावत दी थी, और मुझसे कहा था कि—'प्रशान्त, तू भी मेरे साथ चल।' उसकी वह उदास मुख-मुद्रा—कुछ बेबसी झलकाती, और उसके चमकीले बालों में लगे हुए वे फूल मुझे अभी तक दिखाई दे जाते हैं।

पर तब अमिता में कोई दुराव न था। कलकत्ते से दो साल बाद लौटी तो कुछ और ही हो गई। मुझे ठीक-ठीक ध्यान है—शुरू में तो मुझसे अच्छी तरह बोली भी नहीं। गई थी तो न जाने क्या-क्या लाने को कहकर गई थी, (वहाँ से जो बड़े-बड़े हरफ़ों में चिट्ठी लिखी थी—उसका मज़ाक़ माँ अब तक उड़ाया करती हैं) वह सब भूल गई। दिन-रात किताबों से चिपटे रहना—साथी-सङ्गियों को झिड़क देना, घर से बाहर न निकलना—कुछ अजीब ही उसका ढङ्ग देखने में आया। उन दिनों वह क्या अजीब-अजीब कहानियाँ सुनाया करती थी—भगवान् जाने कहाँ से सीख कर आती थी।

पर वे दिन बीत गये। उनकी याद मेरे जी में बाक़ी हो तो हो, अमिता के जी में नहीं है। वह तो जैसे कुछ और ही बदल गई है। नहीं मालूम यह कैसे हुआ—पर कॉलेज में आते ही उसकी चञ्चलता, उसका मसख़रापन, उसकी हँसते-हँसते लोटपोट हो जाने की आदत सब का फ़ुर हो गई। मानों वह कुछ अतिरिक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रौढ़ा हो गई हो। सम्भव है, कलकत्ते के साम्यवादी तरुणों के 'स्टडी-सर्कलों' में जा-जाकर वह गम्भीर बन उठी हो। हो सकता है, यौवन के बाग़ में क़ुदरती चोरी-छिपौवल करनेवाली किसी भावना ने गुंजारव शुरू कर दिया हो। हो सकता है, अमिता मुझे जान-बूझकर भुलाने की कोशिश कर रही हो। पर कुछ है ज़रूर, जो उसे पुरानी अमिता नहीं बने रहने दे रहा है।

मैं उस कारण का पता लगाकर रहूँगा।

२—अमिता की डायरी से

यह प्रशान्त अभी बालक है या दूसरे शब्दों में कवि ही बना रहा है। संक्षेप में, मूर्ख है। दो साल हो गये, कलकत्ते जाने से पहले यह मुझसे इसी तरह शर्मीली आँखों से, दूर शून्य में देखते हुए 'अफ़ेक्टेड' लहज़े में बातें किया करता था। अब भी उसकी वही हालत है। कुछ सुधरा नहीं। दुनिया कितनी तेज़ रफ़्तार से आगे निकल आई है, कुछ पता नहीं। प्रशान्त का प्रशान्त बना बैठा तुकें जोड़ा करता है। मुझे इन कवियों, कलाकारों, निठल्लों से चिढ़ है। वही सपनीली बातें, वही शरबती लफ़्फ़ाज़ी। इस सबसे अधिक भी तो कुछ है! ज़िन्दगी मीठी ही मीठी नींद नहीं है। उसमें रतजगा भी है, टूटते-बिखरते ख़ौफ़नाक डरावने सपने भी हैं, रात-रातभर तारे गिनना भी है, अँधेरे में आँखें गड़ाये सवेरे की प्रतीक्षा भी है...

वह रात मैं कभी नहीं भूलूँगी। यही अकाल के दिन थे। घटाटोप अँधेरा था। हम लोगों का जत्था पीड़ितों की सहायता के लिए गलियों में घूम रहा था। मुर्दे फ़ुटपाथों पर ठोकरों से रौंद दिये जाते। आर्त चीख़ते। भात के लिए पुकार। और शाम से ही आँखों में डोरे डाल गलियों के कोनों में खड़ी, पेट की आग बुझाने के लिए अस्मत लुटाने पर उतारू ग़रीबिनें...

इस पर प्रशान्त कहता है हम प्रशान्त रहें! हमारा, नारियों का वर्षों का अवरुद्ध रोष आज कर्मण्य हो उठा है। प्रशान्त, तुम अपने कल्पना के हवामहल में परियों से पङ्खा झलवाते रहो। हम आज अशान्त हैं और यह अशान्ति हमें अस्थिर कर डालती है। मैं जानती हूँ, प्रशान्त और मैं बचपन के साथी हैं। मैं स्वीकार करती हूँ, उसने मुझपर उपकार किये हैं अनेक प्रकार की सहायता पहुँचाकर। पर इस सबके बाद भी प्रशान्त का मुझपर प्रेम क्या नारी, निष्क्रिय, अपने ही मधु में पंखलिपटी वासना नहीं है? वह बातें करता है प्रेम, हवाई और स्वर्गीय, प्लैटोनिक और शैले के प्रेम की। एक ज़माने में वह बहक मुझमें भी थी। पर प्रशान्त, यदि तुम कलकत्ते की गलियों पर खड़ी विवश बहनों की कातर आँखें देख आते, यदि तुम उन निरीह माताओं की क्षुधा-झुलसी वत्सलता का सुर्ख़ी से स्याह पड़ जाना निहारते। यदि उन अमीरों की नर्मम, लज्जाहीना, लिपस्टिक-रँगी औरतों की तुम एक बार एक झलक पाते, तो ऐसे विरह-व्याकुल यक्ष न बनते।

माना, प्रेम है। पर प्रेम से भी बढ़कर और कुछ है। वह है भूख। वह है उत्पीडन। वह है बेमौत मौत। इसलिए तुम क्या कर रहे हो प्रशान्त जो बड़े कलाकार हो! शर्म नहीं आती।

तुम आते हो और मुझे कहते हो—अमिता, तुम क्यों रहती हो। मैं सोचती हूँ वे रुँधे हुए गले जो कहना चाहते हैं पर जिनपर ज़बानबंदी है। तुम आकर कहते हो—अमिता, तुम बदल गई? मैं मन ही मन कहती हूँ, बदल गई हूँ, और शायद अच्छे के लिए ही।

और निर्मल? वह बड़ा पढ़नेवाला, बड़ा विद्वान आदमी है। पिताजी उससे मेरे ब्याह की बात कह रहे हैं। उसके बारे में कभी सोचा नहीं है। पर प्रशान्त से वह कम से कम प्रैक्टिकल तो है। पर वह पैसेवाला है।

३—निर्मल की डायरी से

प्रशान्त कवि है, प्रेमी है यानी पागल है। अति बहुप्रशंसित, रूपगर्विता, अनावश्यक रूप से दम्भी है। उसका यह दम्भ और भी बढ़ गया है जब से वह बंगाल है। वह समझती है सारे बंगाल का दुःख उसी के सिर पर है। ग़रीबों की मदद क्या इस तरह की जाती है? मदद का सच्चा रास्ता है ग़रीबी मिटाना यानी उन्हें जो कि बेकार हैं नया काम जुटाना, और जो मुफ़लिस कमाने की राह पर लगाना।

कमाने की राह? मेरे लिए वह सीधी खुली है। अगले क्लास एम० एस्-सी० करूँगा, कल पी० सी० एस०, फिर कलक्टरी। पिताजी का रोब काफ़ी है। और माहवार ऊपर आय घर बैठे आ जावेगी। पर बङ्गाल का अकाल-पीड़ा छोड़ो भी उसे। मैं अमिता की तरह सेंटीमेंटल होकर अकाल पर रोते बैठना स्त्रैणता है। वह प्रशान्त को कुछ मेरे लिए परीक्षा है और हैं ये हाइसेनबर्ग, प्लैंक, क्वांटम भाभा...

प्रकाश की किरणों का प्रत्यावर्त्तन...रमण का स्पेक्ट्रम क्वांतुम् ईक्वेशन...दिक्कालातीत आइन्स्टाइन का चतुर्थ और...

परन्तु अमिता गाती कितना अच्छा है! यद्यपि उसकी पक्के गाने के बारे में हठवादिता मुझे पसन्द नहीं, आवाज़ में गहराई है, बुलाहट है, दिक्कालातीतत्व है। दैव का यह भी कैसा निष्ठुर व्यंग्य है कि वही अमिता (शायद भावी सङ्गिनी बनने जा रही है) उस मुर्दाफ़रोश जा पहुँची? जब लोकसंख्या बढ़ जाती है, युद्धकाल में असाधारण स्थिति होती है, माल्थस शायद कुछ अंश होता है। अनाज मानों x है; खानेवाले मुँह उससे कम हैं, समझो n। नतीजा अनाज ऋण होगा। यह सीधी-सी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में रोने-धोने से क्या होगा? पर यह भी एक युग है बङ्गाल में भात पहुँचाना राजनैतिक कार्यक्रम हो गया। मित्र कहते हैं कि मुझे दिल नहीं है, मैं बहुत अधिक बुद्धि-दी हूँ। मेरी ज़हन 'बूर्ज्वा' है। हो सकता है। पर मेरा पर क्या वश?

वैसे अमिता प्रेम करने लायक़ है। हो सकती है। प्रेम क्या? रशास्त्रियों ने उसे चीर फाड़कर सिर्फ़ कुछ ख़ून की गर्मी, ा-सा नसों का तनाव, कुछ गुदगुदाहट और योग्य इच्छा-पूर्ति मार्ग कहकर परिभाषित कर दिया है। उसके लिए इतना -तोबा क्यों? कहते हैं प्रेमी ऐसे हुए हैं कि जिन्होंने पहाड़ दिये हैं और...होगा, होगा। यह सब गपोड़ेबाज़ी है। यह ान का युग है। और फ़रहाद, नहीं बिजली की सुरङ्ग ही ड़ फोड़ सकती है। मगर एक बात ज़रूर है कि यह प्रशान्त नी जो प्रेम की डींग हाँकता है और यह अमिता जो अपने को बङ्गाल की खाड़ी में डुबोकर अखिल-वङ्गमय कहती हुई ती फिरती है—ये दोनों कहीं न कहीं ग़लत हैं। दोनों आत्म-प्रवञ्चक हैं। सचाई यह है कि आदमी के प्रेम का बैरोमीटर आर्थिक दबाव के सहारे चढ़ता-उतरता है। और लाख प्रेम की पवित्रता का ढिंढोरा पीटा जाय, प्रशान्त और मेरे बीच में अमिता मुझे ही इसलिए पसन्द करेगी कि मैं घर का अच्छा हूँ, मकान-जायदाद है, बैङ्क-एकाउंट हैं, रहन-सहन आलीशान है।

पर हो सकता है इसी वजह से अमिता मुझसे घृणा करे। उसकी इधर की बातचीत से इतना ज़रूर ज़ाहिर हुआ है कि वह मुझसे घृणा-मिश्रित प्रेम या प्रेममिश्रित घृणा करती है। वाह री अमिता, और वाह रे प्रशान्त। तुम दोनों अपने आप से इतना अधिक प्रेम करते हो कि दूसरे किसी तक उसे बढ़ा नहीं पाते। बढ़ाओगे भी तो उसमें तुम्हारा अपना महत्त्व भी किसी न किसी रूप में मिला हुआ रहेगा ही। अकाल या कविता तुम्हें इसलिए प्यारी है कि उसके सहारे तुम अपना महत्त्व बढ़ा लेते हो। मैं तुमसे बेहतर हूँ कि तुम्हारी कोई चिन्ता मुझे नहीं छूती। मेरा लक्ष्य धन है और उसे मैं ऋण कभी नहीं होने दूँगा।

———

कांग्रेसी मन्त्रिमण्डलों की स्थापना और कांग्रेस का पुनः सङ्गठन

श्रीयुत भूपेन्द्रनाथ सान्याल

भारत आज एक सङ्कटमय परिस्थिति के बीच से गुज़र रहा है। प की लड़ाई अब समाप्त हो गई है। पूर्व की लड़ाई शेष है। यह कहा जा सकता कि वह अभी कितने दिन तक और चलेगी। भारतीयों को युद्ध के आरम्भ से आज तक जिन दुःखों, अभावों, नाओं और कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है उनके न्ध में कुछ कहना बेकार है। यह सही है कि इस युद्ध से कुछ ों को हमारे देश में भी लाभ पहुँचा है। जनसाधारण की में युद्ध के कारण कुछ वृद्धि भी हुई है। बेकारी का प्रश्न अब नहीं है। पर अन्न वस्त्र की महँगाई और शहरों में रहने के मकानों की समस्या ऐसी भयङ्कर है कि बढ़ी हुई आमदनी भी साधारण लोग उसे हल नहीं कर पाते। आज एक शहर से शहर को जाना भी दुश्चिन्ता का कारण बन गया है। घूस-ी इतनी बढ़ गई है, जिसकी कोई सीमा नहीं। इसी सर पर क़ानून के छिद्रों द्वारा किसानों की ज़मीनें भी बेदख़ल जा रही हैं। यही नहीं, ज़बर्दस्ती चन्दा वसूल किये जाने की कायतें भी जहाँ-तहाँ से सुनने में आ रही हैं।

कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल की पुनः स्थापना का सम्बन्ध इसी स्थिति से है। पर प्रश्न यह है कि कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल भी परिस्थिति में कुछ सुधार कर सकते हैं, या नहीं। यह तो चत ही है कि जब तक कांग्रेस के नेता जेलों में बन्द हैं तब कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल का निर्माण कुछ अर्थ नहीं रखता। पर अब सम्भावना यही है कि कांग्रेस के नेताओं को अधिक समय तक जेल में नहीं रक्खा जायगा। इसलिए इस प्रश्न के विभिन्न पहलुओं पर विचार-विनिमय की आवश्यकता है।

कांग्रेस की प्रधान माँग स्वाधीनता की है। वह माँग अब भी पूरी नहीं हुई है। साथ ही यह भी कहना आवश्यक है कि पिछले दिनों कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल को जिन कारणों से पदत्याग करना पड़ा था, वे आज भी विद्यमान हैं। एक दृष्टि से परिस्थिति में ऐसा कोई असाधारण परिवर्तन अभी तक नहीं हुआ है जिससे कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल की पुनः स्थापना होने पर उसका कार्य पहले की अपेक्षा अधिक सफलता से चल सके। पर यह भी तो सत्य है कि ऐसी ही परिस्थिति में कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल की स्थापना पहले भी हुई थी। तब भी कांग्रेस की माँग स्वतन्त्रता की थी और उसकी प्राप्ति के लिए वह प्रयत्नशील थी। इस सिलसिले में दिल्ली कान्वेंशन-द्वारा स्वीकृत मन्त्रिपद-सम्बन्धी प्रस्ताव का उल्लेख असङ्गत न होगा। कांग्रेस की कार्यकारिणी ने एक लम्बे प्रस्ताव-द्वारा यह घोषणा की थी कि कौंसिल-प्रवेश का उद्देश्य ब्रिटिश सरकार से सहयोग नहीं, बल्कि नये विधान का मुक़ाबिला करना है। कौंसिल का कार्य-क्रम कहाँ तक नये विधान का मुक़ाबला था और कहाँ तक ब्रिटिश सरकार से सहयोग, इसका इतिहास पाठकों को मालूम है। पर यह सत्य है कि असेम्बली से बाहर कांग्रेस का सङ्गठन सुचारु रूप से चल रहा था। यदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांग्रेस पुनः पद स्वीकार कर लेगी तो भी यह प्रयत्न जारी रह सकता है। बल्कि और भी अच्छी तरह, क्योंकि उस दशा में कांग्रेस के अनेक उत्साही कार्यकर्त्ता, जो आज जेलों में बन्द हैं, बाहर रहेंगे।

कांग्रेस इस सम्बन्ध में जो भी क़दम उठायेगी वह उसके पूर्व-स्वीकृत प्रस्तावों के अनुरूप ही होगा। इस मसले पर कांग्रेस के खुले अधिवेशन में ही विचार किया जा सकता है और खुले अधिवेशन के लिए कांग्रेस के प्रतिनिधियों की मुक्ति आवश्यक है। मेरी समझ से अब सरकार को भी कांग्रेस के प्रतिनिधियों को जेल से बाहर कर देने में कोई आपत्ति न होनी चाहिए, क्योंकि गांधीजी यह स्पष्टतः कह चुके हैं कि इस समय सत्याग्रह आन्दोलन नहीं चलना चाहिए।

गांधीजी ने कांग्रेस मन्त्रिमण्डल की स्थापना के विरुद्ध राय प्रकट की है। उनका कहना है कि ऐसा करना लड़ाई के बाद हमने जो ग़लतियाँ की हैं, उनकी संख्या में वृद्धि करना होगा। यदि कांग्रेस-मन्त्रियों की प्रवृत्ति विधानवादी बनी रही तो उनका यह भय निराधार नहीं है। पर आज जनता विधानवाद की सङ्कुचित सीमा को पार कर चुकी है और सम्भवतः कांग्रेस-मन्त्रियों ने भी यह अनुभव कर लिया होगा कि मन्त्रिमण्डल के काम का दायरा बहुत छोटा है और असली काम असेम्बली भवन के बाहर ही है। फिर भी उन पर कांग्रेस का नियन्त्रण पहले से अधिक होना चाहिए और यह काम केवल एक पार्लामेण्टरी कमिटी के सुपुर्द नहीं किया जा सकता।

प्रश्न उठ सकता है कि क्या इस प्रकार कांग्रेस लड़ाई के काम में मदद करेगी। आज जो परिस्थिति है उसमें हम ऐसा करने के लिए बाध्य हैं। पर वैसा करते हुए भी हम इस दिशा में जनता का बोझ बहुत कुछ हलका अवश्य कर सकते हैं। हम ऐसा प्रबन्ध कर सकते हैं कि युद्धकार्य का अधिकाधिक बोझ उपयुक्त व्यक्तियों पर ही पड़े और जनता पर कम से कम बोझ पड़े। रक्षा-विषयक प्रबन्ध में भी अनावश्यक अपव्यय को घटाया जा सकता है। मन्त्रिपद-ग्रहण के पहले ही सरकार से इस विषय में एक समझौता किया जा सकता है।

मन्त्रिमण्डल का स्वरूप क्या होगा? मेरी समझ से आज की परिस्थितियों को देखते हुए, और पिछले अनुभवों के आधार पर भी, 'संयुक्त मन्त्रिमण्डल' ही उपयुक्त होगा। केन्द्रीय सरकार के लिए श्री भूलाभाई की योजना स्वीकार करने योग्य है, लेकिन प्रान्तीय सरकार के लिए मन्त्रिपद का बटवारा हिन्दू और मुसलमानों की जन-संख्या के अनुपात में ही होगा, यह सिद्धान्त निर्दोष नहीं है, क्योंकि इसको एक बार मान लेने से हिन्दुओं में भी वर्णव्यवस्था के अनुसार हमको मन्त्रिपद का बटवारा करना चाहिए। उधर शिया-सुन्नी और मोमिनों पर भी विचार करना चाहिए। ख़ाकसार, लीग और स्वतन्त्र मुसलिम भी पृथक् मन्त्रित्व के हक़दार होंगे ही। फिर इसका अन्त कहाँ होगा? हम जिस राष्ट्रीयता की स्थापना करना चाहते हैं, वह कहाँ रहेगी? यह आवश्यक है कि मन्त्रिमण्डल की स्थापना इस प्रकार हो जिससे सत्य की मर्यादा अक्षुण्ण बनी रहे—अथवा यदि न हो सके तो इतना तो अवश्य हो कि उसकी अधिक हो। सच तो यह है कि यह केवल कामचलाऊ व्यवस्था है और उचित व्यवस्था तभी हो सकेगी जब हम साम्प्रदायिकता को अन्तिम रूप से निबटा लेंगे। योग्यतम व्यक्ति ही हम सञ्चालन करें, इस अवस्था पर पहुँचने में अभी देरी है।

यदि पाकिस्तान का ही नारा बुलन्द रहा तो इस मन्त्रिमण्डल की कल्पना भिन्न होगी। मेरा यह विश्वास साम्प्रदायिक मेल एकतरफ़ा कोशिश से नहीं हो सकता। साम्प्रदायिकता के लिए कौन अधिक दोषी है, इस प्रश्न के से समस्या का हल नहीं होगा। आज के लिए यह कहा जा सकता है कि हिन्दू मनोवृत्ति उदारतापूर्ण है और साम्प्रदायिक कटुता के लिए मुसलमान ही ज़िम्मेदार हैं।

इसलिए यदि आज वे अलग होना ही चाहते हैं तो ज़बर्दस्ती बाँध रखने का कोई अर्थ नहीं होता। लेकिन यह भी हो और उसमें हिन्दू और मुस्लिम अल्पसंख्यक भी यह सम्भव नहीं। यदि मुसलमानों की यही इच्छा हिन्दुओं से कोई सम्पर्क न रहे तो न्याय यही है कि अ अपने सम्प्रदायों में ही जा मिलें। इसमें बहुत बड़ी कठि लेकिन और कोई उपाय नहीं है।

एक गौण बात है, लेकिन अप्रासंगिक नहीं है कि भाषा पर भी इसका प्रभाव पड़ेगा। सरकारी कार्य भाषा में हो? स्पष्ट है कि पाकिस्तान और हिन्दुस्तान को राष्ट्रभाषा बनाने की माँग एक साथ नहीं की जा यदि पाकिस्तान की योजना को हम स्वीकार करें तो हि उर्दू स्वतः अलग भाषायें बन जायँगी। इस वि विचार करना आवश्यक इसलिए है कि इन सब पहलू दृष्टिकोणों को ध्यान में रखकर ही मन्त्रिमण्डल के निर्वाचन होना चाहिए।

जिन लोगों को संयुक्त मन्त्रिमण्डल से यह भी मुस्लिम लीग के मन्त्री पक्षपातपूर्ण होंगे उनको यह चाहिए कि कांग्रेस के मुसलमान मन्त्री सर्वथा इस दो नहीं थे। ऐसे उदाहरण बहुत मिलते हैं कि हिन्दुओं तरक़्क़ी नहीं मिली और मुसलमानों को अनुचित तरक़्क़ी तब असुविधा यह थी कि हम कांग्रेसी मिनिस्टरों आलोचना नहीं कर सकते थे लेकिन आज हमारे प्रकार की कोई बाधा नहीं रहेगी।

मन्त्रिमण्डल की स्थापना की बात भविष्य को ही की जा रही है। लड़ाई की समाप्ति पर नये विधान के मन्त्रियों का पद पर रहना बहुत ज़रूरी है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंत्री परिषद् तथा नये असेम्बली और कौंसिलों का चुनाव लिए मताधिकार के आधार पर ही होना चाहिए। वर्तमान न्त्रिमण्डल का यह भी काम होगा कि जनता को इसके लिए यार करे और चुनाव के अवसर पर उसको यह निरीक्षण करना गा कि वोटरों पर कोई अनुचित दबाव तो नहीं पड़ रहा है।

हमें यह समझ लेना चाहिए कि वर्तमान परिस्थिति में हम कुछ करें उसका भारत के भावी विधान पर बुरा असर न हो। दाहरण के लिए यदि सप्रू-योजना स्वीकार योग्य है तो युद्धकालीन तीय मन्त्रिमण्डल के सङ्गठन और कार्यक्रम पर इसका प्रभाव गा। मेरी निजी राय है कि कुछ मामूली संशोधनों के साथ से राष्ट्रपति का चुनाव इत्यादि) इस योजना को स्वीकार या जा सकता है। इस दशा में कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल की पुनः पना के बाद म्युनिसिपलटी आदि का फिर से चुनाव होना हिए और वह संयुक्त-निर्वाचन की पद्धति-द्वारा।

लेकिन यह सारा हल व्यर्थ हो जायगा यदि साथ ही साथ स के सङ्गठन में भी आमूल परिवर्तन न हो। हमारे जीवन परिवर्तन के साथ यदि कांग्रेस के सङ्गठन में भी अनुरूप परि- न न हो तो हम जीवित नहीं रह सकते। उसके लिए मेरी ति से पहली बात तो यह है कि कोई भी असेम्बली का सदस्य स का पदाधिकारी न बन सकेगा। दूसरी बात यह है कि स पदाधिकारियों में काम का बटवारा होना चाहिए। उदा- प के लिए वर्किंग कमिटी के सदस्यों में किसी को किसानों का औरों को विद्यार्थियों या मज़दूरों आदि का भार सौंपना चाहिए। की कमिटियों में इसका और अधिक विस्तार होना चाहिए। शहरी जनता में दुकानदार, मज़दूर, नौकरीपेशा आदि के विभिन्न विभाग होने चाहिएँ। कुछ कमिटियाँ दूसरे दलों हमारे प्रस्तावित सम्बन्ध को कार्यरूप देने के लिए बननी हिएँ।

तीसरी बात यह है कि युद्धकाल के लिए कांग्रेस का चुनाव ात कर दिया जाय। हर जगह उपयुक्त लोगों की कमिटियाँ दी जायँ जिनके सुपुर्द कुछ निश्चित काम किये जायँ। उनके की जाँच होती रहे और उसके अनुसार यदि आवश्यक ी कमिटी के सदस्यों में परिवर्तन किया जा सकेगा। यह सत्तात्मक सिद्धान्त के विरुद्ध अवश्य है लेकिन दो-एक साल प्रणाली पर काम करने के बाद फिर चुनाव हो सकेगा और समय इसका रूप बिलकुल बदल जायगा।

आज जहाँ एक ओर जनता के बलिदान और स्वार्थत्याग का है वहाँ दूसरी ओर कांग्रेस-सङ्गठन में कूट और स्वार्थी नीति बोलबाला है। आज अवसरवाद एक उन्नत कला बन है। परिणाम यह है कि जो चाहते भी हैं वे न तो सच सकते हैं और न सत्य आचरण ही कर सकते हैं। यदि हम मण्डल की स्थापना से और कुछ न भी कर सकें तो कम से कम अगला क़दम उठाने के लिए और पिछले क़दम के विश्लेषण के लिए विचार-मन्थन तो कर ही सकते हैं।

इसी अवसरवाद का परिणाम है कि कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य आज भी अपने को कांग्रेसी कहकर परिचय देते हैं जब कि कांग्रेस-प्रस्ताव का उन्होंने खुला विरोध किया और कांग्रेस-अनुशासन को स्पष्ट रूप से भंग किया। राजनैतिक मामलों में अदालतों के अन्दर सरकारी गवाह बनकर भी अपनी देशभक्ति का प्रचार करने में वे हिचकते नहीं।

युद्धकाल में मन्त्रिमण्डल बने रहने से सन्धिकाल में मित्रमण्डल की बैठक में सच्चे भारतीय प्रतिनिधि शामिल हो सकेंगे। दुनिया के भाग्य-निर्णय के अवसर पर देश के वास्तविक नेता अनुपस्थित हों यह भारत के हित के लिए हानिकर होगा।

उपर्युक्त तमाम कारणों से हम इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि इस समय कुछ विशेष शर्तों के साथ कांग्रेस का मन्त्रिपद ग्रहण करना सर्वथा उचित है।

एक और पहलू से हम इस प्रश्न पर विचार कर सकते हैं। पद ग्रहण करने से यदि हम इन्कार करें तो दूसरा रास्ता आन्दोलन छेड़ना ही है। जनता की शक्ति पर मुझे पूर्ण विश्वास है। उसके उत्साह में मुझे कोई सन्देह नहीं, लेकिन यह सर्वसम्मत है कि आज की परिस्थिति आन्दोलन के अनुकूल नहीं है।

तो क्या इनके बीच कोई और भी मार्ग है? सम्भव है कि ट्राट्स्की के ऐतिहासिक निर्देशानुसार एक और मार्ग हो जो न युद्ध हो और न शान्ति। वर्तमान रचनात्मक कार्यक्रम इसी प्रकार का तीसरा मार्ग है—यह सम्पूर्ण रूप से वास्तविकता से मुँह मोड़ना है और राजनैतिक निष्क्रियता को बढ़ाना है। मैं पिछले अनुभव से और रचनात्मक कार्यकर्ताओं तथा जनता के वर्तमान मनोभाव के अध्ययन से यह निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि इस प्रकार के रचनात्मक कार्यक्रम से किसी को दिलचस्पी नहीं है। आज की कठिनाइयों के दिनों खद्दर का काम बढ़ सकता है लेकिन यह पूर्णतया व्यापार का काम है, राजनैतिक काम नहीं है। कस्तूर बा कोष में भी दान देनेवालों में एक बड़ी संख्या उनकी है जो एक ओर नाम कमाना चाहते हैं और दूसरी ओर निर्ममता से किसानों को बेदख़ल कर रहे हैं। इस सम्बन्ध में बड़े-बड़े लोग चीन की दुहाई देते हैं। कहा जाता है कि वहाँ का औद्योगिक कोआपरेटिव ही जापान के विरुद्ध चीन के टिकने का प्रधान कारण है। वे भूल जाते हैं कि कम्युनिस्ट शासन के अधीन उत्तर के एक छोटे प्रदेश ने जापानी सेना की कुल संख्या के २/५ अंश को फँसा रक्खा है और इस प्रदेश में औद्योगिक कोआपरेटिव की कोई शाखा नहीं है। मेरी यह विनम्र राय है कि रचनात्मक कार्यरूपी इस मदारी के खेल से हम जितना दूर रहें उतना ही अच्छा है। कुछ लोग सोचते हैं कि इस आचरण के द्वारा हम जनता से फिर सम्पर्क स्थापित कर सकेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिष्ठित शासन के रुख से यह स्पष्ट है कि यह विचार भ्रम-मात्र है। मन्त्रिपद ग्रहण करके ही हम जनता से पुनः अपना सम्पर्क स्थापित कर सकेंगे।

क्या हम इस प्रकार अपने आदर्श से नीचे नहीं गिर जाते? इस प्रश्न का यही उत्तर दिया जा सकता है कि वास्तविकता एक समझौता है। कट्टर से कट्टर नेता भी अपने आदर्श को पूर्ण रूप से वास्तव में परिणत नहीं कर सकते चाहे वस्तु-स्थिति उनके अनुकूल ही क्यों न हो और उनका ऐतिहासिक विश्लेषण चाहे जितना सही हो। वास्तविकता विभिन्न विरोधी शक्तियों के संघर्ष का परिणाम है।

अन्त में मैं फिर इस बात पर ज़ोर देना चाहता हूँ कि मन्त्रिमण्डल से साम्प्रदायिक वैमनस्य कुछ हद तक दूर हो जाता है। साम्प्रदायिक समस्या आज के दिन मुख्य रूप से मनोवैज्ञानिक समस्या है और साथ काम करने के अवसर हमारी मनोवृत्तियाँ बदल सकती हैं।

सैनिक से

श्रीयुत, मदनमोहन 'शास्त्री, राकेश' एम० ए०, एम० ओ० एल०

प्रतिदिन प्राची से उगता रवि तेज सँभाले—
लिये हृदय में आग धधकता यह जग जिससे।

× ×

सुनो! कहीं पर दूर सैनिकों का कोलाहल,
झपट रहे पीने को जो भीषण हालाहल!
हालाहल ही नहीं नहीं, अमृत का प्याला,
काल ढालता जिसमें निज हाथों से हाला—
जिसे पी न फिर होश रहे जीने-मरने का।
उमड़-उमड़कर, झपट-झपटकर, पीने प्याला
तृषित कण्ठ से बढ़ आता है पीनेवाला।
जीवन की सब याद भुलाकर,
यौवन के सपनों को खोकर,
जीवन-मोह छोड़ कर पीछे,
दो-दो हाथ मृत्यु से होकर,
बढ़ जाता है बढ़नेवाला।
दूर खड़ा, मजबूर खड़ा, सोचा करता है
—एक क़दम आगे धरते सोचा करता है—
एक अभागा,
प्यास छिपाये उर में अपने,
देखा करता है अमृत पीने के सपने।
अरे अभागे! सोच रहा है?
मन को स्वयं मसोस रहा है?
देख! यहाँ पर पीली-सी, तरुणी की विषमय प्रीति नहीं,
यहाँ अभागी रूखी-सी, कटु, कोकिल की वह गीति नहीं;—
रण-भेरी का नाद यहाँ पर यहाँ वीरता की हुङ्कार!
ताण्डव यहाँ महाचण्डी का, यहाँ मृत्यु का भी संहार!
यहाँ रुण्ड पर मुण्ड मुण्ड पर रुण्ड उछलते—
बिखरे-से अरमान भूमि पर यहाँ मचलते,
यहाँ न जलते स्नेह-दीप—
यह भीषण ज्वाला—
जिसमें जलकर जी उठता है मरनेवाला।
यहाँ रातदिन चिंता धधकती जिसमें जलते हैं अपमान,
जिसकी गरमी से द्रव बनकर बह जाते गिरिवर-पाषाण।
लोहे से लोहा टकराता, निकल जहाँ से चिनगारी,
जमी हुई वर्षों की कालिख जला डालती है सारी।
भरता क्यों उच्छ्वासें पागल! इनका तो कुछ काम नहीं;
आँखों से बहनेवाले पानी का कुछ दाम नहीं।
शोक रहा जो हृदय जलाता, भस्म हो चुका अरे कभी
मिट जाने के भय का लेखा ख़त्म हो चुका अरे कभी
फिर भी तू मुरझाया-सा कुम्हलाया सा है यहाँ खड़ा
बता न क्यों अमृत पीने को अब तक भी तू तनिक अड़ा
कन्धे से कन्धे टकराते,
देख देख सब बढ़ते जाते—
मन मारे यों सबके पीछे अब तक तू ही रहा खड़ा
देख! —मोहिनी बन रणचण्डी अमृत ख़ुद ही बाँट रही
अमर हुए जो अमृत पीकर उनको भी है छाँट रही
बढ़ जा, ले ले खप्पर तू भी रणचण्डी के हाथ से
एक घूँट में तू भी पी जा—क्या लेना है बात से
अरे बढ़ा जा, तुझमें बल है, निज बल का दिग्दर्शन दे
शत्रु पीसकर मांसल बाँहों में तू भी रण-नर्तन दे
—नई ज्योति ले बढ़ा चला जा।
चूर-चूर कर दे पत्थर सब, तोड़ हिमालय की छाती
पार निकल जा, वहाँ मिलेगी तुझे अमर सेना गाती
पार निकल जा,
उसमें मिल जा।
ओ मुरझाये मानव!
खिल जा।
चिरनिद्रा में सुप्त पड़ा है शेष महीधर उसे जगा
अगर न जागे उसके फण-मण्डल में भी तू आग लगा
जड़-वत् जहाँ जमे बैठे हैं गौरी-शङ्कर—
हिम-गिरि का वह शिखर भयङ्कर—
उसे गिरा दे, उसे जला दे,
जाग उठेगा तब प्रलयङ्कर!
तेरे एक-एक पद से भूचाल उठेगा।
तेरी हुङ्कारों से भी तूफ़ान मचेगा।
अरे प्रताप रमा है तेरी हर धमनी में,
पैदा हुई वीरता भी तेरी जननी में।
एक-एक अणु को तू वज्र निनाद सिखा दे,
एक-एक तरु को तू भीषण दैत्य बना दे;
जिन नदियों में ठण्डा पानी,
उनमें शोणित उष्ण बहा दे।
बस अब मत रुक, लड़ता ही जा,
आज काट युग-युग के बन्धन,
समरङ्गण में बढ़ता ही जा।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, Panjab University, Chandigarh. Digitized by S3 Foundation USA

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोष्ठी

पण्डित गणेशप्रसाद द्विवेदी, एम० ए०, एल्-एल० बी०

[कालेज का हॉल रूम; साहित्य-गोष्ठी का मासिक अधिवेशन। लेज की त्रैमासिक पत्रिका का सम्पादक एक छात्र इसका नेतृत्व कर रहा है। आज की बैठक के सभापति प्रसिद्ध हित्यिक पं० रमापति मिश्र हैं। कालेज के छात्रों तथा छात्राओं —कहानी, निबन्ध, कविता आदि का—पाठ तथा साहित्यिक यों पर वाद आदि होने जा रहे हैं। सभापति के आगमन प्रतीक्षा में सब धैर्यच्युत-से हो रहे हैं।

रङ्गमञ्च पर सभापति का स्थान रिक्त है; निकट ही चश्मा-ी एक नवयुवक बहुत-सी पांडुलिपियों को सजाने तथा उनके ीक्षण में व्यस्त है। बीच-बीच में कोई छात्र या छात्रा नी रचना का क्रम आदि जानने की इच्छा से आती है जिससे की विरक्ति की सीमा नहीं रह जाती। एक ओर कुर्सियों कालेज के कुछ प्रोफेसर तथा अतिथि बैठे हैं। दूसरी ओर ना-पाठ तथा वाद-विवाद में भाग लेनेवाले छात्र तथा छात्रायें हैं। सभापति की मेज़ तथा कुर्सी रङ्गमञ्च के बीचों- है। बाईं ओर प्रतियोगी छात्र-मण्डली तथा दाहनी शिक्षक तथा अतिथिवर्ग हैं। पहली पंक्ति में ३-४ ायें तथा पिछली दो पंक्तियों में ५-७ छात्र बैठे हैं जो परम कण्ठित भाव से आपस में तर्क-वितर्क कर रहे हैं। प्रोफेसर- शान्त मुस्कराहट के साथ विद्यार्थियों का यह भाव लक्ष्य रहा है।

गोष्ठी का रङ्ग-ढङ्ग अधिक उतावला देख कालेज के प्रिंसिपल त से मन्त्री को बुला कुछ परामर्श करते हैं और फिर मन्त्री ने स्थान पर खड़ा हो जनता को सम्बोधन करता है। करतल ध्वनि। मन्त्री का नाम नित्यनाथ है। सहायक रमेश, मोटर लेकर, सभापति को लाने गया हुआ है।]

नित्यनाथ—(कुछ झेंपता हुआ, रिस्टवाच को लक्ष्य करते- , खड़े होकर कुछ कहने जा रहा है पर मानो उसे बनाने के करतलध्वनि शान्त ही नहीं हो रही है। प्रिंसिपल के ास्य-युक्त शान्ति के इङ्गित से करतलध्वनि शान्त होती है नित्यनाथ नाटकीय ढङ्ग के क्षमा-याचना भाव से कहना म करता है।)

देवियो तथा सज्जनो! सभापति महोदय के आने में म्ब होने के कारण हम अभी तक अपना कार्य आरम्भ नहीं सके हैं। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आज के ति राष्ट्रभाषा हिन्दी के गौरव, साहित्य-सम्राट् पण्डित लिजी हैं; (करतलध्वनि) और आप समझ सकते हैं से विशिष्ट व्यक्ति का समय पर आ जाना

कई स्वर—मज़ाक़ नहीं है। (व्यापक हास्य)

नित्य०—अस्तु; तो उनके आने से पहले हम प्रारम्भिक बातें निबटा देना चाहते हैं—

कई स्वर—अवश्य! अवश्य!

नित्य०—(अकारण खाँसी पैदा कर कण्ठ-परिष्कार करता और जेब से रूमाल निकालकर चश्मा पोंछता हुआ) आज यह हमारी इस वर्ष की छठी बैठक है। पर आज की बैठक कई दृष्टियों से सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। एक तो यह कि पण्डित रमापतिजी ने आज का पौरोहित्य करना स्वीकार किया है। दूसरे यह कि हमारी प्रार्थना से हिन्दी के युग-प्रवर्तक कवि श्री रूपाभजी ने आज की कार्यवाही में भाग लेने की स्वीकृति दे दी है।

(करतलध्वनि के साथ सबकी दृष्टि प्रिंसिपल के पास बैठे हुए एक शीर्णकाय चश्माचक्षु नवयुवक पर पड़ती है।)

नित्य०—(पुनः पूर्ववत् खाँसकर गला साफ़ करता हुआ) अस्तु; तो आप लोग यह तो जानते ही हैं कि यह गोष्ठी कालेज के छात्रों तक ही परिमित है और इसका उद्देश्य है विविध प्रकार से साहित्य की उन्नति साधन करना तथा मुख्यतः विद्यार्थि-वर्ग में मातृभाषा-प्रेम और साहित्य सर्जन की रुचि उत्पन्न करना। पर इस गोष्ठी की लोकप्रियता इतनी बढ़ चली है कि समय-समय पर बाहर के नव-युवक साहित्य-प्रेमियों की रचनाओं को भी हम स्थान देने लगे हैं। हमारे पास बहुसंख्यक पत्र यह जानने के लिए आ रहे हैं कि इस गोष्ठी का उद्देश्य क्या है। अतः एक बार फिर से उद्देश्य को हम संक्षेप से बता देना चाहते हैं।

(फिर खाँसकर गला साफ़ करता है।) सज्जनो, यह आप पर अविदित नहीं कि वर्तमान वैदेशिक शिक्षा-पद्धति का एक प्रधान अभिशाप यह है कि हम विदेशी भाषा और साहित्य के इतने भक्त हो जाते हैं कि लिखना तो दूर रहा मातृभाषा में सोचना तक भूले जा रहे हैं। अपने जातीय साहित्य को तुच्छ समझने लगे हैं और भाषा तथा साहित्य-सम्बन्धी सभी बातों में परमुखापेक्षी हो चुके हैं। यह बड़ी भयानक स्थिति है। अपनी संस्कृति के प्रति इतना भयानक असन्तोष जातीय हीनता का परिचायक है। सबसे पहले हमें इसी स्थिति को बदलना है। सांस्कृतिक स्वातन्त्र्य साधन किये बिना और किसी प्रकार के स्वातन्त्र्य के पीछे दौड़ना मरुतृषावत् व्यर्थ है—मृग-मरीचिका है—

जनता—हियर! हियर!!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नित्य०—(उत्तेजित हो) यह लीजिए—यह 'हियर' 'हियर' क्या ? यह उद्गार-सूचक एक विदेशी नारा है। क्या हमारे यहाँ शब्दों का ऐसा दिवाला निकल गया है कि कोई भी आवेग-सूचक उद्गार प्रकट करना हो तो विदेशी शब्द-भाण्डार का आश्रय लेना ही पड़ेगा। यह सचमुच.....

एक स्वर—ख़ैर, पायंट पर आइए।

नित्य०—बस फिर वही पायंट'—क्या इसके लिए आपको अपनी भाषा से कोई शब्द नहीं मिलता ? ख़ैर, मैं लक्ष्यभ्रष्ट होता जा रहा था, मैं उद्देश्य समझा रहा था इस संस्था का—

[बाहर से मोटर के हार्न की आवाज़]

वह लीजिए सभापति महोदय भी आ पहुँचे। अब मैं संक्षेप में, दो शब्दों में, अपना वक्तव्य स्पष्ट कर दूँ—हमारी संस्था का मुख्य कार्य-कलाप यही है कि सदस्यगण अपनी-अपनी रचनायें पढ़ें और उन पर समालोचनात्मक तर्क हो और अन्त में सभापति द्वारा रचनाओं की प्रगति का सिंहावलोकन तथा कुछ उपदेश, सुझाव आदि। हमारी चेष्टा यह है कि साहित्य में किसी प्रकार नवीन प्राण, नवीन स्फूर्ति या नई जान फूँकना किसी नवीन चिन्ता-धाराओं का समावेश करना—बस !

[सहायक मन्त्री रमेश के साथ सभापति महोदय का प्रवेश। रमेश अप्टुडेट सूट पहने एक खिलाड़ी, स्वस्थ नवयुवक है। सभापति मध्यवयस्क, स्थूलकाय एक अग्रगण्य कथा-साहित्यिक तथा समालोचक हैं। आते ही दीर्घ करतलध्वनि के बीच मन्त्री नित्यनाथ माला पहना कर उन्हें उनके स्थान पर बैठाता है।]

सभापति—मुझे खेद है कि मैं बड़ी देर से आया। दो-एक साहित्यिक मित्र उपस्थित थे। कवि चञ्चल के उस नये संग्रह पर ज़रा बहस छिड़ गई थी। उन्हें भी मैं घसीट लाया यहाँ तक। (अतिथिवर्ग के बीच एक तगड़े-से सज्जन बैठते हैं।)

एक छात्रा—(अपनी पड़ोसिन से दबी आवाज़ से) देखा मिश्रजी की भाषा में उर्दू का कितना पुट है।

पड़ोसिन पुट क्या—यह तो बिलकुल 'हिन्दुस्तानी' लिखते हैं—और—

पहली तो क्या बुरा करते हैं—

सभा०—अच्छा, तो आज का कार्यक्रम आरम्भ हो।

[नित्यनाथ मेज़ पर रक्खी रचनाओं को उलटने लगता है। एक छात्र पीछे से आकर उसका कुर्ता खींचता है। प्रतियोगी छात्र-छात्राओं में व्यस्तता की एक लहर दौड़ जाती है और सब अस्फुट स्वर से एक दूसरे से काम की बात करने लगते हैं। सभापति अपना चश्मा इत्मीनान से लगाकर कुछ रचनायें उलटने-पुलटने लगते हैं। नित्यनाथ मुड़कर पीछे देखता है।]

छात्र—मेरी रचना पहले ही रख दी है क्या आपने ?

नित्य—पता नहीं भाई—(काफ़ी झल्ला उठता है।)

छात्र—बाद में हो तो अच्छा।

नित्य—आप अपने स्थान पर जाइए। जब होगी हो जायगा।

छात्र—आगे हो तो ज़रा दाब दीजिए, आप समझें

नित्य—यह नहीं हो सकता (फिर जनता से) तो अब ज़रा गत अधिवेशन की रिपोर्ट—

सभा—रिपोर्ट वग़ैरह जाने दीजिए—सिर्फ़ उल्लेख कर दीजिए।

एक स्वर—मन्त्री महोदय 'रिपोर्ट' शब्द का करते हैं ? क्या उन्हें अपनी भाषा में इसके लिए नहीं मिलता ?

नित्य०—प्रश्नकर्ता महोदय ने निश्चय ही बड़े टोंका है। पर उत्तर में निवेदन केवल यही है कि जब जैसी हमारे साहित्य की प्रमुख संस्था के दिग्गज इसके लिए शब्द नहीं मिला तब मैंने ही कौन क किया जो—

[व्यापक हास्य, अस्फुट गुञ्जन]

दूसरा छात्र—(नित्यनाथ का कुर्ता खींचता हुआ कान के पास जाकर) ज़रा सुनिएगा—

नित्य०—(झल्लाकर) फिर कौन आया, कहो भाई इस वक्त तो ख़ुदा के लिए—

छात्र—जी, एक कविता लाया था।

नित्य०—बड़ी अच्छी बात है। तो मैं क्या करूँ !

छात्र—ज़रा इसे भी अगर आज—

नित्य०—अभी तक कहाँ थे ? अब मुश्किल है। भेज दी होती ! ये सब बातें नियम-विरुद्ध पड़ती हैं, सब

छात्र—सो सब मैं जानता हूँ, पर आप अगर अब भी—

नित्य०—ठीक है, पर आपको कदाचित् स्मरण अधिवेशन में आपकी कविता को कुछ विशेष..... हिलाता हुआ नकारात्मक सङ्केत कर करुण हँसी अपने काम में व्यस्त हो जाता है।)

छात्र—तो जाने दीजिए, पर यह कविता बड़े मार्के थी मैंने और यह अधिवेशन भी कुछ विशेष महत्त्व ख़ै...र (निराश हो प्रस्थानोद्यत)

नित्य०—अच्छा आप इसे यहाँ छोड़ जाइए। मैं आप अब बैठिए, कार्यक्रम आरम्भ हो रहा है।

[छात्र एक पाण्डुलिपि रखकर धीरे-धीरे अपने चला जाता है। सभापति क्रम से रक्खी हुई पाण्डुलि उठाते हैं फिर मन्त्री की ओर देखते हैं। मन्त्री उन लेकर उनमें से सबसे ऊपर रक्खी हुई एक लिपि में देता है।]

सभा०—पहले श्री दिवाकरनाथजी स्वरचित पढ़ेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[छात्राओं के पीछे की पंक्ति से एक सुन्दर नवयुवक लाता हुआ आकर पहले सभापति को फिर समवेत जनमंडली सस्मित नमस्कार कर कविता पढ़ना आरम्भ करने का प्रयत्न ता है। नवयुवक का स्वरूप और उसका वेश-विन्यास इतना र्षक है कि उसकी कविता सुनने के बजाय लोगों का ध्यान के व्यक्तित्व की ही ओर खिंचा रह जाता है। अस्फुट जन क्रमशः शोर-गुल के रूप में परिणत हो जाता है। दिवा- एकाध पंक्ति पढ़ता है पर कोई सुन नहीं पाता सिवा उसके के लोगों के। सभापति जनता से शान्त रहने की अपील ते हैं पर उनकी यह अपील अरण्यरोदन सिद्ध होती है। ा सुने ही 'धन्य धन्य!' 'क्या खूब!' 'क़लम तोड़ दी।' ति सुन्दर' आदि बनावटी प्रशंसा-सूचक नारे श्रोताओं की र से आ रहे हैं जिनका प्रभाव झेंप के रूप में दिवाकर के मण्डल पर स्पष्ट है। अन्त में दो-चार पंक्तियाँ पढ़, एक चित्र भाव से कविता समाप्त कर दिवाकर पूर्ववत् नाटकीय से, अब की बार कुछ विशेष भक्ति से श्रोतृवर्ग को नमस्कार ता हुआ अपने स्थान पर लौट जाता है।]

सभापति—सज्जनो, दिवाकरनाथजी की कविता आपने सुनी। सज्जन को यदि इस रचना के सम्बन्ध में कुछ कहने की ा हो तो सहर्ष कह सकते हैं।

[सब स्तब्ध]

सभा०—हमें खेद है कि दिवाकरजी की रचना ध्यान से ही नहीं गई; अस्तु। सौभाग्य से आज हमारे प्रसिद्ध काव्यकार श्री रूपाभजी तथा चञ्चलजी उपस्थित हैं। हम आशा करें कि आप (दोनों को सस्मित लक्ष्य करते हुए) नवयुवक की कविता के सम्बन्ध में दो शब्द कहेंगे—

[चञ्चलजी एक म्लान हँसी हँसते हुए पहले सभापति की देखते हैं, फिर वही करुण हास्य दिवाकर की ओर भी ष्ट करते हैं, जिसका अर्थ केवल यही हो सकता है कि 'क्या ऐसी रचनाओं की आलोचना के लिए भी उनका आह्वान ा जायगा। रूपाभजी गम्भीर बने बैठे रह जाते हैं।]

सभा०—(कुछ देर रुककर, मन्त्री के हाथ से बढ़ाई हुई रचना को देखते हुए) अस्तु; अब श्री नमिता देवी चित एक कहानी पढ़ेंगी। कहानी का नाम है—"वास्तव स्वप्न"। आपने छोटी कहानी लिखने में अच्छी सफलता की है।

[नमिता का नाम सुनते ही सब एकाएक स्तब्ध हो छात्राओं मण्डली में बैठी हुई एक लड़की को देखने लगते हैं। दबी ध्वनि भी हो जाती है। एक अल्पवयस्का छात्रा खद्दर साड़ी पहने हुए गम्भीर भाव से सभापति के बग़ल में खड़ी नमस्कार कर पढ़ना आरम्भ करती है।]

नमिता—(कहानी पढ़ती है) आग बरस रही है—जेठ दुपहरी—पर मुझे चैन कहाँ? लेख लिखना है, किताब पूरी करनी है। परीक्षा देनी है। मकान-मालिक की रुद्रमूर्ति, रुद्रतर आक्रोश, बनिये के उलाहने, उधार, बस इसके सिवा और कुछ सोचने की फ़ुरसत ही नहीं। पर खैरियत यही है कि उनके जितने किरायेदार छात्र हैं उनमें सबसे ज़्यादा मुझ से ही प्रेम करते हैं। न जाने क्यों। इसी से और चिन्ता लगी रहती है। उनका पावना न रहे और चाहे जो हो। अनवरत क़लम चलाता जा रहा हूँ। एकाएक दरवाज़ा खोलकर मकान-मालिक ही घुस आये। मैं घबराया, किराया माँगेंगे, इधर छः महीने से एक पैसा नहीं दे सका हूँ। पर उनकी शक्ल देख कुछ सहम-सा गया। विस्मित तो हुआ ही। मुँह सूखा, बाल रूखे, आँखें पथराई, धँसी हुई और लाल मानों जलते कोयले। कुछ सँभल-कर बैठा, और सोचने लगा रुपये माँगेंगे तो कौन सा बहाना आज करूँगा, बिलकुल मौलिक। पर उस सबकी ज़रूरत ही न पड़ी। उन्होंने बड़े विनम्र भाव से एक गिलास ठण्डा जल माँगा। जल्दी से उठकर एक गिलास सुराही का जल मैंने दिया। एक साँस में वे उसे पी गये। 'और एक गिलास!'

दिया मैंने—

वह भी एक घूँट में समाप्त।

'एक गिलास और चाहिए—आह—जान बचाई तुमने भाई, प्यास से जान निकल रही थी, कहीं पानी का नाम नहीं—नींद उचट गई सपना।'

किन्तु वास्तव इससे भी भयावह।

अगले दिन उत्तप्त रौद्र और जलती लू की परवा न करता हुआ मैं बाँध पर से उतर त्रिवेणी की ओर अग्रसर हो रहा था। आज से दस वर्ष पहले जो मकान-मालिक निस्सन्तान दिवङ्गत हुए थे, कल एकाएक जिन्हें स्वप्न में देखकर मैं—न जाने कौन मुझे बलात् खींचे लिये जा रहा है—आप लोग जो कहेंगे वह मैं जानता हूँ—अपने अन्धविश्वास पर मैं स्वयं स्तब्ध हूँ पर नहीं—मेरी अन्यथा गति ही नहीं है—तर्पण मुझे करना ही होगा। जलती रेत पर पाँव झुलसे जा रहे हैं, पर तर्पण तो मुझे करना ही होगा।

[नमिता कहानी समाप्त कर सबको नमस्कार करती हुई अपने स्थान पर जाती है। देर तक करतलध्वनि। सभापति तथा रूपाभ व चञ्चलजी में देर तक प्रशंसासूचक दृष्टि विनिमय। मन्त्री तीसरी पांडुलिपि सभापति के हाथ में देने जा रहा है कि पीछे से कोई उसका कुर्ता खींचता है। वह इस समय अच्छे 'मूड' में है इसलिए झल्लाता नहीं है और हँसता हुआ मुड़कर पूछता है।]

नित्य०—कहो भई! तुम्हें क्या चाहिए?

छात्र—जी, इसी के बाद तो मेरी कहानी नहीं है?

[नमिता की कहानी की प्रतिक्रिया अभी स्टेज पर स्पष्ट है। सभी उसी की आलोचना अपने पड़ोसी से सरगर्मी के साथ कर रहे हैं। अस्पष्ट गुञ्जन जारी है और इसी के बीच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छात्र और मन्त्री का कथोपकथन हो चलता है और कोई बात नहीं करता।]

नित्य०—(हँसकर) जी नहीं। आपकी बारी बहुत देर में आवेगी और सम्भव है आज—(नकारात्मक इङ्गित)

छात्र—ना-ना, ऐसा न कीजिएगा—रखिएगा ज़रूर; पर ठीक इसी के बाद ज़रा—

नित्य०—जम न सकेगी इसलिए आज जाने ही दीजिए।

छात्र—नहीं-नहीं, जाने क्यों दें। ऐसी ग़ज़ब की फ़िनिश दी है मैंने कि बस...

[सभापति का ध्यान इन शब्दों से इधर आकर्षित हो जाता है। दोनों गम्भीर हो जाते हैं, छात्र गमनोद्यत]

नित्य०—(गम्भीरता से) अच्छा जाइए। देखा जायगा। समय मिलने पर है। अब दूसरी रचना आरम्भ होने जा रही है। (सभापति के हाथ एक पाण्डुलिपि रख देता है।)

सभा०—(पाण्डुलिपि के साथ खड़े होते हुए) अब कुँवर यादवेन्द्रसिंह अपनी एक कहानी पढ़ेंगे, पर इसके पहले कोई सज्जन पिछली कहानी के सम्बन्ध में कुछ कहना चाहें तो आ सकते हैं।]

[छात्रों की पंक्ति से एक स्थूलकाय नवयुवक कानों में हीरे की लौंग, जोधपुर ब्रीचेज़ तथा आधुनिकतम सूट पहने हुए सभापति के पार्श्व में सिंह की-सी गति से आकर मुस्किराते हुए खड़े होते हैं। जनमण्डली से 'हियर-हियर' के स्वागत-सूचक कुछ दबे हुए नारे भी आ जाते हैं।]

सभा०—आप कुँवर यादवेन्द्रसिंहजी हैं और 'भीषण प्रतिहिंसा' नामक अपनी कहानी पढ़ेंगे।

या०—(हाथ में अपनी रचना को उलटते-पुलटते हुए कुछ रुककर) क़बूल इसके कि मैं अपनी कहानी शुरू करूँ, मैं सभापति महोदय की अनुमति से कुछ शब्द पिछली कहानी के सम्बन्ध में कहना चाहता हूँ—

एक स्वर—अवश्य-अवश्य पर क़िबला यह क़ब्ल के क़ौल के क़ायल कब से हो गये? (टोकनेवाला लड़कों की पंक्ति में बैठा हुआ एक छात्र है।)

[व्यापक हास्य]

सभा०—ख़ैर, आप कहिए जो कहते हों; समय थोड़ा है।

या०—(कुछ रुष्ट तथा उत्तेजित हो) क़ब्ल यानी पेश्तर यानी पहले।

वही स्वर—हिंदी यानी हिंदुस्तानी यानी उर्दू।

सभा०—(विनोद-मिश्रित गम्भीरता से प्रश्नकर्ता के प्रति) मेरी प्रार्थना है कि कुँवर साहब को निर्विघ्न अपना वक्तव्य समाप्त करने दिया जाय।

या०—मुझे केवल एक शब्द पिछली कहानी के सम्बन्ध में कहना है। हम सिर्फ़ यह जानना चाहते हैं कि कहानी कहते किसको हैं। क्या जो कुछ भी कह डाला जाय वही कहानी है? नमिता देवीजी की रचना निश्चय ही सुन्दर है, वह सचमुच कहानी ही है? मेरी राय में उसे गद्यकाव्य, छोटा निबन्ध कहें या ठीक क्या कहें मैं समझ नहीं पाता।

वही स्वर—आपकी समझ का इलाज असम्भव है।

या०—(उमड़ते हुए क्रोध को रोकते हुए) जी, कह लेने दीजिए कृपाकर।

सभा०—आप कहिए (शान्ति का आदेश देते हैं)

या०—मेरी तुच्छ सम्मति में जिसमें प्लाट या कथा नहीं है वह कहानी नहीं, और चाहे जो कुछ हो। उसमें में जो कुछ भी कह डाला जाय उसे कहानी के दायरे में लाना सरासर ज़बरदस्ती है।

वही स्वर—क्या आपने मनोवैज्ञानिक कहानी का नाम सुना है?

सभा०—अच्छा, अब आप अपनी रचना आरम्भ कर दीजिए।

या०—(झल्लाया हुआ-सा) बहुत अच्छा!

क्रिं क्रिं क्रिं, टेलीफोन की घण्टी बज उठी। पुलीस के पेंशनयाफ़ा दारोग़ा—

वही स्वर—तिड़िंग्! तिड़िंग्! तिड़िंग्! यह क्विज़ स्टोरी का प्लाट शुरू हुआ। क्या यह भी साहित्य में पाठ की सामग्री—?

सभा०—(गम्भीरता से रोकते हुए) महाशयजी, कृपया शान्त रहें।

या०—(पाण्डुलिपि मोड़ते हुए) सभापति महोदय क्या करेंगे, ऐसे वातावरण में रचना पाठ—यह शिष्टता के विरुद्ध है।

[मन्त्री हाथ जोड़कर प्रश्नकर्ता से शान्त रहने की प्रार्थना करता है।]

नित्य०—मैं विनीत भाव से प्रेमनाथजी से आग्रह करता हूँ कि वे कुँवर साहब कुमेठी को अपनी रचना निर्विघ्न समाप्त करने दें। आप इस कालिज के एक विशिष्ट विद्यार्थी हैं। गोष्ठी के—

प्रेमनाथ—(वही प्रश्नकर्ता) प्राण हैं। ठीक है (खड़े होते हुआ) पर आप कुँवर या 'विशिष्ट' होने के बल पर ही कहानी साहित्य के दायरे में डालने का प्रयास करेंगे यह अतीत है। यह वास्तविक साहित्य-चर्चा का स्थान है। अब तक की बैठकों में ऐसा ही होता आया है—

सभा०—(खड़े होकर) मैं प्रेमनाथ जी से एक शान्त भाव से बैठने को कहूँगा। कम से कम पढ़ तो लिया जाय। अभी से—

या०—मैं आगे पढ़ने से इन्कार करता हूँ। आप अन्य रचनायें पढ़वाइए। आज के लिए क्षमा चाहता हूँ।

(प्रस्थान)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभा०—मुझे खेद है, कुँवर साहब अपनी रचना अधूरी छोड़ने पर बाध्य हुए। अब रूपाभजी अपनी 'वह्निशिखा' की कविता पढ़ेंगे।

[तुमुल करतलध्वनि के बीच रूपाभजी एक काग़ज़ निकाल-कर पढ़ने लगते हैं, सबको एक संक्षिप्त नमस्कार करने के बाद]

रू०—(दीप्त स्वर, केदारा राग में)

जल रही वह्नि, जल रही वह्नि, जल रही वह्नि चिरन्तन—
बहिर्जगत् में, मर्मस्थल में—
जले तुषानल, जले दवानल अरु बड़वानल,
चिता की वह्नि, हवन की अग्नि।

कई स्वर—धन्य! धन्य!

रू०—समराङ्गण में शोणित वह्नि जल रही अहर्निश,
महामहोत्सव बीच छिन्न मुण्ड गावत गान वह्नि के,
प्रति कबन्ध में जलती वह्नि मशाल, पिनाकी की टङ्कार;
वह्नि उद्गार, वज्र कण्ठ से उल्कावत् तोपें उगल रहीं।

कई स्वर—'भयानक'! 'भीषण'!!

[सभाभवन में मुखर प्रशंसात्मक गुञ्जन]

रू०—रुद्र नयन में शुद्ध निरञ्जन,
जलती धक्-धक् वह्निशिखा।
जले तुषानल, जले दवानल, अरु बड़वानल,
चिता की वह्नि, हवन की अग्नि।

—इत्यादि इत्यादि

बस इसी तरह का है, और मैं अधिक समय नहीं लेना चाहता। (प्रस्थान)

सभा०—कोई सज्जन कुछ कहना चाहते हों तो आ सकते हैं—

[सब चुप]

सभा०—हमारी प्रार्थना है कि चञ्चलजी भी दो-एक पंक्तियाँ पाठकों को सुनावें, यद्यपि उनका नाम आज तालिका में नहीं है।

कई स्वर—अवश्य सुनावें सुनावें,

[झेंपते मुस्कराते हुए चञ्चलजी आते हैं।]

चं०—मैं आज (जेब टटोलते हुए) के लिए कुछ लिखकर लाया था। (एक काग़ज़ निकालकर) यह एक लिख रहा 'रजनी'-सम्पादक बुरी तरह पीछे पड़े हुए थे। अपूर्ण पर पढ़े देता हूँ—पर रूपाभजी के बाद मेरा पढ़ना उचित हो तो—

रूपाभ—कोई हर्ज नहीं, आप अवश्य पढ़ें, अवश्य पढ़ें।

चं०—अर्ज़ है—

निस दिन जलस्रोत समान न बहता,
मन विहङ्ग की भाषा होती स्तब्ध;
मैं जीवित हूँ इसका प्रमाण यही
मिथ्या पङ्ख फड़फड़ाऊँ भावाकाश में;
कहाँ क्या होता, जानूँ सब, हवा भी स्तब्ध
बार-बार होता हताश भू-लुण्ठित हो।

कई स्वर—धन्य! धन्य! [व्यंग्यात्मक प्रशंसा]

एक स्वर—यह कविता है या व्याख्यान या—क्या?

सभा०—शान्त, शान्त।

चं०—अर्ज़ है—

इस पार और उस पार में बड़ा क्षीण व्यवधान,
आसन्न तिमिर बीच जलती दीपशिखा कम्पमान—
जितनी देखूँ उतनी ही बढ़ती आकुलता प्राणों की,
मृतजन फिरकर आया है, कही है गाथा हिय की।

एक स्वर—साहब, कुछ समझ में नहीं आया।

प्रेमनाथ—यही तो तारीफ़ है—

[चञ्चलजी काग़ज़ मोड़ वापस जाते हुए]

चं०—मैं प्रसन्न हूँगा यदि कालेज के छात्रगण उक्त पंक्तियों पर कुछ टिप्पणी करेंगे।

प्रे०—मैं यह जानने को उत्सुक हूँ कि उक्त कविता की भाषा क्या है, छन्द क्या है, विषय क्या है और—अन्त में—

वही स्वर—अर्थ क्या है?

[रूपाभजी अत्यन्त गम्भीर हैं और सबकी दृष्टि उन पर केन्द्रित है।]

चं०—(अपने स्थान से खड़े होकर इस प्रकार हँसते हुए मानो ये प्रश्न तुच्छ हैं और उत्तर देना निरर्थक है—)

श्रेष्ठ कविता वही है जो किसी भाषा, छन्द या विषय की मुखापेक्षिणी नहीं है। अर्थ खोजने से, समझने की शक्ति होने से मिलेगा। मुख्य वस्तु है भाव और भावुक हृदय। समझने-वाला यदि स्वयं हृदय नहीं रखता तो कविता उसके लिए व्यर्थ है।

वही स्वर—और सौ चिराग़ लेकर ढूँढ़ने से भी नहीं मिलता आज-कल के लोगों में—क्यों यही न!

चं०—(उत्तेजित होते हुए) कविता का भाव समझने के लिए भी भावुक होना आवश्यक है।

वही स्वर—पर भाव कहीं कुछ हो भी—

सभा०—(खड़े होकर शान्ति का इङ्गित करते हुए) सज्जनो, दो-एक कहानियाँ और हैं तथा अन्त में एक निबन्ध है। अब श्री रामनाथजी की एक कहानी है जो स्वयं अनुपस्थित हैं अस्वस्थता-वश। उनकी कहानी मन्त्री महोदय पढ़कर सुनावेंगे।

नित्य०—(पढ़ते हैं)

माधव दिखलाई पड़ा दूर से। पसीने से लथपथ, नग्नदेह, फ़ुटबाल के मैदान से आ रहा था वह, यूनिवर्सिटी टैङ्क में नहाने की ग़रज़ से। हाथ में रैकेट लिये मालती उसकी बग़ल से निकल जाने की फ़िराक़ में थी। वह लौट रही थी बैडमिंटन खेलकर साइकिल पर। माधव ने जाने कैसे साइकिल को छू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया। वह तो सँभल गई पर रैकेट गिर पड़ा। माधव ने दौड़कर रैकेट देते हुए हँसकर कहा—'कल दोपहर को आना।'

उत्तर में तुरन्त उसके मुँह से निकल पड़ा 'नहीं आऊँगी'—'क्यों?'.....चिकना साँवला रङ्ग, नुकीली नाक, ज़रा लम्बे ढङ्ग की गढ़न। देखने में ठीक मालती की तरह नहीं पर तो भी उसका नाम था मालती। घोंघाबसन्त लाला गोवर्धनदास की लड़की है। वे क़सम धराये हुए हैं बिना बी० ए० कराये शादी नहीं करेंगे। उसको काफ़ी स्वतन्त्रता मिली है—वह पढ़ी जो है और फिर ज्ञान का प्रकाश, स्वाभाविक सुरुचि। नवयुवक प्रोफ़ेसर माधव के यहाँ कठिन पाठ समझने के लिए उसे जाना पड़ता है—कभी, कभी।

आज रविवार है। रोज़ से कुछ जल्दी है आज मालती की सभी बातों में। आज न जाने क्यों घर के सभी कामों में वह माता का हाथ बँटा रही है। दोनों छोटे भाई-बहनों को उसने खिला-पिलाकर सुला भी दिया। दोपहर का अलसतन्द्र समय। सब लोग आराम कर रहे हैं। मालती अब भी गृह-कार्य में व्यस्त है। खाना भी नहीं खाया उसने। आज उसकी दावत है एक सहपाठिनी के यहाँ! परीक्षा निकट है, साथ में दिन भर पढ़ना है। तिरछी निगाह से सबको देख वह साइकिल निकाल चल पड़ी। खर रौद्र से आकाश उज्ज्वल.....माधव का कमरा खुला था। वह सीधे अन्दर पहुँची। नौकर ने साइकिल उठाकर अन्दर रख दी। नौकर और महराज को छोड़कर उसके यहाँ और कोई नहीं रहता। माधव सो रहा था नङ्गे बदन, रेशमी तहमत लगाये। सुदृढ़ पेशियों का नर्तन उसकी पीठ और बाहुमूल में स्पष्ट। बाल घुँघराले, अस्त-व्यस्त। मालती कुछ देर चुपचाप देखती रही, फिर एकाएक लौट पड़ी शायद घर लौटने के अभिप्राय से। माधव ने चट से पीछे से उसका आँचल पकड़कर खींच लिया। वह गिरते-गिरते बची। नाराज़ होकर बोली—

'इस तरह से कोई खींचता है? बाप रे बाप!'

'कल क्यों कहा था, नहीं आऊँगी?'

'क्यों न कहूँगी, मैं अब कभी न आऊँगी। इधर कितने 'सन्डेज़' निकल गये, कभी ख़बर भी ली थी?'

'ओह यह बात है!'

'जी हाँ, जनाब को 'अपायंट मेंट्स' से फ़ुरसत हो तब न?'

× × ×

प्रेमनाथ—बस! बस! बहुत हुआ। जनता की ओर से मेरा आग्रह है कि यह कहानी आगे न पढ़ी जाय। 'सेक्स' का नग्न प्रलाप सुनने के लिए हम लोग यहाँ नहीं इकट्ठा हुए हैं। सभापति महोदय निश्चय ही इस प्रकार की चीज़ें—

यादवेन्द्रसिंह (अपने स्थान से खड़े होकर सभापति से)—सभापति महोदय! मैं यह जानना चाहता हूँ कि प्रेमनाथजी को सबकी रचना को इस प्रकार टोकने या बन्द अधिकार कहाँ से प्राप्त हुआ?

सभा०—(खड़े होकर) शान्त! शान्त! यह कहानी अब ज़्यादा नहीं है। पर हम इसको इसलिए नहीं कि यह सुनने योग्य नहीं है। में सेक्स और सौंदर्य के बीच विभाग की रेखा कल असम्भव हो गया है। यह समय की धारा है। की इस प्रगति को रोकना असम्भव है। और फिर सेक्स के सम्बन्ध में अज्ञान रखना कहाँ तक वांछ भी एक विचारणीय विषय है। कम से कम इस तो हैं ही। और फिर सुना है कि शिक्षा विभाग एक स्वतन्त्र विषय के रूप में सेक्स-विज्ञान या यौन स्थान देने का निश्चय किया है। लोग पुस्तकें तक हैं। ऐसी स्थिति में—

प्रेम०—सभापति महोदय क्षमा करेंगे यदि मैं कहूँ विज्ञान और साहित्य की आड़ में समाज में उच्छृङ्खलता का प्रचार करना ये दोनों दो जुदा चीज़ें

सभा०—सज्जनों, कहाँ विज्ञान समाप्त होता है कुरुचि या गन्दगी आरम्भ होती है यह बताना असम्भ है प्रायः! और फिर साहित्य के अन्दर तो सभी लोगों को अक्सर कहते सुना जाता है कि वर्तमान नैतिक चित्तविकार बहुत इकट्ठा हो गया है और प्रकार के साहित्य की सृष्टि इतने प्रबल वेग से होने मैं व्यक्तिगत रूप से इसे मानने को तैयार नहीं विश्वास है कि इस प्रकार का साहित्य इसलिए है कि यही है सहज पन्थ। और फिर इसके लिए क़रार दिये जाकर शाबाशी भी ख़ूब मिलती है। के लिए यह भी कम प्रलोभन नहीं है। आज का कोई बन्धन, किसी प्रकार की बाधा, मानने को तैयार यह है युग-धर्म। तरुण की इस स्पर्धा को मैं श्रद्धा तैयार हूँ बशर्ते कि किसी प्रकार की बाधा को न मानने जिस शक्ति और जो नैतिक बल अपेक्षित है वह भी में हो; क्योंकि अशक्त का सस्ता गर्व एक छोटी वस्तु हममें यह कहने का बल है कि हम भाषा, छन्द, सुरुचि आदि का बन्धन नहीं मानते तो कविता आदि लिखना आसान तो बहुत हो जाता है पर इसको साहित्यिक कापुरुषता यदि कहें तो तरुण क्षमा करेगा—

कई स्वर—शेम! शेम!

सभा०—शान्त! शान्त! अभी एक कहानी और खैर आज जाने दें। कुछ अंश इस कहानी का लीजिए फिर अपना मन्तव्य आप लोग प्रकट करें इसके भी अनुपस्थित हैं। मन्त्री महोदय कृपया इसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गोप्री
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छ पंक्तियाँ पढ़ देंगे। इतना ही यथेष्ट होगा। देखिए यह क्स है या साहित्य—

कई स्वर—पढ़िए, पढ़िए, अवश्य पढ़िए।

नित्य०—(सकुचाता हुआ)

एक ही शय्या पर लेटे थे वे दोनों। विनोद और सुनीता। ीता उसके दृढ़ आलिङ्गन-पाश में बद्ध थी, असङ्कोच—विनोद शरीर और मन वासना के तीव्र प्रहार से जर्जरित हो सिहर ठता है बार-बार।

'सुनीता!'

'क्या?'

'कैसा लग रहा है?'

'हट्'—

कुछ उत्तप्त क्षण!

एकाएक विनोद के परिमार्जित रक्त में मानों आग लग .....बिजली दौड़ गई.....

सभा०—(खड़े हो) बस! बस! इतना काफ़ी है। जनो, लेखक के इस परिमार्जित शब्द पर ग़ौर कीजिएगा। तमाशा यह है कि शेष दोनों ही कहानियों के लेखक अनु- थत हैं—न जाने क्या कारण.....

प्रे०—(खड़े हो) वही जैसा कि आपने कहा 'साहित्यिक रुषता'—

सभा०—हो सकता है। अस्तु, तो आज की रचनायें समाप्त । अब कार्यवाही समाप्त करने के पहले यदि कोई सज्जन पढ़ी रचनाओं के सम्बन्ध में कुछ कहना चाहें तो आ सकते हैं।

प्रे०—मैं केवल दो शब्द कहानियों के सम्बन्ध में कहना ता हूँ। कविता मेरा विषय नहीं। उस पर कुछ कहना धिकार-चेष्टा होगी—

या०—अनधिकार-चेष्टा क्यों? आज-कल के हिन्दी समा- ना क्षेत्र में यही तो तमाशा है। जो जिसका विषय नहीं उसी का श्रेष्ठ समालोचक माना जाता है।

प्रे०—खैर जो हो, अन्ततः मैं इसके विरुद्ध हूँ। कविता म्बन्ध में निश्चय ही रूपाभजी कुछ कहेंगे। खेद है कि नाटक या एकाङ्की नहीं पढ़ा गया। पर ठीक ही हुआ। कि एक दिग्गज कहानी-लेखक का कहना है कि जिनसे कहानी लिखते बनता वे एकाङ्की लिखने लग जाते हैं।

[व्यापक हास्य]

या०—इसमें भी आपको सन्देह है? कहानी लिखने की क शैली विशेष है एकाङ्की नाटक।

प्रे०—ऐसा! यह नहीं जानता था—होगा, अस्तु। आज की नियों को सुनकर मेरी यह धारणा दृढ़ होती जा रही है कि शक्ति क नवीन स्फूर्ति की शुभ घड़ी में ही शक्तिहीनों की कृत्रिमता साहसिकता साहित्य को गन्दा किये दे रही है। सन्तरण- हाँ पर अनायास ही नदी का खर-स्रोत पार कर जाता है वहाँ नौसिखियों का दल विचित्र भङ्गी से नीचे के कीचड़ को ऊपर आलोड़ित किया करता है। अपितु अपनी कृत्रिमता-द्वारा ही अपना अभाव पूरा करने की चेष्टा करता है प्राणपण से। अपनी रूढ़ता को वह कहता है शौर्य, निर्लज्जता को कहता है पौरुष। बँधी गत बजाने के सिवा उसकी कोई अन्यथा गति नहीं है और इसी लिए वह आजकल प्रचलित ख़ासकर पाश्चात्य देशों की बहुत सी नई गतें संग्रह करता रहता है।

या०—सभापति महोदय से मेरा निवेदन है कि इस प्रकार का आक्षेप आधुनिक लेखकों का घोर अपमान है और वक्ता महोदय का धर्म है कि अपनी वक्तृता समाप्त कर अपने अनुचित शब्दों को वापस लें।

प्रे०—कदापि नहीं (उच्च स्वर से) मेरे शब्द आपको या किसी विशेष लेखक को लक्ष्य कर नहीं कहे गये हैं। सिद्धान्त रूप से—

सभा०—शान्त! शान्त। सज्जनो! सभा का 'टेंपर' बिगड़ता जा रहा है और ऐसी स्थिति में सभा भङ्ग करने के सिवा और कोई उपाय नहीं है। पर इसके पहले मैं रूपाभजी से दो शब्द कविता के सम्बन्ध में कहने की प्रार्थना करूँगा।

समवेत स्वर—निश्चय! निश्चय!

[रूपाभजी कुछ देर शान्ति से चारों ओर देखकर मुस्कराते रहते हैं फिर धीरे-धीरे उठकर सभापति के पास खड़े हो सभा को सम्बोधन करते हैं]

रू०—देवियो तथा सज्जनो! सभापति महोदय ने मुझे आधुनिक कविता की प्रगति के सम्बन्ध में कुछ कहने की आज्ञा दी है। पर मेरे पहले भी दो एक मन्तव्य अभी पढ़ी गई कविता के सम्बन्ध में प्रकट किये गये हैं—जैसे भाषा, छन्द, भाव आदि की अपेक्षा नहीं करती आज की कविता। मेरी धारणा है कि उक्त मन्तव्य ठीक ही हैं। कवि होने के लिए शिक्षा, अभ्यास और प्रतिभा इन तीनों का बराबर की मात्रा में सामञ्जस्य आवश्यक है पर दुःख है कि कम से कम प्रथम दोनों का हम पूर्ण अभाव देखते हैं—अधिकांश आधुनिक लेखकों में।

एक स्वर—कबीर, मीरा या सूरदास में भी शिक्षा आदि का अभाव था—पर ये महाकवि.....

रू०—(घबराकर) सज्जनो, इनकी बात छोड़िए। ये लोग अवतारी व्यक्ति थे और प्रतिभा तथा कवि-हृदय की साकार प्रतिमा थे—

एक दूसरा स्वर—प्रतिभा भी अभ्यास से उत्पन्न की जा सकती है।

रू०—(और घबराकर) सज्जनो, मुझे कम से कम वाद-विवाद का अभ्यास नहीं है और अब मैं सभापति महोदय से यह प्रार्थना करता हुआ अवसर प्राप्त करता हूँ कि वे सिंहावलोकन करते हुए सभा विसर्जित करें।

[प्रस्थान]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभा०—देवियो तथा सज्जनो! यह वास्तव में विद्यार्थियों की सभा या गोष्ठी है। मैं केवल दो शब्द कहना चाहता हूँ और वह यदि अप्रिय सत्य हो तो तरुण वर्ग मुझे क्षमा करेगा ऐसी मेरी धारणा है।

बात यह है कि भली भाँति विद्याभ्यास अथवा साहित्य-सृष्टि के लिए मनुष्य को जो अनवरत अभ्यास तथा प्रयास करना होता है और इसके लिए जिस नैतिक बल तथा मानसिक शक्ति की आवश्यकता होती है उसका निश्चय ही हम अभाव देखते हैं। समाज में अभी इस प्रयास तथा शक्ति का आदर है इसी से रक्षा है। पर एक बार किसी कारण से यदि तरुण वर्ग में यह आदर्श फैल जाय कि विद्याभ्यास या शिक्षाभ्यास त्याग करना ही श्रेय है तो अवस्था साङ्घातिक हो जायगी और व्याधि की भाँति तरुण वर्ग में फैलते देर न लगेगी, जो लोग शक्तिहीन हैं उनमें।

और हमारी आशङ्का यह है कि साहित्य में यदि के कृत्रिम दुःसाहस की लहर उठी तो अक्षम लेखकों लेखनी मुखर होगी। वास्तविक साहित्य की सृष्टि हो जायगी। आज पश्चिम में यही लहर उठी है। झँकोरा यहाँ भी पहुँच चुका है। देखें भारत अपनी अक्षुण्ण रख सकता है या इसी लहर के साथ अपना महत्त्व सदा के लिए खो बैठता है।

[धीरे धीरे यवनिका]

सारनाथ के खँडहर में

श्रीयुत शक्र

मैं सोच रहा कुछ रह-रहकर, सम्मुख मेरे खँडहर विराट!

(१)

इस भूमि-खण्ड पर एक दिवस वैभव के थे सामान जुटे।
इन जीर्ण-शीर्ण प्रासादों में प्रतिदिन कितने ही रत्न लुटे।
गूँजा करते थे कभी यहाँ शुभ सत्य-अहिंसा के सँदेश।
लोटा करते थे चरणों पर कितने नृप उन्नत नम्र वेश।
इस सारनाथ का हुआ कभी था जगती में उन्नत ललाट।
खो गये धूल में आज सभी रे, वे मेरे वैभव अशेष।
'नत हुआ कभी था विश्व यहीं'—कहता अशोक का जीर्ण लाट!
मैं सोच रहा कुछ रह-रहकर, सम्मुख मेरे खँडहर विराट!

(२)

'जग को कैसे कल्याण मिले, मानव को कैसे मिले त्राण!'
था गूँजा शान्तिमयी वाणी की निर्झरिणी का यहाँ गान।
यह 'बौद्ध-स्तूप' सिखाता था सुखमय जीवन का राग अमर।
कितने मुमुक्षुओं ने पाया निर्वाण-प्राप्ति का मार्ग सुघर।
जग हुआ समुत्सुक एक बार—'श्रुतियों को कुछ आह्लाद मिले।'
थी हुई 'तथागत' की पद-रज से भूमि कभी यह पावनतर।
जङ्गल में मङ्गल हुआ कभी, मुखरित कण्टक से पूर्ण बाट!
मैं सोच रहा कुछ रह-रहकर, सम्मुख मेरे खँडहर विराट!

(३)

उन्नति का युग यह प्रभा-पूर्ण, मेरे कनिष्क का स्वर्ण-काल!
उज्ज्वल अब भी कर याद जिसे मेरी जननी का विशद भाल।
वह चन्द्रगुप्त नरश्रेष्ठ अरे, मेरे अशोक वे नृप महान!
दुनिया ने मानी थी सत्ता सुन सत्य अहिंसा का विधान!
मेरी स्मृति में इतिहास सभी, मैं मौन यहाँ पर विकल
"देखा हमने युग सोने का"—कहते उपलों के व्यथित
सुन रहा अमर उपदेश विश्व, जो खुदे शिला पर
मैं सोच रहा कुछ रह-रहकर, सम्मुख मेरे खँडहर

(४)

मेरी वह श्रेष्ठ शिल्पकारी आदर्श हुई थी एक
वह चित्रकला मेरी अनुपम जब चमक उठी थी एक
मैं देख रहा इस खँडहर में प्रासादों का भग्न
ये विविध शैलियाँ बतलातीं वह कला-पूर्ण वैभव
मैं चौंक रहा हूँ देख-देख अब भी उत्कीर्ण शिला-
यह 'चैत्यद्वार' इस युग में भी कहता है कुछ बातें
जग अबुध पड़ा था, तभी यहाँ सज चुके मनोरम
मैं सोच रहा कुछ रह-रहकर, सम्मुख मेरे खँडहर

(५)

चूमते रक्त निर्बल जन का, जो आज कहाते बलवान
सिखला दे नर को अमर प्रेम, ओ मौन युगों की वैश
डूबता रक्त में विश्व, बचा जा ओ बलिग-विजयी
हो जीव मात्र में स्नेह, प्रकट हे बोधिसत्त्व, हो
रजकण में फिर अनुराग जगे, खुल जाय शान्ति का विशद
मानव की हिंसा-वृत्ति मिटे, कर दे फिर कोई
यह सारनाथ का भग्न-प्रान्त खोलता आज विश्व
मैं सोच रहा कुछ रह-रहकर, सम्मुख मेरे खँडहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनकी किसी से नहीं बनती

प्रिंसिपल श्रीमन्नारायण अग्रवाल एम० ए०

एक विशाल काँच के महल में न जाने किधर से एक भटका हुआ कुत्ता घुस गया। हज़ारों काँचों के टुकड़ों में अपनी शक्ल देखकर वह चौंका; उसने जिधर नज़र डाली उधर ही हज़ारों कुत्ते दिखाई दिये। वह समझा कि ये सब कुत्ते उस पर टूट पड़ेंगे और उसे मार डालेंगे। अपनी भी शान दिखाने के लिए वह भूँकने लगा। उसे सभी कुत्ते भूँकते हुए दिखाई पड़े। उसकी ही आवाज़ की प्रतिध्वनि उसके कानों में ज़ोर-ज़ोर से आती। उसका दिल धड़कने लगा। वह और ज़ोर से भूँका; सब कुत्ते भी अधिक ज़ोर से भूँकते दिखाई दिये। आख़िर वह उन कुत्तों पर झपटा; वे भी उसपर झपटे। बेचारा ज़ोर-ज़ोर से उछला-कूदा, भूँका और चिल्लाया। अन्त में ग़श खाकर गिर पड़ा।

कुछ देर बाद उसी महल में एक दूसरा कुत्ता आया। उसको भी हज़ारों कुत्ते दिखाई दिये। वह डरा नहीं, प्यार से उसने अपनी दुम हिलाई। सभी कुत्तों की दुम हिलते दिखलाई दी। वह ख़ूब ख़ुश हुआ और पूँछ हिलाता कुत्तों की ओर बढ़ा। सभी कुत्ते उसकी ओर दुम हिलाते बढ़े। वह प्रसन्नता से उछला-कूदा, अपनी ही छाया से खेला, ख़ुश हुआ और फिर पूँछ हिलाता हुआ बाहर चला गया।

जब मैं अपने एक मित्र को हमेशा परेशान, नाराज़ और चिड़चिड़ाते देखता हूँ तब तो इसी क़िस्से का स्मरण हो आता है। उनकी मिसाल भूँकनेवाले कुत्ते से नहीं देना चाहता – यह हद दरजे की बदतमीज़ी ही होगी, पर इस कहानी से वे चाहें तो कुछ सबक़ ज़रूर सीख सकते हैं।

यह दुनिया एक काँच के महल जैसी ही है। अपने स्वभाव की छाया ही उस पर पड़ती है। 'आप भले तो जग भला'; आप बुरे तो जग बुरा। अगर आप प्रसन्नचित्त रहते हैं, दूसरों के दोषों को न देखकर उनके गुणों की ओर ही ध्यान देते हैं, तो दुनिया भी आपसे नम्रता और प्रेम का बर्ताव करेगी। अगर आप हमेशा लोगों के ऐबों की ओर देखते हैं, उन्हें अपना शत्रु समझते हैं और उनकी ओर भूँका करते हैं तो फिर वे क्यों न आपकी ओर ग़ुस्से से दौड़ेंगे? अँगरेज़ी में भी एक कहावत है कि अगर आप हँसेंगे तो दुनिया भी आपके साथ हँसेगी। अगर आपको ग़ुस्सा होना और रोना ही है तब तो दुनिया से दूर किसी जङ्गल में चला जाना ही हितकर होगा।

× × × ×

अमरीका के मशहूर नेता अब्राहम लिंकन से किसी ने एक बार पूछा—'आपकी सफलता का सबसे बड़ा कारण क्या है?'

उन्होंने ज़रा देर सोचकर उत्तर दिया—"मैं दूसरों की अनावश्यक नुक्ताचीनी कर उनका दिल नहीं दुखाता हूँ।'

इसी तरह के प्रश्न का उत्तर देते हुए हेनरी फोर्ड ने कहा था—'मैं हमेशा दूसरों के दृष्टिकोण को समझने की कोशिश करता हूँ।'

मेरे मित्र की यही ख़ास ग़लती है। वे दूसरों का दृष्टिकोण समझने की कोशिश नहीं करते। दूसरों के विचारों की, कामों की भावनाओं की आलोचना ही करना अपना पवित्र कर्तव्य समझते हैं। उनका शायद यह ख़याल है कि ईश्वर ने उन्हें लोगों को सुधारने के लिए ही दुनिया में भेजा है। पर वे यह भूल जाते हैं कि शहद की एक बूँद ज़्यादा मक्खियों को आकर्षित करती है बजाय एक सेर ज़हर के।

दुनिया में पूर्ण कौन है! हर एक में कुछ न कुछ त्रुटियाँ रहती हैं; प्रत्येक व्यक्ति से ग़लतियाँ होती हैं। फिर एक दूसरे को सुधारने की कोशिश करना अनुचित ही समझना चाहिए। जैसा ईसा ने कहा था, लोग दूसरों की आँखों का तिनका तो देखते हैं पर अपनी आँख के शहतीर नहीं देखते। दूसरों को सीख देना तो बहुत आसान होता है; अपने ही आदर्शों पर स्वयं अमल करना कठिन है।

यदि आप अपने को ही सुधारने का प्रयत्न करें और दूसरों के अवगुणों पर टीका-टिप्पणी करना बन्द कर दें तो हमारे मित्र-जैसा आपका हाल कभी नहीं होगा। अगर हमारा जीवन चमकती रोशनी की तरह आकर्षक होगा तो सैकड़ों हज़ारों परवाने बरबस एकत्र होंगे और हमारे ज़रा से इशारे पर बड़ी से बड़ी क़ुरबानी करने के लिए तैयार रहेंगे। पर अँधेरे की ओर कौन खिंचता है? वहाँ तो ठोकर खाकर गिर जाने की ही अधिक सम्भावना रहेगी।

× × × ×

हाँ, इसी सिलसिले में एक बात और। आप तो दूसरों की नुक्ताचीनी नहीं करेंगे ऐसी मुझे उम्मीद है। पर अगर दूसरे ही आपकी निन्दा करना न छोड़ें तो? मेरे मित्र तो अपनी बुराई या आलोचना सुनकर आग-बबूला ही हो जाते हैं, भले ही वे दुनिया की दिन भर बुराई करते रहें। पर आपको तो ऐसे मौक़ों पर दादू की ये पंक्तियाँ मन में गुनगुना लेना बड़ा कारगर होगा—

निन्दक बाबा बीर हमारा।
बिन ही कौड़ी बहै बिचारा!

....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपन डूबे और को तारै !
ऐसा प्रीतम पार उतारै !

और अगर सचमुच कुछ त्रुटियाँ हैं जिनकी ओर 'निन्दक बाबा' आपका ध्यान खींचता है तो उन अवगुणों को दूर करना आपका कर्त्तव्य हो जाता है। जिसने उनकी ओर ध्यान दिलाया उसका उपकार भी मानना चाहिए न ?

× × × ×

एक दिन एक सज्जन से कुछ ग़लती हो गई। हमारे मित्र तुरन्त बिगड़कर बोले—

"देखिए महाशय, यह आपकी सरासर ग़लती है। आइन्दा ऐसा करेंगे तो ठीक नहीं होगा।" बेचारे महाशयजी बड़े दुखी हुए। उनका पूरा अपमान हो गया। मन में क्रोध जाग्रत् हुआ और वे बिना कुछ उत्तर दिये ही उठकर चले गये। दूसरे दिन मैंने उनसे एकान्त में कहा—'देखिए, ग़लती तो सभी से होती है। ऐसी ग़लती मैं भी कर चुका हूँ। दुखी होने का कोई कारण नहीं। आप तो बड़े समझदार हैं। कोशिश करें तो यह क्या बड़ी से बड़ी ग़लतियाँ सुधारी जा सकती हैं। ठीक है न ?'

उनकी आँखों में आँसू छलछला आये। बड़े प्रेम से बोले—'जी हाँ, मैं अपनी ग़लती मानता हूँ। आगे भला मैं वही ग़लती क्यों करने लगा ! पर कोई मुहब्बत से पेश आये तब न ? आदमी प्रेम का भूखा रहता है, केवल रोटी का नहीं।'

थोड़े से मीठे शब्दों ने अपना काम तुरन्त कर दिया। और अपने व्यवहार में मिठास लाने के लिए एक कौड़ी भी तो ख़र्च नहीं होती, पर करोड़ों दिलों को जीता जा सकता है। सभी के दिल हमारे जैसे ही हैं। किसी दूसरे व्यक्ति का दिल दुखाना, उससे कड़ुआ बोलना एक सज्जन को शोभा नहीं देता—

'घर घर में वह साईं रमता, कटुक बचन मत बोल रे !'

× × × ×

जब सरदार पृथ्वीसिंह ने हिंसा का मार्ग त्यागकर अपने आपको बापू के सामने समर्पण कर दिया तब बापू को बहुत ख़ुशी और सन्तोष होना स्वाभाविक था। पर बापू जहाँ प्रेम और सहानुभूति की मूर्ति हैं वहाँ बड़े कड़े परीक्षक भी हैं। कुछ दिनों बाद उन्होंने पृथ्वीसिंहजी से कहा—सरदार साहब ! अगर आप आश्रम में आकर मेरे आश्रम में कामयाबी से रह सकें तभी समझूँगा कि आपने अहिंसा का पाठ सचमुच सीख लिया है।'

पृथ्वीसिंहजी ज़रा चौंककर बोले—'आपका क्या मतलब, बापूजी ?'

'भाई, मेरा आश्रम तो एक 'शम्भु-मेला' जैसा ही है। जिन लोगों की कहीं नहीं बनती अकसर वे मेरे पास आ जाते हैं। उन सबको एक साथ रखने में मैं सीमेंट का काम करता हूँ। और वह सीमेंट मेरी अहिंसा ही है।'

'मैं समझ गया ! बापूजी', पृथ्वीसिंहजी ने कहा। आगे की कहानी यहाँ कहने की ज़रूरत नहीं पर इसमें बापू के प्रेममय व्यवहार की एक झलक मिल जाती है। उन्होंने अपने प्रेम और सहानुभूति से कितने ही लोगों को अपनी ओर खींचा है। बापू कड़ी से कड़ी आलोचना कर सकते हैं और करते भी हैं, पर हँसकर, मीठी चुटकियाँ लेकर अपना प्रेम बरसाकर।

× × ×

अमरीका के मशहूर लेखक इमर्सन के जीवन की एक घटना याद आती है। उन्हें गाय पालने का शौक़ था। इसलिए उनके और नन्हें बछड़े उनके मकान के पास एक कुटी में रहते थे। एक बार ज़ोर की बारिश आनेवाली थी। सारी गायें झोपड़ी के अन्दर चली गईं पर एक बछड़ा बाहर ही रह गया। इमर्सन और उनका एक लड़का दोनों मिलकर उस बछड़े को पकड़कर खींचने लगे कि वह कुटी में चला आये। पर ज्यों ही उन्होंने उसे ज़ोर से खींचना शुरू किया त्यों-त्यों वह बछड़ा अपनी सारी ताक़त लगाकर पीछे हटने लगा। बेचारे बड़े परेशान हुए। इतने में उनकी बुड्ढी नौकरानी बाहर निकली। जैसे ही उसने यह तमाशा देखा, वह दौड़ी आई और अपना अगूँठा बछड़े के मुँह में प्यार से डालकर उसे भीतर की तरफ़ ले जाने लगी। बछड़ा चुपचाप कुटी के अन्दर चला गया।

वह अनपढ़ नौकरानी किताबें और कवितायें लिखना नहीं जानती थी पर व्यवहार-कुशल अवश्य थी।

और जब जानवर भी प्रेम की भाषा समझते हैं तो मनुष्य क्योंकर न समझेंगे ?

× × ×

कल हमारे मित्र का रसोइयाँ भी बिना ख़बर दिये चला गया। बेचारा करता भी क्या ? सुबह से शाम तक महाशयजी की डाट ही खानी पड़ती थी। "तूने दाल बिलकुल बिगाड़ दी; उसमें नमक बहुत डाल दिया। बेवकूफ़, तूने साग में नमक डाला ही नहीं !" "रोटी कौन खायगा रे !" इत्यादि की झड़ी लगी रहती। जब कोई चीज़ ज़रा भी बिगड़ जाती तब तो उसे दिल खोलकर डाटा जाता। पर अच्छा भोजन बनने पर कभी भी प्रेम के दो शब्द न बोले जाते। "वाह ! तारीफ़ कर दूँ तो उसका दिमाग़ चढ़ जायगा !" मेरे मित्र कह देते। पर वह भी तो बेचारा आदमी है; उसके भी दिल है। आठ-दस रुपये का नौकर यन्त्र नहीं बन सकता। तब भाग जाने के सिवा और क्या चारा था ?

क्या आपने कभी ख़ुद ख़ाना पकाना सीखा है ? तो क्या आपको याद नहीं कि रोटी, दाल, साग आदि में आपको यह जानने की कितनी उत्कंठा थी कि भोजन कैसा है और जब आपकी पत्नी ने तारीफ़ की कि खाना अच्छा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिष्ट बना है, नमक आदि सब ठीक है, तब आपको कितनी ही हुई थी! अगर कोई कह देता 'अरे! कुछ ज़ायक़ेदार बना!' तो आपके दिल को कितनी चोट पहुँचती?

मित्र महाशय अपनी स्त्री पर भी बिगड़ते ही रहते हैं। कभी प्रेम प्रशंसा के दो शब्द बोलने की वे ज़रूरत ही नहीं समझते। उनकी स्त्री उनका घर सँभालने के लिए बस एक प्रतिष्ठित रानी हो। उनकी पत्नी का स्वभाव बहुत अच्छा है। बेचारी कड़ी बातें चुपचाप सुन लेती है और सदा अपने पति की सेवा करते रहना ही अपना धर्म समझती है। पर हमारे भी अपने आपको 'पतिदेव' मानने में कभी नहीं चूकते। सचमुच स्वयं को अपनी पत्नी का जीवन-साथी समझने के उसका 'देव' ही मानते हैं; और उनका विचार है कि को हमेशा दबाकर ही रखना चाहिए नहीं तो वे फिर सिर चढ़ने लगती हैं।

कहने का मतलब यह कि उनकी किसी से नहीं बनती—न से, न आफ़िस के कर्मचारियों से, न पत्नी से और न घर के नौकरों से। भगवान् की दया से उनके कोई बच्चा नहीं है नहीं तो उस बेचारे की भी पूरी शामत ही थी। उनका कहना है कि बच्चों को प्रारम्भ से ही डाट-डपटकर रखना चाहिए। प्यार करने से वे बिगड़ जाते हैं। पर ईश्वर गंजों को नाख़ून नहीं देता यही कुशल है।

× × × ×

उस पर भी मज़ा यह है कि वे अपनी ज़िन्दगी और विचारों से पूरी तरह सन्तुष्ट हैं। वे मानते हैं कि उनका जीवन, आचार और विचार आदर्श हैं। दूसरे लोग जो उनकी प्रतिष्ठा नहीं करते, मूर्ख हैं।

ग्रीस के महान् सन्त सुकरात ने एक बात बड़े मार्के की कही थी—"जो मनुष्य मूर्ख है और जानता है कि वह मूर्ख है, वह ज्ञानी है; पर जो मूर्ख है और नहीं जानता कि वह मूर्ख है वह सबसे बड़ा मूर्ख है।"

अच्छा हो, मेरे मित्र सुकरात के इस विचार को अपने कमरे में लिखकर टाँग लें। पर उनसे यह कहने का साहस कौन करे?

उद्बोधन

श्रीयुत 'अरुण'

रे चिरमुद्रित दृग! जाग! जाग!
नव युग की ऊषा आई, मृदु कर में मधु-प्याला लाई।
वन की जिसमें अरुणाई। मृदुलाधर पर स्मिति-फूल खिला।
उसमें शैशव का गन्ध मिला। लो किसलय-अंचल डोल हिला।
लो पी लो' की ध्वनि आई। आलस-तन्द्रा को त्याग! त्याग!
रे चिरमुद्रित दृग! जाग! जाग!

(२)

कहती मैं हूँ मधुबाला, मेरी यह जागृति की हाला।
वन का रस जिसमें ढाला। दलितों को विहँस पिलाऊँगी।
कों को आज जिलाऊँगी; मुरझाये फूल खिलाऊँगी।
जो यह मेरी मधुशाला। ओ दलितों के भय भाग! भाग!
रे चिरमुद्रित दृग! जाग! जाग!

(३)

ओ युग-युग के शोषित जन! पी लो पी लो कुछ मधु के कण।
पल बीता जाता जीवन; जीवन की तुममें प्यास जगे;
ने की उर में आस जगे; अपने ऊपर विश्वास जगे;
तोड़ सको अपने बन्धन, अब दूर करो अपना विराग।
रे चिरमुद्रित दृग! जाग जाग!

(४)

इस आँचल की छाया, फैलाती जब अपनी माया,
र कितनी भी हो काया—आ बैठे जो इसके नीचे
चाप पिये मधु दृग मींचे—जो अङ्ग-अङ्ग में रस सींचे,
कह उठे—'आज यौवन पाया—जल उठा अचिर बुझता चिराग'।
रे चिरमुद्रित दृग! जाग! जाग!

(५)

वह रजनी कितनी क्रूर सबल! कितने कोमल कलियों के दल!
निष्पीड़ित होते हाय! सरल! रो भी न सकें वे बनी मुकुल
कितनी पीड़ा से वे आकुल, जो उर के प्याले में घुल-घुल
बनती हैं दारुण हालाहल, लग जाती उर में एक आग!
रे चिरमुद्रित दृग! जाग! जाग!

(६)

अब वही किरण-मधु की धारा; टूटी वह कलियों की कारा;
जिसमें सुख बन्दी था सारा; रे छलक उठी उनकी प्याली;
हँसती वे पी-पी मतवाली; उनके मुख पर छाई लाली;
मधुपों ने आकर गुञ्जारा; मधु-मधु का गूँजा मधुर राग!
रे चिरमुद्रित दृग! जाग! जाग!

(७)

तुम भी तो ओ मानव शोषित! शत-शत चरणों से अवताड़ित
कलिका-से ही नित उत्पीड़ित; रहते हो घने अँधेरे में—
दुख कौशिकगण के डेरे में, जागो अब स्वर्ण-सवेरे में;
मैं कर दूँ तुमको परिवर्तित; गा कोयल तू भी यही राग—
रे चिरमुद्रित दृग! जाग! जाग!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पोरबन्दर

श्रीयुत सन्तराम, बी० ए०

पोरबन्दर एक छोटा सा परन्तु समृद्धिशाली रजवाड़ा है। यह काठियावाड़ के अन्तर्गत है। इसका क्षेत्रफल ६४२ वर्ग मील है। पोरबन्दर इसलिए भी हाल में प्रसिद्ध हो गया है कि गत दशहरा के पुण्य-पर्व पर वहाँ के शासक श्रीमान् महाराजा राना साहब श्री सर नटवरसिंहजी बहादुर के० सी० एस० आई० ने अपनी प्रजा के लिए एक बड़ी मनोरञ्जक शासन-प्रणाली की स्थापना की है। उनकी व्यवस्थापिका सभा में ३० में से २४ सदस्य निर्वाचित हैं और मन्त्रिमण्डल में भी प्रजा के चुने हुए मन्त्रियों की ही बहु संख्या है।

शासन-पद्धति मनोरञ्जक इसलिए है कि २४ निर्वाचित सदस्यों में से ११ जातियों के प्रतिनिधि हैं—ब्राह्मण, राजपूत, खोजे, मेमन, पारसी, बोहरे, बनिये इत्यादि। बाक़ी १३ व्यवसायगत और आर्थिक इकाइयों के प्रतिनिधि हैं। इससे किसानों, पशुपालकों, शिल्पियों (जिनमें राज कुम्हार, ठठेरे, रँगरेज़, दरज़ी, चमार, लोहार, बढ़ई और सोनार आते हैं) मल्लाहों, जुलाहों, और दूसरे व्यवसायियों में से प्रत्येक का एक-एक सदस्य लिया गया है।

महाराजा ने पाश्चात्य राजनीति-शास्त्र की सभी बातें अपने राज्य में यथासम्भव प्रचलित करने का है। परन्तु खेद है कि जाति-भेद के कारण शासन-प्रणाली यथोचित रूप से पनप नहीं सकी। प्रजा विभिन्न जातियों और उपजातियों में बँटी पड़ी सब जातियों और उपजातियों के राजनीतिक सामाजिक हित एक-से नहीं। इसलिए राज्य की सभा में जाति और उपजातिगत आधार पर प्रतिनिधि हैं। फिर भी महाराजा अपनी प्रजा में एक राष्ट्रीयता उत्पन्न करने के लिए यत्नवान् हैं।

प्रत्येक भारतीय रजवाड़े के सदृश पोरबन्दर में भी आँख सबसे पहले जिस बात पर पड़ती है वह पुराने ढ़

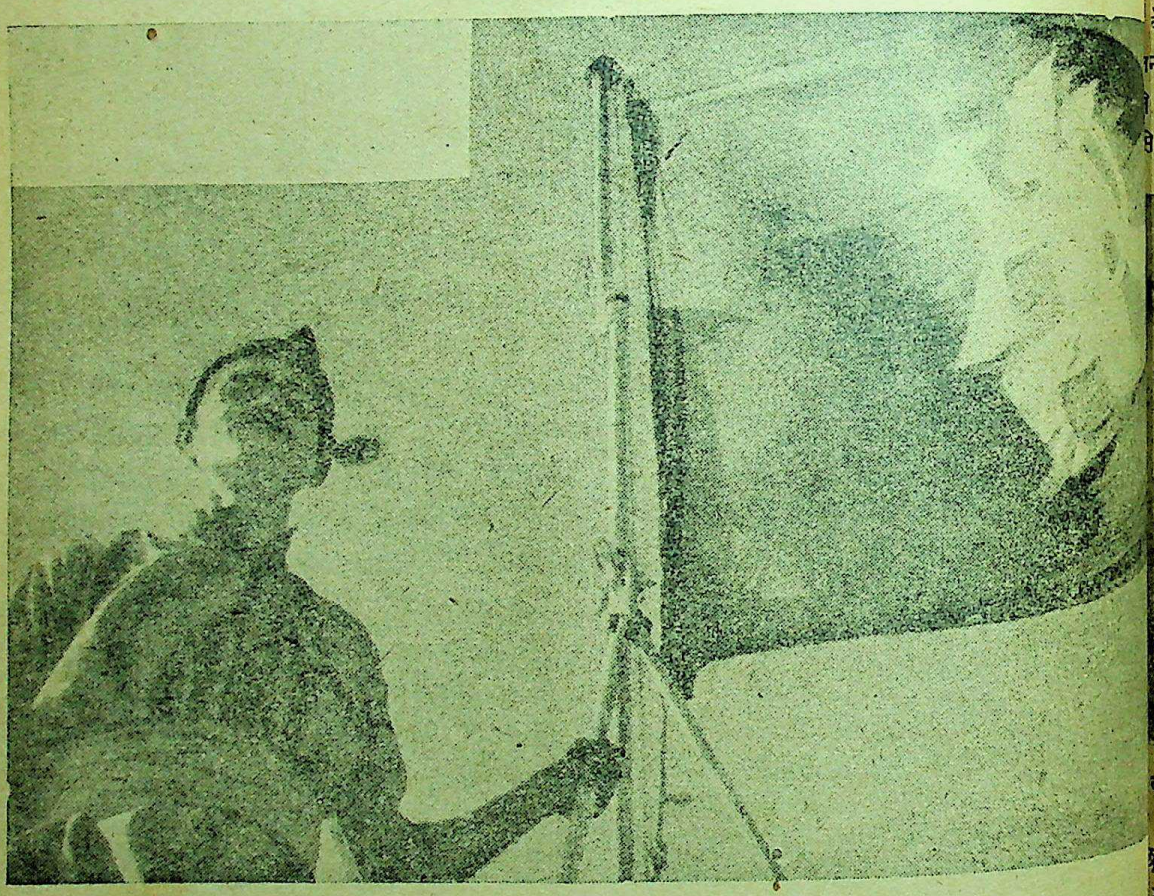

हनुमान् ध्वज

टक्कर है। महाराजा एक ओर तो हिन्दू परम्परा की हैं और साथ ही आधुनिक भी इतने हैं जितना कि को देखने की इच्छा कर सकते हैं। उनके पूर्वज के वर्ष से पोरबन्दर की गद्दी पर बैठते आ रहे हैं। वे अपने को हनुमान् के वंशज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

य की पताका में भी सफ़ेद भूमि पर किर्मज़ी रङ्ग का हनुमान् चित्र बना हुआ है।

दूसरी ओर, महाराजा क्रिकट के एक बड़े कुशल खिलाड़ी सन् १९३२ में भारत की जो टीम इँग्लेंड के साथ क्रिकट मैच खेलने गई थी उसके आप कप्तान थे। वे वायोलिन भी अच्छी बजाते हैं। आपने कई पाश्चात्य नृत्य गीत भी गाये हैं—जैसे कि 'रशियन रूबल्ज़' 'वाल्स बाम्बे' 'ओरियंटल मिसरी' 'रोज़ पीटल्ज़' इत्यादि। इन गीतों के रिकार्ड बन चुके हैं और ये बम्बई एवं कलकत्ता के सिनेमा में कभी-कभी सुनाये जाते हैं।

महाराज अपना दिन इस प्रकार बिताते हैं। यदि पैट्रोल की कमी न हो तो वे मोटर में सवार होकर दूर-दूर के गाँवों में जाते हैं। वहाँ किसानों से बात-चीत करते हैं। (पोरबन्दर की गाय का घी भारत भर में सर्वोत्तम होता है।) तब साँझ को पोरबन्दर नगर को लौट आते हैं और मकोनोची क्लब के लॉन में ७ से १० बजे तक बैठे रहते हैं। यहाँ से वे तभी जाते हैं जब स्नान करना होता है। क्लब में वे अपनी नागरिक प्रजा से गप-शप करते हैं। सबसे पहले महाराज आप सुरापान करते हैं। यदि उनसे पहले कोई दूसरा सुरा ख़रीद बैठे तो उसकी ख़ैर नहीं।

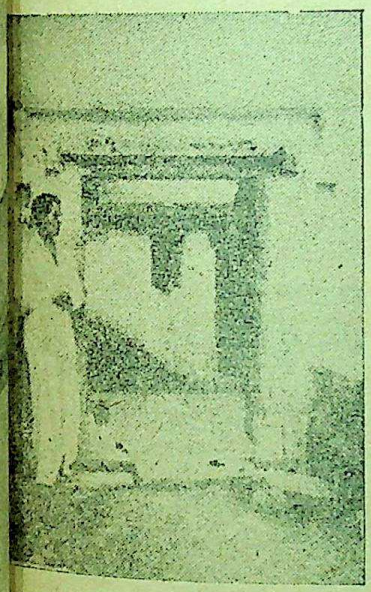

वह कोठरी जहाँ महात्मा गांधी का जन्म हुआ था

कुछ वर्ष हुए, मकोनोची क्लब के टेनिस कोर्ट में महाराजा की दृष्टि एक चतुर दीखने-वाले लड़के पर पड़ी। वह लड़का वहाँ गेंद उठाकर देने का काम किया करता था। महाराजा ने उसके सम्बन्ध में पूछताछ की और पता लगा कि स्थानीय स्कूल-मास्टर उसे एक ड्राफ़्टसमैन (नक़शानिवीस) समझता है। इस पर महाराजा ने लड़के को कला का अध्ययन करने पाँच वर्ष के लिए पैरिस भेज दिया। आज वही कप्तान नारन खेर महाराजा का एडी केम्प और दरबारी चित्रकार है।

पोरबन्दर में बहुत पुरानी और बिलकुल नई बातों का मिश्रण कहीं दृष्टिगोचर होता है। सीमेंट फ़ैक्टरी के मज़दूर एक पंक्ति में आकर पीपल के पेड़ की पूजा करते हैं। कारण यह कि सैकड़ों वर्ष हुए पराजित और राज्य से वञ्चित हुए योद्धाओं के एक दल ने इसकी शाखाओं में अपने शस्त्र छिपाकर रख दिये थे, ताकि १२ वर्ष के उपरान्त फिर जाकर उन्हें ले लें और पुनः युद्ध करके अपना छिना हुआ प्रदेश वापस ले लें।

पोरबन्दर में चूने के पत्थर की शैल-श्रेणी

पोरबन्दर में देखने योग्य एक ३०० वर्ष का पुराना लम्बा और तङ्ग घर है। वहाँ आज से ७६ वर्ष पूर्व महात्मा गांधी का जन्म हुआ था। उनके पिता वहाँ राजा के दीवान थे। यह मकान नगर के बिलकुल मध्य में है। आज भी महात्माजी के दूर के सम्बन्धी उसमें रहते हैं। एक लम्बी गली में से होकर वहाँ जाना पड़ता है। उसके अन्त में एक छोटा-सा आँगन है, जिसमें सूर्य की किरणें प्रवेश नहीं कर सकतीं। उस का फोटो लेने के लिए भी कृत्रिम प्रकाश की सहायता लेनी पड़ती है। जिस कोठरी में महात्मा गांधी का जन्म हुआ था वह इस आँगन के एक पार्श्व में है।

कमरे में एक चित्र है जिस पर मालायें लटक रही हैं, पीतल के सजाये हुए, चमकदार बर्तनों की पंक्ति है और छत के शहतीरों के साथ लटकाया हुआ एक झूला है। इन वस्तुओं के सिवा कोठरी में और कोई वस्तु नहीं। इसमें वह एक पूजा-मन्दिर-सा प्रतीत होती है।

राजधानी से दस-बारह मील के अन्तर पर एक शैल-श्रेणी है। यह बड़ी बहुमूल्य वस्तु है। यह दस मील लम्बी चूने के पत्थर की खान है। गत सौ वर्ष से इसमें से चूने का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्थर निकाला जा रहा है और आगे भी शताब्दियों तक वह निकलता रहेगा। भारत के, बरन अफ़्रीका और अरब के भी अनेक सुन्दर भवन पोरबन्दर के इस पत्थर से बने हैं।

चूने की इस खान में मज़दूरों को काम करते देखना एक बड़ा मनोरञ्जक दृश्य होता है। कोई आध दर्जन कारीगर हाथ में छैनी और हथौड़े लिये निरी चूने की चट्टान पर खड़े हैं।

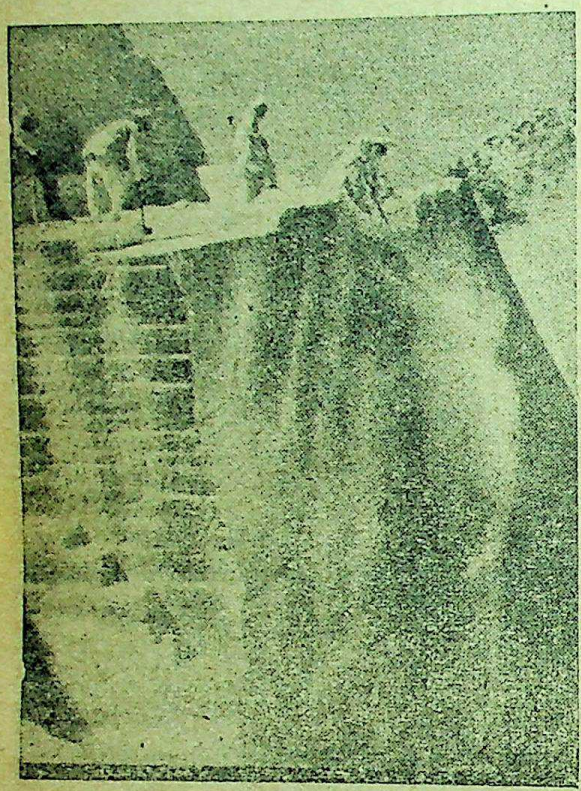

कारीगर लोग चट्टान में से पत्थर की तख़्तियाँ काट रहे हैं थोड़ी-सी चोटें पड़ते ही कोई बारह-चौदह मन का आयताकार पत्थर लुढ़कता हुआ नीचे खड्ड में जा गिरता है। वहाँ कुछ और कारीगर छैनी और हथौड़े लिये खड़े हैं। वे इस पत्थर को तोड़कर छोटी-छोटी तख़्तियाँ बना देते हैं। इन पत्थर की तख़्तियों को खान की रेल-गाड़ी में रखकर पोरबन्दर भेज दिया जाता है। वहाँ से वे आगे दूसरे स्थानों को चली जाती हैं।

पत्थर को काटकर तख़्तियाँ बनाना बड़े अभ्यास का काम है। जिस मनुष्य को पत्थर काटने का ज्ञान नहीं वह ज़ोर लगाकर थक जाने और हाथों में अखरोट के बराबर छाले उभर आने पर भी पत्थर को नहीं काट सकता। परन्तु ये सधे हुए कारीगर दो-चार चोटों से ही एक सुन्दर तख़्ती काटकर अलग कर लेते हैं।

खान के रेल-पथ के ठीक सामने जाम्बवन्ती गुफा है। यह बड़ी पवित्र मानी जाती है। कहते हैं, इसमें श्रीकृष्ण के ससुर जाम्बवान् रहा करते थे। यह वास्तव में गुफा नहीं, बरन एक भूगर्भस्थ गर्त है, जिसमें प्रवेश करने के लिए एक तङ्ग और कुएँ-जैसी फ़नल में से घिसटकर जाना पड़ता है। इस गुफा में एक पूज्य साधु रहता है। वह १७ वर्ष तक इसके बाहर नहीं आया था। उसके पास सांसारिक सम्पत्ति नहीं थी। उस अँधेरे गर्त में के प्रकाश में धर्म-ग्रन्थों का पाठ किया करता था लोग खाने के लिए उसे जो कुछ दे जाते थे उसी ही वह सन्तुष्ट रहता था। कोई ढाई-तीन वर्ष हुए,

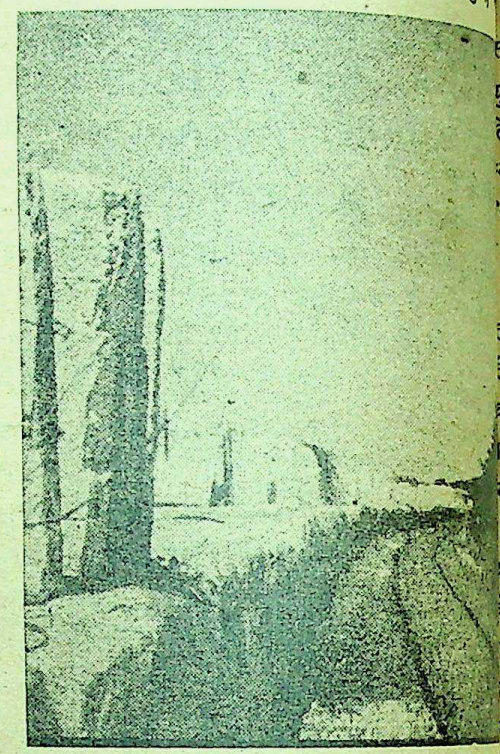

चूने के पत्थर की खान के रेल-पथ के साथ-साथ पत्थर तख़्तियों के बड़े-बड़े ढेर लगे हुए हैं

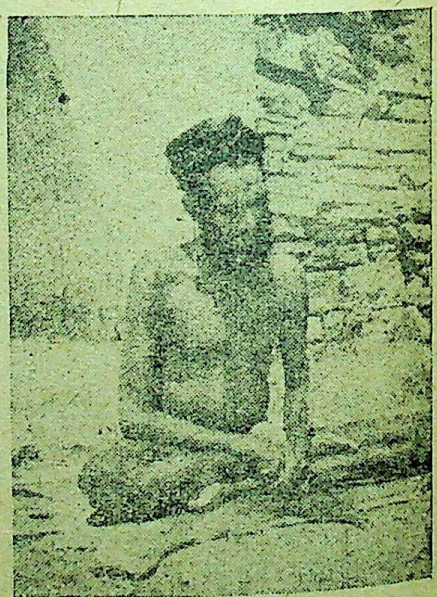

जाम्बवन्ती गुफा-निवासी साधु

यहाँ दिखाया गया है वह उस कुटी में ही महात्मा मृगछाला पर ध्यानस्थ बैठे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योरप के युद्ध का प्रारम्भ और अन्त

श्रीयुत नरोत्तमप्रसाद नागर

अत्युक्ति न होगी यदि यह कहा जाय कि हिटलर के उत्थान साथ योरप के युद्ध का प्रारम्भ और उसके पतन के साथ योरप युद्ध का अन्त होता है। १९३० में हिटलर जर्मनी के राज-तिक क्षेत्र में प्रवेश करता है और जनवरी ३०, १९३३ को सलर के पद पर पहुँच जाता है। इसके बाद, प्रेसीडेंट न्बर्ग की मृत्यु हो जाने पर, जर्मनी की पूरी डिक्टेटरी उसके में आ जाती है।

जर्मनी के राजनीतिक क्षेत्र में हिटलर के प्रवेश के ये दिन न ल योरप के ही बल्कि सारे संसार के इतिहास में विशेष महत्त्व ते हैं। इन्हीं दिनों, सितम्बर १९३१ में, जापान ने मंचूरिया आक्रमण किया था, और विश्व की शान्ति-रक्षा का भार राष्ट्रों के कन्धों पर होना चाहिए था, वे टुकुर-टुकुर देखते गये थे।

बात केवल इतनी ही नहीं थी। जापान ने जब मंचूरिया आक्रमण किया तब आशा यह की जाती थी कि राष्ट्र-संघ और के प्रमुख सदस्य—विशेषकर ब्रिटेन—इस आक्रमण का सक्रिय घ करेंगे। लेकिन ऐसा हुआ नहीं। जो कुछ हुआ वह इसके विपरीत था। जेनेवा में ब्रिटेन के परराष्ट्रमन्त्री जान मन ने विरोध के स्थान पर जापान की इतनी सुन्दर वकालत के-जापानी सदस्य मात्सुओका गद्गद होकर कह उठे—नी अच्छी वकालत तो मैं स्वयं भी नहीं कर सकता था।" इस एक घटना से यह पता चल जाता है कि विश्व-शान्ति क्षा करनेवाली एकमात्र संस्था की उस समय क्या दशा थी आक्रमणकारी राष्ट्रों का विरोध करने की कितनी शक्ति उस सङ्गठित थी। लेकिन यह तो प्रारम्भ ही है। जर्मनी की बाग-पूरी तरह हाथ में आ जाने के बाद हिटलर ने जो पहला काम वह था मार्च १९३५ में वार्साई सन्धि के फ़ौजी नियन्त्रणों खुलकर उल्लङ्घन करना। वार्साई सन्धि को रद्दी की टोकरी कते हुए हिटलर ने बड़े पैमाने पर और अनिवार्य फ़ौजी रियाँ शुरू कर दीं और घोषणा की कि जर्मनी ने पनडुब्बियों नाना शुरू कर दिया है।

इस घोषणा से सभी युद्ध-विरोधी राष्ट्र आशङ्कित और विच-हो उठे। कमर कसकर युद्ध की ओर अग्रसर होनेवाले को रोकने के लिए राष्ट्र-संघ की बैठक हुई और उसमें भी प्रकट किया गया। लेकिन यह विरोध भी निरा क विरोध ही रहा। कारण कि एक ओर यह विरोध रहा था और दूसरी ओर, गुपचुप, ब्रिटेन जर्मनी से समुद्री स्त्र-सम्बन्धी सन्धि कर रहा था। इस सन्धि के अनुसार सीमा तक—ब्रिटेन की समुद्री शक्ति का एक तिहाई तक—

'रक्त और भूमि' नाज़ी—पताका

जर्मनी को समुद्री बेड़ा तैयार करने का अधिकार दे दिया गया। इसी बीच एक और घटना हो गई। प्रथम महायुद्ध के हिस्सा-बाँट में इटली को कुछ नहीं मिल सका था, यद्यपि उसे आश्वासन पूरा-पूरा दिया गया था। इस बात को इटली भूला नहीं था और अपनी इच्छा-पूर्ति के लिए उपयुक्त अवसर की खोज में था। १९३५ के प्रारम्भ में ही यह प्रकट हो गया था कि मुसोलिनी एबीसीनिया पर आक्रमण करना चाहता है। एबीसीनिया-सम्राट् ने ३ जनवरी को राष्ट्रसंघ को सूचित भी कर दिया था। लेकिन ग्रेट ब्रिटेन और फ्रांस ने इस पर विशेष ध्यान नहीं दिया—ध्यान देना भी न चाहा। कारण कि एबीसीनिया के हिस्सा-बाँट में ये लोग भी बहुत दिनों से—१९०६ से—दिलचस्पी रखते थे जून में ईडन रोम गये और एबीसीनिया के काफ़ी भाग पर इटली के दावे को उन्होंने स्वीकार किया और शेष को ब्रिटेन के नियन्त्रण में रखना चाहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एबीसीनिया और इटली के संघर्ष को रोकने लिए किये गये इस निर्णय का स्वयं ब्रिटेन में भी घोर विरोध हुआ और फल-स्वरूप सर सैमुअल होर को त्याग पत्र देकर अपनी तथा ब्रिटेन की

नाज़ी-सञ्चालित योरप का स्वप्नद्रष्टा हर हिटलर

लाज बचानी पड़ी। जो भी हो, मुसोलिनी का जहाँ तक सम्बन्ध है, वह इतने से सन्तुष्ट न हुआ। एबीसीनिया-रूपी रोटी को वह ब्रिटेन के साथ बाँटकर नहीं, अकेले ही खाना चाहता था। फलतः उसने ३ अक्टूबर को एबीसीनिया पर आक्रमण कर दिया। राष्ट्रसंघ की फिर बैठक हुई। इटली-एबीसीनिया-संघर्ष अब उस स्थिति में पहुँच गया था जब कि किसी प्रकार की लीपा-पोती करना सम्भव नहीं था। फलतः यह स्वीकार किया गया कि मुसोलिनी आक्रमण करने का अपराधी है और दण्ड-स्वरूप उसकी आर्थिक नाकेबन्दी की जाय। इस निर्णय के अनुसार तय हुआ कि पचास देश—राष्ट्रसंघ के सदस्य—इटली को रुपये-पैसे, अस्त्र-शस्त्र तथा अन्य औद्योगिक सामग्री से कोई मदद नहीं देंगे।

एक ओर तो यह निर्णय किया गया और दूसरी ओर इटली के लिए वर्जित सामग्री की सूची में लोहा, इस्पात, और सब से बढ़कर पेट्रोल नहीं शामिल किया गया।

महान् रोमन साम्राज्य की पुनःस्थापना का सुखस्वप्नद्रष्टा मुसोलिनी

वार्साई की सन्धि के बाद योरप में फ्रांस ने चेकोस्लोवाकिया और पोलैंड से सन्धि करके अपना महत्त्व बढ़ा लिया था। फ्रांस का यह महत्त्व ब्रिटेन को रुचिकर और भीतर ही भीतर अमरीका से मिलकर उसे खत्म करना चाहता था। फ्रांस भी यह जानता था। लेकिन वह ब्रिटेन से इतना डर नहीं था जितना कि अपने चिरशत्रु से। यदि अधिक नहीं तो कम से कम फ्रांस को इतनी आशा तो थी ही कि जर्मनी के मुक़ाबले में वह अधिक पसन्द करेगा।

लेकिन फ्रांस की यह आशा पूरी नहीं हुई और उसे निराश होना पड़ा। १९३५ में वार्साई की सन्धि का भंग कर जब जर्मनी ने पूरे ज़ोर-शोर से सैनिक तैयारियाँ शुरू कर दीं तो फ्रांस ने, अपनी सुरक्षा की दृष्टि से, रूस से सन्धि कर ली और राष्ट्रसङ्घ में निमन्त्रित कर दिया। इसके साथ-साथ फ्रांस को आशा थी कि ब्रिटेन भी जर्मनी के विरुद्ध कोई क़दम उठायेगा। लेकिन जैसा कि हम पहले कह चुके हैं, जर्मनी का विरोध करने के बजाय ब्रिटेन ने समुद्री सन्धि कर जर्मनी के हाथ और मज़बूत कर दिये।

हिटलर यह सब देख और समझ रहा था। अँगरेज़ों के इस मनमुटाव अथवा सर्वथा निष्क्रिय सहयोग से लाभ उठा उसने राइनलैंड पर फिर से क़ब्ज़ा कर लिया। इसका कारण यह था कि रूस से सन्धि करके स्वयं फ्रांस ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व को भङ्ग कर दिया है। अतः बिना किसी सङ्कोच के अब राइनलैंड पर अधिकार कर सकता है।

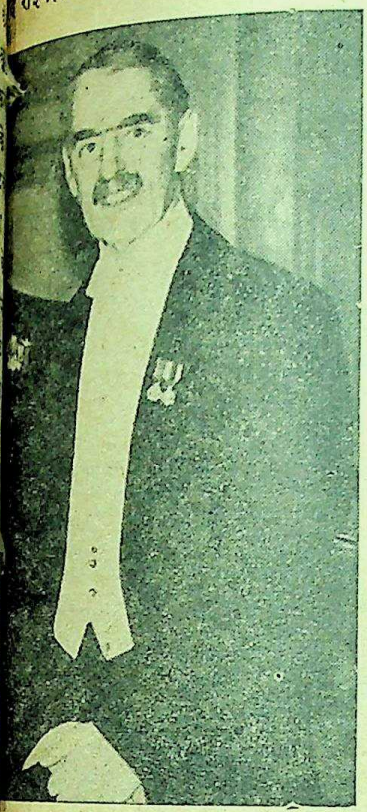

ब्रिटेन के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री

मिस्टर नेवाइल चेम्बरलेन, जो महायुद्ध के आरम्भ से पूर्व धुरी-राष्ट्रों को प्रसन्न करने के पक्ष में थे पर अन्त में जिन्हें हिटलर के विरुद्ध युद्ध-घोषणा करनी पड़ी थी।

केवल एक ही ओर से फ्रांस सहायता की आशा कर सकता था, लेकिन उस ओर से कोई आशाजनक चिह्न नहीं दिखाई पड़ा। ब्रिटेन चुप रहा! इसके बाद हिटलर ने फ्रांस और ब्रिटेन के सामने प्रस्ताव रक्खा कि योरप युद्ध से बच सकता है यदि फ्रांस रूस से सम्बन्ध-विच्छेद कर दे।

फ्रांस इसके लिए तैयार नहीं हुआ। ब्रिटेन से किस सीमा तक सक्रिय सहयोग उसे मिल सकता है, यह फ्रांस जानता था। रूस से सम्बन्ध तोड़ लेने पर वह और भी कमज़ोर पड़ जाता। यही फ्रांस का चिर-शत्रु जर्मनी चाहता था। जर्मनी की नीति इसी में थी कि वह योरप की सभी शक्तियों के हृदय में एक दूसरे के प्रति सन्देह और अविश्वास पैदा कर दे।

अपनी इस कूटनीति में, प्रत्यक्षतः, हिटलर सफल भी हो गया है। योरप की शक्तियों में सहयोग का अभाव है, सिवा अपनी रक्षा के किसी दूसरे की चिन्ता नहीं है, यह बात इससे पूर्व कई बार प्रकट हो चुकी थी। जापान ने जब मञ्चूरिया पर आक्रमण किया, तब कोई नहीं बोला। इटली ने एबीसीनिया को बिना किसी बाधा के जब उदरस्थ कर लिया तब भी विरोध करने का कोई साहस न कर सका—अथवा कहिए कि जान बूझकर विरोध नहीं किया गया।

इन तथा इसी तरह की अन्य घटनाओं पर जब हम विचार करते हैं तब ऐसा प्रतीत होता है कि योरप की शक्तियाँ सङ्गठित होकर कभी कोई काम नहीं कर सकतीं, सहयोग और सहकारिता का उनमें अभाव है। लेकिन बात वास्तव में ऐसी नहीं है।

फ्यूहरर (हर हिटलर)

एक-दो बातें ऐसी भी हैं जिनके बारे में सब सहमत हैं और एक स्वर से जिनका सब समर्थन करते हैं। उदाहरण के लिए लाल रूस के विरोध को लिया जा सकता है। जापान, इटली और जर्मनी की आक्रमणकारी नीति का सक्रिय विरोध न करने का कारण भी यही है। जापान-जर्मनी-इटली के, आँखें मूँदकर, हाथ मज़बूत करते जाने के पीछे भी यही रहस्य छिपा हुआ है कि इनके द्वारा लाल रूस का तख़्ता पलट दिया जाय।

लाल रूस के प्रति योरप के कतिपय राष्ट्रों की इस नीति को अच्छी तरह समझने की आवश्यकता है। प्रथम महायुद्ध के विजेता राष्ट्रों के सम्मुख प्रमुख रूप से दो ही उद्देश्य थे—एक तो जर्मनी को सदा के लिए पङ्गु कर डालना, दूसरे लाल रूस का तख़्ता पलटकर फिर से वहाँ पूँजीवादी व्यवस्था की स्थापना करना।

इन दोनों उद्देश्यों की पूर्ति के लिए विजेता राष्ट्रों ने कुछ ऐसे उपायों और कूटनीति का अवलम्बन किया जिनका अन्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीसरे महायुद्ध के रूप में हुआ। ७ नवम्बर, १९१७ में सोवियट प्रजातन्त्र की नींव पड़ी थी और सबसे पहला कार्य जो रूस ने किया वह था विजित और विजेता की भावनाओं से मुक्त शान्ति का प्रस्ताव। यह प्रस्ताव करने की आवश्यकता नहीं, गया—बल्कि विजेताओं के हिस्सा-बाँट में रूमानिया सबसे अधिक भाग्यशाली रहा।

जो भी हो, एक बात इससे प्रकट होती है—रूस का आगे चलकर यह विरोध और भी उग्र रूप ले

जर्मनी का योरपीय गढ़

हिस्सा-बाँट के चक्कर में अस्वीकृत हो गया। लेकिन रूस इससे निराश नहीं हुआ और उसने शत्रु-राष्ट्रों से मार्च १९१८ में ब्रेस्ट लिटोवस्क नामक सन्धि कर ली।

इस सन्धि का विजेता राष्ट्रों ने विरोध किया और दण्डस्वरूप सभी शान्ति वार्त्ताओं से रूस का बहिष्कार कर दिया गया। इस सन्धि में शामिल तो रूमानिया भी हुआ था, लेकिन ध्यान देने की बात है कि रूस की तरह रूमानिया को दण्डित नहीं किया लेता है। १९१८ की ग्रीष्म ऋतु के समाप्त जापान, जर्मनी और ब्रिटेन क्रमशः साइबेरिया, मुर्मांस्क पर आक्रमण करते हैं और उत्तर, पूर्वी सरहदों पर रूस-विरोधी स्थानिक सरकारें स्थापित कोशिश की जाती है।

विचित्र-सी बात है। जर्मनी से सन्धि हो विरोध करने के लिए शत्रु और मित्र सब एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वी का विहङ्गम दृश्य

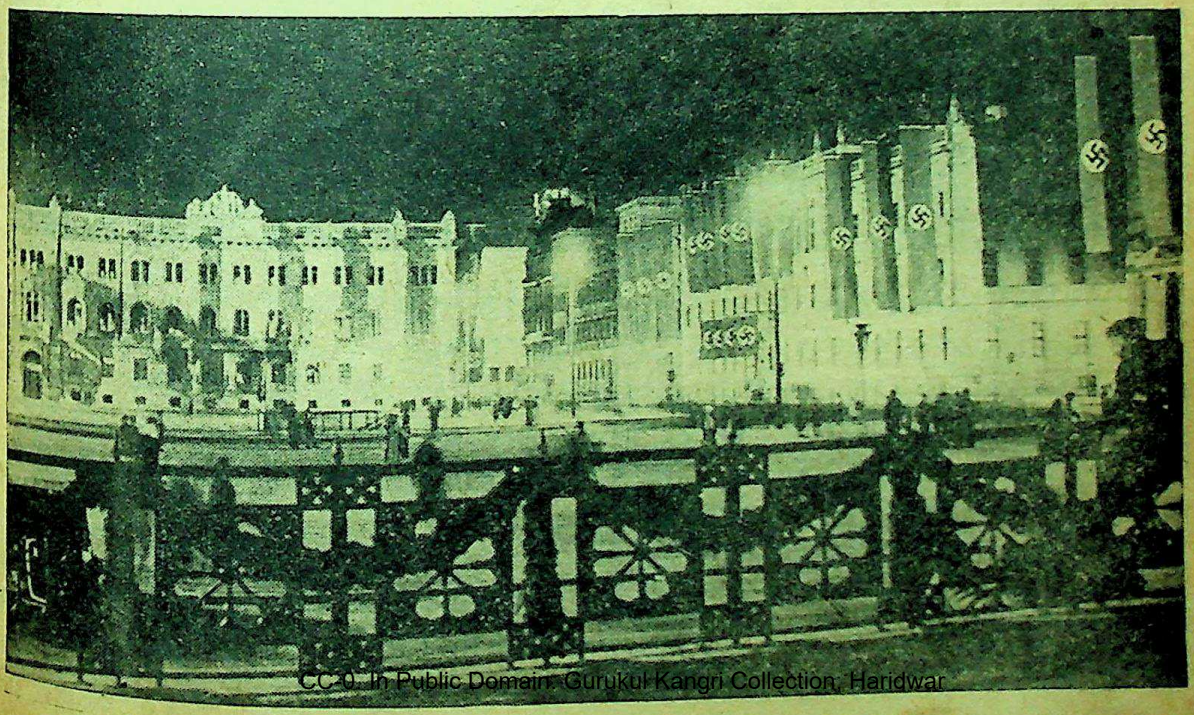

आबाद बर्लिन का एक दृश्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१० अप्रैल, १९१९ को फ्रांस, इँगलैंड, अमरीका, इटली और जापान की संयुक्त राय से एडमिरल कोलचक को आक्रमण कर मास्को पर अधिकार करने के लिए पूरी मदद दी जाती है, लेकिन, जैसा कि हम सभी जानते हैं, कोलचक कभी मास्को न पहुँच सका और सारी योजना विफल हो गई।

ब्रिटेन ने इसके बाद रूस का सीधा विरोध न करके दूसरा रास्ता पकड़ा। वह रास्ता था पोलैंड को रूस के विरुद्ध लड़ने के लिए अस्त्र शस्त्रों तथा अन्य युद्ध-सामग्री की पूरी मदद देना। यह काम ब्रिटेन ने तुरन्त शुरू कर दिया। लेकिन यह काम ऐसा था जिसका काफ़ी विरोध स्वयं ब्रिटेन में हुआ और वहाँ की मज़दूर पार्टी ने जाली जार्ज नामक जहाज़ पर पोलैंड के लिए जानेवाले सामान को लादने से साफ़ इन्कार कर दिया।

ब्रिटेन ने अब अनुभव किया कि रूस को एकदम 'हरिजन' बनाने से काम नहीं चलेगा, अतः रूस को अपनी बिरादरी में मिलाने के प्रयत्न शुरू हुए। लेकिन यह प्रयत्न भी काफ़ी कूटनीति से भरे हुए थे। लायड जार्ज ने एक विश्व-कान्फ़्रेंस का आयोजन किया और इसमें रूस और जर्मनी को भी निमन्त्रित किया गया। इस कान्फ़्रेंस में अमरीका ने भाग नहीं लिया। रूस को अपनी मण्डली में मिलाने की शर्तें यह रक्खी गईं कि लाल रङ्ग का मोह छोड़ दे, ज़ार के क़र्ज़ों का सूद अदा करे और विदेशी आर्थिक नियन्त्रण को स्वीकार करे।

रूस ने इन शर्तों को अस्वीकार किया। जर्मनी के सामने भी इसी तरह की शर्तें रक्खी गईं और रूस की तरह वह भी कान्फ़्रेंस से असन्तुष्ट रहा। परिणाम इसका यह हुआ कि रूस और जर्मनी ने मिलकर रैपेलो सन्धि पर हस्ताक्षर किये। इस सन्धि के अनुसार एक ओर जर्मनी ने लाल सरकार द्वारा ज़ब्त जायदाद पर से अपने अधिकार को और दूसरी ओर रूस ने वार्साई सन्धि द्वारा जर्मनी पर लादे गये हरजाने को छोड़ दिया।

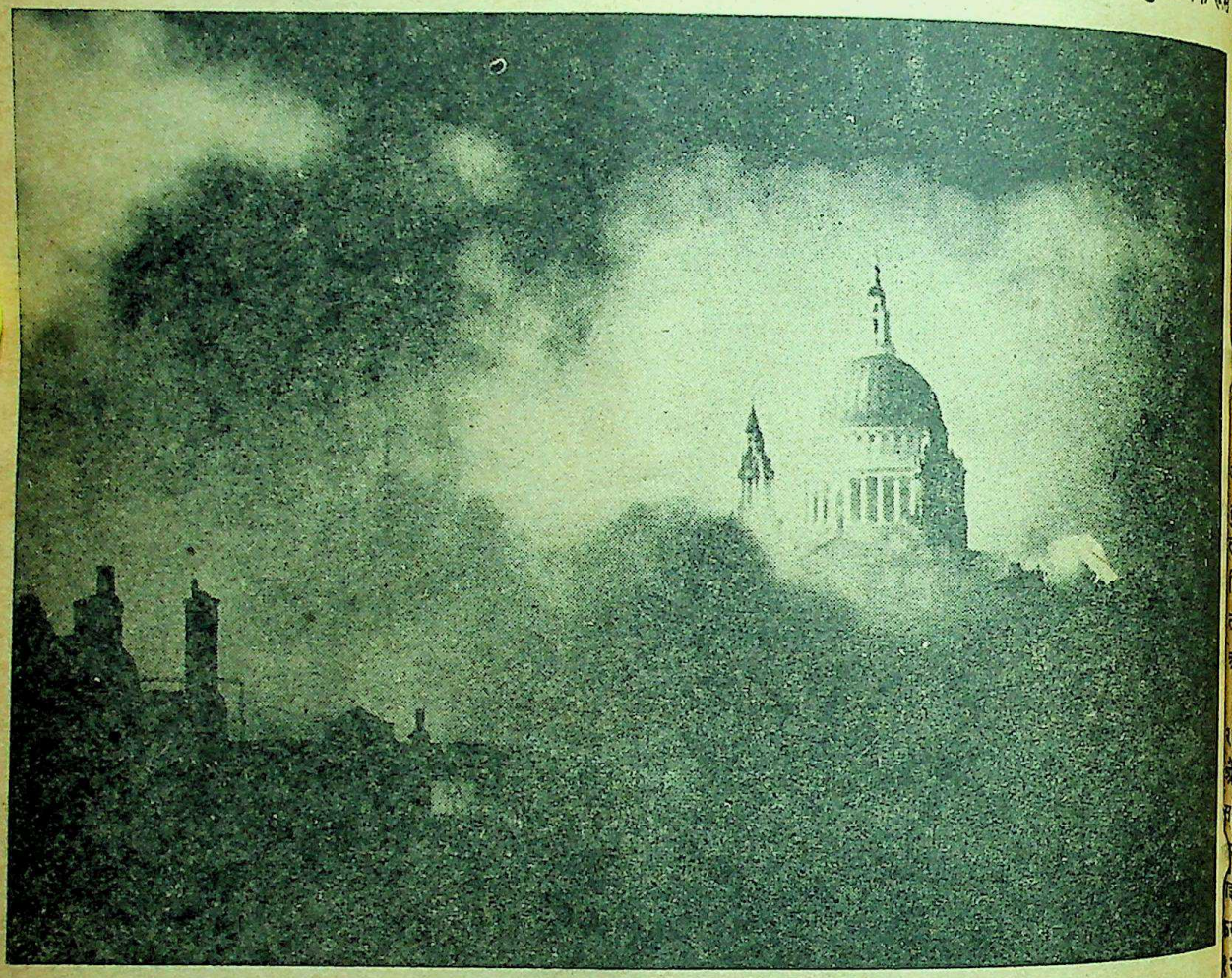

अग्नि की लपटों और धुयें के बादलों से आवृत लन्दन का सेण्टपाल गिरजाघर

योरप के विजेता राष्ट्रों को जवाब देने के लिए जर्मनी ने एक बार नहीं बल्कि अनेक बार रूस से सन्धि की है और रूस भी उसके साथ आपद्धर्म के रूप में हाथ मिलाता रहा है। इस नैतिक खेल का अन्त करके जर्मनी को अपने दल में मिलाने के लिए १९३४ में लोकार्नो सन्धि की गई। ब्रिटिश कैबिनेट ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिनिस्टर के शब्दों में लोकार्नो सन्धि का उद्देश्य जर्मनी को रूस के विरुद्ध तैयार करना था।

इस सन्धि के अनुसार जर्मनी को राष्ट्रसंघ में सम्मिलित कर दिया गया और संघ की कौंसिल में भी जगह देने का आश्वासन दिया गया। लेकिन अमरीका का प्रोत्साहन पाकर ब्राज़ील ने इसमें अड़ङ्गा लगा दिया और जर्मनी को संघ की कौंसिल में स्थायी जगह नहीं मिल सकी। परिणाम इसका जो होना था वही हुआ। जर्मनी का विक्षुब्ध होना और विक्षुब्ध होकर रूस से (मार्च १९२६) रैपेलो सन्धि की पुनरावृत्ति!

हिटलर के आगमन और जर्मनी की बागडोर अपने हाथ में सँभालने तक स्थिति में—विशेषकर जर्मनी की शक्ति में—काफ़ी परिवर्तन हो गया था। वार्साई की सन्धि को रद्दी की टोकरी में फेंककर खुलेआम शस्त्रीकरण करना, उपेक्षा और घृणा के साथ राष्ट्रसंघ से अलग हो जाना—यहाँ तक कि राष्ट्रसंघ से जब जर्मनी अलग हुआ और रूस ने उससे अनाक्रमण सन्धि करना चाहा तब इस बार उसका साफ़ इन्कार कर देना आदि ऐसी बातें हैं जो जर्मनी के शक्तिशाली रूप को प्रकट करती थीं।

तेज़ी के साथ हिटलर युद्ध की तैयारी कर रहा है, यह सभी जानते थे। जर्मनी की इस तैयारी से सबसे अधिक भयभीत हुआ फ्रांस और अपनी सुरक्षा के लिए उसने रूस से सन्धि कर ली और उसे राष्ट्रसंघ का भी सदस्य बना लिया। भय तो ब्रिटेन को भी था, लेकिन ब्रिटेन को आशा थी कि जर्मनी तथा अन्य आक्रमणकारी राष्ट्र जापान और इटली योरप पर आक्रमण न करके रूस पर ही आक्रमण करेंगे।

इसी आशा की पूर्ति के लिए ब्रिटेन अन्त तक प्रयत्न करता रहा। १९३६ में जर्मनी ने राइनलैंड पर क़ब्ज़ा कर लिया और ब्रिटेन की सहायता के अभाव में फ्रांस कुछ विरोध न कर सका। इसके साथ ही हिटलर की नज़र आस्ट्रिया की ओर घूमी और जर्मन-विरोधी चान्सलर की वहाँ हत्या कर दी गई। लेकिन उस समय जर्मनी के लिए आस्ट्रिया पर क़ब्ज़ा करना सम्भव न हुआ। इसका अवसर आया बाद में। १२ मार्च, १९३८ को हिटलर ने आस्ट्रिया को जर्मनी में सम्मिलित कर लिया।

यह सभी जानते थे कि आस्ट्रिया के बाद हिटलर का अगला क़दम जेकोस्लोवाकिया की छाती पर पड़ेगा। बिना समय खोये लिटविनोफ़ ने प्रस्ताव किया कि हिटलर को रोकने के लिए तुरत सब शक्तियों की एक कान्फ्रेंस की जाय। ब्रिटिश सरकार ने यह कहकर इसे अस्वीकार कर दिया—रूस इस बार संसार को सैद्धान्तिक दृष्टि से दो विरोधी भागों में बाँटना चाहता है।

हिटलर को रोकने के लिए सभी शक्तियों की कान्फ्रेंस करने के स्थान पर ब्रिटेन ने दूसरा काम किया और म्यूनिख पैक्ट २९ सितम्बर १९३८ के द्वारा जेकोस्लोवाकिया के टुकड़े कर एक टुकड़ा जर्मनी को सौंप दिया। चैम्बर्लैन ने म्यूनिख पैक्ट को एक बहुत बड़ी राजनीतिक जीत के रूप में प्रकट किया। वे शायद सोचते थे कि अब क्या है, जेकोस्लोवाकिया के रास्ते रूमानिया के खेत और तैलकूपों पर क़ब्ज़ा करने के बाद जर्मनी रूस से बहुत लम्बी लड़ाई लड़ सकेगा।

ब्रिटेन की यह आशा पूरी नहीं हुई। हिटलर ने म्यूनिख पैक्ट से असन्तोष प्रकट करना शुरू किया और कहा कि वास्तव में उसकी सीमा का जितना विस्तार होना चाहिए था, उतना नहीं हुआ। १५ मार्च, १९३९ को हिटलर ने प्राग पर आक्रमण किया और अगले आक्रमण के लिए उपयुक्त दो सौ मील लम्बा सीमा-क्षेत्र उसने प्राप्त कर लिया।

इसके तीन दिन बाद फिर लिटविनोफ़ ने ब्रिटेन, फ्रांस, पोलैंड, रूमानिया, टर्की और रूस की कान्फ्रेंस करने का प्रस्ताव पेश किया। लार्ड हैलीफ़ैक्स ने इसे 'अभी अनावश्यक' कहकर टाल दिया। उधर हिटलर की गति बहुत तेज़ थी। जेकोस्लोवाकिया के एक सप्ताह बाद ही, २२ मार्च १९३९ को जर्मन सेना ने लिथुआनिया के मेमेल को अपने राज्य में मिला लिया।

युद्ध की सम्भावना को अब और अधिक आँखों की ओट रखना ब्रिटेन के लिए सम्भव नहीं रहा। हिटलर के विरुद्ध जिस संयुक्त घोषणा की बहुत पहले से आशा की जा रही थी वह अब पूरी हुई। ब्रिटेन और फ्रांस ने पोलैंड आदि को पारस्परिक सहायता की गारण्टी दी और रूस को भी अपने 'मोर्चे' में सम्मिलित करने का प्रयत्न आरम्भ हुआ।

लेकिन रूस को ब्रिटेन से अब कोई आशा नहीं रही थी। जेकोस्लोवाकिया को जिस सहज रूप में बलिदान होने दिया गया, उसे देखकर रूस को बहुत निराशा हुई। सच तो यह है कि रूस ने जेकोस्लोवाकिया के बलिदान को, रूस पर होनेवाले भावी आक्रमण के लिए ब्रिटेन द्वारा जर्मनी को दिये गये अग्रिम पुरस्कार के रूप में माना था। इसके सिवा रूस को एक और भी शिकायत थी। यह जानते हुए भी कि रूस के बिना पोलैंड को सक्रिय सहायता नहीं दी जा सकती, पोलैंड को गारंटी देते समय रूस से परामर्श तक नहीं किया गया।

रूस की दो माँगें थीं। एक तो यह कि सम्भव है नाज़ी बाल्टिक स्टेट्स में आन्तरिक विद्रोह कराने का प्रयत्न करें, ऐसे प्रयत्नों को रोकने के लिए सब कुछ करने की गारंटी की जाय। दूसरे यदि हिटलर ने पोलैंड पर आक्रमण किया—जिसकी बिल्कुल पूरी सम्भावना थी—तो उसकी रक्षा और जर्मन सेनाओं का विरोध करने के लिए पोलैंड में रूसी सेनाओं का भेजना स्वीकार किया जाय।

चैम्बर्लैन ने रूस की इन शर्तों को स्वीकार नहीं किया अथवा यह कहिए कि उनकी ओर विशेष ध्यान नहीं दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूस से समझौते की बातें अत्यन्त ढुलमुल गति से चलती रहीं और अन्त में वही हुआ जो कि नहीं होना चाहिए था, लेकिन जो फिर भी, प्रथम महायुद्ध के बाद से, अनेक बार हो चुका था।

ईरान में विजय-योजना-निर्माण में व्यस्त बृहत्त्रय

२३ अगस्त, १९३९ को जर्मनी और रूस में फिर अनाक्रमण सन्धि हो गई और चैम्बर्लेन अपनी ढुलमुल नीति को लिये अलग खड़े रह गये। चैम्बर्लेन के सामने रूस ने जिन शर्तों को रक्खा था, प्रायः उन्हीं शर्तों पर और अधिक सुविधाओं के साथ रूस-जर्मनी की यह सन्धि हुई। इसके एक सप्ताह बाद ही १ सितम्बर १९३९ को हिटलर ने पोलैंड पर आक्रमण कर दिया और उस दूसरे विश्वव्यापी महायुद्ध का प्रारम्भ हो गया जिसके एक भाग का अभी, हिटलर की मृत्यु के साथ-साथ, ७ मई, १९४५ को अन्त हुआ है।

६ वर्ष तक योरप का यह युद्ध चला। शरत् १९४२ तक हिटलर ने जर्मनी से पन्द्रह गुना अधिक भूमि पर—क्षेत्रफल २,७५०,००० वर्गमील—अधिकार कर लिया था। सम्पूर्ण फ्रांस, लक्सेम्बर्ग, बेलजियम, डेनमार्क, नार्वे, आस्ट्रिया, अल्बानिया, युगोस्लाविया, हङ्गरी, रूमानिया, बल्गारिया, फ़िनलैंड, ज़ेकोस्लोवाकिया, पोलैंड, ग्रीस, इटली, लीबिया, उत्तरी फ्रेञ्च और पश्चिमी अफ़्रीका, एस्टोनिया, लैटविया और लिथुआनिया आदि सभी पर, प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से जर्मनी का प्रभुत्व स्थापित हो गया था। इसके सिवा मिस्र के उत्तर पश्चिमी भाग और लाल रूस की ६००,००० वर्ग मील भूमि पर भी जर्मनी का कब्ज़ा हो गया था।

१९४२ में हिटलर का भाग्य उच्चतम शिखर पर था। १९४३ में पासा पलटना शुरू हुआ। स्टालिनग्राड में जर्मनी को मुँह की खानी पड़ी और उसके क़ब्ज़े से २०,२०० वर्गमील योरप में तथा ४०,१०० वर्गमील भूमि अफ्रीका में मुक्त करा ली गई। वर्ष का अन्त होते न होते लाल सेना ने अधिकृत भूमि का अर्द्ध भाग वापस ले लिया और उत्तरी अफ़्रीका, सिसली, कोर्सिका, साडीनिया तथा दक्षिणी इटली से जर्मन सेनाओं का सफ़ाया कर दिया गया।

इसके ६ मास बाद, ६ जून को, मित्र सेनायें नारमण्डी के तट पर उतरीं। लाल सेनाओं से १२०० मील की दूरी पर। १९४५ के प्रारम्भ तक लाल और मित्र सेनाओं का यह अन्तर घटकर आधा रह गया। रूस की सेनायें युद्ध से पूर्ववाली सीमा तक पहुँच गईं और इधर योरप में फ्रांस, बेलजियम, लक्सेम्बर्ग, ग्रीस और अल्बानिया मुक्त हो गया।

१२ जनवरी १९४५ को लाल सेना ने जर्मनी के विरुद्ध भारी पैमाने पर आक्रमण कर दिया। इस आक्रमण के प्रारम्भ में लाल और गोरी सेनायें एक-दूसरी से ४५० मील दूर थीं और २५ अप्रेल को लाल और अमरीकन सैनिकों ने एल्बे नदी पर, हाथ मिलाकर जर्मनी के अन्त की पूर्वसूचना दी। पहली मई को हिटलर की मृत्यु और राइशटाग (बर्लिन) पर लाल झण्डा फहराता दिखाई पड़ता है।

अन्त में एक बात और। प्रस्तुत लेख में १ सितम्बर १९३९ से १ मई १९४५ तक चलनेवाले योरप के भीषण युद्ध का विवरण इतना अधिक नहीं दिया गया है जितना कि उसके पूर्व की प्रथम महायुद्ध के अन्त से लेकर दूसरे महायुद्ध के प्रारम्भ तक की स्थिति का। इसका कारण है। इस समय जब कि योरप के युद्ध का अन्त हो गया है, इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि कहीं हम फिर उसी दलदल में न फँसने जा रहे हैं।

यहाँ एक बात और भी ध्यान देने की है। यह हम देख ही हैं कि प्रथम महायुद्ध के बाद से लाल रूस के प्रति दूसरी अन्य शक्तियों का व्यवहार काफ़ी विरोधी रहा है और इस से खिन्न होकर रूस को अनेक बार शत्रु पक्ष से—उस से जो विश्वशान्ति के लिए सब से बड़ा ख़तरा सिद्ध हुआ—सन्धि करनी पड़ी है। योरप की शक्तियों के रूस-विरोधी व्यवहार चरम सीमा पर पहुँचते उस समय जब, लिटविनोफ़ के लाख प्रयत्न करने पर भी, रूस को दूर ही रक्खा जाता है। अन्त में, अत्यधिक खिन्न होकर, रूस फिर जर्मनी से सन्धि कर लेता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस सन्धि से ही दूसरे महायुद्ध का प्रारम्भ होता है। ऐसे अवसर पर जर्मनी से सन्धि करने पर रूस को भला-बुरा बहुत कहा गया—यहाँ तक कि कुछ लोग उसी के सिर पर युद्ध करने का दोष भी मढ़ने लगे। एकदम ऊपरी दृष्टि से देखने पर यह बात सही भी मालूम होती है। लेकिन इसके साथ-पर आक्रमण करता है तो चर्चिल, अविलम्ब, रूस से हाथ मिला-कर इस दृढ़ सङ्गठन की नींव डाल देता है जिसके सामने हिटलर को घुटने टेक देने पड़े। इस दृढ़ सङ्गठन को 'फ़िनिशिंग टच' (अन्तिम स्पर्श) देता है अमरीका उस समय जब कि जापान, ७ दिसम्बर १९४१ में पर्ल-हार्बर पर आक्रमण करता है।

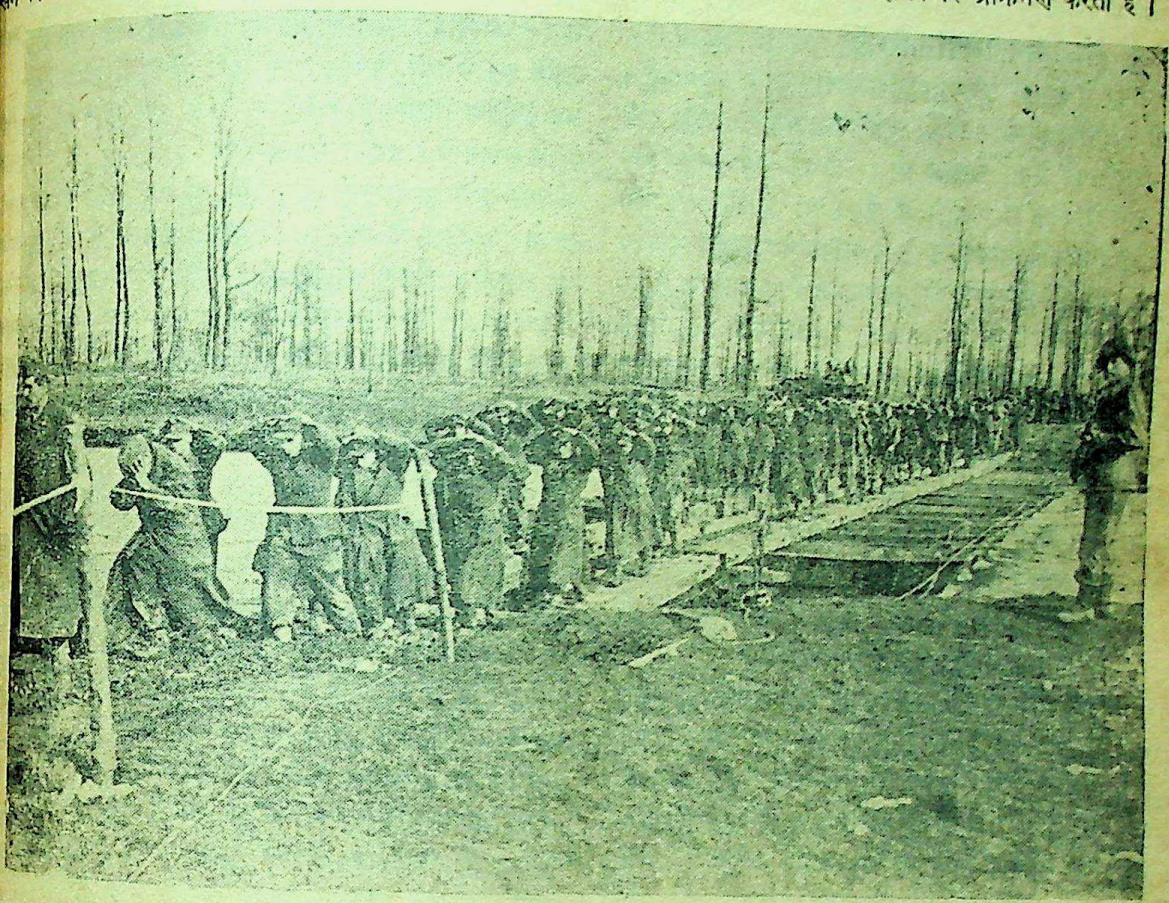

कोलोन के रणक्षेत्र में अमरीकन सेना-द्वारा गिरफ़्तार किये गये १४०० जर्मन

एक और भी बात है। वह यह कि एक ओर जहाँ दूसरे का प्रारम्भ रूस के जर्मनी के साथ सन्धि करने से होता है, दूसरी ओर इस युद्ध का अन्त बर्लिन पर रूस के लाल झंडा होने से होता है।

जो भी हो, एक बात स्पष्ट है। वह यह कि इस युद्ध की तैयार करने में योरप की शक्तियों की ढुलमुल नीति तथा के प्रति अविश्वास का बहुत बड़ा—कहें कि प्रमुख—हाथ है। हालैंड और बेलजियम के पतन के बाद ढुलमुल के कर्णधार चैम्बर्लेन के हाथों से जब चर्चिल के दृढ़ हाथों में की बागडोर आती है तब हिटलर-विरोधी मोर्चे में एक कड़ी पड़ जाती है। २२ जून, १९४१ को जब जर्मनी रूस

युद्ध के बाद जो कुछ हुआ है, युद्ध के पूर्व ही यदि वह हो जाता—हिटलर के पाँव बढ़ाने से पूर्व ही यदि ब्रिटेन, अमरीका और रूस मिल गये होते तो प्रारम्भ में ही इस युद्ध का अन्त हो जाता। लेकिन इस बीती बात को लेकर आँसू बहाने या खीज प्रकट करने से कोई लाभ नहीं। कहना अब यही है कि युद्ध को जीतने के लिए जितने दृढ़ सङ्गठन की आवश्यकता पड़ी है, शान्ति को स्थापित करने तथा युद्ध से पूर्व की दलदल से बचने के लिए उससे भी अधिक दृढ़ सङ्गठन की आवश्यकता है। इस सङ्गठन के अभाव में या इस सङ्गठन की किसी भी कड़ी के कमज़ोर पड़ जाने पर विश्व की शान्ति का रूप कितना विकृत हो जायगा, इसकी कल्पना सहज ही की जा सकती है।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्वासित

पण्डित इलाचन्द्र जोशी

[धूर्तता के अवतार ठाकुर लक्ष्मीनारायणसिंह शिकार खेलाने के बहाने धीराजसिंह को एक रियासत में ले गये जहाँ से खबर गोली लगने से धीराज ठण्डा हो गया। यह रूपा का प्रेमी था और इस रूप में ठाकुर साहब का प्रतिद्वन्द्वी। शारदादेवी ने मौका दिन महीप को ठाकुर साहब की करतूतों का कच्चा चिट्ठा सुनाया। ऐसे भद्र रूप में पिशाच का सञ्चार देखकर महीप सन्न हो गया। की बड़ी बहन और समिधा को ठाकुर ने सफ़ाई से ठिकाने लगा दिया था। वे शारदा को भी चौपट कर चुके थे। अब रूपा और उनके जाल में थीं।]

उनतीसवाँ परिच्छेद

एक नौकर ने आकर सूचना दी कि धोबी आया हुआ है। शारदादेवी को बीच ही में उठकर चले जाना पड़ा। महीप भी अपने दो-चार कपड़े देना चाहता था। उसके पास कपड़े एक तो यों ही कम थे, तिस पर जो थे भी वे प्रायः सबके सब मैले हो चले थे। पर आलस्यवश उसने न नौकर को पुकारा न स्वयं उठा। नौकर धोबी के आने की सूचना देते ही तत्काल अन्तर्धान हो गया था और उसने महीप से पूछा तक नहीं कि उसके भी कुछ कपड़े धुलने को जावेंगे या नहीं। आज पहली बार महीप का ध्यान इस बात की ओर गया कि ठाकुर साहब के नौकर बराबर उसकी उपेक्षा करते रहे हैं। जिस व्यक्ति की उपेक्षा स्वयं मालिक करे उसके प्रति नौकरों की उपेक्षा सम्पूर्ण स्वाभाविक है, यह बात आज उसके दिमाग़ में घुसी।

"पर ठाकुर साहब तो स्वयं आग्रह के साथ मुझे यहाँ बुला लाये थे!" वह मन ही मन कहने लगा—"तब क्यों उनकी उपेक्षा मेरे प्रति दिन पर दिन बढ़ती चली गई है?"

अपने मन के इस प्रश्न पर उसे स्वयं हँसी आने लगी, क्योंकि उसका अन्तर्मन बहुत पहले इस 'क्यों' का उत्तर दे चुका था, और आज शारदादेवी से ठाकुर साहब के बहुत से रहस्यों का आभास मिलने के बाद भी इस प्रकार का प्रश्न करना मन की मूर्खता के सिवा और कुछ नहीं है, यह सोचकर उसे स्वयं अपने स्वभाव के परिवर्तन पर आश्चर्य होने लगा। आज पहली बार उसे ठाकुर साहब के यहाँ का अन्न उजाड़ने के लिए अपने ऊपर ग्लानि होने लगी।

सोफ़ा पर बैठे-बैठे शारदादेवी की बातों पर वह जितना ही विचार करने की चेष्टा करने लगा उतनी ही उसकी उलझन बढ़ती चली जाती थी। ज्यों-ज्यों वह उस रहस्यमयी नारी के निकट से निकटतर सम्पर्क में आता जाता था त्यों-त्यों उसके भीतरी व्यक्तित्व के नये-नये रूप उसके आगे उघड़ते चले जाते थे और प्रत्येक नया रूप अपनी अप्रत्याशित आकस्मिकता से उसे धक्का देकर जैसे दो क़दम पीछे हटा देता था।

आज तक शारदादेवी का व्यक्तित्व कुछ दूसरे ही रूप में उसकी आँखों के आगे आया करता था। मकड़ा जिस प्रकार अपने जाले में मक्खी को फँसाकर उसे न तो मारकर खाता है न समूचा निगलता है, बल्कि उसके शरीर के भीतर के अदृश्य और परमाणुवत् सूक्ष्म छिद्रों से उसका समस्त सत्त्व चूसकर उसके शारीरिक ढाँचे को ज्यों का त्यों छोड़ देता है, शारदादेवी की कल्पना ठीक उसी निःसत्त्व जीव के रूप में उसके मन में उठा करती थी। पर अब महीप को ऐसा जान पड़ने लगा कि जिस मकड़े ने इस मानवीय मक्खी का शोषण किया है वह चूक गया उसने इस भ्रम में पड़कर उसे इस धोखे में त्याग दिया वह पूर्णतया निर्जीव हो गई है। उसे इस बात की है कि बाहर से एकदम मृत मालूम पड़ने पर भी उसकी जीवनी शक्ति अभी पूर्ण मात्रा में वर्तमान है और वह अपने निःशोषक के मर्मस्थल पर डङ्क मारने के फेर में है वह मक्खी साधारण मक्खी नहीं है, बल्कि ऐसी मक्खी है पेट से ही अपने साथ आत्मरक्षा का अस्त्र—डङ्क—लेकर

महीप जान गया था कि शारदादेवी ने अभी अधूरी कही है। शोषण के जो प्रत्यक्ष चिह्न उनके सम्पूर्ण से स्पष्ट प्रकट होते थे उनके कारणों के सम्बन्ध में अभी भी इङ्गित उन्होंने नहीं दिया था। कहानी के शेषांश चित होने के लिए वह अत्यन्त अधीर हो उठा था।

कुछ देर बाद शारदादेवी जब लौटकर आईं तो देखा कि उनके मुख पर आँसुओं का कोई चिह्न शेष गया था बल्कि एक आश्चर्यजनक प्रसन्नता का भाव चीमड़ मुख पर व्यक्त हो रहा था। उनके मुख की प्रसन्नता वह झलक महीप को आज एकदम नई लग रही थी, क्यों! इसके पहले जब कभी उसने शारदादेवी को मुस्कराते उसके मन में बराबर यही धारणा जमती रही कि उनकी मुस्कान के भीतर एक अत्यन्त करुण रुदन छिपा हुआ आज—अभी—मुस्कान की जो तीव्रता उनके मुख पर हुई दिखाई देती थी उसके अन्तराल में करुणा का लेश अंश में वर्तमान नहीं था। वह मुक्त मुस्कान जैसे मुक्त ही सहज-स्वाभाविक अभिव्यक्ति थी। पर अभी-अभी इतने में उनका सैकड़ों द्वन्द्वों से उलझा हुआ अन्तर सहसा रूप से उन्मुक्त कैसे हो उठा? क्या आज वर्षों बाद एक कृत सहृदय व्यक्ति के आगे (महीप जानता था कि यदि उसे सहृदय न मानती होतीं तो अत्यन्त गोपनीय उद्घाटन उसके आगे न करतीं) अपने हृदय को सुयोग प्राप्त होने के कारण उनके भीतर की दयनीयता का बादल फटकर साफ़ हो गया है? महीप को ऐसा जैसे उनके मुख का चीमड़पन भी कुछ घट गया है मुख पर थोड़ी-सी चिकनाई आ गई है। यह उसकी भ्रम भी हो सकता था, पर उस भ्रम का भी एक था। आज पहली बार महीप के मन में यह शारदादेवी किसी ज़माने में अत्यन्त सुन्दर—आश्चर्य से सुन्दर—दिखाई देती होंगी। उनका कपाल,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...क, होंठ, ठुड्डी आदि का प्राकृतिक गठन इस बात की गवाही ...था। बाद में किसी या किन्हीं कारणों से उनकी आत्मा का ...र शरीर का सारा सत्त्व ही जब निःशोषित हो गया, तब इस ...पूर्व सौन्दर्य-प्रतिमा ने वह प्रेत-रूप धारण कर लिया जो ...समय उनके मुख पर स्पष्ट व्यक्त हो रहा है।

शारदादेवी ने कहा—"आपके जो कपड़े धुलने को हों उन्हें दीजिए।"

महीप ने तत्काल उठकर अपने मैले कपड़े बटोरे। शारदादेवी एक नौकर बुलाकर वे कपड़े उसे धोबी को देने के लिए सौंप ...। उसके बाद वे स्वयं भी किसी काम से कमरे के बाहर ...ली गईं। महीप ने इस बात पर ग़ौर किया कि ठाकुर साहब के ...ति अपना जो मनोभाव आज उन्होंने व्यक्त किया था उसके ...वजूद वे ठाकुर साहब की अनुपस्थिति में उनके घर की ...ख-रेख पूरे मनोयोग के साथ कर रही थीं और छोटी से छोटी ...त की ओर उनका ध्यान इस हद तक था कि ऐसा जान पड़ता ...कि जैसे घर की गृहिणी वही हों।

शाम की चाय शारदादेवी ने महीप के साथ ही पी, और ...हुए यह प्रस्ताव किया कि चूँकि आज पूर्णिमा है, इसलिए ...त में नाव पर सैर की जाय। यह प्रस्ताव महीप को एकदम ...प्रत्याशित लगा और अस्वाभाविक भी, हालाँकि उसमें क्या ...स्वाभाविकता है, यह वह स्वयं नहीं जानता था। फिर भी क्षणिक ...झिझकाहट के बाद उसने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

तीसवाँ परिच्छेद

यद्यपि मोटर तैयार थी, तथापि शारदादेवी ने बग्घी जुतवाई। ...बजे के क़रीब वे लोग रवाना हुए। रास्ते भर दोनों एक प्रकार मौन रहे—जो दो-एक बातें हुईं भी वे बहुत ही साधारण और ...व्यवहारिक ढङ्ग की। बलुवाघाट के पास पहुँचने पर शारदादेवी ...बग्घी हाँकनेवाले को रुके रहने का आदेश दिया। उसके ...दोनों उतरकर घाट पर गये। एक अपेक्षाकृत सुविधाजनक ...तय करके दोनों उस पर जा बैठे।

पूर्व आकाश में पूर्ण चन्द्रमा धीरे-धीरे ऊपर को उठता चला रहा था और यमुना की नील लहरियों पर उसका प्रकाश ...ही बिखेर रहा था। चारों ओर अपेक्षाकृत प्रशान्त वातावरण ...या हुआ था। केवल पूर्ण चन्द्र के दुर्निवार आकर्षण से नदी ...उच्छृङ्खल तरङ्गें उद्दाम वेग से उछलती हुई बीच-बीच में ...दूसरे से टकराकर कभी भौतिक अट्टहास करती हुई ठहाका ...उठती थीं और कभी एक विचित्र और रहस्यमय व्यंग्य के ...में खिलखिला पड़ती थीं। दोनों प्रकार की आवाज़ें महीप ...किसी अज्ञात और मार्मिक महत्त्व से भरी मालूम हो रही थीं। ...के अन्तर में कविता के जो द्वार इधर कुछ दिनों से एकदम ...पड़े थे वे जैसे एक प्रचण्ड आँधी के अत्यन्त निर्मम वेग ...टकर खुल पड़े हों। पर आज की कविता ने स्वयं जगकर ...के भीतर के जिन सुप्त भावों को जगा दिया था उनको सुलाना

महीप जब अपने पिछले जीवन के भावों से करने लगा तो उसकी अन्तरात्मा जैसे दहल उठी। अपनी सब पिछली अनुभूतियाँ आज के तूफ़ानी भावों की तुलना में उसे तट पर बालू, सीप तथा चमकीले कङ्कड़ों से खेलनेवाले बच्चों के मन के बुद्बुदों की तरह लग रही थीं। उसे आश्चर्य हो रहा था कि स्तब्ध रात्रि के उस एकान्त और अपेक्षाकृत शान्त वातावरण में इस प्रकार का तहलक़ा उसके अन्तर्लोक के भाव-जगत् में सहसा क्यों मचने लगा! उस असाधारण वातावरण में शारदादेवी का निकट सम्पर्क उसके भीतर के उस तूफ़ानी भावोद्वेग के उमड़ने का एक कारण अवश्य उसे मालूम हुआ, पर क्या वही प्रधान कारण था? "नहीं, वह केवल एक सहायक कारण है, इससे अधिक नहीं। मूल कारण कुछ दूसरा ही है, जिसे तुम अभी ठीक तरह से नहीं पकड़ पा रहे हो।"—यह उत्तर किसी ने उसके भीतर से तत्काल उसे दे दिया।

पर यह होते हुए भी महीप भीतर ही भीतर यह अनुभव कर रहा था कि जो असाधारण-प्रकृति सर्वशोषित नारी उसकी बग़ल में बैठी है वह इस समय ऊपर से कैसा ही शान्त क्यों न जान पड़ती हो, उसके भीतर भी आज दिन से ही भीषण तूफ़ानी हिलकोरे अत्यन्त अशान्त रूप धारण किये हुए हैं, जो उसके (महीप के) अपने भाव-जगत् की आँधी से भी कई गुना अधिक तीव्र और प्रचण्ड हैं। महीप को ऐसा लग रहा था कि उस भाव-मात्र-शेष नारी के ऊपरी मन की उस समय की स्तब्ध अवस्था में भी उसके अन्तर्मन का तूफ़ान पूरे ज़ोरों पर है, जो अदृश्य विद्युत्-कणों के साथ तरङ्गित होता हुआ उसके अपने मन पर भी प्रत्याघात कर रहा है।

महीप को यह सोच-सोचकर आश्चर्य हो रहा था कि शारदादेवी ने क्यों आज ऐसा अप्रत्याशित प्रस्ताव किया। परिपूर्ण पूर्णिमा के ज्योत्स्ना-प्रवाह के बीच में यमुना की उच्छल तरङ्गों के ऊपर नौका-विहार के लिए उसे निमन्त्रित करके उसके कुछ समय से ज़ङ्ग लगे हुए कवि-हृदय को सान पर चढ़ाने से उनका क्या उद्देश्य सिद्ध हो सकता है? तब क्या स्वयं उनका अपना हृदय भी काव्यमय है? उनके निःसार शरीर और निःशुष्क मन के भीतर मरुभूमि के बालू के नीचे बहनेवाली अन्तःसलिला की तरह भावों की तरल तरङ्गें अभी तक उछाल मारती हैं? हो सकता है; पर उनका उद्देश्य निश्चय ही गूढ़तर है।

इस तरह की उलटी-सीधी कल्पनाओं में निमग्न रहता हुआ महीप अत्यन्त उत्सुकता से शारदादेवी का कण्ठ खुलने की प्रतीक्षा करने लगा।

पर शारदादेवी का कण्ठ जैसे फूटना ही नहीं चाहता था। जैसे उनके भीतर से असंख्य भावों ने ऊपर उठकर उनके कण्ठ को भी पूरी तरह से धर दबाया हो। तरङ्गों के एक-दूसरे के साथ तथा किनारे में कगारों के साथ टकराने से जो अस्फुट हाहाकार-रव अनन्त आकाश में, समस्त सृष्टिचक्र के अणु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परमाणु में, छा जाने की जो आकुलता प्रकट कर रहा था, नाव के खेने से होनेवाला 'छपाक्-छपाक्' शब्द जैसे उस मर्मघाती क्रन्दन की व्यापक गूँज का उपहास करने पर तुला था। क्रन्दन और उपहास की ये दोनों भाव-तरङ्गें अन्तर्भावना की प्रतीक बनकर जैसे उन दोनों के मन में बारी-बारी से उठती और गिरती जाती थीं।

कुछ देर तक प्रतीक्षा करने के बाद अन्त में महीप ने स्वयं मौन भङ्ग किया। वह बोला—"आपने आज की इस विजन रात्रि में नाव पर सैर करने का जो प्रस्ताव किया वह यद्यपि मुझे कुछ विचित्र-सा लगा, फिर भी मैंने यह नहीं सोचा था कि मेरे मन पर उसका ऐसा गहरा प्रभाव पड़ेगा।"

"मेरा प्रस्ताव आपको विचित्र क्यों लगा?" कुछ दबी हुई-सी आवाज़ में शारदादेवी ने प्रश्न किया। कुछ दबी हुई आवाज़ के भीतर भय की भावना छिपी थी या व्यंग्य की, महीप ठीक से कुछ समझ न पाया। पर उसे सुनकर उसने किसी अज्ञात कारण से यह महसूस किया कि आज शारदादेवी से वह जो भी प्रश्न करेगा अथवा उनके प्रश्न का जो भी उत्तर देगा उसमें अत्यन्त सचेत और सावधान रहने की आवश्यकता है—असावधान रहने से कहीं वह व्यंग्य अथवा विद्रूप के जाल में फँसकर उपहास का पात्र न बन बैठे। यह होते हुए भी उसका अन्तर्मन निश्चित रूप से जानता था कि व्यंग्य और विद्रूप की कोई आशङ्का आज शारदादेवी से नहीं की जा सकती, क्योंकि एक प्रचण्ड आघात से मर्मव्यथा का जो स्रोत उनके भीतर से आज फूट पड़ा है उसके प्रलय-प्रवाह के आगे उपहास की कोई भावना ठहर नहीं सकती। पर उसके सचेत मन पर अन्तर्मन की इस निश्चित धारणा का कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा था।

उसने कहा—"इस 'क्यों' का कोई उत्तर इस समय मैं आपको देने में असमर्थ हूँ। आप केवल इतना मान लीजिए कि मुझे आपका प्रस्ताव विचित्र लगा। पर इतना मैं स्पष्ट स्वीकार करता हूँ कि यदि मैं किसी कारण से आपका प्रस्ताव स्वीकार न करता, तो एक ऐसी अनुभूति से वञ्चित रह जाता जो जीवन में दो ही एक बार अपने सर्वग्रासी प्रभाव से समस्त प्राण को, सम्पूर्ण आत्मा को कुछ समय के लिए छा देती है।"

शारदादेवी ने लम्बी साँस ली। उस सर्द आह के असंख्य कारणों की सम्भावना होने पर भी एक विशेष कारण का सन्देह महीप के मन में जग सकता था। पर आश्चर्य है कि वह नहीं जगा। शारदादेवी कुछ नहीं बोलीं। उनकी वाचाल प्रकृति में अकस्मात् इतना बड़ा परिवर्तन कैसे आ गया, इस पर महीप को आश्चर्य होना चाहिए था। पर उसे कोई आश्चर्य नहीं हुआ और शारदादेवी का वह स्तब्ध मनोभाव तत्कालीन वातावरण की असाधारण रहस्यमयता को देखते हुए उसे अस्वाभाविक लगा।

कुछ देर भावमग्न रहने के बाद वह फिर बोला—"मुझे ऐसा लगता है कि आपकी अन्तरानुभूति जितनी ही तीव्र है उतनी ही सूक्ष्म है, और जो काव्यमय भाव अन्तर्जगत् की आत्मा से बाह्य जगत् की ईथरी तरङ्गों में तैरते रहते हैं उनके प्रति प्राण अत्यन्त सजग हैं।"

"किस कारण से आपके मन में इस प्रकार की धारणा है?" महीप को ऐसा भ्रम हुआ कि यह प्रश्न करते हुए शारदादेवी की आवाज़ जैसे काँप रही हो।

वह बोला—"इसका भी कोई स्पष्ट कारण आपको देने में मैं असमर्थ हूँ।"

फिर एक ठण्ढी और लम्बी साँस शारदादेवी के मुँह से बरबस निकल पड़ी। उसके बाद अपने गले को कुछ साफ़ परिस्फुट करते हुए उन्होंने कहा—"मैं विश्वास कर सकती कि किसी ज़माने में मेरी अन्तरानुभूति तीव्र रूप से काव्यमय होगी। पर वह ज़माना मेरे जीवन में क्षणिक स्वप्न-सा आकर बीच ही में अत्यन्त निर्मम रूप से टूट गया और इसने उसने मुझे वास्तविकता की ठोस मिट्टी पर ऐसे ज़ोरों से दिया कि मेरे अन्तर की सारी कविता शीशे की तरह चकनाचूर हो गई और उस टूटे शीशे के बिखरे कण मेरे पाँवों में चुभकर उन्हें लहूलुहान करने लगे।"

सहसा महीप को याद आया कि शारदादेवी ने आज में अपने अनुभव की जो अधूरी कहानी सुनाई थी, अपने में उन्होंने जैसे उसकी पूर्ति की ओर सङ्केत कर दिया है।

वह बोल उठा—"कोई अधिकार न होने पर भी मैं आपसे करने की धृष्टता करना चाहता हूँ। आपने आज साहब के जीवन से सम्बन्धित जिन गुप्त और साथ ही आ बातों से मुझे परिचित कराया उनसे आप निश्चय ही बहुत से परिचित रही होंगी। ठाकुर साहब के स्वभाव की हीनता के दो ज्वलन्त प्रमाण प्रत्यक्ष रहने पर भी आप क्यों कीजिएगा—अभी तक आप उनके साथ इस प्रकार आप उनके यहाँ उनके परिवार के एक सदस्य की तरह हैं, यह कैसे सम्भव हुआ है, मैं समझ नहीं पाया।"

"यहाँ एक बड़ी अप्रिय कहानी है, सुनकर क्या कीजिए" यह कहती हुई शारदादेवी पीछे की ओर हटकर, सटकर बैठकर गईं। उनके हटने से नाव कुछ हुई और महीप गिरते-गिरते बचा।

कुछ देर बाद जब दोनों फिर से स्थिर हो गये, तो बोला "आपको सुनाने में यदि आपत्ति हो तो मैं करूँगा, पर इतना आप जान लीजिए कि मैं सुनने के बहुत उत्सुक हूँ। जब से मैं ठाकुर साहब के यहाँ तभी से मेरे मन में यह जानने की उत्सुकता रही है कि आप किस रूप में ठाकुर साहब के यहाँ..... इस परिवार की सदस्या कैसे बन गईं।"

"इसका कारण मेरी दुर्गति के सिवा और कुछ नहीं" कहकर शारदादेवी ने फिर एक बार लम्बी साँस खींची। महीप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुक भाव से इस बात की प्रतिज्ञा करने लगा कि इस छोटी-सी
न्तु भेदभरी भूमिका के बाद शारदादेवी क्या कहती हैं।
शारदादेवी कहने लगीं—"ठाकुर साहब के व्यक्तित्व ने मुझे
प्रारम्भ ही से बहुत प्रभावित कर रक्खा था। जिन दिनों दीदी
उनका हेल-मेल चल रहा था तभी से—बल्कि उससे भी
पहले से—मैं ठाकुर लक्ष्मीनारायणसिंह के शील-स्वभाव और
रूप-रङ्ग के प्रति आकर्षित हो चुकी थी। यह बात आज आपके
आगे स्वीकार करते हुए मैं सङ्कुचित इसलिए नहीं हो रही हूँ कि
एक तो मेरे समान सैकड़ों पीड़नों से जर्जर नारी के भीतर सङ्कोच
के लिए कहीं कोई गुञ्जाइश रह नहीं जाती, दूसरे ठाकुर धीराजसिंह
की हत्या की जिस ताज़ी घटना का समाचार आज मिला है उसने
रहे-सहे सङ्कोच को भी सोख लिया है, तीसरे जिस परिपूर्ण एकान्त
वातावरण में इस समय मैं और आप हैं वह जीवन की गूढ़तम
स्वीकारोक्तियों के लिए सबसे अधिक उपयुक्त है। ख़ैर। ठाकुर
साहब को उन दिनों इस बात का तनिक भी पता नहीं था कि मैं
उनके प्रति आकर्षित हूँ। मैंने किसी क्षीणतम संकेत से भी न
उनके और न दीदी के आगे अपने मन की यह गोपन भावना
भी प्रकट होने दी।

"जब दीदी ने आत्महत्या की और उसकी चिट्ठी द्वारा उसकी
आत्महत्या का कारण जानने के साथ ही मुझसे यह बात भी छिपी
रही कि उसके जीवन की ही तरह उसकी मृत्यु के साथ भी किस
प्रकार का पैशाचिक परिहास किया गया है, तब मुझे स्वभावतः
एक भयङ्कर धक्का पहुँचा जैसा अधिक से अधिक सम्भव था। जिस
कम्यूनिस्ट लड़की का ज़िक्र मैंने आपसे किया था उसकी करुण
मृत्यु का भी अत्यन्त मार्मिक प्रभाव मुझ पर स्वभावतः पड़ा।
इन दोनों कारणों से मेरा हृदय आक्रोश से भर उठा। पर अपने
मन की इस अविश्वसनीय दुर्बलता की क्या सफ़ाई मैं आपको दूँ
इन सब कारणों के बावजूद ठाकुर साहब का आकर्षण मेरे
लिए वैसा ही बना रहा। मैं उनसे डरने लगी और चिढ़ने
लगी। पर आज जब मैं अपने मन की उस समय की भावना
का विश्लेषण करती हूँ तो यह बात मेरे आगे दिन के प्रकाश की
तरह स्पष्ट हो उठती है कि मेरे भीतर की सभी ऊपरी भावनाओं के
नीचे स्फटिक की तरह निर्मल एक ऐसी अन्तर्धारा बही चली जा
रही थी जिसे प्रेम के सिवा और कोई दूसरा नाम नहीं दिया जा
सकता। मेरी यह सुप्त अन्तर्भावना स्वयं मुझसे छिपी रहती थी।
बीच-बीच में असावधानी के कुछ क्षणों में जब कुछ समय के
लिए यह मेरे सचेत मन के आगे स्पष्ट हो उठती थी तो मैं
आतङ्कित हो उठती और स्वयं अपने प्रति एक हिंसात्मक भावना
मेरे भीतर जग उठती।

"जब ठाकुर लक्ष्मीनारायणसिंह के पिता की मृत्यु हुई
और वे सर्वेसर्वा बन गये, तो एक अज्ञात भय की भावना मेरे
मन को जकड़ने लगी, हालाँकि उनके प्रत्यक्ष व्यवहार से किसी
प्रकार के भय के लिए कोई गुञ्जाइश नहीं रहनी चाहिए थी।
वे समय-समय पर पिताजी के पास आते थे। उनसे वे बड़े
आदर के साथ बातें करते थे और मेरे साथ बड़ी शिष्टता से पेश
आते थे। मैंने पिताजी को दीदी की उस चिट्ठी से परिचित
नहीं कराया था जिसे वह मरने के पहले मेरे लिए लिखकर छोड़
गई थी। इसलिए वे ठाकुर साहब की किसी भी काली
करतूत से परिचित नहीं थे और उनके प्रति पिता के समान
स्नेह-भावना रखते थे।

"कुछ समय बाद पिताजी की भी मृत्यु हो गई। मरने के
पहले मेरे विवाह का उद्योग उन्होंने किया था, पर मैंने ऐसा
प्रबल विरोध किया कि अन्त में उन्हें हार मानकर चुप रह जाना
पड़ा था। उनकी मृत्यु के बाद मैं अनाथ हो गई। कुछ रुपये
पिताजी मेरे लिए अवश्य छोड़ गये थे, पर अपने निपट अकेलेपन
की स्थिति में रुपये का कोई मूल्य मेरे लिए नहीं था। ठाकुर
साहब की माँ अपने सहृदय स्नेह के दबाव से मुझे एक प्रकार से
बलपूर्वक अपने यहाँ ले गईं। कोई दूसरी गति न देखकर मैं
उन्हीं के साथ रहने लगी।

"समय बीतता चला गया और उसके साथ ही ठाकुर साहब के
प्रति मेरे मन की भावनायें भी बदलती चली गईं। भय, क्रोध
और घृणा के भाव मेरे मन से जैसे धुल गये और शेष रह गया
केवल एक ही भावना।

"ठाकुर साहब का व्यवहार आरम्भ में मेरे साथ बड़ा ही
सौजन्यपूर्ण और संवेदना से भरा था। वे मेरी ओर धीमी
बहुत ही धीमी चाल से बढ़ रहे थे। जब वे आधे से अधिक रास्ता
तय कर चुके तब मुझे उनकी निकटता का अनुभव हुआ।

"मैं पिताजी की एकान्त संरक्षकता से पली थी। माँ के
स्नेह की कोई स्मृति मेरे मन में नहीं है। जब मैं चार वर्ष
की थी तभी माँ की मृत्यु हो चुकी थी। पिताजी की जिस
छत्र-छाया में मैं निश्चिन्त होकर शान्त और एकरसमय जीवन
बिता रही थी वही मेरे लिए सब कुछ था। उसके परे भी
संसार का कोई नक़्शा हो सकता है, इसकी कोई कल्पना
मैंने कभी नहीं की थी, और यह भी मैंने कभी नहीं सोचा था
कि वह छत्र-छाया एक दिन अचानक भङ्ग हो सकती है। इसलिए
उनकी मृत्यु ने मुझे भयभीत कर दिया था और मैं उस भय की
भावना से बचने के लिए अपने अन्तर के एकान्त कोने में
सिकुड़ती सिमटती जाती थी। पर धीरे-धीरे ठाकुर-परिवार
की उदारता ने (उस समय मैं उसे उदारता ही समझ रही
थी) मेरी अनाथपन की अनुभूति की तीव्रता बहुत कुछ कम कर
दी और ठाकुर साहब के 'सौजन्य और संवेदना' ने मुझे
आश्वस्त कर दिया। ठाकुर साहब ने जैसे मेरे स्नेही और
संरक्षक पिता के स्थान की भी पूर्ति कर दी।

"इस आश्वासन का फल यह हुआ कि मेरे भीतर ठाकुर
साहब के प्रति स्वभावगत आकर्षण की अनुभूति दिन पर दिन
उभरती चली गई—कुछ मान में और कुछ अनजान में। यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक कि मेरी दबी हुई काव्य-प्रवृत्ति भी जग उठी और मैं अपने
म को नाना छल-छद्मों से कविताओं के रूप में व्यक्त करने लगी।

"मेरी कविताओं ने ठाकुर साहब के ऊपरी मन को अवश्य
ी गुदगुदाया होगा। क्योंकि मेरे प्रति वे उत्तरोत्तर अधिक
नेहशील होते जाते थे। कभी-कभी तो वे घण्टों मेरे साथ
ठकर काव्य-चर्चा करते रहते। मेरी कविताओं की प्रशंसा तो
र करते ही थे।

"आज मैं समझ गई हूँ—और यह बात आपके आगे स्वीकार
करने में आज कोई सङ्कोच मुझे नहीं मालूम होता—कि मेरे
स्वभाव के भीतर कोई ऐसी मूलगत विकृति रही होगी जिसने
ाकुर साहब के चरित्र के सम्बन्ध में मेरी बहुत कुछ जानकारी के
ावजूद मुझे उनकी ओर बरबस आकर्षित किया। यह भी
सम्भव है कि अपनी इस विकृति के सम्बन्ध में मेरी धारणा
दलत हो और अपनी अनाथ, असहाय और विवश व्यवस्था के
कारण वह कमज़ोरी मुझमें आई हो, पर कारण चाहे कुछ हो यह
निश्चित है कि उनके प्रति मेरा वह आकर्षण बढ़ते-बढ़ते धीरे-धीरे
एक प्रकार के पागलपन का-सा रूप धारण करने लगा। और
ाकुर साहब अपने स्नेह और संवेदनापूर्ण व्यवहार से उस
पागलपन की भावना को और अधिक उसकाने में सहायता
कर रहे थे।

"फल वही हुआ जो ऐसी स्थिति में होना चाहिए था।
ब मुझे उठते-बैठते, सोते-जागते और साँस लेते समय विश्व
सर्वत्र केवल उन्हीं की प्रतिच्छाया दीख रही थी, तो मेरी
स मानसिक अवस्था में उन्होंने मुझे घेर लिया। एक दिन
मैंने अपने को उनके प्रति पूर्ण रूप से समर्पित कर दिया।

"ठाकुर साहब की माँ ने उनके विवाह के लिए बहुत जगह
कोशिशें कीं और इस बात का पूरा ध्यान रक्खा कि उनकी रुचि के
अनुसार एक बहुत सुन्दरी, समझदार, पढ़ी-लिखी, कुलीन और
साथ ही स्वजातीय लड़की उन्हें मिले। ऐसी तीन-चार
लड़कियाँ उन्हें मिली थीं। पर ठाकुर साहब ने एक को भी
स्वीकार नहीं करना चाहा। दूसरी बातों में वे माँ का बड़ा
लिहाज मानकर चलते थे, पर इस मामले में वे अपने हठ से तनिक
भी विचलित नहीं हुए। इस बात से मुझे स्वभावतः बड़ी
प्रसन्नता हुई। मेरे मन में यह विश्वास जम गया कि वे मुझ
से विवाह करने के इरादे से माँ के विवाह-सम्बन्धी प्रस्तावों
को ठुकरा रहे हैं। साथ ही मुझे ठाकुर साहब की बातों से
यह भी मालूम हुआ कि उनकी माँ मेरे साथ विवाह की बात
का घोर विरोध कर रही हैं और इस विरोध के लिए आमरण
अनशन करने तक को तैयार हैं। आज मुझे ठाकुर साहब की
इस बात की सचाई पर भी पूरा सन्देह होने लगा है।

"कुछ भी हो, मेरे पूर्ण आत्म-समर्पण के कुछ समय बाद मुझे
यह अनुभव होने लगा कि मेरे प्रति ठाकुर साहब के मनोभाव में
धीरे-धीरे परिवर्तन आने लगा है। जिस दिन से रूपा से उनका
परिचय हुआ उस दिन से मेरे प्रति उनकी उदासीनता
रूप में मेरे सामने आने लगी। और धीरे-धीरे वह उ
पत्थर की तरह निश्चल और उसी की तरह कठोर और
गई। मैं रूपा को इसके लिए तनिक भी दोष नहीं दे
न कभी एक क्षण के लिए भी मेरे मन में उसके प्रति
भाव उत्पन्न हुआ; क्योंकि मैं जानती हूँ कि वह भी मेरी
दुश्चक्र का शिकार बनी है।

"मुझे भाग्य के विधान की यह बात सबसे अधिक
जनक लगती है कि रूपा भी ठीक उसी कारण से ठाकु
में आई, जिस कारण से मैं—अर्थात् अपने पिता की
अनाथ अवस्था को प्राप्त होने पर। मेरी ही तरह उ
अनाथ अवस्था आर्थिक अभाव के कारण नहीं, बल्कि संर
अभाव के कारण थी। पर नहीं, मैं ग़लत बात कह रही हूँ
की मृत्यु के बाद भी रूपा अनाथ न होती, और न संरक्ष
अभाव ही उसके लिए रहता क्योंकि ठाकुर धीराजसिंह
जान से चाहते थे, और उसके लिए मर मिटने को तै
धीराजसिंह के ऊपर एक तो कोई ऐसा पारिवारिक बन्धन
जिससे वे रूपा की संरक्षकता का पूरा भार अपने ऊपर
हिचकते, दूसरे यदि कोई ऐसा बन्धन होता तो भी रूपा के
उसे तोड़कर आजीवन उसका साथ देते। पर धीराजसिंह
भारी कमी यह रही कि वे दृढ़ स्वभाववाले नहीं थे। जि
को वे न्यायोचित समझते थे उसे दृढ़ता से अपनाने की
उनमें कभी नहीं रही। किसी प्रबल इच्छाशक्तिवाले व्यक्ति
चाहे वह कैसा ही भयङ्कर अन्यायी क्यों न रहा हो—
आने के शारीरिक तथा चारित्रिक साहस का उनमें सदा
रहा। फल यह हुआ कि ठाकुर लक्ष्मीनारायणसिंह ने
के न चाहने पर भी उसकी संरक्षकता का भार अपने हाथ
लिया तो धीराजसिंह कायरता से पीछे हट गये।

ठाकुर साहब क्यों रूपा के संरक्षक बनने को उत्
इस बात में यद्यपि कोई रहस्यमयता नहीं होनी चाहिए
वह कभी-कभी बड़ी रहस्यमय लगती है। रूपा की सुन्दर
छवि और सहज शान्त स्वभाव उन्हें स्वभावतः आकर्ष
होगा, यह मैं मानती हूँ। पर मेरा यह निश्चित विश्वास
न तो कभी उसके साथ विवाह का विचार उनके मन में
और न कभी उसके साथ उनका प्रेम-सम्बन्ध किसी रूप
है। फिर भी वे रूपा को एक ईर्ष्यालु पति की तरह
सावधानी से सुरक्षित अवस्था में अपने साथ रक्खे हुए
गौहरों का कोई प्रेमी किसी ऐसे रत्न को बड़ी हिफ़ाज़त से
पास रखता है जो उसके सञ्चय में सबसे अधिक मूल्यवान
वह रत्न उसके जीवन के किसी भी काम में नहीं आता—उ
बड़े जतन से सँजोकर, दूसरों की ईर्ष्यालु दृष्टि से बचाकर
पास रक्खा जाता है। उन्हें मालूम था कि रूपा और धीर
दूसरों को चाहते हैं, इसी कारण उन्होंने भर सक उन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक-दूसरे से खुलकर मिलने की सुविधा नहीं दी, और धीराजसिंह की हत्या—हाँ हत्या—का कारण भी यही है !"

इकतीसवाँ परिच्छेद

नाव सङ्गम के पास पहुँच चुकी थी। परिपूर्ण पूर्णिमा की उस रात में गङ्गा और यमुना की तरङ्गें न जाने किस अज्ञात मिलन की उद्दाम आकाङ्क्षा से हिल्लोलित होकर प्रमत्त प्रवाह से एक दूसरे से टकराती हुई अन्त में कछार पर सिर पटक रही थीं। उस वातावरण में कभी एक अस्पष्ट हाहाकार भरा स्वर गूँज उठता था और कभी एक तरल अट्टहास का सम्मिलित शब्द जैसे मानव हृदय की विवशताओं और विफलताओं की कहानी का उपहास कर रहा था। महीप शारदादेवी के मुँह से निकले हुए एक-एक शब्द को एकान्त मन से, अत्यन्त ध्यानपूर्वक स्तब्ध हृदय से सुन रहा था।

धीराजसिंह की हत्या का उल्लेख करते ही शारदादेवी जैसे स्वयं अपनी बात से सहमकर चुप हो गईं। महीप ने नाववाले से नाव लौटा ले चलने के लिए कहा।

नाव लौटकर जब कुछ दूर आगे बढ़ी तो महीप ने कहा—"धीराजसिंह के स्वभाव की 'कायरता' से ठाकुर साहब अवश्य ही परिचित रहे होंगे। वे निश्चय ही यह जानते रहे होंगे कि धीराजसिंह दीदी को चाहे कितना ही क्यों न चाहते हों, उनसे कोई ख़तरा नहीं हो सकता। तब फिर उनकी हत्या की क्या आवश्यकता ठाकुर साहब को जान पड़ी ?"

"ठाकुर साहब सन्देह के लिए तनिक भी गुञ्जाइश कहीं नहीं छोड़ना चाहते—यह उनके स्वभाव की विशेषता है," अपने स्वर में पहले से अधिक गम्भीरता भरते हुए शारदादेवी ने कहा। "सन्देह का कारण चाहे प्रत्यक्ष में हानि की सम्भावना से एकदम नगण्य क्यों न हो, वे उसे काँटे की तरह जड़ से उखाड़कर फेंके बिना चैन नहीं ले सकते। धीराजसिंह कहीं किसी असावधानी के क्षण में रूपा को उनके चङ्गुल से भगा न ले जायँ, यह आशङ्का निश्चय ही उन्हें बेचैन कर रही होगी। साथ ही प्रकट रूप से उनकी हत्या करने का साहस भी ठाकुर साहब नहीं कर सकते—जिस प्रकार वे दीदी को सीधे-सीधे विष खिलाकर या पिस्तौल से गोली चलाकर नहीं मार सकते थे। जिस प्रकार उन्होंने एक कुटिल चक्र से दीदी की आत्महत्या का जाल रचा उसी प्रकार धीराजसिंह को शिकार खेलने का निमन्त्रण देकर 'शिकार की दुर्घटना' की आड़ में उन्हें मार डाला या मरवा डाला होगा।"

महीप सिहर उठा और उसके रोएँ खड़े हो उठे। असल में उसने अभी तक धीराज की तथाकथित हत्या की विभीषिका पर एकान्त में एक क्षण के लिए भी अच्छी तरह विचार नहीं किया था। शारदादेवी के व्यक्तित्व के और जीवन के जिस अप्रत्याशित रूप का परिचय उसे आज मिला था उसने उसके मन को अपनी निगूढ़ रहस्यमयता से इस क़दर छा लिया था कि किसी दूसरे विषय पर ध्यान से विचार करने का अवसर ही उसे नहीं मिल पाता था। पर इस समय शारदादेवी की अन्तिम बात ने सहसा उसके भ्रमित मन के एक सुस्थिर क्षण में इस ढङ्ग से प्रवेश किया कि उसकी भयङ्करता के पूर्ण अनुभव से वह चौंक उठा। धीराज की तथाकथित हत्या से सम्बन्धित बात एक नये ही प्रकाश में उसके मन की आँखों के आगे चमक उठी और एक अत्यन्त भावुक, तीव्र अनुभूतिशील और साथ ही (आश्चर्य है कि) घोर बौद्धिक युवक के जीवन का हृदय को दहला देने वाला ट्रेजिक रूप उसके आगे बिजली की झलक से प्रभासित हो उठा। धीराज के जिस जीवन से वह नहीं के बराबर परिचित था उस अज्ञात जीवन की झाँकी न जाने किस रहस्य-लोक से 'ईथर' में प्रक्षेपित होकर महीप की अन्तश्चेतना की आकस्मिक दिव्य दृष्टि के आगे टेलीविजन के-से पट से जैसे पल में आदि से अन्त तक अत्यन्त मार्मिक रूप से करुण रङ्गों में छविमान हो उठी। उस एक दिव्य पल के भीतर जैसे धीराज का पूरा जीवन-काल समा गया था। धीराज के प्रत्यक्ष-स्थूल-जीवन का केवल क्षणिक—बल्कि क्षणिकतम—परिचय महीप को हुआ था। पर अभी जो दिव्य दृष्टि उसकी अन्तश्चेतना को प्राप्त हुई थी उसमें केवल धीराज के प्रत्यक्ष जीवन का आद्यन्त रूप ही उसके सामने नहीं आया, बल्कि उस प्रत्यक्ष और स्थूल जीवन के अन्तराल में चिर-गतिशील रहनेवाला अप्रत्यक्ष, सूक्ष्म अनुभूतिमय जीवन भी परिस्फुट हो उठा। अपने अन्तर्मन के इस आश्चर्यमय संवेदन की तीव्रता का अनुभव करके महीप भीतर ही भीतर कराह उठा। उसे ऐसा लगा कि धीराज की अशरीरी आत्मा जैसे अकस्मात् उसकी असावधानी के क्षण में, उसकी छाती को चीरकर उसके हृदय में प्रवेश करके अत्यन्त सांघातिक रूप से करुण विलाप करती हुई बिलख रही हो।

इस भावना से आतङ्कित-सा होकर वह अपने अनजान ही सँभलकर बैठने के उद्देश्य से अपने स्थान पर से कुछ हटा और इस चेष्टा में शारदादेवी के शरीर से उसका घुटना छू गया। पल में बिजली के स्पर्श की-सी ज्वलन्त अङ्गारों की-सी एक तीखी अनुभूति महीप के प्रति रक्तकण में व्याप्त हो गई। उसने तत्काल अपना पाँव हटा लिया। उसे ऐसा लगा कि उस जलती हुई अनुभूति में भी एक धधकती हुई आत्मा की चटकती हुई कराह, एक सत्त्वहीन खाल की धौंकनी से निकली हुई गरम साँस। और इस अनुभूति के साथ ही किसी रहस्यमयी प्रेरणा से उसकी अन्तरात्मा की दिव्य दृष्टि जैसे फिर एक बार खुल गई और इस बार शारदादेवी के स्थूल और प्रत्यक्ष रूप से व्यक्त जीवन के अन्तराल में उनके जन्मकाल से लेकर तत्काल तक प्रवाहित होनेवाले सूक्ष्म जीवन के अत्यन्त मार्मिक रूप की झाँकी उसके आगे प्रत्यक्ष सत्य की तरह स्पष्ट हो उठी—हालाँकि शारदादेवी के प्रत्यक्ष जीवन से उसका परिचय केवल इतना ही था जितना कि धीराज के जीवन से। अपनी अन्तरात्मा की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस दिव्य अनुभूति पर उसे परम आश्चर्य होता, यदि उस पर तटस्थ रूप से विचार करने का अवसर उसे प्राप्त होता। उसके अन्तर्जगत् के टेलीविजन-पट पर जो यह दूसरा चित्र पहले की ही तरह भूतकाल के किसी रहस्यमय अज्ञात लोक से प्रक्षेपित हुआ उसमें उसने देखा कि शारदादेवी के उस सूक्ष्म जीवन में असंख्य महात्वाकांक्षायें अस्फुट किन्तु विश्वप्राण को पुलक विह्वल करनेवाली प्रत्यन्त मधुर और मनोरम आशायें, कठोर जीवन के सङ्घर्ष को स्निग्ध और सहनीय बनानेवाली प्रफुल्ल प्रेमानुभूति—सब किसी विषैले हाथ के स्पर्श से झुलसकर काले और कुरूप बनते चले जा रहे हैं। महीप का अन्तःप्राण उस निर्मम दृश्य से हाय-हाय कर उठा, पर कोई उस मर्मान्तक घातकता का निवारण करनेवाला उसे नहीं दिखाई दिया। क्या प्राणों की वे सब सुन्दर, सुकुमार, मङ्गलमयी, पुलक-हिल्लोलमयी, स्निग्ध-सजल अनुभूतियाँ इसी तरह झुलसकर काली और कुरूप बनती चली जायँगी—और अपने पीछे छोड़ देंगी जड़, निष्प्राण कोयलों का एक ढेर? उस हौलनाक दृश्य को महीप के अन्तःप्राण सहन नहीं कर सके और उन्होंने तत्काल अपनी दिव्य आँखें मूँद लीं।

अन्तःप्राणों के द्वार रुद्ध करके महीप सचेत लोक में पहुँचने जा रहा था कि सहसा दूर कहीं से अत्यन्त मर्म-मधुर और पुलक-विकल स्वर में बाँसुरी बज उठी। जीवन में असंख्य बार महीप के कानों में बाँसुरी की स्वर-लहरी तरङ्गित हुई होगी, पर आज जिस प्रकार के वातावरण में और जिस मानसिक स्थिति में उसने अलौकिक वेदना के कल-कम्पन से गूँजता हुआ वह स्वर सुना वह अपूर्व था। क्षणकाल के लिए वह भूल गया स्वार्थान्ध मानव द्वारा विवश मानव (या मानवी) के शोषण की बात, भूल गया शक्तिमद से प्रमत्त राष्ट्रों द्वारा परिचालित युद्ध की विश्वव्यापी विनाशलीला के भौतिक नर्तन की बात; भूल गया अपने और दूसरों के जीवन के असंख्य विफल सङ्घर्षों की बात। वह अनुभव करने लगा केवल एक स्निग्ध, शीतल, किन्तु तीव्र प्रकाश-पुञ्ज से झरते हुए शुभ्र साम्ययुक्त भावों की असंख्य फुलझड़ियाँ, और उन फुलझड़ियों के प्रकाश में स्रोत से सागर-सङ्गम तक विभासित, आनन्द और विषाद के सम-सामंजस्य से सजल, भावमात्र शेष जीवन-धारा की एक अटूट रेखा। बाहर दोनों ओर, यमुना की नील लहरियों के ऊपर और दोनों ओर की आवर्ती भूमि पर चाँदी की तरह बिखरी हुई चाँदनी और भीतर परिपूर्ण जीवन की पुञ्जित प्रकाशमयी भावानुभूति! महीप को लगा जैसे एक मोहमयी मूर्च्छा उसे समाधि-मग्न कर देगी।

नाव आगे बढ़ती चली गई और बाँसुरी का स्वर जैसे उलटी दिशा की ओर अग्रसर होता हुआ पीछे हटता चला गया। धीरे-धीरे वह स्वर-लहरी वायु में प्रवाहित गन्ध की तरह एकदम विलीन हो गई। महीप धीरे-धीरे अपने आपे में आने लगा। कुछ समय बाद उस दिव्य अनुभूति की प्रतिक्रिया उसके भीतर आरम्भ होने ही जा रही थी कि अचानक उसके कानों में किसी के सिसकने की आवाज़ आई। चौंककर उसने शारदादेवी की ओर देखा। वे आँचल से अपना मुँह ढाँपकर बेतहाशा फफक रही थीं और फफकते हुए उनका सारा शरीर हिल रहा था। अत्यन्त घबराहट के साथ महीप ने पूछा—"आपको क्या हो गया? आप—आप रो क्यों रही हैं?"

पर शारदादेवी ने कोई उत्तर नहीं दिया। वे उसी तरह मुँह ढाँपे सिसकती और फफकती चली गईं। बीच-बीच में उनकी सिसकियाँ हिचकियों का रूप धारण कर लेती थीं। स्पष्ट था कि वे अपने को रोकने की बहुत चेष्टा कर रही थीं, पर किसी भी उपाय से वे सिसकियाँ और हिचकियाँ रुकती नहीं चाहतीं।

काफ़ी देर बाद इस सम्भावना की ओर महीप का ध्यान गया कि वातावरण की और बाँसुरी की जो प्रतिक्रिया उसके भीतर हुई है वही—अन्य रूप में—दूसरे के मन पर भी हो सकती है।

शारदादेवी ने जब कोई उत्तर नहीं दिया तो महीप ने दुबारा उनसे इस सम्बन्ध में कोई प्रश्न करना उचित नहीं समझा। यह बात भी उसकी समझ में आ गई थी कि इस समय रोकर जी हलका कर लेना उनके लिए हितकर ही सिद्ध होगा। अपने जीवन की व्यर्थता और विवशता का जो इतिहास उन्होंने आज अत्यन्त सन्निकट रूप से उसे सुनाया था, एक अन्य वर्ग के सजीव प्रतीक का यथार्थ रूप उसके आगे चित्रित था। अपने व्यक्तिगत जीवन की विफलता के बीज से प्रतिक्रिया आग सुलगाकर सामाजिक क्रान्ति की चिनगारियाँ बिखेरते हैं। जिस लक्ष्य की ओर उन्होंने सङ्केत किया था, बहुत दिनों के दमन के बाद बन्धन तोड़कर बाहर निकले हुए उस मानसिक की चरम परिणति यदि पूर्णिमा की उस रात में यमुना की तरङ्गों के ऊपर, नारी-हृदय से फूटे हुए मुक्ता-आँसुओं के रूप हो जाय, तो वह हर हालत में अच्छा ही है, ऐसा सोचकर वह चुप हो रहा।

जब बलुवा घाट के पास नाव आ लगी, तो दोनों उतरने के लिए उठ खड़े हुए। नाव डगमगा रही थी, और शारदादेवी उतरने की चेष्टा में गिरते-गिरते सँभल गईं। महीप ने उनका हाथ पकड़कर उतारा, और उसके बाद नाववाले का चुकाकर स्वयं भी उतर पड़ा।

ऊपर चढ़कर दोनों बग्घी पर सवार हुए। शारदादेवी आँसू पोंछ चुकी थीं। पर रास्ते भर वे महीप से एक शब्द भी नहीं बोलीं। बँगले पर जब बग्घी पहुँची, तो शारदादेवी उसी तरह चुपचाप चलकर कहाँ ग़ायब हुईं, इस बात का कुछ भी पता महीप नहीं लगा पाया। कोनेवाले जिस कमरे में वह रहता था उसके सामने पच्छिम की ओर के खुले मैदान पर उसका पलँग बिछा हुआ था। कुर्ता उतारकर वह चुपचाप उसी पर जाकर लेट गया।

(क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

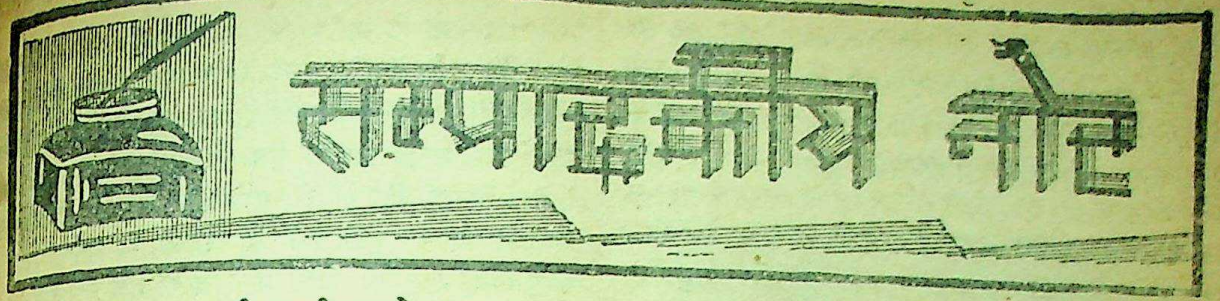

फ्रेंच-इंडोचायना की स्वाधीनता-घोषणा

फ्रांस की नई सरकार के उपनिवेश-मन्त्री ने पिछले दिनों एक महत्त्वपूर्ण घोषणा की है जिसमें कहा गया है कि ज्यों ही इंडोचायना शत्रु के पञ्जे से मुक्त हुआ, उसे राजनैतिक और आर्थिक स्वाधीनता दे दी जायगी। घोषणा में यह भी कहा गया है—शायद उसकी असम्बद्धता दूर करने के लिए—कि फ्रांस के लम्बे अर्से से फ्रांस के राजनीतिज्ञ इस समस्या पर विचार करते आ रहे थे।

वर्तमान महायुद्ध के प्रारम्भ से ही जनता विभिन्न साम्राज्यों की उपनिवेश-सम्बन्धी नीति का अध्ययन सतर्कता से करती रही है। जर्मनी ने जिस दिन फ्रांस पर आक्रमण किया था उन्हीं दिनों लोग सोचने लगे थे कि देखें फ्रांस अब अपने उपनिवेशों के सम्बन्ध में क्या नीति बर्तता है, क्योंकि यह क़रीब-क़रीब निश्चित था कि फ्रांस अब उपनिवेशों की ठीक-ठीक रक्षा न कर सकेगा। जनता की ऐसी धारणा के लिए कारण था। उपनिवेश फ्रान्स की भूमि से दूर थे और भूमध्यसागर के युद्धक्षेत्र बन जाने से उनकी सहायता के लिए सेना भेज सकना असम्भव था। फ्रांस की भूमि में जर्मन सेनायें उतर आई थीं; इसलिए उसे स्वयं ही लेने के देने पड़ गये थे। इस दशा में बाहर सेनायें भेजने का प्रबन्ध भी वह कैसे कर सकता था। पर फ्रांस संकटग्रस्त होने पर भी उन दिनों इस प्रकार का कोई वक्तव्य नहीं दिया जिससे यह प्रमाणित होता कि वह इंडोचायना या किसी अन्य उपनिवेश को स्वाधीन करने का विचार कर रहा है। वक्तव्य फ्रांस की ओर से उन दिनों प्रकाशित हुए भी उनसे ध्वनि अलबत्त निकलती थी कि फ्रांसीसी अपने उपनिवेशों सम्बन्धित अधिकारों को हस्तान्तरित करने को तैयार नहीं हैं। इंडोचायना के सम्बन्ध में तो स्पष्ट रूप से कहा जा रहा था वह देश निर्बल है और यदि फ्रांस उसे छोड़ दे तो वह शत्रुओं से अपनी रक्षा नहीं कर सकेगा, जैसा कि लेबनान के लिए से स्पष्ट है।

यह दलील ठीक थी। पर फ्रेंच इंडोचायना ही नहीं, विश्व के अनेक छोटे-छोटे राष्ट्रों का भी उन दिनों यही हाल था। वे शत्रु के आक्रमण को सहने के सर्वथा अयोग्य सिद्ध हो गये और एक के बाद एक जर्मनी के पञ्जे में पड़ते जा रहे थे। स्वयं फ्रांस भी अपनी रक्षा कितने दिन कर सका था? इस दृष्टि से उस दलील का कुछ मूल्य न था। फिर इंडोचायना जापान द्वारा छीन लिया गया और फ्रांस के निर्बल हाथ शत्रु के मुख में जाने से उसे न बचा सके। फ्रान्स की ओर से उन दिनों भी यही कहा जा रहा था कि 'ऐनामाइट (इंडोचाइना-वासियों) में चरित्रबल का अभाव है। भले ही वे प्रतियोगिता-परीक्षाओं और डिप्लोमा-परीक्षाओं में अपनी योग्यता प्रदर्शित करें। वे शासनसूत्र का सञ्चालन नहीं कर सकते, क्योंकि उन्हें वह चारित्रिक बल प्राप्त नहीं है जिसके अभाव में बुद्धिमत्ता व्यर्थ हो जाती है।'

अब फ्रांस की सरकार इंडोचायना को स्वाधीनता देने का वादा कर रही है। हमारी समझ में यह नहीं आता कि इस अल्पकाल में ही जापान ने उसे ऐसी कौन सी बूटी पिला दी जिससे उसे चारित्रिक बल प्राप्त हो गया और वह फ्रांस सरकार की दृष्टि में, भावी शासन-विधान चलाने के योग्य बन गया है।

फ्रांस की सरकार यदि वास्तव में अपने इस वादे पर अमल करना चाहती है तो उसे इसके लिए इस दिशा में क्रियात्मक पग उठाना चाहिए। उसके पास अब भी कुछ उपनिवेश हैं, उन उपनिवेशों की स्वतन्त्रता की अविलम्ब घोषणा करके वह न केवल साम्राज्यवादियों के सामने उच्च आदर्श रख सकती है, अपनी सदिच्छा के कारण संसार के प्रत्येक निवासी की दृष्टि में श्रद्धा, आदर और विश्वास की पात्र बन सकती है। अन्यथा उसका यह वादा भी प्रलोभन भर समझा जायगा।

प्रेसिडेंट रूज़वेल्ट का देहान्त

युद्ध अब परिणति की ओर अग्रसर हो चुका है और विजय-श्री ने मित्र-राष्ट्रों के गले में जयमाला पहनाने का निश्चय कर लिया है। ऐसे अवसर पर प्रेसिडेंट रूज़वेल्ट का उठ जाना एक अपशकुन है। इस दुर्घटना के परिणाम से विजयोत्सव तो फीका हो ही गया, संसार की भावी व्यवस्था में भी, जो सेनफ्रांसिस्को में होने जा रही है, विघ्न पड़ सकते हैं।

वर्तमान युद्ध में विजय को इतना शीघ्र समीप लाने का श्रेय निस्सन्देह प्रेसिडेण्ट रूज़वेल्ट को है। उनके आदेश पर समस्त अमरीका यन्त्र की भाँति काम कर रहा था। उनके प्रति अमरीकनों की कितनी आस्था थी, इसका पता इससे लगता है कि जब उन्होंने २४ लाख के अधिक मत से अपने प्रतिद्वन्द्वी मिस्टर डेवे को हराया तब न्यूयार्कवासी पागलों की तरह प्रसन्नता से उछल पड़े थे और उन्हें बधाई देने के लिए हायट हाउस की ओर दौड़ पड़े। लगातार चार बार उनका संसार के सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रपति चुना जाना न केवल अमरीका के, संसार के इतिहास की एक नवीन घटना थी, जो यह प्रकट करती है कि उनकी राजनीतिज्ञता पर अमरीका की जनता को कैसा अटूट और अडिग विश्वास था। और अमरीका ही क्यों, संसार के प्रायः सभी

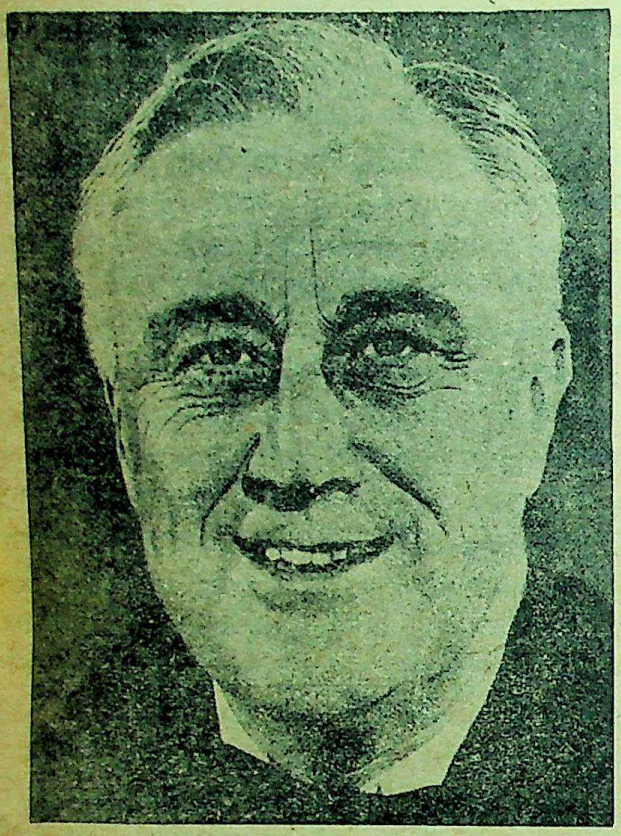

स्वर्गीय प्रेसिडेंट रूज़वेल्ट

देशों के निवासी युद्धोत्तर विश्व की शान्ति-व्यवस्था के सम्बन्ध में उनका जितना विश्वास करते थे उतना और किसी का नहीं करते।

प्रेसिडेंट रूज़वेल्ट के रहते हुए मित्रराष्ट्रों में शान्ति-व्यवस्था को लेकर मतभेद नहीं पैदा होगा, ऐसी सर्वसाधारण की धारणा थी। उन्हीं के व्यापक प्रभाव को सामने रखकर लोग यह भी समझ रहे थे कि इस बार भावी अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था में अमरीका प्रमुख भाग लेगा और पहले की भाँति तटस्थ नहीं हो जायगा। अब ये आशायें कहाँ तक सफल होंगी, इसका निर्णय भविष्य ही करेगा। उनके इस प्रकार सहसा उठ जाने से ऐसा अनुभव होता है मानों एक महान् वृक्ष गिर गया है जो अपनी शाखा-प्रशाखाओं द्वारा समस्त जगत् को आच्छादित किये था। उनके जैसे कुशल राजनीतिज्ञ और प्रभावशाली व्यक्ति शताब्दियों में कहीं एक-आध उत्पन्न होते हैं।

महासमर का अवसान

योरप का युद्ध समाप्त हो गया। जर्मनी को आत्मसमर्पण कर देना पड़ा। एक ओर से संयुक्त राष्ट्रों की सेनाओं ने और दूसरी ओर से सोवियट रूस की फ़ौजों ने जर्मनी में घुसकर जब उसके आत्म-रक्षा के सभी मोर्चों को ध्वंस-विध्वंस करके किया और जर्मन सेनायें उनके अति प्रबल आक्रमणों को न कर सकीं तब नात्सी नेताओं के सामने आत्मसमर्पण के और क्या उपाय था? इस लोक-संहारक युद्ध के एडोल्फ़ हिटलर और बेनिटो मुसोलिनी का भी इसके अन्त हो गया। मुसोलिनी को इटली के वर्गवादियों करके गोली मार दी और वे कुत्ते की मौत मारे गये। जाता है कि हिटलर बर्लिन की रक्षा करते हुए वीरगति हुए। परन्तु उनकी मृत्यु के सम्बन्ध में सन्देह है कि मरे। चाहे जो हो, इन दोनों महापुरुषों की भी युद्ध समाप्ति हो गई। ये दोनों ही तानाशाह सन् १९१४ के देन थे। पिछले युद्ध में इटली जो चाहता था, वह मिला। जर्मनी युद्ध में हार जाने से अपना अधिकार चुका था। अतएव इन दोनों देशों के महत्त्वाकांक्षियों के को दूर करने के लिए ये दोनों व्यक्ति आगे आये। का ही अपने देश के समाज में उस समय नगण्य स्थान ये एक साधारण नागरिक जैसे ही थे। परन्तु अ विशेषताओं के कारण ये अपने-से विचार रखनेवालों का सुदृढ़ सङ्गठन बना लेने में सफल हुए कि इनकी वहाँ तूती लगी। यही क्या, ये दोनों अपने देश के सर्वेसर्वा हो फिर क्या था, ये दोनों ही विश्वविजय का स्वप्न देखने सन् १९१४ के युद्ध के विजयी राष्ट्रों ने इनका अभ्युदय इसलिए होने दिया था कि ये दोनों ही बोल्शेविकों का करते थे और विजयी मित्र राष्ट्र स्वयं बोल्शेविकों के विरुद्ध परन्तु जब इन दोनों ने बोल्शेविकों के विरोध के बहाने स्थिति दृढ़ कर ली और जब मुसोलिनी प्राचीन रोम-साम्राज्य स्थापना का और हिटलर विश्वविजय की महत्त्वाकांक्षा का प्रकट करने लगे तब बोल्शेविक क्या सभी लोग चिन्तित शङ्कित हो उठे। अन्त में जब युद्ध प्रारम्भ हो गया तब ने सारे योरप को पददलित करके जो लोकसंहार किया, योरप की मेदिनी विकम्पित हो गई। उस अवसर पर जाति ने जिस धैर्य से काम लिया, यह उसी का सुपरिणाम जर्मनी और इटली के नृशंस आततायियों का विनाश और वह दिन दूर नहीं, जब योरप के सभी छोटे-बड़े स्वा प्रेमी देश सुख और शान्ति की साँस ले सकेंगे। अब प्रशान्त का युद्ध, सो उसकी भी समाप्ति के दिन दिखाई हैं। ब्रह्मदेश में संयुक्तराज्यों की सेनाओं ने रंगून पर कर लिया है और वहाँ जापानियों का विरोध बिलकुल पड़ गया है। इसके सिवा, अंडमन द्वीप एवं बोर्नियो उनके आक्रमण शुरू हो गये हैं और मलाया प्रायः भी आक्रमण की सम्भावना बढ़ गई है। उधर द्वीप-पुञ्ज पर अधिकार करके अमरीकनों के स्वयं जापान हवाई आक्रमण लगातार हो रहे हैं। योरप में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छुट्टी मिली, तत्काल ही अधिक सेनायें जापान पर आक्रमण करने को भेजी जायँगी। और तब जर्मनी की ही भाँति जापान को भी आत्मसमर्पण करने को बाध्य होना पड़ेगा। इस प्रकार वह दिन स्पष्ट से स्पष्टतर हो गया है, जब इस लोकसंहारक महायुद्ध का पूर्ण रूप से अवसान हो जायगा।

साम्प्रदायिकता का आरोप

प्रयाग में प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का जो सफल अधिवेशन हाल में हुआ था, उसकी एक बात कदापि उपेक्षणीय नहीं मानी जा सकती। वह बात और कुछ नहीं, किन्तु हिन्दी के ही एक सुलेखक का अपने ही एक सहयोगी पर साम्प्रदायिकता का आरोप करना है। उक्त सुलेखक कांग्रेस के एक माने हुए कार्यकर्त्ता हैं और उनको राष्ट्रीयतावाद का गर्व होना सर्वथा स्वाभाविक है। परन्तु जहाँ उन्होंने किसी हिन्दी हितचिन्तक को सम्प्रदायी कहने का सुख प्राप्त किया है, वहाँ उन्हें एक दूसरे पहलू पर भी ध्यान देना चाहिए था और तभी उनका राष्ट्रीयतावाद का अभिमान करना, हमारी समझ में, अधिक सार्थक होता। क्या उन्हें यह ज्ञात नहीं है कि गण्डक के किनारे से लेकर पश्चिमी सीमाप्रान्त के छोर तक और कश्मीर से लेकर विन्ध्य-गिरि तक भारत का जो विशाल भूखण्ड है उसके सभी प्रान्तों की लोक-भाषाओं की क्या दशा है? यह तो अँगरेज़ सरकार की विशेष कृपा हुई है कि संयुक्त प्रान्त की लोकभाषा आज जीवित दिखाई दे रही है अन्यथा राजपूताना, सिंध, बलोचिस्तान, पञ्जाब, पश्चिमी सीमाप्रान्त और कश्मीर की लोकभाषाओं की जो दयनीय अवस्था है, वही हमारी हिन्दी की भी होती। क्या इन प्रान्तीय लोक-भाषाओं को अपना स्वाभाविक साहित्यिक रूप प्राप्त करने का कोई हक़ ही नहीं है? क्या अन्य प्रान्तों की लोकभाषाओं को वह उन्हें फलने-फूलने का अवसर नहीं मिलना चाहिए? क्या उन पददलित प्रान्तीय भाषाओं के अभ्युत्थान का प्रयत्न करना सम्प्रदायवाद है? यदि ऐसा प्रयत्न करनेवाले पर सम्प्रदायवाद का आरोप करना ही राष्ट्रीयतावाद है तो हमें ऐसे राष्ट्रीयतावाद को नमस्कार करना पड़ेगा। हम ऐसे राष्ट्रीयतावाद के लिए अपने मन का, अपनी भाषा का, अपनी संस्कृति का कदापि बलिदान नहीं कर सकते। संयुक्त प्रान्त में हिन्दी के साथ जो अन्याय हुआ है, वह अब अधिक समय तक नहीं टिक सकेगा और सो भी उस दशा में, जब कि हम देख रहे हैं कि हमारे यही राष्ट्रीयतावादी बन्धु उसकी, अपने सम्प्रदायवाद की रक्षा के लिए, 'सुरक्षित' करवाने का प्रयत्न कर रहे हैं। एक बार ऐसा ही प्रयत्न कदाचित् प्रान्तीय सरकार के इशारे पर राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द' ने किया था और उस समय 'भारतेन्दु' बाबू हरिश्चन्द्र ने अपना सर्वस्व न्योछावर कर उसकी रक्षा की थी। परन्तु आज उससे कहीं अधिक सङ्गठित प्रयत्न हिन्दी का विनाश करने के लिए हमारे कुछ लोकनेता अपनी राजनैतिक सनकों की पूर्ति के लिए कर रहे हैं। ऐसी दशा में प्रत्येक हिन्दी-प्रेमी को 'भारतेन्दु' हरिश्चन्द्र बनने की आवश्यकता है। यों हिन्दी-भाषी प्रारम्भ से ही काफ़ी उदार रहे हैं। उनका किसी भी भाषा के प्रति ईर्ष्या का भाव नहीं रहा है। उन्होंने अन्य भाषाओं के उपयोगी शब्दों को तथा भावों को भी सहृदयता के साथ अपनाया है। कोई दस-पन्द्रह वर्षों की बात है, देश के एक प्रतिष्ठित व्यक्ति ने इस बात का आन्दोलन किया था कि हिन्दी के शब्द-भाण्डार से सभी विदेशी शब्द निकाल बाहर किये जायँ और उनके स्थान पर विशुद्ध संस्कृत-शब्दों का प्रयोग किया जाय। वे महानुभाव काफ़ी समय तक अपना यह आन्दोलन करते रहे। परन्तु उस आन्दोलन का हिन्दीवालों पर ज़रा भी प्रभाव न पड़ा और वह जैसे उठा था, वैसे ही ठण्डा हो गया। हिन्दीवालों की इस प्रकार की मनोवृत्ति सम्प्रदायसूचक है या राष्ट्रीयतासूचक, इसका निर्णय सहृदय ही कर सकते हैं—राजनीतिक आन्दोलनकारी नहीं। हिन्दी की भावधारा में राष्ट्रीयता का जो व्यापक प्रभाव दिखाई देता है, वही इस बात का पर्याप्त प्रमाण है कि हिन्दी के साहित्यकार सम्प्रदायवादी नहीं हैं। हाँ, पचास वर्ष के घोर प्रयत्न से हिन्दी को जो रूप प्राप्त हुआ है और यह रूप देने में हिन्दीवालों ने जो कष्ट सहन किया है, वह सब आज हिन्दी के लेखकों को भले प्रकार याद है। अतएव अपनी भाषा की गौरवपूर्ण शैली और स्थिति की रक्षा करने के लिए अपनी ओर से वे कुछ उठा न रक्खेंगे। भले ही वे सम्प्रदायवादी कहकर लाञ्छित और अपमानित किये जायँ।

सेन फ़्रांसिस्को की कानफ़रेन्स

संसार के चार प्रमुख राष्ट्रों की कानफ़रेन्स सेनफ़्रांसिस्को में हो रही है। ये चार प्रमुख राष्ट्र ग्रेट ब्रिटेन, संयुक्त राज्य, सोवियट रूस और चीन हैं। युद्ध में इनकी विजय सोलहों आने निश्चित है। जर्मनी ने हथियार डाल ही दिया है और जापान को भी आज या कल तक घुटने टेकने ही पड़ेंगे। अतएव सेनफ़्रांसिस्को कानफ़रेन्स में ये अपनी भविष्य की नीति निर्द्धारित करेंगे। कानफ़रेन्स में जर्मनी, जापान और उनके मित्रराज्यों तथा स्पेन, स्वीडन जैसे निरपेक्ष राज्यों को छोड़कर संसार के अन्य चवालीस छोटे-बड़े राज्यों के प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं। कोई बारह सौ प्रतिनिधि इस अवसर पर सेनफ़्रांसिस्को में एकत्र हैं। हमारे भारत-सरकार के भी तीन प्रतिनिधि इसमें शामिल हैं। संयुक्त राज्य के नये अध्यक्ष ट्रूमैन साहब का कहना है कि इस कानफ़रेन्स के निर्णयों से संसार में स्थायी सुख और शान्ति स्थापित की जायगी और भविष्य में कोई भी राष्ट्र संसार की शान्ति भङ्ग नहीं करने पावेगा। यदि कोई ऐसा करने का दुःसाहस करेगा तो संसार के चारों प्रमुख राष्ट्र उसका दमन करेंगे। कहने का मतलब यह कि भविष्य में संसार की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के परिचालन का सूत्र इन्हीं चारों प्रमुख राष्ट्रों के हाथों होगा और संसार का कोई भी राष्ट्र इनकी निर्धारित नीति के विरुद्ध आचरण नहीं करे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकेगा और कोई करेगा ही क्यों जब संसार के सभी राष्ट्रों को स्वाधीनता की गारंटी मिल जायगी। इसमें सन्देह नहीं कि उक्त स्वाधीनता की व्याख्या इन्हीं प्रमुख राष्ट्रों की नीति के द्वारा ही निर्धारित होगी। ऐसी दशा में यह कैसे कहा जा सकता है कि सभी राष्ट्र उसे हृदय से स्वीकार कर लेंगे। यह सच है कि ये प्रमुख राष्ट्र युद्ध में विजयी हुए हैं और सब प्रकार के साधनों से सम्पन्न एवं सबसे अधिक शक्तिशाली हैं। अतएव संसार के अन्य अप्रमुख राष्ट्र इस समय भय से इनकी योजनाओं को स्वीकार कर सकते हैं। परन्तु यह भय ही किसी दिन भविष्य में अशान्ति का मूल कारण हो सकता है। चाहे जो हो, इस कानफ़रेन्स के अधिवेशन उक्त नगर में धूमधाम से हो रहे हैं, और इसमें विचारार्थ जो प्रस्ताव रक्खे जा रहे हैं, उनके सम्बन्ध में जो वाद-विवाद होता है, उससे प्रकट होता है कि उसमें समझौते की सद्भावना उतनी प्रबल नहीं है। इससे व्यक्त होता है कि कानफ़रेन्स कदाचित् ही अपने प्रयत्नों में सफल हो। यह दूसरी बात है कि ब्रिटेन और संयुक्तराज्य जैसे शक्तिशाली देशों के कुशल राजनीतिज्ञ अपने प्रभाव से अपने देशों के हितों की रक्षा विशेष सावधानी से कर ले जायँ। यह भी स्पष्ट ही है कि इस कानफ़रेन्स में विजयी अँगरेज़ी-भाषी देशों के राजनीतिज्ञों की प्रधानता रहेगी और संसार के सुख और शान्ति की जो योजना वे उपस्थित करेंगे, वह अवश्य ही बहुमत से स्वीकार की जायगी। इसमें सन्देह नहीं कि संसार के निर्बल राष्ट्र इसे इस आशा-भरी दृष्टि से देख रहे हैं कि यह भविष्य में एक नये संसार की सृष्टि करेगी और सभी पददलित राष्ट्रों को स्वाधीनता प्राप्त होगी। परन्तु कुछ महापुरुषों ने इसके सम्बन्ध में जो वक्तव्य निकाले हैं उनसे इसके प्रति उनकी उदासीनता ही प्रकट होती है। बात असल यह है कि विजयी राष्ट्रों ने सदैव ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन करके बार-बार जो आदर्श उपस्थित किया है, उससे केवल अपनी ही स्थिति उन्होंने सुदृढ़ की है। दूसरों के हिताहित का उतना ध्यान कभी नहीं रक्खा। तब ऐसी आशा कैसे पूर्ण हो सकती है कि यह सम्मेलन विजयी राष्ट्रों के स्वार्थों की अपेक्षा पददलित राष्ट्रों के स्वार्थों की रक्षा करेगा। औरों की तो हम नहीं जानते परन्तु भारत-सरकार की ओर से जो प्रतिनिधि इस कानफ़रेंस में भेजे गये हैं, उनके रङ्ग-ढङ्ग से यही प्रतीत होता है कि भारत की महत्त्वाकांक्षा का प्रतिनिधित्व वे वहाँ नहीं कर सकेंगे। इन प्रतिनिधियों में से एक सज्जन सर फ़ीरोज़ ख़ाँ नून ने जो प्रतिक्रियावादी भाषण वहाँ किया है, उससे हमारे कथन का भली प्रकार समर्थन हो जाता है। उस भाषण में उन्होंने संसारप्रसिद्ध महात्मा गांधी को लोगों की निगाहों में गिराने का प्रयत्न किया है। तथापि यह निश्चित-सा है कि इस कानफ़रेन्स के द्वारा संसार के सभी देशों के भाग्य का निर्णय किया जायगा और सबको बाध्य होकर इसके निर्णयों को स्वीकार करना पड़ेगा।

भारतीय राष्ट्र का इतिहास
सहायता की अपील

सन् १९३८ में डा० राजेन्द्रप्रसाद और सर यदुनाथ ने एक ऐसा भारतीय राष्ट्र का इतिहास तैयार करने का किया जिसमें नये से नये ऐतिहासिक अनुसन्धान की आ जायँ, जो भारतीय लेखकों द्वारा ही सरल और सुबोध में लिखा जाय तथा जिसकी क़ीमत इतनी कम हो कि सभी देशवासियों की पहुँच के अन्दर रहे। इस परम राष्ट्रीय महानुष्ठान के लिए बनारस में भारतीय इतिहास की स्थापना की गई और वह एक रजिस्टर्ड संस्था बनी। की जिल्दों के विभिन्न अध्याय विभिन्न सुयोग्य विद्वानों को के लिए देकर काम जारी कर दिया गया। इसी बीच के छिड़ जाने से हमारे विद्वान्, पुस्तकालय और संग्रहालय यत्र-तत्र पड़ गये और इसी झंझट में हमारे चार साल गये। पर अब यह कहते हर्ष होता है कि हमारे इतिहास मुख्य और रोचक जिल्दें छपने के लिए तैयार हो गई हैं तीसरी भी आधी तैयार हो चुकी है। मौर्य्य और गुप्तकाल दो जिल्दों की सब पाण्डुलिपियाँ मेरे हाथ में आ गई हैं भी उन्हें आगामी अक्टूबर के अन्त तक छाप देने को तैयार चुका है। गुप्तकालीन जिल्द का सम्पादन डा० मजुमदार और डा० अनन्त सदाशिव अल्तेकर ने किया है मौर्य्यकालीन जिल्द का सम्पादन प्रो० नीलकण्ठ शास्त्री डा० हेमचन्द्र राय चौधुरी द्वारा हुआ है। अकबरकालीन स्वयं मेरे हाथों में है और मुझे आशा है कि इन दो जिल्दों छपाई का काम आरम्भ हो जाने के चार महीने बाद इनकी पाण्डुलिपि प्रेस के लिए तैयार हो जायगी। आशा की जाती यदि कोई अनहोनी बात बीच में न आ पड़े तो मौर्य्य और काल की ये दो जिल्दें आगामी नवम्बर में तथा तीसरी १९४६ की मई में हम सर्वसाधारण के हाथ में दे सकेंगे।

१९३८ में हमें आशा थी कि हम प्रत्येक जिल्द की ४ रु० रख सकेंगे पर युद्ध की परिस्थिति में ख़र्च बढ़ जाने के अब ६ रु० क़ीमत होगी। हिन्दी संस्करण भी साथ ही साथ किया जा रहा है। प्रत्येक जिल्द में २०-२५ चित्र और होंगे। अँगरेज़ी संस्करण के प्रति जिल्द पर लगभग ११००० ख़र्च होंगे। दानी महाशयों की उदारता से ही हम लोग पिछले वर्षों के झंझटों में आफ़िस चालू रख सके, अढ़ाई जिल्दें पाण्डुलिपियाँ पूरी कर सके और १०००० रुपये भी बचा सके अब हमारे प्रारम्भिक सभी काम पूरे हो चुके हैं। इससे में हमारा काम अधिक तेज़ी से चलेगा। अभी सात और तैयार करने का काम विभिन्न सम्पादकों के हाथ सौंपा गया

हम अपने उदार दानी महाशयों से अपील करते हैं कि १९४५-४६ के लिए हमें ११००० रु० दान देने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिससे यह राष्ट्रीय महानुष्ठान अकस्मात् नष्ट न हो जाय या पैसा कमाने के व्यवसाय में परिणत न हो जाय।

चित्र और नक़्शे में बहुत ख़र्च पड़ जायँगे। अतएव यदि कोई दानी-मानी सज्जन इस मद का ख़र्च चलाने के लिए प्रति वर्ष १००० रुपया संरक्षित रक़म देने की कृपा करें तो बड़ी सहायता हो। स्मरण रहे कि केम्ब्रिज विश्वविद्यालय-सी धनी संस्था अपने भारतीय इतिहास (मुग़लकाल) में चित्र तभी प्रकाशित करने में समर्थ हुई जब कि सर रतन ताता ने इस ख़र्च के लिए पर्याप्त रूप से दान दिया।

अतः आप हमें सहायता करें कि डा० राजेन्द्रप्रसादजी के राष्ट्रीय महानुष्ठान के संकल्प का स्वप्न सत्य हो सके। संसार सिद्ध कर दिखा दें कि भारत का अतीत उच्च और महान् था।

इँगलैंड का महत्त्व

इँगलैंड इस बात में सदा बड़ा भाग्यशाली रहा है कि उसके संकट काल में उसे ऐसा कोई न कोई माई का लाल अवश्य मिल गया है, जिसने उसका उस सङ्कट से उद्धार ही नहीं किया है, प्रत्युत अधिक-से-अधिक गौरव भी बढ़ाया है। नेपोलियन के प्रतिपत्ति-काल में वह जिस भारी सङ्कट में पड़ गया था, उस समय विलियम पिट ने आगे आकर इँगलैंड की रक्षा ही नहीं की थी किन्तु नेपोलियन बोनापार्ट का पूर्ण पराभव करके इँगलैंड को वास्तव में ग्रेट ब्रिटेन बना दिया था। तेरहवीं सदी के प्रारम्भ में इँगलैंड के बादशाह प्रथम एडवर्ड ने इँगलैंड के गौरव को बढ़ाने के लिए श्रीगणेश किया था, उसका क्रम जो आज तक अविच्छिन्न रूप से जारी है, उसका एक मात्र कारण यही है कि इँगलैंड में समय ऐसे नर-रत्न सुलभ रहे हैं, जिन्होंने आगे बढ़कर उस को टूटने तो दिया ही नहीं है किन्तु उसे और सुदृढ़ ही बना दिया है। पिछले महासमर में जब ब्रिटिश साम्राज्य के लिए संकट उपस्थित हुआ था, तब उसकी बागडोर लायड जार्ज ने अपने हाथ में लेकर उसकी प्रतिष्ठा की रक्षा ही नहीं की थी किन्तु उसको और भी प्रभावपूर्ण बना दिया था। वर्तमान महायुद्ध के अवसर पर जब ब्रिटिश साम्राज्य विकट सङ्कट में पड़ गया मिस्टर विन्स्टन चर्चिल आगे आये और उसका शासन-सूत्र हाथ में लेकर अपने बुद्धि-कौशल का ऐसा प्रभावकारी परिचय दिया कि आज ग्रेट ब्रिटेन पूर्ण रूप से विजयी है और उसके शत्रुओं को ऐसी मुँह की खानी पड़ी है कि भविष्य में उनका सिर उठाना असम्भव है। इस बार की विजय से ब्रिटिश साम्राज्य का गौरव-सूर्य और भी प्रखर रूप से दीप्तिमान् होगा और इसका श्रेय चर्चिल साहब को ही मिलेगा। डंकर्क के युद्धक्षेत्र में जिस प्रकार की पराजय ब्रिटिश सेनाओं ने देखी थी, उस समय चर्चिल साहब ने जिस असाधारण धैर्य और साहस का परिचय दिया था, वह ब्रिटिश जाति की सदैव एक विशेषता रही है और यह उसी का सुफल है कि ब्रिटिश सेनायें जर्मनी में घुसकर ब्रिटिश जाति के वीरत्व के अभिमान का उसके मुँह पर पद-दलन कर सकी हैं। यह चर्चिल साहब की ही कुशल राजनीतिज्ञता थी कि एक ओर सारा रूस और दूसरी ओर सारा अमरीका आज उनके साथ इस प्रलयङ्कर युद्ध में बड़े धैर्य और साहस के साथ जर्मनी और जापान दोनों को परास्त करने में संलग्न हैं और वह दिन अब बिलकुल निकट आ गया है, जब इस लोक-संहारक युद्ध को समाप्त करके मित्र राष्ट्रों की विजयवाहिनियाँ पुनः संसार में शान्ति की स्थापना करेंगी और संसार एक बार फिर सुख की साँस ले सकेगा। भगवान् करे वह दिन शीघ्र से शीघ्र आ जाय क्योंकि इस जगद्व्यापी महायुद्ध से सारा भूमण्डल त्रस्त और पीड़ित है।

युद्ध के बाद की जटिल समस्यायें

योरप के युद्ध के समाप्त हो जाने तथा प्रशान्त के युद्ध के जारी रहने से विजयी राष्ट्रों के सामने बड़ी कठिन समस्यायें आ गई हैं। एक ओर उन्हें योरप का नूतन सङ्गठन करना है, दूसरी ओर उन्हें जापान को परास्त करना है। यद्यपि जापान की हार निश्चित है तथापि अभी उसको हथियार रखने के लिए बाध्य करने को कुछ समय लगेगा। परन्तु उस अवसर के लिए योरप की नूतन व्यवस्था स्थगित नहीं की जा सकती। सेनफ्रांसिस्को में जो महत्त्वपूर्ण कानफ़रेन्स हो रही है, वह इस व्यवस्था को निश्चित करके ही समाप्त होगी। पिछले महायुद्ध के समय फ्रांस के वर्सेलीज़ में जब ऐसी ही कानफ़रेन्स बैठी थी तब फ्रांस और ब्रिटेन ने जो निश्चय किया था, वही सबको मानना पड़ा था। इस बार सेनफ्रांसिस्को में वह अधिकार संयुक्तराज्य और ग्रेट ब्रिटेन को प्राप्त हुआ है। वर्सेलीज़ की कानफ़रेन्स के निश्चयों से उस बार अमरीका असन्तुष्ट हुआ था, इस बार, लक्षणों से जान पड़ता है, सोवियट रूस को असन्तुष्ट होना पड़ेगा। कानफ़रेन्स के चार प्रमुख राष्ट्रों में ग्रेट ब्रिटेन, संयुक्त राज्य, रूस और चीन हैं। इनमें ग्रेट ब्रिटेन और संयुक्त राज्य सदा एकमत रहते हैं और इस महा-युद्ध में चीन की जो अपार सहायता इन दोनों राष्ट्रों ने की है, उसके कारण चीन इन्हीं का साथ देगा। रूस कुछ-कुछ अकड़ा हुआ जान पड़ता है। परन्तु अल्पमत में होने के कारण इनके निश्चयों के आगे अन्त में उसे झुकना ही पड़ेगा। फिर इधर रूस के अपने कुछ भिन्न उद्देश्य भी हैं। युद्ध में विजय होने से उसका प्रभाव बाल्टिक राज्यों, पोलैण्ड, ज़ेकोस्लोवाकिया, आस्ट्रिया, यूगोस्लाविया, बल्गेरिया और रूमानिया पर बहुत अधिक हो गया है। पोलैण्ड, रूमानिया तथा आस्ट्रिया में उसने अपने प्रभाव से नई सरकारें स्थापित कर ली हैं और इस सम्बन्ध में उसने संयुक्तराज्यों से कुछ भी परामर्श नहीं किया है। इसके सिवा ग्रीस, इटली और फ्रांस में भी वर्गवादियों ने इधर ज़ोर पकड़ा है। कहा जाता है कि जर्मनी के हथियार डाल देने के बाद उसको ग्रेट ब्रिटेन, अमरीका और रूस तीन भाग करके आपस में बाँट लेंगे। यदि ऐसा होगा तो उस भाग में भी जो रूस को मिलेगा वामपक्षियों का प्रभाव बढ़ जायगा। इस प्रकार प्रायः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारे योरप पर बोल्शेविकों का प्राधान्य हो गया है। योरप में बोल्शेविकों की यह प्रभाव-वृद्धि संयुक्तराज्यों को कहाँ तक सह्य होगी, यह देखना है। रूस अपने इस प्राधान्य को क़ायम रखने के लिए कानफ़रेन्स में किसी तरह का विरोधी रुख़ नहीं रख सकेगा। उधर परिस्थिति के कारण संयुक्त-राज्य भी रूस से सङ्घर्ष बचाने का प्रयत्न करेंगे। इस परिस्थिति का सामाधान करना साधारण राजनैतिक समस्या नहीं है। संयुक्त-राज्यों को इसकी मीमांसा करने में कहीं अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। इस अवसर पर वे रूस को असन्तुष्ट करने का शायद ही साहस कर सकें। उन्हें अभी जापान को परास्त करना है जिसमें रूस की सहायता विशेष रूप से आवश्यक है। कदाचित् यह परिस्थिति ही इस बात का कारण है कि सेनफ़्रांसिस्को कानफ़रेन्स में उन्होंने अभी तक कोई ऐसी योजना नहीं रखी है, जिससे यह प्रकट होता कि वे योरप में अपनी किस प्रकार की नूतन व्यवस्था जारी करना चाहते हैं। चाहे जो हो, यह तो ज्ञात ही है कि इस कानफ़रेन्स का यह विशेष काम होगा कि वह शत्रुदेशों को ऐसा पङ्गु बना दे, जिससे भविष्य में वे फिर सिर न उठा सकें। दूसरा विशेष कार्य यह होगा कि संसार का कोई ऐसा देश इतना प्रबल न हो सके जिससे संसार की शान्ति के भङ्ग हो जाने की संभावना हो जाय। इनके सिवा उन्हें उन देशों को भी सन्तुष्ट करना पड़ेगा जिन्होंने गुप्त या प्रकट रूप से इस युद्ध में उनकी वास्तव में सहायता की है और उन देशों को दण्ड देना होगा, जो शत्रु-पक्ष से गुप्त या प्रकट रूप से मिले रहे हैं। और ये सब ऐसे जटिल प्रश्न हैं, जिनके हल करने में उक्त कानफ़रेन्स अपना ध्यान देगी। इस अवसर पर जो यह समझा जाता है कि पराधीन देशों की समस्याओं का भी निपटारा किया जायगा, वह भ्रमपूर्ण है। इस कानफ़रेन्स का प्रत्यक्ष सम्बन्ध युद्ध-जनित समस्याओं से ही है। उनसे इतर बातों पर ध्यान देना इसके कार्यक्रम में कदाचित् ही शामिल किया जाय। अतएव भारत, कोरिया आदि परतन्त्र देशों के प्रतिनिधि इस अवसर से लाभ उठाने का जो प्रयत्न करते दिखाई देते हैं, वह निष्फल होगा। ऐसा ही वर्सेलीज़ की कानफ़रेन्स के समय हुआ था और वही इस बार भी होगा। हाँ, इस कानफ़रेन्स के द्वारा जो नया राष्ट्र-सङ्घ बनेगा, वह कदाचित् परतन्त्र देशों की समस्याओं पर विचार कर सकता है। ऐसी आशा इस कारण से की जा सकती है कि जहाँ योरप में बोल्शेविक विचारधारा का प्रभाव बढ़ा है वहाँ यह सम्भव नहीं है कि ग्रेट ब्रिटेन और संयुक्त-राज्य में उसका प्रभाव न पड़े और वहाँ की आज की सरकारें ज्यों की त्यों बनी रहें। यह निश्चित ही सा जानना चाहिए कि इन देशों की साम्राज्यवादी भावना में अवश्य उलट-फेर होगा और इन देशों में भी वैसी ही सरकारों का सङ्गठन होगा, जो योरप की उपर्युक्त व्यापक बोल्शेविक भावना से सामञ्जस्य कर सकेंगी। उस दिन चीन के सर्वेसर्वा मार्शल च्याङ्गकाईशेक ने स्पष्ट ही कहा है कि चीन में हमें प्रजा-तन्त्र-सरकार की स्थापना करना आवश्यक है। बात का सङ्केत है कि साम्राज्यवादी भावनावाली का भविष्य के नूतन विधान में कोई स्थान नहीं रहेगा। इस बात की काफ़ी गुञ्जायश है कि निकट भविष्य परतन्त्र देशों की महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति होगी। नहीं होगा तो इस विश्व में शान्ति और व्यवस्था की एक धोखा ही होगा। देखना है, विजयी राष्ट्रों अपने-अपने देशों के हितों की ओर ध्यान देते हैं या से सारे देशों के हितों की ओर। यदि इस अवसर पर नीति का त्याग कर उदार नीति का अवलम्बन किया वे विश्व में सुख और शान्ति की व्यवस्था कर सकेंगे। सेनफ़्रांसिस्को कानफ़रेंस में संयुक्त-राज्यों और रूस में सम्बन्ध में जो तीव्र मतभेद उठ खड़ा हुआ है उससे है कि, अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति वैसी आशाप्रद नहीं है सभा के अधिवेशन-काल में यह भले प्रकार स्पष्ट हो विश्व में साम्राज्यवाद की प्रधानता क़ायम होगी या लक्षणों से तो यही प्रतीत होता है कि साम्राज्यवाद वहीं तक खड़ा रहने देगा जहाँ तक वह अपनी सीमा रहेगा। ऐसी दशा में यह स्पष्ट ही है कि संसार निर्माण साम्राज्यवादियों के ही हाथ में रहेगा, नहीं। अतएव इस अवसर पर पददलित राष्ट्रों की की पुकार नक्क़ारख़ाने में तूती की आवाज़ ही समझनी

भारत की राजनैतिक समस्या

भारत की राजनैतिक समस्या जटिल से जटिल वर्षों से इस बात का प्रयत्न हो रहा है कि उसका समाधान परन्तु सारे प्रयत्न निष्फल ही सिद्ध हुए। भारतीय ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत आत्मशासन चाहते हैं। उनकी यह आकांक्षा अभी तक पूरी नहीं हुई, सम्बन्ध में सभी राजनैतिक दल एकमत हैं। कांग्रेस महासभा, मुस्लिम लीग तीनों की ही स्वाधीनता की यदि मतभेद है तो ब्योरे की बातों पर। ब्रिटिश सरकार स्टैफ़र्ड क्रिप्स के प्रस्तावों के रूप में भारतीयों की महत्त्वा पूर्ति करने का प्रयत्न किया था, परन्तु उनकी योजना से राजनैतिक दल नहीं सहमत हुए। उसके बाद अगस्त हुआ और कांग्रेस पर सरकार की वक्र दृष्टि हो गई। तेजबहादुर सप्रू ने प्रतिष्ठित लोकनेताओं से परामर्श करके का एक नया प्रस्ताव उपस्थित किया और उसे ब्रिटिश पास भेज भी दिया परन्तु उक्त प्रस्ताव से भी हिन्दू-महासभा मुस्लिम लीग के सूत्रधार नहीं सहमत हुए। इनके चक्रवर्ती राजगोपालाचारी भी उससे सहमत नहीं हुए हो जाने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहते हैं। ऐसी बात की कैसे आशा की जा सकती है कि ब्रिटिश प्रस्ताव को स्वीकार कर लेगी। कहा जाता है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेवेल ने भी भारतीय समस्या का हल करने के लिए कोई योजना बनाई है और उसके सिलसिले में वे विलायत पूर्ण योजना बनाई है और उसके सिलसिले में वे विलायत हुए हैं। पत्रों में यह भी प्रकाशित हुआ है कि उनका इस के सम्बन्ध में भारत-मन्त्री अमरी साहब से मतभेद है। उस योजना के कार्यान्वित होने में सन्देह है। असल बात है कि ब्रिटिश सरकार के प्रस्ताव से भारतीय दलों के भिन्न-भिन्न नेता न सहमत होते हैं और न भारतीय भिन्न-भिन्न दल ही किसी एक प्रस्ताव पर एकमत होते हैं। ऐसी स्थिति में उक्त समस्या का हल हो तो कैसे हो। यह भारत महान् दुर्भाग्य है कि यहाँ फूट का पौधा सदैव पल्लवित होता है और कांग्रेस के पचास वर्ष के राष्ट्रीय भावना के प्रचार के भी वह और भी लहलहाता दिखाई दे रहा है। नहीं तो महात्मा गांधी जैसे संसार-प्रसिद्ध परम साधु के नेतृत्व में भारत स्वाधीन न हो गया होता? मिस्टर मुहम्मदअली जिन्ना, वीर सावरकर, महात्मा गांधी, ये तीनों ही व्यक्ति अपनी-अपनी महत्ता रखते हैं और तीनों ही देशभक्त भी हैं। परन्तु आज तीनों में ही जो भारी मतभेद है, उसका कारण क्या है? तो यही कहेंगे कि यह देश का दुर्भाग्य है। यदि ऐसा न होता तो आज जब संसार का नवसंगठन हो रहा है, तब भारत यह गृह-कलह इतने उग्र रूप में कदापि न दिखाई देता। फासिस्को में विजयी मित्रराज्य संसार में व्यापक सुख-शान्ति की व्यवस्था करने का विधान करेंगे। यदि भारत के हमारे नेताओं में ऐक्य होता तो इस महान् अवसर से क्या वे लाभ उठाते! परन्तु, वे लाभ कैसे उठावें? उनमें ऐक्य कहाँ वे तो गृह-कलह के शिकार हैं! ऐसी दशा में भारत के भगवान् ही हैं।

बङ्गाल के अकाल की जाँच

सन् १९४२ की वर्षा ऋतु में बङ्गाल में अन्नाभाव के कारण त्रासजनक भीषण नर-नाश हुआ था, उसके कारणों की जाँच के लिए सरकार ने उड हाउस की अध्यक्षता में एक कमीशन नियुक्त किया था। उस कमीशन की आज इतने दिन बाद रिपोर्ट निकल गई है, जिसका सारांश पत्रों में प्रकाशित हुआ है। यह प्रकट होता है कि जाँच के कमिश्नरों ने उस दारुण घटना का कारण दैवी न बताकर मानव-कृत बताया है। उन्होंने प्रान्तीय सरकार तथा केन्द्रीय सरकार दोनों पर यह आरोप किया है कि इस दुर्घटना का कारण इन दोनों सरकारों की असावधानी है। उन्होंने यह भी स्वीकार किया है कि पन्द्रह लाख मनुष्य भूखों मर गये। भारत के सेक्रेटरी अमरी साहब ने यह संख्या दस ही लाख बताई थी। और हिन्दू महासभा के नेता डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने उसी समय कहा था कि मृत्यु-संख्या चालीस लाख के निकट जा रही है। परन्तु कमीशन की जाँच में वह पन्द्रह लाख ही हुई। पन्द्रह लाख मनुष्यों का नाश सो भी देश में अन्न का अभाव न होते हुए भी अन्नाभाव के कारण हो जाय तो यह बात ब्रिटिशों की सभ्य सरकार के लिए गौरव की नहीं हो सकती। कमीशन के उक्त संक्षिप्त विवरण से यह नहीं प्रकट हुआ कि जिन अधिकारियों की असावधानी से पन्द्रह लाख मनुष्यों का अवसान हो गया, उनको इस कुकृत्य के लिए कोई दण्ड का विधान भी किया गया है या नहीं। ऐसा भीषण अपराध क्षम्य नहीं माना जा सकता। हमें विश्वास है कि ब्रिटिश सरकार इस जाँच को सार्थक करने के लिए अवश्य सचेष्ट होगी। यह उसका ऐसा कर्तव्य है, जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। बङ्गाल के वे दिवंगत प्राणी ब्रिटिश सरकार के भक्त और शान्त प्रजाजन थे। उनकी रक्षा का दायित्व उसी पर था।

प्रान्तीय सम्मेलन का कर्तव्य

हिन्दी संयुक्तप्रान्त के निवासियों की मातृ-भाषा है। अँगरेज़ी शासनकाल में उसकी खासी उन्नति हुई है। आज वह भारत की उन्नत से उन्नत प्रान्तीय भाषा से टक्कर लेने का साहस दिखा रही है। परन्तु दुःख है, उसका प्रान्त के नागरिक जीवन में कोई स्थान नहीं। सरकार की कचहरियों में, म्युनिसिपैलिटियों में, ज़िलाबोर्डों में हिन्दी का बहुत ही नगण्य स्थान है। यह वास्तव में बहुत दुःख की बात है। आज से कोई पचास वर्ष पहले प्रान्त के हिन्दीप्रेमियों ने महामना पण्डित मदनमोहन मालवीय के नेतृत्व में हिन्दी को प्रान्त के नागरिक जीवन में उसको उचित स्थान दिलाने का एक प्रयत्न किया था। तत्कालीन प्रान्त के लेफ़्टिनेण्ट गवर्नर मैक्डानेल साहब ने उनकी न्यायपूर्ण माँग का स्वागत किया था और हिन्दी को उसका उचित स्थान दिलाने का श्रीगणेश भी कर दिया था। परन्तु दुःख है कि सरकारी अमलों ने लाट साहब की उस योजना को आगे बढ़ने का अवसर ही न आने दिया। इधर हिन्दी-प्रेमी भी कोई क्रियात्मक कार्य-क्रम न उपस्थित कर सके। तब से हिन्दी आज कहीं अधिक उन्नति कर गई है और उसके प्रेमी चिल्लाते भी रहते हैं कि हिन्दी को सरकार के दरबार में उसका उचित स्थान मिले। परन्तु उनका यह सारा मौखिक प्रयत्न बेकार ही सिद्ध हुआ है। गत चार वर्षों से प्रान्त में प्रान्तीय हिन्दी साहित्य-सम्मेलन भी अस्तित्व में आ गया है। परन्तु इस सम्मेलन ने भी अभी तक कोई ऐसी व्यावहारिक योजना नहीं उपस्थित की है कि हिन्दी को उसका उचित स्थान प्रान्त के नागरिक जीवन में प्राप्त हो। हमें आशा थी कि उसके इस वर्ष के वार्षिक अधिवेशन में ऐसी कोई योजना ज़रूर उपस्थित की जायगी। प्रयाग में उसका अधिवेशन तो धूमधाम से हो गया परन्तु उसने कोई योजना नहीं उपस्थित की, जिससे इस बात का आभास मिलता कि सम्मेलन के सूत्रधार हिन्दी की इस दुरवस्था के सुधार करने का प्रयत्न करेंगे। हमारा सम्मेलन के सूत्रधारों से अनुरोध है कि वे इस परिस्थिति की ओर ध्यान दें। आज हिन्दी को प्रान्त के जीवन में कहीं अधिक गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है और यदि इस अवस्था में हिन्दी को सरकार के दरबार में सम्मानपूर्ण स्थान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं प्राप्त होता तो यह बड़े दुःख की बात होगी। हिन्दी-प्रेमियों को चाहिए कि वे ऐसा प्रयत्न करें कि उनका प्रान्तीय-साहित्य-सम्मेलन समुचित रूप से क्रिया-शील हो और अपने वास्तविक कर्तव्यों को दृढ़ता से पालन करे।

अमरीका में भारतीयों का आन्दोलन

कांग्रेस ने अपनी स्थापना के समय से जिस राष्ट्रीय विचारधारा का प्रचार करना प्रारम्भ किया था, उसको सुदृढ़ संगठित रूप महात्मा गांधी के नेतृत्व में ही प्राप्त हुआ है और उसके इस महत्त्व-पूर्ण रूप के प्राप्त करने में कांग्रेसियों को जो महान् त्याग करना पड़ा है, वह देश के राजनैतिक इतिहास में सदा स्वर्णाक्षरों में ही लिखा हुआ पढ़ने को मिलेगा। और यह उनकी उच्च त्याग-भावना ही है कि कांग्रेस के कार्यकर्ता अपनी आकांक्षाओं को निर्भय होकर कहने का साहस रखते हैं। लाख दमन होने पर भी वे कभी अपने निश्चयों से नहीं डिगे। इस समय जब कि उन पर अगस्त के गड़बड़ के कारण सरकार की अकृपा है तब भी वे अपने सिद्धान्तों पर दृढ़ हैं और सुदूर अमरीका के सेनफ्रांसिस्को में संसार के छोटे-बड़े राष्ट्रों की जो पञ्चायत बैठी है, उसमें भी उसके प्रतिनिधि दृढ़ता से अपने विचारों को पहुँचाने का प्रयत्न कर रहे हैं—इस विचार से कि भविष्य में संसार की सुख और शान्ति की व्यवस्था का जो नूतन संगठन किया जाय, उसमें भारत के भी साथ समुचित न्याय हो। अर्थात् उसकी स्वाधीनता स्वीकार की जाय। परन्तु जान पड़ता है कि ब्रिटिश सरकार को कांग्रेस की यह कार्यवाही पसन्द नहीं। यदि ऐसा न होता तो भारत-सरकार के प्रतिनिधि सर फ़ीरोज़ खाँ नून को भाषण करके यह कहने की ज़रूरत न पड़ती कि कांग्रेस के सर्वेसर्वा महात्मा गांधी जापान के पक्षपाती हैं। और उनके राजनैतिक विचार बहुत पिछड़े हुए हैं अतएव पण्डित जवाहरलाल नेहरू के लिए कांग्रेस के नेतृत्व का स्थान उन्हें ख़ाली कर देना चाहिए। नून साहब के इस भाषण से उक्त पञ्चायत के सदस्यों की निगाह में कांग्रेस गिर जा सकती है। अच्छा हुआ, महात्मा गांधी ने तुरत ही नून साहब के कथन को ग़लत सिद्ध कर दिया। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा है कि मैं जापान का पक्षपाती नहीं और इस सम्बन्ध में मुझ पर जो आरोप पहले किया गया था, उसे सरकार ने बाद में वापस ले लिया है। नून साहब का जो यह कहना है कि मुझे कांग्रेस से हट जाना चाहिए और कांग्रेस के नेतृत्व की बागडोर पण्डित जवाहरलाल नेहरू को सौंप देनी चाहिए, इसको स्वीकार करते हुए गांधी जी ने नून साहब से कहा है कि पहले वे सरकार से कह-कर नेहरू जी को जेल से मुक्त करावें, उसके बाद मैं उनकी बात मान लेने को तैयार हो जाऊँगा। महात्मा गांधी के इस वक्तव्य से वह ग़लतफ़हमी दूर हो जायगी, जिसके फैलाने की कुचेष्टा सर फ़ीरोज़ ख़ाँ नून ने अमरीका में की है। समझदार राजनीतिज्ञों के आगे ऐसी कुचेष्टायें सदैव महत्त्वहीन ही ठहरी हैं। कांग्रेसियों का दावा न्यायसंगत है और यदि सेनफ्रांसिस्को की उ[illegible] में न्याय का ही वातावरण बराबर व्याप्त रहेगा, तो [illegible] है कि कांग्रेस के प्रतिनिधियों की माँगों के आधार पर [illegible] भी साथ न्याय किया जायगा। परन्तु युद्धों के बाद ऐसी [illegible] जब-जब हुई हैं तब-तब न्याय का गला बराबर दबाया [illegible] इस बार की सभा में पहले जैसी नीति नहीं व्यवहृत की [illegible] इसका क्या प्रमाण है? तथापि लोग आशावादी हों [illegible] विशेष कर पददलित राष्ट्र! अतएव उनका उक्त सभा [illegible] की ओर आशा-भरी दृष्टि से देखना सर्वथा स्वा[illegible] यही कारण है कि भारत के लोक-प्रतिनिधि अमरीका [illegible] शक्ति के अनुसार अपनी राष्ट्रीय माँग को दृढ़ता के साथ [illegible] करने में संलग्न हैं।

जयपुर में संस्कृत-साहित्य-सम्मेलन

पाश्चात्य लोग संस्कृत को मृतभाषा कहते हैं। उनकी देखी अँगरेज़ी पढ़े-लिखे भारतीय भी संस्कृत को मृत समझते हैं। परन्तु वह कितनी जीवित है—हिन्दू-राष्ट्र [illegible] में वह आज भी कितना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है—इस [illegible] महत्त्व को उपर्युक्त लोगों को भी अवसर पड़ने पर स्वीकार [illegible] को बाध्य होना पड़ता है। यह प्रसन्नता की बात है कि [illegible] में अखिल भारतवर्षीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन का [illegible] इसी जुलाई से होगा। हमें विश्वास है कि उक्त अधि[illegible] स्वागत-समिति प्रत्येक प्रान्त के संस्कृत के विद्वानों के प्रति[illegible] को बुलाने की व्यवस्था करेगी। साथ ही यह भी [illegible] अधिवेशन में कोई ऐसा कार्यक्रम स्वीकार किया जा[illegible] संस्कृत के वैज्ञानिक ढङ्ग के शिक्षण का प्रचार हो। [illegible] हिन्दू-राष्ट्र का जीवन-धन है। सदियों के पराभव-काल [illegible] भी आज हिन्दू-राष्ट्र जीवित है तो इसका यही कारण है [illegible] अपनी संस्कृति को नहीं भूल गया। हमारी संस्कृत-[illegible] अमर साहित्य हमें अमर बनाये हुए है। ऐसे साहित्य [illegible] करना प्रत्येक हिन्दू का परम कर्तव्य है। संस्कृत के प्रे[illegible] संस्कृत के इस सम्मेलन से पूर्ण सहयोग करना चाहिए। [illegible] सम्मेलन के द्वारा अन्तर्प्रान्तीय सांस्कृतिक सहयोग की पूर्ण [illegible] हो सकेगी। हिन्दुओं को इस सम्मेलन के महत्त्व को [illegible] चाहिए और इसे सफल बनाने में अपनी ओर से कोई [illegible] होने देनी चाहिए। सम्मेलन के सूत्रधारों का भी यह [illegible] है कि वे अपना ऐसा कार्यक्रम बनावें, जिससे संस्कृत का [illegible] समाज में दिन-प्रतिदिन अधिकाधिक उपयोगी सिद्ध हो। [illegible] बात की बड़ी भारी आवश्यकता है कि समाज के जो [illegible] लोग संस्कृत नहीं जानते, वे अपनी मातृ-भाषाओं द्वारा उ[illegible] साहित्य से लाभ उठावें। और यह तभी सम्भव हो[illegible] संस्कृत के विद्वान् इस ओर समुचित ध्यान देंगे। [illegible] के अधिवेशन की हृदय से सफलता चाहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
Printed & Published by A. Bose, at the Indian Press, Ltd., Benares-Branch, Benares.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धोबीने जो हानि की है!

—ज़रा सोचिये उसे पूरा करने में कितना खर्च आयेगा !

आजकल कपड़ों की जो कीमतें हैं उन्हें देखते हुए धोबियों को कपड़े देकर उनका नाश कराना पैसे को पानी में फेंकना है। आपको चाहिये कि कपड़ों को अधिक से अधिक चलाए। आपको कपड़ों के बारे में ध्यान रखना चाहिये। कपड़ा धोने की धोबियों की जो बेढंगी रीति है उसकी अब कोई ज़रूरत नहीं। आप खुद सनलाइट साबुन से मैले से मैले कपड़े को भी सुलभता से साफ़ कर सकते हैं। सनलाइट की स्वयं क्रियाशील झाग के बारे में तो आपने ज़रूर सुना होगा, इस झाग में मैल काटने की जो शक्ति है वह बलवान से बलवान धोबी की मोटी से मोटी मोगरी और कड़ी से कड़ी चट्टान से कहीं अधिक है और वह भी इस तरह काम करती है कि मैल काटते समय कपड़े को कोई हानि नहीं पहुंचाती। कपड़े धोने की सरल रीति निचे दर्ज की जाती है:—इसे पढ़िये और आज ही अपने घर में सनलाइट के "साबुन-और-बचत" रीति से कपड़े धोना शुरू कर दीजिये।

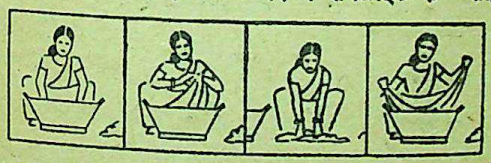

अपने नौकर को सनलाइट की "साबून-और-बचत" रीति सिखाइये

१ कपड़ों को अच्छी तरह भिगो लीजिये इससे कपड़ा साबुन लगाए जाने योग्य हो जाता है। २ सनलाइट पूरे कपड़े पर मलिये जहां अधिक मैल हो वहां अधिक मलिये। ३ कपड़ों को धीरे धीरे सानिये, पटकिये नहीं, सनलाइट की स्वयं क्रियाशील झाग कपड़े से सारे मैल को काट देगी, और उसे पकड रखेगी। ४ कपड़े को इस तरह खंगालिये कि झाग का नाम तक उस में न रहे क्योंकि अब इस झाग के साथ मैल होगा। यदि कपड़ा अधिक मैला हो तो दो बार साबुन लगाइये।

सनलाइट साबुन कपड़ों की बचत करता है

R. 68-23 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ विचार

"कैसीमीर फंक" ने सन् १९१२ में मालूम किया कि खुराक में विटामिन बहुत आवश्यक है, और फलों में विटामिन की मात्रा अधिक होती है। हमारे यहाँ वैज्ञानिकों द्वारा अँगरेजी ढङ्ग पर बनाये फलपेयों में विटामिन के अतिरिक्त कैल्सियम, फासफोरस और आइरन जो बच्चों के लिए सेवन कराना जरूरी है, मिलते हैं ये फलपेय बदहजमी और पेट की खराबियों को दूर करते हैं।

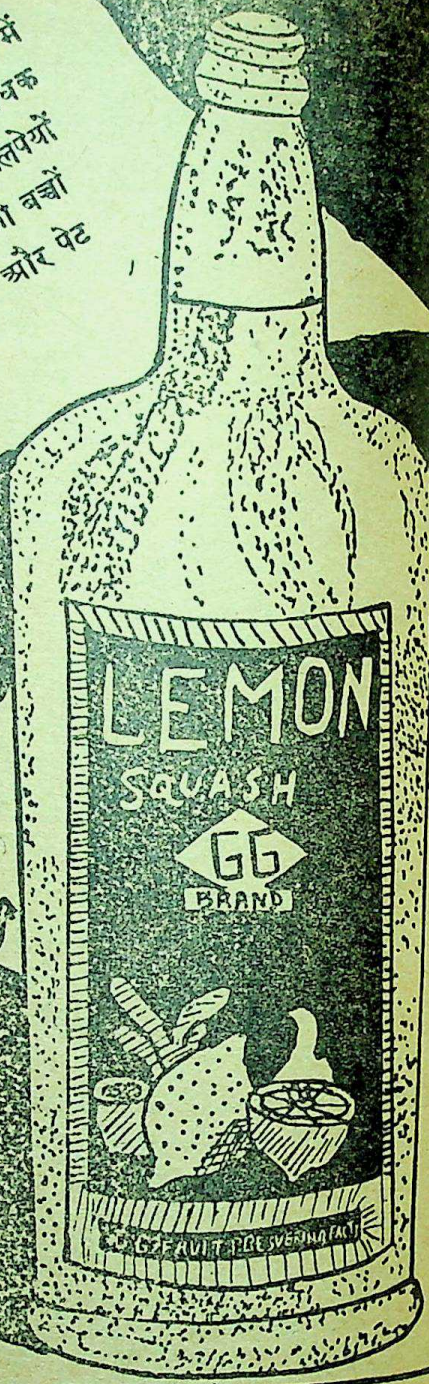

GG BRAND

वस्तुएं व्यवहार में लाइए

जी. जी. फ्रूट प्रिज़र्विंग फैक्टरी आगरा

जी. जी. फ्रूट्स

जी० जी० सेल्स डिपो

(१) किताब महल, होर्नबी रोड, बम्बई। (२) चावड़ी बाज़ार, देहली। (३) मून हाउस पी ४, मिशन रो, एक्स्टेन्शन, कलकत्ता। (४) मेसर्स गिरधरलाल वकील, दर्ज़ी चौक, बरेली। (५) मेसर्स गिरधरलाल वकील

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौंदर्य की परम्परा कायम रख रही है

जवान लड़कियों के सभी महत्वपूर्ण मामलों में केवल उनकी मां ही उन्हें बहुमुल्य सलाह दे सकती है। इस रूपवती मां ने अपनी सुन्द बेटी को अपना बढया गुर दिया है कि पियर्स साबुन और स्वच्छ पानी की सहायता से त्वचा के सौन्दर्य को कायम रखा जा सकता है। यह शिक्षा इस मां ने अपनी मां से ली थी और अपने बचपन से ही इस पर अमल करती आई है। इसी कारण उसकी त्वचा आज भी उतनी ही प्यारी और सुन्दर है। इसकी बेटी भी उसी तरह अपनी त्वचा की प्रवाह करती है। इसलिये उसकी मां की तरह उसकी त्वचा भी बेदाग और सुन्दर रहेगी।

चालीस साल से हिन्दुस्तान की सुन्द्रयों ने पियर्स साबुन को ही इस्तेमाल किया है। स्वाभाविक खुशबू और रेशमी झाग के कारण यह साबुन साधारण साबुनों से कहीं बढ़चढ़ कर है।

पियर्स साबुन

सौन्दर्य का सेवक

TG. 39-123 HI

A. & F. PEARS, ISLEWORTH, ENGLAND

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री रत्नागिरी जी का अद्भुत चमत्कार

जिसने समस्त संसार को चकित कर दिया

रक्त, बल, वीर्य, उत्साह तथा उमङ्ग ही जीवन सफल बना सकती है

ध्यान देने योग्य अमूल्य उपहार

अपूर्व कायापलट (रजिस्टर्ड)

निःस्वार्थ संसारसेवी भारतीय महात्माओं ने औषध-विज्ञान को पनी महान् खोजों और अमूल्य रत्नों से अलंकृत किया है। ाधुनिक चिकित्सक मर्ज़ और मरीज़ जब दोनों को लाइलाज षित करके शर्मिन्दा नहीं होते, वहाँ इन्हीं महात्माओं की बिना म की जड़ी-बूटियाँ मुर्दों को भी जिला सकने में समर्थ हुई हैं। सी सच्ची घटनायें आये दिन एक न एक पढ़ने और सुनने में ाया करती हैं।

बीस वर्ष पूर्व कल्लाती पहाड़ी पर विचरण करनेवाले स्वामी नागिरी जी महाराज की सेवा एक बूढ़ा ग्वाला करने लगा। गिराज को एक दिन उस वृद्ध की कमज़ोरी पर दया आ ही ई और उन्होंने निम्नलिखित योग की ६ मात्रायें उस बूढ़े को । नासमझी के कारण छहों मात्रायें एक साथ खा जाने से स वृद्ध ग्वाले में अपूर्व शक्ति आ गई और रत्नागिरी जी के रश्रम-पूर्वक इलाज करने पर भी बुढ़ापे के बावजूद उसे तीन वाह करने पड़े। इस पर राजा, रईस, नवाब और रसिकजन ान् योग को जानने के लिए आतुर हो उठे। नवाब बहावलपुर ससुर हाजी हयात मोहम्मदख़ाँ साहब ने बाबा जी की बहुत ा करके इसे प्राप्त कर लिया और लाहौर के पं० ठाकुरदत्त र्मा को बतलाया। शर्मा जी ने इसे प्रथम तथा दो अन्य खकर तीनों-से उत्तम बाजीकरण बतलानेवाले को एक हज़ार ाये का नक़द इनाम देने की घोषणा की। इसे आज बीस ल के लगभग हो गये किन्तु अभी तक कोई पुरस्कार विजय ीं कर सका। मथुरा के ख्यातिप्राप्त बाबू हरिदास जी ने ने चिकित्सा-चन्द्रोदय में छपवाया और हमने भी स्वयं बनाकर ड़ों दुर्बल, नपुंसक, वीर्य-विकारी रोगियों पर बरता। तत्काल क्षण-चमत्कार देख जन-साधारण के लाभार्थ अनेक पत्र-पत्रिकाओं छपवा दिया। आप भी बनाकर लाभ उठावें।

योग—शुद्ध बुरादा फ़ौलाद २० तोला, शुद्ध श्वेत मल्ल तोला, शुद्ध कपूर १॥ माशा, एक घण्टा घृतकुमारी घोटकर, मिट्टी के कुज्जे में मज़बूत बन्द कर पाँच सेर कण्डों फूँके। दुबारा एक तोला हरताल बर्की शुद्ध १॥ माशा ूर शुद्ध में तीसरी बार गन्धक आमलासार शुद्ध १ तोला ूर १॥ माशा में चौथी बार शुद्ध संस्कारित पारद १ तोला, ूर १॥ माशा को ऊपर की भाँति १६ आँच दे। फिर उसको ुराई में डालकर बराबर इन्द्रबधू डाल दे और नीचे आग जलावे, जब इन्द्रबधू जलकर राख हो जावे तो हवा देकर उड़ा दे। अपूर्व कायापलट तैयार है। चार-चार चावल सायं मक्ख मलाई के साथ खावें ऊपर मिश्री मिला दूध पीवें।

मथुरा के हरिदास जी लिखते हैं— इस योग के सेवन से हफ़्ते में एक आदमी का वज़न चार पौंड बढ़ गया, दूसरे चेहरा लाल सुर्ख़ हो गया। भूपाल के वैद्यराज पं० बालकृष्ण शर्मा ने ३५० रोगियों पर बरता और आशा से अधिक गुण पाया। रत्नाकर सम्पादक श्री छोटेलाल जैन आयुर्वेदाचार्य गृहचिकित्सा पथ-प्रदर्शक में छापा कि इतना प्रचण्ड गुणकारी दूसरा नहीं देखा। श्री धर्मेन्द्र विद्यावतंस सिद्धान्त-शास्त्री प्रधाता गुरुकुल बरला ज़िला मुज़फ़्फ़रनगर ने लिखा है—"कायापलट" नामक औषध सेवन कर रहा हूँ। जैसी प्रशंसा वैसा ही गुण है। बहुत लाभ हुआ। श्री चिरञ्जीलाल आयुर्वेदशास्त्री मालिक कल्याण औषधालय बाह (आगरा) का कहना है कि मैंने २२५ रोगी अपूर्व कायापलट द्वारा कि धातु-विकार, नपुंसकता, बवासीर, रक्त-विकार आदि से ग्रसित थे, पूर्ण स्वस्थ किये।

हमारा दावा है कि केवल सात दिन सेवन से शरीर में दौड़ता नज़र आयेगा। २१ दिन में चेहरा लाल काश्मीरी की तरह चमकने लगेगा। ४० दिन में नपुंसकता, मधुमेह डायब्टीज़. निर्बलता दूर हो जाती है। स्त्रियों के प्रदर दूर गर्भधारण शक्ति आती है। जिगर व मेदे की शक्ति बढ़ भूख दूनी करता है। कफ, तिल्ली की ख़राबी, खाँसी, दमा ज़ुकाम, बदन दुखना, ख़ून का पतलापन, आँखों का पीला चिनगारी-सा उड़ते दीखना, बार-बार थूक गिरना, दमा हर तरह की कमज़ोरी तुरन्त दूर कर नव-जीवन का संचार है। जाड़ा, गरमी, बरसात सभी मौसमों में एक-सा लाभ है। योग भली भाँति समझाकर लिखा है। फिर भी आप न बना सकें तो बनी-बनाई १६ आँच दी हुई ४० दिन ८० मात्रा डाक-ख़र्च सहित ६॥।=) में हम भेज देंगे। डाक माफ़, पैकिंग, मनीआर्डर-फ़ीस अलग। कोई बात समझ आवे तो जवाबी कार्ड भेजकर उत्तर मँगा लें।

पता—रूपबिलास कम्पनी

(रसायनशाला) नं० ४६७, धनकुट्टी, कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्मस्टारोंकी तरह त्वचा की रक्षा कीजिये!

साधना बोस

"मैंने अपनी त्वचाकी निगरानी का काम लक्स टॉयलेट साबुन पर सौंप दिया है"—यह सौंदर्यवती साधना का कहना है। नहानेका यह खुशबूदार साबुन वह हमेशा इस्तेमाल करती है। उसका तेज़ फेन उसकी त्वचा सुकोमल, मृदु और निष्कलंक रखता है। अपनी त्वचा की निगरानी के लिये बहुत सी फिल्म-स्टार लक्स टॉयलेट साबुन ही पर निर्भर रहती हैं।

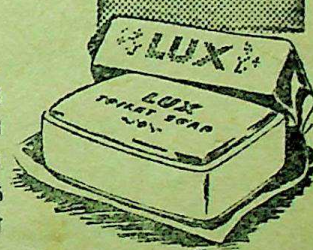

लक्स टॉयलेट साबुन

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

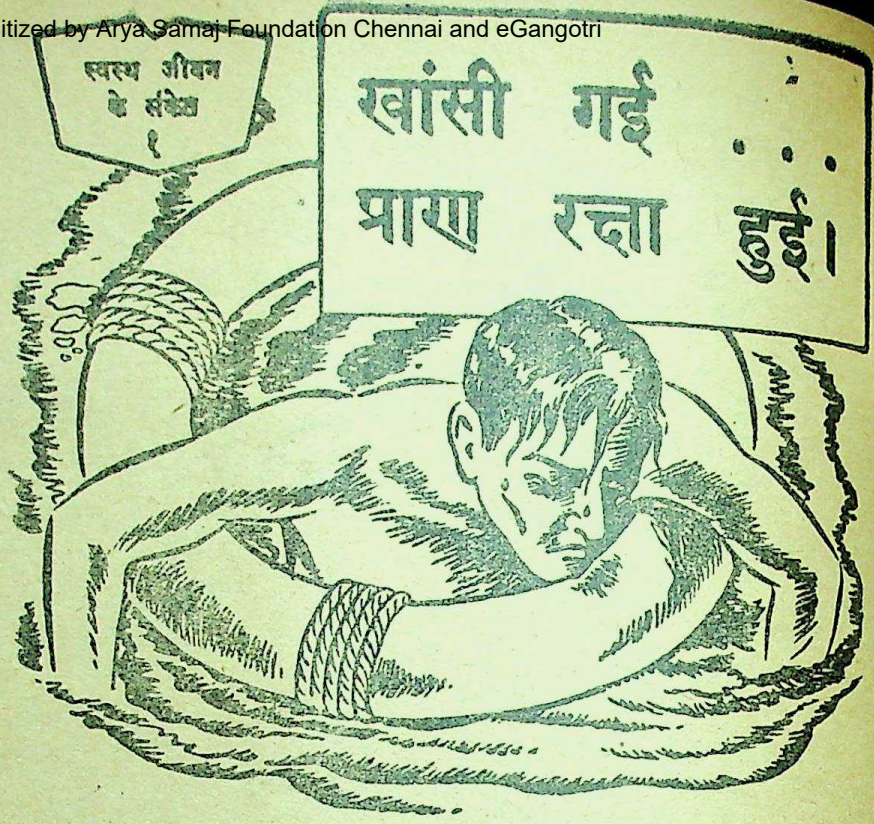

गले की सहलाहट और जुकाम के बाद उत्पन्न होने वाली खाँसी एक साधारण रोग है। परंतु यही खाँसी उपेक्षा की जाने के बाद, फेफड़े की सूजन (ब्रोंकाइटिस) श्वास और राजयक्ष्मा जैसे भयंकर रोगों का कारण होती है। अतःसमय रहते उचित चिकित्सा द्वारा इसका निराकरण प्राणरक्षा का उपाय है।

स्वाइकोडीन टर्प वसाका डाक्टरों की राय में साधारण (चालू) खाँसी की अमोघ औषधी है। यह खांसी के मूल कारणों को नष्ट करती और उसके स्वास्थ्य दायक परमाणु शान्ति दायक और खाँसी को समूल नष्ट करने वाले हैं।

स्नायु विकार से उत्पन्न हुई किसी प्रकार की खाँसी के लिये अपने डाक्टर की सलाह लीजिये।

स्वाइकोडिन

टर्प-वसाका

शान्तिदायक तथा खांसी को नष्ट करती है।

अलेम्बिक डिस्ट्रिब्युटर्स लि. मखनियां कुआं स्टेशन रोड, बांकीपुर पटना

अलेम्बिक केमिकल वर्क्स कम्पनी लिमिटेड, बड़ोदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर थाली से उन्हें ज्यादा स्फूर्ति दीजिये !

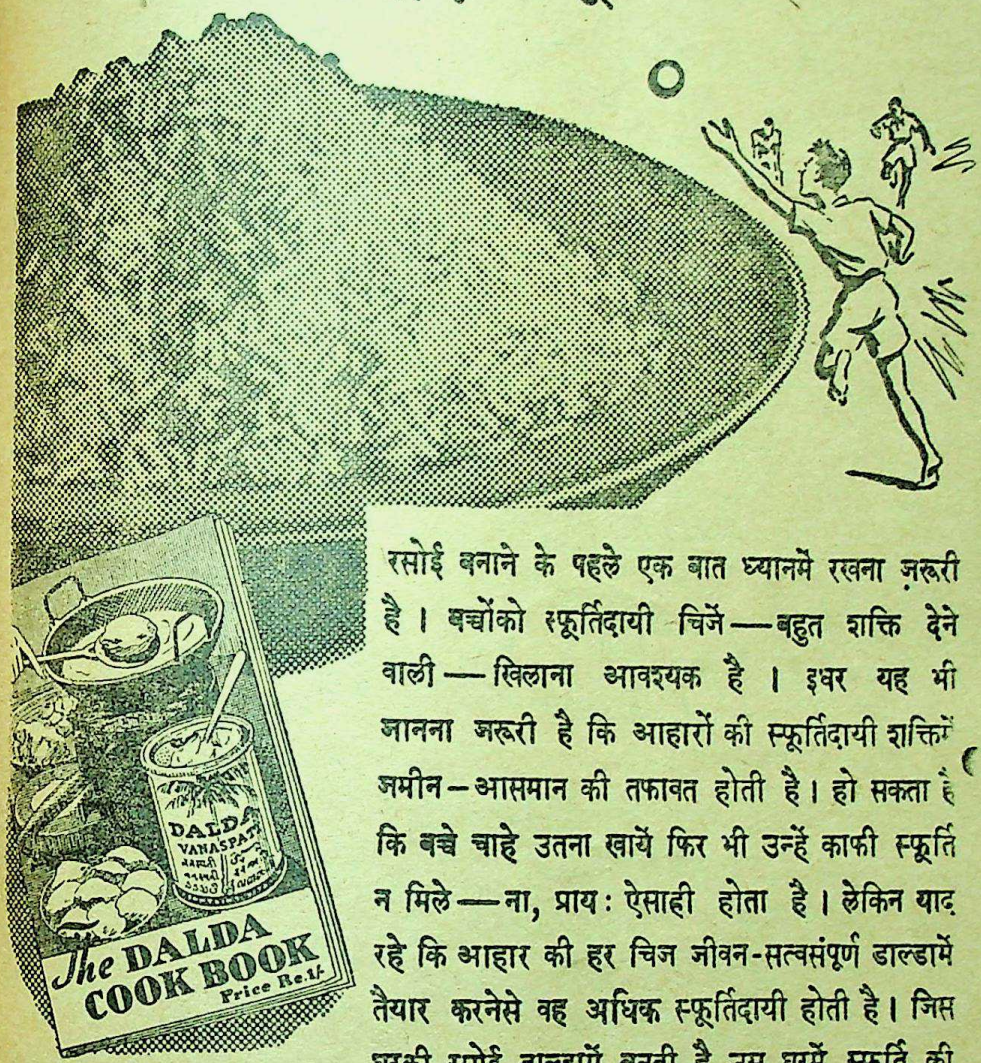

रसोई बनाने के पहले एक बात ध्यानमें रखना ज़रूरी है। बच्चोंको स्फूर्तिदायी चिजें—बहुत शक्ति देने वाली—खिलाना आवश्यक है। इधर यह भी जानना जरूरी है कि आहारों की स्फूर्तिदायी शक्तिमें जमीन–आसमान की तफावत होती है। हो सकता है कि बच्चे चाहे उतना खायें फिर भी उन्हें काफी स्फूर्ति न मिले—ना, प्रायः ऐसाही होता है। लेकिन याद रहे कि आहार की हर चिज जीवन-सत्वसंपूर्ण डाल्डामें तैयार करनेसे वह अधिक स्फूर्तिदायी होती है। जिस घरकी रसोई डाल्डामें बनती है उस घरमें स्फूर्ति की कमी रहनेकी कोई संभावना नहीं क्योंकि रसोई की यह चीज प्रकृतिके बढ़ीया शक्तिदायी अन्नांश देती है और आहारों को ज्यादा रसीले बनाती है। अलावा इसके वह केवल वनस्पति से बनती हैं।

सबसे बढिया शक्तिदायी चीजें कौनसी हैं इसकी जानकारी हर एक स्त्रीको होनी ही चाहिये। डाल्डा कुक बुक (अंग्रेजी) में आहार के बारेमें लाभकारी बातें और १५० से अधिक आहारोंका बयान किया गया है। Dept. E314 P. O. Box No. 353, Bombay के पते पर चार आने के पोस्टल स्टाम्प भेजियेगा।

पोषक-तत्व संपन्न **डालडा** स्फूर्ति के लिये

HVM. 88-23-40 MI

THE HINDUSTAN VANASPATI MANUFACTURING CO., LTD.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खिलौनों के साथ खेलने से वे अपने हाथों को बुधि से चलाने की आदत बना रहा है। उसकी माँ उसका ध्यान करते हुए जानती है कि उसकी सिखाई हुई आदत—लायफ़बॉय का रोज़ाना इस्तेमाल—जो गंदगी के ख़तरे से जो उसके खिलौनों में तथा घर में लगा रहता है—उसे खेलते समय भी सुरक्षित रखती है।

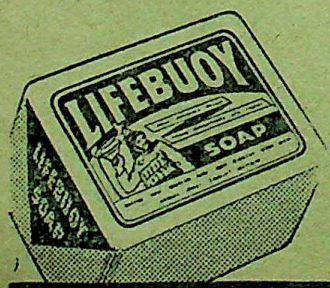

लाइफबॉय का व्यवहार करना
एक ज़रूरी आदत है

L 80-23 HJ

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नर्सिंग — संसार का सर्वोत्तम कार्य

नर्सिंग सब से अधिक परोपकारी कार्य है। बुद्धिमती महिलायें स्वभावतः इसकी ओर आकर्षित होती हैं। यह कार्य युद्ध-प्रयत्नों को वास्तविक सहायता पहुंचाता है। ए० एन० एस० की सफ़ेद वर्दी पहिनने वाली नर्सें घायल सैनिकों की तीमारदारी करती हैं।

आजकल समाज यह चाहता है कि नवयुवतियां घर पर आलस्य से अपना समय बिताने की अपेक्षा किसी अच्छे काम में लग जायं, इसलिये आपको महिलाओं के उस परोपकारी दल में सम्मिलित हो जाना चाहिये जो अस्पतालों में कष्ट-निवारण के कार्य में हाथ बंटाता है।

ए० एन एस०(आग्जीलरी नर्सिंग सर्विस) में आपको नर्स के काम की जो अच्छी ट्रेनिंग मिलेगी वह लड़ाई के बाद शहरी क्षेत्र में बहुत काम आयेगी। यदि आपका ऐसा कार्य-क्रम नहीं है, तो भी चिकित्सा का जो ज्ञान आप प्राप्त कर लेंगी वह जीवन भर आपकी गृहस्थी के लिए तथा सामाजिक सेवा के क्षेत्र में बहुत उपयोगी सिद्ध होगा। इस सुअवसर से लाभ उठाइए!

जनरल सर्विस में वेतन इस प्रकार मिलता है:—(१) जिनके पास नर्स का सर्टीफिकेट नहीं है—१०० रु० से १२६ रु० मासिक तक। (२) जिनके पास नर्स का सर्टीफिकेट है-१३५ रु० से १७५ रु० मासिक तक। दोनों को मुफ़्त में रहने की जगह, भोजन और ईंधन मिलता है।

कोई भी महिला जिसकी उम्र १७॥ और ४५ वर्ष के बीच हो तथा जो ब्रिटिश प्रजा अथवा किसी भारतीय रियासत की प्रजा हो इस सर्विस में भरती हो सकती है। पूर्व योग्यता की आवश्यकता नहीं होती, किन्तु जिन महिलाओं को नर्स के काम का पिछला अनुभव है वे ऊंची श्रेणी पर भरती हो सकती हैं। सब उम्मीदवारों में अंग्रेज़ी लिखने और बोलने की अच्छी योग्यता होनी चाहिए और आवेदन-पत्र मंगाने के लिए अंग्रेज़ी में पत्र लिखा जाना चाहिए। नर्सों की देखभाल अच्छी तरह से की जाती है और जब तक कि वे स्वयं समुद्र पार न जाना चाहें उन्हें हिन्दुस्तान में ही ड्यूटी के लिए नियुक्त किया जाता है। AAA 1198

ए० एन०एस० लेक्चर रूम

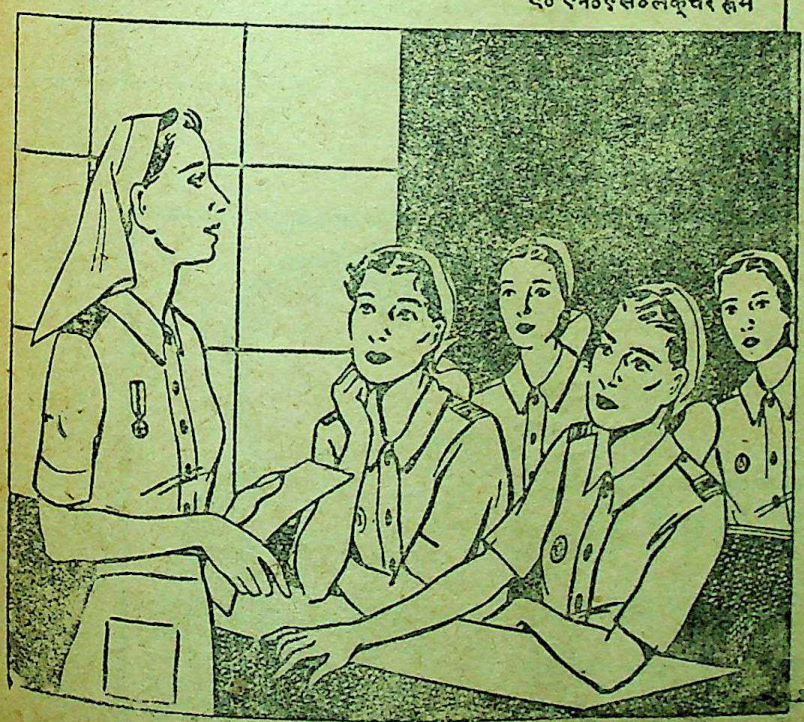

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैज़ा, मलेरिया, इन्फ्लुएंज़ा, टाइफाइड
आदि बीमारियों में बचानेवाला।

१ औं० शीशी ॥), दर्जन ५॥=), डा० ख़० अलग

युकॅलिप पेन बाम } सूचीपत्र मुफ़्त { युकॅलिप दाद का मरहम

खांडालेकर बन्धु, बम्बई ४.

दी इंडियन इन्स्टोलमेन्ट सप्लाई कं०

ग्वालियर (ब्रांच)

रेडियो-सेट, साईकिल, विजली के पंखे यहां से माहवारी किस्तों पर मिलते हैं। मुफ़्त मँगाइये।

The Indian Instalment Supply Co. L
Gwalior, C. I. (Branch)

(REGISTERED)

हृदय की सर्दी (सर्दी और कफ़)—लापरवाही करने से मामूली हृदय की सर्दी फेफड़े की सूजन (ब्रांकोटिस) हो जायगी। इससे बचने का रास्ता बड़ा आसान है। थोड़ा-सा अमृतांजन लेकर छाती पर मलिए। बस, उसकी गरमी सीधे हृदय तक पहुँचती है और कफ को पिघला देती और तुरत आराम मिलता है।

अमृतांजन—हमेशा सर्दी से सर्दी आराम पहुँचाता है।

अमृतांजन लिमिटेड, बम्बई और मद्रास

शाखा :—कलकत्ता, कराची, दिल्ली

सारिडन से
१० मिनट में ही
हर किस्म का दर्द
दूर कीजिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर एक की पसन्द के अनुकूल

गोदरेज

टायलेट साबुन

गोदरेज द्वारा बनाये गये तरह-तरहके नहाने के साबुनों के कारण ये साबुन लोकप्रिय हो गये हैं। अपने देश के त्वचा-सौन्दर्य एवं उसकी स्वच्छता की परम्परा को क़ायम रखने में लगभग २५ वर्षों से ये साबुन सहायक रहे हैं, क्योंकि भारत के एकदम शुद्ध एवं अत्यंत लाभप्रद वनस्पति तेल एवं अन्य उपकरण—जो प्रकृति के अपने सौन्दर्य प्रसाधन हैं का उपयोग ही इन्हें सम्पूर्ण बनाने में किया जाता है। एक मात्र वनस्पति तेलों से ही साबुन बनाने की कला में हम अग्रगण्य रहे हैं और सर्वप्रथम हमने ही अनुभव किया था कि उच्च कोटि के साबुन केवल चुनी हुई वनस्पति के तेलों से ही बनने चाहिये—पशु चर्बी से नहीं। गोदरेज के नहाने के साबुनों ने इस देश में और विदेशों में काफ़ी यश कमाया है और दुनिया को यह बताने में ये साबुन गर्व करते हैं कि भारतीय पूँजी से, भारतीय श्रम से और भारतीय संचालन में बने ये स्वदेशी साबुन सस्ते होते हुए भी गुणों में विदेशी साबुनों से बढ़-चढ़कर हैं।

अन्य कहीं भी इन अतुलनीय सुन्दर नहाने के साबुनों में से अपने पसन्द का साबुन चुन लें और एक अच्छे भारतीय की तरह आप भी अपनी त्वचा को स्वच्छ, सुरक्षित और कोमल बनाये रखें।

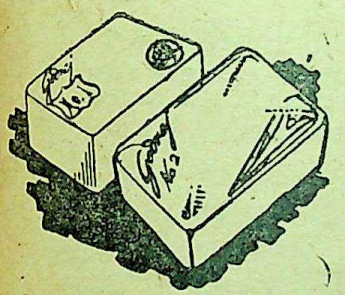

नं० १

नं० २

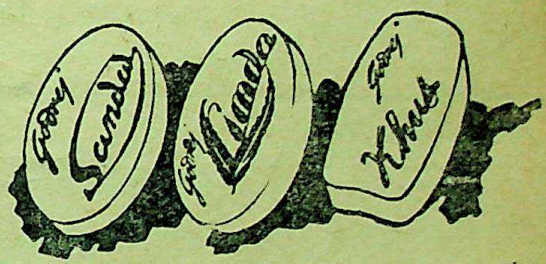

सन्दल लिमडा ख़स

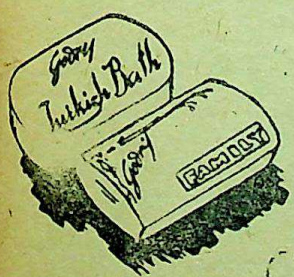

टर्किश बाथ फ़ैमिली

'वतनी'

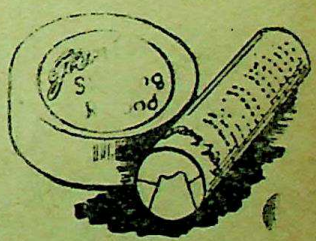

शेविंग स्टिक शेविंग 'राउण्ड'

गोदरेज सोप्स, लि० — बम्बई ११.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशित हो गया !

वार्षिक 'बाल-सखा'

बच्चों के लिए ज्ञान-विज्ञान का भाण्डार। साथ ही वर्ष भर की मनोरञ्जन-सामग्री से परिपूर्ण।

हज़ारों प्रतियाँ हाथों हाथ बिक गईं

बाल-साहित्य के रसास्वादन के लिए इस अङ्क को शीघ्र मँगाकर पढ़िए। मूल्य २) डाक-व्यय ।)

मैनेजर, 'बाल-सखा', इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

बालक-बालिकाओं के लिए

कविता का अपूर्व झरना

पं० रामनरेश लिखते हैं कि द्विवेदीजी की कविताओं को बच्चे बड़े शौक़ से पढ़ते हैं और उन्हें रट लेते हैं। यह उसी प्रकार की रचनाओं का संग्रह है।—मूल्य ॥=)

---

३ महिनों तथा २४४ डवहार सिर्फ ४) में

जो लोग हमारी दो शीशियाँ ओटो गुलाब या ४ जर्दा ४) में खरीदेंगे उन्हें एक रोल्डगोल्ड गिलट की कलाई घड़ी, १ लेफ़्टीरेजर, १ सेविगब्रश, १ साबुन, एक एक कङ्घा, एक बत्ती, १ अंगूठी, १ सेट बटन, १ २ नकली कलाई घड़ियाँ एक जोड़ा गिन प्रिजर्वर अपने नाप भेजें) १ जोड़ा जूते का फीता, १ मनीबेग, ४ रोल की चूड़ी, ४ हेअर पिन १ पैर का पालिश, १ नेल पालिश का गोला, ५२ ताश के पत्ते। पैकिंग तथा डाक व्यय ।=)

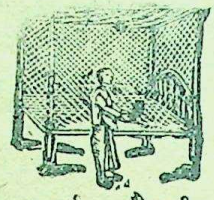

मच्छर दानियाँ

उत्तम सामान, अच्छी सिलाई मज़बूत, लेफ़ जाली चारों कोने में

लम्बाई	चौड़ाई	ऊँचाई	साधारण	वेस्ट क्ला०
६ फुट	३ फुट	३ फुट	५।)	६)
६ ,,	३½ ,,	३½ ,,	६)	७)
६ ,,	४ ,,	४ ,,	७)	८)
६½ ,,	४½ ,,	४½ ,,	८)	९)
७ ,,	५ ,,	५ ,,	९।।)	१०।।=)
७½ ,,	६ ,,	६ ,,	१२।।।=)	१४)
८½ ,,	६½ ,,	६½ ,,	१४=)	१५)

पैकिंग तथा डाक व्यय १।)। कोई भी तीन एक स्थान पर डाक व्यय माफ। ७ एक साथ लेने पर एक ७×७ साइज की मुफ़्त। नोट— ६ मशहरी के लिए १० पेशगी आवश्यक है।

पता— विक्टोरिया वाच के (S. A.

पोस्ट बाक्स नं० १२२१६ कलकत्ता (सेक

श्री साहनलाल द्विवेदी लिखित—

कुणाल

प्रत्येक युवक, युवती के पढ़ने योग्य अभिनव प्रकाशित खंड काव्य

अशोक, तिष्यरक्षिता और कुणाल के चरित्र-चित्रण में—खासकर कुणाल के चरित्र-चित्रण में—कवि ने कमाल किया है।

शब्द-सौकुमार्य के साथ ही भावोत्कर्ष तथा नपे-तुले शब्दों का प्रयोग भी द्विवेदी जी की कविता को उच्च बनाता है।

—महापण्डित राहुलसांकृत्यायन

सचित्र सजिल्द मूल्य १।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मिलने का पता—इंडियन प्रेस लिमिटेड इलाहाबाद

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धि से काम लीजिए

अच्छी पुस्तकों का चुनाव साधारण काम नहीं है। इसमें यदि आप अपनी बुद्धि का उपयोग न करेंगे, तो गाढ़ी कमाई के पैसों से खरीदी हुई पुस्तकें फेंक देनी होंगी। ऐसा न हो इसलिए हम काव्य और साहित्य की चुनी हुई पुस्तकें आपके सामने उपस्थित कर रहे हैं।

काव्य की पुस्तकें

गोस्वामी तुलसीदास—संक्षिप्त रामचरितमानस (सचित्र)—रामचरितमानस का संक्षिप्त संस्करण है। संक्षेप ऐसी चतुराई किया गया है कि कहीं भी कथा-भाग टूटने नहीं पाया। मँझोले आकार के ३०० पृष्ठों में यह समाप्त हुआ है। पुस्तक सचित्र और सजिल्द है। मूल्य १) एक रुपया।

अयोध्याकाण्ड (मूल)—रामायण-प्रेमियों के सुभीते के लिए यह काण्ड अलग प्रकाशित किया गया है। यह पुस्तक अनेक स्थानों के शिक्षाविभाग-द्वारा स्वीकृत है। इससे यह विद्यार्थी तथा साधारण जनता सभी के काम की चीज़ है। मूल्य ।) एक रुपया। सटीक मूल्य २॥≡) दो रुपये ग्यारह आने।

सुन्दरकाण्ड (मूल)—रामायण-प्रेमियों के सुभीते के लिए यह काण्ड असली रामचरितमानस से अलग छापा गया है। मूल्य ।≡) सात आने।

अरण्यकाण्ड (मूल)—रामायण-प्रेमियों के सुभीते के लिए यह काण्ड भी असली रामचरितमानस से अलग छापा गया है। मूल्य ।≡) सात आने।

विनयपत्रिका (सटीक)—गोस्वामी तुलसीदास की रचनाओं में विनयपत्रिका का स्थान बहुत ऊँचा है। इसमें गोस्वामीजी के विनय-सम्बन्धी पद्यों का संग्रह है। इसके टीकाकार हैं पण्डित रामेश्वर भट्ट। मूल्य ४) चार रुपये।

कुण्डलिया रामायण—गोस्वामी तुलसीदासजी की यह अमर रचना पिछले दिनों खोज में मिली है। इसमें उनकी अन्यान्य रचनाओं की भाँति सरस कुण्डलिया छन्दों में रामचरितमानस के सातों काण्डों की कथा दी गई है। मूल्य ४) चार रुपये।

संक्षिप्त सूरसागर—इसमें महाकवि सूरदास के पदों का संग्रह है। इसका एक-एक पद भक्ति तथा प्रेम के रस से ओतप्रोत है। मूल्य ३।-) तीन रुपये पाँच आने।

चारण—इस पद्यमय पुस्तक में प्राकृतिक दृश्यों के मनोरञ्जक वर्णनों के अतिरिक्त राजपूताना के कुछ प्रसिद्ध वीरों का गुणगान किया गया है। मूल्य ।-) पाँच आने।

श्री राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी०, एल-एल० बी० लिखित चार काव्य-ग्रन्थ

वनवास—यह पुस्तक एक खण्ड-काव्य है, जिसमें कवि ने राम के वन-गमन और भारत के पावन स्थल चित्रकूट पर्वत का बड़ा मनोरम वर्णन किया है। मूल्य ॥।=) चौदह आने।

मधुस्रवा—इस अनुपम और नवीन शैली की कविता पुस्तक में जीवन में मधु बरसाने की पूरी-पूरी क्षमता है। आप भी इसकी रचनाओं को पढ़कर जीवन को रस-सिक्त बनाइए। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

किङ्किणी—इसमें लेखक की उत्तमोत्तम फुटकर कविताओं का संग्रह किया गया है। कविताओं की भाषा इतनी मधुर और कल्पना की उड़ान इतनी आकर्षक है कि पाठक कुछ क्षण के लिए उसमें अपनी सुध-बुध भूले बिना नहीं रहता। मूल्य ॥।) बारह आने।

लक्ष्मणशक्ति—यह भी एक खण्डकाव्य है। इसकी कथा का आधार रामायण का युद्ध-काल है जिसमें लक्ष्मण मूर्छित हो गये थे। भाषा सुलझी हुई और मुहाविरेदार है। मूल्य ॥। बारह आने।

मैनेजर बुकडिपो—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ कवि

ठाकुर गोपालशरणसिंहजी की कृतियाँ—

माधवी—माधवी का यह नया सस्करण बड़ी ही सज-धज के साथ और बड़े आकार में प्रकाशित हुआ है। मूल्य २) दो रुपये।

ज्योतिष्मती—इस संग्रह में ठाकुर साहब की नवीन प्रकार की कवितायें संगृहीत की गई हैं, जो हिन्दी-साहित्य में अपना विशेष स्थान रखती हैं। ख़ास कर इसमें संग्रह किये गये छोटे-छोटे गीत बहुत ही मधुर और भावपूर्ण हैं। मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने।

मानवी—इस संग्रह में प्रकाशित कविताओं के द्वारा ठाकुर साहब ने भारतीय नारी के सुख-दुःखमय जीवन का बड़ा ही सुन्दर और मार्मिक चित्रण किया है। मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने।

संचिता—इस संग्रह में ठाकुर साहब ने अपनी सन् १९१४ से लेकर सन् १९३९ तक की सब प्रकार की रचनाओं का समावेश किया है। इस एक ही पुस्तक के द्वारा ठाकुर साहब के कवि-जीवन के क्रम-विकास का उत्तमतापूर्वक अध्ययन किया जा सकता है। संग्रह में कुल ७१ कवितायें हैं। मूल्य ३) तीन रुपये।

पद्यमाला—इस पुस्तक में अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के बारहवें अधिवेशन के सभापति हास्यरसावतार स्वर्गीय पण्डित जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी, साहित्यभूषण की फुटकर कविताओं का संग्रह किया गया है। मूल्य १) एक रुपया।

एकादशी—लेखक, श्रीयुत नत्थाप्रसाद दीक्षित 'मिलिन्द'। इस पुस्तक में मिलिन्द जी की १२ कमनीय कविताओं का संग्रह किया गया है। ये सभी कवितायें पौराणिक आख्यायिकाओं के आधार पर नये ढङ्ग से लिखी गई हैं। मूल्य केवल १।-) एक रुपया पाँच आने।

मञ्जीर—लेखक, श्री गिरिजाकुमार माथुर। इसमें नवयुवक कवि की भावपूर्ण ४३ रचनायें संगृहीत हैं जिन्हें पढ़कर हृदय फड़क उठता है। मूल्य १) एक रुपया।

दैत्यवंश—लेखक, श्रीयुत हरदयालुसिंह। इसमें हिरण्याक्ष से लेकर स्कन्द तक दैत्यवंश के प्रभावशाली नरेशों का वर्णन ब्रजभाषा के ललित छन्दों में पुरानी शैली के अनुसार किया गया है। इस पुस्तक पर देव-पुरस्कार दिया जा चुका है। मूल्य ३।-) तीन रुपये पाँच आने।

द्विवेदी काव्यमाला—आचार्य पण्डित महावीरप्रसाद द्विवेदी की अमर कविताओं का पूर्ण संग्रह।

शनि भगवान् की कथा—इसमें ललित छन्दों में शनि भगवान् की महिमा का वर्णन किया गया है। मूल्य ॥) आठ आने।

तक्षशिला काव्य—सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान तक्षशिला के अतीत गौरव का वर्णन। इसमें ओज, प्रसाद तथा माधुर्य आदि काव्योचित गुणों का समुचित रूप से समावेश किया गया है। मूल्य ३) तीन रुपये।

कौमुदी—श्रीयुत बालकृष्णराव आई० सी० एस० की कविताओं का संग्रह। मूल्य ॥≡) ग्यारह आने।

साहित्य-समालोचना

तुलसी के चार दल (प्रथम और द्वितीय भाग)—इसमें तुलसीदास के रामलला नहछू, बरवै रामायण, पार्वती-मंगल और जानकी-मंगल का आलोचनात्मक परिचय तथा इन चारों का अध्ययनपूर्ण टीका। मूल्य प्रथम भाग का ३) तीन रुपये, द्वितीय भाग का २॥≡) दो रुपये ग्यारह आने।

हिन्दी-भाषा की उत्पत्ति—पुस्तक का विषय उसके नाम से स्पष्ट है। इसमें हिन्दी-भाषा की उत्पत्ति के विवेचन के अतिरिक्त और भी अनेक भारतीय भाषाओं पर विचार किया गया है। मूल्य ॥) आठ आने।

बाबू श्यामसुन्दरदास की कुछ पुस्तकें

सचित्र हिन्दी कोविद-रत्नमाला—(दो भाग) पहले भाग में भारतेन्दु से लेकर वर्तमान समय तक के हिन्दी के नामी लेखकों और सहायकों के सचित्र और संक्षिप्त जीवनचरित छापे गये हैं; और दूसरे भाग में पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी तथा माधवराव सप्रे, बी० ए० आदि विद्वानों के तथा विदुषी स्त्रियों के जीवनचरित छापे गये हैं। हिन्दी में यह पुस्तक अपूर्व है। पहले भाग का मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने। दूसरे भाग का २॥≡) दो रुपये ग्यारह आने।

मेरी आत्म-कहानी—काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा के दाता बाबू श्यामसुन्दरदास जी की आत्म-कहानी एक प्रकार से हिन्दी-साहित्य के वर्तमान युग का इतिहास है। इस पुस्तक में बाबू साहब ने केवल अपनी जीवन-घटनाओं का विवरण ही नहीं लिखा वरन् अपने समय के उन सभी साहित्य-सेवियों के कार्य की विवेचना भी की है, जिन्होंने हिन्दी-साहित्य की अभिवृद्धि में योगदान किया है। मूल्य २) दो रुपये।

मैनेजर बुकडिपो—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ—लेखक, पण्डित उमेशचन्द्र मिश्र। इस पुस्तक में विश्वकवि श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर की प्रामाणिक जीवनी और उनकी समस्त कृतियों—कविता-संग्रह, नाटक-नाटिका, कहानियाँ, उपन्यास, यात्रा-वर्णन, विज्ञान के ग्रंथ, निबन्ध, साहित्यिक समालोचना, चित्रकला आदि—का विवेचनात्मक परिचय दिया गया है। उदाहरणों में कवि की प्रायः समस्त सुप्रसिद्ध और चुनी हुई रचनायें आ गई हैं। फ़ुटनोट में उनके सरल अर्थ दिये गये हैं। इसके द्वारा आप रवीन्द्रनाथ और उनकी काव्य-कृतियों का पूरा-पूरा परिचय प्राप्त कर सकते हैं। विश्वभारती (शान्तिनिकेतन) के विद्वानों ने भी इसकी प्रशंसा की है। मूल्य केवल ५) पाँच रुपये।

द्विवेदीमीमांसा—लेखक, श्रीयुत प्रेमनारायण टण्डन। हिन्दी नवीन युग की धाराओं और प्रवृत्तियों के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। साधारण पाठकों के अतिरिक्त सम्मेलन के परीक्षार्थियों व विश्वविद्यालयों के छात्रों के लिए भी यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। मूल्य दो रुपये।

देवदर्शन—देवपुरस्कार-विजेता श्री हरदयालुसिंह द्वारा सम्पादित व्रजकाव्य-समीक्षायें—इसमें व्रजभाषा के प्रख्यात कवियों की जीवनी और उनके समस्त काव्यों का आलोचनात्मक परिचय दिया गया है। व्रजकाव्य के प्रेमियों के अतिरिक्त साहित्य के विद्यार्थियों के लिए भी यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपये पाँच आने।

पूर्ण-पराग—इसमें व्रजभाषा के प्रसिद्ध आधुनिक कवि श्री देवीप्रसाद 'पूर्ण' की जीवनी और उनके काव्य का समालोचनात्मक परिचय है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपये पाँच आने।

मतिराम-मकरन्द—इसमें काव्यालोचन के साथ-साथ कवि मतिराम के ३ प्रसिद्ध ग्रंथों—मतिराम-सतसई, ललित-ललाम और सुराज का संक्षिप्त सरस संग्रह भी कर दिया गया है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

बिहारी-विभव—इसमें महाकवि बिहारी की कविता का आलोचनात्मक परिचय, उनकी जीवनी तथा सतसई के चुने हुए दोहे संकलित हैं। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपये पाँच आने।

भूषण-भारती—इसमें महाकवि भूषण की जीवनी और उनके समस्त काव्य-ग्रन्थों का विवेचनात्मक परिचय दिया गया है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपये पाँच आने।

महादेवी का विवेचनात्मक गद्य (द्वि० सं०)—संकलनकर्त्ता श्री गंगाप्रसाद पाण्डेय, एम० ए०। साहित्य की नवीन शैली का अध्ययन करनेवालों के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य २।।।) दो रुपये बारह आने।

आल्हा—लेखक, चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा। इस पुस्तक में महोबे के प्रख्यात वीर आल्हा और ऊदल का जीवन-चरित और समस्त लड़ाइयों का वर्णन रोचक व सरस भाषा में दिया गया है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य ३।-) तीन रुपये पाँच आने।

सीताराम-संग्रह—अर्थात् रायबहादुर लाला सीतारामजी के समग्र काव्यों और नाटकों का सरस संग्रह। प्रस्तुत पुस्तक में लालाजी के समग्र काव्यों और नाटकों के अनुवादों का सरस संग्रह है। पुस्तक के आरम्भ में लालाजी का परिचय और उनकी रचनाओं की आलोचना दी गई है। २।।≡) दो रुपये ग्यारह आने।

साहित्य-समीक्षा—इस पुस्तक में हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक श्रीयुत कालिदास कपूर, एम० ए०, एल० टी० के साहित्यिक तथा समालोचनात्मक लेखों का संग्रह किया गया है। मूल्य १) एक रुपया।

हास्य-कौतुक—कवीन्द्र रवीन्द्र ने इस पुस्तक में विनोदमयी भाषा में मानव-चरित के बहुत ही उत्तम-उत्तम चित्र अंकित किये हैं। मूल्य ।।) आठ आने।

मौलाना हाली और उनका काव्य—उर्दू के श्रेष्ठ कवि मौलाना हाली का जीवनचरित और उनकी चुनी हुई कविताओं का संग्रह। प्रत्येक कविता का अर्थ सरल हिन्दी में दिया गया है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

कवि और काव्य—श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी ने काव्य के गुण-दोष से सम्बन्ध रखनेवाले कितने ही उपयोगी विषयों का इसमें विशद रूप से विवेचन किया है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

कहानी कैसे लिखनी चाहिए—सफल कहानी-लेखक बनने की इच्छा रखनेवालों के लिए इसमें बहुत-सी ज्ञातव्य बातें लिखी गई हैं। मूल्य ।।≡) ग्यारह आने।

हिन्दी ग्रामर—(ई० ग्रीव्स कृत) एक अँगरेज़ द्वारा लिखित यह हिन्दी का व्याकरण भाषा-विज्ञान की दृष्टि से बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। हिन्दी न जाननेवाले विदेशी को हिन्दी सीखने में इससे मदद तो होगी ही साथ ही हिन्दी भाषा विज्ञान के विद्यार्थी भी इससे लाभ उठा सकते हैं। मूल्य ८।।≡) आठ रुपये ग्यारह आने।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

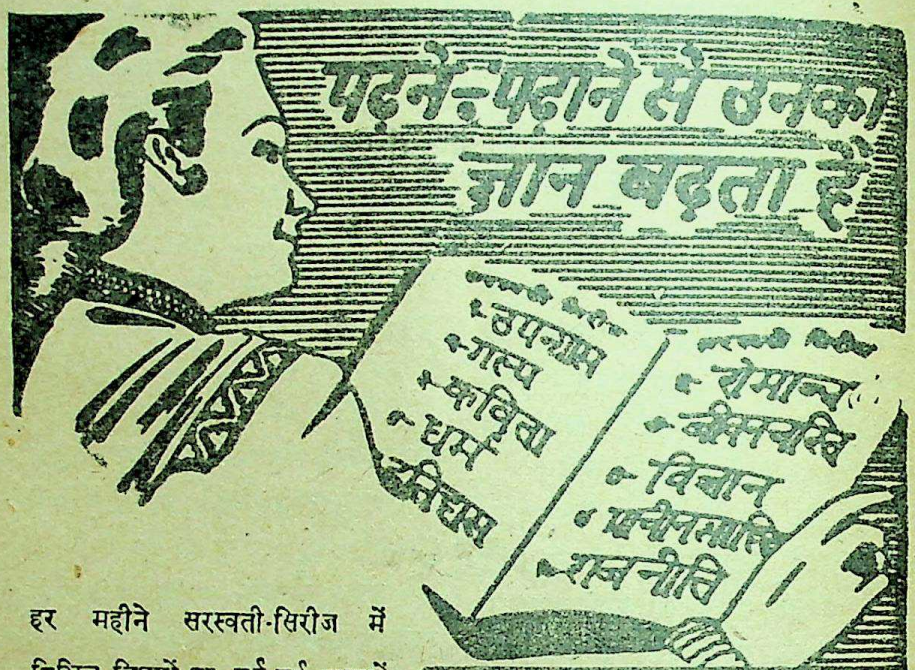

हर महीने सरस्वती-सिरीज में विभिन्न विषयों पर नई-नई पुस्तकें निकलती रहती है। आप इन्हें खरीद कर कुछ ही दिनों में एक अच्छा-सा पारिवारिक पुस्तकालय बहुत कम लागत में तैयार कर सकते हैं। यह पुस्तकालय आपके तथा आपके परिवार के लिए समान उपयोगी होगा।

सरस्वती सिरीज

इण्डियन प्रेस

प्रयाग

मूल्य ॥=)

सभी पुस्तक-विक्रेताओं तथा ह्वीलर के बुक स्टाल पर पुस्तकें मिल सकेंगी। विवरण के लिये हमारा सूची-पत्र मुफ़्त मँगावें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस्वती

सचित्र

मासिक पत्रिका

भाग ४६, खण्ड १

जनवरी से जून

१९४५

सम्पादक

देवीदत्त शुक्ल

उमेशचन्द्र मिश्र

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

वार्षिक मूल्य साढ़े चार रुपये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख सूची

नम्बर	नाम		लेखक	
१	अच्छी हिन्दी	...	पण्डित किशोरीदास वाजपेयी, शास्त्री	
२	अतीत-स्मरण	...	श्रीयुत रजनी रामनाथ	...
३	अधिनायक	...	श्रीमती निर्मला मित्र	...
४	अमरीकनपत्रकारों के साथ कुछ क्षण	...	श्रीयुत मङ्गलकिशोर पाण्डेय	...
५	अरब में जाट	...	श्रीयुत चन्द्रबली पाण्डेय, एम० ए०	...
६	आग	...	पण्डित मोहनलाल महतो	...
७	आचार्य द्विवेदी के पत्र	...		...
८	आज मौन अलि ... (कविता)	..	श्रीमती तारा पाँडे	...
९	इतिहास का एक पृष्ठ	...	श्रीयुत महावीरप्रसाद मिश्र	...
१०	इस्लाम और दर्शन	...	मौलवी महेशप्रसाद, आलिम फ़ाज़िल	...
११	उपहार	...	श्रीयुत दौलतराव परशुराम	...
१२	उद्बोधन (कविता)	...	श्रीयुत 'अरुण'	...
१३	उनकी किसी से नहीं बनती	...	प्रिंसिपल श्रीमन्नारायण अग्रवाल, एम० ए०	...
१४	कवि दत्त का परिचय	...	श्रीयुत 'प्रशान्त'	...
१५	कविवर जान	...	श्रीयुत रावत सारस्वत, बी० ए०, विशारद	...
१६	कांग्रेस बनाम मुस्लिमलीग	...	श्रीयुत उमाशङ्कर	...
१७	कांग्रेसी मंत्रिमण्डलों की स्थापना और कांग्रेस का पुनः सङ्गठन	...	श्रीयुत भूपेन्द्रनाथ सान्याल	...
१८	काले केश	...	कुमारी प्रभा पारीक, बी० ए०	...
१९	गत शीत का हिमपात	...	श्रीयुत युवराजसिंह चन्देल	...
२०	गायक (कविता)	...	श्रीयुत रुद्रदत्त मिश्र	...
२१	गीत (कविता)	...	कुमारी दिनेशनन्दिनी, एम० ए०	...
२२	गीत (कविता)	...	श्रीयुत हरिवल्लभ 'हरि', साहित्यरत्न	...
२३	गीत (कविता)	...	श्रीयुत शिवदत्त शर्मा, एम० ए०, एल्-एल० बी०	
२४	गीत (कविता)	...	श्रीयुत जितेन्द्रकुमार	...
२५	गोष्ठी	...	पण्डित गणेशप्रसाद द्विवेदी, एम० ए०, एल्-एल० बी०	
२६	चन्द्रप्रभा	...	श्रीयुत 'नीलम'	...
२७	चौधरी गैंडासिंह	...	श्रीयुत रामचन्द्र तिवारी	...
२८	जीवन-पथ पर	...	श्रीयुत महेन्द्रप्रताप 'अज्ञात'	...
२९	जीवन-सन्ध्या (कविता)	...	श्रीमती तारा पाँडे	...
३०	जौनसार की पहाड़ी दिवाली	...	श्रीयुत युवराजसिंह चन्देल	...
३१	तीन रुख	...	श्रीयुत प्रभाकर माचवे	...
३२	दादाभाई नौरोजी के साथ कुछ दिन	...	श्रीयुत सन्त निहालसिंह	...
३३	धूलि में आकृति	...	श्रीयुत प्राणनाथ मेहता	...
३४	नई पुस्तकें	...		३६,८३,१३३,१८०
३५	नदी का गीत (कविता)	...	श्रीयुत तेजनारायण काक, एम० ए०	...
३६	नरेन्द्रमण्डल का त्यागपत्र	...	श्रीयुत राजमल संघी, बी० ए०	...
३७	नवीन की भीख (कविता)	...	श्रीयुत पीहार रामावतार 'अरुण'	...
	[illegible]		श्रीयुत मलिन्द	...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम	लेखक	पृष्ठ
—निर्वासित ...	पण्डित इलाचन्द्र जोशी	३३,७७,१२८,१७६,२३६,२६८
—पश्चात्य साहित्य और वर्त्तमान सङ्कट ...	श्रीयुत भूपेन्द्रनाथ सान्याल ...	१०५
—पत्नी चाहिए ...	डाक्टर बाबूराम सक्सेना, एम० ए०, डि० लिट्०	१५७
—प्राचीन भारत में स्त्री-राज्य ...	पण्डित कृष्णदत्त वाजपेयी, एम० ए० ...	१७१
—प्रिय-दर्शन ...	कुमारी दिनेशनन्दिनी, एम० ए० ...	८०
—पोरबन्दर ...	श्रीयुत सन्तराम, बी० ए० ...	२८६
—फ्रांस का कर्णधार जनरल द'गाल ...	श्रीयुत मङ्गलकिशोर पाण्डेय ...	२१७
—भर-भर आये हृदय (कविता) ...	श्रीयुत रामानुजलाल श्रीवास्तव ...	५६
—भाभी ...	श्रीयुत कृष्णचन्द्र शर्मा, बी० ए० ...	१२१
—भारत का व्यावसायिक सिंहावलोकन ...	श्रीयुत परिपूर्णानन्द वर्मा ...	५३
—भारत की जन-शक्ति ...	श्रीयुत अवनीन्द्रकुमार विद्यालङ्कार ..	१५
—भारतीय चित्र-कला ...	श्रीयुत मदनमोहन सिन्हा 'सरोज' ...	११५
—भिक्षु ...	श्रीयुत मदनमोहन 'राकेश' ...	१०८
—मरुथल (कविता) ...	प्रोफ़ेसर विद्याभास्कर 'अरुण' ...	२१६
—महाभारत पर विचार ...	पण्डित अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी ...	४६
—मिस्र का उज्ज्वल भविष्य ...	श्रीयुत 'दिनकर' ...	२३
—मुरीदपुर का पीर ...	अनु० चौधरी शिवनाथसिंह शाण्डिल्य ...	६८
—यात्रा (कविता) ...	श्रीयुत श्यामविहारी शुक्ल 'तरल' ...	५४
—योरप के युद्ध का प्रारम्भ और अन्त ...	श्रीयुत नरोत्तमप्रसाद नागर ...	२८६
—यौवन-बन्धन ...	श्रीयुत दौलतराव परशुराम ...	६०
—राजनीति और गुप्तचर ...	पण्डित मोहनलाल महतो ...	६५
—विधवार्जन (कविता) ...	श्रीयुत राममनोहर बिचपुरिया ...	२८
—विवाह की उत्पत्ति ...	श्रीयुत श्यामनन्दनसहाय, एम० ए० ...	१७४
—शहाबुद्दीन मुहम्मद ग़ोरी के हिन्दुस्तान पर आक्रमण	प्रिंसिपल श्रीराम शर्मा, एम० ए०, एफ़० आर० एस०	१४५
—षड्यन्त्र ...	कुँवर 'मृदुल' ...	२६
—सन्देह (कविता) ...	श्रीयुत उमेशचन्द्र 'मधुकर', बी० ए० ...	७६
—सन्ध्या (कविता) ...	श्रीयुत आरसीप्रसाद सिंह ...	३८
—सम्पादीय नोट ...		४४,६०,१३६,१९४,२४८,३०५
—स्वर्गीय ओझा मंघूरामजी ...	श्रीयुत धर्मदेव शास्त्री, दर्शनकेशरी ...	२३३
—स्वर्गीय सर चौधरी छोटूराम ...	श्रीयुत शिवकुमार विद्यालङ्कार ...	१५४
—साधना (कविता) ...	श्रीयुत कन्हैयालाल ...	६
—सामयिक साहित्य ...		४१,८५,१३६,१८५,२४६
—सारनाथ के खँडहर में (कविता) ...	श्रीयुत शक्र ...	२८२
—सुख-स्पर्श (कविता) ...	ठाकुर गोपालशरणसिंह ...	२६८
—सैनिक से (कविता) ..	श्रीयुत मदनमोहन 'शास्त्री 'राकेश', एम० ए०, एम० ओ० एल० ...	२७४
—सौन्दर्य (कविता) ...	श्रीयुत महावीरसिंह 'वीर', बी० ए० ...	२४२
—हम तो हैं बाबुल	श्रीयुत [illegible] ...	५५
—हवाई हमला (कविता) ...	श्रीयुत प्रभाकर माचवे, एम० ए०, साहित्यरत्न	[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नम्बर	नाम		लेखक	
७७	हिन्दी और हिन्दू की रक्षा का प्रश्न	...	श्रीयुत सन्तराम, बी० ए०	...
७८	हिन्दी में एक नई प्रेम-गाथा	...	श्रीयुत सर्वसुखसिंह, बी० ए०	...
७९	हिन्दी में निबन्ध-कला की प्रगति	...	श्रीयुत उमाशङ्कर	...
८०	हिन्दी-साहित्य में व्यंग्यात्मक आलोचना	...	श्रीयुत कपिलदेवसिंह एम० ए०	...
८१	हिन्दुस्तानी और डाक्टर ताराचन्द	...	श्रीयुत श्यामनारायण एम० ए०	...
८२	क्षितिज (कविता)	...	श्रीयुत इकराम सागरी	...
८३	१९४५-४६ का बजट	...	श्रीयुत अवनीन्द्रकुमार विद्यालङ्कार	...

——

चित्र-सूची

नम्बर	नाम	
१	आचार्य द्विवेदी १ चित्र	...
२	कांग्रेस बनाम मुस्लिम लीग-सम्बन्धी ५ चित्र	...
३	गतशीत का हिमपात-सम्बन्धी ११ चित्र	...
४	जौनसार की पहाड़ी दिवाली-सम्बन्धी ५ चित्र	...
५	नालन्दा के ध्वंसावशेष १ चित्र	...
६	पोरबन्दर-सम्बन्धी ६ चित्र	...
७	फ्रांस का कर्णधार जनरल द'गाल-सम्बन्धी ६ चित्र	...
८	मिस्र का उज्ज्वल भविष्य-सम्बन्धी ४ चित्र	...
९	योरप के युद्ध का प्रारम्भ और अन्त-सम्बन्धी ११ चित्र	२८९-२९०
१०	स्वर्गीय दादाभाई नौरोजी १ चित्र	...
११	स्वर्गीय लायड जार्ज १ चित्र	...
१२	स्वर्गीय सर चौधरी छोटूराम १ चित्र	...
१३	स्वर्गीय प्रेसिडेंट रूज़वेल्ट १ चित्र	...

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

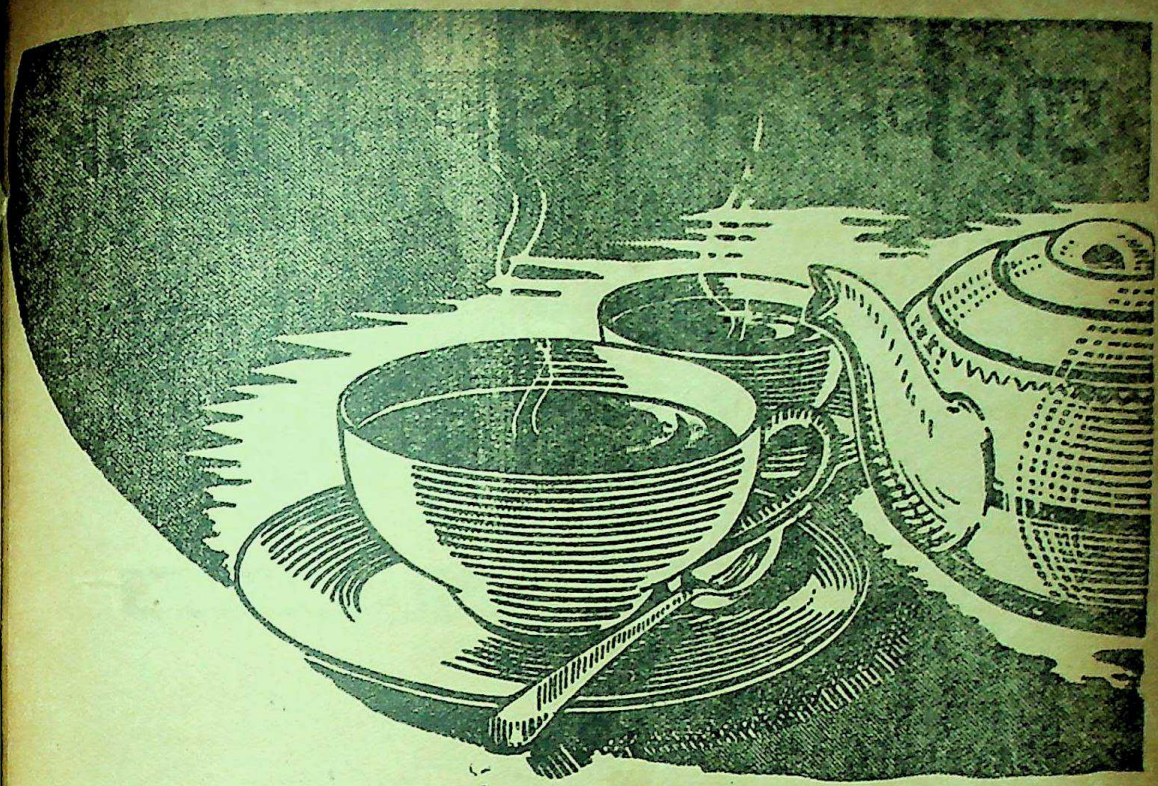

तेज व बढ़िया सुगन्ध, गहरा रंग और
कम दाम इन सबने मिलकर लिपटन
की व्हाइट लेबुल को बाजार भर
की सर्वश्रेष्ठ चाय बना रक्खा है।

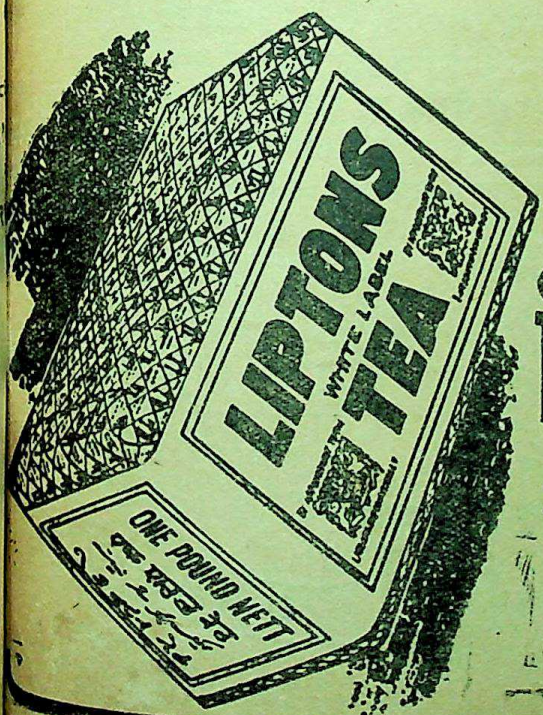

लिपटन की
व्हाइट लेबुल चाय

सर्वोत्तम भारतीय पत्ता चाय

LTK 84 W

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

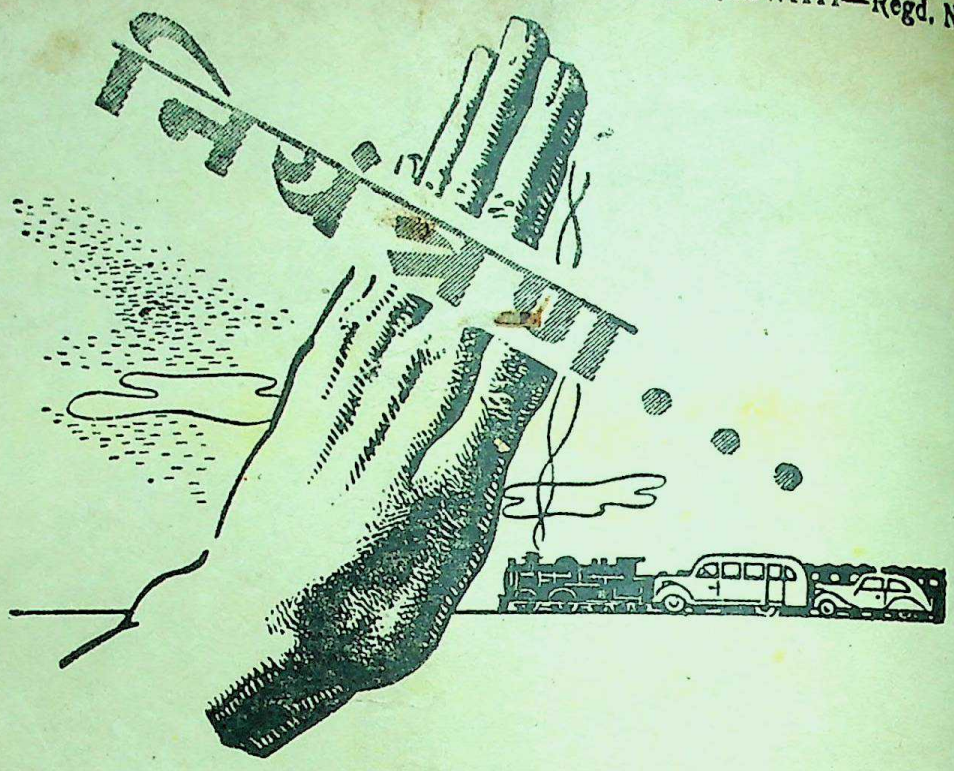

जबसे युद्ध आरम्भ हुआ और ट्रेनों का नियंत्रण हुआ तबसे यात्रा का आनन्द ही नहीं जाता रहा वरन् यात्रा करना अग्निपरीक्षा-सा हो गया है। भाड़े बढ़ गये हैं ; धक्का मुक्की, व मारापीटी कर घंटों बाद टिकट मिले भी तो गाड़ी ठसाठस भरी हुई ; किसी तरह चढ़े भी तो रास्ते में खाने की चीजें मिलना मुश्किल ; असल में, बहुत ही ज्यादा जरूरत न हो तो यात्रा करना मूर्खता है। लेकिन जिन्हें यात्रा करनी ही है उन्हें हर स्टेशन पर चाय वाले जरूर मिलते हैं—उनकी सूरत में ही राहत छिपी रहती है। गर्मी में ठण्ढक और ठण्ढ में गर्मी पहुंचाने वाला यह आनन्ददायक पेय कम पैसे में हमेशा मिल जाता है। जब भी आप उद्विग्न, थके हुए, या श्रान्त हों, ट्रेन में या और किसी जगह, चाय आपको स्फूर्तियुक्त व प्रसन्न बना देगी।

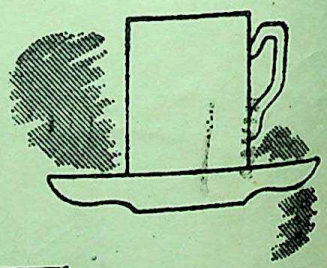

भारतीय

वक्त पड़ने पर **चाय** का सहारा लीजिये

इण्डियन टी[illegible]ट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

IK 238

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस्वती

जुलाई १९४५

76270

वार्षिक मूल्य ४॥)

एक प्रति का ।=)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालों को लम्बे तथा मनमोहक

बनाने के लिए

कामिनिया आयल (रजिस्टर्ड)

का व्यवहार करें।

यह बालों के लिए सर्वोत्तम उपचार है।

बालों को शीघ्रतापूर्वक बढ़ाता है।

बालों का झड़ना बन्द कर उन्हें काला, चिकना, चमकीला तथा मनमोहक बनाता है। एक बार की परीक्षा पर्याप्त होगी।

खुशबू का राजा

ओटो दिलबहार (रजिस्टर्ड)

अपनी मीठी तथा मनमोहक सुगन्ध के लिए विख्यात, दो-चार बूंद कपड़ों पर डाल देने से कपड़े अधिक समय तक सुगन्धित बने रहेंगे।

दिलबहार हेयर आयल (रजिस्टर्ड)

एक दूसरा सुगन्धित केश तेल

यह तेल अत्यन्त सुगन्धित है तथा बालों की उपयोगिता के लिए 'कामिनिया आयल' के बाद इसका ही नम्बर है। बालों को बढ़ाने के लिए यह विशेष लाभदायक है। एक बार अवश्य परीक्षा करें।

एँग्लो इण्डियन ड्रग एंड केमिकल कं०,

२८५ जुमा मसजिद, बम्बई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

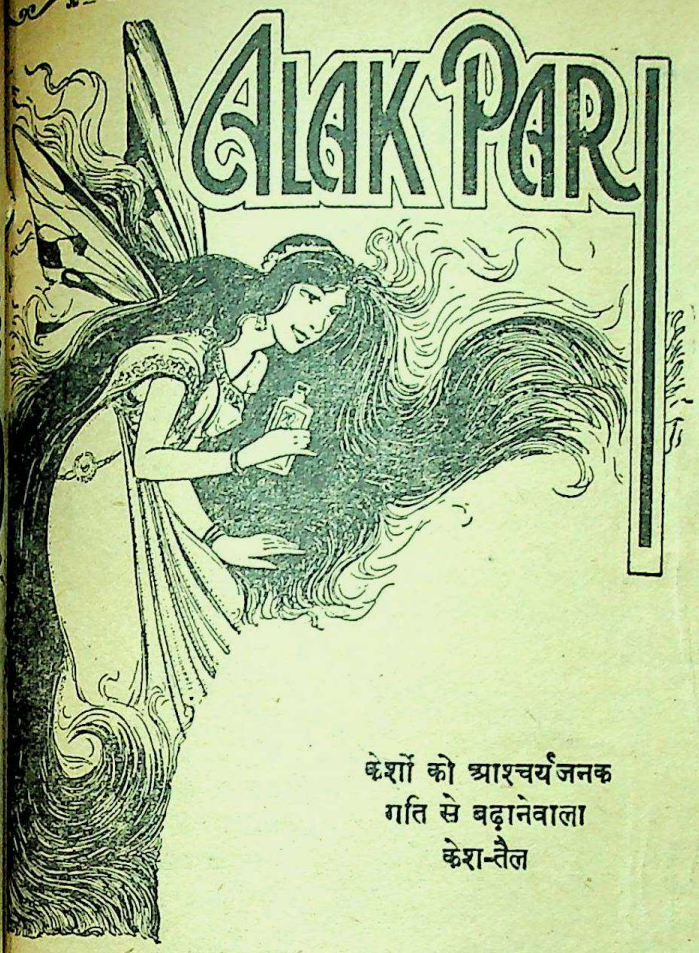

केशों को आश्चर्यजनक
गति से बढ़ानेवाला
केश-तैल

शुद्ध बादामरोग़न पर बना

अलकपरी

केशों में प्रतिमास ३-४ इञ्च वृद्धि !
६ महीने में एड़ी-चुम्बी केश !

'अलकपरी' का कोर्स

पहले सप्ताह में रूसी-ख़ुश्की दूर हो जाती है।
दूसरे सप्ताह में केशों का झड़ना और उनके सिरों का फटना रुकता है।
तीसरे सप्ताह में नये केश उगते दिखाई देते हैं।
चौथे सप्ताह के अन्त तक केश ३-४ इञ्च बढ़ जाते हैं।
फिर प्रतिमास इसी औसत से बढ़ते रहते हैं।

६ महीने में केश एड़ी-चुम्बी बन जाते हैं।

मूल्य एक शीशी का २॥) है जो एक महीने को काफ़ी होती है। डाक-ख़र्च व पैकिङ्ग पृथक्। ६ से अधिक शीशियाँ डाक से नहीं भेजी जायँगी। अधिक के लिए ५) पेशगी भेजिए और अपने रेलवे स्टेशन का नाम लिखिए।

प्रतिष्ठित महिलाओं की सम्मतियाँ—

मुझे 'अलकपरी' से बहुत कुछ फ़ायदा है। ३ शीशियाँ तुरन्त भेजने की कृपा करेंगे क्योंकि मेरे पास का तेल बिलकुल ख़तम हो गया है।

२-९-४४ कुसुमकुमारी, काँकरोली (मेवाड़)।

आपके 'अलकपरी' तेल की १ शीशी इस्तेमाल की। बहुत ही लाभ हुआ। अनेक धन्यवाद। अब मैं आपकी स्थायी ग्राहिका बन जाऊँगी। कृपया एक शीशी १५ सितम्बर के अन्दर ही अन्दर भेज दें।

७-९-४४ पुष्पा श्रीवास्तव C/o ब्रजेन्द्रनाथ श्रीवास्तव, अलीगढ़।

नम्र निवेदन यह है कि 'अलकपरी' की २ शीशियाँ लगाईं। मुझे बहुत लाभ हुआ है। कृपा कर २ शीशियाँ शीघ्र ही और भेज दीजिए।

१०-९-४४ मिस पुष्पा साहनी C/o दीवान जियालाल साहनी, नायब तहसीलदार, गुजरात (पंजाब)

'अलकपरी' से बहुत लाभ हुआ है। कृपया ६ शीशियाँ तुरन्त भेज दें।

१२-९-४४ मिसेज़ चौधरी सरदारसिंह सब इन्स्पेक्टर पुलिस, हरदुवागंज

'अलकपरी'—नया कटरा, इलाहाबाद

हमारे एजेन्ट—

नई दिल्ली—रायल स्टोर्स, ३३, गोल बाज़ार। आगरा—प्रियादास घनश्यामदास परफ़्यूमर्स, काश्मीरी बाज़ार।
लखनऊ—भोलानाथ सीताराम, अमीनाबाद पार्क।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

-कमरख़र्ची से पैसा बचता है

सादगी और किफ़ायत से आपके पैसे की बचत होती है। और छोटी छोटी बचतों से हफ़्तों और महीनों में कितनी रक़म जमा हो जाती है!

आजकल कम ख़र्च करना आपका परम कर्त्तव्य है, क्योंकि अगर आप ज़रूरत से ज़्यादा ख़रीदेंगे तो ग़रीबों को माल नहीं मिल सकता। इस परिस्थिति से लाभ उठा कर आप आर्थिक रूप से स्वयं अपना और अपने देश का हित-साधन कर सकते हैं।

कमरख़र्ची से संकट दूर कीजिए

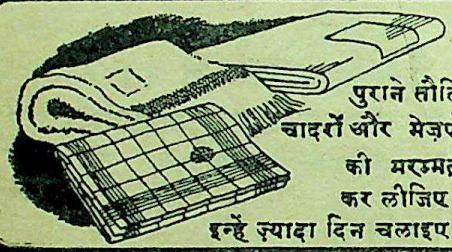

पुराने तौलियों, चादरों और मेज़पोशों की मरम्मत कर लीजिए। इन्हें ज़्यादा दिन चलाइए।

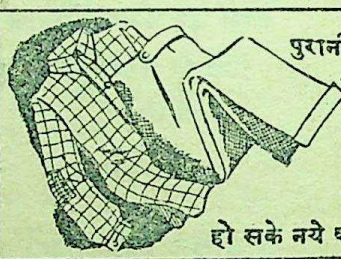

पुरानी क़मीज़ों, पैजामों, जाघियों, धोतियों वग़ैरह की मरम्मत कर लीजिए। जहाँ तक हो सके नये कपड़े न ख़रीदिए।

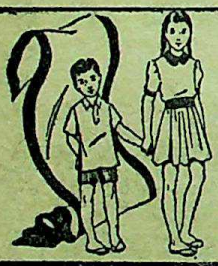

माँ-बाप के पुराने कपड़ों से बच्चों के कपड़े बना लीजिए। देखिए, ये बुरे नहीं लग रहे।

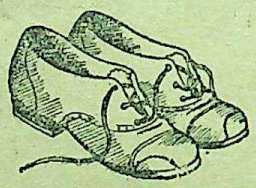

पुराने जूतों में पैबन्द लगवा कर इनकी मरम्मत करा लीजिए। इन्हें फेंकिए नहीं।

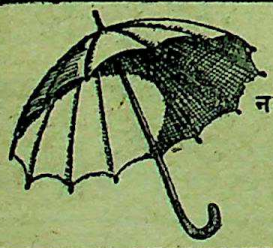

नया छाता मत ख़रीदिए। पुराने की मरम्मत करा लीजिए।

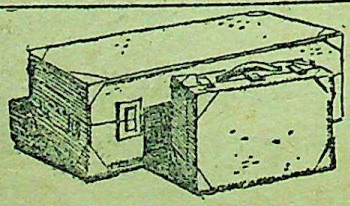

पुराने ट्रंकों, सूटकेसों, बिस्तरबन्दों आदि की मरम्मत करा लीजिए। नये बहुत महँगे हैं।

जिसके बिना काम चल जाय उसे मत ख़रीदिए

भारत-सरकार के सूचना तथा प्रचार-विभाग द्वारा प्रकाशित।

AAA 3 HINDI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमज़ोर और कृश बच्चे डोंगरे-बालामृत के इस्तेमाल से ताक़तवर, पुष्ट और चुस्त बनते हैं।

निर्बल, निश्चेतन और निराश क्यों रहते हो ?

भोजन को पचानेवाला, ख़ून को बढ़ानेवाला, पाण्डु और अन्य रोग के बाद की निर्बलता को नष्ट करनेवाला

भंडु रक्तो फोस्फोमाल्ट

सुमधुर शक्तिवर्धक, अमूल्य औषधि अवश्य सेवन करें

भण्डु फ़ार्मास्युटिकल वर्क्स लि०, बम्बई नं० १४

इलाहाबाद के चीफ़ एजेन्ट—एल० एम० घोलकिया एण्ड ब्रादर्स, ४६ जान्स्टनगंज।

दिल्ली और यू० पी० के सोल एजेन्ट—कान्तिलाल आर० पारीख, चाँदनी चौक, देहली।

यू० पी० एजेंट—कान्तिलाल आर० पारीख, चाँदनी चौक, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एअर मार्शल सर जान बाल्डविन द्वारा थर्ड टैक्टिकल एअर फोर्स के आई० ए० एफ० स्क्वाड्रन्स के कमांडिंग आफिसर्स के नाम लिखे गये पत्र से उद्धरण।

"आई० ए० एफ० (हिन्दुस्तानी हवाई बेड़ा) की स्थापना हुए ग्यारह वर्ष हो गये। इन ग्यारह वर्षों में आपने एक शक्तिशाली, भीषण प्रहारक बेड़े का निर्माण कर लिया है। आर० ए० एफ० और यू० एस० ए० ए० एफ० के साथ काम करके आई० ए० एफ० ने उड़ने में, लड़ने में तथा बमवर्षा करने में जिस ऐक्य एवम् शक्ति का प्रदर्शन किया है, उसकी प्रशंसा मैं लिखित रूप से करना चाहता हूं।

अभी एक महान कार्य करना है। आपको पता है कि हम एक निर्दय और सुसज्जित शत्रु से लड़ रहे हैं। किन्तु मुझे इसके परिणाम के संबंध में कोई सन्देह नहीं है। अच्छे काम को जारी रखिए। विजय प्राप्त होने पर आई० ए० एफ० के अपने विमान-चालकों के प्रति हिन्दुस्तान बहुत कृतज्ञ होगा।"

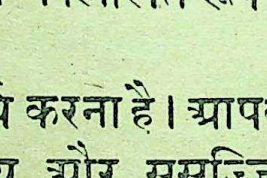

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह मुझे तर रखता है !

यह मुझे ताजा रखता है !

विनोलिया एक बड़ा ही आरामदायक साबुन है। इससे स्नान करनेपर हर बार आश्चर्य्यजनक शीतलता और निहायत ताजगी आ जाती है। और इस साबुनकी सुगंध इतनी स्फुर्तिदायक और प्रफुल्लित करनेवाली है कि विश्रान्त मस्तिष्क और शरीरको एक नवजीवन-सा प्राप्त हो जाता है।

यह प्रफुल्लित करता है !

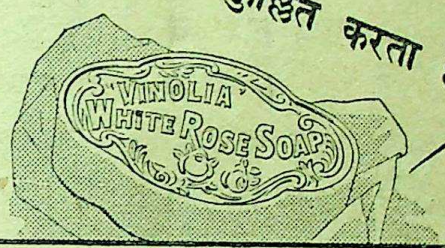

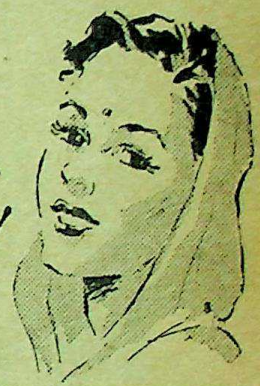

विनोलिया व्हाइट रोज साबुन

WR. 16-221 HI

VINOLIA CO. LIMITED, LONDON, ENGLAND

प्रदर रोग स्त्रियों का भयानक शत्रु है

प्रदर रोग जिसको लोग लिकोरिया भी कहते हैं यह स्त्रियों की सुन्दरता और जवानी को नष्ट करनेवाला भयानक शत्रु है। लज्जा-वश बेचारी रोग को छिपाये रहती हैं और दिन-रात घुला करती हैं। यह उनकी भूल है। भयानक रोग का इलाज कराने में लापरवाही न करना चाहिये, इस बीमारी से स्त्रियों के गुप्त शरीर से लाल, काला, धुमैला, या श्वेत रंग का बदबूदार पानी या लेस-सा निकलता रहता है। महीना ठीक समय पर नहीं होता है जिसके कारण कमर, रीढ़, सिर में दर्द, शरीर में जलन, मन मलीन, उठने-बैठने में थकावट, भूख का कम लगना, बदन दुबला और कमज़ोर हो जाना, मूर्छा, बेहोशी आदि रोग हो जाते हैं और सन्तान नहीं होती है और यदि होती भी है तो दुबली और कमज़ोर होती है। ऐसी अवस्था में भारतविख्यात वैद्यरत्न सत्यदेव ने अपूर्व शक्ति प्रदान करनेवाली २५ वर्ष की आज़मूदा **नारी-संजीवन** नामक दवा का आविष्कार किया जिसके द्वारा आज तक सहस्रों स्त्रियों को भयानक रोग के पंजे से छुड़ाया है। इस नारी-संजीवन के सेवन से तमाम बीमारियाँ दूर होकर स्त्रियाँ सुन्दर और तन्दुरुस्त हो जाती हैं और सन्तानें सुन्दर, बलवान्, दीर्घायु पैदा होती हैं। यदि आवश्यकता हो तो आज ही पत्र डालकर एक डिब्बा नारी-संजीवन का मँगाकर इसके अपूर्व गुणों का चमत्कार देखें। क़ीमत एक डिब्बा ३=); डाकख़र्च माफ़; पैकिंग ख़र्च अलग।

मँगाने का पता—

रूपविलास कम्पनी नं० ४२७ धनकुट्टी,

कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत से लोगों को व्यापार करने का अच्छा मौक़ा मिलने पर हाथ मल कर यह कहना पड़ता है . . .

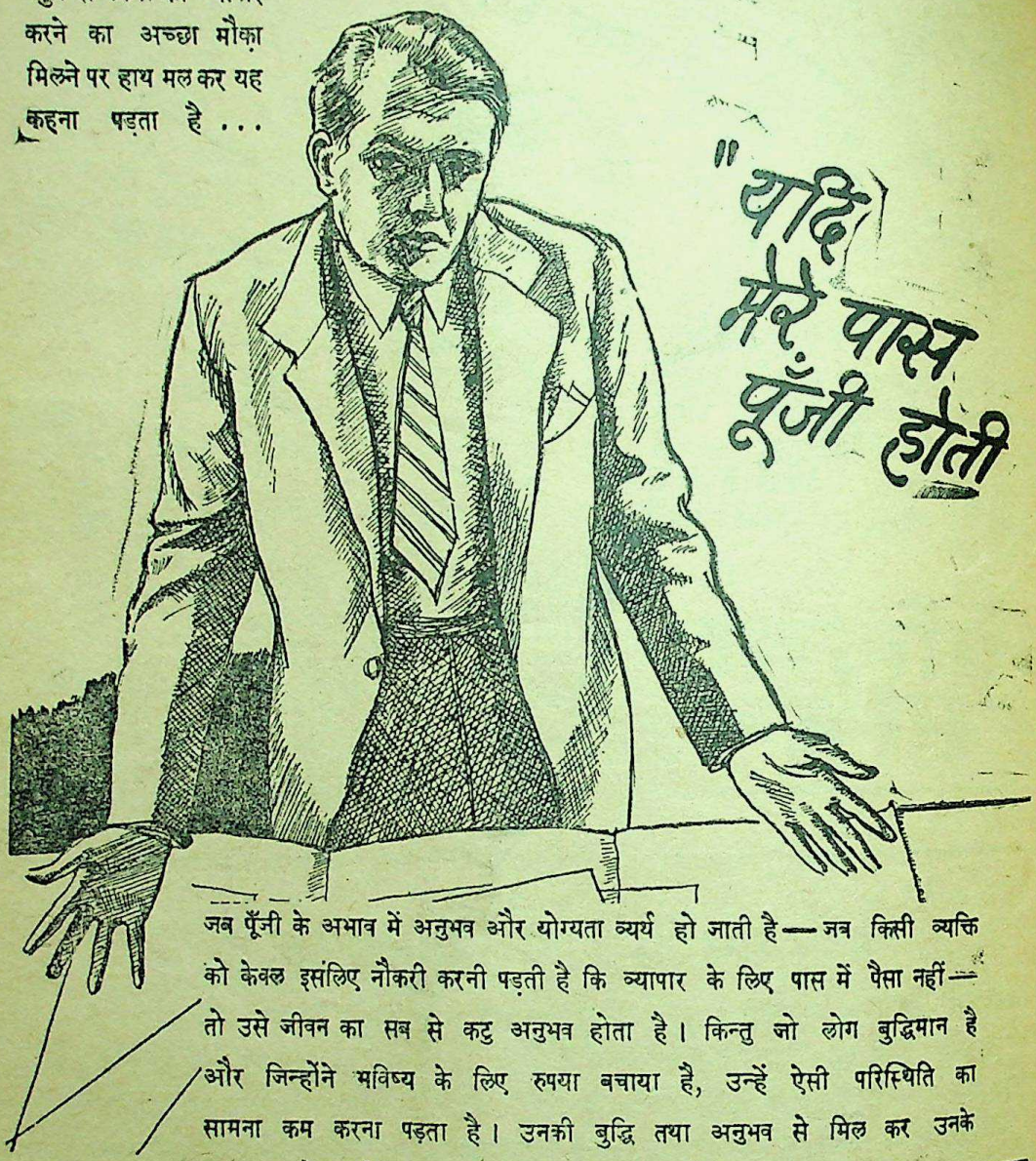

जब पूँजी के अभाव में अनुभव और योग्यता व्यर्थ हो जाती है—जब किसी व्यक्ति को केवल इसलिए नौकरी करनी पड़ती है कि व्यापार के लिए पास में पैसा नहीं—तो उसे जीवन का सब से कटु अनुभव होता है। किन्तु जो लोग बुद्धिमान है और जिन्होंने भविष्य के लिए रुपया बचाया है, उन्हें ऐसी परिस्थिति का सामना कम करना पड़ता है। उनकी बुद्धि तथा अनुभव से मिल कर उनके हाथ का पैसा सोने पर सुहागे का काम करता है।

नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेट ख़रीदिए।

छोटी छोटी रक़में बचाने वाले ५ रुपये का सर्टीफिकेट अथवा ४ आने, ८ आने या १ रुपये के स्टाम्प सरकार द्वारा अधिकृत किसी एजेण्ट अथवा सेविंग्स ब्यूरो या डाकख़ाने से ख़रीद सकते हैं।

★ १२ वर्ष में १० रुपये के १५ रुपये हो जाते हैं।
★ ४½ प्रति शत साधारण व्याज, इनकम टैक्स माफ़।
★ जमा हुये व्याज के सहित तीन साल बाद इन्हें भुनाया जा सकता है (५ रुपये के सर्टीफिकेट को १८ महीने बाद)।

क्या आज से बारह वर्ष बाद आपकी भी आर्थिक स्थिति ऐसी होगी कि ऐसे अवसरों से लाभ उठा सकें? बेशक हो सकती है, यदि आप अपनी बचत की रक़म को नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेटों में लगाने का आज ही निश्चय कर लें, जो सुरक्षित हैं और साथ ही जिनमें बहुत अच्छा व्याज भी मिलता है। अभी बुद्धिमानी से काम लीजिए और अपने भविष्य को सुरक्षित बनाइए।

AAA 129 HINDI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने सौन्दर्य को कायम रखिये

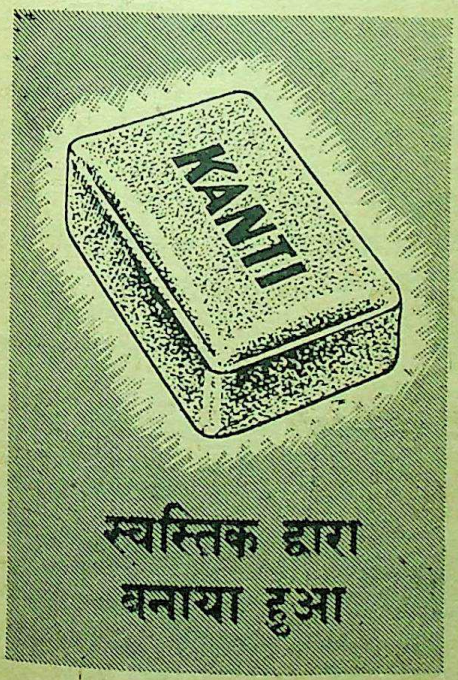

कान्ति साबुन

स्वस्तिक ओयल मिल्स, लिमिटेड, बम्बई, १५

NAS 19/5 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्माजी का चमत्कार

प्रेमबटी ने अपनी ख़ूबी से सारी दुनिया में तहलक़ा मचा दिया

कांग्रेस की राय

(प्रेमबटी वास्तव में एक अद्वितीय औषधि है, पहिले हमें इस औषधि पर इतना विश्वास न था, किन्तु जब हमने स्वयं परीक्षण किया तब हम इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि यह औषधि विज्ञापन में दिये गये तमाम रोगों की केवल एकमात्र औषधि है। हम आशा करते हैं कि भविष्य में यह कम्पनी इससे भी उत्तम औषधियों का निर्माण कर जनता को पहुँचायेगी।—कांग्रेस देहली)

भारत के योगियों ने वनों और पर्वतों की कन्दराओं में रहकर वह चमत्कार दिखलाये हैं जिससे बड़े-बड़े वैज्ञानिक चिकित्सक हैरत में आ गये हैं। आधुनिक चिकित्सकों को जब कोई रोग की औषधि से सफलता नहीं मिलती तब वह घोषित कर देते हैं। परन्तु महात्मा लोग जड़ी-बूटियों की सहायता से मुर्दे को भी जिला देने का दावा करते हैं। ध्यान से पढ़ो तथा अपने इष्ट मित्रों को सुनाओ। यह लेख जो लिखा गया है, कोई गप्प नहीं है बल्कि मेरे जीवन की घटनायें हैं जो आपके सम्मुख रखता हूँ। मेरा जन्म एक धनी परिवार में हुआ। अपने पिता का लाड़ला पुत्र होने के मैं धन और व्यसन में घिरा रहता था, लेकिन फिर भी मैं सुखी नहीं था। कुसङ्गतमें पड़कर मुझे जरियान और प्रमेह रोग हो पहले तो एक दो साल मैंने लोकलाज के कारण अपना भेद छिपाये रखा परन्तु रोग ने भयानक सूरत अख़्तियार कर ली, घबड़ा उठा, संसार में चारों ओर अँधेरा मालूम होने लगा तब मेरी आँखें खुलीं। इलाज शुरू किया गया, बड़े-बड़े हकीमों, वैद्यों के फ़ीस रूप में रुपये और क़ीमती दवाइयों के ख़रीदने में पानी की तरह रुपया बहाने लगा, फिर भी मैं निराश अब मैं घबरा उठा और चारों तरफ़ से अन्धकार दिखलाई देने लगा और सोचने लगा कि इस दुःखमय जीवन से मर जाना

पर यह बीस साल पहले की बात है। अब आज मैं ख़ुश हूँ। आज उस परमात्मा की कृपा से आरोग्य मेरे तीन स्वस्थ बच्चे भी हैं जो बिलकुल आरोग्य हैं।

हुआ क्या! मुझमें इतना परिवर्तन कैसे हो गया? यह जानकर आपको आश्चर्य होगा कि मैंने एक दवा जो दवा मैंने सेवन की, वह एक महान् त्यागी परोपकारी साधु की बनाई हुई थी, जो समय काटने के लिए गाँव से दूर ईंट के खेड़े पर रम रहे थे। यह मेरा सौभाग्य था कि और लोगों के साथ मैं भी दर्शनों के लिए जा पहुँचा। दैवी मेरे दुःखी जीवनके पिछले अध्याय उनके हृदय-पट पर खिंच गये और मेरी आँखों ने हृदय का सारा भेद अपने आप उस पुरुष पर प्रकट कर दिया। मेरी कच्ची उम्र पर महात्मा को दया आई और उन्होंने मुझे कुछ जड़ी-बूटियाँ एकत्र करने को दी। मैंने वैसा ही किया और तब उनके सम्मुख ही मुझे उनके आदेश और निजी देख-रेख में 'प्रेमबटी' तैयार करनी यद्यपि मुझसे ४० दिन लगातार 'प्रेमबटी' का सेवन करने को कहा गया था, तथापि केवल बीस दिन के सेवन से ही मुझे हो गया। मेरी कमज़ोरी और तमाम गुप्त बीमारियाँ जड़ से दूर हो गईं। पीले और उदास मुख पर लाली दौड़ने लगी, में उन्माद झूमने लगा और हृदय में जवानी का जोश उमड़ आया। महात्माजी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के साथ वादे को पूरा करने के लिए दुःखी जनों के निमित्त पिछले बीस साल से लगातार मैं इस प्रयोग को मुफ़्त बाँट रहा हूँ। पत्र-पत्रिकाओं में भी छप चुका है, मुझे हर्ष है कि इस अमृत-तुल्य प्रयोग ने सैकड़ों की प्राण-रक्षा की, हज़ारों को मौत के निकाला और लाखों का इससे भला हुआ। महात्मा-प्रदत्त 'प्रेमबटी' का नुस्ख़ा इस प्रकार है; नोट कर लें—

शुद्ध त्रिफला ५ तोला, त्रिकुट चूर्ण ५ तोला, शुद्ध सूर्यतापी शिलाजीत ५ तोला, शुद्ध बङ्ग भस्म ६ माशा, अफ़ग़ान केसर ३ माशा, असली अकरकरा ६ माशा, असली नेपाली कस्तूरी ३ रत्ती। इन सब औषधियों को कूट-छानकर डालकर ऊपर से शीतल चीनी का तेल २० बूँद, सन्दल तेल २० बूँद, बिरोजे का तेल २० बूँद एक-एक करके मिलाये। बाद ताज़ी ब्राह्मी बूटी के अर्क़ में १२ घण्टा घोंटकर झरबेरी बेर के बराबर गोलियाँ बनावें और छाया में सुखा लें। एक-एक सुबह-शाम पाव भर गाय के दूध में एक तोला शक्कर मिलाकर सेवन करें। इसकी प्रशंसा हम अपने ही मुँह से नहीं करते बड़े-बड़े वैद्यों, डाक्टरों, हकीमों, सेठ साहूकारों तथा रईसों, ज़मींदारों, सरकारी आफ़िसरों तक ने इसकी सराहना की है। श्रीजमुनादत्त शर्मा, झोंकर का कहना है कि यह बटी धातु का पतलापन, २० प्रकार के प्रमेह के लिए अक्सीर है।

'प्रेमबटी' में कोई हानिकारक चीज़ नहीं पड़ती और गुणकारी चीज़ें नुस्ख़े से ही प्रकट हैं। यह औषध वीर्य का बीसों प्रकार के प्रमेह, पेशाब के साथ चूने की तरह वीर्य का जाना, पाख़ाने के समय धातु का जाना, स्वप्नदोष, सुस्ती, कमज़ोरी, डाइब्टीज़, मधुमेह, सूज़ाक, जवानी में बुढ़ापे की-सी हालत हो जाना, असली ताक़त की कमी, स्मरण-शक्ति कमज़ोर पड़ जाना स्त्रियों के भी प्रदर-सम्बन्धी रोग दूर करके अत्यन्त ताक़त देती है और नस-नस में नवजीवन का सञ्चार करती है। भाइयों को जिन्हें फ़ुरसत नहीं मिलती या शुद्ध औषधि प्राप्त नहीं कर सकते यह प्रयोग स्वयं बनाकर दाम के दाम में व्यवस्था की है। ४० दिन के लिए पूरी ख़ुराक विधिवत् ८० गोलियों का मूल्य ५॥=) रु० और २० दिन के लिए ४ के दाम ३=) डाकख़र्च ॥।-)

पता—मन्त्री श्यामलालजी रईस, प्रेमबटी आफ़िस नं० (S. A.) धनकुट्टी, कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

१—पत्रकार से नाटककार - स्वर्गीय श्रीयुत हरिकृष्ण जौहर १
२—मसूरी-देहरादून से (कविता)—कुँवर आर्पी, एम० ए० ४
३—चितायें—कुमारी प्रभा पारीक, बी० ए० ... ५
४—कवि (कविता)—श्रीयुत उमेशचन्द्र 'मधुकर', बी० ए० ... ... १०
५—गर्वीला गुलाब—कुमारी प्रभा पारीक ... १०
६—रियासतें—उनकी आर्थिक समृद्धि और तत्सम्बन्धी समस्यायें—श्रीयुत राजमल संघी, बी० ए० ११
७—होली—कुमारी विपुलादेवी ... १४
८—रिक्शावाला (कविता)—प्रोफ़ेसर विद्याभास्कर 'अरुण' १७
९—व्यवधान (कविता)—श्रीयुत ब्रह्मानन्द त्रिपाठी १७
१०—वनस्थली—एक आदर्श महिला-विद्यापीठ—श्रीमती किरणमयी देवी १८
११—नियम (कविता)—पण्डित नारायणलाल कटरियार २१
१२—माता-पिता—श्रीयुत रामचन्द्र तिवारी ... २२
१३—सूरदास और 'साहित्य-लहरी'—श्रीयुत व्रजेश्वर वर्मा, एम० ए०, रिसर्च-स्कालर, प्रयाग-विश्वविद्यालय २६
१४—प्रशान्त की आखेट-भूमि—श्रीयुत नरोत्तमप्रसाद नागर ३
१५—गायक (कविता)—श्रीमती शकुन्तला सिरोटिया, बी० ए० ... ... ३
१६—स्वर्गीय लाला दूनीचन्द—श्रीयुत शिवकुमार विद्यालङ्कार ३
१७—सम्बोधन (कविता)—श्रीयुत आरसीप्रसाद सिंह ४
१८—निर्वासित पण्डित इलाचन्द्र जोशी ... ४
१९—सामयिक साहित्य ४
२०—सम्पादकीय नोट ४

चित्र-सूची

१—स्वर्गीय श्रीयुत हरिकृष्ण जौहर ...
२—वनस्थली—एक आदर्श महिला-विद्यापीठ-सम्बन्धी ३ चित्र १८-२
३—प्रशान्त की आखेट-भूमि-सम्बन्धी ८ चित्र ३०-३२, ३५-३
४—स्वर्गीय लाला दूनीचन्द ३

अब मैं अपने पति की प्रिय बन गई

रूप-विलास रजिस्टर्ड

जब मैं विवाह के अवसर पर अपने पति-गृह गई तब मेरे पतिदेव हमारे भद्दे तथा काले चेहरे को देखकर मुझसे घृणा करने लगे। मैंने अपनी सहेलियों की सलाह से **रूप विलास** का उबटन लगाना शुरू किया। कुछ ही दिनों बाद मेरा चेहरा गुलाब के फूल की भाँति दमकने लगा और आज मैं अपने पति की प्रिय बन गई। इसके लगाने से मुँहासा, झाँई, चेचक, काले-काले दाग़, फुंसी, ख़ुश्की, बदरौनक़ी, झुर्रियाँ वग़ैरह जल्द आराम होती हैं और थोड़े ही दिनों के लगाने से मलीन मुख चमकदार होकर चेहरे पर गुलाबी छटा दमकने लगती है। यदि आप अपना चेहरा ख़ूब-सूरत बनाना चाहते हैं तो २५ वर्ष का प्रचलित जगत्प्रसिद्ध रजिस्टर्ड **रूप-विलास** उबटन लगाइए। विवाह-शादियों पर वर-वधू का सौन्दर्य बढ़ाने के लिए यह बहुत ही उपयोगी साबित हुआ है और इसकी ख़ुशबू इतनी प्यारी है कि तबियत को मस्त करती है। क़ीमत एक डिब्बा २-) तीन डिब्बा ५॥) डाक ख़र्च माफ़, पैकिंग ख़र्च अलग।

रूप-विलास कम्पनी धनकुट्टी नं० ४२७ कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चण्डी

शाक्तधर्म की एकमात्र मासिक पत्रिका

इसमें प्रसिद्ध प्रसिद्ध तान्त्रिक विद्वानों के महत्त्वपूर्ण लेख प्रति मास प्रकाशित होते हैं। शाक्तधर्म के प्रेमियों को इसका ग्राहक बनकर लाभ उठाना चाहिए। वार्षिक मूल्य ३)। एक अङ्क का ।=)।

पता—चण्डी-कार्यालय, कटरा, इलाहाबाद

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है।

हमारे यहाँ की बनी क्रीमोला टाफ़ी
फ़्रूट ड्रॉप्स तथा
रेशमी मिठाइयों का स्वाद लीजिए।
सभी दूकानों में मिलती हैं।

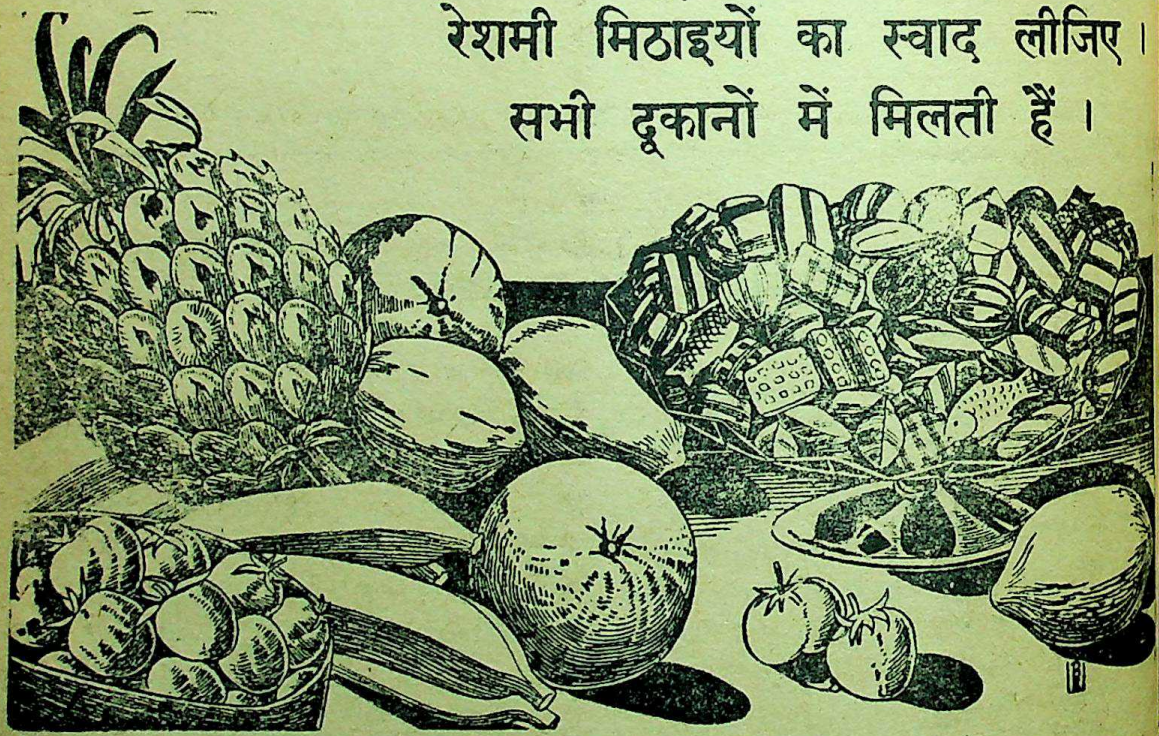

निर्माता—इण्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस,
इंडियन प्रेस, बिल्डिंग,
इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक—देवीदत्त शुक्ल : उमेशचन्द्र मिश्र

जुलाई १९४५ आषाढ़ २००२; भाग ४६, खण्ड २ संख्या १, पूर्ण संख्या ५४७

पत्रकार से नाटककार

स्वर्गीय श्रीयुत हरिकृष्ण जौहर

[हिन्दी के प्रख्यात पत्रकार और यशस्वी सम्पादक श्री हरिकृष्ण जौहर गत वर्ष स्वास्थ्य बिगड़ जाने पर 'श्रीवेंकटेश्वर समाचार' सम्पादन से अवकाश लेकर बनारस में अपने घर पर रहने लगे थे। उन्हीं दिनों उन्होंने ऐसी इच्छा प्रकट की थी कि वे अपने साहित्यिक अनुभवों के आधार पर 'सरस्वती' में एक लेखमाला लिखेंगे। प्रस्तुत लेख उसी लेखमाला का एक भाग है। भाग्य की बात है कि इस लेखमाला के पूर्ण होने से पहले ही उनकी अवस्था अधिक बिगड़ गई और फिर उनका अचानक स्वर्गवास हो गया। उनके इस अन्तिम लेख से 'सरस्वती' के पाठकों को तत्कालीन साहित्यिक प्रवृत्ति और 'पारसी रंगमंच' के सम्बन्ध में अनेक मनोरञ्जक बातें ज्ञात होंगी।—सम्पादक।]

घटना सन् १९१७ ई० की है। प्रथम योरपीय महायुद्ध समाप्त हुए कुछ ही महीने बीते थे। फ्रांस के वर्सेई नगर इस महायुद्ध का सन्धिपत्र लिखित और हस्ताक्षरित हो चुका था। वर्तमान द्वितीय महायुद्ध के बीज बोये जा चुके थे। उस समय के मित्रों में अँगरेज़, अमरीकन और फ्रांसीसी नहीं तीनों शक्तियों की कूटनीति इन विष-बीजों के चुनाव का कारण थी। सन्धि-नियमों द्वारा प्रबल पराक्रान्त जर्मनी की आत्मा और देह दोनों के कुचल दिये जाने का सारा आयोजन किया जा चुका था। वह निरस्त्र भी किया जा रहा था और उस पर हिमालय-परिमित सामरिक ऋणभार भी इस तरह रख दिया गया था, जिससे वह चिरकाल तक साँस ले न सके।

विजयिनी मित्र-शक्तियाँ विजयोल्लास से फूली न समाती थीं। हालैंड और फ्रांस के हाथों तो मानों सातवें आस्मान का स्वर्ग लग गया था। दोनों की विजय-हुङ्कार से समूचा धरातल हिल रहा था। जर्मनीपति कैसर को हालैंड से गिरफ़्तार कराकर न्यायालय के सम्मुख उपस्थित करने के दावे किये जा रहे थे। किसी-किसी अँगरेज़ राजनीतिक ने तो उनका अपराध प्रमाणित होने पर उन्हें फाँसी लटका देने तक का परामर्श प्रदान किया था। सर्वत्र जर्मन और उनके मित्र ध्वस्त-विध्वस्त किये जा रहे थे। स्वयं जर्मनी का अङ्ग-भङ्ग किया जा रहा था। उससे भी अधिक उसका रणमित्र तुर्की नष्ट किया जा रहा था। बेचारे का भूमध्य सागर से लेकर मिस्र तक और फ़ारस की खाड़ी के उस पार इराक़ से लेकर समूचे अरब में फैला हुआ विशाल विराट् साम्राज्य टुकड़े-टुकड़े किया जा रहा था। जर्मनी का साथ देने का पाप करने के प्रायश्चित्त स्वरूप तुर्क साम्राज्य इस तरह मिटाया जा रहा था, जिस तरह लिखित अशुद्ध शब्द काग़ज़ से मिटाया जाता है। जर्मनी-मित्र बलगारिया पङ्गु बना दिया गया था। इसके विपरीत विजयी मित्रों का साथ देनेवाली छोटी-छोटी शक्तियाँ पोलैंड, रूमानिया, सर्बिया आदि एक-एक बड़े स्वतन्त्र राज्य के रूप में परिणत की जा रही थीं। ऐसे समय अँगरेज़ वाहिनियों के साथ अपने धन और जन का [illegible] भारतवर्ष अँगरेज़ों द्वारा [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रुत स्वराज्य-प्राप्ति की प्रत्याशा से उनके वीर दर्प से रक्ताभ
न्द्रानन की ओर देख रहा था।

उन दिनों स्वराज्य-प्राप्ति के बारे में भारतीय राजनीतिकों के
ो प्रत्यक्ष मत थे। श्री गांधीजी और उनके अनुयायियों का तो
ह मत था, कि इस महायुद्ध में जिस भारतवर्ष ने धन और जन
ा इतना बड़ा यज्ञ किया है, उस भारतवर्ष को अँगरेज़ अपनी
हायुद्धकालीन वक्तृताओं और प्रतिश्रुतियों के अनुसार अपने
जयानन्द का भागी अवश्य बनायेंगे। किन्तु एक दूसरे दल
ा विश्वास कुछ और ही था। वह यह कहता था, कि जिस
ारत के प्रताप से अँगरेज़ों ने अपनी और अपने देश की रक्षा

स्वर्गीय श्रीयुत हरिकृष्ण जौहर

ी है, उस भारत का राजत्व त्याग वे स्वप्न में भी न करेंगे।
सका कहना था—"अँगरेज़ भारत में तीर्थ-यात्रा करने नहीं
ाये हैं, कि देह-प्रक्षालन और विग्रह-दर्शन के उपरान्त इस देश
'देहि-देहि' करनेवाले भिक्षुकों की झोली में भारतीय स्वराज्य
ा दान देकर ठण्डे-ठण्डे अपने घर विलायत चले जायेंगे।"
न पंक्तियों का लेखक भी इसी दूसरी विचारधारा का अनुयायी
ा। उसे भी विजयदर्प से दर्पित अँगरेज़ों के हाथों से भारत को
राज्य मिलने के बदले कुछ और ही मिलने की आशङ्का हो

रही थी। उसके हृदय की यह आशङ्का इतनी प्रबल
उसने अपने सप्तदशवर्षीय 'हिन्दी-बङ्गवासी' के प्रधान
कत्व का कार्य्य त्याग कर जीविकोपार्जन के लिए किसी
में प्रविष्ट होने का निश्चय कर लिया। एक समय
जब उसने बड़े प्रेम और लगन के साथ अतीव श्रम-साध्य
द्वारा पत्र-सम्पादन-कार्य्य में प्रवेश किया था; किन्तु
उसके सम्मुख ऐसा समय उपस्थित था, जिसमें
लिखना तो दूर रहा, पढ़ना भी उसे यन्त्रणाप्रद
था। उसे अपने देश की तिमिराच्छन्न भावी दशा
दे रही थी।

किन्तु उपस्थित कार्य्य त्याग देने पर भविष्यत् की
के लिए कौन-सा सुपथ अवलम्बन किया जा सकता था!
से लेकर उस अधेड़ अवस्था तक पुस्तक-प्रणयन और
करते-करते मस्तिष्क और हृदय दोनों सम्पूर्ण एक विशेष
से ग्रस्त हो चुके थे। अपने पाठकों को स्वरचित संसार
करानेवाला और सारे संसार के न्याय-अन्याय और
मीमांसक लेखक अपने अन्न-संस्थान के लिए करे तो
गूदड़ी पर बैठकर मृण्मय पात्रों में भोजन करता हुआ
संसार के सम्मुख दैन्य कैसे प्रकाशित करे? ऐसा होने पर
संसार उलट-पलट जायगा। ऐसी ही मिथ्या और
विडम्बनायें माथे में समाकर मेरे कार्य्य-परिवर्त्तन में
उपस्थित कर रही थीं। बड़ी चिन्ता में रहा करता था।
पिपासा और निद्रा तक भुलाकर भावी जीवन के प्रकाश
क्षीण से क्षीण ज्योति अनुसन्धान करने के प्रयास में
तन्मय रहा करता था। अन्त में इस श्रम का सुफल
हुआ। प्रभु ने भावी जीविका के आलोक की एक
ज्योति दिखाई।

यह बात कुछ समझाकर कहने की है। गत
ई० में प्रभु ने कलकत्ते में इन पंक्तियों के लेखक द्वारा
नागरीप्रचारिणी सभा' स्थापित कराई थी। सच तो
सभा की स्थापना अनायास और हँसी-हँसी में हो गई।
१९६६ की कार्त्तिकी पूर्णिमा को, ११९ हेरिसन रोड
निहालसिंह महाशय की कोठरी में स्वयं सर्दारजी,
देवकीनन्दन खत्री और इस दास ने थोड़े से मित्रों के
एक सभा की और यथानियम 'कलकत्ता नागरीप्रचारिणी
प्रतिष्ठा हुई। सर्दारजी इन दिनों कलकत्ते में ही
और हवड़ा-सलकिया की 'फ़ीता मिल' के मालिक हैं
सभा का समूचा विवरण देना अप्रासङ्गिक होगा; ऐसी
इतना ही कहना यथेष्ट है कि यह कई वर्षों तक
इसके कोई सात सौ सदस्य हुए और इसने कलकत्ते
हिन्दी-प्रचार में ऐसा भाग नहीं लिया, जो तुच्छ समझा
इस सभा के हिन्दी-प्रचार की नियमावली में एक नियम
के नाटकों का
सामयिक रङ्ग-मञ्च पर हिन्दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् १९१२ ई० में इस नियम के आधार पर थोड़ा-सा काम भी किया जा चुका था। इस सभा के माननीय मन्त्री कलकत्ते के सुप्रसिद्ध रईस, १७९ सूतापट्टी के श्रीयुक्त बाबू गोपीमोहनदासजी खत्री की प्रेरणा से इन पंक्तियों का लेखक, कलकत्ता ५ धर्मतल्ले की एलफ़िन्सटन थियेट्रिकल कम्पनी के सञ्चालक श्रीमान् सेठ रुस्तमजी को इस सभा का सदस्य बना और समय उपस्थित होने पर हिन्दी नाटकों के अभिनीत होने का उनका वचन प्राप्त कर चुका था। फलतः व्यावसायिक रङ्गमञ्च द्वारा हिन्दी भाषा-प्रचार की स्पृहा उसी समय से इस अकिञ्चन हिन्दी-सेवक के हृदय में जाग रही थी। दैवात् प्रथम महायुद्ध समाप्त होने के समय इस स्पृहा की अखण्ड अग्नि में थोड़ी-सी आहुति भी आ पड़ी। वह इस तरह, कि सन् १९१७ ई० के अन्तिम समय में मेरे परम दयालु बाल्यमित्र भारत-प्रसिद्ध नाटककार आग़ा हश्र साहब अपनी 'दी इंडियन शेक्सपियर थियेट्रिकल कम्पनी' लेकर विदेश से कलकत्ते आये। वहाँ के हेरिसन रोड के एल्फ़्रेड थियेटर में उनकी कम्पनी के अभिनय होने लगे—'ख़ुदी और ख़ुदा', 'यहूदी की लड़की' इत्यादि। एक रविवार के तीसरे पहर मैं हेरिसन रोड से जा रहा था; ऐसे समय आग़ा हश्र साहब एल्फ़्रेड थियेटर के द्वार से निकलकर मेरे सहाय हो लिये। उन्होंने मुझसे किसी एकान्त स्थान में चलने और बैठने की आकांक्षा प्रकट की। मैं उन्हें लेकर अपने अन्यतम बाल्य मित्र सर्दार निहालसिंह की १२५, हेरिसन रोड की 'सिंह-सरकार-कम्पनी' में चला गया। रविवार होने के कारण कम्पनी के कार्यालय में एकान्त भी था और सुखपूर्वक बैठकर काम करने की सुविधा भी थी। मित्रवर सर्दारजी ने हम लोगों का सप्रेम स्वागत किया। वहाँ बैठकर आग़ा साहब अपने लिखे हुए 'सूरदास या बिल्वमङ्गल' नाटक के उर्दू-फ़ारसी कठिन शब्दों को सरल हिन्दी कराने लगे। रात ग्यारह बजने का समय समीप आया; फिर भी इस नाटक के तीन अङ्कों में दो ही अङ्कों का परिवर्तित संशोधन हो सका। बाक़ी एक अङ्क का संशोधन रह गया। आग़ा साहब तो निशाचरी के अभ्यस्त थे; किन्तु मैं और सर्दारजी दोनों ही निद्राभिभूत हुए। हम तीनों की गोष्ठी समाप्त हुई। इस तरह मैंने अपने जीवन में पहले-पहल एक सफल नाटककार के नाटक से सान्निध्य और परिचय प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त किया।

इसके उपरान्त ही मेरी नाटकीय स्पृहा की अग्नि को और एक आहुति मिली। यह पहली से भी अधिक प्रबल थी। 'सूरदास या बिल्वमङ्गल' अभिनीत होने और उसमें सफलता प्राप्त करने के उपरान्त जब उस नाटक की आमदनी क्षीण होने लगी, तब आग़ा साहब की 'इंडियन शेक्सपियर थियेट्रिकल कम्पनी' को यथासाध्य शीघ्र कोई नया नाटक अभिनीत करने की आवश्यकता प्रतीत हुई। आग़ा साहब ने उस नये नाटक के लिखने का भार इन पंक्तियों के लेखक को अर्पित किया। एक दिन वे मेरे निवासस्थान ६४, हेरिसन रोड में पधारे और वह मुझे 'वन-कन्या' नामक एक गुजराती नाटक हिन्दी में अनुवाद करने के लिए दे गये। आठ दिनों की अवधि स्थिर हुई। आग़ा साहब 'वन-कन्या' का अनुवाद मात्र चाहते थे, किन्तु इन पंक्तियों के लेखक ने तन्मय होकर उसे गद्य-पद्य समन्वित व्यावसायिक नाटक का रूप देना आरम्भ किया। मन के प्रबल उत्साह के फल से आठ ही दिनों में वह नाटक तैयार हुआ और आग़ा साहब को दे दिया गया। आग़ा साहब उसे देखकर बहुत प्रसन्न हुए और रचयिता को पुरस्कारस्वरूप अर्थ-साहाय्य देने लगे। किन्तु उसके लेखक ने मित्र-सेवा बेचने से सम्पूर्ण असम्मति प्रकट की। इस घटना के कोई डेढ़ मास के उपरान्त तोरण-वन्दनादि से सुसज्जित होकर 'इंडियन शेक्सपियर थियेट्रिकल कम्पनी' ने 'देवकन्या' नामक एक नया नाटक अभिनीत करने की विज्ञप्ति निकाली। उसे देखकर मुझे अपने लिखे हुए उसी 'वन-कन्या' नाटक का ख़याल आया। मैंने एक पत्र द्वारा आग़ा साहब से पूछा। उन्होंने अपने अतीव संक्षिप्त उत्तर में केवल इतना ही लिखा, कि किसी दिन आकर यह नाटक तुम स्वयं देखो और अपनी शङ्का का निवारण करो। दूसरे ही सप्ताह रविवार को मैंने एल्फ़्रेड रङ्गमञ्च पर वह नाटक देखा और मुझे यह देखकर परमानन्द और अकथनीय सन्तोष हुआ कि सिवा पाँच सीन कामिक के अवशिष्ट समस्त नाटक वही है, जिसे मैंने लिखकर आग़ा साहब को दिया था।

यह देखकर मेरी आँखें खुल गईं। जिस क्षेत्र में पदार्पण करने में मैं अपने को सर्वथा अयोग्य और असमर्थ समझता था, उस क्षेत्र में अपने प्राथमिक यत्न की इतनी सफलता देखकर मेरे हृदय और माथे में आनन्दपूर्ण आशाओं का तूफ़ान उमड़ने लगा। मेरे मन में आया कि सम्पादकीय कार्य की अपेक्षा नाटक-रचना-कार्य अधिक आर्थिक लाभप्रद भी है और सुखदायक भी। ऐसी दशा में क्या ही अच्छा हो, यदि मैं पत्रकार से नाटककार हो जाऊँ। इसी घटना के उपरान्त इस लेख के आरम्भिक पंक्तियों में लिखी हुई कार्य-परिवर्त्तन की समस्या मेरे सम्मुखीन हुई थी। प्रथम योरपीय महायुद्ध समाप्त हुआ था और पूर्वोक्त विविध कारणवश मेरे मन में पत्र-सम्पादन-कार्य की ओर से घोर विरक्ति हो गई थी। इसका कारण भी गौण रूप से मैं ऊपर ही लिख आया हूँ। मैं जीविका का कोई नया पथ अन्वेषण करने लगा। उस समय मेरे हृदय में वही पूर्व निर्धारित जीवनोपाय प्रकाश बनकर प्रकट हुआ था। फल यह हुआ कि मैंने पत्रकार से नाटककार बनने का ही सङ्कल्प कर लिया। सोमवार को 'हिन्दी-बङ्गवासी' का कार्य-भार कुछ लघु रहता था; क्योंकि शनिवार को उसका आर्डर हो जाता था। इसलिए सोमवार को ही मैंने अपने इस यत्न के आरम्भ करने का दिन बना लिया। उन्हीं दिनों एक करोड़ मूल धन से कलकत्ते में 'मदन थियेटर्स लिमिटेड' की स्थापना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ई थी। दूसरे ही सोमवार के अपराह्न को मैं 'मदन थियेटर्स लिमिटेड' के सञ्चालक श्रीमान् रुस्तमजी साहब की सेवा में हुँचा। ये वही सज्जन थे, जिन्हें सन् १९११ ई० में मैं नागरीप्रचारिणी सभा' का सदस्य बना चुका था। उनसे उनके व्यावसायिक रङ्गमञ्च पर हिन्दी नाटक खेलने का वचन भी ले चुका था। तब से अब तक उनसे मैं मिल न सका था मेरे बदले सभा के अन्यान्य सभासदगण ही उनसे मिला-जुला करते थे। कोई ६ वर्ष के उपरान्त यह पहले-पहल फिर उनसे साक्षात् हुआ। पहली दृष्टि में मैं उन्हें और वे मुझे पहचान गये। फिर भी, हम दोनों ने अपने पूर्व-परिचय के सम्बन्ध में एक शब्द भी न कहा। हाँ, यह चेतावनी मैंने प्रथम साक्षात् ही दे दी कि मैं उर्दू के नाटक नहीं. आदर्श चरित्रों पर हिन्दी नाटक लिखने के लिए आपकी सेवा में आया हूँ। उन्होंने भी अतीव अर्थपूर्ण मुस्कुराहट के साथ मेरी यह सूचना स्वीकार कर ली।

रुस्तमजी साहब की इस पहली भेंट में हम दोनों ने दो अजनबियों की तरह बातें कीं। मैंने उनसे अँगरेज़ी में बातें आरम्भ कीं और इसके उपरान्त भी इसी भाषा में बातें करता था। मेरी बातों के आरम्भ का दर्शनीय सिलसिला इस तरह था—

"क्या आपको अपनी थियेट्रिकल कम्पनी के लिए किसी नाटककार की आवश्यकता है?"

रुस्तमजी साहब ने मुस्कुराकर पूछा—"आप नाटककार हैं?"

"मैं मानसिक नाटककार अवश्य हूँ; किन्तु कार्यतः नाटक-रचना करने में आपका सहारा लेने आया हूँ।"

"क्या आपने कोई नाटक लिखा है?"

"हाँ और नहीं; दोनों।"

"इसका क्या अर्थ?"

मैंने आगा हश्र के लिए लिखे नाटक का विचार करते हुए उत्तर दिया—"मैं आपसे यह न कहा चाहता था कि मेरा लिखा हुआ नाटक किसी दूसरे नाटककार के नाम से प्रकाशित किया जा चुका है। ऐसी दशा में मैं उस नाटक का न नाटककार भी नहीं और एक आरम्भिक नाटक लिखकर सफलता भी प्राप्त कर चुका हूँ।"

सेठ रुस्तमजी साहब के बहुत ज़िद करने पर भी आगा साहब के लिए लिखे जानेवाले नाटक का कोई हाल न कहा। इसके बदले मैंने उनसे विनय की—"किन्तु आप मेरा लिखा हुआ नाटक देखने का इतना आग्रह क्यों प्रकट करते हैं? सम्भव है कि मैं किसी अच्छे नाटककार के सीन को घुमा फिराकर अपने लिखे हुए नाटक के नाम से आपके सम्मुख उपस्थित कर दूँ। यदि सचमुच ही आपको नाटक की आवश्यकता हो, तो आप मुझे विषय दीजिए। उस पर कुछ सीन लिखकर आपके सम्मुख उपस्थित करूँ। उसे पढ़कर आप स्वयं समझ लेंगे कि मैं यह कार्य्य कर सकता हूँ या नहीं।"

इस पर सेठ रुस्तमजी साहब ने मुझे फिर आने को और विषय पर बातें करने के लिए आमन्त्रित किया और मैं भी उनसे अगले सोमवार को उसी समय आने का वादा कर अपने लौट आया। इसके बाद तो प्रत्येक सोमवार के अपराह्न उनके पास जाने लगा और वे बिना कोई निष्पत्ति दिये हुए सोमवार को आने के लिए आहूत करते गये। स्वाभाविक से देखने में मेरे प्रति उनका यह व्यवहार न्यूनाधिक विरक्त था; किन्तु क्षमता और ऐश्वर्य के सिंहासन पर बैठे हुए श्रीमान् सेठ रुस्तमजी साहब जिस प्रेमपूर्ण स्वर और आकृति से समयाभाव के कारण मुझे अगले सोमवार को बुलाया करते थे, उससे उनका बारम्बार का बुलावा मुझे ज़रा भी खटक कर प्रतीत न हुआ। मैं प्रति सोमवार को अतीव आनन्द और उत्साह के साथ उनका सान्निध्य प्राप्त किया करता था। उनके पास का कुछ ही देर का अवस्थान मुझे उनके प्रति अधिक आकर्षित करता गया। वह उनकी करुणा, वह उनकी उदारता, वह उनकी प्रतिभा, वह उनका सौजन्य मुझे मर्त्य के मनुष्य नहीं, स्वर्ग के देवताओं की याद दिलाया करते थे।

(क्रमशः)

मसूरी-देहरादून से

कुँवर आर्पी, एम० ए०

निशा। खिड़की से बाहर, उत्तर में कुछ क्षिति से उठकर कुबेर की अलका के शत-शत दीपों से जगमग अम्बर! रम्भा से भी जो सुन्दर उन परियों का है अथवा घर देखने उसी कोण में तारे आते सिमट-सिमटकर!

होकर क्रीड़ा में अवचेतन, खोकर सुध-बुध, हो कुछ उन्मत्त या परियों की राजकुमारी भूल गई है हीरक-कक्ष जिसके कण-कण से थल ज्योतित, जिसकी झिलमिल से उड़ुगण जिसकी ही निधि से कुबेर की अलका की सब सम्पति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिताएं

कुमारी प्रभा पारीक, बी० ए०

कभी-कभी जीवन की साधारण-सी घटना मुझे जीवन से दूर ले जाती। ऐसे पलों में मैं अपने अस्तित्व को जीवन से भिन्न देखने लगती। विचारों का घना कुहरा मस्तिष्क को ढक लेता। प्रकृति की पावन रश्मियाँ ही मेरे मस्तिष्क के नीहार को चीरकर विचारों के नव प्रभात भर देतीं। ऐसे ही अवसर पर मैं एक बार सन्ध्या को सरिता-तट पर जा पहुँची। न जाने क्यों—या तो मेरे मस्तिष्क का भ्रम था या मेरे जीवन में होनेवाले दुःखान्त नाटक की भूमिका—आस होने पर भी समस्त सरिता-तट पर दुःख की मलिन चादर-सी बिछी थी। वृक्षों से घिरे क्षितिज से घना धुआँ-सा उठ रहा था—दूर पड़ी अस्थियों पर चीलें 'चिल्ल' 'चिल्ल' कर पंख फड़फड़ा रही थीं। मेरा हृदय एक अद्भुत भय से काँप उठा—क्या सारा विश्व इस विशाल चिता में भस्म हो जाने को है? मेरी ही किसी प्रिय वस्तु को भस्मसात् करने का सङ्केत है? इसी क्षण मुझे लगा—नहीं, यह मेरी भावुकता है अथवा मेरे मस्तिष्क का विकार। एक गहरी व्यथा ने अनायास ही मेरी दृष्टि सरिता की ओर झुका दी। सरिता की प्रत्येक तरङ्ग रूपों से अङ्कित हो जाती—कुछ देर पश्चात् 'छल्ल' से नीचे से उबल उठता और समस्त रङ्गीन तरङ्ग को मिटा देता। मेरा मन पुनः विनाशमयी सत्ता की ओर आकर्षित हो गया। आशायें कोमल तरङ्गें बन उठती हैं किन्तु मिट ही तो जाती हैं। फिर भी हम अपनी मनोकामनायें ले सरिता के तट पर आते हैं! सरिता प्रत्येक सन्ध्या को अपने वक्ष पर यही भाव अंकित कर देती है। हम फिर भी नहीं समझ पाते। इच्छायें तो मिट जाने को ही हैं, स्फुलिङ्ग किस आशामयी प्रसन्नता का अनुभव करते हुए पग बढ़ाते हैं; परन्तु उठकर क्षार ही हो जाते हैं। पीछे किसी के पैरों की आहट हुई। मेरी विचार-शृङ्खला टूट गई। मैंने मुड़कर देखा, रूपो ठिठकी-सी खड़ी थी। मैंने उससे आँखें फेर लीं। रूपो ने कुछ खिसियाये से स्वर में कहा—"बीबीजी, आज आप अकेली यहाँ कैसे आ गईं?" मैंने व्यंग्य के स्वर में कहा—"रूपो! मुझे तुम्हारी भाँति साथी की आवश्यकता नहीं आता।" रूपो चकित-सी मेरी ओर देखती रह गई। बचपन में माँ की दृष्टि से बचाकर रूपो को कितने ही उपहार दिये थे। परन्तु उसकी समझ में यह न आया कि यह उपहार इस हृदय से क्यों निकला? मैंने अपने व्यंग्य का कारण जानने के लिए रूपो के मुख पर दृष्टि जमा दी। रूपो ने व्यंग्य की कुछ चिन्ता न की। अपने नेत्रों में तिरस्कार भर-कर मेरी ओर देखा और फिर अपने बच्चे को वक्ष से चिपटा कर वहीं और नीचे ही बैठ गई। मेरा मन और भी घृणा से भर गया। "कैसी निर्लज्ज है?" बच्चे के तन पर केवल एक मैला मलमल का कुर्ता था। वह रह-रहकर बुरी तरह खाँस रहा था। श्वास बड़ी तीव्र गति से घर्र-घर्र शब्द करके बोल रहा था। प्रत्येक श्वास के साथ पसलियाँ उठकर शिशु के कङ्काल का चित्र उसकी माँ के सम्मुख उपस्थित कर रही थीं। उस बच्चे के लिए मेरा हृदय करुणा-विगलित हो उठा। मैंने कह ही दिया—"रूपो, तुम इस शीत में बच्चे को क्यों ले आई हो? इसको निमोनिया हो जाने का डर है।" इस बार रूपो के नेत्रों के नीचे चिन्ता की रेखा अङ्कित हो गई। वह कहने लगी—"क्या करूँ बीबीजी? घर में किस पर छोड़ आऊँ?" मैंने कहा—"तो तुम्हें यहाँ आने की आवश्यकता ही क्या थी?" रूपो कहने लगी—"वे उस पार बैलों के लिए बोझा लेने गये हैं। पहाड़ पर वर्षा होने से नदी में जल बढ़ गया है। नदी में पैर-कर आयेंगे तो बोझा पकड़ लूँगी।" मैंने कहा—"ओह रूपो! तुम अपनी जवानी की उमङ्ग में इस बच्चे का मूल्य भी भूल गईं? अपने नये पति के सामने तुम इस बच्चे के प्राणों को कुछ नहीं समझती। यह तुम्हारी ही वासनाओं का अंकुर है रूपो! इसको यों ही कुचले डाल रही हो।" मेरा स्वर और भी उत्तेजित हो गया—"रूपो! तुम्हारे यौवन की भूख इसे भी खा लेगी।" कहते-कहते मेरे नेत्रों के सम्मुख फिर शिशु का कङ्काल उपस्थित हुआ। मुझे फिर लगा, चिता जल रही है और उसमें रूपो के शिशु को रक्खा जा रहा है। मैं सिहर उठी। मेरी दृष्टि फिर शिशु की ओर गई। उसने सर्दी में ठिठुरकर पैर सिकोड़ लिये थे। ईश्वर के न्यायी होने की दुहाई दी जाती है—उस निरीह शिशु ने, जिसने पाप और पुण्य की व्याख्या भी नहीं जानी, क्या दोष किया था जो वह तड़प-तड़पकर अपने प्रत्येक श्वास की आहुति देकर मुक्ति-कामना कर रहा था। मैंने अपना गर्म शाल उतारकर पुल-ओवर उतारते हुए कहा—"लो रूपो, तुम उसको इसमें लपेट लो।" रूपो की दृष्टि मेरे पुल-ओवर पर जम गई परन्तु फिर भी उसने संयम से कहा—"नहीं बीबीजी! आप क्यों उतार रही हैं! हम लोगों की तो शीत-घाम में काम करने की आदत पड़ गई है। मेरा दुपट्टा गाढ़े का है। इसी में लपेटे लेती हूँ।" मैं जान तो गई थी कि इस भिन्न गाढ़े के दुपट्टे में शीत की वायु से शिशु का सुकोमल शरीर न बच सकेगा किन्तु फिर भी मैं अपने पुल-ओवर में पड़ी हुई सुन्दर बुनाई और कलात्मक रङ्ग का लोभ न त्याग सकी। देते-देते भी हाथ सिकोड़ लिया। इसके पश्चात् रूपो चुप हो गई। न जाने किन विचारों में तल्लीन हो गई। मैं भी अपने मन में जीवन की गति पर विचारने लगी। परन्तु हम दोनों ही को वह नीरवता कष्टदायी प्रतीत होने लगी। इसको भङ्ग करने के विचार से मैंने कहा—"रूपो, तुमने इस बच्चे का क्या नाम रक्खा है?" शिशु का प्रसङ्ग उसके मन को प्रसन्न करने में समर्थ हुआ। उसके सूखे ओठों पर पड़ी रेखा विचलित हो गई। उसने कहा—"इसके दादा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पिता) ने इसका नाम सलोनी रक्खा था।" पुनः उसने अपने मातृ-हृदय की सारी ममता भरकर शिशु की ओर मुँह झुका दिया और बड़े 'स्नेह से 'सलोनी' 'सलोनी' कहकर पुकारा। सलोनी ने बड़े प्रयास से अपनी दुर्बल पलकों को आँखों से उठाकर अपनी माँ की ओर देखा। रूपो ने उसके कपोलों को चूम लिया। सलोनी ने अपनी दोनों मुट्ठियाँ हिलाईं और फिर आँखें मूँद लीं। उन आँखों में मृत्यु का लास था, यह मुझसे न छिप सका। बचपन से ही श्मशान में घूमने और घर में अनेक शवों को देखने के कारण मैं मृत्यु के चरण पहचानने में कभी भूल न करती थी। इस बार मुझे रूपो पर सचमुच ही दया आ गई—वास्तव में यह दया उस पर नहीं, उसके मातृ-हृदय के लिए थी। मैंने कुछ विनम्र होकर कहा—"रूपो! तुम सदा ही मुझसे कहा करती थीं कि तुम अपने पति को इतना प्रेम करती हो कि अपने जीवन की प्यारी से प्यारी वस्तु भी उसके लिए हँसते-हँसते त्याग दोगी—उसकी मृत्यु को छः मास भी न बीतने दिये और तुमने अपना हृदय दूसरे को सौंप दिया। क्या यह सब पाखण्ड था?"

रूपो का मुख मानो पीला पड़ गया। बड़ी कठिनाई से उसके मुख से निकला—"बीबीजी, अभी तुम्हारा ब्याह नहीं हुआ है। किसी दिन माँ बनोगी तो माँ की ममता को जानोगी।" मैंने बड़े तीखे स्वर में उत्तर दिया—"ओह! तो तुमने अपने लिए नया पति खोजकर सलोनी के लिए ममता दिखाई है।"

उसने उसी दृढ़ता से कहा—"हाँ बीबीजी, इसी सलोनी के लिए।"

मैंने कुछ क्रोध से कहा—"रूपो, तुम मुझे न छल सकोगी। तुम अपने सुख के लिए अपने पति की इस (सलोनी) स्मृति को भी मिटा देना चाहती हो। सारे कण्टक दूर कर तुम सुख भोगना चाहती हो।"

रूपो ने कहा—"हाय बीबीजी, इस छाती पर पत्थर रखकर तुम्हें कैसे समझाऊँ कि यह सब सलोनी के लिए ही किया है। उनके मरने के बाद मेरा कोई भी नामलेवा या पानीदेवा न रह गया था। जमीन-जायदाद तो छोड़ ही न मरे थे कि उससे दिन काट लेती। जो कुछ पास-पल्ले था वह सब उनकी बीमारी में ही ठिकाने लग गया था। सलोनी जब तीन महीने की थी, इसे छोड़कर मेहनत-मज़दूरी करने भी कहीं न जा सकती थी। ऐसे 'समे' में ये (दूसरा पति) कभी सेर दो सेर नाज डाल जाते थे। उसी से गुज़र कर लेती थी। महीने दो महीने पीछे मैं खुद भी मज़दूरी करने जाने लगी थी। एक दिन शाम को मुखिया की ज्वार पीसने चली गई थी। सलोनी को खाट पर लिटा गई थी। जब लौटी तो देखा खाट रीती पड़ी थी। मैं सन्न हो गई। पगली-सी सलोनी को ढूँढ़ती फिरूँ। मुझे इसके रोने की आवाज़ सुनाई दी। मैं उधर ही भागती गई। मैंने देखा, पिलखन के पेड़ के नीचे गोदड़ सलोनी को ज़मीन पर लिये उसके तलवों पर दाँत जमाये था। सलोनी रो-रो आसमान एक किये दे रही थी। मुझे देखकर गोदड़ सलोनी के पैर से लहू की धारा-सी फूट निकली। बिलखना देख मेरी छाती फटी जा रही थी। इसके पैर में अब भी घाव है।"

मैंने देखा, सलोनी के उस नन्हें सुकुमार तलवे में परिस्थिति को कुचलकर चलती हुई जीवन-गति को भी न आने पाई थी—पीब भरा था। हिलाने-डुलाने से कुछ बूँदें बाहर झलकने लगीं। नन्हीं सलोनी तड़प मुझसे उस शिशु की तड़पन न देखी जा रही थी। मैंने "रूपो, तुम इसे ढक लो।" पर्वत के हृदय से एक बार निकलता है तो उसकी धारा का प्रवाह नियत स्थान पर पहले नहीं रुकता। यही दशा रूपो की थी। उसकी बहती ही जाती थी—"उस दिन से बीबीजी! मैंने अच्छा समझा पर सलोनी को छोड़कर न गई। भी शीत लग गया। उस दिन से अब तक अच्छी न नित ही अपनी झोपड़ी में बैठी परमात्मा की दया लगाये रहती थी। मुझे भूख की ज्वाला सताती पर चिन्ता न थी। चिन्ता थी सलोनी की; यदि कुछ मिलता तो सलोनी के लिए दूध कहाँ से उतरता। ऐसे पूछ जाते,—'रूपो, सवेरे से तेरे मुँह में दाना भी गया है मैं अपनी रूखी हँसी से पेट में मची हुई कुलबुल को चाहती। पर बीबीजी खाये-पिये का तो मुँह छिपता ये (दूसरा पति) कह देते—'अरी, भूखे काहे को मरती घर, वहीं काम-धन्धा करना। बखत पर रोटी ले जायगी।' मेरी छाती में लुक्के उठने लगतीं। करोध आता कि मुझे जिस-तिस की सुनने के लिए पर चुप हो जाती। अपना पल्ला नीचा देखकर चुप ही है। वे फिर ज्वार दे जाते। मैं कूट-पीसकर तिवन-तरकारी के बिना रोटी भी न पचती थी। दूध सूखने लगा। सलोनी का पेट न भरता था। के मारे बिलाती तो मेरे आँसू न थमते थे। हारकर मजूरी करने की सोची। पर उस दिन सवेरे से ही गई। लगता पानी आज बरसकर कभी न बरसेगा। कोने में मेह थमने की बाट देखती रही। खुला। तभी मैं द्वार के बाहर निकली। ये खड़े थे। बोले—'आज तो फाखे में ही मैंने कहा—'हाँ, आज झड़ ही ऐसी लग गई थी। अब भी भूख नहीं लग रही पर यह सलोनी तो ले रही है।' तब इन्होंने कहा—'आज गिलास चल, मैं अभी गाय दुहूँगा तो तू दूध ले लेना।' चली आई। इन्होंने मुझे दूध देते हुए कहा—'ऐसे मरेगी! आ क्यों नहीं जाती? अपनी समझकर ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। जब तू मुझसे दूर ही दूर भगेगी तो कैसे तेरे लिए करूँगा। इसके सिवा हमारी गाँव में भी तो बदनामी ।' मैं छाती पर पत्थर रक्खे सब सुनती रही। मेरी समझ आया कौन-सी बात के लिए गाँव में मेरी बदनामी होगी। बच्ची के प्रान बचाने के लिए कुछ भीख माँग लेती इसी के लिए? उस समे मैं चुपचाप चली आई पर शरीर में मानो प्रान न रहे। मैं दूध गरम करने बैठी तो मेरे हाथ से छूटकर आग में जा पड़ा। झड़ फिर लग रात का पहर बरसते मेह में किसके द्वार पर जाती? मन बैठ गई। छप्पर से चूकर सारा पानी घर में भर रहा मैं एक कोने में पिढ़िया बिछाकर बैठ गई पर वहाँ भी न रुका। ऊपर से छप्पर चू रहा था, नीचे से पानी का बह रहा था। भगवान् जाने मैंने कौन-से पाप किये थे व्यथा सहनी पड़ी। सलोनी एक तो भूखी, ऊपर से शीत अधमरी हो रही थी। उसकी पलकें झप रही थीं। मैं मारे मरी जा रही थी। जब सलोनी रोती रहती तो मेरे सन्तोष रहता पर जब इसकी आँखें झपने लगतीं और घर्र-घर्र बोलने लगता तो मेरा मन भय से काँपने लगता। दूसरे पहर मेह थमा तो घर का सारा ईंधन भीग चुका था। भी काहे से सुलगाती? सलोनी की हालत और बिगड़ती थी। उसी समय पानी से मिट्टी भीग जाने के कारन टूट-से आ पड़े। मेरे बायें पैर का अँगूठा पिचकर रह भगवान् ने खैर की कि सलोनी बच गई। द्वार के गिर से हवा फर्र-फर्र करके घर में घुसने लगी। बीबीजी, समे मेरे धीरज का बाँध टूट गया।" मैंने देखा, रूपो की आँखों से बरसात के पनारे बह रहे थे। मेरा कण्ठ स्वयं उसके अविरल दुख से रुद्ध हो गया। ढाढ़स बँधाने के लिए शब्द न मिले। तब उसने स्वयं ही अपने अञ्चल से आँसू कहना आरम्भ किया—"उसी रात को बीबीजी मैं के चाचा (दूसरा पति) के घर गई। मैंने द्वार खट-। वे मुझे देखकर पहले तो कुछ सहमे फिर बोले—रात गये कैसे आना हुआ रूपो?" तब मैंने कहा—घर चू रहा था इससे कपड़े भीग गये हैं। तनिक-सी तो सुलगा लूँ!" इस पर उन्होंने सलोनी को मेरे ले लिया और मुझे सूखा कम्बल देकर कहा—"गीले उतारकर अलग रख दो और चूल्हे में आग सुलगाकर ।" उन्होंने मेरे लिए खाट भी डाल दी। मैं देह कर सोई तो सारी रात आँख न खुली। सुबह को वे द्वार छोड़ गये। गाँव के सब आदमियों ने मुझे सोते देखा। सूरज निकलते-निकलते हल्ल उड़ गई। मैं अपने घर लौट थी। पर मेरी कौन मानता कि मैंने अपना धरम नहीं है। अपने बच्चे की रक्षा के लिए किसी के घर में लिया था। गाँव में पञ्चायत हुई और सब ने कहा कि या तो गाँव छोड़ नहीं तो तुझे इसका साथ निबाहना होगा। मैंने कहा—"मैंने इनका हाथ ही कब पकड़ा था जो मैं इन्हें निबाहूँ?" पर मेरी कौन सुनता! मैं किस परमात्मा को लाकर साच्छी देती। सब यही कहने लगे—"उसका खाती-पीती है। उसके घर में रह चुकी है और ऊपर से यह बात!" सलोनी के चाचा ने भी कभी यह न कहा कि मैंने उनका हाथ भी न छुआ था। मैं सलोनी को लेकर गाँव के बाहर कहाँ जाती, कैसे रहती, इस सोच-विचार में डूबी थी। सलोनी के चाचा बार-बार आते और मुझसे कहते—"गाँव के बाहर कहाँ टक्कर मारती फिरेगी! चल, वह घर भी तो तेरा ही है। क्यों इस सलोनी के प्रान लेने पर उतारू है? वहाँ छटाँक दो छटाँक दूध तो मिल ही जायगा।" बीबीजी, संझा की बेला थी। सूरज डूब चला था। उस समय मेरा हिरदय भी डूबा जाता था। मैं सोच रही थी मैं भी डूब जाऊँगी। मेरा उजाला भी मिट जायगा और मैं दुःख की छाया बनकर ही दुनिया में रहूँगी। इतने में ही सलोनी के चाचा ने फिर हाथ पकड़ा और मुझे ले गये। बस बीबीजी, उस दिन से दुनिया में रात ही रात होती रहती है, दिन कभी नहीं होता। दिन में पूरब की तरफ मुँह उठाये देखती रहती हूँ और सोचती हूँ दिन नहीं रात है। अब सूरज निकलेगा। जब मैं सलोनी को देख लेती हूँ तो कुछ उजाला होता है।"

मैंने आश्चर्य से पूछा—"तो क्या रूपो, तुम सचमुच जीवन (दूसरा पति) को नहीं चाहती?" रूपो ने कहा—"विपत्ति के समे में इन्होंने मेरी सहायता की है। इसी से मैं इनकी दासी हूँ। इन्होंने मेरी सलोनी को उस वक्त बचा लिया था। नहीं तो बीबीजी, यह देह किसी के हाथ बिकनेवाली न थी। अब भी मेरी देह छूते हैं तो मुझे लगता है कोई मक्खी मेरे शरीर पर चल रही है। बीबीजी! गरीबी हमारा मन और तन सब ही कुचल देती है। इज्जत और आबरू भी धनवानों की ही....." कहते-कहते रूपो रुक गई। जीवन घास का भारी गट्ठर ले तैरता हुआ किनारे आ लगा था। रूपो उठकर घाट के पास पहुँच गई। उसने अपना दुपट्टा उतारा और उसे बिछाकर सलोनी को लिटा दिया। रूपो के रूखे बाल हवा से अठखेली कर रहे थे। पहले तो वह कुछ सकुचाई पर क्या करती, बेबसी का नाम सन्तोष है। पार पर खड़े होकर उसने गट्ठर पकड़ लिया। उसकी मुड़ती हुई कमर में अब भी वही लोच था। मैं चलने को उद्यत हुई। परन्तु मेरा प्रिय विषय 'करुणा' साकार होकर सलोनी के रूप में पड़ी थी। मेरी ममता ने मुझे रोक ही लिया। तब तक जीवन पानी के बाहर निकल आया था। बाहर निकलकर घास का गट्ठर सिर पर रख लिया। रूपो ने सलोनी को उठा लिया। मैं भी चल पड़ी। रूपो कहने लगी—"बीबीजी, देर हो गई है अकेली मत जाओ। मेरे गाँव से होकर निकल चलो। मैं कोठी पर पहुँचा दूँगी।" मैं भी उसके साथ गाँव की ओर चल दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर जाकर रूपो ने द्वार खोला। खाट डालकर फटे-चिथड़े बिछा दिये और उस पर सलोनी को लिटा दिया। जीवन से कहा—"तुम तनिक दूध निकाल लो तो सलोनी को दे दूँ।" जीवन ने झुँझलाकर कहा—"तनिक दम तो लेने दे न, क्या इतनी देर में सलोनी के प्रान छूटे जाते हैं।" जिस सलोनी के लिए उसने अपना जीवन जीवन को अर्पित कर दिया था उसी का तिरस्कार होते देखकर रूपो के मुँह से निःश्वास छूट ही गया। परन्तु जीवन की बात से मैं सजग हो गई। "सचमुच में ही सलोनी के प्राण छूट जायँगे।" इतने में ही गाँव के बाहर गीदड़ों का रव सुनाई दिया। मुझे लगा—वे गीदड़ सलोनी के प्राणों का आह्वान कर रहे थे। एक विचित्र-से भय ने मेरा मन अस्थिर कर दिया। मैंने कहा—"रूपो, मैं जा रही हूँ।" रूपो ने कहा—"नहीं बीबीजी, अकेली क्यों जाती हो? मैं तुम्हारे साथ चलूँगी।" मेरे मन में विचार आया, कहीं रूपो मेरे साथ जाय और पीछे सलोनी के प्राण-पखेरू उड़ जायँ तो सलोनी की आत्मा और रूपो का मातृ-हृदय सदैव ही पङ्खहीन पक्षियों-सा फड़फड़ायगा। इस विचार से मैंने कहा—"नहीं रूपो, मैं चली जाऊँगी। दो पग पर तो कोठी है।" सलोनी को छोड़कर मैं घर लौट आई और आँख बन्द कर गूढ़ चिन्ता में मग्न हो गई। रूपो का पूरा जीवन मेरी आँखों के सामने नाच गया। रूपो हमारे यहाँ अपनी माँ के साथ काम करने आया करती थी। मैं प्रायः रूपो को खेल में लगा लेती थी। रूपो का मिट्टी का घरौंदा और सौ मील की रफ़्तार से उड़नेवाला हवाई जहाज़ मेरे लिए किसी भी शिल्पी से कम न था। रूपो को मेरी रामायण की कुछ पंक्तियों का पढ़ लेना किसी प्रकाण्ड पण्डित से कम न था। जब मैं कुछ लिखती तो वह बराबर झुककर मेरे अक्षरों की ओर देखती रहती। कभी कोयला लेकर अनुकरण का प्रयास करती। अन्त में मैंने रूपो की गुरुआनी बनने का निश्चय कर लिया। मैं अपने गुरु-जैसा अनुशासन उस पर करती। रूपो चुप-चुप सह लेती। कुछ वर्षों में उसे नागरी का कुछ ज्ञान हो गया था। अक्षरों का शुद्ध उच्चारण उसे आ गया। पन्द्रह-सोलह वर्ष की अवस्था में उसका विवाह पास ही के गाँव में हो गया। कुछ दिवस पश्चात् उसकी माँ हमारे यहाँ से चली गई। रूपो जब कभी अपनी ससुराल आती तो मुझसे मिलकर जाती थी। उच्च शिक्षा के लिए मुझे भी दो वर्ष के लिए बाहर जाना पड़ा। मैं बहुत एकान्तप्रिय और पलायन-वृत्ति की थी। रात को किसी भी समय अपने कमरे से बाहर निकल जाती और रजनी की काली अलकों को हटा नक्षत्रों का रहस्य जानना चाहती। कभी रात को आठ बजे सो जाती तो कभी दो बजे उठकर अध्ययन करना प्रारम्भ कर देती। अनेक बार व्यवस्थापकों द्वारा टोके जाने पर भी मेरा स्वभाव न छूटा तो मुझे होस्टल छोड़ने को कहा गया। मैं क्षमा याचना के स्थान पर बिस्तर बाँधकर लौटने को तैयार हो गई। घर लौटकर फिर वही दिनचर्या हो गई। परन्तु रूपो कभी न आई। अपनी छोटी से छोटी [illegible] जाने पर भी मुझे कुछ उदासीनता हो जाती थी। [illegible] मुझे कोई चिन्ता न हुई। दो वर्ष पश्चात् रूपो आई [illegible] उसकी गोद में थी। रूपो अस्वस्थ थी। उसका [illegible] और लोच, लाली बनकर कपोलों में हँसती हुई लज्जा [illegible] विलीन हो गई थी। उसने इस सबका कारण पति [illegible] बताया। दस दिन पश्चात् मैंने सुना—रूपो के पति [illegible] हो गई। मेरी बहुत इच्छा थी कि रूपो का दुःख [illegible] सकूँ। परन्तु अपने अधिकारों की चेतना के कारण [illegible] कभी मानसिक सन्ताप सहना पड़ता है। मैं जानती [illegible] होने पर हम केवल पिता के घर के अतिथिमात्र रह [illegible] वहाँ से कोई भी वस्तु उठा कर दे देने का अधिकार नहीं [illegible] मास बाद मैंने सुना कि रूपो ने जीवन के साथ दूसरा [illegible] लिया है तो मेरा मन उसके प्रति घृणा से भर गया। [illegible] वासना की मूर्ति रूपो क्या कुछ दिन भी अपने पति [illegible] का आश्रय ले संयम को ग्रहण न कर सकी? [illegible] जो रूपो की करुण कथा सुनी थी उससे मेरा [illegible] विगलित अवश्य हो गया था परन्तु उसके प्रति [illegible] भाव धुल न सका था। सदैव ही यथार्थ से दूर [illegible] बात सोचा करती। मानवीय दुर्बलता को भूलकर [illegible] की बात सोचती। इसी लिए मैं सोच रही थी कि [illegible] चाहती थी तो अपने सत्य के बल पर चरित्र की रक्षा [illegible] थी। हरिश्चन्द्र ने अपनी पत्नी और पुत्र तक की [illegible] थी। क्या रूपो अपने चरित्र के लिए सलोनी [illegible] न कर सकती थी? फिर मेरे सामने बुद्धदेव की [illegible] घूम गई। संसार तो नश्वर है। उत्पत्ति और [illegible] ही उसके अङ्ग हैं। उनको कोई नहीं रोक सकता [illegible] उत्पत्ति के लिए क्या प्रसन्नता और विनाश के लिए [illegible] केवल चरित्र की उज्ज्वलता ही हमारे भौतिक जीवन [illegible] होनी चाहिए। रूपो बहुत ही सामान्य स्त्री है। [illegible] तो अब तक नहीं हुआ था और मैं विवाह को केवल [illegible] अभिनय करके वासनाओं का खेल ही समझती थी। [illegible] तक मेरे मस्तिष्क से विषाद का घना कुहरा न उठा [illegible] मैंने सोचा जिस स्थान पर मेरे विषाद की भूमिका [illegible] इसका उपसंहार भी होगा। मैं फिर सरिता-तट की [illegible] गई। देखा रूपो अपने सिर पर लकड़ियों का [illegible] रक्खे और जीवन सलोनी को लिये आ रहा था। [illegible] पूरी हुई। सलोनी के प्राण-पखेरू उड़ चुके थे। रूपो [illegible] के मृत शरीर को तट पर रक्खा और जीवन ने उस [illegible] चुनना प्रारम्भ कर दिया। नन्हीं सलोनी को, [illegible] भार न सह सकती थी, लकड़ियों के भार से दबाया [illegible] मेरा हृदय मानो विदीर्ण होने लगा। परन्तु रूपो [illegible] से सब कुछ सह रही थी। जीवन ने लकड़ियाँ [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगा दी। आग की लपटें लहकने लगीं। मानो वह स्वयं पृथ्वी से सलोनी के शरीर को पञ्चतत्त्वों में मिलाने के लिए चली गई हो। रूपो के हृदय का बाँध टूट गया। वह चिल्ला उठी—"हाय बीबीजी!" मेरी सारी पाप-पुण्य की व्याख्या, ऊँच-नीच की बुद्धि न जाने कहाँ विलीन हो गई। मैंने झट रूपो को अपने हृदय से चिपटा लिया। कितनी ही देर तक हम इसी अवस्था में रहे। सलोनी का शरीर जलकर क्षार हो गया तब मैं भी रूपो को साथ लेकर आ गई। परन्तु उस दिन से मेरा हृदय कभी हल्का न हुआ। मृत्यु का विषाद मुझे घेरे रहता था। भौतिक जीवन की असारता को समझ मन किसी वस्तु से ममत्व न रखता था। केवल साहित्य और कला ही मेरे जीवन का आधार थे। मेरी अवस्था भी बीस-इक्कीस की हो चुकी थी। दूसरे मेरी इस उदासीनता को देख मेरे घरवाले कुछ भयभीत हो गये थे। भौतिक जीवन से बँधे रहने के लिए मेरा विवाह कर देना उचित समझा गया। शहर के एक और शिक्षित व्यक्ति से मेरा विवाह भी हो गया। मैं पति का अभिनय तो न कर सकी परन्तु वासनाओं का खेल अवश्य हुआ। उसका फल मुझे अमिता के रूप में मिला। अमिता ने मेरे जीवन में रस तो अवश्य भर दिया परन्तु वह भी मुझे बाँध न पाई। रूपो का पति जीवन सेना-विभाग में बाहर चला गया। मैं रूपो को अपने साथ ही ले आई थी। वह गृहस्थी को सँभालती थी और अन्ना अमिता को। मैं अध्ययन में जुटी रहती या तूलिका उठाकर अपने भावों पर रीझती रहती। मेरे पति की इच्छा थी कि मैं एक महिला होकर सभा-सोसाइटियों में उनके साथ शोभा बढ़ाऊँ। बहुत प्रयत्न पर भी वे मुझे मेरी उदासीनता से न हटा पाये। शनैः-शनैः वे मेरी ओर से उदासीन होने लगे। वे मेरे विचारों पर श्रद्धा रखते थे, परन्तु इससे उनके पुरुष-हृदय की सन्तुष्टि न होती थी। सदैव ही आधी रात के पश्चात् आते और कभी-कभी भोर तक न आते। रूपो प्रायः मेरा ध्यान उस ओर आकर्षित करती। मैं कह देती—रूपो, वे क्लब में खेल में लगे हैं परन्तु हृदय में जानती थी कि अतृप्त वासनायें किसके घर पर नाचती होंगी। मैं स्वयं उनकी माँग पूरी न कर सकती थी और न मुझे उनकी कोई चिन्ता ही थी।

सभी वस्तुओं के अस्तित्व को भूलकर दूर किसी भावभूमि में पहुँच जाने का स्वभाव बढ़ता ही जा रहा था। केवल अमिता मुझे रोक लेती थी। एक बार अन्ना छुट्टी लेकर चली गई। अमिता को रखने का भार मुझी पर पड़ा। मैंने दृढ़ निश्चय कर लिया कि अन्ना की अनुपस्थिति में अमिता को कोई कष्ट होने दूँगी। सन्ध्या तक मैं इसका पालन भी कर सकी। रात चली जा रही थी। उसकी गति के साथ मेरा हृदय भी खिंचा जा रहा था। जीवन की स्वाभाविक गति उसी ओर जान—सूर्य छिप जाता है, चाँद विश्राम करता है, जहाँ से रहस्यमयी रजनी तारों का मौन सङ्गीत लेकर आती है, मेरा घर यह नहीं—वृक्षों की घनी पंक्तियों से घिरे क्षितिज के पार—दूर—बहुत दूर—मैंने अमिता को आँगन में छोड़ दिया और विक्षिप्त-सी हो बढ़ी चली गई। न जाने कितनी दूर। एक झोपड़े के सम्मुख धूल में सना बच्चा रो रहा था। तब मुझे भी अपनी अमिता का स्मरण आया। मैं आहत-सी हो लौट आई। आकर देखा अमिता ने पास ही में रक्खी बाल्टी का पानी अपने ऊपर लौट लिया था। सारे कपड़े भी भीग गये थे। सर्दी से ठिठुर जाने के कारण रो भी न सकती थी। ओंठ नीले पड़ गये थे। पैर में बाल्टी का किनारा लग जाने से लोहू बहते-बहते स्वयं ही रुक गया था। उस समय प्रथम बार मैंने अपने अति काल्पनिक स्वभाव पर घृणा की और कदाचित् प्रथम बार ही मैंने अमिता को इतना प्यार भी किया। परन्तु अमिता मेरे उस दुलार को जो कभी किसी व्यक्ति पर न बिखरा था सह न सकी या उसने मेरी उपेक्षा का दण्ड दिया। रात को उसका श्वास घर्र-घर्र चलने लगा। हाथ-पैर एकदम ठण्डे पड़ गये। मैंने प्रकाश में देखा—मृत्यु के चरण! अमिता को मैंने वक्ष से चिपटा लिया। पर सत्य को मेरी ममता भी मेरी आँखों से बचा न सकी। मुझे लग रहा था न जाने कितनी मृत आत्मायें अमिता को छीनने आ रही हैं। दुर्बल पलकोंवाली सलोनी बढ़ी चली आ रही थी। मैं घबड़ाकर कमरा छोड़कर बाहर चली आई। पर वहाँ भी विश्व की विशाल चिता—गीदड़ों का भयानक रव अन्धकार को चीरकर विषाद का चिह्न सन्देश ला रहा था। समस्त रात्रि मैंने इसी प्रकार बिता दी। अपने प्राण देकर भी यदि अमिता को बचा सकती तो बचा लेती! प्रातः होते-होते उसकी दशा बिगड़ने लगी। मृत्यु के चिह्न स्पष्ट हो गये। मैंने उसको लिटा दिया। कुछ क्षण पश्चात् उसकी ओर देखा तो न जाने मेरे मन में क्या भाव आया, मैं झट तूलिका उठाकर उस मृत्यु को चित्रित करने लगी। संसार मृत्यु को क्यों नहीं पहचानता—मेरा चित्र अवश्य ही मृत्यु का रूप संसार के सम्मुख रख सकेगा। फिर वही बेसुधपन, वही तन्मयता जो मुझे सदैव ही खींच ले जाती थी। मैं तूलिका से चित्रित कर देना चाहती थी कि किस प्रकार अन्तिम श्वास नेत्रों के नीचे के गड्ढे में अपना स्थान बना लेता है। अमिता ने पुकारा.....'अम्मा'। मैं एक स्पर्श लगाकर उठना चाहती थी। उसने दुबारा पुकारा "अम्मा"। मैं तूलिका रख अमिता के पास पहुँची। ओह! उसके लाल ओठ खुले पड़े थे। प्रभात की कोमल रश्मि उसके खुले मुख में प्रकाश लौट रही थीं। मैं व्याकुल होकर अमिता-अमिता चिल्लाती रही, पर मेरी बच्ची न बोली। मैंने उसे उठाकर चिपटा लिया। मेरी बच्ची-मेरी बच्ची चिल्लाने लगी। मेरे पति भी उस समय आ गये। न जाने क्यों मैंने अपनी बच्ची का शव उनको दे दिया। इसके पश्चात् मुझे ज्ञात नहीं क्या हुआ। कई दिन पश्चात् मैंने सुना कि जानवरों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ले जाने के भय से मेरी अमी को जला दिया गया। मैं रूपो को लेकर फिर सरिता-तट पर पहुँची। मेरी अमी भी यहीं कहीं जलाई गई होगी। यह विचार आते ही मैं अमिता-अमिता चिल्लाने लगी। मेरा स्वर वहाँ पहुँचता और सरिता की ओर से उत्तर आता—"अम्मा!" मैंने और ज़ोर से चिल्लाया—"अमिता"! स्वर हवा में ऊपर चढ़ता गया और अम्मा की प्रत्यक्ष ध्वनि आती गई। मैं विक्षिप्त-सी हो उठी। "रूपो, देख मेरी अमिता बोल रही है। तेरी सलोनी तेरी छाती से लगी रही। वह अब सुख से सोई होगी। पर मेरी बच्ची 'अम्मा' 'अम्मा' चिल्लाती आई थी। ओह! चिल्ला रही है। देख हवा में—पानी के ऊपर।" मैं अपनी अमिता को पकड़ने के लिए भागने लगी। रूपो ने मुझे पकड़ लिया। वहाँ से किस प्रकार मुझे घर लाया गया मुझे ज्ञात नहीं। परन्तु उस समय से मुझे लगता है मेरी अमिता जीवित है। वह लहरों में छिपती है—हवा में उड़ते-उड़ते 'अम्मा' कहती है। मैं नित्य ही उसके लिए सुन्दर वस्त्र करती हूँ। मुझे लगता है मेरी अमिता भूखी है तो उसे दूध लाती हूँ। वह रोती है तो मैं कहती हूँ—मेरी बच्ची रो सब कहते हैं, मैं पागल हूँ और न जाने क्या बका करती हृदयवाले सभी पागल होते हों तो मैं भी पागल हूँ। आँखों के सम्मुख सदैव ही चितायें जलती हैं। हड्डियाँ बिखरी पड़ी रहती हैं। मृत्यु का लास होता रहता यही मेरे चित्रों का विषय और कहानियों का भाव हो गया दो चिताओं ने मेरे जीवन में विनाशमय अन्त का खड़ा कर दिया है।

——

कवि

श्रीयुत उमेशचन्द्र 'मधुकर', बी० ए०

झाँक रहा था नभ से उसको नीचे बुला लिया किसने!
स्वर्णिम किरणों से रँग-रँगकर
धवल मेघ-खण्डों के ऊपर
मलय समीर सुलाता जिसको
गा धीरे कुछ गीत मनोहर
उस कोमल छवि को काँटों में बरबस सुला लिया किसने?
हँस-हँस खिला फूल इठलाता
माली भी जिस पर बलि जाता
जिसकी एक गन्ध से भी
वह अमरलोक निज जीवन पाता
टूट पड़ा वह, यों डाली को चुपके डुला लिया किसने?
छीन सुरा से उसकी मस्ती
और सुधा से उसकी हस्ती
दनुज, देव से दूर एक रस
बसा रहा था अपनी बस्ती
आज मनुज के भीषण जग में उसको बुला लिया किसने?
जो भविष्य का निर्माता हो,
अनहद के स्वर में गाता हो
स्रष्टा हो, द्रष्टा हो जो,
जो सबके सब कुछ का ज्ञाता हो
उसको आह-कराहों में रो-रोकर भुला लिया किसने?

——

गर्वीला गुलाब

कुमारी प्रभा पारीक

प्रेमी की भावना से गर्वीले गुलाब! देखते नहीं तुमसे भी सलोने और उज्ज्वल रूप में अपने वृन्त पर कितने सुमन खिलखिला रहे थे परन्तु प्रातः होते-होते सब हो गये। अभी लाठी टेकता वृद्ध चला गया और देखो चरण-चिह्नों को भी बतास ने हँसते-हँसते ही मिटा डाल के अधर पर नृत्य करते हुए पल्लव भी पीत बनकर गये और तुम अब भी मदमस्त हो झूम रहे हो। कौन झंझा का एक ही झोंका तुम्हारी पराग से पगी पंखुरियाँ बिखरा दे।

पाटल की पंखुरियाँ अधरों पर पराग मल और भी हो उठीं, बोलीं—जो मुख होकर जीवित रहते हैं वे हँसना जानते—जो हृदय होकर जीवित रहते हैं उनका जीवन ही की सृष्टि है। कंटक से चुभ-चुभकर उत्पन्न हुई वेदना आकार मेरी पंखुरियाँ हैं। युग-युग की प्यास कंटक बन तन को बेधती रहती है और मेरा हृदय अरुण होकर रहेगा। बतास मेरी वेदनाओं को बिखरा देगा। मेरी फिर आकार बना लेंगी—युग-युग की प्यास चिरजीवी अहा! तुम नहीं जानती आकुल अन्तर के उस अनन्त को। मेरी चिरजीवी प्यास अनन्त सौन्दर्य की छाया बन मुझे मिट जाने का क्या शोक? मेरी प्यास की आकुलता अनन्त सौन्दर्य का प्रतिबिम्ब झिलमिलाता ही रहेगा।

——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रियासतें—उनकी आर्थिक समृद्धि और तत्सम्बन्धी समस्यायें

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीयुत राजमल संघी, बी० ए०

युद्ध ने आज हमारे सामने अनेक नूतन एवं महत्त्वपूर्ण समस्यायें उपस्थित कर दी हैं। उनमें से एक है 'भारत का पुनर्निर्माण', जिसकी ओर प्रत्येक भारतीय का, वह चाहे राजनैतिक वर्ग का हो या व्यापारिक या सामाजिक वर्ग का, ध्यान विशेष रूप से आकृष्ट हुआ है। जहाँ तक पुनर्निर्माण का सम्बन्ध है, यह स्पष्ट है कि भारत के उस भाग को, जिसे देशी राज्य कहा जाता है, शेष भाग से—जो ब्रिटिश भारत कहलाता है—अलग नहीं रक्खा जा सकता। सच तो यह है कि आर्थिक दृष्टि से देशी राज्य भी ब्रिटिश भारत के ही अङ्ग हैं। आज वह भाग पिछड़ी हुई अवस्था में है पर युद्धोत्तर-काल में भी उसे इसी अवस्था में नहीं रक्खा जा सकता।

ब्रिटिश भारत की अपेक्षा रियासतों ने वर्तमान युद्ध में धन और जन से अधिक सहयोग दिया है। अतः युद्धक्षेत्र से लौटे हुए अपने नागरिकों के लिए धन्धे प्रस्तुत करने का प्रश्न उनके सामने सबसे अधिक महत्त्व का होगा। यह स्वाभाविक है कि रियासतों की समृद्धि के लिए जितने भी प्रयोग किये जायँगे उन सब में इस प्रश्न को हल करने का प्रयत्न किया जायगा। अनेक रियासतों ने अपनी आर्थिक उन्नति के लिए पुनर्निर्माण योजनायें बनाई हैं। यहाँ यह जान लेना भी आवश्यक है कि रियासतों की आर्थिक समृद्धि वहाँ की कृषि की उन्नति एवं औद्योगी-करण पर ही प्रधानतया निर्भर करती है।

भारतीय देशी रियासतों का क्षेत्रफल ७ लाख वर्गमील है और जनसंख्या सवा नौ करोड़। वहाँ की जनसंख्या का एक बड़ा भाग कृषि पर अपना जीवन-निर्वाह करता है। यद्यपि कुछ रियासतों में आधुनिक साधनों से परिपूर्ण और सुनिर्मित उद्योग-धन्धे भी हैं, पर औद्योगीकरण की दृष्टि से उन्हें भी पर्याप्त नहीं कहा जा सकता। वे रियासतें भी सम्पूर्ण दृष्टि से देखने पर पिछड़ी हुई ही सिद्ध होती हैं।

रियासतों की समृद्धि-वृद्धि के लिए कृषि की ओर सबसे पहले ध्यान देना आवश्यक होगा। इससे दो लाभ होंगे। एक तो यह कि वहाँ के निवासियों के लिए पर्याप्त अन्न सुलभ हो जायगा और इसके लिए उन्हें अन्य प्रदेशों पर निर्भर न रहना पड़ेगा, दूसरा यह कि नवीन कृषि-प्रणाली का विस्तार होने पर युद्ध से लौटे हुए लोगों को काम मिल सकेगा।

इस सम्बन्ध में एक बाधा, जिसकी ओर हठात् ध्यान जाता है, रियासतों में प्रचलित जागीरदारी की प्रथा है। कुछ रियासतों को छोड़कर—जैसे ग्वालियर आदि—जागीरदारी प्रथा प्रायः सभी रियासतों में एक-जैसी है। वहाँ की भूमि का प्रायः दो तिहाई भाग जागीरदारों के अधिकार में है। जागीरदार राजा और प्रजा के बीच के माध्यम रूप हैं। वे अपनी आय का एक निश्चित भाग रियासतों को देते हैं। यह निश्चित भाग जोधपुर और मेवाड़ में 'रेख' कहलाता है। इसका परिमाण वहाँ आय का आठवाँ भाग है। इन जागीरदारों का व्यवहार अपनी प्रजा के साथ जैसा होता है वह सर्वविदित है। बेगार, ग़ैरक़ानूनी कर और लाग जैसी चीज़ें देशी रियासतों में आज दिन भी विद्यमान हैं—यह जागीरदारी का ही फल है। और यह भी असत्य नहीं है कि देशी रियासतों की जनता में शिक्षा का अभाव और उद्योग-धन्धों की अवनति भी इसी के कारण है।

इस प्रथा का प्रभाव रियासत की आय पर पड़ता ही है। कारण, रियासत की आय का दो तिहाई भाग तो इन जागीरदारों में ही वितरित हो जाता है, केवल एक तिहाई शेष रहता है। फल यह हुआ है कि वहाँ की प्रजा की साधारण अवस्था अत्यन्त दयनीय हो गई है। अतः रियासतों की समृद्धि के लिए जागीरदारी प्रथा का अन्त होना अनिवार्य और प्रथम आवश्यकता है। जब तक इसका अन्त नहीं होता, रियासतों की आय नहीं बढ़ सकती और पर्याप्त आय के बिना सुधार का कार्य भी सन्तोषजनक रूप से अग्रसर नहीं हो सकता।

यहाँ पाठकों को यह भी बतलाना आवश्यक है कि रियासतें भी अपनी इस कमी को कुछ हद तक अनुभव कर रही हैं। कुछ रियासतों ने जिनमें ग्वालियर और मैसूर का नाम सबसे ऊपर आता है, इस दिशा में क़दम बढ़ाने का कुछ साहस किया है। पर आवश्यकता यह है कि आनेवाले युग में इस 'कालदोष' का चिह्न भी शेष न रहना चाहिए। जो वस्तु बहुत पहले समाप्त हो जानी चाहिए थी वह समय और हित की दृष्टि से अब भी समाप्त हो जाय तब भी अच्छा है। उचित तो यह होगा कि ये जागीरें जनता और देश की भलाई को दृष्टि में रखते हुए किसी बाहरी दबाव से पहले ही स्वयं और स्वेच्छा से समाप्त हो जायँ।

कृषि की उन्नति के लिए किसान की अवस्था में भी सुधार होना आवश्यक है। रियासतों का किसान आज बुरी तरह ऋणग्रस्त है। जब तक यह ऋण-भार दूर नहीं होता, उनकी परिस्थिति में सुधार होना असम्भव है। भारत में आज चारों ओर 'ग्रामसुधार' की ध्वनि सुनाई देती है। कहने को राजपूताना में भी इस दिशा में कुछ कार्य हुआ है। पर उसमें कुछ तत्त्व नहीं है। जहाँ तक इन पंक्तियों के लेखक को ज्ञात है, वहाँ के किसी राज्य ने ऋण-समस्या का कोई हल अभी तक नहीं निकाला है, इसके विरुद्ध ब्रिटिश भारत में इसके सम्बन्ध में बहुत कुछ कार्य हो चुका है। यहाँ हम भावनगर राज्य की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकते। वहाँ ऋण-सम्बन्धी प्रयत्न क्रान्तिकारी रूप में अग्रसर हो रहा है। भरतपुर और मैसूर ने भी ग्रामीण-ऋण को ग़ैरक़ानूनी घोषित करके प्रशंसनीय कार्य किया है और उसे दूर करने का भी प्रयत्न वहाँ किया जा रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्य देशी रियासतों को भी इस ओर शीघ्र ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि किसानों की, अतः जनता की आर्थिक अवस्था में सुधार करने के लिए ग्रामीण ऋण का दूर किया जाना आवश्यक है।

उसके पश्चात् शिक्षा का प्रश्न आता है। किसान वर्तमान के सम्पर्क में रहें, इसके लिए उनका शिक्षित होना आवश्यक है। ऐसे केन्द्रों की स्थापना होनी चाहिए जहाँ बीज, फ़सल और आधुनिक उपकरणों की शिक्षा किसानों को दी जाय जिससे वे रियासती कृषिभूमि में वृद्धि भी कर सकें और उसका अधिक से अधिक लाभदायक उपयोग भी कर सकें।

कृषि के साथ-साथ जङ्गलों की उन्नति भी होनी चाहिए। आधुनिक युग में जङ्गल अपना प्रमुख स्थान रखते हैं। पहाड़ों की तलहटी और नदियों के तटों पर घने-घने जङ्गल लगा दिये जायँ तो लकड़ी का अभाव दूर हो जाय और वर्षा में भी नियमितता आ जाय जिससे फ़सल को लाभ हो। इन्हीं जङ्गलों के बल पर दियासलाई के कारख़ाने भी खड़े किये जा सकते हैं।

कृषि के पश्चात् पर कृषि से अधिक उद्योगों पर ध्यान देना आवश्यक है। औद्योगिक स्थिति में रियासतें ब्रिटिश भारत से बहुत पीछे हैं। उन्हें इस दिशा में ब्रिटिश भारत के समकक्ष लाने के लिए उनका औद्योगीकरण द्रुत गति से होना चाहिए। औद्योगीकरण की व्यवस्था बिना हुए रियासतों की जनता के जीवन का स्तर, जो ब्रिटिश भारत की जनता के जीवन के स्तर से कहीं नीचा है, उठाया नहीं जा सकता। अतएव यह आवश्यक है कि वहाँ उद्योगधन्धे पर्याप्त मात्रा में चालू किये जायँ। इस कार्य में केन्द्रीय सरकार की सहायता की भी अपेक्षा है। कुछ समय पहले नरेन्द्रमण्डल और वायसराय में जो मतभेद प्रकट हुआ था उसका एक कारण आर्थिक भी था। माँग यह थी कि रियासतों का अखिल भारतीय औद्योगीकरण योजना में सम्मिलित होना आवश्यक है। पर इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि रियासतें ब्रिटिश भारत के लिए बनाई गई योजना में अवश्य ही सम्मिलित हों, न ऐसा होना उचित ही है। ब्रिटिश सरकार की इस सम्बन्ध में जो नीति है वह प्रायः स्वार्थपूर्ण है। उसका तात्पर्य यही हो सकता है कि देशी रियासतें भी ब्रिटिश भारत की भाँति युद्ध के बाद ब्रिटेन के धन, व्यापार, बुद्धि और कल-पुर्ज़ों आदि के उपयोग के लिए एक क्षेत्र बन जायँ। देशी रियासतों की पिछड़ी अवस्था को देखते हुए उचित यही है कि सरकार उनके कार्यों में उसी सीमा तक हस्तक्षेप करे जितनी कि उनको आवश्यकता है। सरकार को चाहिए कि देशी रियासतों में उद्योगधन्धों को पनपाने के लिए वह उन्हें पर्याप्त मात्रा में कोयला, तेल, मशीनरी आदि दे। साथ ही उन्हें चुंगी आदि करों से मुक्त कर दे। इधर युद्ध की परिस्थिति के कारण देशी रियासतों में कतिपय उद्योग-धन्धों की स्थापना हुई है पर आवश्यकता यह है कि युद्ध के बाद भी ये सब उसी भाँति चालू रहें। देशी रियासतों की भावी समृद्धि बहुत कुछ उनके धन्धों के पनपने पर निर्भर करती है। भारतीय जलसेना वायुसेना के लिए विशेषज्ञ बनाने के लिए रियासतों में केन्द्रों की स्थापना की गई है। इन केन्द्रों से शिक्षित सैकड़ों नवयुवक युद्धकार्य कर रहे हैं। युद्ध से लौटने पर कार्य देने का प्रश्न उठता है। रियासतों के औद्योगीकरण से वह प्रश्न सहज ही हल हो सकता है।

कृषि-सम्बन्धी और उद्योग-सम्बन्धी उन्नति में एक कठिनाई उत्पन्न होगी वह है अनेक रियासतों के छोटे-छोटे टुकड़ों में बँटा होना। काठियावाड़ और मध्य भारत में अनेक रियासतें हैं जो आधुनिक प्रणाली से शासन किये जाने पर असफल रहेंगी। उनके सामने भावी आर्थिक समृद्धि की योजनायें रखना भैंस के आगे बीन बजाने के बराबर है। भावी आर्थिक समृद्धि और जनता की साधारण उन्नति के लिए यह अत्यावश्यक है कि वे छोटी-छोटी रियासतें या तो समाप्त कर दी जावें या अपने पास की किसी बड़ी रियासत में मिला दी जावें। महात्मा गांधी ने भी इस सिद्धान्त को मान्य किया है जब कि इन राज्यों के सम्बन्ध में उन्होंने लिखा था—"उत्तरदायी शासन की माँग तो वस्तुतः ऐसी है, जिसकी आर्थिक दृष्टि से सम्भावना नहीं है; क्योंकि पाँच या छः को अपवाद-रूप छोड़ कर इन राज्यों में से कोई भी ऐसा नहीं है जो शुद्ध रूप से पृथक स्वशासित हो सके। आर्थिक दृष्टि को रहने भी दें, तो उनकी भौगोलिक निकटता और सांस्कृतिक तथा भाषा-सम्बन्धी एकता के कारण निश्चित रूप से यही वाञ्छनीय मालूम पड़ता कि शासन के लिहाज़ से उन सबका समूह बना दिया जाय। यदि ये राज्य आपस में मिल जायँ तो इनके जङ्गलों, पानी, सड़कों तथा यातायात के अन्य साधनों आदि की अनेक समस्याएँ आसानी से हल हो जायँ। वर्तमान अवस्था में बहुतों के पास में जन की कमी के कारण जनता अत्यन्त कष्ट में है। यह कठिनता पारस्परिक सहयोग द्वारा सहज ही दूर हो सकती है। विद्युत्-उत्पादक योजना किसी एक रियासत के बूते की नहीं है—ऐसी योजनाओं में किन्हीं दो या उससे भी अधिक रियासतों का मिलना हितकर होगा। अतः देशी रियासतों की भावी समृद्धि के लिए इस योजना को शीघ्रातिशीघ्र कार्य कर देना अत्यन्त लाभकर होगा।

रियासतों की जनता के भावी जीवन के लिए जीवन-यापन की आवश्यक वस्तुओं में वृद्धि करना अत्यावश्यक है। लोक-दिखावे की वस्तुओं की ही आवश्यकता नहीं है, उनको सुख और रक्षा की आवश्यकता है। उन्नत और बढ़ी हुई कृषि लोगों को अच्छा और अधिक भोजन दे सकेगी। उद्योग-धन्धों की वृद्धि के बिना खेती कम होगी और मनुष्यों की क्रय-शक्ति को बढ़ाना नितान्त असम्भव है। बुद्धिमानी से प्रारम्भ किये गये और नियमित रूप से चलाये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्धों में धन उत्पन्न करने और विभक्त करने के उत्तम साधन हैं। धन का उचित विभाजन उतना ही आवश्यक है जितना उसका उत्पादन। पर्याप्त औद्योगिक उन्नति के बिना न तो आर्थिक शिक्षा मिल सकती है और न साधारण समृद्धि ही हो सकती है कि जिससे उचित और पर्याप्त अवकाश की प्राप्ति हो सके और वह अच्छे अच्छे कार्यों में लगाया जाय। रियासतों के औद्योगीकरण किये बिना उनकी साधारण परिस्थिति में सुधार नहीं हो सकता है। छोटे और बड़े उद्योग-धन्धों के बढ़ाने के अतिरिक्त घरेलू धन्धे और कार्यों को भी प्रोत्साहित करना अनिवार्य है।

साधारण आर्थिक समृद्धि के साथ यह भी आवश्यक है कि देश में शिक्षा का प्रचार खूब हो। लोगों को बिना शिक्षित किये उनके रहने के ढङ्ग में सुधार होना असम्भव है। उनके दृष्टिकोण को व्यापक बनाने के लिए एवं उन्हें उदारहृदय और सच्चा नागरिक बनाने के लिए उनको शिक्षित करना आवश्यक है। बिना शिक्षा के वे अपने कर्त्तव्य और अधिकार को समझने में अयोग्य रहेंगे। अतः आर्थिक समृद्धि के साथ ही रहने के ढङ्ग को ऊँचा उठाने के लिए, उनकी विचार-शक्ति को उन्नत बनाने के लिए उन्हें शिक्षा देना अनिवार्य है। उद्योग-धन्धों को बढ़ाने के लिए भी शिल्प-कलात्मक शिक्षा देना आवश्यक एवं लाभप्रद है।

रियासतों की प्रजा के स्त्री-जनों की अवस्था वहाँ के पुरुषों से अधिक गई-बीती है। जयपुर रियासत में, जहाँ जन-संख्या के ३ प्रतिशत जनता साक्षर है, शिक्षित स्त्रियों की संख्या ०.१ प्रतिशत ही है। नारियों की अवस्था में परिवर्तन किये बिना सब प्रकार की योजनायें विफल होंगी, क्योंकि वे ही हमारे को बनाने या बिगाड़नेवाली हैं।

उद्योगों की अत्यधिक वृद्धि होने पर मज़दूर के हितों की रक्षा आवश्यक है जो कि अभी तक बहुत कम रियासतों में की गई है। इसका परिणाम यही होता है कि आबादी का एक बड़ा भाग ग़रीबी एवं दासता के चक्र में फँसा रहता है, कारख़ानों में उसकी रक्षा, उसकी वृद्धावस्था, कारख़ानों में शिक्षा आदि सम्बन्धी नियमों को क़ानून के रूप में बना देना आवश्यक है।

ये सब बातें उसी समय हो सकती हैं जब कि देशी रियासतों के नरेश-गण ईमानदारी से और सचाई से कार्य करें। जब अपने कार्यों से ही अवकाश प्राप्त नहीं होता तब भला प्रजाजनों की कष्ट भरी कहानी को वे कहाँ से सुन सकते हैं। देश का पैसा वे मनमाना ख़र्च करते हैं। 'राज्य की आमदनी का एक बड़ा भाग तो राजा की व्यक्तिगत और पारिवारिक आवश्यकताओं की पूर्ति में ही लग जाता है। शेष में से बड़े-बड़े ओहदेदारों या अहलकारों का वेतन और भत्ता आदि दिया जाता है, जिससे दूसरों की दृष्टि में राज्य उच्च कोटि का जँचे। फिर राज्य के अनेक छोटे-छोटे कर्मचारी भी हैं। इसके अतिरिक्त, सरकार के राजनैतिक विभाग के अफ़सरों तथा अधिकारियों की आवभगत में कोई कमी न रहे, यह ध्यान रखना होता है। एजन्ट या वायसराय का दौरा तो राज्यों की थैलियाँ ख़ाली करनेवाला ही होता है। इन सब बातों के उपरान्त जनता की शिक्षा, स्वास्थ्य, चिकित्सा, कृषि-सुधार और औद्योगिक उन्नति के लिए शेष ही क्या रहता है?' देशी नरेशों की तो यही नीति रही है कि उनके सुख और ऐश्वर्य में कमी न आवे, चाहे उनको जुटाने के लिए प्रजा का कितना ही शोषण क्यों न करना पड़े। एक देशी नरेश का शिकार खेलने और एक से एक बढ़िया कुत्ते रखने का शौक़ प्रसिद्ध है। कुत्तों के सुख और सुविधा की व्यवस्था वे आधुनिकतम पद्धति से करते थे। फल यह हुआ कि रियासत के ख़ज़ाने पर अपरिमित ऋण हो गया। महात्मा गांधी के विचार से तो जिस रियासत की आय १० लाख से अधिक है, वहाँ के राजा के निजी ख़र्च के लिए ३ लाख रु० से अधिक नहीं होना चाहिए। इस धन में उसकी मोटर, रसोरड़ा आदि का ख़र्चा भी सम्मिलित है।

देशी नरेशों का शासन निरंकुश, अपरिवर्तनशील और अप्रतिक्रियावादी है। महात्मा गांधी के शब्दों में—"उदार होने से नरेश कुछ गँवा नहीं देंगे, किन्तु अपनी निरंकुशता पर क़ायम रहने पर वे अपना सर्वस्व गँवा देंगे।" आजकल राजाओं के रुख़ में भी कुछ परिवर्तन हुआ है किन्तु उनके निश्चयों की सचाई से वे ही परिचित हो सकते हैं अन्य नहीं। फिर भी देशी रियासतों की भावी समृद्धि—आर्थिक समृद्धि के लिए भी यह आवश्यक एवं अनिवार्य है कि राजा लोग अपनी प्रजा को उत्तरदायी शासन दे दें जिससे कि उनकी रियासतें उन्नति-पथ पर आरूढ़ हो जावें, वहाँ के निवासियों की साधारण अवस्था अच्छी हो जाय, उनके रहन-सहन का ढङ्ग ऊँचा उठ जाय, और जनता अशिक्षित, असङ्गठित और बेज़बान न रहकर उच्च विचारवान्, एकता के सूत्र में बद्ध एवं व्यापक दृष्टिकोण-युक्त बन जाय। इस प्रकार वे स्वयं को नवीन विचारधारा का पोषक प्रमाणित कर सकेंगे।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होली

कुमारी विपुलादेवी

आज फाल्गुन की पूर्णमासी है। सामने हरे-भरे पुष्पित आम्र-वृक्षों की पंक्तियाँ दूर तक फैली हुई हैं, उनके उन्नत भालों पर चन्द्रदेव की आनन्ददायी शुभ्र, निर्मल, प्रकाशकिरणें गिर रही हैं। दूर सड़क पर होली के गीतों की अस्पष्ट रागिनी वायु में बहती हुई मेरे कानों में आ रही है। ध्वनि बहुत ही हल्की और अस्पष्ट-सी होने पर भी मैं मानो उसकी उत्साहमय स्फूर्तिदायिनी भावनाओं से प्रभावित हो रहा था। सैकड़ों लड़के झुण्ड बनाकर परम उत्साह के साथ उच्च स्वर में गा रहे थे—"होली माता दें आशीष, तुम जियो कोटि बरीष।"

समुद्र पार होनेवाली तोपों की गरज, बम वर्षक वायुयानों की आकाश में उड़ने पर होनेवाली, नाशकारी मृत्युगीत गानेवाली सनसनाहट, टैंकों की प्रबल गति और दुर्भिक्ष-पीड़ित करोड़ों मनुष्यों के अन्तर की हाहाकारी रुदन-ध्वनियाँ, ये सब दूर से आनेवाले उस गीत के आनन्द के तले दब गईं। मेरी चिर-सङ्गिनी निराशा और वेदना, एक क्षण के लिए बाँध तोड़कर सहसा उमड़ पड़ी एक दार्शनिक धारा में बह गईं। आज पन्द्रह वर्षों से मैं अपनी ही सीमा में मानो कारा-बद्ध हूँ, अपने ही दुःख में बन्दी हूँ। गत पन्द्रह वर्षों से मेरी इस विस्तृत सुन्दर कोठी में दीपावलियों के हर्ष से चमकते हुए दीप नहीं जले, पन्द्रह वसन्तों की वायु मकान के अन्दर रहनेवाले मुझ हतभागे मनुष्य की आत्मा को बिना स्पर्श किये ही बह गई, कितने रजत और स्वर्ण से रुपहली रातें और सुनहरे दिवस गुपचुप आये तथा मेरी आत्मा के अवरुद्ध द्वार को खटखटाकर चले गये, मैंने उनकी ओर नहीं देखा। आनन्द मानो मेरा चिरवैरी है, मेरे निवास-स्थान की सीमा के अन्दर उसका प्रवेश वर्जित है। किन्तु आज···आज मेरे धैर्य की सीमा टूट गई, दुःखों की सीमा भी टूट गई, मेरी सहनशक्ति की भी सीमा समाप्त हो गई है। मैं अपने उस कमरे के अन्दर से निकलकर बाहर बाग़ में आया, जिसके अन्दर मैंने अपने अत्यन्त सन्तप्त वेदना-भरे क्षणों को व्यतीत किया था। घर के बाहर निकलकर मैं अपने परम प्रिय फूलों के बाग़ में जा खड़ा हुआ। पन्द्रह वर्षों से बेमरम्मत पड़ा हुआ मेरा फूलों का बाग़, जिसका अपने बचपन में मैंने स्वयं अपने हाथों निर्माण किया था और जो यौवन के रङ्गीन स्वप्नों का केन्द्र रहा, मेरी उदासीनता और वेदना-भरे दिवसों की गवाही देता हुआ दूर तक फैला दृष्टिगोचर हो रहा है। मेरी असंख्य अभिलाषाओं और लालसाओं से भरे, बड़े लाड़-प्यार के साथ लगाये हुए गुलाब, आज जङ्गली झाड़ियों के रूप में परिवर्तित हो गये हैं। इस बाग़ को—जो अब बाग़ के नाम से नहीं पुकारा जा सकता—देखकर मेरे दुःख-पूरित गत पन्द्रह वर्षों के निरानन्द जीवन का थोड़ा सा अनुमान लगाया जा सकता है। समय का यह विख्यात सुन्दर बाग़, अपने स्वामी की और दुःख के कारण इस समय पूर्ण रूप से अस्त-व्यस्त पड़ा, मानो अपने दुर्भाग्य पर रो रहा था। शोभा विलासितामय मधुर सौन्दर्य का प्रतीक वह बाग़ आज भग्न तथा नैराश्य के चरम बिन्दु तक पहुँच चुका था। दर्शक के समान तटस्थ भाव से मैं भाराक्रान्त हृदय से चक्कर काटने लगा।

लोग कहते हैं कि जीवन एक क्षणभंगुर स्वप्न है। जानता कि यह सत्य है या मिथ्या, किन्तु यदि वह सत्य बहुत ही भयानक, बहुत ही भीषणतर और नीरस। पैंतालीस वर्षों के लम्बे दिवस मेरे सम्मुख हैं। सामने खड़े-खड़े गत जीवन के चित्र देखने लगा। दूधिया चाँदनी मेरे पैरों के नीचे बिछी हुई है। पौधों के कहीं चाँदनी की मनोहर किरणें गिर-गिर कर प्रकाश हैं। कहीं पर हलकी श्वेत चन्द्र-किरणों के मध्य में स्थित छाया इतनी सुन्दर और मधुर प्रतीत हो रही है, मानो के सरोवर में पुरइन के पत्ते बिछे हों। हिलते हुए उनकी टहनियाँ, मुरझाये हुए फूल, सूखे पत्तों के शीतल लहराता हुआ सुगन्धित पवन, यह रात पूर्णिमा, यह सब कितना अद्भुत और नवीन है। काल के गर्त में, मन में बहुत नीचे दब चुकी हैं, वे नवीन होकर उभर आई हैं—जो नष्ट होकर, टूट चुका पुनः निर्माणोन्मुख हो उठा है, मेरी पीड़ित आत्मा अपनी पीड़ा के भार को अपने से परे फेंककर, एक भाव से हँसना चाहती है, लेकिन यह क्या···!

मैं अत्यन्त विचलित हो उठा। मुझे अपने शिवरतन की याद आई। खेल-भरे वे दिन और मधुर रातें तथा उनके साथ वे क्षण जिनमें दुःख निराशा जैसी कोई भी वस्तु मस्तिष्क और हृदय नहीं करती, मानो रत्न-जड़ित चमकीले पर लगाकर आ खड़े हुए। हम दोनों भाई एक दूसरे को चाहते थे, एक दुःखी होता तो दूसरा रोने लगता। में, दौड़ते-दौड़ते गिर पड़ने पर चोट लग जाती तो परिमाण नापने के लिए, उसी तरह गिर कर, लगा लेता। इतनी सहानुभूति, इतना स्नेह कि ऐसा था जैसे हम एक डाल के दो फूल हैं, ऐसे फूल जो मुस्कराते एक ही स्थान पर अपना सम्पूर्ण जीवन शिवरतन, शिवरतन...।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु फिर हुआ क्या। एक पिता के दो पुत्र और एक के दो पुष्प कितना अन्तर है दोनों में! एक डाल के फूल ही स्थान पर खिले और हँसे, वायु के झोंकों में झूले-मुस्कराये फिर मुरझाकर अनन्त की गोद में विलीन हो गये। लेकिन पिता के दो पुत्र साथ-साथ हँस-खेलकर बड़े हुए और बचपन साथ-साथ हमेशा के लिए एक-दूसरे से अलग हो गये, अपने स्वार्थों के लिए एक दूसरे के जानी दुश्मन बन बैठे।

दुश्मन! हाँ जानी दुश्मन! पर क्यों? मैं सोचने लगा कि शत्रुता में मेरा अपराध कितना था। शिवरतन मेरा सगा भाई था, बचपन में ही हम मातृहीन हो गये थे। मैं इसी से बहुत अधिक प्यार करता था। मुझे वे दिन याद जब हम दोनों एक साथ खेले-पढ़े और बढ़े थे। मैं उससे वर्ष बड़ा था, इससे प्रत्येक स्थान पर मुझे अपना बड़प्पन पड़ता था। खेल के मैदान में, फूलों की प्रतिद्वन्द्विता गूँथने के समय और साथियों की दौड़ के समय, प्रत्येक पर, प्रत्येक समय मैं उसका ध्यान रखता। मैं जान-कर अपना गेंद ख़ाली जाने देता, अपनी पूर्णप्राय माला तोड़ देता और दौड़ में जान बूझकर पीछे रह जाता, जिससे के गौरव और आनन्द का अनुभव करके वह प्रसन्न हो और प्रसन्नता से मैं भी प्रसन्न होऊँ। मुझे स्मरण आया कि मैंने अपने सम्पूर्ण सुन्दर खिलौने उसे खेलने के लिए दे और जब खेल के बीच में ही रूठकर, क्रुद्ध होकर उसने उन पटक-पटककर तोड़ डाला था, तब मैं दुःखी नहीं हुआ उस पर नाराज़ भी नहीं हुआ था, बल्कि उसे मनाने की सोचने लगा था। तब कौन जानता था कि उसने जिस मेरे बड़े प्रयत्नों और अभिलाषाओं के खिलौनों को इतने भाव से पटक कर तोड़ डाला है, उसी तरह मेरी आशाओं, मीन स्वप्नों और उसके प्रति मेरे अन्तःकरण के स्नेह और को भी, प्रस्तर-खण्डों पर पटक-पटककर तोड़ डालेगा। सोची थी यह बात!

ह प्यार और उसकी निराशा कितनी भयङ्कर है। आशा को ऊपर उठाती है किन्तु निराशा अन्धकार के गर्त में देती है। वास्तव में समस्त प्रेम एक ही प्रकार के, एक के बने हुए होते हैं। चाहे भाई का प्यार हो, या माँ या प्रेमी-प्रेमिका का, समस्त प्रकार के प्रेमों की प्रेरणा मा के अन्तःकरण के एक ही प्रकार के मूल स्रोत से होती उनके परिमाण में ही अन्तर रहता है। प्रायः घनिष्ठ के साथ होनेवाला प्यार और शत्रुता एक ही सी ता और शून्यता उत्पन्न कर देते हैं और आत्मा गहरी तथा बेचैनी से भर जाती है। अभागे निर्मम शिवरतन कितना अधिक प्यार करता था किन्तु उसे मेरा प्रेम और नुभूति केवल मज़ाक़ ही ज्ञात होती थी। उसने मेरा फूल में मिला दिया, मेरी उदारता और स्नेहशीलता का अनुचित लाभ उठाया। वह गिरा और अपने साथियों की दया से निरन्तर गिरता ही गया। उसके सम्बन्ध में असंख्य बातें मुझे सुनाई पड़ती थीं, मैंने सुना कि वह शराब पीता है और जुआ भी खेलता है और इस छोटी अवस्था में ही वह समस्त अवगुणों की खान हो गया है। मैंने और बाबूजी ने उसे समझाने-बुझाने की चेष्टा की, राह पर लाने का अनवरत प्रयत्न किया किन्तु उसने न माना और न सुना ही। पहले तो वह उन बातों को हँसी में उड़ाता रहा, पर एक दिन उसका सारा भण्डा फूट गया। वह शराब पीकर और उसके नशे में चूर होकर एक रात में घर आया और बाबूजी से अनेक अकथ्य बातें कहकर उसने उनका अपमान किया। यह ऐसी बात थी, जिसे मैं सहन नहीं कर सकता था और न होश में रहते ऐसा दृश्य देख ही सकता था। मैंने उसकी अच्छी तरह ख़बर लेकर घर से निकाल बाहर किया। तब उसकी उम्र केवल बीस साल की थी।

इसके बाद पूरे दस वर्ष तक मुझे न जाने कितने मुक़दमे लड़ने पड़े। उस दुष्ट ने मेरे विरुद्ध कितने ही षड्यन्त्र रचे। उसने मेरे कुटुम्बियों को प्रलोभन देकर अपनी ओर फोड़ लिया और प्रत्येक सम्भव रीति से मुझे हानि पहुँचाने की कोशिशें कीं। उसके कार्यों से बाबूजी को इतनी मर्मान्तक पीड़ा हुई कि एक दिन उनका हार्ट फेल हो गया। मरने के पूर्व वे उस नीच को एक भी पैसा न देने की वसीयत लिख चुके थे। लेकिन मेरे ही कुटुम्बी और मित्र मेरे शत्रु प्रमाणित हुए, उन्होंने शिवरतन का साथ दिया और मेरे ऊपर जालसाज़ी का अभियोग खड़ा करके मुक़दमा चल सकने की सामग्री भी जुटाई। अलका जो मेरे पिता के एक मित्र की कन्या और मेरी मंगेतर थी—मेरी प्रियतमा अलका—उसकी याद आते ही मेरे हृदय का घाव मानो पुनः रक्तरञ्जित हो उठा। मेरी आँखों से आँसू की धारायें बह चलीं और मैं फूट-फूट कर रोने लगा। शिवरतन अभागा शिवरतन। उसकी ही काली करतूतों के कारण उसके पिता ने अपना विचार बदल दिया और जिस समय शिवरतन के कुकृत्यों के कारण अत्यन्त उत्तेजित होकर मैं अपना और उसका ख़ून एक कर देने की सोच रहा था, मैंने सुना कि वह अपने हिस्से की पूरी ज़मीन-जायदाद और मुक़दमा नाममात्र मूल्य में बेचकर और लाखों रुपया हाथ में करके किसी दूर देश में भागकर चला गया है। जाते-जाते एक पत्र में अपने हृदय का सम्पूर्ण विष-वमन करके मेरे पास भेज गया, जिसकी ज्वाला से अहर्निश मेरा हृदय जलता रहता है। आज भी जिसकी अग्नि मेरे सर्वाङ्ग को भस्म कर रही है। और तब याद आई अलका की। मेरे उन दुःखपूर्ण दिवसों में वही मेरी एकमात्र सङ्गिनी थी। अतीव मुग्धकारी था उसका मुखड़ा, कोयल सी मीठी-मीठी आवाज़ थी, मधुरिमा से भरी, कानों में जैसे मधु-सा उँडेल देती थी।

मुझे स्मरण आया कि एक दिन जब मैं बहुत उदास होकर इसी फूलों के बाग़ के उस छोटे-से कोने में, एक प्रस्तरखण्ड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर बैठा आकाश की ओर देख रहा था, सहसा अलका आई और दूसरे ही मिनट बहुत घबराहट के साथ बोली—"मेरा मन बहुत ही घबरा रहा है।" मेरा ध्यान भङ्ग हो गया। चौंककर मैंने पूछा—"क्या है अलका ?"

"मेरा मन बहुत घबरा रहा है !"

"क्यों ?" मैंने पूछा।

"क्या जाने क्यों ? जी डूबा जाता है जैसे।"

उसकी व्यथा से व्यथित होकर, उसकी उदास मुखमुद्रा पर दृष्टि डाल कर, अत्यन्त विचलित होकर मैंने पूछा—"दवा खाई ?"

"नहीं !"

"तब देता हूँ।"

मैंने उठकर उसे दवा लाकर दी। फिर पास बैठकर मन-बहलानेवाली बातें करने लगा। देखते-देखते मेरे मन की उदासी मुझसे दूर भाग गई और मैं अपनी ही बातों में वह जाकर प्रसन्न हो उठा। तब मैं देखता क्या हूँ कि अलका का चेहरा भी पुष्प के समान खिल उठा और वह अत्यन्त मधुर हँसी हँसते हुए बोली—"ठीक इसी तरह तुम खुश रहा करो। प्रसन्नता, सौ चिन्ताओं की एक ही दवा है।"

विस्मय-चकित स्वर में मैं बोला—"क्या कहती हो ?"

"न जाने क्यों, जब तुम उदास रहते हो, मेरा मन भी घबड़ाने लगता है।"

मुझे उसकी बात पर विश्वास न हुआ लेकिन बाद में मैंने देखा कि उसकी बात में बहुत अंशों तक सत्यता थी। जब-जब मैं अपने भाई की दुष्टताओं तथा संसार की सांसारिकता-भरी दुरङ्गी चालों से व्यथित होकर उदास बैठा होता, मेरा मन चिन्ता से उद्विग्न हो उठता, न जाने किस प्रकार उसे इस बात का पता चल जाता और वह तत्काल अपने घर से भागी-भागी चली आती मुझे आश्वासन देने।

पिताजी की मृत्यु हो गई, शिवरतन कलङ्क का बोझ मेरे सिर पर लाद कर प्रवासगामी हो गया और अलका का विवाह हो गया, मेरे साथ नहीं, किसी अन्य के साथ। शिवरतन मेरा भाई था, सगा छोटा भाई, वह नीच पतित था, उसके कारण ही अलका के पिता ने सगाई तोड़ दी। अलका उनकी इकलौती सन्तान थी, निःसन्देह वे अपनी कन्या को सुखी देखना चाहते होंगे पर उन्होंने वही भूल की जो संसार के आधे पिताओं ने की है और आगे भी करेंगे।

मुझे वे सब बातें स्मरण आईं। वेदना से मेरी छाती फटने लगी। मैं एक भयङ्कर अन्धकार में सिर से पैर तक डूब गया। मेरा जीवन आरम्भ हुआ था फूलों के बाग़ में, मैंने अपनी साँसें ली थीं आशा की वायु में, किन्तु भाग्य के एक ही अट्टहास ने मुझे कहीं का न रक्खा। कल्पनाओं का सुखद जाल एक क्षण में छिन्न-भिन्न हो गया, स्वप्नों की रङ्गीनी मिट गई, अरमानों की हँसी छिन गई और मैं हताश मार्ग भूलकर जङ्गल में [illegible] वाले यात्री के तुल्य थका-हारा खड़ा देखता रह गया।

मैंने आकाश की ओर देखा, वहाँ अनगिनती तारे [illegible] हैं। क्या ये मेरे हृदय की वे ही आशायें हैं, जो [illegible] भागकर आकाश के अन्तस्तल में जा छिपी हैं !

मैं सोचने लगा—होली आई है कितने अरमान [illegible] और प्रेम को लेकर। पर अपने असंख्य कुटुम्बियों, बन्धुओं और मित्रों के रहते हुए भी मैं अकेला हूँ और आजीवन अकेला ही रहूँ। होली दो बिछुड़े हुए हृदय मिलाने के लिए, आपस के वैमनस्य की मिट्टी को पवित्र जल से धोने के लिए आती है, पर क्या अब मेरी गई आशायें और स्फूर्ति मुझे वापस नहीं मिल सकतीं। [illegible] कल्पना-लेख और उसके उन रहस्यमय हज़ारों रङ्गीन रङ्गों के महलों का अस्तित्व क्या मेरे लिए, सदा के लिए मिट गया।

शिवरतन ! मेरा भाई शिवरतन आज कहाँ होगा ! [illegible] भी कहाँ होगी ? मेरे समान वे भी मुझे याद करते होंगे। चिन्तित और सन्तापित होने पर क्या आज भी अलका का घबरा उठता होगा ?

एक डाल के दो फूल और एक पिता के दो पुत्र।
एक प्राण दो शरीर और दो शरीरों के एक प्राण।

मैंने देखा कि ये सारी बातें कवियों की भाषा में जाकर रह गईं। जीवन जीवन है और उसमें की [illegible] में से निकल कर मैं जीवित रहा हूँ...मैंने जीना सीखा है। यह क्या, मैं सहसा चौंक उठा ! लड़कों ने ज़ोरों के [illegible] चिल्लाकर सड़क पर दौड़ते हुए कहा—"होली माई [illegible] जुग जुग जीवो कोटि बरीष।"

यह क्या सुन रहा हूँ मैं ? करोड़ वर्ष कौन जीवित [illegible] यह आशीर्वाद कौन लेगा ? इतने दिनों तक कौन जीना चाहता है, निराशा, वेदना या अनन्त पीड़ा। मैं नहीं [illegible] कि इतने दिनों तक जीवित रहकर मैं क्या करूँगा। [illegible] मुझे ही जीना पड़े, इतने दिनों तक मैं जीवित रहूँ तो।

मैं चौंक उठा। मेरे नेत्रों के सम्मुख से मानो [illegible] परदा हट गया। अवाक् होकर मैंने देखा कि जीवन [illegible] है, अति विशाल। उसके सम्मुख मेरी निराशा, [illegible] मेरी पीड़ा सब कुछ तुच्छातितुच्छ है। जो होली [illegible] तक जीवित रहने का वरदान देती है, उसी के अञ्चल [illegible] खड़े होकर मैं वेदना और उदासी के समुद्र में डूबता [illegible] यह उचित है !

मैंने देखा बाग़ में गुलाब, निवार और अन्य अनेक फूल सिर उठाये मेरी ओर देख रहे हैं। आम के बौरों वाली सुगन्ध, नींबू और सन्तरों के फूलों की सुगन्ध में [illegible] में बहती हुई मेरे पास आ रही है। प्रत्येक वृक्ष और [illegible] कोंपलों से भर उठे हैं, जीवन एक नये आशामय [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...व उपस्थित है। तब यह देखकर, प्रकृति के उस विशाल ...क्षेत्र में अपना कष्ट और अपनी दारुण असह्य मनोवेदनायें ...न अस्पष्ट और हलके रूप में दृष्टिगोचर हुईं।

धीरे-धीरे मेरा हृदय एक अनिर्वचनीय आनन्द से भरने ...। मैं बड़ी देर तक बाग़ में घूमता अतीत की स्मृतियों से ...ता रहा। मेरी अन्तरात्मा में छाया अवसाद का घना ...ल धीरे-धीरे मिटने लगा। मैं नये जीवन में नवीन साहस ...थ प्रवेश कर रहा था।

और तब एक विराट् जय-ध्वनि ने मुझे जैसे सोते से जगा दिया। शायद होली में आग लग चुकी है। चौंककर मैंने अपने नौकरों को आवाज़ दी और उन लोगों की प्रतीक्षा न करके दौड़ता हुआ चल दिया, होली की उस पवित्र अग्नि में हाथ-पैर सेकने जो संसार के दुःखों से पीड़ित मानवों के विषाद और क्लेशकर भावनाओं को जलाकर राख कर देने के लिए प्रति वर्ष नये ठाठ के साथ आती है, और दुःखी हतोत्साह आत्माओं में नवजीवन का मन्त्र फूँक जाती है।

——

रिक्शावाला

प्रोफ़ेसर विद्याभास्कर 'अरुण'

...नङ्गे सिर, नङ्गे पैरों वह भागा जाता रिक्शावाला।
...र पर जलता मध्याह्न-तपन सौ-सौ पावक-कण बरसाता।
...के पदतल में कोलतार-पथ सीसे-सा पिघला जाता॥
...-दिवस-दीर्घ फैले पथ में उसकी क़िस्मत को छाँह कहाँ।
...के नीचे मसल-मसल चलता वह अपनी चाह वहाँ॥
...घुटनों तक धोती मटमैली, कुर्ता सौ-सौ छेदोंवाला।
...नङ्गे सिर, नङ्गे पैरों वह भागा जाता रिक्शावाला॥
...में बैठा है कोई साहब मोटा—भैंसे-जैसा।
...वे तोंद बड़ी अपनी खा-खा मज़दूरों का पैसा॥
...बड़ी शान से बैठा है ओठों में एक सिगार लिये।
...खों में सदा चढ़ा रहनेवाला-सा एक ख़ुमार लिये॥
...थोड़े-से पैसों के बदले मानव को ढोर बना डाला।
...नङ्गे सिर, नङ्गे पैरों वह भागा जाता रिक्शावाला॥
...हाँपता, काँपता, स्वेद-स्नात पर ज़ोर लगाये जाता है।
...लोगों की भीड़ देख घण्टी 'टनटनन' बजाता है॥
...लेने कहीं, विवशता से पल-भर भी पग जो रुक जाता।
...गाये! जल्द चल, साँस न ले' सुन कड़क सहम-सा वह जाता॥
...श्रम करता, गाली भी खाता, बुझती फिर भी न क्षुधा-ज्वाला।
...नङ्गे सिर, नङ्गे पैरों वह भागा जाता रिक्शावाला॥
...पर पहुँच उतरता जब उसका आश्रय लेकर साहब।
...भोले दिल में पलती हैं कितनी भोली आशायें तब॥
...एक इकन्नी फेंक उसे साहब घुस जाता है भीतर।
...भर विवश-सा रह जाता वह घूँट आँसुओं के पीकर॥
...दिल की आशा भी दुर्बल, पड़ता उठते पल ही पाला।
...नङ्गे सिर, नङ्गे पैरों वह भागा जाता रिक्शावाला॥

——

व्यवधान

श्रीयुत ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

सखी, मेरा छोटा संसार!
वे कहते हैं जग अनन्त है, विस्तृत है भूलोक।
रम्य, रम्यतर, शोभित, सुन्दर है सुषमा का ओक॥
सखी, होगा ऐसा संसार!
जहाँ नित्य प्राची मुसकाकर बरसाती नव राग,
अमरयौवना रचे प्रतीची नित्य नया शृङ्गार।
सखी, क्या है ऐसा संसार?
जहाँ झरा करते हैं निर्झर भर-भर मुक्ताभार।
सम्मोहन गिरिवीथी जिसमें लिये खड़ी उपहार॥
सखी, अद्भुत होगा संसार।
जिसमें कोटि-कोटि नर-नारी बसते नगर विशाल।
जहाँ सदा गाते-से रहते सागर दे-दे ताल॥
अरी वह मुखरित है संसार।
कैसे कहूँ कि वे झूठे हैं बसते उनमें प्राण।
कैसे कहूँ कि आँखें झूठी अरी, बताओ त्राण॥
सखी, है छोटा ही संसार
जब ये अचल भित्तियाँ घर की घिर आती हैं पास।
कैसे मानूँ बात, रुद्ध-सा होता है जब श्वास—
सखी, विह्वल मेरा संसार।
यहाँ भीत-सा आता मारुत बिना लिये नव-प्राण।
शङ्कित-सा पर्दे से झाँककर करता सूर्य प्रयाण।
सखी, निर्जीव शून्य संसार।

——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वनस्थली—एक आदर्श महिला-विद्यापीठ

श्रीमती किरणमयी देवी

जिस 'वनस्थली विद्यापीठ' की चर्चा इधर पाठक बहुत दिनों से सुन रहे हैं और जिसका निरीक्षण करके देश के अनेक गण्य-मान्य नेताओं ने सन्तोष प्रकट किया है उसकी स्थापना नितान्त नाटकीय ढङ्ग से हुई थी, यह बहुत कम देशवासियों को ज्ञात होगा। आक्टोबर सन् १९३५ की बात है। वनस्थली में

स्वर्गीय शान्ताबाई

उन दिनों ग्राम-सुधार-कार्य चल रहा था। उस कार्य के प्रवर्त्तक थे श्री हीरालाल शास्त्री। शान्ताबाई उनकी एकमात्र पुत्री थीं। शास्त्रीजी की हार्दिक अभिलाषा यह थी कि शान्ताबाई स्त्री-समाज की सेवा का आजीवन व्रत ले। इसी के लिए वे उसे तैयार करना चाहते थे। शान्ताबाई की अवस्था केवल १२½ साल की थी परन्तु वह बड़ी होनहार प्रतीत हो और उससे सभी को बहुत आशायें थीं। परन्तु दैव को और ही स्वीकार था। उसी वर्ष अप्रैल में शान्ताबाई अचानक देहान्त हो गया। परन्तु जो उद्देश्य सामने था, छोड़ देने योग्य नहीं था। शान्ताबाई का यह अभाव एक रूप में पूरा हो गया। वनस्थली विद्यापीठ यही पृष्ठभूमि है। इस संस्था की भावना समझने के लिए इस पृष्ठभूमि का ज्ञान है। संस्था के कार्य-विस्तार के साथ-साथ भावना को अक्षुण्ण बनाये रखना विद्यापीठ का सबसे बड़ा उद्देश्य और प्रयत्न

इस संस्था का आरम्भ केवल ६ से हुआ था। पर कुछ ही समय में इसकी सेवाओं की क़द्र की और इसके के प्रति सहमति प्रकट की। फल कि इसकी छात्राओं की संख्या में वृद्धि होती गई। साधन आदि का हुए भी छात्राओं की संख्या आक्टोबर तक २८५ तक पहुँच गई। ये छात्रायें विभिन्न प्रान्तों से—जैसे राजपूताना, दिल्ली, पञ्जाब, संयुक्त प्रान्त, बिहार, महाराष्ट्र, गुजरात, सिन्ध, मध्यप्रान्त, आई हैं। एक ही छात्रावास में वे परिवार की भाँति रहती हैं। इस संस्था ने एक छोटी-सी अन्तःप्रान्तीय संस्था का रूप धारण कर लिया है।

संस्था सर्वसुलभ रहे और उद्देश्य की पूर्ति अधिक से अधिक इसे दृष्टिकोण में रखते हुए इस ढङ्ग से की गई है जिससे छात्राओं को कम से करना पड़े। शिक्षा के लिए अभी शुल्क नहीं है। भोजन, स्टेशनरी, वस्त्र, तेल, साबुन आदि के लिए कुल आजकल केवल २०) मासिक व्यय होता है। यह की छात्राओं के लिए है। इस व्यय में १०) तो स्थायी और शेष १०) महँगाई के रूप में है। उनसे बड़ी १२) स्थायी और १२) महँगाई, कुल २४) व्यय है। समय प्रत्येक छात्रा से २५) और भी प्रवेश-शुल्क के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ते हैं, जिनका उपयोग उस ख़र्च में सहायता पहुँचाने के लिए
ता जाता है जो छात्रों के लिए शुद्ध खादी के बिस्तर,
न, लालटेन आदि वस्तुओं के देने में होता है। इसके अतिरिक्त
पीठ में अन्य किसी प्रकार का शुल्क नहीं है। इस प्रकार
पीठ की शिक्षा अत्यन्त सस्ती है। सम्भवतः देश में अन्य
संस्था संरक्षकों से इतना कम ख़र्च लेकर शिक्षा का
व करनेवाली नहीं होगी। यहाँ की अधिकांश छात्रायें अपना
च स्वयं उठाती हैं। जिन छात्राओं के घर की
र्थिक स्थिति अच्छी नहीं होती उनको छात्रवृत्ति
रा भी सहायता पहुँचाई जाती है। १०००)
सिक की छात्रवृत्ति इस समय छात्राओं को दी
रही है। छात्रवृत्ति की इस रक़म को छोड़-
छात्रावास ख़र्च के मामले में स्वावलम्बी है।
००) की मासिक छात्रवृत्ति तथा अन्य विशेष
र्च के अलावा, जो हर साल मकानों, पुस्तकालय
ा ज़रूरी सामान के सम्बन्ध में होता रहता है,
द्यापीठ का ४०००) मासिक का सालाना ख़र्च
। चूँकि छात्राओं से शिक्षा का कोई शुल्क
लिया जाता, यह सारा ख़र्च – सहायता के रूप
जो रुपया संस्था को मिलता है उसी के आधार
चलाना होता है। अभी तक संस्था के पास
थायी आय का कोई साधन नहीं है। इतने बड़े
र्थिक व्यय को चलाने के पश्चात् स्थायी कोष
लिए धन एकत्र करना अभी तक सम्भव
हुआ है। विद्यापीठ के सामने यह प्रश्न
वित रूप में है कि आर्थिक दृष्टि से एक सीमा
संस्था स्वावलम्बी बन सके। इस विषय में
योजनायें विचाराधीन हैं। आशा है कि
दिशा में कुछ न कुछ अवश्य किया जा
गा। साथ ही विद्यापीठ को इस बात का
मविश्वास भी है कि केवल धन की कमी से
ई भी अच्छा काम रुक नहीं सकता।

विद्यापीठ एक स्वतन्त्र और राष्ट्रीय संस्था
जहाँ बी० ए० तक की शिक्षा का प्रबन्ध है।
का उद्देश्य लड़कियों को सर्वतोमुखी शिक्षा
ा है जिससे वे सफल गृहिणी और सफल
ा के साथ-साथ एक जागरूक और सफल नागरिक भी बन
और घर से बाहर के जीवन में रुचि रखती हुई उसमें यथा-
क योग भी दे सकें। विद्यापीठ की शिक्षा के आधार-स्तम्भ
तीय संस्कृति और विशुद्ध राष्ट्रीयता हैं। भारतीय संस्कृति
लात्पर्य जीवन-सम्बन्धी उस विशिष्ट दृष्टिकोण से है जिसमें
कन में अधिकार की अपेक्षा कर्तव्य (धर्म) पर अधिक ज़ोर
दिया गया है। किन्तु जीवन में अधिकार को भी स्थान
है, और देश की जो आज विशेष परिस्थिति है उसका ध्यान
रखते हुए इसका महत्त्व और भी अधिक हो जाता है। इसी
लिए विद्यापीठ को 'राष्ट्रीयता' पर स्पष्ट रूप से ज़ोर देना
आवश्यक जान पड़ा है। उपर्युक्त उद्देश्य और आधार-स्तम्भों
को सामने रखकर विद्यापीठ के पञ्चमुखी शिक्षा-क्रम का निर्माण
किया गया है जिसके पाँचों अङ्ग इस प्रकार हैं--

(१) नैतिक शिक्षा—इसमें सच्चे धर्म-तत्त्व की शिक्षा का समावेश हो जाता है और इसका लक्ष्य छात्राओं में वे समस्त मानवोचित और व्यावहारिक गुण पैदा करना है जिनसे वे भली बन सकें, उनमें समाज-सेवा की वृत्ति जाग्रत् हो और वे जीवन में सफल हो सकें।

(२) शारीरिक शिक्षा—इसमें कई प्रकार के खेलों और व्यायामों का समावेश किया गया है, जैसे—तैरना, घुड़सवारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साइकिल-सवारी, जम्बिया, तलवार, भाला, लाठी, लेजिम, वाली बाल, बास्केट बाल, कबड्डी, राउंडर इत्यादि, जिससे छात्राओं में शक्ति, स्फूर्ति और साहस आवे तथा वे स्वस्थ रह सकें।

(३) गृहस्थ-शिक्षा—इसमें घर-सम्बन्धी सब काम, जैसे—भोजन बनाना, सिलाई और कसीदा तथा कताई आदि का समावेश किया गया है। विद्यापीठ का लक्ष्य यह है कि लड़की उच्चतम बौद्धिक शिक्षा प्राप्त कर लेने के बाद भी साधारण गृहस्थी के कामों में रुचि रखनेवाली बने और हाथ से काम करने के महत्त्व को समझे।

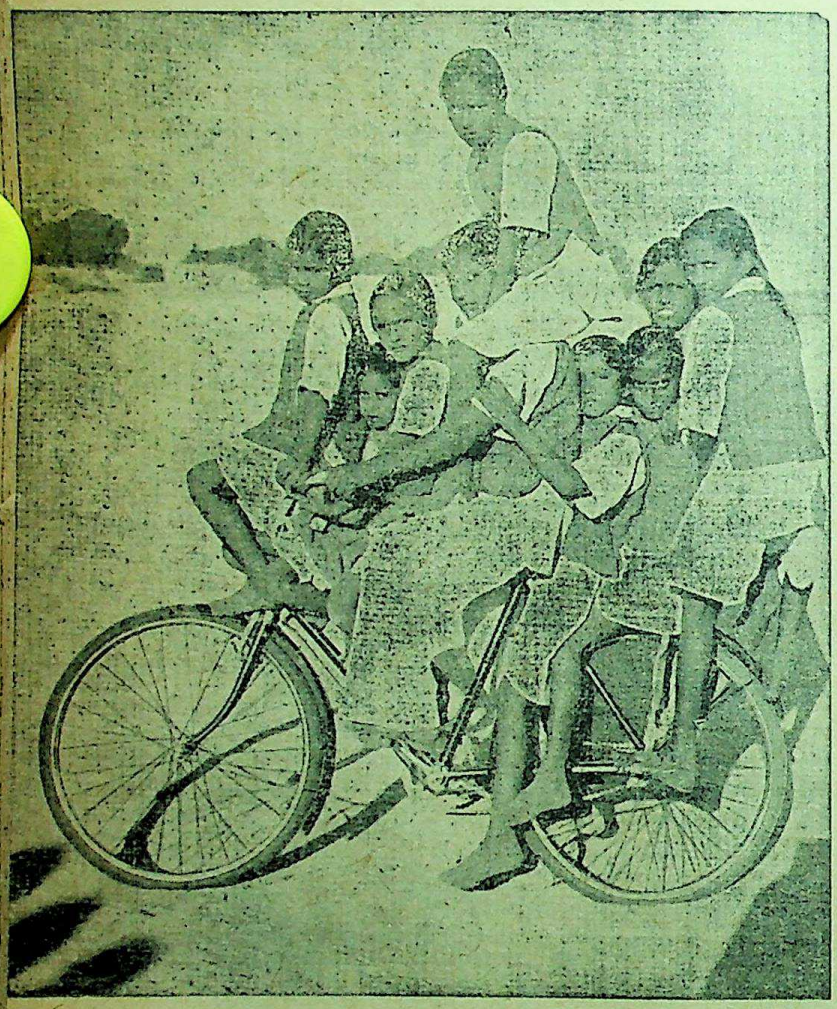

वनस्थली में साइकिल के खेल का एक दृश्य

(४) ललित-कला-शिक्षा—इसमें चित्रकला और सङ्गीत का समावेश किया गया है, जिससे छात्रा के जीवन में सुरुचि, सौन्दर्य और माधुर्य आ सके।

(५) पुस्तकीय शिक्षा—इसमें उन तमाम विषयों की शिक्षा का समावेश किया गया है जो छात्रा के बौद्धिक विकास में और उसे सफल गृहिणी, माता तथा एक जागरूक और सफल नागरिक बनाने में सहायक होंगे।

विद्यापीठ के समूचे शिक्षाक्रम को दो विभागों में बाँटा गया है—(१) संस्कृता-विभाग—इस विभाग का विद्यापीठ का अपना स्वतन्त्र पाठ्यक्रम है। इसमें उस अनिवार्य [illegible] समावेश किया गया है जो विद्यापीठ की राय में प्रत्येक [illegible] के लिए आवश्यक है। यह विभाग एक से आठ [illegible] बँटा हुआ है। इस विभाग की अन्तिम परीक्षा [illegible] जिसे पास करने पर छात्रा को विद्यापीठ की ओर से [illegible] का प्रमाण-पत्र दिया जाता है।

(२) बाह्य-परीक्षा-विभाग—इसमें छात्राओं [illegible] बाहरी परीक्षाओं के लिए तैयार किया जाता है। [illegible] शिक्षा का पाठ्यक्रम परीक्षाओं के अनुसार होता है। [illegible] छात्राओं की पञ्चमुखी शिक्षा का इसमें [illegible] ध्यान रक्खा जाता है। ललित-कला की [illegible] लिए छात्राओं को सुविधा रहती है। गृह[illegible] के लिए कताई तथा पाक आदि के कार्य [illegible] और शारीरिक शिक्षा की दृष्टि से खेल [illegible] सब छात्राओं का भाग लेना अनिवार्य है। [illegible] सबके अतिरिक्त नैतिक शिक्षा की दृष्टि [illegible] चारित्र्य-निर्माण पर तो ध्यान दिया ही [illegible] विद्यापीठ में छात्राओं को राजपूताना बोर्ड [illegible] स्कूल और इन्टरमीजियट की परीक्षाओं के [illegible] आगरा यूनीवर्सिटी की बी० ए० की परीक्षा [illegible] निखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद-सम्मेलन तथा [illegible] साहित्य-सम्मेलन की आयुर्वेद परीक्षाओं के [illegible] भातखण्डे यूनिवर्सिटी लखनऊ की सङ्गीत-[illegible] के लिए और जे० जे० स्कूल ऑफ़ आर्ट्स, [illegible] ड्राइंग और चित्रकला की परीक्षाओं के लिए [illegible] किया जाता है। 'संस्कृता' परीक्षा पास [illegible] पश्चात् दो वर्ष में छात्रा हाईस्कूल [illegible] सकती है।

विद्यापीठ में काम करनेवाले कार्य[illegible] एक काफ़ी बड़ी मण्डली है। विद्या[illegible] भाइयों और बहनों की सेवायें चाहता है [illegible] अपने विषय अथवा काम में अधिक से [illegible] योग्यता रखने के साथ-साथ राष्ट्र-सेवा को [illegible] जीवन का प्रमुख ध्येय बनाने को तैयार हों। ऐसे भाइ[illegible] बहनों का स्वागत करने को वनस्थली सदा तैयार [illegible] विद्यापीठ में, कुछ अपवादों को छोड़कर, उच्चतम अलाउन्स [illegible] मासिक है। विद्यापीठ में प्रायः नीचे लिखे अनुसार कार्य[illegible] की आवश्यकता पड़ती रहती है—(१) विभिन्न विषयों के [illegible] ए० और बी० ए० अथवा बी० एस-सी० जो स्कूल अथवा [illegible] विभाग में शिक्षक का काम कर सकें; (२) छोटी कक्षाओं के [illegible] ऐसे कार्यकर्त्ता जो बच्चों के जीवन में रस ले सकते हों और [illegible] बुनियादी तालीम अथवा दूसरी पद्धतियों में शिक्षण प्राप्त [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३) कताई, खेल, व्यायाम—आसन, चित्रकला एवं
(४) योग्य और अनुभवी डाक्टर, वैद्य,
(५) कार्यालय के काम का तथा
गोपालन आदि के कामों का अनुभव
(६) छात्रावास के लिए ऐसी महिलायें
हों पर जो छोटी-बड़ी लड़कियों को
बड़ी बहन का-सा प्यार दे सकें और उन्हें
नियम से रख सकें।

वनस्थली का जीवन सादा है। यहाँ रहकर बालिकाओं
देश की सच्ची स्थिति का ज्ञान अनायास ही हो जाता है।
वनस्थली का अपना एक अच्छा पुस्तकालय है जिसको अधिक से
अधिक बढ़ाने का प्रयत्न बराबर जारी है। पुस्तकालय में पुस्तकों
की संख्या इस समय भी १३००० के लगभग है। वनस्थली
अपना सम्पर्क शिक्षण-संसार से बराबर बनाये रखती है। यहाँ
की छात्राओं का किया हुआ काम बाहर कला-उद्योग सम्बन्धी
कमेटियों में जाता रहता है। छात्रायें बाहर की वाद-विवाद
और निबन्ध प्रतियोगिताओं में भाग लेती हैं। इन कामों में
वनस्थली का प्रदर्शन अच्छा रहा है। विद्यापीठ से सम्बन्धित
लगभग ५०० व्यक्तियों का उपनिवेश आज वनस्थली में स्थित
है। रहन-सहन की आवश्यक सुविधाओं का यथोचित प्रबन्ध
किया गया है। जमनालाल बजाज गोशाला, महादेव देसाई
खादीमन्दिर, आयुर्वेदिक औषधालय और एलोपैथिक डिसपेन्सरी
की उपनिवेशवासियों की सम्बन्धित आवश्यकताओं की पूर्ति के
लिए व्यवस्था की गई है। विद्यापीठ में इम्पीरियल और जयपुर
राज्य के डाकघर भी हैं। निवाई स्टेशन से वनस्थली तक
राज्य की ओर से सड़क बन रही है जो बहुत शीघ्र ही बन जायगी।
वनस्थली विद्यापीठ के मकान इस समय तक कच्चे हैं, किन्तु
अब पक्के मकानों की शुरुआत हो चुकी है, संक्षेप में यह
कहा जा सकता है कि वनस्थली विद्यापीठ एक ऐसा स्थान है
जहाँ विभिन्न विषयों के उपासक अपने विषयों की उपासना के
लिए उपयुक्त वातावरण और सुविधायें प्राप्त कर सकते हैं और
साथ ही एक राष्ट्र-निर्माणकारी कार्य में अपना योग देते रह
सकते हैं। वनस्थली की आकांक्षा है कि वह आधुनिक समय के
उपयुक्त भारतीय संस्कृति और शिक्षा का एक सच्चा केन्द्र बने।

——

नियम

पण्डित नारायणलाल कटरियार

चलना एक नियम यह भी है!
दीपों को बस रात-रात भर जलना एक नियम यह भी है!
सघन-सजल बादल का घिरना,
ऊँचे से बूँदों का गिरना,
पलकों के बन्दी लोचन में—
सुखद-सुखद सपनों का तिरना,
हाथ और कोमल फूलों को मलना एक नियम यह भी है!
समय-समय पर हँसना-रोना,
सुख में दुख में जगना-सोना,
इस एकाकी जीवन में क्रम-क्रम
से आना पाना-खोना,
बालक, युवा, वृद्ध तीनों को छलना एक नियम यह भी है!
अन्धकार में आगे बढ़ना,
पर्वत के चढ़ाव पर चढ़ना,
जङ्गल के मूरख पञ्छी का—
बैठ पींजड़े में नित पढ़ना,
यौवन की सीढ़ी से फिसल—सँभलना एक नियम यह भी है!
कड़वा घूँट ज़हर का पीना,
आशाओं पर मरना-जीना,
वर्तमान की तुनुक सुई से—
नित भविष्य की कथरी सीना,
दिन के साथ आयु का क्षण-क्षण ढलना एक नियम यह भी है!
डाल-डाल पञ्छी का उड़ना,
पात-पात मधुपों का जुड़ना,
मदमाती रससनी अधखिली—
कलियों का झोंके पर मुड़ना,
पत्थर-सा कठोर बन हिम का गलना एक नियम यह भी है!
कठिन शरद का पाला सहना,
पगले मन की ज्वाला सहना,
हँस-हँस बरछी, तीर किसी के—
और किसी का भाला सहना,
आँखों से पानी बन ख़ून निकलना एक नियम यह भी है!

——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माता पिता

श्रीयुत रामचन्द्र तिवारी

धनीराम ने चाक के केन्द्रबिन्दु पर घूमते लहरदार मिट्टी के लोंदे को देखा और हाथ पानी में डुबोया। चाक घूमता जा रहा था और मिट्टी उसके मध्य में जैसे उस गति से भ्रमित शीश मटका रही थी। उसने मिट्टी का स्पर्श किया। मिट्टी के कणों ने प्रजापति की उँगलियों का सङ्केत पाया और वे उस गतिवान् चक्र के ठीक बीच में अपने-अपने स्थान पर सतर्क हो गये। धनीराम की उँगलियों ने उस कोमल मृत्तिका के शीतल स्पर्श से एक सन्तोष प्राप्त किया। यह था जो उसे आनन्द भी देता था और भोजन भी प्रदान करता था।

धनीराम के प्रायः चारों ओर राख का ढेर पड़ा था अत्यन्त सूक्ष्म, उपलों और तृणों की भस्म जो वायु के तरल झोंकों से उड़-उड़कर पृथिवी तज जाने का उपक्रम कर रही थी। उसके सम्मुख बाईं ओर एक गड़हा था जो आवाँ था, जिसमें सूखी घास और गोबर का चूरा बीच में देकर कच्ची मिट्टी के पात्र अग्नि पाने को प्रस्तुत हो रहे थे। धनीराम की पत्नी आवें में छोटे-छोटे मटकैने चिन रही थी और उसकी एकमात्र कन्या सुखदा पात्र उठा-उठा माँ को दे रही थी।

सूर्य की किरणें फैल चली थीं। नीलम शीतल भूमि पीली होती जा रही थी। प्रकाश राख के नाना आकृतिवाले कणों के स्पर्श कर अनेक वर्णों को जन्म दे रहा था, वे वर्ण जो चित्रकार को सप्राण चुनौती के समान थे।

धनीराम ने पतली लकड़ी की छड़ उठाई। दाहिने हाथ से उसे चाक के साथ घुमाया। छिद्र पा जाने पर बायाँ हाथ ऊपर जा लगा। धनीराम ने शीघ्रता से पन्द्रह-बीस चक्कर दिये। चाक भन्ना उठा। उसके हाथ पुनः नव आकारों की सृष्टि करने लगे।

सुखदा की माँ ने पैर की पट्टी बाँधते हुए कहा—"छोरी, जा देख, गधे खेतों में न जायँ।"

धनीराम ने सुना नहीं।

सुखदा को खेतों के निकटवर्ती ऊसर खण्ड में घूमने का अवकाश प्राप्त हो गया।

ऊसर में चिलचिलाती धूप पड़ती है। कुछ खजूर के ऊँचे वृक्ष हैं और दूर-दूर पर जैसे प्रहरी के समान बबूल की झाड़ियाँ। एक ओर सूखते ताल के तट पर जो पीपल का पुराना तरुवर है वही अपनी अवस्था-भार से जीर्ण भुजायें फैलाये इस तपते समय बालकों की क्रीड़ा का स्थान है।

पीपल के नीचे नन्नो होगी, गोविन्दी होगी, सुखदेई होगी, मथू होगा।

सुखदा के मन में एक फड़क उठी, वैसी जैसी कि पिंजड़े का द्वार खुलता देख बन्दी पक्षी के हृदय में होती है। वह अब जावेगी, अपने सखा-सखियों के साथ खेलेगी। क्या खेलेगी? इसकी चिन्ता उसे नहीं है। जब वे सब एकत्र होंगे शक्ति का स्रोत कोई न कोई आकार धारण कर ही अभिव्यक्ति खोजने की चिन्ता उन्हें न करनी होगी।

सुखदा तत्काल उठकर खड़ी हो गई।

माँ को कुछ आशङ्का हुई। वह छः वर्ष की अपने छत्तीस वर्ष के आदर्श से नाप रही थी। उसे इतनी उतावली! भय हुआ कि उतावली में अति न हो

बोली—"कहीं जइयो नहीं!"

"कहाँ भेज रही है उसे?"

"गधे देखने।"

धनीराम पैंतालीस से कम नहीं। उसने अपने सबको नापा। कन्या उसकी अकेली है। दो विवाहों उसके नौ बालक हुए, पर वही बची है और धूप, वह तीव्र

जी में उठा कि यह स्वयं क्यों नहीं चली जाती। सुझाव जिह्वा तक न पहुँचा। मटकैना बनकर घूम उसने काटने का डोरा हाथ में ले लिया। देखा, पत्नी बाँध रही है।

मटकैना भूमि पर रख दिया। सुखदा चली गई। उठा, अकेली इस दुपहरिया में ऊसर गई है। भू लू चलती है, और हवा भाँति-भाँति की है। कोई यह स्वयं क्यों नहीं चली गई।

हाथ अभ्यास-वश पुनः मिट्टी पर चले गये; सङ्केत से मिट्टी ने सुडौल आकार प्राप्त करना प्रारम्भ पत्नी के प्रति असन्तोष जाकर गहरे छिप गया। पंक्तियाँ चाक पर से उतरकर भूमि पर फैलती गईं। घूमता गया। सूर्य ऊँचा चढ़ता गया।

धनीराम जब चाक पर से उठा तो उसे लगा कि पूर्ण सन्तोष प्रदान किया है, पर फिर भी उसके हृदय स्पष्ट असन्तोष है। उसने आवें पर दृष्टि डाली। कल सकोरे सन्ध्या तक सूख जावेंगे, इसी आवें में चढ़ाये जा मटकैने हलवाई को परसों अवश्य मिल जाने चाहिए। प्रस्तुत न होंगे तो पड़ोसी से लेकर...।

देखा कि उसका घर है। साढ़े तीन ओर जो कच्ची गोबर पुती दीवार है उसी पर छप्पर रक्खा हुआ है। इससे अच्छे घर की कल्पना कभी नहीं की। वह कुम्हार हुआ है और कुम्हार ही मरेगा। उसे ज्ञात है कि से उसके पुरखा यही करते आये हैं। यही उसका धर्म

सूर्य का प्रकाश उसे प्राप्त है पर मानव ने अपने प्रकाश पाया है उसकी किरणें अभी उस तक नहीं पहुँ उसने झोपड़ी में प्रवेश किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्नी अकेली है। रोटियाँ लगभग बन चुकी हैं।

"सुखदा कहाँ है?" उसे ज्ञात है कि वह गधे देखने है, पर फिर भी उसने पूछा। पत्नी के प्रति असन्तोष में है ही।

उसने हुक्का उठाया, चिलम झाड़ी। छिद्र के ऊपर कङ्करी साफ़ करके रक्खा और फिर छप्पर में खुँसी तमाकू की थैली काल तमाकू हथेली पर मसलने लगा।

"गधे देखने गई है।"

"अभी आई नहीं? बहुत देर हो गई। धूप बड़ी तेज़ ।" वह श्रमित था। चिलम उसने चूल्हे के निकट बढ़ा । पत्नी ने चिमटे से झाड़-झाड़कर अँगारे चिन दिये।

धनीराम के मन में उठा— यह अच्छी है। सन्तोष की किरण उसके श्यामल हृदय-कोण को आलोकित कर गई। घर पर दृष्टि पड़ते ही उसने देखा कि वह सूना है, सुखदा वहाँ है।

"सुखदा अभी आई नहीं?"

पत्नी ने उत्तर नहीं दिया। उसे सुखदा पर असन्तोष हुआ। उसे आ जाना चाहिए था। उसने आने को नहीं कहा, यह ठीक। पर अब तो रोटी का समय है, उसे क्या ध्यान नहीं होना चाहिए। अब वह बालिका नहीं है। चार-छः वर्ष में ब्याह योग्य हो जायगी।

उसने रोटी तनिक ज़ोर से भूमि पर पटक दी। सोचा— आती होगी।

धनीराम झोपड़ी के सम्मुख हुक्का लेकर बैठ गया। पानी तैयार था। चिलम उतारकर फूँक दिया। हवा खींची। सुगन्धित स्वर ठीक जँचा।

सम्मुख जो था वह उसका था। इतने मटकैने, आवाँ, खेत और बग़ल में थे फैले आड़े-तिरछे मङ्गी के अधसेरे।

मन में उठा—मङ्गी को इतने दिन काम करते हो गये। अभी तक उसके पेदे एकसार नहीं कटते।

दृष्टि आगे गई। दूर तक मैदान था। वही दस-पाँच खेत जो निचाई पर थे बीच में थे। उसके नयन सूर्य की चमक से चौंधिया गये। धूप नाच रही थी। उसने देखा— जल विचित्र आकारों की उड़-उड़ पड़ती है और वायु की तहें तप्त होकर से स्पर्श पा ऐंठ-ऐंठ जाती हैं। उसने ऊसर में सूर्य की लपटों को नृत्य करते देखा। इन लपटों का स्पर्श पा कोई भस्म हुए बिना कैसे रह सकता है, और उसकी सुकुमार सुखदा!

मन में पुनः असन्तोष का झोंका आया। इसने उसे क्यों भेजा? स्वयं क्यों नहीं गई? गधों को बाँध क्यों नहीं दिया?

उसे अनुभव हुआ कि सुखदा आई है। उसका मुख लाल है। नयन अङ्गार हो रहे हैं। लू लग गई है। उसके भोजन को भी लू लगी थी और वह पाँच वर्ष का खेलता बालक उसी में तड़पकर सो गया, सदा के लिए सो गया। राममोज साकार हो गया।

धनीराम ने हृदय को दबाया—उसका भाग्य और फिर मनुष्य के पराजय-वाद के सबसे महान् प्रतीक परलोक और पुर्नजन्म। उसके पुरबले जनम के करम उदय हो रहे हैं। पर फिर भी सुखदा को लू! उसने उसे क्यों भेजा!

वह बैठा न रह सका। हुक्के का कश बीच में तज उठ खड़ा हुआ।

हृदय ने सन्तोषप्रद कल्पना की। सुखदा आ गई है। कैसी भी हो, वह आ गई है। उसके मन में उत्कट इच्छा हुई कि सुखदा को अङ्क में भरकर हृदय से चिपका ले। उसकी निरीह फूल-सी कोमल बच्ची इस भट्टी-सी धूप में मारी-मारी फिरती रही।

उठकर पाया, सुखदा नहीं थी।

असन्तोष बढ़ गया। क्यों नहीं आई! भेजा उसे क्यों?

पूछा—"सुखदा आ गई!"

"आओ रोटी खा लो, आती होगी।" पत्नी ने कहा। इस दृष्टि से कि कहीं खेलती रह गई होगी।

पति ने समझा—माँ है, पर छोरी की तनिक भी चिन्ता नहीं।

वह क्रुद्ध हो गया। "रोटी! कैसे खा लें रोटी! छोरी को इस धूप में.....।"

"आती होगी।"

"अच्छा।"

धनीराम बाहर चला गया। निश्चय किया, छोरी आयेगी तभी खायगा। अकेले उसे क्या अच्छा लगेगा।

उसने अपनी दृष्टि धूप में चमकते मार्ग पर स्थिर कर दी। वह दृष्टि उस मार्ग पर आने-जाने लगी। वह किसी बालिका के उस मार्ग पर आने की प्रतीक्षा करने लगा। मार्ग पर मनुष्य आये, गधे आये, घोड़े आये, गाय और भैंसें आईं, नर और नारी आये, पर बालिका, हाँ बालिका कोई नहीं आई।

वह देखता रहा, एकटक। अपने छलने को नयन मूँद लेता और खोलकर इस आशा से देखता कि अब छोरी अवश्य आती होगी पर छोरी नहीं आई।

नयन थक गये। घर में गया। देखा—वह आग बुझा रही है।

"छोरी आ गई!"

"यहाँ तो नहीं आई।"

"तूने उसे भेजा क्यों? इस धूप में,...कुछ...।" पर कुकल्पना-सम्बद्ध वे वाक्य उसने जिह्वा से न निकाले। क्या पता कैसे समय वे निकलें कि सत्य ही हो जायँ।

"आती होगी। तुम...।" पर उसका हृदय भी स्वस्थ न था। वह चिन्तित इतनी न थी जितनी कि छोरी पर क्रुद्ध।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज वह उसे बुरी तरह पीटेगी। उसके हाथ सुखदा पर प्रहार करने को उतावले हो गये।

"नहीं, मैं नहीं खाऊँगा ?"

"तो मैं क्या मर जाऊँ, नहीं आई तो... ।"

"तूने उसे भेजा क्यों ? जा, ला अब उसे ढूँढ़कर। इस धूप में... ।"

पत्नी ने अपने पैर की पीड़ा अनुभव की। वह कहाँ-कहाँ उसे खोजती फिरेगी। वह बोली नहीं, सँभलकर उठी। लँगड़ाती बाहर आई। नयनों के सम्मुख उँगलियों से छाया की ओर दूर तक ऊसर में देखा। दृष्टि एक छोर से दूसरे छोर तक घुमाई। पर ऐसा कुछ न दीख पड़ा जिसे वह सुखदा समझ सके।

धनीराम का धैर्य सीमा पार कर गया। यदि छोरी को कुछ हो गया तो !

वह बाहर आया—"यहाँ खड़ी-खड़ी आँखें फाड़ रही है, जा, ला उसे ढूँढ़कर। छोरी को कुछ हुआ तो... ।" उसने आग्नेय नेत्रों से पत्नी की ओर देखा।

पत्नी ने दो डग रक्खे, पैर की पीड़ा प्राणों तक पहुँचने लगी। वह रुक गई। मैं नहीं जाती। आ जायेगी अपने आप।

"जायेगी नहीं !"

धनीराम चीख़ा। पत्नी का हृदय भीषण वेग से काँप उठा। उस स्वर में जो धमकी थी उसकी अवहेलना के विचार-मात्र से उसका हृदय कम्पित हो गया। धनीराम के हाथों पिटने की अपेक्षा वह लँगड़ाती हाय-हाय करती सौ कोस भागना स्वीकार करेगी।

वह धीरे-धीरे ऊसर की ओर चली। धनीराम की आग्नेय दृष्टि से उसकी पीठ झुलसती रही।

सुखदा की माँ, हाँ अब वह केवल सुखदा की माँ थी। अपने पिता के यहाँ वह गैंदो थी। उसके पश्चात् कुछ वर्षों वह धनी की बहू रही, और अब जब से सुखदा हुई है, वह सुखदा की माँ है। उसका अपना नाम अन्य अधिकार-प्राप्त नामों के प्रहार से जैसे झड़ गया था।

गैंदो कुछ डग चली। पीड़ा की वेधक रेखायें उसके प्राणों में प्रवेश करने लगीं। शूल चुभने से वह तिलमिला उठी और तभी सुखदा की कल्पना उसके सम्मुख आई। सुखदा के कारन ...। वह पुत्री पर क्रुद्ध हो उठी।

उसकी मुट्ठी भिंच गई। दाँत ओठों को दबा जमकर बैठ गये। सुखदा को पा तो जाय फिर कैसी कुटन्त करेगी।

उसके डग अपने आप तीव्र हो गये। उसकी पीड़ा जैसे शून्य हो गई। वह तेज़ी से सुखदा को खोजने चली जा रही थी। पद-प्रहार से धूलि उठ-उठ मस्तक तक पहुँचने की चेष्टा कर रही थी। लू के झोंके, उसकी ओढ़नी को, जिसका लाल रङ्ग श्यामलता के निकट पहुँच रहा था, उड़ा ले जाने का रह-रहकर प्रयत्न कर रहे थे। उत्तप्त वायु की लपटें उसे [illegible] कर उसके मुख को झुलस रही थीं। वह [illegible] और फिर सुखदा पर भीषण रूप से क्रोधित हो उठी।

गति तीव्रतर हो गई। सूर्य की किरणें और [illegible] उत्साह से भूमि को कुरेदने लगीं।

सुखदा की माँ की दृष्टि उस परिचित पीपल [illegible] लगी थी। वह वहाँ किसी को देख न पा रही थी, [illegible] देख लेने की चेष्टा कर रही थी। सुखदा को यहीं होना [illegible] उसने उसे यहीं होने का आदेश दिया था।

भूमि के उठते खण्ड से उसका पैर टकराया। [illegible] एक धारा समस्त शरीर में व्याप्त हो गई। वह रुकी। [illegible] दृष्टि डाली। वह काँप रहा था। क्या वह रो दे। [illegible] में जल भर आया।

पर घर में वह है और सम्मुख है सुखदा। वह [illegible] क्रुद्ध हो उठी। ढलान होने के कारण उसका प्रहार [illegible] परिमाण सुखदा की ओर वह चला।

वह फिर चल निकली। कुछ अधिक सावधान। [illegible] नीचे सुखदा थी नहीं।

क्रोधाग्नि में जैसे घृत पड़ गया। उसने नयन विस्फा[illegible] चारों ओर देखा। टीले पर चढ़कर देखा—पाया उस [illegible] के मध्य जो चरोहर भूमि पड़ी है उसी में गधों का [illegible] रहा है। भूमि पीपल से दूर अवश्य थी पर घर के निक[illegible] हो न हो सुखदा वहीं हो। आज उसे...।

पैरों की पीड़ा वह भूल गई। बवण्डर की भाँति उ[illegible] में चल खड़ी हुई।

ठोकर लगी। शरीर जैसे सुन्न हो गया। आज [illegible] को। वह रुकी, चिल्लाई "सुखदा, ओ सुखदा छोरी।"

सुखदा सखियों के साथ खेल में मग्न थी।

सँभल-सँभलकर जुते, मिट्टी के बृहत् ढेलों के खेत [illegible] रखते हुए वह पुनः चिल्लाई—"ओ सुखदा !"

सखी ने गैंदो का स्वर सुना।

"तेरी माँ आ रही है।" उसने सुखदा से कहा।

सुखदा का मुँह फक हो गया। माँ इस दुपहरी [illegible] खोज रही है। और माँ के पैर में पीड़ा है। दो दिन वह [illegible] कराहती रही है। कल ही फूटा है। उसे खेल में इतना [illegible] नहीं चाहिए था। पर अब !

उसका हृदय काँपा। शीघ्रता से वह उठी और [illegible] गधों को घर की ओर हाँकने लगी।

माँ चीख़ी—"अब भी क्यों आ रही है !"

पर उसके मन में जो पीट डालने की भीषण भावना [illegible] मन्द पड़ गई। छोरी... ।

वह सुखदा के मार्ग में जा मिली। प्रहार के [illegible] थप्पड़ उठाया, पर मार्ग में पाँचों उँगलियों की [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग हो गई। वह विवश हो गई। उसने दोनों हाथों उसका
ा पकड़ झकझोर दिया।

"घर चल, देख तेरी कितनी पिटाई... ।"

पैर में पीड़ा पुनर्जीवित हो गई। सुखदा को दण्डित करने
भीषण इच्छा मन में उठती, पर हाथ जैसे कील उठते।
उसे मार न पाई।

गधे बाँधे और माँ-बेटी घर में प्रविष्ट हुईं।

सुखदा थर-थर काँप रही थी। अब माँ मारेगी। पर
थी कि अपना सब दुख पी चुकी थी। निश्चय कर चुकी थी
अब मारने से क्या होगा!

"आ गई?"

कोई बोली नहीं।

"ऐसी धूप में...। ला, पानी दे।"

पत्नी के मन में उठा। धूप में मरकर आई हूँ, पानी भी
कर नहीं पिया जाता।

पति से असन्तुष्ट मटके में से पानी उँडेलने लगी। हाथ
व रहे थे। ऐसे जीवन से मर जाना वह अच्छा समझेगी।

घड़ा एक ओर को सरका और फिर घच्च से हो गया।
टे में एक बूँद पानी न आया। सब बिखर गया, लहँगा
गा गया।

वह उद्वेलित हो उठी और घोर असन्तुष्ट। अब इस धूप में
लँगड़ाते हुए आधी मील दूर कुँवे से पानी भरने जाना
गा।

इस सबके मूल में है सुखदा। कमबख़्त ठीक समय पर
आ जाती तो कुछ न होता।

उसने सुखदा को पकड़ कर पीटना प्रारम्भ किया।

धनीराम ऊपर से शान्त तने मानसिक वातावरण से सब
स रहा था। छोरी पिट रही है, निरपराध। उसका हृदय
वित होने चला, पर यहीं उसकी गति दूसरी ओर मुड़ गई।

वह पत्नी से असन्तुष्ट था, सुखदा से नितान्त असन्तुष्ट हो
या। वह सुखदा को कितना चाहता है। वह ऐसा काम
ों करती है कि पिटे।

इस अपराध में सुखदा को दण्डित करने और पत्नी को
क्षित करने के लिए उसने हाथ बढ़ाया। वह जैसे अन्धा
गया। सुखदा उसके थप्पड़ों से बिलबिला उठी।

तीन-चार थप्पड़ों के पश्चात् उसका क्रोध शीतल हो गया।
अपनी भूल उसने स्वीकार न की। मारता गया। वहाँ पर प्रहारों
के पीछे अब अन्धी शक्ति न थी।

मन में पत्नी पर क्रुद्ध हो रहा था कि कमबख़्त बचाती
नहीं। और पत्नी सोच रही थी कि यह कुलच्छनी है इसी जोग
कि पिटे।

धनीराम ने थप्पड़ तानकर कहा—"पहले तो उसे भेज
देगी, फिर... ।"

गैंदो जैसे जागी। उसने दौड़कर सुखदा को पकड़ लिया।
"क्या उसे मार ही डालेगा!"

धनीराम ने हाथ रोक लिया। एक सन्तोष की साँस
उसने ली।

गैंदो रोती बिटिया को हृदय से लगाकर बैठ गई। उसका
हृदय भर रहा था। आँसुओं में फूट पड़ा।

"माँ-बेटी रोने बैठ गईं। जा, उठके पानी ला।"

स्वर में तेज़ी शेष थी।

"इस प्रकार मारा जाता है। मेरे बस का नहीं है। ले आओ
अपना पानी।"

सुखदा सिसक रही थी।

धनीराम का सन्तोष और गम्भीर हो गया। वह एक कोने में
रक्खे घड़ों में से अच्छा सा घड़ा छाँटने लगा। बजा-बजा-
कर, आवश्यकता से अधिक समय लगाकर एक सुन्दर घड़ा
उसने निकाला।

"रस्सी कहाँ है?"

"बाहर पड़ी होगी।" गैंदो ने विरक्तता जताते हुए
कहा।

धनीराम रस्सी-घड़ा लेकर चलने लगा।

विरक्तोन्मुखी गैंदो के कान निरन्तर पति की पद-चाप सुन
रहे थे। उसे पानी लेने जाता श्रवण कर उसने सुखदा को भूमि
पर बैठा दिया। पैरों की पीड़ा एक बार वह पुनः भूल गई।

बाहर आकर बोली—"ला, मुझे दे घड़ा...।"

धनीराम ने पत्नी की ओर देखा। दोनों के नयन मिले।
धनीराम ने घड़ा-रस्सी उसे दे दिया।

गैंदो लँगड़ाती पानी भरने गई। धनीराम उसकी ओर
देखता रहा, उस समय भी जब कि वह मोड़ पर दृष्टि से ओझल
हो चुकी थी।

——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सूरदास और 'साहित्य-लहरी'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीयुत ब्रजेश्वर वर्मा, एम० ए०, रिसर्च-स्कालर, प्रयाग-विश्वविद्यालय

सूरदास के जीवन-वृत्त के अध्ययन में लेखकों ने उनके काल-निर्णय में 'साहित्य-लहरी' के निम्न पद का अनिवार्य रूप से उपयोग किया है—

मुनि पुनि रसन के रस लेष।
दसन गौरी नन्द को सुत सुबल संबत पेष ॥
नन्दनन्दन मासि छै ते हीन त्रितिया बार।
नन्दनन्दन जनमते हैं बाण-सुख आगार ॥
त्रितिय रिच्छ सुकर्म योग बिचारि सूर नवीन।
नन्दनन्दनदास हित साहित्य-लहरी कीन ॥ १०६ ॥

इस पद में 'सूर' ने 'साहित्यलहरी' का निर्माण-काल बताया है। अभी तक प्रायः विद्वान् इससे १६०७ संवत् निकालते आये हैं। पर 'सूर-सौरभ' के रचयिता श्री मुंशीराम शर्मा ने १६२७ संवत् माना है। मतभेद 'रसन' शब्द के विषय में है। शर्माजी 'रसन' शब्द से 'रसना' अर्थ लेकर उसकी संख्या रसना के द्विविध-व्यापार से २ मानते हैं। अन्य विद्वान् 'रसन' से रस का अभाव अर्थात् शून्य मानते आये हैं। इस सम्बन्ध में शर्माजी का तर्क युक्ति-सङ्गत जान पड़ता है। जिसमें रस नहीं वह नीरस वस्तु होगी, पर शून्य कैसे हो सकती है! शर्माजी ने 'रसना' से १ संख्या न लेकर उसके व्यापार से २ को ग्रहण किया है, क्योंकि उनके विचार से सुबल अर्थात् वृषभ संवत् १६२७ में ही पड़ता है। संख्या के मतभेद के अतिरिक्त शर्माजी तथा अन्य विद्वानों में इस पद की प्रामाणिकता और महत्त्व के विषय में सर्वथा मतैक्य है। सूरदास के बृहत् काव्य में यही एक पद है जिसमें कवि ने किसी भी तिथि का उल्लेख किया है।

'साहित्य-लहरी' के अन्तिम पद में कवि ने अपनी विस्तृत वंशावली तथा कतिपय अन्य इतिवृत्त दिये हैं। वह पद इस प्रकार है :—

प्रथम ही प्रथ जागा ते भे प्रगट अदभुत रूप।
ब्रह्म राव बिचारि ब्रह्मा राषु नाम अनूप ॥
पान पय देवी दियो सिव आदि सुर सुष पाय।
कहा दुर्गा पुत्र तेरो भयो अति सुख-पाय ॥
पार पायन सुरन के पितु सहित अस्तुत कीन।
तासु बंस प्रसंस में भौ चन्द चारु नवीन ॥
भूप प्रथीराज दीनों तिन्हैं ज्वाला देस।
तनय ताके चार कीन्हो प्रथम आप नरेस ॥
दूसरे गुनचन्द तासुत सीलचन्द सरूप।
बीरचन्द प्रताप पूरन भयो अदभुत रूप ॥
रन्त और हमीर भूपत सङ्ग षेलत आय।
तासु बंस अनूप भौ हरचन्द अति बिख्यात ॥
आगरे रहि गोप चलत हैं रहो तासुत बीर।
पुत्र जनमें सात ताके महाभट गम्भीर ॥
कृष्णचन्द उदारचन्द जो रूपचन्द सुभाइ।
बुधचन्द प्रकास चौथो चन्द भै सुषदाइ ॥
देवचन्द प्रबोध संसृतचन्द ताको नाम।
भयो सप्तो नाम सूरजचन्द मन्द निकाम ॥
सो समर करि साहि सेवक गये बिध के लोक।
रहो सूरजचन्द दृग ते हीन भरवर सोक ॥
परो कूप पुकार काहू सुनी ना संसार।
सातवें दिन आइ जदुपति कियो आप उधार ॥
छियो चष दै कही सिसु सुनु माँगु वर जो चाइ।
हौं कही प्रभु भगत चाहत सत्रु नास सुभाइ ॥
दूसरो ना रूप देख्यों देषि राधा स्याम।
सुनत करुनासिन्धु भाषी एवमस्तु सुधाम ॥
प्रबल दच्छिन बिपकुल तें सत्रु हूहै नास।
अषित बुद्धि बिचारि बिद्यामान माने सास ॥
नाम राषे मोर सूरजदास सूर सुस्याम।
भये अन्तरध्यान बीते पाछली निसि जाम ॥
मोहि मनसा इहै ब्रज की बसे सुष-चित थाप।
थपि गोसाईं करी मेरी आठ मद्धे छाप ॥
बिप्र प्रथ जगात को है भाव सूर निकाम।
सूर है नँदनन्दजू को लयो मोल-गुलाम ॥

पर इस पद की प्रामाणिकता में विद्वानों को सन्देह के कारण भिन्न-भिन्न दिये गये हैं। पर सबसे कठिनाई 'प्रथ जागा ते' ने उपस्थित की है। महाकवि 'जागा' या 'जगात' वंश का समझना कदाचित् विद्वानों को सह्य नहीं है। सूर ने महाकवि चन्द को अपना पूर्वपुरुष बताकर विद्वानों के जगात-भय को पुष्ट कर दिया और इस बात को विद्वानों के निकट सर्वथा अप्रामाणिक बना दिया। विद्वानों को 'विप्र' और 'जगात' में विरोध दिखाई दिया और विप्रकुल पतन की घटना अविश्वास्य जान पड़ी। कोई-कोई 'दच्छिन विप्रकुल ते सत्रु हूहै नास' में पेशवाओं के आक्रमण की भविष्यवाणी देखकर चौंक गये।

'सूर-सौरभ' के विद्वान् लेखक ने इन समस्त कठिनाइयों को दूर करने का यत्न किया है। 'प्रथ जागा' या 'प्रथु जागा' को उसने अशुद्ध लेख घोषित करके और उसका 'प्रथु जागा' के रूप में संशोधन करके उससे पौराणिक जल-प्लावन के पश्चात् सम्राट् पृथु के समय में ब्रह्मा के वरुण-यज्ञ का अर्थ निकाला। बताया कि 'सूर' ने उस यज्ञ से ब्राह्मणों के पूर्वपुरुष 'ब्रह्मराव' की उत्पत्ति का उल्लेख किया है। सूर के तथाकथित 'ब्रह्मराव' को तो शर्माजी ने ब्राह्मणों के आदिपुरुष [illegible] कर दिया, उनके पूर्वपुरुष चन्द वरदाई 'भाट' [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ने की कोई बात नहीं दिखाई दी। वे ब्रह्मभट्ट ब्राह्मणों को आदिकालीन, साहित्य के स्रष्टा, सरस्वती-पुत्र ब्राह्मण मानते और 'जगात' अथवा 'जगातिया' से उसका कोई सम्बन्ध भी मानते। दक्षिण के विप्रकुल द्वारा शत्रु-नाश की बात भी शर्माजी ने नवीन अर्थ किया है। उनके मत से 'विप्रकुल' का अर्थ है श्रीमद्वल्लभ का कुल और 'शत्रु' का अर्थ काम-क्रोधादि।

'चौरासी वार्ता' की हरिराय द्वारा की गई टीका को भ्रम-वार्ता समझकर अथवा उस टीका की बातों को प्रामाणिक समझकर सूरदास को सारस्वत ब्राह्मण माननेवाले विद्वान् शर्माजी की इस व्याख्या को स्वीकार करेंगे या नहीं, यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता, यदि 'सारस्वत' पर हठ किया जाय तो, शर्माजी, सरलता से सरस्वती-पुत्र ब्रह्मभट्ट को सारस्वत भी सिद्ध कर सकते हैं। पर यह निस्सङ्कोच कहा जा सकता है कि शर्माजी के तर्कों में युक्ति का पर्याप्त आभास है। परन्तु इस पद की प्रामाणिकता के विषय में शर्माजी के निष्कर्ष के पक्ष में सबसे प्रबल तर्क तो यह होना चाहिए कि 'साहित्य-लहरी' के इसी पद को अप्रामाणिक क्यों माना जाय? केवल इस भय से कि सूरदास सारस्वत ब्राह्मण या 'ब्रह्मराव' या ब्रह्मभट्ट न हो जायँ, इस पद की प्रामाणिकता में सन्देह करना युक्ति-सङ्गत नहीं जान पड़ता। १०६वें पद पर ही ग्रन्थ की समाप्ति मानने का क्या कारण है? यदि यह कहा जा सकता है कि अन्तिम पद में कविगण प्रायः तिथि आदि देकर ग्रन्थ-समाप्ति का उल्लेख करते हैं तो यह मानने में भी विशेष आपत्ति नहीं होनी चाहिए कि कवि ने अन्तिम पद में अपना इतिवृत्त दिया होगा। और फिर पदों के क्रम में हेर-फेर भी तो हो सकता है।

इस प्रकार 'साहित्य-लहरी' को प्रामाणिक मानने से कवि के जीवन-वृत्त के विषय में जो कुछ जानने को शेष रहता है उसकी आंशिक पूर्ति 'सूरसारावली' के द्वारा हो जाती है। 'सूरसारावली' के तथाकथित इतिवृत्त-सूचक पद के विषय में भी अद्यावधि विद्वानों से शर्माजी का मत-वैभिन्न्य है। पर प्रस्तुत लेख में हम केवल 'साहित्य-लहरी' पर ही विचार करेंगे।

शर्माजी ने 'साहित्य-लहरी' का निर्माण संवत् १६२७ और सूरदास का निधन संवत् १६२८ के आसपास माना है। इस विचार से 'साहित्य-लहरी' कवि की अन्तिम रचना ठहरती है और उसका अध्ययन कवि की विचारधारा और भावात्मक वृत्ति के पूर्ण परिपक्व, चरम विकसित रूप को समझने में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। कुछ विद्वानों का यह भी भ्रमपूर्ण विश्वास है कि 'साहित्य-लहरी' 'सूरसागर' के 'दृष्ट कूट' पदों का संग्रह मात्र है। पर वस्तुतः सरदार कवि और बाबू चण्डीसिंह द्वारा बाद में जोड़े गए पदों को छोड़कर 'साहित्य-लहरी' का कदाचित् एक भी पद 'सूरसागर' में नहीं मिलता। अतः 'साहित्य-लहरी' को कवि की नवीन और मौलिक रचना मानना ही समीचीन है।

'साहित्य-लहरी' को एक सरसरी दृष्टि से देखने से ही उसकी मौलिकता प्रदर्शित हो जाती है। 'साहित्य-लहरी' नाम ही सर्वथा मौलिक और नवीन है। सूरसागर-जैसे बृहत् काव्य में न तो 'साहित्य' शब्द का दर्शन होता है और न किसी प्रकार की सजग साहित्यिक चेष्टा का आभास। 'सूरसागर' में कवि की भक्ति का प्रकाशन हुआ है। शायद ही कोई ऐसा पद हो जिसमें प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कवि की भक्ति-भावना व्यञ्जित न हुई हो। दक्षिण नायक कृष्ण और खण्डिता नायिकाओं का चित्रण, राधा का मान-मनुहार, सखियों का दूतीत्व—सभी अथ से इति तक भक्ति-भावना से ओत-प्रोत हैं और एक भी स्थल ऐसा नहीं है जहाँ कवि परोक्ष रूप से भी साहित्यिक चेष्टा की ओर सङ्केत करता दिखाई देता हो। इस विचार से भी 'साहित्य-लहरी' का अध्ययन महत्त्वपूर्ण है।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र संगृहीत तथा 'क्षत्रिय पत्रिका'-सम्पादक बाबू रामदीनसिंह द्वारा प्रकाशित 'साहित्य-लहरी सटीक' के अनुसार मूल 'साहित्य-लहरी' में कुल ११८ पद हैं। अधिकांश पद सूरदास के 'दृष्ट कूट' पदों की कोटि में आते हैं और अधिकांश का विषय राधा का प्रेम है। 'सूरसागर' के 'दृष्ट कूट' पद भी राधा से ही सम्बन्धित हैं। साधारणतया राधा के नख-शिख वर्णन में अथवा कृष्ण के साथ राधा की सुरति-वर्णन में कवि की भावना चरम उत्कर्ष को प्राप्त होकर 'प्रस्तुत' का अतिक्रमण करके कल्पना की उस उच्च भूमि पर पहुँच जाती है जहाँ उसे 'अप्रस्तुत' ही पर्याप्त जान पड़ते हैं। अतः कल्पना में विहार करने की कवि की यह प्रवृत्ति उसकी एक विशिष्ट मनोदशा की द्योतक है। 'साहित्य-लहरी' के ११८ पदों में हम यह प्रवृत्ति नहीं पाते। पदों का बाह्य कलेवर 'सूरसागर' के 'दृष्ट कूट' पदों से मिलता-जुलता है, परन्तु उनके भाव से 'साहित्य-लहरी' का भाव सर्वथा भिन्न है।

'साहित्य-लहरी' एक शुद्ध साहित्यिक प्रयत्न है। प्रायः प्रत्येक पद में स्पष्ट रूप से उस साहित्यिक विषय का कथन कर दिया गया है, जिसका लक्षण देने की कवि ने कदाचित् चेष्टा की है। उदाहरणार्थ—

सूर स्याम सुजान सुकिया अघट उपमा दाव ॥ १ ॥
(स्वकीया नायिका और पूर्णोपमा)

सूर प्रभु अज्ञान मानों छपी उपमा साज ॥ २ ॥
(लुप्तोपमा)

ताहि ताहि सम करि-करि प्यारी भूषन आनन माने ॥ ३ ॥
(अन्योन्यालङ्कार)

सूरदास चित समै समुझ करि विषई बिषै मिलावै ॥ ४ ॥
(उपमानोपमेय)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूर स्याम कोबिदा सुभूषन कर विपरीत बनावै ॥ ५ ॥
(प्रौढ़ा नायिका और प्रतीप)

सूरज प्रभु लख धीर रूप कर चरन-कमल पर धावे ॥ ६ ॥
(धीरा नायिका)

भूषन हित परनाम छोट बड़ दोहुन को कर राखी ॥ ७ ॥
(परिणाम)

सूरज प्रभु उल्लेख सबन को हेरे परपतनी हेरो ॥ ८ ॥
(उल्लेख और परकीया)

सूरज प्रभु पर होहु अनूढा सुमिरन जनि बिसरावो ॥ ९ ॥
(अनूढा और स्मरणालङ्कार)

सूरज छेक ते गुप्त बातहू तो को सर समुझैहै ॥ १० ॥
(छेकोक्ति और गुप्ता नायिका)

निरविकार जहाँ सूर पहुँनत बातन चतुर बनाई ॥ ११ ॥
(शुद्धापह्नुति)

भूषन स्वल्प क्रिया ते सुन्दर सूरस्याम समुझाये ॥ १२ ॥
(सूक्ष्मालङ्कार)

सम्भावन भूषन कर लछित सुघर सखी मुसुकाई ॥१३॥
(सम्भावना)

इसी प्रकार लगभग प्रत्येक पद में कोई न कोई लक्षण स्तुत किया गया है, जैसे—'मुदिता नायिका' (१४), 'अनमिल क्ति' (१५), 'पर आनन्द दुखित' नायिका और 'सञ्जोगता' लङ्कार (१६), 'मोह को गर्व' (१७), 'सरूपगर्विता' तथा दीपकावृत' (१८), 'दृष्टान्त' (२०), 'बितरेक' (२२), हुक्त' (२३), 'विनोक्त' (२४), 'समासोक्ति' (२५), रकर' (२६), 'परकर अङ्कुर' (२७), 'प्रस्तुत कर प्रसंसा' २८), 'रतनावल' (२९), 'बिरह अस्तुत' (३३), 'आछेप' ३४), 'बिरोध सो भासत' (३५), 'कियो पति आधीन' बभावन' (३६), 'बिसेषोक्त' (३७), 'बिनु सम्भवन' (३८), नसङ्ग, आयोपति' (३९), 'विषम' (४०), 'विचित्र' (४२), धिक' (४३), 'अल्प' (४४), 'अनोन्या','सात्युक' (४५), नर्वेद', 'विसेषी' (४६), 'बैघातिन' (४७), 'सङ्का', 'कारन माला' (४८), 'असूया', 'एकावल' (४९), 'माला दीपक' ५०), 'भूषन सार', 'श्रम' (५१), 'आलस', 'संप' (५२), वन्ता', 'परसंप' (५३), 'बिकलप' (५४), 'भूषन सुमिरन' ५५), 'प्रतिनीक' (५८), 'भनित अर्थ भूषन' (५९), नित चिन्ह बिचार अमरन' (६०), 'बाच्य अन्तर भूषन' ६१), 'प्रौढ़ उक्ति' (६२), 'सम्भावन' (६३), 'मिथ्या' ६४), 'प्रहर्षना' (६६), 'अपसमार', 'विषाद' (६७), 'उल्लास' ६८), 'अनूज्ञा भूषन' (६९), 'मुद्रा' (७१), 'तदगुन' ७२), 'अतदगुन' (७४), 'धवल वसन मिल रहे अङ्ग में' ७६), 'उनमीलत' (७७), 'सामान्य' (७८), 'विसेष' (७९), ढ़ोत्तर' (८०), 'भूषन चित्र' (८१), 'सूक्ष्म' (८२), हित' (८३), 'ब्याज उक्त' (८४), 'उक्त गूढ़' (८५), 'विप्र उक्त' (८६), 'नुक्त अलंकृत' (८७), (८८), 'उक्तै बक्र' (८९), 'छेक उक्त' (९०), (९१), 'भाविक भूषन' (९२), 'अति उक्त' (९३), भूषन' (९४), 'प्रतपेद अलंकृत' (९५), 'निरुक्त' 'बिधसिद्ध अलंकृत' (९७), 'हेत अलंकृत' (९८), भूषन' (१००), 'अनुमान' (१०२), 'उपमा भूषन' 'शब्द भूषन' (१०४), 'अर्थपति' (१०५), 'विभावन (११३), 'विभावना दूसरो' (११४), 'संकर भूषन'

इस प्रकार केवल २४ पद ऐसे हैं जिनमें कवि साहित्यिक विषय का स्पष्ट उल्लेख नहीं किया जान पड़ इनमें से १०९ वें और ११८वें पदों में तो उसने इतिवृत्त दिया है। शेष २२ पदों में यद्यपि स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता, फिर भी उनमें किसी न किसी लक्षण का विवरण है इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है।

'साहित्य-लहरी' के पदों में 'सूर-सागर' के कूट दूसरी भिन्नता यह है कि ये सभी पद राधा से सम्बन्धित हैं। कुछ पद तो शृंगार-रस के भी नहीं हैं। उदाहरण लिए पद ७३ कालिय-दमन के प्रसंग का है और इस आरम्भ होता है :—

कूदो काली दह में कान।
रोवत चली जसोदा मैया सुनत ग्वाल मुष हान॥

यह पद टीकाकार के अनुसार 'करुना रस' का उदा प्रस्तुत करता है। इसी प्रकार पद ७५ दशम स्कन्ध पूर्व कथा तक से असम्बद्ध है और भीष्म पितामह के युद्ध के में है तथा 'वीर-रस' का उदाहरण देने के लिए सम्मिलित गया है। पद ७९ 'जसुमत आज बैठ के आँगन आपने खिलावै' से आरम्भ होता है तथा कृष्ण की बाललीला से रखता है। अन्य पदों के विषय, जो राधा की रति शृंगार-रस से सम्बन्धित नहीं हैं, उनकी प्रथम पंक्तियों से होते हैं। यथा :—

आज रन कोपो भीम कुमार। (७४)
देखत सजो पण्ड कुमार। (७५)
सुन नन्दनन्दन की रीत।
भूपत कंस परो धरनी तल छाड़ि आपनी नीत॥ (७६
जोर उत्पल आदि उर तें निकस आयो कान। (७७
आज गिर पूजन ग्वाल चले। (८०)
विप्र जो पावन पुन्य हमारे।
जो जजमान जानि कह मो कह आपु इहाँ पगु धारे॥

कुछ पदों में 'ऊधो' का उल्लेख है जो स्पष्ट ही से सम्बन्धित हैं जैसे पद ३०, ३१, ६९।

'सूरसागर' के दृष्ट कूट पदों में प्रायः सर्वत्र राधा और कृष्ण तथा 'दानलीला' के दो-तीन पदों में गोपियों के का उस शैली में वर्णन है जिसे आलङ्कारिक 'रूपकातिशयो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार कहते हैं; परन्तु 'साहित्य-लहरी' में 'नखशिख'-वर्णन कोई चेष्टा नहीं जान पड़ती। उसकी शैली 'कूट' इसलिए उसमें वस्तु-विषय का कथन स्पष्ट नामों से न करके सम्बन्धों रा किया गया है। यथा—

तोवत थी मैं सजनी आज।
तब लग सुपन एक यह देखो कहत अचम्भो साज॥
सिव भूषन रिपु भष सुत वैरी पित अरि केर सुभाव।
आइ गई जहँ सुत सुत बैठी हँसत बढ़ायो चाव॥
हौं चाहे तासों सब सीखव रस बस रिझयो कान।
जागि उठी सुन सूर स्याम सँग का उल्लास बखान॥६८॥

इस पद का कूटत्व कदाचित् 'सिव भूषन रिपु भष सुत वैरी' द में निहित है। 'साहित्य-लहरी' के बहुत से पद इसी प्रकार दृष्ट कूट' हैं। एक दूसरे पद का कूटत्व देखिए :—

ऊधो तब ते अब अति नीको।
लागत हमैं स्याम सुन्दर बिनु नाहिन ब्रज अति फीको॥
बायस सब्द अजा की मिल बन कीनो काम अनूप।
सब दिन राखत नीकन आगे सुंदर स्याम सरूप॥
दोइ जनम को राजा बैरी का बिध आप बनावै।
करत अनूसा भूषन मो को सूरस्याम चित आवै॥ ६६॥

'सूरसागर' के 'दृष्ट कूटों' से तनिक भी परिचय रखनेवाले क स्पष्ट देखेंगे कि इन पदों में उनसे कुछ भी समानता है।

'सूरसागर' की भाषाशैली के विषय में प्रस्तुत लेख में कुछ ा समीचीन नहीं है, परन्तु इतना तो निस्सङ्कोच कहा जा है कि 'साहित्य-लहरी' की शिथिल और असमर्थ भाषा से कम 'सूरसागर' के 'दृष्ट कूटों' की भाषा के समकक्ष नहीं जा सकती।

'साहित्य-लहरी' के ३६वें पद की टिप्पणी में 'भाषा-भूषण' माण दिया गया है। 'साहित्य-लहरी' के प्रकाशन का श्रेय रामदीनसिंह को है। उन्हें यह ग्रन्थ भारतेन्दुजी से प्राप्त हुआ वह हस्तलिखित प्रति किस समय की थी यह तो विदित है, पर भारतेन्दुजी उसकी टिप्पणी को भी सूरदास द्वारा त मानते थे। उनका अनुमान यह था कि कदाचित् ास ने स्वयं 'सूरसागर' से 'दृष्ट कूट' पद छाँटकर टिप्पणी संग्रह कर दिये हैं। परन्तु बाबू रामदीनसिंह ने जब इस की टिप्पणी में 'भाषाभूषण' का नाम देखा तो वे चौंक गये उन्होंने टिप्पणी को सूरदास की कृति मानने में कठिनाई व की।

बाबू रामदीनसिंह ने 'साहित्य-लहरी' को उस रूप में नहीं ा है जिस रूप में कदाचित् सरदार कवि ने उसे प्रस्तुत किया और जिस रूप में भारतेन्दुजी को मिली थी। सरदार कवि के आरम्भ में 'अञ्जनी पद की वन्दना' और अन्त में अपना , रचना तिथि आदि दी थी। परन्तु बाबू रामदीनसिंह उसे सरदार कवि की रचना नहीं मानते, 'क्योंकि कोई-कोई भजन इस टीके में तीन-तीन बार आ गये हैं और अर्थ एक ही है। कहीं-कहीं कुछ घटाया-बढ़ाया भी है। ××× मेरी राय है कि पुरानी टीका और इधर-उधर के स्फुट मिले हुए अर्थ को संग्रह कर और आदि-अन्त में कुछ कविता लिखकर सरदार कवि ने सूरसागर को अपने नाम से प्रकाश किया है।' (पद ३६ की टिप्पणी)

'साहित्य-लहरी' की टीका तो स्पष्ट ही 'भाषा-भूषण' के बाद बनी है। भाषा-भूषणकार जसवन्तसिंह का समय संवत् १८५५-१८७१ वि० है। मूल प्रति कब बनी इसे जानने का साधन केवल उसका १०९वाँ पद है अर्थात् संवत् १६०७, १६१७ या १६२७ से यह अनुमान करना कि यह 'सूरसागर' के ही 'दृष्ट कूट' पदों का संग्रह है सर्वथा निर्मूल है। टिप्पणी-रहित इसकी कोई प्रति भी कदाचित् नहीं मिलती। अतः 'भाषाभूषण' का उल्लेख तथा १०९वें और ११८वें पद का इतिवृत्त, ग्रन्थ का वर्ण्य विषय और शैली—सभी इसकी प्रामाणिकता के विषय में भारी सन्देह पैदा कर देते हैं। 'साहित्य-लहरी' से पूर्ण परिचय प्राप्त कर लेने के बाद निष्पक्ष विद्वान् इस रहस्यमयी कृति के विषय में श्री मुंशीराम शर्मा की तरह अन्तिम निर्णय नहीं दे सकते।

'सूरसागर' में साहित्य के सभी उपादान प्रचुर मात्रा में मिलते हैं और इस दृष्टि से सूरदास परवर्त्ती हिन्दी-साहित्य की प्रेरक शक्ति और उनका काव्य साहित्यिकों के लिए आदर्श रूप है। परन्तु रीतिकालीन कवि सूर के काव्य की आत्मा की अवहेलना करके केवल उसके कलेवर से चिपके हुए दिखाई देते हैं। वे अधिक से अधिक 'दास' की भाँति साहित्यिक प्रयत्न में विफल होने की आशङ्का इस विश्वास के सहारे शान्त कर लेते हैं कि कुछ नहीं तो काव्य के बहाने 'राधा-कन्हाई' का सुमिरन तो हो गया। सूरदास ने अपनी भक्ति के प्रकाशन के लिए जिसको केवल माध्यम और साधन के रूप में ग्रहण किया था, आगे के कवियों ने उसे ही साध्य बना लिया। यद्यपि 'सूर' ने 'तुलसी' की भाँति कहीं स्पष्ट रूप से प्राकृत-काव्य-रचना का प्रत्याख्यान नहीं किया है, फिर भी उनका 'सूरसागर' उनकी इसी मनोवृत्ति का ज्वलन्त उदाहरण है। भक्ति के अतिरिक्त 'सूरसागर' का कवि कुछ भी सोचना-समझना निषिद्ध समझता है। उसके लिए यह असम्भव है। परन्तु 'साहित्य-लहरी' उसकी इस सन्देह-हीन मनोवृत्ति में उसके निधन के एक-दो वर्ष पूर्व आकस्मिक परिवर्तन की घोषणा करती हुई जान पड़ती है। मानों कवि अपने साधन को साध्य-रूप में ग्रहण करके मरते-मरते अपने भावी साहित्यिक बन्धुओं का नेतृत्व करने के लिए तत्पर हो गया हो; मानों भक्ति के प्रकाशन में उसकी साहित्यिक प्रवृत्तियाँ दबी पड़ी रही हों और अन्त समय में 'साहित्य-लहरी' के रूप में उनका विस्फोट हो गया हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रशान्त की रणक्षेत्र भूमि

श्रीयुत नरोत्तमप्रसाद नागर

जर्मनी के पतन के साथ इस विश्वव्यापी महायुद्ध के पूर्वार्द्ध का ही अन्त होता है। प्रशान्त और एशिया की मुख्य भूमि का भीषण युद्ध अभी बाक़ी है। १९४० में, फ्रान्स के पतन के बाद, विशी सरकार की शह और जर्मनी की ओर से प्रोत्साहन पाकर जापान ने, एक तरह से, इंडोचाइना को अपने सैनिक नियन्त्रण में ले लिया था। उस समय परराष्ट्र-सचिव कार्डल हल ने ठीक ही कहा था—"हिटलर योरप को अपने निर्मम पञ्जे में दबोचकर रखना चाहता है और जापान की गृध्र-दृष्टि हवाई से स्याम तक, प्रशान्त पर, गड़ी है।"

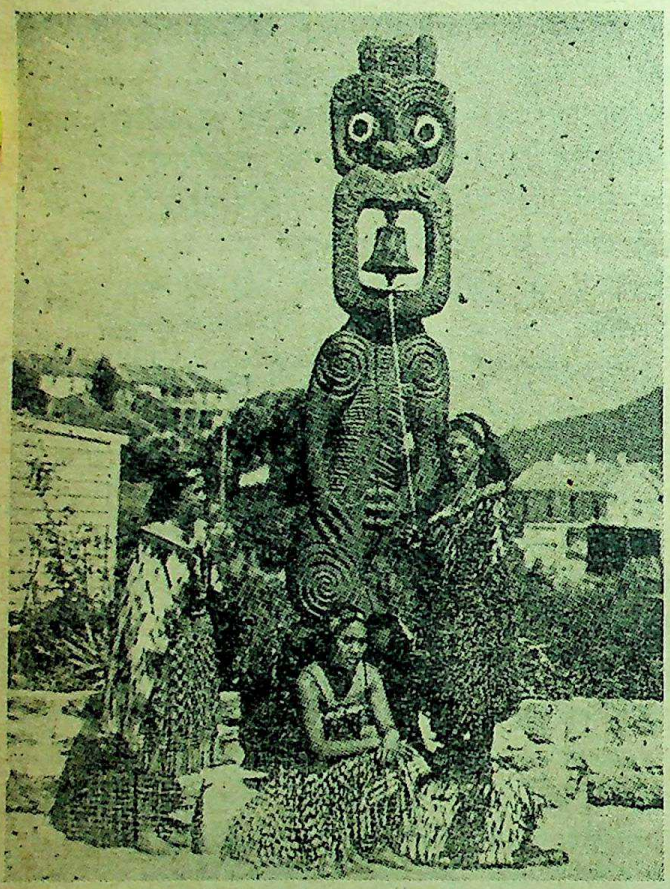

मावरी जाति की पूजा की एक घण्टी

हिटलर की योरप-विजय, उसकी मृत्यु और फिर जर्मनी के आत्मसमर्पण के साथ कार्डल हल के इस कथन का एक भाग पूरा हो जाता है। दूसरा भाग, जापान का आत्मसमर्पण, अभी बाक़ी है। काफ़ी गहराई और तेज़ गति के साथ जापान ने प्रशान्त और एशिया में अपने पञ्जे गड़ा दिये थे। जर्मनी से, रूस के रास्ते, जापान को युद्ध-सामग्री मिलती जा रही थी। २९ अप्रेल, १९४१ को रूस ने सामग्री का ले जाना रोक दिया। जापान के लिए यह रोक एक कड़वी घूँट थी। सात महीने बाद प्रशान्त के मार्ग से रूस को जानेवाली सहायता को रोकने का जापान ने प्रयत्न शुरू किया। इसके साथ-साथ, १९४१ में, जापान ने मञ्चूरिया की सीमा को पार कर बढ़ना चाहा, मगर सफल न हो सका। अगले महीने ने जर्मनी और इटली से एंटी कोमिंटर्न सन्धि को जीवित किया और ७ दिसम्बर १९४१ को पर्ल हार्बर पर मण कर दिया।

पर्ल हार्बर पर जापान का यह आक्रमण काफ़ी सफल हुआ और इसने अमरीका के प्रशान्त-स्थित जङ्गी बेड़े को बेकाम कर दिया। फल-स्वरूप अमरीका दक्षिण पूर्वी आस्ट्रेलिया और प्रशान्त के द्वीपों पर जापानी आक्रमण रोकने में असमर्थ हो गया।

जापान की गति अत्यधिक तेज़ थी। हांगकांग का हुआ, मलय-द्वीपसमूह पर आक्रमण और सिंगापुर का बर्मा पर आक्रमण और मई का अन्त होते न होते समस्त पर क़ब्ज़ा। इस प्रकार, पर्ल हार्बर पर आक्रमण के महीने के भीतर ही, उत्तरी मञ्चूरिया से सिंगापुर तक दक्षिण-पश्चिमी प्रशान्त के सभी द्वीपों पर जापान का हो गया था।

जापान की इन द्रुत सफलताओं को रोकने का लिए पास कोई उपाय नहीं रह गया था। समुद्री मार्ग हल था—पन्द्रह हज़ार मील—कि एक बार के चक्कर में दो मास तक लग सकते थे। भूमध्यसागर का द्वार बन्द गया था। एक हवाई मार्ग ही शेष रह गया था जिस सहायता भेजी जा सकती थी। लेकिन फिर भी, यह की बात है, जर्मनी के पतन के पूर्व ही, प्रशान्त की गिलबर्ट, सालोमन और न्यूगाइना से हटकर काफ़ी निकट से ४०० और टोकियो से ७५० मील के भीतर, आ गई।

जापान के विरुद्ध आक्रमण करने के लिए ओकीनावा प्रमुख अड्डा बनाया गया है। इस द्वीप पर अधिकार के लिए कितनी कठिनाई उठानी पड़ी है, यह इसी बात जा सकता है कि एक जापानी सैनिक के लिए एक टन की आवश्यकता पड़ी है। ओकीनावा में तीस हज़ार मरे हैं और उनके लिए ३०००० टन विस्फोटक खर्च तीस हज़ार टन विस्फोटक का अर्थ है ६ समुद्री जहाज़ों इसके साथ-साथ विस्फोटक से भरी तोपों के बल सम्मिलित कर लीजिए और यह भी ध्यान में रखने कि ओकीनावा जापान से अवश्य ३७५ मील दूर निकटतम अमरीकन अड्डों—गुआम, सायपान और से उसकी दूरी फिर भी एक हज़ार मील रह जाती है।

प्रशान्त के युद्ध में दूरी की समस्या एक बहुत है और जापान की मुख्य भूमि पर सेनायें उतारने में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही जापान ने आत्मसमर्पण नहीं कर दिया तो, अत्यधिक कठिनाई का सामना पड़ेगा। नारमण्डी के तट पर सेनायें उतारना आसान था, विशेषकर इसलिए कि वहाँ केवल सत्तर मील की दूरी का ही सामना करना था। लेकिन प्रशान्त का भौगोलिक सम्बन्ध है, यदि और किसी लिए नहीं तो वह अपनी सीमा और विस्तार के लिए ही विख्यात है।

प्रशान्त के युद्ध की इस कठिनाई से सभी परिचित हैं—जापान भी और मित्रराष्ट्र भी। साथ ही यह भी सब जानते हैं कि इस कठिनाई को, चाहे जैसे हो, पार भी कर लिया जायगा। जर्मनी की तरह जापान को भी घुटने टेकने पड़ेंगे, यह जापान जानता है और अपने इस दुर्भाग्य से बचने के लिए वह सुलह की जमीन तैयार करने का प्रयत्न कर रहा है। जापान की बुनियाद इच्छा यह है कि युद्ध के पूर्व उसके पास जो कुछ था यदि पूर्ववत् बना रहे तो शेष सब कुछ वापिस कर देगा।

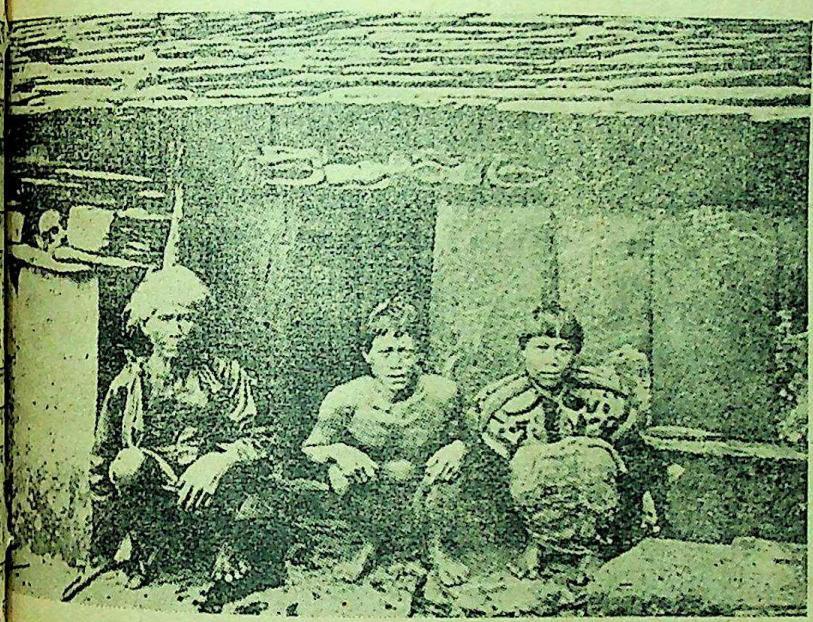

फ़ार्मोसा के एक सरदार का गृह

पूर्व-इतिहास

गत महायुद्ध के बाद जापान ने, मित्र-राष्ट्रों के प्रोत्साहन की सहायता में, प्रशान्त के प्रहरी का स्थान प्राप्त कर लिया था। जापान के इस विस्तार को समझने के लिए उसके पूर्व-इतिहास से कुछ परिचय प्राप्त करना आवश्यक है। १८७२ से जापान एक सैनिक राष्ट्र बनने की ओर अग्रसर होता है। इससे पहले जापान अपने-आप में संकुचित तथा सीमित रहता था। तोकुगावा जापान में कुछ ऐसे विधान प्रचलित थे जिनके अनुसार न कोई बाहरी आदमी जापान में पाँव रख सकता था, न कोई जापान-निवासी ही बाहर जा सकता था।

अतीत काल में जापान जितना ही अधिक अपने में संकुचित तथा सीमित था, आगे चलकर उसने उतना ही अधिक पाँव फैलाने शुरू किये। बात असल में यह है कि तब तक जापान को पश्चिमी शक्तियों की हवा नहीं लगी थी और यह असम्भव था कि अधिक दिनों तक वह इस हवा से—पश्चिमी शक्तियों के साम्राज्य तथा व्यापार-विस्तार की अदम्य भावना से—बचा रहता। परिणाम इसका यह हुआ कि जापान ने भी पश्चिमी शक्तियों का तेज़ गति और अत्यधिक सफलता के साथ अनुसरण करना शुरू किया और उन्नीसवीं सदी का अन्त होते न होते सुदूर पूर्व के आर्थिक जीवन में उसका काफ़ी बड़ा हाथ हो गया।

उन दिनों पश्चिमी शक्तियाँ चीन को अपना बाज़ार बनाने के फेर में मनमानी करने पर उतरी हुई थीं। फ़्रान्स ने दक्षिण में अन्नाम पर अधिकार जमा लिया था, जर्मनी ने उत्तर में किओचाउ को अपने प्रभाव में कर लिया था। जापान की दृष्टि कोरिया पर पड़ी, क्योंकि कोरिया की स्थिति जापान की छाती पर तनी छुरी के समान थी। जापान ने इसे हथियाने के लिए १८९४ में चीन पर आक्रमण कर दिया और हाँ एक स्वतन्त्र राज्य की स्थापना कर दी और आगे चलकर उसे अपने राज्य में मिला लिया।

इस युद्ध में जापान ने मञ्चूरिया के दक्षिणी छोर लिआओतुंग पर भी क़ब्ज़ा कर लिया था। रूस ने इसका तीव्र विरोध किया तब जापान ने चुपचाप इस क्षेत्र को वापिस कर दिया। रूस ने इससे लाभ उठाया और चाइनीज़ ईस्टर्न रेलवे की एक शाखा खोलने के अधिकार प्राप्त कर लिये। दक्षिणी मञ्चूरिया से लिआओतुंग तक, जहाँ दो बन्दरगाह आर्थर और डाइरेन स्थित हैं, रेल का निर्माण किया गया। इस प्रकार प्रशान्त में एक बन्दरगाह रखने की रूसी इच्छा पूरी हो गई। व्लाडी वोस्टक भी रूस के पास था, लेकिन जाड़ों में बर्फ़ जम जाने के कारण उसका उपयोग न हो पाता था।

प्रशान्त में सिवा उसके और किसी का हस्तक्षेप हो—विरोध कर रूस का—यह जापान के लिए असह्य था। जापान उद्विग्न हो उठा और ग्रेट ब्रिटेन से समझौता कर १९०४ में उसने रूस पर आक्रमण कर दिया। इस युद्ध में जापान की विजय हुई। रूस को हराकर उसने लिआओतुंग और साउथ मञ्चूरिया रेल्वे पर क़ब्ज़ा कर लिया। कोरिया और फ़ार्मोसा भी इसी युद्ध के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाद जापानी साम्राज्य में सम्मिलित कर लिये गये। इस प्रकार पूर्व में जापान ने एक शक्तिशाली राष्ट्र का—अधिक सही शब्दों में प्रहरी का—स्थान प्राप्त कर लिया।

जापान और ब्रिटेन की सन्धि हो ही गई थी और इस सन्धि के फल-स्वरूप ही जापान को रूस के विरुद्ध लड़ने का बल मिला

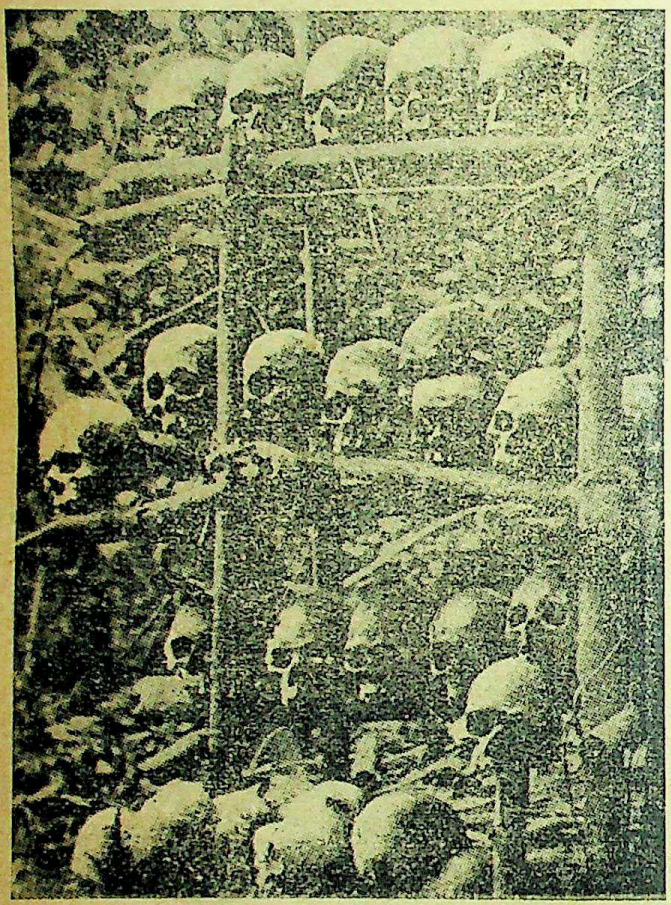

फ़ार्मोसा में खोपड़ियों का एक संग्रहालय

था। महायुद्ध शुरू होने पर जापान ने, उक्त सन्धि का पालन करते हुए, मित्रों का साथ दिया—यद्यपि इन मित्रों में जापान का शत्रु रूस भी शामिल था। जो भी हो, जापान को इस युद्ध में अधिक नहीं लड़ना पड़ा। उसका काम था युद्ध-सामग्री सप्लाई करना, प्रशान्त के सतर्क प्रहरी के कर्तव्य का पालन करना और मित्रों के जहाज़ों से लाभ उठाकर एशिया के व्यापार का विस्तार करना।

प्रशान्त के प्रहरी की भूमिका सफलतापूर्वक निभाने का आशातीत पुरस्कार जापान को प्राप्त हुआ। शान्तुंग तथा प्रशान्त-स्थित जर्मनी के सभी द्वीप जापान को दे दिये गये। १९१८ में जब फ़्रान्स और ब्रिटेन ने रूस के बोल्शेविकों को तहस-नहस करने के लिए एडमिरल कोलचक को खड़ा किया तो इस शुभ कार्य में सेना आदि भेजकर योग देने के लिए जापान को भी निमन्त्रित किया गया। इस जिहाद से बोल्शेविक रूस

तो तहस-नहस नहीं हो सका, चीन की पूर्वी रेलवे तथा के कुछ भाग पर जापान ने अवश्य क़ब्ज़ा कर लिया।

१९०४ के रूस-जापान-युद्ध ने जापान को बड़ी शक्ति बना दिया था और १९१४ के महायुद्ध को संसार की बड़ी शक्तियों के समकक्ष बना दि

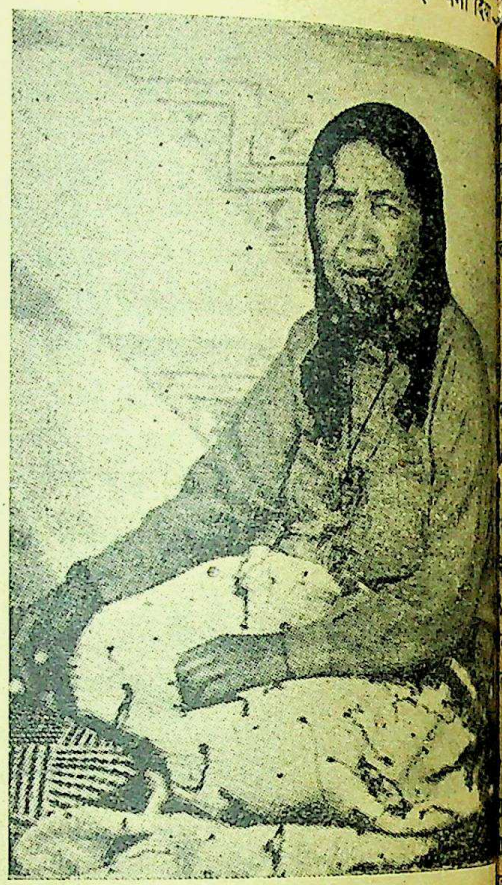

फ़ार्मोसा की एक महिला; ओठों और ठोढ़ी पर का इसका प्रिय शृङ्गार है

अधिक कि अपने को बड़ा कहने और समझनेवाली उससे भय खाने लगीं। युद्ध से पूर्व जापानी क्षेत्रफल १,७५,५४० वर्गमील था। युद्ध के बाद, यह २,६०,७३८ वर्गमील हो गया।

१८७२ से जापान की नीति में परिवर्तन होता है गति के साथ जापान अपनी तथा अपने साम्राज्य के द्वीपों की शक्ति के केन्द्रीकरण की ओर पूरी तत्परता संलग्न होता है। १८७५ में सखालीन के बदले में द्वीप-समूह जापान को रूस से मिल जाते हैं और अ सीमाओं को जापान सुव्यवस्थित रूप देने में समर्थ हो १९०५ में रूस-जापान-युद्ध शुरू होता है और परि सखालीन दो भागों में बँट जाता है—उत्तरी भाग रहता है और दक्षिणी भाग जापान के। १९१० फिर रूसी भाग पर क़ब्ज़ा कर लेता है और १९२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने अधिकार में रखता है। इसके बाद फिर रूस से समझौता होता है और उसके अनुसार जापान अपना अधिकार उठा लेता है और रूस, इसके बदले में, तैल-कूपों का आधा भाग जापान को देना स्वीकार कर लेता है—यहाँ तक कि कुछ भागों में रूसी और जापानी तैल-कूप बराबर-बराबर स्थित हैं।*

इसके साथ-साथ १८७६ में जापान ने लियूकियू द्वीपसमूह को प्राप्त कर लिया—फ़ार्मोसा तक जिसका विस्तार चला गया था। १८९५ में चीन-जापान युद्ध हुआ जिसके फलस्वरूप इससे अधिक सम्पन्न द्वीप फ़ार्मोसा जापान के हाथ आ गया। जापान के इस विस्तार में जो कमी रह गई थी, उसे १९१४ के युद्ध ने पूरा कर दिया। जापान का द्वीपीय साम्राज्य एशिया के तट को छूता हुआ तीन हज़ार मील तक चला गया है।

महायुद्ध के बाद, १९२३ में, जापान में भारी भूकम्प आया जिससे सँभलने में जापान को प्रायः सात साल लग गये। इन सात सालों की शान्त अवधि के बीतते ही, १८ सितम्बर १९३१ को दक्षिण मञ्चूरियन रेल्वे पर एक बम फटा और इस घटना को बहाना बनाकर जापान ने मञ्चूरिया पर आक्रमण कर दिया। इस आक्रमण के फलस्वरूप एशिया की मुख्य भूमि पर, ६००,००० वर्गमील, जापान का क़ब्ज़ा हो गया। इसके बाद १९३३-३५-३७ में आक्रमण कर जापान ने सम्पूर्ण उत्तर-पूर्वी चीन पर क़ब्ज़ा कर लिया और १९३९ में बाहरी दुनिया से स्वतन्त्र चीन का सम्बन्ध प्रायः न कुछ के बराबर हो गया।

इस प्रकार चीन की सम्पूर्ण भूमि के एक चौथाई तथा वहाँ की आबादी के आधे भाग पर जापान का क़ब्ज़ा हो गया। प्रशान्त में उसने प्रमुख स्थान पहले ही प्राप्त कर लिया था। प्रशान्त-स्थित जर्मनी के द्वीप जापान को, प्रथम महायुद्ध के बाद, मिल गये थे और जापान ने सहज ही योरप की बड़ी शक्तियों के समकक्ष पद प्राप्त कर लिया था।

प्रशान्त तथा एशिया में जापान के इस विस्तार का सबसे अधिक प्रभाव पड़ा अमरीका पर। अमरीका की चिन्ता का कारण था। वह यह कि जर्मनी के प्रशान्त-स्थित द्वीप अमरीका के लिए तार आदि भेजने के स्टेशनों का काम देते थे। इसके अलावा अमरीका चीन के बाज़ार में 'खुला दरवाज़ा' नीति का समर्थक था, चीनी भूमि को हड़पने के पक्ष में नहीं था।

अमरीका की चिन्ता अकारण नहीं थी। प्रशान्त में जापान के विस्तार से अमरीका ठीक ही भयभीत हुआ था। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण इस दूसरे महायुद्ध के शुरू होने पर मिला जब कि १९३९ में स्वतन्त्र चीन का बाहरी दुनिया से सम्बन्ध काट देने के बाद जापान ने पहले थाइलैंड पर क़ब्ज़ा किया और फिर पर्ल-हार्बर पर आक्रमण कर प्रशान्त का एकमात्र प्रहरी बन बैठा।

दो प्रकार की लूट

प्रशान्त में जो जापान का विस्तार हुआ है, उसे हम दो भागों में बाँट सकते हैं। इन दोनों भागों में से एक को हम जायज़ लूट कहेंगे और दूसरे को नाजायज़। जायज़ से हमारा तात्पर्य उस लूट से है जो प्रथम महायुद्ध के बाद हुई थी और जिसे, मैण्डेट के रूप में राष्ट्रसङ्घ ने प्रमाणित कर दिया था। इस जायज़ लूट में वे सब द्वीप हैं, जिन पर युद्ध से पूर्व जर्मनी का अधिकार था और जिनका जापान के पास जाना अमरीका के लिए चिन्ता का विषय हो उठा था। इनमें प्रमुख द्वीप-समूह के नाम हैं—मेरियाना, कैरोलीन और मार्शल। उल्लेखनीय द्वीपों की संख्या १४०० में क़रीब होगी।

इन द्वीपों की लूट को हम जायज़ लूट कहेंगे और इस युद्ध में पर्ल हार्बर पर आक्रमण करने के बाद जो लूट मची उसे हम नाजायज़ लूट कहेंगे। इस लूट में जापान ने उत्तरी मञ्चूरिया से लेकर सिंगापुर तक तथा दक्षिणी प्रशान्त के सभी द्वीपों पर क़ब्ज़ा कर लिया था।

इस नाजायज़ लूट का माल, स्पष्ट ही है, जापान के पास नहीं रह सकता और सम्भव है कि दण्डस्वरूप उसे गत महायुद्ध के बाद प्राप्त अपनी जायज़ लूट से भी हाथ धोना पड़े। इसमें सन्देह नहीं कि जायज़ और नाजायज़, दोनों प्रकार की लूट से जापान को वञ्चित कर दिया जायगा। इसके बाद इन द्वीपों की स्थिति क्या होगी, यह अभी से कहना कठिन है। अमरीका की दृष्टि उन द्वीपों पर अवश्य है, जो प्रथम महायुद्ध के बाद जर्मनी से छीनकर जापान को दे दिये गये थे।

आखेट-भूमि

साम्राज्य और व्यापार-विस्तार के लिए उन्मत्त पश्चिमी शक्तियों के लिए प्रशान्त के द्वीप अच्छी ख़ासी शिकारभूमि रही हैं। इन द्वीपों का कोई स्वतन्त्र अस्तित्व है या कभी हो सकता है, न कुछ के बराबर ऐसे लोग हैं जो इस रूप में इन द्वीपों के सम्बन्ध में विचार करते हैं। एक विद्वान् ने तो इस सम्बन्ध में हद ही कर दी है। उन्होंने स्थूल भाव से संसार को दो भागों में विभक्त किया है—एक भाग गरम, दूसरा ठण्डा। गरम भाग में प्रशान्त के द्वीप और भारत आदि आ जाते हैं तथा ठण्डे भाग में योरप की जातियाँ। इसके बाद विद्वान् महोदय ने ठण्डे देशों को विजेता और गरम को विजित देशों की श्रेणी में रक्खा है। कारण कि गरम देशों की संस्कृति अन्ततोगत्वा

* यह इस युद्ध से पूर्व की बात है जब कि जापान रूस का और ब्रिटेन का मित्र था। प्रथम महायुद्ध में भी जापान मित्रों के पक्ष में था। लेकिन इस युद्ध में वह शत्रुपक्ष से जा मिला और परिस्थिति यहाँ तक बदली कि रूस को शान्त रखने के लिए मजबूर हो गया। जापान की यह मजबूरी यहाँ तक बढ़ी कि अन्त में, ३० मार्च १९४३ को, सखालीन के तैल-कूपों को उसने अपना अधिकार उठा लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरामपसन्द तथा निष्क्रिय होती है और ठण्डे देशों की क्रियाशील तथा अदम्य शक्ति से भरी हुई। अपनी इस क्रियाशीलता के बल पर ठण्डे देश सहज ही गरम देशों पर हावी हो जाते हैं।

यह तर्क, यदि इसे तर्क कहा ही जाय, ठण्डे राष्ट्रों की साम्राज्य तथा व्यापार-विस्तार की भावनाओं को छिपाने में सर्वथा असमर्थ है। प्रशान्त के द्वीपों के साथ दूसरी शक्तियों ने इस सीमा तक खेल किया है कि उनका अस्तित्व, ध्यान देने की बात है, इन द्वीपों के निवासियों से अधिक दूसरी शक्तियों के लिए महत्त्वपूर्ण हो गया है। कैरोलीन के द्वीप यैप के सम्बन्ध में कहा जाता है कि इस द्वीप के निवासियों को छोड़कर शेष सारे संसार के लिए यह द्वीप अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। यही बात ट्रूक अथवा रुक द्वीप-समूह के लिए भी कही जा सकती है। ट्रूक अथवा रुक के अन्तर्गत छोटे-मोटे प्रायः ८० द्वीप हैं जो कि गोलाकार शैलमाला से घिरे हुए हैं। इन द्वीपों में से प्रत्येक का नाम अच्छा-ख़ासा झमेला प्रस्तुत करता है—पोर्चुगीज़, स्पेनिश, रूसी, फ्रेंच, इँगलिश, अमरीकन और जर्मन—शायद ही कोई बचा हो जिसने इन द्वीपों को अपनी आखेट-भूमि न बनाया हो और उसकी याद में अपना अलग-अलग नाम न रक्खा हो।

प्रशान्त का विभाजन

प्रथम महायुद्ध से पूर्व प्रशान्त में जापान की स्थिति न कुछ के बराबर थी। केवल बोनिन द्वीप, ३८ वर्गमील जिसका क्षेत्रफल था, जापान के पास था। सबसे अधिक क्षेत्रफल अमरीका के पास था—फिलीपाइन्स, हवाई द्वीप, अमरीकन समोआ और गुआम आदि। बिस्मार्क द्वीपसमूह, सालोमन का एक भाग, कैरोलीन—दक्षिण-पूर्व में समोआ से लेकर उत्तर पश्चिम मेरिआना द्वीप-समूह तक ९४,१६९ वर्गमील का क्षेत्र जर्मनी के पास था। आस्ट्रेलिया के समुद्रतट के बराबर ३३०० मील जर्मनी का विस्तार चला गया था और पश्चिमी प्रशान्त की कुञ्जी उसी के हाथ में थी।

जर्मनी ने प्रशान्त में बहुत बाद में प्रवेश किया। फलतः प्रशान्त के जो अधिक महत्त्वपूर्ण द्वीप थे, उन पर डच, ब्रिटिश, फ्रेंच और स्पेन-निवासियों ने अपना अलग-अलग अधिकार जमा लिया था। जो भी जहाँ पहले पहुँचा, उसने उसे ही अपना बना लिया।

उपनिवेशों के विस्तार की ओर जर्मनी ने १८८३ से ध्यान देना शुरू किया। इन द्वीपों में गत पचीस वर्षों से जो कम्पनियाँ व्यापार कर रही थीं, उन्हें जर्मन सरकार ने आर्थिक सहायता देनी शुरू की और इस प्रकार उत्तरी न्यूगाइना के एक भाग को अपने संरक्षण में ले लिया।

इस प्रकार जर्मनी को प्रशान्त में पहले पाँव धरने, फिर बैठने और अन्त में पसरने की जगह मिल गई। न्यूगाइना की तुलना उस विकट जन्तु से की जा सकती है जिसका कन्धे डच, पेट और नीचे का भाग ब्रिटिश और सकरी के लिए कमर का भाग जर्मनी के क़ब्ज़े में हो। विकट जन्तु की पीठ पर सवार होकर प्रशान्त में आगे १८८६ में, बर्लिन में, ब्रिटेन और जर्मनी के बीच हुई। इस सन्धि के अनुसार प्रशान्त के जितने भी द्वीप थे, उन सबको इन दोनों ने आपस में बाँट लिया। सन्धि के अनुसार पूर्वी भाग पर ब्रिटेन का और पश्चिम पर जर्मनी का क़ब्ज़ा हो गया।

१८८६ के इस विभाजन के अनुसार जर्मनी को द्वीपसमूह, न्यूगाइना के उत्तर में स्थित बिस्मार्क द्वीपसमूह कुछ सालोमन द्वीप मिल गये। इसके तीन वर्ष बाद प्रशान्त में अपना साम्राज्य बढ़ाने का और अवसर अमरीका ने स्पेन को युद्ध में पस्त कर फिलीपाइंस पर कर लिया था। फिलीपाइंस के हाथ से निकल जाने को प्रशान्त में एक तो विशेष दिलचस्पी नहीं रही, दूसरे सङ्कट में पड़कर उसने जर्मनी के हाथ मार्शल द्वीपसमूह पश्चिम में कैरोलीन द्वीपसमूह को बेच दिया। इसके साथ ग्रेट ब्रिटेन और अमरीका से समझौता कर सालोमन समूह के एक भाग के बदले में समोआन द्वीपसमूह भी को प्राप्त हो गया।

प्रथम महायुद्ध के शुरू होते ही जर्मनी के प्रशान्त द्वीपों पर दूसरी शक्तियों ने अपना अधिकार जमाना शुरू दिया। सबसे पहले विषुवत् रेखा के उत्तर में स्थित द्वीपों पर क़ब्ज़ा कर लिया। जर्मन समोआ न्यूज़ीलैंड के गया, जर्मन न्यूगाइना और सालोमन आस्ट्रेलिया तथा ग्रेट ब्रिटेन के अधिकार में चला गया। युद्ध का अन्त राष्ट्रसङ्घ ने अपनी मोहर लगाकर इन सबके अधिकार पक्का कर दिया।

जापानी मैण्डेट

प्रथम महायुद्ध के बाद जापान के हिस्से में प्रशान्त क्षेत्र आया उसे माइक्रोनीशिया कहते हैं। माइक्रोनीशिया अर्थ है छोटे द्वीप। इसमें कोई सन्देह नहीं कि माइक्रोनीशिया सभी द्वीप छोटे हैं और छोटे होते हुए भी उनका क्षेत्रफल काफ़ी है। जापानी मैण्डेट (अधिकारक्षेत्र) को यदि बद्ध किया जाय तो द्वीपयुक्त समुद्र का २५ लाख का क्षेत्र उससे घिर जायगा—अमरीका के पाँच के बराबर।

माइक्रोनीशिया के द्वीप बहुत दूर-दूर बिखरे हुए हैं। द्वीपों के दक्षिण में विषुवत् रेखा है और फिलीपाइंस १८०° मध्याह्न रेखा तक के विस्तृत क्षेत्र में ये फैले हैं। प्रमुख द्वीप-समूहों में मेरिआना, कैरोलीन और मार्शल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...जा सकता है। कुल द्वीपों की संख्या इतनी अधिक है कि ...न सबकी गणना कर सकना कठिन है। उल्लेखनीय और ...ी न किसी रूप में कुछ महत्त्वपूर्ण द्वीपों की संख्या १४०० ...। इन द्वीपों के निवासी माइक्रोनीशियन्स का रङ्ग तांबे ...है। साधारणतया इनके ओंठ पतले और बाल सीधे होते ...। इनकी जाति का रक्त मिश्रित होता है। दक्षिण पूर्वी ...शिया से चलकर फिलीपाइंस तथा ईस्ट इंडीज़ होते हुए अनेक

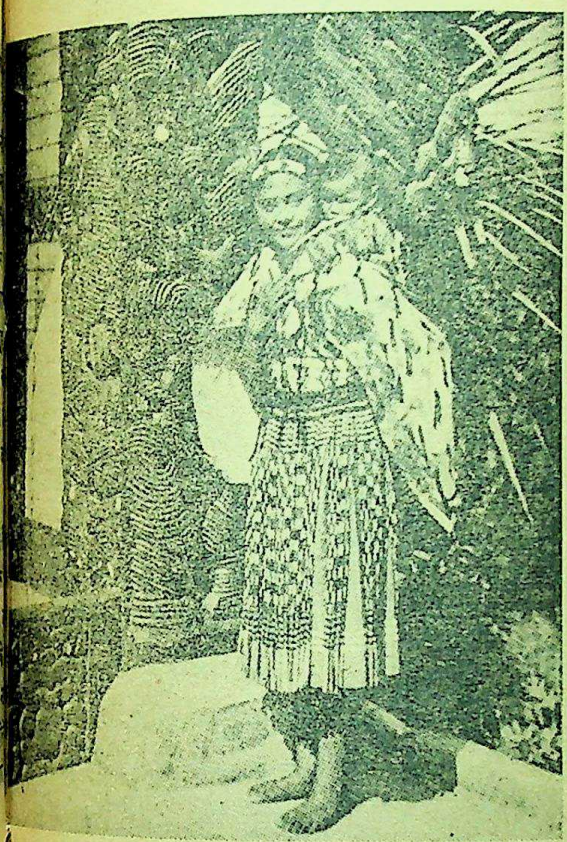

पीठ पर बच्चे को ले जाती हुई एक भद्र महिला

...ओं का पानी पीते-पीते उनके रक्त में बहुत-से रङ्गों का मिश्रण ...गया है।

वन्य आकर्षण

इन द्वीपों की सबसे अधिक उल्लेखनीय और सबसे अधिक ...चारित विशेषता यह है कि ये द्वीप जङ्गली हैं—इस सीमा तक ...ली हैं कि इन द्वीपों के निवासियों पर यदि 'सभ्य' नियन्त्रण ...रक्खा जाय तो वे आपस में कट मरें या एक दूसरे को भूनकर ...जायँ। जानवरों का नहीं, इन द्वीपों के निवासी मानवों का ...कार करते थे और वह व्यक्ति सबसे अधिक प्रभावशाली समझा ...ता था जिसके पास शिकार किये हुए मानवों की खोपड़ियों का ...सबसे अधिक संग्रह होता था। सभ्य देश के लोगों से वास्ता पड़ने पर इन द्वीपों के निवासियों का जङ्गलीपन दूर हो गया और उनकी वही स्थिति हो गई जो कि कटघरे में बन्द शेर की हो जाती है!

दूसरी बात जङ्गलीपन की उनमें यह थी कि कपड़ों का—शरीर-रक्षा से अधिक लज्जा-निवारण के लिए जिनका हम प्रयोग करते हैं—उनके जीवन में कोई स्थान नहीं होता! बिना

एक मावरी पुरुष

कपड़े पहने, नग्नावस्था में, बाहर निकलने में जितनी लज्जा और कठिनाई का अनुभव हम करेंगे, उतनी ही कठिनाई और लज्जा का अनुभव वे कपड़ा पहनकर बाहर निकलने में करेंगे। न केवल इतना ही बल्कि इन द्वीपों के बुज़ुर्ग निवासियों की दृष्टि में कपड़े पहनना तथाकथित सभ्य लोगों की मूर्खताओं का अनुकरण करना है। स्कूल तथा अन्य शिक्षा-संस्थाओं में, जहाँ जङ्गली निवासियों की सन्तानों को सभ्य तथा शिक्षित बनाने का कार्य किया जाता है, कपड़े पहनकर आने के लिए बाध्य किया जाता है। कपड़े पहनकर लड़के आते भी हैं, लेकिन जैसे ही छुट्टी मिलती है या मास्टर साहब की नज़र चूक जाती है, कपड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उतारकर अलग डाल देते हैं और प्रकृत अवस्था में प्रकृति की गोद में खेलना-कूदना शुरू कर देते हैं।*

सात चूल्हे

एक-दो नहीं सात-सात और आठ-आठ चूल्हे। घर में जितने आदमी होते हैं, उतने ही उनके चूल्हे भी होते हैं। यह विशेषता पुरुषों के लिए ही होती है, स्त्रियों के लिए नहीं। स्त्रियों के लिए एक ही चूल्हे से काम चल जाता है जब कि पुरुषों के लिए अलग से एक एक चूल्हा होता है—जितने पुरुष, उतने ही चूल्हे।

आप यदि किसी के घर जायँ तो अलग-अलग सात-आठ चूल्हों पर एक ही तरह के खाद्य पदार्थ को पकता हुआ देखकर आपको आश्चर्य होगा कि आख़िर इन सबको अलग-अलग चूल्हे पर न चढ़ाकर एक ही चूल्हे पर चढ़ा दिया जाता तो बहुत-सी मेहनत बच जाती। बात बिल्कुल सही है। लेकिन इसके पीछे एक रहस्य है। पूछने पर मालूम होगा कि नहीं, ऐसा नहीं किया जा सकता। पुरुषों का भोजन [illegible] अलग, दूसरे पात्रों में बनेगा। अगर ऐसा न किया [illegible] पुरुष किसी काम के न रहें और वे स्त्रियों के [illegible] रह जायँ!

इन द्वीपों की कुछ बातें बड़ी निराली हैं। पुरुष[illegible] रक्षा के लिए अलग-अलग पात्रों में भोजन पकाने के [illegible] एक वस्तु पर और ध्यान दिया जाता है। वह वस्तु है [illegible] पुरुषत्व की निशानी के रूप में मूछों का जो स्थान होता [illegible] उसे जितना महत्त्व दिया जाता है, उतना ही महत्त्व इस [illegible] में कङ्घा को दिया जाता है। तीन इंच चौड़ा और [illegible] से दो फ़ुट तक यह कङ्घा लम्बा होता है और लम्बा[illegible] अनुपात से ही व्यक्ति की प्रतिष्ठा आँकी जाती है। [illegible] किसी को दण्डित या लज्जित करना होता है तो उसे [illegible] से वञ्चित कर दिया जाता है। उसके सिर के [illegible] भी कटा दिये जाते हैं जिससे, इच्छा होने पर भी, [illegible] लगाया जा सके।

पत्थर के सिक्के

सिक्के भी इन [illegible] विचित्र—पत्थर के और [illegible] भारी-भरकम—होते हैं। [illegible] आकार-प्रकार और भारीपन [illegible] अधिक होता है कि चल से [illegible] अचल सम्पत्ति का अङ्ग [illegible] जाते हैं। पत्थर के इन सिक्कों [illegible] व्यास छः इंच से लेकर [illegible] फ़ुट तक होता है। बीच [illegible] इनके छेद होता है और [illegible] में पिरोकर कन्धे पर रख [illegible] बाज़ार ले जाते हैं। जो [illegible] बड़े होते हैं वे घर के [illegible] पड़े-पड़े अपने स्वामी के [illegible] शाली होने की घोषणा [illegible] रहते हैं।

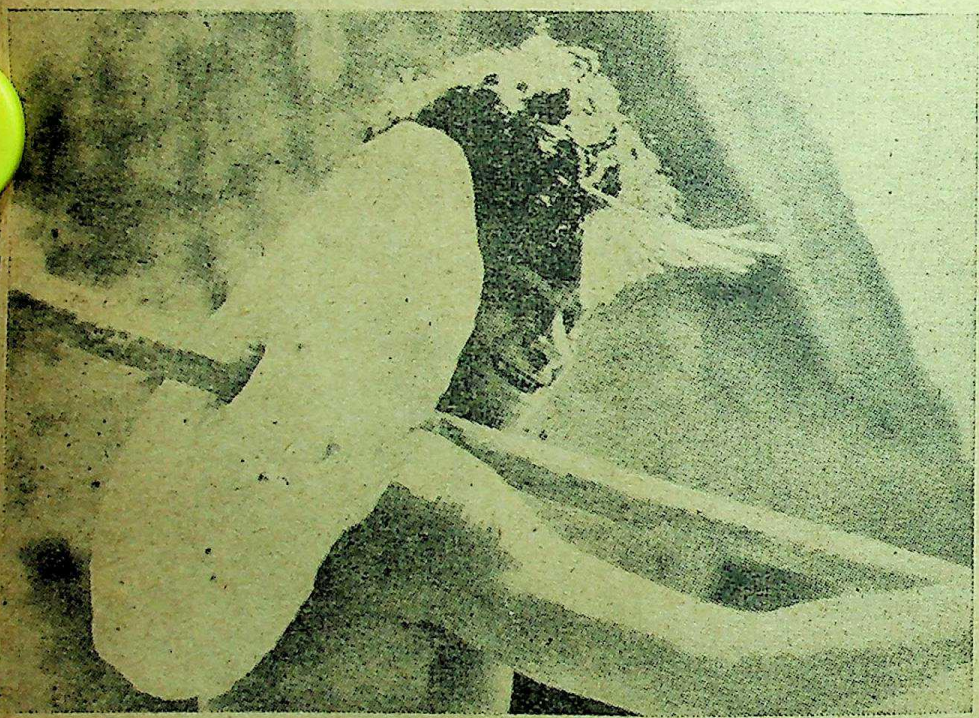

पीठ पर पत्थर-निर्मित सिक्का लिये बाज़ार को जाता हुआ एक युवक

पत्थर के इन अचलप्राय भारी-भरकम सिक्कों का [illegible] जापान के द्वीप यैप में होता है। यैप से ३०० मील [illegible] दूसरे पथरीले द्वीप पलाउ में इन सिक्कों को गढ़ा जाता है [illegible] वहाँ से, काफ़ी सङ्कटों का सामना करते हुए, नावों द्वारा [illegible] सिक्कों को यैप में लाया जाता है।

* ये विशेषतायें प्रशान्त के प्रायः सभी द्वीपों में पाई जाती हैं, लेकिन प्रस्तुत लेख विशेष रूप से जापानी मैण्डेट द्वीपों को सामने रखकर लिखा जा रहा है। यैप-मैप-मुंग आदि द्वीप समूह के जीवन के चित्र ही यहाँ अधिक दिये जा रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विकट चूहे

इन द्वीपों के चूहे बड़े विकट होते हैं। यहाँ का जलवायु ...के लिए इतना अनुकूल है कि वे मोटे-ताजे होकर बिल्ली ...कार के हो जाते हैं। संख्या भी इनकी कम नहीं होती ...जिधर झुक पड़ते हैं, अच्छी-ख़ासी समस्या उत्पन्न कर ...हैं।

सभ्य देशों के लोग जब इन ...य तथा जङ्गली द्वीपों में पहुँचे ...उन्हें भी इन विकटाकार चूहों ने ...परेशान किया। उनके सामने एक प्रमुख समस्या उत्पन्न हो ...कि इन चूहों को कैसे वश में ...जाय। बहुत सोचने-समझने ...द एक साहब ने सोचा कि इन ...पर क़ब्ज़ा करने के लिए बिल्लियों ...ही लाकर छोड़ना चाहिए।

ऐसा ही किया भी गया और ...जहाज़ में भरकर बहुत-सी ...ाँ लाकर द्वीप में छोड़ दी गईं। ...ों और चूहों में काफ़ी सङ्घर्ष ...। इस सङ्घर्ष से चूहों ने सभी ...ों को मार डाला।

उग्र सङ्घर्ष

चूहे-बिल्ली का यह सङ्घर्ष, उग्र ...धारण कर, दूसरे महायुद्ध के दूसरे ...भी प्रस्तुत है। लेकिन नहीं, इसे देशी चूहे और विदेशी बिल्ली का सङ्घर्ष कहना ग़लत होगा। इस सङ्घर्ष का मूल कारण है साम्राज्य और व्यापार-विस्तार की वह भावना जिसने विभिन्न शक्तियों को प्रशान्त की आखेट-भूमि में लाकर खड़ा कर दिया है। साम्राज्य और व्यापार के विस्तार की भावना के विलीन होने पर ही इस अथवा किसी भी संघर्ष की वास्तविक शान्ति की कल्पना की जा सकती है और तभी प्रशान्त की आखेट-भूमि के स्वतन्त्र और संघर्ष के स्थान पर कल्याणकारी भावनाओं को जन्म देनेवाले रूप का अस्तित्व सम्यक् हो सकता है।

नागरिकों के एक उत्सव का दृश्य

गायक

श्रीमती शकुन्तला सिरोठिया, बी० ए०

मेरी वीणा के तार इन्हें
उलझा ही रहने दो गायक।

कितने अरमानों की दुनिया
मैं बसा चुकी हूँ सपनों में,
जीवन का मधु खारा पानी बन
छलक रहा इन नयनों में।

छेड़ो न ढुलक जायेंगे
इनको अटका रहने दो गायक।

मेरी अगाध पीड़ा की क्या—
तुम थाह लगा सकते गायक?
मेरे दिल का यह दर्द कभी—
क्या स्वर में गा सकते गायक!

तुम समझ नहीं सकते जिसको
बेसमझा रहने दो गायक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्गीय लाला दूनीचन्द

श्रीयुत शिवकुमार विद्यालङ्कार

पं० जवाहरलाल नेहरू, श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित और बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन काफ़ी वृद्ध हो चुके हैं। किन्तु उनके जो चित्र अख़बारों में छपते हैं वे सब प्रायः उनकी युवावस्था के हैं। अभी तक उनकी वृद्धावस्था के चित्रों ने उनकी युवावस्था के चित्रों का स्थान नहीं लिया। किन्तु पञ्जाब कांग्रेस के पितामह स्वर्गीय लाला दूनीचन्द बार-एट-ला के जो चित्र अभी तक अख़बारों में छपे हैं वे उनकी वृद्धावस्था के ही हैं, युवावस्था के नहीं। उनकी सफ़ेद मूँछें, काले रङ्ग की गांधी टोपी के नीचे सफ़ेद-सफ़ेद बाल और बन्द गले के कोट के गले के ऊपर से दीखती हुई सफ़ेद कमीज़, सभी उनकी वृद्धावस्था का परिचय देते रहे हैं। उनकी युवावस्था का कोई चित्र हमारे देखने में नहीं आया। इससे स्पष्ट है कि स्वर्गीय लाला दूनीचन्द पञ्जाब के सबसे पुराने कांग्रेसी थे।

स्वर्गीय लाला दूनीचन्द

कहा जाता है कि सेवा-धर्म अत्यन्त कठिन व्रत है। योगी लोग भी इस व्रत को नहीं निभा सकते—'सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः'। किन्तु स्वर्गीय लाला दूनीचन्द ने सेवा को अपने जीवन का ध्येय बनाया था और कहना न होगा कि आपने इस व्रत को निभाकर योगियों को भी मात कर दिया। सन् १८७० में आपका जन्म पञ्जाब में हुआ था। फ़ोरमैन क्रिश्चियन कालेज और गवर्नमेंट कालेज लाहौर में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद आप १८९३ में इँग्लैंड चले गये। वहाँ आपने देखा कि स्वाधीनता का नशा कैसा होता है और स्वाधीन देश के नर-नारी कितने आनन्द में रहते हैं। अपने देश की पराधीनता पर आपको ग्लानि हुई और विदेश से वापस आते ही आपने देश-सेवा का व्रत ले लिया।

कांग्रेस का अलख

पञ्जाब भारत का अलस्टर है। सन् १९२० से पहले ब्रिटिश नौकरशाही की यह पूरी कोशिश थी कि पञ्जाब भारत की राजनैतिक जागृति से अछूता रहे। उस समय अनेक [illegible] युवकों को सरकारी नौकरी के चक्कर में फँसाकर [illegible] देशभक्ति की भावना को सदा के लिए समाप्त कर दि[illegible] था। मगर स्वर्गीय लाला दूनीचन्द देशभक्ति का [illegible] कर चुके थे। आप वकील थे। आपके सामने [illegible] कई प्रलोभन आये। किन्तु आपने पञ्जाब के [illegible] जीवन को लात मार[illegible] सेवा का व्रत ले लिया [illegible] दिनों पञ्जाब के पढ़े-लि[illegible] राजनीति और स्वा[illegible] नाम लेने में थर-थर [illegible] वे सोचा करते थे [illegible] कांग्रेस की सभाओं [illegible] लिया तो पता नहीं, [illegible] मुसीबत का पहाड़ टू[illegible] किन्तु उन अन्धकार[illegible] में भी लाला दूनी[illegible] पञ्जाब में कांग्रेस [illegible] जगाये रक्खा। [illegible] लोग कांग्रेस-सभा का [illegible] ही भयभीत हो जाते [illegible] लाला दूनीचन्द स्वयं [illegible] संयोजक हो जाते थे; [illegible] पर मेज़-कुर्सी व दरी [illegible] थे, सभापति-पद के लि[illegible] और अनुमोदन किया [illegible] इतना ही नहीं, [illegible] आसन पर बैठकर स्व[illegible] और श्रोता बनकर [illegible] साबित कर दिया करते थे कि "वक्ता श्रोता च दुर्लभः" [illegible] पञ्जाब में होनेवाली कांग्रेस-सभाओं पर चरितार्थ नहीं [illegible]

लाजपतराय के साथी

गांधी-युग से पूर्व लाला दूनीचन्द लाला लाजपतराय [illegible] पञ्जाब के प्रतिनिधि बनकर कांग्रेस के अधिवेशनों में [illegible] हुआ करते थे। पञ्जाब में होमरूल आन्दोलन के [illegible] प्राण थे। लाला लाजपतराय अपने इस साथी की [illegible] प्रशंसा किया करते थे। १७ अगस्त, १९१९ के दि[illegible] से पञ्जाबियों के नाम अपना सन्देश भेजते हुए लाला [illegible] ने कहा था—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पञ्जाब में दूनीचन्द से अधिक शरीफ़, सच्चा, साफ़ दिल हिम्मती व्यक्ति कौन है? न वह धनी है और न बहुत प्रतिभाशाली। फिर भी इस व्यक्ति ने उदात्त सिद्धान्तों शुभ कार्यों, अमीरों के मुक़ाबले ग़रीबों के अधिकारों की रक्षा विशुद्ध प्रजातन्त्र के लिए अकेले ही मुहिम ली। म्युनि- कमिटी, इंडियन एसोसिएशन और कांग्रेस में मुझे इस के साथ मिलकर काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। कहता हूँ कि मुझे लाला दूनीचन्द से अधिक निःस्वार्थ शाल हृदय का और कोई व्यक्ति नहीं मिला।"

कृष्ण-सुदामा

लाला लाजपतराय के सच्चे साथी होते हुए भी लाला चन्द सैद्धान्तिक मतभेद होने पर उनकी आलोचना करने से ते नहीं थे। एक बार लाला लाजपतराय का कांग्रेस से भेद हो गया; लेकिन लाला दूनीचन्द कांग्रेस की नीति से हीं आना सहमत थे। इसी लिए जब लाला लाजपतराय पने मत का प्रचार करने के लिए पञ्जाब के पत्रों में आन्दो- प्रारम्भ किया तब लाला दूनीचन्द उनके पीछे हाथ धोकर गये। आपने उन दिनों लाला लाजपतराय-जैसे बुद्धिजीवी प्रभावशाली व्यक्ति की बातों का जो प्रतिवाद किया, उसने ब की जनता पर आपकी धाक बैठा दी थी। इस पर भी ब के लोग उन दिनों लाला लाजपतराय और लाला दूनीचन्द कृष्ण-सुदामा के नाम से याद किया करते थे। पञ्जाब के ह उद्योगपति स्वर्गीय लाला हरकिशनलाल भी लाला चन्द के साथी थे। बस, इन दोनों के बाद पञ्जाब कांग्रेस के मञ्च पर जितने नेता अपना-अपना जौहर दिखाने आये, वे के सब आपके पुत्र-पौत्रों के समान थे।

लारेंस का पुतला

स्वर्गीय लाला दूनीचन्द सत्याग्रही थे, सच्चे अर्थों में सत्याग्रही किन्तु सत्याग्रह की यह भावना आपके दिल में स्वतः हुई थी। भारतीय अपमान आपको त्रिकाल में भी न था। लाहौर की माल-रोड से प्रतिदिन न जाने कितने हवा खाते निकल जाते होंगे। लेकिन लाला दूनीचन्द हले किसी भी पञ्जाबी युवक या युवती को लारेंस का पुतला कर आत्मग्लानि नहीं हुई। "Will you be governed pen or sword" (तुम लोग क़लम से शासित होना हो या तलवार से?) ये शब्द तीर की तरह आपको चुभ । इन शब्दों से भारत के स्वाभिमान को ठेस पहुँचती है, ज़ को आपने भली भाँति अनुभव कर लिया और यह कल्प किया कि इन शब्दों को बदलवाकर रहेंगे। आपने ही सत्याग्रह शुरू कर दिया। सत्याग्रह की भावना इसी लन के साथ आपमें प्रस्फुटित हुई थी। सरकार ने इस लन के अभियोग में आपको गिरफ़्तार कर लिया। आपका यह बलिदान सफल हुआ। आख़िरकार सरकार को झुकना पड़ा और उसने लारेंस पुतले के शब्द बदल दिये। 'I served you with pen and sword' (मैंने क़लम और तलवार दोनों से तुम लोगों की सेवा की) ये शब्द लारेंस के पुतले पर खोद दिये गये।

मार्शल-ला के महारथी

पञ्जाब में लाला दूनीचन्द नाम के दो कांग्रेसी नेता हैं। एक दूनीचन्द अम्बाला के रहनेवाले हैं और दूसरे लाहौर के। इन दोनों में फ़र्क़ करने के लिए लाहौर के दूनीचन्द को 'मार्शल-ला वाले दूनीचन्द' कहा जाया करता था। मार्शल-ला के दिनों लाहौर, अमृतसर और कसूर में गोराशाही ने जो ताण्डव किया, और उसके मुक़ाबले जनता ने जो करिश्मे दिखाये, उनका वर्णन पढ़ते ही ख़ून खौल उठता है। उन्हीं तूफ़ानी दिनों में लाला दूनीचन्द ने भयत्रस्त जनता का नेतृत्व किया था। डायर सरकार ने आपको गिरफ़्तार करके आजन्म कारावास की सज़ा दे दी थी। किन्तु बाद में आम सन्धि होने पर आपको रिहा कर दिया गया था। उस समय से लेकर अन्तिम यात्रा तक लाला दूनीचन्द अपने युवक कांग्रेसियों के साथ जेल की हवा खाते रहे। सन् १९२०-२१ के सत्याग्रह-आन्दोलन में लाला दूनीचन्द ने कृष्णपुरी की हवा खाई। सन् १९३०-३२ में जब गाँधीजी ने डांडी के प्रयाण और नमक-सत्याग्रह के साथ सत्याग्रह का शङ्ख फूँका तब पञ्जाब में लाला दूनीचन्द ने उसका स्वागत किया। आप सत्याग्रह में शामिल हुए और दिल खोलकर आपने जेल की सैर की। अगस्त १९४२ के 'कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्' आन्दोलन में भी आप किसी से पीछे नहीं रहे। लाजपतराय भवन में ९ अगस्त १९४२ के दिन पञ्जाब के कांग्रेसियों की एक सभा हो रही थी। लाल पगड़ीवालों ने भवन को चारों ओर से घेर लिया। पुलिस-कप्तान ने एक सूची निकाली और सुना दिया कि सरकार बहादुर अमुक-अमुक कांग्रेसियों को गिरफ़्तार कर लेगी। लाला दूनीचन्द भी उस सभा में उपस्थित थे। लेकिन सूची में आपका नाम नहीं था। अपने को अपने साथियों से बिछुड़ता देखकर आपको अत्यधिक निराशा हुई। आप अभी लाजपतराय भवन से बाहर होने को ही थे कि पुलिस-कप्तान ने आपको वापस बुला लिया और आपको भी दूसरे कांग्रेसियों के साथ गिरफ़्तार कर लिया। आपका चेहरा ख़ुशी के मारे खिल उठा। अपने साथियों के साथ जेल की यात्रा करने में आपको हार्दिक प्रसन्नता हुई। किन्तु जेल में आपका स्वास्थ्य उत्तरोत्तर गिर रहा था। स्वर्गीय सर सिकन्दर हयात ख़ाँ उन दिनों पञ्जाब के प्रधान मन्त्री थे। उन्होंने आप-जैसे वृद्ध कांग्रेसी को जेल में रखना उचित नहीं समझा। अतएव आप रिहा कर दिये गये। इस तरह लाला दूनीचन्द ही उन बुज़ुर्ग कांग्रेसियों में से थे, जो जीवन के अन्तिम क्षण तक स्वाधीनता-संग्राम में अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन की बाज़ी लगाते रहे। जेल से रिहा होने के बाद भी आप पर अनेक प्रतिबन्ध लगे हुए थे। महात्मा गांधी को लाला दूनीचन्द पर पूरा भरोसा था। आप सदैव गांधीजी के अनुशासन में रहते थे। सन् १९२० में महात्मा गांधी के कहने पर ही आपने वकालत छोड़ी थी और बाद में जब वकालत फिर शुरू की तो सिर्फ़ राजनैतिक मामलों को ही लेते थे, दूसरे मामलों को नहीं। आप पञ्जाब कांग्रेस कमिटी के कई वर्ष तक प्रधान रहे। आपको भी पञ्जाब की ओर से कांग्रेस कार्यसमिति का सदस्य चुनकर भेजा जाता था।

नगर-पिता

स्वर्गीय लाला दूनीचन्द की अर्थी का जो जलूस निकाला गया, वह भी काफ़ी अर्थ-पूर्ण था। लोगों ने इस अर्थी पर मनों फूल बरसाये और गुलाब-जल की सैकड़ों बोतलें छिड़क दीं। "क्या हुआ जो मर गये अपने वतन के वास्ते, बुलबुलें क़ुर्बान होती हैं चमन के वास्ते" और 'सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है' के गीतों के साथ लाहौर के मोज़ङ्ग, टैम्पल रोड, माल रोड, नीला गुम्बद, अनारकली, लाहौरी गेट, ढल मुहल्ला, रङ्गमहल हाईस्कूल, वाटर वर्क्स और श्मशानभूमि तक इस अर्थी को देखने के लिए सड़कों के दोनों ओर, मकानों के छज्जों और अट्टालिकाओं पर जो नर-नारी दिखाई दे रहे थे, वे सचमुच अपने भूतपूर्व नगर-पिता के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित कर रहे थे। लाला दूनीचन्द लाहौर म्युनिसिपल कमिटी के २०-२५ वर्ष तक सदस्य रहे। लाहौर के सिविल-जीवन की आधार-शिला आपने ही रक्खी थी। स्वर्गीय लाला लाजपतराय के साथ मिलकर आपने ही लाहौर शहर के चारों ओर सुन्दर म्युनिसिपल बाग़-बग़ीचे लगवाये थे। लारेन्स गार्डन्स बाद में बना। अपने इस नगर-पिता को अन्तिम समय भला लाहौर की जनता कैसे भूल सकती थी। यहाँ तक कि महाराजा रणजीत-सिंह की प्रपौत्री श्रीमती बम्बा सदरलैंड ने भी अपने नगर-पिता की अर्थी पर पुष्पवर्षा की।

अन्य कार्य

लाला दूनीचन्द ब्रेडला हाल लाहौर के ट्रस्टी थे, सेंट्रल रेट-पेयर्स एसोसियेशन के प्रधान थे। डा० गोपीचन्द भार्गव ने जब पञ्जाब असेम्बली से त्यागपत्र दिया तो लाला दू[illegible] लाहौर की जनता ने निर्विरोध अपना प्रतिनिधि चुनकर [illegible] में भेजा। मृत्यु के समय आपकी आयु ७५ [illegible] आप अपने पीछे श्री अमीचन्द बोगरा और श्री अमी[illegible] नाम के दो सुपुत्र और अपनी विधवा पत्नी छोड़ गये हैं।

श्रद्धाञ्जलि

स्वर्गीय लाला दूनीचन्द श्रेय मार्ग के पथिक [illegible] मार्ग पर चलते हुए आपने अनेक कष्ट सहन किये। [illegible] होते हुए चाहते तो मालरोड पर एक शानदार कोठी [illegible] सकते थे। वैभव और सम्पत्ति का उपभोग कर सकते थे [illegible] देशसेवा के पीछे आपने इन सब चीज़ों को लात [illegible] आपने लाखों कमाया, मगर ग़रीबों को उसका पात्र [illegible] उन्हीं को बाँट दिया। "पात्रे दीयते यद्दानं तद्दानं [illegible] विदुः" के अनुसार वकील होते हुए भी आपका दान [illegible] दान था।

लाला दूनीचन्द लाहौर के नगरपिता थे, [illegible] आप में जाति-पाँति और ऊँच-नीच का कोई [illegible] हिन्दू, मुसलमान या सिक्ख सभी आपकी दृष्टि में एक थे। [illegible] सच्चे और तपे हुए राष्ट्रवादी थे। साम्प्रदायिकता [illegible] भी न गई थी। आप निष्काम सेवा करनेवाले थे। [illegible] व्यक्तिगत स्वभाव बड़ा सरल था। छोटे से छोटे [illegible] के लिए भी आपका द्वार खुला हुआ था। आप [illegible] राजनैतिक कार्य के पीछे आपने अपने विनोदी [illegible] परित्याग नहीं किया था। आपका समवयस्क [illegible] पञ्जाब में कोई न था। इसलिए आप अपने से छोटे [illegible] कांग्रेसियों को कभी यह महसूस न होने देते थे कि [illegible] रहते हुए हँसी-मज़ाक़ करने का अधिकार नहीं। [illegible] साथ खुलकर हँसी-मज़ाक़ करते थे। पञ्जाब कांग्रेस [illegible] लाला दूनीचन्द के उठ जाने से पञ्जाब का युवक [illegible] अपने एक बुज़ुर्ग कांग्रेसी के अनुभवों से लाभ उठाने [illegible] हो गया है।

सम्बोधन

श्रीयुत आरसीप्रसाद सिंह

भय न कर मुझसे, तनिक तू और आ जा पास मेरे!
मैं करूँ फिर प्यार तुझको
और तेरे गीत गाऊँ!
लग रहा है आज जैसे,
कुछ सुनूँ मैं कुछ सुनाऊँ!

और भर दूँ बीच में जो यह पड़ा अवकाश मेरे!
तू खिसकती जा रही है;
दूर हटती जा रही है!
आग-सी जो लपलपाती
तू दहकती जा रही है!
आज आया चाहता क्या बाग़ में मधुमास मेरे!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पण्डित इलाचन्द्र जोशी

[खन्ना-परिवार से ठाकुर लक्ष्मीनारायणसिंह की घनिष्ठता थी। एक खन्ना कुमारी उनके जाल में आ चुकी थी। उसी परिवार के द्वारा से महीप का परिचय ठाकुर साहब से हुआ था और वह उन्हीं का अतिथि हो गया जहाँ धीराज से उसकी भेंट हुई। खबर मिली कि, धीराज बीमार के बहाने रियासती जङ्गल में ठाकुर साहब ने खपा दिया। शारदा देवी की बड़ी बहन और मिस समिधा को वे पहले ही दुनिया से हटा चुके थे। शारदा भी उनके चकमे में थी, यद्यपि वह उनको बखूबी जानती थी। शारदा के साथ महीप रात को नाव पर सैर करने गया। वहाँ शारदा ने उसे अपना कच्चा चिट्ठा सुनाया। इसके बाद मनोव्यथा की अधिकता से वे रोने लगीं। कठिनाई से उनका रोना बन्द हुआ। नाव को वहाँ से लौटकर दोनों बग्घी पर सवार हो चुपचाप बँगले पर आ गये।]

बत्तीसवाँ परिच्छेद

दिन भर जिस तरह की बातें महीप ने सुनी थीं और जो विचित्र अनुभूतियाँ उसे हुई थीं, उनके कारण ऐसी मानसिक चञ्चलता उसको डाँवाडोल कर रही थी जो उसे नींद नहीं आने दे रही थी। पूर्ण चन्द्र का प्रकाश उसकी आँखों पर कोमल किरणबाणों से जो मीठा आघात कर रहा था वह भी नींद के लिए विघ्न सिद्ध हो रहा था।

लेटे-लेटे महीप का ध्यान धीरे-धीरे दो बातों पर केन्द्रित हुआ। एक तो यह कि शारदादेवी के रोने के कारण का स्पष्ट अनुमान करने पर भी वह ऐसा अनुभव कर रहा था जैसे वह उसके लिए रहस्यमय ही रह गया। दूसरा यह कि अपनी सारी कहानी में नीलिमा का उल्लेख कहीं न करके शारदादेवी ने उसे एकदम अधूरा ही छोड़ दिया—जान-बूझकर या अनजाने में, वह कह नहीं सकता था। महीप को पूरा विश्वास था कि शारदादेवी को नीलिमा से सम्बन्ध रखनेवाली बहुत-सी भीतरी बातें मालूम हैं।

वह देर से सोया और दूसरे दिन सुबह कुछ देर ही से जागा। उठकर, हाथ-मुँह धोकर, वह अपने कमरे में बैठकर अख़बार पढ़ने लगा। थोड़ी देर बाद शारदादेवी ने भीतर प्रवेश किया। नहा-धोकर, सज-सँवरकर एक बैंगनी रङ्ग की छपी हुई साड़ी पहने आई थीं जो रेशम की न होने पर भी दूर से बहुत ही लाजवाब रेशम की-सी लगती थी। महीप ने आश्चर्य से देखा कि आज उनके मुख का चीमड़पन बहुत-कुछ घटा हुआ था, और ऐसा जान पड़ता था जैसे उनके वय में भी बड़ा परिवर्तन आ गया हो। एक दिन पहले तक महीप के मन में यह धारणा बनी हुई थी कि उनका वय ३५-३६ वर्ष के आसपास होगा। पर आज लगा कि २५ वर्ष से अधिक उनकी अवस्था नहीं है।

उन्होंने भीतर प्रवेश करते ही स्निग्ध मुसकान झलकाते हुए कहा—"आपकी नींद क्या पूरी नहीं हुई?"

"यह प्रश्न आपको क्यों सूझा?"

"आपकी आँखें बताती हैं।" यह कहती हुई वे पास की एक सोफ़ा पर बैठ गईं।

नौकर ने आकर दोनों के बीच में एक मेज़ पर चाय लगाई। नौकर के चले जाने पर दोनों प्यालों में चाय ढालते हुए शारदादेवी ने "कल रात गरमी भी काफ़ी थी। रात में काफ़ी देर तक गरम हवा चलती रही। पर कुछ भी हो, 'बोटिंग' अच्छा रहा।" कहकर उन्होंने जैसे परीक्षा की दृष्टि से एक बार महीप की ओर देखा। एक अव्यक्त मुसकान अभी तक उनके मुख पर वर्तमान थी।

महीप किसी कारण से काफ़ी गम्भीर बना हुआ था और एक दूसरी ही दृष्टि से उनके मन के भाव की परीक्षा कर रहा था।

क्षण-भर की हिचकिचाहट के बाद वह बोला—"जी हाँ, 'बोटिंग' तो काफ़ी अच्छा रहा। पर उसकी परिणति सुखद नहीं रही। मैं अभी तक समझ नहीं पाया हूँ कि आप—आप—माफ़ कीजिएगा—अन्त में आपका भावोच्छ्वास जिस रूप में फूट पड़ा उसका कारण क्या था..."

महीप डर रहा था कि कहीं शारदादेवी उस बात की चर्चा से नाराज़ न हो जायँ। पर उसे बड़ी तसल्ली हुई जब उसने देखा कि उन्होंने सहज भाव से उसे ग्रहण किया।

"मैं स्वयं नहीं जानती"—वही अव्यक्त मुसकान मुख पर झलकाते हुए शारदादेवी ने कहा—"मेरी उस विकलता का कारण क्या था। पर आप कवि हैं, आपकी अन्तर्दृष्टि से तो कोई बात छिपी नहीं रहनी चाहिए। सचमुच उस समय मैं बहुत घबरा उठी थी। उफ़!" और तत्काल उनके मुख की मुसकान तिरोहित हो गई, जैसे किसी ने अचानक, बिना पूर्व-सूचना के बिजली का बटन ऊपर को खटकाकर 'स्विच-आफ़' कर दिया और बिजली का बल्ब बुझकर कमरा अन्धकारमय हो उठा।

चाय का प्याला महीप की ओर बढ़ाते हुए उन्होंने कहा—"अपने जीवन की व्यर्थता का चित्र ऐसे गाढ़े काले रङ्गों से रँगकर इसके पहले मेरे सामने कभी नहीं आया था। ऐसा जान पड़ता कि सब कुछ कोयला—एकदम काला कोयला—बन गया है, और पेड़ का एक टुकड़ा भी ऐसा नहीं रह गया है जिसमें हरियाली की कोई निशानी शेष हो या जो पूरा न जलकर अधजला रह गया हो। और वह कोयला भी ऐसा कि एकदम निर्जीव और निःसत्त्व—जो आग लगाये जाने पर भी फिर दूसरी बार जल न सके! आदिम काल में जले हुए पेड़ों के जो अवशिष्ट चिह्न ज़मीन के भीतर वर्तमान हैं वे अभी तक इतने सजीव हैं कि उनके भीतर से तेल टपकता है—उनमें अभी तक इतनी जीवनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्ति शेष है कि दैत्य के आकार के बड़े-बड़े इंजिन उनके बल पर चलते हैं। पर अपने दग्ध जीवन का जो कोयला कल मुझे चारों ओर बिखरा हुआ दिखाई दिया वह न तो राख ही बन पाया था और न उसमें फिर से धधक उठने की शक्ति ही रह गई थी।"

महीप को लगा जैसे ऐसा कहते हुए शारदादेवी के मुख का रङ्ग भी कोयले की तरह बन गया।

उसे याद आया कि नाव में उसके अन्तर्मन ने भी शारदादेवी के सम्बन्ध में कोयले की ही कल्पना की थी। क्या दूरानुभूति—टेलीपेथी—के रहस्यमय नियम से यह बात सम्भव हुई थी कि दोनों के अन्तश्चेतन की कल्पना-धारा एक ही ओर प्रवाहित हुई? वास्तव में महीप को इस बात पर विचार करके परम आश्चर्य हुआ। दो व्यक्तियों की कल्पना-धारा एक ही क्षण में इस हद तक समान रूप धारण कर सकती है, इस बात का अनुभव उसे जीवन में पहली बार हुआ। पर, शारदादेवी से उसने इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा।

शारदादेवी के मुख का भाव गम्भीर से गम्भीरतर होता चला जाता था। कुछ देर तक चुप रहकर शून्य दृष्टि से महीप की ओर देखने के बाद वे फिर कहने लगीं—"जब मैं कभी अपने व्यर्थ जीवन के पन्नों को एकान्त में पलटती हूँ, तो कभी-कभी मुझे यह भय होने लगता है कि मैं पागल हो जाऊँगी। मेरे समान तीव्र अनुभूतिशील नारी-जीवन के ऐसे मर्मघाती अनुभवों के बाद भी मैं पागल नहीं हुई, यह रहस्य स्वयं मुझे चक्कर में डाले हुए है। इस तथ्य में मुझे प्रकृति का कोई एक निश्चित उद्देश्य छिपा हुआ जान पड़ता है जो मुझे घोर निराशा के क्षणों में उत्साहित करता रहता है। मेरे छोटे से हृदय के भीतर असंख्य महत्त्वाकांक्षायें बचपन से ही वर्तमान रही हैं। पर अपनी एक छोटी से छोटी आकांक्षा भी मैं जीवन में कभी चरितार्थ नहीं कर पाई, महत्त्वाकांक्षा की कौन कहे। अपने किस अपराध के कारण यह महादण्ड मुझे मिला? मैंने समाज का क्या बिगाड़ा था? जिस नृशंस हत्यारे ने अपने सामाजिक अधिकार और आर्थिक प्रभुत्व के बल पर मुझे केवल नैतिक दृष्टि से ही पतित नहीं किया, शारीरिक दृष्टि से ही शोषित नहीं किया, बल्कि सामाजिक दृष्टि से भी एकदम ज़लील कर दिया, अभी तक उसका बाल भी मैं बाँका नहीं कर पाई, यह कल्पना रह-रहकर असंख्य बिच्छुओं की तरह प्रतिपल मुझे डसती जाती है। फिर भी, जैसा कि आप देख रहे हैं, मैं जीवित हूँ; और यह आशा रखती हूँ कि जीवित रहूँगी। अपनी आत्मा के इस कोयले को, जो ठीक से आग नहीं पकड़ पाता और बार-बार जलाने पर फिर-फिर बुझ जाता है, एक बार अच्छी तरह धधकाये बिना मुझे कल नहीं पड़ सकती और मेरा विश्वास है कि तब तक मैं मर भी नहीं सकती। चाहे मुझे उसमें कई कनस्टर मिट्टी-का तेल डालकर जलाना पड़े—एक न एक दिन मैं उसे जलाकर ही छोड़ूँगी।"

महीप ने देखा, हड्डियों के भीतर धँसी हुई [illegible] आँखें ऐसा कहते हुए सचमुच दहकने लगी हैं। [illegible] प्रतिहिंसा की सजीव प्रतीक उन आँखों की ओर [illegible] देखता ही रह गया।

शारदादेवी कहती चली गईं—"इस युग के ज़मींदारों [illegible] अर्थपतियों ने अन्याय और अत्याचार के नये-नये [illegible] सीख लिये हैं और अपनी सुरक्षा के भी नये-नये सङ्गठन [illegible] उन्हें मालूम हो गये हैं। पर वे यह नहीं सोचते कि [illegible] उपायों से, परोक्ष में, उनके विनाश के साधनों को [illegible] अज्ञात रूप से जुटाती चली जा रही है। वे यह नहीं [illegible] सङ्गठन का क्रम उलटी दिशा में भी चल सकता है।"

यहाँ पर महीप ने उनके मन का निश्चित भाव [illegible] उद्देश्य से उन्हें टोका। उसने कहा—"तो क्या आप [illegible] विश्वास है कि इस देश में भी रूस की ही तरह किसानों [illegible] मज़दूरों की क्रान्ति ही ज़मींदारों और अर्थपतियों का [illegible] में सफल होगी?"

"नहीं, क़तई नहीं," प्याले में ठण्ढी पड़ी हुई चाय [illegible] घूँट पीने के बाद शारदादेवी ने अत्यन्त तीव्र स्वर में [illegible] "भारत में मज़दूरों और किसानों की क्रान्ति कभी [illegible] पावेगी और न कभी मज़दूर वर्ग का 'डिक्टेटरशिप' [illegible] पावेगा। यहाँ यदि कभी वास्तविक अर्थ में किसी [illegible] क्रान्ति सफल होगी तो वह होगी उस वर्ग की जिसे [illegible] अत्यन्त उपेक्षा—बल्कि अत्यन्त घृणा—की दृष्टि से देखे [illegible] वह वर्ग है निम्न मध्य वर्ग—'पेती बूर्जवाजी', और [illegible] मचेगी उन्हीं 'छोटे छोटे', 'तुच्छ' और 'व्यक्तिगत' [illegible] जिनका अनुभव मैं अपने जीवन में कर रही हूँ, और [illegible] जीवनशोषी पीड़न का अनुभव मेरी ही तरह के [illegible] व्यक्ति प्रतिपल कर रहे हैं। मैं जानती हूँ कि यदि मैं [illegible] इस बात की घोषणा करूँ तो सभी राजनीतिक दल [illegible] बात को निरी अज्ञता और लड़कपन समझकर या तो [illegible] मेरी बुद्धि पर तरस खायेंगे, और आप भी निश्चय ही [illegible] मन अविश्वासपूर्वक हँसेंगे बल्कि हँस रहे हैं—आपके [illegible] की अव्यक्त मुसकान यही बताती है। पर यदि आप [illegible] हुए—जिसकी मुझे पूरी आशा है—तो आप एक [illegible] कि मेरी जिस बात को इस समय आप 'लड़कपन' [illegible] हैं उसके भीतर कितना प्रचण्ड सत्य छिपा हुआ है।

"छुटपन से ही कम्यूनिस्ट क्रान्ति सम्बन्धी विषयों [illegible] मुझे गहरी दिलचस्पी रही है—अवश्य सैद्धान्तिक रूप [illegible] उन विषयों का अध्ययन मैंने भारत की प्राचीन संस्कृति [illegible] परिवर्तित होनेवाली सामाजिक परिस्थिति और आर्थिक [illegible] नीतिक प्रगति को मूल में परिचालित करनेवाले [illegible] आधार पर एकान्त दृष्टि से किया है। इसलिए [illegible]

CC-0. Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वास का जो कारण आपको बताने जा रही हूँ उस पर आप एक बार ध्यानपूर्वक, निरपेक्ष भाव से, विचार करें।"

"भारत का 'पेती बूर्जवा' उस वर्ग से सम्बन्ध रखता है जो एक ओर तीव्र अनुभूतिशील और बौद्धिक है, और दूसरी ओर सामाजिक और आर्थिक विषमता के चक्रों के बीच में सबसे अधिक पिसा हुआ है। यह बात स्पष्ट रूप से सिद्ध कर दी वर्तमान महायुद्ध ने जिसके फलस्वरूप किसानों और मज़दूरों की आर्थिक स्थिति पहले की अपेक्षा बहुत सुविधाजनक हो उठी और इसके विपरीत निम्न मध्यवर्गवाले या तो बेकार हैं, या छोटी-मोटी नौकरियों के तिनकों का सहारा पकड़कर इस गरम महँगाई में कम से कम आठ-आठ, दस-दस प्राणियों के परिवारों का निर्वाह करने का असम्भव प्रयास कर रहे हैं; जो प्रति कपड़े के अभाव से न अपनी लज्जा ढक पा रहे हैं, न बाज़ार के महँगे अन्न से पूरा पेट भरने में समर्थ हैं और न अपनी परम्परागत लौकिकता को किसी भी हद तक निभा पाते हैं। फल यह देखने में आ रहा है कि या तो वे लोग फटाफट आत्महत्या कर रहे हैं या महामारियों और दूसरी बीमारियों के शिकार बन रहे हैं, या पागल हो रहे हैं।

"किसानों का यह हाल है कि ज़मींदारों की लूट-खसोट के बावजूद इस समय उन्हें अपने लिए काफ़ी अन्न, और पहले की अपेक्षा कई गुना अधिक धन बटोरने की सुविधा प्राप्त हो गई है और मज़दूरों का यह हाल है कि उनके परिवार का एक भी प्राणी इस समय बेकार नहीं है और वे पहले की अपेक्षा काफ़ी अच्छी मज़दूरी पा रहे हैं। लौकिकता का प्रश्न उनके लिए कभी बड़ा नहीं रहा; और फटे-पुराने कपड़े पहनने के आदी वे पहले से ही रहे हैं—चाहे इसका कारण सामाजिक अर्थ-विधान की कितनी ही बड़ी विषमता क्यों न रही हो; और उनकी अनुभूतिशीलता भी तीव्र नहीं रही है—चाहे इसका भी कारण सामन्तवादी सभ्यता की एकाङ्गीय स्वार्थपरायणता ही क्यों न रहा हो, जिसने इस वर्ग को बौद्धिकता का प्रचार कभी न होने देकर उनकी अनुभूतिशीलता को भी जड़ बना दिया। कारण चाहे कुछ भी हो, सत्य है वही जो मैंने आपको बताया है। पर निम्न मध्यवर्ग के सम्बन्ध में यह बात नहीं कही जा सकती। उनकी एक स्वतन्त्र बौद्धिक परम्परा है, जिसने उन्हें एक ओर प्रत्येक विषय पर सूक्ष्म रूप से विचार करने की क्षमता दी है, दूसरी ओर अनुभूति की तीव्रता। पर आर्थिक सुविधा और सामाजिक प्रतिष्ठा—ये दो बातें उन्हें कभी प्राप्त नहीं रही हैं। अपने प्रति होनेवाले इस सामूहिक और परम्परागत अन्याय की तीखी वेदना इस वर्ग के व्यष्टिगत और साथ ही समष्टिगत मन के भीतर सब समय ज्ञात या अज्ञात में वर्तमान रहती है। उच्च शिक्षा का जो आदर्श साधारणतः समाज में वर्तमान पाया जाता है उस दृष्टि से यह वर्ग विशेष शिक्षित नहीं जान पड़ेगा। आम तौर से इस वर्ग के व्यक्तियों की शिक्षा हाईस्कूल में समाप्त हो जाती है और बहुत-से तो हाईस्कूल की शिक्षा को भी पूरा कर सकने की आर्थिक सुविधा नहीं पाते। फिर भी सबसे अधिक बौद्धिक और सबसे अधिक विचारशील व्यक्ति आपको इसी वर्ग में मिलेंगे, यद्यपि उनकी बौद्धिकता और विचारशीलता का कोई मूल्य न अर्थपतियों ने कभी स्वीकार किया है न राष्ट्रपतियों ने। ९० प्रतिशत साहित्यिक इसी वर्ग से सम्बन्ध रखते हैं, जिन्होंने साहित्य के माध्यम से केवल अपनी तीव्र भावानुभूति ही व्यक्त नहीं की है, बल्कि अपने पीड़ित प्राणों की गहन अनुभूति से प्राप्त अत्यन्त उच्च और भावी समाज के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विचार भी समाज को दिये हैं; ९० प्रतिशत तथाकथित कम्यूनिस्ट और क्रान्तिकारी भी इस वर्ग से निकले हैं, जिन्होंने आज तक बहुत-से ग़लत रास्ते पकड़े हैं सन्देह नहीं, पर जिनके भीतर बृहत् और व्यापक विश्व-क्रान्ति के अग्निगर्भ बीज निश्चय ही निहित रहे हैं।

"आपके सम्बन्ध में मेरे मन में पहले ही से जो आशा और आस्था की भावना वर्तमान रही है उसका कारण यही रहा है कि आप उसी सदियों के लौह-चक्र से पिसे हुए वर्ग के चिन्ताशील साहित्यिक हैं। इसमें सन्देह नहीं कि इस वर्ग के क्रान्तदर्शी चिन्तक आज तक एक दूसरे के प्रति अविश्वास और पारस्परिक विरोध में ही अपनी शक्ति का अपव्यय करते रहे हैं। पर वर्तमान महायुद्ध में प्रभुत्वपरायण राष्ट्रों के पारस्परिक स्वार्थपूर्ण सङ्घर्ष और दुर्बलों के विश्वव्यापी संहार-काण्ड ने इस वर्ग के भीतर एक ऐसी सङ्गठनमूलक चेतना अज्ञात में भर दी है जो उसके सदस्यों को एक दूसरे के बहुत निकट ले आवेगी। जो तथाकथित कम्यूनिस्ट नवयुवक इस समय निम्नमध्यवर्ग (अर्थात् अपने ही वर्ग के प्रति व्यङ्ग या उपेक्षा का भाव जताते हैं वे अन्त में उसकी बिखरी हुई शक्ति के संयोजन और सङ्गठन से अत्यन्त प्रभावित होकर उसी में फिर से जा मिलेंगे। पर अभी इस वर्ग में पूर्ण सहयोग और युगान्तरकारी सङ्गठन की भावना जागरित होने में बहुत समय लगेगा। अगले महायुद्ध के बाद—पचीस-तीस वर्ष बाद निश्चय ही एक और महायुद्ध होगा, इस बात के निश्चित लक्षण वर्तमान महायुद्ध के समाप्त होते न होते स्पष्ट हो गये हैं। अगले महायुद्ध के बाद निम्न मध्यवर्ग पूर्णतया सङ्गठित हो उठेगा। उसके अगले महायुद्ध के बाद एक और महायुद्ध होगा। उस चौथे महायुद्ध की जो विश्वव्यापी प्रतिक्रिया होगी उसके फलस्वरूप भारतीय निम्न मध्यवर्ग की विश्वव्यापी सहयोगात्मक शक्ति अपने जो चमत्कार दिखावेगी उसकी कल्पना भी इस समय ठीक-ठीक नहीं की जा सकती।

भविष्य का यह सङ्गठित निम्नमध्यवर्ग अपनी क्रांति के साधन मज़दूरों और किसानों से ही जुटावेगा इसमें सन्देह नहीं, पर उनकी वह शक्ति पूर्णतः उसके अपने नियन्त्रण में रहेगी। मार्क्स का यह सिद्धान्त कि मज़दूरों और किसानों की महाशक्ति के भीतर मध्यवर्ग को अपने को मिटा देना होगा—भावी क्रान्ति के सम्बन्ध में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क़तई लागू नहीं होगा। 'डिक्टेटरशिप आफ़ दि प्रोलेटेरियट' के नारे का कोई अर्थ तक नहीं रह जावेगा। तब जो नारा लागू होगा वह है 'डिक्टेटरशिप आफ़ दी पेती बूर्जवाजी', पर वास्तव में यह नारा बुलन्द नहीं किया जावेगा। 'डिक्टेटरशिप आफ़ दी पीपुल' या इसी तरह का और कोई नाम उस नई शासन-प्रणाली को दिया जावेगा।

"इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि मज़दूर और किसान निम्न मध्यवर्ग की शक्ति के केवल साधन-मात्र रह जावेंगे। निम्न मध्यवर्ग शक्ति प्राप्त करने पर इस बात की पूरी कोशिश करेगा कि 'प्रोलेटेरियट' वर्ग की जनता जल्दी से जल्दी उसी के बौद्धिक स्तर तक पहुँच जावे, और उस भावी युग में वैज्ञानिक शिक्षा-प्रणाली के जो द्रुतगतिशील साधन उसे प्राप्त होंगे—जैसे रेडियो और टेलीविज़न द्वारा शिक्षण आदि—उनकी सहायता से अपने इस लक्ष्य तक पहुँचने में उसे देर नहीं लगेगी; और इस लक्ष्य को प्राप्त कर लेने पर—निम्नमध्यवर्ग तथा 'प्रोलेटेरियट' सम्प्रदाय में कोई अन्तर नहीं रह जायगा। और ऊपर के स्तरों के जो वर्ग हैं, वे जब अपने विशेष पार्थिव अधिकारों को त्यागने के लिए बाध्य हो जायँगे तब निम्न मध्यवर्ग के ही स्तर पर आने में उन्हें भी कोई देर नहीं लगेगी। इसका कारण यह है कि शिक्षा और संस्कृति की परम्परा में वे निम्नमध्यवर्ग से कभी पिछड़े नहीं रहे, बल्कि आगे ही रहे हैं—भले ही उनमें तीव्र अनुभूतिशीलता और 'डिनेमिक' बौद्धिकता का निपट अभाव रहा हो।

"इस सारी चक्रगति का यह परिणाम होगा कि सारा समाज सिर से लेकर पाँवों तक एकरूप हो जायगा; निम्नमध्यवर्ग के मूल अन्तःकेन्द्र के चारों ओर एक सुसंस्कृत, सुव्यवस्थित और वर्गभेद-रहित सुसम्पन्न समाज पार्थिव उन्नति के समस्त सम्भव साधनों का सदुपयोग करने के बाद अपने मूल लक्ष्य—सांस्कृतिक और आध्यात्मिक उन्नति की ओर अग्रसर होता चला जायगा, और तभी मानवता के चरम कल्याण का स्वप्न सफल हो सकेगा। मार्क्सियन क्रान्ति का चरम लक्ष्य भौतिक सुख-साधनों तक सीमित है, इसलिए वह भारतीय निम्नमध्यवर्ग को ऊपर से आकर्षित करने पर भी उसके भीतरी प्राणों को कभी नहीं गुदगुदा पाता। पेट की ज्वाला—भूखे प्राणों की पीड़ा—क्या है, इस बात का अनुभव निम्नमध्यवर्ग से अधिक किसी को नहीं है; पर पेट की वह सर्वशोषी आग भी उसकी सांस्कृतिक और आध्यात्मिक उन्नति के लक्ष्य को मिटाने में कभी समर्थ नहीं हुई है।"

महीप को ऐसा लग रहा था जैसे उसका प्रत्येक रोमछिद्र अपने कान खड़े करके शारदादेवी के उस आकस्मिक धारावाही भाषण को सुन रहा है। इधर दो दिन से शारदादेवी के [illegible] जो कुछ परिचय उसे मिला था उससे उसके मन में यह [illegible] लगी थी कि वह उनके मानसिक तथा बौद्धिक स्तर की [illegible] की थाह पा चुका है। पर आज उसकी यह धारणा [illegible] छिन्न हो गई। वह अभी तक उनके सम्बन्ध में [illegible] भ्रम में पड़ा हुआ था, यह सोचकर उसे आश्चर्य हुआ। [illegible] क्रान्ति का जो चित्र उन्होंने उसके सामने रक्खा था [illegible] विचित्र कल्पनापूर्ण—'फेंटेस्टिक'—लग रहा था, [illegible] पर साथ ही यह धारणा उसके मन में जमने लगी थी कि [illegible] कैसा ही 'फेंटेस्टिक' क्यों न हो, और उस चित्र से उसे [illegible] विश्वासों का चाहे कैसा ही विरोध क्यों न हो, [illegible] किसी भी हालत में नहीं है। प्रारम्भ में शारदादेवी [illegible] सुनकर मन्द मुसकान की जो झलक उसके मुख पर [illegible] उठी थी, वह अब परम आश्चर्य और विभ्रान्ति में परि[illegible] गई थी।

उसने शारदादेवी के दृष्टिकोण को और अधिक [illegible] से जानने के उद्देश्य से प्रश्न किया—"तब क्या यह क्रा[illegible] जिसका वर्णन आपने किया है—मार्क्स के सिद्धान्तों की [illegible] होगी?"

"क़तई नहीं", अपने शब्दों पर ज़ोर देते हुए [illegible] ने कहा—"ऊपरी दृष्टि से भले ही यह ऐसी जान पड़ती [illegible] सतह के नीचे दृष्टि डालने पर यह बात स्पष्ट हो जायगी [illegible] क्रान्ति मार्क्स के सिद्धान्तों की विरोधी नहीं, बल्कि [illegible] विकसित, परिशोधित और बहुत अधिक सुसंस्कृत [illegible] मार्क्स के अपेक्षाकृत जीर्ण सिद्धान्त में नये प्राण डालने, [illegible] रूप और नया रङ्ग देने की बहुत बड़ी आवश्यकता [illegible] महसूस करेगा और भारत में इस आवश्यकता की पूर्ति [illegible] प्रदर्शन होगा—यह भविष्यज्ञान मेरे भीतर की कोई भेदभरी [illegible] दे रही है।" यह कहते हुए शारदादेवी के चीमड़ [illegible] दो कोटरों पर स्थित आँखों से जैसे तीव्र प्रकाशमय तीरों [illegible] कई तीखी किरणें एक साथ विकीर्ण होने लगीं। उस [illegible] प्रकाश में, उस प्रदीप्त तेजोराशि की चकाचौंध में, महीप [illegible] लगा कि शारदादेवी के मुख का चीमड़पन एकदम [illegible] गया है और एक दिव्यज्ञानमयी मूर्तिमान पुञ्जप्रभा एक [illegible] स्पर्शातीत सन्देश लिये हुए उसके सामने विराजमान [illegible] अनिर्वचनीय जीवन-सन्देश जिसके लिए वह अपने छोटे [illegible] जीवन में इतने दिनों से, ज्ञात या अज्ञात में, छटपटाता आ [illegible]

महीप कुछ क्षण तक मन्त्रमुग्ध-सा उनकी ओर देखता [illegible]

(क्रमशः)

——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाइसराय का भाषण

गत १४ जून १९४५ को श्रीमान् वाइसराय ने नई दिल्ली से जो भाषण ब्राडकास्ट किया था उसका हिन्दी रूपान्तर इस प्रकार है—

सम्राट् की सरकार ने मुझे अधिकार दिया है कि मैं भारतीय राजनीतिक नेताओं के सम्मुख वे प्रस्ताव रक्खूँ जिनसे वर्तमान राजनीतिक स्थिति का सुधार हो सके और भारत अपने पूर्ण राज्य के लक्ष्य की ओर प्रगति कर सके। इसी समय भारतीय पार्लमेंट के सम्मुख इन प्रस्तावों की व्याख्या कर रहे हैं। इस भाषण ब्राडकास्ट करने में मेरा उद्देश्य यह है कि मैं आपके सम्मुख इन प्रस्तावों, इन प्रस्तावों के उद्देश्य और उस प्रणाली की व्याख्या करूँ जिसके द्वारा मैं इन्हें कार्यान्वित करना चाहता हूँ।

यह कोई वैधानिक समझौता करने या लादने का प्रयत्न नहीं है। सम्राट् की सरकार को आशा थी कि साम्प्रदायिक समस्या हल करने के लिए भारतीय राजनीतिक दलों में कोई समझौता हो जायगा, क्योंकि यह समस्या ही सबसे बड़ी अड़चन थी, किन्तु यह आशा पूरी न हो सकी।

इस बीच भारत के सम्मुख महान् अवसर उपस्थित है और कई बड़ी समस्यायें हल करने को पड़ी हैं जिसके लिए समस्त दलों के प्रमुख व्यक्तियों के सामूहिक प्रयत्न की आवश्यकता होगी। इसलिए मैं सम्राट् की सरकार की पूर्ण स्वीकृति से, इस उद्देश्य से केन्द्रीय और प्रान्तीय राजनीति के भारतीय नेताओं को सम्मिलित करना चाहता हूँ कि वे एक नई शासन-परिषद् के निर्माण के सम्बन्ध में, जो सङ्गठित राजनीतिक लोकमत की दृष्टि से अधिक प्रतिनिधिपूर्ण हो, मेरे साथ परामर्श करें। प्रस्तावित शासन परिषद् में प्रधान समुदायों के सदस्य होंगे और उसमें सवर्ण हिन्दुओं और मुसलमानों को समान अनुपात में प्रतिनिधित्व प्राप्त होगा। यदि इसका निर्माण हो सका तो यह वर्तमान विधान के अन्तर्गत ही कार्य करेगी। वाइसराय और प्रधान सेनापति को छोड़कर, जो युद्ध-सदस्य का पद सँभालते रहेंगे, यह पूर्ण रूप से भारतीय परिषद् होगी। यह भी विचार है कि जहाँ तक ब्रिटिश भारत का सम्बन्ध है, परराष्ट्र विभाग का दायित्व, जो अब वाइसराय पर रहा है, शासन-परिषद् के किसी भारतीय सदस्य को सौंप दिया जाय।

सम्राट् की सरकार ने एक बात और सोची है कि उपनिवेशों की भाँति भारत में भी एक ब्रिटिश हाई कमिश्नर नियुक्त किया जाय जो भारत में ब्रिटेन के व्यापारिक और दूसरे ऐसे हितों का प्रतिनिधित्व करे।

आप देखेंगे कि इस प्रकार की नई शासन-परिषद् स्वायत्त शासन के मार्ग पर एक निश्चित प्रगति का द्योतक होगी। यह परिषद् प्रायः विशुद्ध रूप से भारतीय होगी और सबसे पहली बार अर्थ-सदस्य और गृह-सदस्य भारतीय होंगे जब कि परराष्ट्र विभाग का प्रबन्ध भी एक भारतीय को सौंप दिया जायगा। इसके अतिरिक्त अब राजनीतिक नेताओं के परामर्श से सदस्यों का निर्वाचन गवर्नर-जनरल द्वारा किया जायगा, यद्यपि इनकी नियुक्ति हिज मैजेस्टी सम्राट् की स्वीकृति के उपरान्त होगी।

शासन-परिषद् वर्तमान विधान की परिधि के अन्दर रहकर कार्य करेगी इसलिए गवर्नर-जनरल द्वारा नियन्त्रण सम्बन्धी अपनी वैधानिक सत्ता का उपयोग न करने का प्रश्न ही नहीं उठता। किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि इसका प्रयोग अविवेकपूर्वक न किया जायगा।

मैं यह भी स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि इस मध्यवर्ती सरकार की स्थापना से अन्तिम वैधानिक समझौते के मार्ग में कोई बाधा न आवेगी। इस नई शासन-परिषद् के मुख्य कार्य ये होंगे :—

पहले तो तब तक पूरी शक्ति के साथ जापान के विरुद्ध युद्ध जारी रखना जब तक कि वह पूरी तरह से परास्त न हो जाय।

दूसरे, जब तक एक नये स्थायी विधान के सम्बन्ध में समझौता होकर वह कार्य रूप में परिणत न हो जाय, युद्धोत्तर-निर्माणकार्य के बहुमुखी कार्यों के साथ-साथ ब्रिटिश भारत के शासन को चलाते रहना।

तीसरे, जब शासन-परिषद् के सदस्यों को सम्भव जान पड़े तब उन साधनों पर विचार करना जिनके द्वारा ऐसा समझौता सम्भव हो। तीसरा कार्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। मैं इस बात को बिल्कुल स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि न तो मैंने और न सम्राट् की सरकार ने ही इस बात को ध्यान से हटाया है कि एक दीर्घकालीन समझौते की आवश्यकता है और वर्तमान प्रस्तावों का उद्देश्य दीर्घकालीन समझौते को सरल बनाना है।

मैंने इस प्रकार की शासन-परिषद् के निर्माण के सर्वोत्तम उपायों पर विचार कर लिया है और परामर्श के लिए निम्नाङ्कित व्यक्तियों को वाइसरायभवन में आमन्त्रित करने का निश्चय किया है :—

उन व्यक्तियों को जो इस समय किसी प्रान्त में प्रधान मन्त्री हैं, अथवा, उन प्रान्तों के, जो इस समय धारा ९३ की सरकार के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधीन हैं, उन व्यक्तियों को जो सबसे पीछे प्रधान मन्त्री के पद पर रह चुके हैं।

केन्द्रीय असेम्बली के कांग्रेस दल के नेता और मुस्लिम लीग के उपनेता, राजपरिषद् के कांग्रेस दल और मुस्लिम लीग के नेता और साथ ही केन्द्रीय असेम्बली के राष्ट्रीय दल और योरपियन दल के नेता।

श्री गांधी और श्री जिन्ना जो दो प्रमुख राजनीतिक दलों के माने हुए नेता हैं।

राव बहादुर एन० शिवराज जो परिगणित जातियों का प्रतिनिधित्व करेंगे।

मास्टर तारासिंह जो सिक्खों का प्रतिनिधित्व करेंगे।

इन सज्जनों को आज निमन्त्रण-पत्र दिये जा रहे हैं और यह प्रस्ताव किया गया है कि सम्मेलन २५ जून को शिमला में होगा, जहाँ हम दिल्ली की अपेक्षा अधिक ठण्डे वातावरण में रहेंगे।

मेरा विश्वास है कि आमन्त्रित लोग सम्मेलन में उपस्थित होंगे और मुझे अपनी सहायता प्रदान करेंगे। भारत के भविष्य के सम्बन्ध में अन्तिम निबटारे की तरफ़ प्रगति करने के इस नये प्रयत्न में मुझपर और उन पर भारी उत्तरदायित्व रहेगा।

यदि यह बैठक सफल हुई तो मुझे आशा है कि हम केन्द्र में नई शासन-परिषद् के निर्माण के सम्बन्ध में सहमत हो सकेंगे। मुझे यह भी आशा है कि जिन प्रान्तों में आजकल वैधानिक क़ानून की ९३ धारा के अनुसार शासन हो रहा है उनमें मन्त्रि-मण्डल पुनः पद ग्रहण करके फिर अपना कार्य आरम्भ कर सकेंगे और ये संयुक्त मन्त्रिमण्डल होंगे।

यदि दुर्भाग्यवश यह बैठक असफल रही तो हमें दलों के परस्पर निकट आने के समय तक अब की तरह काम चलाते रहना पड़ेगा। यदि अन्य व्यवस्थाओं के सम्बन्ध में कोई समझौता न हो सका तो वर्तमान शासन-परिषद् ही, जो भारत के लिए इतना मूल्यवान् कार्य कर चुकी है, अपना काम जारी रक्खेगी।

परन्तु मुझे पूर्ण आशा है कि यदि दलों के नेता मेरे तथा एक दूसरे के साथ काम करने के सच्चे इरादे से समस्या को हाथ में लेंगे तो यह बैठक अवश्य सफल होगी। मैं उन्हें विश्वास दिलाता हूँ कि इस प्रस्ताव के पीछे ब्रिटेन के सभी उत्तरदायी नेताओं तथा सम्पूर्ण ब्रिटिश राष्ट्र की भारत को उसके लक्ष्य तक पहुँचाने में सहायता प्रदान करने की सच्ची अभिलाषा निहित है। मेरा विश्वास है कि यह लक्ष्य की दिशा में एक पग आगे बढ़ाने से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है। यह एक काफ़ी बड़ा क़दम और ठीक मार्ग पर क़दम है।

मैं यह भी स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि इन प्रस्तावों का प्रभाव केवल ब्रिटिश भारत पर ही पड़ता है और इनके परिणाम-स्वरूप नरेशों के सम्राट् के प्रतिनिधि के प्रति सम्बन्धों में कोई परिवर्तन नहीं होता।

सम्राट् की सरकार की स्वीकृति तथा मेरी परिषद् के से कांग्रेस की कार्य-समिति के उन सदस्यों की रिहाई के दे दिये गये हैं, जो अभी तक जेल में हैं। १९४२ के के परिणामस्वरूप जो अन्य लोग अभी तक जेलों में सम्बन्ध में अन्तिम निर्णय की बात मैं नई केन्द्रीय सरकार प्रान्तीय सरकारों पर छोड़े देता हूँ।

केन्द्रीय तथा प्रान्तीय धारासभाओं के नये चुनाव युक्त समय के सम्बन्ध में भी सम्मेलन में विचार किया जा

अन्त में आप सबसे मैं सद्भावना तथा पारस्परिक वि उस वातावरण को उत्पन्न करने में सहायता देने का करूँगा, जो प्रगति करने के लिए आवश्यक है। इस देश तथा इसमें रहनेवाले करोड़ों प्राणियों का भाग्य इतिहास की इस सङ्कटपूर्ण घड़ी में ब्रिटिश तथा भारतीय नेता कार्य तथा विचार दोनों ही क्षेत्रों के नेताओं—की बु तथा सद्भावना पर निर्भर है।

यह भारत के सभी भागों से आये उसके सपूतों की का ही परिणाम है कि इस देश का सैनिक गौरव उच्चतम शिखर पर पहुँच गया है। अन्तर्राष्ट्रीय सम्मे उसके प्रतिनिधि अपने राजनीतिज्ञतापूर्ण दृष्टिकोण के कारण अधिक सम्मान प्राप्त कर चुके हैं। भारत की आकांक्षाओं समृद्धि की ओर उसकी प्रगति के लिए सहानुभूति इतनी तथा व्यापक इससे पहले कभी नहीं रही है। इस प्रकार महान् सम्पत्ति प्राप्त हुई है, जिसका यदि हम चाहें तो पूर्ण उपयोग कर सकते हैं। परन्तु यह सरल न होगा जल्दी भी न होगा। करना बहुत कुछ है और मार्ग में और ख़तरे बहुत हैं। सभी तरफ़ ऐसी कितनी ही बा जिनकी अवहेलना करनी होगी और जिन्हें भुलाना होगा।

मैं भारत के भविष्य में विश्वास करता हूँ और जो मुझसे बन पड़ेगा, उसे महत्तर बनाने की चेष्टा करूँगा। मैं सभी से आपके सहयोग और सद्भावना की याचना करता हूँ।

भावी संसार की रचना

श्रीयुत चक्रवर्ती राजगोपालाचारी का एक लेख हिन्दुस्थान' में प्रकाशित हुआ है। उन्होंने लिखा अगले पचीस वर्षों में संसार के राज्यों का कैसा होगा तथा स्वाधीनता की क्या व्याख्या होगी। लेख साथ ही विचारपूर्ण है। उसका अधिकांश यहाँ किया गया है—

इस युद्ध से शिक्षा ग्रहण करने के बाद कोई राष्ट्र में जूझेगा ऐसा मुझे विश्वास नहीं होता। पहले युद्धों नये-नये अस्त्र-शस्त्रों का आविष्कार हुआ। १९१४ में का व्यवहार युद्ध में प्रारम्भ ही हुआ था, किन्तु उस हथियार आज-जैसे सर्वनाशक और सर्वभक्षक नहीं थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज लोग अपने आन्तरिक मतभेदों को मिटाने का प्रयत्न में लगे हैं। विचित्र और विरोधी स्वभाव और सिद्धान्तों वाले, राजदूत और अधिकारियों ने मिलकर, इच्छा के विरुद्ध भी, नम्रता से अपने मतभेद को दूर करना सीख लिया है।

भिन्न-राष्ट्रों ने एक दूसरे के समक्ष अपनी अलग-अलग शर्तें रखने का अधिकार रक्खे थे। इनका एक दूसरे ने विरोध भी किया। सोवियत सरकार इसका एक प्रमाण है। ऐसा होते हुए भी उन्हें इच्छा से उन्हें कहना पड़ता है—"अच्छा, यदि रूस ऐसा चाहता है तो हम उसकी बात स्वीकार करेंगे।" विश्व शान्ति-सम्मेलन में रूस की ३ वोटों की बात ब्रिटेन और अमरीका को माननी ही पड़ी। और भी अनेक बड़े-छोटे मतभेदों को भुलाकर आपस में मिलकर रहना पसन्द करेंगे। यह मनोवृत्ति सुन्दर है। यदि हम भारतवासी भी ऐसा कर सकें तो देश का भला हो।

इस युद्ध के बाद योरप में एक बड़ी भारी सत्ता जन्म लेगी। रूस की सत्ता का सामना कोई नहीं कर सकेगा। युद्ध के अन्त में योरप में शक्ति-सन्तुलन बना रहेगा ऐसी मुझे आशा नहीं। छोटे छोटे राष्ट्र मिलें और सङ्गठन के बल पर धीरे-धीरे शक्तिशाली बनें यह अब शक्य नहीं रहा। योरप के विभिन्न छोटे राष्ट्र आपस में मिलकर एक महान् सत्ता स्थापित करने की अपेक्षा अलग रहना अधिक पसन्द करेंगे। फ्रांस को भी अब बड़ी सत्ता बनने में बहुत समय लगेगा।

सच पूछा जाय तो योरप में बड़ी सत्ता के नाते रूस ही टिक सकता। इसका यह अर्थ नहीं कि मैं साम्यवादी हो गया हूँ। यथार्थ है वही मैं कहता हूँ। आप कह सकते हैं कि ब्रिटेन और अमरीका है। वे दोनों मिलकर रूस के विरुद्ध समान बलशाली सत्ता स्थापित कर सकते हैं। किन्तु यह हो ही नहीं सकता। फिर से ये दोनों आज जैसे मिल सकेंगे ऐसी कोई सम्भावना नहीं दीखती।

योरप के वर्तमान युद्ध के समाप्त होने के बाद वहाँ स्थानीय युद्धों से आगे युद्ध की सीमा नहीं बढ़ सकेगी। इस युद्ध के कारण लोगों को ऐसा अनुभव हो जायगा कि वह कभी भूला नहीं जा सकेगा। इस शिक्षा का वे पूरा-पूरा सदुपयोग करेंगे।

गत युद्ध के बाद विश्व के विभिन्न राष्ट्रों ने कई क़रार किये और कई प्रकार का उत्तरदायित्व भी अपने सिर लिया था। उसका पालन करने की उनकी तीव्र इच्छा भी थी; किन्तु सब निष्फल हुई। अतः अब वे अधिक सतर्क रहेंगे और अपनी योजना में पूर्णता लाने का प्रयत्न करेंगे।

पिछले युद्ध में दमन की मर्यादा थी, इसमें ऐसी कोई बात नहीं है। उनका मन जितना चाहेगा, वे पराजित राष्ट्रों का दमन करेंगे ताकि वे फिर कभी युद्ध करने के लिए उठ न सकें।

यहाँ मैं भावी २५-३० वर्ष की रूपरेखा उपस्थित कर रहा हूँ। तब छोटे राष्ट्रों का कोई स्थान नहीं रहेगा। छोटे से छोटे राष्ट्र भी स्वतन्त्र बनेंगे, इन सुन्दर, लुभावने शब्दों से वर्तमान युद्ध का प्रारम्भ हुआ था। किन्तु थोड़े ही समय में यह स्पष्ट हो गया कि बड़ी सत्तायें ही अपनी स्वतन्त्रता क़ायम रख सकेंगी—और ये सत्तायें भी व्यक्तिगत रूप से पूर्ण स्वतन्त्र नहीं रह सकेंगी। ब्रिटेन, अमरीका या रूस अलग-अलग रूप से अपनी शक्ति क़ायम नहीं रख सकते। उन्हें एक दूसरे पर अवलम्बित रहकर ही जीना पड़ेगा।

किन्तु छोटे राष्ट्रों की स्वतन्त्र सत्ता का क्या होगा? आज की परिस्थिति में वे पूर्ण स्वतन्त्र नहीं रह सकेंगे। उन्हें वैसी ही स्वतन्त्रता मिलेगी जैसी आज हमारे ज़िला बोर्डों को है। भविष्य में स्वाधीनता की नई व्यवस्था की जायगी। युगोस्लाविया स्वतन्त्र होगा, तुर्की स्वतन्त्र होगा, स्पेन और इटली भी स्वतन्त्र होंगे किन्तु उनकी यह स्वतन्त्रता योरप के ज़िला बोर्डों के समान होगी।

युद्धोत्तरकालीन शिक्षा-व्यवस्था

दिल्ली के डाक्टर ज़ाकिर हुसेन बेसिक शिक्षा के विशेषज्ञ माने जाते हैं। उनकी अध्यक्षता में जामिया मिलिया इस्लामिया नामक उर्दू की शिक्षा-संस्था का सफलतापूर्वक सञ्चालन हो रहा है। बम्बई के 'प्राग्रेसिव ग्रुप' की सभा में युद्धोत्तरकालीन शिक्षा-व्यवस्था पर उन्होंने एक भाषण किया है जिसका सारांश दैनिक 'हिन्दुस्थान' में छपा है। उसका कुछ अंश इस प्रकार है—

युद्ध के बाद शिक्षा-क्षेत्र में भारत के समक्ष सबसे प्रथम और महत्त्वपूर्ण कार्य होगा बेसिक प्रणाली पर शिक्षा की रचना करना। केवल साक्षरता ही उसका मुख्य लक्ष्य नहीं होगा, क्योंकि साक्षरता एक कला है, न कि शिक्षण। नई शिक्षा-प्रणाली का ध्येय होगा लड़के-लड़कियों के मस्तिष्क की सामान्य उन्नति और उनका चरित्र-निर्माण जिससे वे राष्ट्रीय समस्या को हल करने में हाथ बटा सकें। अब हम राष्ट्र की शिक्षा के प्रश्न के साथ खिलवाड़ नहीं कर सकते। हमें बेसिक शिक्षण की ऐसी योजना बनानी है जिसके द्वारा प्रत्येक लड़के और लड़की को ७-८ वर्ष की निश्शुल्क अनिवार्य शिक्षा दी जा सके। इससे कम समय में उन्हें देश के ज़िम्मेदार नागरिक बनने योग्य शिक्षा नहीं दी जा सकती।

यहाँ यह प्रश्न हो सकता है कि शिक्षा कैसे दी जा सकती है? शिक्षा का अर्थ बाहर से किसी चीज़ को जोड़ना नहीं है। रिक्त मस्तिष्क में ज्ञान भर देना भी शिक्षा नहीं है। शिक्षा का सच्चा अर्थ है मस्तिष्क में जो कुछ ज्ञान विद्यमान है उसका परिमार्जन और विकास। मस्तिष्क के शिक्षण का अर्थ है सुप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७ से १४ वर्ष के लड़के-लड़कियों को उत्पादक शारीरिक उद्योग-द्वारा शिक्षा देने का जो प्रस्ताव है उसका मुख्य लक्ष्य है बालक के स्वभाव को सम्मान देकर शिक्षा-प्रणाली के यथार्थ रूप को समझना। किन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि ऐसे विद्यालय स्वदेशी वस्त्र के उत्पादन केन्द्र बना दिये जायँ अथवा बच्चों को कड़ा परिश्रम करने पर बाध्य किया जाय।

भावी पुनर्व्यवस्थित शिक्षा-प्रणाली में विद्यार्थियों की विभिन्न रुचियों का सावधानी से अध्ययन किया जायगा और उनके मस्तिष्क का अध्ययन करने के पश्चात् ही उन्हें विभिन्न विषयों के उच्च स्कूलों और कालेजों में भेजा जायगा। आज जो शिक्षा-प्रणाली प्रचलित है उसमें यह मान लिया गया है कि साधारण शिक्षा के बाद टेकनिकल शिक्षण दिया जाना चाहिए। किन्तु यह धारणा बिलकुल ग़लत है!

हमें प्रौढ़ों के अज्ञान और निरक्षरता को मिटाने के लिए एक सम्पूर्ण योजना बनानी चाहिए। जब तक इन दोषों को पूर्ण और व्यवस्थित रूप से दूर करने का प्रयत्न नहीं किया जाता, तब तक वे प्रजातान्त्रिक शिक्षण-संस्थाओं को विकसित नहीं होने देंगे। प्रौढ़ों को केवल साक्षर बनाना ही इस योजना का ध्येय नहीं होगा। इसका ध्येय होगा सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास।

लोग प्रायः प्रश्न करते हैं कि बेसिक शिक्षण के लिए पैसा कहाँ से आवेगा। उनसे मैं स्वयं यह प्रश्न करूँगा कि किसी भी प्रकार के शिक्षण के लिए पैसा कहाँ से आवेगा। सार्जेंट स्कीम के लिए ४० वर्ष तक कहाँ से पैसा मिलेगा? धन के अभाव में भी हमें बेसिक शिक्षण प्रारम्भ कर ही देना होगा। शिक्षक के वेतन का बड़ा भाग तो स्कूल की उत्पादित वस्तुओं से ही निकल आवेगा।

स्वतन्त्रता का धोखा

'हिन्दी मिलाप' लिखता है—

क्या पाश्चात्य सभ्यता कर्म की तरह आज़ादी को भी बदनाम कर देना चाहती है! कर्म बदनाम हुआ इसलिए कि स्वार्थियों, पूँजीपतियों और साम्राज्यवादियों ने उसकी आड़ लेकर स्वार्थ-साधन का यत्न किया। वे नाम लेते थे धर्म-प्रचार का—उसके नाम पर ख़ून की नदियाँ बहाते थे। परन्तु उनका अभीष्ट था राजनीतिक शक्ति, साम्राज्य और वैभव। इस नीति ने पश्चिम में धर्म के प्रति घृणा पैदा कर दी। इस घृणा का रूपान्तर कम्युनिज़्म (वर्गवाद) है। परन्तु वास्तविकता यह है [illegible] पश्चिमी दुनिया के ग़ैर-कम्यूनिस्ट सर्वसाधारण भी [illegible] अर्थों में धर्मभीरु नहीं हैं जिन अर्थों में ३ या ४ सौ [illegible] थे। अब उनके लिए धर्म में कोई आकर्षण नहीं रहा। इसका कारण है यह कि धर्म की आड़ लेकर स्वार्थियों और लोलुपों ने स्वार्थ साधन का यत्न किया। जो बात किसी [illegible] में धर्म के नाम पर हुई थी ठीक वही बात आज आज़ाद[illegible] बारे में हो रही है। दुनिया के किसी भी राजनीतिज्ञ के [illegible] को—चाहे वह कम्युनिस्ट हो, साम्राज्यवादी हो, फ़ासि[illegible] या पूँजीपति—देखिए, आपको मालूम होगा कि वह संसा[illegible] स्वतन्त्रता के स्वप्न देख रहा है। हिटलर ने कहा था [illegible] जर्मनी की विजय इसलिए चाहते हैं कि संसार के [illegible] देश आज़ाद हो सकें। जापान ने कहा था—उसके [illegible] उद्देश एशिया को एशियावालों के लिए आज़ाद करा[illegible] ब्रिटेन युद्ध में शामिल हुआ तो उसने घोषणा की—हमारा [illegible] प्रजातन्त्र और स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए है। अमरीका [illegible] भी यही बात कही और रूस ने भी! इतना होने पर भी [illegible] तक एक भी ग़ुलाम देश आज़ाद नहीं हुआ। हाँ, रू[illegible] की कोशिश ज़रूर हो रही है कि जो देश पहले किसी [illegible] के ग़ुलाम थे उन्हें अब किसी दूसरी ताक़त का ग़ुला[illegible] दिया जाय। एक रूसी राजनीतिज्ञ ने 'रेड स्टार' में [illegible] है—दुनिया के हर देश को जो पहले किसी दूसरी [illegible] का ग़ुलाम था या उसकी नौ आबादी था, पूर्ण स्व[illegible] मिल जानी चाहिए। सिद्धान्त मान्य है। परन्तु रूस [illegible] क्या कर रहा है? विशेषतः पोलैंड, रूमानिया, बल्[illegible] आस्ट्रिया और जर्मनी में। इसी तरह ब्रिटेन प्रचार [illegible] है कि शाम, लिबनान और उसके साथ ही साथ अलजीरि[illegible] मराकश को आज़ाद कर देना चाहिए। परन्तु वह [illegible] हिन्दुस्तान, बर्मा, फ़िलस्तीन, सुडान और मिस्र में [illegible] ग्रहण करने को तैयार नहीं है। अमरीका भी प्रचा[illegible] समर्थक और पोषक है। परन्तु साथ ही वह चाहता है कि [illegible] महासागर के सारे टापू उसके अधिकार में आ जाने [illegible] यह सब कुछ यदि आज़ादी के नाम पर किया जा रहा [illegible] यह धोखा नहीं तो और क्या है? मालूम होता है कि [illegible] सभ्यतावाले आज़ादी को भी उसी तरह निरर्थक बना देना [illegible] हैं जिस तरह किसी ज़माने में उन्होंने धर्म को निरर्थ[illegible] दिया था।

——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय नोट

रूस की महत्त्वाकांक्षा

रूस वीतराग संन्यासियों का देश नहीं है। वर्गवाद का
यक संस्कार प्राप्त करके आख़िर रूसी भी मनुष्य ही हैं और
नकी भी अपनी महत्त्वाकांक्षायें हैं। इस विश्वव्यापी महायुद्ध
में विजय प्राप्त करके रूस के अधिनायक यदि अपने मानव का
स्वाभिमान और महत्त्वाकांक्षा व्यक्त करें तो यह सर्वथा स्वाभाविक
है। 'एकोनामिस्ट' नाम के अख़बार ने इस बात को लक्ष्य
करके लिखा है कि रूस क्या चाहता है। उसने लिखा है—
सोवियट कूटनीतिज्ञ अब पूर्वी तथा मध्य बाल्टिक से लेकर एड्रि-
याटिक सागर तक एक विशाल रक्षात्मक पाँति का निर्माण करने में
संलग्नचित्त हैं। इस पाँति के उत्तरी छोर का गढ़ स्टेटिन होगा
और दक्षिणी छोर का गढ़ होगा ट्रीस्ट। इस रक्षात्मक पाँति
को दृढ़ करने में भूमि-सम्बन्धी जो भी दावे सहायक हो सकते हैं,
वे उपस्थित करवाये जाते हैं; नैतिक अथवा राजनैतिक आदर्शों
के वे दावे भले ही अनुचित हों। छोटे-छोटे राष्ट्रों की राष्ट्रीयता
को अग्नि में आहुति दी जाती है। यूगोस्लाव लोगों को ट्रीस्ट
तथा कोरिन्थिया हड़प लेने के लिए उकसाया जाता है। आस्ट्रिया
के राष्ट्रवादियों को भी पुरस्कृत करना है, अतः यह आवाज़ उठाई
जाती है कि आस्ट्रिया को इटली से सारा टाइरोल प्रान्त मिलना
चाहिए। पोलैंड पूर्व बग नदी से आगे तक खदेड़ दिया गया
है, जिसमें वह पश्चिम में ओडर तथा नीसे नदी तक पहुँच जाय।
'जर्मनिसवर्ग पूर्णतया रूसी नगर बनेगा।' यहीं तक नहीं, यह भी
अख़बारों में छपा है कि रूस ने तुर्की से काकेशस प्रदेश की सीमा
में परिवर्तन करने की माँग की है एवं दर्रे-दानियाल में सुविधायें
प्राप्त करने की भी इच्छा प्रकट की है। ईरान के तेल की माँग
भी उसकी है ही। उसकी ये भावनायें उसके वर्गवाद से कहाँ
तक सम्बन्ध रखती हैं, इसका विचार करना व्यर्थ है। अपने
वर्गवाद के सिद्धान्त के ही आधार पर उसने अपने सङ्घ के सभी
देशों को स्वाधीनता प्रदान कर दी है, यहाँ तक कि वे बाहर
के देशों से अपना स्वतन्त्र राजनैतिक सम्बन्ध स्थापित कर सकते
हैं। परन्तु रूसी सङ्घ के किसी प्रदेश ने अपने इस अधिकार का
प्रयोग अभी तक नहीं किया है। अधिकार का प्रयोग हो तो
कैसे हो—रूस वर्गवादियों का एक साम्राज्य है और उस साम्राज्य
में भी साम्राज्यवाद की भावना का होना अस्वाभाविक नहीं है।
अतएव अपनी इस विजय के फलस्वरूप वह योरप में एवं एशिया
में अपनी सीमायें बढ़ाने का प्रयत्न करे तो यह बात उसके अनुरूप
ही होगी। रूस के बोल्शेविक पहले से ही इस बात की महत्त्वा-
कांक्षा रखते आये हैं कि वे पूँजीवाद का उन्मूलन कर अपनी
बोल्शेविक विचारधारा को संसार-व्यापी बनावेंगे। इधर इस
युद्धकाल में स्टेलिन की सरकार ने घोषणा करके अपने यहाँ की
उस संस्था को भङ्ग कर दिया है, जो सारे संसार में बोल्शेविक
विचारधारा का प्रचार करने का प्रयत्न कर रही थी। रूस अब
संसार की तीन प्रमुख महाशक्तियों में हो गया है और वह अपने
को इस महान् पद के अनुरूप बनाये रखने का अवश्य ही प्रयत्न
करेगा। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए इस बात की आवश्यकता
है कि उसकी महत्ता का आदर सभी ओर हो। यही बात है कि
उसके राजनीतिज्ञ इस समय सभी अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों पर अधि-
चपलतापूर्वक अपने विचार प्रकट करते दिखाई दे रहे हैं।
देखना है कि वे अपने इस प्रयत्न में कहाँ तक सफल-मनोरथ हो
हैं। तथापि यह तो प्रकट ही है कि रूस आज संसार की एक
महान् शक्ति है और उसकी शक्ति से यदि कुछ आतङ्कित हैं तो
कुछ को प्रोत्साहन भी मिलता है। परन्तु इस महान् शक्ति
संसार के छोटे-बड़े स्वाधीन राष्ट्रों की कहाँ तक रक्षा होगी, यह
भविष्य की बात है।

बङ्गाल में घूँसख़ोरी

भारत में घूँसख़ोरी महाव्याधि का रूप धारण कर गई है।
जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है, जहाँ इस देश के निवासि
को घूँस देकर अपना काम न चलाना पड़ता हो और ऐसा के
व्यक्ति नहीं है, जिसे घूँस न देनी पड़ती हो। लड़के और स्त्रि
भी इस महाव्याधि से रक्षा नहीं पाते हैं। साधु-सन्तों और
भिखमङ्गों को भी घूँस देकर अपनी रक्षा करनी पड़ती है
निस्सन्देह सरकार की क़ानून की किताब में घूँस लेना और दे
अपराध माना गया है और यदा-कदा इस अपराध के अपराधि
को सरकार दण्ड भी देती रहती है; परन्तु सरकार के ये
दण्ड-विधान का इस महाव्याधि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा और
'दस्तूर' तथा 'हक़' के नाम पर इस देश में जड़ जमाकर
व्यापक रूप धारण कर गई है। सरकार के सभी अधिकारी इ
परिचित हैं। इधर युद्ध-उद्योगों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सलसिले में जो घूँसख़ोरी बढ़ चली थी, उससे सरकार को भी हुत आर्थिक हानि उठानी पड़ी। यहाँ तक कि वह तिलमिला ठी और उसने अपने बहुत-से ऊँचे-ऊँचे अधिकारियों को भी स अपराध में दण्ड दिया। अपनी गहरी हानि होते देखकर रकार के भी कान खड़े हो गये हैं और वह अब इस महाव्याधि ी शान्ति का कोई कारगर उपाय करेगी। अभी हाल में बङ्गाल ी प्रान्तीय सरकार ने अपने अधिकारियों की एक कमिटी क़ायम रके प्रान्त की शासन-व्यवस्था की जाँच करवाई है। उस मिटी की जाँच की रिपोर्ट प्रकाशित हुई है। उसमें सरकारी र्मचारियों की अदूरदर्शिता और कर्तव्यहीनता का जहाँ पूरा वत्र अङ्कित किया गया है वहाँ घूँसख़ोरी की व्यापकता के ीषण रूप का भी वर्णन किया गया है। उसमें लिखा है कि ङ्गाल में घूँसख़ोरी ऐसे व्यापक रूप से फैली है और इसके प्रति यत्न की विफलता का ऐसा रुख़ ग्रहण किया गया दिखाई देता कि हमारे ख़्याल में इस बुराई को जड़ से दूर करने के लिए त्यन्त कड़े उपाय करने की आवश्यकता है। सरकारी नौकर घूँस ी बुराई से भर गये हैं और उनका नैतिक बल भी नष्ट हो गया । यदि इससे कम कोई बात की गई तो वह प्रान्त की ग़रीब नता के साथ न्याय करने से इनकार करना होगा।' यह कथन स्वयं सरकार के उच्च अधिकारियों का! जनता के नेताओं का हीं जिनके ऐसे आरोपों को सरकार अप्रामाणिक मानती है। स रिपोर्ट में घूँसख़ोरी के दमन के लिए कुछ उपाय भी बताये ये हैं। हमें विश्वास है कि बङ्गाल सरकार अब अपनी दीन-ीन प्रजा के साथ न्याय करने से कदापि इनकार न करेगी, क्योंकि सख़ोरी का उसको भी काफ़ी कटु अनुभव हो चुका है।

फ़्रांस का अभ्युत्थान

ग्रेट ब्रिटेन और अमरीका की सहायता से फ़्रांस का उद्धार गया है और ब्रिटेन के कृपापात्र जेनरल डी गाले इस समय ांस के सर्वेसर्वा हैं। उनके प्रयत्नों से फ़्रांस संसार के प्रमुख ष्ट्रों में गिन लिया गया है। फ़्रांस प्रजातन्त्रवादी देश है परन्तु सका अपना एक बहुत बड़ा साम्राज्य भी है। इसी युद्ध में सका पूर्ण पराभव हो गया था परन्तु उस पराभव से उसने ाक्षा नहीं प्राप्त की है और वह पहले ही की तरह अपने साम्राज्य ा बनाये रखना चाहता है। अपने अफ़रीका के जिस अल्जीरिया देश में लाखों फ़्रांसीसियों ने युद्ध-काल में भाग कर शरण ली ी और जर्मनों के अत्याचारों से रक्षा पाई थी, उसी अल्जीरिया अभी उस दिन डी गाले की सेनाओं ने हज़ारों अल्जीरिया-ावासियों को गोली का निशाना बनाया। उनका अपराध यही ा कि वे भी फ़्रांसीसियों की तरह अपने देश में स्वाधीन होकर हना चाहते थे। फ़्रांसीसियों को यदि स्वाधीनता का प्रेम है तो पने ही लिए। ऐसा न होता तो वे उन अल्जीरिया-निवासियों ऊपर उस प्रकार का जघन्य अत्याचार कदापि न करते, जहाँ नके घोर सङ्कट के काल में उन्हें आश्रय मिला था और जहाँ से वे अपने खोये हुए स्वदेश को शत्रु के पञ्जे से छुड़ाने में समर्थ हुए थे। परन्तु फ़्रांस को अपने साम्राज्य का अभिमान है। वह उसे अक्षुण्ण बनाये रखना चाहता है। सीरिया में ख़ून-ख़राबी की है, उससे भी उसकी इसी भावना का परिचय मिलता है। निस्सन्देह फ़्रांस के ये क्रूर-कार्य उसके प्रजातन्त्र को कलङ्कित करते हैं। परन्तु वह क्या करे? अपनी आदत से लाचार है। इस युद्ध में इस बात का भी परिचय दे चुका है कि उसका राष्ट्रीय सङ्गठन खोखला है और वह अपने साम्राज्य की रक्षा यदि कर सकता है तो अपने बलवान् मित्रों के बल पर ही। इधर वहाँ वर्गवाद की व्यापकता हो गई है। मन्त्रि-पैलिटी के वर्गवादी सदस्य अधिक संख्या में चुने गये हैं। यह प्रकट होता है कि वह दिन दूर नहीं जब फ़्रांस में वर्गवाद का व्यापक प्रभाव हो जायगा। उस दशा में उसके साम्राज्य का क्या रूप होगा, यह स्पष्ट ही है। परन्तु आज फ़्रांस में जो वर्ग हैं, वे साम्राज्यवादी हैं और वे सरलता से अपने देश में वर्गवाद को अपनी जड़ नहीं जमाने देंगे। प्रतीत होता है कि इस बात को लेकर फ़्रांस में भी गृह-कलह अवश्य होगा। परन्तु यह बात अभी दूर की है। इस समय तो उसे संसार के प्रमुख राष्ट्रों में अपनी स्थिति दृढ़ करना ही अभिप्रेत है। कदाचित् इसी महत्त्वाकांक्षा से वह अपने साम्राज्य के अधीनस्थ देशों में बल का प्रदर्शन कर रहा है। परन्तु जर्मनी द्वारा पददलित और पराभूत किये गये फ़्रांस में न तो वह शक्ति है और न उसके पास उतने साधन हैं कि शीघ्र ही उसे अपनी पहली जैसी क्षमता प्राप्त हो जाय। अतएव उसे अपने सबल और प्रबल मित्रों का मुख देखकर ही अपने को आगे बढ़ाना होगा। संसार के पाँच प्रमुख राष्ट्रों में उसकी गणना हुई है, यह उसके मित्रों की कृपा और सहानुभूति का परिणाम है। यह भी कहा जा सकता है कि उन्होंने राष्ट्र-पञ्चायत में अपना पक्ष सबल बनाने के लिए फ़्रांस को अपनी श्रेणी में मिलाया है। चाहे जो हो, फ़्रांस यदि पहले का फ़्रांस बनना चाहता है तो उसे अधिक उदार नीति ग्रहण करनी पड़ेगी एवं सरल राजनीति अपनानी होगी तभी उसका भविष्य उज्ज्वल होगा। पुरानी साम्राज्यवादी नीति को ग्रहण करके फ़्रांस पहले की भाँति फल-फूल न सकेगा।

ईरान की माँग

महायुद्ध के प्रारम्भ में जब जर्मन सेनाओं की विजय विजय हो रही थी, उस समय जर्मन जासूसों के चक्कर में आकर ईरान के तत्कालीन बादशाह रज़ाशाह पहलवी ने जर्मनों का पक्ष लेकर अपने पैरों में अपने हाथों कुल्हाड़ी मार ली थी। उनके विरोधी रुख़ को देखकर ग्रेट ब्रिटेन और रूस को ईरान में अपनी फ़ौजें भेजनी पड़ी थीं। इस अवसर पर ईरान में जो सङ्कट हुआ था, उसके फल-स्वरूप रज़ाशाह पहलवी को अपना सिंहासन नहीं छोड़ना पड़ा था किन्तु उन्हें देश से बाहर जाकर दक्षिण अफ़्रीका में रहना पड़ा था, जहाँ उनकी मृत्यु भी हो गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईरान में जो नई सरकार स्थापित हुई थी उससे मित्र-राज्यों की एक नई सन्धि हुई। इस सन्धि के अनुसार ईरान-सरकार ने यह स्वीकार किया था कि युद्ध की समाप्ति के छः महीने बाद तक रूस, ब्रिटेन और अमरीका की फ़ौजें ईरान में रह सकेंगी। यह देखकर कि जर्मनी की पराजय हो गई है, और योरप का युद्ध समाप्त हो गया है, ईरान सरकार ने मित्र-राज्यों से अनुरोध किया है कि वे अपनी-अपनी सेनायें ईरान से हटा लें। सन्धि की उक्त शर्त के अनुसार मित्रराज्य ईरान से अपनी फ़ौजें हटाने के लिए बाध्य नहीं हैं, क्योंकि अभी जापान के साथ उनका युद्ध हो रहा है परन्तु मित्र-राज्यों ने ईरान के अनुरोध की उपेक्षा नहीं की है। अमरीका की सरकार ने तो साफ़ ही कह दिया है कि उसकी सेनायें पहले से ही हटा ली गई हैं। रह गईं ग्रेट ब्रिटेन और रूस की सेनायें, सो इन दोनों देशों की सरकारों ने कहा है कि जापान के युद्ध के समाप्त हो जाने के बाद वे अपनी सेनायें हटा लेंगी। अतएव युद्ध के अन्त तक ईरान-सरकार को अभी ठहरना होगा। तभी वह पहले ही की तरह फिर अपने स्वतन्त्र रूप के सुख का उपभोग कर सकेगा। अपने स्वर्गीय बादशाह की ज़रा सी भूल के कारण ईरान को युद्ध के झमेले में व्यर्थ ही फँसकर अनेक प्रकार के कष्ट उठाने पड़े हैं। यदि उसके बादशाह ने अपने पड़ोसी तुर्की तथा अफ़ग़ानिस्तान की सरकारों का अनुकरण किया होता तो ईरान को भी उन्हीं की तरह शान्ति और सुख प्राप्त होता और उसे राज्यक्रान्ति तथा विदेशी सेनाओं के नियन्त्रण के दुःख न सहने पड़ते। यह तो कुशल हुआ कि शीघ्र ही वहाँ के राजनीतिज्ञों ने अपने बादशाह की भूल का मित्र-राज्यों से मित्रतापूर्ण सम्बन्ध स्थापित कर परिमार्जन कर दिया, जिससे उनके देश की स्वतन्त्रता की रक्षा हो गई।

योरप की नई व्यवस्था

योरप में शान्ति और व्यवस्था की स्थापना का कार्य प्रारम्भ हो गया है। गत ५ जून को अमरीका, ग्रेट ब्रिटेन, रूस और फ्रांस के प्रतिनिधियों ने उस समझौते पर हस्ताक्षर कर दिया है, जिसके अनुसार आस्ट्रिया और ज़ेकोस्लोवेकिया के सुडेटनलैंड को अलग करके शेष जर्मनी चार भागों में बाँट दिया गया है। इनमें से पूर्वी भाग रूस के, उत्तर-पश्चिमी भाग ब्रिटेन के, पश्चिमी भाग फ्रांस के तथा पश्चिमी और दक्षिणी भाग अमरीका के शासनाधीन रहेगा। इस प्रकार जर्मनी से जर्मनों का शासन एकदम उठ गया है और अब यही चारों विजयी राष्ट्र अपने-अपने भाग में उस पर तब तक शासन करेंगे जब तक इनकी ओर से जर्मनी के लिए कोई नई व्यवस्था नहीं तय होती। परन्तु इनका शासन अपने-अपने भाग में, जान पड़ता है, एक मत का न होगा और यह भी एक ऐसी समस्या होगी जिससे इनमें मतभेद उत्पन्न हो सकती है। यह योरप की नई व्यवस्था का प्रथम चरण है, जो विशेष आशाप्रद नहीं दिखता है। दूसरे चरण का प्रारम्भ होने पर वे छोटे-छोटे राष्ट्र अपने स्वतन्त्र अस्तित्व में लाये जायँगे, जिनको युद्ध के प्रारम्भ-काल में जर्मनी ने ध्वस्त कर डाला था और जो अब किसी न किसी रूप में मित्र-राज्यों के फ़ौजी शासन के नियन्त्रण में हैं। उनमें से नारवे, डेनमार्क, हालैंड, बेल्जियम, लक्ज़मबर्ग एवं यूनान संयुक्त राज्यों के नियन्त्रण में हैं और बाल्टिक के चार राज्य, पोलैंड, रूमानिया, बल्गेरिया, हंगरी, आस्ट्रिया, ज़ेकोस्लोवेकिया एवं यूगोस्लाविया रूस के नियन्त्रण में हैं। इटली का शासन यद्यपि इटालियनों के हाथ में है परन्तु वहाँ का शासन वास्तव में मित्र-राज्यों के एक कमीशन द्वारा नियन्त्रित है। योरप के इन सभी देशों में पहले की जैसी उनकी अपनी सरकारें कब स्थापित होती हैं, यह सब इस समय अमरीका, ग्रेट ब्रिटेन, रूस और फ्रांस की सरकारों की सदिच्छा पर ही निर्भर करता है। पोलैंड की समस्या के कारण रूस से संयुक्त राष्ट्रों का पहले से ही मनमुटाव था। अब इधर यूगोस्लाविया के ट्रीस्ट बन्दरगाह पर अधिकार की माँग के कारण तथा आस्ट्रिया और ज़ेकोस्लोवेकिया की नई सरकारों से अलग सन्धि कर लेने के कारण उस मनमुटाव की वृद्धि हो गई थी। हाल में यूगोस्लाविया से उनका शान्ति के साथ एक कामचलाऊ समझौता हो गया है और ऐसा जान पड़ता है कि पोलैंड आदि की समस्याओं पर भी समझौता हो जायगा। कदाचित् इन झमेलों को देखकर ग्रेट ब्रिटेन के मज़दूर-दल ने, यह समझकर कि कहीं रूस से झगड़ा बढ़ न जाय, ग्रेट ब्रिटेन में नये चुनाव की माँग कर डाली, जिससे वहाँ की चर्चिल की सर्व दलों की राष्ट्रीय सरकार भङ्ग हो गई है। इस चुनाव के फल-स्वरूप यदि ब्रिटेन में मज़दूर-दल की सरकार स्थापित हो गई तो वह ऐसी नीति ज़रूर ग्रहण करेगी, जिससे उसका रूस के साथ योरप के सभी प्रश्नों के सम्बन्ध में समझौता हो जायगा। यदि ऐसा न हुआ और चर्चिल के नेतृत्व में अनुदार दल की सरकार की स्थापना हुई तो रूस से समझौता होना तभी सम्भव होगा जब रूस योरप के उक्त राज्यों पर से अपना प्रभाव हटा लेगा, क्योंकि अमरीका की भी ऐसी ही मनोभावना है। वहाँ के समाचारपत्रों में तो इस समय वर्गवाद की वैसी ही चर्चा हो रही है, जैसे मानो वह कोई हौआ हो। इसमें सन्देह नहीं कि योरप में जर्मनी को पछाड़ कर सोवियट रूस ज़ारों के समय के रूस से भी बढ़कर अपनी प्रतिपत्ति स्थापित करने में सफलमनोरथ हुआ है। ऐसी दशा में वहाँ के वर्गवाद का अन्य देशों में प्रभाव बढ़ जाय तो यह कोई अस्वाभाविक बात न होगी। हम देख भी रहे हैं कि पश्चिम में फ्रांस से लेकर पूर्व में चीन तक आज उसने अपना सिर ऊँचा किया है। अतएव यदि ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस और अमरीका के साम्राज्यवादी और पूँजीवादी सरकारें शङ्कित तथा आतङ्कित हो उठें तो क्या आश्चर्य! और जब रूस की सोवियट सरकार भी राष्ट्रों की पञ्चायत में पग-पग पर अपने वर्गवादी सिद्धान्तों से प्रेरित होकर अपना स्वतन्त्र मत उपस्थित करती हो और यदि वह साम्राज्यवादी सरकारों के कूटनीतिक प्रस्तावों से मेल न खाते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो तो उनका रूस की सरकार से कुद्ध उठना सर्वथा स्वाभाविक ही होगा और यही वह विकट समस्या है, जिसको हल किये बिना योरप में शान्ति और व्यवस्था का स्थापित होना सम्भव नहीं है। यह एक प्रकट बात है कि आज जो परिस्थिति है, उसको देखते हुए संयुक्त राष्ट्रों और सोवियट रूस का वाद-विवाद इस सीमा तक कदापि न पहुँचने दिया जायगा कि इनमें लड़ाई छिड़ जाय। यह दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटना तभी सङ्घटित होगी जब संयुक्त राष्ट्रों के एवं रूस के कूटनीतिज्ञों की बुद्धि का दीवाला निकल जायगा। यही कारण है कि इन देशों के राजनीतिज्ञ मन्त्रणा पर मन्त्रणा करने में संलग्न हैं। ऐसी दशा में विश्वास किया जाता है कि योरप की सारी समस्यायें पारस्परिक समझौते द्वारा किसी न किसी रूप में किसी न किसी भाँति साम, दाम और भेद द्वारा अवश्य ही निपटा ली जायँगी। दण्ड के ग्रहण करने की ज़रूरत ही न पड़ेगी। परन्तु किसी भयानक भूल या दुराग्रह के कारण यदि योरप में पुनः दण्ड का ग्रहण करना आवश्यक समझा गया तो इस बार के सङ्घर्ष में बचे-खुचे योरप का ही नहीं अधिकांश विश्व का भी सर्वसंहार हो जायगा। प्रसन्नता की बात है कि योरप के कुशल राजनीतिज्ञ इन सभी बातों से अवगत हैं और वे भूलकर भी ऐसी कोई भूल या हठधर्मी नहीं होने दे रहे हैं बरन वे वही प्रयत्न कर रहे हैं कि जैसे हो, सभी बातों में किसी न किसी प्रकार का समझौता हो ही जाय और योरप एवं संसार में पुनः एक बार सुख-शान्ति की स्थापना हो।

यूनाइटेड किंग्डम का नया चुनाव

ब्रिटेन में ब्रिटिश पार्लमेंट का नया चुनाव हो रहा है। चर्चिल की संयुक्त दलों की सरकार को इस्तीफ़ा देना पड़ा है। अतः नया चुनाव आवश्यक हो गया। मज़दूर-दल नहीं चाहता कि साम्राज्य की सरकार की बागडोर अब चर्चिल के हाथ में है। कदाचित् उसे भय हुआ है कि कहीं चर्चिल के नेतृत्व में साम्राज्य-सरकार रूस से न भिड़ जाय। यही समझकर उसने पिछले दिनों अपनी राष्ट्रीय सरकार पर अविश्वास प्रकट किया। यह चुनाव युद्ध-काल में ही हो रहा है और इसमें सारे ब्रिटिश प्रजाजन उतनी सुविधा के साथ कदापि मत नहीं दे सकेंगे। फिर भी चुनाव तो होगा ही। इस चुनाव में अनुदार दल और मज़दूर दल की टक्कर होगी। इनके सिवा उदार-दल, साम्यवादी दल एवं वर्गवादी दल आदि जो अन्य दल हैं, उनका देश की जनता पर उतना व्यापक प्रभाव नहीं है। मुख्य दल अनुदार-दल और मज़दूर दल ही हैं। बहुत पहले एक समय मज़दूर दल चुनाव में विजयी हुआ था और रामसे मैकडानल्ड के प्रधान मन्त्रित्व में उसकी सरकार भी स्थापित हुई थी। परन्तु यह युद्ध के बहुत पहले की बात है। इधर वर्षों से ग्रेट ब्रिटेन में अनुदार दल की प्रबलता रही है। वर्तमान युद्ध में भी अनुदार दल के अपनी विजय के कारण अपना प्राधान्य काफ़ी दृढ़ कर लिया है। फिर इस काल के भीतर ही जब कि जापान को अभी पराजित करना है, चुनाव में मज़दूर दल के विजयी होने की उतनी सम्भावना नहीं है। मज़दूर-दल में वैसे तेजस्वी नेताओं का भी अभाव है तथापि उन्होंने शासन-सङ्कट उपस्थित कर दिया है। यह ब्रिटिश मतदाताओं को कदाचित् ही रुचिकर प्रतीत हो। युद्ध के सङ्कटकाल में शासन का परिवर्तन यों भी ठीक नहीं समझा जाता। फिर आज मज़दूर-दल ब्रिटेन में उतना लोकप्रिय नहीं है। उधर युद्ध में चर्चिल साहब की सफलता से और उनके साथ उनके दल का ब्रिटेन में काफ़ी अधिक प्रभाव बढ़ा हुआ है। ऐसी दशा में इस चुनाव में अनुदार दल की ही विजय की अधिक सम्भावना है। यह होते हुए भी ब्रिटिश मतदाताओं के राजनैतिक अभिमत का कोई अन्दाज़ नहीं लगा सकता। यदि उन्होंने समझा होगा कि अन्तर्राष्ट्रीय दुरवस्था को सँभालने में अनुदार दल की सरकार सक्षम नहीं होगी, तो चर्चिल साहब या उनके दल की वर्तमान लोकप्रियता को उठाकर एक ओर रख देंगे और मज़दूर-दल के पक्ष में ही अपना मत देंगे। उस दशा में मज़दूर-दल की अवश्य विजय होगी। यह खेल मतदाताओं की सजगता और राजनीतिज्ञता पर निर्भर करता है और इस बात में यूनाइटेड किंग्डम के मतदाता सदैव सजग और सावधान रहे हैं। देखना है कि इस बार के चुनाव में वे अपनी सूझ-बूझ का कैसा परिचय देते हैं।

पराधीन देशों का सङ्घ

सेनफ्रांसिस्को की कानफ़रेन्स में उन देशों के प्रश्नों को छुआ तक नहीं गया है, जो बहुत दिनों से किसी न किसी प्रकार के अधिकार में हैं। यद्यपि इन पराधीन देशों के लोकनेता सेनफ्रांसिस्को पहुँचकर अपने-अपने देश की दुरवस्था का और अपनी-अपनी स्वतन्त्रता की माँग का आन्दोलन वहाँ दिल खोलकर किया और यह भी प्रयत्न किया कि उक्त महान् अन्तर्राष्ट्रीय पञ्चायत में उनका रोदन सुना जाय परन्तु उनके सारे प्रयत्न विफल हुए। अमरीका के उदार व्यक्तियों ने निस्सन्देह उन सभी के प्रति गहरी सहानुभूति प्रकट की और उनके प्रस्ताव को सफल बनाने का भी उद्योग किया तथापि कुछ भी नहीं हुआ। वस्तुतः उक्त कानफ़रेंस का लक्ष्य वर्तमान युद्ध की समस्याओं की ओर ही रहा है। हाँ, सन् '१४ के युद्ध के समय से संरक्षित आये देशों की एवं उपनिवेशों की राजनैतिक समस्याओं पर उसने प्रकारान्तर से अवश्य ध्यान दिया है। परन्तु पराधीन देशों के मामलों का सुनना उसने अपने कार्यक्रम में नहीं रखा। कदाचित् इसी असफलता से वे लोग असन्तुष्ट हो गये हैं और अपना एक सङ्घ स्थापित करना चाहते हैं। इस ओर ब्रिटेन के पराधीन देशों के कुछ लोकनेताओं ने अपना कार्य आरम्भ भी कर दिया है। इसी गत १० जून को उनके प्रतिनिधियों की एक सभा लन्दन में हुई है, जिसमें विश्व के पराधीन देशों का एक

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का निश्चय किया गया है। उन्होंने इस अवसर पर पुस्तिका बाँटी है।

इस पुस्तिका में यह सुझाव दिया गया है कि संसार भर के देशों का एक सङ्घ बनाया जाय जो (१) एक निश्चित के भीतर संसार भर के ग़ुलाम देशों को बिना शर्त स्वतन्त्र का यत्न करे। (२) बालिग़ मताधिकार के आधार पर और को सुरक्षा का पूरा आश्वासन देकर ज़िम्मेदार शासन करने की माँग करे (३) बर्मा, मलाया और अन्य जापान-देशों को जापान से स्वतन्त्र कराने के बाद स्वतन्त्र ही जाय—पुराने शासकों के हवाले न किया जाय। (४) विरोधी और पक्षपातपूर्ण क़ानून रद्द करावे जिन्होंने ग़ुलाम की प्रजाओं को नागरिक अधिकारों से वञ्चित कर रक्खा है। लन्दन की यह सभा अपने ढङ्ग की एक नई सभा है और प्रयत्न से पराधीन देशों का जो सङ्घ स्थापित होगा, वह एक महत्त्वपूर्ण संस्था होगी। पराधीन देशों के लोक-बहुत दिनों बाद ठीक मार्ग पर आये हैं और उनकी इस के लिए जितनी भी प्रशंसा की जाय, वह थोड़ी ही निस्सन्देह यह सङ्घ-युग है परन्तु इन पराधीन देशों का अस्तित्व में क्या आ भी सकेगा? मान भी लिया कि उसकी स्थापना हो जायगी; परन्तु क्या वह कुछ कर-सकेगा? हम निराशावादी नहीं हैं। हमें सङ्घ-शक्ति का है और यदि इस सङ्घ का दृढ़ता के साथ कार्य-सञ्चालन तो उसे अपने प्रयत्न में अवश्य सफलता प्राप्त होगी।

सेनफ़्रांसिस्को की कानफ़रेन्स की समाप्ति

सेनफ़्रांसिस्को का सम्मेलन समाप्ति पर है। सरकारी तौर पर निश्चयों का विवरण-पत्र अभी प्रकाशित नहीं हुआ है तथापि प्रकार स्पष्ट है कि भविष्य के संसार की शान्ति-व्यवस्था ज़िम्मेदारी संसार के पाँच राष्ट्रों पर रहेगी। कानफ़रेंस का चार प्रमुख संयुक्त राज्य, ग्रेट ब्रिटेन, रूस और चीन ने था। बाद को फ्रांस भी इस समूह में शामिल कर लिया इस प्रकार जो ये पाँच प्रमुख राष्ट्र माने गये हैं, उनमें तीन ही प्रमुख हैं। शेष दो चीन और फ्रांस अपना महत्त्व नहीं रखते। कानफ़रेंस के अधिवेशन में ग्रेट ब्रिटेन संयुक्त राज्य ने मिलकर जो भी प्रस्ताव उपस्थित किये, विरोध कुछ ही दो-एक राष्ट्रों ने विशेष कर रूस ने किया अन्त में संयुक्त राज्यों के सभी प्रस्ताव पास हो गये और जिन राष्ट्रों ने अपने स्वतन्त्र विचारों का प्रकाश किया, उनको में अपना विरोधी भाव अल्प मत में होने के कारण या अपने स्वार्थ-विशेष के कारण दूर कर देना पड़ा। फलतः का अधिवेशन शान्तिपूर्वक समाप्त हो आया है। और अधिवेशन के वाद-विवाद से यही प्रतीत होता है कि कानफ़रेंस ने संसार की भावी शान्ति-व्यवस्था के सम्बन्ध में निर्णय किये हैं, उनमें सभी ने अपने-अपने राष्ट्र के हितों की रक्षा करना उचित समझा। साथ ही शत्रु-राष्ट्रों के भविष्य-विधान तथा व्यवस्था को ही विशेष रूप से ध्यान में रक्खा है। संसार के पददलित, परतन्त्र राष्ट्रों तथा उपनिवेशों आदि के प्रश्नों के सम्बन्ध में ध्यान देना उसने अपने कार्यक्रम के बाहर माना है। इस कानफ़रेंस के अधिवेशनों से यह भी प्रकट हुआ है कि सोवियट रूस को संयुक्त राष्ट्रों की कूटनीति के आगे दब जाना पड़ा है। इसका कारण यह भी हो सकता है कि योरप में तथा एशिया में भी उसके अपने विशेष स्वार्थ हैं, जिनकी पूर्ति तभी हो सकेगी जब संयुक्त राष्ट्र भी उनके प्रश्नों के उठने पर रूस की ही तरह स्वयं भी तरह दे जायँगे। परन्तु इस बात की आशा बहुत कम है। रूस के स्वार्थ उतने न्यायोचित कदापि नहीं माने जायँगे और उनको लेकर सङ्घर्ष भी उपस्थित हो गया है। कौन नहीं जानता है कि रूस के अधिकार में योरप के कितने ही छोटे-छोटे राष्ट्र आ गये हैं। क्या उनको अपने स्वतन्त्र अस्तित्व का अभिमान नहीं है! क्या उनके स्वतन्त्र अस्तित्व की रक्षा करना संसार के उक्त पाँच प्रमुख राष्ट्रों का कर्तव्य न होगा? ये सब प्रश्न शीघ्र ही उपस्थित हो जाते परन्तु चूँकि अभी जापान के युद्ध की समाप्ति नहीं हुई है, इस कारण इन प्रश्नों के वाद-विवाद का समय अभी नहीं है। संयुक्त राष्ट्र, जहाँ तक उनकी वर्तमान राजनैतिक गतिविधि से व्यक्त होता है, यह कदापि नहीं होने देंगे कि वर्तमान युद्ध के पहले के योरप के छोटे-छोटे राष्ट्रों की स्वतन्त्रता मिट जाय और वे किसी ऐसे सङ्घ से सम्बन्धित हो जायँ, जिससे योरप में एक नई राजनैतिक स्थिति का प्रादुर्भाव हो जाय। योरप की शान्ति के लिए यह वाञ्छनीय नहीं है कि रूस के वर्गवाद की सीमा बढ़कर उत्तरी सागर और भूमध्य सागर के तटों तक फैल जाय। यही एक रूस का सबसे बड़ा स्वार्थ है, जिसकी पूर्ति की आन्तरिक भावना के कारण उसके प्रतिनिधियों ने सेनफ़्रांसिस्को के अधिवेशन में समझौते की विचार-धारा से काम लिया है। परन्तु संयुक्त राष्ट्र भी वैसी ही समझौते की भावना रूस की स्वार्थ-भावना की पूर्ति के लिए व्यक्त करेंगे, ऐसा सम्भव नहीं है। ऐसी दशा में यह आशा करना कि योरप की राजनैतिक व्यवस्था की नौका सरलता के साथ किनारे पर लग जायगी, झूठी आशा के समान है। इसके लक्षण अभी से दिखाई पड़ रहे हैं। ट्रीस्ट के बन्दरगाह का झगड़ा इस बात का स्पष्टीकरण करता है कि रूस कहाँ तक आगे बढ़ना चाहता है। यूगोस्लाव के वर्तमान सर्वे-सर्वा मार्शल टीटो को ट्रीस्ट के मामले में इतना उग्र रूप धारण करने का साहस कदापि न होता यदि उन्हें रूस की सहायता का भरोसा न होता। आस्ट्रिया, ज़ेकोस्लोवेकिया और पोलैंड में जो नई सरकारें सङ्घटित की गई हैं, वे भी अवसर आने पर नया गुल खिलावेंगी। इन सब बातों और अवस्थाओं से संयुक्त राष्ट्रों और रूस के सूत्रधार भले प्रकार अवगत हैं परन्तु अभी जापान का युद्ध चल रहा है, इस कारण इनके सम्बन्ध में उतना कुछ कहा नहीं जा सकता है और भविष्य में इनको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकर कोई विकट समस्या न उठ खड़ी हो, इसलिए संयुक्त राज्य, ग्रेट ब्रिटेन और सोवियट रूस के प्रतिनिधियों ने शीघ्र ही मिलकर इन प्रश्नों पर विचार कर लेना उचित समझा है। इन तीन राष्ट्रों का जो सम्मेलन होनेवाला है, उसमें यदि समझौते की नीति से काम न लिया गया और सोवियट रूस ने हठधर्मी से काम लिया तो योरप में एक नये सङ्घर्ष का उठ खड़ा होना अनिवार्य होगा। परन्तु चूँकि इस प्रकरण में रूस की स्थिति उतनी तर्कपूर्ण नहीं है इससे सम्भव है कि इस त्रिराष्ट्र-सम्मेलन में भी रूसी प्रतिनिधि समझौते की नीति से ही काम लें। भगवान् करे ऐसा ही हो, क्योंकि इन तीनों राष्ट्रों के मेल-मिलाप में ही संसार की शान्ति निहित है।

केन्द्रीय सरकार का भारतीयकरण

सन् '४२ के गड़बड़ के बाद भारतीय राजनैतिक अड़ङ्ग के दूर करने का बार-बार प्रयत्न किया गया परन्तु कोई सफलता प्राप्त नहीं हुई। जेल से बाहर आ जाने के बाद महात्मा गांधी ने भी अपने भरसक पूरा प्रयत्न किया। जिन्ना साहब से उनके घर जाकर मिले और गम्भीरता-पूर्वक उनसे राजनैतिक वार्ता की परन्तु वह भी विफल हुई। इसके बाद और भी दो एक योजनायें सामने आईं। यहाँ तक कि सर तेजबहादुर सप्रू ने भी अपने साथियों से मिलकर एक महत्त्व-पूर्ण योजना बनाई परन्तु उसका भी कोई प्रभाव नहीं पड़ा। अन्त में वायसराय लार्ड वेवेल ने अपना क़दम आगे बढ़ाया और देश के भिन्न-भिन्न नेताओं से मिलकर उन्होंने उक्त समस्या के हल करने का निश्चय किया। एसेम्बली के विरोधी दल के नेता श्री भूलाभाई देसाई और मुस्लिम दल के उपनेता नवाबज़ादा लियाकतअली ख़ाँ के बीच एक समझौता हुआ था, जिसमें यह तय हुआ था कि चालीस कांग्रेसी, चालीस मुस्लिम लीगी और बीस अन्य दली सदस्यों के अनुपात से केन्द्रीय सरकार का सङ्गठन किया जाय। इस समझौते को महात्मा गांधी और कदाचित् जिन्ना साहब की भी स्वीकृति मिल गई थी। चाहे जो हो, यह समझौता वायसराय लार्ड वेवेल को रुचिकर प्रतीत हुआ और विलायत जाकर उन्होंने उसके आधार पर ब्रिटिश सरकार से बातचीत की। यह वार्त्ता काफ़ी लम्बी रही। अन्त में ब्रिटिश सरकार ने उनके प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और वे भारतीय अड़ङ्गा दूर करने का पूर्ण अधिकार लेकर भारत आये हैं। आते ही उन्होंने १४ जून को अपने रेडियो-भाषण में जो घोषणा की है, उससे प्रकट होता है कि केन्द्र में भारतीयों की एक अस्थायी सरकार की स्थापना होगी। इसका सङ्गठन करने के लिए भिन्न भिन्न प्रमुख सम्प्रदायों के नेताओं तथा प्रान्तों के प्रतिनिधियों को उन्होंने शिमला में पच्चीस जून को आमन्त्रित किया है। कांग्रेस के अध्यक्ष मौलाना आज़ाद, आमन्त्रित व्यक्तियों में महात्मा गान्धी, जिन्ना साहब, एसेम्बली के कांग्रेसदल के नेता श्री भूलाभाई देसाई, एसेम्बली के मुस्लिम लीग दल के उपनेता नवाबज़ादा लियाक़तअली ख़ाँ, हरिजन-नेता रावबहादुर शिवराज, सिख-नेता मास्टर तारासिंह, डाक्टर पी० एन० बनर्जी, दल के नेता सर हेनरी रिचर्डसन, राजसभा के कांग्रेस-दल राजा गोविन्दलाल शिवलाल और राजसभा के मुस्लिम के नेता श्री हुसेन इमाम के सिवा ग्यारहों प्रान्तों के प्रधान हैं। इनकी यह सभा वायसराय महोदय के सभापतित्व हुई है। इसमें वायसराय की कार्यकारिणी के का चुनाव होगा। कार्यकारिणी में ५ हिन्दू, ५ मुस्लिम १ हरिजन, १ सिख और १ पारसी या किसी दूसरे का सदस्य चुना जायगा। इस प्रकार जो कौंसिल होगी, उसे रक्षा-विभाग को छोड़कर सभी विभाग दे दिये अर्थात् केवल रक्षा-विभाग ही प्रधान सेनापति के हाथ शेष सभी विभाग भारतीय सदस्यों के हाथ में हो भारतीयों की यह कौंसिल एक प्रकार से केन्द्रीय एसेम्बली प्रति उत्तरदायी होगी। यदि उसका कोई क़ानून के सदस्य स्वीकृत नहीं करेंगे तो कौंसिल को पदत्याग पड़ेगा। पहले की तरह वायसराय के 'विटो' के बल मनमानी नहीं करती रहेगी। कहने का मतलब यह वायसराय महोदय अपने 'विटो' के अधिकार का असाधारण अवस्था में ही किया करेंगे। इस प्रकार की जो यह अस्थायी सरकार सङ्गठित होगी वह तब तक करती रहेगी जब तक भारतीय विभिन्न दल परस्पर मिलकर के लिए कोई नया शासन-विधान नहीं बना लेंगे। की बात है कि सरकार ने कांग्रेस की कार्यकारिणी के को जेल से छोड़ दिया है तथा कांग्रेस कार्यकारिणी पर से भी हटा लिया है, जिससे उक्त सभा का कार्य शान्ति और के साथ समाप्त हो। देश के राजनैतिक अड़ङ्ग को दूर लिए जो यह महत्त्वपूर्ण पग वायसराय महोदय ने उठाया बड़े महत्त्व का है। उनके प्रस्ताव को ग्रहण करके लोकनेता अपने उद्देश्यों की पूर्ति कर सकेंगे। इस कार्य में परिणत होने पर उन प्रान्तों में जहाँ इस समय शासन है, मिश्रित दलों की सरकारें पुनः स्थापित हो जायँगी सन् '३५ के भारतीय शासन विधान के अनुसार देश का होने लगेगा। वायसराय महोदय ने यह बात घोषणा कर दी है कि (१) यह अस्थायी सरकार इसलिए स्थापित जा रही है कि जापान के साथ लड़ाई पूरे ज़ोर के साथ जारी रक्खी जाय जब तक कि वह पूर्ण रूप से पराजित न कर जाय। (२) जब तक नया शासन-विधान नहीं स्वीकृत जाता है तब तक यह सरकार युद्धोत्तरकालीन सभी उन्नति-कार्यक्रमों को पूर्ण रूप से चलाती रहेगी। (३) इस के सदस्य जब सम्भव समझेंगे उन उपायों पर विचार जिनसे उक्त विधान का निर्माण हो सकेगा। वायसराय ने यह भी कहा है कि नेताओं की उक्त सभा यदि उनके न हो सकेगी तो उनकी वर्तमान कौंसिल के सदस्य जैसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्य कर रहे हैं, अपना कार्य करते रहेंगे अर्थात् उन्होंने दूर करने का जो यह हल उपस्थित किया है, वह स्थगित निस्सन्देह अड़ङ्गा दूर करने के लिए वायसराय महोदय यह सरल मार्ग ग्रहण किया है, वह ब्रिटिश कूटनीति का जीव उदाहरण है। भिन्न-भिन्न भारतीय राजनैतिक दलों झमेलों में न फँसकर उन्होंने एक ऐसा मार्ग ग्रहण किया है, ग्रहण करने पर वे सारी उलझनें यथासमय अपने आप जायँगी। केंद्र में भारतीयों की अस्थायी सरकार सङ्गठित से भारत का शासन भारतीयों के हाथ में आ जायगा, राज्य का अपने ढङ्ग का एक महत्त्वपूर्ण रूप होगा। ऐसी पूर्ण स्थिति में अपने को पाकर भारतीय लोकनेताओं ने यदि छोड़कर देशहित की भावना से काम लिया तो वे भारत शासन-विधान निर्माण करने में अनायास ही सफल- हो सकेंगे। हमें विश्वास है कि वे इस महत्त्वपूर्ण अवसर अपने हाथ से नहीं जाने देंगे। यह सच है कि वायसराय के प्रस्तावों में स्वाधीनता का वचन नहीं दिया गया है डोमीनियन स्टेटस की ही बात है परन्तु यह भी सच है उन्होंने एक ऐसे मार्ग का सङ्केत किया है, जिसका अनुसरण भारतीय अपने अभीष्ट की सिद्धि सहज में कर सकेंगे।

महान् चीन का गौरव

चीन संसार का सबसे बड़ा देश है—क्षेत्रफल एवं आबादी की से ही नहीं, वैभव और ऐतिहासिक गौरव की दृष्टि से भी। भारत की भाँति वह महान् देश भी वर्षों से घोर दैन्या- को प्राप्त है। विशेषता केवल इतनी ही है कि जैसे-तैसे अपनी स्वाधीनता बनाये रह सका। उसके विशाल प्रांत तिब्बत, सिंकियांग, मङ्गोलिया, मञ्चूरिया आदि-आदि उसके क्षेत्र से निकलते गये। अन्त में पिछले दिनों उसके अठारह प्रान्तों का अपहरण करने के लिए उसके पड़ोसी साम्राज्यवादी जापान ने उस पर आक्रमण कर दिया। कह सकते उसके सौभाग्य से ही योरप में युद्ध छिड़ गया, जिसके स्वरूप उसे ब्रिटेन और अमरीका की सहायता अपने आप ही गई। यद्यपि उसे इन दोनों महाशक्तियों से यथा-आव- सहायता नहीं प्राप्त हुई तथापि जो भी सहायता मिली, वह जापान से बराबर लड़ता रहा और घोर से घोर सङ्कट उपस्थित हो जाने पर भी उसने शत्रु के सम्मुख सिर नहीं झुकाया। इसी धैर्य और साहस का परिणाम हुआ है कि वह संसार पाँच महाशक्तियों में गिन लिया गया है। ब्रिटेन और अमरीका के जो जो स्वार्थ चीन में रहे हैं, उनको भी उन्होंने राज- वार्ताओं-द्वारा त्याग दिया है। फिर भी चीन की अपनी कठिनाइयाँ हैं। उसके अपने मुख्य अठारह प्रान्तों के मुस्लिम-वसित तीन प्रान्तों में वर्गवाद ने अपना प्रभुत्व कर लिया है। इसके कारण उसे वर्तमान युद्ध में तरह- की बाधायें झेलनी पड़ी हैं। चीन के राष्ट्रपति मार्शल चियांग-काई-शेक ने बार-बार वर्गवादी प्रान्तों से मेल-मिलाप करने का प्रयत्न किया परन्तु वे प्रत्येक बार अपने प्रयत्न में विफल हुए। उधर वर्गवादी प्रान्त रूस के सम्पर्क में रहना चाहते हैं और उसकी सहायता से सारे चीन पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने का षड्यन्त्र कर रहे हैं। इधर स्वयं राष्ट्रपति चियांग-काई-शेक की राष्ट्रीय सरकार में भी दो दल हो गये हैं। एक दल अमरीका को आशा-भरी दृष्टि से देखता है तो दूसरा ग्रेट ब्रिटेन को और अब जब जापान के पराभव के बाद महान् चीन का प्रादुर्भाव होगा तब वह क्या मञ्चूरिया, मङ्गोलिया, सिंकियांग, तिब्बत की ओर से अपनी निगाह उसी तरह हटाये रहेगा जैसा कि अपनी विवशता के काल में वह अब तक हटाये रहा है! सबल महान् चीन अपने इन बड़े-बड़े प्रान्तों को अपने प्रभाव में रखना अपना कर्तव्य समझेगा। इस समय मञ्चूरिया पर जापान का, मङ्गोलिया और सिंकियांग पर रूस का प्रभाव है। तिब्बत अपने को स्वतन्त्र मान रहा है। महान् चीन अपने इन प्रांतों पर अधिकार रखने पर ही अपने गौरव को बढ़ा सकेगा। इस महायुद्ध में जिस त्याग, जिस वीरता और जिस साहस का परिचय उसने दिया है, उसका यही पुरस्कार होगा कि वह अपनी सारी पुरानी सीमा को अपने अधिकार के भीतर रक्खे। संसार के पाँच प्रमुख राष्ट्रों की जो पञ्चायत क़ायम होगी, उसके आगे महान् चीन की इस न्यायपूर्ण माँग का निपटारा करना कोई साधारण कार्य न होगा। परन्तु चीन तभी महान् चीन हो सकेगा जब वह अपने अन्तरङ्ग के परमुखापेक्षी राजनैतिक दलों से मुक्त होकर अपने वर्गवादी देशवासियों से भ्रातृभावात्मक सम- झौता कर अपने प्रबल रूप को प्रकट करने में समर्थ हो सकेगा। यदि वह यह न कर सकेगा तो महान् चीन क्या उसका चीन ही बना रहना उसके लिए एक कठिन समस्या की बात होगी।

भारत में सम्प्रदायवाद

भारत के नागरिक जीवन में सम्प्रदायवाद ने जो विकट रूप धारण कर लिया है, उसका उदाहरण शायद ही किसी देश में मिले। सम्प्रदायवाद के कारण भारतीय राष्ट्रीयतावाद अपना पग ही आगे बढ़ाने नहीं पाता। सम्प्रदायवाद को ब्रिटिश अधिकारियों ने जब से अपना आशीर्वाद दिया है तब से वह यहाँ ख़ूब फल- फूल रहा है। सन् १९०६ में पहले-पहल मुसलमान ही सम्प्रदाय- वाद का झण्डा लेकर बाहर निकले थे। अब तो यहाँ उसके और कई गढ़ उठ खड़े हुए हैं। मुसलमानों में ही लीजिए। पहले जहाँ उनमें एक मुस्लिम लीग थी, वहाँ अब उनके कम से कम पाँच सम्प्रदाय दिखाई दे रहे हैं। शिया कानफ़रेंस, मोमिन- कानफ़रेंस, जमायत उलेमा और राष्ट्रीय मुस्लिम मजलिस अपना अलग-अलग अस्तित्व रखती हैं। ये पाँचों ही एक दूसरे को फूटी आँख नहीं देख सकतीं। इनमें से शिया कानफ़रेंस का मुस्लिम लीग से धार्मिक मतभेद है। मोमिन कानफ़रेंस का यह कहना है कि मुस्लिम लीग ने हालेवाले मुसलमान मोमिनों के हक़ों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की उपेक्षा करते हैं, अतएव मोमिन अपना अलग प्रतिनिधित्व चाहते हैं। जमायत उलेमा और मजलिस का लीग से सैद्धान्तिक मतभेद है।

इसी प्रकार हिन्दुओं के भी कई गढ़ हैं। हिन्दू महासभा है ही। वह कांग्रेस से विरुद्ध है, क्योंकि वह समझती है कि कांग्रेस मुसलमानों को खुश रखने के लिए हिन्दू-हितों का बलिदान करती रहती है। उधर हिन्दुओं का वर्णाश्रम स्वराज्य-सङ्घ न हिन्दू-महासभा को श्रद्धा की दृष्टि से देखता है और न कांग्रेस को। उसका मन्तव्य है कि ये दोनों ही संस्थायें हिन्दू-धर्म और हिन्दू-संस्कृति का सर्वनाश करने पर तुली हुई हैं। उधर अछूतों का गढ़ इन तीनों से असन्तुष्ट है और वह अपने को आदिहिन्दू बताकर हिन्दू-समाज से सर्वथा अलग हो जाने की तैयारी कर रहा है। सिख सम्प्रदाय पहले से ही हिन्दुओं से अलग होकर अपने हक़ों की दुन्दुभि बजाता रहा है परन्तु उनके सम्प्रदाय के भी दो भेद हैं। नामधारी सिख अकाली सिखों से धार्मिक मतभेद रखते हैं। इस प्रकार हिन्दू और मुस्लिम सम्प्रदाय स्वयं कई उपसम्प्रदायों में विभक्त हैं। फिर देशी ईसाई, ऐंग्लो-इंडियन, पारसी—इनके भी अपने-अपने गढ़ हैं। इनके अलावा मूल निवासियों का भी अपना एक वर्ग है ही। इधर राजनैतिक क्षेत्र में कांग्रेस भी अकेली नहीं है। उसमें भी वर्गवादी हैं, समाजवादी हैं, रायवादी हैं। इस प्रकार भारतीय अनेक सम्प्रदायों में ही नहीं विभक्त हैं किन्तु उनके भिन्न-भिन्न राजनैतिक दल भी हैं। इन सारी विभिन्नताओं में सामञ्जस्य लाना हँसी-खेल का काम नहीं है। पहले सरकार ने मुस्लिम लीग को एक पृथक् सम्प्रदाय के रूप में स्वीकार किया था। अब वह हिन्दू-महासभा, हरिजन, पारसी, देशी ईसाई, सिख, ऐंग्लो-इंडियन आदि को पृथक् सम्प्रदाय के रूप में स्वीकार करती है। आश्चर्य नहीं मोमिनों, शियाओं आदि को भी किसी दिन पृथक् सम्प्रदाय के रूप में स्वीकार करना पड़े। कांग्रेस राष्ट्रीयतावादी संस्था है। अतएव वह किसी सम्प्रदाय को स्वीकार करने को तैयार नहीं है परन्तु उसे भी बाध्य होकर मुसलमानों को पृथक् सम्प्रदाय के रूप में स्वीकार करना पड़ा है। अब जब भावी शासन-विधान की रचना होगी तब भारत-सरकार, कांग्रेस, मुस्लिम लीग आदि को इन सम्प्रदायवादी गढ़ों से मोर्चा लेना पड़ेगा। अभी तक तो कुछ प्रमुख सम्प्रदायों की डाली हुई अड़चनों से ही देश की राजनैतिक समस्या हल नहीं हो रही है परन्तु जब भविष्य में विधान-निर्माण-सम्मेलन की आयोजना होगी तब विभिन्न सम्प्रदाय एवं राजनैतिक दल जो अड़ङ्गे डालेंगे, उनका हल करना साधारण कार्य न होगा। सम्प्रदायवाद को प्रश्रय देकर सरकार एवं कांग्रेस ने भी देश का कम अहित नहीं किया है। यदि यह विष-बेलि देश में लहराती न [illegible] भारत को आज इतनी जटिल समस्याओं का सामना [illegible] पड़ता और उसकी राजनैतिक समस्यायें बड़ी सरलता [illegible] गई होतीं। परन्तु देश के दुर्भाग्य से आज सम्प्रदाय[illegible] कर खेल रहा है। यहाँ तक कि उसने अब महाव्या[illegible] धारण कर लिया है। देखना है कि हमारे लो[illegible] महाव्याधि से देश को कब तक और कैसे मुक्त करते हैं।

जापान का अन्त

परम पराक्रमी और युद्धजीवी आठ करोड़ के [illegible] घोर पराभव को देखकर भी अज्ञ जापानी झूठी डींगें [illegible] हैं और कह रहे हैं कि अभी वे तीस वर्ष युद्ध करेंगे। [illegible] की विजयी सेनायें फिलिपाइन में जा घुसी हैं और उनकी सेना जापान के बड़े-बड़े नगरों का स्वाहा कर [illegible] उनका पचहत्तर लाख की आबादी का सबसे बड़ा नगर [illegible] जलकर भस्म हो गया है। परन्तु जापानियों की झूठी [illegible] ही हुई है। अमरीका की विजयी वाहिनियों ने उनके द्वार ओकीनावा में भीषण युद्ध करके जापानियों को घोर परास्त किया है। और उसके राष्ट्रपति ट्रूमैन साहब [illegible] धूल में मिला देने के लिए और पचहत्तर लाख सेना [illegible] हैं। इधर योरप का युद्ध ख़त्म हो जाने से ब्रिटेन [illegible] जहाज़ी बेड़ा अमरीका के जङ्गी बेड़े के साथ जापान के [illegible] आ पहुँचा है। कुछ ही दिनों में हम देखेंगे कि संयुक्त [illegible] स्थल, जल और आकाश सेनायें जापान के ऊपर टूट [illegible] उसका जर्मनी से भी अधिक सर्वनाश कर डालने में [illegible] होंगी और तभी शायद जापान का झूठा अभिमान मिट [illegible] जायगा। अमरीका और ब्रिटेन के इस महान् आक्रमण [illegible] में जापान कदापि सफल नहीं हो सकता, क्योंकि [illegible] युद्धों में और इधर के वायुयान-आक्रमणों में वह सर्वथा [illegible] ही रहा है। इसमें सन्देह नहीं कि इधर-उधर आक्रमण [illegible] मुख्य जापान पर आक्रमण करने की जो योजना [illegible] फ़ौजी अधिकारियों ने बनाई है, उससे उनकी कुशल [illegible] का ही परिचय मिलता है और उपर्युक्त आक्रमणों से [illegible] हो गया है कि उनकी नीति अन्त में उन्हें पूर्ण [illegible] करेगी। कदाचित् जापान समझ रहा है कि मञ्चूरिया [illegible] सिंगापुर तक एशिया के एक विशाल भूखण्ड पर [illegible] व्यापक अधिकार हो गया है, वह उसकी अजेयता का [illegible] परन्तु जब विजयी संयुक्त राष्ट्रों की सेनायें मुख्य जापान [illegible] कार कर लेंगी तब वह अपने उस जीते हुए विशाल [illegible] कितने दिन तक टिक सकेगा यह बात वह चाहे न [illegible] परन्तु और सभी जानते हैं।

— —

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
Printed & Published by A. Bose, at the Indian Press, Ltd., Benares-Branch, Benares.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाहित स्त्री-पुरुषों के जानने योग्य

ऑपरेशन तथा इन्जेकशन ज़रूरी नहीं है

अप्राकृतिक रहन-सहन तथा मिथ्या आहार-विहार के कारण हमारे देश की नारियाँ अधिकांश ऐसी मिलेंगी जो एक न एक रोग से ग्रस्त हो निराश जीवन व्यतीत कर रही हैं। अधिकतर गर्भाशय का मोटा हो जाना तथा उस पर चर्बी आ जाना एक आम रोग हो गया है जो गर्भ धारण करने में बाधक होता है तथा अन्य भयंकर रोगों की जिससे उत्पत्ति भी होती है। ऐसी अवस्था में प्राय: ऑपरेशन कराने से भी बहुत कम रोगियों को सफलता प्राप्त होती है।

यदि आपको ऑपरेशन कराने में असुविधा है या ऑपरेशन की अपेक्षा औषधियों द्वारा कष्ट दूर करने के अधिक पक्ष में हैं तो शास्त्रोक्त अंगूरों का ताज़ा रस, अशोक, अर्जुन, दशमूल, त्रिफला तथा अन्य श्रेष्ठ औषधियों से प्रस्तुत—मूँगा जिसका प्रधान अंग वर्षों से प्रचलित **गौड़ की नारी-सुधा कॉर्डियल** सेवन करें।

नारी-सुधा एक माहवारी से दूसरी महावारी तक सेवन करने से बिना ऑपरेशन गर्भाशय की चर्बी, उसका मुटापा तथा बाँझपन नष्ट हो जाता है और सहज ही गर्भ की स्थिति हो जाती है। जहाँ इन्जेक्शन लिकोरिया (सफ़ेदे का गिरना) रोकने में असफल होते हैं वहाँ कुछ ही ख़ुराकों में यह सदैव के लिए ठीक हो जाता है। कमज़ोरी से गर्भाशय अपनी जगह से हट जाता है गर्भपात होते रहते हैं—एक बोतल के सेवन से युक्त स्थान दृढ़ हो जाता है, फिर गर्भपात कभी नहीं होते। मासिक धर्म महीने में दो बार या दो महीने में एक बार के बजाय ठीक समय पर हँसते-खेलते होने लगते हैं, जिससे हिस्टेरिया (बेहोशी) के दौरे होने बन्द हो जाते हैं। ख़ून भूख लगती है, ख़ून एक बड़ी मात्रा में बनने लगता है। दिल की धड़कन, कमर-टाँगों का ठहरा दर्द केवल चौथे दिन दूर हो जाते हैं। जापे का संकट सहन तथा बाद की कमज़ोरी शीघ्र दूर करने की यह विशेष औषधि है। **नारी-सुधा** की २६ ख़ुराकों की एक बोतल का मूल्य—पैकिंग, वी० पी० व्यय से पृथक्—तीन रु० पाँच आने है। सफलता होने पर इस मासिक पत्रिका का हवाला देकर

कुमार कुमार एन्ड को०

पोस्ट बाक्स नं० ११९ देहली

मिलिए—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ विचार

"कैसीमीर फंक" ने सन् १९१२ में मालूम किया कि खुराक में विटामिन बहुत आवश्यक हैं, और फलों में विटामिन की मात्रा अधिक होती है। हमारे यहाँ वैज्ञानिकों द्वारा अँगरेजी ढङ्ग पर बनाये फलपेयों में विटामिन के अतिरिक्त केल्सियम, फासफोरस और आइरन जो बच्चों के लिए सेवन कराना जरूरी है, मिलते हैं। ये फलपेय बदहजमी और पेट की खराबियों को दूर करते हैं।

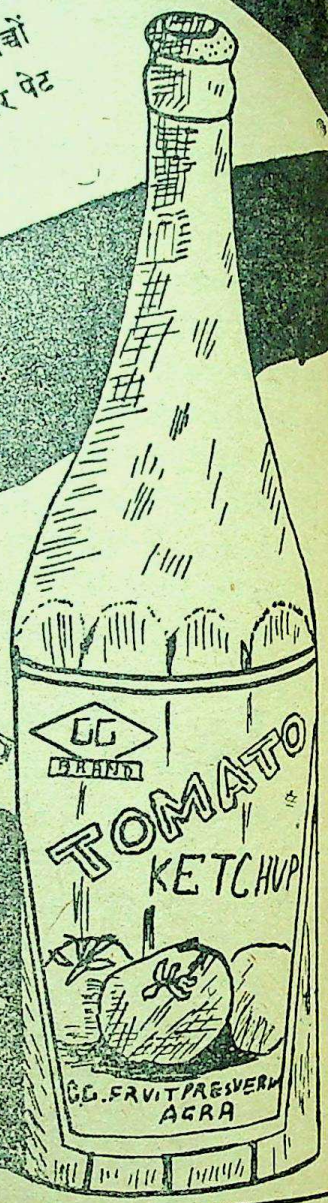

TOMATO KETCHUP

टोमाटो सॉस

GG BRAND

वस्तुतः GG व्यवहार में लाइये

जी॰ जी॰ फ्रूट प्रिज़र्विंग फैक्टरी आगरा

जी॰ जी॰ ब्रण्ड स्पेशल

जी॰ जी॰ सेल्स डिपो

(१) किताब महल, होर्नबी रोड, बम्बई। (२) चावड़ी बाजार, देहली। (३) मून हाउस पी ४० मिशन रो, एक्स्टेन्शन, कलकत्ता। (४) मैसर्स गिरधरलाल वकील, दर्जी चौक, बरेली। (५) मैसर्स गिरधरलाल वकील, बजरिया, कानपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

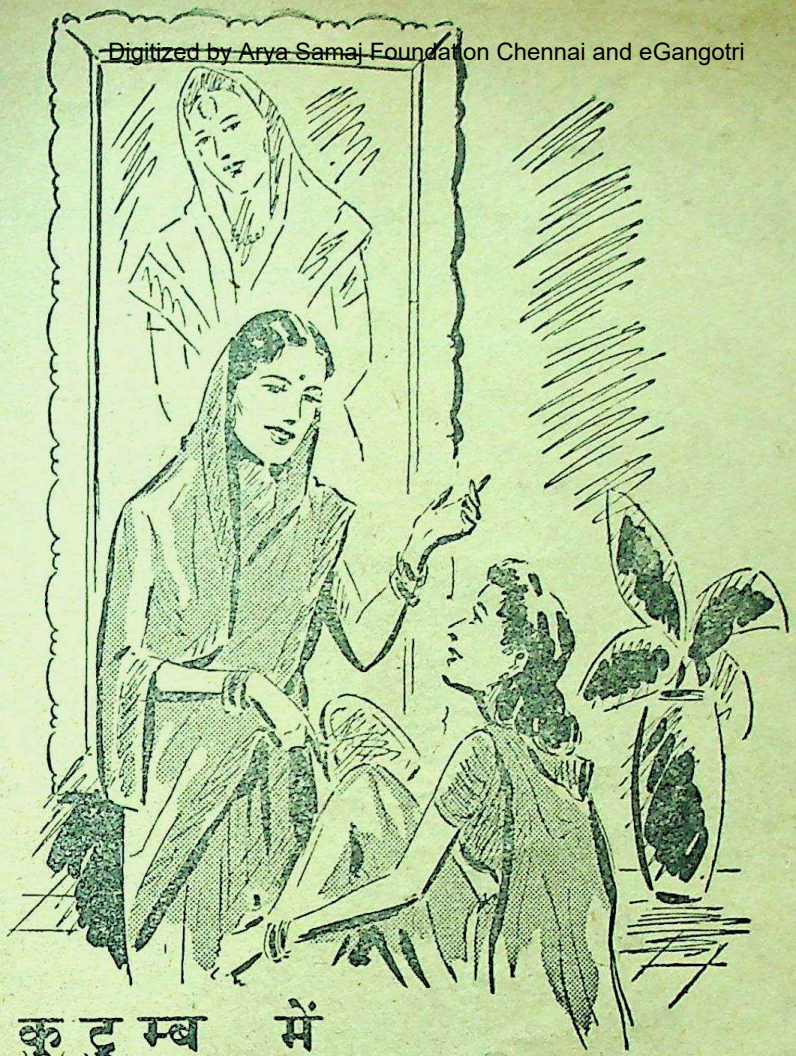

कुटुम्ब में सौन्दर्य कायम रहे

माताजी कह रही हैं: "मेरी माँ इतनी ही सुन्दर थी जितनी इस तसवीर में दिखाई देती है। परन्तु कोई भी तसवीर नहीं बता सकती उसकी त्वचा कितनी कोमल और सुन्दर थी।" माताजी ने अपनी त्वचा उनकी माँ के तरह सुन्दर रखी। और चाहती है कि बेटी भी त्वचा के सौन्दर्य की उसी तरह रक्षा करे। उन्होंने लड़की को सौन्दर्य-रक्षा के कौटुम्बिक रहस्य को सावधानी से समझा दिया है जो है पिअर्स साबुन और स्वच्छ पानी का उपयोग। इस सबक के सहारे वे कई पीढ़ीयों तक कुटुम्बे में इस सौन्दर्य को कायम रख सकेंगी।

पिअर्स साबुन

सौन्दर्य का सेवक

TG. 40-172 HI

A. & F. PEARS, ISLEWORTH, ENGLAND

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री रत्नागिरी जी का अद्भुत चमत्कार

जिसने समस्त संसार को चकित कर दिया

रक्त, बल, वीर्य, उत्साह तथा उमङ्ग ही जीवन सफल बना सकती है

ध्यान देने योग्य अमूल्य उपहार

अपूर्व कायापलट (रजिस्टर्ड)

निःस्वार्थ संसारसेवी भारतीय महात्माओं ने औषध-विज्ञान को अपनी महान् खोजों और अमूल्य रत्नों से अलंकृत किया है। आधुनिक चिकित्सक मर्ज़ और मरीज़ जब दोनों को लाइलाज घोषित करके शर्मिन्दा नहीं होते, वहाँ इन्हीं महात्माओं की बिना दाम की जड़ी-बूटियाँ मुर्दों को भी जिला सकने में समर्थ हुई हैं। ऐसी सच्ची घटनायें आये दिन एक न एक पढ़ने और सुनने में आया करती हैं।

बीस वर्ष पूर्व कल्लाती पहाड़ी पर विचरण करनेवाले स्वामी रत्नागिरी जी महाराज की सेवा एक बूढ़ा ग्वाला करने लगा। योगिराज को एक दिन उस वृद्ध की कमज़ोरी पर दया आ ही गई और उन्होंने निम्नलिखित योग की ६ मात्रायें उस बूढ़े को दीं। नासमझी के कारण छहों मात्रायें एक साथ खा जाने से उस वृद्ध ग्वाले में अपूर्व शक्ति आ गई और रत्नागिरी जी के परिश्रम-पूर्वक इलाज करने पर भी बुढ़ापे के बावजूद उसे तीन विवाह करने पड़े। इस पर राजा, रईस, नवाब और रसिकजन महान् योग को जानने के लिए आतुर हो उठे। नवाब बहावलपुर के ससुर हाजी हयात मोहम्मदख़ाँ साहब ने बाबा जी की बहुत सेवा करके इसे प्राप्त कर लिया और लाहौर के पं० ठाकुरदत्त शर्मा को बतलाया। शर्मा जी ने इसे प्रथम तथा दो अन्य लिखकर तीनों से उत्तम बाजीकरण बतलानेवाले को एक हज़ार रुपये का नक़द इनाम देने की घोषणा की। इसे आज बीस साल के लगभग हो गये किन्तु अभी तक कोई पुरस्कार विजय नहीं कर सका। मथुरा के ख्यातिप्राप्त बाबू हरिदास जी ने इसे चिकित्सा-चन्द्रोदय में छपवाया और हमने भी स्वयं बनाकर सैकड़ों दुर्बल, नपुंसक, वीर्य-विकारी रोगियों पर बरता। तत्काल लक्षण-चमत्कार देख जन-साधारण के लाभार्थ अनेक पत्र-पत्रिकाओं में छपवा दिया। आप भी बनाकर लाभ उठावें।

योग—शुद्ध बुरादा फ़ौलाद २० तोला, शुद्ध श्वेत मल्ल १ तोला, शुद्ध कपूर १॥ माशा, एक घण्टा घृतकुमारी में घोटकर, मिट्टी के कुज्जे में मज़बूत बन्द कर पाँच सेर कण्डों में फूँके। दुबारा एक तोला हरताल बर्की शुद्ध १॥ माशा कपूर शुद्ध में तीसरी बार गन्धक आमलासार शुद्ध १ तोला कपूर १॥ माशा में चौथी बार शुद्ध संस्कारित पारद १ तोला, कपूर १॥ माशा को ऊपर की भाँति १६ आँच दे। फिर उसको, लुगदी में डालकर बराबर इन्द्रबधू डाल दे और नीचे आग जलावें, जब इन्द्रबधू जलकर राख हो जावे तो हवा देकर उड़ा दें। अपूर्व कायापलट तैयार है। चार-चार चावल सायं मलाई के साथ खावें ऊपर मिश्री मिला दूध पीवें।

मथुरा के हरिदास जी लिखते हैं—इस योग के सेवन से हफ़्ते में एक आदमी का वज़न चार पौंड बढ़ गया, चेहरा लाल सुर्ख़ हो गया। भूपाल के वैद्यराज पं० शर्मा ने ३५० रोगियों पर बरता और आशा से अधिक पाया। रत्नाकर सम्पादक श्री छोटेलाल जैन आयुर्वेदाचार्य गृहचिकित्सा पथ-प्रदर्शक में छापा कि इतना प्रचण्ड गुणकारी दूसरा नहीं देखा। श्री धर्मेन्द्र विद्यावतंस सिद्धान्त-शास्त्री प्रधान गुरुकुल बरला ज़िला मुज़फ़्फ़रनगर ने लिखा है—"कायापलट" नामक औषध सेवन कर रहा हूँ। जैसी वैसा ही गुण है। बहुत लाभ हुआ। श्री चिरञ्जीलाल आयुर्वेदशास्त्री मालिक कल्याण औषधालय बाह (आगरा) का कहना है कि मैंने २२५ रोगी अपूर्व कायापलट द्वारा कि धातु-विकार, नपुंसकता, बवासीर, रक्त-विकार आदि से ग्रसित थे, पूर्ण स्वस्थ किये।

हमारा दावा है कि केवल सात दिन सेवन से शरीर में दौड़ता नज़र आयेगा। २१ दिन में चेहरा लाल कारमीरी की तरह चमकने लगेगा। ४० दिन में नपुंसकता, डायबिटीज़, निर्बलता दूर हो जाती है। स्त्रियों के प्रदर गर्भधारण शक्ति आती है। जिगर व मेदे की शक्ति भूख दूनी करता है। कफ, तिल्ली की ख़राबी, खाँसी, जुकाम, बदन दुखना, ख़ून का पतलापन, आँखों का चिनगारी-सा उड़ते दीखना, बार-बार थूक गिरना, हर तरह की कमज़ोरी तुरन्त दूर कर नव-जीवन का संचार है। जाड़ा, गरमी, बरसात सभी मौसमों में एक-सा लाभ है। योग भली भाँति समझाकर लिखा है। फिर भी आप न बना सकें तो बनी-बनाई १६ आँच दी हुई ४० दिन ८० मात्रा डाक-ख़र्च सहित ६॥।=) में हम भेज देंगे। डाक माफ़, पैकिंग, मनीआर्डर-फ़ीस अलग। कोई बात समझ आवे तो जवाबी कार्ड भेजकर उत्तर मँगा लें।

पता—रूपबिलास कम्पनी, (रसायनशाला) नं० ४६७, धनकुट्टी, कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्मस्टारोंकी तरह त्वचा की रक्षा कीजिये!

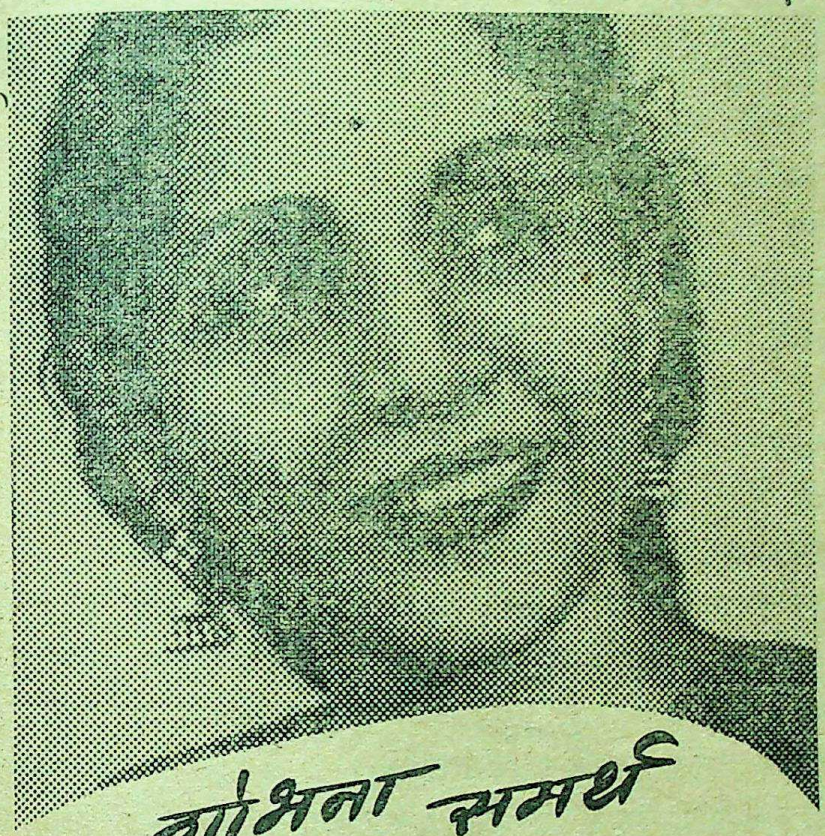

शोभना समर्थ

शोभना के रोज़ाना सौंदर्य प्रसाधन की एक बात है–सुबह शाम लक्स टॉयलेट साबुन का तेज़ फेन अपने शरीर में मलना, फिर साफ पानीसे धोना। वह कहती है–"इस सरल नियमित रीतिसे मेरी अंगकांति मृदु, मुलायम और बेदाग रहती है"। हमारी बहुतेरी फिल्म स्टार यही कहती है।

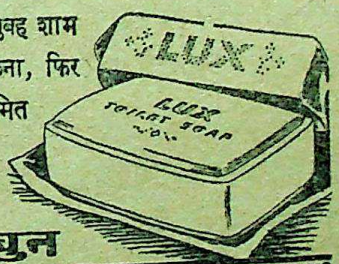

लक्स टॉयलेट साबुन

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

LTS. 127-111-49 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्यारी बहिनो !

न तो मैं कोई नर्स हूँ, न कोई डाक्टर हूँ और न वैद्यक ही जानती हूँ, बल्कि आप ही की तरह एक गृहस्थी स्त्री हूँ। विवाह के एक वर्ष बाद दुर्भाग्य से मैं लिकोरिया (श्वेत प्रदर) और मासिक-धर्म के दुष्ट रोगों में फँस गई थी। मुझे मासिक-धर्म खुलकर न आता था। अगर आता था तो बहुत कम और दर्द के साथ, जिससे बड़ा दुख होता था। सफ़ेद पानी (श्वेत प्रदर) अधिक जाने के कारण मैं प्रतिदिन बहुत कमज़ोर होती जा रही थी, चेहरे का रङ्ग पीला पड़ गया था, घर के कामकाज से जी घबराता था, हर समय सर चकराता, कमर दर्द करती और शरीर टूटता रहता था। मेरे पतिदेव ने मुझे सैकड़ों रुपये की औषधियाँ सेवन कराईं, परन्तु किसी से रत्ती भर लाभ न हुआ। इसी प्रकार मैं लगातार दो वर्ष तक बड़ा दुख उठाती रही। सौभाग्य से एक संन्यासी महाराज हमारे दर्वाज़े पर भिक्षा के लिए आये। मैं दर्वाज़े पर आटा डालने आई तो महात्मा जी ने मेरा मुख देखकर कहा—बेटी, तुझे क्या रोग है जो इस आयु में ही चेहरे का रङ्ग रुई की भाँति सफ़ेद हो गया है? मैंने सारा हाल कह सुनाया। उन्होंने मेरे पति को अपने डेरे पर बुलाया और उनको एक नुस्ख़ा बतलाया, जिसके केवल १५ दिन के सेवन करने से ही मेरे तमाम गुप्त रोगों का नाश हो गया। ईश्वर की कृपा से अब मैं कई बच्चों की माँ हूँ। मैंने इस नुस्ख़े से अपनी सैकड़ों बहिनों को अच्छा किया है और कर रही हूँ। अब मैं इस अद्भुत औषधि को अपनी दुखी बहिनों की भलाई के लिए असल लागत पर बाँट रही हूँ। इसके द्वारा मैं लाभ उठाना नहीं चाहती क्योंकि ईश्वर ने मुझे बहुत कुछ दे रखा है। एक बहिन के लिए पन्द्रह दिन की दवा तैयार करने पर २॥।=) दो रुपये चौदह आने असल लागत ख़र्च होती है और महसूल डाक अलग है।

यदि कोई बहिन इस दुष्ट रोग में फँस गई हो तो वह मुझे ज़रूर लिखे। मैं उसको अपने हाथ से औषधि बनाकर वी० पी० पार्सल द्वारा भेज दूँगी। यह मेरा प्रण है कि मैं किसी बहिन से दवा की क़ीमत अपनी असल लागत से एक पैसा भी ज़्यादा न लूँगी।

ज़रूरी सूचना—मुझे केवल स्त्रियों की इस दवाई का ही नुस्ख़ा मालूम है, इसलिए कोई बहिनें मुझे किसी और रोग की दवाई के लिए न लिखें।

प्रेमप्यारी अग्रवाल, नं० [१२] बुढलाडा, जि० हिसार [पञ्जाब]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या आपके सभी आहार स्फूर्तिदायी होते हैं?

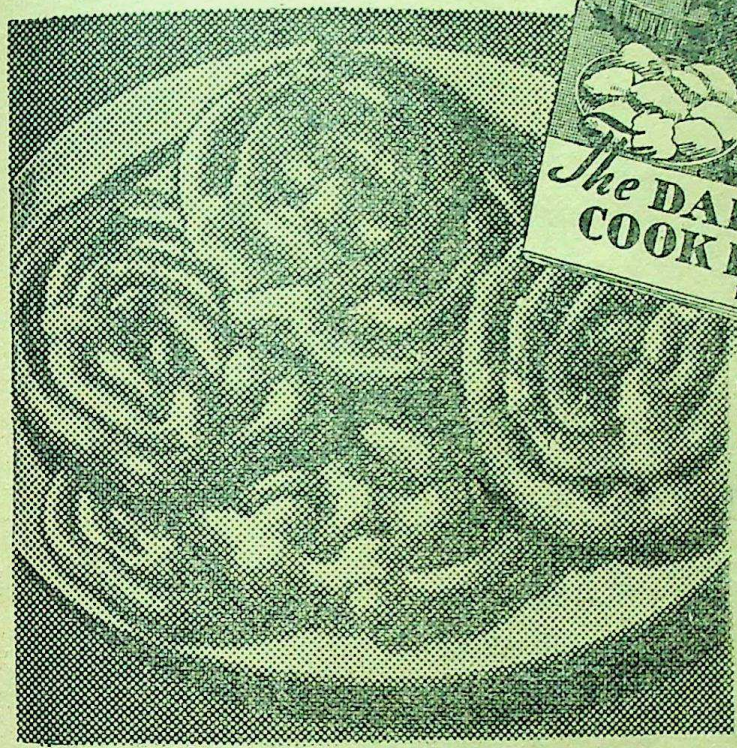

सबसे बढिया शक्तिदायी चीजें कौनसी हैं इसकी जानकारी हरएक स्त्रीको होनीही चाहिये। डाल्डा कुक बुक (अंग्रेजी) में आहार के बारेमें लाभकारी बातें और १५० से अधिक आहारोंका बयान किया गया है। Dept. D121 P. O. Box No. 353, Bombay के पते पर चार आने के पोस्टल स्टाम्प भेजियेगा।

जी, हां—उन्हींमेसे तो शक्ति पायी जाती है। लेकिन यह बात नहीं कि सभी आहारोंमेसे उतनीही शक्ति पायी जाती है। कई ज्यादा स्फूर्तिदायी होते हैं तो कई कम स्फूर्तिदायी। इसी लिये हमारा आरोग्य हमेशा खतरेमें रहता है। कई मनपसन्द आहार इस हिसाब से बिलकुल बेकार होते हैं और उनको पसन्द करनेवालोंको खेलने या काम करनेसे थकावट मालूम होये बिना नहीं रहती। सौभाग्य की बात है कि हरएक आहार को हम जीवन-सत्व संपूर्ण डाल्डामें बनाकर ज्यादा स्फूर्तिदायी बना सकते हैं। यह रसोई की बढिया चीज प्रकृतिके सर्वोत्तम स्फूर्तिदायी अन्नांश देती है। बहुतसी चीजोंमें न मिलनेवाली शक्ति उसमें है जिससे आपके हरएक आहार को वह स्फूर्तिदायी बना देती है।

पोषक-तत्व संपन्न **डालडा** स्फूर्ति के लिये

THE HINDUSTAN VANASPATI MANUFACTURING CO., LTD.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

..और उसने लाइफबॉय की आदत भी सीखी है!

सूई के हर एक टाँके के साथ वह एक गुणवन्ती नन्हीं बालिका बनने की शिक्षा ले रही है। उसकी माता जानती है कि वह एक स्वस्थ बालिका भी होगी, क्योंकि उसने प्रतिदिन लाइफ़बॉय सोप के प्रयोग की आदत भी सीख ली है। यह आदत उसे स्वास्थ्य और शक्ति के गुप्त शत्रु गन्दगी के ख़तरे से बचाती है।

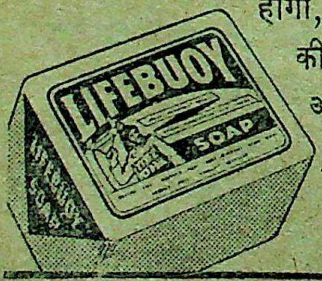

लाइफबॉय का व्यवहार करना एक ज़रूरी आदत है

L. 81-23 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केशों की शोभा बिना सारी सुंदरता फीकी पड़ जाती है

इसीलिये केशोंको सजाने व संवारनेके नित्य नये तरीके निकलते आ रहे हैं और निकलते जायंगे। इस विशाल भारतवर्षमें विभिन्न रुचिके लोग हैं और आज ७० वर्षोंसे जवाकुसुम, हर तरहके लोगोंको पसन्द आता रहा है। हमारे देशमें धूल-धक्कड़के मारे बालोंकी जड़में गर्दा बैठ जाता है। फिर गर्मी इतनी तेज पड़ती है कि मस्तिष्कके स्नायु बहुत जल्द गर्म हो जाते हैं। इन दोनों कारणोंसे ही बालोंकी स्वाभाविक कमनीयता और मजबूती नष्ट होती है।

आयुर्वेदोक्त जड़ी-बूटियोंसे बना जवाकुसुम बड़ी आसानीसे मैलको निकाल देता है और बालोंकी जड़को मजबूत बनाता है। इसके स्निग्ध स्पर्शसे मस्तिष्क शीतल हो जाता है।

७० वर्षकी सुप्रसिद्धिका समृद्ध

जवाकुसुम

केशोंकी शोभा बढ़ाता व मस्तिष्क शीतल रखता है

सी० के० सेन एण्ड कं० लि०

जवाकुसुम हाउस — कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धोबी ने फिर नुकसान किया!

—और प्रत्येक वस्तु इतनी महंगी है

जी हां, यदि आपने धोबी को इसी तरह कपडे फाडने दिये तो वह आपको बरबाद कर डालेगा। जरा सोचिये कि जो कपडे उसने फाडे हैं उनको खरीदने के लिये इस महंगी के समय में अपको कितना खर्च आयेगा। अब आपको चाहिये कि धोबी जिस नाशकारक विधि से कपडे धोता है उस से अपना नुकसान न होने दें, वह रीति केवल नाशकारक ही नहीं अनावश्यक भी है। वस्त्र और दूसरे घरेलू कपडे सनलाइट के "साबुन-और-बचत" के साधन द्वारा, हानि का जरा भी भय न होते हुए बडी सुन्दर रीति से धोये जा सकते है। यह ऐसा उत्तम साधन है जिसमें न तो कपडों को पटकने की जरूरत पडती है न रगडने की। सनलाइट की स्वयंक्रियाशील झाग मैले कपड़ों का मैल काट डालती है और उन्हें धोबी के धोये हुए कपडों से अधिक साफ और सफेद बनाती है और फिर कपडे का एक भी धागा नष्ट नहीं होने पाता। अपने नौकर को निम्नलिखित रीति सिखाइये और अपने घर ही में सनलाइट से कपडे धो कर उन्हें फटने से और पैसे को बरबाद होने से बचाइये।

अपने नौकर को सनलाइट की "साबुन-और-बचत" रीति सिखाइये

१. कपडों को अच्छी तरह भिगो लीजिये, इससे कपड़ा साबुन लगाए जाने योग्य हो जाता है। २. सनलाइट पूरे कपड़े पर मलिये जहां अधिक मैल हो वहां अधिक मलिये। ३. कपड़ों को धीरे धीरे सानिये, पटकिये नहीं, सनलाइट की स्वयं क्रियाशील झाग कपड़े से सारे मैल को काट देगी, और उसे पकड रखेगी। ४. कपड़े को इस तरह खंगालिये कि झाग का नाम तक उसमें न रहे क्योंकि अब इस झाग के साथ मैल हागा। यदि कपड़ा अधिक मैला हो तो दो बार साबुन लगाइये।

सनलाइट साबुन कपड़ों की बचत करता है

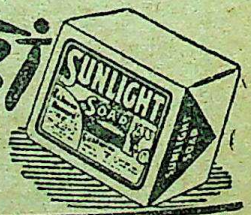

G. 70-23 HS

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैज़ा, मलेरिया, इन्फ्लुएंज़ा, टाइफाइड
आदि बीमारियों में बचानेवाला।

१ औं० शीशी ॥), दर्जन ५॥=), डा० ख़० अलग

युकॅलिप बाम } सूचीपत्र मुफ़्त { युकॅलिप दाद का मरहम

खांडालेकर बन्धु, बम्बई ४.

सरस्वती की फ़ाइलें

सन् १० से ४४ तक ३५ वर्ष की 'सरस्वती' की अखण्ड फ़ाइलें बिकने के लिए हैं। वे सर्वथा सुरक्षित और बिना जिल्द के हैं। फुटकर बिक्री न होगी। जो महाशय मोल लेना चाहें नीचे के पते पर पत्र-व्यवहार करें। पता—

सुन्दरलाल द्विवेदी, मौज़ा धनमऊ

पो० सुलतानगञ्ज, ज़ि० मैनपुरी

हृदय की सर्दी (सर्दी और कफ़)—लापरवाही करने से मामूली हृदय की सर्दी फेफड़े की सूजन (न्यूमोनिया) हो जायगी। इससे बचे रहने का रास्ता बड़ा आसान है। थोड़ा-सा अमृतांजन लेकर छाती पर मलिए। बस, उसकी गरमी सीधे हृदय तक पहुँचती है और कफ़ को पिघला देती और तुरंत आराम मिलता है।

अमृतांजन—हमेशा सर्दी से फ़ौरी आराम पहुँचाता है।

अमृतांजन लिमिटेड, बम्बई और मद्रास

शाखा :—कलकत्ता, कराची, दिल्ली

सारिडन से
२० मिनट में ही
हर किस्म का दर्द
दूर कीजिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक सरल रहस्य

टाम्को कोकोनट हेयर आयल की मालिश बालों की जड़ों का पोषण करती है। प्रति सप्ताह टाम्को कोकोनट आयल शेम्पो से धोने से बालों की सफ़ाई और स्वाभाविक चमक बनी रहती है। किन्तु इन दिनों यातायात की कठिनाई के कारण इनका सर्वदा मिलना कभी सम्भव न हो।

अतः केवल आवश्यकतानुसार ख़रीदकर और उसे सावधानी से प्रयोग करते हुए आप अपनी सहायता दे सकते हैं।

दी टाटा आयल मिल्स कं० लिमिटेड,

जवाहर स्क्वायर, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेती, बागवानी, उद्योगधंधे, व्यापार, स्वास्थ्य, समाज आदि विषयक एक मात्र सुप्रसिद्ध मासिक पत्र

'उद्यम' का साबुन विशेषांक

[सूचक व्यंगचित्र !

सुंदर मुखपृष्ठ !]

ता० १५ अगस्त को प्रकाशित होगा।

इस विशेषांक में साबुन के लिए लगनेवाला कच्चा माल, **साबुन तैयार करने सम्बन्धी सम्पूर्ण व्यवहारोपयोगी जानकारी**, माल की प्रसिद्धि व इतर सम्पूर्ण जानकारी प्रथमतः हिन्दी भाषा में प्रकाशित हो रही है।

वार्षिक मूल्य रु० ५-८-० (वी० पी० से रु० ५-१२-०) होकर ग्राहक बननेवालों को 'साबुन अंक' तो प्राप्त होगा ही, इसके सिवाय खेती, बागवानी, लाभप्रद उद्योगधंधे, व्यापार आदि विषयों की जानकारी प्रति माह १५ तारीख को नियमित प्राप्त होती रहेगी।

'उद्यम' की माँग की अधिकता के कारण कहीं आपको निराश न होना पड़े अतः शीघ्रातिशीघ्र लिखिए।

मैनेजर **'उद्यम मासिक'**, धर्मपेठ, नागपुर,

मच्छरदानियाँ

उत्तम सामान, सफ़ेद जाली, चारों कोने में फ़ुलनेस, अच्छी सिलाई, बहुत ही मज़बूत

लम्बाई	चौड़ाई	ऊँचाई	साधारण	बेस्ट क्वा०	स्पेशल
६ फुट	३½ फुट	३½ फुट	६॥)	७।)	९)
६ "	४ "	४ "	७।=)	८)	१०॥)
६½ "	४½ "	४½ "	८॥)	९।)	११॥।)
७ "	५ "	५ "	९॥।)	१०॥।)	१४)
७½ "	६ "	६ "	११॥।)	१३।)	१६॥)
८½ "	६½ "	६½ "	१६)	१७)	१८)

पैकिंग तथा डाक-व्यय १।)। कोई भी तीन एक साथ लेने से डाक व्यय-माफ़।

आटोमेटिक पिस्तौल

लाइसेंस की ज़रूरत नहीं

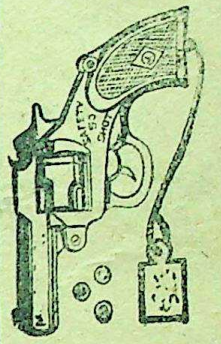

आप बराबर जितनी बार चाहें फ़ायर कर सकते हैं। ख़तरे के समय चोर, डाकू तथा जंगली जानवरों को डरवाने के लिए बहुत ही उपयोगी है। फ़ायर करने पर धुआँ तथा लौ निकलती है जिससे असली तमंचा मालूम पड़ता है। दाम मय कारतूस के ७) अच्छावाला ९) डाक-व्यय तथा पैकिंग १।) प्रत्येक आर्डर के साथ १ नक़ली घड़ी १ फ़ैंसी चमड़े का मनीबेग तथा एक अच्छी रुमाल।

पता— **विक्टोरिया वाच के (S. A.)**
पोस्ट बाक्स नं० १२२१६ कलकत्ता (सेक ६६०)

श्री काशी-विद्यापीठ के बहुमूल्य प्रकाशन :—

अँगरेज़ जाति का इतिहास

लेखक—श्री गङ्गाप्रसाद जी, एम० ए०

इसमें राजाओं की जीवनी और युद्धों के कोरे वर्णन नहीं हैं प्रत्युत राजा और प्रजा के उस राजनीतिक संघर्ष का एवं उन जातीय घटनाओं का विशद वर्णन किया गया है जिनके कारण यह नन्हा-सा टापू इतनी आश्चर्यजनक उन्नति कर सका।

संशोधित और परिवर्द्धित द्वितीय संस्करण का मूल्य २॥)

अफ़लातून की सामाजिक व्यवस्था

लेखक—श्री गोपाल दामोदर तामस्कर एम० ए०, एल० टी०

इसमें प्रसिद्ध ग्रीक विद्वान् अफ़लातून (प्लैटो) की पुस्तकों—रिपब्लिक, पोलिटिक्स तथा लाज—का संक्षेप में विवेचन किया गया है और उनके आधार पर यह दिखला दिया गया है कि वास्तव में समाज की क्या आवश्यकतायें हैं, उनकी व्यवस्था कैसी होनी चाहिए; अफ़लातून की आदर्श सामाजिक व्यवस्था में और भारतीय सामाजिक व्यवस्था में कहाँ तक साम्य है इत्यादि। मूल्य १।=)

गणेश

लेखक—श्री सम्पूर्णानन्द

वेद, पुराण, तन्त्र, बौद्ध और जैन शास्त्रों में गणेशजी का क्या रूप है और भारत के बाहर चीन, जापान और जावा आदि देशों में उनकी किस प्रकार पूजा होती है, जानने के लिए विद्वान् लेखक की नई रचना पढ़िए।

अनेक सुन्दर तिरंगे तथा एकरंगे चित्रों सहित पुस्तक का मूल्य केवल दो रुपये आठ आने।

श्री काशी-विद्यापीठ पुस्तक-भण्डार, विद्यापीठ रोड, बनारस छावनी।

हमारे यहाँ हिन्दी भाषा की सब पुस्तकें मिलती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस्वती-सिरीज़

अपने ढंग की अनोखी पुस्तक-माला है। क्या विषय और क्या रोचकता, सभी दृष्टियों से इस माला की पुस्तकें अनमोल हैं।

विश्व-उपन्यास-माला

अभिसारिका — बुभुक्षा
महायुद्ध में अपनी बीती — धरतीमाता

आधुनिक-उपन्यास

नरक — नया क़दम
आरती — त्याग का मूल्य
रूपान्तर — बहू रानी की हाट
ज़मींदार — देहाती समाज
अग्रणी — साथी
निष्कलंकिनी — अरक्षणीया
तीन नगीने — पत्नी

रहस्य-रोमांच

छिपा महल — लाल दूत
मशीन के पुर्ज़े — घर का भेदिया
भंडा डाकू — समस्या
महान् अपराधी — जीवन-ज्योति
अनन्त की ओर

कहानी-संग्रह

नीम चमेली — पूर्व के पुराने हीरे
रवीन्द्रनाथ की चुनी हुई कहानियाँ
योरप की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ
पश्चिम की चुनी हुई कहानियाँ

हिन्दी-साहित्य

हिन्दी के निर्माता — सूर-संदर्भ
हिन्दी के वैष्णव कवि

प्रत्येक का मूल्य ॥=) है।

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

'सरस्वती' के पाठकों से—

'सरस्वती की ग्राहक-संख्या में इधर बहुत वृद्धि हो रही और निरन्तर हो रही है। इस बीच हमारे प्रेमी पाठकों द्वारा बराबर अनुरोध करते रहे हैं कि 'सरस्वती' की पृष्ठ-संख्या बढ़ाकर पूर्ववत् कर दी जाय, जिससे जो अमूल्य सामग्री 'सरस्वती'-द्वारा प्राप्त हो रही है वह और अधिक परिमाण में हो सके। खेद है कि 'पेपर कण्ट्रोल-आर्डर' के कारण हम अपने पाठकों की इच्छा पूरी करने में असमर्थ हैं। हमने निश्चय कर लिया है कि उक्त कण्ट्रोल-आर्डर के हटते 'सरस्वती' की पृष्ठ-संख्या बढ़ाकर पूर्ववत् कर दी जायगी। साथ ही 'सरस्वती' का वार्षिक मूल्य भी—जो पिछले दिनों घटाकर कर दिया गया था—पूर्व की भाँति ६॥) हो जायगा।

—

श्री सोहनलाल द्विवेदी लिखित—

कुणाल

प्रत्येक युवक, युवती के पढ़ने योग्य अभिनव प्रकाशित खण्ड-काव्य

अशोक, तिष्यरक्षिता और कुणाल के चरित्र-चित्रण में—ख़ासकर कुणाल के चरित्र-चित्रण में—कवि ने कमाल किया है।

शब्द-सौकुमार्य के साथ ही भावोत्कर्ष तथा तुले शब्दों का प्रयोग भी द्विवेदीजी की कविता को उच्च बनाता है।

—महापण्डित राहुल सांकृत्यायन

सचित्र सजिल्द मूल्य १।)

मिलने का पता—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धि से काम लीजिए

अच्छी पुस्तकों का चुनाव साधारण काम नहीं है। इसमें यदि आप अपनी बुद्धि का उपयोग न करेंगे, तो गाढ़ी कमाई के पैसों से खरीदी हुई पुस्तकें फेंक देनी होंगी। ऐसा न हो इसलिए हम काव्य और साहित्य की चुनी हुई पुस्तकें आपके सामने उपस्थित कर रहे हैं।

काव्य की पुस्तकें

गोस्वामी तुलसीदास—संक्षिप्त रामचरितमानस (सचित्र)—रामचरितमानस का संक्षिप्त संस्करण है। संक्षेप ऐसी चतुराई किया गया है कि कहीं भी कथा-भाग टूटने नहीं पाया। मँझोले आकार के ३०० पृष्ठों में यह समाप्त हुआ है। पुस्तक सचित्र और सजिल्द है। मूल्य १) एक रुपया।

अयोध्याकाण्ड (मूल)—रामायण-प्रेमियों के सुभीते के लिए यह काण्ड अलग प्रकाशित किया गया है। यह पुस्तक अनेक स्थानों के शिक्षाविभाग-द्वारा स्वीकृत है। इससे यह छात्रों तथा साधारण जनता सभी के काम की चीज़ है। मूल्य ।) एक रुपया। सटीक मूल्य २॥≈) दो रुपये ग्यारह आने।

सुन्दरकाण्ड (मूल)—रामायण-प्रेमियों के सुभीते के लिए यह काण्ड असली रामचरितमानस से अलग छापा गया है। मूल्य ।≡) सात आने।

अरण्यकाण्ड (मूल)—रामायण-प्रेमियों के सुभीते के लिए यह काण्ड भी असली रामचरितमानस से अलग छापा गया है। मूल्य ।≡) सात आने।

विनयपत्रिका (सटीक)—गोस्वामी तुलसीदास की रचनाओं में विनयपत्रिका का स्थान बहुत उच्च है। इसमें गोस्वामीजी के विनय-सम्बन्धी पद्यों का संग्रह है। इसके टीकाकार हैं पण्डित ईश्वर भट्ट। मूल्य ४) चार रुपये।

कुण्डलिया रामायण—गोस्वामी तुलसीदासजी की यह सुन्दर रचना पिछले दिनों खोज में मिली है। इसमें उनकी अन्य रचनाओं की भाँति सरस कुण्डलिया छन्दों में रामचरितमानस के सातों काण्डों की कथा दी गई है। मूल्य ४) चार रुपये।

संक्षिप्त सूरसागर—इसमें महाकवि सूरदास के पदों का संग्रह है। इसका एक-एक पद भक्ति तथा प्रेम के रस से ओतप्रोत है। मूल्य ३।-) तीन रुपये पाँच आने।

चारण—इस पद्यमय पुस्तक में प्राकृतिक दृश्यों के मनोरञ्जक वर्णनों के अतिरिक्त राजपूताना के कुछ प्रसिद्ध वीरों का गुणगान किया गया है। मूल्य ।-) पाँच आने।

श्री राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी०, एल-एल० बी० लिखित चार काव्य-ग्रन्थ

वनवास—यह पुस्तक एक खण्ड-काव्य है, जिसमें कवि ने राम के वन-गमन और भारत के पावन स्थल चित्रकूट पर्वत का बड़ा मनोरम वर्णन किया है। मूल्य ॥।≈) चौदह आने।

मधुस्रवा—इस अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक में जीवन में मधु बरसाने की पूरी-पूरी क्षमता है। आप भी इसकी रचनाओं को पढ़कर जीवन को रस-सिक्त बनाइए। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

किङ्किणी—इसमें लेखक की उत्तमोत्तम फुटकर कविताओं का संग्रह किया गया है। कविताओं की भाषा इतनी मधुर और कल्पना की उड़ान इतनी आकर्षक है कि पाठक कुछ क्षण के लिए उसमें अपनी सुध-बुध भूले बिना नहीं रहता। मूल्य ॥।) बारह आने।

लक्ष्मणशक्ति—यह भी एक खण्डकाव्य है। इसकी कथा का आधार रामायण का युद्ध-काल है जिसमें लक्ष्मण मूर्छित हो गये थे। भाषा सुलझी हुई और मुहाविरेदार है। मूल्य ॥।) बारह आने।

LTK 84

मैनेजर बुकडिपो—इंडियन प्रेस, लिमिटेड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ कवि

ठाकुर गोपालशरणसिंहजी की कृतियाँ—

माधवी—माधवी का यह नया संस्करण बड़ी ही सज-धज के साथ और बड़े आकार में प्रकाशित हुआ है। मूल्य २) दो रुपये।

ज्योतिष्मती—इस संग्रह में ठाकुर साहब की नवीन प्रकार की कवितायें संगृहीत की गई हैं, जो हिन्दी-साहित्य में अपना विशेष स्थान रखती हैं। ख़ास कर इसमें संग्रह किये गये छोटे-छोटे गीत बहुत ही मधुर और भावपूर्ण हैं। मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने।

मानवी—इस संग्रह में प्रकाशित कविताओं के द्वारा ठाकुर साहब ने भारतीय नारी के सुख-दुःखमय जीवन का बड़ा ही सुन्दर और मार्मिक चित्रण किया है। मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने।

संचिता—इस संग्रह में ठाकुर साहब ने अपनी सन् १९१४ से लेकर सन् १९३९ तक की सब प्रकार की रचनाओं का समावेश किया है। इस एक ही पुस्तक के द्वारा ठाकुर साहब के कवि-जीवन के क्रम-विकास का उत्तमतापूर्वक अध्ययन किया जा सकता है। संग्रह में कुल ७१ कवितायें हैं। मूल्य ३) तीन रुपये।

पद्यमाला—इस पुस्तक में अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के बारहवें अधिवेशन के सभापति हास्यरसावतार स्वर्गीय पण्डित जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी, साहित्यभूषण की फुटकर कविताओं का संग्रह किया गया है। मूल्य १) एक रुपया।

एकादशी—लेखक, श्रीयुत नत्थाप्रसाद दीक्षित 'मिलिन्द'। इस पुस्तक में मिलिन्द जी की १२ कमनीय कविताओं का संग्रह किया गया है। ये सभी कवितायें पौराणिक आख्यायिकाओं के आधार पर नये ढङ्ग से लिखी गई हैं। मूल्य केवल १।-) एक रुपया पाँच आने।

मञ्जीर—लेखक, श्री गिरिजाकुमार माथुर। इसमें नवयुवक कवि की भावपूर्ण ४३ रचनायें संगृहीत हैं जिन्हें पढ़कर हृदय फड़क उठता है। मूल्य १) एक रुपया।

दैत्यवंश—लेखक, श्रीयुत हरदयालुसिंह। इसमें हिरण्याक्ष से लेकर स्कन्द तक दैत्यवंश के प्रभावशाली नरेशों का वर्णन ब्रजभाषा के ललित छन्दों में पुरानी शैली के अनुसार किया गया है। इस पुस्तक पर देव-पुरस्कार दिया जा चुका है। मूल्य ३।-) तीन रुपये पाँच आने।

द्विवेदी काव्यमाला—आचार्य पण्डित महावीरप्रसाद द्विवेदी की अमर कविताओं का पूर्ण संग्रह।

शनि भगवान् की कथा—इसमें ललित छन्दों में शनि भगवान् की महिमा का वर्णन किया गया है। मूल्य ॥) आठ आने।

तक्षशिला काव्य—सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान तक्षशिला के अतीत गौरव का वर्णन। इसमें ओज, प्रसाद तथा माधुर्य आदि काव्योचित गुणों का समुचित रूप से समावेश किया गया है। मूल्य ३) तीन रुपये।

कौमुदी—श्रीयुत बालकृष्णराव आई० सी० एस० की कविताओं का संग्रह। मूल्य ॥≈) ग्यारह आने।

साहित्य-समालोचना

तुलसी के चार दल (प्रथम और द्वितीय भाग)—गोस्वामी तुलसीदास के रामलला नहछू, बरवै रामायण, पार्वती-मंगल और जानकी-मंगल का आलोचनात्मक परिचय तथा इन चारों ग्रंथों की अध्ययनपूर्ण टीका। मूल्य प्रथम भाग का ३) तीन रुपये, द्वितीय भाग का २॥≈) दो रुपये ग्यारह आने।

हिन्दी-भाषा की उत्पत्ति—पुस्तक का विषय उसके नाम से स्पष्ट है। इसमें हिन्दी-भाषा की उत्पत्ति के विवेचन के अतिरिक्त और भी अनेक भारतीय भाषाओं पर विचार किया गया है। मूल्य ॥) आठ आने।

बाबू श्यामसुन्दरदास की कुछ पुस्तकें

सचित्र हिन्दी-कोविद-रत्नमाला—(दो भाग) पहले भाग में भारतेन्दु से लेकर वर्तमान समय तक के हिन्दी के नामी लेखकों और सहायकों के सचित्र और संक्षिप्त जीवनचरित दिये गये हैं; और दूसरे भाग में पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी तथा पं० माधवराव सप्रे, बी० ए० आदि विद्वानों के तथा विदुषी स्त्रियों के जीवनचरित छापे गये हैं। हिन्दी में यह पुस्तक अपूर्व है। पहले भाग का मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने। दूसरे भाग का २॥≈) दो रुपये ग्यारह आने।

मेरी आत्म-कहानी—काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा के संस्थापक दाता बाबू श्यामसुन्दरदास जी की आत्म-कहानी एक प्रकार से हिन्दी-साहित्य के वर्तमान युग का इतिहास है। इस पुस्तक में बाबू साहब ने केवल अपनी जीवन-घटनाओं का विवरण ही नहीं लिखा वरन् अपने समय के उन सभी साहित्य-सेवियों के चरित्र की विवेचना भी की है, जिन्होंने हिन्दी-साहित्य की अभिवृद्धि में योगदान किया है। मूल्य २) दो रुपये।

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

76273

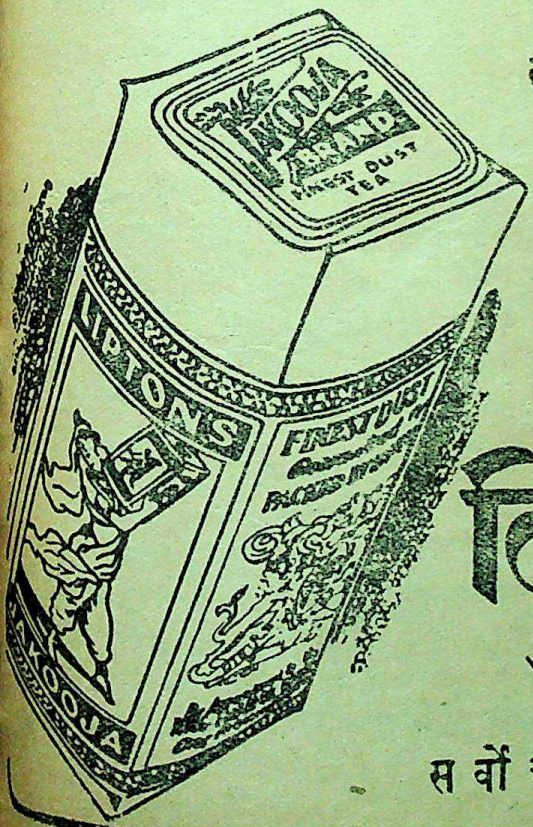

तेज व बढ़िया सुगन्ध, गहरा रंग और कम दाम इन सबने मिलकर लिपटन की जाकूजा को बाजार भर की सर्वश्रेष्ठ चाय बना रक्खा है।

लिपटन की
जाकूजा चाय

सर्वोत्तम भारतीय चूरा चाय

LTK 84 !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कपड़े का खाना

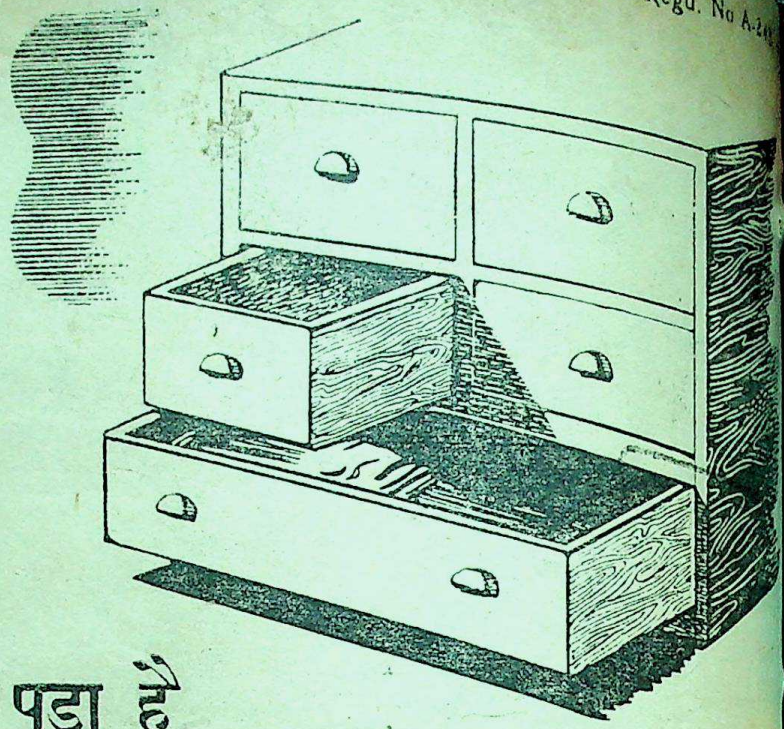

खाली पड़ा है

कपड़े का खाना खाली पड़ा है और कपड़ा एक तो बहुत मँहगा है दूसरे मिलना मुश्किल हो रहा है। सिर्फ कपड़े का सवाल होता तो भी एक बात थी। खाद्य पदार्थ, जलावन सभी का तो यही हाल है। यह विजय का मूल्य है। रोज रोज की कठिनाइयों और हाय हत्या से आप ऊब उठते हैं परन्तु एक सच्चे साथी की तरह आपका साथ देने को चाय हमेशा तैयार मिलती है। यह अभी भी सस्ती है और आसानी से मिल जाती है। इस कठिन समय में चाय अद्भुत आराम देती है। यह हानि रहित व स्फूर्तिदायक है। यह आराम की ऐसी अनुभूति लाती है कि दुश्चिन्तायें तथा समस्यायें हवा हो जाती हैं।

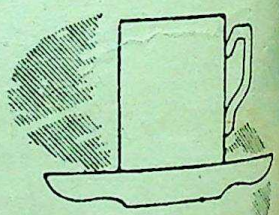

भारतीय

वक्त पड़ने पर **चाय** का सहारा लीजिये

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

IK 239

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुदर्शन

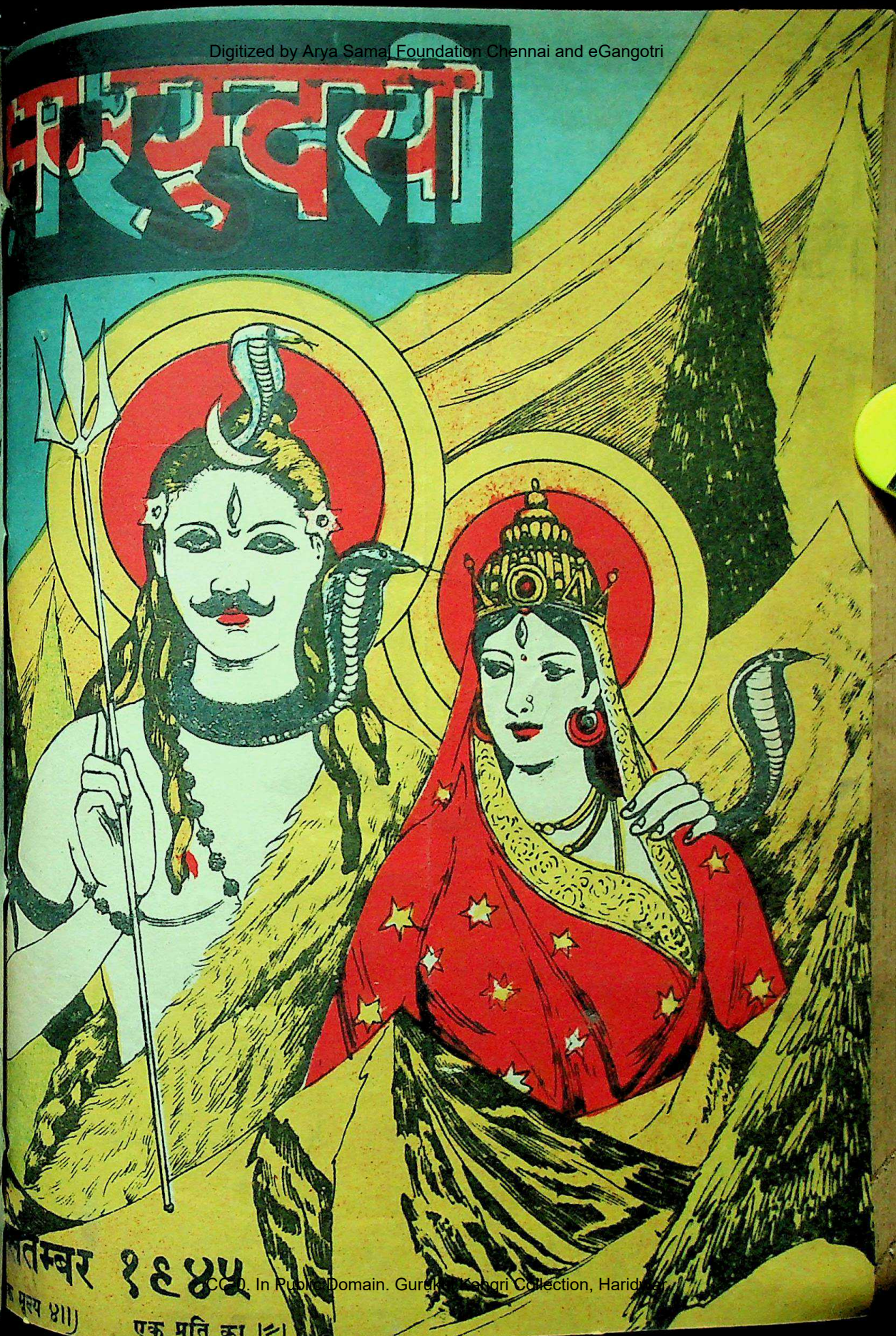

सितम्बर १९४५

मूल्य ४॥)

एक प्रति का ।=)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालों को लम्बे तथा मनमोहक

बनाने के लिए

कामिनिया आयल (रजिस्टर्ड)

का व्यवहार करें।

यह बालों के लिए सर्वोत्तम उपचार है।

बालों को शीघ्रतापूर्वक बढ़ाता है।

बालों का झड़ना बन्द कर उन्हें काला, चिकना, चमकीला तथा मनमोहक बनाता है। एक बार की परीक्षा पर्याप्त होगी।

खुशबू का राजा

ओटो दिलबहार (रजिस्टर्ड)

अपनी मीठी तथा मनमोहक सुगन्ध के लिए विख्यात। दो-चार बूंदें कपड़ों पर डाल देने से कपड़े अधिक समय तक सुगन्धित बने रहेंगे।

दिलबहार हेयर आयल (रजिस्टर्ड)

एक दूसरा सुगन्धित केश-तेल

यह तेल अत्यन्त सुगन्धित है तथा बालों की उपयोगिता के लिए 'कामिनिया आयल' के बाद इसका ही नम्बर है। बालों को बढ़ाने के लिए यह विशेष लाभदायक है। एक बार अवश्य परीक्षा करें।

एँग्लो इण्डियन ड्रग एंड केमिकल कं०.

२८५ जुमा मसजिद, बम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

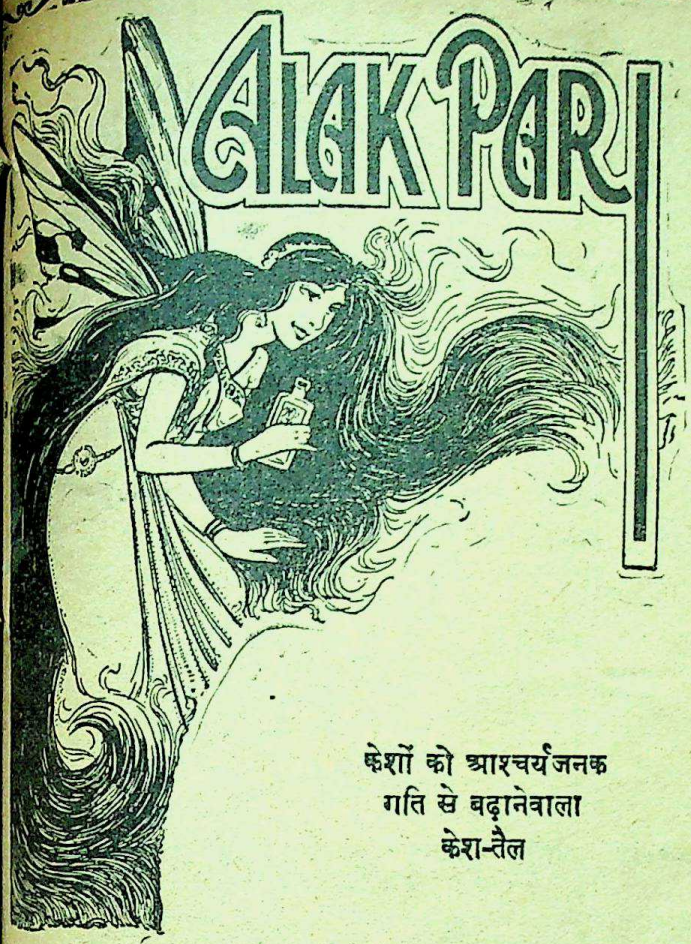

केशों को आश्चर्यजनक
गति से बढ़ानेवाला
केश-तैल

शुद्ध बादामरोग़न पर बना

अलकपरी

केशों में प्रतिमास ३-४ इञ्च वृद्धि !
६ महीने में एड़ी-चुम्बी केश !

'अलकपरी' का कोर्स

पहले सप्ताह में रूसी-ख़ुश्की दूर हो जाती है।
दूसरे सप्ताह में केशों का झड़ना और उनके सिरों का फटना रुकता है।
तीसरे सप्ताह में नये केश उगते दिखाई देते हैं।
चौथे सप्ताह के अन्त तक केश ३-४ इञ्च बढ़ जाते हैं।
फिर प्रतिमास इसी औसत से बढ़ते रहते हैं।

६ महीने में केश एड़ी-चुम्बी बन जाते हैं।

मूल्य एक शीशी का २॥) है जो एक महीने को काफ़ी होती है। डाक-ख़र्च व पैकिङ्ग पृथक्। ६ से अधिक शीशियाँ डाक से नहीं भेजी जायँगी। अधिक के लिए ५) पेशगी भेजिए और अपने रेलवे स्टेशन का नाम लिखिए।

प्रतिष्ठित महिलाओं की सम्मतियाँ—

मुझे 'अलकपरी' से बहुत कुछ फ़ायदा है। ३ शीशियाँ तुरन्त भेजने की कृपा करेंगे क्योंकि मेरे पास का तेल बिलकुल ख़तम हो गया है।

२-९-४४ कुसुमकुमारी, काँकरोली (मेवाड़)।

आपके 'अलकपरी' तेल की १ शीशी इस्तेमाल की। बहुत ही लाभ हुआ। अनेक धन्यवाद। अब मैं आपकी स्थायी ग्राहिका बन जाऊँगी। कृपया एक शीशी १५ सितम्बर के अन्दर ही अन्दर भेज दें।

७-९-४४ पुष्पा श्रीवास्तव C/o ब्रजेन्द्रनाथ श्रीवास्तव, अलीगढ़।

नम्र निवेदन यह है कि 'अलकपरी' की २ शीशियाँ लगाईं। मुझे बहुत लाभ हुआ है। कृपा कर २ शीशियाँ शीघ्र ही और भेज दीजिए।

१०-९-४४ मिस पुष्पा साहनी C/o दीवान जियालाल साहनी, नायब तहसीलदार, गुजरात (पंजाब)

'अलकपरी' से बहुत लाभ हुआ है। कृपया ६ शीशियाँ तुरन्त भेज दें।

१२-९-४४ मिसेज़ चौधरी सरदारसिंह सब इन्स्पेक्टर पुलिस, हरदुवागंज

'अलकपरी'—नया कटरा, इलाहाबाद

हमारे एजेन्ट—

नई दिल्ली—रायल स्टोर्स, ३३, गोल बाज़ार। आगरा—प्रियादास घनश्यामदास परफ़्यूमर्स, काश्मीरी बाज़ार।
लखनऊ—भोलानाथ सीताराम अमीनाबाद पार्क।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

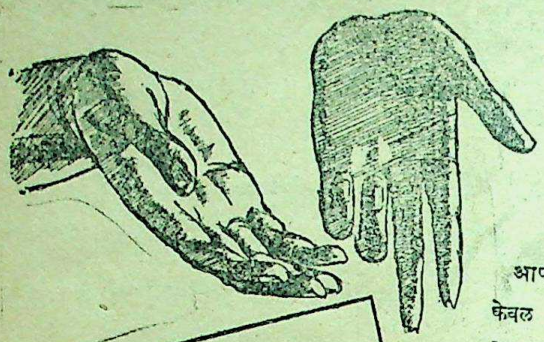

अपने देश की मदद कीजिए

—इस प्रकार!

आप अपनी हर चीज़ ज़्यादा से ज़्यादा दिन चलाइए। कमख़र्ची केवल आजकल का फैशन ही नहीं है, यह एक प्रकार की देश-सेवा भी है। माल की माँग को कम करने में जब तक आप हाथ नहीं बटाते, तब तक हिन्दुस्तान के ग़रीब लोग कष्ट में रहेंगे।

व्यक्तिगत लाभ की दृष्टि से यदि देखा जाय तो नियमित मितव्ययिता का अर्थ होता है छोटी छोटी रक़मों की नियमित बचत। जो रुपये आप अभी नहीं ख़र्च करेंगे वे तेज़ी से बढ़ते जायँगे।

कमख़र्ची से संकट दूर कीजिए

बिजली का ख़र्च घटाइए।

१ जब काम में न ला रहे हों तब रोशनी और पंखों को बंद कर दीजिए।

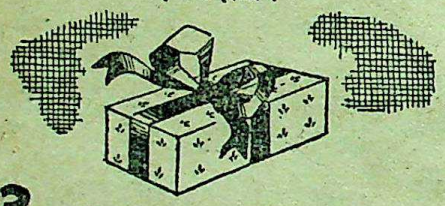

३ क़ीमती उपहार या तोहफ़े मत दीजिए।

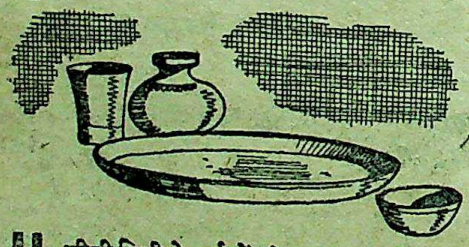

५ चीनी मिट्टी के बर्तनों की जगह धातु के बर्तनों का व्यवहार कीजिए।

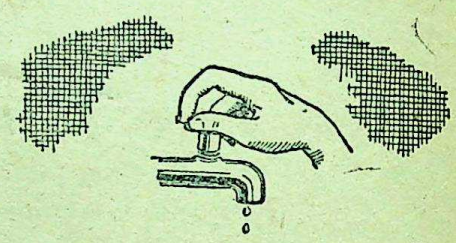

२ पानी के नलों को खुला मत छोड़िए। पानी का ज़्यादा महसूल देने से क्या लाभ?

४ घर पर रह कर रुपया बचाइए।

६ एक साल तक कोई नया कपड़ा मत ख़रीदिए।

जिसके बिना काम चल जाय उसे मत ख़रीदिए

—भारत-सरकार के सूचना तथा प्रचार-विभाग द्वारा प्रकाशित—

AAA 6 HINDI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमज़ोर और कृष बच्चे **डोंगरे-बालामृत** के इस्तेमाल से ताक़तवर, पुष्ट और चुस्त बनते हैं।

निर्बल, निश्चेतन और निराश क्यों रहते हो ?

भोजन को पचानेवाला, ख़ून को बढ़ानेवाला, पाण्डु और अन्य रोग के बाद की निर्बलता को नष्ट करनेवाला

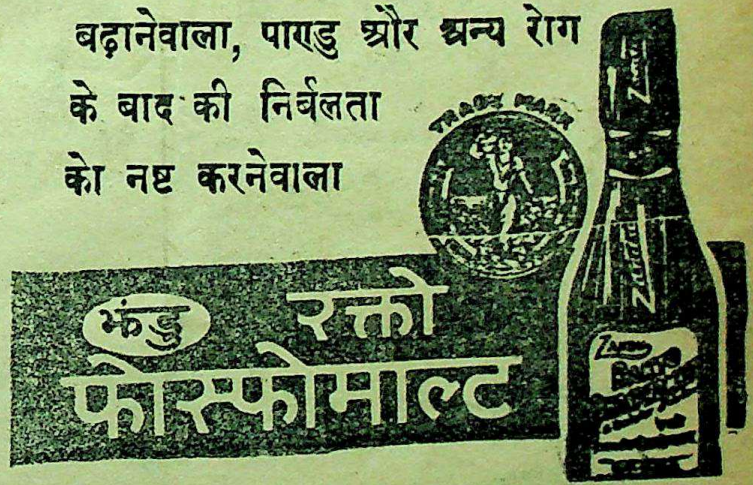

सुमधुर शक्तिवर्धक, अमूल्य औषधि अवश्य सेवन करें

झण्डु फ़ार्मास्युटिकल वर्क्स लि०, बम्बई नं० १४

इलाहाबाद के चीफ़ एजेन्ट—एल० एम० घोलकिया एण्ड ब्रादर्स, ४६ जान्स्टनगंज।

दिल्ली और यू० पी० के सोल एजेन्ट—कान्तिलाल आर० पारीख, चाँदनी चौक, देहली।

यू० पी० एजेंट—कान्तिलाल आर० पारीख, चाँदनी चौक, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केशों की शोभा बिना सारी सुन्दरता फीकी पड़ जाती है

☆

इसीलिये केशोंको सजाने व संवारनेके नित्य नये तरीके निकलते आ रहे हैं और निकलते जायंगे। इस विशाल भारतवर्षमें विभिन्न रुचिके लोग हैं और आज ७० वर्षोंसे जवाकुसुम, हर तरहके लोगोंको पसन्द आता रहा है। हमारे देशमें धूल-धक्कड़के मारे बालोंकी जड़में गर्दा बैठ जाता है। फिर गर्मी इतनी तेज पड़ती है कि मस्तिष्कके स्नायु बहुत जल्द गर्म हो जाते हैं। इन दोनों कारणोंसे ही बालोंकी स्वाभाविक कमनीयता और मजबूती नष्ट होती है।

आयुर्वेदोक्त जड़ी-बूटियोंसे बना जवाकुसुम बड़ी आसानीसे मैलको निकाल देता है और बालोंकी जड़को मजबूत बनाता है। इसके स्निग्ध स्पर्शसे मस्तिष्क शीतल हो जाता है।

७० वर्षकी सुप्रसिद्धिका समृद्ध

जवाकुसुम

केशोंकी शोभा बढ़ाता व मस्तिष्क शीतल रखता है

JM-2-H

सी० के० सेन एण्ड कं० लि०
जवाकुसुम हाउस — कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

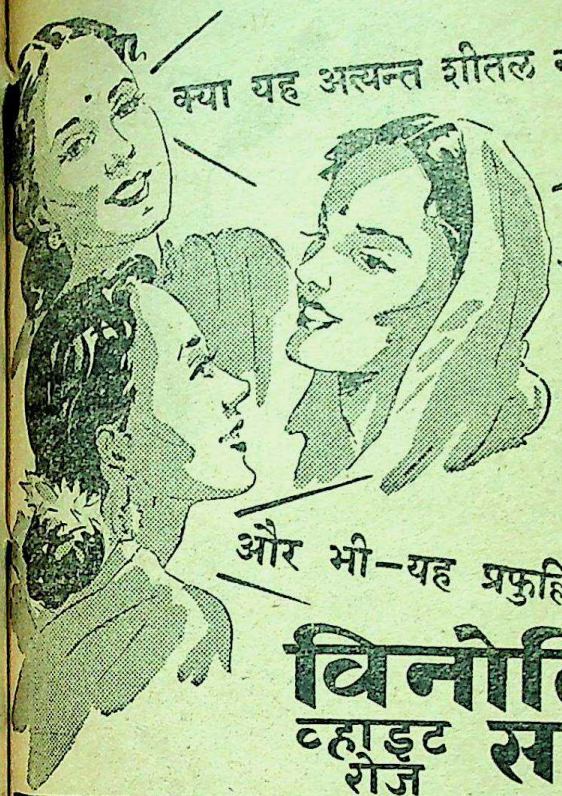

विनोलियाको नियमित रूपमें इस्तेमाल करनेवाले इन विलास-प्रेमी लोगोंसे पूछिये, और वे आपको बतायेंगे कि यह कैसा आश्चर्य्यजनक आरामदायक साबुन है—और गर्मीके मौसममें कितना आरामदायक है। इसका मक्खन-जैसा सफेद फेन तर व ताजा कर देता है। इसकी विशिष्ट सुगंध आनंदित और प्रफुल्लित रखती है। वे लोग कहते हैं कि श्रान्त मस्तिष्क और नसोंके लिए यह टॉनिककी तरह काम करता है।

विनोलिया व्हाइट रोज साबुन

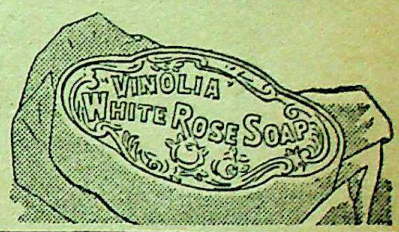

WB. 18-221 HI

VINOLIA CO., LIMITED, LONDON, ENGLAND

प्रदर रोग स्त्रियों का भयानक शत्रु है

प्रदर रोग जिसको लोग लिकोरिया भी कहते हैं यह स्त्रियों की सुन्दरता और जवानी को नष्ट करनेवाला भयानक शत्रु है। लज्जा-बेचारी रोग को छिपाये रहती हैं और दिन-रात घुला करती हैं। यह उनकी भूल है। भयानक रोग का इलाज कराने में लापरवाही करना चाहिये, इस बीमारी से स्त्रियों के गुप्त शरीर से लाल, काला, धुमैला, या श्वेत रंग का बदबूदार पानी या लेस-सा निकलता रहता है। महीना ठीक समय पर नहीं होता है जिसके कारण कमर, रीढ़, सिर में दर्द, शरीर में जलन, मन मलीन, उठने-बैठने में थकावट, भूख का कम लगना, बदन दुबला और कमज़ोर हो जाना, मूर्छा, बेहोशी आदि रोग हो जाते हैं और सन्तान नहीं होती है और यदि होती भी है तो दुबली और कमज़ोर होती है। ऐसी अवस्था में भारतविख्यात वैद्यरत्न सत्यदेव ने अपूर्व शक्ति प्रदान करनेवाली २५ वर्ष की आज़मूदा **नारी-संजीवन** नामक दवा का आविष्कार किया जिसके द्वारा आज तक सहस्रों स्त्रियों को इस भयानक रोग के पंजे से छुड़ाया है। इस नारी-संजीवन के सेवन से तमाम बीमारियाँ दूर होकर स्त्रियाँ सुन्दर और तन्दुरुस्त हो जाती हैं और सन्तानें सुन्दर, बलवान्, दीर्घायु पैदा होती हैं। यदि आवश्यकता हो तो आज ही पत्र डालकर एक डिब्बा नारी-संजीवन का मँगाकर इसके अपूर्व गुणों का चमत्कार देखें। क़ीमत एक डिब्बा ३=); डाकख़र्च माफ़; पैकिंग ख़र्च अलग।

मँगाने का पता—

रूपविलास कम्पनी नं० ४२७ धनकुट्टी, कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घरेलू सुख की योजना पहले से बनानी पड़ती है

धन्य है वह मनुष्य जो उन छोटे छोटे सुख-साधनों का आयोजन कर सकता है जिनके बिना घरेलू जीवन में सरसता नहीं आती! रेडियो, टेलीफोन, फर्नीचर, बच्चों के खिलौने आदि का होना अथवा इनका अभाव—यही अन्तर है उस मनुष्य में जिसके पास पैसा है और जिसके पास नहीं है। और लड़ाई के बाद ये वस्तुएँ बहुत सुलभ होंगी। किन्तु इस समय तो एक महीने की—यहाँ तक कि तीन महीने की आय से भी आप इनके लिए पैसे का प्रबन्ध नहीं कर सकते।

छोटी छोटी रक़में बचाने वाले ५ रुपये का सर्टीफिकेट अथवा ४ आने, ८ आने या १ रुपये के स्टाम्प सरकार द्वारा अधिकृत किसी एजेन्ट अथवा सेविंग्स ब्यूरो या डाकखाने से ख़रीद सकते हैं।

यही कारण है कि बहुत से लोग जो इस समय पैसा बचा सकते हैं हर महीने लगातार कुछ न कुछ बचत करते जाते हैं। इन लोगों को भविष्य में हाथ में पैसा न होने के कारण किश्तबन्दी पर चीज़ें ख़रीदने की कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ेगा। और इन लोगों ने देख लिया है कि अपनी बचत की रक़म लगाने की सब से अच्छी मद है:

नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेट

★ १२ वर्ष में १० रुपये के १५ रुपये हो जाते हैं।
★ ४½ प्रति शत साधारण व्याज, इनकम टैक्स माफ़।
★ जमा हुए व्याज के सहित तीन साल बाद इन्हें भुनाया जा सकता है (५ रुपये के सर्टीफिकेट को १८ महीने बाद)।

AAA 127—HINDI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने सौन्दर्य को कायम रखिये

कान्ति साबुन

स्वस्तिक ऑयल मिल्स, लिमिटेड, बम्बई, १५

NAS 19/5 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्माजी का चमत्कार

प्रेमबटी ने अपनी ख़ूबी से सारी दुनिया में तहलक़ा मचा दिया

कांग्रेस की राय

(प्रेमबटी वास्तव में एक अद्वितीय औषधि है, पहिले हमें इस औषधि पर इतना विश्वास न था, किन्तु जब हमने स्वयं परीक्षण किया तब हम इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि यह औषधि विज्ञापन में दिये गये तमाम रोगों की केवल एकमात्र औषधि है। हम आशा करते हैं कि भविष्य में यह कम्पनी इससे भी उत्तम औषधियों का निर्माण कर जनता को पहुँचायेगी।—कांग्रेस देहली)

भारत के योगियों ने वनों और पर्वतों की कन्दराओं में रहकर वह चमत्कार दिखलाये हैं जिससे बड़े-बड़े वैज्ञानिक चिकित्सक हैरत में आ गये हैं। आधुनिक चिकित्सकों को जब कोई रोग की औषधि से सफलता नहीं मिलती तब वह लाइलाज घोषित कर देते हैं। परन्तु महात्मा लोग जड़ी-बूटियों की सहायता से मुर्दे को भी जिला देने का दावा करते हैं। भाइयो! ध्यान से पढ़ो तथा अपने इष्ट मित्रों को सुनाओ। यह लेख जो लिखा गया है, कोई गप्प नहीं है बल्कि मेरे जीवन की घटनायें हैं जो आपके सम्मुख रखता हूँ। मेरा जन्म एक धनी परिवार में हुआ। अपने पिता का लाड़ला पुत्र होने के कारण मैं धन और व्यसन में घिरा रहता था, लेकिन फिर भी मैं सुखी नहीं था। कुसङ्गत में पड़कर मुझे जरियान और प्रमेह रोग हो गया। पहले तो एक दो साल मैंने लोकलाज के कारण अपना भेद छिपाये रखा परन्तु रोग ने भयानक सूरत अख़्तियार कर ली, मैं घबड़ा उठा, संसार में चारों ओर अँधेरा मालूम होने लगा तब मेरी आँखें खुलीं। इलाज शुरू किया गया, बड़े-बड़े डाक्टरों, हकीमों, वैद्यों के फ़ीस रूप में रुपये और क़ीमती दवाइयों के ख़रीदने में पानी की तरह रुपया बहाने लगा, फिर भी मैं निराश ही रहा। अब मैं घबरा उठा और चारों तरफ़ से अन्धकार दिखलाई देने लगा और सोचने लगा कि इस दुःखमय जीवन से मर जाना बेहतर।

पर यह बीस साल पहले की बात है। अब आज मैं ख़ुश हूँ। आज उस परमात्मा की कृपा से आरोग्य हूँ। मेरे तीन स्वस्थ बच्चे भी हैं जो बिलकुल आरोग्य हैं।

हुआ क्या! मुझमें इतना परिवर्तन कैसे हो गया? यह जानकर आपको आश्चर्य होगा कि मैंने एक दवा सेवन की जो दवा मैंने सेवन की, वह एक महान् त्यागी परोपकारी साधु की बनाई हुई थी, जो समय काटने के लिए गाँव से कुछ दूर ईंट के खेड़े पर रम रहे थे। यह मेरा सौभाग्य था कि और लोगों के साथ मैं भी दर्शनों के लिए जा पहुँचा। दैवी कृपा मेरे दुःखी जीवन के पिछले अध्याय उनके हृदय-पट पर खिंच गये और मेरी आँखों ने हृदय का सारा भेद अपने आप उस महापुरुष पर प्रकट कर दिया। मेरी कच्ची उम्र पर महात्मा को दया आई और उन्होंने मुझे कुछ जड़ी-बूटियाँ एकत्र करने को कह दी। मैंने वैसा ही किया और तब उनके सम्मुख ही मुझे उनके आदेश और निजी देख-रेख में 'प्रेमबटी' तैयार करनी पड़ी। यद्यपि मुझसे ४० दिन लगातार 'प्रेमबटी' का सेवन करने को कहा गया था, तथापि केवल बीस दिन के सेवन से ही मुझमें परिवर्तन हो गया। मेरी कमज़ोरी और तमाम गुप्त बीमारियाँ जड़ से दूर हो गईं। पीले और उदास मुख पर लाली दौड़ने लगी, मन में उन्माद झूमने लगा और हृदय में जवानी का जोश उमड़ आया। महात्माजी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के साथ ही वादे को पूरा करने के लिए दुःखी जनों के निमित्त पिछले बीस साल से लगातार मैं इस प्रयोग को मुफ़्त बाँट रहा हूँ। यह पत्र-पत्रिकाओं में भी छप चुका है, मुझे हर्ष है कि इस अमृत-तुल्य प्रयोग ने सैकड़ों की प्राण-रक्षा की, हज़ारों को मौत के मुँह से निकाला और लाखों का इससे भला हुआ। महात्मा-प्रदत्त 'प्रेमबटी' का नुस्ख़ा इस प्रकार है; नोट कर लें—

शुद्ध त्रिफला ५ तोला, त्रिकुट चूर्ण ५ तोला, शुद्ध सूर्यतापी शिलाजीत ५ तोला, शुद्ध बङ्ग भस्म ६ माशा, असली छार केसर ३ माशा, असली अकरकरा ६ माशा, असली नेपाली कस्तूरी ३ रत्ती। इन सब औषधियों को कूट-छानकर डालकर ऊपर से शीतल चीनी का तेल २० बूँद, सन्दल तेल २० बूँद, बिरोजे का तेल २० बूँद एक-एक करके मिलाये। बाद ताज़ी ब्राह्मी बूटी के अर्क़ में १२ घण्टा घोंटकर झरबेरी बेर के बराबर गोलियाँ बनावें और छाया में सुखा लें। एक-एक सुबह-शाम पाव भर गाय के दूध में एक तोला शक्कर मिलाकर सेवन करें। इसकी प्रशंसा हम अपने ही मुँह से नहीं करते बड़े-बड़े वैद्यों, डाक्टरों, हकीमों, सेठ साहूकारों तथा रईसों, ज़मींदारों, सरकारी आफ़िसरों तक ने इसकी सराहना की है। श्रीजमुनादत्त शर्मा, झोंकर का कहना है कि यह बटी धातु का पतलापन, २० प्रकार के प्रमेह के लिए अक्सीर है।

'प्रेमबटी' में कोई हानिकारक चीज़ नहीं पड़ती और गुणकारी चीज़ें नुस्ख़े से ही प्रकट हैं। यह औषध वीर्य का पतलापन, बीसों प्रकार के प्रमेह, पेशाब के साथ चूने की तरह वीर्य का जाना, पाख़ाने के समय धातु का जाना, स्वप्नदोष, सुस्ती, कमज़ोरी, डाइबीटीज़, मधुमेह, सूज़ाक, जवानी में बुढ़ापे की-सी हालत हो जाना, असली ताक़त की कमी, स्मरण-शक्ति कमज़ोर पड़ जाना, स्त्रियों के भी प्रदर-सम्बन्धी रोग दूर करके अत्यन्त ताक़त देती है और नस-नस में नवजीवन का सञ्चार करती है। अन्य भाइयों को जिन्हें फ़ुरसत नहीं मिलती या शुद्ध औषधि प्राप्त नहीं कर सकते यह प्रयोग स्वयं बनाकर दाम के दाम में मेरी व्यवस्था की है। ४० दिन के लिए पूरी ख़ुराक विधिवत् ८० गोलियों का मूल्य ५॥=) रु० और २० दिन के लिए ४० के दाम ३=) डाकख़र्च ॥।-)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पता—बाबू श्यामलालजी रईस, प्रेमबटी आफ़िस नं० (S. A.) धनकुट्टी, कानपुर।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

१—कांग्रेस किधर को—पण्डित आत्मस्वरूप शर्मा ... ११३
२—भक्ति और सिद्धि—पण्डित हजारीप्रसाद द्विवेदी ... ११७
३—चित्र की चोरी—श्रीयुत धर्मवीर, एम० ए० ... ११९
४—ससुराल का घड़ियाल—श्रीयुत महन्त धनराज पुरी १२४
५—गणेश—पण्डित काशीनाथ रा० तिलक ... १२६
६—वान-ली-चांग-चेंग—श्री उमेशचन्द्र मिश्र ... १३२
७—भारत में अङ्क-परिगणन सम्बन्धी अज्ञान—प्रोफ़ेसर प्रेमचन्द्र मलहोत्र १३६
८—अतीत के दो चिह्न—(१)—कोणार्क-पण्डित हनुमान् शर्मा १३७
(२) १२४३ का एक शिलालेख—श्रीयुत रावत चतुर्भुजदास चतुर्वेदी, क्यूरेटर भरतपुर स्टेट म्यूज़ियम १३९
९—निर्वासित—पण्डित इलाचन्द्र जोशी ... १४१
१०—गीत (कविता)—कुमारी शैल रस्तोगी ... १४५
११—रायबहादुर डाक्टर श्यामसुन्दरदास—पण्डित लक्ष्मीप्रसाद पाण्डेय १४६
१२—रूस में सहशिक्षा का विरोध—श्रीयुत सत्यप्रकाश मित्तल १५०
१३—'भोजपुरी' में एक ग्रामीण नायिका के उद्गार—श्रीयुत महेश्वरप्रसाद १५३
१४—गीत (कविता)—श्रीयुत रामेश्वर शुक्ल 'अञ्चल', एम० ए० ... ... १५५
१५—नई पुस्तकें १५६
१६—सामयिक साहित्य १५९
१७—सम्पादकीय नोट १६२

चित्र-सूची

१—कांग्रेस किधर को सम्बन्धी ५ चित्र ... ११३-११६
२—चित्र की चोरी-सम्बन्धी ५ चित्र .. ११०-११३
३—वान-ली-चांग-चेंग-सम्बन्धी ६ चित्र ... १३३-१३५
४—अतीत के दो चिह्न-सम्बन्धी ६ चित्र ... १३७-१४०
५—रायबहादुर डाक्टर श्यामसुन्दरदास-सम्बन्धी २ चित्र ... १४६-१४७
६—मेजर एटली ... १६३
७—राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ... १६४

खेती, बागवानी, उद्योगधंधे, व्यापार, स्वास्थ्य इत्यादि की जानकारी देनेवाला एकमात्र सुप्रसिद्ध मासिक पत्र

उद्यम

साबुन विशेषांक

सुन्दर मुखपृष्ठ ! सूचक व्यंगचित्र !!

सर्वत्र अत्यन्त लोकप्रिय हुआ है

इस विशेषांक में साबुन के लिए लगनेवाला **कच्चा माल, साबुन तैयार करने सम्बन्धी व्यवहारोपयोगी जानकारी**, माल की ख्याति तथा इतर सम्पूर्ण जानकारी दी गई है। वार्षिक मूल्य रु० ५-८-० (वी० पी० से रु० ५-१२-०) दिसम्बर अगस्त १९४५ ग्राहक बननेवालों को 'साबुन अंक' तो प्राप्त होगा ही, इसके सिवाय खेती, बाग़वानी, लाभप्रद उद्योगधंधे, व्यापार आदि विषयों की जानकारी प्रति माह १५ तारीख़ को नियमित प्राप्त होती रहेगी। 'उद्यम' की माँग की अधिकता के कारण कहीं आपको निराश न होना पड़े अतः शीघ्रातिशीघ्र लिखिए।

मैनेजर 'उद्यम मासिक', कार्पोरेट, लाहौर

आरोग्य वर्द्धक

५० साल से दुनिया भर में मशहूर

मदनमंजरी गोलियां

क़ब्ज़ियत दूर करके पाचन-शक्ति बढ़ाती हैं, दिल व दिमाग़ को ताक़त देती हैं और नया ख़ून व शुद्ध वीर्य पैदा करके बल बुद्धि व आयु बढ़ाती हैं। क़ी० ४० गोलियों की डि० रु० १।)

मदनमंजरी फ़ार्मेसी जामनगर (काठियावाड़)

इलाहाबाद एजंट—मदन स्टोर्स कैमिस्ट और एल० एम० धोलकिया ब्रदर्स जोन्स्टनगंज

पुष्करिणी

पं० भगवतीप्रसाद वाजपेयी

मूल्य २) दो रुपये

हिन्दी संसार में जिन कलाकारों ने सुन्दर कलात्मक कहानियाँ दी हैं उनमें वाजपेयीजी का भी स्थान है और इस तथ्य से कौन इनकार करेगा कि उनकी कितनी ही कहानियाँ काफ़ी ऊँचे धरातल की हैं।—विश्वमित्र—

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लि० प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है।

हमारे यहाँ की बनी क्रीमोला टाफ़ी
फ़्रूट ड्राप्स तथा
रेशमी मिठाइयों का स्वाद लीजिए।
सभी दूकानों में मिलती हैं।

निर्माता—इण्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस,
इंडियन प्रेस बिल्डिंग,
इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक—देवीदत्त शुक्ल : उमेशचन्द्र मिश्र

सितम्बर १९४५ भाद्रपद २००२; भाग ४६, खण्ड २ संख्या ३, पूर्ण संख्या ५४९

कांग्रेस किधर को ?

पण्डित आत्मस्वरूप शर्मा

स्वर्गीय लाला लाजपतराय ने एक बार कहा था कि राजनीति [illegible]दर का खेल है। इसमें नरदों का स्थान बदलते रहने से ही [illegible] चलता है। यह कहने की आव[illegible]श्यकता नहीं कि स्वर्गीय लालाजी [illegible] भिन्न विचारधारा के अनु[illegible]यायी थे। वे राजनीति में अध्यात्म-[illegible]द की आवश्यकता समझते [illegible] पर उस श्रेणी की नहीं जिसकी [illegible]धीजी मानते हैं। गांधीजी ने [illegible] कांग्रेस का समस्त रूप ही बदल [illegible]ला है। परिवर्तन पुकारकर [illegible] आता। वह अपने आप और [illegible]ना दिये बिना चला आता है। [illegible] कांग्रेस का वर्तमान स्वरूप [illegible]मने और मस्तिष्क-पट पर उसका [illegible]कार करने के लिए तनिक [illegible]ने की आवश्यकता प्रतीत होती [illegible]। वर्तमान लेख का अभिप्राय [illegible] का इतिहास दोहराना नहीं, [illegible] कि इन पाँच-सात वर्षों में कांग्रेस [illegible] और कई लोग सम्भवतः यह अनुभव ही नहीं कर पाये कि इस समय वह एक बिलकुल अनोखे और विचित्र मार्ग से जा रही है।

पञ्जाब-केसरी स्वर्गीय लाजपतराय

कांग्रेस के जीवन में सबसे बड़ा क्रान्तिकारी परिवर्तन सन् १९२० के बाद देखने में आया। इस वर्ष के अनन्तर कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में मेज़ों और कुर्सियों के दर्शन नहीं हुए। गांधी जी का कांग्रेस में प्रबल होना था कि वह सर्वसाधारण की संस्था बन गई। इससे पूर्व कांग्रेस का अधिवेशन एक मेला-सा होता था जिसमें बड़े-बड़े लोग योग देते और कई सौ रुपया केवल आनन्द मनाने पर व्यय कर डालते थे। उन दिनों कांग्रेस अधिवेशन होते भी थे बड़े नगरों में। ग्रामों और छोटे नगरों में अधिवेशन करने की प्रथा तो गांधीजी ने ही आरम्भ कराई है। कहते हैं, उक्त सन् से पूर्व एक प्रतिनिधि का औसत साधारण ख़र्च २००) [illegible]

अपितु मुख्यतः यह बताना कहाँ से कहाँ पहुँच गई है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो बाद के वर्षों में तुरत ही घटकर ७५) के लगभग रह गया। तीसरे दर्जे में यात्रा करना और खादी के कपड़े पहनना गांधीजी के अनुयायियों के लिए बड़े अभिमान की बात हो गई। गांधीजी से पूर्व की कांग्रेस में अँगरेज़ी भाषा का बल भी अधिक था। अब उतना नहीं है, यद्यपि यह खेद का विषय है कि अभी तक हिन्दी को पूर्ण रूप से अपनाया नहीं गया।

कांग्रेस का पग बराबर सादगी, सरलता और भारतीय सभ्यता को अपनाने की ओर बढ़ रहा है। पर क्या उसकी राजनीतिक विचार-धारा भी वही है जो आरम्भ में थी? मैं गांधी-पूर्व कांग्रेस की चर्चा नहीं कर रहा हूँ। गांधीजी के प्रचण्ड प्रभाववाली कांग्रेस ही की बात कह रहा हूँ। इन पिछले वर्षों में, ज़रा ध्यान से देखा जाय, तो कांग्रेस के विचारों में इतने भारी परिवर्तन आये हैं कि जिनकी उससे कभी आशा न हो सकती थी।

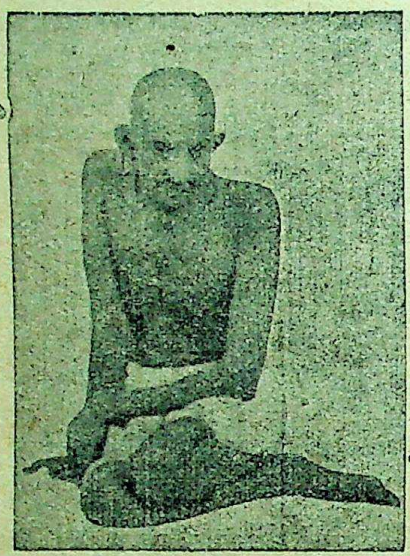

कांग्रेस के कर्णधार महात्मा गांधी

कांग्रेस का वर्तमान उद्देश्य केवल यही प्रतीत होता है कि येन-केन प्रकारेण देश को स्वाधीन करा लिया जाय। इस स्वाधीनता-प्राप्ति के अनन्तर, यदि वह प्राप्त हो सकी, क्या होगा? कांग्रेस इस विषय में अधिक चिन्तित प्रतीत नहीं होती और न वह अभी इस प्रश्न को अधिक महत्त्व ही दे रही है। मुसलमानों को सब विधियों से प्रसन्न और सन्तुष्ट करने की चेष्टा उसके स्वाधीनता-प्राप्ति के एकमात्र लक्ष्य ही का प्रत्यक्ष उदाहरण है। इस चेष्टा को अब वह इस सीमा तक लिये जा रही है कि जिसमें उसके मुख्य लक्ष्य के लिए भी बहुत भारी भय उपस्थित हो रहे दीख पड़ते हैं। लार्ड वेवल द्वारा बुलाई गई कान्फ़रेंस के परिणामों ने तो, कम से कम, यही सिद्ध किया है। कांग्रेस की शक्ति को तो आज गवर्नमेंट पूर्ण रूप से मान रही है। पर जिस प्रकार हाथी-जैसे भारी-भरकम जानवर को अशक्त करने के लिए एक तुच्छ चींटी पर्याप्त है उसी प्रकार कांग्रेस शक्तिशाली रहते हुए भी आज मुस्लिम लीग के हाथों बिलकुल असमर्थ हो रही है। उसकी गाड़ी का पहिया आगे चलने ही नहीं पाता।

मुस्लिम लीग और जिन्ना की शक्ति बढ़ाने में कांग्रेस का बहुत बड़ा हाथ है। इस बात को स्वीकार किये बिना अब छुटकारा नहीं। जिन्ना किस प्रकार राष्ट्रवादी से सम्प्रदाय-वादी और सम्प्रदायवादी भी घोर प्रकार के, बन गये— देखते-देखते की बात है। अब तो वे मुसलमानों के मात्र जीवनाधार नेता होने के दावेदार हैं। कांग्रेस और उसके कर्णधार—गांधीजी—बार-बार इस बात को लिखित रूप में स्वीकार करते रहे हैं कि जिन्ना—मुसलमानों की सबसे बड़ी संस्था—मुस्लिम लीग के सञ्चालक हैं। गवर्नमेंट और मुसलमान दोनों ने ही कांग्रेस के इस कथन से लाभ उठाया है। मुस्लिम लीग को देश की एकमात्र राजनैतिक मुस्लिम संस्था माना जा रहा है, हालाँकि वह किसी भी दृष्टि से अपने को ऐसा सिद्ध नहीं कर सकती। उसकी सदस्य-संख्या, हिन्दू महासभा की तुलना में कि जिसकी संस्था रूप में आज चारों ओर से उपेक्षा हो रही है, स्यात् दसवाँ भाग भी नहीं होगी, फिर भी जिन्ना और लीग की पूछ है और लार्ड वेवल उसको मानने पर अपनी योजना को स्थगित करने के सिवा और चारा नहीं देखते।

गांधीजी ने अपने मार्ग से बाहर जाकर जिन्ना से भेंट की, इस विषय में उनकी सरलता और नम्रता सराहनीय है।

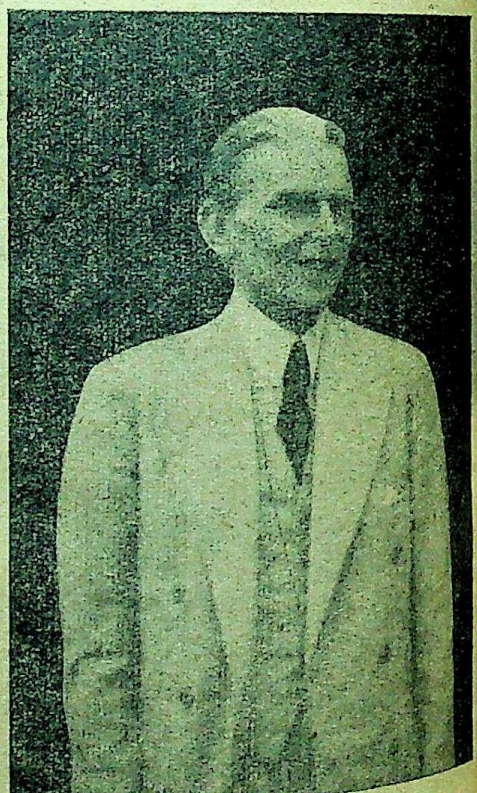

मुस्लिम लीग के डिक्टेटर श्री मुहम्मदअली जिन्ना

वैयक्तिक रूप में गांधीजी इस प्रकार अपने आपको लोक-दृष्टि में बहुत ऊँचा ले गये हैं—इसमें सन्देह नहीं, पर राजनैतिक दृष्टि से उनकी इस क्रिया ने कितनी असीम हानि पहुँचाई है—इसका सहज ही ध्यान हो सकता है। जिन्ना अब अपने आपको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[भाग २]

व्यक्ति समझने लगे हैं कि उन्हें किसी भी अन्य नेता से मिलना स्वीकार नहीं। उनकी आकांक्षा यही है और वे इस आकांक्षा को प्रत्यक्ष पूर्ण होता देख भी रहे हैं कि सब उन्हीं के द्वार में उपस्थित होकर उनसे भेंट करते हैं। गांधीजी और अन्य नेता विनम्र होकर अपना कल्याण तो निश्चय कर पाये हैं, जिन्ना साहब की अकड़ अब इतनी बढ़ गई है कि गत कुछ वर्षों में एक भी ऐसा अवसर बताया नहीं जा सकता जब किसी नेता से उन्होंने स्वयं जाकर मुलाक़ात की हो। जिसे आवश्यकता हो वह कुएँ के पास चलकर आये, जिन्ना-रूपी कुआँ किसी के पास चलकर नहीं जाता।

गांधी-जिन्ना-भेंट यदि दो व्यक्तियों के मध्य होती तो और बात थी। पर यह भेंट हुई दो बहुत बड़ी संस्थाओं के प्रतिनिधियों के मध्य जिनमें से एक संस्था—भारत की सब जातियों की प्रतिनिधि होने की दावेदार है, और दूसरी केवल मुसलमानों का दम भरती है। राष्ट्रीय और साम्प्रदायिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों में यह एक विचित्र मेल था। साधारण अवस्था में कांग्रेस अथवा गांधीजी किसी साम्प्रदायिक संस्था से बातचीत करने को तैयार न होते। पर मुसलमानों को इस प्रकार प्रसन्न करने की कांग्रेस-नीति से बँधे हुए गांधीजी ने एक अनोखी बात कर डाली जिसे एक प्रकार से कांग्रेस की राष्ट्रीय नीति का उल्लङ्घन तक कहा जा सकता है। होना तो यह चाहिए था कि कांग्रेस—किसी भी ऐसी बातचीत के लिए मुस्लिम लीग को हिन्दू महासभा की ओर आकर्षित करने के लिए कहती। पर बेचारी हिन्दू महासभा को तो किसी ने पूछा ही नहीं।

हिन्दू महासभा के नेता डाक्टर श्यामाप्रसाद मुकर्जी

इस सारी हेरा-फेरी का परिणाम यह हुआ कि जिन्ना साहब को यह कहने का अवसर मिल गया कि कांग्रेस एक हिन्दू संस्था है। गवर्नमेंट पहले ही यह सिद्ध किया चाहती है। मुस्लिम लीग बार-बार ललकारती है कि कांग्रेस हिन्दू है। कांग्रेस इसे मानती नहीं और इसका बलपूर्वक प्रतिवाद भी करती है। पर इन वर्षों में उसकी अनेक क्रियायें मौन रूप से संसार पर यही प्रकट कर रही हैं कि वह ऐसे ही कार्य और कर्तव्य अपना रही है जो वास्तव में हिन्दू महासभा के करने के हैं। कांग्रेस का इस सम्बन्ध में ग़लत पग जो वस्तुतः किसी भी मूल्य पर स्वतन्त्रता प्राप्त करने और साम्प्रदायिक उलझन को शीघ्र सुलझाने की आकांक्षा से प्रेरित होकर उठाया गया है, देश और स्वयं कांग्रेस के लिए कितना हानिकर प्रमाणित हुआ है, इसका सहज ही हिसाब हो सकता है। यह स्थिति न होती तो लार्ड वेवल को इतना साहस न होता कि वे कांग्रेस को 'सवर्ण हिन्दुओं' के प्रतिनिधि के रूप में शिमला कान्फ़रेंस में आमन्त्रित करते और हिन्दू महासभा की कहीं गिनती ही न रहती। कई क्षेत्रों में कहा गया है कि शिमला कान्फ़रेंस के लिए निमन्त्रण केन्द्रीय असेम्बली में सदस्यों के बन रहे भिन्न-भिन्न दलों के आधार पर जारी किये गये हैं। यह विचार सत्य नहीं। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण सिक्ख और दलित जातियों के प्रतिनिधियों का आमन्त्रित होना है। सिक्खों और दलितों के केन्द्रीय असेम्बली में कोई पृथक् दल नहीं। गवर्नमेंट और मुस्लिम लीग का सारा बल कांग्रेस को 'हिन्दू-संस्था' सिद्ध करने के पीछे था। इसलिए हिन्दू महासभा को बुरी तरह से नीचा दिखाकर कांग्रेस को शिमला कान्फ़रेंस में मुस्लिम लीग के सामने खड़ा कर दिया गया।

केवल जिन्ना और लीग को ही नहीं, बल्कि पाकिस्तान-योजना को जीवन देने में भी कांग्रेस का हाथ है। साधारण रूप में प्रस्तुत की गई इस योजना को सजीव प्रश्न बनाने में कांग्रेस नेताओं ने ही अग्रभाग लिया है। मेरी यह धारणा है कि पाकिस्तान योजना की पूर्ण रूप से उपेक्षा सम्भव थी यदि कांग्रेस-नेता इसके मत का निरन्तर विरोध करते अथवा इसकी ओर ध्यान ही न देते। कई बातों का प्रारम्भ गम्भीरता में नहीं होता, परन्तु इन्हें अनावश्यक महत्त्व देकर, हठधर्मियों के सहारे प्रबल बना लिया जाता है। पाकिस्तान कोई नवीन योजना नहीं है। इसे इससे पूर्व भी कई मुस्लिम नेताओं ने एक या दूसरे रूप में उठाया है। जाने अथवा अनजाने तौर पर इस योजना को बल देनेवालों की मुख्य भूल यही है कि उन्होंने इसे विचाराधीन रखना आवश्यक समझा है। पाकिस्तान योजना में 'मुद्दई सुस्त और गवाह चुस्त' वाला प्रश्न है। मुस्लिम लीग और जिन्ना आज तक पाकिस्तान की रूप-रेखा बताने में असमर्थ हैं, परन्तु दूसरे लोग हैं जो अपनी कल्पना से पाकिस्तान का एक अथवा दूसरा स्वरूप बनाने में संलग्न हैं। श्री राजगोपालाचार्य ने इस सम्बन्ध में इतना अग्रभाग लिया है कि कोई लीगी भी क्या लेगा। उन्होंने सबसे पहले यह युक्ति उठाई कि मुसलमानों को आत्मनिर्णय का अधिकार है और फिर पाकिस्तान योजना के मूल सिद्धान्त के आधार पर एक फ़ारमूला बनाकर उसके लिए गांधीजी का आशीर्वाद प्राप्त कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिया। देसाई-लियाक़त-योजना भी वास्तव में पाकिस्तान योजना की ही एक भिन्न प्रकार से स्वीकृति है। इन, और ऐसी सब छोटी-बड़ी योजनाओं में कांग्रेस-नेताओं का हाथ है। मुसलमानों को किसी भी मूल्य पर मनाने के लिए अब यह बात खुले रूप से स्वीकार कर ली गई है कि भारत में हिन्दुओं और मुसलमानों के संख्या-सम्बन्धी समानाधिकार हैं, हालांकि 'हिन्दू' देश की कुल जन संख्या में तीन-चौथाई हैं। मुस्लिम अल्प-संख्या को इस विधि से बहु-संख्या बना डालना एक घोर राजनैतिक अन्याय है जो किसी अन्य देश में कभी सम्भव नहीं। परन्तु कांग्रेस-नेताओं की कृपा से यहाँ यह सम्भव हो गया। लार्ड वेवल की योजना जिसे कांग्रेस ने स्वीकार किया है, शुद्ध रूप से साम्प्रदायिक योजना है और इसे सच्चे शब्दों में पहले साम्प्रदायिक निर्णय अर्थात् कम्यूनल एवार्ड का भी बाप कहा गया है। कांग्रेस के शिमला-कान्फ़रेंस में वेवल योजना को स्वीकार कर लेने में केवल यही विचित्रता नहीं कि उसने सवर्ण हिन्दुओं के नाम पर बुलाये जाने पर भी इसमें योग दिया और वेवल साहब के उपहार को ग्रहण किया, बल्कि यह भी है कि अपने अगस्त सन् १९४२ वाले प्रस्ताव का ध्यान नहीं रक्खा। कहाँ तो कांग्रेस इस प्रस्ताव में अँगरेज़ों को देश छोड़ जाने के लिए कहती थी और कहाँ अब उसने यह भी मान लिया कि वह वायसराय की अन्तरङ्ग में योग देकर गवर्नमेंट को चलायेगी। राजनीति में प्रत्येक क्रिया की गहराई तक पहुँचना सुगम नहीं और न प्रत्येक अवस्था में ऐसा यत्न ही होना चाहिए। पर जहाँ बहुत-सी असङ्गत और बेजोड़ बातें ऊपर ही ऊपर दिखाई दे रही हों, वहाँ इन बातों को समझने की अभिलाषा का उत्पन्न हो जाना अस्वाभाविक प्रतीत नहीं होता।

कांग्रेस यदि मुसलमानों को हिन्दुओं के तुल्य अधिकार देने तक ही रह जाती तो भी कुछ बिगड़ा न था, पर यहाँ सबसे बड़ा भय हिन्दुओं के जातीय रूप में क्षीण हो जाने का उपस्थित हो रहा है। कांग्रेस सब जातियों की साझी संस्था बनती है और चूँकि उसमें किन्हीं कारणों से हिन्दुओं की संख्या अत्यधिक है, इसलिए उसका उद्योग यही प्रतीत होता है कि वह अपने आपको केवल हिन्दुओं की संस्था सिद्ध होने न दे। इसी उद्योग के क्रम में प्रान्तीय कांग्रेस-शासनों में मुसलमानों को विशेष रूप से सन्तुष्ट रखने अथवा अन्य जातियों को अप्रसन्न करके भी इन्हें प्रसन्न करने की चेष्टा की गई। इसका ज्वलन्त उदाहरण उस पुस्तिका से मिल सकता है जो संयुक्त प्रान्तीय कांग्रेस सरकार ने यह दर्शाने के लिए छपवाई और बँटवाई थी कि उसने मुसलमानों के लिए अपने शासनकाल में क्या-क्या किया है। गवर्नमेंट को हिन्दुओं से हित नहीं और प्रान्तीय स्वतन्त्रता आने के अनन्तर उसकी नीति यही है कि वह 'हिन्दू' शब्द को यथा-सम्भव सरकारी काग़ज़ों में आने न दे। इसी आधार पर अब हिन्दू-अहिन्दू नहीं बल्कि मुस्लिम-अमुस्लिम शब्द का प्रयोग होता है और सरकारी काग़ज़ों में 'हिन्दू' शब्द कहीं [illegible] जाता। कांग्रेस का सारा बल हिन्दुओं पर व्यय होता है [illegible] वस्तुतः यही कांग्रेस के साथ हैं। वह धारा-सभाओं [illegible] हिन्दू जगहों को बड़ी सुगमता से अपने अधिकार में कर [illegible] परन्तु अन्य जातियों की जगहों को लेने में अधिक सफलता [illegible] नहीं कर सकती। कांग्रेस हिन्दुओं की देश-भक्ति और [illegible] प्रियता से लाभ उठाये तो आपत्ति नहीं, पर वह हिन्दू [illegible] क्षीण क्यों कर रही है? वह गवर्नमेंट की साम्प्रदायिक [illegible] का खुला विरोध क्यों नहीं करती और मुस्लिम लीग की [illegible] एवं साम्प्रदायिक [illegible] में अनजाने [illegible] सहायक क्यों [illegible] है? कांग्रेस [illegible] हिन्दुओं में हि[illegible] का अभिमान [illegible] पर है और इसके [illegible] अधिक दुःख की [illegible] यह है कि [illegible] तीय होने का [illegible] अब बिल्कुल [illegible] रूप धारण का [illegible] दीखता है। [illegible] स्तान की योजना [illegible] विचार की [illegible] प्रतिक्रिया यहाँ [illegible] देश के अङ्ग-[illegible] अब नेताओं को [illegible] दोष प्रतीत नहीं होता [illegible] कहाँ यह विचार [illegible] किसी भारतीय [illegible] हृदय कम्पा[illegible] करने के लिए [illegible]

कांग्रेस के अध्यक्ष मौलाना अबुलकलाम आज़ाद

था और कहाँ देश यदि आज टुकड़ों में बट भी जाय तो [illegible] चिन्ता की बात प्रतीत नहीं होती। 'वन्दे मातरम्' [illegible] गाकर भारतमाता को मन-मन्दिर में साक्षात्कार करनेवाले [illegible] आज इसे सहन कर सकते हैं। अभी-अभी लाहौर में एक [illegible] प्रतिनिधि से भेंट में पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने [illegible] "मुझे संयुक्त भारत के विचार के प्रति कोई भावुक [illegible] नहीं।" देश-भक्ति में भावुकता का स्थान प्रथम है। [illegible] अब नौबत यहाँ तक पहुँच चुकी है कि भारत माता के [illegible] हो जाने का भय भी उठ गया है। कांग्रेसवादियों की [illegible] विचारधारा स्वतन्त्रता-प्राप्ति के लिए है। पर किस प्रकार [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वतन्त्रता के लिए ? क्या ऐसी स्वतन्त्रता के लिए जिसमें समझौता का स्थान नहीं होगा और जिसमें 'हिन्दू' शब्द भी कहीं मिल नहीं सकेगा ? कांग्रेस जान-बूझकर इस दशा में नहीं न पहुँची हो, पर अब वह निश्चय उस स्थान पर पहुँच गई है कि जहाँ उसे तनिक रुक कर विचार करना ही पड़ेगा कि किस नये ढङ्ग से क्या वह मूल प्रश्न का सुलझाव कर रही है या उल्टा अधिक उलझाव। साम्प्रदायिकता के विष का पोषण प्रत्येक रूप में हानिकारक है—चाहे यह पोषण स्थायी हो अथवा अस्थायी। कांग्रेस, हिन्दू-मुस्लिम समस्या का, मुसलमानों के साथ समझौता करके ही हल करना चाहती हो तो करे, परन्तु ऐसा समझौता दूसरी जातियों के साथ अन्याय से नहीं हो सकेगा। अन्यायमूलक साम्प्रदायिक समझौता उत्तरों की एक ऐसी माला होगी जो देश के गले से कभी उतर न सकेगी।

भक्ति और सिद्धि

पण्डित हजारीप्रसाद द्विवेदी

साधारणतः यह विश्वास किया जाता है कि सिद्ध मार्ग में भक्ति का कोई स्थान नहीं है। सिद्ध मार्ग वस्तुतः ही ज्ञानाश्रयी मार्ग है, परन्तु भक्ति श्रद्धा और विश्वास के बिना कोई भी साधना नहीं चल सकती। हाल ही में गोरक्षनाथ के गुरु मत्स्येन्द्रनाथ की लिखी हुई एक पोथी प्रकाशित हुई है। इसका नाम कौलज्ञाननिर्णय है। डा० प्रबोधचन्द्र बागची ने इसका सम्पादन किया है। इस पुस्तक से मालूम होता है कि सत्य युग में शिव ने जिस ज्ञान का प्रचार किया था उसका नाम महाकौल था। द्वितीय युग (त्रेता) में उसी का नाम योगिनीकौल पड़ा और द्वापर में उसी का नाम सिद्धामृत पड़ा। कलिकाल में इसी सिद्धामृत मार्ग से मत्स्येन्द्रनाथ ने योगिनीकौल ज्ञान का प्रवर्तन किया (१४-४७)। दन्तकथाओं से सिद्ध होता है कि गुरु गोरखनाथ ने इस नये योगिनीकौल मार्ग की साधना से गुरु का उद्धार किया था और पुराने सिद्धामृत मार्ग में ही प्रविष्ट किया था। अपने कौलज्ञान को सुनाने के लिए जब भैरवरूपी मत्स्येन्द्रनाथ ने शिष्यों का आवाहन किया था तो सबसे पहली शर्त उन्होंने यह लगाई थी कि इस कौलिकज्ञान को भक्तियुक्त चित्त से सब लोग सुनें—'भक्तियुक्ताः समत्वेन शृण्वन्तु कौलिकम्' (१४-४६)। जिसके चित्त में भक्ति नहीं है वह कौलज्ञान को सुनने का अधिकारी नहीं हो सकता। गुरु के प्रति भक्ति होने से ही ज्ञान का उदय सम्भव है। भक्तों और सिद्धों के दृष्टिकोण में यही भेद है। भक्त लोग ज्ञानोदय में भक्ति का कारण मानते हैं जब कि सिद्ध लोग भक्ति को ज्ञानोदय का।

सिद्ध वह है जिसने सब सिद्धियाँ प्राप्त कर ली हैं। पातञ्जल योगसूत्र के कैवल्य पाद में पाँच प्रकार की सिद्धियाँ बताई गई हैं—(१) कुछ लोग पूर्वजन्म के पुण्य प्रभाव से विशेष प्रकार की सिद्धियाँ लेकर ही पैदा होते हैं; (२) रसायन आदि औषधों के सेवन पर भी बहुत-सी सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं; (३) मन्त्रों की साधना से आकाश में विचरने जैसी सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं, (४) तप से भी लोग अनेक प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त कर लेते हैं और (५) समाधि से कैवल्य प्राप्त होता है। योगी लोग अन्तिम सिद्धि को ही वास्तविक सिद्धि मानते हैं। ये जन्म, औषध, तप, मन्त्र और समाधि से प्राप्त सभी सिद्धियाँ भक्तों के लिए विशेष मूल्य नहीं रखतीं। भागवत में कहा गया है कि अग्नि जिस प्रकार भुक्त पदार्थ को जला डालती है उसी प्रकार भगवान् में जो अहैतुकी भक्ति है वह उस कोश अर्थात् लिंग-शरीर को जला डालती है जो जन्मान्तर में कर्मफलों को वहन करता रहता है और इस प्रकार भक्ति जन्मान्तर का मूल आधार ही नष्ट कर डालती है, वह सिद्धि से बड़ी है—

> अनिमित्ता भागवती भक्तिः सिद्धेर्गरीयसी।
> जरयत्याशु या कोशं निगीर्णमनलो यथा॥
> (३, २५, ३३)

यह विचारने की बात है कि वह भक्ति क्या वस्तु है जो सिद्धि से भी बड़ी है। यह भूलना नहीं चाहिए कि कैवल्य भी एक सिद्धि ही है। कैवल्य ज्ञानमार्ग का सबसे ऊँचा लक्ष्य है। शांडिल्य सूत्र में भक्ति की परिभाषा के लिए यह सूत्र आया है—'सा परानुरक्तिरीश्वरे'। इस सूत्र की दो प्रकार की व्याख्यायें सुझाई गई हैं। एक व्याख्या यह है कि भगवान् में जो परम अनुरक्ति है वही भक्ति है। दूसरी व्याख्या में बताया गया है कि भक्ति दो प्रकार की होती है—परा और अपरा। इन्हीं दोनों के अन्य नाम हैं मुख्या और गौणी। भगवान् के प्रति जो अहैतुक अनुराग है वही मुख्य या परा भक्ति है; परन्तु पूजा-पाठ, जप, तप, नाम-स्मरण, रूप-कीर्तन आदि क्रियाओं से भगवान् को पाने का प्रयत्न गौणी या अपरा भक्ति है। वस्तुतः इसे भक्ति कहना ही नहीं चाहिए, क्योंकि यह परम अनुरक्ति का साधन मात्र है। इस मत में आपत्ति यह है कि भगवान् का नाम-स्मरण या गुण-कीर्तन वस्तुतः तभी सम्भव होता है जब कि भक्त के चित्त में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके प्रति अनुराग हो। जिसके प्रति अनुराग नहीं होता उसका नाम-स्मरण या गुण-कीर्तन कोई करता ही नहीं। असल में गौणी भक्ति वह है जिसमें भक्त भगवान् को पाने के लिए नहीं बल्कि और कुछ को पाने के लिए भगवान् का गुणगान करता है। भागवत से ही सिद्ध है कि जिस व्यक्ति का चित्त संसार में न बहुत आसक्त है और न बहुत विरक्त है उसके लिए भक्तियोग सिद्धिदाता हो सकता है (११-२०-८)। यह सिद्धि देनेवाला भक्तियोग ही असल में गौणी भक्ति है। नाम-जप और रूप-गुण का कीर्तन तो स्वाभाविकी भक्ति के फल भी हो सकते हैं। भगवान् से प्रह्लाद ने यह वर माँगा कि अविवेकी मनुष्यों की विषयों के प्रति जो अनपायिनी प्रीति हुआ करती है वही प्रीति तुम्हें स्मरण करते हुए मेरे चित्त में भी उदय हुई है, वह मुझसे दूर न होने पावे—

या प्रीतिरविवेकानां विषयेष्वनपायिनी।
त्वामनुस्मरतः सा मे हृदयान्मापसर्पतु॥

अविवेकियों की प्रीति! तुलसीदासजी ने इसी भाँति की प्रीति भगवान् से माँगी थी—

कामिहिं नारि पियारि जिमि लोभिहिं प्रिय जिमि दाम।
तिमि रघुनाथ निरन्तर प्रिय लागहु मोहिं राम।

यही अहैतुकी प्रीति है। अविवेकियों की प्रीति में कोई तर्क या ज्ञान का हाथ नहीं होता। ठीक उसी प्रकार की अहैतुकी प्रीति प्रह्लाद ने माँगी थी। उत्तर में भगवान् ने जो कुछ कहा वह और भी ध्यान में रखने की बात है। उन्होंने यह नहीं कहा कि तुम जो माँगते हो वह तुम्हें दिया। उन्होंने कहा कि मेरे प्रति भक्ति तो तुम्हारे चित्त में है ही, और भी अधिक होगी—'भक्तिर्मयि तवास्त्येव भूयोऽप्येवं भविष्यति!' भक्त लोग कहते हैं कि यहाँ स्पष्ट रूप से भगवान् ने प्रह्लाद की याचित प्रीति को ही भक्ति कहा है। समर्थ दाता से कोई आम माँगे तो वह कटहल नहीं देता। भगवान् ने जो दिया वह निश्चय वही वस्तु है जो प्रह्लाद ने माँगी थी। अविवेकियों में जो विषयोन्मुखी प्रीति देखी जाती है वही प्रीति जब भगवान् में हो जाय तो उसे भक्ति कहते हैं। तुलसीदास ने वैसी ही भक्ति माँगी थी। दादू दयाल ने उसी प्रकार की भक्ति को बहु मान दिया था। नशाखोर के मन में जिस प्रकार नशा के लिए व्याकुलता होती है, वीर जिस प्रकार संग्राम के लिए छटपटाया करता है, निर्धन जिस प्रकार धन के लिए कातर बना रहता है, दादू के मन में राम के लिए उसी प्रकार की व्याकुलता थी—

ज्यूँ अमली के चित अमल, है सूर कै संग्राम।
निरधन कै चित धन बसै, यूँ दादू मन राम॥

यह अहैतुकी प्रीति ही भक्तों का परम काम्य है, स्वर्ग भी नहीं, ब्रह्मलोक भी नहीं, चक्रवर्तित्व भी नहीं, योगसिद्धियाँ भी नहीं—अपुनर्भव भी नहीं—केवल भगवान् के प्रति अहैतुकी प्रीति, अविरहित संयोग—

न नाकपृष्ठं न च पारमेष्ठ्यं
न सार्वभौमं न रसाधिपत्यम्।
न योगसिद्धीरपुनर्भवं वा
समञ्जस त्वा विरहय्य कांक्षे॥
(भा० ६-११-२५)

सिद्धों का विश्वास और तरह का है। वे लोग कहते हैं मनुष्य के चित्त में जब तक द्वैतभाव बना रहता है, और उपासक के भेद को भूलने की योग्यता नहीं आती तब तक उसे भगवान् के सगुण रूप का ध्यान आदि करते रहना चाहिए। यही भक्ति की भूमिका है। इसी पर आरोहण करते-करते उसके चित्त में क्रमशः वैराग्य का उदय होता है। पातञ्जल योग में जिसे संप्रज्ञात समाधि कहते हैं उसका सोपान भक्ति है। इसके लिए तीन विषयों का आलम्बन करना विहित है—(१) ग्रहीता, (२) ग्रहण और (३) ग्राह्य (पा० यो० सू० १-४१)। ग्रहीता का अर्थ है अस्मिता अर्थात् बुद्धि और आत्मा का अभिन्न भाव जिसमें आत्मा अपने को बुद्धि से अलग नहीं समझता। ग्रहण दो प्रकार के होते हैं—स्थूल और सूक्ष्म। तीरन्दाज जिस प्रकार स्थूल निशाने से क्रमशः सूक्ष्म निशाने को बेधने का अभ्यास करता है उसी प्रकार साधक भी पहले स्थूलग्राह्य अर्थात् पञ्चभूतों को, फिर सूक्ष्मग्राह्य अर्थात् पञ्चतन्मात्रों को, फिर ग्राह्य अर्थात् इन्द्रियों को और सबके अन्त में ग्रहीता अर्थात् अस्मिता को आलम्बन करके एकाग्रता की साधना करता है। भगवान् की स्थूल मूर्ति से उनके सूक्ष्म रूप और अरूप सत्ता को भी क्रमशः इसी प्रकार के अभ्यास से अनुभव किया जाता है। यही विधि की भक्ति है। यह केवल साधन है, इसका साध्य है चित्तवृत्ति का विरोध और फिर कैवल्य। भागवत में जब कपिल भगवान् ने कहा था कि भक्ति से पुरुष के चित्त में इन्द्रियार्थों से विरक्ति उत्पन्न होता है, फिर वह मेरी बात सोचने का अभ्यस्त हो जाता है तब उसे चित्त को वश में करने की योग्यता आती है। आगे चलकर वह योगमार्ग से समाधि के द्वारा मुझे प्राप्त करने का प्रयत्न करता है—

भक्त्या पुमान् जातविराग ऐन्द्रियाद्
दृष्टश्रुतान्मद्रचनमनुचिन्तया।
चित्तस्य यत्तो ग्रहणे योगयुक्तो
यतिष्यते ऋजुभिर्योगमार्गैः॥

तो इसी भक्ति को ध्यान में रखकर उपदेश दिया था। यह भक्ति अभ्यास और वैराग्य का साधन है, इसी लिए भक्त लोग इसे अपरा भक्ति अर्थात् गौणी भक्ति कहते हैं। परा भक्ति तो स्वयं लक्ष्य है। वह किसी का साधन नहीं है। समस्त ज्ञान-विज्ञान और उपासना उसी महालक्ष्य के साधन हैं। सिद्ध लोग इस परम सिद्धिरूपा भक्ति को नहीं मानते। उनके मत से केवल गौणी भक्ति ही भक्ति है। इस गौणी भक्ति से वैराग्य का उदय होता है और वैराग्य चञ्चल चित्त के निरोध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। उसी से कैवल्य की प्राप्ति होती है। भागवत ने योगियों के उपास्य श्री शिवजी से ही कहलवाया गया है कि जो योगी लोग श्रद्धायुक्त होकर भक्ति के द्वारा आपके सगुण रूप का भजन करते हैं वे ही वेद के भी पण्डित हैं और तन्त्र के भी पण्डित हैं—

क्रियाकलापैरिदमेव योगिनः
श्रद्धान्विताः साधु यजन्ति सिद्धये ।
भूतेन्द्रियान्तःकरणोपलक्षितं
वेदे च तन्त्रे च त एव कोविदाः ॥
(भा० ४-२४-३२)

भक्तों और सिद्धों में यही प्रधान अन्तर है। एक अहैतुक भक्ति को ही परम पुरुषार्थ मानता है, दूसरा ज्ञानोदयजन्य कैवल्य को। एक के मत से जो साध्य है वह दूसरे के मत से साधन है। भक्त लोग प्रेमाश्रयी हैं, सिद्ध लोग ज्ञानाश्रयी। निर्गुण मत के सन्तों को ज्ञानाश्रयी कहा जाने लगा है। यह बात विचारणीय है कि ऐसा कहना कहाँ तक युक्ति-सङ्गत है। निस्सन्देह निर्गुण मत के भक्तों पर नाथ पन्थ के सिद्धों का प्रभाव है। कबीर, दादू आदि निर्गुणिया भक्तों की वाणियों में योग और ज्ञान की बातें बहुत आती हैं इस से साधारणतः यह मान लिया जाता है कि योग और ज्ञान ही इन लोगों का मुख्य प्रतिपाद्य है। भक्ति का सब से प्रामाणिक और विशाल ग्रन्थ भागवत है। उसमें योग और ज्ञान की बातें कम नहीं आई हैं। परन्तु किसी ग्रन्थ में योग और ज्ञान की बातों के आ जाने मात्र से यह नहीं कहा जा सकता कि उसका मुख्य लक्ष्य योग या ज्ञान है। इसी प्रकार सन्तों की वाणियों में योग और ज्ञान की बातें बहुत आई हैं फिर भी उन्हें योगाश्रयी या ज्ञानाश्रयी तब तक नहीं कहा जा सकता जब तक यह सिद्ध नहीं हो जाता कि वे वस्तुतः योग और ज्ञान को ही मुख्य प्रतिपाद्य मानते हैं। कबीरदास आदि निर्गुण मत के सन्त निश्चित रूप से भगवान् के परम प्रेम को ही अपना सर्वोत्तम लक्ष्य मानते थे। उसके सामने मुक्ति कौन-सी बला है।

राता माता प्रेम का पीया प्रेम अघाय।
मतवाला दीदार का माँगै मुक्ति बलाय ॥

——

चित्र की चोरी

श्रीयुत धर्मवीर, एम० ए०

"रोदैं (Rodin) के 'विचारक' (Thinker) को किसी ने भ्रष्ट करने का यत्न किया है", जब यह समाचार दोपहर को निकलनेवाले पैरिस के दैनिक समाचारपत्र 'पारी-मिदी' (Paris Midi) में छपा तो सारे शहर में सनसनी फैल गई। पैरिस के प्रसिद्ध भाग बुलवार्द की दूकानों के अतिरिक्त क़हवा-घरों और विश्रान्तिगृहों (रेस्ताराओं) में चर्चा होने लगी। ख़याल आया कि सबसे पहले रोदैं के संग्रहालय या अजायब-घर में जाकर उसकी बनाई मूर्त्ति 'विचारक' को देखना चाहिए। लेकिन शाम को तो वह बन्द रहता है। रेस्तराँ में ही एक-दो व्यक्तियों से पता लिया; लेकिन कोई भी ठीक-ठीक पता न बता सका। रात को डिनर के समय फ्रांस-गली के अन्दर स्थित होटल में रहनेवाले अपने मित्र पैलशिये से पूछा—"रोदैं का अजायबघर कहाँ है?"

"मैंने तो उसे देखा नहीं," उस नवयुवक ने कुछ शर्म महसूस करते हुए कहा—"लेकिन ऊपर चलकर आपको डायरेक्टरी देखकर बता सकता हूँ। मेरे कमरे में डायरेक्टरी पड़ी हुई है।"

रात को जब हम सैर से वापस आये तो काफ़ी देर हो चुकी थी। इसलिए डायरेक्टरी देखने की बात सवेरे तक स्थगित हो गई।

जुलाई में पैरिस में भी गरमी ही होती है। फिर भी लोग कमरों के अन्दर ही सोते हैं। ज़्यादा से ज़्यादा हलकी-सी चादर ओढ़ने की ज़रूरत पड़ती है। मैं आदत के मुताबिक़ सात बजे से पहले ही उठ बैठा। हाथ-मुँह धोया। इतने में ब्रेकफ़ास्ट (जलपान) आ गया। फ्रांस के लोग अँगरेज़ों की अपेक्षा ब्रेकफ़ास्ट बहुत ही हलका करते हैं। दो छोटे-छोटे रोल, मक्खन और एक-डेढ़ प्याला चाय या कोको। बस।

कुछ देर हजामत में लग गई। कपड़े आदि पहनते नौ बज गये। ख़याल आया, 'अब तो पैलशिये ज़रूर जाग गया होगा। परन्तु यहाँ तो किसी के कमरे में जाने का रिवाज नहीं है। आख़िर उसको दफ़्तर भी तो जाना है।'

इस प्रकार के विचार मेरे मस्तिष्क में चक्कर लगाने लगे। मैंने उसके कमरे को खटखटाया। यदि वह जग रहा होता तो पहली ही आवाज़ पर दरवाज़ा खोल देता। दो-तीन बार खटखटाने पर, फ्रांसीसी में जवाब आया—"आइए।"

वह बिस्तर पर पड़ा था। आँखों से देखने के लिए चश्मा ढूँढ़ने लगा। मैंने क्षमा माँगी—"क्षमा कीजिए। मैं ख़याल करता था कि आपको दस बजे दफ़्तर जाना होता है।"

"दस बजे ही तो जाता हूँ," उसने विचित्र ढङ्ग से मुँह बनाते हुए कहा—"तब?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पता है, नौ बज चुके हैं ?"

"तब ! लेकिन मुझे तो दस बजे जाना है !"

"बहुत ख़ूब !"

"क्यों ? अच्छा, आप रोदैं का पता मालूम करना चाहते हैं।"

उसने हाथ बढ़ाकर मेज़ पर से डायरेक्टरी उठाई और दो-तीन मिनट में अजायबघर का पता मालूम कर लिया। फिर एक काग़ज़ पर लिखकर मेरे लिए लिफ़ाफ़े में डाल दिया—

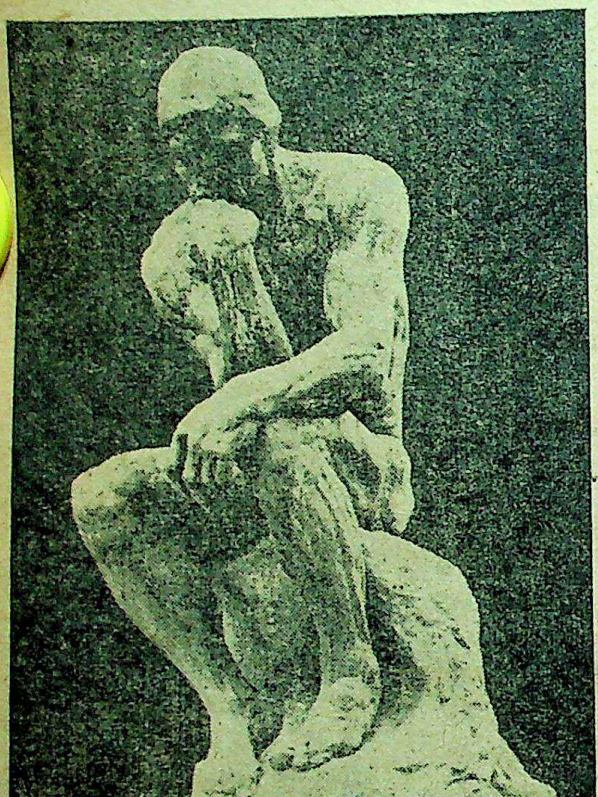

रोदैं का विश्व-प्रसिद्ध 'विचारक'

"इसे आप किसी भी टैक्सीवाले को दिखा दीजिए। वह आप को सीधे रोदैं-संग्रहालय के दरवाज़े पर जा उतारेगा।"

मैंने धन्यवाद दिया तो उसने बिस्तर छोड़ने के बजाय मुँह पर चादर ओढ़ ली—"अभी आध घंटा बाक़ी है। दरवाज़ा धीरे से बन्द कीजिए।"

बहुत ख़ूब !—मैंने दिल में कहा—साढ़े नौ, पौने दस बजे उठकर यह हाथ-मुँह धोयेगा, कपड़े पहनेगा, ब्रेकफ़ास्ट करेगा या दस बजे दफ़्तर पहुँचेगा ?

अपने कमरे में जाने के बजाय मैं सीढ़ियों से नीचे उतर गया। सीढ़ियों में अँधेरा होने के कारण मैंने ड्योढ़ी के बाहर जाकर लिफ़ाफ़े से काग़ज़ निकाला। मालूम हुआ कि रोदैं संग्रहालय चैंबर ऑव् डेपुटीज़ की बड़ी इमारत से परे है। अपनी गली से बाहर निकलकर मैं बाज़ार में खड़ा हो गया। [illegible] की टैक्सी की प्रतीक्षा करने लगा। परन्तु टैक्सी से [illegible] है। यह आदमी को अपनी आँखें और दिमाग़ इस्तेमाल [illegible] का अवसर नहीं देती। टैक्सी मुझे रोदैं-संग्रहालय [illegible] पहुँचा देगी, लेकिन मुझे यह कैसे पता चलेगा कि मैं [illegible] से होकर गुज़रा हूँ ? पहले एक बार जब टैक्सी से मैं [illegible] सबसे बड़ी चित्रशाला, लूव्र (Louvre), पहुँचा तो [illegible] हुआ। ख़याल था कि लूव्र बहुत दूर है। टैक्सीवाले [illegible] ख़ूब घुमाया और अपने पैसे खरे किये। लेकिन जब [illegible] पैदल वापस आया तो मालूम हुआ कि होटल तक कुछ [illegible] मिनट का रास्ता है।

सामने ही ज़मीन के अन्दर चलनेवाली गाड़ी का स्टेशन [illegible] वहाँ पहुँचा। ज़मीन के अन्दर जानेवाली सीढ़ियों [illegible] पैरिस का नक़्शा टँगा था। उसमें चैंबर ऑव् डेपुटीज़ [illegible] मालूम हुआ कि यह तो कांकार (Place de la Concorde) के सामने नदी की परली तरफ़ है। पैदल ही तेरह [illegible] वहाँ जा पहुँचा। वहाँ से दो-तीन मिनट के अन्दर [illegible] को संग्रहालय (Rodin Musee) के सामने पाया।

इसकी ड्योढ़ी के परे अच्छा ख़ासा बग़ीचा है। [illegible] फूल उगे हुए हैं। धूप कुछ कड़ी मालूम दी। [illegible] झटपट सामने के भवन की तरफ़ ध्यान गया। परन्तु [illegible] एक बड़ी मूर्त्ति थी। पास गया। "अच्छा, यही 'विचारक' है !" खड़ा कर लिया इसने। आगस्ते रोदैं (Auguste Rodin) और विचारक (Le Penseur), इन शब्दों को [illegible] ध्यान ही न गया। 'विचारक' तो सोच ही रहा था, देखनेवाले भी उसके साथ ही विचार में डूब गया। चेहरे का हर एक [illegible] दोनों हाथ, आँखें, मुँह—ये सब देखनेवाले के मन पर [illegible] अपना प्रभाव कर रहे थे।

मन में सवाल उठा—क्या इस मूर्त्ति को भ्रष्ट करने [illegible] ख़याल भी किसी के अन्दर उत्पन्न हो सकता है ? सचमुच [illegible] कैसा शैतान होगा जिसने इसको बिगाड़ने का निश्चय [illegible] होगा ! परन्तु इसकी रक्षा करनेवाले भी तो कहीं खड़े नहीं [illegible]

मैं ग़लती पर था। सामने भक्त के साथ दो पहरेदार [illegible] थे। सम्भवतः इसी मूर्त्ति की रक्षा करना उनकी ड्यूटी थी [illegible]

जब पसीना आने लगा और सूर्यदेव ने आज्ञा दी कि 'आगे बढ़ो !' तब भवन के अन्दर पहुँचा। एक [illegible] जाकर बैठ गया।

कुछ दर्शक इधर से उधर, एक कमरे से दूसरे कमरे में, [illegible] थे। मैं भी उठकर दूसरे कमरे में गया। वहाँ मेरी दृष्टि [illegible] पहले 'विचार' पर पड़ी। जहाँ पर 'विचारक' में पुरुष विचार [illegible] रहा है वहाँ पर 'विचार' में एक सुन्दरी दिखाई गई है। [illegible] सुन्दर आँखों, गालों, भौंहों, नाक और होठों से समझ [illegible] टपक रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं इस मूर्ति का अध्ययन समाप्त न कर पाया था कि घण्टी बज गई। यह क्या? यह दोपहर के लंच (भोजन) की घण्टी है। सभी दर्शक अब संग्रहालय से बाहर चले जायँगे। जहाँ पर मूर्त्तियाँ देखने और उनका अध्ययन बल्कि पूजा

'विचार'—रोदैं की कलापूर्ण अन्य कृति

करनेवाले दिखाई देते थे वहाँ पर अब कितने ही पहरेदार नज़र आने लगे। ये न मालूम कहाँ से निकल आये! जो दर्शक रह गये थे उनसे भी इन रक्षकों ने बाहर चले जाने की प्रार्थना की।

मैंने सोचा कि लंच के बाद आज ही यहाँ दोबारा आऊँगा। फिर ख़याल आया कि दोपहर को तो लूव्र जाना है। कमरे के बाहर ड्योढ़ी में आकर कुछ फोटो मोल लिये और वापस होटल को चला आया।

× × ×

कारू बारा (Le Carrousel) में मैं पहले भी कई बार आया था। फ्रांस की राष्ट्रीय चित्रशाला लूव्र इसी में स्थित है। लंच ख़तम करते ही मैं इधर चला आया। सबसे पहले 'सेमोथ्रेस की विजय' (Victaire de Samothrace) के कमरे में पहुँचा। यह कमरा बहुत बड़ा नहीं है। परन्तु इस मूर्ति को अकेला कमरा मिलना ही इसकी ख़ास शान प्रकट करता है। कमरे की दीवार के साथ-साथ बैठने के लिए नरम गद्दीवाली लम्बी सीट बनी हुई है। सीट के ऊपर नीला ख़ोल चढ़ा हुआ है। देवता के मन्दिर में जाकर मनुष्य शान्त हो जाता है। महाराजा के समक्ष जाकर वह चुप हो जाता है। यही हाल इस कमरे में प्रविष्ट होने पर होता है। इस मूर्त्ति का सिर टूटा हुआ है, पैर भी टूटे हुए हैं। कुछ एक अन्य भाग भी किसी पापी ने तोड़ दिये हैं। फिर भी इसका शरीर, इसके कपड़े, इसके पङ्ख पूर्ण मालूम देते हैं। कला के इस सर्वोत्तम नमूने को बिलकुल अलग स्थान देकर इसका विशेष मान किया गया है।

लूव्र में रक्खी मूर्त्ति 'सेमोथ्रेस की विजय'

दिल तो इजाज़त न देता था, फिर भी यहाँ से उठकर उस चित्र के दरबार में पहुँचा जिसकी प्रशंसा संसार भर के चित्रकार करते चले आये हैं। 'मोना लीसा' (Mona Lisa) को इटली के प्रसिद्ध कलाकार ल्योनार्दो (Leonardo da Vinci) ने बनाया था। इस चित्र में अन्य बातों के अतिरिक्त नारी का रहस्य पाया जाता है। परन्तु चित्र के बड़प्पन के रहस्य का विश्लेषण अभी तक कोई नहीं कर सका। इटली के नगर फ़्लारेंस में फ्रांसिस्को नाम का एक सरदार रहता था। मोना लीसा उसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीसरी स्त्री थी। ल्योनार्दो-द-विंची ने जब इस ललना को देखा तो इसका चित्र बनाने की ठानी। कहते हैं, जब चित्रकार मोना लीसा को मॉडल के रूप में अपने सामने बिठलाया करता तो कई एक गाने-बजानेवालों को रुपया देकर वहाँ निमन्त्रित करता कि तुम गाओ-बजाओ ताकि मेरे मॉडल के मुख पर स्वाभाविक मुसकान बनी रहे। कहते हैं ऐसी मुसकुराहट कोई दूसरा चित्रकार अभी तक अपने चित्र में क़ैद नहीं कर सका।

ल्योनार्दो की जगत्प्रसिद्ध 'मोना लीसा'

न किसी कलाकार ने ऐसा अच्छा हाथ बनाया है जैसा कि चित्र में मोना लीसा का दायाँ हाथ है। यह हाथ कला के जगत् में पूर्ण समझा जाता है।

इस चित्र की जान कई बार जोखिम में पड़ी है। इँग्लैंड के राजा पहले चार्ल्स ने अपनी स्त्री हैनरीटा मेरिया को जब एक बार फ्रांस भेजा तो उसे छोड़ने के लिए इँग्लैंड से बकिंघम का ड्यूक गया। जब इस ड्यूक ने पैरिस की चित्रशाला में यह चित्र देखा तो मोना लीसा पर वह मस्त हो गया। यहाँ तक कि इसके साथ वह प्यार करने लगा। यह भी कहा जाता है कि उसने यह चित्र अपने साथ ले जाने की सोची, परन्तु रुपया ख़र्च करने की तैयारी रहने पर भी इसमें वह सफल न हो सका।

यह बात पुरानी है। नई घटना इससे ज़्यादा दिलचस्प है। इटली के प्रसिद्ध कवि गेबरील द अनंज़िओ (Gabriel d' Annunzio) ने जब मोना लीसा देखी तो उसे भी यह समझ न आई कि मोना लीसा की मुसकान का रहस्य क्या है। उसने कई दिन तक इसका अध्ययन किया, परन्तु निश्चय किया कि एकान्त में लगातार इसका अध्ययन करना चाहिए।

कहा जाता है कि गेबरील ने कुछ फ्रांसीसी कला-प्रेमियों को अपने साथ मिला लिया। उन्होंने अपने आपको फोटोग्राफर प्रकट किया। चित्र के फोटो लेने के बहाने वे चित्र के फ्रेम को ही फ्रेम में से निकालकर लूव्र से बाहर ले गये। यों तो बाहर कोई चित्र ले जाने की इजाज़त किसी को नहीं है। इन चोरों ने चालाकी खेली। मोना लीसा-जैसा दूसरा चित्र बनाकर नक़ली को असली की जगह लटका दिया। इसका पता कई दिन बाद लगा। इससे फ्रांस के सरकारी हलक़ों में खलबली मच गई और जनसाधारण में सनसनी फैल गई कि करोड़ों की चीज़ को चोर उड़ा ले गये हैं। लाखों रुपया ख़र्च करके फ्रांस की ख़ुफ़िया पुलिस को विभिन्न देशों में कला की चोरी के सम्बन्ध में खोज पर लगाया गया। लगातार दो बरस तक ये लोग इस काम करते रहे। परन्तु कुछ भी पता न चला।

आख़िर फ्रांस को यह चित्र मिल ही गया। किस प्रकार मिला?—यह भी मनोरञ्जक कहानी है। कहते हैं इटली के कवि गेबरील इसे लेंडीज़ के जङ्गल में ले गया। वहाँ चीड़ के वृक्ष बहुत ज़्यादा हैं। इनकी महक से मनुष्य का दिल तरोताज़ा रहता है। गेबरील ने वहाँ एक झोंपड़ी तैयार करवाई। इस बात का विशेष ध्यान रक्खा कि आस-पास कोई दूसरा आदमी न रहता हो। वहाँ मोना लीसा का चित्र ले जाकर वह घण्टों उसकी सङ्गति में बैठा रहता। वह जानना चाहता था कि इस चित्र की मुसकान ने हज़ारों मनुष्यों को क्यों अपनी ओर खींचा है। पता नहीं, उसे यह मालूम हो सका या नहीं, परन्तु उसने बाद में यह चित्र फ्रांस के हवाले कर दिया। यह घटना १९११ की है।

नई बात यह है कि जर्मनों ने इसे आग के हवाले कर दिया होता यदि फ्रांस के कलाभक्त इसकी रक्षा के लिए समय पर न पहुँच जाते। योरप के इस महायुद्ध के शुरू होने से बहुत पहले १९३६ में ही, फ्रांस की चित्रशालाओं के विभिन्न चित्र देश के भिन्न-भिन्न प्रदेशों में छिपा देने का प्रबन्ध किया गया। क्योंकि फ्रांसीसियों को डर था कि जर्मन हमारी कलाओं के उत्तम नमूने भी उठा ले जायँगे। अधिकतर चित्र लायर की तलहटी के एक मकानों में बड़ी हिफ़ाज़त से पहुँचा दिये गये। इनकी देख-भाल के लिए एक गुप्त विभाग विशेष रूप से बनाया गया। लोग पैरिस से चलकर साधारण मज़दूरों के रूप में हर पाँचवें सातवें दिन लायर की तराई में पहुँचते और इन चित्रों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अच्छी तरह साफ़ करके वापस लौट आते। मुश्किल वक्त बनी जब जर्मन फ़ौजी सिपाहियों ने भी लायर की तराई आकर डेरे डाल दिये। फिर उन्हीं मकानों के निकट फ्रांस की कला के ख़ज़ाने थे। उनको किसी तरह इनके वहाँ होने का पता न चला, इसलिए उनके हाथों से बचे रहे। परन्तु जब १९४४ में उन्हें वापस भागना पड़ा

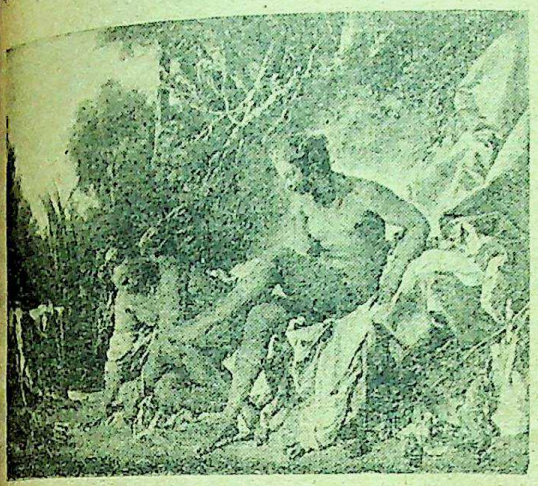

बूशे का प्रसिद्ध चित्र—'देवी डायना स्नान के बाद'

तब उन्होंने निश्चय किया कि लायर की तराई में सभी मकानों में आग लगाते जायँ। इन्हीं में से एक के अन्दर मोना लीसा मौजूद था। जब जर्मनों का यह निश्चय वहाँ के फ्रांसीसियों को मालूम हुआ तो उन्होंने एक रात इन चित्रों को संदूकों में बन्द करके फ्रांस के दूसरे हिस्से में भेज दिया। वहाँ से ही उन्हें पैरिस में वापस लाये जा रहे हैं ताकि एक बार फिर दर्शक इनको देखकर आनन्द प्राप्त करें।

लूव्र की चित्रशाला में अठारहवीं सदी के फ्रांसीसी चित्रकार बूशे (Boucher) के कई चित्र भी दीवारों से लटक रहे हैं। यह चित्रकार पैरिस में उत्पन्न हुआ और वहीं पाला-पोसा गया। इसी कारण पैरिस की विशेष संस्कृति और सौन्दर्य की झलक इसके चित्रों से अधिक कहीं नहीं मिलती। उस समय के शाही जुलाहों के लिए यह कपड़ों पर बेल-बूटे बनाया करता था। इसके सजावट के तरीक़े निराले थे। परन्तु सबसे बढ़कर बात यह थी कि राजा पन्द्रहवें लूई ने इसे दरबारी चित्रकार नियुक्त किया। इसने राजा की एक स्त्री के कई चित्र बनाये। राजा के अमीर उस समय वर्साई में रहते थे। वर्साई के धनी लोग को इसने उसी ढङ्ग पर चित्रों में दिखाया जिस ढङ्ग पर लोग अपने आपको देखना चाहते थे। एक जगह तो उनको देवी-देवताओं के रूप में पेश किया, दूसरी जगह चरवाहों के रूप में। उस युग में वहाँ स्त्रियों का राज्य था। इसी कारण बूशे को स्त्रियों का चित्रकार कहा जाता है। जब वह उनको नङ्गा चित्रित करना चाहता तब उन्हें देवी-देवता बना देता। जब वे साधारण कपड़े पहनना चाहते तब वह उन्हें चरवाहे बना देता। घर पर भोजन करती हुई, बच्चों के साथ खेलती हुई, बालों में रिबन बाँधती हुई धनी स्त्रियों के चित्र बूशे की ख़ास चीज़ें हैं। स्वयं उसकी स्त्री बहुत सुन्दर थी। वह अधिकतर चित्रकार का मॉडल बनती। घण्टों अपने पति के सामने ख़ास स्थिति में बैठी रहती और वह उसका चित्र बनाता रहता।

योरप के पुराणों में शिकार और प्रकाश की देवी को डायना कहा गया है। इसका एक चित्र बूशे ने बनाया है। इसमें देवी डायना स्नान करने के बाद कपड़े पहन रही है। शिकार का वातावरण दिखाने के लिए चित्रकार ने एक कोने में शिकार किये गये पंछी दिखाये हैं और दूसरे में शिकारी कुत्ते। यह दृश्य पानी के किनारे का है। इसलिए कुत्ते अपनी प्यास बुझा रहे हैं। कहते हैं, इस चित्र को जब जर्मनी के प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ रिबनट्राप ने देखा तो वह इस पर मुग्ध हो गया। फ्रांस के एक हिस्से पर जब जर्मनी ने क़ब्ज़ा कर लिया तब वहाँ विशी गवर्नमेंट क़ायम कर दी गई। पेतां उसका चीफ़ था, दारलां एक मन्त्री। रिबनट्राप ने दारलां से कहा कि बूशे का यह चित्र लूव्र से मँगवाकर विशी में रक्खा जाय। हिटलर के बड़े प्रतिनिधि की आज्ञा हो और उसका पालन न किया जाय—यह कैसे हो सकता था? लूव्र से ले जाकर यह चित्र जर्मनी के विदेश-मन्त्री के दफ़्तर में पहुँचा दिया गया। जब यह चित्र लूव्र से हटाया गया तब चित्रशाला के प्रबन्धकों को इसका कुछ पता न चला कि यह कहाँ जा रहा है। उनका ख़याल था कि शेष चित्रों की तरह इसे भी लायर की तराई या किसी ऐसे ही दूसरे स्थान में रक्षा के लिए भेजा जा रहा है। परन्तु जब उनको यह मालूम हुआ कि यह तो विशी में जर्मन विदेश-मन्त्री के दफ़्तर में जा पहुँचा है तब वे बहुत सटपटाये। आख़िर आपस में मशविरा करके उन्होंने यह निश्चय किया कि हम लोग अपने-अपने पद से इस्तीफ़े देते हैं और इस बात की ख़बर फ्रांस के लोगों तक पहुँचाते हैं। "इस प्रकार तो समस्त देश में सनसनी फैल जायगी," यह सोचकर रिबनट्राप ने अपना निश्चय बदल लिया। कहते हैं, इस अवसर पर पेतां ने कठोर रुख़ स्वीकार किया। वह किसी अवस्था में भी इस चित्र को फ्रांस से बाहर ले जाने की इजाज़त न देना चाहता था। इसलिए उसने रिबनट्राप से कह ही तो दिया—"यदि ऐसा करोगे तो विशी गवर्नमेंट टूट जायगी। कम से कम मैं इस गवर्नमेंट के साथ मिलकर काम नहीं करूँगा।"

यह धमकी काम कर गई; चित्र वापस लूव्र पहुँच दिया गया।

अब बूशे के चित्रों के अतिरिक्त इस चित्रशाला की बर्ची खुची तसवीरों को भी वहाँ से हटाने का प्रबन्ध किया गया। १९३६ में 'सेमोथ्रेस की विजय' नाम की मूर्त्ति के साथ-साथ दूसरी मूर्त्तियों को भी पैरिस से बाहर ले जाने के लिए ख़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लारियाँ तैयार की गईं। सितम्बर १९३९ में इनके पहियों के अन्दर गोलियाँ डाली गईं और बाहर रबड़ के बहुत मोटे-मोटे टायर चढ़ाये गये जिससे वे मूर्त्तियों के वज़न को बर्दाश्त कर सकें। इसके अतिरिक्त 'विजय' की मूर्त्ति के इर्द-गिर्द मख़मली गद्दियाँ रक्खी गईं ताकि उसे हिचकोले लगने पर किसी प्रकार की चोट न पहुँचे। हज़ारों मन वज़न की इन मूर्त्तियों का मौन जुलूस जब पैरिस से निकला तो उसकी अपनी ही शान थी।

मूर्तियों के अतिरिक्त चित्रों को भी ले जाया गया। चित्र-शाला की दीवारों से उतारने के बाद इन चित्रों को वाटरप्रूफ़ काग़ज़ों में लपेटा गया जिससे पानी कोई असर न कर सके। इनके ऊपर ऐसा काग़ज़ चढ़ाया गया जिससे आग नहीं लग सकती। जिस समय जर्मनों ने उत्तरी फ़्रांस पर अधिकार कर रक्खा था उस समय कला के ये कोष लात-नाम के प्रदेश में रक्खे थे। बहुत देर तक ये वहीं रहे।

लेकिन फ़्रांस के विभिन्न अजायबघरों से सभी चीज़ें तो बाहर न हटाई जा सकती थीं। पैरिस में राष्ट्रीय चित्रशालाओं के डायरेक्टर श्री जाँदा (M. Jandard) को उसके सहायकों को इस बात का ख़याल रखने पर लगा दिया गया कि बाक़ी चीज़ों में से किसी को कोई विदेशी न ले जाय। गवर्नमेंट को मालूम हो गया था कि रिबनट्राप और दोनों, कला की वस्तुओं के पीछे पड़े हुए हैं। गोरिंग हीरे-जवाहरातवाले गहने पसन्द थे। लेकिन रिबनट्राप उड़ाना चाहता था। जाँदा आदि देशभक्तों ने सहायता से रिबनट्राप को बूशे के चित्र उड़ाने की दी। अब रिबनट्राप हैमबर्ग से पकड़कर न्यूयार्क पहुँच गया है तो फ़्रांस के लोग स्वाभाविकतया बहुत प्रसन्न गिरफ़्तारी के समय रिबनट्राप बिस्तर पर सोया पड़ा था। पास चर्चिल, ईडन और मांटगुमरी, इन तीनों के नाम एक पत्र था। इसके अतिरिक्त ज़हर की एक डिबिया भी ज़हर इसलिए कि जब कभी ज़रूरत पड़े, उसे खाकर आत्म-कर सके। कहते हैं, इन चिट्ठियों में से वह जो चर्चिल नाम है, हिटलर की लिखी हुई है। हिटलर ने उसे पहले लिखवाया था।

ससुराल का घड़ियाल

श्रीयुत महन्त धनराज पुरी

(१)

मेरी नन्हीं-सी बिटिया शान्ता ने मेरे हाथों में बन्दूक़ देते-देते कहा—"माँ ने कहा है—घलियाल मालिएगा।"

मैंने उसकी ओर देखते हुए पूछा—"घड़ियाल क्या होगा, बेटी!"

"माँ कहती है—छूतकेछ बनेगा।"

"अच्छा, सूटकेस के लिए घड़ियाल चाहिए!" कहकर मैंने आवश्यक सामान की ओर ध्यान देने की चेष्टा की। मुझे ट्रेन पकड़ने की जल्दी थी। समय भी थोड़ा ही बच गया था और मेरे हाथी से तीन मील का रास्ता तय करके स्टेशन पहुँचना था। किन्तु, तोतली बोली की मिठास ने मुझे ललचाया। मैंने शान्ता की ओर देखकर पूछा—"मैं घड़ियाल मार सकूँगा बेटी?"

"क्यों नहीं माल छकिएगा?"

"घड़ियाल बड़ा बदमाश होता है। खड़े आदमी को निगल जाता है।"

पहले तो मेरी बात सुनकर वह ज़रा चकराई, किन्तु पीछे सँभल कर कहने लगी—"आप हिलन मालते हैं। छेल मालते हैं। छेल बला बदमाछ होता है दादाजी! बैल को माल सकता है। अच्छा दादाजी, छेल बदमाछ होता है कि घलियाल?"

"नहीं, मैं घड़ियाल नहीं मारूँगा।"

"नहीं, दादाजी! जलूल मालिएगा। माँ ने कहा है छूतकेछ बनेगा।"

बच्ची की अन्तिम बातों से मेरे अधरों पर हँसी की सूक्ष्म रेखा-सी प्रस्फुटित हो गई। नन्हीं-सी नादान बिटिया भी जानती है कि मेरी बातों से ज़्यादा असर दादाजी पर माँ की बातों का होगा।

जल्दी से सामान दुरुस्त कराया और हाथी पर बैठकर स्टेशन की ओर लपका। भादों का महीना था। आसमान में काले बादल झूम रहे थे। मैं इस मस्ती के आलम में ससुराल जा रहा था। ससुराल करने नहीं, शिकार खेलने सूटकेस के लिए घड़ियाल मार लाने की आज्ञा तो ऐसे मौक़े पर चलते-चलाते, हठात् मिलनेवाली आज्ञा थी। 'पूर्वनिश्चित योजना' का समावेश न था। वास्तव में मैं साले के बुलाने पर मैं ससुराल जा रहा था। मेरे साले ने लिखा था—"पता नहीं, कहाँ से घड़ियालों की इतनी जमात इधर पड़ी है। जहाँ देखिए, बालू की रेती में छोटे-बड़े घड़ियाल नज़र आते हैं। अगर आप दो दिनों के लिए भी यहाँ आ जाएँ तो घड़ियालों के चमड़े से एक नाव का बोझा हो जाय। और ज़रूर आइए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[भाग ३]

मेरी सालियों ने लिखा था—"हमने सुना है कि आप शिकार के लिए यहाँ आ रहे हैं। आते वक्त कृपया गालों पर चमड़े मढ़ाकर आइएगा। अगर एक भी फ़ायर झूठा हुआ तो आपके गालों की ख़ैर नहीं। नोट कर लीजिए। याद रखिए। गाँठ बाँध लीजिए!"

चिट्ठी पढ़ते ही कान खड़े हो गये थे! अरे बाप रे! बहनियों का तो तूमार-सा बाँध दिया गया है। ख़ुदा ही ख़ैर करे।

अभी मैं सौ-पचास गज़ ही जा पाया था कि एक किसान दौड़ता हुआ आकर हाथी की बग़ल में खड़ा हो गया। भारत के शत-प्रतिशत किसानों की सूरत जैसी उसकी भी सूरत थी। ग़रीबी और बेबसी की साक्षात् मूर्त्ति! कमर में मैले कपड़ों के चीथड़े थे और फटी मिरजई से अर्द्धाङ्ग के कुछ अंश ढँके थे। शकुन तो अच्छा नहीं हुआ। मैंने ज़रा झुँझलाहट से हाथी रोकने की आज्ञा दी और जिज्ञासा-भरी आँखों से उसकी ओर देखा।

"आप कहीं किसान-सभा के जलसे में जा रहे हैं?" मुझे सहसा पानी पड़ा। किसान-सभा का सङ्गठन करने के लिए लगातार दौरा करते रहने के कारण वर्षों से बन्दूक़ छूना मना-सा था। बहुत दिनों पर आज बन्दूक़ भी उठाई तो यह पड़ा।

सँभलकर बोला—"हाँ! बगहा के पास किसान-सभा की एक मीटिंग रक्खी गई है। वहीं जा रहा हूँ।"

वह एक साँस में कहता गया—"शेख़ नूरुद्दीन साहब कहते हैं जल्द जाओ, नहीं तो भेंट नहीं होगी। किसान-सभा के कामों से उनको एक दिन भी बैठने की छुट्टी नहीं है। अगर हमारे आने में ज़रा भी देर होती तो आपसे सचमुच भेंट नहीं होती।"

मैंने ज़रा उतावलेपन से कहा—"लेकिन आप अपनी ज़रूरत कहते ही नहीं। देर होने से हमारी ट्रेन छूट जायगी।"

बेचारे ने अपने ऊपर होनेवाले अत्याचारों की करुण कहानी सुनाई। आश्वासन दे, मीटिंग की तिथि निश्चित कर, विदा किया। आकस्मिक देर होने के कारण ट्रेन छूटने की आशङ्का बढ़ गई थी। अपशकुन हो जाने की वजह से झुँझलाहट भी बढ़ी और उस सीधे-सादे ग़रीब बेचारे से झूठ बोलने के कारण, भीतर ही भीतर कुछ विचित्र प्रकार की टीस होने लगी।

मैं स्टेशन तो जा रहा था, किन्तु जी प्रसन्न न था।

(२)

बगहा स्टेशन पर उतरा। धूप तेज़ थी। भादों-क्वार की ढलती हुई धूप की गर्मी का क्या पूछना। ट्रेन में ही पसीने से लथपथ हो उठा था। अपने पर झुँझलाहट भी कुछ कम थी। जाड़े में फ़ुरसत न मिली; भादों में शिकार की सूझी है! सहसा एक लम्बे, काले और मुस्टण्डे व्यक्ति ने झुककर सलाम किया। नज़र पड़ते ही मैं मुस्कुरा उठा। वह शत-प्रतिशत नदी के शिकार का हमारा चिर-परिचित साथी नथुनी था। गण्डकी के कोने-कोने की टोह रखनेवाला और नाव खेने में पूरा उस्ताद। जाने कितनी बार उसके हस्तकौशल पर मुग्ध हो चुका हूँ।

घड़ियालों या चिड़ियों के पास तक सट जाने की छटपटाहट में, जब गण्डकी की कोई सूखी-सी छिछली सोती, दुर्द्धर्ष शत्रु की तरह मुँह फाड़े खड़ी हो जाती है, तब अपने अभूतपूर्व हस्त-कौशल द्वारा उस चार-छः अंगुल गहरे पानी में भी, तीर की गति से नाव को दौड़ा ले जाना एकमात्र इस लम्बे काले आदमी का ही काम होता है।

"इन दिनों नदी में बहुत ज़्यादा घड़ियाल आ गये हैं क्या?" स्वार्थी मानव स्वभाव! मैंने उसका कुशल न पूछकर सर्वप्रथम घड़ियालों का कुशल पूछा।

"कुछ न पूछिए, सरकार! आज तीस वर्षों से नदी में नाव खेने का पेशा कर रहा हूँ; किन्तु घड़ियालों की ऐसी बाढ़ कभी नहीं देखी। रेती पर जिधर भी नज़र डालिए, साखू के बोटे-से पड़े नज़र आते हैं।"

"अच्छा! तब तो उनके शिकार के लिए 'गहनू-मरचहवा' की ओर जाने की कोई ज़रूरत नहीं मालूम पड़ती। आस-पास में ही शिकार हो जायगा।"

नथुनी ज़रा मुस्कुराता हुआ बोला—"आस-पास! अगर आप चाहें तो अभी चलते-चलाते दो-एक मार सकते हैं।"

मैंने ज़रा अनुत्साह प्रकट करते हुए कहा—"लेकिन अभी, इस वक्त नहीं। नाव पर सामान सब रखवाकर अभी तो पेट-पूजा की व्यवस्था करनी है। क्या हलवाई की दूकान से यहाँ खाने का अच्छा सामान मिल सकता है?"

मेरे हाथों से बन्दूक़ लेते हुए नथुनी ने कहा—"दूकान की ज़रूरत नहीं है। बाबू (मेरे साले श्री गुसाईं मंगनी गिरिजी) ने आपके खाने-पीने का काफ़ी सामान मेरे साथ कर दिया है। टिफ़िनकेरियर में बन्द करके नाव पर ही रख आया हूँ। नाव पर बैठकर खाते चलें और 'झिरहिर' भी होता चलेगा।"

"तुम्हारे बाबू बड़े तेज़ आदमी हैं।" मैंने मुस्कुराकर कहा। फिर पूछा—"तुम अकेले ही आये हो या कोई साथ है?"

"डाँड़ तो मैं ख़ुद चलाऊँगा किन्तु 'गोन' खींचने के लिए मैंने बलदेव को भी साथ ले लिया है।"

अब तक ट्रेन में से सारा सामान उतारा जा चुका था। अपने पास की फ़िहरिस्त से एक-एक चीज़ को मिलाकर पहलाद उन्हें एक जगह इकट्ठा रखवा रहा था। मैंने उसकी ओर देखकर कहा—"बेदिंग रूम में सामान रखवाने की ज़रूरत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं। सीधे नाव पर ले जाओ। नाव पर खाने का सामान है। खाते भी जायँगे और रास्ते में अगर मौक़ा मिला तो दो-एक फ़ायर कर भी लेंगे।"

"बहुत अच्छा" कहकर पहलाद ने आदेशानुसार काम करना शुरू कर दिया। घड़ियाल का चमड़ा बुक करने के विषय में स्टेशनमास्टर से कुछ आवश्यक बातें पूछीं और एक-आध घण्टे बाद ही मैं नाव पर पहुँच गया। शिकार के लिए कुछ बहुत उपयुक्त नाव तो न थी, किन्तु फिर भी नई और तेज़ जानेवाली थी।

शिकार के लिए हल्की से हल्की नाव चाहिए। हल्की नाव से हर जगह, बहुत थोड़े पानी में भी, पहुँच सकना आसान रहता है। मेरे पहुँचते ही नाव खोल दी गई। बहाव की ओर जाना था। भादों की उमड़ी हुई नदी और हल्की-सी नाव! उस पर भी मज़ा यह कि बहाव की ओर अभियान। नाव की गति के सामने तीर की भी गति कुण्ठित-सी मालूम हो रही थी। हम लोग आनन्दपूर्वक खाने बैठ गये।

(३)

खाना समाप्त कर मैं पान चबाने जा ही रहा था कि नथुनी ने कहा—"शायद उस तरफ़ रेती पर दो या तीन घड़ियाल पड़े हुए हैं।" 'कहाँ' कहकर मैंने उत्सुकता से उस ओर निगाह की। दूरी ज़रा अधिक होने के कारण कोरी आँख से स्पष्ट देखना सम्भव न था। लाचार मैंने 'बिनाक्युलर' से देखा। लम्बी थुथड़ीवाले पाँच-पाँच छः-छः हाथ लम्बे तीन घड़ियाल पड़े हुए थे। उन्हें मारना गुनाह बेलज़्ज़त था। मैंने नथुनी से मुस्कुराकर कहा—"ऐसे ही ऐसे दुधमुहें बच्चे आये हैं कि कुछ बड़े घड़ियाल भी हैं!"

सहसा मेरी निगाह छोटे चाहों के एक विशाल झुण्ड पर गई। झुण्ड बटेरिया चाहों का था जिसमें हज़ार बारह सौ चिड़ियाँ रही होंगी। एक चौड़ी सोती के किनारे क़तार बाँधकर तीन-चार पंक्तियों में बैठी हुई 'टुन्-टुन् टुनाटुन' कर रही थीं। उनकी क़तारबन्दी देखकर मुझे मालूम हुआ कि फिसलते हुए-से छर्रे अगर ठीक निशाने पर बैठ जायँ तो सौ-पचास को मार लेना बिलकुल आसान बात होगी। मेरे सर पर लड़कपन का भूत सवार हो गया। मैं मानता हूँ कि बटेरिया चाहे का मांस स्वादिष्ट और शोरबा पौष्टिक है। बटेर का मज़ा दे जाता है। शायद इसी लिए इस जाति के चाहों का नाम बटेरिया है भी। मैं यह भी मानने के लिए तैयार हूँ कि एक ही फ़ायर में सौ-पचास की हत्या कर डालना शिकारियों की शान में दाख़िल है। फिर भी घड़ियाल मारते-मारते चाहा मारने के लिए छटपटा उठने को सिवा लड़कपन के और क्या कहा जाय!

यद्यपि शिकारियों की सबसे बड़ी कमज़ोरी उनका यही अल्हड़पन—लड़कपन—है; फिर भी इस लड़कपन में जो एक उमङ्ग का स्रोत—उत्साह की जान-सी छिपी हुई है, उसको भी अनदेखा कैसे किया जा सकता है। अभी-अभी शिकारी [illegible] साँभर हिरन के विशाल और ख़ूबसूरत सींगों ने [illegible] नालों में कारतूस डाले, दबे-पाँव, उपयुक्त अवसर की [illegible] में पीछे-पीछे जा रहे हैं। सहसा ख़रगोश ने छलाँग [illegible] सामने से उड़ता हुआ-सा निकला। सच मानिए, [illegible] निन्नानबे शिकारी अपने को रोक न सकेंगे।

खरहे की वे गज़ों लम्बी छलाँगें शिकारी की [illegible] चुनौती के तीर-सी लगेंगी और वह साँभर के विशाल [illegible] सींगों को भूलकर एक ही गोली में उस उड़ती हुई [illegible] को धम से गिराने के लिए बेचैन हो उठेगा। मजाल है, [illegible] की शान में कोई शिकार छलाँगें भरे और शिकारी [illegible] बर्दाश्त कर जाय? नहीं, कदापि नहीं। और कभी-कभी [illegible] पन के ऐसे ही छोटे-मोटे कामों में शिकारियों के भाग्य से [illegible] आ उपस्थित होनेवाली आकस्मिक घटनायें जो लज्जित [illegible] जाती हैं, उनकी मिठास को भी कोई कहाँ चुराकर [illegible] ऐसी घटनायें सदा के लिए अपनी एक छाप छोड़ [illegible] हैं। औरों की तो नहीं जानता; परन्तु लेखक के भाग्य में एक नहीं, अनेक घटनायें घट चुकी हैं। उनकी भयंकर [illegible] किन्तु सुखद स्मृतियाँ आज भी कलेजे को गुदगुदा जाती [illegible] शेर के शिकार की बात दूसरी है। उसके शिकार में [illegible] श्रेणी का शिकारी भी ऐसी भूल नहीं कर सकता।

ख़ैर, मनोवैज्ञानिक विश्लेषण चाहे जो हो, किन्तु मेरे [illegible] लड़कपन सवार हुआ और ज़रा झेंपते हुए मैंने नथुनी से [illegible] "नाव को किनारे लगाओ। मैं उस तरफ़वाली सोती में [illegible] फ़ायर करना चाहता हूँ।"

"उस तरफ़वाली सोती में क्या है?" नथुनी ने [illegible] आश्चर्य की मुद्रा से कहा। मैंने संक्षिप्त उत्तर दिया—"[illegible] का झुण्ड।"

"चाहों का झुण्ड!" पहलाद ने एकदम आश्चर्य [illegible] होकर मेरी ओर देखा और कहा—"घड़ियाल नहीं, चाहा!"

किसी के आश्चर्य पर न मैंने ध्यान दिया और न [illegible] बात का उत्तर। नाव किनारे पर लगाई गई। मैंने कारतूस [illegible] देख-भाल शुरू की। छः नम्बर से अधिक नम्बरों के [illegible] कारतूस मेरे पास न थे। छोटी चिड़ियों के झुण्ड [illegible] करके अधिक से अधिक चिड़ियाँ बटोरने के लिए [illegible] आठ-दस नम्बर छर्रे के कारतूस चाहिए। कुछ [illegible] हुआ किन्तु चारा क्या था? बारह बोर की बन्दूक [illegible] नालों में छः नम्बर छर्रे के दो कारतूस डाले और [illegible] के लिए लीथल गोली के दो कारतूस जेब में रख [illegible] उतर पड़ा।

झुण्डों को लम्बी क़तार में रखकर फ़ायर करने के लिए [illegible] के किनारे-किनारे ज़रा घूमकर जाना था। बाढ़ के [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की मिट्टी की गीली मोटी तह किनारे पर पड़ी हुई थी। उसकी परवा न की।

मुझे नदी के किनारे-किनारे ही जाना था। टटकी बाढ़ कर आई हुई गीली मिट्टी पर पैर पड़ते ही घुटना तक धँसता था। दोपहर की कड़ी धूप में मिट्टी की तह में से पैर निकालने के लिए बार-बार भगीरथ प्रयत्न करते-करते मैं सूख गई; पसीने से लथपथ हो उठा। जोंक की तरह मिट्टी से चिमट जाने से मेरे पैर ऐसे मालूम होते थे जैसे फ़ीलपाँव हो गया हो। शिकार के पीछे अनायास द्रुत वेग से फुदकनेवाले मेरे पैर उठाये न उठते थे। मुझे आप ही आप अपने ऊपर झुंझलाहट होने लगी।

इस तरह की यात्रा की सीमा भी शेष हो गई। अब रेंगकर कुछ सौ गज़ जाने की ज़रूरत थी। यह सारी सावधानी इसलिए करनी थी कि चाहों का झुण्ड उड़ न जाय। चाहा बहुत सतर्क रहनेवाली चिड़िया है। दूर पर ज़रा-सी आहट होते ही 'टुन्-टुन्' करके उड़ जाती हैं। सावधानी के विचार से मैं यह भी कर लेने को तैयार हो गया। कुरते की आस्तीनों को ऊपर चढ़ाकर कुहनी टूँग ली और घुटने के बल ज़मीन पर लेट-सा गया। बन्दूक की मेरी सूरत और चाल देखने की चीज़ थी। दाहनी कुहनी पर एक बार सारी देह का भार डाल देता और बाँई टाँग को ऊपर की ओर खींच कर बायें हाथ से बन्दूक़ को आगे की ओर ठेलता। फिर दूसरी बार बाँई कुहनी पर सारा भार देकर दाहिने हाथ को आगे की ओर बढ़ाता और दाहनी टाँग को पीछे की ओर खींच लेता। छाती के नीचे का कपड़ा कीचड़ में सना जाता था और मैं अथक परिश्रम करता हुआ उसी चाल से चाहों की ओर बढ़ता जा रहा था। साँप और मेढक की चाल को एक साथ गलाकर अगर कोई नई चाल ढाली जा सके तो ठीक मेरी चाल-जैसी ही होती। पानी का अन्तिम किनारा मुझसे कहीं दो-चार गज़ बचता था और कहीं दस-बारह गज़।

किन्तु मेरे मन में बार-बार एक ही प्रश्न उठ रहा था। आखिर इतने बड़े भीषण प्रयास की आवश्यकता क्या है? अगर शिकार में सौ-पचास चाहे मार ही लिये तो कौन बहुत बड़ा शिकारी बन बैठूँगा? चाहा, बगरा का शिकार! सारे कपड़े कीचड़ कर बैठा; कमर और गरदन टेढ़ी करा ली! इस पर गोली का भी कुछ ठिकाना है! परन्तु इतनी तकलीफ़ उठाने के बाद नाव पर लौट चलने की इच्छा भी नहीं होती थी। भूत-जैसी सूरत देखते ही सब हँसने लगेंगे और मैं शर्म से गड़-सा जाऊँगा।

पचास-पचहत्तर गज़ जाते-जाते मेरी सारी देह शिथिल-सी हो गई। अब तक मैं एक 'छाड़न' को पार कर चुका था। छाड़न का पानी एक पतले मुँह द्वारा नदी के मुख्य पानी से मिला हुआ था। छाड़न का तट, बाढ़ की हलकी राह से कट-छिलकर ढालुवाँ हो चुका था और उस पर मुलायम घास उगी हुई थी। अङ्गों को फिर से सबल और सचेष्ट बनाने के लिए दम मारने की आवश्यकता प्रतीत हुई और मैं उसी तरह लेटा-लेटा ज़रा दम मारने लगा।

चाहों के झुण्ड में अनायास टुन्-टुन् आवाज़ होते ही मेरा जी धड़क उठता था। चाहों का झुण्ड कहीं उड़ तो नहीं रहा है? अगर झुण्ड कहीं उड़ गया तो सारी मिहनत पर पानी फिर जायगा। इतनी बड़ी फ़ज़ीहत उठाने की अपेक्षा थोड़ा और जी-तोड़ परिश्रम कर लेना ही अच्छा है। ज़रा-सा दम लेकर मैंने फिर अपनी गति प्रारम्भ की।

किन्तु यह क्या? जैसे ही मैंने बाँई कुहनी पर सारी देह का भार देकर दाहिनी टाँग को आगे की ओर खींचा और जैसे ही वह ऊपर की ओर चार-छः अङ्गुल खिसकी कि 'कड़कड़ाक' की आवाज़ के साथ ज़ोर से एँड़ी पर ठण्ढी मोटी लाठी-सी गिरी! चोट के साथ-साथ अनायास सारी देह में सिहरन-सी दौड़ गई। यह क्या बला है? मैंने अकचकाकर ज़रा गरदन टेढ़ी की और पीछे की ओर देखा। देखते ही मुझ पर तो जैसे बिजली टूट पड़ी। एक विशालकाय घड़ियाल, भयानक मुँह फाड़े हुए, मेरी बाँई टाँग पर आक्रमण करने के लिए तैयार था। जैसे बिजली का करेंट मिलते ही पङ्खा अपनी धुरी पर नाच उठता है, वैसे ही मैंने मुँह के बल से पीठ के बल होकर एक पल में अपनी बाँई टाँग समेट ली।

इतना सब होने पर भी मेरे और उसके बीच में केवल डेढ़ गज़ का अन्तर था। ज़रा उचककर वार करते ही वह मेरे किसी भी अङ्ग को पकड़ सकता था। मेरे चेहरे से दीनता बरस रही थी और उसकी ख़ूनी आँखों से लालच चू रहा था। मैंने स्पष्ट देखा कि उसके अगले दोनों भोंड़े पञ्जे मिट्टी में घुसे जा रहे हैं और उसकी छाती आगे की ओर सरकी आती है। इतना बड़ा बदमाश, ख़ूनी और लालची घड़ियाल तो मैंने अपने जीवन में देखा ही नहीं। वार करने में अभागे को एक पल की भी देर असह्य है। क्षण भर के लिए मुझे काठ मार गया और भविष्य की भयानक तसवीरें मेरे दिमाग़ में घूमने लगीं। शिकार और शिकारियों का जीवन-सूत्र बहुत ही कच्चे धागे से बँधा होता है। चाहे जब जिसकी ओर का धागा कट जाय। अभी एक पल पहले शिकारी के घातक आग्नेय-अस्त्रों का लक्ष्य-बिन्दु बना हुआ शिकार अपने जीवन की अन्तिम घड़ियाँ गिन रहा है। उसकी जान ज़ब्त हो चुकी है। किन्तु निशाने में ज़रा-सी चूक होते ही पासा पलट जाता है। इधर गोली बहकी कि उधर शिकार के अङ्ग-विदारक नख-दन्त के बीच पड़ा हुआ शिकारी 'रामनाम सत्य है' का अनुभव कर बैठा। इस तरह क्षण में पलड़ा उलटते देर नहीं लगती।

किन्तु, आज की-सी मुसीबत बहुत कम शिकारियों के जीवन में आई होगी। मैं घड़ियाल मारने के लिए नहीं, चाहा मारने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए रेंग रहा था। मेरी बन्दूक़ की नालों में गोली के नहीं, सरसों जैसे छः नम्बर छर्रे के कारतूस पड़े हुए थे। मैं झुरमुट की ओट में बैठा हुआ बध्य शिकार से सैकड़ों गज़ दूर नहीं; साक्षात् मौत जैसे मुँह फाड़े हुए घड़ियाल से केवल डेढ़ गज़ दूर आमने-सामने बैठा हुआ था। मृत्यु केवल मँडराती ही न थी बल्कि मुँह फाड़कर झपट्टा मारने के लिए तैयार थी! मेरी आँखों के सामने सरसों-सी फूल उठी और दिल की धड़कन से तो ऐसा मालूम होने लगा कि छाती की हड्डियों को तोड़कर वह बाहर निकल पड़ेगा।

घड़ियाल छिपकली-सी थुथड़ीवाली जाति का था। इसी जाति के घड़ियाल अधिक ख़ूँख़्वार होते हैं और जानवरों तथा मनुष्यों तक को पकड़कर निगल जाते हैं। उसके फटे मुख में दाँतों की अनेक पंक्तियाँ थीं, जिनके छोटे-बड़े उजले और ईषत् पीले दाँत सूर्य्य की तेज़ धूप में चमचमा रहे थे। उन दाँतों के चक्रव्यूह में फँसकर किसी अभिमन्यु का निकल जाना असम्भव था। उसकी लाल आँखें अपेक्षाकृत और भी अधिक लाल हो गई थीं, जिनसे भयानक हिंसा फूटी पड़ती थी। मेरी बन्दूक़ अभी तक बग़ल में पड़ी हुई थी। उसके रौद्र रूप ने मुझे याद दिलाई और पलक मारते मैंने बन्दूक़ उठा ली।

मालूम पड़ता है, छाड़न के किसी कोने में पानी से निकलकर अपनी उदर-पूर्त्ति के लिए वह सिंहावलोकन कर रहा था। कहीं कोई जानवर पानी पीने के लिए छाड़न में आवे और मैं उसे धर दबोचूँ। सहसा उसकी नज़र मुझ पर पड़ी होगी। रेंग कर चलते देखकर उसने मुझे भी कोई जानवर ही समझा होगा। सम्भव है, कई दिन का भूखा भी रहा हो। उसकी भूख ने ठेलकर मेरा पीछा करने को उसे उद्यत किया होगा। दूर से मेरा पीछा करता आया होगा और अपनी मार के भीतर पाकर मेरी दाहनी टाँग पर उसने हमला किया होगा। मेरे सौभाग्य से यह हमला तब हुआ जब कि दम मारना समाप्त करके मैं आगे की ओर सरक रहा था। मेरी दाहनी टाँग के ज़रा ऊपर की ओर खिसक जाने के कारण उसका घातक वार निफल हुआ और केवल उसकी ठुड्ढी लाठी-सी मेरी एँड़ी पर गिरी। इस तरह मेरी टाँग उसके मुँह में जाने से बाल-बाल बची होगी। सूखे चमड़े से स्पष्ट था कि वह बहुत देर से पानी के बाहर है।

जो भी हो, किन्तु किसी घड़ियाल का इस तरह किसी का पीछा करना एक असाधारण घटना थी। मैंने स्वयं अनेक घड़ियाल मारे हैं और बहुत-से शिकारी मित्रों से अनेक घड़ियालों की कहानियाँ भी सुनी हैं। परन्तु कहीं किसी घड़ियाल को किसी मनुष्य का तो क्या, किसी जानवर का भी पीछा करते न देखा, न सुना। हाँ, नदी के किनारे कुत्ते या बकरे बँधवाकर मैंने भी तथा और अनेक शिकारियों ने भी ख़ूनी घड़ियालों को ललचाया है; पानी से निकलकर निगलने का उन्हें अवसर दिया है और मारा भी है। फिर भी उसमें और इसमें आकाश-पाताल का अन्तर है।

सहसा मेरी निगाह आगे की ओर गई और [illegible] पीछे पड़ी हुई घसीटन से उसके महत् प्रयास का अनुमान [illegible] मैं अवाक् हो उठा। जहाँ तक मैं स्पष्ट देख सकता था [illegible] तक उसकी घसीटन पड़ी हुई थी जो लगभग पचीस गज़ [illegible] होगी। घड़ियाल के पञ्जे भोंडे और कमज़ोर होते हैं। [illegible] भार को वे आसानी से सँभाल नहीं सकते। इसी [illegible] स्थल पर चलने में बड़ा कष्ट होता है। उसका [illegible] जलाशय है, जिसमें अपने बड़े से बड़े दुश्मन का भी [illegible] वह बड़ी आसानी से कर लेता है। एक बार पूँछ [illegible] हिलाई और तीर की तरह बीसों गज़ पहुँचा। इसलिए [illegible] पर चलने से परहेज़ करनेवाले घड़ियाल को इतनी दूर [illegible] करते देखकर मेरा आश्चर्य्यान्वित हो उठना नितान्त स्वा[illegible] था। किन्तु, इतनी असाधारण घटनाओं की जननी [illegible] थी? स्थल पर घड़ियाल का दौड़ना। पीछा करके [illegible] को पकड़ने की कोशिश करना। मनुष्य की सूरत देख[illegible] पानी में डुबकी लगाकर मुँह छिपानेवाले घड़ियाल का [illegible] सामने साक्षात् मनुष्य को पाकर भी मुड़कर भागने की [illegible] पुनराक्रमण के लिए तैयार हो जाना! इतनी अ[illegible] घटनायें! तो क्या इसकी जननी भूख थी? वही भूख [illegible] ठोकर से ताज लुढ़क जाते हैं; धनियों की ईंट से ईंट [illegible] है? वही भूख, जो शत-प्रतिशत महाक्रान्तियों की [illegible] अगर उस भूख ने घड़ियाल के शील-स्वभाव में भी क्रान्ति [illegible] कर दी हो तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। सम्भ[illegible] घड़ियाल कई दिनों का भूखा हो। भूख से उसकी [illegible] कुड़मुड़ा रही हों। बहुत सम्भव है, ऐसी अवस्था में [illegible] विह्वल घड़ियाल मेरे जैसे सुन्दर स्वादिष्ठ खाद्य पदार्थ को [illegible] ही किसी भी कष्ट से किसी भी क़ीमत पर, उदर की [illegible] भट्ठी में झोंकने के लिए तैयार हो गया हो।

किन्तु, इन बातों की विशद विवेचना का अवसर [illegible] था? ये सारी बातें क्षण भर के लिए मेघमाला में [illegible] होनेवाली क्षणदा की ज्योति जैसी मेरे दिमाग़ में आईं [illegible] मेरे सामने तो दण्डायमान महाकाल की समस्या थी। [illegible] सी असावधानी होते ही उसके मुँह में घुसकर अपना [illegible] खो देने का ख़तरा था। इसलिए मेरी आँखें उसके [illegible] एक-एक चेष्टा को देखने-समझने में व्यस्त थीं और मेरा [illegible] उसके विनाश का उपाय सोचने में लगा था। फिर भी [illegible] निर्द्धारण में दो-चार पल से ज़्यादा देर नहीं हुई।

मैं उसके सामने से अनायास भाग सकता था। [illegible] कोई शेर नहीं है, जो अपनी गज़ों लम्बी छलाँग से [illegible] दबोचता। मेरी इज़्ज़त और शिकारी तबीयत ने मेरी [illegible] ली थी। भागना पल्ले सिरे की कायरता होती। [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं तत्क्षण उसे कायान्वित करने के लिए तैयार हो गई। ठीक-ठिकाने से बन्दूक़ को हाथों से पकड़ मैं घड़ियाल की ओर मुँह किये हुए पीछे की ओर कूद गया। कूदते ही मैंने, बन्दूक़ सीधी की, निशाने बाँधे और घड़ियाल की दाईं-बाईं आँखों पर बन्दूक़ की दाईं-बाईं नालों के कारतूस दाग दिये। सारी कार्रवाई पलांश में समाप्त हुई। 'फच्च' करके घड़ियाल की दोनों आँखें फूट गईं और वह एक बार ज़ोर की चीख़ कर मारकर घिरनी की तरह करवट पर करवट मारने लगा। एक छलाँग और मारी। घड़ियाल करवट पर करवट खाता हुआ पानी की ओर लुढ़का जा रहा था। केवल आँखें फूटने से उसका मरना असम्भव था। छलाँग मारकर खड़ा होते ही मैंने बन्दूक़ की नाल तोड़ डाली। ख़ाली कारतूसों को निकाल कर गोली के कारतूस डाले और तुरन्त नाल सीधी कर, घड़ियाल की गरदन में गोली मारने की तजवीज़ करने लगा। किन्तु लुढ़कन पर लुढ़कन खाते हुए घड़ियाल की गरदन में गोली मारना टेढ़ी खीर थी। फिर भी देर करने की गुञ्जाइश कहाँ थी? कहीं वह लुढ़कता हुआ पानी में पहुँच गया तो उसकी गन्ध भी हाथ न लगेगी। मैंने अन्दाज़ से गरदन में एक गोली मारी और दूसरी गोली छाती पर दाग दी। दोनों गोलियाँ निशाने पर लगीं। गरदन और छाती से ख़ून के फ़व्वारे छूटने लगे। लुढ़कन भूलकर घड़ियाल अपने जीवन की अन्तिम घड़ियाँ गिनने लगा।

नदी के प्राङ्गण में लगातार चार-चार फ़ायरों के होने से एक तहलक़ा-सा मच गया। देखता हूँ तो पहलाद बेतहाशा दौड़ा आ रहा है। प्राणपण से खेकर नाव को मल्लाह इसी ओर ले रहे थे। थोड़ी देर में सब इकट्ठे हो गये। बड़ी कठिनता से नाव में लाश लादी गई। घड़ियाल सत्रह फ़ुट तीन इञ्च लम्बा था। सकुशल ससुराल पहुँचा।

सारी कहानी सुनने के बाद मेरे साले ने ज़रा मुस्कुराकर कहा—"यह तो कहिए कि बहुत बड़ी ख़ैरियत हो गई। अगर एक डेढ़ हाथ टाँग से ऊपर मुँह मार बैठता तो आफ़त का पहाड़ ही टूट पड़ता।"

मैंने भी उसी मुस्कुराहट के साथ जवाब दिया—"चिन्ता की बात नहीं। समुरालवालों के सौ ख़ून माफ़ रहते हैं।"

गणेश*

पण्डित काशीनाथ रा० तिलक

आर्य अनादिकाल से सप्तसिन्धु प्रान्त के निवासी थे या बाहर से आकर इस देश में बस गये? यदि बाहर से आये तो कब कब और कहाँ से? ये प्रश्न बहुत दिनों से विद्वानों के विवाद के विषय बने हुए हैं। इस सम्बन्ध का मतभेद भी बहुत गहरा है। अनेक प्रबन्ध भी अब तक इन प्रश्नों पर प्रकाश डालने के लिए लिखे जा चुके हैं जिनमें विभिन्न सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है। लोकमान्य तिलक का 'उत्तरी ध्रुवक सिद्धान्त' आलोचक की मनोभिरुचि के अधिक अनुकूल है। कुछ भी हो, यह तो निर्विवाद है कि अनार्यों के साथ प्रचण्ड संघर्ष करते हुए आर्य विजयी हुए और उन्होंने इस देश को अपनी सभ्यता और संस्कृति का केन्द्र बनाया। जब एक जाति दूसरी जाति के सम्पर्क में आती है तब परस्पर आदान-प्रदान का होना अनिवार्य और स्वाभाविक हो जाता है। पर देखा जाता है कि पहले निम्न श्रेणी के लोग ही दूसरे से कुछ लेते या उसे कुछ देते हैं। निम्न-लिखित घटना इस बात का ज्वलन्त उदाहरण है। फ़र्रुख़ाबाद में 'साध' नामक एक सन्त-सम्प्रदाय रहता है। इस सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक उदादास साधगण इनको कबीर का अवतार मानते हैं। इससे उदादास का गौरव तो अवश्य बढ़-सा गया है, पर दूसरी ओर अपनी मृत्यु के १५० वर्ष बाद कबीर का उदादास के चोले में अवतार लेना समञ्जस-सा प्रतीत नहीं होता। साध लोग बड़े ही दक्ष और व्यापार-कुशल हैं। इनके कारख़ानों में निम्न श्रेणी के जो हिन्दू छपाई आदि का काम करते हैं वे अपने शवों को गङ्गाजी ले जाते समय 'रामनाम सत्य है' के साथ साथ 'मालिक का नाम सत्य है' या 'दाता का नाम सत्य है' भी कहने लगे हैं। क्योंकि साध लोग ईश्वर को 'मालिक' या 'दाता' कहते हैं। इसी प्रकार आर्यों की निम्न जातियों ने यदि अनार्यों के कुछ देवताओं को अपना लिया हो तो इसमें कुछ आश्चर्य की बात नहीं। मैं प्रायः पढ़ा करता था कि आर्यों ने कुछ देव अनार्यों से लिये हैं। पर इस ग्रन्थ के पढ़ने से पूर्व मुझे इस बात की कल्पना स्वप्न में भी न हुई थी कि हमारे गणेश देवता भी अनार्यों के उपास्य देव हैं और वहीं से आकर हमारे देव-समाज में सर्वोपरि आसन जमा बैठे हैं।

इस पुस्तक को मनोयोगपूर्वक पढ़ने से पूर्व मुझे शङ्का हुई थी, जो कि स्वाभाविक है, कि कहीं श्री सम्पूर्णानन्दजी ने भी तो श्रीयुत अविनाशचन्द्र दास की शैली और तर्कपद्धति का अनुसरण

* गणेश—लेखक, श्री सम्पूर्णानन्द। प्रकाशक, काशी-विद्यापीठ, बनारस; अनेक चित्रों से सुसज्जित सजिल्द पुस्तक। मूल्य २॥)। भाषा और विषय की प्रतिपादन-शैली सरल, सुबोध और रोचक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं किया है। दास बाबू लिखित 'ऋग्वेदिक इंडिया' को जिसने पढ़ा होगा उसे ज्ञात होगा कि किस प्रकार उन्होंने अपने पक्ष को सिद्ध करने के दुराग्रह में निरुक्तकार के 'तयोः कालं ऊर्ध्वमर्धरात्रात् प्रकाशीमावस्यानु विष्टेमम्' सूत्र के पद को काट-छाँटकर उसका केवल अर्धभाग ही दिया है जो पाठकों को भ्रम में डालने के लिए पर्याप्त है। पर प्रसन्नता की बात है कि श्री सम्पूर्णानन्दजी ने ऐसा नहीं किया। वे प्रतिपक्षी को टोकने का अवसर ही नहीं देते। वे जो कुछ कहते हैं, स्पष्टतया और उल्लेख पूर्वक।

फिर भी यह विचारणीय है कि क्या वैदिक वाङ्मय गणेश के सम्बन्ध में एकदम मौन है, या वह किसी न किसी रूप में उनकी चर्चा भी करता है। वैसे तो चर्चा और उपासना सदा से किसी न किसी की होती चली आई है और समय-समय पर उसके नाम तथा रूप में परिवर्तन भी होता रहा है। उदाहरणार्थ, आज हिन्दू-समाज में राम-कृष्ण की पूजा घर-घर प्रचलित है। पर राम या कृष्ण वैदिक देवता नहीं हैं। वे विष्णु के अवतार भले ही माने जाते हों पर वैदिक देवताओं की सूची में उनका नाम नहीं है। ऋग्वेद में उल्लिखित वैदिक देवताओं में इन्द्र प्रधान है। ऋग्वेद के अधिकांश सूक्त इन्द्र-परक हैं। पर महाभारत-काल में इन्द्र की वह प्रधानता दिखाई नहीं देती। वहाँ उनको एक बढ़ई भी निर्लज्ज और स्वार्थी कह देता है। वहाँ उनकी महिमा विष्णु या कृष्ण ने छीन ली है। महाभारतकाल के इन्द्र तपस्वियों की तपस्या में विघ्न करने को सदा प्रस्तुत रहते हैं। पर रावणादि असुरों का सामना करते समय उनका धैर्य न जाने कहाँ चला जाता है। वे अपने निस्तार के लिए पद-पद पर विष्णु के मुखापेक्षी बन जाते हैं।

वैदिक देवों में गणेश का नाम नहीं है। ऋग्वेद के एक मन्त्र (२।२३।१) में एक शब्द 'गणपति' आया है। पर उस मन्त्र का देवता 'ब्रह्मणस्पति' है। इसी लिए 'गणपति' वहाँ विशेषण है, विशेष्य नहीं। यजुर्वेद के जिस मन्त्र (२३।१९) का गणेशपूजा में विनियोग होता है उसका देवता 'अश्व' है न कि 'गणेश'। प्राचीन भाष्यकारों ने उसका देवता 'अश्व' ही बतलाया है जिसकी पुष्टि कात्यायन के श्रौत सूत्र से भी होती है। अर्वाचीन भाष्यकार स्वामी दयानन्द सरस्वती ने उक्त मन्त्र का देवता 'गणपति' माना है; पर वह 'गणपति' पौराणिक गणपति से सर्वथा भिन्न है। सतारा के पण्डित श्रीपाद दामोदर सातवलेकर का कथन है कि स्वामीजी ने सर्वानुक्रमणिका के विरुद्ध अनेक नवीन देवता गढ़ डाले हैं। तैत्तिरीय आरण्यक में अवश्य ही 'वक्रतुण्ड' और 'दन्ती' शब्द देखने में आते हैं पर वहाँ भी तत्पुरुष के साथ उनका उल्लेख होने के कारण वे तत्पुरुष रूपवाले रुद्र से अभिन्न हैं, या उनके ही विग्रह-विशेष हैं। इसके अतिरिक्त गणेश का उल्लेख न तो शतपथादि ब्राह्मण-ग्रन्थों में हुआ है और न सर्वमान्य प्राचीन ९२ उपनिषदों में ही किया गया है। सारांश यह कि इस सम्बन्ध में समस्त वैदिक वाङ्मय [illegible] है। हाँ, गणपत्युपनिषद् में अवश्य गणेश को ब्रह्म से [illegible] सिद्ध करने की चेष्टा की गई है। पर उसकी भाषा [illegible] अर्वाचीन है कि उसको किसी भी विद्वान् आचार्य ने [illegible] उपनिषदों की कोटि में नहीं गिना है। फलतः उसकी [illegible] सर्वथा सन्दिग्ध है और केवल उसी के आधार पर गणेश [illegible] की प्राचीनता सिद्ध नहीं हो सकती।

रहे पुराण, सो वे तो गणेश की स्तुति से पूर्ण हैं ही। [illegible] उनके आधार पर भी गणेश को प्राचीन नहीं [illegible] सकता। कारण, उनकी रचना विक्रमी संवत् आरम्भ [illegible] पश्चात् हुई है। एक प्रश्न यह हो सकता है कि गत [illegible] दसवें दिन 'दशमेऽहनि किञ्चित् पुराणमाचक्षीत्' के [illegible] पुराण श्रवण करना श्रौतकार को अभिप्रेत है। तब पुराण [illegible] अर्वाचीन कैसे कहा जा सकता है? इसके उत्तर में यह [illegible] जा सकता है कि अर्वाचीन पुराणों के आधारभूत कुछ [illegible] पुराण अवश्य रहे होंगे जिनमें ऋग्वेदोक्त देवताओं की [illegible] का वर्णन पूर्ण रूप से किया गया होगा। श्रौतकार का [illegible] उन्हीं पुराणों की ओर है। उन पुराणों में अवश्य ही [illegible] महिमा का उल्लेख उसी प्रकार रहा होगा जैसा कि अर्वा[illegible] पुराणों में विष्णु और शिव की महिमा का मिलता है। [illegible] दयानन्द सरस्वती 'ब्राह्मणानीतिहासान् पुराणानि कल्पान् [illegible] नाराशंसी' के आधार पर शतपथ, ऐतरेय आदि ब्राह्मणों के [illegible] पुराण, गाथा, नाराशंसी आदि बतलाते हैं। पर उनका [illegible] कथन उपयुक्त नहीं जँचता। कारण, गोपथ ब्राह्मण के [illegible] भाग की द्वितीय प्रपीठिका में 'सर्वे वेदाः सब्राह्मणाः सोपनिषदाः सरहस्याः सकल्पाः सेतिहासाः सपुराणा निर्मिताः' [illegible] आया है। यदि ये सब पर्यायवाची शब्द होते तो गोपथ उन्हें पृथक् पृथक् न गिनाता।

मनु आदिक अठारह स्मृतियों में कहीं भी गणेश की [illegible] नहीं है। याज्ञवल्क्य स्मृति में अवश्य ही गणेश के एक [illegible] विनायक का उल्लेख किया गया है। वहाँ यह विनायक [illegible] का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। उसका काम शुभ [illegible] बाधा डालना है, पर पूजा या शान्ति करा देने से वह [illegible] भी बन जाता है। भागवत के कथनानुसार विनायक [illegible] हैं। याज्ञवल्क्य स्मृति के अनुसार उनके चार भेद मित, [illegible] शालकटङ्कट और कूष्माण्ड राजपुत्र हैं इनके प्रसन्न [illegible] उपाय भी वहाँ किया गया है। काल पाकर विनायकों [illegible] बहु संख्या स्मृति के चार भेदों में परिगणित हो गई [illegible] ये चार भेद भी एक विनायक के रूप में अर्थात् गणेशजी [illegible] और विघ्नहर्ता दोनों रूपों में प्रसिद्ध हो गये। इस [illegible] यह सिद्ध हो गया कि श्रुति, स्मृति और प्राचीन पुराणों [illegible] गणेश का वह रूप नहीं पाया जाता है जिसका वर्णन [illegible] पुराण के उपासना खण्ड में किया गया है। अर्थात् [illegible]

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[अध्याय २]

ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्रादि देव तथा मनुष्य उनसे हुए।"

मन्त्र और तन्त्र वेद के दो प्राचीन अङ्ग हैं। दोनों के दाता वैदिक ऋषि हैं पर बौद्धों ने तन्त्र के अङ्कुरित रूप को विकसित किया, जैसा कि रुद्रयामल तन्त्र के प्रामाणिक ग्रन्थ के आधार पर लेखक ने—सम्पूर्णानन्द जी ने—सिद्ध करने की चेष्टा की है। उसमें लिखा है कि एक बार वशिष्ठजी को आत्मज्ञान प्राप्त करने की तीव्र उत्कण्ठा हुई। वह किसी के भी उपदेश किसी साधना से शान्त न हो सकी। तब चीन में जाकर तिब्बती लामा मुनि के दर्शन किये, और उनके उपदेश से मुक्त हुए। इससे यह सूचित होता है कि तन्त्र अपने विकास में बौद्ध महायान पंथ का अधिक ऋणी है। पर मेरा (आलोचक का) लेखक से बिलकुल विरुद्ध है। मूल में बौद्ध धर्म निरीश्वर अनात्मवादी और निवृत्तिमार्गानुयायी था। उसमें किसी देव या मन्त्र या तन्त्र के लिए स्थान न था। मन को पूर्ण विषय बनाकर निर्वाण पन्थ बौद्धों का एकमात्र ध्येय था। यह काम इतना कठिन था कि बुद्ध की मृत्यु के बाद बौद्ध उस पर अधिक दिन तक न टिक सके। उनको यह प्रतीत होने लगा कि जनता का ध्यान बुद्ध-धर्म की ओर आकृष्ट होने के लिए उसमें कुछ सुधार या संशोधन वाञ्छनीय हैं, नहीं तो बुद्ध-धर्म से भी हाथ धोना पड़ेगा। इस सुधार या परिवर्तन का मार्ग दिखाना श्रीकृष्ण या गणेश का काम था। यह स्वयं नागार्जुन के गुरु राहुलभद्र ने मुक्त कण्ठ से स्वीकार किया है। राहुलभद्र पहले ब्राह्मण था, पर पीछे से वह बौद्ध हो गया था। वे संशोधन ये हैं—(१) बुद्ध भगवान् को देवाधिदेव का पद मिला, (२) उनकी भक्तिपूर्वक अर्चना करने से मुक्ति मिल सकती है, (३) निर्वाण गृहस्थ-धर्म पालन करते हुए भी प्राप्त किया जा सकता है, (४) यह सुधार डा० ... के कथनानुसार विक्रम से लगभग ४ सौ वर्ष पहले हुआ होगा। ... का भाव यह है कि महायान पन्थ, जो चीन, तिब्बत और जापान में आज भी प्रचलित है, प्रवृत्तिपर भक्तितत्व के विषय में ... कथित भगवद्गीता का ऋणी है। पर डा० केर्न ... 'से शैव पन्थ का अर्थ लेते हैं। लो० तिलक भी अपने ... 'रहस्य' में इस पर कुछ प्रकाश डालते नहीं देखे जा रहे हैं। ... का महायान पन्थ के साथ किस प्रकार का सम्बन्ध है ... तिलक का प्रकृत विषय न था। पर मेरे मतानुसार डा० ... अवश्य इस विषय में भूल करते हैं या भ्रान्तिवश गणेश को ... बता गये हैं। जब तन्त्र में गणेश का वर्णन प्रचुर ... में मिलता है, शुभ कार्यों में विघ्नों के परिहार के लिए ... का मनाना अनिवार्य मान लिया गया तब 'गणेश' को ... पन्थ बताना भ्रान्ति नहीं तो क्या है? जब बुद्ध की मृत्यु ... है—बुद्ध की मृत्यु विक्रम से ६ या ५ सौ वर्ष पूर्व विद्वानों ने ... की है—वैदिक धर्म पूर्णावस्था को पहुंच गया था, इतना ही नहीं वरन उपनिषद् और धर्मसूत्र के समान ग्रन्थ भी तैयार हो गये थे, तब तन्त्र ही वैदिक आर्यों के पास बीज-रूप में बना रहा और उसको अङ्कुरित और पल्लवित बौद्धों ने किया यह सम्पूर्णानन्दजी का कथन मुझे अयुक्त प्रतीत होता है। जब महायान पन्थ के प्रादुर्भाव के पूर्व महाभारत विद्यमान था, गीता सर्वमान्य हो गई थी और गीता से प्रवृत्तिपर भक्तिमार्ग ग्रहण करने की बात स्वयं बौद्ध धर्म स्वीकार करता है तब आर्यों ने तन्त्र को विकसित न किया हो यह बात समझ में नहीं आती। जब वैदिक आर्यों के देवताओं का—ब्रह्मा, शिव, इन्द्र आदि का—अस्तित्व बुद्ध को स्वीकार था, तन्त्र में देव या देवियों की ही पूजा होती है, बुद्ध-धर्म में, जो पूर्ण निरीश्वरवादी था, देव-देवियों के लिए स्थान कहाँ था! तब महायान पन्थ ने पूर्ण विकसित भक्तिमार्ग की भाँति पूर्ण विकसित तन्त्र को भी अपनाया, यह अनुमान उचित प्रतीत होता है। पर अब यह बात अनुमान पर ही अवलम्बित नहीं है; क्योंकि स्वयं बौद्ध ग्रन्थकार श्रीकृष्ण के समान महायान पन्थ के प्रादुर्भाव के लिए गणेश के भी ऋणी हैं, यह स्वीकार करते हैं तब गणेश से तात्पर्य तन्त्र से है। बात यह है कि महायान सम्प्रदाय की भक्ति या तांत्रिक पूजा, ये ही दो विशेषतायें उसको हीनयान सम्प्रदाय से—बुद्ध के चलाये हुए पन्थ से—पृथक् करती हैं। लो० तिलक ने भक्तितत्त्व के लिए महायान पन्थ को श्रीकृष्ण का ऋणी सिद्ध किया है तो मैं उसको (म० पंथ को) तन्त्र के लिए गणेश का ऋणी सिद्ध करता हूँ। जैसे पुराणों में गणेशजी के दोनों रूप—विघ्नकर्त्ता और विघ्नहर्त्ता—विद्यमान हैं वैसे ही गणेश के दोनों रूप बौद्ध तन्त्रों में विद्यमान हैं। विख्यात बौद्ध तन्त्रग्रन्थ-साधनमाला में अनेक देव-देवियों के सिद्ध करने के उपाय दिये गये हैं। उनमें एक गणपति-साधन भी है। जिस धर्म में देव-देवियाँ न हों, उसमें देव-देवियों का आ जाना यह सिद्ध करता है कि वे बाहर से आई हैं। बौद्ध-धर्म भारत में उत्पन्न हुआ इसलिए उसने भारत के ही पूर्व प्रचलित वैदिक धर्म से देव देवियों की पूजा ग्रहण की। दोनों धर्मों में देव-देवियों के नाम भी समान रूप से मिलते हैं। भले ही इस असमञ्जसता की—देव-देवियों की पूजा का शुद्ध बौद्ध-धर्म से मेल न खाने की—व्याख्या बौद्धजन अन्य प्रकार से करें, पर अब यह बात स्वयं सिद्ध क्यों हो रही है कि बौद्धधर्म भक्ति या तन्त्र के लिए आर्यधर्म का ही ऋणी है। भले ही वैदिक देव विष्णु, शिव, इन्द्र की तरह गणेश भी बौद्ध देव-देवियों से पदाक्रान्त मिलते हों, पर ये देव-देवियाँ बौद्धधर्म में वैदिकधर्म से गईं, यह बात निर्विवाद है। क्योंकि पादाक्रान्त गणेश की वेष-भूषा पौराणिक गणेश से मिलती है। इसलिए महायान पन्थ का गणेश का ऋणी होना यही सिद्ध करता है कि उसने वैदिक धर्म से पूर्ण विकसित तन्त्र को ग्रहण किया। रुद्रयामल की कथा बौद्ध ग्रन्थकारों की स्वीकृति के आगे कुछ महत्त्व नहीं रखती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गणेश भारत के अनादि निवासियों के उपास्य हैं, इस परिणाम पर लेखक के पहुँचने के लिए निम्न लिखित हेतु हैं :—

(१) ऋग्वेदस्थ वैदिक देवताओं की सूची में उनका नाम नहीं है। (२) न शतपथ आदि ब्राह्मण ग्रन्थों में और न सर्वमान्य प्राचीन उपनिषदों में उनका उल्लेख है। (३) आर्यों के उपास्य देव युवा, सुन्दर, हँसमुख और प्रकाश-स्वरूप हैं। वे सत्कृत्य में बाधा नहीं डालते थे, वे शरणागत-वत्सल थे। यज्ञशाला में सोमपान के लिए सुन्दर रथों पर चढ़कर आते थे, जिनमें रङ्ग-बिरङ्गे अश्व जुते रहते थे। (४) इसके विपरीत अनार्यों के उपास्य देव क्रूर और दुष्ट स्वभाव के थे। (५) गणेश के अनेक नामों में विनायक और विघ्नहर्त्ता भी उनके नाम हैं। डाकिनी, यातुधान आदि के समान विनायक विघ्नकारी अपदेव हैं, यह पुराण सिद्ध करते हैं। इनका नेता गणेश है। (६) गणेश (और गणपति) पूजापाठ का फल चुरा लेते हैं। (७) शुद्ध वैदिक पद्धति से किये हुए कृत्यों में गणेश का प्रवेश नहीं। उनके नाम पर अग्नि में आहुति नहीं डाली जाती थी। (८) पार्वती के मैल से उनकी उत्पत्ति हुई थी। वे शङ्कर के औरस पुत्र न थे। (९) आर्यों का कोई भी देव, प्राचीन या अर्वाचीन, पशुमुखधारी नहीं है। (१०) उनके कुछ नाम जैसे हरिद्रा, पिंगल, उच्छिष्ट, कूष्माण्ड, शालकटङ्कट, पिचण्डिल, ढुण्ढि आदि उनके अनार्य वंश में जन्म लेने के द्योतक हैं। (११) वे आदि समाज में बलात् घुस आये, न कि आर्यों ने मैत्री भाव से उनको अपने उपास्य देवों में स्थान दिया। (१२) प्रारम्भ में विघ्नकर्त्ता के रूप में उनकी पूजा होने लगी। उनकी भेंट देकर उनको विसर्जित कर दिया जाता था। पर पीछे से वे मङ्गलकर्त्ता के रूप में पूजे जाने लगे। (१३) ब्रह्म गायत्री के अनुष्ठान में विघ्न उनकी शक्ति के बाहर है। (१४) गणेश की पूजा [illegible] जाती थी इसलिए पहले रुद्रसेना में उनको स्थान मिला [illegible] रुद्रपुत्र बने और अन्त में रुद्र के अंशावतार भी बन गये। [illegible] श्रुति का ब्रह्मणस्पति गणेश का द्योतक इसलिए नहीं है कि [illegible] स्पति युवा है तो गणेश लम्बोदर। (१६) पुराणों में [illegible] महिमा बढ़ी; वहाँ कहा गया है कि "हम उन एकदन्त की [illegible] में जाते हैं, जो आत्मरूप, एक, मायारहित, बोधस्वरूप [illegible] तन्त्र में उनका प्रभाव और भी अधिक बढ़ा और तन्त्र के [illegible] उनका प्रवेश बौद्धधर्म में हो गया।

उपर्युक्त विवेचन से यह सिद्ध है कि गणेश अनार्यों [illegible] उपास्य देव हैं और निम्न स्तर से उठते हुए वे ब्रह्म से [illegible] माने जाने लगे। उनको एकमात्र अपना उपास्य देव [illegible] वाला गाणपत्य सम्प्रदाय भी भारतवर्ष में उदित हो [illegible] यद्यपि यह सम्प्रदाय आज नामशेष रह गया है पर शङ्कराचार्य [illegible] को इस सम्प्रदाय के विद्वानों से शास्त्रार्थ करना पड़ा था। [illegible] इधर मङ्गल-कर्म आरम्भ करने के पूर्व गणेश के पूजन का [illegible] है पर यह किसी को आज विदित नहीं है कि वे इष्ट देवता [illegible] पूजन का फल चुरा लेते हैं, यदि उनके चौर मन्त्र का [illegible] किया जाय। उनकी पूजा भारत तक ही सीमित न रही, वे [illegible] जापान और जावा आदि देशों में पूजे जाने लगे। सार यह [illegible] गणेश की महिमा अकथनीय है। मैं अन्त में उनको [illegible] करता हुआ इस आलोचना को समाप्त करता हूँ।

——

वान-ली-चांग-चेंग

श्री उमेशचन्द्र मिश्र

बात पुरानी है। इतनी पुरानी कि इतिहास उसे दुहरा भी नहीं सकता। अनन्त काल को नापने के लिए तब मानव ने नम्बरी पैमाने नहीं बनाये थे। क्योंकि तब उसे अतीत के प्रति इतना मोह नहीं था, जितना हमें आज है। आज हम 'अतीत-जीवी' बन गये हैं। तब का मानव वर्त्तमान में रहता था।

सम्राट् चिन शी हुआंग ती सेना लिये पीत नदी के तट पर पड़े थे, उन हूणों का आक्रमण विफल करने के लिए जिनकी आँखें हरे-भरे चीनी मैदानों को देखकर ललचाया करती थीं, लूट-खसोट और मारकाट जिनका पेशा था, जो दूसरी जाति को अपना आखेटमात्र मानते थे। सम्राट् के राज्यकाल में हूणों के साथ यह आठवाँ मोर्चा था।

दिन घोर संघर्ष में बीता था। रात को दोनों ओर की सेनायें अपने-अपने शिविरों में विश्राम करने चली गईं थीं। दोनों के बीच पीत नदी थी जिसके दोनों [illegible] उभय पक्ष की नौकाओं से भरे थे। उन नौकाओं [illegible] रहनेवाले सतर्क प्रहरी मशालें जलाये दूसरे पक्ष की गति[illegible] को भाँप रहे थे।

आधी रात हो रही थी, पर सम्राट् की आँखों में [illegible] नहीं थी। हूणों-द्वारा त्रस्त जनता का चित्र उनकी [illegible] में था। आज के युद्ध में उनके सैन्य ने अपूर्व पराक्रम [illegible] था और शत्रुपक्ष बहुत निर्बल हो गया था। पर [illegible] भी असन्दिग्ध नहीं था। एक करवट बदलकर उन्होंने [illegible] नदी की ओर देखा, फिर उठकर अपने शिविर के [illegible] आये। प्रहरी ने अभिवादन किया। 'घोड़ा लाओ'—[illegible] ने धीमे स्वर में आदेश दिया। कुछ क्षण बाद ही उनका [illegible] अश्व उपस्थित था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्राट् ने एक बार अश्व की ओर देखा। वह मानों स्वामी की आज्ञा पालन करने के लिए उतावला हो रहा था। दूसरे क्षण उस पर सवार होकर वे पूर्व की ओर चल दिये।

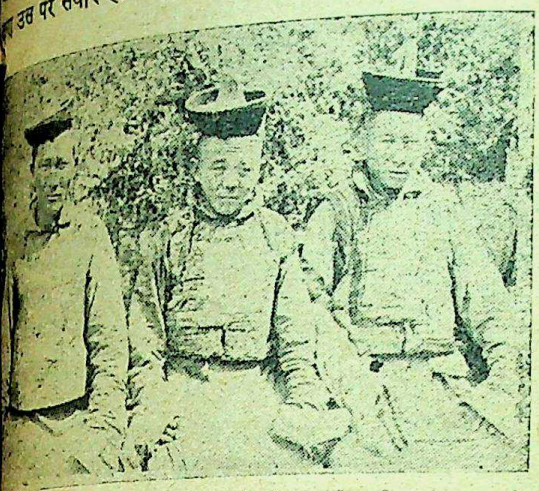

मंगोलियन पुलिस-अधिकारी

अन्यमनस्क भाव से चलते हुए वे लगभग तीन ली गये होंगे कि वटी-वट के पेड़ों के झुरमुट में उन्हें एक अश्वारोही दिखाई दिया।

"कौन है?"—घोड़ा रोकते हुए सम्राट् ने ज़ोर से पुकारा। एक वीराङ्गना, अश्व पर सवार, झुरमुट से बाहर आई। उसके धनुष झूल रहा था और पीठ पर तूणीर था। घोड़े की जीन से एक ओर तलवार झूल रही थी और दूसरी ओर बर्छा, जिसकी ऊँचाई से ऊपर तक उठा था।

"कौन है!" सम्राट् ने फिर प्रश्न किया। उत्तर में वीराङ्गना ने अपना बर्छा हिलाया और घोड़े की बाग पूर्व दिशा की ओर मोड़ दी। घोड़ा हवा में उड़ चला। किसी अज्ञात प्रेरणा से सम्राट् ने भी अपना घोड़ा पीछे डाल दिया।

उपरीली भूमि, सिकतामय मैदान, छोटे-छोटे नाले, झाड़-झंखाड़ पार करते हुए दोनों घोड़े उड़ चले। वे कितनी दूर निकल गये, इसका अनुमान करना भी कठिन है। सम्राट् का अश्व, जो संसार का सर्वश्रेष्ठ अश्व माना जाता था, पसीने से तर होकर अब-तब करने लगा। आँधी का एक बवण्डर आया। अब मार्ग-निर्धारण असम्भव था। सम्राट् ने अपना घोड़ा रोक दिया।

बवण्डर के निकल जाने पर उन्होंने देखा, वीराङ्गना आगे निकल गई है। दोनों के बीच अब भी उतना ही अन्तर है जितना पहले था, जब वे चले थे।

'क्या यह छलावा है?' सम्राट् ने अपने मन में प्रश्न किया। दूसरे ही क्षण यह भ्रम दूर हो गया। वीराङ्गना अश्व से उतर पड़ी थी, और पैदल ही उनकी ओर बढ़ रही थी। अश्व रुककर खड़े हो गये। पर उसकी चेष्टा में आक्रमण का भाव था, वे निश्चिन्त खड़े रहे।

'मैं सम्राट् चिन शी हुआंग ती की जय-कामना करती हूँ।' कुछ दूर खड़ी होकर वीराङ्गना ने हाथ उठाते हुए कहा।

'भद्रे! आप कौन हैं?'

'यह स्वयं ज्ञात हो जायगा। मेरा अनुसरण कीजिए।'

'भद्रे! मेरा अश्व थक गया है। आगे का मार्ग पहाड़ी है और अत्यन्त दुर्गम। वह उसे पार न कर सकेगा।'

'लीजिए यह कशा, यह आपके अश्व को अबाधगति कर देगा।' कहकर वीराङ्गना ने एक चाबुक सम्राट् की ओर फेंक दिया और स्वयं मुड़कर फिर अपने अश्व पर सवार हो गई।

कुछ ही क्षण में दोनों सीमान्त समुद्र के तट पर खड़े थे।

'क्या चिन्ता कर रहे हैं?' वीराङ्गना ने प्रश्न किया।

'यही कि किस प्रकार दस्युओं का यह उपद्रव सदैव के लिए शान्त कर दिया जाय।'

'यह कठिन है। इसके लिए आपको नई सृष्टि करनी पड़ेगी।'

'अर्थात्?'

एक हूण कन्या जिसके पूर्वजों ने चीन को त्रस्त कर रक्खा था।

'पुरातन का मोह छोड़ना होगा। नवीन को प्रश्रय देना होगा। भूत को दफ़नाकर वर्त्तमान की प्रतिष्ठा करनी होगी।'

'यह क्योंकर सम्भव होगा?'

'मैं चार प्रश्न करती हूँ। उनके उत्तर दीजिए।'

'प्रस्तुत हूँ।'

'प्रश्न १—संसार का आदि-सम्राट् कौन है?

२—मनुष्य की कौन-सी कृति चन्द्रलोक के जीव देखेंगे?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३—युवराज की प्रथम शिक्षा क्या होनी चाहिए ?

४—प्रजा की रक्षा कौन करेगा ?

अपने विद्वानों और मन्त्रियों से इनके उत्तर पूछिए। जिनका उत्तर भूतकाल से खोदकर निकाला गया हो, उनको तुरन्त मृत्युदण्ड दिया जाय। जिनका उत्तर वर्त्तमान से सम्बन्ध

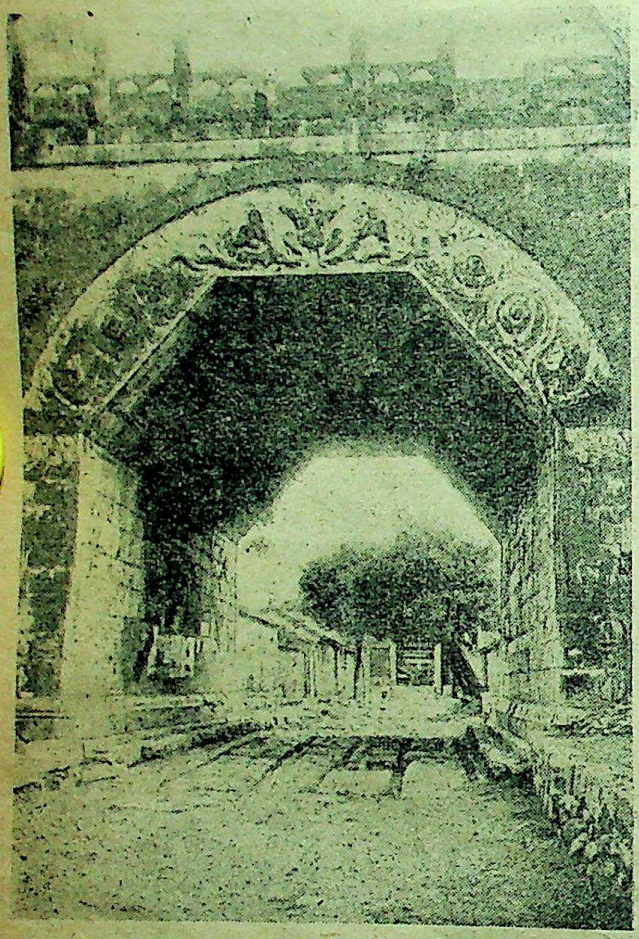

चू युंग क्वान का मेहराब जिस पर सात भाषाओं में बुद्ध के उपदेश अङ्कित हैं

रक्खे उन्हें राज्य-प्रबन्ध के कार्य में नियुक्त किया जाय। उनकी मन्त्रणा से कार्य करने पर आप शत्रुञ्जय बन सकेंगे।'

सम्राट् सिर झुकाकर प्रश्नों पर मनन करने लगे। इसी बीच वीरांङ्गना वहाँ से अदृश्य हो गई।

सम्राट् शिविर को लौट आये। दूसरे दिन परिषद् की आयोजना की गई। ५ सौ विद्वान्, राजनीतिज्ञ और खगोल-शास्त्री आदि एकत्र थे। राजा ने सब के सामने चारों प्रश्न दोहराये।

कुछ देर सभा में सन्नाटा रहा। फिर एक सर्वाधिक वृद्ध विद्वान् उठा जिसकी आँखों के पलक तक श्वेत हो गये थे और जिसकी श्वेत डाढ़ी वक्ष के लम्बे श्वेत रोओं से उलझ रही थी। उसने प्रथम प्रश्न का उत्तर इस प्रकार दिया—

'संसार में अनेक सम्राट् हो गये हैं जिनके [illegible] आख्यानों से पुराण-ग्रन्थ भरे पड़े हैं। राजसत्ता [illegible] काल से प्रचलित है। अतः यह निश्चयपूर्वक नहीं [illegible] सकता कि संसार का आदि-सम्राट् कौन है।'

'क्या प्रमाण है ?' सम्राट् ने तर्क किया। वृद्ध [illegible] ने उत्तर में उस ग्रन्थराशि की ओर सङ्केत किया [illegible] प्रमाणार्थ दस खच्चरों पर लदवाकर लाया था।

दूसरे प्रश्न का उत्तर एक खगोलशास्त्री ने इस प्रकार [illegible] 'चन्द्रलोक बहुत दूर है। भूलोक की कोई ऐसी वस्तु [illegible] की रचना हो, वहाँ से नहीं देखी जा सकती। अपना [illegible] प्रमाणित करने की सम्भवतः मुझे आवश्यकता नहीं है, [illegible] मेरा ८० वर्ष का अध्ययन और अनुशीलन मेरे [illegible] समर्थक है।'

तीसरे प्रश्न का उत्तर देने के लिए एक वृद्ध मन्त्री खड़े [illegible] उन्होंने कहा—

'युवराज को देश के पुरातन इतिहास की शिक्षा [illegible] मिलनी चाहिए जिससे वे विगत सम्राटों के अनुभवों से [illegible] उठाकर राजसत्ता के परिचालन की योग्यता प्राप्त कर सकें।'

चतुर्थ प्रश्न के उत्तर में अनुभवी सेनापति ने [illegible] 'सबल सैन्य से युक्त कुशल सेनानी ही प्रजा की रक्षा [illegible] तरह कर सकता है।'

शेष उपस्थित विद्वानों ने हाथ उठाकर क्रमशः [illegible] अनुभवी वयोवृद्धों के कथन का पूर्ण समर्थन किया। [illegible] कुछ देर तक स्तब्ध बैठे रहे। फिर जैसे अन्धकार में किरण [illegible] की आशा में उन्होंने वीराङ्गना-प्रदत्त उस कशा की ओर देखा

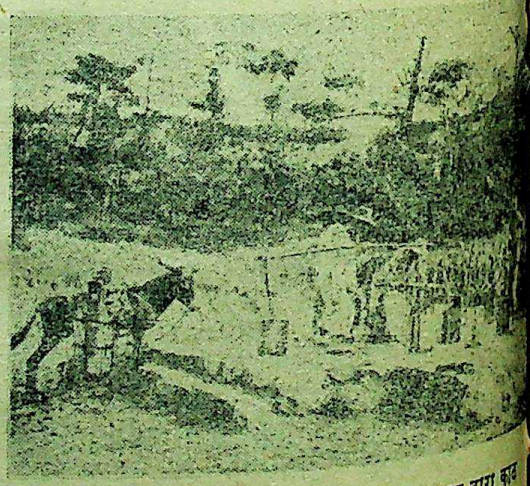

दीवाल के पास एक कुवाँ—जहाँ से खच्चर-द्वारा काटे के पीपों में जल ढोया जाता है

सहसा उनकी नोकीली नासिका फड़क उठी। [illegible] लम्बाई बढ़-सी गई। कपोतवक्ष फूल गया। अपने [illegible] को और भी भीषण बनाते हुए वे गर्ज कर बोले—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन सबको बाँध लो।'

सभाभवन में आतङ्क छा गया। सैनिक बढ़े और सब विद्वान् बाँध लिये गये। उनको सम्बोधन करते हुए सम्राट् ने

'सुनो! ये बुद्धिजीवी हैं। मृतकों के रात-दिन परामर्श करते-करते इनकी मर गई है। ये वर्तमान से दूर उस लोक में रहते हैं जिसका कोई अस्तित्व है, जिस पर भी ये राजनीति में हस्तक्षेप का साहस कर बैठते हैं। राष्ट्र की दुर्दशा का यही मुख्य कारण है। सुनो। प्रश्नों के ठीक उत्तर ये हैं—

१—संसार का प्रथम सम्राट् मैं हूँ।

२—चन्द्रलोक में एक दीवाल है जो यहाँ से साफ़-साफ़ दिखाई देती है। मैं भी एक ऐसी दीवाल बनवाऊँगा चन्द्रलोक से दिखाई दे।

'वान-ली-चांग-चेंग' का एक दृश्य

३—युवराज को सर्वप्रथम आत्मबलिदान की शिक्षा मिलनी चाहिए। वह अपने बलिदान से जिस प्राकार की स्थापना करेगा वह युगयुगान्तर तक अचल रहेगी।

४—प्रजा अपनी रक्षा स्वयं कर सकती है, यदि उसका प्रत्येक व्यक्ति अपनी शक्तिभर और सचाई के साथ कर्त्तव्य का पालन करे।'

सम्राट् ने आगे कहा—'अब भूतकाल को दफना देना होगा और उसकी समाधि पर चीन की प्रतिष्ठा होगी। इसके लिए यह आवश्यक है कि इन समस्त बुद्धिजीवियों को च्याऊक्वान और शेहाईक्वान के बीच सौ-सौ ली के अन्तर पर जीवित ही गाड़ दिया जाय और इनका समस्त पुराण-साहित्य भी इनके साथ ही दफ़ना दिया जाय।

चीन के इतिहास का प्रारम्भ आज से होगा। उसकी नींव 'वान-ली-चांग-चेंग' के साथ पड़ेगी। पुराण और उसके अनुयायियों की अस्थियों पर इस इतिहास का प्रासाद खड़ा होगा। उसका गारा हमारे विद्रोहियों के रक्त से गीला किया जायगा। युवराज अपनी पत्नी के साथ इस प्रासाद के प्राकार का शिलान्यास करेंगे और उनका पथ प्रदर्शन करेगा यह कशा और मेरा श्वेत अश्व।'

संक्षेप में चीन की बड़ी दीवाल की यही कहानी है। खगोल-विद्या विशारदों का कथन है कि यही एक मनुष्यकृति है जो चन्द्रलोक से दिखाई पड़ सकती है। इस दीवाल के पास बसनेवाले कृषकों का अब भी विश्वास है कि चिन शी हुआङ्गती अमर है और वही उनका सम्राट् है। वे जान-बूझकर भी इस तथ्य पर विश्वास करने को तैयार नहीं हैं कि उस घटना को अनेक शताब्दियाँ बीत चुकी हैं और तब से अब तक चीन अनेक परिवर्त्तनों में से गुज़र चुका है।

दीवाल के निकट एक बुद्ध-मूर्त्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत में अङ्क-परिगणन सम्बन्धी अज्ञान

प्रोफ़ेसर प्रेमचन्द्र मलहोत्र

युद्ध से पहले भी देश में अङ्क-परिगणन सम्बन्धी ज्ञान बहुत अधूरा और दोषयुक्त था। युद्ध के छिड़ने पर इस ज्ञान के अधूरे होने तथा अप्राप्य होने का और भी बहाना बन गया; क्योंकि यह भय था कि ऐसे ज्ञान के प्रकाशन से शत्रु तक उपयोगी सूचना न पहुँच जावे। अभी हाल में ही ब्रिटिश पार्लमेंट में एक 'ह्वाइट पेपर' उपस्थित किया गया था जिसमें इँग्लैंड के युद्ध-प्रयत्न की विवेचना आँकड़ों से की गई थी। हमारी सरकार को भी इसका अनुकरण करना चाहिए। एक तो ऐसा ज्ञान अनभिज्ञता दूर करेगा, दूसरे सरकार की ओर से अनेक भ्रमात्मक विचार हट जावेंगे, तीसरे यह ठीक-ठीक अनुमान लग जावेगा कि भारत ने इस युद्ध में क्या सेवा की है। युद्ध की अवधि में देश की परिवर्तनशील आर्थिक स्थिति का ज्ञान युद्ध के पश्चात् के आर्थिक निर्माण के बारे में सोचने के लिए सहायता देगा।

जन-शक्ति—'ह्वाइट पेपर' से हमें यह पता चलता है कि इँग्लैंड में १ करोड़ से ऊपर पुरुष और स्त्रियाँ सेनाओं तथा युद्ध-सामग्री-उद्योगों में लगी हुई हैं। स्त्रियों ने युद्ध के काम में भरसक हाथ बटाया है। शान्ति-काल की अपेक्षा युद्ध-काल में लगभग २८ लाख से अधिक स्त्रियाँ उद्योगों में काम कर रही थीं। कारख़ानों में कुल ७६ लाख व्यक्ति काम कर रहे थे, जिनमें से ४ प्रतिशत निर्यात के लिए उत्पादन कर रहे थे, ७६ प्रतिशत सरकार के लिए और २० प्रतिशत घरेलू बाज़ार के लिए उत्पादन कर रहे थे।

उत्पादन—युद्ध-सामग्री की वस्तुओं का उत्पादन तो बढ़ा ही है किन्तु आवश्यक कच्चे माल के उत्पादन में भी कमी नहीं हुई। लोहे की उत्पत्ति ५० प्रतिशत बढ़ गई और फ़ौलाद का निर्यात बहुत कम कर दिया गया। फ़ौलाद बनाने के काम आनेवाली वस्तुओं के आयात में कमी होने पर भी फ़ौलाद का उत्पादन २० प्रतिशत बढ़ गया। किन्तु हलकी धातुओं के उत्पादन में अधिक प्रसार हुआ। १९४३ में ५६००० टन अलमीनियम तैयार किया गया जब कि लड़ाई के पहले कुल १८००० टन पैदा किया गया था। इसी प्रकार १९४३ में २३००० टन मगनीशियम तैयार किया गया जब कि लड़ाई से पहले २००० टन पैदा होता था। हलकी धातुयें केवल युद्ध में ही काम नहीं आ रहीं हैं। इनका युद्ध के बाद का भविष्य भी उज्ज्वल है।

खाद्य पदार्थों के उत्पादन का पूरा ध्यान रक्खा गया है। युद्धकाल में खाद्य पदार्थों का आयात ५० प्रतिशत कम हो गया था और मज़दूरों की कमी भी अनुभव की जा रही थी किन्तु तब भी इँग्लैंड में आहार-सम्बन्धी वस्तुओं की उत्पत्ति युद्ध-काल में युद्ध से पहले के समय की अपेक्षा ७० प्रतिशत बढ़ गई। अधिक उत्पत्ति, राशनिंग और मूल्य-नियन्त्रण के कारण, इँग्लैंड जो आहार-सम्बन्धी वस्तुओं के लिए अन्य देशों पर रहता था, दुर्भिक्ष से अपने को बचा सका।

उपभोग—युद्धकाल में नागरिकों के लिए उपयोगी वस्तुओं की कमी हो जाती है। इस कारण उपभोग-व्यय में त्याग आवश्यक हो जाता है। यह त्याग चाहे आत्म-नियन्त्रित अथवा सरकार-नियन्त्रित। किन्तु यदि उपभोग में त्याग को समझ से चरितार्थ किया जावे तो इससे जनता को कम कष्ट होगा, और उत्पादन की कार्य-क्षमता भी बढ़ाई जा सकती है। इसके परिणाम-स्वरूप गृह मोरचे का उत्साह बढ़ता है। इँग्लैंड में उपभोगों की कमी कुल २१ प्रतिशत हुई। नागरिकों में मक्खन, मारजरीन और पनीर की १४ प्रतिशत, ताज़े गोश्त, बेकन और हैम में २४ प्रतिशत, और फलों के रस में ५१ प्रतिशत उपभोग की कमी हुई है।

नागरिकों में कपड़ों का उपभोग ४५ प्रतिशत और जूतों में २७ प्रतिशत तथा फ़रनीचर का ७७ प्रतिशत कम हुआ है।

इँग्लैंड की जनता अपनी आमदनी का ५४ प्रतिशत खर्च करती है। शेष, आय कर और बचत में जाती है।

राजकीय आय-व्यय—ब्रिटिश सरकार का व्यय १९३८ में १०१३ मिलियन पौंड से १९४३ में ५७४१ मिलियन पौंड हो गया। इस ख़र्च की बढ़ती का प्रधान कारण युद्ध था।

इँग्लैंड ने युद्ध का बहुत-सा व्यय चालू आमदनी से किया है। यह इस देश के युद्ध-काल के राजस्व की विशेषता है। युद्ध की अवधि में इँग्लैंड की राष्ट्रीय आय निम्न प्रकार वृद्धि हुई है—

१९३८ में राष्ट्रीय आय ४६०४ मिलियन पौंड थी। १९४३ में राष्ट्रीय आय ८१७२ मिलियन पौंड थी। राष्ट्रीय आय की वृद्धि का कारण बहुत ऊँची क़ीमतें नहीं हैं। क्योंकि 'इकोनोमिस्ट' थोक क़ीमतों का इंडेक्स २१ नवम्बर १९१४ में ११७·९ था और इससे उपरान्त ३१ मार्च १९३७ को इंडेक्स नम्बर ८७·२ था।

इँग्लैंड के युद्ध-व्यय का विश्लेषण करने से हमें यह ज्ञान प्राप्त होता है—

(१) ५० प्रतिशत करों और सरकारी आमदनी से।

(२) ३०½ प्रतिशत बचत से।

(३) ३·५ प्रतिशत सरकारी बचत से।

(४) ११ प्रतिशत विदेश में लगाई हुई पूँजी के बेचने से।

(५) २ प्रतिशत युद्ध-हानि की क्षति-पूर्त्ति की ईंडिया से उधार लेने से।

भारत में युद्धकालीन आर्थिक व्यवस्था, तुलनात्मक—जब हम अपने देश की युद्धकालीन आर्थिक स्थिति से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की युद्ध-काल की आर्थिक स्थिति से तुलना करते हैं तो देश के निम्नलिखित भद्दे रूपों पर दृष्टि पड़ती है,—

(१) निन्दनीय आहार-संकट—अन्न-कृषि प्रधान वाले में बङ्गाल के दुर्भिक्ष की घटनाओं से किसके रोंगटे खड़े होंगे।

(२) आवश्यक उपभोज्य पदार्थों तथा आहार और पुष्टि-क वस्तुओं की विशेष न्यूनता।

(३) देश की उत्पादन-शक्ति में पर्याप्त वृद्धि।

(४) क़ीमतों का भयङ्कर रूप से चढ़ना।

(५) मुद्रा का असाधारण प्रसार।

(६) युद्ध के बोझ का असमान वितरण—मुद्रा-प्रसार के कारण।

(७) मूल्य-नियन्त्रण तथा अन्य नियन्त्रण-साधनों की असफलता।

अतीत के दो चिह्न

(१) कोणार्क

पण्डित हनुमान् शर्मा

सन् १९३५ ईसवी के जुलाई मास की 'सरस्वती' (भाग ३६, खण्ड २, संख्या १) में उड़ीसा प्रान्त के कोणार्क का सचित्र वर्णन प्रकाशित हुआ था। उसमें वहाँ के एक अत्यन्त प्राचीन जीर्ण-शीर्ण, विदीर्ण, भग्नावशिष्ट किन्तु प्रतिभा-

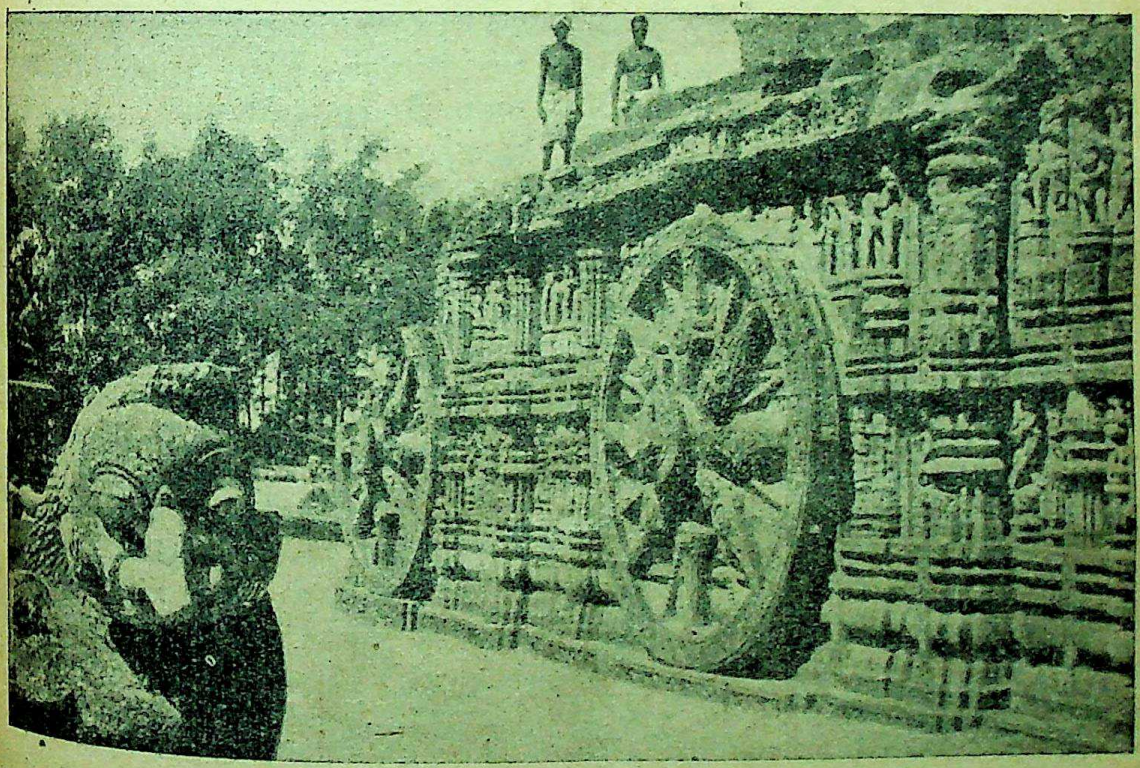

मन्दिर के रथ का चक्र, जिस पर समूचा मन्दिर स्थित है

शाली और सुदर्शनीय सूर्य-मन्दिर का आश्चर्यजनक वर्णन भी किया गया था। विज्ञ पाठक शायद भूले नहीं होंगे कि उक्त मन्दिर हजार मन वज़न के एक ही पत्थर में निर्माण किये हुए पहियों के सुन्दर और सुदीर्घ रथ में श्री सूर्यनारायण विराजमान थे जिसके पहियों की ऊँचाई १४ फ़ुट थी। सुनकर आश्चर्य होता है कि उस मन्दिर के दो सौ फ़ुट ऊँचे शिखर पर ३२०० मन वज़न का कलश था (जो इतनी ऊँचाई पर किस प्रकार चढ़ाया गया होगा) और वहीं ५००० मन से भी कुछ अधिक वज़न की 'नवग्रहों' की चौकी थी (जिसको कलकत्ताम्यूज़ियम में रखने के लिए ले जाने को आधुनिक प्रकार के अनेक प्रयत्न और प्रयास किये गये तो भी जा नहीं सकी थी)। ये सब किसी गोल-मोल अमानद पत्थर के टुकड़े नहीं थे किन्तु 'भारतीय भवन-निर्माणकला' के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वोत्कृष्ट आदर्श (या नमूना) थे। इनकी सूक्ष्मतम गढ़ाई, जड़ाई, कुराई, सुघराई, बेल-बूटे, चित्र और मूर्तियों की मनोहारिता या चित्ताकर्षक रचना देखने योग्य थी। उसी कोणार्क के विषय में ब्रह्मपुराण (कृष्णजन्म खण्ड अध्याय २६) में लिखा है —

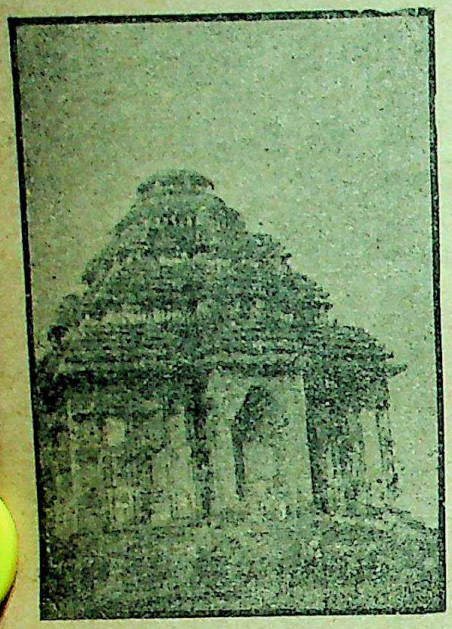

कोणार्क—मन्दिर का पूर्वीय द्वार

दक्षिण समुद्र का तीरवर्ती 'कोणार्क' अति पवित्र और परम रमणीय स्थान है। उसका विस्तार एक योजन का है। यह औड्र (उड़ीसा) प्रान्त में प्रतिष्ठित है। एतद्देशनिवासी तत्कालीन ब्राह्मण बड़े विद्वान्, धर्मशील, सत्यवादी, जितेन्द्रिय, निखिल-शास्त्र-निष्णात, पूज्य और वन्दनीय हैं। श्राद्ध-दान, होम-यज्ञ और यजन - याजनादि सत्कर्मों के आचार्य एवं सुत, धन, दारा और सम्मानादि से सम्पन्न (या संयुक्त) हैं। यही क्यों, वहाँ के क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र भी अपने-अपने धर्म-कर्म आदि में परायण, परोपकार आदि में निरत, शूरवीर, तेजस्वी, शास्त्रों के ज्ञाता, ईश्वर के मानने-वाले, व्यवसाय कुशल, धनवान् और सेवा-कार्य में सुदक्ष हैं। वहाँ चन्द्रभागा नदी और नदीपति लवणार्णव (दक्षिण समुद्र) बड़े पवित्र और महान्

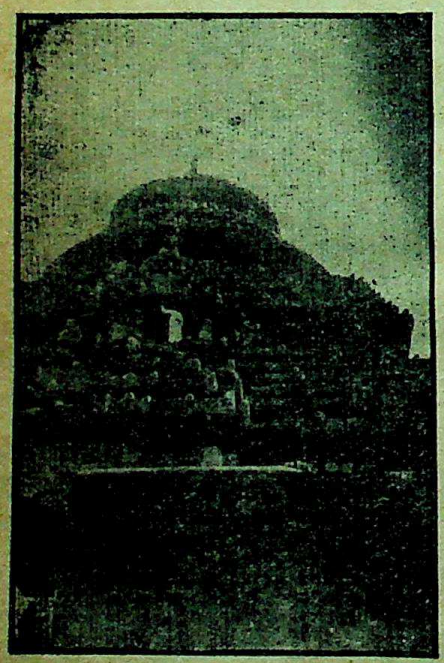

कोणार्क का पृष्ठभाग

महत्त्व के तीर्थ हैं। उनमें स्नान दान आदि करने से मनुष्यों को महान् फल प्राप्त होता है। इनके अतिरिक्त स्थान में चम्पक, अशोक, बकुल, करवीर, पाटल, कर्णिकार, नागकेसर, तगर, धव, अतिमुक्त, कुब्जक, मालती, मल्लिका, केतकी, लकुची, कदम्ब, ताल, तमाल, पूगफल, नारियल, कपित्थ, जाम्बूनद, अश्वत्थ, औदुम्बर, आम्र, मुचुकुन्द, चन्दन, और देवदारु आदि अनेक प्रकार के फल पुष्प और पत्रों के* विविध वृक्ष उस देश की सुख-शान्ति, शोभा, सम्पत्ति और स्वास्थ्य को बढ़ाते हैं। और कला-कौशल कुशल कारीगर भी वहाँ सब प्रकार के आवश्यक अति-सुन्दर काम करते हैं। इन सबके होने से वह स्वर्ग के समान है। और धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का देनेवाला है। विशेषता यह है कि ऐसे स्थान कोणार्क में भुवनभास्कर साक्षात् सूर्यनारायण विराजते हैं संसार को सुख देते हैं। माघ शुक्ल सप्तमी के दिन में सूर्योदय से पहले शौच-स्नान आदि नित्य कर्म से निवृत्त

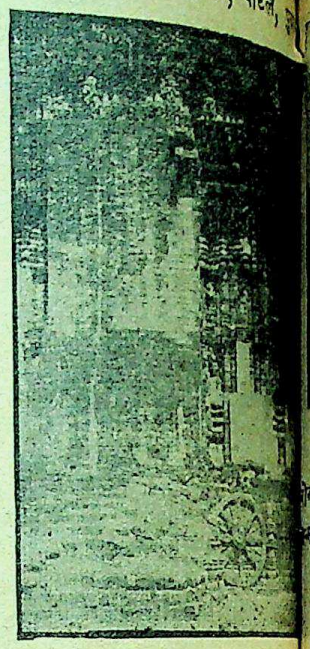

कोणार्क का उत्तरी द्वार जो आजकल

---

* तत्रास्ते भारते वर्षे दक्षिणोदधिसंस्थितः।
औड्रदेश इति ख्यातः स्वर्गमोक्षप्रदायकः ॥१॥
तत्र देशप्रसूता ये ब्राह्मणाः संयतेन्द्रियाः।
तपःस्वाध्यायनिरता वन्द्या पूज्याश्च ते सदा ॥२॥
श्राद्धे दाने विवाहादौ यज्ञे वाऽचार्यकर्मणि।
प्रशस्ताः सर्वकार्येषु तत्र देवोद्भवा नराः ॥३॥
इतरेपि त्रयो वर्णास्तत्र तिष्ठन्ति धार्मिकाः।
सर्वत्र बालुकाकीर्णे देशे सर्वगुणान्विते।
चम्पकाऽशोकबकुलैस्तथान्यैर्मल्लिकादिभिः ॥४॥
क्षेत्रं तत्र रवेः पुण्यमास्ते जगति विश्रुतम्।
कोणादित्य इति ख्यातो भुक्तिमुक्तिप्रदायकः ॥५॥
(ब्रह्मपुराण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदय होते हुए सूर्य के दर्शन करने, अर्घ्य और दान आदि से अमित फल होता है। और उपासक लोग, सभी प्रकार

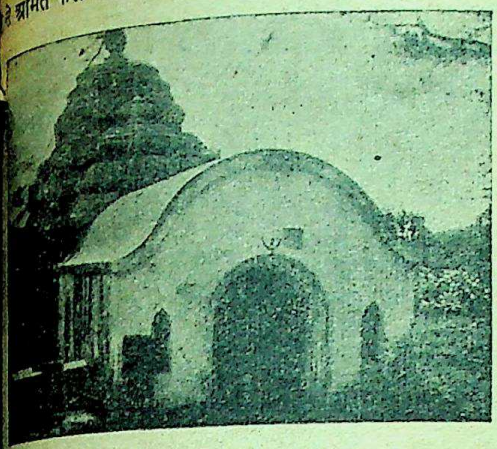

रामचण्डी का काली-मन्दिर

रोग, दोष, भय, चिन्ता और व्याधि आदि से विनिर्मुक्त होकर सम्पत्ति एवं सन्तान आदि से संयुक्त होते हैं। स्मरण रहे कि यह पौराणिक वर्णन बहुत प्राचीन काल का है और कालान्तर के कारण 'कोणार्क' की प्राचीन परिस्थिति या सत्स्वरूप अब बहुत कुछ बदल गया है। अब चन्द्रभागा सूख गई है। बालू के टीले वर्तमान हैं। उपर्युक्त नेमी धर्मी चातुर्वर्ण्य की पूर्वातीत शोभा समाप्त हो गई है। बस्ती का विस्तार अब केवल २०-३० घर मात्र में रह गया है। वृक्ष भी अब केवल दो-तीन प्रकार के ही हैं। और वहाँ भुवनेश्वर से २५ मील तक बैलगाड़ी से जाना पड़ता है। परन्तु इन सब हीनताओं के हो जाने पर भी सूर्यनारायण का नगरोपम मन्दिर और उसकी उपर्युक्त प्रकार की आश्चर्यजनक सामग्री अब भी अलौकिक प्रतिभा के प्रभाव से प्रतिवर्ष (माघ शुक्ल सप्तमी को) देश-देशान्तर के अगणित नर-नारियों का आकर्षण करती है। उस दिन वहाँ लगभग दस हज़ार यात्री एकत्र होते और सूर्योदय के समय सूर्यनारायण के दर्शन कर कृतकृत्य होते हैं।

(२) १२४३ का एक शिलालेख

श्रीयुत रावत चतुर्भुजदास चतुर्वेदी, क्यूरेटर भरतपुर स्टेट म्यूज़ियम

इधर खोज के सिलसिले में मुझे एक पत्थर प्राप्त हुआ था। जब मैंने उलट-पलटकर देखा तो ऐसा प्रतीत हुआ कि पर कुछ लिखा है। मैंने उसे साफ़ करवाया तो ज्ञात हुआ उक्त लेख सुन्दर नागरी अक्षरों में है। यद्यपि कुछ अक्षर खण्डित हो गये हैं फिर भी लेख का आशय समझने में कुछ बाधा नहीं पड़ती। लेख इस प्रकार है—

सवतु १२४३ आषा सु० वि ३ गु सो श्री महलपाल देव ..... भणग प.....भार्या लीला.....दाहा नाम बालू भार्या वसा घटितं भूप कावंतीपति :—

यह लेख, जैसा कि ऊपर कह चुका हूँ, एक शिलाखण्ड पर है। इस शिलाखण्ड के ऊपरी भाग पर चरण-चिह्नों के पर जूतों के चिह्न बने हैं। उनके नीचे एक नग्न स्त्री का है जो बैठी हुई है। उस स्त्री के कानों में कुण्डल हैं कण्ठ में हँसली-जैसी कोई चीज़। दाहने हाथ में कुम्भ अङ्ग-प्रत्यङ्ग ठीक हैं पर चेहरा कुछ विकृत हो गया है। दो पार्श्वों में दो मूर्त्तियाँ और भी हैं जिनमें एक स्त्री की दूसरी पुरुष की। एक का आधा धड़ है और दूसरी मूर्त्ति सिर नहीं है।

भरतपुर राज्य में प्राप्त होनेवाली मूर्त्तियों और शिलालेखों विदित होता है कि यह भूभाग कभी बहुत महत्त्व का रहा भरतपुर-आगरा सड़क पर भरतपुर से ६ मील की दूरी एक स्थान नोंह है। वहाँ एक यक्ष की मूर्त्ति विद्यमान है वहाँ के निवासी 'जाक' कहते हैं। वहाँ मुझे एक दूसरी मूर्त्ति भी मिली है जो गाँव के टीले के पास शमीवृक्ष की जड़ से सटी गड़ी थी। यह मूर्त्ति भी स्त्री की है। यह गाँव कई हज़ार वर्ष पहले का बसा कहा जाता है। यहाँ यह भी उल्लेख करना आवश्यक है कि नोंह में जैसी मूर्त्ति यक्ष की है, ठीक वैसी ही एक मूर्त्ति परखम में भी पाई गई थी जो मथुरा के 'कर्ज़न म्यूज़ियम' में सुरक्षित है। इसी प्रकार की एक तीसरी मूर्त्ति, जो पटना में प्राप्त हुई थी, कलकत्ता म्यूज़ियम में रक्खी है। इन मूर्त्तियों के इतिहास पर फिर कभी विचार करूँगा। सम्प्रति उक्त शिलालेख के सम्बन्ध में कुछ कहूँगा।

वर्त्तमान भरतपुर राज्य के अन्तर्गत एक तहसील ब्याना है। यह अपने प्राचीन इतिहास के लिए प्रसिद्ध है। पुरान्वेषियों के लिए इस तहसील में बहुत कुछ सामग्री बिखरी पड़ी है जिसमें उषा मन्दिर भी एक है। उषा और अनिरुद्ध की कहानी प्रसिद्ध है। उषा मन्दिर के सम्बन्ध में जनश्रुति है कि उसका निर्माण अनिरुद्ध ने कराया था। अनिरुद्ध के पुत्र का नाम व्रज था जिन्होंने मथुरा में राज्य स्थापित किया था और अपनी शासन-योग्यता के कारण ऐसी ख्याति प्राप्त की थी कि उन्हीं के नाम पर उक्त प्रदेश का नाम भी व्रजमण्डल पड़ गया। इतिहासकारों के मतानुसार उन्हीं महाराज व्रज की चौंसठवीं पीढ़ी में एक राजा विजयपाल नाम के हुए जिन्होंने ब्याना को अपनी राजधानी बनाया। उन्हीं के राज्यकाल में यह नगर बढ़ते-बढ़ते काफ़ी समृद्धिशाली हो गया। नरपति नाल्ह ने उन्हीं की प्रशस्ति में अपना ग्रन्थ लिखा है जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजयपाल रासो के नाम से प्रसिद्ध है। इस ग्रन्थ से विदित होता है कि महाराज विजयपाल को महमूद ग़ज़नवी के भानजे सालार महमूद ग़ाज़ी से लोहा लेना पड़ा था और अबूबक्र क़न्धारी से भी घोर युद्ध करना पड़ा था। इस युद्ध में मुसलमान सैनिक ऐसी बड़ी संख्या में मारे गये थे कि फ़ारसी तवारीख़ के लेखकों के कथनानुसार यदि तीन मुसलमान और मारे जाते तो ब्याना ही मक्का बन जाता।

ही वीरगति को प्राप्त हुआ था। उपर्युक्त शिलालेख सम्बन्ध उसी से है।

ब्याना शहर से तीन मील दूर पहाड़ पर विजयपाल ने ११वीं शताब्दी में एक दुर्ग भी बनवाया था जो मन्दिरगढ़ कहलाता था। उस भूमि पर प्राचीन काल एक यज्ञस्तम्भ भी विद्यमान था जिसकी स्थापना विष्णुवर्द्धन ने पुण्डरीक नामक यज्ञ की स्मृति में की

१२४३ का शिलालेख

विजयपाल के पुत्र हुए तिहुनपाल। तिहुनपाल के ३ पुत्र थे—(१) महपाल या मदनपाल, (२) धर्मपाल और (३) सोहनपाल। ये पाल भाइयों के नाम से प्रसिद्ध हुए हैं। महपाल अत्यन्त साहसी और शूर था। अनेक छोटी-बड़ी लड़ाइयों में भाग लेने के उपरान्त वह अल्प वय में

उक्त बरिक विष्णु-वर्द्धन विजयस्तम्भ पर इस का लेख है—

'व्याघ्ररात के प्रपौत्र यशोरात्र के पौत्र और यशोवर्द्धन पुत्र बरिक राजा विष्णुवर्द्धन ने पुण्डरीक यज्ञ का यह विक्रमसंवत् ४२८ फाल्गुन वदि ५ को स्थापित किया।

——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्वासित

पण्डित इलाचन्द्र जोशी

[ठाकुर लक्ष्मीनारायणसिंह प्रवास में थे। वहाँ उन्होंने एक काम सफ़ाई से सिद्ध कर लिया—अपने प्रतिद्वन्द्वी को हटा दिया। इधर बहनों की कोई ख़बर नहीं। महीप और शारदा देवी की बात-चीत में ही प्रकट हुआ कि ठाकुर साहब किस कोटि के छिपे रुस्तम हैं। से बदला लेने की इच्छा से शारदा देवी उनके घर, रूपा की संरक्षिका बनकर रहती है। सब हाल सुनकर महीप सन्न हो रहा। नवयुवक कवि है। ऐसे भयङ्कर मनुष्य के अतिथि बनने से वह बड़े असमञ्जस में पड़ गया।]

महीप भी मुस्करा रहा था। उसने कहा—"इन लोगों ने सोचा होगा कि बिना भाड़े के इतना बड़ा भाँड़ इन्हें मिल सकेगा। विवाह का सगुन मनाने का यह जो ढङ्ग शिक्षित वर्ग में चल पड़ा है वह वास्तव में कम-ख़र्च वालानशीं है।"

शारदा देवी महीप की इस बात पर खिलखिलाकर हँस पड़ीं। पहली बार महीप ने उन्हें खिलखिलाते देखा। उसे मन में बड़ी प्रसन्नता हुई। पर कुछ ही क्षण बाद शारदा देवी ने तनिक गम्भीर रूप धारण कर लिया और कहा—"कुछ भी हो, आपसे व्यक्तिगत रूप से अनुरोध करती हूँ कि आप अवश्य जाइएगा। मैं शान्ता और विजय दोनों को अच्छी तरह जानती हूँ और उनके परिवारवालों को भी। वे लोग बहुत ही भले, बड़े ही सरल स्वभाव और श्रद्धालु प्रकृति के हैं। शान्ता ने आपके सम्बन्ध में कई बार मुझसे बातें की हैं। वह आपकी कविताओं की बहुत ही अच्छी पाठिका है, और आपके प्रति बहुत बड़ी श्रद्धा रखती है। सच पूछिए तो महात्मा गांधी के बाद वह आप को मानती है....."

शारदा देवी ने अन्तिम बात सीधे ढङ्ग से कहनी चाही थी, पर महीप जब अट्टहास कर उठा तो वे भी फिर एक बार मुक्त रूप से खिलखिला उठीं। हास्य का यह क्रम कुछ देर तक दोनों के बीच चलता रहा। गम्भीर राजनीतिक विषय की गहन चर्चा बहुत देर से चल रही थी उसने जैसे सारे वातावरण को पत्थर बरसानेवाले गरजते हुए बादलों की सघन अन्धकारमयी छाया से घेर लिया था, जिससे उन दोनों की साँस की स्वाभाविक गति रुद्ध-सी होने लगी थी। पर उस निमन्त्रण-पत्र ने उन बादलों को फाड़कर मुक्त हास्य के लिए जैसे पथ खोल दिया था। इसलिए दोनों किसी विशेष बात पर उतना नहीं हँस रहे थे जितना बिना किसी उद्देश्य के—केवल अपने भारा-क्रान्त मन को हलका करने के लिए—हँस रहे थे। और आश्चर्य की बात यह थी कि दोनों ऐसा अनुभव करने लगे थे कि सकारण अथवा अकारण हास्य द्वारा वे एक-दूसरे को पहले से बहुत अधिक निकट पाने लगे हैं।

कुछ स्थिर होने के बाद शारदा देवी ने फिर कहा—"हँसने की बात नहीं है। शान्ता सचमुच आपकी भक्त है। आप सचमुच बड़े भाग्यशाली हैं कि इतनी कम अवस्था में आपके भक्तों की संख्या काफ़ी बड़ी हो गई है।"

महीप फिर एक बार अट्टहास कर उठा—मुक्त रूप से। उसे स्वयं अपने अट्टहास पर आश्चर्य हो रहा था, क्योंकि आज के पहले कब उसने अट्टहास किया था, यह बात उसके स्मरण में ही नहीं आती थी। हासातिरेक से उसकी आँखों के कोये भीग गये थे। पलकों के बालों से कोयों को पोंछने के बाद उसने कुछ स्थिर होकर पूछा—"मेरे भक्तों की संख्या काफ़ी बड़ी है, यह बात आपकी जानकारी में कैसे आई है, क्या मैं जान सकता हूँ? क्योंकि, यदि आप विश्वास करें तो, मेरी जानकारी में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है। क्या आप दो-एक उदाहरण दे सकती हैं?"

"हाँ। आपकी सबसे कट्टर भक्त है प्रतिमा। ऐसी कट्टर कि यदि वह स्त्री न होकर पुरुष होती, तो निश्चय ही आपका पक्ष समर्थन करते हुए उसके हाथ से कई व्यक्तियों के सिर फट चुके होते। केवल ज़बान से ही उसने आपके पक्ष में लड़ते हुए बहुत-से व्यक्तियों को मार्मिक रूप से घायल किया है। प्रतिमा को मैं मूर्ख भी नहीं समझती। बहुत-सी बातों में वह बड़ी समझदार लड़की है। पर आपके पक्ष में जब वह बातें करने लगती है तो उसके समान दुराग्रही भी फिर दूसरा मुश्किल से मिलेगा। कई बार मुझसे वह आपके सम्बन्ध में लड़ पड़ी है। उसके व्यङ्ग भी कड़े-कड़े होते हैं....."

महीप के मुख पर से उपहास का भाव एकदम ग़ायब हो गया था। वह अत्यन्त गम्भीरता और परम उत्सुकता से सुन रहा था। अपने प्रति प्रतिमा के पक्षपात से वह स्वयं भी किसी हद तक परिचित हो चुका था, पर उस 'दुराग्रह' का जो उत्कट स्वरूप शारदा देवी ने चित्रित किया था उसकी कोई जानकारी उसे नहीं थी। साथ ही यह जानने के लिए भी वह अधीर हो उठा था कि उसके सम्बन्ध की किस बात को लेकर प्रतिमा शारदा देवी से लड़ पड़ी थी। पर इस सम्बन्ध में सङ्कोचवश कोई प्रश्न करने का साहस उसे नहीं हुआ।

अपनी आकस्मिक गम्भीरता को फिर एक बार परिहास में परिणत करने की कृत्रिम चेष्टा करते हुए महीप ने कहा—"अच्छा, मान लिया कि आपने एक अकाट्य रूप से प्रमाणित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदाहरण दे दिया। पर एक ही उदाहरण से तो काम नहीं चलेगा। आपने बताया था कि मेरे भक्तों की संख्या काफ़ी बड़ी है।"

शारदा देवी ने एक बार परीक्षक की-सी अन्तर्भेदी दृष्टि से उसकी ओर देखा, और फिर सहज भाव से कहने लगीं—"आपके दूसरे भक्त रहे हैं ठाकुर धीराजसिंह।"

धीराज का नाम लेते ही शारदा देवी का मुँह तत्काल अत्यन्त गम्भीर हो आया और भीतर ही भीतर उन्होंने दाँत से अपनी जीभ काटी—जैसे असावधानी से उन्होंने ग़लत समय पर एक ग़लत नाम ले लिया हो। महीप के मुख पर भी क्षण भर के लिए एक घनी छाया घिर आई।

शारदा देवी मुँह से निकली हुई बात को अधूरा छोड़ना नहीं चाहती थीं। क्षण-भर ठहरने के बाद वे कहने लगीं—"हाँ, बेचारे धीराजसिंह भी आपके भक्तों में से थे। समय-समय पर आपकी भावधारा की कड़ी आलोचना करने के बावजूद भी वे आपके भक्त थे। आपकी कविताओं से उन्हें अपने जीवन में बड़ी महत्त्वपूर्ण प्रेरणायें मिली थीं—बहस में भले ही वे उन प्रेरणाओं का विरोध करते रहे हों। उन प्रेरणाओं ने उनके जीवन में भयङ्कर द्वन्द्व मचा दिये थे। वास्तविक जीवन के कड़वे अनुभवों के फल-स्वरूप वे उन प्रेरणाओं से छुटकारा पाना चाहते थे, पर चाहने पर भी उनसे मुक्त नहीं हो पाते थे।"

धीराज की चर्चा से दोनों एक बार गहन रूप से विचारमग्न हो गये। कुछ क्षण के लिए कमरे में मृत्यु-मौन सन्नाटा छा गया—जैसे आधी रात में आधे गाड़े हुए मुर्दे अचानक क़ब्रों की मिट्टी इधर-उधर छितराकर उठ खड़े हुए हों। महीप सोचने लगा कि यदि ठाकुर लक्ष्मीनारायण सिंह ने वास्तव में धीराज की हत्या की हो, जैसा कि शारदा देवी का अनुमान है (और शारदा देवी का अनुमान ठाकुर साहब के सम्बन्ध में उपेक्षणीय नहीं हो सकता, इतना महीप जान चुका था) तो इस हत्याकाण्ड के सम्बन्ध में शिष्टता-वश चुप्पी साध लेने से काम न चलेगा। पर यदि वह चुप्पी न साधे तो क्या अपनी प्रकृति के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए उसे घोर मानसिक सङ्घर्ष का सामना करना पड़ेगा जिससे वह बराबर कतराने की चेष्टा करता रहा है। और, विद्रोह करके भी वह कर ही क्या सकेगा? सहसा उसके मन में इस विचार से आतङ्क छा गया कि निकट भविष्य में उसके वर्तमान जड़ जीवन में भूकम्प का आना अनिवार्य है। उसे अपने चारों ओर ऐसे उपकरण जुटते हुए दिखाई दे रहे थे जो आनेवाले भूकम्प की पूर्व सूचना उसे दे रहे थे। उसके न चाहने और कतराने पर भी ये उपकरण जुट रहे थे, जो उसे भाग्य की एक पूर्व-कल्पित निश्चित योजना-सी लगने लगी थी। जब से वह ठाकुर साहब के यहाँ आया था तब से निपट जड़-जीवन बिताने के कारण वह उस जड़ता का आदी इस हद तक हो गया था कि किसी तूफ़ानी बल्कि साधारण सक्रियता की कल्पना से भी उचकने लगा था। आज पहली बार उसे अपने मन की इस शोचनीय दशा का ज्ञान हुआ और वह सिहर उठा। एक ओर उस जड़ता को त्यागने की प्रवृत्ति उसे नहीं होती थी, दूसरी ओर अपनी उस जड़ता के बोध से वह अत्यन्त भयभीत भी हो उठा।

शारदा देवी के जीवन के अनुभवों का परिचय प्राप्त होने से वह इधर कुछ दिनों से अपने को एक आश्चर्यजनक और रहस्यमय लोक में पहुँचा हुआ पाने लगा था और उसकी उलझन में पड़कर वह धीराज की बात एकदम भूल ही गया था। [illegible] आज फिर जब शारदा देवी ने उसकी चर्चा चलाई तो वह अत्यन्त विचलित हो उठा। उसे यह बोध होने लगा कि नीलिमा, धीराज (की मृतात्मा) और शारदा देवी—ये [illegible] व्यक्ति तीन तरफ़ से उस पर अङ्कुश चलाकर उसके जड़ [illegible] निष्क्रिय प्राणों को न जाने भविष्य की किस अज्ञात [illegible] की ओर ढकेले लिये जा रहे हैं, जिससे उसके मन की [illegible] सुखालसमयी अनुभूति में बाधा प्राप्त होने से उसे [illegible] हो रहा है।

वह चुप रहा। केवल जिज्ञासु-दृष्टि से शारदा देवी की [illegible] देखता रहा। शारदा देवी ने एक विशेष अर्थ-भरी [illegible] महीप की ओर देखते हुए कहा—"नीलिमा के सम्बन्ध में [illegible] निश्चित रूप से नहीं कह सकती कि वह आपकी भक्त [illegible] नहीं। जहाँ तक मैं अनुमान लगा पाई हूँ, आपकी बहुत [illegible] कवितायें उसे प्रिय अवश्य रही हैं। पर आपकी व्यावहारिक बुद्धि पर उसे पूर्ण विश्वास है, ऐसा मैं नहीं कह सकती। [illegible] मुझे इस बात पर सन्देह है—और आश्चर्य भी—कि [illegible] सामाजिक और सांसारिक प्रश्नों पर ठाकुर साहब की विवेचना आपकी विवेचना की अपेक्षा उसे अधिक प्रभावित करती है।"

नीलिमा की चर्चा चलाते हुए शारदा देवी के मुख [illegible] एक व्यङ्ग पी हुई-सी विचित्र और अपरिस्फुट मुसकान [illegible] लगी थी।

भीतर ही भीतर एक असहनीय मार्मिक पीड़ा से कराहते [illegible] भी महीप ने बाहर भरसक उस पीड़ा का आभास प्रकट नहीं [illegible] दिया, और नीलिमा की चर्चा को परिहास में परिणत करने [illegible] चेष्टा करता हुआ वह बोला—"तब तो नीलिमा निश्चय ही [illegible] भक्त नहीं है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप [illegible] मेरे भक्तों का ही पता नहीं रखतीं, बल्कि उन लोगों का भी [illegible] आपको है, जो मुझे मूर्ख समझते हैं और मुझसे घृणा करते [illegible] तो आपका यह विश्वास है कि नीलिमा ठाकुर साहब के विचार से प्रभावित है?"

अपने अन्तिम प्रश्न से महीप ने बात का सिलसिला ही [illegible] बदल दिया। शारदा देवी ने फिर एक बार पहले की ही [illegible] एक विशेष अर्थ-भरी तीखी दृष्टि से उसकी ओर देखा [illegible] कहा—"प्रभावित अवश्य है, पर ठीक किस हद तक और [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...यह मैं नहीं कह सकती। क्योंकि, जैसा कि मैं कह चुकी ...आपकी कवितायें उसे बहुत पसन्द हैं, और स्वभावतः ...की कविताओं का काफ़ी महत्त्वपूर्ण प्रभाव उसके जीवन के ...रण पर उसके भाव-जगत् पर पड़ा होगा। पर यह होने ...भी उसकी व्यावहारिक बुद्धि ठाकुर साहब की ओर ही अधिक ...हुई है, ऐसा मुझे लगता है। इसके अलावा, ठाकुर साहब ...व्यक्तित्व में स्त्रियों के लिए एक विशेष आकर्षण है। उस ...कर्षण का कारण क्या है, यह मैं नहीं जानती, और न शायद ...लिमा ही बता सकती है। पर इतना निश्चित है कि जो भूल ...ठाकुर साहब को समझने में मैंने आरम्भ में की थी वही अब ...लिमा भी करने जा रही है।"

"कैसी भूल?"—महीप ने अनजान-सा बनकर पूछा।

"यह धारणा कि ठाकुर साहब से विवाह करने में ही उसका ...कल्याण है।"

"तब क्या ठाकुर साहब से नीलिमा का विवाह सचमुच होने ...रहा है?"

"इसमें भी आपके मन में क्या अभी तक कोई सन्देह बना ...है? विवाह इसी महीने होने जा रहा है। सब बातें ...बिल्कुल पक्की हो चुकी हैं।"

भीतर से उठनेवाली हूक को बरबस दबाने का प्रयत्न करते ...महीप ने कहा—"यह भी तो हो सकता है कि जो ...कारण आपकी दीदी, समिधा, आप और—और—शायद रूपा के ...सम्बन्ध में भी लागू हुआ था, वही नीलिमा के सम्बन्ध में..."

शारदा देवी ने एक तीखे और मार्मिक व्यङ्ग के साथ—...में महीप को घृणा और प्रतिहिंसा की ज्वाला-सी झलकती ...दिखाई दी—मुस्कराकर बीच ही में उसकी बात काटते हुए ...कहा—"तब आप न तो नीलिमा को पहचान पाये हैं, न ठाकुर ...साहब को। नीलिमा के साथ ठाकुर साहब की कोई चालबाज़ी ...नहीं चल सकती, यह बात ठाकुर साहब अच्छी तरह जानते हैं। ...नीलिमा ऐसी माँ की देख-रेख में पली है, जो जीवन में छोटी ...से छोटी बात के सम्बन्ध में सदा सजग और चौकन्नी रही हैं। ...उसकी शिक्षा बहुत छोटी अवस्था से नीलिमा ने भी पाई है। ...इसी लिए मुझे आश्चर्य होता है कि वह ठाकुर साहब से विवाह ...करने के लिए क्यों राज़ी हुई है। शायद वह जानती है कि ठाकुर ...साहब कैसे ही कुटिल और कुचक्री क्यों न हों, वह विवाह के ...बाद भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे—यह इस कारण कि ...ठाकुर साहब की चोटी पकड़कर उन्हें इच्छानुसार घुमाने की ...अपनी योग्यता के सम्बन्ध में उसमें पूरा आत्म-विश्वास है। ...दूसरी बात है कि उसका यह आत्म-विश्वास उसे धोखा भी ...दे सकता है। जो भी हो, इतना निश्चित है कि ठाकुर साहब ...के करने पर भी इस विवाह को टाल नहीं सकेंगे—जब तक स्वयं ...नीलिमा न कतराये। नीलिमा चालाक लड़की है—बड़ी ही ...चालाक। उसने स्वयं अपने को न फँसाकर ठाकुर साहब को ऐसे बन्धनों में फँसा रक्खा है कि वे चाहने पर भी बच नहीं सकते, हालाँकि ठाकुर साहब इस मामले में बचना भी नहीं चाहते—क्योंकि इस विवाह के लिए नीलिमा की अपेक्षा वही अधिक उत्सुक दीख पड़ते हैं।"

"तब क्या वास्तव में नीलिमा इस विवाह के लिए विशेष उत्सुक नहीं है?"

"मैं तो समझती हूँ कि नहीं है। किन्तु उत्सुक न होने पर भी वह इस विवाह को आवश्यक और अनिवार्य समझती है।"

"क्यों? अनिवार्य क्यों समझती है?"

"इसके बहुत-से कारण हैं, जिनमें दो को मैं प्रधान समझती हूँ। एक तो यह कि ठाकुर साहब के समान सम्पन्न और सामाजिक दृष्टि से प्रभावशाली व्यक्ति को पति रूप में पाकर नीलिमा के समान फ़शनेबुल समाज में, किन्तु अपेक्षाकृत असम्पन्न घर में, पली-पुसी लड़की अपने को सुरक्षित समझ सकती है। दूसरा कारण यह है कि उसकी माँ इस विवाह के पीछे जैसे अपने प्राणों की बाज़ी लगाये बैठी हैं, और नीलिमा अपनी माँ के स्नेह-बन्धन में इस हद तक बँधी हुई है कि उनके लिए वह सब कुछ कर सकती है—अनिच्छित पुरुष से विवाह कर सकती है और इच्छित पुरुष को बरबाद कर सकती है।"

"लेकिन यहाँ पर तो अनिच्छित और इच्छित पुरुष का प्रश्न ही नहीं उठता। क्योंकि आपने जो कारण बताये हैं उनसे यह स्पष्ट है कि नीलिमा इच्छित पुरुष से ही विवाह करने जा रही है—अनिच्छित से नहीं। आपने बताया है कि नीलिमा व्यावहारिक बुद्धि ठाकुर साहब की ओर अधिक झुकी है और ठाकुर साहब के व्यक्तित्व में स्त्रियों के लिए—अर्थात् नीलिमा के लिए भी—एक विशेष आकर्षण है। इन कारणों से यह स्पष्ट है कि जिस व्यक्ति से वह विवाह करने जा रही है उसे उसका मन हर तरह से चाहता है।"

"नहीं, इन कारणों से यह बात क़तई स्पष्ट नहीं है,"—एक भेदभरी अभिव्यक्ति मुख पर झलकाते हुए शारदा देवी ने कहा—"मुझे पूरा विश्वास है कि इस विवाह को लेकर नीलिमा के भीतर एक ऐसा द्वन्द्व मच रहा होगा जो उसके मन को अत्यन्त निर्ममता से झकझोर कर उसे एक पल के लिए भी चैन नहीं लेने देता होगा। उसके स्वभाव से मैं बहुत-कुछ परिचित हूँ। उसकी मूल प्रकृति यह बात कभी सहन नहीं कर सकती कि एक ऐसे व्यक्ति के आकर्षण का प्रतिरोध करने में वह असमर्थ सिद्ध हुई है जिसका जीवन कभी किसी महान् आदर्श की ओर उन्मुख नहीं रहा है। उच्च मध्य वर्ग के फ़ैशनेबुल समाज की दूसरी लड़कियों से नीलिमा में यह अन्तर है कि सामाजिक सुख-साधनों के प्रलोभनों के बहाव में बहते हुए भी जीवन के किसी महान (किन्तु अस्पष्ट) लक्ष्य की ओर पग बढ़ाने के लिए उसका अन्तर्मन सदा उत्सुक रहा है। वह स्वयं नहीं जानती कि वह महान् लक्ष्य या आदर्श क्या है या क्या होना चाहिए, पर इतना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुभव वह निश्चित रूप से करती है कि जीवित-से लगनेवाले जिन गुड्डों और गुड़ियों के समाज के बीच में वह रहती है, उनके रात-दिन के ढोंग-भरे जीवन की कृत्रिमता के परे जीवन की महान् वास्तविकता कहीं न कहीं अवश्य वर्तमान है। उस अदृश्य वास्तविकता की अस्पष्ट झाँकी सब समय ज्ञात में या अज्ञात में उसके सामने रहती है, और कृत्रिम दिनचर्या में गले तक डूबे रहने पर भी वह एक क्षण के लिए भी उस कुहरे से ढके ध्रुव तारा को नहीं भूल पाती। यही कारण है कि उसकी अन्तरात्मा ठाकुर साहब से विवाह के लिए क़तई उत्सुक नहीं है। वह जानती है कि जिस विलासी समाज के जीवन की जड़ता ने उसे गले तक डुबा रक्खा है, ठाकुर साहब से विवाह होने पर वह उसे पूर्णतः—नाक, कान और आँखों सहित—डुबा देगी। इस आशङ्का ने उसकी भीतरी चेतना को निश्चय ही आतङ्कित कर रक्खा होगा। एक ओर विलासी समाज की सम्मोहकता से अपने को छुड़ाने का मनोबल उसमें नहीं है, दूसरी ओर जीवन के किसी महान् अज्ञात आदर्श के लिए उसके प्राण छटपटाते रहते हैं। इन्हीं कारणों से एक प्राणघाती असमञ्जस के झूले में उसका हृदय और उसकी बुद्धि सब समय झूलते रहते हैं। ऐसा कोई पुरुष उसे नहीं मिल पाता जो उसकी इन दोनों प्रवृत्तियों में सामञ्जस्य लाने में सहायक सिद्ध हो। ठाकुर साहब उसके मन की एक प्रवृत्ति की चरितार्थता में सहायक सिद्ध हो सकते हैं और आप—आप शायद उसकी दूसरी प्रवृत्ति को किसी हद तक सन्तुष्ट कर सकें। पर आप दोनों में से एक को स्वीकार करना उसके लिए ऐसा है कि या तो वह कटा हुआ सिर ग्रहण करे या कटा हुआ धड़। दोनों को संयुक्त और सजीव रूप में पाना उसके लिए असम्भव हो गया है। जिस समाज में वह रहती है उसमें टिके रहने के लिए चूँकि धड़ के बिना काम नहीं चल सकता, इसलिए वह विवश होकर अन्त में धड़ को स्वीकार करने के लिए राज़ी हो गई—ठाकुर साहब वही धड़ हैं।"

महीप बरबस निकलती हुई लम्बी साँस को बलपूर्वक दबाने की चेष्टा करता हुआ कुछ क्षण तक चुप हो रहा। उसके बाद सहसा उसने जैसे किसी एक अज्ञात शत्रु से लड़ने के लिए साहस बटोर लिया और बोला—"तब क्या आपके मन में नीलिमा के प्रति किसी बात के लिए कोई शिकायत नहीं है?"

"नहीं!" अत्यन्त गम्भीर मुद्रा बनाकर दृढ़ स्वर में शारदा देवी ने कहा—"इसमें सन्देह नहीं कि बीच-बीच में मेरे मन में नीलिमा को कोसने की प्रवृत्ति जग उठी है, पर मेरा वह मनोभाव अधिक समय के लिए कभी नहीं ठहर पाया। दूसरे ही क्षण नीलिमा के प्रति मेरा आक्रोश दया की भावना में बदल जाता रहा है। वह कैसी ही समझदार लड़की क्यों न हो, उसे उस व्यक्ति के स्वभाव और चरित्र के कालजाल से अच्छी तरह परिचित होने के वे सुयोग या कुयोग प्राप्त नहीं हुए हैं, जो मुझे हुए हैं। इसके अलावा, जैसा कि मैं कह चुकी हूँ, उसकी अपनी कुछ निजी और कुछ समाजगत विवशताएँ हैं। सारा आक्रोश तो उस धूर्त के प्रति है जो अपने रहस्य-कुचक्रों का जाल सब समय अपने चारों ओर फैलाये रहता और जो गिरगिट की तरह रङ्ग बदलने की कला में अपनी सानी नहीं रखता।"

महीप फिर एक बार मूर्खों की तरह पूरी तरह आँखें फाड़े चुपचाप शारदा देवी की ओर देखता रह गया। बहुत कुछ करने के लिए उसका मन तिलमिला रहा था, पर एक बात की रूप-रेखा उसके आगे स्पष्ट नहीं हो पाती थी। शारदा देवी सहसा उठ खड़ी हुईं और कमरे से बाहर जाती हुई बोलीं—"शाम को शान्ता के यहाँ आपको हर हालत में चलना होगा। तैयार रहें।"

शारदा देवी के चले जाने पर वह कुछ देर तक जड़ और निश्चल अवस्था में बैठा रहा।

तीसरे पहर शारदा देवी ने फिर एक बार महीप को याद दिलाई कि उसे शान्ता कुमारी के यहाँ चलना होगा। महीप ने बहुत विरोध किया, पर शारदा देवी जैसे उसे ले चलने के लिए क़सम खाये बैठी थीं। लाचार होकर अन्त में महीप को तैयार होना ही पड़ा।

सन्ध्या होने पर वह नहा-धोकर, सज-सँवरकर तैयार हुआ। आज उसने पहली बार अपने बनाव पर विशेष ध्यान दिया। आज उसके युवक मन की सहज प्रवृत्ति इस क़दर सजग हो उठी थी इसका कारण वह स्वयं नहीं जानता था। धोबी के यहाँ से ताज़ा धुले जो अच्छे से अच्छे कपड़े उसके पास थे—गाढ़े का एक अच्छी तरह सिला हुआ कुर्ता और हरे किनारे की खद्दर की धोती—उन्हें पहनकर बालों की कङ्घी करने के सम्बन्ध में भी उसने विशेष ध्यान दिया और अपने गोरे और मख़मल की तरह मुलायम 'क्लीन शेव्ड' गालों पर दो-चार बार हाथ भी फेरे। उसके बाद अन्तिम बार दीवार पर टँगे गोलाकार शीशे में अपना मुँह देखकर वह स्वयं हँसा। क्यों हँसा, इसका भी कारण वह नहीं जान सका। वह हँस ही रहा था कि पीछे से शारदा देवी कमरे में आकर आ पहुँचीं। उनके अत्यन्त निकट पहुँचने पर महीप ने उन्हें देखा। शारदा देवी दबे-पाँव आई थीं। महीप का शीशे में अपना मुँह देखकर हँसना उन्होंने देख लिया था, और उसकी उस अर्द्ध-स्वप्न की-सी एकान्त मानसिक अवस्था में विघ्न डालना उन्होंने उचित नहीं समझा था। अथवा यह भी सम्भव है कि वे महीप को अचानक आश्चर्य में डालने के लिए निःशब्द पगों से आई हों। कुछ भी हो, महीप ने जब पीछे लौटकर अचानक शारदा देवी को देखा तो वह झेंप गया। प्रथम क्षण में उसे ऐसा लगा जैसे वह चोरी करते हुए पकड़ लिया गया हो। पर शारदा देवी जब मन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की चेष्टा करने पर भी सहसा 'फिक्क' करके हँस पड़ीं तो हँसी का छुतहा प्रभाव महीप पर भी पड़ा और वह भी मुक्त से अट्टहास कर उठा। कुछ देर तक दोनों, बिना कुछ अपनी-अपनी हँसी का एक दूसरे को बिना कोई कारण हँसते रहे। शारदा देवी की आँखों से बहुत अधिक के कारण आँसू तक निकल गये थे।

बहुत सुन्दर—वास्तव में वे कभी बहुत ही सुन्दर दिखाई रही होंगी,"—महीप मन ही मन कहने लगा—"और इस भी कतई कुरूप नहीं दिखाई दे रही हैं।" वास्तव में देवी के चीमड़ मुख की उस समय की अभिव्यक्ति उसे ही स्निग्ध और प्रिय लग रही थी।

"आज मैंने जाना कि आप सचमुच कवि हैं और युवक हैं,"—को सफ़ाई से पोंछने के बाद शारदा देवी ने कहा।

"तो आज तक आप क्या यह समझती थीं कि मैं अकवि और वृद्ध हूँ?"

"नहीं, मैं समझती थी कि आप केवल किताबी कवि हैं और रूक्ष हैं।"

"अर्थात् बाल-कवि हूँ?"

"क़रीब-क़रीब यही समझिए। मैं आपको उपेक्षित बालक समझती थी जिसको न स्वयं अपने सजाव-सिंगार का कोई ध्यान है जिसे कोई दूसरा इस सम्बन्ध में सुझानेवाला है। आज सचमुच युवक मालूम पड़ते हैं और छैला भी।"

"बाँका छैला?"

"बाँका-बाँका मैं कुछ नहीं जानती। आपको तो बाल की खाल निकालने और बात में बतंगड़ खोज निकालने में एक मिलता है—एक निराला सुख जिसे मैं अभी तक ठीक नहीं पाई। मुझे तो कभी-कभी ऐसा लगता है कि आपको बजाय कवि होने के प्रेस-रिपोर्टर होना चाहिए था। प्रकृति की यह ख़ामख़याली ही थी कि उसने आपके भीतर कविता के बीज भर दिये, वर्ना—"

"वर्ना क्या?"

"वर्ना आप एक अच्छे ख़ासे प्रेस-रिपोर्टर या ख़ुफ़िया विभाग के कर्मचारी हो सकते थे।"

महीप फिर एक बार खुलकर अट्टहास कर उठा। वह स्वयं नहीं जानता था कि आज उसमें खुलकर हँसने की इतनी अधिक शक्ति कहाँ से आ गई, और ज़रा-ज़रा-सी बात पर उसके भीतर फुरेरियाँ क्यों उठ रही हैं।

कुछ सँभलने के बाद उसने पूछा—"क्यों, आपके मन में यह धारणा कैसे जम गई कि मैं एक अच्छा-ख़ासा प्रेस-रिपोर्टर या जासूस हो सकता हूँ?"

"आपकी बातों के ढङ्ग से। तीन-चार दिन के भीतर मैंने आपसे न जाने कितने विषयों पर कितनी बातें कही होंगी—स्वयं मुझे याद नहीं रह गया कि मैंने क्या-क्या कहा—पर आपने किसी भी विषय पर अपना कोई निजी मत प्रकट नहीं किया। केवल मेरे भीतर की अधिक से अधिक बातें बाहर निकलवाने के उद्देश्य से बीच-बीच में आप परोक्ष रूप में कोई बात कह देते थे, जो आपका निजी मत न होकर केवल प्रश्न के ही रूप में मेरे सामने आता था। आप सचमुच जितने छोटे हैं उतने ही"—

"खोटे हैं!"—शारदा देवी की बात स्वयं पूरा करते हुए महीप ने कहा, और वह फिर एक बार हँस पड़ा।

"चलिए, बहुत हो चुका। अब देर न कीजिए, समय हो चुका है।"

(क्रमशः)

गीत

कुमारी शैल रस्तोगी

मन, आशावादी ही रह रे।
है दूर, दूर मंज़िल सुदूर
चल रहा प्रभञ्जन प्रबल क्रूर।
वह चला जिधर ही, प्राण-हास,
द्रुत-गति से, उसी ओर बह रे।
मन, आशावादी ही रह रे।
करुणा के घन बरसें मुझपर—
इन सजल दृगों से उठ-उठकर।
अभिशाप हँसें, वरदान थकें,
वह करुण-कहानी ही कह रे।
मन, आशावादी ही रह रे।

बेसुध जीवन की विभावरी—
सोई अलसित कल्पना-परी
खो गई विगत-सुधि में, सुख-निधि,—
दुख भरी निराशा चल सह रे।
मन, आशावादी ही रह रे।
सूनी ममता में आज नया—
भर प्यार गई, युग की विजया।
मेरे सपनों की राखों में—
अवशेष एक, आशा, यह रे।
मन, आशावादी ही रह रे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रायबहादुर डाक्टर श्यामसुन्दरदास

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पण्डित लक्ष्मीप्रसाद पाण्डेय

सन् १९१३ की बात है। जन्माष्टमी के दिन दोपहर से पहले मैं अपने मित्र पं० लक्ष्मीधर शुक्ल के साथ लखनऊ में चौक के पास उस स्थान पर पहुँचा जहाँ बाबू श्यामसुन्दरदास रहते थे। इससे पहले बाबू साहब की कीर्ति ही सुनी थी। उन दिनों हिन्दी के नामी लेखकों से मिलने-जुलने की मुझे धुन रहती थी। बाबू साहब का नया शरीर था। कुछ रुग्ण-से थे। बड़े प्रेम से बातें कीं। कुछ कालेज के छात्र भी उस समय आपसे भेट करने गये हुए थे। इसके बाद बीच-बीच में आपसे मिलने मैं आपके स्थान पर जाता था। लखनऊ में हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का अधिवेशन आपकी उपस्थिति में हुआ था और आपका सहयोग स्वागतकारिणी को प्राप्त था। लखनऊ-कांग्रेस के अवसर पर जब पं० माधवरावजी सप्रे को कांग्रेस से छुट्टी मिली तब वे दो-एक दिन 'कालीचरण खत्री पाठशाला' (मुहल्ला सराय माली ख़ाँ) में बाबू साहब के यहाँ ठहरे। सप्रेजी से बाबू साहब की पुरानी मित्रता थी। वहाँ मैं भी गया। बातचीत के सिलसिले में बाबू साहब ने मुझसे कहा कि प्रयाग कब जा रहे हो। चिन्तामणि बाबू ने तुम्हारे बाबत पूछा था। हमने अनुकूल सम्मति भेज दी है। सङ्घर्ष से बचना।

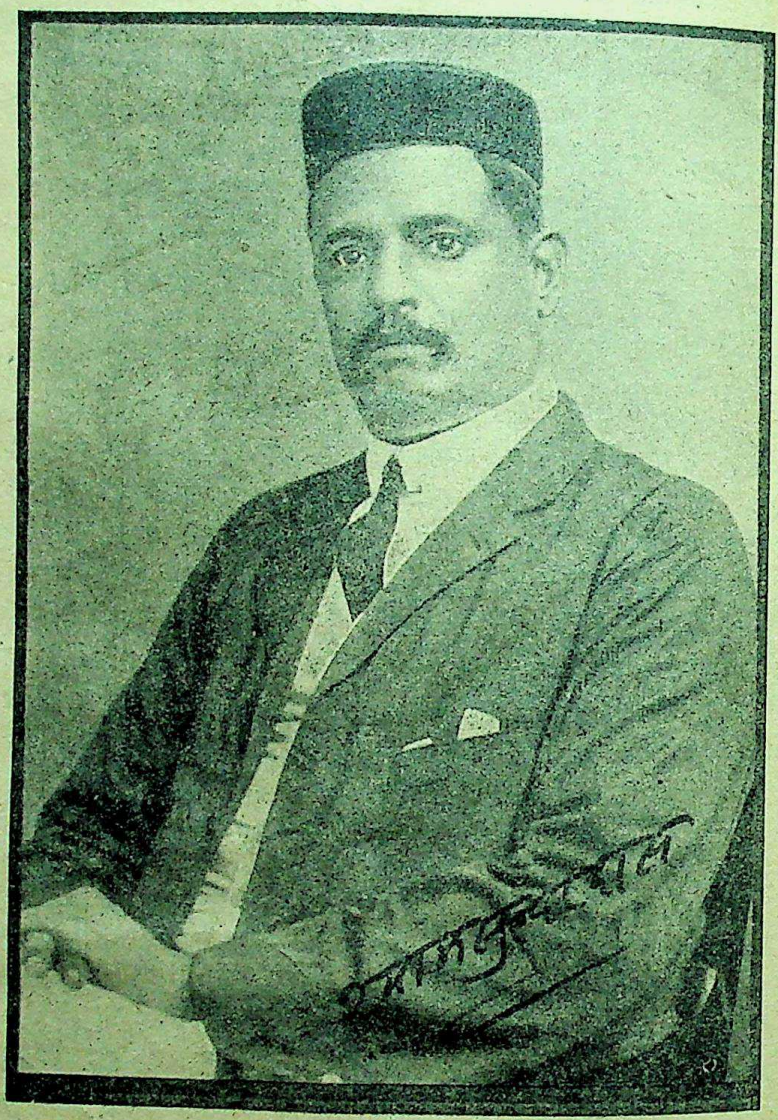

बाबू श्यामसुन्दरदास

लखनऊ में बाबू साहब से मेरी साधारण जान-पहचान थी। फिर भी मुझसे कुछ पूछे-ताछे बिना उन्होंने मेरी सिफ़ारिश कर दी। सप्रेजी भी इस पक्ष में थे कि मैं प्रयाग-प्रवास को स्वीकार कर लूँ।

लखनऊ में बाबू साहब से जो मेरी साधारण जान-पहचान हुई थी उसके घनिष्ठता में परिणत होने की मैंने कल्पना की थी। लखनऊ से मैं प्रयाग चला आया और कुछ वर्ष बाद बाबू साहब काशी पहुँच गये। इस बीच एक-आध बार उनसे प्रेस में ही भेट हुई और सम्मेलन के कानपुर-अधिवेशन में एक ही स्थान में प्रायः मुलाक़ात रही। सन् '२३ में पहुँच जाने पर मैं साहब से लगभग तक दूर ही रहा। के काम से उनके आने-जाने लगा मूर्खता से परिचित और मुझ पर विश्वास लगे। अन्त में वे पुस्तकों का अलि मुझे दिखाये बिना न देते थे। कहे देते थे कि तुम्हें पास कर दिया हमारे पास भेजने ज़रूरत नहीं। उन्होंने घटाने-बढ़ाने भी अधिकार दे था। मैं इसमें महत्ता ही देखता जहाँ कुछ पण्डित लोग अपनी मूल के मत्थे मढ़ने को तैयार ही नहीं होते स्वयं इसका हिंडोरा पीटते हैं और भावुक लोग उस पर आँख मूँदकर विश्वास हैं वहाँ बाबू साहब ऐसी बात से कोसों दूर रहते थे। यदि यह उदारता न होती तो उनका हिन्दी-सेवा-व्रत इतनी कभी न पहुँचता। मैं कई वर्ष तक नागरी-प्रचारिणी सभा के आर्यभाषा-पुस्तकालय में तो आता-जाता था पर पृथक ही था। एक दिन किसी काम से सभा-कार्यालय गया साहब ने तत्कालीन सहायक मन्त्री श्री नारायण सप्रेजी से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ता के फ़ार्म पर इनके हस्ताक्षर करा लो। यों मैं सभा का सदस्य ...था और सभा के कार्यों से बाबू साहब के विरत हो जाने पर ...वर पण्डित रामनारायण मिश्र जी ने मुझे ठोक-पीटकर सभा ...ान मन्त्री बना दिया यद्यपि बाबू साहब को यह बात पसन्द ...। मैं जब पिछले मार्च महीने में प्रयाग आने लगा तो ...साहब को खेद हुआ। मैं इस बीच दो बार काशी गया ...ते देखकर वे बहुत ही सन्तुष्ट हुए। गत जुलाई की १२ ...ख को उनसे अन्तिम भेंट हुई थी। शरीर उनका ...ही रुग्ण रहता था। मुझे क्या पता था कि अब वे महाप्रस्थान ...तैयारी में हैं। वे कई बार कठिन बीमारियों से निपट चुके ...इसलिए इस बार उनके बीमार होने की ख़बर पढ़कर मैंने ...नहीं समझा था कि अबकी बार यमराज उनको साथ लिये ...न मानेंगे।

× × ×

'सरस्वती'-सम्पादक के दायित्व से बाबू साहब मुक्त होने लगे तो आपने इस कार्य के उपयुक्त द्विवेदीजी को ही बतलाया। द्विवेदीजी के सम्पादकत्व में 'सरस्वती' का जो पहला अङ्क निकला उसमें कृतज्ञता-ज्ञापन-स्वरूप बाबू साहब का चित्र छापा गया और यह पद्य भी—

मातृभाषा के प्रचारक विमल बी० ए० पास।
सौम्य शील-निधान बाबू श्यामसुन्दरदास॥

आचार्य द्विवेदी और बाबू साहब दोनों ही कट्टर स्वाभिमानी थे। राष्ट्रभाषा हिन्दी की सेवा करना दोनों का चरम लक्ष्य था। एक का क्षेत्र था पत्र-सम्पादन और ग्रन्थ-प्रणयन, दूसरे का क्षेत्र था अध्यापन और ग्रन्थ-निर्माण। हिन्दी के विरोधियों से लोहा लेने में दोनों ही बद्ध-परिकर रहते थे; फिर भी दोनों के बीच काफ़ी मतभेद रहता था और यह कभी कभी उग्र रूप धारण कर लेता था। इस पर भी दोनों एक दूसरे की हिन्दी-सेवाओं का

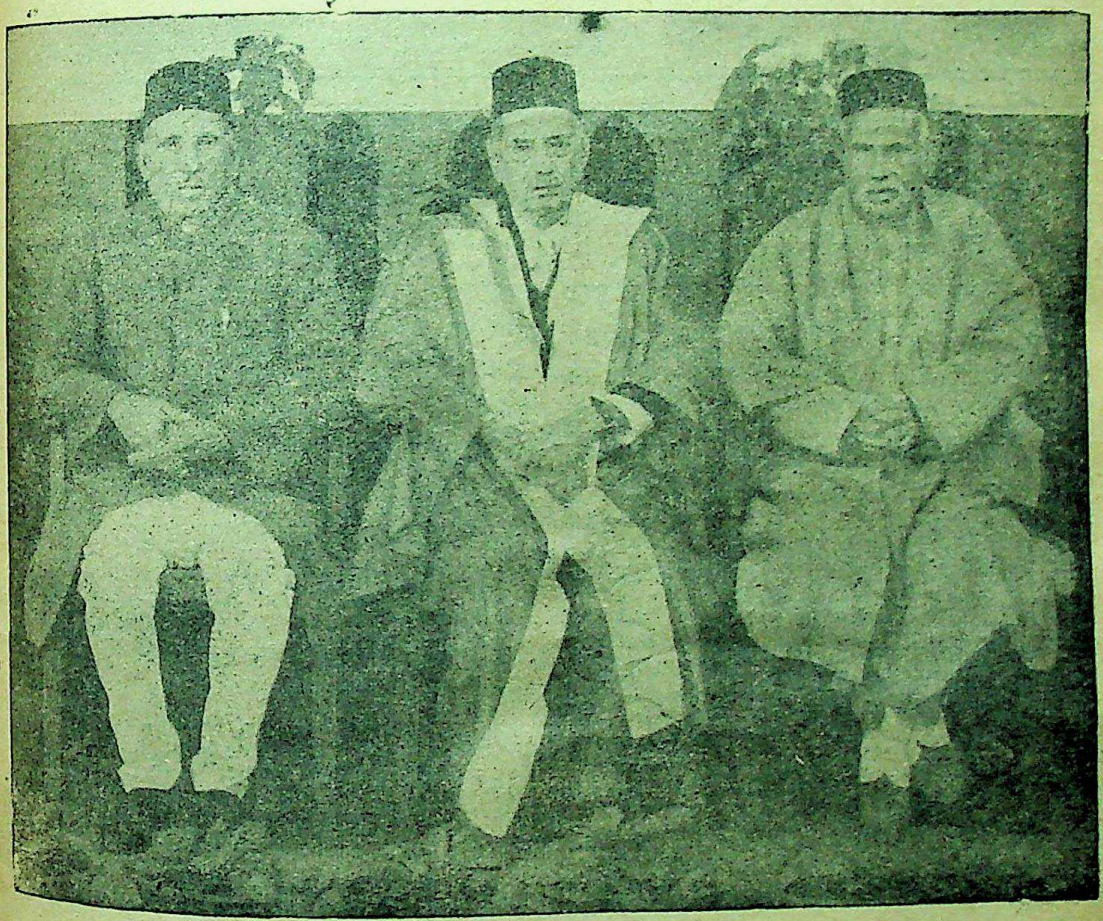

सभा के संस्थापक

पं० रामनारायण मिश्र — बाबू श्यामसुन्दरदास — ठा० शिवकुमार सिंह

आचार्य द्विवेदी और बाबू श्यामसुन्दरदास दोनों का एक ही ...। हिन्दी के लिए दोनों ने युग-निर्माण का कार्य किया ...इस शताब्दी के आरम्भ से ही दोनों परस्पर परिचित थे। ...परिचय इतना अधिक हो गया था कि जब सन् १९०३ में आदर करते थे। काशी-नागरीप्रचारिणी सभा ने द्विवेदीजी के अभिनन्दन के लिए जो उत्सव किया था वह स्मरणीय है और इससे पहले जब 'सभा' का 'कोशोत्सव' हुआ तब द्विवेदीजी ने जो पत्र भेजा था उसका यह अंश ध्यान देने योग्य है—"सभा के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनेक विघ्न-बाधाओं का सामना करना पड़ा है। इसके कार्य-कलापों की कठोर आलोचनायें भी होती रही हैं.....। मुझे खेद है; पर सच्चे हृदय से स्वीकार करना ही पड़ता है कि इन विरोधात्मक आलोचनाओं के कर्ताओं में मुझ अधम की भी कई बार प्रतीति हो चुकी है। इसका प्रायश्चित्त भी मैं कर चुका हूँ।.....सभा के कार्यकर्त्ता अपने उद्दिष्ट पथ से भ्रष्ट नहीं हुए। ...सभा का हिन्दी-शब्दसागर नामक विस्तृत कोश शब्दकल्पद्रुम, शब्दस्तोम-महानिधि और सेंट पीटर्सबर्ग में प्रकाशित प्रचण्ड कोश की समकक्षता करनेवाला है।...इसके प्रधान सम्पादक बाबू श्यामसुन्दरदास, बी० ए० हिन्दी-भाषा-भाषी जन-समुदाय के धन्यवाद के पात्र हैं।"

काशी की नागरीप्रचारिणी सभा की स्थापना सन् १८९३ में कुछ विद्यार्थियों ने, एक खेल की तरह, की थी। उसका इतिहास देना यहाँ अभीष्ट नहीं। 'आत्मकहानी' (पृष्ठ २०) पर बाबू साहब ने लिखा है—"उदार जनता ने हमीं लोगों (आप, पं० रामनारायण मिश्र और ठाकुर शिवकुमार सिंह) को सभा का संस्थापक और जन्मदाता मान लिया है।" सभा ने अपने बाल्यकाल में ही अदालतों में नागरी-प्रचार के लिए जो प्रयत्न किया था वह सर्वथा स्तुत्य है यद्यपि वकीलों और मुंशियों की अनुदारता से उसमें अभी तक पूरी सफलता नहीं मिली है। सभा ने इस कार्य में कायस्थों और काश्मीरियों का सहयोग पाने की भी चेष्टा कर देखी थी। युक्त प्रदेश के छोटे लाट को नागरी-प्रचार के लिए एक मेमोरियल दिया गया था जिसके साथ १६ जिल्दों में ६० हज़ार हस्ताक्षर थे। सभा ने डेपुटेशन में मालवीयजी को ही अपना प्रतिनिधि मान लिया था। यों नागरी-प्रचार का उद्योग करने से सभा का नागरी-प्रचारिणी नाम सार्थक हुआ। फिर तो उसने साहित्य निर्माण का ठोस काम करने में अपनी शक्ति लगा दी। जिसके पास अपनी पूँजी नहीं थी उसी संस्था ने जो 'हिन्दी-शब्दसागर' (कोश), 'हिन्दी व्याकरण' और 'हिन्दी-साहित्य का इतिहास' बनवाकर प्रकाशित किया है उसी को आधार मानकर अब इस विषय की पुस्तकें लिखी जाती हैं। इस दृष्टि से सभा ने हिन्दी की अमूल्य सेवा की है। सम्पन्न प्रकाशकों के रहते यह काम सभा के ही हिस्से का था जिसको बाबू श्यामसुन्दरदास से प्रेरणा और गति मिलती थी।

महत्त्व के जैसे कार्य सभा कर चुकी है वैसे काम अब तभी उसके द्वारा हो सकते हैं जब त्यागी और लगन से काम करनेवाले साधकों का उसे सच्चा सहयोग प्राप्त हो।

× × ×

काशी-हिन्दू-विश्वविद्यालय में बाबू साहब की नियुक्ति सन् १९२१ में हुई। कैसे हुई, इसका पूरा ब्योरा प्रकाशित नहीं है। बाबू साहब के लिए हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग में हुई शोक-सभा में माननीय टण्डनजी ने बताया था कि मालवीयजी के पूछने पर आपने उक्त पद के लिए बाबू साहब की सिफारिश की और ऐसा लगता है कि मालवीयजी को अधिकारियों ने बाबू साहब को रखने की ही सलाह दी होगी। कार्य-कुशलता की धाक जम चुकी थी। इस दशा में सिवा और किसे वह पद मिलता? विश्वविद्यालय में सहयोगियों—पं० रामचन्द्र शुक्ल और लाला भगवानदीन आदि—के सहयोग से आपने वर्गों के पढ़ाने और निर्माण की व्यवस्था की। आरम्भ का कार्य कठिन होता है; यों चले आये हुए कार्य को सँभालना कठिन होता। जिन्होंने काशी-हिन्दू-विश्वविद्यालय में हिन्दी का श्रीगणेश किया था उनमें से लाला भगवानदीन का कार्य-काल में ही छूट गया, शुक्लजी भी मुख्याध्यापक का पूर्ण अवधि तक किये बिना ही लोकान्तरित हो गये और बाबू श्यामसुन्दरदास का भी तिरोधान हो गया। हिन्दू-विद्यालय ने ही सबसे पहले हिन्दी में एम० ए० की परीक्षा प्रचलन किया और वहीं से सर्वप्रथम हिन्दी के डाक्टर पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल हुए। यह उक्त विश्वविद्यालय और श्यामसुन्दरदास के लिए प्रतिष्ठा की बात है।

× × ×

साहित्यसेवी प्रायः निर्धन होते हैं। बाबू साहब का आय से अधिक रहता था। कभी-कभी उनको कठिनाई हो जाती थी। इधर विश्वविद्यालय से अवकाश लेने पर उनकी आमदनी थोड़ी रह गई थी पर ख़र्च कम करते! ऐसी कठिनाई के समय यदि कोई उदार उनको नियमित वृत्ति देने लग जाते तो बड़ी अच्छी बात मैंने गुप्त रूप से यह चर्चा एक बार युक्तप्रान्त के एक नेता से की जो हाई स्कूल में कुछ महीने आपसे पढ़े मेरा मन्तव्य सुनकर उन्होंने कहा कि मास्टर साहब की सेवा को जी बहुत चाहता है, पर डर भी लगता है। वे बड़े मानी हैं। आशा नहीं कि शिष्य की भेंट को स्वीकार करें।

इस दिशा में स्वर्गीय आचार्य द्विवेदी को मैं भाग्यवान मानता हूँ। अवकाश ले लेने पर उन्हें प्रेस से पेंशन मिलती थी, रायगढ़ (छत्तीसगढ़) रियासत से भी मासिक वृत्ति १९३० के लगभग से उन्हें मिलने लगी थी और स्वनामधन्य बाबू शिवप्रसाद गुप्त तो लगभग सन् १९२० उनको आर्थिक सहायता दिया करते थे।* अभी

* काशी के स्वनामधन्य बाबू शिवप्रसाद गुप्त के गत ४ मार्च को स्व० आचार्य द्विवेदीजी के लगभग को पढ़ा था जो या तो स्व० गुप्तजी को लिखे गये थे निजी मन्त्री बाबू अन्नपूर्णानन्दजी को। इनमें से उस सहायता का उल्लेख है जो उनको गुप्तजी देते थे। हो कि ये पत्र किसी मासिक या साप्ताहिक पत्र में प्रकाशित दिये जायँ। मैं इसके लिए कई महीने से प्रयत्न कर रहा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० अम्बिकाप्रसादजी वाजपेयी का कलकत्ते में, थली भेंट जो सत्कार किया गया है उससे हिन्दीवालों का मस्तक हो गया है। ऐसे सत्कार्य की बहुत आवश्यकता है। हिन्दीवालों को कई 'निज़ामों' की आवश्यकता है जो हिन्दी-सत्य के पुजारियों की क़द्र करें। भूखे भक्ति कब तक होगी? अच्छे मस्तिष्क भूखे रहकर कब तक काम कर सकेंगे?

× × ×

द्विवेदीजी की दृष्टि में जो लोग हिन्दी सेवा के उपयुक्त पड़े उनको प्रोत्साहित करके वे हिन्दी के क्षेत्र में ले आये। में से कोई कवि हुआ, कोई लेखक और कोई आलोचक। होंने स्वयं हिन्दी की जितनी सेवा की उससे कहीं अधिक ने अनुचरों और सेवकों से कराई। बाबू श्यामसुन्दरदास ने भी लकों का संग्रह किया। उन्हें जो व्यक्ति जिस काम के उपयुक्त पड़ा उससे उन्होंने वह काम लिया। पुरस्कार और पारि-िक दिलाकर, प्रशंसा करके और ख़ुशामद तक करके उन्होंने लेखक-सङ्घ बनाया था (अवश्य ही इस समुदाय में लेखक-ख्या स्वल्प थी) उससे काफ़ी काम लिया था। उनकी रञ्जन-पुस्तकमाला की योजना जल्दी बनी, झटपट पुस्तकें ती जाने और छपने भी लगीं। मैं तो देखकर दङ्ग रह गया। ह ठीक है कि आरम्भ में काम जिस तेज़ी से हुआ था वह आगे चलकर मन्द पड़ गई, पर काम सफल ही माना गया। बाबू साहब काम को झटपट आरम्भ कर देते थे, आशा पर कि आगे जो कठिनाइयाँ आवेंगी उनके लिए उपाय ढूँढ़ लिया जायगा। यदि बाबू साहब ने आरम्भ में बहुत सोच-विचार किया होता तो 'सभा' द्वारा इतना अधिक का प्रकाशन न होता। यह ठीक है कि जहाँ सभा के प्रकाशन में अनेक रत्न हैं वहाँ कुछ घटिया माल भी है, फिर भी उसके उद्योग को दोष नहीं दिया जा कसता।

हिन्दी के क्षेत्र में बाबू साहब का आदर इसलिए नहीं है कि उन्होंने सैकड़ों पुस्तकों का सम्पादन, सङ्कलन किया है अथवा महत्त्व ग्रन्थ-रचना की है; उनका सम्मान इसलिए भी नहीं है कि वे काशी-हिन्दू-विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के मुख्य अध्यापक थे या सुवक्ता थे, बल्कि उनकी प्रतिष्ठा है उनकी अनुपम सङ्गठन शक्ति और कार्य-योजना के लिए। लेखन, अध्यापन और भाषण की क्षमता और लोगों में भी है, पर बाबू साहब की सङ्गठन-शक्ति तो उनकी अपनी चीज़ थी। उनसे जिनका घोर मतभेद होता था वे भी उनकी इस क्षमता की प्रशंसा बरबस करते थे।

× × ×

काशी की बात है। भगवानदीन साहित्य-विद्यालय के अवैतनिक मुख्याध्यापक का चुनाव हो रहा था। एक व्यक्ति ने विद्यालय के मुख्याध्यापक की कटु आलोचना की तो स्वर्गीय प्रो० रामदास गौड़, एम०ए० ने बड़ी मीठी बोली में कहा कि भाई, बिना पैसा-कौड़ी दिये हम जिससे काम लेते हैं उसकी प्रशंसा ही हमें करनी चाहिए। निन्दा करने लगेंगे तो हमें कार्यकर्ता कहाँ मिलेंगे? फिर दोष किसमें नहीं होते। हमें तो गुणों से ही काम है—"गुणाः पूजास्थानम्"। इससे मैं यह कहना चाहता हूँ कि बाबू साहब के पिछले दिनों में जो लोग उनके आलोचक हो गये थे वे स्वयं विधाता की निर्दोष सृष्टि नहीं हैं। उनमें ऐसे-ऐसे दोष हैं जिनकी चर्चा छिपी नहीं है। इस दशा में आदरणीय का आदर करना ही तो उत्तम होता है। जहाँ मतभेद हो वहाँ मधुर भाषा और सौम्य व्यवहार विरोध किये जानेवाले के मन में श्रद्धा का भाव उत्पन्न कर देता है।

शरीर छोड़ने से लगभग दो साल पहले बाबू साहब रहने के लिए लखनऊ चले गये थे। इससे अधिकांश लोगों को कष्ट हुआ। श्रीयुत बाबू श्रीप्रकाशजी ने तो नागरीप्रचारिणी सभा के एक उत्सव में, सभापति-पद से दिये गये अपने भाषण में, बहुत ही खेद प्रकट किया था। अन्त में विश्वनाथजी ने कृपा की और जिस काशी नगरी में रहकर बाबू साहब ने हिन्दी की अधिक से अधिक सेवा की थी और जिसको ऐसे मनस्वी का गौरव था वहीं वे, कोई ८ महीने बाद, लौट आये। यह बहुत अच्छा हुआ। बाबू साहब के लिए यह अभिमान की बात है कि उनका शरीर उसी काशी पुरी में छूटा जो हिन्दुओं की दृष्टि से परम पवित्र है और जिसमें देह त्यागने के लिए लोग दूर-दूर से बुढ़ापे में आ जाते हैं। डाक्टर राजा बलदेवदास बिड़ला इसी कामना से तो काशी से बाहर नहीं जाते।

× × ×

प्रयाग के सरकारी इंटरमीडियेट कालेज के प्रिंसिपल राय साहब जगदीशप्रसन्न मुखर्जी हिन्दू स्कूल (काशी) के भूतपूर्व छात्र हैं। बाबू श्यामसुन्दरदास की मृत्यु की ख़बर पर उक्त कालेज में, आपके अध्यक्षता में, जो शोकसभा हुई उसमें आपने बड़ी मार्मिक बातें कही। उसको सुनकर लोग गद्गद हो गये। जगदीश बाबू ने कहा कि हिन्दू स्कूल में अँगरेज़ी पढ़ाने में बाबू श्यामसुन्दरदास की बड़ी ख्याति थी। छोटी कक्षा में पढ़ते समय मेरी लालसा थी कि मैट्रिक में पहुँचकर मैं भी उन्हीं नामी मास्टर साहब से अँगरेज़ी

द्विवेदीजी को रायगढ़ (छत्तीसगढ़) रियासत से भी मासिक मिलती थी जिसका श्रेय डा० बलदेवप्रसादजी मिश्र, एम० ए०, एल्-एल० बी० को है जो उन दिनों उक्त रियासत के दीवान थे। आपने इस विषय के द्विवेदीजी के पत्रों की प्रतिलिपि काशी-नागरीप्रचारिणी सभा में रखने को एक भूतपूर्व पदाधिकारी को दी थी, पर खेद है कि वह सभा को नहीं मिली। इन पत्रों के प्रकाशन से एक तो द्विवेदीजी के चरितलेखक को सामग्री मिलेगी, दूसरे अन्य लोगों को दूसरे साहित्यसेवियों की सहायता करने की स्फूर्ति। आशा है, ये पत्र प्रकाश में लाये जायँगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पढ़ूँगा। मैट्रिक में दो विभाग थे—ए और बी। ए विभाग में कृती छात्र थे जिनकी मेधा अच्छी थी और जो अच्छे नम्बरों में पास हुए थे। जगदीश बाबू ए विभाग में थे पर बाबू श्यामसुन्दर दास पढ़ाते थे बी को। इस कारण आपने यत्न करके अपना तबादला 'बी' में करा लिया और मास्टर साहब से अँगरेज़ी पढ़ने का अवसर प्राप्त किया। प्रिंसिपल साहब ने कहा—"मैंने बाबू श्यामसुन्दर-दास को सदा अपने मास्टर के रूप में ही माना और आज भी मेरे सामने उनकी वही मूर्ति है। मैं काशी जाने पर उनसे मिलने जाता था। पिछली बार जब मैंने उनके घर जाकर चरण छुए तो उन्होंने मेरा माथा पकड़कर पूछा कि कहो जगदीश, अच्छी तरह हो।" ऐसी गुरु-शिष्य की जोड़ी अब विरल होती जा रही है। इस उदाहरण से स्पष्ट हो जाता है कि बाबू श्यामसुन्दरदास किस कोटि के शिक्षक थे और छात्र उनको कैसा क्या मानते थे। बाबू साहब थियासफिस्ट न थे, सम्भवतः इस कारण उक्त स्कूल की हेड मास्टरी मिलने की आशा न होने से ही उनको अन्यत्र भाग्य-परीक्षा के लिए जाना पड़ा। किन्तु अन्त में विश्वनाथजी ने कृपा कर उन्हें काशी में बुलाकर विश्वविद्यालय में हिन्दी-विभाग का प्रमुख स्थान दिला दिया जिसके वे सर्वथा उपयुक्त सिद्ध हुए। विश्वविद्यालय की विविध समितियों में उन्होंने अपने पद का ऐसा निर्वाह किया कि आज भी लोग याद करते हैं।

× × ×

बाबू साहब में यदि सहनशीलता की मात्रा कुछ अधिक होती, वे राजकारण-पटु होते और दरबारियों को मुट्ठी में रखने की कला में निष्णात होते तो वे कश्मीर-दरबार में किसी ऊँचे पद पर पहुँच गये होते। उस दशा में उनको आर्थिक झमेलों से छुटकारा मिल जाता जिनमें उनको आजीवन उलझे रहना पड़ा। यों सम्भवतः उनका जीवन अधिक सुखमय हो जाता, पर हिन्दी की सेवा करने से उनकी जो प्रतिष्ठा हुई उससे वे वंचित रहते। उस दशा में राष्ट्र-कवि मैथिलीशरणजी गुप्त की भाषा में न कहती, 'मातृभाषा के हुए जो विगत वर्ष पचास, नाम उनका एक ही है श्यामसुन्दरदास।' न डाक्टर मोतीचन्द यह कहते कि 'हिन्दी-शब्दसागर ही भाषाशास्त्र के क्षेत्र में उन्हें अमर बना देने के लिए पर्याप्त है।' माननीय टण्डनजी ने भी उनकी कार्य-क्षमता की जो प्रशंसा की वह उनको अप्राप्त रहती। न कितने मालदार सेठ-साहूकार दुनिया से उठ जाते हैं, उनके लिए देश दुखी नहीं होता। दुखी होता है बाबू श्यामसुन्दरदास-जैसे जनसेवक के उठ जाने से।

बाबू श्यामसुन्दरदास का केवल एक ही क्षेत्र था—हिन्दी की सेवा। यही उनका व्रत था। इस कारण वे हिन्दी पर होने वाले आक्रमणों का सामना कठोरता से करते थे। अनेक तरह उनके सामने यदि हिन्दी-हिन्दुस्तानी की समस्या आती तो वे महात्मा गाँधी का आदर करने पर भी उनसे किसी प्रकार समझौता करने को तैयार न होते। ऐसे अवसरों पर उनकी नीति स्पष्ट थी। हिन्दी-हित के लिए वे सब कुछ करने को तैयार थे। वे भाषा का स्वराज्य चाहते थे। जिस स्वराज्य में हमारी भाषा ही विकृत हो गई वह उनकी दृष्टि में हेय था। वे ऐसे नेता थे जिन पर हिन्दी-संसार को विश्वास था। सच तो यह है कि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के बाद काशी में हिन्दी की निरन्तर ठोस सेवा करनेवाला बाबू श्यामसुन्दरदास के सिवा दूसरा नहीं हुआ।

रूस में सहशिक्षा का विरोध*

श्रीयुत सत्यप्रकाश मित्तल

स्त्रियों और पुरुषों के अधिकारों की असमानता के परिणाम से हमारे नवयुवक परिचित नहीं हैं। अपने इस विषय के विचारों को बार-बार सभाओं में रखने पर भी वे कभी लोगों को अपने विचारों से प्रभावित नहीं कर सके। कारण यही है कि वे स्वयं ही उसके दुष्परिणामों से परिचित नहीं हैं।

हम पुरानी पीढ़ी के आदमी इस असमानता से भली भाँति परिचित हैं। कुछ बहुत दिनों की बात नहीं है जब स्त्रियों की अधिकतर संख्या राज्य और समाज सम्बन्धी कार्यों में हाथ नहीं बटा सकती थीं। यहाँ तक स्त्री जाति को दबा दिया गया था। सोवियट ने अपने शासनकाल के पचीस वर्षों में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समानता का व्यवहार किया और जीवन के हर पहलू में पूर्णतया इसका ध्यान रक्खा।

इस ओर सोवियट स्कूलों ने महत्त्व-पूर्ण कार्य किया है। यों तो स्त्री और पुरुष के बीच समान अधिकारों की घोषणा करना आसान था, किन्तु असमानता के आधार पर फैले हुए भावों पर विजय पाना सहल न था। इसके लिए सोवियट ने एक क़दम यह उठाया कि स्कूलों में प्रारम्भ से लेकर विश्वविद्यालय तक सहशिक्षा जारी कर दी। इससे समाज में वास्तविक और स्थायी समानता स्थापित करने में अच्छी सहायता मिली।

किन्तु लड़कों और लड़कियों की बढ़ोतरी में अन्तर होता है। शिक्षकगण इसको भली भाँति जानते हैं। उदाहरण के लिए १२-१३ वर्ष की आयु के लड़के-लड़कियों को ले लीजिए। उनका वय समान होते हुए भी कार्य-क्षमता समान नहीं होती। यही कारण है कि पिछले कुछ सालों से पृथक्-शिक्षा का

* रूस के एक शिक्षा-स्त्री के लेख का भावानुवाद।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Adv. Dr. Manoj Kumar, Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...से उठाया जाता रहा और हर बार कुछ आदमी बड़े आश्चर्य से कहते—"तो क्या हमारे आज तक के सब प्रयत्न और 'कार्य' निष्प्रयोजन रहीं ?"

वास्तव में एक समय था जब इसके लिए बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। 'रूसी महिला समिति' की १९०९ की परिषद्, १९१२ ई० की शिशु-पालन और स्त्री-शिक्षा की प्रथम परिषद् और बाद की राष्ट्रीय-शिक्षा-परिषद्, प्रयोगात्मक स्थापन-विज्ञान-परिषद् और इसी प्रकार की दूसरी परिषदों में सहशिक्षा एक महत्त्वपूर्ण विषय रहा है। सबसे अधिक प्रगतिशील शिक्षा-विशेषज्ञ उच्च श्रेणियों में सहशिक्षा के समर्थक थे। इसके मूल में स्त्रियों के लिए पुरुष के समान अधिकार प्राप्त करने की भावना थी।

पर यह विचारधारा अब हमारे देश पर लागू नहीं होती। क्या अब भी सहशिक्षा के लिए अड़े रहना ठीक होगा ! आँकड़ों से मालूम होता है कि अब यह न केवल अनावश्यक है बल्कि इसके विरुद्ध 'पृथक्-शिक्षा' जारी करना आवश्यक हो गया है।

प्रायः १० से १४ वर्ष के वय के बीच लड़कों का शक्ति-संचय का समय होता है। इस समय उनकी शारीरिक प्रगति रुक पड़ जाती है। दूसरी ओर लड़कियाँ इस अवस्था में बड़ी तेजी से शारीरिक प्रगति करती पाई जाती हैं। १४ से १७ वर्ष वय में इसका बिलकुल उलटा होता है। लड़कों की बढ़ोतरी लड़कियों से कहीं तेज़ होती है।

इसी असमानता के कारण शिक्षा ग्रहण करने की असमानता पैदा होती है और इसी कारण स्कूल के लड़के और लड़कियाँ एक ही अवस्था में एकसाँ उन्नति नहीं कर पातीं। यही एक बात नहीं है। लड़कों और लड़कियों की बढ़ोतरी की विभिन्न अवस्थाओं में भिन्न-भिन्न प्रकार की शिक्षा और चीज़ों को अलग-अलग दृष्टिकोणों से देखे जाने का प्रबन्ध होना चाहिए। यह ही पृथक्-पृथक् प्रकार के कार्य तथा शिक्षा-प्रणाली की भी आवश्यकता है। इस प्रकार का अन्तर दोनों को स्कूल के एक ही कमरे में एक ही साथ बैठा कर नहीं रक्खा जा सकता।

श्रम-विभाजन एक व्यावहारिक सत्य है। स्त्री और पुरुष में श्रमभेद है। दोनों में हर प्रकार के कार्य करने की एक-सी क्षमता नहीं है। पुरुषों को सैनिक बनना होता है। उनको विद्यार्थी-जीवन में ही तत्सम्बन्धी ट्रेनिङ्ग दी जाती है और उन्हें भविष्य के कठिन जीवन के लिए विशेष रूप से तैयार किया जाता है।

प्रश्न हो सकता है कि क्या स्त्रियों को अपनी मातृ-भूमि की रक्षा करने योग्य नहीं बनना है। बात ठीक है। और हमारी स्त्रियों ने दिखा दिया है कि वे अपनी मातृभूमि की रक्षा कर सकती हैं। किन्तु लड़ाई के मोरचे पर भी श्रमविभाजन होता है। लड़कियाँ विशेषतया 'पूर्ति-विभाग', अस्पतालों और यातायात आदि विभागों में काम करती हैं। जहाँ तक मैं जानता हूँ, न तो उनको हमला करने का हुक्म दिया गया और न उनको सड़क बनाने का कार्य ही सौंपा गया। क्योंकि ये कार्य अधिक श्रमसाध्य और पुरुषों-द्वारा ही किये जाने योग्य हैं। किन्तु इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि स्त्रियों का शारीरिक श्रम से कोई सम्बन्ध नहीं। वे मेहनत का कार्य भी करती हैं, और कभी-कभी तो कड़ी मेहनत का भी, किन्तु अपनी शारीरिक क्षमता का ध्यान रखते हुए।

इसके अतिरिक्त स्त्री जाति की कुछ ज़िम्मेदारियाँ हैं जो पुरुषों पर लागू नहीं की जा सकतीं और वे बड़े महत्त्व की हैं। स्त्री माता है और उसे अपने बच्चों की देखरेख तथा पालन-पोषण करने योग्य होना चाहिए। यहाँ पर बच्चों के पालन-पोषण की समान ज़िम्मेदारी के विषय में कुछ भी कहा जाय, माता-माता ही है। अतः स्कूलों में लड़कियों को मनुष्य-शरीर-विज्ञान, मनोविज्ञान, शिक्षण-विज्ञान और स्वास्थ्य सम्बन्धी विषयों की शिक्षा विशेष रूप से मिलनी चाहिए।

यही कारण हैं कि इस वर्ष से 'पृथक् शिक्षा' शुरू कर दी गई है। छः महीने के अनुभव के बाद इस नई योजना से आशातीत परिणाम निकले हैं। कक्षा का वातावरण पहले की अपेक्षा अधिक एकरस हो गया है। इसके अनुसार बच्चों की देखभाल और शिक्षा पहले से अच्छी हुई है। सैनिक-शिक्षा के समय-विभाजन की उलझन भी दूर हो गई है। इसके अनुसार कार्य करने पर स्कूल में अधिक शान्ति, श्रेष्ठतर अनुशासन और कहीं अच्छे परिणाम निकाले जा सके हैं। सब अध्यापकों की यही सम्मति है।

अगले साल 'पृथक्-शिक्षा' दूसरे नगरों के माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्कूलों में भी जारी करनी है। ऐसे स्कूलों की संख्या बहुत अधिक है। अब से लड़के और लड़कियाँ पाँचवीं से नहीं बल्कि पहली ही श्रेणी से अलग-अलग शिक्षा पायेंगे। बात यह है कि बच्चों की प्रगति पर समुदाय का काफ़ी असर पड़ता है। स्कूल के बच्चे कुछ दिन या महीनों नहीं बल्कि सालों तक मिल-जुलकर रहते हैं। पाँचवीं श्रेणी के बाद एक समुदाय से निकलकर दूसरे में प्रविष्ट होना बच्चों के लिए असङ्गत और कष्ट साध्य होगा। फिर, नये समुदाय को तैयार करने में शिक्षकों को भी काफ़ी कठिनाइयाँ हो सकती हैं।

कई बार शिक्षकों से सुना है—"क्या इसके अर्थ यह नहीं हैं कि हम पीछे की ओर लौट रहे हैं ?" इनमें पुराने और नये दोनों प्रकार के शिक्षक शामिल हैं। इसका सीधा उत्तर यही है 'नहीं, कदापि नहीं'। हमारे लड़के और लड़कियाँ एक ही श्रेणी की शिक्षा पाते हैं, पायेंगे और पाते रहेंगे। उनको उनकी जीवन-यात्रा के लिए उतनी ही उच्च श्रेणी की शिक्षा दी जायगी और उनका पालन-पोषण समानता के आधार पर किया जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाँ, जिनको अनुभव नहीं है या जो इस ओर गम्भीर नहीं हैं, वे ऐसी ग़लतियाँ कर सकते हैं जिनसे लड़कों और लड़कियों को अलग-अलग रहने के लिए या असमानता की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन मिले। किन्तु ऐसी ग़लतियाँ रोकना आसान है। एक तो शिक्षा-अधिकारी स्कूलों का पथप्रदर्शन अच्छी तरह करें, दूसरे अध्यापक-अध्यापिकाओं की नियुक्ति सोच-विचार कर की जाय और तीसरे उनको युवा-कम्युनिस्ट लीग के सम्पर्क में रक्खा जाय। स्कूल के अलावा भी बच्चों के लिए एक विस्तृत कार्यक्रम बनाया जाय।

माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्कूलों में अलग शिक्षा एक पेचदार मामला है। इसका हमें पूरा अनुभव नहीं है। हम क्रान्ति के पहले के अनुभवों पर भरोसा नहीं कर सकते, क्योंकि उस समय की शिक्षा-प्रणाली शासक वर्ग की आवश्यकताओं और विशेष उद्देश्यों तक सीमित थी।

यदि देखा जाय तो कई तरह से लड़के-लड़कियों की शिक्षा का उत्तरदायित्व उन लोगों पर होता है जिनको इसका भार सौंपा जाता है। अतः सबसे अधिक ध्यान शिक्षकों और शिक्षिकाओं की नियुक्ति पर देना चाहिए।

मुख्य अध्यापक, शिक्षक और पथ-प्रदर्शकों की नियुक्ति करते समय उनकी योग्यता का ध्यान रक्खा जाना परम आवश्यक है। मास्को के आधे साल के अनुभव ने बताया है कि लड़कों के स्कूल का मुख्य अध्यापक पुरुष और लड़कियों के स्कूल की मुख्य अध्यापिका स्त्री होनी चाहिए। पाँचवीं से दसवीं श्रेणी के अध्यापकों और पथ-प्रदर्शकों पर भी यही नियम लागू होना चाहिए।

अध्यापकों की नियुक्ति बहुत ही महत्त्वपूर्ण है; किन्तु यही सब कुछ नहीं है। उनको जल्दी से जल्दी ट्रेनिंग मिलनी चाहिए। उनके लिए आवश्यक है कि वे लड़कों और लड़कियों की प्रगति और बढ़ोतरी के अनुसार शिक्षाक्रम चलावें, जिसके लिए उनकी ट्रेनिंग होना आवश्यक है। इस ओर उच्च शिक्षण-ट्रेनिंग स्कूल और वैज्ञानिक शिक्षणालय आदि संस्थाओं को बहुत कुछ करना है। यह विषय अधिक महत्त्वपूर्ण है। इस प्रकार की ट्रेनिंग का एक बड़ा भारी कार्य स्कूलवर्ष शुरू होने से पहले ही हो जाना चाहिए जिससे हर प्रकार की ग़लतियाँ और उलझनें दूर की जा सकें।

पथप्रदर्शकों की ओर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। मुख्य पथप्रदर्शक स्कूल में अत्यधिक महत्त्व का व्यक्ति होता है। उसका कार्य एक शिक्षक की अपेक्षा कहीं पेचीदा होता है। और विशेष कर पृथक् शिक्षाप्रणाली के प्रारम्भकाल में। उसको पढ़ाने का भी अच्छा ज्ञान होना चाहिए। वह अच्छे व्यक्तित्व का होना चाहिए। उच्च माध्यमिक श्रेणी के पथप्रदर्शकों के पास शिक्षक-ट्रेनिंग-स्कूल का प्रमाणपत्र और माध्यमिक स्कूलों के पथ-प्रदर्शकों के पास बाल-शिक्षक की सनद होनी चाहिए।

अलग शिक्षा-प्रणाली में लड़कों और लड़कियों के लिए अलग-अलग पथ प्रदर्शकों की आवश्यकता है, क्योंकि उनके कार्य और प्रणाली में भेद होगा। लड़कों की रुचि प्रत्येक के सैनिक कार्य, खेल और यान्त्रिक तथा सम्बन्धी विषयों की ओर आकर्षित की जायगी। और की रुचि अवश्य ही कला, घरेलू कामकाज, और दूसरे के यान्त्रिक तथा शिल्पकला सम्बन्धी विषयों की ओर इन सब बातों के लिए पथ-प्रदर्शकों को पूर्ण योग्य होना चाहिए। केवल युवा-कम्युनिस्ट लीग ही सब कुछ नहीं करेगी। अलावा शिक्षा-अधिकारी और शिक्षण-ट्रेनिङ्ग-स्कूल भी दिलचस्पी लेंगे।

युद्धकाल में बच्चों पर घरवालों की निगरानी कम हो है, इसलिए स्कूलों से बाहर की योजना और भी आवश्यक इस प्रकार दूसरे शहरों में माध्यमिक और उच्च माध्यमिक में अलग शिक्षा-प्रणाली जारी करना बड़ा महत्त्व रखता है।

कुछ आदमी क्रान्ति के पहले के युग की याद दिलाते हैं कि लड़कों और लड़कियों का एक साथ खेलना भी अपराध जाता था। इस तरह के वातावरण को हम कोई स्थान सकते। लड़कों और लड़कियों के अलग-अलग रहने की मामूली प्रवृत्ति को भी रोकने के लिए स्कूल के बाहर खेल दूसरे कार्यों के लिए एक अच्छी योजना कार्यान्वित की

अलग शिक्षा-प्रणाली इसलिए जारी की गई है जिससे के बच्चों की प्रगति के प्रत्येक क्षेत्र में पढ़ाने और सिखाने अलग-अलग ढङ्ग प्रयोग में लाये जा सकें। यह बात तो में पढ़ाते समय तक ही सीमित रहेगी। स्कूल का समय हो जाने पर ऐसा वातावरण पैदा किया जायगा जिसमें लड़के लड़कियाँ मिलजुलकर कार्य कर सकेंगे।

हमारे विद्यार्थीकाल में, स्कूलों में, नायिकाओं का छोटे लड़के किया करते थे। वह ढङ्ग मूर्खतापूर्ण और दूषित असल में लड़के-लड़कियों को वक्तृताओं, वादविवादसमितियों में साथ-साथ भाग लेना चाहिए। स्कूल में साहित्य, इतिहास सहगान, नाटक और यान्त्रिक-कला तथा उद्योग कला समान विषयों में दोनों को साथ-साथ पढ़ाया जाना चाहिए।

पिछले स्कूल-वर्ष की बात है। कुछ एक स्कूल कुछ के लिए विशेष क्लबों के रूप में इस्तेमाल किये गये। टोली बनाकर कार्य किया और अलग-अलग कमरों में अध्ययन किया। इस वर्ष यह योजना अधिक विस्तृत जायगी, और शिक्षकों की सहायता के लिए, विद्यार्थियों माताओं और पिताओं को इस योजना में सम्मिलित लिए, और अधिक संख्या में निमन्त्रित किया जायगा।

सोवियट स्कूलों में अलग शिक्षा जारी करना एक महत्त्व क़दम है। यह उसे उत्थान की ओर ले जायगा और सब ही देखेंगे कि उन्नति पहले की अपेक्षा कितनी अधिक है। इससे अनुशासन स्थापित होगा और कौटुम्बिक जीवन सुचारु रूप से व्यवस्थित किया जा सकेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'भोजपुरी' में एक ग्रामीण नायिका के उद्गार

श्रीयुत महेश्वरप्रसाद

खड़ी बोली का स्वरूप जब तक परिष्कृत नहीं हुआ था तब भारत की ग्रामीण बोलियाँ ही कविता के लिए प्रतिष्ठित। उन गँवारू भाषाओं में एक से एक बढ़कर सुन्दर और रचनायें उपलब्ध हैं। आज हिन्दी-साहित्य में हम जो 'पृथ्वीराज-रासो', 'पद्मावत', 'सूरसागर' तथा 'रामचरितमानस' अनूठे काव्य प्रस्तुत देखते हैं उनकी पृष्ठभूमि में ग्रामीण कवियों की ये रचनायें ही हैं। अन्न-जल के साथ ये मधुर कोमल बोलियाँ हमारे कवियों की ज़बान में इस प्रकार मिल गई थीं कि वे जो कुछ बोलते थे—कविता ही बोलते थे। उनकी रचनाओं को देखने से स्पष्टतया पता चलता है कि उन्हें कविता रचने में तनिक भी प्रयास नहीं पड़ता था। वस्तुतः जनजन की ग्रामीण बोली में मानव का एक प्रकार का संस्कार रहता है जिसके सहारे कठिन से कठिन विषय को भी आसानी से व्यक्त कर सकता है। हृदय की वास्तविक अनुभूति—वेदना, टीस, भावना या उद्गार समुचित और यथेष्ट रूप से ग्रामीण बोलियाँ ही अङ्गीकृत करती हैं। मानसकार को अपनी ग्रामीण भाषा पर जैसे अभिमान ही था—

गिरा ग्राम्य सिय-राम जस, गावहिं, सुनहिं सुजान।

मगर इससे यह न समझना चाहिए कि ब्रज, अवधी, मारवाड़ी, मेवाड़ी, मालवी और जयपुरी ही, जिनमें आज तक अनेक कवितायें रची गई हैं, काव्योपयोगी भारत की ग्रामीण बोलियाँ हैं। इनके अतिरिक्त एक ग्रामीण बोली 'भोजपुरी' भी ऐसी भाषा-प्रवण है जिसकी कवितायें सीधे हृदय पर चोट करती हैं। खेद की बात इस बात की है कि उसका आज तक न सूर-तुलसी-सा कोई कवि हो सका न उसमें सूरसागर-मानस जैसा काव्य ही बन सका। भिखारी के कतिपय नाटक प्रकाशित हैं जिनकी संक्षिप्त चर्चा 'सरस्वती' के किसी अङ्क में पं० सीताराम चतुर्वेदी ने की थी; किन्तु उन नाटकों से भाषा कवि का कुछ गौरव नहीं प्रकट होता, एक मनोरञ्जन या मनबहलाव-सा होकर रह जाता है। अलबत्त शिवनन्दन की कविताएँ अत्यन्त हृदय-स्पर्शी हैं और यही कारण है कि इन दिन उनका जनता में काफ़ी प्रचार है। यहाँ जो हम ग्रामीण नायिका के उद्गार लिख रहे हैं, सम्भवतः वे भिखारी या शिवनन्दन में से ही किसी के हैं। सम्भवतः इसलिए कि 'भोजपुरी' के सभी काव्य अव्यवस्थित हैं और उसकी कवितायें अधिकांशतः अप्रकाशित और अमुद्रित हैं। निम्नाङ्कित पंक्ति तो एक राहचलते के मुख से निनादित होकर स्वतः मेरे हृदयस्थल में उतर गई थी—

होत भिनुसरवा जइब, राजा, कलकतवा तनि बोल-बतियाल अइब कि ना?

प्रसङ्ग विदेश-यात्रा का है जो किसी भी सहृदय के लिए हृदयद्रावक है। कल से नायिका प्रोषितपतिका हो जायगी—इसके स्मरण से ही वह काँप जाती है। अतः रात का सारा समय वह पति के साथ केवल वार्तालाप में काट देना चाहती है। प्रेमियों के लिए वार्तालाप कोई साधारण जीने का सहारा ही नहीं प्रत्युत विशिष्ट आनन्द-निकेतन है। उससे प्रेम प्रस्फुटित तो होता ही है—परिपुष्ट भी होता है। प्रेम का मूल जो साहचर्य माना गया है, उसमें एकमात्र वार्तालाप ही विशिष्ट प्रेम-साधन है। इसके बाद 'अइब कि ना?' की सन्देहमयी स्थिति पत्नी के लिए गूढ़ पति-प्रेम का द्योतक है। हाँ, तो जब नायक उस वार्तालाप में अपने आने का पक्का वादा कर चुकता है तब कहीं नायिका एक आशा का आधार पकड़ती है। आशा का आधार पकड़ना क्या है—मानो नायक को पुनः शीघ्र ही बुला लेने का अनुरोध। और, तिस पर आते समय सौन्दर्य और शृङ्गार की अनेक वस्तुओं को लाने का आग्रह और निवेदन। 'भोजपुरी' का कवि एक दूसरे पद में इसका वर्णन निम्न रूप में करता है—

हाली से लवटीह राजा, चढ़ते अँधार हो। हाली० ॥
साड़ी ले अइह राजा, बँगला के पाढ़ हो।
चोलिया ले अइह राजा, नथा के सिंगार हो ॥
सेँदुरा ले अइह राजा, ईँगुरा गुलाल हो।
बिँदुली ले अइह राजा, चमके लिलार हो ॥

तनिक भोजपुरी भाषा के 'हाली' शब्द पर यहाँ ध्यान दीजिए। उसे कविता में प्रयोग कर कवि ने भाषा को गौरवान्वित कर दिया है। उक्त पद का 'हाली' शब्द ही कविता का प्राण-सा लगता है। उच्चारण मात्र से मानो वह शब्द कण्ठ में लिपट जाता है और उस लिपटने का तारतम्य हृदय तक बँध जाता है। ऐसे ही बहुत-से चुस्त, भावपूर्ण, छोटे, सुन्दर, मधुर और चुलबुले शब्द 'भोजपुरी' के हैं जिनसे भोजपुरी की कवितायें विभूषित हैं। यहाँ रसिकों के लिए सुहागिनी की माँग की चीज़ें भी देखने ही लायक़ हैं। पर निवेदन यहाँ यह करना है कि कुछ लोग 'चढ़ते अँधार हो' का पाठ 'जड़वा की रात हो' करते हैं और कहते हैं कि गीति काव्य के टेकवाले पद अधिकांशतः स्वतन्त्र होते हैं। लेकिन मेरा ख़याल है कि एक ही मौसम विशेष पर प्रोषितपतिका अधिक ज़ोर देने क्यों जाने लगी? जिसका प्रियतम परदेश में छा रहा है उसके लिए तो सभी मौसम, सभी ऋतु, सभी दिन समान विरहानल भड़कानेवाले हैं। पति-वियोगिनी स्त्री के लिए जैसी रात जाड़े की है वैसी ही बल्कि उससे भी अधिक भयावनी और टीस पैदा करनेवाली भादों की रात है। मीरा, जायसी, कबीर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि विरह वर्णन करनेवाले हिन्दी-साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवियों ने बारहमासे और षट्ऋतुओं का जो विस्तृत वर्णन किया है वह एकमात्र इसी प्रेरणा से। आगे चलकर तो हमारी भोजपुरी की उक्त नायिका भी दिन-विशेष के झगड़े को साफ़ ही कर देती है। उसका यह उद्गार इस प्रकार है—

अइब तू कवना महीनवा, हो पिया! अइब तू कवना० ॥
चार महीना पिया, गरमी के दीनवा,
तन पर से ढरेला पसीनवा, हो पिया ॥ अ०
चार महीना पिया बुँदिया के दीनवा,
टप-टप चुए मोरे टीनवा, हो पिया ॥ अ०
चार महीना पिया जड़वा के दीनवा,
थर-थर काँपे मोरे सीनवा, हो पिया ॥ अ०

खैर, तरह-तरह की सान्त्वना और भाँति-भाँति की आशा देकर तथा और भी अनेक प्रकार के प्रलोभनों द्वारा समझा-बुझाकर 'परदेसी साजन' विदेश चले गये। और जब से गये तब से एक भी 'लिखियो ना भेजता रे खाम।' दिन पर दिन बीतते जाते हैं और मास पर मास। यहाँ तक कि वह परम सुखद प्रार्थित जाड़े की रात भी बीत चलती है। आती हैं गर्मी की रातें। पुनः बरसात और जाड़े का क्रम समयानुकूल चलने लगता है। वह सती-साध्वी भोली ग्रामीण नायिका अधीर हो कराह उठती है—

सनन-सनन रात करे, बहेला पवनवा हे।
जो सइँया रहिते लेके, सुतिते अगनवा हे ॥
सावन बीतल भादों बीतल, बीतल अगहनवा हे।
पूस, माघ जाड़ा बीतल, आइल फगुनवा हे ॥ सनन० ॥

संक्षेपतः यहाँ जो महीनों के नाम आये हैं, वे पति-परित्यक्ता पत्नी के लिए विशेष महत्त्व के हैं। यह एकमात्र फगुनहटे पवन का प्रताप है कि वह पति-विह्वला नायिका अधीर हो उठी है। इससे फाल्गुन मास के सम्बन्ध में कुछ कहने की आवश्यकता नहीं। रहे पूस और माघ। वे दोनों जाड़े का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं जब तक इधर बरसात के प्रतिनिधि सावन और भादों बने हुए हैं। मगर जाड़े, गर्मी और बरसात इन सब में जो सबसे सुन्दर और सबसे विशिष्ट आनन्दप्रद मास है वह है अगहन, जिसे भगवान् कृष्ण ने अपनी प्रत्यक्ष विभूतियों के लेखे में सम्मिलित किया था और अर्जुन को समझाकर कहा था—'मासानां मार्गशीर्षोऽहम्'। हमारी भोजपुरी नायिका 'बीतल अगहनवा हे' कहकर, मालूम पड़ता है कि, अगहन पर अपना सर्वस्व निछावर कर देती। और, कैसी है रात की छटा? क्या आपने कभी निःस्तब्ध रात्रि में रात्रि के झङ्कार को मालूम किया है? यदि किया है तो क्या आपको अपनी प्रिय वस्तु की याद नहीं आई है? ऐसा प्रतीत होता है मानो समस्त चराचर अपनी गूढ़ वेदना रात्रि के समक्ष मूक भाषा में सुना रहे हों और उन सबका प्रत्युत्तर एकबारगी रात्रि मौन झङ्कार में दे रही हो। ऐसी रात्रि में विरहियों को नींद हराम हो जाती है। वे रात भर जगा करते हैं और अपने तरह-तरह के उद्गार [illegible] करते हैं। उर्मिला बेचारी 'आ जा मेरी निंदिया तू [illegible]' ही रह गई, पर उसे नींद नहीं आई। आप पूछेंगे कि [illegible] की बुलाहट क्या आराम करने के लिए? कदापि नहीं। [illegible] लिए कि यदि नींद आ जाय तो स्वप्न द्वारा प्रिय से मिल [illegible] जाय। तभी तो उर्मिला कहती है—'आओ हो, आओ [illegible] प्रिय के स्वप्न विराट।' और, प्रस्तुत ग्रामीण नायिका [illegible] अपनी परिस्थिति का परिचय देती है—

कबहीं ना देखनी सपनवा हो, अपना श्यामसुन्दर के ॥
जब-जब याद आवे नैनों से नीर ढरे,
जैसे ढरे सावन के महीनवा हो, अ० ॥

विरहियों के इस करुण-रस से सारी सृष्टि सराबोर [illegible] है। सूर की गोपियों के विरह से भी 'पावस रितु' मात [illegible] थी। इतना ही नहीं, 'मदन गोपाल बिना या तन की [illegible] बदली' और बदलती ही रह गई जिस प्रकार तुलसी के 'पी [illegible] हितू करत तेई पीरा' रह गये। जायसी की नागमती के [illegible] में तो सारी प्रकृति रो पड़ी है। कवि का वह आ[illegible] विरह अत्यन्त हृदय-द्रावक है। सूर ने सिर्फ़ रात के [illegible] लेकर 'पिया बिनु साँपिनि कारी रात', 'बैरिन भइ रतिया' [illegible] अनेक रूपक तैयार कर दिये हैं। जहाँ रात की ऐसी [illegible] वहाँ सेज की दशा का उल्लेख किन शब्दों में किया [illegible] सेज, फूलों की सेज मानो गोपियों को काटने दौड़ती है, [illegible] 'साँपिनि भइ सेजिया' वस्तुतः अपना नाम चरितार्थ कर [illegible] बात यह है कि 'परदेशिया की जोइया सदा की दुखिया' [illegible] सदा से सुनते चले आ रहे हैं उसमें कभी अन्तर नहीं [illegible] विहारी की नायिका के सुनहले-रुपहले भूषण विरह में भार [illegible] हो गये थे मगर ऐसे नहीं हो गये थे जैसा हमारी भोली [illegible] ग्रामीण नायिका को फूलों का हार हो गया है। देखिए, [illegible] कहती है—

काँटा है फूलों की हार, सजन बिना ॥ काँटा० ॥

एक बात और। वह यह कि हमारा विरह-साहित्य [illegible] से सन्देसे के लिए प्रसिद्ध रहा है। कालिदास के 'मेघदूत' [illegible] तो प्रेमावेश के कारण सन्देसा भेजने में चेतनाचेतन का भी [illegible] जाता रहा है। कृष्ण के द्वारका चले जाने पर गोपियों ने [illegible] की इतनी झड़ी लगाई है कि 'सन्देसन मधुबन कूप [illegible] अतः गोपियाँ कोई सन्देसा न दे दें—इस भय से 'मधुबन [illegible] वा मग जात'। फिर 'पदमावत' में जहाँ एक ओर [illegible] विरह सँदेसड़ा हे भँवरा, हे काग' कहते हैं वहीं दूसरी ओर [illegible] परम चतुर सुआ भी। 'पदमावत' का वह हीरामन [illegible] 'कादम्बरी' के वैशम्पायन सुग्गे से टक्कर लेनेवाला है। 'पदमावत' [illegible] की सारी प्रेम-पद्धति उसी श्रेष्ठ सुए से परिचालित है। [illegible] की खबर ले जाने में कबूतर भी कुछ कम मदद नहीं [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह कि इन पक्षियों से भी मानव ने न मालूम कितने के सुख उठाये हैं। लौकिक तो लौकिक, पारलौकिक सुख भी 'सुआ पढ़ावत गनिका तर गई।' पर जहाँ तक सन्देसे सम्बन्ध है, हम यही कह सकते हैं कि पशु-पक्षियों से काम के बजाय मानव से काम लेना सर्वोत्तम है। इस दिशा में और तुलसी ही धुरिकीर्तनीय हैं। यद्यपि उन्होंने पशु-पक्षियों की उपेक्षा नहीं की है फिर भी मनुष्य के दर्द को समझने लिए उन्होंने चतुर चर मनुष्य को ही चुना है। यह एक-हनुमान् (वानर नहीं थे) का कार्य था कि 'भरि आये राजिवनैना' तथा उसी का परिणाम यह निकला कि 'मास तत' के भीतर ही जनकनन्दिनी की राम से भेंट हो गई। ग्रामीण नायिका विरह के समुद्र में जब तक इसी उधेड़-बुन रहती है कि 'केकरा से भेजों रामा प्रेमवा की पँतिया से, केकरा हाथ सन्देस परदेशिया' तब तक अचानक उसके घर कलकत्ते वाला कोई एक पथिक आ जाता है। यथोचित परिचय सत्कार के अनन्तर वह ग्रामीण नायिका अपना विरह-वेदन करना ही चाहती है कि—'कहि नहिं जाला मोरे पिया वियोगवा से लहरेला जियरा हमार रे बटोहिया।'

श्री रघुवीरनारायणजी की 'बटोहिया' शीर्षक कविता पाठकों अवश्य पढ़ी होगी। पर 'तोता तूती' की बोली के सिवा वहाँ कुछ नहीं मिला होगा। तारीफ़ तो यह है कि उनकी कविता का आधार भी प्रस्तुत विरह-वेदना की कविता ही तुलसी लाख विद्वान् रहे हों; पर जब 'मानस' की शैली मावत' से मिलती है तो जायसी का ऋण तुलसी को स्वीकार ना ही पड़ेगा। रघुवीरनारायणजी से भिखारी की कोई ना नहीं है फिर भी भिखारी की नायिका के दर्द से रघुवीर-यणजी का प्रकृति-चित्रण और अपूर्व पाण्डित्य अवश्य है। 'लहरेला जियरा हमार रे बटोहिया' की दर्द-भरी जो यहाँ उद्वेलित हो रही है उससे तो 'लहरत लहर लहरिया हर बहार' का भी सहृदय कवि रहीम तटस्थ है। इसी प्रकार महेन्द्र मिश्र (छपरावाले) का भी लहर-भण्डार जब 'भोजपुरी' में खुलता है तो उसमें कितने कवि डूबने-तरने लगते हैं। उदाहरण के लिए उनकी 'लहर-लहर लहराई' कविता ही काफ़ी है। अस्तु, किसी प्रकार धैर्य धारण कर वह प्रोषितपतिका अपने पति का परिचय देती है। मीरा से कसकर पूछे जाने पर सिर्फ़ ताज का परिचय मिला था—'जाके सिर मोर-मुकुट मेरो पति सोई।' लेकिन बटोही के परिचय पूछने पर हमारी ग्रामीण नायिका 'हुलिया की पुलिया' बाँध देती है—

हमरो बलमुजी की लाली-लाली अँखिया से,
भउहाँ त चढ़ल कमान रे बटोहिया।
मोछिया त हउवे जैसे बरछी की नोकिया से,
जुलुफ में भँवरा गुँजारे रे बटोहिया॥
ओठवा त हउवे जैसे खिलल गुलबवा से,
अँखिया त मानो ह कटारी रे बटोहिया।
मुखवा में खाले रोज मगही के पनवाँ से,
दँतवा अनरवा के दाना रे बटोहिया॥

अलङ्कार पर वाहवाही न करने से शायद अलङ्कार-प्रेमी असन्तुष्ट हों। उनसे नम्र निवेदन है कि प्रस्तुत विषय अलङ्कार का नहीं है। दूसरे सम्भोग शृङ्गार के खुले वर्णन से, मैं समझता हूँ, बड़े आदमियों को अवश्य शर्म लगती होगी। उनसे भी करबद्ध प्रार्थना है कि पत्नी अपने पति के विषय में सदा से मुखर है और उसमें भी वियोगिनी की तो बात ही अलग है। इस पथिक निवेदन का परिणाम भी बहुत अच्छा निकलता है। कलकत्ता पहुँचने के साथ वह पथिक उस वियोगिनी नायिका के प्रवासी पति की खोज ठीक उसी प्रकार करता है जिस प्रकार 'शरत्' का 'श्रीकान्त' 'अभया' के पति का। जिस दिन नायक घर आनेवाला है उस दिन की गत रात में नायिका को स्वप्न होता है जिसे आनन्द के उल्लास में वह गीले शब्दों में गाती है—

सुतलो में रहली रामा सपन एक देखनी से,
कलकतवा से मोर पिया चलले हो रामा।

गीत

श्रीयुत रामेश्वर शुक्ल 'अञ्चल', एम० ए०

काली साँझ तुम्हारे लहरे बालों के बादल-सी
दूर खड़ी हो अपनी छत पर तुमने वेणी खोली
फैल गई यह अँधियारी की चादर तुम-सी भोली
तुम-सी ही अवदात—तुम्हारी आँखों के काजल-सी
फिर आ पहुँची याद तुम्हारी विचलित हुआ प्रवासी
जैसे चौमासा लगने पर डोल उठे वनवासी
सिमट रहीं यौवन की तृष्णायें मरु के मृगदल-सी
लहक उठी जीवन की बाती पा आँधी का साया
प्राणों के सूनेपन ने फिर मीत युगों का पाया
यह तारों की छाँह तुम्हारे मुख के सुषमा-जल-सी
सिक्त कुमुदिनी-सी आँखों की किरणों का नीराजन
रह-रह कर जाता है प्राणों की आशा को उन्मन

क्यों मेरे मन के पन्थी की चाल हुई चञ्चल-सी
ख़त्म हुए यौवन के सपने—शेष हुई अभिलाषा
केवल पतझड़ की बदली-सी बाक़ी रही पिपासा
जो छा जाती टूट कहीं से बिजली के आँचल-सी
तुम अन्तःपुर की पूनों चिर बन्दी रूप तुम्हारा
इन जलते चकोर-प्राणों का लेकिन तुम्हीं सहारा
तुम दूरी में पलीं गलीं पर पास ओस के छल-सी
भीग रही है रात उतरकर सन्ध्या-दीप जलाओ
जाओ दीपक के प्रकाश में अपनी जोत मिलाओ
मैं सहस्र दृग अन्धकार में जलन तप्त अविनाशी
काली साँझ तुम्हारे लहरे बालों के बादल-सी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

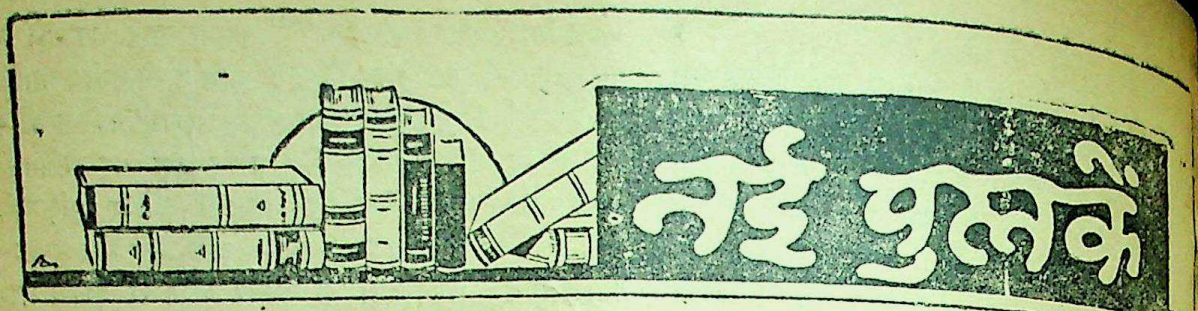

१—हिन्दी-सेवी-संसार—सम्पादक, श्रीयुत कालिदास कपूर, एम० ए०, एल० टी० और श्रीयुत प्रेमनारायण टण्डन, एम० ए०, साहित्यरत्न हैं। पृष्ठ-संख्या ४८४ और मूल्य ५) है।

प्रस्तुत पुस्तक में हिन्दी के अनेक लेखक-लेखिकाओं, सरकारी-ग़ैर सरकारी संस्थाओं, प्रकाशकों, पत्र-पत्रिकाओं आदि का परिचय सङ्कलित है जो हिन्दी-प्रेमियों के लिए कई दृष्टियों से उपयोगी हो सकता है। हिन्दी में इस प्रकार की पुस्तकें अभी कम निकली हैं। एक प्रकार से इस दिशा में यह पहला क़दम समझना चाहिए।

इस पुस्तक का सङ्कलन धैर्य और परिश्रम से किया गया है; जैसा कि इसके देखने से स्पष्ट हो जाता है। फिर भी इसमें ऐसी त्रुटियाँ रह गई हैं जिनकी ओर हठात् ध्यान आकर्षित हो जाता है। उदाहरणार्थ, प्रसिद्ध कवि नरेन्द्र शर्मा का इसमें उल्लेख ही नहीं हुआ है। इसी प्रकार १२० पृष्ठ पर सेंट निहालसिंह का परिचय देते हुए लिखा है 'पण्डित महावीरप्रसाद द्विवेदी के उद्योग से हिन्दी में लिखने लगे', जो ठीक नहीं है। वस्तुतः सन्तजी सदा अँगरेज़ी में लिखते हैं और हिन्दी में उसका अनुवाद कराके छापा जाता है। हिन्दी की अनेक प्रतिष्ठित कहानी-लेखिकाओं की चर्चा भी इसमें नहीं है। कुछ परिचय अस्तव्यस्त भी हैं। आगामी संस्करण में इन त्रुटियों का निराकरण होना आवश्यक है।

साधारणतः पुस्तक उपयोगी और प्रत्येक हिन्दी-साहित्यिक के निकट संग्रहणीय है।

—'पण्डित'

२—महर्षि दयानन्द का जीवन-चरित्र—लेखक, पण्डित इन्द्र विद्या-वाचस्पति और प्रकाशक, विजय पुस्तक-भण्डार, श्रद्धानन्द बाज़ार, दिल्ली हैं। पृष्ठ-संख्या २१६, मूल्य १।।) है।

प्रस्तुत पुस्तक के बीस परिच्छेदों में लेखक ने उन महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन की झाँकी उपस्थित की है, जिन्होंने आर्यसमाज की स्थापना करके हिन्दू-समाज की अनेक रूढ़िगत बुराइयों के बहिष्कार का आन्दोलन किया और उसमें बहुत कुछ सफलता भी प्राप्त की। उक्त परिच्छेदों में महर्षि के जन्म और वैराग्य का क्रमिक परिचय देते हुए लेखक ने इस बात का रोचक वर्णन दिया है कि उन्होंने अपना सुधार-कार्य किस प्रकार प्रारम्भ किया और किस प्रकार अपने वैदिक मत का प्रतिपादन करते हुए उसको देश में एक व्यापक रूप दिया। साथ ही आर्यसमाज के नियमों की दृढ़ता और उसके सङ्गठन पर भी तर्कपूर्ण उपस्थित किये गये हैं। इन सब बातों से पुस्तक एक प्रयत्न सिद्ध होती है। फिर भी मेरी समझ से इसमें एक रह गई है। वह यह कि पुस्तक के अन्तिम पृष्ठों में जो पुरुषों की श्रद्धाञ्जलियाँ स्वामीजी एवं 'सत्यार्थप्रकाश' के सङ्कलित की गई हैं, उनके स्थान पर यदि 'सत्यार्थप्रकाश' संक्षिप्त परिचय दे दिया जाता तो कहीं अधिक अच्छा और नहीं तो कम से कम उसके उस चौदहवें उल्लास परिचय प्रकाशित कर दिया जाता, जिसको लेकर आज देश एक बवण्डर-सा खड़ा कर दिया गया है। लोगों को चौदहवें उल्लास की उपादेयता का ज्ञान होने में पर्याप्त मिलती और उन्हें मालूम हो जाता कि विरोधियों के कितने पानी में हैं। फिर भी यह अपने विषय पर अच्छी पुस्तक है और स्वामी दयानन्दजी के समग्र इससे ऐसी अनेक नई बातें ज्ञात होती हैं जो उनकी अन्य नियों से नहीं होतीं। शैली रोचक है।

३—मुक्ति-पथ—नाटककार, श्री उदयशङ्कर भट्ट; प्रकाशक अवध पब्लिशिंग हाउस, लखनऊ। मूल्य १।।); पृष्ठ-संख्या

प्रस्तुत नाटक गौतम बुद्ध के ऐतिहासिक विकास के पर लिखा गया है। नाटक के पूर्व लगभग नौ पृष्ठों की में लेखक ने सफलता-पूर्वक 'अन्धानुकरण मत करो, सोचो प्रयोग करो—इसी में जीवन की सार्थकता है' इस तथ्य सिद्ध किया है। लेखक का कहना है कि 'कट्टरता एवं निर्भर रहकर अपने को पूर्णता की ओर पहुँचने की मनुष्य पद्धति उसकी शत्रु है।' अर्थात् मनुष्य को जीवन में विभिन्न पुरुषों-द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों का प्रयोग करना चाहिए— पर विचार करके उनसे लाभ उठाना चाहिए। यह नहीं किसी महापुरुष के विचारों पर अन्धश्रद्धा रखकर उसी को काष्ठा समझ ले, क्योंकि इस परम्परा में जीवन की सार्थकता है। जीवन की सार्थकता तो क्रियाशीलता में विभिन्न करने में है।

प्रस्तुत नाटक का कथानक यद्यपि सुन्दर है, दृश्यों का भी उत्तम है और संवाद भी काफ़ी सुन्दर हैं तथापि त्रुटियाँ रह ही गई हैं, जिससे इसकी उपादेयता में कमी है। पहली बात यह है कि कहीं-कहीं संवादों की जाल में फँसकर भाव ऐसे उलझ से गये हैं कि उनका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा हो जाता है। कहा जा सकता है कि विषय ही ऐसा है फिर भी रङ्गमञ्च की सुविधा और सर्वसाधारण जनता के विचार से इधर ध्यान रखना आवश्यक है। उदाहरण पृष्ठ ६७ पर एक संवाद है—'उस युद्ध की प्रथमाहुति की सुगन्धि पर मर मिटनेवाली रसभरिता तितली की जिसकी आशायें कुसुम ने म्लान होकर बुझा दीं।...' प्रकार के वाक्यों में 'कवित्व' चाहे हो परन्तु साधारण और जनता के लिए इनका समझना सरल नहीं। नाटक भी स्थान-स्थान पर दिये गये हैं, जो साहित्य की दृष्टि सुन्दर हैं। सामान्य दृष्टि से इस नाटक की भाषा क्लिष्ट नहीं ऐसी अवश्य है कि साधारण जन उसे समझने में कई बार की आवश्यकता का अनुभव कर सकते हैं। फिर भी पठनीय है।

४—दुराचारी हिन्दू-समाज—लेखक, पण्डित बाँकेबिहारी-पाण्डेय; प्रकाशक, किताब कुटीर, उज्जैन हैं। मूल्य ॥) है।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक महोदय ने दलित समाज के प्रति हुए अन्याय का पूर्ण दायित्व सवर्णी समाज के कन्धों पर हुए ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्यों को सलाह दी है कि उन्हें हो जाना चाहिए और हार्दिक पश्चात्तापपूर्वक अपने इन को गले से लगाना चाहिए। यही नहीं, उन्होंने उन वादी सवर्णियों को भी उचित फटकार बताई है, जो लुक-अछूतों के प्रति अपना भाईचारा तो प्रकट करते हैं परन्तु निक रूप से कुछ करने में हिचकिचाते हैं। साथ ही द्धार की शिथिल प्रगति पर भी प्रकाश डाला है और इसके उन्होंने महात्मा गांधी की 'अछूतोद्धार-सम्बन्धी अस्पष्ट नीति, निश्चय और अप्रगतिशील-कार्य-प्रचार-प्रणाली' का किया है। इसी स्थल पर लेखक महोदय के विचारों सी-सी प्रतीत होती है। दलितों की दयनीय अवस्था और समाज की उनके प्रति उपेक्षा को देखकर उन्होंने यह लिखी अवश्य है और कई अस्पष्ट बातों को स्पष्ट करके रख देने का सफल प्रयास भी किया है परन्तु दलितों की का कोई सच्चा हल वे रख नहीं सके हैं। उन्होंने गांधी की उक्त कार्यशीलता को दोष दिया है परन्तु वास्तव में बात है कि एक लम्बे समय से प्रचलित परिपाटी का दूर करना सहज नहीं। गांधीजी के व्यक्तित्व का यहाँ प्रभाव हुआ कि अधिकांश शिक्षित समाज अछूतों के प्रति सहा-रखने लगा किन्तु 'परिपाटी' को एकदम से तोड़ देने की न पैदा हो सकी। लेखक महोदय ने ब्राह्मणों को सम्पूर्ण का मूल मानकर उन्हें आदेश-सा देते हुए कहा है—समाज को अपने पूर्वजों के...पापों का प्रायश्चित्त करने .....सार्वजनिक रूप से टट्टी उठाने का कार्य स्वीकार कर चाहिए।' इस कथन की पुष्टि में यह कहकर कि 'ब्राह्मणों झाड़ू-टोकरी हाथों में लिये...देखकर क्षत्रिय और वैश्य भी अपना-अपना कान पकड़ लेंगे।' अपनी शङ्का भी प्रकट की है कि 'मुझे ऐसा लगता है कि ब्राह्मण-समाज इस कार्य को करना तो दूर सुनना भी नहीं चाहेगा। वह क्रोध से आँखें लाल कर सकता है।'—यही सच्ची वास्तविकता है और इसी बात को समझ कर यदि क्रमशः सुधार करने का प्रयत्न किया जाय तो सफलता अवश्य और शीघ्र प्राप्त हो सकती है। उपरिलिखित 'दिखावों' से सुधार नहीं हो सकता। सुधार तो व्यवहार से करना चाहिए। सवर्णियों के मन में सभी प्रकार के साधनों-द्वारा यह बात बैठा देनी चाहिए कि 'हरिजन' उनके अङ्ग हैं, उनके भाई हैं और अछूतों को इतना शिक्षित करने का प्रयत्न करना चाहिए कि वे सफ़ाई से, आत्मसम्मानपूर्वक समाज में अपने स्वत्वों की प्राप्ति कर सकें। जैसा कि पुस्तक के अन्तिम कवर-पृष्ठ पर पण्डित सुन्दरलालजी की सम्मति है, 'दया और प्रेम ज़्यादह और कड़ुवापन ज़रा कम हो तो सुधार शायद जल्दी हो सकें।' जो हो, पुस्तक अपने विषय की एक सुन्दर रचना है और हिन्दू-समाज के प्रत्येक सदस्य को इसे पढ़ना चाहिए।

—रमादत्त शुक्ल

५—एकाङ्किका—लेखक, श्री चन्द्रकिशोर जैन, बी० ए० और प्रकाशक, जीवन-कला-मन्दिर, सहारनपुर, यू० पी० हैं। पृष्ठ-संख्या १२६ और 'युद्ध-कालिक मूल्य' दो रुपये हैं।

प्रस्तुत पुस्तक सात एकाङ्की नाटकों का संग्रह है। इनमें से अधिकांश नाटक आल इंडिया रेडियो से ब्राडकास्ट किये जा चुके हैं। लेखक महोदय ने प्रथम प्रयास में ही एकाङ्की नाटकों में इतनी अधिक सफलता प्राप्त कर ली है, यह देखकर हिन्दी के नाट्यसाहित्य को उससे बहुत आशा हो सकती है। ये नाटक न केवल आकाशवाणी में सुनने और पुस्तक-रूप में पढ़ने, वरन, कदाचित् रङ्गमञ्च पर खेलने पर भी खरे उतरेंगे। लेखक महोदय का स्वयं एक सफल अभिनेता के रूप में परिचय दिया गया है और यही इन नाटकों की सफलता का रहस्य है। कथानक, चरित्र-चित्रण और शैली सभी दृष्टियों से यह प्रयत्न अभिनन्दनीय है। भाषा में प्रवाह और ओज है। आशा है कि पाठकों और मनोरञ्जन-समितियों में 'एकाङ्किका' का स्वागत होगा। छपाई और गेट-अप अच्छा है।

६—गाथा—लेखक, आचार्य श्री जानकीवल्लभ शास्त्री और प्रकाशक, आरती-प्रकाशन-मन्दिर, पटना सिटी हैं। पृष्ठ-संख्या १३८ और मूल्य डेढ़ रुपया है।

गाथा छोटी-छोटी घटनाओं अथवा दृश्यों के आधार पर रचित सात भावपूर्ण कविताओं का संग्रह है। लगभग सभी कविताओं में नारी का आकर्षण और तत्सम्बन्धी उसकी दुर्दशा पर व्यंग्यपूर्ण आलोचना की गई है। पर लेखक का दृष्टिकोण एक सुधारवादी उपदेशक का नहीं, वरन एक रोमांटिक-भावसम्पन्न संवेदनशील युवक का दृष्टिकोण है। इसलिए नारी के असा-धारण आकर्षण के कारण कविताओं में यथार्थता के साथ

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कदाचित् अवांछनीय नग्नता भी आ गई है। घटनाओं को प्रस्तुत करने में नाटकीयता प्रचुर मात्रा में है। शैली भी अधिकांश में स्वाभाविक और प्रवाहपूर्ण है तथा व्यञ्जना उसका सबसे प्रधान गुण है। भाषा में अवश्य कहीं-कहीं अत्यन्त स्वतन्त्रता और लापरवाही दिखाई देती है तथा कहीं-कहीं छन्दों में यति ही नहीं गति भी भङ्ग हो गई है। तुकों को मिलाने में लेखक सिद्ध-हस्त जान पड़ता है, पर उसका प्रयास छिप नहीं सकता। सभी कवितायें एक ही प्रकार के ३६-३६ छन्द-समूहों में लिखी गई हैं। इसमें भी कदाचित् कवि का प्रयास स्पष्ट विदित होता है। फिर भी गाथा की रचना में मौलिकता और रोचकता की कमी नहीं है। छपाई आदि अच्छी है।

७—चित्तौड़—लेखक, श्री 'परदेशी' साहित्यरत्न और प्रकाशक, ग्वालियर प्रकाशन-मण्डल, गुना (ग्वालियर स्टेट) हैं। पृष्ठ-संख्या ६२ तथा मूल्य १) है।

जैसा कि नाम से सूचित होता है, 'चित्तौड़' का विषय वह गौरव-गाथा है जो सहज ही काव्य का विषय बन सकती है। यद्यपि प्रस्तुत पुस्तक चित्तौड़ की सम्पूर्ण कथा को एक गम्भीर प्रबन्ध-काव्य के रूप में प्रस्तुत करने का यत्न नहीं करती, फिर भी 'परदेशी' की लेखनी में पर्याप्त ओज और दृढ़ता है। चित्तौड़ की इस छोटी-सी काव्यमयी कहानी को पढ़कर पाठकों का हृदय एक बार उत्साह, आत्मगौरव और साहस से भर जायगा ऐसी आशा की जा सकती है। छपाई और गेट-अप भी सुन्दर है।

८—सतरङ्गिनी—लेखक, श्री बच्चन और प्रकाशक तथा विक्रेता, भारती भण्डार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद हैं। पृष्ठ-संख्या १८९ और मूल्य २॥) है।

अपनी पत्नी को सम्बोधित करके कवि महोदय ने कहा है—

और आज तेरी गोदी में
ध्वनित अमित का हास हुआ,
और आज मेरे मानस में
राग-रङ्ग-रस-रास हुआ।

और वास्तव में, सतरङ्गिनी के कवि ने कदाचित् नवीन गृहस्थ-जीवन के सुख के फल-स्वरूप राग-रङ्ग-रस-रास की अनुभूति का ही प्रयत्न किया है। बच्चनजी की 'नवीन' कविताओं में यदि उनकी पुरानी मादकता पर मुग्ध पाठकों को आकुलता, क्लान्ति, दर्प और अल्हड़ता आदि न मिलें तो भी उन्हें निराश होने का कारण नहीं है। कदाचित् बच्चनजी की काव्य-प्रतिभा अभी नवीन मार्ग की प्रतीक्षा में है और बच्चनजी उस मार्ग की खोज में। सम्प्रति वे अपनी उन पुरानी तूफ़ानी और कसकपूर्ण स्मृतियों को भूलने के प्रयत्न में हैं। 'जो बीत गई' में वे कहते हैं :—

जीवन में मधु का प्याला था,
तुमने तन-मन दे डाला था,
वह टूट गया तो टूट गया;
मदिरालय का आँगन देखो;
कितने प्याले हिल जाते हैं,
गिर मिट्टी में मिल जाते हैं,
जो गिरते हैं कब उठते हैं;
पर बोलो टूटे प्यालों पर,
कब मदिरालय पछताता है;
जो बीत गई सो बात गई।

अधिकांश कविताओं में अतीत को भूलने का कवि का प्रयत्न प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से प्रकट हुआ है। यदि पाठक उनसे अतीत को बनाये रखने की आशा करें तो केवल उनका अन्याय होगा, वरन अज्ञान भी। बच्चनजी वह पुरानी मनःस्थिति बीत चुकी है, अब हमें उनसे कुछ आशा करनी चाहिए। सतरङ्गिनी की भाषा भी अनुरूप सरल, प्रवाहयुक्त और सङ्गीतमय है। बच्चनजी की कविताओं के प्रेमी सतरङ्गिनी का स्वागत करें। छपाई और गेट-अप आकर्षक है। —व्रजेश

९—वाममार्ग—लेखक, वंशीधर सुकुल वैद्यराज तन्त्र और प्रकाशक, कल्याण-मन्दिर, कटरा, इलाहाबाद हैं। मूल्य

प्रस्तुत पुस्तक शाक्त-धर्म से सम्बन्ध रखती है। शाक्त क्या है, उसका साधन-क्रम क्या है, इसका विशद और वर्णन हिन्दी में न होने से संस्कृत न जाननेवाले को उसके समझने में बड़ी कठिनाई थी। इसी कठिनाई को करने के उद्देश्य से इस पुस्तक की रचना की गई है। तीन प्रकरणों में विभक्त है। पहले प्रकरण का नाम प्रवेश' है, जिसमें तन्त्रशास्त्र के गौरव का बड़े सुन्दर ढङ्ग से वर्णन किया गया है। 'स्वरूप-निरूपण' नाम के प्रकरण में साधक को उसके मार्ग की उत्पत्ति का कारण गया है। साथ ही उसकी साधना का क्या लक्ष्य है, लिए क्या विधेय है और क्या निषिद्ध है, इन सबका इस प्रकरण के मनन से सरलतापूर्वक हो जाता है। बाद तीसरे प्रकरण 'साधना-क्रम' में प्रातःकृत्य, तान्त्रिक सन्ध्यावन्दन, तान्त्रिक तर्पण सहित नित्यार्चन से स्पष्ट रूप में वर्णन किया गया है। पुस्तक के अन्त लक्षण, षट्चक्र-व्यवस्था, चक्रार्चन-विचार, पञ्चतत्त्व-पशुबलि, पात्रवन्दना आदि जैसे महत्त्वपूर्ण विषयों का समावेश कर देने से पुस्तक की उपादेयता और भी बढ़ गई है। इसमें सन्देह नहीं कि यह पुस्तक उन व्यक्तियों के लिए उपयोगी है, जो तन्त्र-मार्ग या शक्त्युपासना के प्रति जिज्ञासा रखते हैं। इसके अध्ययन से साधारण पढ़ा-लिखा व्यक्ति अपने मार्ग के विषय में बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त कर सकता है। अतएव शाक्त धर्म के प्रेमियों को इसे अवश्य पढ़ना चाहिए। —'प्रियदर्शन'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

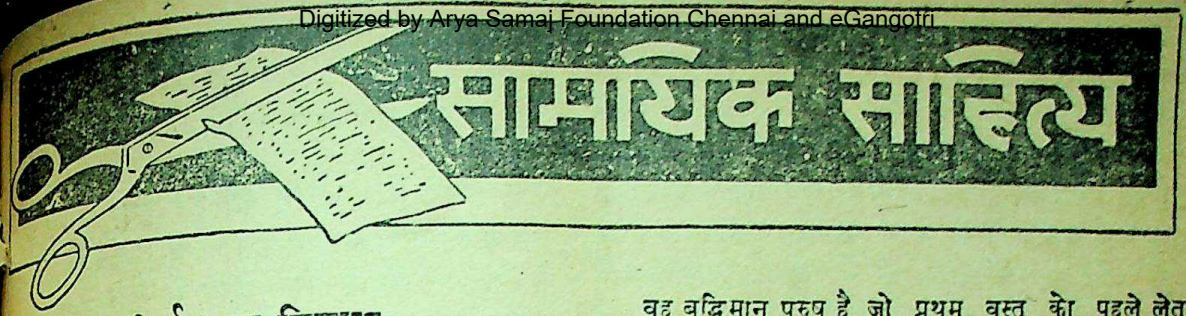

आत्मनिर्णय का सिद्धान्त

पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने श्रीनगर में एक महत्त्वपूर्ण भाषण किया, जिसमें उन्होंने आत्मनिर्णय के सिद्धान्त का विरोध किया है। इस समय इस सिद्धान्त की बड़ी महिमा गाई जाती है परन्तु यह सिद्धान्त किसी देश के लिए कितना घातक है, इसकी ओर बहुत कम लोग ध्यान देते हैं। नेहरूजी ने अपने उक्त भाषण में इसका भण्डाफोड़ किया है। उस भाषण का उक्त अंश 'प्रताप' में छपा है, जो इस प्रकार है—

संसार की परिस्थितियों को ऊँची दृष्टि से देखने पर विदित होता है कि भारत को हिस्सों में बाँट देने से उसकी स्थिति ईरान से ईराक से भी बुरी हो जायगी, क्योंकि मिस्र की भाँति संघर्ष भी बड़ी शक्तियों के लड़ने का स्थान बन जायगा। संगठित हिन्दुस्तान यहाँ के विकास तथा अन्य साधनों में महान् सहायता उत्पन्न करेगा। हम भारत में नाम की स्वाधीनता नहीं चाहते, क्योंकि आगे चलकर छोटे राज्यों को बड़े-बड़े राज्यों में मिल जाना पड़ेगा। छोटे राष्ट्रों के लिए अन्य कोई मार्ग न रह जायगा।

रूस को छोड़कर योरप में कोई देश नहीं है जो वास्तव में अपने को स्वतन्त्र कह सके। इँग्लैंड भी अपने को पूर्णतया स्वतन्त्र नहीं कह सकता। यद्यपि इँग्लैंड वीरता से लड़ा, फिर भी उसका रूस और अमरीका की सहायता के उसकी विजय सम्भव थी।

दूरदर्शी पुरुष स्वतन्त्र राष्ट्रों के विश्व-सङ्घ में ही समस्त समस्याओं का निबटारा पाते हैं। आत्म-निर्णय के सिद्धान्त को मैं विश्व की समस्याओं के प्रकाश में देखता हूँ। आज छोटे राज्यों की कोई स्वतन्त्र सत्ता नहीं है।

आत्म-निर्णय का सिद्धान्त देखने में बड़ा आसान दिखाई देता है किन्तु जैसा कह चुका हूँ, इससे कितनी ही कठिनाइयाँ उत्पन्न होंगी। इस विचार में बहुत-सी भावनायें शामिल हैं, आत्म निर्णय के सिद्धान्त से कोई सम्बन्ध नहीं है। अधिकांश हिन्दू और मुसलमान अपनी वर्तमान स्थिति में रहने को तैयार नहीं हैं और इसके लिए इन समस्याओं को वे धार्मिक रूप देने लगते हैं। मैं हिन्दुस्तान में रहनेवाले सभी देवता नहीं हैं किन्तु मेरा पूर्ण विश्वास है कि हिन्दुस्तान को बाँट दिया गया तो उसकी स्थिति और भी बिगड़ जायगी।

वह बुद्धिमान् पुरुष है जो प्रथम वस्तु को पहले लेता है। हिन्दुस्तान की प्रथम आवश्यकता स्वाधीनता है जिससे उसकी ग़रीबी और भुखमरी दूर हो सकती है।

कांग्रेस २० साल से ब्रिटिश सरकार से सङ्घर्ष कर रही है। उसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है। किन्तु पिछले तीन वर्षों से उसका सम्मान देश में ही नहीं विदेशों में भी पूर्ण रूप से बढ़ गया है और वह अब अधिक शक्तिशाली है।

जर्मनी के हार जाने पर भी आज योरप में शान्ति नहीं है। आज विश्व में दो ही बड़ी शक्तियाँ हैं, वे हैं रूस और अमरीका। भविष्य में दो बड़ी शक्तियाँ चीन और हिन्दुस्तान ही होंगी। पाँचवीं कोई नहीं हो सकती। यद्यपि यह देश सम्पन्न है फिर भी यहाँ के निवासी अत्यन्त ग़रीब हैं। इस स्थिति का अन्त शीघ्र ही होना चाहिए।

नये भारतमन्त्री का प्रथम भाषण

लन्दन में भारतीय पत्रकारों की सभा में भारतमन्त्री श्री पैथिक लारेंस ने एक भाषण किया है, जिसमें उन्होंने भारत एवं ब्रह्मदेश के सम्बन्ध में अपने व्यक्तिगत विचार प्रकट किये हैं। उनके उस भाषण का सारांश 'प्रताप' में छपा है, जो इस प्रकार है—

मैंने अपने सामने यह आदर्श रक्खा है कि भारत और बर्मा तथा ब्रिटेन के बीच समान भागीदारों का-सा व्यवहार हो। यह समान भागीदार न केवल मैं ही और न केवल ब्रिटिश सरकार ही चाहती है बल्कि अधिकांश जनता भी चाहती है। हम दोनों में काफ़ी बातें समान हैं। जहाँ विभिन्नता है वहाँ बहुत-सी बातें हमें उनको देनी तथा उन्हें हमको सिखानी हैं। यह आदर्श कब कार्यान्वित हो सकेगा, यह मैं इस समय नहीं बता सकता, पर इतना मैं ज़रूर कहूँगा कि मेरे सारे कामों में यही आदर्श कार्य करेगा।

जब मैंने भारतमन्त्री के पद को सँभाला तो मैंने इस पद के गुरु-भार का अच्छी तरह अनुभव किया, पर मैंने सोचा कि एक ओर वायसराय तथा दूसरी ओर भारत के बड़े-बड़े नेता इस गुरु-भार को ढोने में मेरी सहायता अवश्य करेंगे। मैं भारत तथा बर्मा के प्रश्न में सदैव दिलचस्पी लेता आया हूँ, पर अभी अनेक ऐसे प्रश्न हैं जिनका मैं इंडिया आफ़िस के अन्दर रहकर अध्ययन नहीं कर सका हूँ, इसलिए इस बारे में आप लोगों के प्रश्नों का पूर्ण उत्तर देने में असमर्थ हूँ। मैं इस समय केवल यही बताने के लिए खड़ा हुआ हूँ कि मेरा आदर्श क्या है तथा मैं किस स्फूर्ति के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ काम करना चाहता हूँ। यद्यपि मैं प्राच्य साहित्य का विशेषज्ञ नहीं हूँ, फिर भी मैं कह सकता हूँ कि मैंने उसके मौलिक सिद्धान्तों को भारतीय दृष्टिकोण से समझ लिया है। अस्तित्व के प्रश्न की उसकी आध्यात्मिक व्याख्या तथा भौतिक सत्यता के उसके कलापूर्ण प्रदर्शन ने मेरे जीवन पर बड़ा भारी प्रभाव डाला है। मैं अतिरञ्जन नहीं करता, पर मैं बहुधा महसूस करता हूँ कि मेरी भावनाओं की सङ्गति पश्चिम के बजाय पूर्व की भावनाओं से अधिक फ़िट बैठती है।

बर्मी जीवन तथा विचारों ने भी मुझ पर काफी असर डाला है। मैंने १९२६, २७ तथा १९३१ में अनेक महीने भारत में बिताये हैं। मैं भारत के गोलमेज़ सम्मेलन तथा उसकी सङ्घ-निर्माण कमिटी का भी सदस्य रह चुका हूँ। मैं भारत तथा बर्मा के अनेक प्रतिनिधियों से विचार-विनिमय भी कर चुका हूँ।

परमाणु बम की भयङ्कर प्रक्रिया

जिस परमाणु बम के सर्वनाशी प्रभाव से विवश होकर जापान ने तत्काल ही हथियार डाल दिया है, वह कितना भीषण है, इसका विवरण प्रसिद्ध वैज्ञानिक सर सी० वी० रमन ने प्रकाशित किया है। वह 'प्रताप' में इस प्रकार छपा है—

परमाणुओं में यूरेनियम का सूक्ष्मतम अंश सबसे अधिक शक्तिशाली प्रभाव रखता है। इसलिए जब 'यूरेनियम परमाणु' तेज़ी के साथ छूटते हैं तो इतनी तेज़ी के साथ हवा में बिखरते हैं और इनके छूटने से जो गैस पैदा होती है, उसका दबाव इतनी तेज़ी और ज़ोर के साथ वायु के दबाव पर पड़ता है कि सारा वातावरण एकदम असाधारण रूप में गरम हो उठता है, परिणाम-स्वरूप उस वातावरण में जीवित समस्त सूक्ष्म एवं स्थूल जीवाणु अथवा जीव भुन उठते हैं और उस गैस की तेज़ी से फैलाव के कारण जो धक्का पैदा होता है वह इतना असाधारण होता है कि उस क्षेत्र के तमाम स्थूल पदार्थ उड़कर छोटे से छोटे टुकड़ों में विभाजित हो जाते हैं और वे टुकड़े भी जब तीर की तरह टूटकर तड़कते हुए छूटते हैं तो जिस चीज़ से टकराते हैं उसी के छर्रे-छर्रे उड़ जाते हैं और उनसे भी जो टुकड़े टूट-कर एकाएक तेज़ी से छूटते हैं, वे भी वे ही काम करते हैं। इस प्रकार एक परमाणु-बम के द्वारा एक बहुत बड़ा क्षेत्र एकदम उड़कर हवा में बिखर जाता है। ज़मीन में नीचे तक दरारें हो जाती हैं और जितनी गहराई में उसका प्रभाव पड़ता है, उसका सारा स्थल-संयोग भी बिखरकर हवा में उड़ जाता है और वह भी अपनी प्राप्त शक्ति द्वारा अपने सामने आनेवाले स्थूल पदार्थ-समूहों को उड़ा देता है।

इस परमाणु की प्रक्रिया की भयङ्करता का अनुमान इस माप-अङ्क द्वारा भी सरलतापूर्वक लगाया जा सकता है कि परमाणु के विस्फोट से उत्पन्न हुई एक घन फुट गैस एक सेकण्ड के सौवें अंश के समय में दस लाख किलोवाट शक्ति को प्रताड़ित करता है। और उसकी प्रतिक्रिया के रूप में इतनी तेज़ गरमी फैलती है मानों सूरज टुकड़े-टुकड़े होकर पृथ्वी पर पड़ा है।

योरप की दुरवस्था

वार इन्फार्मेशन आफिस आदि संस्थाओं की रिपोर्ट से पता लगता है कि योरप के देश महायुद्ध के स्वरूप किस दुरवस्था को प्राप्त हो गये हैं। उनकी रिपोर्ट का सारांश अखबारों में छपा है। ऐसी ही एक रिपोर्ट का सार हम यहाँ 'जागृति' से उद्धृत करते हैं—

खेती की भूमि का नष्ट-प्राय हो जाना, तत्सम्बन्धी यन्त्रों का विनाश, युद्ध से तबाही, जर्मनों द्वारा लूट और बमबारी की बम्बारी से क्षति, पोषक पदार्थों के अप्राप्य होने की वजह सालों से होती आ रही जन-बल की क्षति, यातायात के मार्गों का विनष्ट हो जाना, जल-मार्ग की बाधायें तथा अन्न पदार्थों की भयोत्पादक कमी; ये सब ऐसी बातें हैं जिनसे राष्ट्रों की आर्थिक स्थिति हीनतम हो चुकी है।

योरप को आज ऐसी खाद्य-सामग्री की आवश्यकता है जिसकी कमी को हम विश्वव्यापी कह सकते हैं। मांस, तैल, चीनी की इतनी अधिक कमी है कि मुक्त त्रस्त जनता युद्धपूर्व के स्तर तक उठाने का कोई साधन या उपाय नहीं सूझता।

योरप में इस वर्ष खाद्य उत्पादन युद्ध काल के उत्पादन से भी कम रहेगा और यातायात की असुविधायें आयात को दुर्लभ और कठिन बना देंगी। यातायात की असुविधा ही खाद्य उत्पादन को महाद्वीप में वितरण करने में एक बड़ी बाधा है। यातायात की कठिनाइयों का सबसे बड़ा शिकार फ्रांस है जहाँ यातायात युद्ध के पूर्वकाल की अपेक्षा ५० प्रतिशत ही रह गया है।

मुक्त प्रदेशों में कोयले की कमी भी कम चिन्ताजनक नहीं है क्योंकि इससे यातायात, खाद्य-वितरण, उद्योग-धन्धों की गति से जमाने और रहन-सहन की आम व्यवस्था में बड़ी भारी बाधा पड़ती है।

यद्यपि राष्ट्रों की परस्पर स्थितियों में अन्तर है फिर भी छोटे राष्ट्रों को खण्ड-खण्ड होना पड़ा तो बड़े राष्ट्रों को भी हिला हुआ देखेंगे। आम तौर पर यदि योरप का आर्थिक अपने साधारण रूप को प्राप्त करने में असफल रहा, तो फिर योरपीय राष्ट्र की नींव दृढ़ नहीं हो सकेगी।

शान्तिकाल में ये मुक्त देश कच्चे मालों की कुछ उत्पादन करते रहे और आयात तथा आन्तरिक परस्पर पर ही अवलम्बित रहे। अब महाद्वीप में ही व्यापार इनके लिए असम्भव है और इसके विपरीत अब वे सब पार के आयात को ही जीवन-आधार बनाने के लिए विवश गये हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन-निर्वाह के लिए अनिवार्य पदार्थों की विश्वव्यापी कमी और अभी जहाज़ों की महत्त्वपूर्ण माँग है, जो ज़रूरी है। इन सर्दियों में मुक्त प्रदेशों को जीवन-रक्षा के लिए पर्याप्त उपचार्य, ठण्ड से बचने और फैक्ट्रियों तथा यातायात को चलित रखने के लिए कोयला मिल गया तो वे जीवित रह सकेंगे। कम से कम आवश्यकतायें ही इस स्थिति को, जो आज प्रदेशों को निगल जाने के लिए मुँह फाड़े प्रस्तुत है, रोकने में सफल हो सकती हैं।

मज़दूरदल की नीति

सर स्टेफर्ड क्रिप्स ब्रिटेन के मज़दूर दल के एक प्रमुख व्यक्ति हैं। वहाँ के नये मज़दूर मन्त्रिमण्डल के वे एक सदस्य हैं। चुनाव के पहले उन्होंने एक महत्त्वपूर्ण लेख लिखा था, जिससे मज़दूर दल की नीति का आभास मिलता है। सम्भवतः यह नीति उसकी घरेलू नीति है। लेख महत्त्वपूर्ण है। उसका एक अंश इस प्रकार है—

मज़दूर दल सदैव से नैतिकता का उपासक रहा है। उसी सदैव उसका विश्वास रहा है और आज भी है। मनुष्य सभ्यता सब से मूल्यवान् धरोहर है और मानवता की उन्नति तथा हम लोगों के लिए सबसे आवश्यक कार्य है। मज़दूर-दल विश्वास है कि जन्म, धन और निर्धनता के कारण हमारे राष्ट्र किसी बालक का विकास नहीं रुकना चाहिए। हम एक-से हैं, और न हो सकते हैं। कुछ के पास साधनों एवं सुविधाओं की भरमार है और कुछ के पास इनका अभाव है, हमारा कर्तव्य है कि हम इस बात का ध्यान रक्खें कि हर व्यक्ति को मानवता के हित में अपना कार्य करने का अधिकार हो।

इसी लिए मज़दूर दल इस बात पर दृढ़ विश्वास रखता है कि किसी भी राजनीतिक कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य अधिक से अधिक लोगों को सुख-शान्ति और सम्पत्ति प्रदान करना है।

इस उत्कर्ष के कारण मनुष्य को पहले से अधिक व्यक्तिगत सम्पत्ति प्राप्त करने का अधिकार होगा, और मनुष्य नाना प्रकार के साधनों एवं सुखों का उपभोग करेगा। पूर्ण सुखमय जीवन के लिए इस प्रकार की व्यक्तिगत सम्पत्ति आवश्यक है। जिन्हें इस प्रकार की सम्पत्ति उपलब्ध करने का सौभाग्य प्राप्त है वे इस बात को भली भाँति समझते हैं। परन्तु व्यक्तिगत सम्पत्ति द्वारा जब व्यक्ति दूसरे पर अधिकार जमाता या जनता का शोषण करता है तब दूसरी बात होती है। ऐसी सम्पत्ति को प्रमुख स्थान नहीं मिलना चाहिए।

भूमि पर प्रभुत्व के लिए मकानों की व्यवस्था, आवागमन के साधनों, आर्थिक शक्ति, द्रव्य के नियन्त्रण आदि जनोपयोगी वस्तुओं में दुरुपयोग नहीं होना चाहिए। उसका उपयोग तो वस्तुओं के निर्माण तथा उन्हें जनता तक पहुँचाने में होना चाहिए। व्यक्तिगत लाभ के लिए उनका उपयोग अनुचित है। राष्ट्र के उद्योगों का इस प्रकार सङ्गठन होना चाहिए कि जिन वस्तुओं की जनता को आवश्यकता है, तैयार हों और लोगों को बेकार न रहना पड़े। सभी लोगों को काम मिल जाय।

वास्तव में हमारी समस्त भौतिक सम्पत्ति और राष्ट्रीय सम्पत्ति का उपयोग जनता की सेवा के लिए होना चाहिए न कि कुछ लालची लोगों की आकांक्षाओं की पूर्ति में।

हमारे व्यक्तिगत हितों पर ध्यान दिया जाय इसके लिए हम अनेक अनावश्यक तर्क उपस्थित कर सकते हैं। हम इस बात के लिए भी चेष्टा कर सकते हैं कि उस नियम में कुछ अपवाद सम्मिलित कर लिये जायँ परन्तु वास्तव में सिद्धान्त की अवहेलना नहीं की जा सकती।

('हिन्दुस्थान' से)

'मैंचेस्टर गार्जियन' का अनुरोध

ब्रिटेन के प्रमुख पत्र मैंचेस्टर गार्जियन ने वहाँ की मज़दूर दल की सरकार से भारत के प्रति न्याय किये जाने का एक अनुरोध-सा किया है। उक्त अनुरोध का सारांश 'हिन्दुस्थान' में इस प्रकार छपा है—

ये सराहनीय भावनायें हैं जिन्हें अतिशीघ्र कार्य रूप में परिणत करना चाहिए। राजनीतिक बन्दियों और नज़रबन्दों की रिहाई तथा कांग्रेस पार्टियों पर से प्रतिबन्ध हटा लेने का कार्य भारत में किसी नई योजना के निर्माण करने से पूर्व अविलम्ब होना चाहिए। ऐसा करने पर भारत में पुनः विश्वास उत्पन्न होगा और गतिरोध के अन्त करने का लार्ड वेवल का प्रयत्न अत्यन्त सफल हो जायगा। साथ ही इंडिया आफ़िस को उपनिवेश आफ़िस में मिला दिया जाना चाहिए।

प्रान्तों में लोकप्रिय सरकारों तथा केन्द्र में उत्तरदायी सरकार के निर्माण का पुनः प्रयत्न होना चाहिए। यदि लार्ड वेवल यह स्पष्ट कर दें कि केन्द्र में अस्थायी सरकार के निर्माण करते समय भारत के स्थायी विधान तथा पार्टियों के अस्तित्व पर कोई असर न होगा तो विभिन्न दलों के असहयोग का कोई कारण नहीं है। भारतीय नेताओं को मि० पैथिक लारेन्स के सदुद्देश्यों पर इससे विश्वास बढ़ेगा। जापानी युद्ध का अन्त हो जाने पर सुदूरपूर्व की अनेक समस्याओं को हल करने का प्रश्न उपस्थित है जिसमें भारत का बड़ा हाथ रहेगा। सैन्फ्रांसिस्को कान्फ़रेंस का पं० जवाहरलाल नेहरू सरीखे व्यक्ति पर बड़ा भारी असर पड़ा है। एशियाई राष्ट्र के शान्ति-सम्मेलन में तथा विश्वचार्टर के अन्तर्गत जेनरल एसेम्बली में ऐसे व्यक्ति भारत का प्रतिनिधित्व करें और इन अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लेकर बहुमूल्य अवसर का उपयोग करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय नोट

ब्रिटेन में मज़दूर दल की सरकार

ब्रिटिश पार्लियामेंट का नया चुनाव हो गया। इस चुनाव में मज़दूर दल को अभूतपूर्व विजय प्राप्त हुई। उसके ३७५ सदस्य चुने गये और अनुदार दल के १८८। जिस अनुदार दल की सरकार ने युद्ध में ऐतिहासिक विजय प्राप्त की और जिसकी सरकार कोई बीस वर्ष से अधिकारारूढ़ थी, उसका इस चुनाव में जो घोर पराभव हुआ है, उसकी कल्पना भी नहीं थी। यह ज़रूर ठीक है कि लोग समझते थे कि अब जो नया चुनाव होगा, उसमें अनुदार दल अधिकारारूढ़ नहीं रह सकेगा; परन्तु यह कोई नहीं जानता था कि नये चुनाव में उसकी ऐसी गहरी हार होगी। युद्ध की विजय के फल स्वरूप योरप एवं एशिया में जो नई परिस्थितियाँ उठ खड़ी हुई हैं, उनका समाधान करने के लिए सौम्य नीति की आवश्यकता है। उनको लेकर आपस में ही कहीं कोई सङ्घर्ष न उठ खड़ा हो इसकी भी आशङ्का थी। फलतः ब्रिटेन की जनता ने ऐसे ही दल को साम्राज्य का शासन-भार सौंपने का निश्चय किया, जो सौम्य नीति ग्रहण करके संसार में शान्ति-स्थापना की व्यवस्था करे। ब्रिटेन की जनता के इसी निश्चय का यह परिणाम हुआ है कि मज़दूर दल वहाँ का शासन-चक्र अपने हाथ में ले सका है। अब यह देखना है कि अमरीका तथा रूस एवं चीन तथा फ्रांस के साथ सहयोग कर वह संसार का नूतन निर्माण किस प्रकार करता है। इसमें सन्देह नहीं कि ब्रिटेन के मज़दूर दल की सरकार का अपने प्रजातान्त्रिक आदर्शों के कारण अमरीका, रूस, चीन तथा फ्रांस आदि के साथ सुदृढ़ सख्य-भाव क़ायम रहेगा। परन्तु इसके साथ ही यह [illegible] है कि ब्रिटेन के साम्राज्यवाद एवं उसके साम्राज्य में वह [illegible] भी कमी न होने देगा। और यदि वह कोई ऐसा [illegible] का दुःसाहस करेगा, जिससे ब्रिटेन के साम्राज्य की [illegible] ठेस पहुँचने की सम्भावना होगी तो वह एक क्षण भी [illegible] रूढ़ नहीं रह सकेगा। इसका मूल कारण यह है कि ब्रिटि[illegible] जनता साम्राज्यवादी जनता है। साथ ही वह इतनी [illegible] सजग है कि इस बात को वह भले प्रकार जानती है कि [illegible] अनुदार दल के हाथ शासन-भार रहे और कब उदार [illegible] मज़दूर दल के हाथ में। यह ब्रिटेन की राजनीति की [illegible] परम्परा है कि सङ्घर्ष-काल में शासन-सूत्र सदा अनुदार [illegible] हाथ में रहा है और उसकी समाप्ति के बाद उदार या [illegible] दल ने शासन ग्रहण कर लिया है। वही बात इस [illegible] हुई है। जब ऐसा समझ पड़ा कि कहीं रूस से सङ्घर्ष [illegible] जाय तब ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी गई कि चुनाव अवश्य [illegible] हो गया और अनुदार दल को मुँह की खानी पड़ी। [illegible] ब्रिटिश साम्राज्य का शासन-सूत्र मज़दूर दल के प्रधान [illegible] श्री क्लीमेंट एटली के हाथ में आ गया है और वे अपने [illegible] प्रमुख व्यक्तियों को मन्त्रिमण्डल में उपयुक्त स्थान देकर [illegible] चक्र परिचालन करने में संलग्न हैं। विश्वास किया जाता [illegible] मज़दूर दल की सरकार अपने आदर्शों के अनुसार साम्राज्य [illegible] शासन करेगी। उसकी घोषणा से अभी यही [illegible] होता है कि उसका ध्यान गृह-नीति के ऊपर ही विशेष [illegible] रहेगा, क्योंकि यह चुनाव भी गृह-नीति को ही लक्ष्य करके [illegible] गया था। चाहे जो हो, जब शासन-सूत्र उसके हाथ में आ [illegible] गया है और जब पार्लियामेंट में उसको विशाल बहुमत [illegible] गया है तब वह अपने दल की नीति के अनुसार साम्राज्य [illegible] शासन अवश्य करेगा और उस दशा में यह आशा करना [illegible] ही होगा कि साम्राज्य के जिन देशों को वास्तविक अधिकार [illegible] प्राप्त हैं, उन्हें वे बहुत कुछ अवश्य प्राप्त हो जायँगे और वह [illegible] अवश्य ही बड़े महत्त्व की होगी।

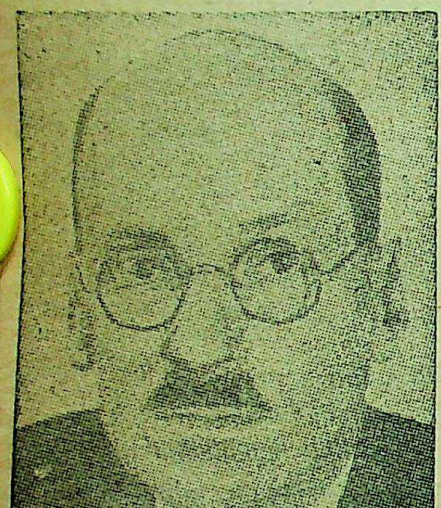

मेजर एटली

भारतीयों का आशावाद

भारत आशावादियों का देश है। वह निराश होना [illegible] ही नहीं। यदि उसे आशा का सहारा न मिला होता तो [illegible] को गुलामी के बाद वो आज वह जीता-जागता न दिखाई [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[भाग ३]

...सम्मेलन की असफलता से वह ज़रा भी निराश नहीं ...। उसके सौभाग्य से ब्रिटेन में मज़दूर दल की सरकार ...हो गई। इससे उसकी आशा के नये पर उग आये। ...समय चुपचाप मज़दूर दल की सरकार की ओर आशा-...दृष्टि से देख रहा है। मज़दूर दल के नेताओं ने बार-बार ...आश्वासन दिया है कि अवसर आने पर वे उसकी महत्त्वा-...की पूर्ति करेंगे। वही मज़दूर नेता आज ब्रिटिश सरकार ...वर्ता हैं। वे चाहें तो भारत को एक क्षण में स्वाधीनता ...कर सकते हैं। परन्तु ब्रिटिश शासन की ऐसी परम्परा ...वे चाहकर भी वैसा नहीं कर सकते। हाँ, क्रम से धीरे-...वे बहुत कुछ कर सकते हैं। यही वह बात है, जिससे ...के लोकनेताओं को धैर्य और सन्तोष है और वे देखना ...हैं कि मज़दूर दल की सरकार उनके देश को किस रूप ...स्वाधीनता प्रदान करती है। मज़दूर दल के एक प्रमुख ...बेविन साहब ने एक बार यहाँ तक कह डाला था कि ...मन्त्री का पद तोड़कर इंडिया ऑफ़िस का अस्तित्व ...देना चाहिए।' परन्तु आज जब इस बात की चर्चा उठाई ...और यह कहा गया कि इंडिया ऑफ़िस को औपनिवेशिक ...में मिला देना चाहिए तब दक्षिण अफ्रीका आदि उपनि-...के प्रधानों ने इसका यह कहकर विरोध किया कि ऐसा ...हो सकता। भारत उपनिवेश नहीं है। अनुदार दल के ...काल में हमने उसके प्रमुख व्यक्तियों को यह कहते हुए ...बार सुना है कि भारत को डोमीनियन स्टेटस प्राप्त है और ...उपनिवेशों के दर्जे का ही है। ब्रिटिश राजनीति की ...का यह एक उदाहरण है। कहने का मतलब यह है ...मज़दूर दल की भारत के प्रति सच्ची सहानुभूति के होते हुए ...वह अपने मन की नहीं कर सकेगा। साम्राज्य-सरकार की ...नीतिक परम्परा का ध्यान उसे रखना ही पड़ेगा। फिर अपने ...में सम्प्रदायवादियों के जो अड़ङ्गे हैं, वे कम बाधक नहीं ...। वे इस अवसर पर काफ़ी से भी अधिक बाधायें उपस्थित ...। कौन नहीं जानता कि पृथक् निर्वाचन इस देश में ...दल के सबसे बड़े सरदार श्री रामसे मैकडानल्ड के द्वारा ...प्रचलित किया गया था, जिसने इस देश की राजनीति को एक-...निर्वीर्य कर दिया। यही नहीं, किन्तु ऊपर से यहाँ गृह-कलह ...महाव्याधि उत्पन्न कर दी है। परन्तु आज संसार की ...स्थिति बिलकुल बदल गई है। महायुद्ध के फल-स्वरूप ...संसार में इस समय एक नई क्रान्ति का आविर्भाव हो ...है। अतएव ऐसी स्थिति में भारत में ब्रिटिश सरकार को ...व्यवस्था करनी ही पड़ेगी कि भारत अखण्ड रहे और वहाँ ...निवासी अपने देश का स्वाधीन भाव से शासन करें। और ...भारत की यही आकांक्षा भी है। देखना है कि मज़दूर ...की सरकार उसकी इस आकांक्षा की पूर्ति कब और कहाँ ...करती है।

पाट्सडम का निर्णय

पाट्सडम सम्मेलन समाप्त हो गया। इस सम्मेलन में अमरीका के राष्ट्रपति श्री ट्रूमैन, ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री विंस्टन चर्चिल और रूस के प्रधान मन्त्री श्री स्टैलिन उपस्थित हुए थे। बाद को ब्रिटेन के नये प्रधान मन्त्री श्री क्लीमेंट एटली भी शामिल हुए थे। इन तीनों प्रधान व्यक्तियों ने परस्पर जो विचार-विनिमय किया, वह प्रकाश में नहीं आया। लोगों को आशा थी कि यह सम्मेलन योरप की एवं एशिया की सभी समस्याओं का समाधान कर देगा। परन्तु जो वक्तव्य इसकी समाप्ति के बाद प्रकाशित हुआ है, उससे यही प्रकट होता है कि इस सम्मेलन में कदाचित् एक मात्र जर्मनी या उसके पड़ोस के देशों के प्रश्नों पर ही विचार हुआ है। हाँ, यह भी कहा जा सकता है कि प्रशान्त के युद्ध पर विचार हुआ होगा, क्योंकि उसकी समाप्ति के बाद ही रूस ने भी जापान के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी थी। सम्मेलन में जो निर्णय हुआ है, उसकी रिपोर्ट सात हज़ार शब्दों में प्रकाशित हुई है, जिसका सारांश समाचार-पत्रों में छपा है। उसे हम यहाँ 'हिन्दी मिलाप' से उद्धृत करते हैं—

जर्मनी की जल, स्थल और हवाई सेना को बिल्कुल नष्ट कर दिया जायगा। तमाम हथियार, गोली-बारूद या युद्धोपकरण या तो नष्ट कर दिये जायँगे या उन पर मित्रों का अधिकार होगा। तमाम नाज़ी संस्थायें और क़ानून ख़त्म कर दिये जायँगे और सम्प्रति जर्मनी में कोई केन्द्रीय सरकार न होगी। जहाज़ या हवाई जहाज़ भी जर्मन नहीं रख सकेंगे, उनकी बड़ी-बड़ी व्यापार-कम्पनियाँ तोड़ दी जायँगी। स्थानीय स्वतन्त्रता, जर्मन अर्थ-प्रबन्ध विकेन्द्रित कर दिया जायगा। जर्मनी को मुख्य रूप से किसान देश बना दिया जायगा और दस्तकारी घरेलू दस्तकारी तक सीमित होगी। जर्मनी को जिनस के रूप में क्षतिपूर्ति करनी होगी। तो भी उसके लिए इतनी जिनस छोड़ दी जायगी कि वह आत्मभरित रहे। युद्ध-अपराधियों पर शीघ्र ही मुक़दमा चलेगा और उनकी सूची इसी महीने के अन्त तक घोषित कर दी जायगी।

मित्र जर्मनी को नष्ट करना या ग़ुलाम बनाना नहीं चाहते। वे उसे शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत करने का अवसर देना चाहते हैं—ताकि वह अन्त में शान्तिप्रिय स्वतन्त्र देशों में अपना स्थान पा सके। इस उद्देश के लिए जर्मनी की शिक्षा-पद्धति बदली जायगी। जर्मनी स्थानीय रूप से स्वतन्त्र होगा—उसे भाषण, धर्म और अख़बारों में लिखने के सम्बन्ध में स्वतन्त्रता होगी। जब तक मित्र देशों का अधिकार रहेगा—कब तक रहेगा यह नहीं बताया गया—जर्मन आर्थिक दृष्टि से इकाई समझा जायगा।

इटली, जर्मनी और जिन देशों ने जर्मनों का साथ दिया था उनसे सन्धि करने के लिए एक समिति बनाई गई है जिसमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रिटेन, रूस, अमरीका, चीन और फ्रांस के विदेश-मन्त्री शामिल होंगे और इसका कार्यालय लन्दन में रहेगा। पोलैंड की सीमा निश्चित करने का प्रश्न शान्ति स्थापित होने तक टाल दिया गया है। सम्प्रति वह ओडर और नीस नामी नदियों तक अपनी सीमा समझकर प्रबन्ध करता रहेगा। पोलैंड, चकोस्लोवाकिया और हङ्गरी को आदेश दिया गया है कि जब तक स्थिति पर पुनर्विचार न हो, वे अपनी आबादी न बदलें—यद्यपि यह सिद्धान्त मान लिया गया है। स्पेन को छोड़कर शेष तटस्थ देशों को मित्र-राष्ट्र सङ्घ की सदस्यता पेश की गई है। जब इटली से सन्धि की बातचीत चलेगी तो उसमें फ्रांस को भी शामिल किया जायगा।

योरोपियन एडवाईज़री कमीशन तोड़ दिया गया है और उसका काम मित्र कंट्रोल कौंसल को सौंप दिया गया है। जर्मनी के बारे में तीनों नेताओं ने आर्थिक और राजनीतिक नीति का भी निश्चय कर लिया है।

बाबू मैथिलीशरण गुप्त की साठवीं वर्ष-गाँठ

गत अगस्त में काशी-नागरीप्रचारिणी सभा में बाबू मैथिलीशरणजी की साठवीं वर्षगाँठ धूमधाम से मनाई गई। इस महोत्सव का सभापतित्व इलाहाबाद यूनीवर्सिटी के वायस चांसलर डाक्टर अमरनाथ झा ने किया था। इसके पहले गुप्तजी की पचासवीं वर्षगाँठ भी काशी में ही मनाई गई थी। उस अवसर पर महात्मा गांधी ने सभापतित्व किया था। गुप्तजी ऐसे अभिनन्दन के अधिकारी हैं और उनका जितना ही स्वागत-सत्कार किया जाय, थोड़ा होगा। उन्होंने गत चालीस वर्ष में अपनी सुकृतियों-द्वारा हिन्दी की कविता का मस्तक ऊँचा किया है। वे हिन्दी के राष्ट्रीय भावना के कवि माने जाते हैं। अपनी 'भारत-भारती' द्वारा उन्होंने हिन्दी-भाषी जनता के हृदय में स्थान पा लिया था। इधर 'साकेत' आदि प्रौढ़ रचनायें रचकर उन्होंने हिन्दी के विद्वानों में अपना विशेष स्थान बना लिया है। सबसे बड़ी विशेषता उनकी यह है कि वे जिस खड़ी बोली अर्थात् बोल-चाल की भाषा को लेकर उठकर खड़े हुए थे, उसको उन्होंने अपनी रचनाओं के द्वारा कविता की भाषा बना देने में सफलता [illegible] है। परन्तु सबसे अधिक बड़ी बात यह रही है कि [illegible] अपनी रचनाओं में राष्ट्रीयता की भावनाओं का समुचित [illegible] रक्खा है और यह भी एक कारण है, जिससे वे हिन्दी-[illegible]

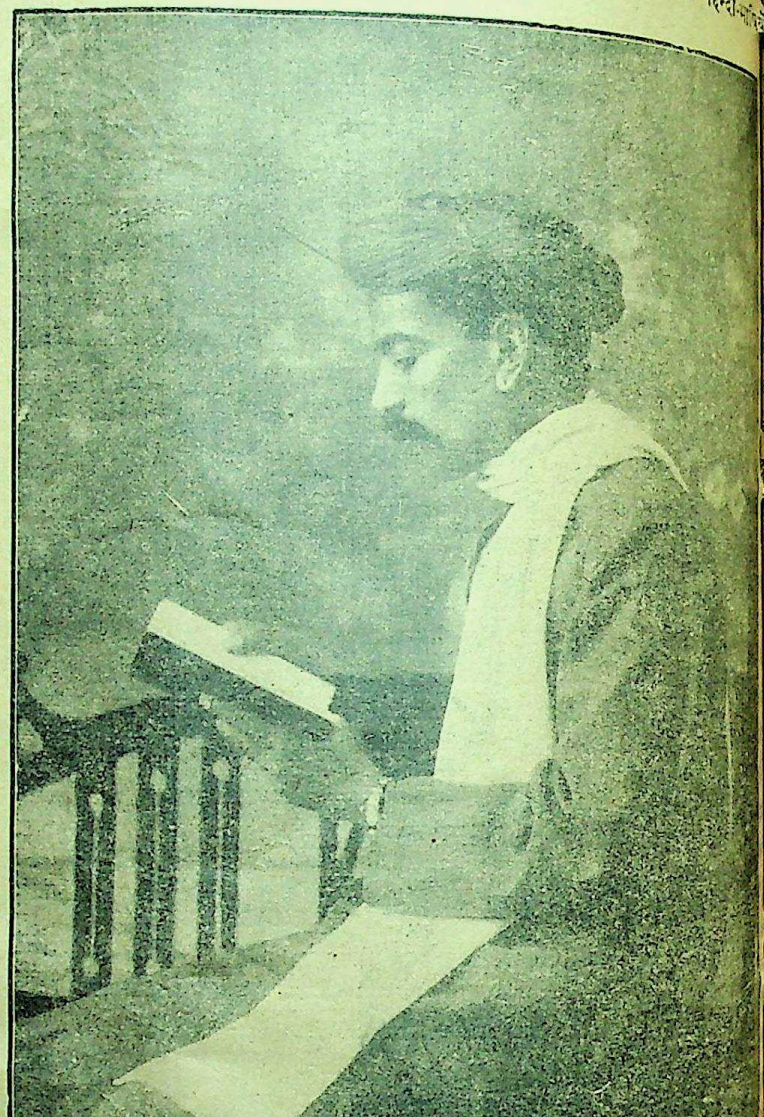

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

अधिक लोकप्रिय हो गये हैं। काशी में उस दिन उनका [illegible] नन्दन करके हिन्दी के प्रेमियों ने दस हज़ार की एक [illegible] उन्हें भेंट की है। इस द्रव्य से गुप्तजी, प्रयाग में [illegible] साहित्यिक संसद् नाम की नई साहित्यिक संस्था का कार्य [illegible] करेंगे। गुप्तजी का यह कार्य उनके सर्वथा उपयुक्त [illegible] हम उनके इस अभिनन्दन के लिए उनको बधाई देते हैं। [illegible] विश्वास है कि गुप्तजी भविष्य में हिन्दी की और भी [illegible] महत्त्वपूर्ण सेवा करेंगे। भगवान् उनको चिरायु करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुर्की का सङ्कट

तुर्की इस युद्ध में नहीं शामिल हुआ। बाद को युद्ध के अन्तिम चरण पर पहुँचने पर उसने भी जर्मनी के विरुद्ध युद्ध-घोषणा कर दी थी; तथापि उसे हथियार नहीं उठाना पड़ा। तुर्की एक प्रजातन्त्र राज्य है और वहाँ का शासन-कार्य उसके निर्माता स्वर्गीय कमाल पाशा की निर्धारित नीति के अनुसार हो रहा है। परन्तु युद्ध के झमेले से बच जाने पर भी, जान पड़ता है, वह राजनैतिक सङ्कट से न बच सकेगा। उसका शक्तिमान् पड़ोसी रूस उससे कुछ ऐसी माँगें कर रहा है, जिनकी पूर्ति करना उसके लिए कठिन है। परन्तु रूस ने जो प्रबल स्थिति प्राप्त कर ली है, उसके कारण उसे रूस को सन्तुष्ट करने के लिए बाध्य होना पड़ेगा। रूस ने माँग की है कि दर्रे दानियाल की जल-प्रणाली पर उसका भी अधिकार रहे अर्थात् काले सागर से उसके जहाज़ भूमध्यसागर में आ-जा सकें। उसकी दूसरी माँग यह है कि सन् १९२२ में आर्मीनिया के जो दो ज़िले तुर्की को दे देने पड़े थे, वे अब लौटा दिये जायँ। परन्तु तुर्की ने उसकी इन दोनों माँगों को अभी स्वीकार नहीं किया है। इधर आर्मीनिया के लोगों ने जब यह देखा तब उन्होंने अपना एक अलग आन्दोलन छेड़ दिया है। अगस्त के पहले सप्ताह में रूमानिया की राजधानी बुखारेस्ट में उनकी एक सभा हुई है। उस सभा में आर्मीनिया के निवासियों के प्रतिनिधियों ने कहा है कि "अब समय आ गया है जब तुर्की से वह आर्मीनियन राज्य फिर सोवियत आर्मीनिया से मिला दिया जाय, जिसे तुर्की ने पहले अन्यायपूर्वक ले लिया था।" इस सभा के विवरण रूसी पत्रों में बड़े उत्साह के साथ छापे गये हैं। रूस के ऐसे रुख़ से तुर्कों का शङ्कित होना सर्वथा स्वाभाविक है। सेन फ्रांसिस्को कान्फ्रेंस से लौटते हुए तुर्क प्रतिनिधि लन्दन गये थे और वहाँ उन्होंने ब्रिटेन के वैदेशिक विभाग के अधिकारियों से भी भेट की थी। उन्होंने रूस की इन माँगों के सम्बन्ध में उनसे अवश्य ही बातचीत की होगी। जान पड़ता है, रूस-तुर्की का यह प्रश्न आपस में नहीं निपटेगा और यह राष्ट्र-सङ्घ की पञ्चायत के सम्मुख अवश्य उपस्थित किया जायगा। तुर्की सहज में दब जानेवाला राष्ट्र नहीं है। परन्तु प्रश्न रूस का है। उधर आर्मीनिया के निवासी ईसाई हैं। ये दोनों ही बातें ऐसी हैं, जिनके कारण रूस को तुर्की को दबने के लिए बाध्य होना पड़ेगा। आज रूस बलवान् है और साथ ही वह बहुत अधिक महत्त्वाकांक्षी भी है। यही कारण है कि वह अपने मन की करवा लेने में सफल-मनोरथ हो सकता है।

बाबू श्यामसुन्दरदास का देहावसान

रायबहादुर डाक्टर श्यामसुन्दरदास का गत ८ अगस्त को काशी में स्वर्गवास हो गया। उनका स्वास्थ्य पिछले दिनों बहुत गिर गया था। यों वे वर्षों से अस्वस्थ थे। उनके दिवङ्गत हो जाने से हिन्दी के एक प्रमुख व्यक्ति का अभाव हो गया है। वे हिन्दी के निर्माताओं में थे। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के निधन के दस ही वर्ष बाद अपनी छात्रावस्था में उन्होंने हिन्दी-सेवा का जो व्रत ग्रहण किया था उसे वे आजीवन धारण किये रहे। यही नहीं, उन्होंने हिन्दी को उन्नत करने का जो प्रयत्न आरम्भ किया उसमें उन्हें आशातीत सफलता मिली और वे हिन्दी के सर्व-प्रधान निर्मायक बन गये। काशी की नागरी-प्रचारिणी सभा ने जो सुदृढ़ स्थिति आज प्राप्त कर ली है, उसका सारा श्रेय बाबू साहब को ही है। सभा के द्वारा उन्होंने हिन्दी के साहित्य का निर्माण किया है और हिन्दी के हितों की रक्षा का आन्दोलन किया है। बाद को जब यूनीवर्सिटियों ने हिन्दी को शिक्षा-क्रम में स्थान दिया तब वे हिन्दू यूनीवर्सिटी के हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष बनाये गये। इस पद से उन्होंने हिन्दी-साहित्य की जो रचना की तथा करवाई, उससे उनको और भी अधिक महत्त्व प्राप्त हो गया। वे आजीवन हिन्दी की उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहे। उनके प्रयत्नों से ही हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की स्थापना हुई थी। उनमें सङ्गठन करने की अद्भुत शक्ति थी। आज काशी में हिन्दी को जो व्यापक रूप प्राप्त हुआ है, यह उन्हीं के प्रयत्नों का सुपरिणाम है। वे सभाओं के सङ्गठन करने में जितना उत्साह रखते थे, उतना ही साहित्य के प्रणयन में भी दत्तचित्त रहते थे। उन्होंने स्वयं अनेक ऐसी कृतियाँ की हैं, जिनसे हिन्दी-साहित्य का गौरव बढ़ा है। स्वयं भी लिखते थे और दूसरों से भी लिखवाते रहते थे। पण्डित रामचन्द्र शुक्ल, बाबू रामचन्द्र वर्मा जैसे धुरीण लेखक उन्हीं के प्रयत्न से हिन्दी की अमूल्य सेवा कर सके हैं। उन्होंने अपने प्रोत्साहन एवं प्रयत्न से लेखकों का एक ऐसा बड़ा समूह उत्पन्न कर दिया है, जिसकी नाना कृतियों से हिन्दी का साहित्य गौरवान्वित हो गया है। वे हिन्दी के अनन्य भक्त, विलक्षण सङ्गठनकर्त्ता, धुरीण विद्वान्, प्रतिभाशाली लेखक एवं प्रगल्भ वक्ता थे। इसके सिवा वे विशुद्ध हिन्दी के अन्यतम पक्षपाती थे। इसमें सन्देह नहीं कि बाबू श्यामसुन्दरदास के प्रयत्नों से हिन्दी की सबसे अधिक उन्नति हुई है और वे हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ निर्मायक रहे हैं। संसार में जब तक हिन्दी रहेगी तब तक बाबू साहब का नाम अजर-अमर रहेगा।

फ़ील्ड मार्शल स्मट्स की सद्भावना

दक्षिण अफ्रीका अँगरेज़ों का एक महत्त्वपूर्ण उपनिवेश है। वह ब्रिटिश साम्राज्य का एक डोमीनियन भी है। वहाँ भारतीय प्रवासी काफ़ी बड़ी संख्या में निवास करते हैं, परन्तु उन्हें आज तक जैसे चाहिएँ वैसे नागरिकता के अधिकार नहीं मिले। उनकी स्थिति वहाँ सदैव दयनीय बनी रही। महात्मा गांधी ने उन्हें समुचित अधिकार दिलाने के लिए काफ़ी ज़ोरदार आन्दोलन किया था। यहाँ तक कि पहले-पहल सत्याग्रह आन्दोलन क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीगणेश वहीं किया था। परन्तु उसका भी कोई परिणाम नहीं निकला। आज तो वहाँ एक ऐसा क़ानून जारी है, जिसके अनुसार प्रवासी भारतीय अपनी एक अलग बस्ती बनाकर रहने को बाध्य हुए हैं। भारत-सरकार ने बार-बार इस बात का प्रयत्न किया है कि दक्षिण अफ्रीका की सरकार वहाँ के भारतीयों के साथ न्याय करे। पर वह भी अपने प्रयत्न में सफल नहीं हुई। आज भी वहाँ के प्रवासी भारतीय नागरिकता के साधारण अधिकारों से भी वञ्चित हैं। वे ज़मीन-जायदाद नहीं ख़रीद सकते, उन्हें वोट देने का कोई अधिकार नहीं है। उनके लड़के वहाँ के स्कूलों में शिक्षा नहीं प्राप्त कर सकते। इस प्रकार उन्हें नाना प्रकार की अपमानजनक अवस्थाओं में जीवन-यापन करना पड़ता है। प्रसन्नता की बात है कि वहाँ के प्रधान मन्त्री फ़ील्ड मार्शल स्मट्स साहब ने इस ओर ध्यान दिया है। उन्होंने एक सभा में भाषण करते हुए कहा है कि प्रवासी भारतीयों के नेताओं की एक कान्फ़रेंस करके भारतीयों की स्थिति सुधारने का हम प्रयत्न करेंगे। स्मट्स साहब ब्रिटिश साम्राज्य के एक उच्च कोटि के राजनीतिज्ञ माने जाते हैं और उन्होंने अपने को लोगों की स्वाधीनता का हामी बार-बार कहा है। वे दक्षिण अफ्रीका के प्रवासी भारतीयों की अपमानजनक अवस्था से सदैव परिचित रहे हैं। उनका एक बार महात्मा गांधी से वहाँ के भारतीयों की परिस्थिति के सम्बन्ध में समझौता भी हुआ था। देखना है, इस बार वे क्या करते हैं। वहाँ के भारतीय प्रवासी काफ़ी सजग हैं और वे अपने अधिकारों के लिए वहाँ की सरकार से बराबर लड़ते आये हैं। परन्तु वहाँ की सरकार ने उनके आन्दोलन की कभी परवा नहीं की है। इस बार स्वयं वहाँ के प्रधान मन्त्री ने उनकी परिस्थिति को सुधारने के लिए उत्सुकता प्रकट की है। परन्तु क्या वे कुछ कर-धर सकेंगे? वे स्वयं इस बात को जानते हैं कि वहाँ के गोरे अधिवासी भारतीय प्रवासियों को सब तरह से दबाकर रखना चाहते हैं। ऐसी स्थिति में वे इच्छा रखते हुए भी परिस्थिति पर लीपापोती करने के सिवा और कुछ न कर सकेंगे। प्रवासी भारतीयों की समस्या का हल तभी सम्भव होगा जब स्वयं भारत को डोमीनियन का पद प्राप्त होगा। जो कान्फ़रेंस स्मट्स साहब करना चाहते हैं, उससे प्रवासियों की समस्या का हल नहीं हो सकेगा। ऐसी कान्फ़रेंसें पहले भी हो चुकी हैं परन्तु वहाँ के भारतीयों को आज तक नागरिकता के अधिकार नहीं मिले और वे बराबर अपमानजनक जीवन बिताने को बाध्य किये गये।

स्मट्स साहब ने उक्त भाषण में जो लल्लो-पत्तो की बातें की हैं, उसी से पता लगता है कि कान्फ़रेंस का परिणाम महत्त्वपूर्ण नहीं होगा। उन्होंने कहा है कि स्वयं भारत में ही भारतीयों को यहाँ की अपेक्षा अधिक कठिन परिस्थिति में रहना पड़ता है। अतएव उन्हें अपनी परिस्थिति से आकुल-व्याकुल नहीं होना चाहिए। उनके इस प्रकार के आश्वासन से ही प्रकट हो जाता है कि उक्त कान्फ़रेंस का क्या परिणाम होगा।

फ़िलिस्तीन की समस्या

लन्दन में अगस्त के पहले सप्ताह में संसार के यहूदियों की कांग्रेस का एक महत्त्वपूर्ण अधिवेशन हुआ है। इसमें संसार के १४ देशों के यहूदियों के ८० प्रतिनिधि उपस्थित हुए थे। अमरीकन यहूदियों के नेता डा० अब्बा हिल्लेल सिलवर ने अपने भाषण में कहा है कि फ़िलिस्तीन के सम्बन्ध में ब्रिटिश सरकार ने जो श्वेत पत्र निकाला है, वह रद्द कर दिया जाय। इस युद्ध में ६० लाख यहूदी मारे गये हैं और लाखों सङ्कटग्रस्त हैं। वे फ़िलिस्तीन में अपना राज्य स्थापित करना चाहते हैं। यदि हमारे अधिकार हमें न मिलेंगे तो हम लड़ेंगे। इस अधिवेशन में फ़िलिस्तीन में अपना राज्य स्थापित करने के सिलसिले में कड़े भाषण हुए हैं। एक यहूदी नेता ने तो यहाँ तक कहा कि श्वेत पत्र को रद्द करवाने के लिए हम हिंसा का मार्ग ग्रहण करेंगे। फ़िलिस्तीन के अरब भी असावधान नहीं हैं। उनके सङ्घ का एक प्रतिनिधि लन्दन में उपस्थित है और ब्रिटिश सरकार के सामने अपने पक्ष की बात अलग उपस्थित करने का प्रयत्न कर रहा है। जान पड़ता है कि फ़िलिस्तीन का प्रश्न अब फिर उठेगा। यहूदियों का पक्ष पहले भी प्रबल था और अब वह अधिक बल पकड़ेगा। परन्तु अरब लोग भी सावधान हैं। उन्होंने अपना एक सङ्गठन भी बना लिया है। वे यहूदियों की माँग का अपने भरसक विरोध करने से पीछे नहीं रहेंगे। हाँ, यह ज़रूर है कि उन्हें किसी महाशक्ति का सहारा नहीं प्राप्त है। ऐसी दशा में सम्भव है कि उन्हें दबना पड़े। यह सच है कि फ़िलिस्तीन किसी समय यहूदियों की मातृभूमि थी और आज भी उनका एक काफ़ी बड़ा समूह वहाँ बसा हुआ है। परन्तु अपने अभ्युदय-काल में अरब लोगों ने फ़िलिस्तीन को अरबिस्तान बना लिया था और इस समय भी वह अरबों के रूप में है। देखना है, यहूदी लोग अपनी मातृभूमि को उसके पहले के रूप में परिणत कर लेने में कहाँ तक समर्थ होते हैं। फ़िलिस्तीन के प्रश्न ने अन्तर्राष्ट्रीय रूप प्राप्त कर लिया है। इसके हल करने में राजनीतिज्ञों को कठिन परिश्रम करना पड़ेगा।

भारत की राजनैतिक अवस्था

जापान का युद्ध समाप्त हो गया और उसके साथ वायसराय महोदय का भारतीय अड़ङ्गा दूर करने का प्रयत्न भी। वह प्रयत्न यह कहकर किया गया था कि जापान से चलनेवाली लड़ाई में भारत पूरे ज़ोर से भाग ले। युद्ध पूर्णतया समाप्त होते ही इँग्लैंड की मज़दूर सरकार को भारत की समस्याओं पर ध्यान देने का भी अवसर मिल गया है। भारतीयों के लिए इसमें आशा की किरण दिखाई देना स्वाभाविक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। सरकार की घोषणा के अनुसार वर्तमान धारासभाओं भङ्ग कर दिया गया है और समस्त भारत की धारासभाओं चुनाव फिर से—सम्भवतः आगामी नवम्बर में—होगा। इस चुनाव से भारत के राजनैतिक क्षेत्रों में फिर सरगर्मी दिखाई लगी है और देश की विभिन्न राजनैतिक पार्टियाँ चुनाव-की तैयारी में पूरे बल से जुट गई हैं। उधर ब्रिटिश कार के आमन्त्रण पर वायसराय महोदय भारतीय समस्याओं विचार करने के लिए फिर इँग्लैंड पहुँच गये हैं। सम्भव इस बार वे भारतीय अड़चन दूर करने के लिए कोई दूसरी कल्पना लेकर आयें जो पहली योजना से अधिक प्रभावशाली साबित हो।

मुस्लिमलीग और उसके नेता जिन्ना साहब ने शिमला-सम्मेलन के अवसर पर ही नये चुनाव की माँग की थी। उनका विश्वास है कि नये चुनाव में मुस्लिमलीग का बहुमत असन्दिग्ध है। राष्ट्रीय मुसलमानों ने उनकी इस चुनौती को स्वीकार कर लिया है। मुस्लिमलीग से मोर्चा लेने के लिए वे सङ्गठन कर रहे हैं। कांग्रेस के नेताओं ने भी इस दिशा में प्रयत्न करना प्रारम्भ कर दिया है। हिन्दू महासभा भी इस बार जाग गई है और उसके नेता भी बहुमत प्राप्त करने के लिए उद्योग-शील हैं।

चुनाव का परिणाम क्या होगा, यह तो भविष्य ही बतावेगा। इस चुनाव का परिणाम जनमत का पूर्ण प्रतिनिधित्व करेगा, इसमें सन्देह है। वर्तमान समय में देश के निवासियों में एक बहुत छोटी संख्या को मताधिकार प्राप्त है। यदि सभी बालिग़ों को अधिकार दे दिया जाता तो सबसे महत्त्व की बात होगी। तभी पता चलता कि कौन दल जनता पर अपना प्रभाव रखता है। बहुत ही परिमित-संख्यक मतदाताओं के निर्णय से इस बात का निर्णय नहीं हो सकता कि जनता वास्तव में क्या चाहती है। अतएव ब्रिटिश सरकार यदि पहले देश के सभी बालिग़ों को मताधिकार प्रदान कर के तब आम चुनाव की घोषणा करती ठीक होता। परन्तु जैसी स्थिति है, ब्रिटिश सरकार इस ओर ध्यान देने को तैयार नहीं। अतएव वर्तमान मतदाताओं के द्वारा जो चुनाव होगा, वह जनता के मत का निदर्शक नहीं होगा। इधर जनता इतनी सबल और सजग भी नहीं है कि वह अधिकार के अपने नैसर्गिक अधिकार को प्राप्त करने के लिए सरकार को बाध्य करे। अभी पार्लियामेंट के उद्घाटन के अवसर पर जो भाषण सम्राट् ने किया है, उसमें केवल भारत में आत्मशासन की ही बात कही गई है और आत्मशासन की भारतीयों की माँग बहुत पुरानी है। अब तो भारतीयों की माँग है कि भारत स्वाधीन किया जाय। और यह माँग भारत के सभी प्रमुख राजनैतिक दलों की है। परन्तु भारत के भाग्य-विधाताओं की दृष्टि इस ओर नहीं जाती। वे इतने दिन तक भी यदि कुछ कहते हैं तो केवल 'आत्मशासन' शब्द का प्रयोग करते हैं। डोमीनियन स्टेटस की बात भी अब हवा हो गई है। उस दिन नये भारतमन्त्री ने अपने एक भाषण में समान हिस्सेदारी की बात कही थी परन्तु बाद को उन्होंने अपने उस कथन को निजी विचार कहकर महत्त्वहीन कर दिया है। जहाँ यह हाल है, वहाँ कैसे आशा की जा सकती है कि भारत की माँग की पूर्ण रूप से पूर्ति हो जायगी। भारत को अभी अधिक समय तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। और इस प्रतीक्षा के लिए भारतीय भले प्रकार शिक्षा पा चुके हैं। उनमें धैर्य है, वे निराशावादी नहीं हैं, वे आस्तिक हैं—फलतः उन्हें विश्वास है कि एक न एक दिन उनकी महत्त्वाकांक्षा की अवश्य ही पूर्ति होगी।

जापान का पराभव

जापान ने आत्मसमर्पण कर दिया—उस जापान ने जिसने पिछले सौ वर्षों में ऐसी उन्नति की थी कि वह संसार की पाँच प्रमुख महाशक्तियों में गिन लिया गया था और जो नौ-बल में संसार में अपना तीसरा स्थान रखता था। यही नहीं, जिसने अपने औद्योगिक विकास के द्वारा संसार के प्रमुख औद्योगिक देशों से प्रतिद्वन्द्विता करने में पूर्ण सफलता प्राप्त की थी। वही जापान अपनी साम्राज्यवादी नीति के कारण आज युद्ध में पूर्ण रूप से परास्त हो गया है, जिसकी इतनी जल्दी आशा नहीं थी। यह केवल दो परमाणु बमों की करामात के परिणामस्वरूप हो सका है। इनमें से एक नागासाकी और दूसरा हिरोशिमा में छोड़ा गया था। इनके गिरते ही वहाँ सर्वसंहार हो गया। पुराणों में पाशुपत अस्त्र के जिस प्रभाव का वर्णन है वही चमत्कार इन बमों ने कर दिखाया। फलतः जापानियों को हथियार डाल देने पड़े। उन्होंने देखा कि इन नवाविष्कृत बमों का प्रतिकार नहीं कर सकेंगे वरन उनका सर्वसंहार हो जायगा। अतएव उन्होंने घुटने टेक दिये। इसके सिवा इसी समय उन पर रूस ने भी सहसा आक्रमण कर दिया। चाहे जो हो, प्रशान्त का युद्ध भी समाप्त हो गया और अब संसार सुख की साँस ले सकेगा। जापानियों ने आत्मसमर्पण करते हुए अपने सम्राट् के अधिकारों की रक्षा की जो माँग की है, वह प्रतिबन्धों के साथ स्वीकार कर ली गई है। परन्तु उनके साथ भी वही कड़ा व्यवहार किया जायगा, जो जर्मनी के साथ किया जा रहा है। अब देखना यह है कि उनके अधिकार में गये हुए देशों का भाग्य-निर्णय कैसा होगा। डच ईस्ट इंडीज़, इंडोचायना, आदि अपने पहले के स्वामियों को सौंप दिये जायगे या वे स्वतन्त्र कर दिये जायँगे। परन्तु इसकी सम्भावना बहुत कम है। हाँ, रूस के युद्ध में शामिल हो जाने के कारण मञ्चूरिया और कोरिया के प्रश्नों के हल करने में ज़रूर कठिनाई उपस्थित होगी। यों मञ्चूरिया तो स्पष्ट रूप से चीन का है। परन्तु यहाँ रूस अपने हितों की बात ज़रूर उठावेगा और झगड़ा करनेवाले कुछ ले ही गिरते हैं, इस मसले के अनुसार कम से कम वहाँ की रेलवे और कोरिया के पोर्ट आर्थर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्दर को तो अवश्य ही प्राप्त कर लेगा। चाहे जो हो, योरप की अपेक्षा एशिया के इन देशों की समस्याओं के निपटाने में यद्यपि उतनी कठिनाई न होगी तथापि इनके निपटारे से इस बात का पता अवश्य लग जायगा कि संसार की तीन महाशक्तियों की भविष्य में कैसी नीति होगी। यदि एशिया के पराधीन देशों को सचमुच स्वाधीनता मिल जायगी तो लोगों को यह विश्वास अवश्य हो जायगा कि संसार का भविष्य शान्तिपूर्ण है और यदि इस दिशा में कुछ न किया गया तो यही समझा जायगा कि बार स्वाधीनता की बातों का कोई मूल्य नहीं है और साम्राज्यवाद का ही संसार में बोलबाला रहेगा। उस दशा में यह कौन कह सकता है कि भविष्य में युद्ध नहीं होंगे।

श्री वाजपेयीजी का अभिनन्दन

जुलाई के अन्तिम सप्ताह में कलकत्ते के हिन्दी-प्रेमियों ने हिन्दी के उत्कृष्ट विद्वान् तथा सम्पादक पण्डित अम्बिकाप्रसाद वाजपेयीजी का अभिनन्दन करके एक उत्तम आदर्श उपस्थित किया है। वाजपेयीजी ऐसे सम्मान के पूर्ण रूप से अधिकारी हैं। उन्होंने हिन्दी की पत्रकार-कला का मस्तक ऊँचा किया है। वे तेजस्वी, प्रतिभाशाली और निर्भीक पत्रकार हैं। उन्होंने अपने जीवन में इन गुणों का दृढ़ता से परिचय दिया है। [illegible] वृद्ध हो गये हैं तो भी उनकी प्रौढ़ लेखनी अविराम गति से [illegible] चलती रहती है। कालाकाँकर के 'दैनिक हिन्दोस्थान' [illegible] उन्होंने ही सबसे पहले कलकत्ते के प्रसिद्ध साप्ताहिक 'भारतमित्र' को दैनिक रूप प्रदान किया था। वह जिस सुन्दर [illegible] निकला था, उससे वाजपेयीजी की गौरव-वृद्धि हुई थी। [illegible] बाद उन्होंने स्वतन्त्र नाम का अपना एक दैनिक निकाला [illegible] उसके बाद हिन्दी में कई दैनिक निकले। उनमें से [illegible] एक पूर्ण सफलता के साथ निकल रहे हैं। आज के [illegible] पत्रों का मार्ग-प्रदर्शन वाजपेयीजी ने ही किया था। [illegible] सन् १९०५ से पत्र-सम्पादन का कार्य आरम्भ किया था और [illegible] कार्य को वे बराबर करते रहे। यही नहीं, इसमें सफलता [illegible] करके उन्होंने काफ़ी यश का अर्जन भी किया है। [illegible] वृद्ध हो गये हैं। उनका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता [illegible] ऐसी दशा में उनका जो अभिनन्दन किया गया है तथा [illegible] जो थैली भेंट की गई है, वह सर्वथा एक उपयुक्त कार्य हुआ [illegible] हमें विश्वास है कि वाजपेयीजी भविष्य में और भी अधिक [illegible] अभिनन्दनों से सम्मानित किये जायँगे। उन्होंने हिन्दी की [illegible] अमूल्य सेवा की है, वह सर्वथा अभिनन्दनीय है।

श्री साहनलाल द्विवेदी लिखित—

कुणाल

प्रत्येक युवक, युवती के पढ़ने योग्य अभिनव प्रकाशित खंड काव्य

अशोक, तिष्यरक्षिता और कुणाल के चरित्र-चित्रण में—खासकर कुणाल के चरित्र-चित्रण में—कवि ने कमाल किया है।

शब्द-सौकुमार्य के साथ ही भावोत्कर्ष तथा नपे-तुले शब्दों का प्रयोग भी द्विवेदी जी की कविता को उच्च बनाता है।

—महापण्डित राहुलसांकृत्यायन

सचित्र सजिल्द मूल्य १।)

मिलने का पता—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

Printed & Published by A. Bose, at the Indian Press, Ltd., Benares-Branch, Benares.
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाहित स्त्री-पुरुषों के जानने योग्य

ऑपरेशन तथा इन्जेक्शन ज़रूरी नहीं है

अप्राकृतिक रहन-सहन तथा मिथ्या आहार-विहार के कारण हमारे देश की नारियाँ अधिकांश ऐसी मिलेंगी जो एक न एक रोग से ग्रस्त हो निराश जीवन व्यतीत कर रही हैं। अधिकतर गर्भाशय का मोटा हो जाना तथा उस पर चर्बी आ जाना एक आम हो गया है जो गर्भ धारण करने में बाधक होता है तथा अन्य भयंकर रोगों की जिससे उत्पत्ति भी होती है। ऐसी अवस्था में प्रायः ऑपरेशन कराने से भी बहुत कम रोगियों को सफलता प्राप्त होती है।

यदि आपको ऑपरेशन कराने में असुविधा है या ऑपरेशन की अपेक्षा औषधियों द्वारा कष्ट दूर करने के अधिक पक्ष में हैं तो शास्त्रोक्त अंगूरों का ताज़ा रस, अशोक, अर्जुन, दशमूल, त्रिफला तथा अन्य श्रेष्ठ औषधियों से प्रस्तुत—मूँगा जिसका प्रधान अंग ५—१५ वर्षों से प्रचलित **गौड़ की नारी-सुधा कॉर्डियल** सेवन करें।

नारी-सुधा एक माहवारी से दूसरी माहवारी तक सेवन करने से बिना ऑपरेशन गर्भाशय की चर्बी, उसका मुटापा तथा मोटा बाँझपन नष्ट हो जाता है और सहज ही गर्भ की स्थिति हो जाती है। जहाँ इन्जेक्शन लिकोरिया (सफ़ेदे का गिरना) रोकने में असफल होते हैं वहाँ कुछ ही ख़ुराकों में यह सदैव के लिए ठीक हो जाता है। कमज़ोरी से गर्भाशय अपनी जगह से हट जाता है तथा गर्भपात होते रहते हैं—एक बोतल के सेवन से युक्त स्थान फिर दृढ़ हो जाता है, फिर गर्भपात कभी नहीं होते। मासिक धर्म महीने में दो बार या दो महीने में एक बार के बजाय ठीक समय पर आकर हँसते-खेलते होने लगते हैं, जिससे हिस्टेरिया (बेहोशी) के दौरे होने बन्द हो जाते हैं। ख़ूब भूख लगती है, ख़ून एक बड़ी मात्रा में बनने लगता है। दिल की धड़कन, कमर-टाँगों का ठहरा हुआ दर्द केवल चौथे दिन दूर हो जाते हैं। जापे का संकट सहन करने तथा बाद की कमज़ोरी शीघ्र दूर करने की यह विशेष औषधि है। **नारी-सुधा** की २६ ख़ुराकों की एक बोतल का मूल्य—पेकिंग, वी० पी० व्यय से पृथक्—तीन रु० पाँच आने है। आवश्यकता होने पर इस मासिक पत्रिका का हवाला देकर

कुमार कुमार एन्ड को०

पोस्ट बाक्स नं० ११९ देहली

से मँगाइए—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य और शक्ति
के लिये
"जी.जी.जैम" का प्रयोग
सब दशाओं में
हितकर
है

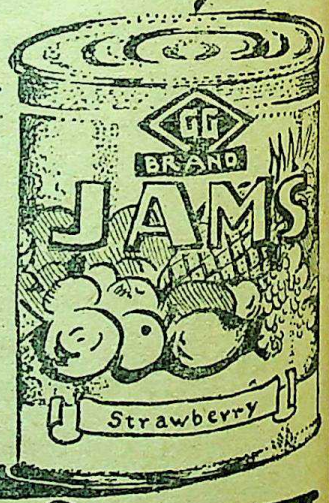

GG

जी.जी. फ्रूट प्रिज़र्विंग फ़ैक्टरी, आगरा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

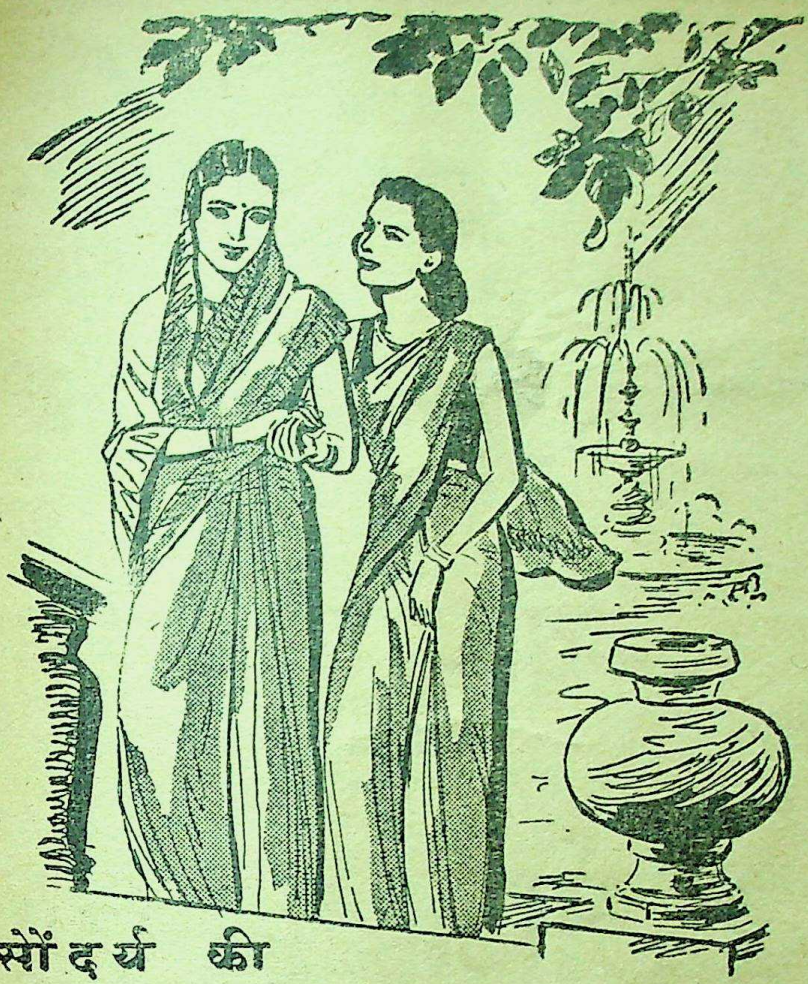

सौंदर्य की परम्परा कायम रख रही है

जवान लड़कियों के सभी महत्वपूर्ण मामलों में केवल उनकी मां ही उन्हें बहुमुल्य सलाह दे सकती है। इस रूपवती मां ने अपनी सुन्द्र बेटी को अपना बढया गुर दिया है कि पियर्स साबुन और स्वच्छ पानी की सहायता से त्वचा के सौन्दर्य को कायम रखा जा सकता है। यह शिक्षा इस मां ने अपनी मां से ली थी और अपने बचपन से ही इस पर अमल करती आई है। इसी कारण उसकी त्वचा आज भी उतनी ही प्यारी और सुन्दर है। इसकी बेटी भी उसी तरह अपनी त्वचा की प्रवाह करती है। इसलिये उसकी मां की तरह उसकी त्वचा भी बेदाग और सुन्दर रहेगी।

चालीस साल से हिन्दुस्तान की सुन्द्रयों ने पियर्स साबुन को ही इस्तेमाल किया है। स्वाभाविक सुगन्ध और रेशमी झाग के कारण यह साबुन साधारण साबुनों से कहीं अच्छा है।

पियर्स साबुन

सौन्दर्य का सेवक

TD. 10-124 HI

A. & F. PEARS MILLWORTH, ENGLAND

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री रत्नागिरी जी का अद्भुत चमत्कार

जिसने समस्त संसार को चकित कर दिया

रक्त, बल, वीर्य, उत्साह तथा उमङ्ग ही जीवन सफल बना सकती है।

ध्यान देने योग्य अमूल्य उपहार

अपूर्व कायापलट (रजिस्टर्ड)

निःस्वार्थ संसारसेवी भारतीय महात्माओं ने औषध-विज्ञान को अपनी महान् खोजों और अमूल्य रत्नों से अलंकृत किया है। आधुनिक चिकित्सक मर्ज़ और मरीज़ जब दोनों को लाइलाज घोषित करके शर्मिन्दा नहीं होते, वहाँ इन्हीं महात्माओं की बिना दाम की जड़ी-बूटियाँ मुर्दों को भी जिला सकने में समर्थ हुई हैं। ऐसी सच्ची घटनायें आये दिन एक न एक पढ़ने और सुनने में आया करती हैं।

बीस वर्ष पूर्व कल्लाती पहाड़ी पर विचरण करनेवाले स्वामी रत्नागिरी जी महाराज की सेवा एक बूढ़ा ग्वाला करने लगा। योगिराज को एक दिन उस वृद्ध की कमज़ोरी पर दया आ ही गई और उन्होंने निम्नलिखित योग की ६ मात्रायें उस बूढ़े को दीं। नासमझी के कारण छहों मात्रायें एक साथ खा जाने से उस वृद्ध ग्वाले में अपूर्व शक्ति आ गई और रत्नागिरी जी के परिश्रम-पूर्वक इलाज करने पर भी बुढ़ापे के बावजूद उसे तीन विवाह करने पड़े। इस पर राजा, रईस, नवाब और रसिक जन महान् योग को जानने के लिए आतुर हो उठे। नवाब बहावलपुर के ससुर हाजी हयात मोहम्मदख़ाँ साहब ने बाबा जी की बहुत सेवा करके इसे प्राप्त कर लिया और लाहौर के पं० ठाकुरदत्त शर्मा को बतलाया। शर्मा जी ने इसे प्रथम तथा दो अन्य लिखकर तीनों से उत्तम बाजीकरण बतलानेवाले को एक हज़ार रुपये का नक़द इनाम देने की घोषणा की। इसे आज बीस साल के लगभग हो गये किन्तु अभी तक कोई पुरस्कार विजय नहीं कर सका। मथुरा के ख्यातिप्राप्त बाबू हरिदास जी ने इसे चिकित्सा-चन्द्रोदय में छपवाया और हमने भी स्वयं बनाकर सैकड़ों दुर्बल, नपुंसक, वीर्य-विकारी रोगियों पर बरता। तत्काल लक्षण-चमत्कार देख जन-साधारण के लाभार्थ अनेक पत्र-पत्रिकाओं में छपवा दिया। आप भी बनाकर लाभ उठावें।

योग—शुद्ध बुरादा फ़ौलाद २० तोला, शुद्ध श्वेत मल्ल ५ तोला, शुद्ध कपूर १॥ माशा, एक घण्टा घृतकुमारी में घोटकर, मिट्टी के कुज्जे में मज़बूत बन्द कर पाँच सेर कण्डों में फूँके। दुबारा एक तोला हरताल बर्की शुद्ध १॥ माशा कपूर शुद्ध में तीसरी बार गन्धक आमलासार शुद्ध १ तोला कपूर १॥ माशा में चौथी बार शुद्ध संस्कारित पारद १ तोला, कपूर १॥ माशा को ऊपर की भाँति १६ आँच दे। फिर उसको, कढ़ाई में डालकर बराबर इन्द्रवधू डाल दे और धीमे आग जलावें, जब इन्द्रवधू जलकर राख हो जावे तो हवा देकर उड़ा दें। अपूर्व कायापलट तैयार है। चार-चार चावल सायं मलाई के साथ खावें ऊपर मिश्री मिला दूध पीवें।

मथुरा के हरिदास जी लिखते हैं—इस योग के सेवन से हफ़्ते में एक आदमी का वज़न चार पौंड बढ़ गया, दूसरे का चेहरा लाल सुर्ख़ हो गया। भूपाल के वैद्यराज पं० बालकृष्ण शर्मा ने ३५० रोगियों पर बरता और आशा से अधिक गुण पाया। रत्नाकर सम्पादक श्री छोटेलाल जैन आयुर्वेदाचार्य ने गृहचिकित्सा पथ-प्रदर्शक में छापा कि इतना प्रचण्ड गुणकारी दूसरा नहीं देखा। श्री धर्मेन्द्र विद्यावतंस सिद्धान्त-शास्त्री अधिष्ठाता गुरुकुल बरला ज़िला मुज़फ़्फ़रनगर ने लिखा है—"कायापलट" नामक औषध सेवन कर रहा हूँ। जैसी प्रशंसा वैसा ही गुण है। बहुत लाभ हुआ। श्री चिरञ्जीलाल आयुर्वेदशास्त्री मालिक कल्याण औषधालय बाह (आगरा) का कहना है कि मैंने २२५ रोगी अपूर्व कायापलट द्वारा कि धातु-विकार, नपुंसकता, बवासीर, रक्त-विकार आदि रोगों से ग्रसित थे, पूर्ण स्वस्थ किये।

हमारा दावा है कि केवल सात दिन सेवन से शरीर में दौड़ता नज़र आयेगा। २१ दिन में चेहरा लाल काश्मीरी सेब की तरह चमकने लगेगा। ४० दिन में नपुंसकता, मधुमेह, डायब्टीज़, निर्बलता दूर हो जाती है। स्त्रियों के प्रदर दूर हो गर्भधारण शक्ति आती है। जिगर व मेदे की शक्ति बढ़ाकर भूख दूनी करता है। कफ, तिल्ली की ख़राबी, खाँसी, नज़ला, ज़ुकाम, बदन दुखना, ख़ून का पतलापन, आँखों का पीलापन, चिनगारी-सा उड़ते दीखना, बार-बार थूक गिरना, दमा आदि हर तरह की कमज़ोरी तुरन्त दूर कर नव-जीवन का संचार करता है। जाड़ा, गरमी, बरसात सभी मौसमों में एक-सा लाभ करता है। योग भली भाँति समझाकर लिखा है। फिर भी यदि आप न बना सकें तो बनी-बनाई १६ आँच दी हुई ४० दिन की ८० मात्रा डाक-ख़र्च सहित ६॥।=) में हम भेज देंगे। डाक-ख़र्च माफ़, पैकिंग, मनीआर्डर-फ़ीस अलग। कोई बात समझ में न आवे तो जवाबी कार्ड भेजकर उत्तर मँगा लें।

पता—रूपबिलास कम्पनी,

(रसायनशाला) नं० ४६७, धनकुट्टी, कानपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्मस्टारोंकी तरह त्वचा की रक्षा कीजिये!

वनमाला

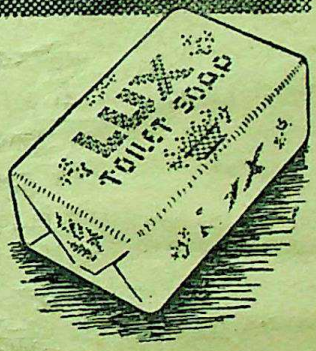

अपनी अंगकांति मृदु, निर्मल और मुलायम रखने के लिये वनमाला नियमित रूपसे लक्स टायलेट साबुन का इस्तेमाल करती है। पहले उसका तेज़ फेन अपने शरीरमें मलती है और फिर ठंडे पानीसे उसे धो डालती है। वह कहती है—मेरी सम्मतिमें "सौंदर्य साधन की यह रीति संसारकी सबसे आसान और सुरक्षापूर्ण रीति है"। बहुतही हिंदी फिल्म स्टार इसी विधि अपने सौंदर्य को बनाये रखती हैं।

लक्स टॉयलेट साबुन

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या आपके सभी आहार स्फूर्तिदायी होते हैं ?

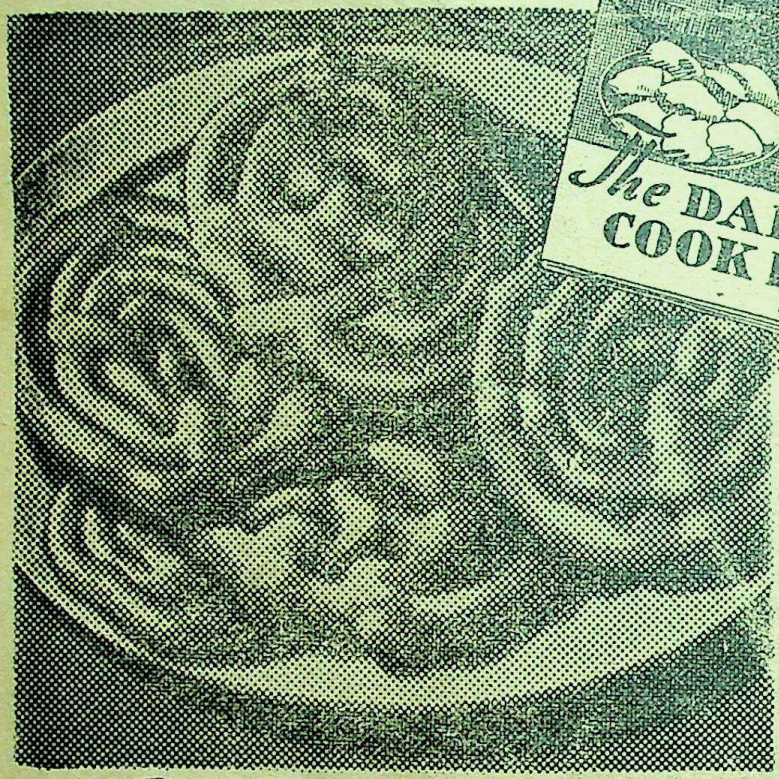

सबसे बढिया शक्तिदायी चीजें कौनसी हैं इसकी जानकारी हरएक स्त्रीको होनीही चाहिये । डाल्डा कुक बुक (अंग्रेजी) में आहार के बारेमें लाभकारी बातें और १५० से अधिक आहारोंका बयान किया गया है । Dept. D121 P. O. Box No. 353, Bombay के पते पर चार आने के पोस्टल स्टाम्प भेजियेगा ।

जी, हां — उन्हींमेसे तो शक्ति पायी जाती है। लेकिन यह बात नहीं कि सभी आहारोंमेसे उतनीही शक्ति पायी जाती है। कई ज्यादा स्फूर्तिदायी होते हैं तो कई कम स्फूर्तिदायी। इसी लिये हमारा आरोग्य हमेशा खतरेमें रहता है। कई मनपसन्द आहार इस हिसाब से बिलकुल बेकार होते हैं और उनको पसन्द करनेवालोंको खेलने या काम करनेसे थकावट मालूम होये बिना नहीं रहती। सौभाग्य की बात है कि हरएक आहार को हम जीवन-सत्व संपूर्ण डाल्डामें बनाकर ज्यादा स्फूर्तिदायी बना सकते हैं। यह रसोई की बढिया चीज प्रकृतिके सर्वोत्तम स्फूर्तिदायी अन्नांश देती है। बहुतसी चीजोंमें न मिलनेवाली शक्ति उसमें है जिससे आपके हरएक आहार को वह स्फूर्तिदायी बना देती है।

पोषक-तत्व संपन्न **डालडा** स्फूर्ति के लिये

THE HINDUSTAN VANASPATI MANUFACTURING CO. LTD.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह स्कूल जा रहा है। वहाँ से वह अपने साथ क्या लाएगा? नया ज्ञान, नये तरीके—और शायद किसी रोग के कीटाणु भी! माँ अपने छोटे बच्चे को सुरक्षित रहने की शिक्षा देकर बाहर भेजती है—सब से अच्छी शिक्षा लाइफ़बॉय साबुन का दैनिक इस्तेमाल है—जो गंदगी के उस ख़त्रे से रक्षा करता है जो स्वस्थ से स्वस्थ बच्चे को भी रोग लगा सकता है।

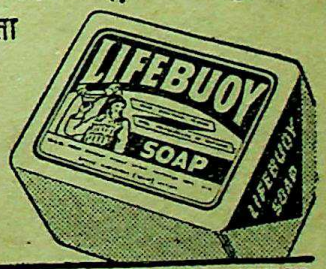

लाइफबॉय का व्यवहार करना एक ज़रूरी आदत है

L 78-23 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेनका को

सौन्दर्य - प्रसाधनो की
आवश्यकता न थी।
न आपको ही हो सकती है।

परन्तु कुछ महिलायें ऐसी भी हैं जिन्हें सुन्दर बननेके लिये सहारे की जरूरत महसूस होती है।

व स न्त मा ल ती

उन्हींके लिये बनाई गई है। जड़ी-बूटियों के सम्मिश्रणसे बनी बसन्त-मालती धब्बे मुंहासे, काले दाग, झुर्रियां इत्यादि मिटाकर अनुपम सौन्दर्य प्रदान करती है। बदसूरती खूबसूरतीमें बदल जाती है।

पौराणिक युगकी सौन्दर्य-साम्राज्ञी महाकवि कालिदास की विख्यात नायिका शकुन्तला की माता।

बसन्त मालती

सुन्दरता लाती है

सी० के० सेन एण्ड कम्पनी लिमिटेड जवाकुसुम हाउस — कलकत्ता

BM-2-H.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोहर बाल

A TATA PRODUCT

टोम्को कोकोनट हेयर आयल और शैम्पू के नित्य प्रयोग से आपके हो सकते हैं यदि आप इनकी प्राप्त मात्राओं का बचाते हुए प्रयोग करें।

युद्धकालीन यातायात की अवस्थायें नियमित अवधियों पर बाज़ारों की पूर्ति करना हमारे लिए कठिन बना देती हैं। किन्तु यह कमी अस्थायी है।

केवल अपनी आवश्यकतानुसार ख़रीदिए तथा अपनी व दूसरों की असुविधा कम कीजिए।

दी टाटा आयल मिल्स कम्पनी लिमिटेड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्यन पेपर मिल्स लिमिटेड

हेड आफ़िस १२ चौरंगी स्क्वायर, कलकत्ता

मिल तथा बग़ीचा—महूदा (बी० एन० रेलवे)

* इँगलैंड से आधुनिक ढंग की मशीनें मँगाने के लिए आवश्यक पेशगी भेजी जा चुकी है।

* कम्पनी की निजी ज़मीन में पेपर पल्प के लिए घास लगाना आरम्भ कर दिया गया है।

* मैनेजिंग एजंट जब तक साधारण हिस्सों पर टैक्सरहित ५१ तथा असाधारण हिस्सों पर टैक्सरहित ६१ लाभ वितरित न कर देंगे, कोई पारिश्रमिक न लेंगे।

निर्धारित मूल्य पर ही अब भी हिस्से मिल रहे हैं

मूल्य अदा करने का तरीक़ा

साधारण हिस्से १०) के प्रत्येक :—

१) प्रति हिस्सा आवेदन-पत्र के साथ। १) प्रति हिस्सा एलाटमेंट के दिन से १ मास के अन्दर तथा शेष रक़म चार बराबर किश्तों में।

असाधारण हिस्से १००) के प्रत्येक (टैक्स फ़्री कम्यूलेटिव)

१०) प्रति हिस्सा आवेदन-पत्र के साथ तथा शेष एलाटमेंट की तिथि से ७ दिन के अन्दर।

शेयरों के लिए आवेदन-पत्र के साथ प्रति आवेदन-पत्र १) आना चाहिए।

जहाँ हमारे एजेंट नहीं हैं वहाँ हिस्सा बेचने के लिए एजेंटों की आवश्यकता है

पूँजी लगाने के सम्बन्ध में सरकार की यह अनुमति प्राप्त हो चुकी है कि उतनी रक़म जितनी कि केन्द्रीय सरकार की राय में (देशी रियासतों के सम्बन्ध में क्राउन रिप्रेज़ेंटेटिव की राय में) परिस्थितियों के कारण किसी अनिश्चित समय तक काम में लगाई नहीं जा सकती, उस समय तक सुरक्षित ज़मानतों में लगी रहेगी जब तक रुपया लगाने का उपयुक्त समय नहीं आ जायगा, इस अनुमति के साथ सरकार यह भी स्पष्ट कर देती है कि कम्पनी की घोषणा की सचाई अथवा कम्पनी की सुदृढ़ता की सरकार ज़िम्मेदार नहीं है।

APP/AP.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीम
टूथ पेस्ट

नीम टूथ पेस्ट भारतवर्ष क्या विदेशी जनता की प्रशंसा प्राप्त कर अपनी उपयोगिता पूर्णतया प्रमाणित कर चुका है।

अथवा

मार्गोफ्रिस

दंतमंजन

ये दोनों ही चीज़ें उच्च कोटि की हैं।

दी कलकत्ता केमिकल कं० लि०,

पण्डितिया रोड, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यूटेक्स

कृपया ध्यान दें

अब आप केवल ३ मिनट में भद्दे तथा अनावश्यक बालों को बिना छुए, पाउडर पेस्ट के लगाये, जिनसे बाल और जल्दी तथा घने निकलते हैं, बड़ी सरलता पूर्वक नष्ट कर सकते हैं। न्यूटेक्स वण्डस्टीट के एक आविष्कारक का सनसनीपूर्ण आविष्कार है जिसने कई वर्ष तक स्थायी तथा सुखद तरल पदार्थ के आविष्कार में व्यतीत कर दिया। उसकी खोज का परिणाम जायज़ था जो कि अब न्यूटेक्स में मिलाया जाता है और जिससे बालों की जड़ें तक बड़े सस्ते, सुन्दर तथा सुरक्षित रूप से बहुत जल्द साफ़ हो जाती हैं, किसी भी प्रकार की जलन नहीं होती और न गन्ध ही आती है।

सभी औषध-विक्रेताओं के यहाँ मिलती है। आप नीचे पते से मँगावें।

न्यूटेक्स (इंडिया) कं०,

प्रिंसेस स्ट्रीट, बम्बई।

भावी माताओं के लिए

अनुपम भेंट।

'जननी' शिशु-प्रजनन की उलझनों, शिशु-पालन तथा रोगोपचार की पूर्ण जानकारी की एकमात्र पुस्तक। पंजाब सरकार से ५००) पुरस्कृत। पृष्ठ ७००; मूल्य ६।)

मिलने का पता—

हिन्दी-भवन, अनारकली, लाहौर

मा० सुजानसिंह,

पोस्ट-ख़ालसा कालेज, अमृतसर

अब मैं अपने पति की प्रिय बन गई

रूप-विलास (रजिस्टर्ड)

जब मैं विवाह के अवसर पर अपने पति-गृह गई तब मेरे पतिदेव हमारे भद्दे तथा काले चेहरे को देखकर मुझसे घृणा करने लगे। मैंने अपनी सहेलियों की सलाह से **रूप-विलास** का उबटन लगाना शुरू किया। कुछ ही दिनों बाद मेरा चेहरा गुलाब के फूल की भाँति दमकने लगा और आज मैं अपने पति की प्रिय बन गई। इसके लगाने से मुँहासा, झाँई, चेचक, काले-काले दाग़, फुंसी, खुश्की, बदरौनक़ी, झुर्रियाँ वग़ैरह जल्द आराम होती हैं और थोड़े ही दिनों के लगाने से मलीन मुख चमकदार होकर चेहरे पर गुलाबी छटा दमकने लगती है। यदि आप अपना चेहरा खूबसूरत बनाना चाहते हैं तो २५ वर्ष का प्रचलित जगत्प्रसिद्ध रजिस्टर्ड **रूप-विलास** उबटन लगाइए। विवाह-शादियों पर वर-वधू का सौन्दर्य बढ़ाने के लिए यह बहुत ही उपयोगी साबित हुआ है और इसकी ख़ुशबू इतनी प्यारी है कि तबियत को मस्त करती है। क़ीमत एक डिब्बा २–) तीन डिब्बा ५।।) डाक-ख़र्च माफ़, पैकिंग ख़र्च अलग।

रूप-विलास कम्पनी धनकुट्टी नं० ४२७ कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस तरह धोने से पटरवे जाने के नुकसान से बचाव होता है

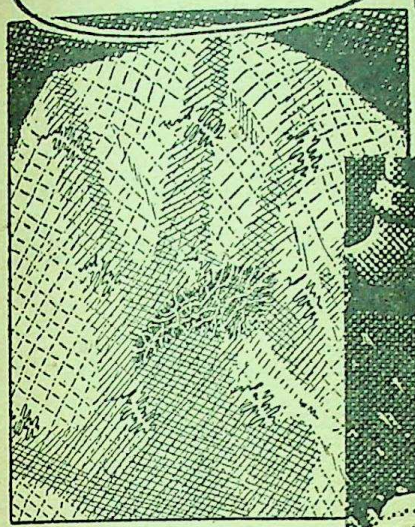

छेद, उधेड़ या फट जाना..... यदि कपडों को स्वच्छ करने के लिए उन्हें पुराने तरिके से कूटा जायगा तो कपड़ों को ऐसा अनावश्यक (और खर्चीला) नुकसान पहुँचता रहेगा।

1

इन चित्रों को देखिये, ये आपको बिना नुकसान पहुँचाए कपड़ों को धोने का तरीका बताती हैं।

(१) जिस कपडे को धोना हो उसे पहले खूब भिगो लीजिए। यह आप नल के नीचे, टब में, तालाब में या नदी में कर सकते हैं-इससे कोई फर्क नहीं पडता। (२) जब कपड़े को खूब भिगो चुकें तो सारे कपड़ें में सनलाईट साबुन मलें। जो भाग अधिक मैला हो वहाँ सनलाइट जरा ज्यादा मलें। (३) साबुन लगे हुए कपडे को हाथों से धीरे-धीरे गूँथिये। (इसे कूटिये नहीं) तबतक गूँथिये (ठीक उसी तरह जैसे रोटी का आटा गूँथा जाता है) जब तक साबुन की झाक कपडे के हरेक तन्तु में प्रवेश पाजाए। कपड़े को जोर से रगड़ने की या बुरीतरह कूटनेकी अवश्यकता ही नहीं है। सनलाइट का "स्वयंकाम करनेवाला" फेन सरलता से सारे मैल को बाहर निकाल देगा-यदि आपको यह विश्वास हो जाये की गूँथने से यह फेन कपडे के मैल में घुस चुका है। इस शक्तिशाली फेन में जो साबुन है वह मैल को धूते ही तत्काल फुला देता है। फेन उसे जज़ब कर लेता है। ऐसे जब आप कपड़े को खूब धोएँगे तो फेन के साथ २ सब मैल निकल जायेगा। (४) फेन-जिसमें की अब सारा मैल आचुका है-छुटाने के लिए कपड़े को खूब मलकर धो डालिए।

ऐसे सनलाइट के तरीक़े से धोए हुए कपड़े बहुत समय तक चलते हैं।

2

3

4

सनलाइट साबुन कपड़ों की बचत करता है

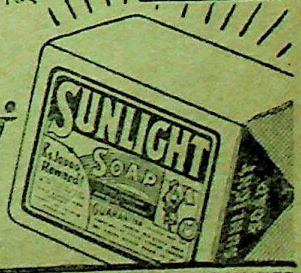

S-74-23 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैज़ा, मलेरिया, इन्फ्लुएंज़ा, टाइफाइड
आदि बीमारियों में बचानेवाला।

१ औं० शीशी ॥), दर्जन ५॥=), डा० ख़० अलग

कॅलिप
न बाम } सूचीपत्र मुफ़्त { युकलिप
दाद का मरहम

खांडालेकर बन्धु, बम्बई ४.

प्रकाशित हो गई

मार्क्स का दर्शन

[लेखक—भूपेन्द्र सन्याल]

(स्वर्गीय शचीन्द्रनाथ सन्याल के भाई, अखिलभारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य, युक्तप्रान्तीय ट्रेड यूनियन के भूतपूर्व उपसभापति, 'समाजवाद की ओर' आदि के प्रणेता।) मूल्य २) रु०

प्रकाशक, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

हृदय की सर्दी (सर्दी और कफ़)—लापरवाही करने से मामूली हृदय की सर्दी फेफड़े की सूजन (ब्रांकोटिस) हो जायगी। इससे बचे रहने का रास्ता बड़ा आसान है। थोड़ा-सा अमृतांजन लेकर छाती पर मलिए। बस, उसकी गरमी सीधे हृदय तक पहुँचती है और कफ़ को पिघला देती और तुरंत आराम मिलता है।

अमृतांजन—हमेशा सर्दी से सर्दी आराम पहुँचाता है।

अमृतांजन लिमिटेड, बम्बई और मद्रास

शाखा :—कलकत्ता, कराची, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

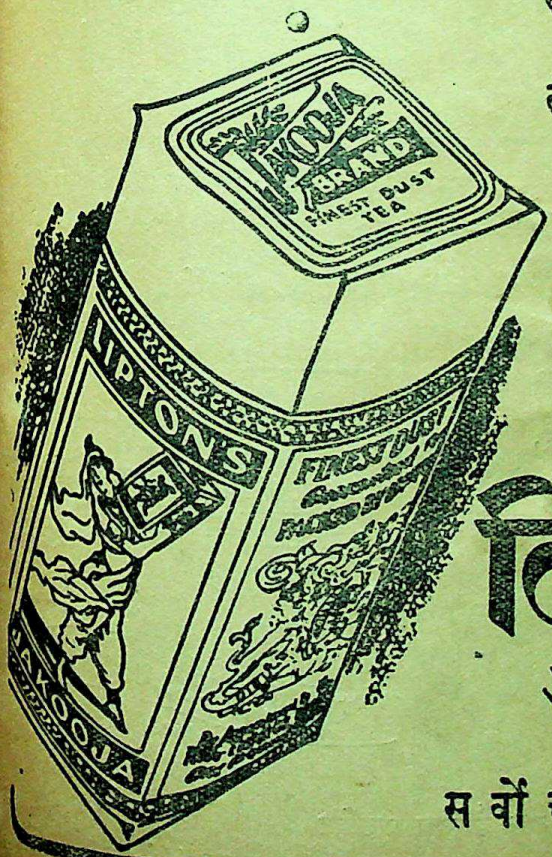

तेज व बढ़िया सुगन्ध, गहरा रंग और कम दाम इन सबने मिलकर लिपटन की जाकूजा को बाजार भर की सर्वश्रेष्ठ चाय बना रक्खा है।

लिपटन की
जाकूजा चाय

सर्वोत्तम भारतीय चूरा चाय

LTK 84 ! 3

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

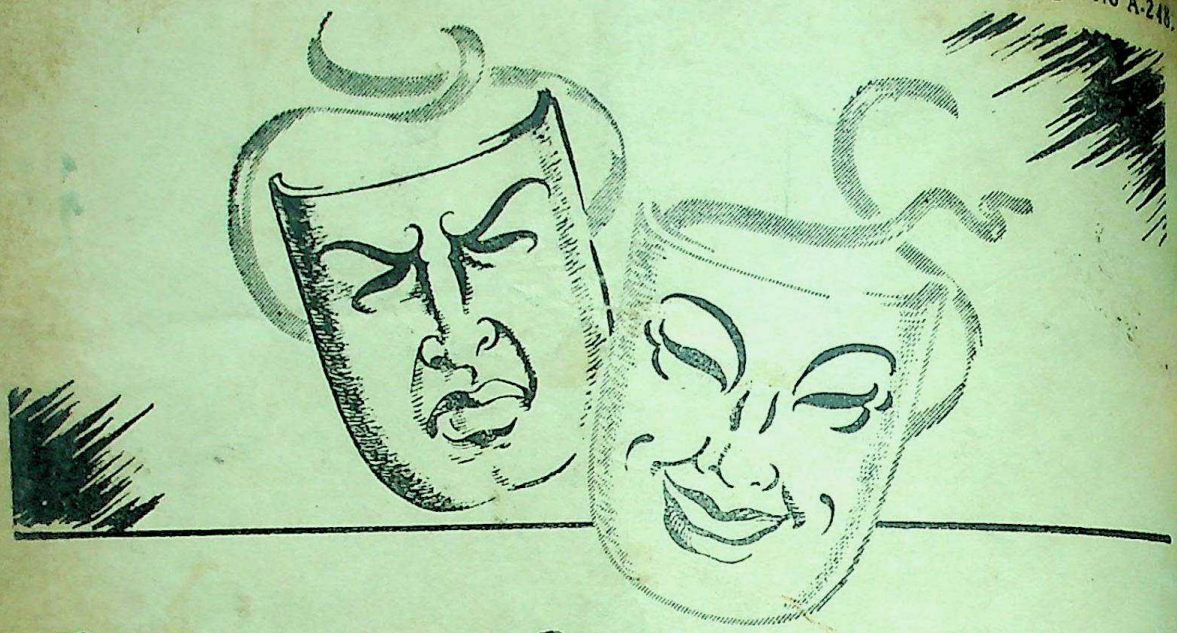

विषण्ण मुख को प्रसन्न बनाइये

युद्धकाल में कष्टों की सीमा नहीं। भोजन मँहगा, बसन मँहगा, जलावन मँहगा, नौकर मँहगा, मँहगा ही नहीं मिलना मुश्किल। और अवकाश, तो ढूँढ़े नहीं मिलता। परन्तु आप अभी भी चाय का सहारा ले सकते हैं।

यह अभी भी जरूरत भर मिल जाती है और सस्ती है। बढ़िया गर्मागर्म चाय आपके शिथिल तन्तुओं को सजीव कर आपके मस्तिष्क को आराम देगी। दुनियां भर में मची हुई इस खलबली में यह, आपके चित्त को शान्त रखेगी। यह पोषक है, हानिकर नहीं। चाय हमारी निजी पैदावार है, इस पर हमें पूरा भरोसा है।

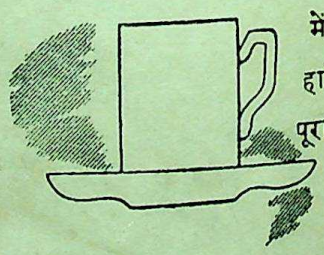

भारतीय चाय

वक्त पड़ने पर का सहारा लीजिये

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

IK 233

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस्वती

नवम्बर १९४५

वार्षिक मूल्य ४॥)

एक प्रति का ।=)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालों को लम्बे तथा मनमोहक

बनाने के लिए

कामिनिया आयल (रजिस्टर्ड)

का व्यवहार करें।

यह बालों के लिए सर्वोत्तम उपचार है।

बालों को शीघ्रतापूर्वक बढ़ाता है।

बालों का झड़ना बन्द कर उन्हें काला, चिकना, चमकीला तथा मनमोहक बनाता है। एक बार की परीक्षा पर्याप्त होगी।

खुशबू का राजा

ओटो दिलबहार (रजिस्टर्ड)

अपनी मीठी तथा मनमोहक सुगन्ध के लिए विख्यात। दो-चार बूंद कपड़ों पर डाल देने से कपड़े अधिक समय तक सुगन्धित बने रहेंगे।

दिलबहार हेयर आयल (रजिस्टर्ड)

एक दूसरा सुगन्धित केश-तेल

यह तेल अत्यन्त सुगन्धित है तथा बालों की उपयोगिता के लिए 'कामिनिया आयल' के बाद इसका ही नम्बर है। बालों को बढ़ाने के लिए यह विशेष लाभदायक है। एक बार अवश्य परीक्षा करें।

एँग्लो इण्डियन ड्रग एंड केमिकल कं०.

२८५ जुमा मसजिद, बम्बई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

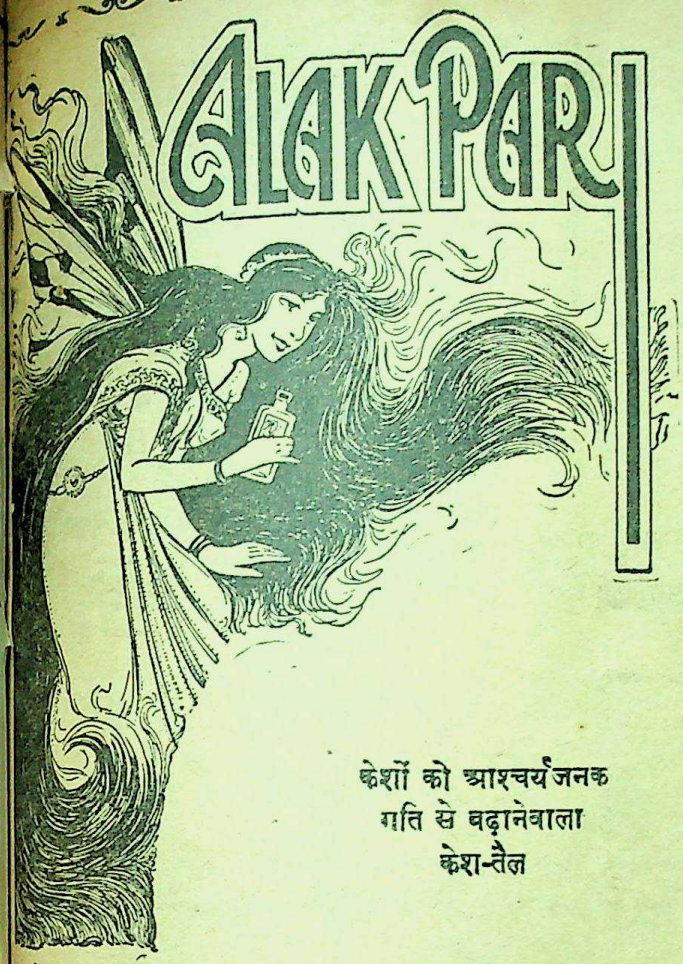

केशों को आश्चर्यजनक
गति से बढ़ानेवाला
केश-तैल

शुद्ध बादामरोग़न पर बना

अलकपरी

केशों में प्रतिमास ३-४ इञ्च वृद्धि।
६ महीने में एड़ी-चुम्बी केश।

'अलकपरी' का कोर्स

पहले सप्ताह में रूसी-खुश्की दूर हो जाती है।
दूसरे सप्ताह में केशों का झड़ना और उनके सिरों का फटना रुकता है।
तीसरे सप्ताह में नये केश उगते दिखाई देते हैं।
चौथे सप्ताह के अन्त तक केश ३-४ इञ्च बढ़ जाते हैं।
फिर प्रतिमास इसी औसत से बढ़ते रहते हैं।

६ महीने में केश एड़ी-चुम्बी बन जाते हैं।

मूल्य एक शीशी का २॥) है जो एक महीने को काफ़ी होती है। डाक-ख़र्च व पैकिङ्ग पृथक्। ६ से अधिक शीशियाँ डाक से नहीं भेजी जायँगी। अधिक के लिए ५) पेशगी भेजिए और अपने रेलवे स्टेशन का नाम लिखिए।

प्रतिष्ठित महिलाओं की सम्मतियाँ—

'अलकपरी' से बहुत लाभ है। १ शीशी और तुरन्त भेजिए।
१५-७-४५ कृष्णाकुमारी, धर्मशाला (पंजाब)।

Alak Pari is proving of much use to me. Please send me three more bottles.
4-8-45 Mrs. S. Mandal, 45, The Mall, Lahore.

'अलकपरी' में केशों को बढ़ाने के लिए विद्युत् की शक्ति वर्त्तमान है। मैंने इसे केशों के लिए आश्चर्यजनक लाभकारी पाया है। कृपया ३ शीशियाँ तुरंत भेजें।
७-८-४५ सत्यवती देवी, पासना, जौनपुर।

'अलकपरी' की ५ शीशियाँ इस्तेमाल कीं। बहुत लाभकारी तेल है। कृपया ३ बोतलें शीघ्र भेजें।
३०-८-४५ शान्तिकुमारी, कोटखाई, शिमला

हमारे एजेन्ट—

नई दिल्ली—रायल स्टोर्स, ३३, गोल बाज़ार।
मेरठ—त्यागी ब्रदर्स, बेली बाज़ार।
आगरा—प्रियादास घनश्यामदास परफ़्यूमर्स, काश्मीरी बाज़ार।
लखनऊ—भोलानाथ सीताराम अमीनाबाद पार्क।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केशों की शोभा विना सारी सुन्दरता फीकी पड़ जाती है

BENGALI

SERIES No. 5

☆

इसीलिये केशोंको सजाने व संवारनेके नित्य नये तरीके निकलते आ रहे हैं और निकलते जांयगे। इस विशाल भारतवर्षमें विभिन्न रुचिके लोग हैं और आज ७० वर्षोंसे जवाकुसुम, हर तरहके लोगोंको पसन्द आता रहा है। हमारे देशमें धूल-धक्कड़के मारे बालोंकी जड़में गर्दा बैठ जाता है। फिर गर्मी इतनी तेज पड़ती है कि मस्तिष्कके स्नायु बहुत जल्द गर्म हो जाते हैं। इन दोनों कारणोंसे ही बालोंकी स्वाभाविक कमनीयता और मजबूती नष्ट होती है।

आयुर्वेदोक्त जड़ी-बूटियोंसे बना जवाकुसुम बड़ी आसानीसे मैलको निकाल देता है और बालोंकी जड़को मजबूत बनाता है। इसके स्निग्ध स्पर्शसे मस्तिष्क शीतल हो जाता है।

७० वर्षकी सुप्रसिद्धिका समृद्ध

जवाकुसुम

केशोंकी शोभा बढ़ाता व मस्तिष्क शीतल रखता है

JM-3-H

सी० के० सेन एण्ड कं० लि०

जवाकुसुम हाउस — कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमज़ोर और कृष बच्चे डोंगरे-बालामृत के इस्तेमाल से ताक़तवर, पुष्ट और चुस्त बनते हैं।

निर्बल, निश्चेतन और निराश क्यों रहते हो ?

भोजन को पचानेवाला, ख़ून को बढ़ानेवाला, पाण्डु और अन्य रोग के बाद की निर्बलता को नष्ट करनेवाला

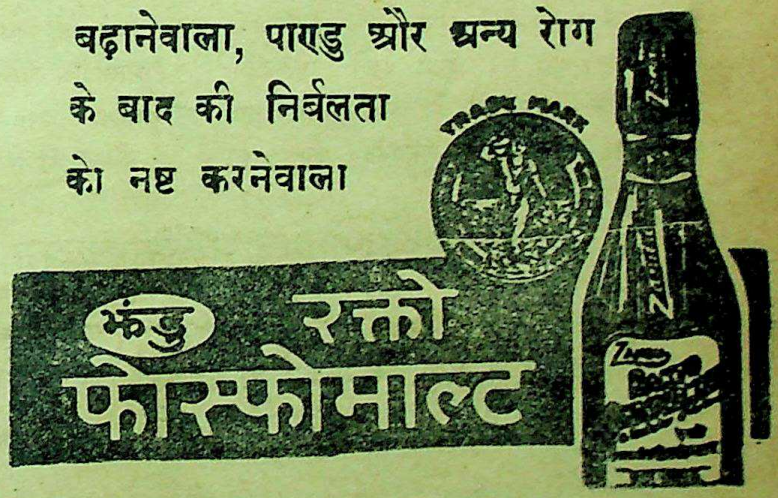

सुमधुर शक्तिवर्धक, अमूल्य औषधि अवश्य सेवन करें

झण्डु फ़ार्मास्युटिकल वर्क्स लि०, बम्बई नं० १४

इलाहाबाद के चीफ़ एजेन्ट— एल० एम० घोलकिया एण्ड ब्रादर्स, ३ जान्स्टनगंज।

दिल्ली और यू० पी० के सोल एजेन्ट—कान्तिलाल आर० पारीख, चाँदनी चौक, दिल्ली।

यू० पी० एजेंट— कान्तिलाल आर० पारीख, चाँदनी चौक, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रदर रोग स्त्रियों का भयानक शत्रु है

प्रदर रोग जिसको लोग लिकोरिया भी कहते हैं यह स्त्रियों की सुन्दरता और जवानी को नष्ट करनेवाला भयानक शत्रु है। लज्जा वश बेचारी रोग को छिपाये रहती हैं और दिन-रात घुला करती हैं। यह उनकी भूल है। भयानक रोग का इलाज कराने में लज्जा नहीं करना चाहिये, इस बीमारी से स्त्रियों के गुप्त शरीर से लाल, काला, धुमैला या श्वेत रंग का बदबूदार पानी या लेस निकलता रहता है। महीना ठीक समय पर नहीं होता है जिसके कारण कमर, रीढ़, सिर में दर्द, शरीर में जलन, मन मलीन, उठने बैठने में थकावट, भूख का कम लगना, बदन दुबला और कमज़ोर हो जाना, मूर्छा, बेहोशी आदि रोग हो जाते हैं और सन्तान नहीं होती है और यदि होती भी है तो दुबली और कमज़ोर होती है। ऐसी अवस्था में भारतविख्यात वैद्यरत्न सत्यदेव ने अपूर्व शक्ति प्रदान करनेवाली २५ वर्ष की आज़मूदा **नारी-संजीवन** नामक दवा का आविष्कार किया जिसके द्वारा आज तक सहस्रों स्त्रियों को इस भयानक रोग के पंजे से छुड़ाया है। इस नारी-संजीवन के सेवन से तमाम बीमारियाँ दूर होकर स्त्रियाँ सुन्दर और तन्दुरुस्त हो जाती हैं और सन्तानें सुन्दर, बलवान्, दीर्घायु पैदा होती हैं। यदि आवश्यकता हो तो आज ही पत्र डालकर एक डिब्बा नारी-संजीवन मँगाकर इसके अपूर्व गुणों का चमत्कार देखें। क़ीमत एक डिब्बा ३=); डाकख़र्च माफ़; पैकिंग ख़र्च अलग।

मँगाने का पता—

रूपविलास कम्पनी नं० ४२७ धनकुट्टी, कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जे. के. का नाम भारतीय टेक्सटाइल मिलों में अपनी उत्कृष्ट बुनाई और छपाई के कारण सारे भारतवर्ष में प्रख्यात है। अत्यंत आकर्षक नमूनों और रंगो के होते हुए भी जे. के. के कपड़े १५% से २०% तक अधिक मजबूत होते हैं।

JK

साड़ियाँ, कमीज के कपड़े मलमलें, छपे हुए कपड़े लट्ठे, चादरें, और सूती कैनवस इत्यादि।

जे. के. काटन स्पीनिंग एन्ड वीविंग मिल्स कम्पनी लीमिटेड, कानपूर.

यह जे. के. इण्डस्ट्री है।

JK 13—Hindi

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने सौन्दर्य को कायम रखिये

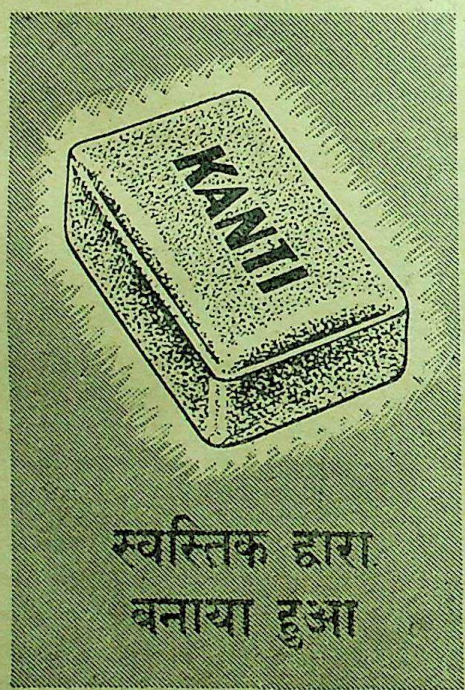

कान्ति साबुन

स्वस्तिक ओयल मिल्स, लिमिटेड, बम्बई, १५

NAS 19/5 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्माजी का चमत्कार

प्रेमबटी ने अपनी ख़ूबी से सारी दुनिया में तहलका मचा दिया

कांग्रेस की राय

(प्रेमबटी वास्तव में एक अद्वितीय औषधि है, पहिले हमें इस औषधि पर इतना विश्वास न था, किन्तु जब हमने इसका परीक्षण किया तब हम इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि यह औषधि विज्ञापन में दिये गये तमाम रोगों की केवल एकमात्र अचूक औषधि है। हम आशा करते हैं कि भविष्य में यह कम्पनी इससे भी उत्तम औषधियों का निर्माण कर जनता को लाभ पहुँचायेगी।—कांग्रेस देहली)

भारत के योगियों ने वनों और पर्वतों की कन्दराओं में रहकर वह चमत्कार दिखलाये हैं जिससे बड़े-बड़े वैज्ञानिक और चिकित्सक हैरत में आ गये हैं। आधुनिक चिकित्सकों को जब कोई रोग की औषधि से सफलता नहीं मिलती तब वह लाइलाज घोषित कर देते हैं। परन्तु महात्मा लोग जड़ी-बूटियों की सहायता से मुर्दे को भी जिला देने का दावा करते हैं। भाइयो, इसे ध्यान से पढ़ो तथा अपने इष्ट मित्रों को सुनाओ। यह लेख जो लिखा गया है, कोई गप्प नहीं है बल्कि मेरे जीवन की चन्द घटनायें हैं जो आपके सम्मुख रखता हूँ। मेरा जन्म एक धनी परिवार में हुआ। अपने पिता का लाड़ला पुत्र होने के कारण धन और व्यसन में घिरा रहता था, लेकिन फिर भी मैं सुखी नहीं था। कुसङ्गत में पड़कर मुझे जरियान और प्रमेह रोग हो गया। पहले तो एक दो साल मैंने लोकलाज के कारण अपना भेद छिपाये रखा परन्तु रोग ने भयानक सूरत अख़्तियार कर ली, अब मैं घबरा उठा, संसार में चारों ओर अँधेरा मालूम होने लगा तब मेरी आँखें खुलीं। इलाज शुरू किया गया, बड़े-बड़े डाक्टरों, हकीमों, वैद्यों के फ़ीस रूप में रुपये और क़ीमती दवाइयों के ख़रीदने में पानी की तरह रुपया बहाने लगा, फिर भी मैं निराश ही रहा। मन में घबरा उठा और चारों तरफ़ से अन्धकार दिखलाई देने लगा और सोचने लगा कि इस दुःखमय जीवन से मर जाना बेहतर है। **पर यह बीस साल पहले की बात है।** अब आज मैं ख़ुश हूँ। आज उस परमात्मा की कृपा से आरोग्य हूँ और मेरे तीन स्वस्थ बच्चे भी हैं जो बिलकुल आरोग्य हैं।

हुआ क्या! मुझमें इतना परिवर्तन कैसे हो गया? यह जानकर आपको आश्चर्य होगा कि मैंने एक दवा सेवन की! जो दवा मैंने सेवन की, वह एक महान् त्यागी परोपकारी साधु की बनाई हुई थी, जो समय काटने के लिए गाँव से कुछ दूर एक पेड़ के खेड़े पर रम रहे थे। यह मेरा सौभाग्य था कि और लोगों के साथ मैं भी दर्शनों के लिए जा पहुँचा। दैवी शक्ति से मेरे दुःखी जीवन के पिछले अध्याय उनके हृदय-पट पर खिंच गये और मेरी आँखों ने हृदय का सारा भेद अपने आप उस महान् पुरुष पर प्रकट कर दिया। मेरी कच्ची उम्र पर महात्मा को दया आई और उन्होंने मुझे कुछ जड़ी-बूटियाँ एकत्र करने की आज्ञा दी। मैंने वैसा ही किया और तब उनके सम्मुख ही मुझे उनके आदेश और निजी देख-रेख में 'प्रेमबटी' तैयार करनी पड़ी। यद्यपि मुझसे ४० दिन लगातार 'प्रेमबटी' का सेवन करने को कहा गया था, तथापि केवल बीस दिन के सेवन से ही मुझमें परिवर्तन हो गया। मेरी कमज़ोरी और तमाम गुप्त बीमारियाँ जड़ से दूर हो गईं। पीले और उदास मुख पर लाली दौड़ने लगी, आँखों में उन्माद झूमने लगा और हृदय में जवानी का जोश उमड़ आया। महात्माजी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के साथ ही अपने फ़र्ज़ को पूरा करने के लिए दुःखी जनों के निमित्त पिछले बीस साल से लगातार मैं इस प्रयोग को मुफ़्त बाँट रहा हूँ। यह अनेक समाचार-पत्रिकाओं में भी छप चुका है। मुझे हर्ष है कि इस अमृत-तुल्य प्रयोग ने सैकड़ों की प्राण-रक्षा की, हज़ारों को मौत के मुँह से निकाला और लाखों का इससे भला हुआ। महात्मा-प्रदत्त 'प्रेमबटी' का नुस्ख़ा इस प्रकार है; नोट कर लें—

शुद्ध त्रिफला ५ तोला, त्रिकुट चूर्ण ५ तोला, शुद्ध सूर्यतापी शिलाजीत ५ तोला, शुद्ध बङ्ग भस्म ६ माशा, असली सूर्य-केसर ३ माशा, असली अकरकरा ६ माशा, असली नेपाली कस्तूरी ३ रत्ती। इन सब औषधियों को कूट-छानकर खरल में डालकर ऊपर से शीतल चीनी का तेल २० बूँद, सन्दल तेल २० बूँद, बिरोजे का तेल २० बूँद एक-एक करके मिलायें। उसके बाद ताज़ी ब्राह्मी बूटी के अर्क़ में १२ घण्टा घोंटकर झरबेरी बेर के बराबर गोलियाँ बनावें और छाया में सुखा लें। एक-एक गोली प्रातः-शाम पाव भर गाय के दूध में एक तोला शक्कर मिलाकर सेवन करें। इसकी प्रशंसा हम अपने ही मुँह से नहीं करते बल्कि बड़े-बड़े वैद्यों, डाक्टरों, हकीमों, सेठ साहूकारों तथा रईसों, ज़मींदारों, सरकारी आफ़िसरों तक ने इसकी सराहना की है। वैद्यराज रामानन्दत्त शर्मा, झोंकर का कहना है कि यह बटी धातु का पतलापन, २० प्रकार के प्रमेह के लिए अक्सीर है।

'प्रेमबटी' में कोई हानिकारक चीज़ नहीं पड़ती और गुणकारी चीज़ें नुस्ख़े से ही प्रकट हैं। यह औषध वीर्य का पतलापन, सभी प्रकार के प्रमेह, पेशाब के साथ चूने की तरह वीर्य का जाना, पाख़ाने के समय धातु का जाना, स्वप्नदोष, सुस्ती, कमज़ोरी, नामर्दी, हस्टीरिया, मधुमेह, सूज़ाक, जवानी में बुढ़ापे की-सी हालत हो जाना, असली ताक़त की कमी, स्मरण-शक्ति कमज़ोर पड़ जाना तथा स्त्रियों के भी प्रदर-सम्बन्धी रोग दूर करके अत्यन्त ताक़त देती है और नस-नस में नवजीवन का सञ्चार करती है। अन्त में उन सज्जनों को जिन्हें फ़ुरसत नहीं मिलती या शुद्ध औषधि प्राप्त नहीं कर सकते यह प्रयोग स्वयं बनाकर दाम के दाम में भेजने की व्यवस्था की है। ४० दिन के लिए पूरी ख़ुराक विधिवत् ८० गोलियों का मूल्य ५॥=) रु० और २० दिन के लिए ४० गोलियों का दाम ३=) डाकख़र्च ॥।-)

पता बाबू श्यामलालजी रईस, प्रेमबटी आफ़िस नं० (S. A) जनकुट्टी, कानपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्मस्टारोंकी तरह त्वचा की रक्षा कीजिये!

माया बॅनर्जी

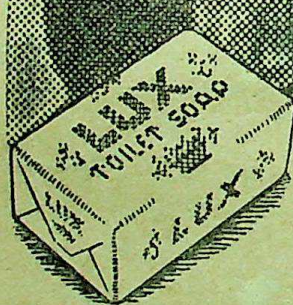

"मै नियमित रूपसे लक्स टॉयलेट साबुन इस्तेमाल करती हूं इससे मेरी अंगकांति बेदाग, और मुलायम रखनेमें मुझे कोई कठिनाई नही पड़ती"—यह है मायाका कहना। इस खुशबूदार साबुन का तेज फेन, मैल और बदीको, शरीर के छिद्रोंसे दूर रखता है इससे अंगकांति मृदु, मुलायम और मोहक हो जाती है। बहुतही हिंदी फिल्म स्टार लक्स टॉयलेट साबुन नियमित रूपसे इस्तेमाल करती हैं।

लक्स टॉयलेट साबुन

LTS. 154-111-40 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

१—परलोकगत रायबहादुर बाबू श्यामसुन्दरदास—चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा २२५
२—चण्डीदास की विरहिणी राधा—पण्डित हजारीप्रसाद द्विवेदी २२६
३—तक्षशिला—तब और आज—पण्डित कृष्णदत्त वाजपेयी, एम० ए०, लखनऊ म्यूज़ियम ... २३५
४—गीत (कविता)—श्रीयुत छोटेलाल भारद्वाज ... २३६
५—'डैनट्रट सारस'—श्रीयुत दुर्गाशङ्करप्रसाद सिंह ... २४०
६—बादल-गीत (कविता)—श्रीयुत बैजनाथप्रसाद सिनहा 'विस्मृत' २४२
७—प्रशान्त का युद्ध—पण्डित रमादत्त शुक्ल ... २४३
८—कवि से (कविता)—श्रीयुत अनुरञ्जन, बी० ए०, आनर्स २४७
९—मञ्जुश्री—कुमारी प्रभा पारीक, बी० ए० ... २४८
१०—मेरा उपन्यास—श्रीयुत पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, बी० ए० ... ... २५१
११—उपेक्षितों की दुनिया—श्रीयुत कृष्णचन्द्र शर्मा, बी० ए० ... ... २५५
१२—गीत(कविता)—श्रीयुत शीतलासहाय श्रीवास्तव २६०
१३—बरसातों का क्या कहना (कविता) श्रीयुत रामानुजलाल श्रीवास्तव २६०
१४—निर्वासित—पण्डित इलाचन्द्र जोशी ... २६१
१५—नई पुस्तकें २६९
१६—सामयिक साहित्य २७१
१७—सम्पादकीय नोट २७४

चित्र-सूची

१—परलोकगत रायबहादुर बाबू श्यामसुन्दरदास सम्बन्धी ३ चित्र २२६-२८
२—तक्षशिला—तब और आज सम्बन्धी ३ चित्र २३६-३८
३—प्रशान्त का युद्ध सम्बन्धी ६ चित्र ... २४३-४६

श्री साहनलाल द्विवेदी लिखित—

कुणाल

प्रत्येक युवक, युवती के पढ़ने योग्य अभिनव प्रकाशित खंड काव्य

अशोक, तिष्यरक्षिता और कुणाल के चरित्र-चित्रण में—खासकर कुणाल के चरित्र-चित्रण में—कवि ने कमाल किया है।

शब्द-सौकुमार्य के साथ ही भावोत्कर्ष तथा नपे-तुले शब्दों का प्रयोग भी द्विवेदी जी की कविता को उच्च बनाता है।

—महापण्डित राहुलसांकृत्यायन

सचित्र सजिल्द मूल्य १।)

मिलने का पता—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है।

हमारे यहाँ की बनी क्रीमोला टाफ़ी

फ़्रूट ड्राप्स तथा

रेशमी मिठाइयों का स्वाद लीजिए।

सभी दूकानों में मिलती हैं।

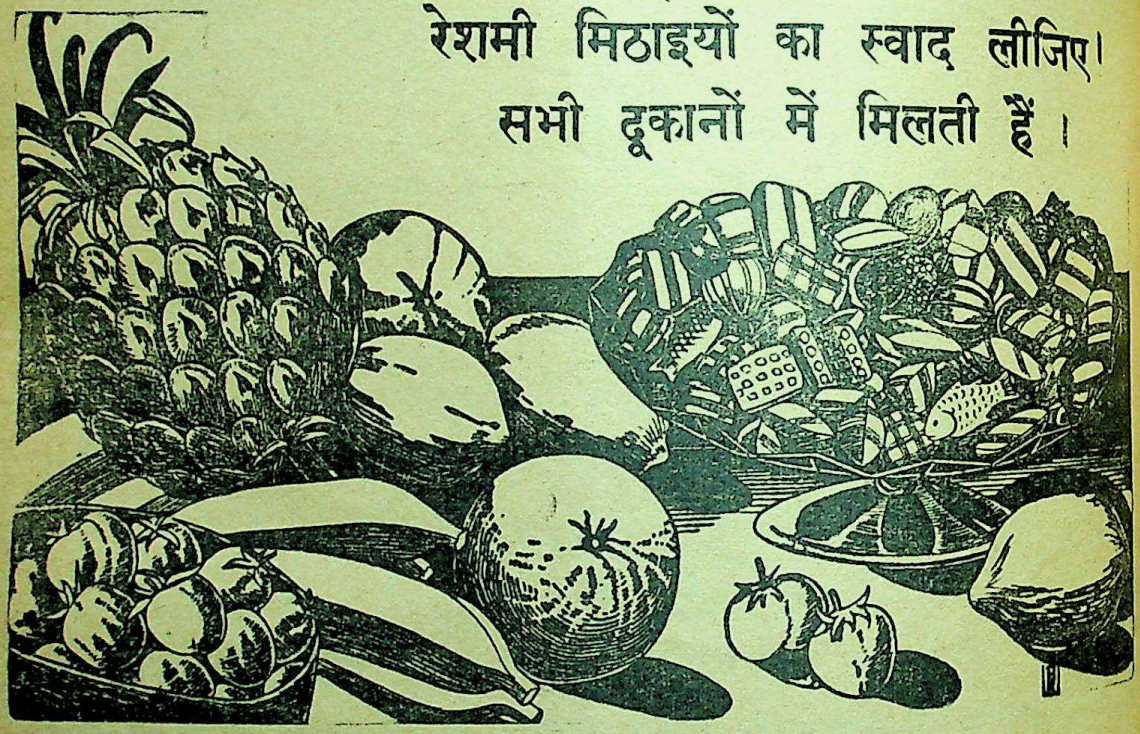

निर्माता—इण्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस,

इंडियन प्रेस बिल्डिंग,

इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक—देवीदत्त शुक्ल : उमेशचन्द्र मिश्र

नवम्बर १९४५ कार्तिक २००२; भाग ४६, खण्ड २ संख्या ५, पूर्ण संख्या ५५०

परलोकगत रायबहादुर बाबू श्यामसुन्दरदास

[संस्मरण]

चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा

प्रथम परिचय

ठीक-ठीक तो स्मरण नहीं, सम्भवतः सन् १९०३ की बात है। उन दिनों काशी के हिन्दी-साहित्याकाश में कई देदीप्यमान नक्षत्र विद्यमान थे। हमारे वहाँ के परिचितों में थे—भारतजीवन प्रेस के अध्यक्ष बाबू रामकृष्ण वर्मा, लहरी प्रेस के स्वामी बाबू देवकीनन्दन खत्री, बाबू कार्तिकप्रसाद खत्री, पण्डित किशोरीलाल गोस्वामी और बाबू राधाकृष्णदास। हमें प्रयाग में पहुँचे चार-पाँच वर्ष हो चुके थे और जिस समय की घटना हम लिखने बैठे हैं, उस समय हम प्रयाग में भारती-भवन के समीप, कूचा बहोरमल के एक मकान में किरायेदार थे। उस मकान बाबूलाल खत्री बजाज़ का था और उसमें एक वृद्धा रहती थीं, जिसको लोग 'भाभो' कहते थे, रहती थी। यह घर माननीय मदनमोहन मालवीय और तत्कालीन गवर्नमेंट हाईस्कूल के हेडपण्डित पण्डित जयदेव मालवीय के घरों के अत्यन्त निकट था। इस मकान में पहुँचने के कुछ ही दिनों बाद, प्रधान अध्यापक तथा मालवीयजी से हमारा परिचय हुआ और उनके साथ उठना-बैठना आरम्भ हुआ। उन दिनों मालवीयजी हाईकोर्ट में वकालत करते थे और उनका दफ़्तर कूचे के फाटक से थोड़े ही बायें हाथ पर था। उन दिनों मालवीयजी महाराज अदालतों में नागरी अक्षरों को प्रवेश कराने के उद्योग में लगे हुए थे और इस विषय की एक ख़ासी मोटी और बड़े आकार की अँगरेज़ी की पुस्तक भी निकाली थी। इस पुस्तक में सरकारी रिकार्डों के हवाले और उद्धरण थे, जिनसे नागरी का पक्ष पुष्ट होता था। इस कार्य में मालवीयजी के दक्षिण हस्त थे, भानुताप यन्त्र के आविष्कर्त्ता पण्डित श्रीकृष्ण जोशी। ज़माना था सर एंटनीमैकडनेल्ड का। प्रयाग में माननीय मालवीयजी और काशी में नागरीप्रचारिणी सभा नागरी लिपि के महत्त्वपूर्ण कार्य को सफलतापूर्वक सुसम्पन्न करने के हेतु, सतत प्रयत्न कर रही थीं। नाम तो था काशी-नागरीप्रचारिणी सभा का, किन्तु उसके नाम से प्रधान उद्योग करनेवाले थे बाबू श्यामसुन्दरदास। उस समय नागरी लिपि को अदालतों में स्थान दिलाने के अतिरिक्त नागरी लिपि के सौष्ठव की वृद्धि के लिए नागरीप्रचारिणी सभा की ओर से परीक्षा भी हुआ करती थी और सुन्दर नागरी लिपि लिखनेवालों को सम्भवतः सभा की ओर से कुछ पुरस्कार भी दिया जाता था।

× × ×

काशी की नागरीप्रचारिणी सभा को सफलतापूर्वक उन्नति के पथ पर आरूढ़ करनेवालों में एक थे पण्डित केदारनाथ शर्मा। आप मिरज़ापुर के रहनेवाले थे और अपनी धुन के पक्के थे। उन्होंने सभा के सदस्यों की संख्या बढ़ाने के हेतु देश में दूर-दूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक भ्रमण किया था। उन्हें मालूम भर हो जाता कि अमुक व्यक्ति नागरी-हिन्दी का अनुरागी है, तो वे उसको सदस्य बनाये बिना कल नहीं लेते थे। इन जैसे परिश्रमी, अध्यवसायी और संलग्नता के साथ कार्य करनेवाले लोग बहुत कम हैं। यद्यपि हिन्दी-समाचारपत्रों में काशी की नागरीप्रचारिणी सभा की चर्चा हुआ करती थी और हम उसे पढ़ते भी थे, किन्तु हमारी उसकी ओर प्रवृत्ति न थी।

एक दिन पण्डित केदारनाथजी मालवीयजी के दफ़्तर में बैठे थे। संयोगवश हम भी वहाँ जा पहुँचे। पण्डित केदारनाथजी ऊँचा सुनते थे। अतः मालवीयजी ने सङ्केत द्वारा उनका ध्यान हमारी ओर आकर्षित किया। फिर क्या था। पण्डितजी बड़ी सादगी और धैर्य के साथ हमसे वार्त्तालाप करने में प्रवृत्त हुए। अन्त में सभा का महत्त्व समझा, हमसे भी सदस्य बनने की बात छेड़ी। हमने, अन्त में, यह कहा—"आपकी सभा का कार्य और उद्देश्य स्तुत्य हैं, हम उसके शुभचिन्तक हैं; किन्तु सदस्य बनने के विषय में, हम किसी समय काशी आकर ही, अपना अन्तिम निर्णय बतावेंगे।" हमारे इस उत्तर से पण्डितजी हताश न हुए; प्रत्युत प्रसन्न हो बोले—"हाँ, यह ठीक है। आप एक बार काशी अवश्य आवें और सभा-भवन में पधारें।"

जैसे-जैसे हमें बहोरमल के कूचेवाले मकान में रहते हुए दिवस व्यतीत होते, वैसे ही वैसे हमारा और माननीय मालवीयजी का परिचय एवं सम्बन्ध घनिष्ठ होता जाता था। जो बात उस समय हमने मालवीयजी के घर में देखी थी वह अब नहीं

महामना मालवीयजी

रही। उस समय मालवीयजी का घर एक आदर्श हिन्दू-गृह था। चन्द्रकान्त, रमाकान्त, कृष्णकान्त, राधाकान्त आदि को वेद-मन्त्र सस्वर पढ़ाने के हेतु एक वैदिक पण्डित नित्य मालवीयजी के घर आते थे। मालवीयजी के घर पर वसन्तपूजा का समारोह प्रायः हुआ करता था। श्रीकृष्णजन्माष्टमी के अवसर पर अष्टमी के दिन बड़ी चहल-पहल रहती थी। भगवान् श्री कृष्ण के मङ्गल विग्रह का शृङ्गार किया जाता था। गाना-बजाना होता था। नगर के अनेक प्रतिष्ठित जन इस समारोह में उपस्थित होते थे। व्रजमोहन मालवीय की हारमोनियम बाजा बजाने की पटुता देखने को अनेक पुरुष आते थे। मालवीयजी के श्री व्रजनाथजी वल्लभी रोरी का तिलक माथे पर लगाते थे। विराजते थे। आप श्रीमद्भागवत के अच्छे मर्मज्ञ थे। शान्त और शिष्ट थे। मालवीयजी अपने नये मकान की में बैठते। हमारा भी वहाँ उठना-बैठना आरम्भ हो गया। यह बैठक रात के १२ बजे तब उठती जब मालवीयजी ऊँघने लगते थे। उन दिनों अदालत में नागरी अक्षरों का प्रवेश का उद्योग चालू था; साथ ही म्योर कालेज से सम्बन्धित 'बोर्डिंग हाउस' की योजना का भी कार्य आरम्भ था। बेसेंटके काशीस्थ हिन्दू कालेज के कारण मालवीयजी के में हिन्दू-विश्वविद्यालय की रूपरेखा भी अङ्कित हो चुकी सनातनधर्म-संग्रह का कार्य भी मालवीयजी अपने हाथ ले चुके थे।

संयोगवश महामना मालवीयजी को काशी जाना पड़ा बातों ही बातों में हमसे भी कहा गया—"चौबेजी, काशी चलो।" दफ़्तर की दो दिवस की छुट्टी थी—अतः मालवीयजी की आज्ञा शिरोधार्य करने में कोई आपत्ति न हुई हम गये और मालवीयजी के साथ रामपुरी के मकान में शाम को नागरीप्रचारिणी सभा का आमन्त्रण पा हम मालवीयजी के साथ सभा-भवन में पहुँचे। बाबू श्यामसुन्दरदासजी से हमारा प्रथम परिचय सभा-भवन ही में हुआ। शरीर से हृष्ट-पुष्ट गौरवर्ण और विशाल नेत्रवाले बाबू श्यामसुन्दरदास की ओर हमारा मन हठात् आकर्षित हुआ। मालवीयजी सभापति के आसन पर आसीन थे। आपके भाषण के बाद बाबू श्यामसुन्दरदास का भाषण हुआ। इनका भाषण विशुद्ध हिन्दी था और धाराप्रवाह रूप से था। हिन्दी के शब्दों का उच्चारण बड़ा ही शुद्ध था। विषय-प्रतिपादन की शैली प्रभावोत्पादक थी। हमने ऐसा भाषण मानो महामना मालवीयजी के मुख से सुना था या आज बाबू श्यामसुन्दरदास के मुख से। आपके इन गुणों से बहुत ही प्रभावान्वित हुए। सभा-कार्य समाप्त होने पर परस्पर परिचय कराया गया। हमारा सर्वप्रथम परिचय बाबू राधाकृष्णदास तथा बाबू गौरीशंकर से हुआ। पण्डित केदारनाथजी भी वहाँ उपस्थित थे। उनके सामने देख हमने सदस्य-फ़ार्म माँगा और उसे भर सदस्यता के साथ उनके हवाले किया। हम 'काशी-नागरीप्रचारिणी सभा' के कई वर्षों तक सभासद रहे। सभा के सदस्य के नाते बाबू श्यामसुन्दरदास से हमारी घनिष्ठता उत्तरोत्तर बढ़ती ही गई; क्योंकि वे सभा के प्रधान मन्त्री थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाबू श्यामसुन्दरदास के चेहरे पर गम्भीरता एवं विचारशीलता परिलक्षित होती थी, तथापि वे हँसमुख और मिलनसार भी थे। जब कभी उनसे वार्त्तालाप करने का अवसर प्राप्त हुआ, तब वार्त्तालाप का विषय 'हिन्दी-साहित्य' ही होता था। उनकी विनीत से तत्कालीन हिन्दी-साहित्य की प्रगति और हिन्दी-लेखकों का विशेष परिचय प्राप्त हुआ करता था। उनके सभापतित्व की 'नागरीप्रचारिणी सभा' की वार्षिक रिपोर्ट के अन्तर्गत तत्कालीन समाचारपत्रों का प्रगति-सम्बन्धी नोट समाचार-पत्रों में चहल-पहल मचा दिया करता था। सभा और उसकी उन्नति के मुख्य कारण बाबू श्यामसुन्दरदास से कुढ़नेवाले अतिशय परोत्कर्ष-असहिष्णु हिन्दी-लेखक सभा के कार्यों की आलोचना करते हुए बाबू श्यामसुन्दरदास को भी धर घसीटते थे। किन्तु जहाँ तक हमें स्मरण है, बाबू श्यामसुन्दरदास ने ऐसे अवाञ्छनीय एवं घृणा बढ़ानेवाले लेखकों को उत्तर कभी न दिया। उनके लेखों में व्यक्तिगत आलोचना या आक्षेप नहीं होते थे। वे जो कुछ लिखते थे उसे संयम के साथ लिखते थे। नागरीप्रचारिणी सभा को वे 'ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड' की 'रायल एशियाटिक सोसायटी' के आदर्श पर चलाना चाहते थे। उनके समय की त्रैमासिक 'नागरीप्रचारिणी पत्रिका' पढ़ने की एक वस्तु होती थी।

× × ×

जहाँ तक हम उन्हें जान सके, कह सकते हैं, वे किसी धर्म के अनुयायी न थे। लिखने में, विचारने में, उनका आदर्श था पाश्चात्य शिक्षित-समाज। पाश्चात्य शिक्षित-समाज की विचार-धारा उनकी दृष्टि में अभ्रान्त एवं आदर की वस्तु थी। अतः जब उन्होंने सभा-द्वारा रमेशचन्द्र दत्त-लिखित 'हिस्ट्री ऑफ़ एनशिएंट सिविलिज़ेशन आफ़ इंडिया' का भाषानुवाद प्रकाशित करना आरम्भ किया, तब हमारा उनके साथ मतभेद हो गया। दत्त उनके दृष्टिकोण से सर्वथा विपरीत थे। दत्त ने ह्विटनी-मेकर आदि पाश्चात्य लेखकों के वैदिक धर्म की अपकृष्टता सिद्ध करने का प्रयत्न करनेवाले सिद्धान्तों का चर्वित-चर्वण किया था। ऐसी पुस्तक के प्रचार से युवकों के मन में आर्य-संस्कृति के प्रति घृणा उत्पन्न होने के अतिरिक्त अच्छे भाव उत्पन्न हो ही नहीं सकते। इस विषय पर हमारा उनका बहुत दिनों तक पत्र-व्यवहार हुआ। अपने पत्रों में बाबू साहब ने उक्त पुस्तक के प्रकाशन की आवश्यकता एवं उपयोगिता हमें समझाने का भरसक प्रयत्न किया; किन्तु दुर्भाग्यवश उनका तर्क हमारी समझ में न आया। तब हमने अपने मत की पुष्टि में 'प्रयाग-समाचार' में एक लेख-माला लिखी। इस लेख-माला की चर्चा तत्कालीन काशी के 'सुदर्शन' नामक मासिक पत्र में तथा बम्बई के 'श्री-वेंकटेश्वर-समाचार' में भी हुई। किन्तु बाबू श्यामसुन्दरदास

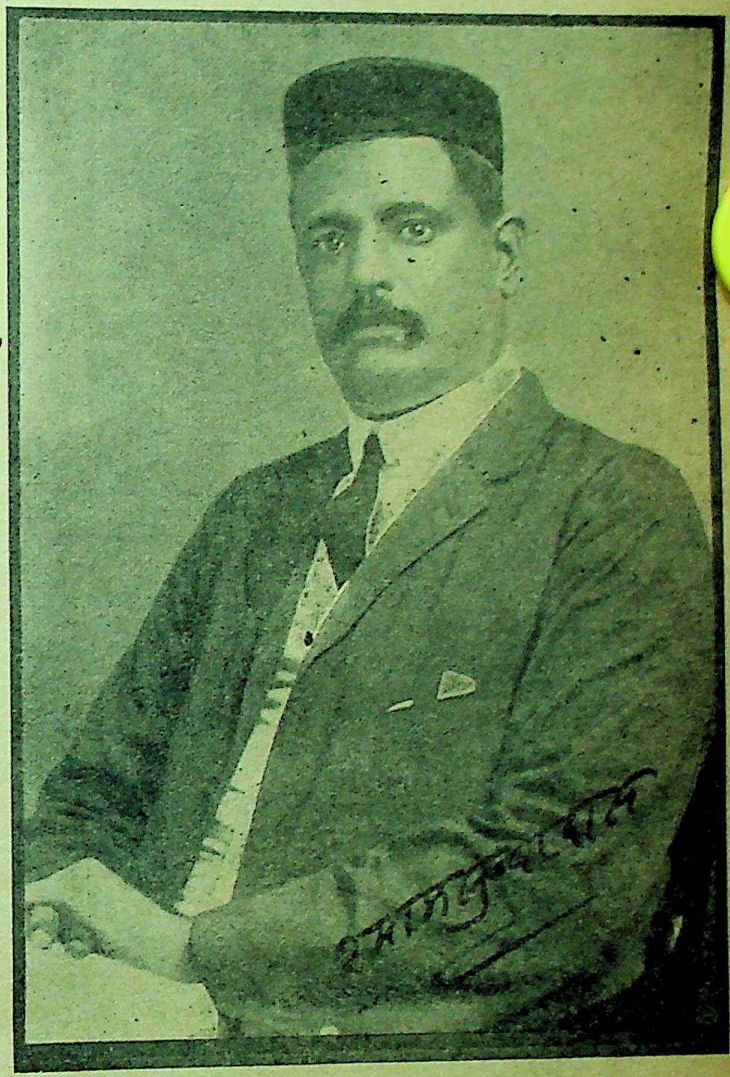

बाबू श्यामसुन्दरदास, युवावस्था में

ने अपनी टेक न छोड़ी। परिणाम यह हुआ कि हमें उक्त सभा से सम्बन्ध-विच्छेद करना पड़ा। किन्तु सभा से सम्बन्ध-विच्छेद होने के अनन्तर भी बाबू श्यामसुन्दरदास के साथ हमारे व्यक्तिगत सम्बन्ध में अन्तर न पड़ा। उधर काशी से 'हिन्दी-कोविद-रत्न-माला' प्रकाशित की गई। हमसे भी अपना चित्र और परिचय भेजने को कहा गया। उत्तर में हमने लिखा—"न तो हम अपने को अपना चित्र प्रकाशित कराने योग्य समझते हैं और न हमारी जीवनी ही महत्त्वपूर्ण है जिसे पढ़कर लोग लाभान्वित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हों।" फिर पिछले वर्षों जब बाबू साहब ने 'इंडियन प्रेस' की 'सरस्वती-सीरीज़' के लिए हिन्दी-लेखकों के सम्बन्ध में 'हिन्दी के निर्माता' पुस्तक लिखना आरम्भ किया, तब हमारा भी स्मरण किया गया। इस बार हमने बड़ी विनम्रता से बाबू साहब को अपने पत्र में लिखा कि "हमारी इच्छा है कि हम संसार में जिस

रायबहादुर डाक्टर श्यामसुन्दरदास साहित्य-वाचस्पति

कार अपरिचित आये, उसी प्रकार हम यहाँ से अपरिचित ही यँ।" हम जहाँ तक जानते हैं, हमारा यह उत्तर बाबू साहब सन्तोष का कारण तो न हो सका होगा, किन्तु फिर उनका ई पत्र हमें न मिला।

× × × ×

सभा ने जब 'मनोरञ्जन ग्रन्थमाला' का प्रकाशन करना चाहा, तब भी बाबू श्यामसुन्दरदास जी के स्मृति-हम विस्मृत न हो सके। उनके अनुरोध से हमने भी दो-तीन उक्त ग्रन्थमाला के लिए लिखकर भेजीं जो प्रकाशित हुईं। हम अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर कह सकते हैं बाबू श्यामसुन्दरदास बड़े व्यवहार-कुशल वे स्वयं खूब काम करते थे और दूसरों काम लेने की उनमें विशेष योग्यता थी पत्र-व्यवहार में वे बड़े चुस्त थे। उत्तर तुरन्त देते थे। लखनऊ में चरण हाईस्कूल की हेडमास्टरी करने के में भी ऐसा कभी न हुआ कि हमारे पत्र का उत्तर हमें तुरन्त न मिला हो। मित रूप से और स्वनिर्दिष्ट के अनुसार निरन्तर काम करने पर प्रत्येक कार्य में अपेक्षित सफलता प्राप्त है। बाबू श्यामसुन्दरदास में ये ही गुण विद्यमान थे। अतः वे काल में हिन्दी-साहित्य की जितनी सेवा गये हैं, उतनी सेवा थोड़े ही लोग सके हैं।

× × ×

यह बड़े सन्तोष की बात है कि वे विश्वविद्यालय में हिन्दी-विभाग के रहने के दिनों में कतिपय युवकों को तैयार कर गये हैं। उनके शिष्यों में नन्ददुलारे वाजपेयी विशेष स्थान रखते हैं उनके समय की 'सरस्वती' रोचक से पूर्ण होती थी। 'सरस्वती' के म्भिक काल का कुछ कुछ हाल हमें अवगत है। 'सरस्वती' का प्रकाशन होने के समय हिन्दी में मासिक पत्र तो अवश्य, किन्तु उन सब का जीवन प्रकार की कृच्छ्र तपस्या से पूर्ण था। 'इंडियन प्रेस' के संस्थापक स्वर्गीय बाबू श्यामसुन्दरदास, बाबू गिरिजाकुमार चिन्तामणि घोष, (उर्फ़ पार्वतीनन्दन) तथा बाबू ठाकुरप्रसाद खत्री का सतत अटूट परिश्रम भी भूलने की वस्तु नहीं है।

बाबू श्यामसुन्दरदास का परलोक-गमन उनके परिचित जनों के लिए सचमुच मर्म-वेदना-कारक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चण्डीदास की विरहिणी राधा

76273

पण्डित हजारीप्रसाद द्विवेदी

चण्डीदास बङ्गाल के प्रेमी वैष्णव कवि हो गये हैं। वे बङ्गाल के सूरदास हैं। उनका निवासस्थान विवाद का विषय बन गया है पर सम्भवतः उसी वीरभूम ज़िले के निवासी थे जो सैकड़ों वर्ष पहले के प्रसिद्ध कवि जयदेव की जन्मभूमि है और सैकड़ों वर्ष बाद के श्रेष्ठ कवि रवीन्द्रनाथ की कर्मभूमि है। चण्डीदास चैतन्यदेव के भी पूर्ववर्ती हैं। हिन्दी पाठकों को चण्डीदास की विरहिणी राधा का परिचय दिया जा रहा है। इन गानों की तन्मयता ने महाप्रभु चैतन्यदेव को मूर्छित कर दिया था।

चण्डीदास की पदावली में राजा वृजभानु की नगरी में ही बार बार नवल किशोरी की मधुर मूर्ति दिखाई पड़ती है। वे सखियों के साथ, कितने रङ्गों में यमुना-स्नान करने जाती हैं, फूलों के सौरभ से भौंरे उनकी ओर दौड़ पड़ते हैं और झङ्कार करते फिरते हैं, उस अपूर्व सौन्दर्य के सामने उनके शरीर पर के नाना आभरण और मणियों की किरणों भी म्लान जान पड़ती हैं। श्रीकृष्ण के मन में यह बिजली-सी बरनवाली किशोरी सदा बनी रहती है—

सखीगन संगे याय कत रंगे
यमुना सिनान करि।
अङ्कुर सौरभे भ्रमरा धावये
झङ्कार करये फिरि।
नाना आभरण मणिर किरण
सहजे मलिन लागे
नवीन किशोरी वरन विजुरी
सदाइ मने ते जागे।

एक दिन एक घटना हो गई। राधिका माता तथा सखियों के साथ खिड़की पर बैठी थीं, नीचे सुबल आदि गोप-बालक खेल रहे थे। सुबल ने श्रीकृष्ण-मूर्ति दिखाई और राधिका मूर्च्छित हो गईं। इस मूर्च्छा को दूर करने के लिए क्या-क्या उपाय नहीं किये गये! पर सब व्यर्थ। मूर्च्छा किसी तरह न छूटी। तब बाज़ीगर बनकर गये और श्रीकृष्ण का अमृत-तुल्य नाम कानों में सुना दिया। बात की बात में किशोरी फिर प्रकृतिस्थ हो गईं। यहीं उस स्वर्गीय प्रेम का जन्म होता है जिसकी तुलना संसार में नहीं है।

इसके बाद राधिका की प्रेम-विह्वल अवस्था देखने ही योग्य है। एक दण्ड में सौ बार घर से बाहर निकलती हैं फिर भीतर आती हैं—चित्त महाउद्विग्न हो गया है। कदम्ब के वन की ओर देख-देखकर दीर्घ श्वास लेती हैं—

घरेर बाहिरे दण्डे शतबार
तिले तिले आसे याय
मन उचाटन निश्वास सघन
कदम्ब कानने चाय

मगर राधिका को हो क्या गया? साड़ी का आँचल सदा ही चञ्चल रहता है, संवरण नहीं कर पातीं; बैठी हुई रह-रहकर चौंक पड़ती हैं, गहने खिसक जाते हैं।

राइ एमन केन वा हइल।
सदाइ चञ्चल वसन अञ्चल
संवरण नाहि करे।
वसि थाकि थाकि उठये चमकि
भूषण खसिये पड़े।

राधिका की अवस्था सचमुच बड़ी उद्वेगजनक है। हाय, उनके अन्तर में यह कौन-सी व्यथा जगी रहती है। एकान्त में बैठी रहती हैं, जब देखो तब कपोल हथेली पर पड़े हुए हैं, सदा ध्यानमग्न होकर मेघ की ओर टकटकी लगाये रहती हैं। नील वस्त्र छोड़कर रांगा वस्त्र पहनने लगी हैं, आहार भी छोड़ दिया है, जान पड़ता है योगिनी हो गई हैं—

आगो राधार कि हल अन्तरे व्यथा
वसिया विरले थाकइ एक ले
ना शुने काहारो कथा
सदा धेयाने चाहे मेघ पाने
ना चले नयन तारा
विरति आहारे रांगा वास परे
येन योगिनीर पारा।

सभी काली चीज़ें उनके निकट महत्त्वपूर्ण हो गई हैं। सजल श्यामल मेघ और उन्हें देखकर नृत्यमग्न मयूरों को देखकर उनकी टकटकी बँध जाती है। अपने ही भौंरे से काले केशों को खोलकर देखती और निःश्वास फेंकती हैं, सारा मन और प्राण कृष्णमय हो गया है।

कितना मधुर है यह श्याम नाम। हाय मेरी सजनी, किसने सुनाया था यह मधुर नाम! कानों से होकर यह मर्म में प्रवेश कर गया और मेरे मन और प्राणों को व्याकुल कर दिया! न जाने कितना मधु है इस श्याम नाम में, जिसे मुँह छोड़ ही नहीं सकता। नाम जपते जपते उसने मुझे अवश कर दिया। बता सखी, उसे मैं कैसे पा सकूँगी।

सइ केवा शुनाइल श्याम नाम?
कानेर भितर दिया मरमे पशिलगो
आकुल करिल मोर प्राण
ना जानि कतेक मधु श्याम नामे आछे गो
बदन छाड़िते नाहि पारे
जपिते जपिते नाम अवश करिल गो
केमने पाइब सइ तारे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृष्णरूप राधिका के हृदय में इस तरह अङ्कित हो गया है कि उसे किसी प्रकार हटाया नहीं जा सकता। प्रेम की ऐसी तन्मयता, ऐसी गम्भीरता, ऐसी विशुद्धता और ऐसी दृढ़ता अन्यत्र दुर्लभ है। राधिका ने प्रेम किया पर कृष्ण नहीं मिले। न सही, पर राधिका को तो जो होना था, हो चुकीं। अब तो लौट चलने का रास्ता नहीं है।

राधिका और कृष्ण की प्रेम-लीला से यमुना का कदम्ब-कानन उल्लसित हो उठा है पर उसमें रह-रहकर राधिका का मक्खन-सा मुलायम हृदय प्रेमवैचित्र्यवश सशङ्क हो उठता है।

राधा और कृष्ण का यह प्रेम सचमुच अदृष्ट-पूर्व है। सहज ही एक दूसरे का प्राण एक दूसरे से बँध गया है। दोनों ही दोनों की गोद में विच्छेद की आशङ्का से रो रहे हैं—एक क्षण भी न देखने से मर-से जाते हैं—

एमन पिरीति कभु देखि नाइ शुनि
पराणे पराणे बाँधा आपनि आपनि
दुहुँ कोड़े दुहुँ काँदे विच्छेद भाविया
तिल आध ना देखिले याय ये मरिया।

यह मोम की पुतली मान भी नहीं कर सकती। यदि संयोग वश किसी दिन मान की नौबत आ भी गई तो क्षण भर में गलकर पानी हो गई—अपना सिर मैंने अपने हाथों काट लिया। हाय मैंने मान किया ही क्यों? हे सखि, वह श्याम-सुनागर, नटवर-शेखर किधर निकल गया? दिन-रात तप-व्रत करके भी जिस कानू (कन्हैया) को नहीं पाया जा सकता वही अमूल्य धन मेरे पैरों पड़ा था, मैंने उसे पैरों से ठेल दिया!

आपन सिर हाम आपन हाते कटिनु
काहे करिनु हेन मान।
श्याम सुनागर नटवर शेखर
काँहा सखि करल पयान
तप बरत कत करि दिन यामिनी
यो कानू को नाहि पाय
हेत अमूल्य धन मझु पाय गड़ायल
कोपे मुँइ ठेलि नु पाय।

सखी, मेरा हिया जुड़ा गया! श्याम अङ्ग के शीतल पवन का स्पर्श पाकर मेरा हृदय ठण्ढा हो गया। सखियो, तुम यमना जल में आकर स्नान करो ताकि मेरे मनभावन के सभी अमङ्गल दूर हो जायँ—

सइ, जुड़ाइल मोर हिया,
श्याम अङ्गेर शीतल पवन ताहार परश पाइया।
तोरा सखीगन करह सिनान आसिया यमना नीरे॥
आमार बँधुर यत अमङ्गल सकल पाउब दूरे।

जिस प्रेम-प्रतिमा का संयोग ही इतना करुण है उसके वियोग की कल्पना भी कष्टदायक है। राधिका ने जब कहा था—जिसे जो इच्छा हो, मुझे बुरा-भला कह ले पर श्याम रूपी स्निग्ध घन को नहीं छोड़ सकूँगी—

बले वलुक मोरे मन्द आछे पत जन
छाड़िते नारिब मुइ श्याम चिकन घन

उस समय क्या उन्हें मालूम था कि इस 'श्याम चिकन घन' को भली भाँति ही छोड़ना पड़ेगा?

× × ×

आज वृन्दावन की लीला का अन्तिम दिन है। आज मधुपुरी को पयान करनेवाले हैं। सखी ने आकर राधिका को ख़बर दी। राधिका ने विश्वास ही नहीं किया। यह बात है। अपनी एकान्त-निर्भर प्रियतमा को छोड़कर भगवान् जा सकते हैं? राधिका के हृदय में ही वे रहते हैं। वे जब छाती चीरकर उन्हें बाहर निकाल देंगी तभी वे बाहर जायँगे—

ए बुक चिरिया जबे बाहिर करिया दिब
तबे त श्याम मधुपुरे याबे?

किन्तु हाय, इस विश्वासपरायणा के सारे विश्वास को तोड़कर भी जब मनभावन मथुरा को जाने लगे तो राधिका के लिए जैसे वज्रपात हो गया। दौड़कर गईं। बोलीं—प्यारे, बताओ, क्या सचमुच जा रहे हो? क्या कुछ भी रहम नहीं है तुम्हारे?

बन्धू, उलटि कहत एक बोल।
निश्चय मथुरा याबे कि ना पारा
दया कि नाहिक तोर?

पर निष्ठुर कान्ह जाने पर ही तुले रहे। राधिका विश्रया लतिका की भाँति मुरझा गईं। एक वयस्क गोप-बाला ने कुछ साहस के साथ राधा का हाथ पकड़ा और निष्ठुर निर्दय से बोली—सोचो तो भला, ऐसी नवीन किशोरी कुमारिका को किस पर छोड़ जाओगे? इस कच्ची उमर में प्रेम बढ़ाकर हृदय में आघात करके कैसे जा सकोगे?

एमन कुमारी नवीन किशोरी
राखिया याइबे कोथा।
अलप बयसे प्रेम बाड़ाइया
एरे दिया हिया व्यथा।

मगर निष्ठुर कृष्ण रुके नहीं, चले ही गये। उस समय 'वह सोने की पुतली पृथ्वी पर लुढ़क पड़ी। निःश्वास के वेग से नाक के मोती हिलने लगे।' जिसका विरह क्षण भर के लिए भी असह्य था वह अब सुदूर मथुरा नगरी में रहने लगे। इस निदारुण विच्छेद-वेदना से मर्माहत राधिका की अवस्था देखकर पत्थर भी पिघल सकता है। जिसके मुँह से कृष्ण का नाम सुन लेती हैं उसी के पैरों लोटने लगती हैं। कुछ लोग शायद सुना दें। बड़ी हृदयद्रावक होती है वह अवस्था जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कि वह सोने की पुतली धूल में लोट रही है—सोनार
धूलाते लोथाय।
हाय, अब राधिका किसके कोमल शरीर में अगुरु चन्दन
देंगी? पिया के बिना उनका हृदय फटा जाता है।
मुँह में वे ताम्बूल और कर्पूर देंगी? कौन है जिसके
रहकर वे रात को छलेंगी?

अगुरु चन्दन चुया दिब कार गाय।
पिया बिनु मोर हिया फाटिया ये पाय॥
ताम्बूल कर्पूर आमि दिब कार मुखे।
रजनी बञ्चिब हाम कारे लये सुखे॥

ऐ सखी, साल बीतने को आया। बसन्त आया, माधवी लता
स्फुटित हो गई, कोकिल कुहू-कुहू करने लगे, भ्रमरियाँ गुञ्जार
करने लगीं, पर प्यारे की तो कोई ख़बर नहीं मिली—

सखि रे,
वरष वहिया गेल वसन्त आवल
फुटल माधवीलता।
कुहु कुहु करि, कोकिल कुहरे
गुञ्जये भ्रमरी यता!

हाय रे दारुण विधाता! राधा क्या अब जियेंगी? तूने
गुणनिधि भगवान् को उनसे छुड़ा दिया। यह मृणाल-तन्तु
का यह ताप सह सकता है? वह मरेगी। अब क्या वह
मुखचन्द्र उसे फिर दिखाई देगा? ये दुख-दन्द मिटेंगे? क्या
उनके श्यामसुन्दर उन्हें मिलेंगे, उनकी गोद में बैठेंगे!
वह वंशी फिर सुन पड़ेगी—वृन्दावन की ओर जाने का
रास्ता फिर मिलेगा? हाय अब चन्दन घिसकर राधा किसे
तिलक करेंगी, किसके गले वह माला देंगी?

हाय रे दारुण विधि।
छाड़ाइले गुन निधि॥
एत कि सहिते पारि।
विरहे ए तनु मरि॥
आर कि हेरब मुख चन्द्र।
भाङ्गब सकल दन्द॥
पुन हरि मिलब मोर।
पियारे करब निज कोड़॥
बाँशी कि शुनब काने।
याब वृन्दावन पाने॥
घसिया चन्दन माला।
कारे दिब आर गला?॥

राधिका मृत्यु-शय्या पर पड़ी हैं। किसी ने श्याम नाम
सुना दिया। वे चौंककर उठ गईं। विरह-विधुरा उस प्रेम
राधिका की अन्तिम आकांक्षा भी श्याम के आनन्द के लिए ही।
"मेरी मर्म-सखियो, बड़ी ग़लती हुई जा रही है। हाय मैं
तो मर जाऊँगी मगर कृष्ण की लगाई हुई उस मालती लता की
ख़बरदारी कौन करेगा? देखो मेरे मरने पर उसे सींचती रहना,
झाड़ू देकर उसके आलबाल को साफ रखना। जब मैं मर
जाऊँ तो ऐसा न हो कि उसे धूप में जलना पड़े। इसकी
ख़बरदारी करती रहना। मैं तो जीते जी प्रियतम को भेंट न
सकी पर वह किसी तरह पिया को मिल जाय—

शुन गो मरमसखि बड़ परमाद देखि
ए तनु तेजिब आमि यबे।
कृष्णेर मालतीलता सेंचि ताहे सर्व्वथा
निति ताहा मार्ज्जन करिबे॥
तेजिब परान जबे तोमा नेइ विमूरत (?)
भाजह रविर तापे
राखिह यतन करि जीते ना भेटल हरि
येन पिया राखि कोनो रूपे॥

राधिका की सखियों ने आश्वासन दिया। कुछ चिन्ता नहीं
सखी, हम कृष्ण को बुला लायेंगी। उस समय उस एकान्त
निर्भर भक्त की प्रार्थना बड़ी ही करुण है। हमें समझ में नहीं
आता कि चण्डीदास के इन पदों में से किसे उद्धृत करें, किसे
छोड़ें। राधिका की कातरता चण्डीदास ही कह सकते थे। वे
कहती हैं—

"सखी कानू के पैर पकड़कर कहना। उस सुख के समुद्र
को तो दैव ने सुखा दिया, तृषा से मेरा प्राण जा रहा है?

"सखी, कानू का हाथ पकड़ लेना। पहले वर माँग लेना
कि अपनी समझ कर मेरी बात का उल्लङ्घन न कीजिए।

"सखी, शयन में, स्वप्न में मन ही मन मैंने जो साध की
थीं विधाता ने सब बरबाद कर दीं।

"सखी, मैं अबला हूँ। विरहाग्नि हृदय में दुगुने वेग से
जल रही है। इसी लिए सहन नहीं कर पाती।

"सखी, कानू का मन तौल लेना और जैसा कहने से वह
आदमी आ सके वही कहना।—

सखि, कहिबि कानुर पाय।
से सुख-सायर दैबे सुखायल
तियाषे परान जाय॥
सखि, धरिबि कानुर कर।
आपन बलिया बोल ना ते जबि
मागिया लइबि बर॥
सखि यतेक मनेर साध
शयने स्वपने करितु भावने
विहि से करल बाद
सखि, हाम से अबला हाय
विरह आगुन हृदये द्विगुन
सहन नाहिक जाय।
सखि, बुझिया कानुर मन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

येमन करिले आइसे से जने
द्विज चण्डीदास भन।

प्राणवल्लभा किशोरी सखी की इस दारुण अवस्था से विकल होकर जो सखी कृष्ण के पास गई उसने निष्ठुर काले को खरी-खरी सुना दी। चोट खाई हुई व्याघ्रिणी की तरह गरजकर उसने कृष्ण को फट कारा। 'धिक्कार है तुझे ऐ काले! किसने तुझे यह कुबुद्धि दी!' किसने कहा था तुझे प्रेम करने को यदि तेरे मन में यही थी! धिक्कार है प्यारे! लाज नहीं आती, तू स्नेह का लेश भी नहीं जानता, जो एक देश में आग लगाकर दूसरे को जलाने आया है?

धिक् धिक् धिक् तोरे रे कालिया
के तोरे कुबुद्धि दिल।
केवा सेधे छिल पिरीति करिते
मने यदि एत छिल।
धिक् धिक् बन्धु लाज नाहि वास
ना जाने लेहेर लेश
एक देश एलि अनल ज्वालाये
ज्वाला इते आर देश?

इस सखी के साथ ही चण्डीदास की अन्तरात्मा भी क्रोध से फुफकार उठी है—चण्डीदास कहते हैं कि मानसिक वेदना से प्राण फटा जा रहा है, तुम्हारी सोने की प्रतिमा तो धूल में लोट रही है और तुम्हारे खाट पर बैठी है यह कुब्जा।

चण्डीदास भने मनेर वेदने
कहिते परान फाटे
तोमार
सोनार प्रतिमा धूलाय गड़ागड़ि
कुबुजा वसिल खाटे!

कोई कितना ही प्रेम क्यों न करे राधिका की तरह कोई प्रीति नहीं कर सकता। राधानाथ के बदले कोई तुम्हें कुब्जा-नाथ नहीं कहेगा—

यतेक तोमारे पिरीति करुक
तेमन पिरीति हबे ना।
राधानाथ विने कुबुजार नाथ
केह त तोमारे कबे ना!

डाँट-फटकार के बाद सखी ज़रा नरम पड़ती है और राधिका की दशा सुनाती है—

"प्यारे कृष्ण! तुम इतनी दूर चले आये हो। वह किशोरी राधा तुम्हारे विरह में आधी हो गई है। तुम क्यों इतने निठुर हो गये हो? वह चम्पकवर्णी सुन्दरी, जिसके निखरे वर्ण के सामने लाख-लाख सोने की चमक मात है—ऐसी उस राधिका का मुखचन्द्र म्लान है। रात को कदम्ब के तले जाकर भूमि में लोटती हुई वह विरहिणी 'पिया-पिया' की रट लगाती रहती है, नयनों की स्खलिता वारिधारा से उसका [illegible] उस पर का नीला वस्त्र बराबर भींगा करता है; उस [illegible] की आँखें रोते-रोते अरुण वर्ण हो गई हैं। कौन [illegible] जियेगी या नहीं। उसकी दशम-दशा आ पहुँची है। [illegible] नयन! परिस्थिति बड़ी विकट है, तुरन्त चलो। यदि [illegible] काम है, तो देरी न करो; उस सुन्दरी विरहिणी को देख [illegible] मैं ठीक जानती हूँ, उसका प्राण तुम्हारे दर्शनों की [illegible] ही बचा है—

बन्धु कानाइ तोमार चरित एत दूर।
से हेन किशोरी राधा तो बिनु हइया आधा
तुमि केन एतेक निठुर।
चम्पकवरणी धनी लाख वान हेम गनि
से राधा मलिन मुख चाँदे
गिया निप तरु मूले लोटाइया भूमि-तले
निशि दिशि पिया बलि काँदे
खलित नयन जले से अङ्ग भासिया चले
तिते अङ्ग निलेर वसन
खञ्जननयनी राइ काँदिया आकूल ताइ
देखि येन अरुण वरण
जीये कि ना जीये राइ कहिल तोमार ठाँइ
परदशा आसि उपजिल।
बड़इ कठिन देखि शुनह कमल आँखि
तुरित गमने तुमि चल।
आछे यदि राइ-ए काज तुरित सेखाने साज
देख गिया धनी विरहिनी
तुया दरसन आशे तेंइ से परान आछे
चण्डीदास भाल मते जानि।

यह अमोघ अस्त्र था। प्रिया की इस दारुण अवस्था [illegible] कमल-नयन की आँखें छलछला आईं। बार-बार वे राधा [illegible] समाचार पूछने लगे। वे कैसे उठती हैं, कैसे बैठती हैं [illegible] रोती हैं, कैसे रात काटती हैं—सखी ने सब सुनाया। [illegible] गद्गद हो गये। आँखों से वारिधारा झड़ने लगी—पीत-[illegible] धरिया सघन, मुछत नयन लोर!

भगवान् ने सखी से कहा कि मैं ज़रूर राधिका के [illegible] वृन्दावन जाऊँगा। सखी ने इसे अहो भाग्य समझा। [illegible] ने गद्गद कण्ठ से अपनी हृदय-कथा कह सुनाई। [illegible] जब बैठते हैं तब भी राधिका को देखते हैं, गाते हैं तब भी [illegible] को देखते हैं, हर एक गुण में राधिका ही नज़र आती [illegible] भोजन में भी राधिका, गमन में भी राधिका—जब [illegible] राधिका ही साथी हैं—

वसिते राधिका गाइते राधिका गुणेते राधिका देखि।
भोजने राधिका गमने राधिका सदाइ राधिका साथी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज राधिका का सोहाग लौट आया है। आज कुदिन सुदिन हो आया है। माधव आज राधिका के मन्दिर में आयेंगे। आज चिकुर-राशि स्फुरित हो रही है, वसन स्खलित हो गये हैं। पुलक और यौवन से शरीर भर गया है। बायाँ अङ्ग फड़क रहा है, बाईं आँख बार-बार नाच रही है, आनन्द-कम्पन से हृदय पर का हार हिल रहा है। आज प्रातःकाल काकों की भीड़ लग गई है, आनन्दोल्लास से एक दूसरे से सट-सटकर, सट-सटकर आहार खा रहे हैं। प्रियतम के आगमन का शकुन पूछने पर उड़कर शकुन स्थल पर बैठ रहे हैं, मुख का ताम्बूल स्खलित हो रहा है, देवता के मस्तक से फूल खिसक रहा है—सारे सुलक्षण उपस्थित हैं, आज विधाता राधिका के अनुकूल है;—

सइ, जानि कुदिन सुदिन भेल।
माधव मन्दिरे तुरिते आओब कपाल कहिया गेल॥
चिकुर फुरिछे वसन खसिछे पुलक यौवन भार।
वाम अङ्ग आँखि सघने नाचिछे दुलिछे हियार हार॥
प्रभातसमये काक कोलाकुलि आहार बाँटिया खाय।
पिया आसिबार नाम शुधाइते उड़िया वसिल ताय॥
मुखेर ताम्बूल खसिया पड़िछे देवेर माथार फूल।
चण्डीदास वले सब सुलक्षण विहि भेल अनुकूल॥

× × ×

चण्डीदास की प्रेम-विह्वला राधा मानो प्रेम के उस शुद्ध मौलिक अंश से बनाई गई हैं जिसमें केवल आत्म-समर्पण का भाव रहता है। इस राधिका का प्रेम शृङ्गार-मय नहीं है, विलास-मय नहीं है, यहाँ तक कि वह केवल मिलन के लिए भी लालायित नहीं है। मिलन होकर भी क्या होगा अगर प्रियतम को अपना सर्वस्व—अपना सर्वोत्तम—न दे सकीं। राधिका के पास है ही क्या! खिलता हुआ वपुःकमल, उमड़ता हुआ हृदय! अगर इन्हें भी भगवान् न ले सके तो व्यर्थ है मिलन का भार।

जोयारेर पानि नारीर यौवन
गेले ना फिरिबे आर।
जीवन थाकिले वँधुरे पाइब
यौवन मिलन भार॥
यौवनेर गाछ न फुटिते फूल
भ्रमरा उड़िये गेल
ए भरा यौवन विफले गोयानु
बंधु फिरे नाहि एल।

आत्म-समर्पण का वेग जहाँ इतना प्रबल हो वहाँ मान कैसा! चण्डीदास की राधा सचमुच मान नहीं कर पातीं। उन्होंने क्षणिक वियोग के मान को कुछ महत्त्व नहीं दिया उससे सुदूर प्रवास के वियोग में मान की आशा ही नहीं की जा सकती। उनका विरह-विह्वला होकर कभी-कभी सखियों से कह उठती हैं—"ना सखी, जान आओ, प्रियतम आवेंगे या नहीं। वे आवें या न आवें, मैं ही उस निष्ठुर के पास चली चलूँगी—

जाओ सहचरी जानिह सवाह वँधुया आसे ना आसे।
निठुरेर पाश आमि याइ चलि कहे द्विज चण्डीदासे॥

यह वह भावना नहीं है जिसमें कहा गया है—"मान घटे ते कहा घटिहै सखि प्रान-पियारे को दर्शन पैये'—क्या हुआ अगर मान घटेगा, प्राणप्यारे के दर्शन तो मिल जायँगे! नहीं, यह वह भावना है जिसमें यह लालसा छिपी है कि मैं रहूँ या न रहूँ, मुझे दुःख हो या सुख, प्राणप्यारे को मैं अपना सर्वोत्तम दे सकूँ—वे मेरा सर्वोत्तम पा सकें।

इसी लिए जब बहुत दिनों के बाद नन्दनन्दन राधिका के घर लौटे तो राधिका ने अभिमान से मुँह नहीं फेर लिया, बड़ी अँखियान के छलकते जल-कणों से ताकती हुई कर्तव्य-मूढ़ नहीं हो गईं। बिथुरे केशपाश से चरण पोंछ लिया, सुवासित जल से दोनों चरण धो लिये और सुखमय पलँग पर बैठा दिया। कस्तूरी और अगुरु से सुवासित चन्दन की कटोरी लेकर मन के साध के अनुसार श्याम-अङ्ग में लेप करने लगीं। नाना सुशोभन पुष्पों की माला गले में डाल दी और निर्बाध भाव से उस मधुर रूप को देखने लगीं। एक क्षण भी नष्ट नहीं होने दिया। कृष्ण के पूर्णिमा के चाँद के समान मुख के रूपामृत को राधिका चकोरी की भाँति निर्निमेष भाव से पान करने लगीं।

केशपाश दिया चरण मुछाये
विचित्र पालङ्के लइ।
अति सुवासित वारि ढालि राधा
धोयल चरण दुइ॥
मृगमद भरि चन्दन कटोरि
अगोर तिमिर ताय।
मनेर मानसे सुनागरी राधा
लेपिछे श्यामेर गाय॥
नाना फूलदाम अति सुशोभन
गले पराइल राधा॥
रूप निरीक्षण करे घन घन
तिलेक नाहिक बाधा॥
कानुर श्रीमुख येन शशधर
येमन पूर्णिमार शशी।
राइ से चकोर पाइ निरन्तर
पिवइ अमृत-राशि॥

और इसके बाद भगवान् से जो कुछ उन्होंने कहा उसे चण्डीदास की वाणी ही व्यक्त कर सकती है—

"प्यारे, तुम्हें अब न छोड़ूँगी। मन में आया है, तुम्हें मर्मस्थल में छिपा रक्खूँगी। लोग हँसेंगे, हँसें! जाति जायगी, जाय, पर मैं न छोड़ूँगी। गुणनिधे, अगर तुम चले गये तो फिर तुम्हें कहाँ पाऊँगी! आँख पलटने का भी विश्वास नहीं है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा है, कहाँ तुम्हें रक्खूँ कुछ समझ नहीं रही हूँ, शान्ति नहीं मिलती। मरण की दशा तो उत्पन्न हो चुकी है, अब कहाँ जुड़ाऊँगी ?

"हाय प्यारे, किससे कहूँ, कौन विश्वास करेगा उन यातनाओं का जिन्हें मैंने सहा है ? तुम्हारे लिए इतना सह सकी, नहीं तो अब तक अनर्थ हो गया होता।—

वँधू, छाड़िया ना दिब तोरे।
मरम ये खाने राखिब से खाने
हेन मोर मने करे ॥
लोक हासि हउ जाय जाति जाउ
तबु ना छाड़िया दिब।
तुमि गेले यदि शुन गुण निधि
आर कोथा तुया पाब ॥
आँखि पालटिते नाहि परतिते
थुइते सोयास्ति नाइ।
एखन मरण दशा उपजल
जुड़ाब कोनबा ठाँइ ॥
काहारे कहिब केवा पित्याइब
आमार यातना पत।
तोमार कारणे एतेक सहिये
नहे परमाद हत ॥"

राधिका ने आगे कहा—प्यारे, बहुत दिन बाद आये हो। अगर मैं मर गई होती तब तो दर्शन न हो सकते। जीवन-धन, अबला हूँ, इसी लिए सह सकी, पत्थर होता तो कब का गल गया होता। इसी अल्प वयस में, मेरे प्यारे, मैंने अनेक कष्ट पाये हैं। मुझे इसका दुःख नहीं। अपने दुःख को मैं दुःख नहीं समझती। तुम्हारा सुख ही मेरा सुख है। तुम मथुरा नगरी में सकुशल रहे तो—

मथुरा नगरी ते छिले त भालो ?

"प्यारे, और मैं क्या कहूँ ? जन्म-जन्म में, जीवन और मरण में तुम्हीं मेरे प्राणपति होओ। अनेक पुण्य फल से, गौरी की आराधना करके मैंने तुम्हें पाया है। न जाने किस शुभ क्षण में तुम्हारे दर्शन हुए थे, हाय उसी के आनन्द में मरी-सी जा रही हूँ। विधाता ने बड़े शुभ क्षण में तुम्हारे-जैसे निधि को मुझसे मिलाया था। तुम्हें प्राणों से सौगुना अधिक मानती हूँ। दूसरों के प्राण दूसरे हैं पर मेरे प्राण तुम्हीं हो। तुम्हारे चरणों को शीतल समझकर मैंने शरण ली है। गर्वित गुरुजन न जाने क्या-क्या कहते रहते हैं, तुम्हारे कारण मैं यह सब सहा करती हूँ। दोनों कुल में मेरी हँसी हुई। [illegible] कहते हैं कि हे नागर, राधा की आर्ति की लाज रख लो। [illegible] प्रीति-रस के चूड़ामणि हो उसे रस से रसमय कर रक्खो।

बन्धु, कि आर बलिब आमि।
जनमे जनमे जीवने मरणे प्राणनाथ है ओ तुमि ॥
बहु पुण्यफले गौरी आराधिये पेयेछि कामना करि।
ना जानि कि क्षणे देखा तब सने तेँइ से पराने मरि ॥
बड़ शुभक्षणे तोमाहेन निधि विधि मिलायल आनि।
पराण हइते शत-शत गुण अधिक करिया मानि ॥
आनेर आछये आन जत जन आमार परान तुमि।
तोमार चरन शीतल जानिया शरन लइयाछि आमि ॥
गुरु गरबित तारा बले कत से सब गौरव बाणि।
तोमार कारणे एतना सहिये दुकुले हइल हानि ॥
कहे चण्डीदास शुन सुनागर राधार आरति राख।
पिरीति-रसेर चूड़ामनि हये रसे ने रसिया राख ॥

"प्यारे, तुम्हीं मेरे प्राण हो। देह, मन, कुल-शील [illegible] सर्वस्व मैंने तुम्हें समर्पण कर दिया है। हे काले, तुम [illegible] विश्व के नाथ हो, योगियों के आराध्य धन हो। हम [illegible] गोप-ग्वालिनें तुम्हारा भजन-पूजन नहीं जानतीं। [illegible] प्रीति-रस में ढालकर तुम्हारे चरणों को सौंप दिया है। [illegible] मेरे पति हो, तुम्हीं मेरी गति हो, मेरे मन को दूसरा नहीं [illegible] मुझे लोग कलङ्किनी कहते हैं, मुझे इसका दुःख नहीं; [illegible] लिए गले में कलङ्क का हार पहनने में भी सुख है—

वँधु, तुमि से आमार प्रान।
देह मन आदि तोंहारे सँपेछि कुलशील जाति मान ॥
अखिलेर नाथ तुमि हे कालिया योगीर आराध्यधन।
गोप गोयालिनी हाम अति हीना नाजानि भजन पूजन ॥
पिरीतिरसे ते ढालि तनु मन दियाछि तोमार पाय।
तुमि मोर पति तुमि मोर गति मन नाहि आन भाय ॥
कलङ्की बलिया डाके सब लोके ताहाते नाहिक दुख।
तोमार लागिया कलङ्केर हार गलाय परिते सुख ॥

"मैं सती हूँ या असती, तुमसे कुछ छिपा नहीं है, [illegible] बुरा कुछ नहीं जानती। मेरे लिए तो पाप और पुण्य [illegible] समान हैं। चाहिए तुम्हारे चरण ही—

सती वा असती तोमाते विदित भाल मन्द नाहि जानि ॥
कहे चण्डीदास पाप पुण्य सम तोमार चरन खानि ॥

राधिका के आत्म-समर्पण के इस पवित्र रूप के [illegible] कुछ टिप्पणी करना व्यर्थ है—ढिठाई है।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक्षशिला—तब और आज

पण्डित कृष्णदत्त वाजपेयी, एम० ए०, लखनऊ म्यूज़ियम

स्थिति—भारत की प्राचीन नगरियों में तक्षशिला का स्थान महत्त्व का है। यह नगरी पञ्जाब प्रान्त के रावलपिण्डी नगर से २० मील उत्तर-पश्चिम उस स्थान पर बसी थी जहाँ आजकल शाहढेरी, भीरदरगाही, गाँगू आदि गाँव बसे हैं।* प्राकृतिक सौन्दर्य के पुजारी आर्यों ने पर्वत-शृङ्खलाओं से आवेष्टित समीक्ष भूमि पर इस नगरी की स्थापना की थी। तक्षशिला के उत्तर और पूर्व में मरी तथा हज़ारा की पर्वत श्रेणियाँ हैं जिनके ऊपर शीत काल में हिमाच्छादित हो जाते हैं। पश्चिम तथा दक्षिण में मर्गला की पर्वत-शृङ्खला है। नगरी के उत्तर-पश्चिम में हरो नामक नदी बहती है जो अपनी सहायक शाखाओं—कुमा तथा लूँडी—के द्वारा भूमि को उर्वर बनाये रहती है। कुमा या ताम्रनाला दक्षिण की भूमि में से होता हुआ पूर्व की ओर बहता है तथा लूँडी उत्तर की आधी भूमि को सींचती है। प्राचीन काल में भारत से मध्य तथा पश्चिमी एशिया को जाने-वाला व्यापारिक मार्ग तक्षशिला से होकर ही जाता था, जिससे इस नगरी की समृद्धि अधिक बढ़ी थी।

प्राचीन साहित्य में उल्लेख—प्राचीन संस्कृत, पाली तथा प्राकृत साहित्य में तक्षशिला-सम्बन्धी अनेक वर्णन मिलते हैं। वाल्मीकि रामायण से विदित होता है कि श्रीरामचन्द्र के भाई भरत ने इस नगरी की नींव डाली थी तथा अपने पुत्र राजकुमार तक्ष के नाम पर इसका नामकरण किया था। दूसरे पुत्र पुष्कल के नाम पर उन्होंने पुष्कलावती नगरी बसाई। ये दोनों नगरियाँ गन्धार प्रदेश में थीं और समृद्ध होने के साथ ही सुन्दर गृहों, उपवनों तथा सरोवरों से शोभित थीं।† महाभारत (आदि-पर्व, अ० ३, श्लो० २०) में वर्णित है कि अर्जुन के पौत्र परीक्षित-पुत्र जनमेजय ने अपने पिता के शत्रुओं से बदला लेने के लिए अपना नाग-यज्ञ तक्षशिला की ही पुण्यभूमि में किया था।

महान् वैयाकरण पाणिनि ने, जिनका समय लगभग ५०० ई० पू० है, अपनी अष्टाध्यायी* (४, ३, ९३) में तक्षशिला का उल्लेख स्थानवाचक शब्दों में 'अण्' और 'अ' प्रत्ययों के जोड़ने के सम्बन्ध में किया है। काशिकाकार ने 'तक्षशिला' शब्द में 'अण्' प्रत्यय के लगने से 'ताक्षशिल' शब्द की उत्पत्ति बताई है, जिसका अर्थ होता है 'तक्षशिला का रहनेवाला'।

रघुवंश, बृहत्संहिता, बृहत्कथामंजरी तथा कथासरित्सागर में भी तक्षशिला-सम्बन्धी अनेक मनोरञ्जक वर्णन उपलब्ध होते हैं।

बौद्ध ग्रन्थों, विशेषतः जातकों तथा विनयपिटक (महावग्ग, अ० ८), में तक्षशिला नगरी के अनेक उल्लेख मिलते हैं, जिनसे वहाँ के महाविद्यालय-सम्बन्धी अनेक बातें ज्ञात होती हैं। दिव्यावदान† से विदित होता है कि मौर्य सम्राट् बिन्दुसार के समय तक्षशिला में वहाँ के लोगों के द्वारा विद्रोह किया गया, जिसे शान्त करने के लिए अशोक वहाँ भेजा गया। तक्षशिला पहुँचने पर वहाँ के निवासियों ने अशोक को बताया कि वे अशोक या सम्राट् बिन्दुसार के प्रति विरोध नहीं रखते थे बल्कि वहाँ के दुष्ट अमात्यों ने उनका अपमान किया था जिसे वे बिल्कुल अनुचित समझते थे। अशोक ने यह कारण जानकर उसे दूर किया और वहाँ शान्ति स्थापित की। सम्राट् अशोक के शासन-काल में पुनः उक्त कारणों से तक्षशिला में विद्रोह उत्पन्न हो गया। सम्राट् ने राजकुमार कुणाल को स्थिति सुधारने के लिए भेजा। कुणाल ने तक्षशिला की वही दशा पाई जो अशोक ने देखी थी और उसे तदनुसार प्रयत्नों-द्वारा दूर किया। इस ग्रन्थ में यह भी लिखा है कि अशोक की एक रानी तिष्य-रक्षिता कुणाल से द्वेष रखती थी। राजकुमार के बाहर जाने पर उसने 'कपट-लेख'-द्वारा उसके नेत्र निकलवा डाले। अन्त में अशोक ने यह वृत्त जानने पर रानी को प्राणदण्ड दिया। क्षेमेन्द्र-रचित अवदानकल्पलता में भी यह कथा कुछ हेरफेर से मिलती है। जैनों के त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र, शत्रुञ्जयमाहात्म्य तथा प्रभावकचरित आदि ग्रन्थों में भी तक्षशिला-सम्बन्धी अनेक वर्णन पाये जाते हैं।

संक्षिप्त इतिहास—वाल्मीकि रामायण के अनुसार भरत के द्वारा तक्षशिला की स्थापना मानने पर इस नगरी का स्थापना-काल लगभग २००० ई० पू० में आता है। महाभारत तथा महाजनपद युगों में तक्षशिला प्रसिद्ध जनपद गन्धार की राजधानी थी जिसकी ख्याति सम्पूर्ण भारत में थी। मगध के शिशुनाग-वंश तथा नन्द-वंश के शासनकाल में भी गन्धार प्रदेश अपनी स्वतन्त्रता बनाये रहा, इसका विस्तार भी अब पहले से अधिक

---

* सबसे पहले तक्षशिला की पहचान जनरल कनिंघम ने सन् १८६३ में की थी (दे० आर्केऑलॉजिकल सर्वे ऑफ़ इंडिया रिपोर्ट, भाग २) तक्षशिला जाने के लिए रावलपिण्डी से पेशावर जानेवाली लाइन पर टैक्सिला स्टेशन उतरना पड़ता है। यहाँ से प्राचीन स्थल लगभग ५ मील के दायरे के अन्दर स्थित हैं।

† रामायण, उत्तरकाण्ड, सं० १०१, श्लोक १०-१६—

हतेषु तेषु सर्वेषु भरतः कैकेयीसुतः।
निवेशयामास तदा समृद्धे द्वे पुरोत्तमे।
तक्षं तक्षशिलायान्तु पुष्कलं पुष्कलावते।
गन्धर्वदेशे रुचिरे गान्धारविषये च सः॥

* सिन्धुतक्षशिलादिभ्योऽणञौ।

† कावेल द्वारा सम्पादित, पृ० ३७१-७२।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गया था। प्राचीन साहित्य में कहीं-कहीं तक्षशिला को भी जनपद कहा गया है। छठी श० ई० पू० में कुछ समय के लिए तक्षशिला ईरानी साम्राज्य की अधीनता में रहा। ३२६ ई० पू० में जब सिकन्दर ने उत्तर-पश्चिम भारत पर आक्रमण किया उस समय आम्भि नामक राजा तक्षशिला का स्वामी था। भूगर्भ-विज्ञान, समरशास्त्र (विशेषतः धनुर्विद्या) तथा चिकित्सा के पठन-पाठन का प्रबन्ध प्राचीन भारत में सर्वोत्तम था। महासुतसोम जातक (सं० ५३७) के छठी श० ई० पू० में यहाँ धनुर्विद्या की कक्षा में राजकुमार थे। तक्षशिला में १८ प्रकार के शिल्पों या

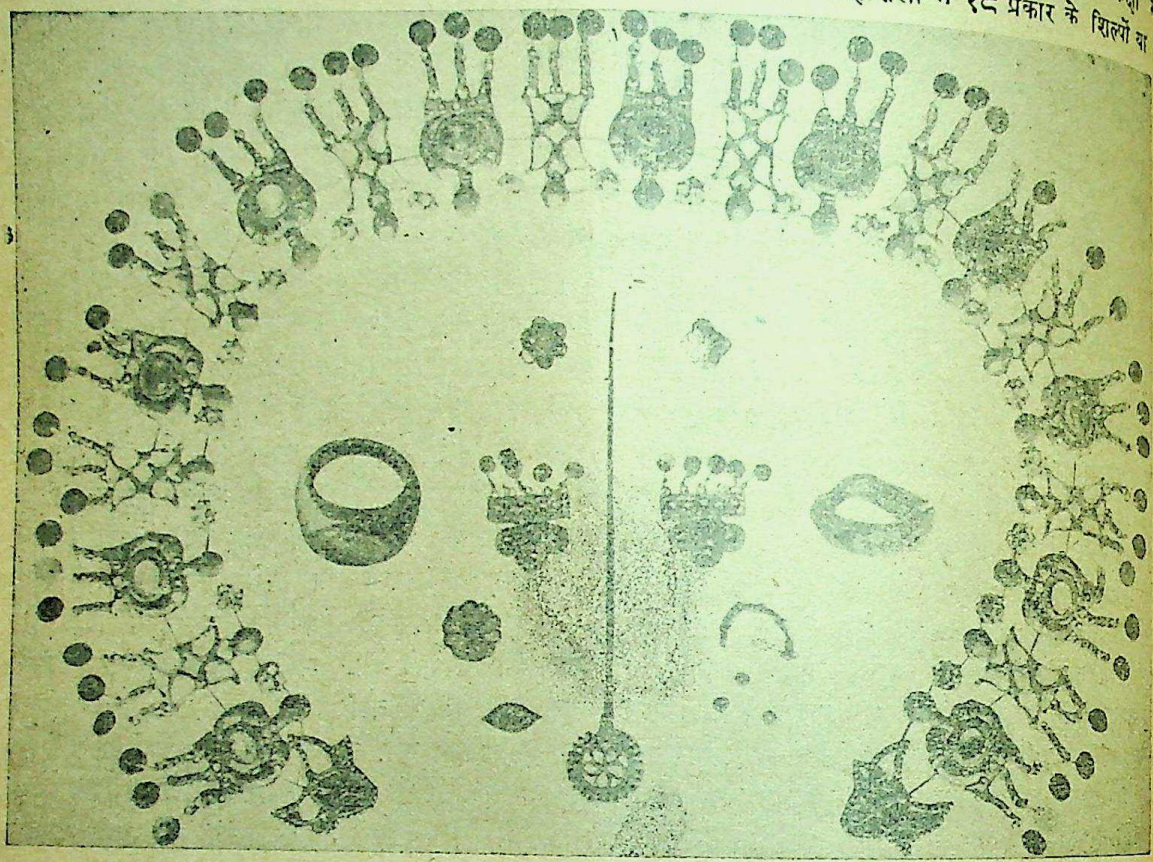

तक्षशिला की खुदाई में प्राप्त कुछ आभूषण

उसने सिकन्दर से मेल कर लिया था। शीघ्र ही (३२३ ई० पू० में) इस जनपद को सम्राट् चन्द्रगुप्त ने अपने विस्तृत मौर्य-साम्राज्य में मिला लिया, जो लगभग २०० ई० पू० तक उसी के अन्तर्गत रहा। इसके पश्चात् तक्षशिला प्रदेश पर क्रमशः यूनानियों, शकों, पह्लवों और कुषाणों के अधिकार में रहा। पाँचवीं श० ई० के प्रारम्भ में कुछ काल के लिए गुप्त सम्राट् चन्द्रगुप्त द्वितीय ने अपनी सत्ता गन्धार प्रदेश तथा उसके आगे तक जमा ली, परन्तु शीघ्र ही दुर्दान्त हूणों ने उसे अपने प्रभुत्व में किया तथा पाँचवीं श० के अन्त में तक्षशिला नगरी को नष्ट-भ्रष्ट कर उसकी समृद्धि का अन्त कर दिया।

विश्वविद्यालय—तक्षशिला की महत्ता विशेषतः उसके विश्वविद्यालय के कारण थी। जातक-साहित्य से ज्ञात होता है कि लगभग ई० पू० सातवीं श० से तक्षशिला ज्ञान-विज्ञान के शिक्षण का प्रधान केन्द्र हो गया था। यहाँ के विश्वविद्यालय में 'जगद्विख्यात शिक्षकों' के द्वारा वेद-वेदाङ्ग, षड्दर्शन, व्याकरण, आयुर्वेद तथा समरशास्त्र की उच्च शिक्षा की व्यवस्था थी। के शिक्षण का उल्लेख कई जातकों में मिलता है। इन विषयों में उपर्युक्त विषयों के अतिरिक्त मुद्रा-विषयक कला, मूर्ति, चित्रकला, सङ्गीत (गीत, वाद्य तथा नृत्य), गरुड़विद्या, सर्पविद्या आदि अनेक कलायें सम्मिलित थीं। इनमें से के उल्लेख गोपथ ब्राह्मण (१, १०) तथा छान्दोग्य उपनि (८, १-२) में भी मिलते हैं। तक्षशिला में धनुर्विद्या विविध अङ्गों के सीखने का अच्छा आयोजन था जिसे के लिए बनारस, राजगृह, मथुरा तथा उज्जयिनी तक के राजकुमार आते थे*; परन्तु सबसे अच्छा प्रबन्ध शायद आयुर्वेद की विभिन्न शाखाओं के शिक्षण का था। बौद्ध ग्रन्थ महावग्ग (८, से विदित होता है कि राजकुमार जीवक (५वीं श० ई० पू०) ७ वर्ष के कठोर परिश्रम से 'सर्जरी' में विशेष योग्यता प्राप्त घर लौटते समय मार्ग में उसने अनेक असाध्य रोगियों को अच्छा किया। उसने मगध-सम्राट् बिम्बिसार तथा उज्जयिनी

* देखिए जातक सं० २५२, ३७८, ४८९।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शासक प्रद्योत को भी अपने शल्य-विज्ञान के द्वारा अच्छा किया। चुल्लवग्ग (५, १४, १) से ज्ञात होता है कि जीवक भगवान् बुद्ध तथा उनके कई अनुयायियों को भीषण पेट की व्याधि से मुक्त किया था। सिकन्दर के साथ आये हुए अनेक यूनानी लेखकों ने भी भारतीयों के आयुर्वेद-विषयक ज्ञान की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है।*

विभिन्न विदेशी आक्रान्ताओं के द्वारा समय-समय पर तक्षशिला-प्रदेश पर आधिकारारूढ़ होने के कारण तक्षशिला-विश्वविद्यालय की शिक्षापद्धति में परिवर्तन अवश्यम्भावी थे। यूनानियों के आधिपत्य में राजकीय भाषा ब्राह्मी का स्थान खरोष्ठी ने ले लिया, यह उस काल के उपलब्ध अभिलेखों से प्रकट होता है। विश्वविद्यालय में खरोष्ठी के पठन-पाठन की व्यवस्था उसी काल से आरम्भ हुई। ३२६ ई० पू० में सिकन्दर का आक्रमण हुआ, जिसके फलस्वरूप तक्षशिला के विश्वविद्यालय में यूनानी, ज्यौतिष, दर्शन और समरशास्त्र के विशेष अध्ययन का आरम्भ हुआ। यूनानी मुद्राशास्त्र तथा मूर्तिकला का भी अध्ययन इसी समय से शुरू हुआ। मौर्यों के एक शताब्दी (३२३-२२३ ई० पू०) के आधिपत्य में भारत का पश्चिमी देशों से मैत्री-सम्बन्ध दृढ़ हुआ और इस काल में पौरस्त्य तथा पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन विशद हुआ। इसके बाद यूनानियों का आधिपत्य तक्षशिला पर हुआ और लगभग १०० ई० पू० तक बना रहा। उनके राज्यत्वकाल में ज्योतिषशास्त्र, मुद्राशास्त्र तथा मूर्तिकला-सम्बन्धी शिक्षण अधिक प्रचलित हुआ। गान्धार कला का श्रीगणेश इसी समय हुआ जो ईसा की प्रारम्भिक शताब्दियों में अधिक बढ़ा। भारतीयों तथा यूनानियों ने एक दूसरे के दर्शन-शास्त्र का विशद अध्ययन किया, जैसा कि फिलास्ट्रेटस आदि यूनानी लेखकों के वर्णनों से प्रकट होता है। शकों, पह्लवों तथा कुषाणों के शासन-काल में तक्षशिला नगरी बहुत समृद्ध हुई। यहाँ के विश्वविद्यालय के प्रसिद्ध विख्यात शिक्षकों से शिक्षा प्राप्त कर यूनानी, शक तथा कुषाण आदि विदेशी जातियाँ भी हिन्दू तथा बौद्ध धर्म की ओर आकृष्ट हो गईं। तत्कालीन उपलब्ध अभिलेखों और मुद्राओं से इस बात की स्पष्ट सूचना मिलती है कि शासक-वर्ग तथा अन्य विदेशी लोग बड़ी संख्या में हिन्दू और बौद्ध हो गये थे और हर धर्म के देवताओं की उपासना करते थे। लगभग २२५ ई० से यूनानियों की शक्ति का ह्रास होने के साथ-साथ तक्षशिला की भी अवनति आरम्भ हुई और लगातार जारी रही। पाँचवीं शताब्दी के अन्त में हूणों ने इस प्राचीन नगरी को नष्ट कर यहाँ की प्रसिद्ध विद्यापीठ का भी अन्त कर दिया।

* भारतीय आयुर्वेद की प्राचीनता तथा उसके विस्तार के लिए देखिए मेरा तद्विषयक लेख—'माधुरी', अप्रैल, १९४५, पृ० ४०४-०६।

तक्षशिला के विश्वविद्यालय में पाणिनि, वर्ष, उपवर्ष, पिंगल, कात्यायन, चाणक्य, चरक तथा नागार्जुन-जैसे प्रकाण्ड पण्डितों ने शिक्षा प्राप्त की थी। ये विद्वान् न केवल पाटलिपुत्र, काशी, उज्जयिनी आदि के विद्यापीठों में जाकर शिक्षा-प्रचार करते थे अपितु विदेशों में भी जाकर भारतीय ज्ञान-विज्ञान की ज्योति प्रदीप्त करते थे। अर्हत वैरोचन ने प्रथम श० ई० पू० में खोतन जाकर वहाँ शिक्षण-कार्य किया। काश्यप मातङ्ग ने प्रथम श० ई० में चीन-सम्राट् मिंग-ती के अनुरोध से चीन में जाकर बौद्ध ज्ञान का प्रसार किया। इसके बाद धर्मरक्ष, धर्मप्रिय तथा गुणवर्मन् आदि विद्वानों ने विदेशों में जाकर भारतीय संस्कृति का प्रचार किया।

श्रावस्ती का चमत्कार
लोरियाँ तङ्गाई स्वात घाटी से प्राप्त (गान्धार कला)

आधुनिक दशा—श्री और सरस्वती की विहार-भूमि तक्षशिला नगरी आज कल्पना की वस्तु बन गई है। यहाँ की पुण्य भूमि में आने पर भावुक दर्शक के हृदय में कवित्व का सञ्चार होकर एक नवीन रस का अनुभव होने लगता है। उसके मानस-पट पर कितनी ही विचार-रेखायें खिंचने लगती हैं—यहीं की समृद्ध नगरी में किसी समय प्रतापी रघुवंशी नरेश रहते थे, जो पुण्यचरित्र, दानवीर तथा सत्यनिरत थे। यहीं परिक्षित्-पुत्र जनमेजय के नाग-यज्ञ के समय आकाश-मण्डल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विप्रों की वेद-ध्वनि से गूँज उठी होगी तथा यज्ञ-नि:सृत धूम्र से भर गया होगा। यहीं वह जगद्विख्यात विश्वविद्यालय था जहाँ के स्वच्छन्द और पाण्डित्यपूर्ण वातावरण में रहकर आचार्य पाणिनि, चाणक्य तथा चरक-जैसे मनीषियों ने अपनी ज्ञान-पिपासा को शान्त कर अपनी शिक्षा को चरितार्थ किया था। यहीं की वैभवपूर्ण नगरी में आम्भि नरेश ने सिकन्दर का स्वागत किया था, जहाँ की समृद्धि, सौन्दर्य तथा उल्लास को देखकर यूनानी लोग आश्चर्य-चकित हो गये थे। आम्भिराज के उच्च भव्य प्रासाद, उनमें निवास करनेवाली मञ्जु-मुखी महिलायें, गीत, वाद्य और नृत्य के आकर्षक उपकरण, उपवनों और सरोवरों की कलित क्रीड़ायें तथा उत्सवों के असाधारण आमोद-प्रमोद सचमुच विदेशियों के लिए कौतूहल के विषय थे। चन्द्रगुप्त मौर्य ने तक्षशिला के इस वैभव को देखकर ही इस रम्य नगरी पर सर्वप्रथम अधिकार करने का अनुष्ठान किया होगा। अशोक ने इस नगरी के महत्त्व से प्रभावित होकर ही सम्राट् होने पर उसे अनेक स्तूपों और विहारों से मण्डित किया था। राजकुमार कुणाल इसी प्राचीन नगरी में विद्रोह शान्त करने के लिए भेजा गया था, जिसके कमल-नेत्र ईर्ष्यालु तिष्यरक्षिता ने कपट-लेख द्वारा निकलवाकर तक्षशिला-निवासियों को आठ-आठ आँसू रुलाये होंगे। यहीं के उच्च स्तूपों और विहारों पर बौद्ध धर्मोपदेशकों ने 'चरथ भिक्खवे चारिकं बहुजनहिताय बहुजनसुखाय' वाले उपदेशों का गान किया होगा। यूनानी तथा शक शासनकाल में इस नगरी में पौरस्त्य तथा पाश्चात्य दो बड़ी संस्कृतियों के सम्पर्क से जनता में एक नये जीवन का सञ्चार हुआ होगा। साहित्य, दर्शन और कला के क्षेत्र में अभूतपूर्व आदान-प्रदान हुए होंगे। इस काल की कला-प्रिय भारतीय जनता को यूनानी सङ्गीत, चित्र-कला, मूर्तिकला तथा अन्य ललित कलाओं का सम्यक् ज्ञान प्राप्त होने से कितना आनन्द प्राप्त हुआ होगा!

यद्यपि आज तक्षशिला नगरी उपर्युक्त वैभवों से शून्य हो गई है तथापि शताब्दियों के बचे हुए यत्किञ्चित् अवशेषों के साथ उसका प्राकृतिक सौन्दर्य अब भी दर्शनीय है। नगरी के चारों ओर खड़े हुए पर्वत मानो अब भी प्रहरी के समान किसी बड़ी निधि की रक्षा में तत्पर हैं। शीतकाल में ये कभी-कभी हिममुकुट-मण्डित दृष्टिगोचर होते हैं। कल-कल नाद करती हुई हारो तथा ताम्रा नदियाँ मानो इस समय भी दर्शकों को तक्षशिला के गत वैभव-सम्बन्धी उपाख्यान सुना रही हैं। यहाँ के वनों और उपवनों में भ्रमण करने से न जाने प्राचीन आर्यों से सम्बन्धित कितनी गौरवमयी घटनाओं का मस्तिष्क में उदय हो जाता है। यहाँ की उपजाऊ भूमि में लहलहाते हुए खेत उस काल की याद दिलाने लगते हैं जब यहाँ के जङ्गलों को साफ़ कर आर्यों ने भूमि को कृषि के योग्य बनाया था।

तक्षशिला स्टेशन से उत्तर-पूर्व लगभग ३ फ़र्लाङ्ग पर तक्षशिला संग्रहालय [म्यूज़ियम] बनाया गया है, जिसके पास ही आजकल बंगला है। दर्शकों को अनुमति [illegible] यहाँ ठहरने का प्रबन्ध हो जाता है। संग्रहालय की [illegible] बड़ी ही सुन्दर तथा अनुकूल है। उसमें तक्षशिला तथा [illegible] आस-पास के स्थानों से मिली हुई अनेक भाँति की [illegible] बोधिसत्त्वों की मूर्तियाँ, जातक-सम्बन्धी कथाओं के चित्र, [illegible] विद्यार्थियों तथा जनसाधारण के द्वारा प्रयोग में लाई [illegible]

बौद्ध स्तूप

लौरियाँ तङ्गाई स्वात घाटी से प्राप्त (गान्धार कला)

वस्तुयें, अनेक भाँति के सिक्के और मनके, राजकुल तथा [illegible] कुलों के पुरुषों तथा महिलाओं-द्वारा प्रयुक्त सोने-चाँदी [illegible] आभूषण तथा अन्य अनेक प्रकार की दर्शनीय वस्तुयें [illegible] हैं। यह संग्रहालय गान्धारकला को प्रदर्शन करनेवाले [illegible] संग्रहालयों में से है। म्यूज़ियम और उसके समीप की [illegible] पूर्व की ज़मीन पर तक्षशिला की सबसे प्राचीन नगरी थी [illegible] आजकल 'भीर माण्ड' कहते हैं। यहाँ से द्वितीय शताब्दी [illegible] पू० में पुराना नगर उजड़ गया और म्यूज़ियम के उत्तर [illegible] ताम्रनाला के उस पार नया शहर आबाद हुआ, जो अब [illegible] कहाता है। कुषाण राजाओं ने प्रथम श० ईसवी में एक [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[अध्याय ५]

को बसाया था, जो म्यूज़ियम से लगभग ४ मील उत्तर की ओर लूँडी नदी के दूसरे पार बसा था, और अब 'सिरसुख' कहलाता है। यह अन्तिम नगर ५वीं शताब्दी के अन्त तक बसा था। इस शहर की चहारदीवारी, जो कहीं-कहीं १८ फ़ुट चौड़ी है, अब भी बची है, सुन्दरता के साथ-साथ दृढ़ता प्रकट करती है।

म्यूज़ियम से लगभग २ मील पूर्व ताम्रा की उत्तर ओर धर्मराजिका नामक स्तूप, जिसे सम्भवतः अशोक ने बनवाया था और जिसकी मरम्मत बाद में कई बार हुई, दर्शनीय वस्तु है। इसके चारों ओर छोटे-छोटे स्तूप तथा विहार बने हैं, जिनमें मिट्टी की बड़ी सुन्दर और विशाल बौद्ध मूर्तियाँ मिली थीं। इनमें से अब भी कुछ बची हैं। धर्मराजिका से लगभग १॥ मील दक्षिणपूर्व की ओर 'कलावन' नामक विहार के अवशेष मिलते हैं। यहाँ की तीन मञ्ज़िली इमारतें जो ऊँची पहाड़ी के ऊपर बनी हैं, अब भी दर्शनीय हैं। अनुमान होता है कि प्राचीन विश्वविद्यालय की कुछ इमारतें यहीं थीं। यहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य अवर्णनीय है। यहाँ से लगभग २ मील की दूरी पर 'गिरि' नाम का विहार है, जिसकी विस्तृत चहारदीवारी के कुछ अंश अब भी दिखाई देते हैं। सिरकप के उत्तर में कुछ दूर पर जाँडियाल नामक स्थान है जहाँ सम्भवतः सूर्य का मन्दिर था, किन्तु कुछ लोग उसे ईरानी देवता ज़ोरास्त्र का मन्दिर ख़याल करते हैं। जाँडियाल से उत्तर पूर्व की ओर पक्की सड़क के रास्ते लगभग २॥ मील पर मोहरा मोराड़ू तथा उससे ६ फ़र्लाङ्ग दूर जौलियान नामक स्थान हैं। यहाँ ऊँची पहाड़ियों पर प्राचीन गुफ़ाओं और बौद्ध मठों के अवशेष अब भी दृष्टिगोचर हैं। ई० पहली से पाँचवीं शताब्दियों तक इनका निर्माण हुआ था। यहाँ की मृण्मय बौद्ध मूर्तियाँ कला की दृष्टि में बड़ी उच्च कोटि की हैं। सिरसुख तथा उसके उत्तर में अन्य कई छोटे-छोटे स्थान हैं जिनकी खुदाई से थोड़ी बहुत सामग्री मिल सकती है। म्यूज़ियम से लगभग ५ मील उत्तर की ओर भल्लार स्तूप नाम का एक ऊँचा स्तूप है। परन्तु तक्षशिला का अधिक महत्त्वपूर्ण स्तूप कुणाल स्तूप है, जो म्यूज़ियम से लगभग ६ फ़र्लाङ्ग उ० पू० की ओर हथियाल पहाड़ी पर स्थित है। इसे सम्भवतः अशोक ने अपने प्रिय पुत्र कुणाल की स्मृति में बनवाया था। इसी के समीप एक बड़ा विहार भी बना हुआ था, जिसके अवशेष अब भी द्रष्टव्य हैं।

पुरातत्त्व-विभाग की ओर से तक्षशिला प्रदेश की खुदाई सन् १९१२ से लेकर १९४४ तक हुई है। लेखक को भी अन्तिम खुदाई (१९४४) के अवसर पर तक्षशिला में ३ मास रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। ३३ वर्ष के इस दीर्घकाल में अनेक ऐतिहासिक वस्तुयें भूगर्भ से प्राप्त हुई हैं, परन्तु अब भी कितने ही स्थल बाक़ी हैं जिनकी खुदाई से अनेक महत्त्वपूर्ण अवशेषों के प्राप्त होने की सम्भावना है, जिनसे भारतीय इतिहास के विभिन्न अङ्गों पर प्रकाश पड़ सकेगा।

प्राचीन तक्षशिला तथा उसके आसपास की भूमि पर जो गाँव आजकल आबाद हैं उनमें अधिकतर पच्छिमी पञ्जाबी बोलनेवाले मुसलमानों की बस्ती है। वे लोग अधिकांश में कृषि और वाणिज्य के कार्य करते हैं और दुर्भाग्य से उनकी अधिक संख्या अशिक्षित है। उनके भोले-भाले मुखों से कभी-कभी प्राचीन संस्कृत और प्राकृत के शब्दों को सुनकर पुरातत्त्व वेत्ता को चाहे जो कौतूहल और आनन्द हो, उनके लिए वह अर्थहीन है। वे नहीं जानते कि जिस स्थान पर वे बसे हैं वह कितना गौरवमय है और उसके एक-एक कण में कितनी प्राचीन और मनोरञ्जक घटनाओं का मर्म छिपा हुआ है।

——

गीत

श्रीयुत छोटेलाल भारद्वाज

कर सकूँगा अमर अपने गान।
कर रही क्रन्दन मनुजता, मार्ग में आँचल पसारे,
आज अमृत-बूँद में लहरा रहे हैं सिन्धु खारे।
हो सकूँगा अमर करके तीक्ष्ण विष का पान,
कर सकूँगा अमर अपने गान।
हो रहे हैं आज मेरी बीन के सब तार ढीले,
किन्तु फिर भी कर सकूँगा आँसुओं से हृदय गीले।
नयन में जब तक तुम्हारे प्यार का आह्वान,
कर सकूँगा अमर अपने गान।
अमृत मेरे हेतु दुर्गम, और कोसों दूर भी है,
पर वहाँ वैधव्य भी है, और सुहाग-सिंदूर भी है।
कर सकूँगा शूल पथ के चूर्ण बिन पद-त्राण,
कर सकूँगा अमर अपने गान।
स्वर कँपे, सिर हिल उठे, जब कुशल कर वीणा बजेगी,
पवन थम विश्राम लेगी, गान कोकिल भी तजेगी।
उस अमर लयका न होगा आदि या अवसान,
कर सकूँगा अमर अपने गान।
तृप्त होगा दुखित मानव जब तुम्हारा प्यार पाकर,
युग-युगों की भावना होगी अमर आधार पाकर।
तब भुला दूँगा अधर की यह मधुर मुसकान,
कर सकूँगा अमर अपने गान।

——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डेनटूट सारस

श्रीयुत दुर्गाशङ्करप्रसाद सिंह

(१)

उस दिन तीसरे पहर से ही तूफ़ानी वर्षा हो रही थी। मैं कुटिया में बैठा-बैठा प्रकृति की इस लीला को देखता रहा और अपनी खाट इधर से उधर पानी की बौछार से बचने के लिए खींचता रहा। मन कुछ खिन्न और गिरा हुआ-सा था। किन्हीं मधुर स्मृतियों की टीस रह-रहकर हृदय में उठ जाया करती थी। पानी थमा और मैं अपने कन्धे पर चादर रखकर नदी की ओर मन बहलाने या अपने अन्तर की व्यथाओं को फुसलाने के लिए चल दिया। नदी के उस पार एक छोटे से द्वीप पर एक नर-सारस चर रहा था। मुझ नवागन्तुक को देखकर या प्रकृति के इस उद्दीपक समय से ही प्रभावित होकर उसने अपनी गरदन ऊपर को उठाई और आकाश को निहारता हुआ सोचने की मुद्रा में या किसी ख़ास बात को निश्चय करने के भाव से वह कुछ क्षणों के लिए वैसे ही चुप खड़ा रहा। उसका बीरबहूटी के रङ्ग का लाल मस्तक, पीतवर्ण लम्बी चोंच, एक बित्ता नीचे तक लाल और उसके नीचे नीले रङ्ग की ख़म खाई हुई लम्बी गरदन, आकाश की ओर देखने की मुद्रा में गीली-गीली गुञ्जा की तरह रक्तवर्ण आँखें, तीसी के फूल के समान नीले पङ्ख, हृष्ट-पुष्ट शरीर, मोटे नरकुल की तरह पतली दो हाथ लम्बी दो पीतवर्ण टाँगें, जो निर्बल दीखकर भी उतने बड़े शरीर को अपने ऊपर लिये हुए मरालगति से उठती और गिरती थीं, उस हरियाली में इतनी सुन्दर दिखाई पड़ रही थीं कि मेरा ध्यान उधर आकृष्ट हुए बिना नहीं रह सका। मैं खड़ा होकर उस सारस को निहारने लगा। क्रौं-क्रौं करके उसने एक विशेष चीत्कार किया। उस चीत्कार में भय था या आह्लाद, यह मैं उस समय ठीक निश्चय नहीं कर सका। पर इतना अवश्य तय कर लिया उसमें उसकी आन्तरिक उत्तेजना की भावना अवश्य थी। चाहे वह प्रकृति प्रदत्त आह्लाद के कारण उत्पन्न हुई हो या मुझ नवागन्तुक के भय से। तुरत ही उस चीत्कार का उत्तर उसी स्वर में पास ही की एक झील से सुनाई पड़ा। और उसी क्षण एक मादा सारस भी उधर से उड़कर सारस के द्वीप पर आ बैठी। उसके द्वीप पर बैठते ही नर-सारस उछल-उछलकर नाचने लगा। छलाँग मारता हुआ वह उसके पास पहुँचा और मादा को एक बार चोंच से कुरेदकर थिरक-थिरककर पुनः नाचने लगा। बाल डान्स की सभी भाव भङ्गियों को मात करनेवाली अदाओं के साथ, मादा सारस ने भी अपने अङ्गों को सँभाला और ज़रा-सा छपककर अपनी लम्बी गरदन को पीछे की ओर ख़म देकर, चोंच ऊपर की ओर करके, प्रसन्न मन से नर सारस की उठी हुई गर्दन और अधखुली चोंच के नीचे अपना मुख करके, प्रीतम के स्पर्श की प्रतीक्षा करने लगी। सारस ने अपनी चोंच से सारसी के मस्तक पर उठे हुए चोटीनुमा परों का स्पर्श किया और अपनी भीतरी उत्तेजना तथा उत्तेजना को व्यक्त करनेवाला वही क्रौं-क्रौं-क्रौं शब्द उच्चारण करके वह सारसी के चारों ओर चक्कर काटकर नाचने लगा। कभी वह पङ्ख फुलाकर गरदन को पीठ पर मोड़कर चोंच आकाश की ओर किये हुए फुदक-फुदककर नाचता और कभी ऊपर कूद-कूदकर मारे प्रसन्नता के आकाश को छू लेना चाहता तो कभी दोनों डैनों को खोलकर ख़ूब ज़ोर से वृत्त बनाता हुआ दौड़ने लगता। मादा सारस भी इसके प्रत्युत्तर में कभी दौड़कर, कभी कूदकर, कभी गर्दन को कलापूर्ण लाघवता से नचाकर, नाचती और अपने आह्लाद का स्पष्टीकरण करती।

मैं दम्पती युगल की इस प्रणय-केलि को नदी के इस पार से खड़ा-खड़ा बड़े मनोवेग के साथ देखता रहा। इतने में घनीभूत सन्ध्या में एक गीली-सी बारूद की-सी रोशनी दिखाई दी और उसके बाद ही धड़ाम की आवाज़ भी सुनाई पड़ी। नर सारस तो उड़ा पर मादा सारस के उड़ने का प्रयत्न विफल रहा। उसका एक डैना टूटकर लटक गया था। शिकारी के दौड़कर उसके पास पहुँचने के पूर्व ही वह पास की घनी घने जङ्गल में घुस गई थी। शिकारी ने लाख दौड़-धूप की पर वह सारस की उस आहत प्रेयसी को पा नहीं सका। नर सारस गगन-भेदी आर्तनाद के साथ आकाश में चक्कर काटकर अपनी प्रेयसी के ऊपर मँडराने लगा। उसकी चीत्कार में कितनी करुणा और वेदना थी, कितना रुदन प्रलाप था यह तो वही जान सकता है जिसने उस दृश्य को देखा है। पंक्तियों के लेखक की दृष्टि से देखा और कानों से सुना है। उधर नर सारस के चीत्कार से आकाश फटा जा रहा था तो मेरा हृदय भी उस प्रिय मिलन के इस दुःखद और करुण विछोह को देखकर विदीर्ण हुए बिना नहीं रहा। मेरी आँखों ने आँसू बहाये और जी में शिकारी के प्रति ऐसा रोष उत्पन्न हुआ कि यदि नदी का बीच में अवरोध न होता तो मैं शिकारी की टाँग भी वैसे ही तोड़ डालता। पर करता क्या विवश था। फिर सभ्यता के ढोंग से जनित कायरता ने अकारण विग्रह मोल लेने में अपनी भययुक्त उदासीनता ने मुझे उस आवेगपूर्ण विचार को कार्यान्वित करने से रोक रखा पर शिकारी अब भी अपनी ही धुन में मस्त था। उसके हृदय में मेरी जैसी कोमल भावनाओं का या उस प्रिय विछोह दुःख या पश्चात्ताप कहाँ! सारस को अपने ऊपर मंडराते देखकर उसने उसके जीवन को भी अवशेष करने के लिए से छाती पर बन्दूक रक्खी और धाँय-धाँय करके दो चोटें दीं। चोटें ख़ाली गईं। सारस ने आकाश के अनन्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[illegible] ली। फिर भी रह-रहकर उसके चीत्कार के स्वर मुझे [illegible] तक कर्णगोचर होते रहे जब तक मैं रात्रि में निद्रा की गोद [illegible] पड़कर सो नहीं गया।

(२)

एक सप्ताह बीत गया। मैं नित्य सन्ध्या और प्रातःकाल [illegible] के उसी टीले पर सारस को मन मारे इधर-उधर घूमते और [illegible] कहकर 'क्रौं-क्रौं' करते देखता। मादा सारस का क्या [illegible]? वह मर गई कि जी सकी, इसका मुझे तब तक पता [illegible] चला जब तक एक दिन एक महावृष्टि के उपरान्त मैंने [illegible] अपनी कुटिया के बगलवाले पानी से भरे खेत से होकर एक [illegible] लटकाये हुए, मन्दगति नदी की ओर जाते नहीं देखा। [illegible] को आहत देखकर बाल-समुदाय उसके पीछे दौड़ पड़ा और [illegible] एक खेत से दूसरे खेत की पानी से भरी क्यारियों को लाँघती [illegible] नदी की ओर दौड़ने लगी। उस बेचारी की उस समय [illegible] बेबसी और दीनता तथा उसकी यन्त्रणापूर्ण आकृति का [illegible] करके हृदय आज भी करुण हो जाता है। 'विपत्ति [illegible] नहीं आती' की लोकोक्ति मैंने इस असहाय निरीह पक्षी के [illegible] भी चरितार्थ होती देखी। अपने टूटे पाँव में इतना बल [illegible] था कि दौड़कर उन्मत्त बालक-वृन्द को उसे आहत करने से [illegible]। फिर भी इसी उद्देश्य से उधर ही को डण्डा टेकता [illegible] चल पड़ा और रह-रहकर चिल्लाकर उन्हें मना करने लगा। [illegible] उमङ्ग के उस हो-हल्ला में मेरी आवाज़ उनके कानों तक [illegible] पहुँचती और पहुँचती भी तो कौन उसके अनुसार आचरण [illegible] को तैयार था। तब भी मैं शक्तिभर उधर ही बढ़ता [illegible]। इसी बीच क्या देखता हूँ कि क्रौं-क्रौं करता वह नर [illegible] आकाश से बड़े वेग से पर बाँधे नीचे उतरता चला आ [illegible] है। उस समय उसमें भय या डर ऐसी किसी वस्तु का [illegible] मात्र अस्तित्व नहीं था। उन्मत्त की भाँति तेज़ी से वह [illegible] प्रेयसी के पास आ बैठा और बैठते ही पीछे से आते हुए [illegible]वृन्द पर चोंच खोलकर आक्रमण किया। एक बालक ने [illegible] करके अपनी छड़ी उस आक्रमणकारी पर चलाने की तैयारी [illegible] पर इसके पूर्व कि वह उसे मार सके सारस की चोंच उसके [illegible] पर पड़कर इञ्च भर घुस गई। कपोल से अविरल रक्त- [illegible] होने लगा। बालकों में भगदड़ पड़ गई। सारस सारसी [illegible] को लेकर नदी पार उतर गया। मैंने पास पहुँच कर बालक को [illegible] और उसके घाव की मरहम-पट्टी करके उसे घर [illegible] बचाया।

(३)

कई मास बीत गये। मैं जब सन्ध्या समय घूमने जाता [illegible] उसी टीले पर अपने उसी पूर्व-परिचित सारस दम्पती को [illegible] लेता। अच्छा समय होने पर नर सारस के नृत्य को [illegible] देखता और उसमें कोई कमी नहीं पाता, परन्तु उसके जवाब में मादा सारस की नृत्यकला उसके डैने के टूट जाने के कारण अवश्य एक पाँव की लँगड़ी-सी प्रतीत होती। फिर भी उसके आन्तरिक आह्लाद, रसानुभूति और प्रेमोच्छ्वास में कोई कमी आई हो सो बात नहीं थी। दम्पति-युगल उसी उत्साह, उसी आमोद-प्रमोद और उसी आनन्द के साथ नाचता।

इस बार आषाढ़ आया और चला भी गया पर मैंने उस टीले पर उस दम्पति-युगल को एक साथ नहीं देखा। कभी अकेला सारस दीखता तो कभी अकेली सारसी। मैं उनकी इस फूट का कारण सहसा समझ नहीं सका। उनकी इस अनबन से मेरे मन में कौतूहल भी कम नहीं हुआ। नित्य ही सोचता, कल नाव मँगाकर उस पार जाऊँगा और सारस-दम्पती के परस्पर के इस कलह का कारण जानूँगा। जिस सारस ने अपना प्राण सङ्कट में डालकर बालकवृन्द से अपनी क्लान्त पत्नी की रक्षा की थी उसी ने आज अपनी उस प्रेयसी को तलाक़ क्यों दे दिया और कैसे उसे भुला सका? कल्पना में लाख-लाख तरह की बातें आतीं पर किसी एक विशेष कारण को सत्य मान लेने में बुद्धि सदा असमर्थ रहती। आख़िर एक दिन संयोगवश नाव मिल गई। मछली मारनेवाली नाव थी। मैंने नदी पार की। अपना हृष्ट-पुष्ट शिकारी एस्पैनिअल (कुत्ता) भी साथ था। पानी में तैरकर शिकार उठा लाना या घायल पक्षी को ढूँढ़ निकालना उसके बाँये हाथ का खेल था। जिस मित्र से वह मुझे इस बीहड़ स्थान में चौकसी के लिए मिला था वे बड़े शौक़ीन शिकारी तथा कुत्तों के प्रेमी थे। मैंने टीले पर खड़े होकर इधर-उधर दृष्टि दौड़ाई पर कहीं कोई ऐसा चिह्न नहीं मिला कि जिससे मैं प्रेमी-युगल के प्रेम-विच्छेद के कारणों का अनुमान लगा सकूँ। थोड़ी देर तक इधर-उधर देखने के उपरान्त घास के जङ्गल की ओर धीरे-धीरे बढ़ा। सहसा क्रौं-क्रौं की आवाज़ सुनाई पड़ी और वही नर सारस मेरे ऊपर मँडराता हुआ दिखाई पड़ा। मैंने अनुमान लगाया कि हो न हो आज मुझे यहाँ कुत्ते के साथ देखकर इसको उस दिनवाला शिकारी स्मरण हो आया होगा और अपनी पत्नी पर आगत सङ्कट के भय से ही मेरे ऊपर मँडरा रहा है। पर पत्नी से अब उसका प्रेम कैसा? अब तो दोनों में शायद तलाक़ हो गया है। दोनों को एक दूसरे से अलग रहते आज महीनों से देख रहा हूँ। तो क्या भय और सङ्कट के समय आपसी मन मुटाव पत्नी भी भुला देते हैं? यही सोचता हुआ और घासों से बच-बचकर पाँव रखता हुआ आगे बढ़ रहा था कि इतने में दूर से किसी वस्तु के फड़फड़ाने की आवाज़ आई। फिर वह आवाज़ इतनी बढ़ गई कि मालूम हुआ कि दो प्राणियों में मल्ल युद्ध हो रहा है। ख़याल आया कि शायद कुत्ते ने कोई शिकार पकड़ा हो। शूकरों और शृगालों का इस जङ्गल में बाहुल्य था और कुत्ता छोटे-मोटे शूकर अथवा बड़े से बड़े शृगाल का सामना करने के लिए काफ़ी सबल था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं तेज़ गति से उधर ही बढ़ने लगा और चिल्ला चिल्लाकर कुत्ते को शाबाशी तथा प्रोत्साहन देने लगा। आवाज़ धीरे-धीरे शान्त हो गई मानों दो योद्धाओं में कोई भाग गया हो। फिर भी किसी तरह जब ध्येय-स्थान पर पहुँचा तब जो दृश्य देखा उससे आँसू गिरने लगे और जी चाहा कि कुत्ते को वहीं पिस्तौल का निशाना बनाकर उसके इस निर्दय कृत्य का बदला दे दूँ। देखा कि कुत्ते के सामने उसी मादा सारस का रक्त से परिप्लावित अधमरा शरीर पड़ा काँप रहा है और कुत्ते के मुख में रक्त और पङ्क चिपटे हैं। उसके पास ही दो पङ्खविहीन नवजात सारस शिशु अपनी चोंच उठाये चें-चें कर रहे हैं। कुत्ता उन्हें भी-सतृष्ण दृष्टि से आक्रमण करने की मुद्रा में निहार रहा है। कुत्ते ने दबककर पाँव आगे बढ़ाना चाहा और मैंने डाँटकर उसे रोक दिया। वह शिक्षित सिपाही की तरह मेरी आज्ञा को शिरोधार्य कर दुम हिलाता हुआ मेरी ओर ताक ही रहा था कि आहत मादा सारस की गरदन एक बार पीछे की ओर खिंची और दूसरे क्षण उसकी चोंच कुत्ते की आँखों को बेधने लगी। क्षण ही भर में कुत्ते की दोनों आँखों से रक्तस्राव होने लगा और वह चिल्लाता हुआ भाग निकला। मैं कर्त्तव्यविमूढ़ हो उधर ताकने लगा। तब तक सारस मुझको मादा सारस और बच्चों के पास खड़ा देखकर एक झपाटे के साथ नीचे उतरा और डैना फैलाकर, चोंच खोले हुए बच्चों के पास मुझसे लोहा लेने के लिए खड़ा हो गया। उधर मादा सारस उस मरणा-सन्न अवस्था में भी अपने बच्चों और प्रेमी के पास पहुँचने की भरपूर चेष्टा कर रही थी। उसकी कमर और टाँगे टूट गई थीं। एक डैना पहले से ही टूटा था। फिर भी वह एक ही डैने के बल फड़क-फड़ककर उधर ही बढ़ती चली जा रही थी। उसके हसरत और प्रेम भरे नेत्र उन बच्चों पर थे जो [illegible] के स्वर से आकाश गुँजा रहे थे। किसी तरह जब वह [illegible] के निकट पहुँची तो उसने किसी अस्पष्ट भाषा और [illegible] उन्हें प्यार किया। अपने एक डैने से उन्हें झाँपते हुए [illegible] चोंच सारस की ओर सहायतार्थ या अन्तिम विदा लेने के [illegible] फैलाई। पर सारस अपने रौद्र रूप में मेरा मुकाबला करने के लिए तैयार मेरी ओर निहार रहा था। उसे शत्रु से [illegible] कहाँ था कि वह अपनी प्रेयसी की अन्तिम भेंट की [illegible] की ओर ध्यान दे। मादा सारस ने घेंच उठाई और [illegible] की ओर उसको उतना बढ़ाया जितना वह बढ़ सकती [illegible] पर फिर भी नर सारस का ध्यान उधर नहीं गया। एक [illegible] तक उसी मुद्रा में गरदन को वैसे ही बढ़ाये रक्खे रहने के [illegible] उसका प्राण-वायु प्रस्थान करने लगा; जीवन-नाड़ी [illegible] लगी। अन्तर्वेदना के अन्तिम प्रहार से उसकी गरदन ऐंठने [illegible] आँखें पलटने लगीं और खुली चोंच के भीतर जीभ [illegible] बाहर निकलने लगी। एक सेकेंड; दो सेकेंड; और [illegible] सेकेंड के साथ गरदन पृथ्वी पर कटी लता की तरह [illegible] हुई गिर पड़ी और शरीर एक बार तनकर काँपा और [illegible] कर सदा के लिए शान्त हो गया। फिर भी सारस को [illegible] इस प्रिय-बिछोह की ख़बर नहीं, बच्चों को अपने [illegible] वियोग का ज्ञान नहीं। जो कुछ ज्ञान था वह इन पंक्तियों [illegible] लेखक को। जी भर चिल्लाकर रोने से अपने को [illegible] रहा था कि पास ही घाट पर नाववाले मल्लाह थे।

— —

बादल-गीत

श्रीयुत बैजनाथप्रसाद सिनहा 'विस्मृत'

फिर नभ में घिरे सघन बादल!
रिमझिम-रिमझिम बूँदे झहरीं-
चमकी चम-चम चपला चञ्चल!
फिर नभ में घिरे सघन बादल!!
फिर हरी-भरी होकर वसुधा,
इतराई अपने यौवन पर,
फिर सरितायें खिलखिला उठीं
मुक्ताओं से अञ्चल भर-भर;
फिर मुग्ध मयूरी के नर्तन
से गूँज उठा वन का आँगन,
फिर नये हर्ष से पुलक उठा—
मानव का तन, मानव का मन!
अँगड़ाई लेकर जाग उठी—
सारे जग में सुषमा बाला;
घर में, आँगन में सभी ओर
फिर छलक उठा पानी छलछल!
फिर नभ में घिरे सघन बादल!!
चातक ने जीवन-रस पाया,
भौंरे को मधु-मकरन्द मिला,
कवि को फिर अपना खोया-सा
जीवन का मादक छन्द मिला;
सब ओर हँसी, सब ओर खुशी—
जग में क्षण ही भर में छाई,
लो, नव-पाटल के गालों पर
फिर झलकी मादक अरुणाई;
नख से शिख तक हो उठीं तुरत
कलिकायें रस से सराबोर;
सूखे तरुओं की डाली से—
फूटीं फिर आज नई कोंपल!
फिर नभ में घिरे सघन बादल!!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रशान्त का युद्ध

पण्डित रमादत्त शुक्ल

गत मई में जर्मनी के हथियार डाल देने पर योरप में युद्ध की समाप्ति हो गई और समस्त विश्व की आँखें प्रशान्तीय क्षेत्र की ओर आकर्षित हो गईं। यह सर्वथा स्वाभाविक था क्योंकि यहीं की विजय पर मित्रराष्ट्रों की स्थायी शान्ति और सुख-व्यवस्था की तमाम योजनाओं की सफलता निर्भर थी। जापान ने सन् १९४१ में ७ दिसम्बर को एकाएक पर्ल हार्बर पर असम्भावित आक्रमण करके अमरीका और ब्रिटेन को किं-कर्तव्यविमूढ़-सा कर दिया था। जापानी जल-थल-वायु सेनायें टिड्डी-दल के समान उमड़कर चारों ओर छा गई थीं और आगे सन् '४२ तक के सात महीने से भी अल्पकालीन अवधि में उन्होंने देखते ही देखते विशाल चीनी तट, बर्मा, चीन, स्याम, मलाया, फिलीपाइन-द्वीपसमूह एवं जावा, सुमात्रा आदि डच ईस्ट-इण्डीज़ के महत्त्वपूर्ण टापुओं पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया था। मित्रराष्ट्रों से कुछ करते-धरते न बन पड़ा। अगस्त, सन् '४२ में आस्ट्रेलिया के सामरिक साधनों की सहायता से अमरीकनों ने सोलोमन के जल-युद्ध में जापानियों को पर्याप्त हानि पहुँचाई। फिर भी जापानी सङ्कट मित्रराष्ट्रों पर छाया ही हुआ था और सब प्रजा बड़े आश्चर्य में थी कि आख़िर इस दिशा में भी कुछ प्रभावशाली कार्यवाही क्यों नहीं की जाती। यही कारण था कि जर्मनी के पराभव से पूर्व होनेवाली प्रायः सभी महत्त्वपूर्ण कान्फ्रेंसों के अवसर पर मित्रराष्ट्रों के तत्कालीन प्रधान नायक मिस्टर चर्चिल और प्रेसीडेंट रूज़वेल्ट ने बार-बार अपने इस निश्चय की घोषणा की थी कि योरपीय युद्ध के समाप्त होते ही जापान पर पूर्ण शक्ति के साथ भारी से भारी प्रहार किया जायगा। तदनुसार ही विजय-दिवस मनाते हुए जिस समय देश-देशान्तरों की जनता विभिन्न प्रकार के प्रदर्शनों द्वारा योरप में मित्रराष्ट्रों की विजय पर आन्तरिक प्रसन्नता प्रकट कर रही थी, उस समय अमरीका की प्रकाण्ड जलसेना प्रशान्त के युद्धमोर्चे की ओर बढ़ी चली जा रही थी और योरपीय रणक्षेत्र से सैनिकों के दल के दल जापानी सैनिकों से लोहा लेने के लिए स्थानान्तरित किये जाने लगे थे। देखते ही देखते इन अमरीकन सेनाओं ने आस्ट्रेलियन सैनिकों के सहयोग से तथा जलसेना की शक्ति एवं हवाई सेना की भयङ्कर बममारी की सहायता से ५ जुलाई '४५ को फिलीपाइन द्वीपसमूह पर पुनः पूर्ण अधिकार कर लिया। यही नहीं—महत्त्वपूर्ण टापू इवोजिमा पर भी—जापानियों के कठिन प्रतिरोध के होते हुए भी अधिकार कर लिया गया।

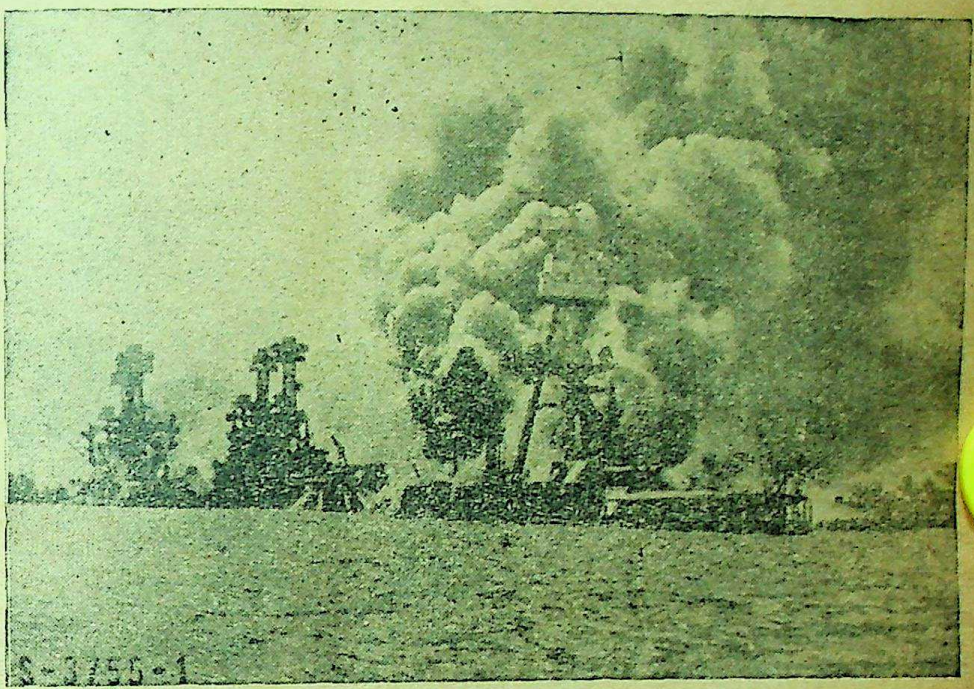

पर्लहार्बर के अमरीकन जहाज़ों पर जापानियों का अप्रत्याशित प्रथम आक्रमण

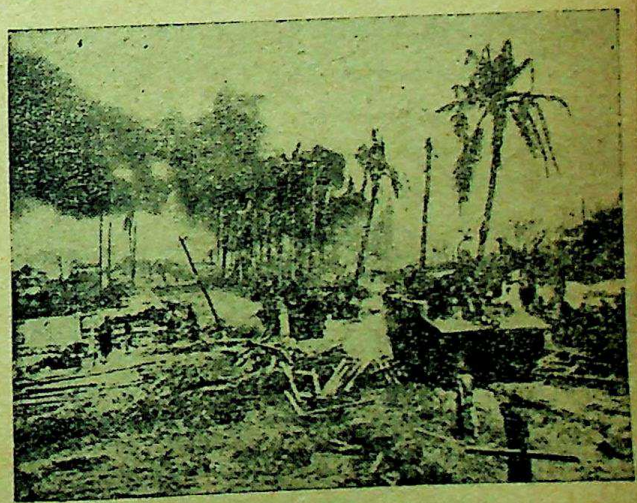

मित्र-सेनाएँ बालिक-पापन में विश्राम कर रही हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब इवोजिमा को आधार बनाकर ओकीनावा नामक टापू पर चढ़ाई करने की आयोजना की गई, जहाँ से मुख्य जापान के

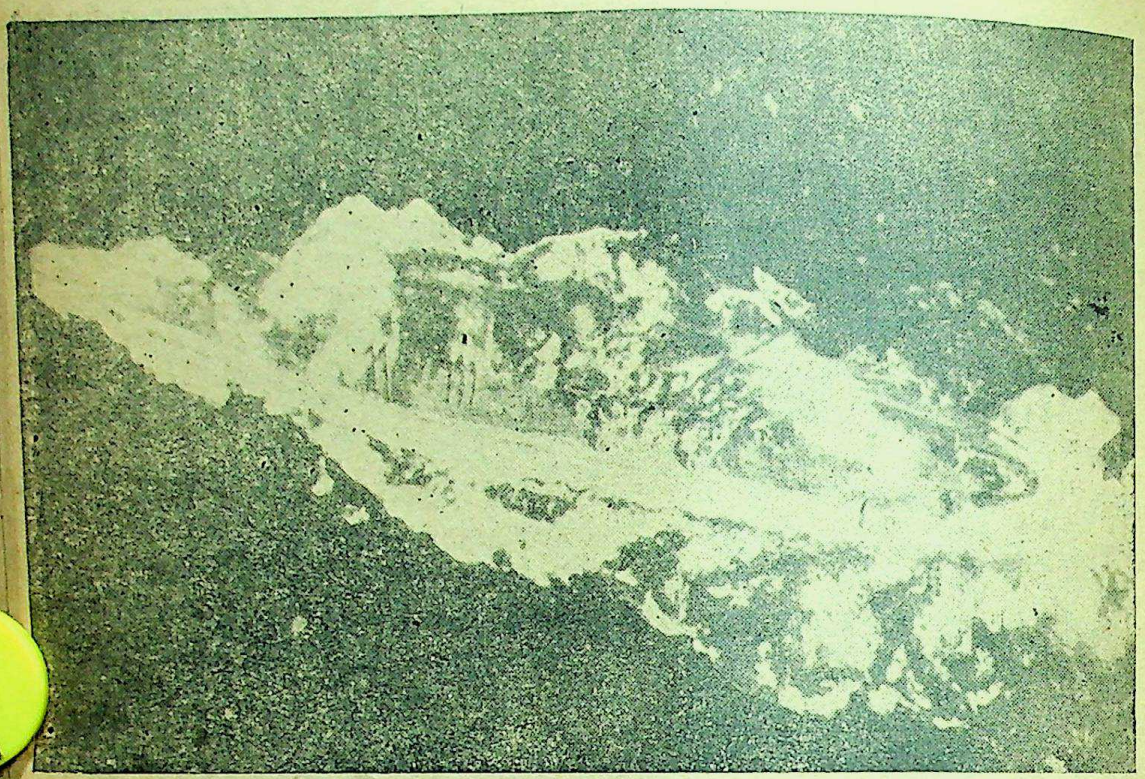

फिलीपाइन की समुद्री लड़ाई में जापानी युद्धपोत 'वामाता' डूब रहा है

अत्यन्त निकट होने के कारण जापानियों पर अन्तिम एवं निर्णायक प्रहार करने में सुगमता होने की आशा थी। घोर बमवर्षा की छाया में अमरीकन सैनिकों ने इस टापू पर अवतरण कर ही लिया और अन्त में लगभग तीन मास के घनघोर संग्राम के पश्चात् जापानियों के हाथ से इसे छीन लेने में सफलता प्राप्त की। यहाँ के युद्ध का समूचा विवरण प्राप्त न होने से यद्यपि हम ठीक-ठीक इसके भयङ्कर परिणाम को नहीं जान सकते तथापि एक अमरीकन युद्धालोचक के इस कथन से कि 'ओकीनावा का युद्ध इवोजिमा के युद्ध से भी विकट रहा एवं यहाँ के युद्ध से यह प्रकट हो गया कि जापानी सैनिक कितने दुर्द्धर्ष लड़ाके हैं'—हम अनुमान कर सकते हैं कि दोनों पक्षों की ही अपूर्व क्षति हुई होगी। फिर भी किसी तरह इस आधार-रूप टापू को अमरीकनों ने हस्तगत कर ही लिया और इसकी स्थिति से लाभ उठाकर जापान के प्रायः सभी प्रमुख नगरों पर नित्य ही अमरीकन वायुयान हज़ारों टन के विध्वंसक बम गिरा-गिराकर उसके सर्वनाश की भूमिका तैयार करने लगे। यही जान पड़ा कि जिस प्रकार बमों की भयङ्कर मार से जर्मनी को तहस-नहस करके उसे आत्मसमर्पण करने को लाचार कर दिया गया था, उसी प्रकार जापान को भी अपदस्थ कर दिया जायगा। परन्तु जापानियों की कट्टर वीरता एवं उनके वैज्ञानिकों के आविष्कारक मस्तिष्क संसार को भ्रम में डाले ही रहे कि जापान का सरलता से [illegible] द्वारा पराजित किया जाना सम्भव नहीं।

इधर [illegible] युद्ध में [illegible] सेनाओं ने [illegible] कुछ जापानियों [illegible] सफ़ाया कर [illegible] था, केवल कुछ [illegible] हुए जापानी [illegible] बच रहे थे। [illegible] भी बचने की [illegible] आशा न [illegible] परन्तु सहसा-[illegible] वतः कुमक [illegible] जाने से—वे [illegible] परस्पर [illegible] होकर आगे [illegible] आये और [illegible] मित्र फ़ौजों [illegible] पीछे हटने [illegible] बाध्य करके [illegible] मांडले के [illegible] पास के क्षेत्र पर अपना नियन्त्रण कर लिया। उस समय [illegible] जान पड़ा कि जापानी भारत की ओर अपना बल-प्रदर्शन [illegible]

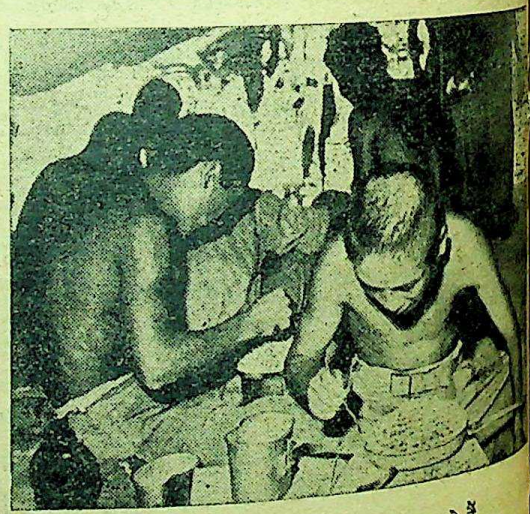

जापानी युद्ध-बन्दी भोजन कर रहे हैं

ब्रिटिश सेनाओं को यहीं अटकाये रखना चाहते हैं [illegible] मुख्य जापान पर हमला करने में अमरीकन सेनाओं से [illegible] स्थापित कर सकें। परन्तु ब्रिटिश साम्राज्य की [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[अध्याय ५]

शक्ति के सामने उनका यह प्रयत्न युद्ध की गतिविधि पर दृष्टि रखनेवालों को हास्यास्पद ही जँचा।

उधर डच पूर्वीद्वीपसमूह पर भी अमरीकनों ने आक्रमण का श्रीगणेश कर दिया। आक्रमण के लिए यह समय वहाँ की जलवायु के कारण मित्रों के लिए अनुकूल न था क्योंकि मानसूनी हवाओं से घनघोर वर्षा होने से वहाँ की भूमि दलदली होकर टैंक, लारियों आदि के आवागमन के लिए अनुपयुक्त हो गई थी। इसके सिवा सदैव तूफ़ानी हवा के ज़ोर-शोर से चलने के कारण सैनिक कार्यवाही करने में भी सुविधा न थी। परन्तु दूर-पूर्वी प्रदेशों पर पुनः अधिकार करने में इन टापुओं का महत्त्व विचारकर आक्रमणात्मक कार्रवाई आरम्भ कर ही दी गई। फिर आशा थी ही कि उक्त मौसम दो-एक मास में समाप्त हो जायगा और तब तक योरपीय क्षेत्र से ब्रिटिश सैन्य-शक्ति भी पहुँच जायगी। इस प्रकार एक बड़े पैमाने पर समस्त दक्षिण-पूर्वी एशिया को जापानियों के हाथों से ले लेने की कार्यवाही करने का भी युद्ध-विशेषज्ञों ने निश्चय-सा कर लिया था।

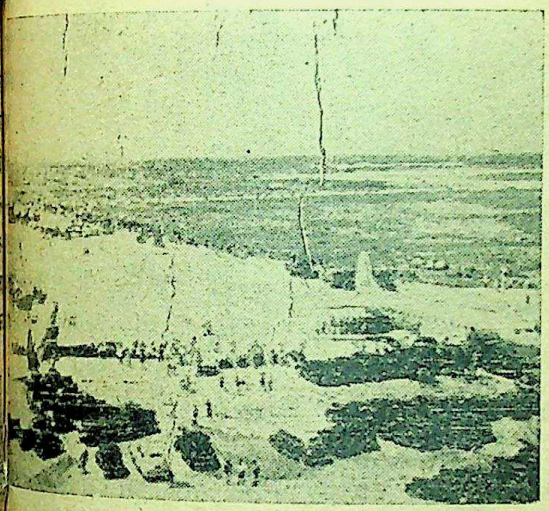

चीनी सेनायें शंघाई के क्षेत्र पर उतर रही हैं

उपर्युक्त निश्चय के लिए अमरीकन युद्ध-विशेषज्ञों ने मुख्य जापान के प्रति होनेवाले अभियान में किसी प्रकार की शिथिलता न आने दी। वे जापान पर बमवर्षा बराबर करते ही रहे। उनकी योजना उस समय यही जान पड़ती थी कि जापान के औद्योगिक केन्द्रों का पूर्णतया संहार कर दिया जाय, ढूँढ़-ढूँढ़कर उनके महत्त्वपूर्ण सैनिक अड्डों पर प्रचण्ड बमबारी की जाय और उन्हें ध्वस्त कर दिया जाय। तब जापान की भूमि पर अमरीकन सैनिक अवतरित होकर जापानी साम्राज्यशाही का अन्त कर दें। परन्तु जापानी सूर्य का अस्त होना इतना सरल नहीं है, मित्र-राष्ट्रों के युद्ध-विशेषज्ञ भी ऐसा अनुभव करते थे। यही कारण था कि जहाँ वे अन्य समस्याओं पर विचार कर रहे थे वहाँ यह भी अनुमान करने का प्रयत्न कर रहे थे कि युद्ध की अन्तिम अवस्था में जापानी लोग अपनी रक्षा के लिए किन-किन उपायों का अवलम्बन कर सकते हैं। अनेक पाश्चात्य युद्ध-विशेषज्ञों का

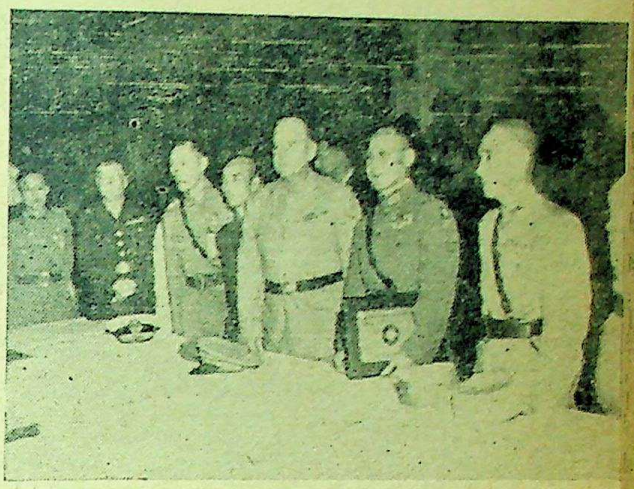

नानकिंग में जापानियों से आत्मसमर्पण करानेवाले अमरीकन और चीनी सेनानायक

यह अनुमान प्रायः सभी को मान्य-सा होने लगा था कि जापानियों की अन्तिम और सर्वप्रमुख रक्षापंक्ति मञ्चूरिया में होगी। यही नहीं, कई विशेषज्ञों का तो यहाँ तक कहना था कि जापा-

घनघोर युद्ध के बीच अमरीकन सैनिक सुरीबाची पहाड़ पर चढ़ रहे हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नियों के अधिकांश युद्ध-सामग्री तैयार करनेवाले कारख़ाने जापान से हटाकर मञ्चूरिया में स्थापित कर दिये गये हैं और जापान की मुख्य भूमि में अब नाममात्र को ही औद्योगिक क्षेत्र रह गये हैं। ऐसी दशा में इस निष्कर्ष पर पहुँचना भी अत्युक्तिपूर्ण न था कि मुख्य जापान की अधिकांश भूमि पर अमरीकनों-द्वारा अधिकार कर लिये जाने पर भी जापानी युद्ध जारी रक्खेंगे। उनके आत्मसमर्पण की बात तो दूर रही।

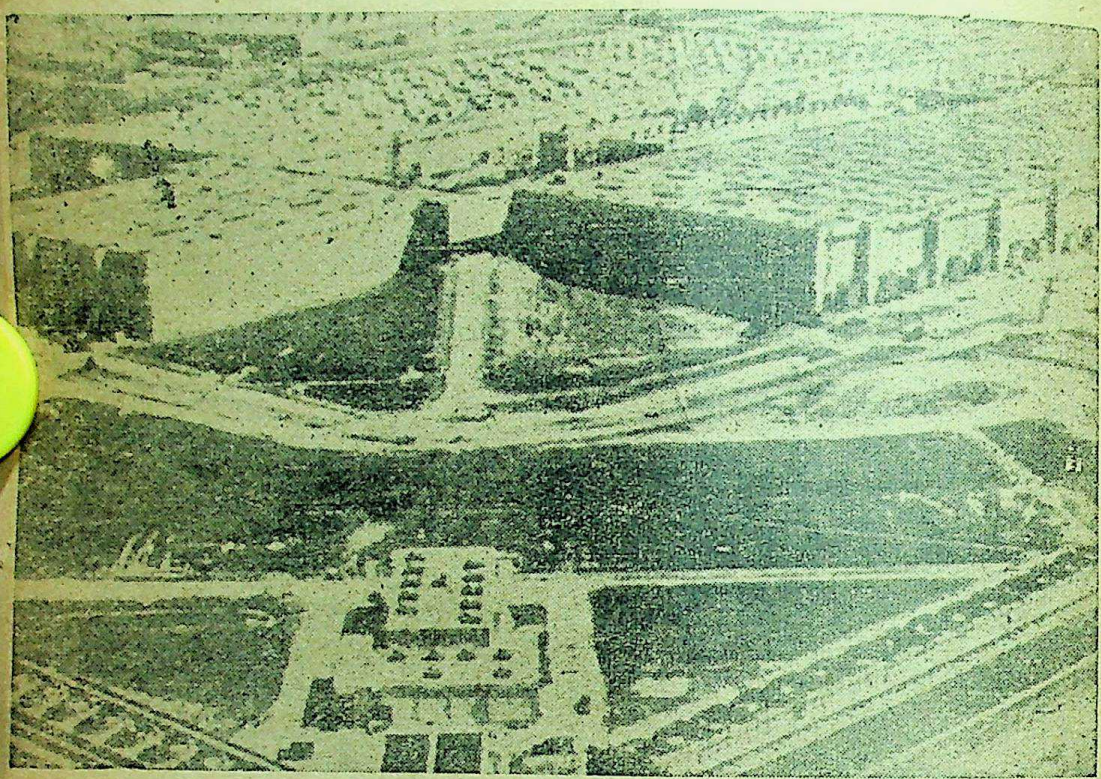

अमरीका में अणुबम बनानेवाला कारख़ाना

जापान के सम्बन्ध में इस प्रकार की अटकलें लगाते समय राजनीतिज्ञ लोग रूस के प्रशान्तीय युद्ध में प्रवेश करने की सम्भावना पर भी विचार करते थे। उस समय अर्थात् गत जुलाई में पॉट्सडम में मित्रराष्ट्रों के महानायकों—मिस्टर चर्चिल, प्रेसिडेंट ट्रूमैन एवं मोशियो स्टालिन—की जो महत्त्वपूर्ण सभा हो रही थी, उससे भी बहुत-से लोग यही आशा करते थे कि अब रूस भी जापान के विरुद्ध युद्ध में उतर पड़ेगा। इसमें सन्देह नहीं कि यदि रूस मित्रराष्ट्रों के पक्ष में होकर जापान के विरुद्ध युद्ध में उतरने का निश्चय करता तो प्रशान्तीय युद्ध के समाप्त होने में कम समय लगता। उस दशा में जापानी लोगों को वैसी ही परिस्थिति का सामना करना पड़ता—जैसी परिस्थिति का सामना दूसरा मोर्चा खुलने पर जर्मनी को करना पड़ा था। परन्तु रूस के प्रशान्तीय युद्ध में प्रवेश करने की सम्भावना कम ही थी। कारण यह था कि वह युद्ध में उतरने का उपयुक्त अवसर पाने की ताक में था, जिससे उसकी आक्रमणात्मक कार्रवाई पूर्ण सफल हो सके। ऐसी दशा में अमरीकनों और [illegible] सैनिकों को जापान के परास्त करने में स्वयं ही लगना [illegible] वे लगे भी हुए थे। इसमें सन्देह नहीं कि जापान भी [illegible] की तरह नवीन विभीषिकापूर्ण गुप्त हथियारों का प्रयोग [illegible] राष्ट्रों के विरुद्ध करके उन्हें पर्याप्त हानि पहुँचा रहा था। [illegible] यह भी स्पष्ट ही था कि असीम सागर की भयावह [illegible] समान बढ़ती हुई मित्रराष्ट्रों की असंख्य फ़ौजों की बाढ़ [illegible] लिए जापान [illegible] निरुपाय था और [illegible] भाग्य का परिणाम [illegible] साथी जर्मनी की [illegible] भाँति स्पष्टतर से [illegible] होता जा रहा था।

इसी समय [illegible] महान् आश्चर्य[illegible] घटना हुई, जिसने [illegible] स्मात् इस विनाश[illegible] द्वितीय महायुद्ध की [illegible] श्री कर दी। यह [illegible] थी अमरीका-[illegible] जापान के दो नगरों—हिरोशिमा एवं [illegible] साकी—पर। अगस्त [illegible] दिन अतीव [illegible] एटम बमों का प्रहार [illegible] साथ ही अगली [illegible] तारीख़ को सोवियट [illegible] ने भी जापान के विरुद्ध युद्ध-घोषणा करके पूर्वी सूर्य के अस्त[illegible]

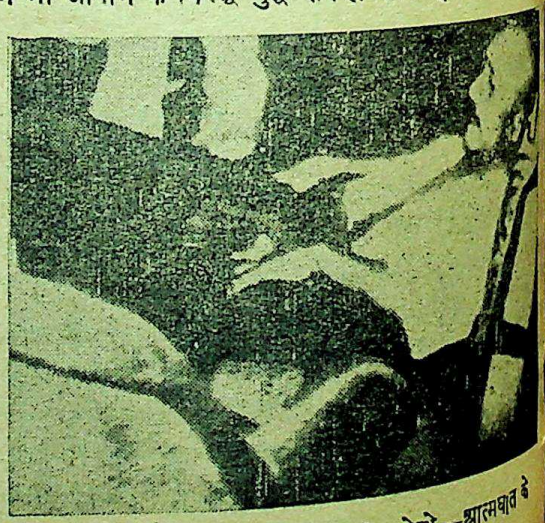

जापान का भूतपूर्व प्रधान मन्त्री तोजो—आत्मघात के प्रयत्न में विफल होने के पश्चात्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और भी समीप कर दिया। परन्तु यह तो मानना ही होगा कि इस आकस्मिक जापानी पराजय का मूल कारण उक्त अणुबमों का प्रयोग ही था। इन अणुबमों के गिरते ही उक्त दोनों नगरों की काया ही पलट गई। जो वर्णन इन विनष्ट नगरों के सम्बन्ध में समाचार-पत्रों में निकला है, उससे अणु बमों की भयानकता स्पष्ट है। वहाँ चारों ओर खँडहर ही खँडहर दृष्टिगत होते हैं, एक भी मकान सही-सलामत नहीं दीख पड़ता। जन-समुदाय का तो सर्वसंहार ही हो गया है। नगर-निवासियों की एक बड़ी संख्या तो विस्फोटक पदार्थों के प्रभाव से उड़कर अज्ञात लोक को पहुँच चुकी है और जो नाममात्र को बची भी, वह ऐसे भयानक रूप से क्षत-विक्षत हुई है कि मुर्दों के बराबर है। इस विकट प्रजा-संहार को देखकर जापानी सम्राट् हिरोहितो ने आत्मसमर्पण करने में ही बुद्धिमत्ता देखी। और इस प्रकार जापान के तमाम सामरिक अङ्गों ने गत १५ अगस्त को आत्मसमर्पण करके अपनी जाति का नाम-निशान मिट जाने से बचा लिया। जापान के आत्मसमर्पण कर देने से विश्व ने शान्ति की साँस ली। इसमें सन्देह नहीं कि युद्ध के समाप्त हो जाने पर भी उससे उत्पन्न परिस्थितियाँ मानवता के कन्धों पर अशान्ति का जुआ अब भी लादे ही हुए हैं, परन्तु कुछ भी हो, मानव को दम मारने का अवसर तो मिल ही गया है! और यदि उसने इस अवसर को विजयोल्लास में राग-रङ्ग, हास-विलास-द्वारा ही न गँवा दिया और उच्च विचारों की उपेक्षा करके अपने स्वार्थों को सिद्ध करने का प्रयत्न न किया तो निश्चय ही उसे दीर्घकाल तक शान्ति का उपभोग करने का अवसर मिल सकेगा।

——

कवि से

श्रीयुत अनुरञ्जन, बी० ए०, आनर्स

कवि बोल,
आज जग की वाणी में बोल,
आज युग की वाणी में बोल;
आज रङ्गीन कल्पना के बल पर
ला आँखमिचौनी खेल;
वर्ण बालाओं के संग
बहुत खेल हो चुका
और जल चुकी फूल-सी
सुकुमार नायिका तेरी
कितनी बार विरह के तप में।
कवि,
किन्तु भूलकर भी न सका तू देख,
सड़क के दाँये-बाँये पड़ी
नायिका तेरी—
नग्न-अधनङ्गी
कङ्काल-मात्र
सूखी-सी जर्जर
पिचका पेट
मुख लिये घिनौना
जीव निकलते
शव वहाँ—
मक्खी उड़तीं
भनभन करतीं
हाँ! कठिन भूख की जलन लिये
वह तड़प-तड़प मरती रहती।
है तुझे विरह की पड़ी,
और है उधर भूख की ज्वाल!
कहो कवि, कितना अन्तर!!

× × ×

कवि,
"हिमगिरि के उत्तुङ्ग शिखर पर
बैठे मनु" के पास पहुँच तू सका।
चीर सदियों की छाती;
किन्तु पास में तड़प रही सन्तान
उसी की भूख ज्वाल में,
उसे देख तू रो न सका,
तू धो न सका,
उसके अन्तस्तल की पीड़ा,
तू कवि होकर भी!
कवि, कितना निष्ठुर!

× × ×

कवि, ज़रा इधर भी देख
आज नीचे गड्ढों में;
फूसफास की झोपड़ियों में
जिन पर फैले
सेम करेले के लत्तर
लगते सुन्दर,
अति ही सुन्दर।
मानो आई हो वहाँ उतर
वनदेवी सजकर!
कवि,
झाँक तनिक इन झोपड़ियों में
झिलमिल-से रोते प्रकाश में
चिथड़ों से लिपटे मानव-शिशु,
जहाँ चूस
जननी के स्तन,
करते क्रन्दन,
अति क्षुधित—व्यर्थ!
औ' मौत निगोड़ी खड़ी पास
हँसती रहती
टूटी टट्टी से झाँक झाँक;
खोले अपने निज विकट दन्त!
औ' वहीं पास पिछवाड़े में
कुत्ते सियार लड़ते क्रोधित!
कवि, तू ही कह,
किस अशुभ हेतु!!

× × ×

कवि, आज छोड़ दे गान विरह के
और तोड़ दे तार बीन के
जिन पर गाये नहीं जा सके;
आह और चीत्कार दीन के!

——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मञ्जुश्री

कुमारी प्रभा पारीक, बी० ए०

राधाकान्त द़फ़र के छोटे क्लर्क थे। क्लर्क को प्रातःकाल से सन्ध्या तक परिश्रम करने पर भी इतन वेतन नहीं मिलता कि मनोरञ्जन के लिए कुछ साधन जुटा सके। उसको संसार की चहल-पहल से पृथक् ही रहना होता है। जगती की सुखद और रमणीय वस्तुयें उसके लिए मृग-मरीचिका के सदृश रहती हैं। राधाकान्त भी संसार की चहल-पहल से दूर ही रहते थे। उनका संसार गृह और द़फ़र तक ही सीमित था। अधिक हुआ तो कभी बाज़ार हो आते थे। पर उनके मनोरञ्जन क साधन बड़ा ही विचित्र था। वह था पुस्तकालय। द़फ़र से लौटकर सीधे पुस्तकालय में प्रवेश करते थे। प्रत्येक पुस्तक को बड़े स्नेह से देखते और बड़ी संख्या देखकर स्वर्गीय आनन्द का अनुभव करते थे। अधिकतर पुस्तकें बौद्धधर्म पर थीं। पुस्तकालय में प्रवेश करते ही 'बुद्धचरित्र', 'बौद्धधर्मसार' बौद्धमत' आदि अनेक ग्रन्थ दृष्टिगोचर होते थे। पर सबसे विचित्र बात यह थी कि उन्होंने इनमें से कदाचित् ही एक पुस्तक का अध्ययन किया हो। उनके पुस्तक एकत्र करने का एक गूढ़ मन्तव्य था। वे जानते थे कि उनका वेतन इतना अधिक न था कि वे अपनी सन्तान के लिए बहुत-सी सम्पत्ति छोड़ जायँ। पर वे एक ऐसी निधि छोड़ना चाहते थे जिससे उनकी सन्तान अमर ख्याति प्राप्त कर सके। उनकी दृष्टि में धन का कुछ मूल्य न था। राधाकान्त की सन्तान अविनश्वर ख्याति प्राप्त करे, यही उनकी निहित भावना थी। जब वे एकबारगी अपनी एकमात्र सन्तान मञ्जुश्री की ओर देखते और तत्पश्चात् पुस्तकों की ओर निहारते तो ऐसे प्रसन्न होते जैसे मयूर कादम्बिनी को देखकर। पहली को यदि वे अमर ख्याति समझते थे तो दूसरी को अमर ख्याति का साधन। पुस्तकों के चित्रों को खोल-खोलकर वे मञ्जुश्री को दिखाते थे। मञ्जुश्री भी बड़े चाव से प्रत्येक चित्र को देखती। शनैः शनैः उसके हृदय में बुद्ध के प्रति असीम श्रद्धा उत्पन्न होने लगी। उसने एक बार पढ़ा था कि बुद्ध भगवान् पूर्णिमा की रात्रि को इस संसार में अवतीर्ण होते हैं। तब से उसे अटल विश्वास हो गया था कि अवश्य ही वह बुद्ध भगवान् के दर्शन पा सकेगी। पूर्णिमा की रात्रि को वह बराबर जागती रहती। संसार क वस्तुओं से उसको ममता न थी। क्षणिक और चमकीले दर्शनों में उसकी रुचि न थी। जब वह छोटे-छोटे बच्चों को हृदय से गुड़िया चिपटाये देखती तो उसको विस्मय होता कि इन चिथड़ों से उनको इतना प्रेम क्यों है। शीलबन्धु को छोड़कर उसका कोई और मित्र भी न था। इस अवस्था में उतनी उदासीनता को देखकर उसकी माँ अत्यन्त चिन्तित रहती थी। पर राधाकान्त यह देखकर मृदु उल्लास का अनुभव करते थे कि उनका आशा-वृक्ष भले प्रकार प्लावित हो रहा है।

मञ्जुश्री ज्यों-ज्यों बढ़ती जाती थी, उसकी बुद्ध के प्रति भक्ति भी तीव्रातितीव्र होती जाती थी। प्रत्येक वस्तु और व्यक्ति में वह बुद्ध को ही प्रतिबिम्बित पाती थी। आग के स्फुलिङ्गों में उसे लगता कि बुद्धदेव आसन लगाये हुए बैठे हैं और उसकी ओर मन्द-मन्द मुस्कुरा रहे हैं। उसको प्रतीत होता कि बुद्ध भगवान् कह रहे हैं कि तुम्हारा जन्म इस संसार में नहीं हुआ है। संसार को मुक्ति-मार्ग दिखाना ही तुम्हारा कर्त्तव्य है।

एक बार वह इसी पर विचार कर रही थी कि शीलबन्धु ने प्रवेश किया। शीलबन्धु उसका मित्र अवश्य था पर दोनों के विचारों में अन्तर था। शीलबन्धु राजनीति पर अधिक ध्यान देता था। उसकी इच्छा थी कि मञ्जुश्री का ध्यान बुद्ध की ओर से हटकर राजनीति में लग जाय। इसी विचार से प्रेरित होकर उसने मञ्जुश्री से कहा—"तुम जानती हो कि बुद्ध धर्म को फैलाने से भारत की कितनी क्षति होगी। बुद्ध राजनीति का कितना बड़ा रोड़ा है, कदाचित् इसका अनुमान तुम नहीं लगा सकतीं।" इस पर मञ्जुश्री ने उद्दीप्त होकर कहा—"पर राजनीति के लिए मानवनीति को छोड़ देना उचित है, जिससे सम्पूर्ण जाति का सम्पर्क है।"

शीलबन्धु ने तर्क का अवसर पाकर कहा—"पर क्या मानव-नीति-द्वारा देश को विजय प्राप्त हो सकती है?"

मञ्जुश्री ने कहा—"अवश्य। मानव-नीति को भूल जाने से ही पराजय होती है। सम्पूर्ण विश्व एक असीम शक्ति से निर्मित है। प्राणिमात्र में उस शक्ति का अंश वर्त्तमान है। सम्पूर्ण संसार उस असीम के धागे से सम्बन्धित है। प्रत्येक एक सम्बन्धी की भाँति प्रेम पाने का अधिकारी है। यह भाव मानव हृदय में जाग्रत् हो जाय तो विध्वंस न हो। पारस्परिक प्रेम जय और पराजय के स्फुलिङ्गों को नष्ट कर देगा। मैंने देखा है कि सरिता पर्वत के अन्तराल को चीरकर निकलती है, वह कभी ग्रीष्म से तप्त होकर अकुलाती है, तो कभी शुभ्र चन्द्रिका में स्नात हो नील गगन का समस्त आनन्द-वैभव अपने हृदय पर अङ्कित कर तरङ्गित हो उठती है। पर क्या पर्वत स्रोतवाहिनी के परिवर्त्तनमय जीवन में कोई भाग लेता है? वह तो केवल एक दार्शनिक की भाँति देखता रहता है। इसी प्रकार हम भी कार्य करने के अधिकारी हैं पर जीवन-स्रोत अकुलाता है या विहँसता है, इससे हमें कोई सम्बन्ध नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के पश्चात् यदि हम एक उदासीन दर्शक के जैसा भाव कर लें तो दुःख सहज ही में निवारण हो जाय।"

शीलबन्धु निरुत्तर हो गया। वह जान गया कि मञ्जुश्री विचार हिमालय की भाँति अचल हैं और उसकी जीवन के पर्वत-जैसी उदासीनता है। वह किसी प्रकार भी उसे सतह पर न ला सकेगा। उसकी एकान्त कामना थी मञ्जुश्री के सहयोग से वह जीवन-पथ पर अग्रसर हो पर श्री की उदासीनता उसके अभिप्राय को प्रकट न होने देती। आज के उत्तर को सुनकर तो शीलबन्धु निराशा के गर्त में जा गिरा था। आहत पक्षी की भाँति मञ्जुश्री के पास उठकर चला गया।

मञ्जुश्री गाढ़ निद्रा में लीन थी कि उसे स्वप्न दिखाई दिया बुद्ध भगवान् उससे कह रहे हैं कि इस मिथ्या संसार में रहने अवधि समाप्त हो चुकी है और अब मञ्जुश्री का अमर सत्य खोज का समय आ गया है। इतना कहकर बुद्ध भगवान् न्तर्धान हो गये। वह यह भी न पूछ पाई कि सत्य की अमर व किस प्रकार होती है। स्वप्न की घटना उसे उद्विग्न करने गी। जिज्ञासा और प्रश्नों के तारतम्य को एकत्र करने के विचार वह पुस्तकालय में जाकर 'बुद्ध का गृह-त्याग' पढ़ने में तन्मय गई। उसने पढ़ा 'बुद्ध भगवान् एक रात्रि को इस कलुषित संसार की ममता को त्यागकर सत्य की खोज में निकल पड़े।' मन में प्रश्न उठने लगे क्या संसार की ममता को छोड़कर ही सत्य की खोज सम्भव है? प्रश्नों का उत्तर उसे 'हाँ' में मिलता। आन्तरिक मनुष्य जीवन में लिप्त अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने में ही निरत रहता है। उसको अवकाश नहीं कि वह अपनी आन्तरिक विभूति की पुकार सुने। मञ्जुश्री ने निश्चय कर लिया कि अब वह आत्मा की पुकार की अवहेलना न करेगी। शीघ्र ही वह पुस्तकालय से निकल कर बाहर आई। पूर्णिमा की ज्योत्स्ना से सर्व संसार रजतमय हो रहा था। रजनी-गन्धा से भीनी-भीनी सुगन्ध चुराकर समीरण बार-बार मञ्जुश्री के समीप होकर निकल जाता था। मानों वह उसके अन्तर के अन्तम निहित भावों को पहचानना चाहता हो। उसके विचारों और प्रकृति में एक सामञ्जस्य था। दोनों एक ही आलोक से प्रकाशित थे। मञ्जुश्री ने कुछ पग आगे बढ़ाये हृदय में एक इच्छा का अनुभव हुआ—शीलबन्धु से अन्तिम बार भेंट कर ले। मनुष्य की इच्छाओं की भी कहीं सीमा होती है। एक के बाद दूसरी इच्छा प्रस्तुत रहती है। क्या वह इस प्रकार छुटकारा पा सकेगी। यह सोचकर उसने शीघ्रता से दो-चार पग बढ़ाये—पर वह शीलबन्धु को छोड़ने में आगे बढ़ने को असमर्थ पा रही थी। एक शक्ति थी जो उसको आगे बढ़ने को प्रेरित कर रही थी। पर एक आकर्षण था जो उसे बरबस पीछे खींचता था। पहला अमर किन्तु दुर्गम पन्थ था। दूसरा सरल किन्तु क्षणिक था। हृदय में अन्तर्द्वन्द्व हो रहा था। बार-बार शीलबन्धु की कल्पना साकार होकर उसके सम्मुख आती थी। पर सहसा बुद्ध की शान्त सौम्य मूर्ति दिखाई दी मानों उनके मुख पर करुणा साकार-सी अङ्कित थी। नेत्रों में अपूर्व शान्ति का सङ्केत था। मञ्जुश्री किसी प्रकार बुद्ध की अवहेलना न कर सकी। अमर-पथ ने क्षणिक आकर्षण पर विजय पाई। शीघ्रता से आगे बढ़ी चली गई। एक बार भी पीछे मुँह न मोड़ा। अज्ञात शक्ति उसके पग आगे बढ़ाये ही लिये जाती थी।

उषा ने प्राची में अपने अरुण-आभा-रञ्जित कर जगतीतल पर फैलाये। विहगों ने अपने मुखरित स्वर से उषा का अभिनन्दन करने के हेतु दिशाओं को निनादित कर दिया। उधर शीलबन्धु उठा तो उसे कुछ व्यथा का अनुभव हो रहा था। आज उसे अभाव और भी अधिक खल रहा था। कैसा-सा अभाव—कदाचित् मञ्जुश्री। अनजाने में ही वह मञ्जुश्री के घर पहुँच गया। स्पन्दित हृदय से उसने द्वार खोला पर वहाँ कोई न था। निराश होकर भी आशा के स्फुलिङ्ग लिये वह पागलों की भाँति दौड़-दौड़कर प्रत्येक स्थान खोजने लगा। पर कहीं कुछ पता न लगा। पहले से भी दुगुना अभाव लिये वह लौट गया।

समय ने एक अध्याय लौटकर दूसरा अध्याय आरम्भ कर दिया। शीलबन्धु उतावला हो उठा। उसने सोचा कि वह पुस्तकालय की खोज करेगा कदाचित् उसको कोई ऐसा चिह्न मिल जाय जिससे वह मञ्जुश्री का कुछ पता लगा सके। पर सब व्यर्थ हुआ। फिर उसने सोचा वह उन पुस्तकों का अध्ययन करेगा जिससे मञ्जुश्री को प्रत्येक बात की प्रेरणा मिलती थी। इस भाँति उसे पता लग जायगा कि मञ्जुश्री किस प्रेरणावश गृह त्यागकर चली गई है। उस समय से वह अथक परिश्रम से अध्ययन करने लगा। उसके मस्तिष्क में नीति राजनीति पर विजय पाने लगी। वह राजनीति की अपेक्षा नीति को अपने जीवन में अधिक महत्त्व देने लगा। मुख पर अध्ययन की छाप पाण्डुता के रूप में छा गई थी। उसे कुछ-कुछ भास होने लगा कि मञ्जुश्री कहाँ गई होगी; पर कुछ निश्चय न कर पाया।

शीलबन्धु उद्वेलित विकलित हृदय लिये वातायन में बैठा था। समीरण-सौरभ व्यथा का भार लिये अनमना-सा वातायन से आ-जा रहा था। एक दीर्घ निःश्वास के साथ शीलबन्धु ने 'बुद्ध का गृह त्याग' लेकर पढ़ना आरम्भ किया। पढ़ते-पढ़ते उस स्थान पर पहुँचा जहाँ एक वाक्य के नीचे गहरी रेखा खिंची थी और उसी दिन की तिथि पड़ी थी जिस दिन मञ्जुश्री घर त्यागकर चली गई थी। उसने पढ़ा—"बुद्ध भगवान् एक रात्रि को इस कलुषित संसार की ममता को त्यागकर सत्य की अमर खोज में निकल पड़े।" शीलबन्धु को समझते देर न लगी कि मञ्जुश्री इसी वाक्य से प्रेरित होकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चली गई है। वह यह न समझ सकी कि सत्य क्या है और उसकी खोज किस प्रकार होती है। पर वह जान गया कि मञ्जुश्री खोज के लिए ही निकली है। वह तुरन्त वहाँ से उठकर मञ्जुश्री की खोज में निकल पड़ा।

शीतकाल की तीर-सी सन्नाती वायु, ग्रीष्म की काट खाने-वाली लू, सभी को सहन कर चुका पर उसकी साधना पूरी न हुई। उसके हृदय-चित्रपट पर अनेक रङ्ग के चित्र खिंचते रहते थे। वह कल्पना करता, मृणाल-सी सुकोमल मञ्जुश्री किस दुर्गम पन्थ की पथिक बनी होगी। वह बुद्ध पर अत्यन्त श्रद्धा रखती थी अतः सम्भव है किसी मठ में चली गई हो। प्रत्येक मठ में जाकर मञ्जुश्री को खोजने लगा। प्रत्येक राहगीर को वह मञ्जुश्री का वर्णन बताकर पूछता कि किसी ने इस प्रकार की स्त्री को देखा है, पर कोई सन्तोषजनक उत्तर न दे सका।

मध्याह्नकाल का समय, सारी पृथ्वी ग्रीष्म से तप रही थी। शीलबन्धु विचारों में लीन राह के वृक्षों को अतीत की घटना की भाँति छोड़ता हुआ चला जा रहा था। उसकी शक्ति जवाब देने लगी थी। थककर एक टीले पर बैठ गया। हृदय में अनिश्चित भावों का भीषण संग्राम मचा था। एक राहगीर उधर से निकला। शीलबन्धु ने उसे देख अपना नित्य का प्रश्न उसके सामने भी दोहराया—"क्या यहाँ पर कोई मठ है?" राहगीर ने माथे पर से पसीना पोंछते हुए कहा—"यहाँ पर तो कोई मठ नहीं है पर यहाँ से नौ मील की दूरी पर देवालय नामक एक ग्राम है। वहाँ पर एक मठ है जिसकी सञ्चालिका एक स्त्री है। वह मठ बहुत प्रसिद्ध हो रहा है। दूर-दूर से भिक्षु वहाँ पर दीक्षा लेने आते हैं। मैं वहीं से लौट रहा हूँ। क्या अभी तक तुम्हारा सौभाग्य वहाँ जाने का नहीं हुआ?" शीलबन्धु के हृदय में, मेघ में विद्युत् के समान, आशा की एक रेखा खिंच गई। उसे विश्वास होने लगा कि अवश्य ही वह स्त्री मञ्जुश्री होगी। द्रुत गति से वहाँ से भागने लगा। उसे अपने तन-बदन की कुछ सुध न रही। कहीं कँटीले स्थानों को पार करता तो कहीं नदी को पार करता। पर उस आत्मविस्मृत तपस्वी को यह सब शून्य-सा प्रतीत होता था। तपस्या के बिना साधना पूर्ण नहीं होती।

रात्रि हो गई। आसमान में तारे छिटकने लगे। पर एक मील चलना शेष रह गया। मस्तिष्क में चक्कर आने लगे। वह चेतना शून्य हो गया। पर चेतना आते ही आशा [illegible] हो उठी और पग भी शीघ्रता से अग्रसर होने लगे। [illegible] समीप पहुँचकर ही उसके पग रुके। पैर रक्त से [illegible] शरीर पसीने में भींग रहा था। द्वार में प्रवेश करते ही [illegible] देखा कि पूर्णिमा की ज्योत्स्ना से समस्त मठ आलोकित [illegible] था। एक ओर सरोवर था दूसरी ओर बुद्ध की [illegible] मूर्ति। सैकड़ों भिक्षु बुद्ध-मूर्ति की ओर ध्यान [illegible] थे। सबसे आगे मञ्जुश्री थी। अपूर्व शान्ति का [illegible] उसे स्पष्ट दिखाई दिया कि अलौकिक प्रकाश से [illegible] एक चक्र बुद्ध-मूर्ति से उठता था और दूसरा मञ्जुश्री [illegible] से। दोनों चक्रों में एक दूसरे से मिलने में अन्तर [illegible] था। शीलबन्धु को प्रत्येक बात स्वप्नवत् जान पड़ती [illegible] उसे विश्वास न होता था कि वह इसी लोक में है। जिसकी [illegible] खोज कर रहा था, जो उसके जीवन-तिमिर को विदलित [illegible] वाला ज्योतिपुञ्ज था—वह उसके समीप था; पर उसका [illegible] न होता था कि वह उसको छू सके। उसे ज्ञात हो [illegible] कि वह तुच्छ प्राणी है और मञ्जुश्री एक महान् आत्मा। [illegible] मञ्जुश्री की साधना का अधिकारी भले ही हो सकता [illegible] उसको प्राप्त करना उसका अधिकार न था। उसकी [illegible] और एकान्त कामना आश्चर्य और महान् आत्माओं के [illegible] प्रकाश में विलीन हो गई। उसकी चेतना-शक्ति [illegible] नक्षत्रों की भाँति विलीन होती जाती थी। सहसा उसने [illegible] कि दोनों चक्र मिलकर विलीन हो गये। वह मन्त्र-मुग्ध [illegible] देखता ही रह गया। मञ्जुश्री का शरीर भूमि पर गिर [illegible] भिक्षुओं का ध्यान टूटकर मृत शरीर पर जा लगा। [illegible] एक स्वर में रोना आरम्भ कर दिया। शीलबन्धु [illegible] मृत शरीर के पास पहुँचा और भिक्षुओं से बोला—"[illegible] रोये; उसको मुक्ति और चिर शान्ति चाहिए। उसकी [illegible] अमर है। केवल स्थूल शरीर की मृत्यु हुई है।" वह [illegible] भिक्षुओं के विस्फारित नेत्र उस पर केन्द्रित हो गये। [illegible] यही वाक्य मञ्जुश्री के भी थे। भिक्षुओं ने बुद्ध-मूर्ति [illegible] चरणों में से श्वेत पुष्प उठाकर शीलबन्धु के चरणों में [illegible] कर उसको भिक्षुराज स्वीकृत किया।

उस समय से भिक्षुराज शीलबन्धु नित्य ही सरोवर से [illegible] पुष्प लाता। एक बुद्ध की मूर्ति पर चढ़ाता दूसरा मञ्जुश्री [illegible] समाधि पर।

—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा उपन्यास

श्रीयुत पदुमलाल पुन्नालाल बख़्शी, बी० ए०

(१)

२५ वर्ष पहले की बात है; युवक का नाम था नरेन्द्र और युवती का नाम था विमला। युवक २४ वर्ष का था और युवती १७ वर्ष की। आज २५ वर्ष के बाद मेरे लिए नरेन्द्र २४ वर्ष का ही युवक है और विमला १७ वर्ष की युवती। काल की गति ने उनकी अवस्था पर प्रभाव नहीं डाला। मैं स्वयं जीर्ण हो गया, पर नरेन्द्र और विमला को जीर्णावस्था स्पर्श नहीं कर सकी। उन्हें मैंने २५ वर्ष पहले जिस अवस्था में देखा था उसी अवस्था में अब भी देख रहा हूँ। उनकी तरुणावस्था अक्षय्य है, क्योंकि नरेन्द्र मेरे अलिखित उपन्यास का नायक है और विमला नायिका। सभी उपन्यासों के नायक तरुण ही होते हैं, लेखक भले ही वृद्ध हो। इसी लिए मेरी अवस्था के साथ उनकी अवस्था में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। अवस्था में परिवर्तन न होने पर भी भावों में परिवर्तन अवश्य हो गया है। पहले उनकी जीवन-कथा में मैं साहस की दीप्ति, धैर्य की दृढ़ता, प्रेम की उदारता और त्याग की महत्ता देखता था। इसी से उन पर जो विपत्तियाँ आती थीं, जो सङ्कट आते थे, वे उनके गौरव के लिए छोटी हो जाते थे। फिर मैंने उनमें सुधार की प्रबल भावना देखी। विधवा-विवाह, स्त्री-शिक्षा, जाति-भेद, वृद्ध-विवाह, पर्दा आदि सामाजिक बातों को लेकर उन लोगों ने समाज को कलंक प्रदर्शित करने का जो प्रयत्न किया उसमें मैंने एक गौरव का अनुभव किया। उनमें मैंने क्रान्ति के लिए एक आग्रह देखा। इसके बाद उनमें मैंने एक विलक्षण अहंवृत्ति देखी। जब जब कभी मैं उनकी बातें सोचता हूँ तब उनकी तरुणावस्था को उन्माद में मन की एक विकृत स्थिति ही पाता हूँ। उनके प्रेम में मैं असंयम देखता हूँ, उनकी महत्त्वाकांक्षा में मैं एक उच्छृङ्खलता का अनुभव करता हूँ। एक क्षणिक आवेग, एक क्षणिक उमङ्ग, एक क्षणिक उल्लास के लिए वे जो कुछ कर बैठते हैं उसमें मैं उनके चरित्र की हीनता देखता हूँ। उनमें विश्वास की जो दृढ़ता है वह मेरे लिए अब उपहासजनक है। मैं यह समझता हूँ कि सत्य की कसौटी पर उनकी अधिकांश धारणायें असत्य और सारहीन सिद्ध हो जायँगी।

(२)

उस दिन 'रैन बसेरा' और 'टूटती ज़ञ्जीरें' के समान बीसवीं शताब्दी के कितने ही 'विश्व-विख्यात' मौलिक उपन्यासों को लेकर मेरे एक पुस्तक-विक्रेता आया, तब मेरे मन में यह भाव हुआ कि यदि मैं भी तरुण होता तो एक ऐसा ही कलापूर्ण उपन्यास लिखकर अपने कल्पना-जगत् के समालोचकों को ललकारता कि मेरी इस कल्पना को आग में डालकर देख, वह दीप्तिमती होकर निकलती है या नहीं। कालिदास ने कहा भी है कि 'हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकापि वा।' पर—हाय, यही 'पर' तो मेरे जीवन का सबसे बड़ा कुग्रह है। उसी के कारण बड़ी प्रबल चाह होने पर भी मुझे राह नहीं मिली।

बाल्यकाल से ही मैं उपन्यास पढ़ता आ रहा हूँ। पर उपन्यास लिखने की बात मैंने सोची १९१६ में। दो दो सौ और तीन-तीन सौ पृष्ठों में कितने ही अच्छे उपन्यास लिखे जा चुके हैं। पर छोटे उपन्यासों के प्रति उस समय मेरी विशेष श्रद्धा नहीं थी। अधिकांश युवकों की तरह मेरी भी यही भावना थी कि उपन्यासों का महत्त्व उनकी पृष्ठ-संख्या पर निर्भर है, इसी लिए मैंने सोचा कि मेरे उपन्यास में १२०० पृष्ठ हों और वह चार भागों में समाप्त हो। पृष्ठों, अध्यायों और भागों के निर्णय में मुझे विशेष कठिनता नहीं हुई। नायक और नायिका के नामकरण में भी मुझे कष्ट नहीं हुआ। मैंने अपने उपन्यास के नायक को 'नरेन्द्र' बनाया और नायिका को 'विमला'। बात यह है कि जो उपन्यास का नायक होता है, वह कैसी भी स्थिति का क्यों न हो, नरों में इन्द्र ही होता है। इसी प्रकार पति का परित्याग कर, लोक-मर्यादा को भङ्ग कर, लोक-लज्जा का भी तिरस्कार कर उपन्यास की नायिका पुनीत प्रेम-पथ की अनुगामिनी होने के कारण 'विमला' ही रहती है। यहाँ तक तो मैं निश्चित कर चुका, पर जब मैं कथावस्तु का निर्माण करने बैठा तब मुझे कठिनता का अनुभव हुआ। मैं कितने ही प्रकार के उपन्यास पढ़ चुका था। कुछ में एक से एक रहस्यमय रोमाञ्चकारी भेद थे, कुछ में एक से एक विस्मयजनक घटनायें थीं, कुछ में प्रेम की विलक्षण समस्यायें थीं, कुछ में एक से एक विचित्र अन्तर्द्वन्द्व, अलौकिक भाव, असाधारण परिस्थिति और अपूर्व चरित्र थे। कौन सा विषय लूँ, यही सोचते-सोचते मेरी तरुणावस्था के कितने ही वर्ष व्यतीत हो गये। पर मेरे उस उपन्यास का एक भी पृष्ठ नहीं लिखा गया। मैं तो अपने उपन्यास की कथा-वस्तु तक निश्चित न कर सका, परन्तु हिन्दी में कथा-साहित्य की गति नहीं रुकी। मैं जब तक अपनी ही कल्पना के जगत् में लीन रहा तब तक कितने ही तरुण कलाकारों ने हिन्दी-साहित्य में क्रान्ति मचा दी। उसी के कारण मेरे भावों में भी परिवर्तन हो गया। रहस्यमय घटनाओं का उद्घाटन छोड़कर मैंने पहले प्रेम की कथा में भी जातीय जीवन का सुधार देखा। फिर मैंने देश की यथार्थ दुरवस्था का चित्र अपने हृदय पर अङ्कित कर क्रान्ति की आवश्यकता का अनुभव किया। फिर मैं मनोविश्लेषण में लगा। आज मैं अपने इन्हीं सब भावों के परिवर्तन को लेकर अपने अलिखित उपन्यास की कथा बतलाना चाहता हूँ।

प्रारम्भ में मैंने कथा-वस्तु के लिए एक उपाय सोचा। प्रत्येक वर्ष के आरम्भ में मैं एक कथावस्तु निश्चित करता, फिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक वर्ष तक उसी को लेकर अपने मन में एक औपन्यासिक जगत् की कल्पना कर उसमें नायक के रूप में मैं स्वयं प्रेम और त्याग के कितने ही साधारण और असाधारण काम करता, पर दूसरे वर्ष आपसे आप मुझे उससे असन्तोष हो जाता। सिनेमा में किसी चित्र को कुछ दिनों तक लगातार देखने से आपसे आप जिस तरह उससे विरक्ति हो जाती है उसी तरह मुझे भी अपने उस कल्पित जीवन से अरुचि हो जाती थी। तब मैं किसी अन्य उपन्यास का आधार लेकर अपने उस कल्पित जीवन को परिवर्तित कर देता। इस तरह मेरे इस अलिखित उपन्यास के अभी तक कितने ही रूपान्तर हो गये; पर अपने किसी भी कल्पित जीवन से मुझे सन्तोष नहीं हुआ। मुझे ऐसा जान पड़ा कि इन सभी जीवनों में मनुष्यत्व की यथार्थ गरिमा का अभाव है।

(३)

प्रेम के रहस्यमय जगत् से ही मेरे भी उपन्यास का आरम्भ हुआ था। प्रेम की प्रथम अवस्था में एकमात्र मोह की ही प्रबलता रहती है। इसलिए उस जगत् में पदार्पण करते ही न तो युवक ही यह समझ पाता है कि वह क्यों किसी एक ही युवती की ओर आकृष्ट हो रहा है और न युवती ही यह जान सकती है कि वह क्यों किसी एक ही पुरुष की ओर खिंच-सी रही है। इसी लिए नायक के चरित्र में किसी प्रकार की असाधारणता लाकर नायिका को उसकी ओर आकृष्ट करना पड़ता है। धन और प्रभुत्व की गरिमा जीवन में चाहे कितनी ही स्पृहणीय क्यों न हो, उपन्यासजगत् में वह हेय है। इसी लिए नायक का चरित्र दिखलाने के लिए उसे असाधारण गुण-सम्पन्न ही करना पड़ता है। संसार के कर्तव्यों में निरत, धर्मभीरु, सुशील युवक में जो साधारणता रहती है, वह उसे आकर्षक नहीं बनाती है। नायक हो अथवा नायिका, उसमें विलक्षणता होनी ही चाहिए। रूडोल्फ़ रिसेंडिल की तरह अपने परिजनों की दृष्टि में हीन होने पर भी उसके चरित्र में गुण की वह गरिमा आपसे आप ईश्वर-प्रदत्त शक्ति की तरह उत्पन्न हो जानी चाहिए, जिससे वही अपने संसार का नियन्ता हो जाय और संसार के अन्य सब लोगों की हीनता उसके गौरव के कारण और भी अधिक सुस्पष्ट हो जाय।

(४)

बाह्य-जगत् में प्रेम के द्वारा किसी सुन्दरी पर किस प्रकार हठात् विजय प्राप्त की जा सकती है, यह मेरे लिए तब एकमात्र कल्पना का ही विषय था। बात यह है कि हम लोगों के युग में तरुणों को वह अधिकार भी नहीं था जो अब है। हम तो बाल्यकाल में ही उन मन्त्रों के द्वारा, जो हम लोगों के लिए दुर्बोध थे, उस बालिका का पाणिग्रहण कर लेते थे जो हम लोगों के लिए सर्वथा अपरिचित थी। इसके बाद प्रेम के रहस्यमय आगार में हम लोग प्रेम के दैनिक मान और अभिमान की लीलाओं में प्रेम के पुलक के साथ रमणी हृदय पर अधिकार करते थे। परस्पर सम्बन्ध होते ही युवक और युवती दोनों के ही हृदय में पहले यही भाव रहता है कि किसी एक में वे अपने को ऐसा [illegible] दें कि कोई भेद ही न रह जाय। प्रेम के लिए हृदय [illegible] लालसा अज्ञात रहने पर भी प्रबल रहती है। परिचित [illegible] यह अज्ञात लालसा जाग्रत्-सी हो जाती है। ज्यों-ज्यों [illegible] और युवती का परस्पर सम्बन्ध बढ़ता जाता है त्यों-त्यों [illegible] भी बढ़ती जाती है। युवती सोचती है, कोई एक ऐसा [illegible] उसको अपनी आराध्य देवी बनाकर उसी में लीन रहता [illegible] युवक सोचता है, कोई एक ऐसी है जो उसकी [illegible] होकर भी उसी के प्रेम की दासी है। यही अहंवृत्ति [illegible] आकर्षण को प्रेम के रूप में बदल देती है। तब प्रेमी [illegible] प्रियतमा के लिए और प्रेमिका अपने प्रियतम के लिए [illegible] त्याग देने के लिए तत्पर रहती हैं। त्याग की यह वृत्ति [illegible] प्रबल हो जाती है कि कष्ट और वेदना में ही प्रेम की [illegible] समझी जाती है। ऐसे प्रेम की परीक्षा के लिए वासना को [illegible] करनेवाली किसी 'माया' की भी सृष्टि करनी पड़ती है। [illegible] ओर वासना का उन्माद रहता है और दूसरी ओर प्रेम [illegible] रहता है। उन दोनों के भीतर से जीवन की यथार्थ [illegible] लक्षित हो जाती है। जब तक प्रेम में कर्तव्य और सेवा [illegible] नहीं है तब तक वह वासना के ही रूप में रहता है। [illegible] के वशीभूत होने पर शरीर और मन शिथिल हो जाते हैं। [illegible] विवश होकर अपनी वासना के दास बन जाते हैं और तब वह [illegible] हमें जिस ओर खींच ले जा सकती है। प्रेम सौन्दर्य की [illegible] है पर उसमें कर्तव्य का गौरव विद्यमान है। मध्य युग में [illegible] प्रकट कर वीर किसी रमणीरत्न को प्राप्त करते थे। [illegible] युग में प्रेम के द्वारा पौरुष की परीक्षा होती है। यही [illegible] कि कितने ही उपन्यासकार नायक से किसी सङ्कट में पड़ी [illegible] नायिका का उद्धार कराकर उनमें प्रेम का सूत्रपात करते [illegible] इसी लिए बाह्य घटनाओं के ही आधार पर प्रेम का परिचय [illegible] करने के लिए मुझे भी एक से एक विचित्र परिस्थिति की [illegible] करनी पड़ी। कलकत्ते के स्टेशन पर संयोगवश ओवरकोट [illegible] जाने के कारण मुझे एक विचित्र षड्यन्त्र का भेद ज्ञात हो [illegible] उसी के कारण मुझ पर अचानक विपत्ति आ गई। पर [illegible] के इस निशाकाल में मेरे लिए एक अपूर्व सुन्दरी प्रतीक्षा [illegible] थी और जब निशाकाल का अवसान हुआ तब सभी [illegible] पार कर मैं उस रमणी रत्न को पा गया।

(५)

क्रान्ति-युग ने प्रेम का एक नया ही आदर्श उपस्थित [illegible] दिया। परिचित अथवा अपरिचित नायिका के साथ [illegible] नायक का प्रेम-सम्बन्ध स्थापित करना कठिन नहीं रह [illegible] बाह्य घटनाओं की कोई आवश्यकता नहीं रह गई। [illegible] स्थिति में नायक क्यों न हो, उसे क्रान्ति का नेता अथवा [illegible] बना देने से उसका चरित्र रहस्यमय और आकर्षक [illegible] जाता है। तब आप से आप उसमें एक गौरव भी आ [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के व्यभिचार में भी सामाजिक अत्याचार के प्रति एक विद्रोह रहता है और उसके सभी साधारण कृत्यों में कोई अलौकिक भावना या असाधारण देशभक्ति रहती है। अहङ्कार उनके लिए स्वाभाविक है। अपनी उस अहंवृत्ति के कारण वह अपने को छोड़कर सभी मनुष्यों को केवल पशु के ही रूप में देखता है। सभी में वह एकमात्र पाशविक भावना की समता पाता है। इसी से जिस युवती पर उसका स्नेह है, उसके योग्य-पात्र वह किसी को भी नहीं समझता। किसी ने भले ही अच्छी डिग्री प्राप्त कर ली हो, किसी के पास भले ही अच्छी सम्पत्ति हो, किसी की चाहे कितनी भी प्रशंसा हो पर इन सभी गुणों से युक्त होकर कोई भी युवक वह देवत्व नहीं प्राप्त कर सकता जिसके कारण वह नायक के स्नेहपात्र का प्रेम पा सके। उस प्रेम पर एकमात्र नायक का ही अधिकार हो सकता है। इसी अहंवृत्ति के कारण नायक यह समझता है कि वह स्वयं सुन्दर है, अँगरेज़ी पोशाक उसके शरीर में खूब अच्छी लगती है और अँगरेज़ी भाषा पर उसकी इतनी अधिक योग्यता है कि वह उसके लिए (धात्री-भाषा) है। ये सभी नायक अपनी अहंवृत्ति के कारण ही समाज के प्रति विद्रोह करते हैं। यदि वे वर्जित मुहल्लों में जाते हैं तो एक तीव्र घृणा या उत्तेजना का भाव प्राप्त करने के लिए। यदि यह बात नहीं है तो वे एक तीव्र सहानुभूति और सेवा का भाव लेकर जाते हैं। पतितायें—उनको देखकर ही उनसे अपने हृदय की निगूढ़ व्यथा प्रकट कर देती हैं। समाज उनके लिए केवल दोषों का समूह रहता है और उनकी प्रियतमाओं के सभी पति सभी गुणों से हीन रहते हैं। तब उन्हीं के अनुकूल मेरे भी वासना-जगत् में क्रान्ति आ गई।

(६)

एक दरिद्र के घर में जन्म लेकर मैं अपनी क्रान्ति-भावना के कारण एक लक्षाधीश की युवती कन्या का प्रेमपात्र बन गया। उस युवती ने अपना सर्वस्व मेरे चरणों पर समर्पित कर दिया। पर देव की तरह उसके प्रेमोपहार को स्वीकार करके भी मैं निर्विकार ही बना रहा। वह युवती यह बात नहीं समझ सकी कि वह किस प्रकार मेरे मन पर विजय प्राप्त कर ले। मैं केवल देश की चिन्ता में लगा रहा। उसके लिए मुझ पर कितने ही सङ्कट आये। उन सङ्कटों से मेरा उद्धार किया उसी युवती ने। पर उस युवती की ओर मैं आकृष्ट ही नहीं हुआ। मेरा आकर्षण था एक दूसरी स्त्री पर जो मज़दूरों के साथ रहकर देश-सेवा का काम करती थी। मैं उसकी असीम देश-भक्ति, साहस, सहिष्णुता और सहानुभूति पर मुग्ध था। मैं उससे प्रेम नहीं करता था, मैं उसकी ओर एक भक्ति का भाव रखता था। पर उस धनी युवती ने मेरे सच्चे भाव को न समझकर उस अन्य स्त्री के प्रति विद्वेष और ईर्ष्या के भाव से प्रेरित होकर एक ऐसा षड्यन्त्र किया, जिसके कारण उस बेचारी के प्राण ही चले गये। परन्तु मरते समय उसने उस युवती को क्षमा प्रदान कर दी। मैंने भी उसी के नाम की माला जपते हुए अपना जीवन देशसेवा में समर्पित कर दिया। इसी प्रकार एक धनिक के घर में जन्म लेकर मैंने किसी पतिता की कन्या से प्रेम कर अपनी प्रियतमा के लिए सर्वस्व त्याग कर दिया। फिर संसार से विरक्त होकर मैं देश-सेवा में निरत रहा। अन्याय के विरुद्ध लड़कर मैंने जेल की यात्रा की और फिर जेल से छूटकर मैंने देश में क्रान्ति मचा दी। पददलित और तिरस्कृत लोगों के साथ रहकर प्रेम की सच्ची अनुभूति से प्रेरित होकर मैंने कितनी ही सेवायें कीं और कितने ही कष्ट सहे। प्रेम की उलझन में भी पड़कर मेरे हृदय में कितने ही अन्तर्द्वन्द्व हुए। बाल्यकाल में ही माता-पिता के द्वारा जिस कन्या के साथ मेरा विवाह स्थिर हो चुका था, उससे परिचय प्राप्त न कर सकने के कारण मैंने घर छोड़कर स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करने का निश्चय किया। बाहर एक व्यक्ति से परिचय होने पर उसकी सहानुभूति के कारण मैं उसका मित्र बन गया। अपने उस धनहीन और प्रतिष्ठाहीन मित्र की एकमात्र पितृमातृहीन बहन पर मेरा अनुराग हो गया। अपने मित्र की अचानक मृत्यु हो जाने पर उसकी बहन को, विवाह न होने पर भी, सामाजिक क्रान्ति का आदर्श उपस्थित करने के लिए मैं पत्नी के रूप में देखने लगा। संयोगवश कलकत्ते में एक लड़के को पढ़ाते समय एक अपूर्व सुन्दरी से परिचय हो गया। धीरे-धीरे परिचय ने घनिष्ठता का रूप धारण कर लिया और घनिष्ठता ने प्रेम का। मैं उस सुन्दरी के चरणों का क्रीत दास हो गया। अब अपनी अपरिणीता पत्नी के प्रति मुझे एक विरक्ति-सी होने लगी। इसी समय यह भी मालूम हुआ कि उसी अपूर्व सुन्दरी से मेरा विवाह स्थिर हुआ था और वह अभी तक कुमारी ही है। तब क्या किया जाय? यक्ष्मा के रोग से पीड़ित होकर मेरे मित्र की बहन स्वयं मर गई। पर मरते समय वह हम लोगों को प्रेम के अक्षय सूत्र में जोड़ गई। इस प्रकार कर्तव्य और स्नेह, वासना और प्रेम, लोभ और त्याग की कितनी ही कठोर परीक्षाओं में मैं उत्तीर्ण हुआ। अपनी प्रियतमा की खोज में, सौन्दर्य के अन्वेषण में और देश की सेवा में मैं जगह-जगह भटकता फिरा। इस तरह कितने ही प्रकार के कल्पित जीवनों का अनुभव करने पर भी मैं अपना उपन्यास नहीं लिख सका, क्योंकि किसी में भी मैं अपने जीवन की यथार्थता नहीं पा सका। मैं यही सोचता रह गया कि जीवन की यथार्थ सार्थकता कहाँ है, और हिन्दी-साहित्य के क्षेत्र में कितने ही उपन्यास-रत्न अपनी अपूर्व दीप्ति फैलाने लगे।

(७)

इसमें सन्देह नहीं कि उपन्यासों में प्रेम की अवस्था का वर्णन करते समय तरुण कलाकारों ने एक से एक विलक्षण परिस्थिति उपस्थित कर दी है। पर क्या प्रेम की इन्हीं विलक्षण परिस्थितियों में पड़कर हम अपने जीवन को सफल बनाते हैं? हम लोग अपने दैनिक जीवन में सुख-दुःख का जो अनुभव करते हैं उसमें क्या इस औपन्यासिक जीवन का आभास मिलता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमें साधारण लोगों के साथ साधारण कामों में व्यस्त रहकर जो साधारण जीवन व्यतीत करना पड़ता है उसी में हम सुख और सन्तोष का अनुभव कर लेते हैं। तब मैंने यह निश्चय किया कि कल्पना की असाधारण सृष्टि को छोड़कर मैं यथार्थ जीवन में ही प्रविष्ट होकर देखूँ कि यहाँ जीवन की क्या गरिमा है।

संसार में कुछ बड़े होते हैं और अधिकांश क्षुद्र। बड़ों की गरिमा ही उनके व्यक्तित्व को उनके युग में ऐसा विलीन कर देती है कि युग से पृथक् उनका अपना कोई जीवन ही नहीं रह जाता। बड़ों की क्षुद्र बातों को भी उनकी महिमा गौरवमय बना डालती है। हम लोग बड़ों का धैर्य, साहस, सहिष्णुता और त्याग देखकर विस्मय-विमुग्ध हो जाते हैं। उनमें असाधारण क्षमता रहती है, अपूर्व बुद्धि रहती है। इसी से उनके सारे जीवन में महिमा की एक दीप्ति आ जाती है। उनके बाल्यकाल की लीलायें, उनकी छात्रावस्था की उच्छृङ्खलतायें, उनकी तरुणावस्था की वासनायें सभी असाधारण हो जाती हैं। क्षुद्रों के लिए यदि कोई गौरव की बात होती तो वे क्षुद्र ही क्यों रहते? मानवीय भाव रखकर भी हम अपने मनुष्यत्व का क्या गर्व कर सकते हैं? हम लोगों में न संयम है, न धैर्य है, न साहस है और न त्याग है। हम लोग अपनी ही कामनाओं के दास होते हैं। हम लोग किसी भी प्रलोभन में पड़कर कोई भी कुत्सित कार्य कर डालते हैं। इसी लिए जब मैं अपने गाँव के कुछ लोगों के सम्बन्ध में तथ्य संग्रह करने बैठा तब मुझे यही जान पड़ा कि संसार में सर्वत्र दम्भ, छल, कपट और कामुकता ही है। समाज में जिन लोगों का जितना ही अधिक मान है उनके विषय में उतनी ही अधिक निन्दनीय कथायें मुझे सुनाई गईं। मैंने भी देखा कि सम्पत्ति के बटवारे का प्रश्न आने पर पिता और पुत्र तथा माता और पुत्र में भी घोर विद्वेष हो गया। न कोई मुझे 'वैकुण्ठ मजूमदार' मिला, न 'गोकुल' मिला और न 'भवानी' मिली। अपने गाँव में मैंने वासना और विद्वेष, लोभ और कपट की तो कितनी ही लीलायें देखीं, पर दुश्चरित्र में मुझे कोई 'विनोद' नहीं मिला।

अतृप्त वासना को प्रेम के उज्ज्वल रूप में परिणत होते हुए मैंने नहीं देखा। काम, क्रोध, मोह और लोभ की घटनाओं के भीतर आत्मा की ज्योति का विकास भी मैं नहीं देख सका। अब मैं यह सोचने लगा कि उपन्यासों में भी तो नायकों के सम्बन्ध में कितनी ही छोटी-छोटी बातें लिखी रहती हैं। उनके चरित्र में गरिमा कैसे आ जाती है। अधिकांश उपन्यासों के नायक विलक्षण होने पर भी महापुरुष नहीं होते। उनके चरित्र में जो क्षमता या अक्षमता प्रदर्शित की जाती है वह असाधारण नहीं होती। तो भी उनके चरित्र में जो एक गरिमा रहती है, यथार्थ जगत् के किसी भी साधारण व्यक्ति के चरित्र में नहीं आती। मैंने तो विचार कर यही निष्कर्ष निकाला कि उपन्यासों में लेखकों का एक महत् उद्देश्य रहता है। अपने जीवन को चाहे जितना निरुद्देश्य समझे, श्रीकान्त अपने चाहे जितना धिक्कार दे, पर लेखक ने उनके चरित्रों में उच्चतम भावों का समावेश कर दिया है। उन क्षुद्र वर्णन में लेखकों के प्राणों का आवेग है। नायक के सुख में मानवजाति की वेदना और आनन्दमयी प्रवृत्ति केन्द्रस्थ हो जाती है। नायक के व्यक्तित्व में मानवता का रूप स्पष्ट हो जाता है। उनकी लाञ्छना उनके व्यक्तित्व की क्षुद्र सीमा भंग कर मनुष्यमात्र की लाञ्छना हो जाती है। उनके कष्ट मनुष्य मात्र के कष्ट हो जाते हैं। इसी लिए हम देवदास के लिए रोते हैं और शेखर के लिए व्याकुल होते हैं।

यथार्थ जगत् में अपने अथवा दूसरों के मनोविश्लेषण से हम केवल हीनता का ही अनुभव करते हैं। मुझे हीनता की कथा लिखने में ग्लानि होने लगी। मैंने तभी यह खोज की। सभी तरह की भूलें कर हम लोग जैसे ज्ञान के पथ पर अग्रसर होते जा रहे हैं, उसी तरह सभी प्रकार के अपराध कर हम लोग जीवन-पथ पर भी अग्रसर होते हैं। कष्ट और वेदना के द्वारा हमारे जीवन में विशुद्धि आती है। अपने अज्ञान और मोह के कारण सत्पथ से भटककर यातना और यन्त्रणा सहकर हम अन्त में अपने अभीष्ट स्थान को पहुँच जाते हैं। इसी सत्य सर्वोच्च आदर्श को लक्ष्य कर जब हम अपने जीवन की आलोचना करेंगे तब हमें अपने जीवन की सभी घटनाओं में एक शृङ्खला दृष्टिगोचर होगी जिसके कारण अनन्त अतीत अनन्त भविष्यकाल से सम्बद्ध हो जाता है। इसी से शकुन्तला या 'मिरांडा' सभी युगों में चिर-नवीन बनी रहती है। इसके लिए उदात्त कल्पनाशक्ति चाहिए और गम्भीर सहानुभूति। तभी जीवन की क्षुद्र लीलाओं में हम मनुष्य की वह शक्ति देख सकेंगे जो इसे सभी स्थितियों में ऊपर उठाकर चरित्र का गौरव प्रदान करती है। तभी किसी देवदास या संदीप में मनुष्य की एक गरिमा लक्षित होती है। जहाँ किसी उच्च आदर्श की अनुभूति नहीं है वहाँ हम बाजीगर के तमाशों की तरह एक विलक्षण खेल ही देखते हैं। उनमें सत्य नहीं रहता। उनमें सत्य विकृत हो जाता है। हिन्दी के अधिकांश उपन्यासों में कदाचित् इसी का अभाव है। इसमें तो सन्देह नहीं कि मुझमें किसी भी उच्च आदर्श की अनुभूति नहीं होने के कारण मैं उपन्यास लिखने में असमर्थ रहा और मेरी इच्छा मन में उठकर मन में ही विलीन हो गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपेक्षितों की दुनिया

श्रीयुत कृष्णचन्द्र शर्मा, बी० ए०

पर्वतीय जीवन के कोलाहल से दूर, शैल-श्रेणियों से परिवेष्टित [illegible] शिखर पर अवस्थित, अपनी सीमित परिभाषा में ही एक [illegible], भग्नाश प्राणियों का संसार! क्रिया-शैथिल्य और निर्जीव [illegible] का परिचायक मात्र। जीवन-सञ्चार के मुखर चिह्नों [illegible] सर्वथा अभाव। अवसान-क्षणों के कुछ तन्द्रिल, कुछ [illegible] और कुछ असञ्जीवी श्वासों का शिथिल व्यापार। जहाँ [illegible] से तो नहीं, किन्तु पार्श्व से देखने पर जीवन अपने [illegible] लड़खड़ाते पैरों पर डगमगाता-सा दिखाई दे ही जाता है। ठीक [illegible] ही दुनिया, जिसका आधार ज्वालामुखी हो। आकुल [illegible] को प्रतिक्षण विस्फोट की आशङ्कित प्रतीक्षा! फिर भी [illegible] मृत्यु-मित्र मर्त्य यदा-कदा जीवन का आभास पा, मधुर स्वप्न [illegible] विभोर, अनजाने में ही मुसकरा उठते हैं। उस मुस्कान के [illegible] आच्छादित विवरों में जाग्रत् जीवन की कोई कहानी सोई रहती [illegible]। भूलों का विस्मृत-तुल्य कोई इतिहास-चित्र भाषा में अङ्कित [illegible] है। वहाँ के मनुष्य अथवा प्राणी कहे जानेवाले सभी [illegible] किसी न किसी झिलमिल रहस्य के रूप होते हैं। सभी [illegible] रहस्य का आलिङ्गन किये उस निश्चित अन्तवाले पथ पर [illegible] रहते हैं जो जीवनयात्रा का सम्भावी मृत्यु-मार्ग है।

तमिस्रा के कज्जलाक्त नयनों से तमचूर्ण की वर्षा होने [illegible] है। प्रकाश पर अन्धकार के इतने अपारदर्शी पट पड़ [illegible] हैं कि हताश हृदय में उद्भावित आशा की रश्मि का कोई [illegible] रूप रह ही नहीं जाता। तथापि मनुष्य की वैज्ञानिक [illegible] से पर्वतों के कुक्षि-प्रदेश तक आलोकित हो उठते हैं। [illegible] कोहरे में बिजली की धुँधली ज्योति प्रकाश के छाया-लेख-सी [illegible], सजीवता से परिपूर्ण, जान पड़ती है। उस दूरस्थ शिखर [illegible] भी उस उपेक्षित लोक के शतशः वातायनों से प्रकाश के [illegible] कर वाष्प का छादन सरकाते हुए कम्पित कराग्र से [illegible] का हृदय टटोलने के लिए आकुल रहते हैं। भौतिक [illegible] रीते मानस की कङ्गाली को दूर कर ही न पा रहा था। [illegible] अभाव की ही ओर मैत्री भाव से उन्मुख हो कोई समाधान [illegible] लिया चाहता था।

क्षय-रोगियों के वार्ड में कोई अपने पार्श्वशायी रोगी से [illegible] रहा था—देखिए आप बहुत असावधानी कर रहे हैं। [illegible] बढ़ रही है। कोई ऊनी वस्त्र ले लीजिए न!

"नहीं, मैं ठीक हूँ।"

"मैं कैसे मान लूँ। आप नये-नये आये हैं। अभी [illegible] की ऋतु से कोई परिचय नहीं। कल तक तो आपके इस [illegible] पर एक स्त्री थी।"

"अब क्या वह कहीं अन्यत्र चली गई!"

"हाँ, उसकी दर्दभरी कहानी का ही अन्त हो गया।"

"अन्त!" वह हँस पड़ा। बोला—अच्छा ही हुआ। यह संसार इतना सुन्दर नहीं है कि बिना किसी विशेष आकर्षण के ही खींचा-तानी करते हुए रहें। जब हमारे प्रिय जनों का अनुराग या मोह ही हमारे प्रति नहीं रह जाता तभी हम यहाँ आते हैं। एक व्यक्ति अपनी जान के मोह के कारण हमें अपने से पृथक् कर देता है; और एक हम हैं जो अपने कहे जानेवालों को ही अपने से हटते देख स्वयं इस जीवन से हट जाना चाहते हैं। एक केवल अपने जीवन की सुरक्षा चाहता है और दूसरा केवल अपनत्व! बुझते दीपक को चुकते स्नेह से कोई विशेष लोभ नहीं रह जाता। इसे यदि कुछ चाहिए तो केवल वही ज्योति जो अन्तिम स्नेह-बिन्दु तक उसका साथ दे सके।

"आप बहुत अधिक बोलते हैं। वाणी का यह अपव्यय भी उचित नहीं। इस रोग के रोगी को प्रत्येक दृष्टि से संयमी होना चाहिए।"

"मैं नहीं जानता कि संयम से आपका क्या आशय है। हमारे पास रह ही क्या गया है जिसका संयमन करें! यदि कुछ शेष है भी तो उसे शीघ्रता से व्यय करके सफल कर देना चाहिए। जब जीवन इतना अनिश्चित है तब कुछ भी शेष रखकर क्या करेंगे! यदि कोई निरर्थक साध भी रह गई तो मरणकाल में शान्ति न होगी। मैं तो ऐसी अवस्था में आँखें मींचना चाहता हूँ जब कि असन्तोष करने को कुछ रह ही न जाय।"

"अच्छा, अब आप और न बोलिए। आपके विचार बहुत ही उग्र हैं। आप थक भी गये होंगे।"

"थकान तो लम्बे जीवन की एक-एक घड़ी को देखकर आती है। फिर निर्वाणोन्मुख दीपशिखा तो भभका ही करती है। निर्वाण भी सुन्दर शब्द है। निर्वात दीपक का बुझ जाना। मैं भी ऐसे ही बुझना चाहता था। किन्तु देखता हूँ कि जीवन में कुछ ऐसे प्रबल झोंके आ रहे हैं जो कभी सोते-सोते या जागते-जागते ही मेरी जीवन-ज्योति को अपने आँचल में लपेटकर ले जायँगे। फिर मैं उसका विश्वास करके क्यों चुप रहूँ।"

"अच्छा, अब तो काफ़ी कोहरा अन्दर घुस आया है। भारी और घना भी है। यह शाल ले लीजिए, मेरे पास फ़ालतू ही है।"

उसका शाल लेने के लिए बढ़ता-बढ़ता हाथ रुक गया। उसकी फटी आँखें जता रही थीं कि किसी अद्भुत से उसका साक्षात् हो गया। कभी-कभी परिचित भी अद्भुत बनकर ही मिलते हैं। किन्तु जिस परिचय का प्रयत्न करके गला घोंटा गया हो उसको जगाने की चेष्टा करने से लाभ ही क्या! उसने अन्यमनस्क होकर कह दिया—लेकिन तुम तो औरत हो?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाल बढ़ाता हुआ हाथ सिमट गया। धीमे स्वर में कहा—सम्भवतः आप औरत को पाप समझते हैं। पाप ही सही, पर मैंने यह कुछ जानकर तो नहीं किया।

वह ज़ोर से हँस पड़ा। अकारण ही देर तक हँसता रहा। स्त्री ने क्षुब्ध होकर कहा—आप फिर हँस पड़े। इस तरह मत हँसा करिए। यहाँ एक मास से रहते-रहते इस हँसी से मैं इतनी अधिक परिचित हो गई हूँ कि अब यह मुझे बहुत ही भयानक लगती है। अनेक को मैंने मृत्यु के पूर्व इसी प्रकार हँसते देखा है।

"तो तुम्हारा भय अभी मरा नहीं। जीवन के साथ तो सभी कुछ नष्ट हो जाता है। अच्छा हो यदि अवसान के पूर्व ही भय का अन्त कर दिया जाय। कभी आप अपनी हँसी से दूसरों को आकुल कर डालती होंगी। पर आज.....हूँ, तो आपको मेरा हँसना अच्छा नहीं लगता। इस छोटे-से परिचय में ही प्रिय-अप्रिय का प्रश्न उठ गया। अच्छी बात है, अब नहीं हँसूँगा। केवल आप ही के सामने न हँसने की चेष्टा करूँगा। पर मैं सविश्वास नहीं कह सकता कि इस हँसी को बस छोड़ ही दूँगा।"

डाक्टर के आने का समय हो रहा था। यह रात्रि की अन्तिम बिज़िट होती थी। डाक्टर आये और सबको देखकर यथोचित प्रबन्ध करने के अनन्तर चले गये। नौकरों ने खिड़कियों पर कोहरा रोकने के लिए भारी पर्दे डाल दिये थे। अब सोने का समय हो गया था, अतएव कुछ धीमे हरे लट्टुओं को छोड़कर वार्ड भर के सारे बल्ब बुझा दिये गये थे।

सोने की चेष्टा करते हुए पुरुष ने कहा—लाइए, वह शाल दे ही दीजिए। इस प्रथम वार्ता में ही हम इतने घनिष्ठ हो गये हैं, कि अब मैं आपकी प्रत्येक वस्तु को या तो अपनी, अथवा उस पर कुछ अधिकार, ही समझने लगा हूँ।

कहते-कहते धीमी हँसी फूट पड़ी। क्षमा-याचना-सी करते हुए बोला—अभी मैं लाचार हूँ। हँसी आ ही जाती है। मुझे आज हँसी यही सोचकर आती है कि आप बड़ी भावुक हैं।

"आपको क्या भावुकता से चिढ़ है?"

"कभी थी। पर अब तो धीरे-धीरे अभ्यस्त होता जाता हूँ। निराश प्राणियों को भावुकता ही तो कुछ काल के लिए बहलाये रखती है। यही कारण है कि यहाँ आनेवाले प्रायः सभी भावुक होते हैं। मैं भी भावुक होता जा रहा हूँ।"

"अच्छा, अब नींद न भी आ रही हो तो भी चुप हो जाइए। दूसरे लोगों को कष्ट हो रहा होगा।"

वार्ता स्थगित हो गई।

× × ×

भाग्य का मारा जब प्रवास करता है तब कुछ दिनों तक नये व्यक्ति और नये परिचय उसे भाते नहीं। वह अपने कहे जानेवालों की स्मृति में खोया रहता है। किन्तु जब अपने ही किसी कारणवश दामन सिकोड़ने लगते हैं तब घर ही प्रवास-[illegible] जाता है। तब व्यक्ति अपरिचितों की ओर दौड़ता है जहाँ [illegible] अपनत्व का आभास मिल ही जाता है। वह संशयालु [illegible] से कहीं दूर जाकर निश्छल वातावरण में विश्वास की सृष्टि [illegible] चाहता है। तब वह राह चलते का भी विश्वास [illegible] अभ्यास डालता है, किन्तु ज्यों-ज्यों परिचय प्रगाढ़ होता [illegible] है, आशङ्काएँ व्यथित करने लगती हैं और वह उस [illegible] को इतनी ही मात्रा में रक्खा चाहता है जिसके अन्त होने पर [illegible] हँस भर सके, उपेक्षा भर करके रह जाय।

उसे नींद नहीं आ रही थी। चुपचाप पड़ा सोचता [illegible] रहा—बहुत से उपेक्षितों में वह भी एक है। पर इतना [illegible] नहीं जितना वह बना चाहता है। पारस्परिक प्रवृत्तियों के [illegible] उमड़ते से जान पड़ते हैं। जिस हाथ से खिंचते-खिंचते [illegible] नितान्त अपरिचित-सा हो गया था वह पुनः उसी को [illegible] प्रसरण कर जकड़ लिया चाहता है।

उसकी आकुलता बढ़ चली। वह करवटें बदलने लगा। ज्यों-ज्यों रात्रि बढ़ती थी उसका अतीत अधिकाधिक बढ़ती [illegible] स्पष्ट होकर आँखों में मूर्त होता जा रहा था। उसे भय [illegible] कि प्रभात होते ही जाने शून्य का कौन-सा रहस्य [illegible] पड़े। रविकर तम पट में अदृश्य किस अज्ञेय भावना का [illegible] कर दें।

वह एक झटके के साथ अपनी शय्या पर से उठ खड़ा हुआ। खिड़की खोल दी और पर्दा भी हटा दिया। दूर तक [illegible] हुआ घना कोहरा उसकी दृष्टि को रुद्ध कर देता। आकाश [illegible] सर्वत्र काले-काले बादल ही तैरते दिखाई दे रहे थे। वह [illegible] मान भी न कर पाता कि यह शुक्ल पक्ष है अथवा कृष्ण। 'शुक्ल और कृष्ण' ओठों ही ओठों में वह मुसकुराया। 'अथवा सफ़ेद और काला।' सोचने लगा—'ठीक आवरण हो [illegible] इतना घना कि काला काला न जान पड़े और श्वेत [illegible] रह जाय।'

घूम-फिरकर उसकी थकी-सी दृष्टि अपनी ही ओर [illegible] गई। वह ठहर-ठहरकर वार्ड में पड़ी एक-एक शय्या [illegible] देख रहा था। प्रत्येक शय्या पर बुझते जीवन के दीपक [illegible] कोई न कोई आधार पड़ा था। सभी एक दिशा के यात्री [illegible] अपना-अपना घर बार छोड़कर समशील होने के कारण [illegible] परिचय के द्वारा नये परिवार की सृष्टि अनजाने में ही [illegible] थे। पुनः उसकी दृष्टि अपने पासवाली शय्या पर जा [illegible] उसने उस अधेड़ कृष्ण मुख की ओर देखा—'सम्भवतः [illegible] आ ही गईं।' मुसकुराया—'वस्तुतः काल-पट बहुत ही [illegible] होता है। पुरानी रेखायें मिटते-मिटते इतनी नवीन [illegible] उभड़ आतीं हैं कि जर्जर नवीनता में स्वस्थ पुरातनता का [illegible] पता भी नहीं चलता।' वह सोच रहा था—'इसी आवरण [illegible] तो मेरा यौवन, यौवन का सम्भार और सम्भार के समस्त [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विलीन हो चुके हैं। उसे उभाड़ने के लिए तम के कितने आच्छादन हटाने पड़ेंगे? कितने विशाल प्रकाश-पुञ्ज की आवश्यकता पड़ेगी? वह सिहर उठा और उसने मुँह फेर लिया।

फिर बाहर, वही अन्धकार। अन्धकार में समीभूत उच्चा-उच्च शैल-शिखर! सङ्कीर्ण पर्वत-पथ के पार्श्व में ही मुख बाहे गिरि-गह्वर! तम की माया-द्वारा वे भी समीकृत! तिरस्कार की इतनी प्रधानता कि सम-विषम में, आवृत और अनावृत गह्वर में, शून्य और पूरित नभ में दृष्टि की—एकजातीय और एकदेशीय-सी—असमर्थता। नैकट्य और अनैकट्य में कोई अन्तर ही नहीं। और वह सोच रहा था—'सचमुच ही कोई अन्तर नहीं। निराश वर्तमान की कटुता में भी साश अतीत की स्वप्नमयी मधुरता की वैसी ही झलक, कुछ हटती-सी, कुछ छिपती-सी।'

उसकी दृष्टि रोगिणी की शय्या पर से घूमकर पुनः बाहर शैल-प्रदेश पर फैले घने कोहरे में खो गई। वह सोचता रहा—'इस वाष्प-व्यवधान के परे अथवा इसी में कहीं अन्तर्हित सुखी कहे जानेवाले मानव की बस्ती प्रकाश से दीप्त, आनन्द से पूर्ण और चिन्ता से मुक्त होगी। यौवन विलास-सागर में तैर रहा होगा और वार्द्धक्य तट पर से ही उस उफान का, उन हिलोरों का, जो कभी-कभी हठात् उस तक पहुँच ही जाती हैं लालसा से प्रवञ्चित सुख ले रहा होगा। छीजता यौवन अथवा गत यौवन या भ्रष्ट यौवन उस आनन्द में जो न्यूनता उत्पन्न कर देता होगा 'स्वर्ण' और 'अभ्र' के रसयोग के द्वारा उसकी न्यूनाधिक पूर्ति का सफल अथवा विफल प्रयास चलता होगा। और इधर तो केवल विफल यौवन!'

"यह क्या; आप अभी जाग रहे हैं। खिड़की खोले बाहर टकटकी में क्या देख रहे हैं। जान पड़ता है, आप यहाँ अच्छे होने नहीं आये।"

"इस दृष्टि से तो मैंने कभी विचार नहीं किया। अच्छे होने की कोई स्पृहा है भी नहीं। फिर भी अच्छा हो गया तो कोई आपत्ति नहीं। दुनिया में, अपनी उस दुनिया में, जहाँ से उपेक्षित होकर ही इधर भागा हूँ एक नवीन अनुभव लेकर लौटूँगा। जैसा कि तुमने कहा, लोग यहाँ अच्छे होने आते हैं। सोचते हैं कि यहाँ के जलवायु की नमी उन्हें स्वस्थ और प्रफुल्ल रक्खेगी। यह बर्फ़ का धुआँ, मेरा आशय वाष्प से है, उनके फेफड़ों में भरकर जर्जर को नवशक्ति देगा। हो सकता है कि यह वैज्ञानिक सत्य हो, पर यह मानस-सत्य नहीं। विशद रूप से उसे फिर कभी बताऊँगा। हाँ, मैं तो यहाँ केवल उन उपेक्षितों में प्रियजनों-द्वारा की गई अपनी उपेक्षा ही भूलकर रहने आया हूँ। पीड़ित ही पीड़ित को, तिरस्कृत ही तिरस्कृत को अच्छी तरह समझ सकता है। तुम भी मेरे प्रति इस समय इसी से सद्भावपूर्ण हो सकती हो कि मैं भी उसी एक राह का राही हूँ।

वह भी अपनी शय्या पर से उठकर अब उसी के पा चली आई। कुछ देर मौन रहकर बोली—मुझे लग रहा कि तुम कोई विशद सत्य निरूपित कर गये हो। मैं तुम्हारी ओ हठात् ही खिंच रही हूँ। आज से पूर्व कभी कोई पुरुष इत प्रभावित न कर सका। सम्भवतः तुम भी न कर पाते। ए अवसर पर मैंने विनोद-दृष्टि से ही एक प्रयोग करना चाहा था मेरा अभिप्राय ऐसे ही करुणा के प्रयोग से है। वह असफल हु और.....। आज जो हम एक दूसरे के नैकट्य का इत अधिक अनुभव कर रहे हैं वह निश्चयतः एक ही सी स्थिति आ पड़ने के कारण।

अब दोनों ही खिड़की से बाहर की ओर देख रहे थे आकाश में बादल और भी घने हो चुके थे। वृष्टि हुआ चाहती थी। स्त्री ने ही मौन भङ्ग किया—किन्तु आप इ अन्धकार-दर्शन-द्वारा किस रहस्य का सूत्रपात करना चाहते हैं?

"तुम भी समझने लगीं। मैं देखता हूँ कि सूर्य दिन-र अक्षय गति से चलता है। पर सोचता हूँ कि वह किसी दि गहरे भ्रम में पड़ चुका है जो उसे जहाँ का तहाँ लाकर पट देता है। एक और भी विकल्प सूझता है। रवि रात्रि ऐसे किस विचार में मग्न रहता है जो दिन भर अपने सहस्र करों-द्वारा उसका हल प्रस्तुत करने में असफल रहकर पुनः उ अन्धकार में निमज्जित हो जाता है दिन-रात समय की सनातन ध धारा में कोई अर्थ नहीं रखते, फिर भी हम काल-पुरुष को इ दो भेदों और इनके अनेक उपभेदों से विश्लिष्ट करके ही चल हैं। मैं नहीं समझ पाता कि यह कौन-सा भ्रामक आवरण जिसने इतना कृत्रिम व्यवधान, इतना भ्रान्त द्वैत, उत्पन्न दिया है। फलतः मैं जिसे अच्छे प्रकार से जानता हूँ उसे भूल-सा रहा हूँ अथवा भुला रहा हूँ। भला यह असमर्थता कौन-सा प्रकार है?

वर्षा होने लगी थी। शब्द स्थगित हो गये थे, पर व होती ही रही। खिड़की से होकर फुहारें अन्दर आने लगी थ स्त्री के जो कुन्तल-गुच्छ भवन से थिरक-थिरककर उड़ रहे थे अब फुहारों से भीगकर मस्तक और कपोलों पर चिपटकर गये थे। उसके पीले मुख पर भी अनोखा आकर्षण उत हो गया था। वह अपने साथी के और भी निकट चली अ थी। कोमल स्वर विनिर्गत हुआ—मुझे लगता है कि हमा तुम्हारा परिचय इससे भी कहीं अधिक पुराना है, जितना कि जानते हैं। बताओ तो तुम कौन हो।

"एक उपेक्षित मानव।"

× × ×

अगले ही दिन प्रातःकाल रोगियों के उस वार्ड में क चहल-पहल थी। उनमें एक और नया व्यक्ति आ मिला थ उसी के विषय में जानने के लिए सभी उत्सुक थे। प्रातःक की विज़िट के उपरान्त जब टेम्परेचर चार्ट भरा जा चुका था त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized By Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औषध और अनुपान की पूर्ण व्यवस्था हो चुकी थी, परिचय की
था का प्रारम्भ हुआ। उस वार्ड में इस गति को पहुँचा। ऐसा
ोई व्यक्ति न था जो हिलने-डुलने में भी असमर्थ रहा हो। एक
सरे के पास तक आने-जाने की शक्ति तो अवश्य थी। मृत्यु
जूझते हुए प्रत्येक व्यक्ति के निर्बल मुख की निष्प्रभ आँखों के
ोचे की कालिमा आप ही आप यौवन के क्षय की कहानी सुना
ती। किसी रोगी अथवा रोगिणी का वय इतना न था जो
ौढ़ावस्था को पार कर चुका हो। प्रायः सभी सुशिक्षित और
रिष्कृत रुचि के थे। आत्मनिवेदन के रूप में ही परिचय दिया
ता था।

"मेरा वय अभी केवल बीस वर्ष का है। मैं अविवाहिता हूँ।
न्तु विवाह से पूर्व ही जीवन की सबसे बड़ी भूल कर चुकी थी।
ी भूल जीवन भर के लिए गहरी कसक बन गई है। मैं
हती हूँ कि मैं उसे भूल जाऊँ, पर भुला नहीं पाती। उसके
द से मैं मन बहलाने के लिए कविता करने लगी थी। अब
करती हूँ और कविता के पद रचते-रचते ही इस जीवन से
ृत्ति पा लूँगी। मैंने उच्च शिक्षा पाई है और इसके आधार
अपने जीवन का केवल एक दर्शन निश्चित कर सकी हूँ।
यही कि जब मर्म-वेदना असह्य हो उठे तो आहों की भी
ता बन जाय।"

"युवक को बूढ़े को अपना साथी चुनना चाहिए, पर मैंने
न का ही अन्धविश्वास किया। मेरे पास इतना मनोबल
वा इतनी शिक्षा तो न थी जो अनियन्त्रित लालसाओं का
क कर सकता। मैंने देखते हुए ठोकर खाई। मैं मरना
चाहता, पर अब देखता हूँ कि बच नहीं सकता।"

वह रो पड़ा था।

"मैं चित्रकार हूँ। नहीं, चित्रकार रहा हूँ। अब तो
ल कभी के उज्ज्वल चित्र का मलिन चित्रपट अथवा उस पर
धुँधली रेखायें, मिटती हुई अनुहार मात्र रह गया हूँ। यौवन
ब मेरे पास भरपूर रङ्ग था तो किसी निर्दय ने रङ्गों की
छलकती प्याली में हठात् ठोकर मार दी। तब से मैं व्यर्थ
का-सा जीवन व्यतीत करता हुआ इस गति को प्राप्त हुआ
। मैंने बार-बार उस क्रूर छवि को अङ्कित करना चाहा, किन्तु
फल रहा। अब तो जीवन के चित्रपट पर मृत्यु का चित्र
ृत कर डालने भर की साध है।"

नवागत ने अपनी प्रतिवेषिनी की ओर देखा था। उसकी
ें भर रही थीं। उसने मुँह फेर लिया।

"जीवन में स्वास्थ्य और रोग दोनों का ही तुल्य स्थान है।
रीर-धर्म के अनुसार ही रोग-ग्रस्त हुई। धीरे-धीरे बीमारी
ाथ-साथ मेरा रूप और यौवन छाजता जाता था। जिस
क को मैंने नारी-रूप से सभी कुछ अर्पित कर दिया था
धीरे-धीरे मेरा उपेक्षा करने लगा। मैं बच सकती थी,
य हो ही जाती यदि उसकी उपेक्षा इतनी कठोर न होती।

लोग कहने लगे कि मुझे क्षय हो गया है। क्षय।—[illegible]
और प्रियतम सभी काँप उठे। मेरे बच्चे को भी [illegible]
रक्खा जाता, पति तो छाया से भी बचते। मेरा वहाँ रहना [illegible]
हो गया और मैं सुख से मरने के लिए ही यहाँ चली आई।"

धीरे-धीरे परिचय सभी के लिए कष्टकर होते जा रहे थे [illegible]
जो अपनी व्यथा का भार वहन करने में असमर्थ थे वे दूसरों के
प्रति संवेदनशील होने के कहाँ तक उपयुक्त होते! सभी परि-
चयों से सञ्चित कर कुछ मौलिक तथ्य इस प्रकार रख दिये जा
सकते थे—'यौवन की भूल, कुछ कुण्ठित कामनायें, पति से
तिरस्कृत, बच्चों से वञ्चित पत्नी और मा, पत्नी से उपेक्षित पति।
बस इसी तरह कोई प्रमाद-वश, कोई किसी चाह के धोखे में
कोई किसी आशा के भग्न होने से तो कोई प्रियजन अथवा
प्रियतम से उपेक्षित और निराश होकर ही जीवन का क्षय आ
पूर्णाहुति देने यहाँ आया था। किसी का जीवन के प्रति अ[illegible]
मोह बना था और वह किसी भी मूल्य पर अच्छा होकर अपने
कहे जानेवालों की दुनिया में वही प्यार और वही आदर पाने के
लिए लौट जाना चाहता था।

सहसा नवागत रोगी कह उठा—मेरा भी परिचय मिलता-
जुलता ही है। मैं भी ठोकर खा लुढ़कता-पुढ़कता जीवन के
सर्वोच्च शिखर से गिरने के लिए यहाँ तक आ पहुँचा हूँ।

इतना कहकर वह अपनी शय्या की ओर लौटा ही चाहता
था कि किसी के शब्द उसके कानों में पड़े—तुमने अपना परिचय
नहीं दिया, इन्दिरा!

उसने ठहरकर इन्दिरा की ओर देखा। उसकी आँखें
जलपूर्ण थीं। वह कभी पूर्वपरिचिता थी। वह मुसकुरा भर
उठी। तभी एक स्त्री उसी से प्रश्न कर बैठी थी—पर आपको
किन शब्दों में स्मरण करें।

"यादवमणि!"

वह कहना न चाहता था, पर अनायास ही वाणी छूट
चुका था। उसने लौटते हुए अच्छे प्रकार देखा कि उसका
नाम सुनते ही इन्दिरा की भरी आँखें भरभराकर बह उठी थीं।

× × ×

रात्रि के समय यादवमणि इन्दिरा से पूछ रहा था—इन्दिरा
देवी, जान पड़ता है कि आपको मेरा नाम सुनकर किसी विशेष
परिचित का स्मरण हो आया। मुझे खेद है कि मैं आपके
कष्ट का कारण हुआ।

इन्दिरा चुप थी। उसकी आँखें झुकी हुई थीं।

"नामों में साम्य कोई आश्चर्य की बात नहीं। मेरे लिए
भी इन्दिरा नाम कम महत्त्व नहीं रखता। पर मुझे विश्वास
है कि मेरा इन्दिरा जैसे किसी शब्द से परिचय न रहकर व्यक्ति-
विशेष से ही रहा है, जिसे अभिधान के लिए कुछ भी शब्दों का
साथ लिया गया।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्त्ता चल न सकी और यहीं स्थगित होकर रह गई। यादवमणि वातायन से झाँककर बाहर देखने लगा था। बाहर की ओर ही मुँह किये-किये बोला—यह बात नहीं कि आकाश में तारे न हों, किन्तु मेघों से आच्छन्न आकाश में केवल कालापन ही दृष्टिगत होता है। सूर्योदय के उपरान्त भी ये तारे छिपते नहीं फिर भी दिखाई नहीं देते। इसका आशय आप बतायेंगी, इन्दिरा देवी!

इन्दिरा धीरे से पास चली आई थी। "क्या आप यही तो नहीं कहना चाहते कि प्रकृत की परिपाटी भी चिर सत् का असत् भान कराने की है? समय के परिवर्तन के साथ यह आवश्यक हो जाता है कि हम बहुत-सी बातों को जानते हुए भी भुला दें।"

"निस्सन्देह! ऐतिहासिक दृष्टि से वह दृष्टि प्रधान होती है जिसका किसी मुख्य विषय से, विशेषकर जीवन के प्रसङ्ग में, साक्षात् सम्बन्ध हो। पुरातनता को अन्त मानकर नवीनता को आदि स्वीकार कर लेने से काम चल जाता है।"

कुछ ठहरकर कहा—आज मैं कुछ अधिक थक गया हूँ। अब विश्राम कर लेना आवश्यक समझता हूँ। चलो तुम भी लेट जाओ।

इन्दिरा शय्या की ओर बढ़ती हुई बोली—बीच-बीच में आप भूल से अथवा किसी पुराने अभ्यास के दोष से मुझे 'तुम' कह जाते हैं। यह मुझे अत्यधिक आत्मीयता-व्यञ्जक शब्द लगता है। मैं एक बात कह जाऊँ। आपके नाम के किसी एक विस्मृतप्राय व्यक्ति की स्मृति बड़ी प्रबल होती जा रही है। अब मैं उसे भुला न सकूँगी। मैं चाहती हूँ कि आप उस पुरातन अन्त का नवीन आदि ही क्यों न बन जायँ। बस, अब मुझे 'तुम' कहा करना।

"सच कहती हो इन्दिरा तुम! मेरी भी एक तुल्य अनुभूति है। मैं भी उसमें तुल्य परिवर्तन की आकांक्षा रखता हूँ। बोलो, निर्वाह करोगी।"

इन्दिरा के इन्दीवर-नेत्र पुनः जल-मग्न हो गये। उस समय दोनों के हृदय में केवल एक इच्छा थी कि सहसा क्षण भर के लिए घनान्धकार हो जाय।

× × ×

इन्दिरा और यादवमणि धीरे-धीरे स्वास्थ्य लाभ कर रहे थे। इन्दिरा के अल्पकाल के ही इस घोर परिवर्तन को देखकर डाक्टर तक चकित थे। उनके अनुसार अब उन दोनों को ही वहाँ अधिक दिन और ठहरने की आवश्यकता न रह गई थी।

एक दिन इन्दिरा ने प्राणों की आतुरता को स्वर में घोलकर यादवमणि से पूछा—क्या अब हमारे इस जीवन का अन्त आ रहा है? हमारा परिचय कहीं यहीं तो शेष नहीं हो जायगा? इस परिचय की इति होते ही मैं जीवित न रह सकूँगी, यादव बाबू।

यादवमणि ने गम्भीर होकर कहा—इन्दिरा, भय तो मुझे भी है। फिर भी मैं इसे अन्त स्वीकार कर लेना नहीं चाहता। यह बात दूसरी है कि तुम पुनः किसी नवीन आदि का प्रवर्तन न करना चाहो।

इन्दिरा के कुछ ही आँसुओं ने उसकी आत्मा के सत्य का परिचय दे दिया था। यादवमणि ने धीरे से उसका कम्पित कर अपने हाथों में ले लिया था और वे दोनों आनन्दाश्रु छलकाती हुई आँखों से पर्वतीय क्षितिज की ओर एकात्म हो देखने लगे थे।

उसी दिन सायं समय उन दोनों को कुछ दूर बाहर घूमने आने की स्वीकृति प्रधान चिकित्सक-द्वारा प्राप्त हो गई थी। अब वे देखने में भी लगभग स्वस्थ ही जान पड़ते थे। उस स्थान से कितनी ही दूर पर गोरों की बस्ती के निकट ही एक सुन्दर छोटा-सा प्रपात पड़ता था। रिक्शा करके वे दोनों वहाँ जा पहुँचे। साथ में बहुत-से फल भी लेते गये। वहाँ पहुँच कर कितने ही परिश्रम के अनन्तर उन्होंने एक सुन्दर-सा स्थान बैठने के लिए चुना। वहीं धान के छोटे-छोटे पहाड़ी खेत भी थे। प्रपात का जल कृत्रिम स्रोतों-द्वारा उनमें पहुँचाया जाता था। जहाँ वे बैठे थे उसके चारों ओर से ही ऐसे स्रोत चक्र काट-काटकर उछल-उछलकर जा रहे थे। वे फल खाते, बीच बीच में जल उछालते और अनेक असम्बद्ध बातें करते हुए हँस पड़ते।

उनके अतिरिक्त वहाँ और भी व्यक्ति थे—प्रायः सपरिवार और सपत्नीक। सभी प्रसन्न और मग्न थे। धुँधले होते हुए दिन को देखकर सभी अपने-अपने निवासस्थानों पर लौट चलने का उपक्रम कर रहे थे। इन्दिरा चलने का प्रस्ताव किया चाहती थी कि अचानक ही उसकी दृष्टि पास घूमते हुए किसी पुरुष पर जा अटकी, जो एक स्त्री की बाँहों में बाँह डाले प्रपात की ओर देख रहा था। इन्दिरा किसी अकल्पनीय आकस्मिकता से अभिभूत-सी विवृत मुख और विस्फारित नेत्रों से उसी ओर देखती ही रह गई।

यादवमणि ने इन्दिरा की अवाक् मुद्रा देखी और फिर उसकी दृष्टि भी यथास्थान जा अटकी। उसकी मुद्रा कठोर होती जा रही थी। कठोर स्वर में बोला—पहचानती हो इन्दिरा इस व्यक्ति को!

इन्दिरा चुप ही रही।

उसने तीव्र स्वर में कहा—सुन नहीं रही हो! यही व्यक्ति हमारे-तुम्हारे दोनों ही के सुखी जीवन के लिए अभिशाप रूप रहा है।

इन्दिरा कुछ सावधान होकर बोली—क्या कह रहे हैं आप? मैं कुछ समझी नहीं।

कठोर ध्वनि हुई—मैं इस व्यक्ति को मार डालूँगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्दिरा आमूल काँप उठी। पुनः प्रयत्नतः स्वस्थ होकर ठ खड़ी हुई! यादवमणि का हाथ पकड़कर बोली—आइए लें। आप इन्हें जानते हैं?

वैसा ही कठोर उत्तर दिया—क्यों नहीं! ये मेरे मित्र ोर तुम्हारे पति रहे हैं।

इन्दिरा चलते-चलते सोच रही थी कि पति रहे हैं, अथवा । उसने उद्दण्डरूप यादवमणि की ओर देखा और धीरे से ह दिया—अभी आप पुरातन का अन्त नहीं कर सके। भला ीन का आदि कैसे होगा?

उसने कोई उत्तर नहीं दिया!

उसी दिन वार्ड में पहुँचते न पहुँचते इन्दिरा की तबीअत र से काफ़ी गिर चुकी थी। रात्रि को दो-तीन बार ख़ून की भी हुई। थूक के साथ तो रक्त बराबर आता था। रात प्रायः सभी डाक्टर व्यस्त रहे। किसी की कुछ समझ में आ रहा था। यादवमणि ने डाक्टरों के निषेध पर भी रात भर गकर उसका उपचार किया। अवस्था बराबर गिरती रही। अब इन्दिरा में अपने स्थान से उठने की भी शक्ति न रह थी। यादवमणि के भी स्वास्थ्य के प्रायः सभी शुभ ह्रास को प्राप्त कर रहे थे?

तीसरे दिन रात्रि को जब वार्ड में पूर्ण निःस्तब्धता यादवमणि ने आकुल होकर पूछा—इन्दिरा, क्या इतनी नवीन आदि का अन्त कर दोगी? बोलो, यह मेरे अपराध की दवा है?

इन्दिरा के नेत्र उठकर झुक चुके थे। किसी प्रकार स्वर में कह ही दिया—यादव बाबू, मुझे अब पता लगा कि मैंने उन्हें सचमुच ही प्यार किया है।

"हाँ इन्दिरा! मैंने इस उपेक्षितों की दुनिया में अलग से अपनी सत्ता दृढ़ करने की चेष्टा की थी। यह स्वार्थ का परिणाम है?"

इन्दिरा की आँखों में आँसू थे। यादवमणि वहाँ हटकर वातायन से बाहर के गहन तिमिर को देखने लगा था।

गीत

श्रीयुत शीतलासहाय श्रीवास्तव

यामिनि, तुम न कभी भी आओ।
आती हो तो राका बनकर
मेरे आँगन में छा जाओ
शुभ्र चन्द्रिका की चादर में
मुझे सकृत् ही आ थपकाओ
कुहू न बनकर काले अञ्चल
से अरमानों को ढक जाओ।
यामिनि, तुम न कभी भी आओ।
धोया-सा यह गगन रहे, तुम
घन की लटें नहीं छितराओ
छितराती हो तो अलकों में
चन्द्रमुखी की छवि उलझाओ
दामिनि का द्युतिमय प्रकाश कुछ
समय-समय पर ला झलकाओ।
यामिनि, तुम न कभी भी आओ।
क्षीण करो मत सफल साधना
युग-युग की, कुछ क़ीमत आँको
लाओ साथ न निशिचर अपने
झंझा से यह गेह न झाँको
शीतल पवन बहाओ हौले
सुधा-भरे ही घट ढुलकाओ।
यामिनि, तुम न कभी भी आओ।

बरसातों का क्या कहना!

श्रीयुत रामानुजलाल श्रीवास्तव

जाड़े काटे, गर्मी काटीं, बरसातों का क्या कहना!
तड़प-तड़प जो रातें काटीं,—उन रातों का क्या कहना!
चन्द्रवदनि ने हंस-गवन से, स्पन्दन की कुछ बनठन से।
मन्द पवन की झकझोरी में, पीत वसन की उलझन से।
तनिक सहम फिर, कञ्ज-नयन की बाँकी तिरछी चितवन से।
मुझसे जो-जो बातें कह दीं, उन बातों का क्या कहना।
तड़प-तड़प जो रातें काटीं...॥

प्रात गये सँझबाती देते, साँझें बीतीं मग जोते।
घड़ी-पहर दिन बन-बन बीते, दिन बीते सुध-बुध खोते।
सावन जल-जल फाग मना ली, फागुन में झर-झर रोते।
चैत-चाँदनी झुलस गये,—झुलसे गातों का क्या कहना!
तड़प-तड़प जो रातें काटीं...॥

उर-अन्तर को बेध-बेध झुँझलाती झिल्ली डाइन से।
जी की प्यासी, पी-पी करती पपिही चुगुल चवाइन से।
इनके ऊपर कुहुक-कुहुक कोइलिया कुटिल कसाइन से।
मुझ पर जो-जो घातें की हैं, उन घातों का क्या कहना!
तड़प-तड़प जो रातें काटीं,—उन रातों का क्या कहना॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्वासित

पण्डित इलाचन्द्र जोशी

[शान्ता के यहाँ बहुत-से युवकों तथा युवतियों की भीड़ थी। कुछ देर बाद नीलिमा भी वहाँ आई। जलसे की समाप्ति के समय नीलिमा महीप को अलग ले जाकर उससे तीसरे दिन शाम को, रीजेंट सिनेमा के पास, मिलने को कहा। × × × धीराजसिंह को जङ्गल में गोली मारी गई और उनका वह रूमाल जिस पर उन्होंने अपने ख़ून से लिखा था तथा उनकी पाकेट-बुक लक्ष्मीनारायण सिंह ने उड़ा ली थी। लक्ष्मीनारायण ने इसे आकस्मिक दुर्घटना सिद्ध करने का भी प्रयत्न किया था जो कारगर-सा रहा। × × × पूर्व-निर्दिष्ट स्थान पर नीलिमा महीप से मिला और सिनेमा-घर में, एक दूसरे के पास बैठकर, तल्लीनता से फ़िल्म देखने लगे।]

चालीसवाँ परिच्छेद

'इंटरवल' के बाद जब नीलिमा ने महीप से कहा कि उसका जी नहीं लग रहा है और वहाँ से उठकर कहीं चलने का प्रस्ताव किया, तब महीप को सहसा ऐसा लगा कि नीलिमा किसी कारण आज अत्यन्त विचलित हो उठी है और इतनी देर तक वह उस अपने मन की अस्थिरता और अशान्ति को दबाये हुए थी। सिनेमा-हाल के जगमगाते हुए प्रकाश में महीप ने देखा कि नीलिमा की आँखों में एक ऐसा निराला भाव बिजली के-से झलक उठा जिससे उसके भीतर की एक भेद-भरी बेचैनी अनायास रूप से व्यक्त हो पड़ी। महीप का हृदय दहल उठा, यद्यपि उसके अन्तर का एक अज्ञात कोना नीलिमा की उस बेचैनी के कारण पुलकित भी हो उठा था। अपने मन के उस असामयिक और अनुचित उल्लास के लिए उसका मन स्वयं अपने को तिरस्कृत भी कर रहा था।

कुछ भी हो, महीप की अन्तः प्रज्ञा को यह आभास मिल गया था कि नीलिमा की आँखों में उसने एक क्षण के लिए जो की जो झलक देखी है वह किसी ऊपरी और बाहरी कारण से उत्पन्न नहीं है, बल्कि किसी मूलगत कारण से वह भीतर ही भीतर छटपटा रही है। जब दोनों सिनेमा-हाल से उठकर बाहर आये, तो महीप ने देखा कि नीलिमा की आँखों में वही विचित्र और रहस्यपूर्ण अन्यमनस्कता और अशान्ति झलक रही थी। उसकी आँखों की पुतलियाँ एक अजीब घबराहट, एक-से विचलन की अवस्था में बड़ी तेज़ी से इधर से उधर और उधर से इधर घूम रही थीं। जब वह घर से आई थी तब वह घबराई हुई थी या नहीं, इस बात का पता महीप नहीं लगा सका था—इस बात की ओर तब उसका ध्यान ही नहीं गया था। पर आधा फ़िल्म देखने के बाद ज्योंही 'इंटरवल' हुआ त्योंही उसका एकदम बदला हुआ रूप महीप के सामने आया। इस आमूल बदले हुए रूप का कारण 'फ़िल्म' नहीं हो सकता—चाहे वह कैसा ही रहस्य-रोमाञ्चपूर्ण क्यों न हो—यह बात महीप भली भाँति जानता था। तब वह कारण क्या हो सकता था? क्षणिक विचार के बाद महीप के मन में यह बात दृढ़ता से आ गई कि नीलिमा उस कारण को घर ही से अपने साथ लाई थी, और सिनेमा-हाल के रहस्यमय वातावरण में वह फ़िल्म की गति की तेज़ी के ही अनुपात में बहुत बढ़ गया है।

महीप ने पूछा—"कहाँ चलने की इच्छा है?"

नीलिमा महीप की आवाज़ से चौंक उठी। उसने पूछा—"क्या कहा?"

"किस ओर चला जाय?"

"जिधर तुम्हारी इच्छा हो।"

इसके बाद अधिक कुछ पूछना व्यर्थ समझकर महीप ने एक ताँगा बुलाया और जब दोनों उस पर बैठ गये तब महीप ने उससे अलफ़्रेड पार्क की तरफ़ चलने के लिए कहा।

नीलिमा फिर अन्यमनस्क हो चली थी। आज यह एक नई बात महीप ने उसके स्वभाव में पाई। इसके पहले कभी उसने नीलिमा को इस प्रकार विमन और मौन व्याकुलता से आच्छन्न कभी नहीं देखा था। उसे अपने मन की इस प्रवृत्ति पर स्वयं आश्चर्य हो रहा था कि नीलिमा के मन की उस असाधारण विकलता और उदासी से खिन्न होने के स्थान पर वह भीतर ही भीतर पुलकित और प्रसन्न हो रहा था। न जाने क्यों, उसे लग रहा था कि नीलिमा के मन की खिन्नता उसके लिए किसी शुभ-सूचना की द्योतक हो सकती है।

ताँगे के हिचकोलों के कारण नीलिमा की साड़ी का छोर बीच-बीच में महीप को छू जाता था, और केवल इतना ही स्पर्श उसे किसी अनन्त रहस्यमय प्रेमलोक की अनिर्वचनीय काव्य-अनुभूति से परिचित करा रहा था। "नहीं, नीलिमा के प्रति मेरी प्रेमाकांक्षा तनिक भी कम नहीं हुई है, बल्कि व्यवधान और बाधा, अपमान और उपेक्षा से उसकी आग पहले से कई गुना अधिक सुलग गई है।" महीप मन ही मन कह रहा था। आज पहली बार वह अपने प्रेम के पागलपन के परिमाण का अनुभव किसी हद तक करने में समर्थ हुआ। और इस अनुभव से भीतर ही चौंक उठा। आज नीलिमा के उस अनमने और मौन विषाद ने उसके भीतर के किसी चोर-दरवाज़े को दबाकर एक निराली ही तिलस्माती दुनिया के लिए रास्ता खोल दिया था जिसका पता इतने दिनों तक उसे नहीं था। उस रहस्यमय अन्तर्लोक के भीतर उसने देखा कि वहाँ वे तूफ़ानी तरङ्गें उमड़ रही हैं जो समुचित परिचालन से केवल उसके अपने जीवन में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही नहीं, बल्कि बाहर के विश्व-जीवन में भी उथल-पुथल मचा सकती हैं; वह निर्धूम आग दहक रही है जो मृत, जड़ और विभ्रान्त संसार में सञ्जीवन, सम्मोहन और समाश्वासन का मन्त्र फूँक सकती है। पर उस सन्निहित शक्ति के सञ्चालन के लिए आवश्यकता है उस नारी-शक्ति की जो उसकी बग़ल में बैठी हुई अपने सीमित व्यक्तिगत स्वार्थ के सङ्घर्ष से उत्पन्न अन्तर्द्वन्द्वों में बुरी तरह उलझी हुई है। क्या उस शक्ति को किसी भी उपाय से हस्तगत करना उसके जीवन का सबसे प्रधान और सबसे आवश्यक कर्तव्य नहीं है।

एक मोड़ पर जाते हुए ताँगे ने ऐसे ज़ोर से झटका खाया कि दोनों के घुटने एक दूसरे से बड़े ज़ोरों से टकरा गये। दोनों के स्वप्न भङ्ग हो गये। नीलिमा सँभलकर बैठ गई, पर बोली कुछ भी नहीं।

ताँगे ने जब पार्क के भीतर प्रवेश किया तब कुछ ही दूर भीतर पहुँचने पर महीप ने उसे रुकवा दिया। दोनों उतरे और एक अशोक के पेड़ के नीचे एक अपेक्षाकृत अँधेरे स्थान में एक बेंच पर बैठ गये। बैठने के बाद भी नीलिमा चुप रही। महीप को उसका वह रहस्यमय और अशोभन दीर्घ मौन अब असह्य प्रतीत होने लगा। अन्त में वह बोल उठा—"तुम्हारी यह चुप्पी मुझे अजीब-सी लग रही है, नीलिमा। क्या तुम्हारी तबीअत अचानक कुछ ख़राब हो गई है? अगर ऐसा हो, तो कहो, तुम्हें तुम्हारे घर पहुचा आऊँ।"

"चलो!"—सहसा नीलिमा के मुँह से निकल पड़ा। पर फिर तत्काल ही वह बोल उठी—"पर आज घर वापस जाने के लिए मेरे पाँव नहीं उठ रहे हैं।"

महीप की रीढ़ के निचले सिरे से लेकर ऊपर तक एक अनोखी सुरसुरी-सी दौड़ गई। एक अस्पष्ट आशा और आशङ्का की मिश्रित अनुभूति भूत की तरह उसे घर दबाने लगी। उसने दबी हुई आवाज़ में, जिससे उसका दुर्दमनीय कौतूहल, उत्सुकता और उत्कण्ठा एक साथ प्रकट होती थी, पूछा—"क्यों?"

"मैं माँ से झगड़कर आई हूँ।"

"क्यों?"

"उसने मेरी चाय में चीनी ज़्यादा डाल दी थी।"

"इस समय मज़ाक़ रहने दो; सच-सच बताओ कि बात क्या हुई।"

"सच ही तो कहती हूँ। झगड़ा इसी बात से शुरू हुआ। उसे मालूम है कि मैं चीनी बहुत कम खाती हूँ—एक प्याले में डेढ़ चम्मच से ज़्यादा नहीं लेती। पर उसने आज चार चम्मच से भी अधिक चीनी डाल दी....."

"वे शायद किसी और बात की चिन्ता में डूबी होंगी।"

"सम्भव है। उस चिन्ता का कारण भी मैं जानती हूँ। जो भी हो, मैं इतनी ही बात से उत्तेजित हो उठी और चाय पीना छोड़कर बड़बड़ाती हुई उठ खड़ी हुई। माँ ने [illegible] समझाया, पर वे जितना ही समझाती थीं मैं उतना ही [illegible] उठती थी। अन्त में माँ भी उत्तेजित हो उठीं और [illegible] बताने लगीं। मैं भी पलटे में उन्हें जली-कटी सुनाने [illegible] बात यहाँ तक पहुँची कि मैंने माँ से कह दिया कि [illegible] साहब से हरगिज़ विवाह नहीं करूँगी। आज पहली [illegible] माँ से इस तरह की बात कही थी। उनका चेहरा [illegible] स्याह हो गया था। उसके बाद वे कुछ बोलीं नहीं [illegible] अत्यन्त निराशा और आश्चर्य से मेरी ओर देखती रह [illegible] मैं अपने कमरे में जाकर—भीतर से दरवाज़े में सिटकनी [illegible] पलँग पर लेट गई। बहुत देर तक सिसकियाँ भरती [illegible] अपने रोने का कोई कारण स्वयं मुझे नहीं मालूम था। [illegible] देर तक मैं उसी अवस्था में लेटी रही। तुम्हारे [illegible] 'एप्वायंटमेंट' मैंने किया था उसे पूरा करने की भी इच्छा [illegible] होती थी, और मैं दिन-भर और रात-भर उसी हालत में [illegible] पर लेटे-लेटे चुपचाप ख़ूब जी खोलकर रोते रहना चाहती [illegible] पर जब समय हो आया तो मैं सहसा उठ बैठी और [illegible] के साथ कपड़े बदलकर किसी को कोई सूचना दिये बिना [illegible] आई। पर तुम्हारे पास आने पर मेरा चित्त शान्त होने के [illegible] और अधिक बेचैन हो उठा है।" यह कहकर नीलिमा ने [illegible] लम्बी आह भरी और उस आह को दबाने की तनिक [illegible] चेष्टा नहीं की।

उसकी उस आह का छुतहा प्रभाव महीप पर भी पड़ा [illegible] उसके मुँह से भी बरबस एक अस्पष्ट-सी आह निकल पड़ी।

कुछ देर तक दोनों चुप रहे। सामने कुछ दूर, [illegible] किनारे-किनारे, एक मोटर सर्चलाइट का तीव्र प्रकाश [illegible] हुई धीमी गति से चली जा रही थी। महीप की आँखें [illegible] सी उसी गतिशील प्रकाश का अनुसरण कर रही थीं। [illegible] मोटर आँखों से एकदम ओझल हो गई, तब महीप के [illegible] किसी बात का स्मरण हो आया और वह नीलिमा के [illegible] कुछ हटकर सँभलकर बैठ गया।

इकतालीसवाँ परिच्छेद

वह अशोभन मौन काफ़ी देर तक जारी रहा। [illegible] महीप ने फिर एक बार जैसे करवट बदली और नीलिमा की [illegible] आधी दृष्टि से देखता हुआ वह अत्यन्त शान्त, धीर और [illegible] भाव से बोला—"देखो नीलिमा, मैं पहले ही यह जानता [illegible] तुमने आज मेरे साथ अकेले में मिलने की जो बात [illegible] वह व्यर्थ है और उसका कोई महत्त्व नहीं है। यह [illegible] हुआ भी मैं जो तुम्हारा प्रस्ताव टाल न सका इसका कारण [illegible] समझ न सकोगी, ठीक जिस प्रकार मैं कभी यह नहीं [illegible] पाऊँगा कि तुम मुझसे न मिलने का इरादा करने पर भी [illegible] मौक़ पर बिना कुछ सोचे-समझे सीधी नियत स्थान पर [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आईं। मालूम होता है कि हम दोनों के भीतर कोई रहस्य छिपा है जो दोनों के अनजान में दोनों को बार-बार सही रास्ते की ओर ले जाता है, और फिर सहसा बीच ही किसी भी प्रकट कारण के, दोनों को भरमाकर एक बिलकुल उलटी दिशाओं में ढकेल देता है। यह रहस्य वह अतीन्द्रिय है या ज्ञानेन्द्रियों की परिधि के भीतर ही है, यह मैं इस समय कुछ बता नहीं सकता—क्योंकि नहीं जानता। पर इतना मुझे अवश्य बोध होता है कि यह एक न एक दिन हम दोनों में से किसी एक के लिए—सम्भवतः दोनों के लिए—अत्यन्त घातक सिद्ध होगा। हम एक दूसरे के निकट रहें या दूर वह हम दोनों के जीवन में लोगों के अनजान में ऐसी-ऐसी जटिल उलझनें उत्पन्न करेगा, ऐसी-ऐसी धोखे की टट्टियाँ तानता रहेगा, ऐसी खाइयाँ खोदता रहेगा कि जीवन में एक घड़ी के लिए दोनों में से किसी को चैन नहीं मिलेगा; किसी भी काल में, उनके जीवन में शान्ति नहीं रहेगी; सब समय एक अस्पष्ट आतंक-भरी अनुभूति हिमप्रदेश के प्राणिहीन देवदारु-वन की शून्य में निष्फल उसासें भरती रहेगी—कभी करुण मर्मर में सिसकारती हुई और कभी दैत्य-गर्जना के तूफ़ानी स्वर में चीखती हुई।"

महीप यद्यपि बहुत धीरे से बोल रहा था तथापि उसका आवेग परिपूर्ण चाप से नीलिमा के समस्त मन और समस्त को अभिभूत कर रहा था। आज पहली बार उसने के व्यक्तित्व के उस आश्चर्यजनक स्वरूप का अनुभव जिसकी कल्पना एकान्त में महीप की कवितायें पढ़ते समय मन में बरबस उठने लगती थी, पर महीप की प्रत्यक्ष में जो न जाने कहाँ विलीन हो जाती थी। उस रात्रि में पार्क के उस एकान्त कोने में महीप ने जब अपने कवि-हृदय के बाहर का गाढ़ा नीला—बल्कि काला—पर्दा अप्रत्याशित रूप से नीलिमा के आगे खोल दिया तो वह उठी। महीप ने न जाने किस अपरिचित लोक के रहस्यमय मन्त्र फूँकना शुरू कर दिया, नीलिमा ठीक से कुछ न पाई। पर वह जादू किसी रासायनिक तेज़ाब की तरह आत्मा में पड़कर उसके भीतर विचित्र रासायनिक प्रतिक्रिया उत्पन्न करने लगा। पहली प्रतिक्रिया एक रोमाञ्चकर और भय के मिश्रण के रूप में हुई और वह बरबस, कुछ सोचे, सहसा महीप से लिपट गई। अत्यन्त भीत वह प्रायः फुसफुसाती हुई कहने लगी—"तुम यह क्या करते हो महीप! क्यों ऐसा भयङ्कर अभिशाप तुम्हारे भीतर से बोल रहा है! क्यों तुम मुझे इस तरह डरा रहे हो?" कहती हुई इधर उधर अपनी बग़ल में और अपने पीछे, अत्यन्त घबराई दृष्टि से देखने लगी, जैसे कुछ अद्भुत, अज्ञात और रहस्यमय चारों ओर सचमुच सिसकारियाँ भर रहे हों या फुफकार रहे हों। उसने द्विगुण प्रबलता से महीप को दोनों हाथों से जकड़ लिया।

महीप ने हिमप्रदेश के विजन देवदारु-वन के हाहाकार की जो बात कही थी, उसका स्पष्ट अनुमान करना नीलिमा के लिए असम्भव था, क्योंकि उसने कभी कोई हिम-प्रदेश देखा नहीं था, और विजन देवदारु-वन के हाहाकार का कोई अनुभव उसे नहीं था, तथापि इसी एक बात ने महीप की दूसरी बातों की अपेक्षा अपने मर्मान्तक प्रभाव से उसे अत्यन्त विचलित कर दिया था। न जाने कौन रहस्यमय दिव्य प्रकाश अचानक नीलिमा की आँखों के आगे झलक उठा था, जिसमें उस क्षण में महीप उसे सर्वदर्शी अन्तर्यामी के रूप में लगने लगा, जिसके आगे उसके नीलिमा के अन्तर्लोक की भूत, वर्तमान और भविष्य की प्रत्येक अनुभूति जैसे स्फटिक-निर्मल जल के छिछले कुण्ड के नीचे चमकनेवाले कङ्कड़ों की तरह स्पष्ट विभासित हो रही थी और छिपी नहीं रह सकती थी। आज महीप का 'बबुआ' रूप एकदम विलीन हो गया था। नीलिमा को ऐसा लगता था जैसे शारीरिक दृष्टि से भी वह क़द में बहुत लम्बा हो चला है और बेंच पर बैठा हुआ भी अपने पीछे खड़े अशोक के पेड़ से टक्कर लेना चाहता है। उस क्षण के लिए वास्तव में—शाब्दिक अर्थ में—महीप सनातन विराट् पुरुष के रूप में उसके आगे व्यक्त हो उठा, जिसकी शरण में माथा टेकने के सिवा दूसरा कोई चारा नीलिमा को अपनी युग-युग से पीड़ित आत्मा के त्राण का नहीं दिखाई देता था।

अकस्मात् उसका यह काया-पलट—बल्कि उसकी आत्मा का मूलगत परिशोधन कैसे, किस स्पर्शातीत माया के प्रभाव से हो गया, यह सोचने और समझने की न तो शक्ति ही नीलिमा में शेष रह गई थी और न प्रवृत्ति ही; वह केवल एक आश्रय-अन्वेषिणी सुकुमार लतिका की तरह तत्काल के लिए पूर्णतः समर्पणशील होकर, महीप के गले में अपना दाहिना हाथ डाले और उसके कन्धे पर अपना नङ्गा सिर स्थापित किये अर्ध-मूर्छित अवस्था में मोहमग्न हो रही थी।

महीप परिस्थिति से ऊपर उठने की प्रबल चेष्टा कर रहा था। वह इतना अन्धा नहीं था कि यह भी न जानता हो कि नीलिमा की तत्कालीन सम्मोहित मानसिक स्थिति क्षणिक हिप्नोटिक प्रभाव के दूर होने के साथ ही इस तरह विलीन हो सकती है, जैसे कभी उसका अस्तित्व किसी रूप में रहा ही न हो। इसलिए वह पूरी इच्छा-शक्ति के प्रयोग से अपने को तब तक स्थिर रखने की चेष्टा कर रहा था जब तक इस बात का ठीक पता न चल जाय कि नीलिमा के मन के ऊपरी तूफ़ान और उथल-पुथल के नीचे स्थित उसकी स्थिर भावना में कोई वास्तविक परिवर्तन आया या नहीं। वह चुपचाप सिकुड़ा सिमटा हुआ बैठा रहा, यद्यपि नीलिमा के आत्म-समर्पित शरीर के स्पर्श से एक मर्मघाती पुलक की अनुभूति उसे बुरी तरह विकल कर रही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। आज जब उसके जीवन की चरम साधना सफल होने जा रही थी तब न जाने उसके भीतर का कौन अज्ञातवासी उसे परिपूर्ण शक्ति से निश्चल और निरुद्वेग बने रहने के लिए अपने वज्र-कठिन आदेश का पालन करने को बाध्य कर रहा था।

सहसा महीप को पता चला कि उसकी बाईं बाँह का ऊपरी भाग भीग गया है। वह चौंक पड़ा। अधिक कुछ सोचे-समझे बिना उसने सहसा नीलिमा की ठुड्डी पकड़ ली और दूर जलती हुई बिजली के क्षीण प्रकाश में उसकी आँखों में चमकती हुई बूँदों को देखकर घबराये हुए स्वर में बोला—"नीलिमा, यह क्या! तुम क्या रो रही हो?"

नीलिमा कुछ न बोलकर दायाँ हाथ महीप के कन्धे पर रक्खे हुए बायें हाथ से आँचल पकड़कर आँखें पोंछने लगी। महीप की बुद्धि बुरी तरह भरमा गई थी। वह अपने को एक ऐसी विचित्र परिस्थिति में पा रहा था जो चारों ओर काले-काले रहस्यमय पटों से घिरी हुई थी, जिनके न बीच में कुछ दिखाई देता न परे। न वह नीलिमा की मनोभावना को ठीक से कुछ समझ पा रहा था, न अपना कर्तव्य ही निर्धारित कर पा रहा था। पर इतना वह अवश्य समझ रहा था कि नीलिमा के मन में चाहे कोई बात या बातें हों, उसे हर हालत में दिलासा देना उसका कर्तव्य है—'फ़र्स्ट एड' में चूक हो जाने से सम्भव है उसके भीतर की कोई गहरी चोट 'सेप्टिक' हो जावे। इस भावना ने महीप की उस निश्चलता को सहसा बिजली के वेग से काफ़ूर कर दिया जो इस समय तक उसके मन को बरबस आच्छन्न किये हुए थी। उसकी समस्त मानसिक बाधायें और द्विविधायें न जाने कहाँ विलीन हो गईं। किसी अज्ञात भीतरी मशीन से परिचालित पुतले की तरह उसने भी बिना कुछ सोचे-समझे नीलिमा के गले पर अपना बायाँ हाथ डाल दिया और दाहिने हाथ से उसकी ठुड्डी उसी तरह पकड़े हुए अत्यन्त सहृदय, संवेदनात्मक और साथ ही आवेशपूर्ण स्वर में बोला—"नीलिमा, घबराओ नहीं, सँभलकर बैठ जाओ, चलो तुम्हें घर पहुँचा दूँ।"

"नहीं, नहीं, मैं आज घर किसी भी हालत में नहीं जाऊँगी!" प्रायः सिसकती हुई आवाज़ में नीलिमा बोल उठी। वह अभी तक महीप के कन्धे पर अपना माथा टेके हुए थी।

महीप को ऐसा लगा जैसे उसका हृदय अपने स्थान पर से हटकर नीचे किसी गहरे गड्ढे में गिरने को है। उसे फिर एक बार उस दिन की बात याद आई जब नीलिमा उसके विदा होने के समय अपने बँगले के फाटक के बाहर मिलने आई थी। तब महीप के प्राणों की गति कई हज़ार 'वाल्ट' की शक्तिशाली बिजली के वेग से चल रही थी, और उसी असाधारण प्राण-शक्ति की प्रेरणा से उसने नीलिमा से प्रार्थना की थी कि वह उसी क्षण, बिना कुछ सोचे-विचारे उसके साथ चली चले। तब नीलिमा ने क्षणिक द्विविधा के बाद स्पष्ट शब्दों में इनकार कर दिया था और अपनी किसी अज्ञात विवशता का उल्लेख करके उससे क्षमा माँगी थी। महीप सोचने लगा कि उस समय की और की परिस्थितियों में कितना अन्तर है! आज नीलिमा समझाने पर भी घर को लौट चलना नहीं चाहती, और वह—महीप—चाहे, तो वह इस समय संसार के किसी भी स्थान के लिए उसके साथ बिना क्षण-भर की द्विविधा के को तैयार है। पर क्या उसकी उस अस्थायी मानसिक का (महीप को पूरा विश्वास था कि नीलिमा की असाधारण मानसिकता अस्थायी है) लाभ उठाना होगा? यह प्रश्न चीरफाड़ के लिए उद्यत छुरे की तरह महीप के कलेजे को छुए हुए था। आज महीप अपने कई हज़ार 'वाल्ट' वाली बिजली की शक्ति नहीं पा रहा आज जैसे 'स्विच आफ़' हो गया था। इसका उस दिन की घटना की चरम परिणति के बाद जब अपनी 'विवशता' का उल्लेख किया था, और यह था कि वह सम्भवतः उसके अपने 'मन की ही विवशता' महीप की भीतरी आँखें चौकन्नी हो गई थीं, उसके बाद दिन पहले शान्ता के यहाँ दावत के अवसर पर नीलिमा ने देवी के सामने उसे बेवकूफ़ बनाया था। आज वही इस तरह उसके कन्धे का आश्रय पकड़कर सिसक रही महीप के सिवा उसके विकट भँवर में डोलते हुए जीवन दूसरा आधार ही न हो। उस विचित्र परिस्थिति में बुद्धि कोई भी निश्चित कर्तव्य निर्धारित करने में असमर्थ अनुभव कर रही थी।

"क्या कोई शक्ति इस अनन्त रहस्यमय विश्व में है, जो मेरे अन्तःकरण को यह सुझा सके कि ऐसी घड़ी में मेरे लिए सबसे उचित कर्तव्य क्या हो भगवान्! इस भूलभुलैया के चक्कर को पार करने का दिखा दो।"

सिद्धान्त रूप से महीप यद्यपि ईश्वर की दयामयी विश्वास नहीं करता था, तथापि उसका घबराया विभ्रान्त अन्तर्मन आज चरम सङ्कट के क्षण में ईश्वर का सहारा पकड़ने को उतावला हो उठा।

बयालीसवाँ परिच्छेद

काफ़ी देर तक हतबुद्धि अवस्था में महीप बाहर रहकर अन्तरालाप—बल्कि अन्तर-प्रलाप—में निमग्न रहा। बाद सहसा उसमें न जाने कहाँ से स्फूर्ति आ गई, निश्चय कर लिया कि परिस्थिति चाहे कैसा ही रङ्ग बदले वह हर हालत में साहसपूर्वक उसका सामना करेगा।

अत्यन्त धीर स्वर में उसने कहा—"तो तुम कहाँ चाहती हो?"

"मैं माँ के पास नहीं जाऊँगी, उसके अलावा माँ ले चलो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो उठो !"—बिना ठीक से कुछ सोचे महीप बोल उठा, और नीलिमा का दायाँ हाथ पकड़कर वह उसे उठाने लगा।

नीलिमा धीरे से, प्रायः अर्द्धमूर्च्छित अवस्था में, उठी। महीप का हाथ कुछ ढीला पड़ते ही वह गिरने लगी थी, पर महीप तत्काल उसे फिर से मज़बूती से पकड़ लिया। बड़ी कठिनाई से महीप उसे उस स्थान तक ले जाने में समर्थ हुआ जहाँ ताँगा खड़ा था। जब दोनों ताँगे पर बैठ गये तो महीप सोचने लगा कहाँ चलना चाहिए। जब ताँगा पार्क के बाहर चला आया, तब ताँगेवाले ने पूछा—"बाबूजी, किधर चलूँ।"

महीप अभी तक कुछ सोच नहीं पाया था। क्षण भर के लिए उसने फिर सोचा, उसके बाद सहसा बोल उठा—"बड़े स्टेशन की तरफ़।"

वह स्वयं नहीं जानता था कि स्टेशन चलने के लिए उसने क्यों कहा। ताँगा शहर की प्रधान सड़क से होकर चलने लगा। नीलिमा अभी तक अर्द्धचेतनावस्था में झूम-सी रही थी और महीप, इस डर से कि कहीं ताँगे के हिचकोले से वह गिर न पड़े, उसका बायाँ हाथ पकड़े था, यद्यपि स्वयं उसका आधा मन निद्रा-विचरण की-सी दशा में भ्रमित हो रहा था।

जब ताँगा स्टेशन-रोड की तरफ़ मुड़ा तब महीप का भ्रमित मन वास्तविकता की ओर लौटने लगा। एक बार उसने सोचा कि ताँगेवाले से लौट चलने को कहे और नीलिमा के न चाहने पर भी उसकी माँ के पास पहुँचा आवे। पर मन के इस इरादे को उसने वाणी का रूप नहीं दिया और ताँगा तेज़ी से स्टेशन की ओर दौड़ा चला गया।

ताँगे के घोड़े ने स्टेशन के फाटक के भीतर घुसकर बरसाती के भीतर पहुँचकर ही विश्राम लिया। स्टेशन के भीतर कुलियों और यात्रियों का कोलाहल और किसी एक गाड़ी के इंजिन की सीटी की आवाज़ सुनकर नीलिमा की योगनिद्रा टूटी। उसने विस्मित आश्चर्य से महीप से पूछा—"यह तुम कहाँ ले आये !"

महीप ने अपने भीतर की डाँवाडोल अवस्था और घबराहट को बलपूर्वक छिपाकर ऊपर अत्यन्त शान्त और गम्भीर भाव से कहा—"हम लोग बड़े स्टेशन पहुँच गये हैं। कानपुर को गाड़ी इसी स्टेशन से जाती है।"

"कानपुर ?" फिर उसी अकपट आश्चर्य से नीलिमा ने पूछा।

पर महीप की बुद्धि तब तक कुछ स्थिर हो चुकी थी। बीच स्टेशन में नीलिमा के उस आश्चर्यसूचक प्रश्न का कोई उत्तर देकर बात को बढ़ाना निरापद नहीं है, यह वह जानता था। इसलिए प्रश्न को टालकर उसने नीलिमा का हाथ पकड़कर उससे ताँगे से उतरने को कहा। ताँगेवाले को उचित किराया देकर, उसे रुख़सत करके, वह नीलिमा को स्टेशन के भीतर एक प्रकार से खींच ले गया।

पास ही इन्टर क्लास का टिकट-घर था। वह दूसरे दर्जे के टिकट ख़रीदना चाहता था, पर उसके बटुवे में रुपयों की कमी थी और नीलिमा से वह उस समय कुछ माँगना नहीं चाहता था। नीलिमा से दो मिनट खड़े रहने को कहकर वह ड्योढ़े दर्जे के दो टिकट ख़रीदने के इरादे से खिड़की के पास गया। दो-चार आदमी और टिकट ख़रीदने के इरादे से खड़े थे और टिकट बेचनेवाला बाबू व्यस्त था। दो मिनट के स्थान पर प्रायः पन्द्रह मिनट लग गये। महीप बीच-बीच में घबराहट के साथ पीछे नीलिमा की ओर देखता जाता था। उसे भय था कि नीलिमा के मन की तत्कालीन असाधारण अवस्था में कहीं वह चक्कर खाकर गिर न पड़े। उसका अनुमान कुछ ग़लत भी नहीं था। नीलिमा के पाँव सचमुच लड़खड़ा रहे थे और उसका सिर चकरा रहा था। वह धीरे से पास ही दीवार के पास जाकर उस पर पीठ अड़ाकर खड़ी हो गई।

जब महीप टिकट ख़रीदकर आया तो नीलिमा का बायाँ हाथ पकड़कर उसने अत्यन्त स्निग्ध स्वर में भीतर प्लेटफ़ार्म की ओर चलने के लिए कहा। नीलिमा आश्चर्यजनक रूप से अनमनी हो उठी थी। बिजली की तेज़ रोशनी में महीप ने देखा, उसकी आँखों में एक अस्वाभाविक प्रकाश चमक रहा था। महीप भीतर ही भीतर चौंक उठा और डर गया। पर बाहर से उसने शान्त भाव जताते हुए कहा—"चलो, गाड़ी आने का समय हो चला है।"

सहसा नीलिमा एक विचित्र और भयावने ढङ्ग से चीख़ मारती हुई बोल उठी—"तुम मुझसे कहाँ चलने के लिए कह रहे हो ? यहाँ तुम मुझे क्यों ले आये ? किसने तुमसे स्टेशन चलने को कहा था ? मुझे घर ले चलो।" कहकर वह धाड़ें मार-मारकर रोने लगी। चारों ओर से भीड़ जमा हो गई और एक ख़ासा तमाशा लग गया। महीप हर तरह समझाने की कोशिश करने लगा, पर नीलिमा किसी तरह मानती ही नहीं थी—केवल रोती चली जाती थी। उसे सम्भवतः उस समय न भीड़ का ध्यान था, न अपनी वास्तविक परिस्थिति की कोई ख़बर थी और न महीप की। महीप हौलदिल हो उठा था। उसके पहले अपने जीवन में कभी उसने अपने को वैसी परिस्थिति में नहीं पाया था। स्टेशन के बहिर्भाग की सारी तमाशबीन जनता की कुतूहली और व्यंग्य तथा मुसकान-भरी दृष्टि का लक्ष्य बना हुआ था। इसके अलावा उसे एक दूसरी ही बात का भय होने लगा था, जिसकी आशङ्का उसका अन्तर्मन पहले ही अस्पष्ट रूप से करता आ रहा था।

जहाँ डर वहीं बाघ का घर। सहसा महीप ने भीत दृष्टि से देखा कि रेलवे-पुलिस का एक कर्मचारी—जो पोशाक-पहनावे से अपेक्षाकृत ऊँचे ओहदे का मालूम होता था—न जाने कहाँ से अपने शिकार की गन्ध सूँघकर घटनास्थल पर आ पहुँचा। पुलिस-कर्मचारी को आते देखकर भीड़ और ज़्यादा बढ़ गई और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घटनास्थल के अधिक से अधिक निकट पहुचने के उद्देश्य से लोग एक-दूसरे को धक्का देने लगे।

पुलिस-कर्मचारी ने आते ही अपनी धीर-गम्भीर आँखों से, जो अत्यन्त कटु क्रूरता और मार्मिक व्यंग्य को पिये हुए थीं, महीप की ओर देखते हुए प्रकट रूप से शान्त स्वर में कहा—"क्यों साहब, मामला क्या है?"

महीप साहस बटोरकर बोला—"मामला कुछ भी हो, आपसे कोई सरोकार नहीं है।"

इस उत्तर से पुलिस-कर्मचारी तिलमिला उठा। बोला—"मुझसे सरोकार है कि नहीं, यह बाद में मालूम होगा, पर अभी मेहरबानी करके बताइए कि ये क्यों रो रही हैं और आप लोग कहाँ जाने के इरादे से स्टेशन आये हुए हैं।"

"हम लोग कहीं भी जाने के इरादे से आये हुए हों, आपको कुछ भी बताने के लिए मैं मजबूर नहीं हूँ।" महीप ने उसी दृढ़ता से कहा।

"पर आपको बताना ही होगा। आप लोगों की वजह से यहाँ इतनी भीड़ जमा हो गई है, जिससे मुसाफ़िरों को आने-जाने में दिक़्क़त उठानी पड़ रही है। इसके अलावा, मामला ऐसा नज़र आता है, जिसमें दस्तन्दाज़ी करना मेरे लिए बहुत ज़रूरी है।" यह कहकर पुलिस-कर्मचारी सीधे नीलिमा के पास जा पहुँचा और बोला—"क्या आप मेहरबानी करके यह बतावेंगी कि आप क्यों रो रही हैं और आपको कहाँ जाना है?"

नीलिमा को हिस्टीरिया का-सा जो 'फिट' आया था, पुलिस-कर्मचारी की उपस्थिति में वह पल भर में काफ़ूर हो गया था। उसके होश ठिकाने लग गये थे। उसने कहा—"मेरे पाँव में मोच आ गई थी, इसलिए मैं रो रही थी। हम लोग स्टेशन में यों ही टहलने के इरादे से चले आये थे। हमें कहीं नहीं जाना है। घर वापस चले जायँगे।"

"पर टिकट तो आप लोग कटा चुके हैं! क्यों साहब?" महीप की ओर कुटिल दृष्टि से देखते हुए पुलिस-कर्मचारी बोला।

"जी—नहीं"—हकलाते हुए महीप ने कहा।

"माफ़ कीजिएगा, मैं तलाशी लेने के लिए मजबूर हूँ।"

महीप के प्रबल प्रतिरोध के बावजूद उस भीमकाय और (न जाने जीवन के किस सुख और सन्तोष के कारण) हृष्ट-पुष्ट पुलिस-कर्मचारी ने उसकी तलाशी ली और दोनों टिकट उसकी जेब से बरामद कर लिये।

"तो जनाब कानपुर को तशरीफ़ ले जा रहे थे! और (नीलिमा की ओर कुटिल व्यंग्यभरी दृष्टि से घूरकर) अब आप घर को लौट जाना चाहती हैं?"

"जी हाँ।"—आश्चर्यजनक दृढ़ता से नीलिमा ने कहा।

"क्या मैं पूछ सकता हूँ, ये आपके कौन लगते हैं?" महीप की ओर सङ्केत करते हुए उसने नीलिमा से प्रश्न किया।

"ये मेरे 'हसबैंड' हैं"—नीलिमा ने उसी आत्म-[illegible] धैर्य और सुदृढ़ साहस के साथ उत्तर दिया। महीप [illegible] चरम दुर्गति की उस परिस्थिति में भी नीलिमा की ओर [illegible] दृष्टि से आँखें फाड़-फाड़कर देखता रह गया।

पुलिस कर्मचारी भी नीलिमा के उत्तर से कुछ [illegible] ठिठककर रह गया। पर वह बड़ा घाघ और अपने [illegible] बरसों से घिसा हुआ था। उसने कहा—"माफ़ [illegible] एक शरीफ़ औरत की बात पर यक़ीन करने पर भी [illegible] इस बात के लिए मजबूर हूँ कि आपके साथ आपके घर [illegible] आपके बयान की सचाई का सबूत—"

"आपको कोई अधिकार मेरे साथ मेरे घर चलने को [illegible] है।" नीलिमा ने तीव्र क्रोध के आवेश में अँगरेज़ी में [illegible]

"पर मुझे चलना ही होगा। अगर आप लोग [illegible] के साथ नहीं चलेंगे तो मुझे ज़बरन् आप लोगों को पकड़कर [illegible] चलना होगा।"

पुलिस-कर्मचारी का स्वर यद्यपि अभी तक पहले की ही [illegible] धीर और शान्त बना हुआ था, तथापि उसके स्वर में कठोरता [illegible] अधिक थी। महीप अपनी स्थिति की हीनता के बोझ से [illegible] और ग्लानि से गड़ा जा रहा था और इस क़दर हौलदिल [illegible] उठा था कि एक शब्द भी उसके मुँह से नहीं निकल पाता था। नीलिमा का भी साहस धीरे-धीरे क्षीण पड़ता चला जा [illegible] था। वह कुछ देर तक बड़बड़ाती रही, पर जब पुलिस [illegible] चारी अपने निश्चय पर वज्र की तरह अटल रहा और [illegible] प्रतिरोध करने पर बल-प्रयोग की धमकी दिखाने लगा, तब [illegible] में वह भी ढीली पड़ गई और तङ्ग आकर बोली—"[illegible] बात है, यदि आप यही चाहते हैं तो चलिए।"

दो कान्स्टेबिल पहले ही से पास ही खड़े थे। [illegible] एक को पुलिस-कर्मचारी ने एक ताँगा ले आने का आदेश दिया। दो मिनट के भीतर एक ताँगा आ पहुँचा। पुलिस-कर्मचारी ने नीलिमा और महीप दोनों को लक्ष्य करके कहा—"[illegible] ले चलिए।" दोनों मन मारकर मौन भाव से ताँगे की [illegible] आगे बढ़े। पुलिस-कर्मचारी आगे ताँगेवाले के साथ बैठ [illegible] और नीलिमा तथा महीप पीछे। नीलिमा ने अपने मकान [illegible] पता बता दिया और ताँगे का स्वस्थ घोड़ा ताँगेवाले के [illegible] हलके झटके का इशारा समझकर सरपट दौड़ा चला गया।

तैंतालीसवाँ परिच्छेद

रास्ते भर महीप निरतिशय आत्मग्लानि के मर्मभेदी प्रहारों को, सिर नीचा किये, सहन करता चला जा रहा था। [illegible] के दाँतों को भीतर ही भीतर पीसता हुआ। बार-बार वह [illegible] छाती में छुरा भोंकने की कल्पना कर रहा था, यद्यपि [illegible] अन्तर्मन भली-भाँति जानता था कि इस प्रकार का [illegible] करने में वह स्वभाव से असमर्थ है। "पर इस दारुण [illegible] इस अत्यन्त दयनीय दुर्गति—का क्या उपचार होगा, [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनायाशित रूप से मेरी हुई है!" वह मन ही मन प्रश्न करने लगी। नीलिमा से सम्बन्धित जितनी भी मीठी तथा कड़वी स्मृतियाँ आज तक उसके मन में वर्तमान थीं वे सब उसे कसैली—बल्कि विषैली—लगने लगी थीं। इतने दिनों तक अपने मन की जिस रोमांटिक भावना को वह अत्यन्त महान् और गहन रहस्य से भरी समझता आ रहा था वह आज अत्यन्त हीन और घृणित लगने लगी। उसे ऐसा अनुभव हो रहा था कि उसे एक अत्यन्त नीच और कलुषित दुष्कर्म के अपराध पर फाँसी पर लटकाये जाने के उद्देश्य से नीलिमा की माँ के आगे पेश किया जानेवाला है। श्रीमती खन्ना उस पुलिस-कर्मचारी के साथ जब नीलिमा को और उसे साधारण बाज़ारू अपराधियों के रूप में देखेंगी तब अपने मन में क्या सोचेंगी इस बात की कल्पना से महीप के रोंगटे खड़े होते-होते रह जाते थे। रोंगटे पूरी तरह से खड़े इसलिए नहीं हो रहे थे कि उसके शरीर की प्राण-शक्ति उसकी आत्म-ग्लानि के कारण एकदम क्षीण हो चली थी। श्रीमती खन्ना की भावी मुख-मुद्रा महीप के मन की आँखों के आगे किसी भी अवसाद से कम भयावने रूप में नहीं आ रही थी। वह पशु-संस्कारवश बार-बार अपने कुर्ते की दोनों जेबों को इस हताश आशा से टटोल रहा था कि शायद कोई ऐसी चीज़ भाग्य के किसी अलौकिक रहस्य-चक्र से प्राप्त हो जाय जो खाये जाने पर तत्काल मार डालनेवाले विष का काम कर जाय। वह जानता था कि उसकी जेब में किसी भी ऐसी चीज़ का रहना असम्भव है, पर बार-बार वह टटोलता ही चला जाता था। उसे इस बात पर घोर पश्चात्ताप होने लगा कि आज तक उसके मन में यह सूझ कभी उत्पन्न नहीं हुई कि किसी सद्य-नाशक विष की डिबिया या शीशी जीवन की किसी असाधारण स्थिति के लिए अपने पास रक्खे रहना आवश्यक है। उसने प्रतिज्ञा की कि आज वह फाँसी पर चढ़ने के बाद भी जीवित रह गया तो भविष्य में निश्चय ही अपने पास इच्छानुसार किसी भी समय मरने का साधन रक्खे रहेगा।

नीलिमा अपने भीतर आश्चर्यजनक धीरता और स्थिरता का अनुभव कर रही थी। उसे स्वयं इस बात पर आश्चर्य हो रहा था कि कुछ ही देर पहले उसके जिस मन की अवस्था उत्तेजित और विस्फोटपूर्ण हो उठी थी कि उसने न चाहने पर भी बरबस सरेआम एक अत्यन्त अशोभन तमाशा खड़ा कर दिया था, जिसके फल-स्वरूप महीप को और स्वयं उसे अकथनीय रूप से ज़लील होना पड़ा है, उसका वही मन ज़लालत की चरम सीमा को पहुँचने पर इस क़दर शान्त और स्थिर हो गया है। माँ के कठोर न्यायालय में होनेवाले जिस विचार में अत्यन्त हीन अपराधिनी के रूप में पेश किये जाने के लिए वह पुलिस-कर्मचारी के साथ चली जा रही थी, उसमें सफलतापूर्वक खड़े होने की पूरी दृढ़ता वह अपने भीतर पा रही थी। चरम सङ्कट के क्षण में उसने महीप को अपना 'हसबैंड' बताया था, उसके लिए तनिक भी ग्लानि का अनुभव उसे नहीं हो रहा था, और वह माँ के आगे भी पूरी शक्ति से और मन की पूरी सचाई से उस बात को दुहराने के लिए कमर कसे बैठी थी। ऐसा साहस अपने में उसने अपने जीवन में इसके पहले नहीं पाया था। साथ ही उसे इस बात के लिए भी क्षोभ होने लगा था कि उसने स्टेशन पर अकारण एक 'सीन' खड़ा कर दिया और उसी के कारण महीप को घोर अवमानना सहन करनी पड़ रही है। वह मन-ही-मन यह प्रतिज्ञा करने लगी कि उस अवमानना से महीप को जो मानसिक क्षति उठानी पड़ी है उसकी पूरी पूर्ति में वह कोई बात उठा नहीं रक्खेगी और भविष्य में उसकी माँ चाहे कैसा ही प्रतिरोध खड़ा क्यों न करें, वह पूर्णतया अपने स्वतन्त्र विचार के अनुसार ही कार्य करेगी।

ताँगा जब श्रीमती खन्ना के बँगले के फाटक के पास पहुँचा तब महीप का घोर अवसाद से आच्छन्न मन सहसा पूर्ण रूप से सचेत हो उठा और एक क्षण के लिए उसके मन में यह तीव्र प्रेरणा जागरित हो उठी कि ताँगे पर से कूदकर भाग निकले। पर तत्काल ही बिजली के वेग से उसमें, न जाने अन्तर के किस अँधेरे 'पावर-हाउस' से, एक ऐसी निराली शक्ति का सञ्चार हो गया जिसका अनुभव उसे जीवन में उसके पहले शायद ही कभी हुआ हो। उसने अपने मन को एक अभूतपूर्व धैर्य और साहस के कवच से आच्छादित पाया। शायद फाँसी पर लटकाये जानेवाले प्रत्येक व्यक्ति में फाँसी का फन्दा गले में पड़ने के ठीक पूर्व अन्तिम दो क्षणों में इसी प्रकार के आश्चर्यजनक साहस का सञ्चार हो आता होगा। दुःख इस बात का है कि यह अनुमान कहाँ तक सत्य है यह बात आत्म-अनुभव से बतानेवाला कोई व्यक्ति जीवित रूप में प्राप्त नहीं हो सकता। जो भी हो, यह सत्य है कि महीप फाँसी के अन्तिम क्षण में उस चरम दण्ड का सामना करने के लिए पूरी ताक़त से तैयार हो गया।

ताँगा भीतर घुसकर जब बँगले के बरामदे के पास आकर खड़ा हो गया तब श्रीमती खन्ना और प्रतिमा ने बाहर आकर बिजली के प्रकाश में विस्मय-विमूढ़ होकर देखा कि नीलिमा और महीप पुलिस-कर्मचारी के साथ आये हुए हैं। जिस समय से नीलिमा घर से ग़ायब हुई थी तभी से श्रीमती खन्ना अत्यन्त आशङ्कित हो उठी थीं। फिर भी रात होने तक वह अपने को बरबस यह समझाने की चेष्टा करती रहीं कि वह अपनी किसी सङ्गिनी के यहाँ चली गई होगी और अँधेरा होने पर घर पहुँच जायगी। पर जब रात हो आई, अँधेरा बढ़ता चला गया और नीलिमा नहीं आई, तब उनकी चिन्ता बहुत बढ़ गई। फिर भी दस बजे तक वह मरे मन से अपने को यह प्रबोध देने की चेष्टा करती रहीं कि नीलिमा सिनेमा चली गई होगी और 'फ़र्स्ट शो' समाप्त होते ही वह चली आयगी। पर जब साढ़े दस बज गये और नीलिमा फिर भी नहीं आई, तब श्रीमती खन्ना बुरी तरह घबरा उठीं और प्रायः पागलों की-सी मनोदशा में बरामदे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में चक्कर काटने लगीं। दूर से जब-जब किसी ताँगे या एक्के के आने की आवाज़ सुनाई देती तब-तब उनके कान खड़े हो उठते, और जब वह ताँगा या एक्का उनके बँगले के फाटक को पार करके आगे बढ़ जाता, तब उनकी निराशा का ठिकाना न रहता। वे बार-बार अत्यन्त व्याकुलता के साथ प्रतिमा से कहतीं—"क्या बात हो गई प्रतिमा, अभी तक वह नहीं आई! कहाँ चली गई? तुमसे कुछ कह नहीं गई! अवश्य ही वह तुम्हें बता गई होगी, पर तुम मुझसे छिपाना चाहती हो! तुम दोनों बहनें एक-सी हो और मेरे प्राण लेने के लिए क़सम खाये बैठी हो। तुम दोनों ने मुझे जिस क़दर परेशान कर रक्खा है वैसा किसी का घोर शत्रु भी नहीं करता। बताती क्यों नहीं कि वह कहाँ गई?"

प्रतिमा यद्यपि स्वभाव से अत्यन्त धैर्यशाली थी और कभी किसी भी बात में चिन्ता को एक सीमा से बाहर नहीं बढ़ने देती थी, तथापि आज वह भी बहुत चिन्तित हो उठी थी और स्वयं बहुत परेशान थी कि दीदी कहाँ गई और अभी तक वापस क्यों नहीं आई है। तिस पर जब अपनी माँ की इस तरह की जली-कटी बातें वह सुनती थी तब स्वभावतः उसका अन्तर कराह उठता था। जब श्रीमती खन्ना अपनी परेशानी की हालत में बार-बार इसी तरह की बातों को दुहराने लगीं तब प्रतिमा से रहा न गया और वह उबल पड़ी। उसने झल्लाकर कहा—"मैं नहीं बताऊँगी कि वह कहाँ गई। वह जहाँ भी गई है, उसने उचित ही किया है। मैं भी एक दिन इसी तरह भागकर चली जाऊँगी, तभी तुम्हारे मन को पूरा सन्तोष मिलेगा। दीदी को तुमने इधर कुछ दिनों से बात-बात में जिस तरह परेशान करना शुरू कर दिया था उस हालत में भागकर निकल जाने के सिवा उसके लिए दूसरा चारा नहीं रह गया था। उसने बहुत अच्छा किया। और अब तुम चाहती हो कि मैं भी उसी की तरह निकल जाऊँ। अच्छी बात है, मैं अभी जाती हूँ।" यह कहकर आँखों से बड़े-बड़े गरम-गरम आँसू बहाती हुई प्रतिमा बड़ी तेज़ी से भीतर चली गई।

श्रीमती खन्ना अपनी परेशानी की उस हालत में प्रतिमा का वह रूप देखकर कुछ देर तक भौंचक्की-सी खड़ी रह गईं। उसके बाद वे भी पागलपन की-सी हालत में द्रुत पगों से भीतर गईं। प्रतिमा एक सोफ़ा पर बैठी हुई फफक रही थी। श्रीमती खन्ना उसी की बग़ल में बैठ गईं। अपने दाहिने हाथ से प्रतिमा का बायाँ हाथ पकड़कर अपना बायाँ हाथ उन्होंने उसके कन्धे पर डाल दिया और अत्यन्त व्याकुल और साथ ही अत्यन्त स्निग्ध स्वर में बोलीं—"अरी पगली, तू माँ की ज़रा-सी बात से बुरा मान गई। तनिक इस बात का भी तो ख़याल कर कि इस समय मेरे मन की क्या दशा हो रही है। ऐसी हालत में अगर दो-चार कड़ी बातें मेरे मुँह से निकल पड़ें तो स्वाभाविक ही है। उनके लिए इस क़दर नाराज़ होना क्या उचित है! भोली लड़की, तुम्हें तो चाहिए था कि अपनी माँ की आज की पागलपन की हालत में उसे दिलासा देती और तुम उलटे पागल बना रही हो।"

श्रीमती खन्ना के कण्ठ-स्वर से यह स्पष्ट था कि उनका एक-एक शब्द आँसुओं से गीला है। प्रतिमा अधिक प्रतिरोध न कर सकी। उसने अपनी दोनों बाँहों से माँ का गला जकड़ लिया और उसका रुदनोच्छ्वास पूरे वेग से उमड़ चला। कुछ देर तक दोनों माँ बेटी जी भरकर रोती रहीं। सहसा एक ताँगे के फाटक के भीतर घुसने की आवाज़ सुनकर दोनों हड़बड़ाती हुई उठ खड़ी हुईं और बाहर चली आईं। बरामदे की बत्ती जली हुई थी। उस प्रकाश में दोनों ने अत्यन्त भीत होकर देखा एक पुलिस-कर्मचारी के साथ नीलिमा और महीप आये हैं।

क्षण भर के लिए श्रीमती खन्ना विस्मय से आतङ्क से पत्थर की तरह निश्चल बनकर खड़ी रह गईं। वे एक ऊँचे समाज में पली शिक्षिता महिला थीं, जहाँ पुलिस-कर्मचारी से डरना घोर कायरता समझी जाती है। अलावा, न जाने किस पशु-संस्कार से, सारी परिस्थिति का आभास बिना किसी के कुछ कहे ही उनको मिल गया। प्रश्न-भरी क्रुद्ध दृष्टि से पुलिस-कर्मचारी की ओर देखने जब तीनों ताँगे पर से उतरे तब पुलिस-कर्मचारी बढ़े उनके पास आकर खड़ा हो गया। श्रीमती खन्ना के व्यक्तित्व में न मालूम क्या जादू था, उन्हें देखते ही कर्मचारी एकदम श्रीहत हो उठा और अधिकार और जो मुखड़ा वह इतने देर तक पहने था वह उसके चेहरे खिसक गया। उसने कुछ घबराहट की-सी आवाज़ में की ओर सङ्केत करते हुए श्रीमती खन्ना से कहा—"ये (महीप की ओर उँगली उठाते हुए) साथ स्टेशन पर थीं। दोनों कानपुर का टिकट ख़रीद चुके थे। पर किसी सबब से दोनों में तकरार हो गई और इन्होंने (नीलिमा इनके (महीप के) साथ चलने से इनकार कर दिया। स्टेशन में लग गई थी। दोनों के बीच झगड़ा बढ़ते देखकर मुझे दस्तन्दाज़ी करनी पड़ी और मेरे मन में एक शक पैदा हो हालाँकि इन्होंने (नीलिमा ने) इनको (महीप को) अपना बताया है, फिर भी मैंने अपना यह फ़र्ज़ समझा कि आपके तक इन्हें पहुँचा आऊँ और यह दर्याफ़्त कर लूँ कि—"

"कुछ दर्याफ़्त करने की ज़रूरत नहीं है।"—श्रीमती अस्वाभाविक रूप से झल्ला उठीं—आप यहाँ से फ़ौरन जाइए। आपको इस मामले में दस्तन्दाज़ी का कोई हक़ था। आप इसी वक़्त उलटे पाँव लौट जाइए। जाइए।" प्रायः हाँफते हुए श्रीमती खन्ना ने कहा।

पुलिस-कर्मचारी बेतरह घबरा उठा। उसने आदाब कर बार-बार क्षमा माँगी और उसके बाद ताँगे पर बैठकर चुपचाप वापस चला गया।

पुलिस-कर्मचारी के जाते ही श्रीमती खन्ना ने बड़ी फुर्ती अत्यन्त आवेश के साथ, नीलिमा का हाथ पकड़ा और "चलो" कहकर प्रायः घसीटती हुई उसे भीतर अपने कमरे में ले गईं भीतर से उन्होंने चिटख़नी बन्द कर दी।

बाहर महीप और प्रतिमा कुछ देर तक एक-दूसरे का ताकते हुए खड़े रहे। भीतर से श्रीमती खन्ना की मीठा हना भरी अस्पष्ट और दबी हुई आवाज़ सुनाई दे रही प्रतिमा को भीतर जाने का साहस नहीं होता था और पाँव निरतिशय जड़ता-वश पीछे को नहीं लौट रहे थे। अत्यन्त कौतूहल-भरी दृष्टि से महीप की ओर देख रही महीप के मुख के भाव से सारी घटना का भीतरी हाल चेष्टा कर रही थी। पर मुँह से दोनों में से कोई भी एक शब्द नहीं बोला। कुछ देर बाद प्रतिमा सहसा भीतर चली गई। कुछ देर तक वहीं खड़ा रहा और कान खड़े करके वह चेष्टा करता रहा कि भीतर माँ-बेटी के बीच क्या बातें हैं। पर साफ़-साफ़ उसे कुछ भी न सुनाई देता था। अनिच्छित पगों से बँगले के अहाते से बाहर चला गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

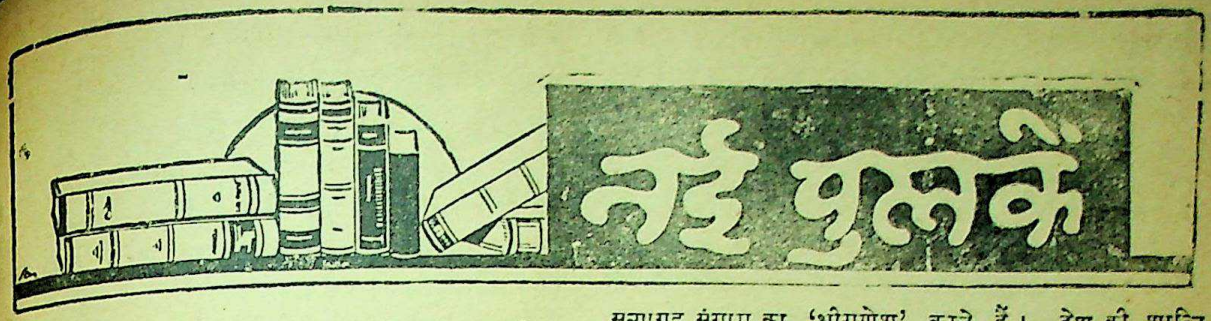

१—वरदान (काव्य)—रचयिता, श्री भागवत मिश्र; प्रकाशक, रुक्मिणी साहित्य-कुटीर, ग़ाज़ीपुर हैं। पृष्ठ-संख्या ११०; मूल्य १) है।

प्रस्तुत पुस्तक मिश्रजी की साल भर की कविताओं का संग्रह है। भाषा, भाव एवं शैली तीनों दृष्टियों से कवि को अपने प्रयत्न में सफलता मिली है। कविता के विषय भिन्न-भिन्न हैं पर अधिकांश कवितायें, भाषा की सरलता और विषय-चयन के विचार से बाल-साहित्य की निधि कही जा सकती हैं। कवि में उत्साह है। वह सारी सृष्टि में आनन्द और उल्लास का अनुभव करता है और घोषित करता है—

'सदा प्रकृति को हँसते पाया,
कभी क्लेश का लेश नहीं,
दुखमय यदि दिखलाई पड़ती,
इसमें विधि का दोष नहीं।'

पुस्तक में कुछ एक कवितायें भाव की दृष्टि से साधारण हैं। यदि कवि महोदय संग्रह करते समय अपनी सभी कृतियों को पुष्टित रूप में देखने का लोभ संवरण करके केवल अपनी चुनी-हुई उत्तम रचनाओं से ही 'वरदान' को सजाते तो अधिक समीचीन होता। पुस्तक की छपाई सुन्दर और गेट-अप आकर्षक है।

—हृदयनारायण

२—अहिंसायोग या श्रीमन्मोहनगीत—लेखक, प्रो० रुद्र तथा प्रकाशक, प्रतापकृष्ण, मिनर्वा बुकशाप, अनारकली, लाहौर हैं। पृष्ठ-संख्या १६० है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य ३) है। यह ग्रन्थ महात्मा गान्धी को ही समर्पित हुआ है। इस पर भूमिका या अग्रिम शब्द लिखने की कृपा प्रसिद्ध दार्शनिक सर एस० राधाकृष्णन् ने की है।

सरल संस्कृत भाषा में लिखा हुआ यह ग्रन्थ गीता का 'अति-अनुकरण' है। इसमें गीता के समान १८ अध्याय हैं और आश्चर्य यह है कि प्रत्येक अध्याय की श्लोक-संख्या भी गीता के प्रत्येक अध्याय के अनुरूप है। प्रारम्भ में गुरुदेव (रवीन्द्रनाथ ठाकुर) दीनबन्धु एंड्रयूज़ से पूछते हैं कि "स्वातन्त्र्य-समर में मेरे भारतीय वीर क्या करते हैं?" उत्तर में दीनबन्धु अनेक वीरों का नाम निर्देश करते हैं जो भारत के स्वाधीनतार्थ दिवंगति को प्राप्त हुए।" अन्त में महात्मा गान्धी चम्पारन में सत्याग्रह संग्राम का 'श्रीगणेश' करते हैं। देश की शान्ति को दग्ध करनेवाली उनकी क्रान्ति-चिनगारी से भयभीत "मोह-विमूढ़चित्त" कर्त्तव्य बोध-शून्य राजेन्द्रप्रसाद अपने अधिनायक गान्धी से 'अहिंसा' तत्त्व को पूर्ण रूप से जानने की इच्छा प्रकट करते हैं। उत्तर में भगवान् मोहन अत्याचारी शासक तथा परचक्र से देश की रक्षा करनेवाली अहिंसा की अव्यर्थता की महिमा गाते हैं। अहिंसापूर्ण असहयोग एक ऐसा अस्त्र है जिसका अवलम्बन करने से मानव-जाति कल्याण-पथ पर आरूढ़ हो सकती है। सरल संस्कृत भाषा में भगवान् मोहन सत्य, उपवास, दीनार्तिनाशन ईश्वर आदि विचारों पर पर्याप्त प्रकाश डालते हैं। इसी असहयोग की सहायता से एक ऐसे नव समाज का निर्माण सम्भव है जो कलियुग में रामराज्य के नाम से पुकारा जा सकता है। इस ग्रन्थ का अँगरेज़ी अनुवाद करने में लेखक की बहन श्रीमती सुरेन्द्रा देवी ने अपने भाई को सहायता प्रदान की है। गान्धी-दर्शन से अभिज्ञता प्राप्त करनेवालों के लिए यह पुस्तक उपादेय है और घर-घर इसका श्रवण, मनन, निदिध्यासन वाञ्छनीय है।

जब तक साम्यावस्था से प्रच्युत सांख्य की प्रकृति या माया का आधिपत्य अखिल ब्रह्माण्ड में विराजमान है तब तक एकमात्र सतोगुण का ही राज्य संसार में अनन्त काल तक बना रहेगा इसकी आशा दुराशा मात्र है। दो-एक व्यक्ति तो अवश्य ही मोहन की अहिंसा की कसौटी पर खरे उतर सकते हैं पर समस्त राष्ट्र उसकी अहिंसा की परिभाषा को—घोर दुःखों के सहन करता हुआ शत्रुओं का मङ्गलाकांक्षी जन अहिंसाव्रती कहा जाता है—कार्य में परिणत नहीं कर सकता है। अपूर्ण अहिंसा से पूर्ण श्रेय कैसे प्राप्त हो सकता है? यह विचारणीय प्रश्न है।

३—पूर्वी और पश्चिमी दर्शन—लेखक, डा० देवराज तथा प्रकाशक, मार्तण्ड उपाध्याय, मन्त्री सस्ता-साहित्य-मण्डल नई दिल्ली हैं। पृष्ठ-संख्या २०० से ऊपर है। पुस्तक का मूल्य २।) है।

प्रस्तुत पुस्तक तुलनात्मक अध्ययन का परिणाम है। भिन्न भिन्न देशों या युगों की विचार-पद्धतियाँ, दृष्टिकोण, प्रयोजन भिन्न-भिन्न होते हैं और इन विशेषताओं के कारण ही उन देशों की दार्शनिक प्रगति भिन्न-भिन्न दिशाओं की ओर प्रवाहित होती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। जहाँ पश्चिम बुद्धि का सम्बल बाँधकर दार्शनिक यात्रा आरम्भ करता है, वहाँ पूर्व अपरोक्षानुभूति पर अधिक ज़ोर देता है। पश्चिम बुद्धि की कौतूहलता को शान्त करके ही सन्तोष मान लेता है, तो पूर्व उस तत्त्व को आत्मसात् करना—व्यावहारिक रूप देना चाहता है। पश्चिम का चिन्तन निरुपयोगी है तो पूर्व का सप्रयोजन या मोक्षप्रद है। पश्चिम विश्व की व्याख्या में अधिक रत है और उसका ब्रह्म का आकलन अज्ञेयता तक जाकर रुक जाता है तो पूर्व विश्व की व्याख्या के साथ-साथ ब्रह्म को अपरोक्षानुभूति का विषय मानता है। जहाँ तुलनात्मक अध्ययन पाठक का विभिन्न दर्शनों की रूढ़िवादिता से सरलतापूर्वक परिचय कराता है वहाँ वह उसे सहिष्णु भी बनाता है। यह लाभ थोड़ा नहीं है। तुलनात्मक पद्धति दर्शनों का अध्ययन करने पर भी भारतीय दर्शन, किसी बात में भी, पश्चिमीय दर्शन के सामने नतमस्तक नहीं होता है यह इस ग्रन्थ से व्यञ्जित होता है। आज योरप में विज्ञान का युग वर्तमान है। इस कारण योरपीय विश्व-व्याख्या भारतीय व्याख्या की अपेक्षा कुछ अधिक सरल और हृदयङ्गम हो सकती है; यह बात और है। पर जब सांख्य का गुण परिणामवाद हर्बर्ट स्पेन्सर के विकासवाद से प्रद्भुत साम्य रखता है तब विश्वव्याख्या में भी हमको योरप के साथ एकासन पर बैठने से कौन रोक सकता है! आज तक योरप ने शङ्कर के केवलाद्वैत से टक्कर लेनेवाला कोई भी दार्शनिक उत्पन्न नहीं किया है। भारत में यह केवलाद्वैत उतना ही प्राचीन है जितना कि ऋग्वेद का नासदीयसूक्त है। शङ्कर ने तो अपनी कुशाग्र बुद्धि और प्रखर युक्तियों के बल पर उसको हिमालय के सर्वोच्च शिखर पर स्थापित कर दिया है, जहाँ तक योरप के दार्शनिकों की विशाल बुद्धि पहुँच ही नहीं सकती है। दर्शन-शास्त्र में हमको गुरु के उत्तम पद से योरप त्रिकाल में भी नहीं हटा सकता है। यह गर्वोक्ति नहीं है, पर तथ्य है, जिसकी प्रतिध्वनि लेखक (डा० देवराज) की ग्रन्थगुफा में भी गूँज रही है। अभी तक तो लेखक ने शङ्कर या अन्य साधु-सन्तों के समान ब्रह्म का साक्षात्कार नहीं कर पाया है इस कारण उसका यह कथन—"सृष्टि को ज्ञान-द्वारा विलेय मानना आवश्यक नहीं है"—कुछ अधिक मूल्य नहीं रखता है। द्वैत मनोमय है, पर ज्ञान से मन के शान्त हो जाने पर सृष्टि का विलेय होना सन्तों के अनुभव से सिद्ध है। यह हमारा दुर्दैव है कि राजनैतिक दासता ने हमारे सब गुणों पर पानी फेर दिया है और हम किसी विदेशी के सामने उन्नत मस्तक कर नहीं सकते हैं। भगवान् ही हमारे रक्षक हैं।

—काशीनाथ रा० तिलक

४—**जनता अजेय है**—अनुवादक, प्रोफ़ेसर मनोहर गुप्त हैं। प्रकाशक, जन-प्रकाशन-गृह, बम्बई है। पृष्ठ-संख्या १२० और मूल्य १।।) है।

प्रस्तुत पुस्तक अँगरेज़ी के 'दी प्यूपल इममारटल' उपन्यास का हिन्दी अनुवाद है। इसमें सोवियत रूस की युद्धकालीन परिस्थितियों का ख़ाका सुन्दरता के साथ खींचा गया है। लेखक वासीली ग्रोसमन उन नये रूसी लेखकों में हैं जो युद्ध-काल में ही अपनी कला के लिए प्रसिद्ध हो गये हैं। वे स्वयं युद्ध के मैदान में सैनिकों के साथ रहे थे और वहाँ अपनी आँखों से दृश्य देखे थे उन्हीं का इस उपन्यास में उन्होंने चित्रण किया है। सामरिक भावनाओं से ओत-प्रोत होने पर भी इसमें रोचकता की मात्रा पर्याप्त है। उदाहरणार्थ सूर्योदय का वर्णन देखिए—

'किसी सम्मानित वृद्ध न्यायाधीश की तरह जो न उत्तेजित जानता है, न भावना, अपना अभ्यस्त उच्चासन लेने के लिए सूरज विशाल मैदानों के ऊपर आकाश में उठा। रात के बादल ईंट के रङ्ग-सी लोहित और धूमिल लौ से दहकते कोयले की तरह चमकने लगे।'

ग्रीष्म के अन्तिम दिनों से सम्बन्ध रखनेवाले ये वाक्य मर्मस्पर्शी हैं—

'उसने आसमान की ओर देखा—ग्रीष्म का गर्म, धूसर आसमान जिसे वह बचपन से जानता था। छोटे-छोटे सफ़ेद बादल, इतने बारीक कि उनमें से आकाश का नील तन दिखाई पड़ता था, हवा में तैर रहे थे। यह विस्तृत मैदान, यह विरल उमस-भरा प्रकाश, सब सन्तप्त होकर पुकार रहे थे, जैसे सहायता की याचना कर रहे थे।'

इस प्रकार के अनेक उद्धरण दिये जा सकते हैं। लाल सेना का एक-एक नौजवान अपनी मातृभूमि के प्रति जिस उत्कट ममता के कारण विख्यात हो चुका है, उसी का स्पष्ट आभास आप इस उपन्यास में पायेंगे।

—नागार्जुन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परमाणु बम के सम्बन्ध में शा का वक्तव्य

अमरीका के संयुक्त राज्य की सरकार के हाथ में परमाणु बम जैसा अमोघ अस्त्र ही नहीं है, किंतु वह और ऐसे ही अस्त्रों के निर्माण में संलग्न है। परन्तु संसार शान्तिप्रिय लोग ऐसे संहारक अस्त्रों के निर्माण किये जाने के विरुद्ध हैं। परमाणु बम के विरुद्ध अपना मत देते हुये श्री जार्ज बर्नार्ड शा ने अपनी शैली में महत्त्व की बातें कहीं हैं। उनके वक्तव्य का सारांश 'जागृति' से छपा है, जो यह है—

चारों ओर से मुझसे पूछा जा रहा है कि परमाणु बम के विषय में मेरी क्या सम्मति है? किन्तु मैं इस वस्तु से उतना ही परिचित हूँ जितना कि कोई और।

जब मैं बालक था, तो मेरी स्वयं भी विज्ञान में रुचि थी और मैं बाज़ार से सामान लाकर घर पर भी कुछ प्रयोग किया करता था। एक दिन मैंने ऑक्सीजन बनाई और उसके निर्माण-काल में ही मैंने एक काली वस्तु, जिसे 'मैंगनीज़' कहते हैं, की सहायता ली। एक दूसरी काली वस्तु 'ऐंटीमनी' है। यदि मैंगनीज़ के स्थान पर ऐंटीमनी का प्रयोग किया जाय तो ऑक्सीजन बनने के स्थान पर ऐसी वस्तु बन जायगी जिससे कि प्रयोगकर्ता और प्रयोगशाला दोनों के ही टुकड़े-टुकड़े हो जायँगे।

कोई भी विद्यार्थी, जिसको थोड़ा भी ज्ञान हो, केमिस्ट की दुकान से सामान लाकर विस्फोटक बम बना सकता है।

सौभाग्यवश परमाणु बम न तो थोड़े से ही मूल्य में बनता और न इसका बनाना ही सरल है। यह एक मनुष्य की शक्ति के बाहर है।

यूरेनियम, जिससे यह बम बनता है, के एक औंस का मूल्य ६ हजार पौंड है! और यद्यपि कोई विद्यार्थी अपने पैसों से इसे नहीं ख़रीद सकता, तथापि रूस के लिए बना सकता है। इसी प्रकार अमरीका अमरीका के लिए, भारत भारत के लिए और चीन चीन के लिए।

जब कि नगरों पर बम गिराये गये और उनका नाश किया गया तो विजयी को केवल ध्वस्त नगर ही प्राप्त हुआ। किन्तु जर्मन और अमरीकनों ने बालन, हैम्बर्ग अथवा कोलोन को नहीं विजय किया या रूसी सेना ने स्टालिनग्राड को। यह विजय तो उन भीमकाय गोलों और बड़े-बड़े टैंकों ने प्राप्त की थी जिन्होंने नर-संहार करके सब इमारतें भूमिसात् कर दी थीं और असहाय स्त्रियों और बालकों की हत्या कर डाली थी।

युद्ध में विजयी को या तो निष्प्रयोजन वस्तुयें उपलब्ध होती हैं या उस विध्वस्त स्थान का पुनर्निर्माण करना पड़ता है। वर्तमान युद्ध संसार को अवश्य ही निर्धन बना देगा यदि ये नये वैज्ञानिक आविष्कार इसमें प्रयुक्त किये जायँगे।

परमाणु बम का आविष्कार बहुत ही भयानक है। इसका विस्फोट एक महान विस्फोट है और यह इस कहावत को चरितार्थ करता है कि सूअर को पकाने के लिए घर में आग लगा दो।

कुछ थोड़े-से पुलिसमैन यदि डाकुओं को पकड़ने जाते हैं तो अपने साथ बन्दूक तथा पिस्तौल रखते हैं किन्तु वे परमाणु बम का प्रयोग नहीं कर सकते क्योंकि उससे तो स्वयं उनका और सारे नगर का भी नाश हो जायगा।

मेरी सम्मति में परमाणु बम का, उसकी भयानकनता के कारण, अस्त्ररूप में प्रयोग कदापि ठीक नहीं, यद्यपि जापान के युद्ध का अन्त करने में तत्क्षण ही उसने असीम सहायता पहुँचाई है। हम ऐसी शक्ति को अपने अधिकार में रख सकेंगे या नहीं यह अभी कुछ नहीं कह सकते।

रूस में अधिकार-लिप्सा का भयानक रूप

रूस के भाग्य-विधाता स्टेलिन साहब, कहा जाता है, बीमार हैं। फलतः वे अवसर ग्रहण करेंगे और उनके स्थान में कोई अन्य वर्गवादी नेता अधिकारारूढ़ होगा। परन्तु 'कैथोलिक हेरल्ड' का ऐसा मत नहीं है। उसका कहना है कि रूस के नेताओं में अधिकार-लिप्सा का भाव बढ़ रहा है। इस स्थिति पर प्रकाश डालते हुए 'हेराल्ड' ने लिखा है—

रूस में अधिकार के लिए ज़बर्दस्त झगड़ा चल रहा है। क्योंकि मार्शल स्टालिन योरपीय और प्रशान्त सन्धियों के समाप्त होते ही इस्तीफ़ा दे देंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाल सेना और कम्युनिस्ट पार्टी में पारस्परिक विरोध के कारण तानाशाही का झगड़ा लेनिन की मृत्यु के बाद हुए गड़े की अपेक्षा भयङ्कर होगा।

सोवियत अधिकार-हस्तान्तरण का प्रश्न बड़ा ही उलझन-पूर्ण है क्योंकि रूस के डिक्टेटर को केवल राजनीतिक और चालबाज़ ही नहीं रहना चाहिए बल्कि उसे कम्युनिस्ट सिद्धान्तों का पण्डित तथा कम्युनिस्ट चर्च का नेता भी होना चाहिए। स्टालिन ने ऐसे सभी विरोधियों को समाप्त कर दिया है।

अधिकार-युद्ध स्टालिन-ट्रास्की युद्ध से बिल्कुल भिन्न होगा और उसकी भयङ्करता भी उल्लेखनीय होगी।

उसी समय से लाल सेना स्वार्थी हो गई है और उसके कुछ उच्च अफ़सर अपनी सफलताओं के कारण लम्बे-लम्बे मनसूबे बाँधने लगे हैं।

सन् ३७-३८ में पाँच मार्शलों तथा चालीस हज़ार अफ़सरों के गोली से उड़ाये जाने या निर्वासन-शिविरों में भेजे जाने की घटना की याद कर लाल सेना चाहेगी कि रूस का नेता उसी के दल का हो।

ब्रिटिश सरकार की नई नीति

ब्रिटिश सरकार ने भारत के राजनैतिक मसले के हल करने के सम्बन्ध में जो नई नीति निर्द्धारित की है, उससे भारतीय लोकनेता सन्तुष्ट नहीं हुए हैं। तत्सम्बन्धी वायसराय के भाषण के सम्बन्ध में श्री एम० आर० जयकर, सर जगदीशप्रसाद और सर एन० गोपालस्वामी आयंगर ने एक वक्तव्य निकालकर अपना विरोध प्रकट किया है, जो 'वर्तमान' में इस प्रकार छपा है—

इस बार के वाइसराय के ब्राडकास्ट भाषण में शिमला कान्फ़रेंस के पूर्व दिये जानेवाले भाषण की-सी मैत्री तथा सहृदयता-पूर्ण भावना नहीं टपकती है। इस भाषण के स्वर में कठोरता है तथा नीति का परिवर्तन स्पष्ट दिखाई देता है। चूँकि शिमला कान्फ़रेंस के बाद से मुस्लिम लीग अपनी माँगों पर अड़ती जा रही है अतः ब्रिटिश सरकार का रुख़ भी अन्य राजनैतिक दलों के साथ दिन पर दिन कम मैत्रीपूर्ण होता जा रहा है।

विधान-निर्मात्री परिषद् बुलाये जाने के सम्बन्ध में पारस्परिक वार्ता करने के लिए प्रान्तीय सरकारों के प्रतिनिधियों की एक कान्फ़रेंस बुलाने की जो बात कही गईहै उससे क्या मुस्लिम लीग को पुनः यह अवसर नहीं दिया गया है कि वह पाकिस्तान का प्रश्न उठाकर पुनः अड़ङ्गा उत्पन्न कर दे। क्या ब्रिटिश सरकार को इस बात का पता नहीं है! इसके अतिरिक्त केन्द्र में किसी भी सरकार का निर्माण करने के पूर्व प्रान्तीय चुनावों के फल की प्रतीक्षा करने का अर्थ क्या यह नहीं है कि [illegible] लीग को अपनी शक्ति बढ़ाने का एक और अवसर दिया जाय।

सरकार को अपने इस रुख़ में परिवर्तन करना चाहिए।

स्वतन्त्र भारत की समाजवादी शासन-व्यवस्था

पण्डित जवाहरलाल नेहरू कांग्रेस के उन प्रधान नेताओं में हैं, जिन्हें महात्मा गांधी ने अपना उत्तराधिकारी [illegible] किया है। अभी हाल में बम्बई में उन्होंने भावी स्वतन्त्र भारत में अपनी समाजवादी शासन-व्यवस्था की रूपरेखा बताई है। उसका वर्णन 'प्रताप' में इस प्रकार छपा है—

स्वतन्त्र भारत में प्रधान-प्रधान उद्योगों का राष्ट्रीयकरण कर दिया जायगा तथा वे सीधे सरकार के अधिकार में होंगे। भूमि-व्यवस्था भी बदल दी जायगी, ज़मींदारियों का अन्त कर दिया जायगा तथा सामूहिक खेती की प्रथा कार्यान्वित की जायगी। उद्योगों के राष्ट्रीय-करण किये जाने तथा भारतीय पूँजी को बढ़ा देने से गृह-उद्योगों को कोई ख़तरा नहीं पैदा होगा। देशी जुलाहों की जीविका बचाने के लिए सूती मिलों पर सरकार का कुछ [illegible] होगा। हम उन्नतिशील भारत देखना चाहते हैं और [illegible] उन्नतिशील तब तक नहीं हो सकता जब तक कि उसका [illegible] विकास नहीं होगा। मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि [illegible] वादी पुनर्निर्माण से भारत का कल्याण होगा, हर कार्य[illegible] समाजवादी दृष्टिकोण से काम लिया जायगा।

प्रधान उद्योगों में खानें भी शामिल हैं। बाक़ी छोटे-[illegible] उद्योगों का सञ्चालन लोग स्वयं कर सकेंगे। गृह-उद्योगों के बीच क्या सम्बन्ध हो, इस बारे में अलग-अलग दृष्टि[illegible] हो सकते हैं, पर यह निश्चय है कि जनता के रहन-सहन को ऊँचा उठाने के लिए दोनों पर सरकारी नियन्त्रण और [illegible] ज़रूरी है।

बङ्गाल के स्थायी बन्दोबस्त तथा ज़मींदारी प्रथा का अन्त करके सहयोगात्मक खेती को चालू किया जायगा, [illegible] यह रूस के ढङ्ग की न होगी क्योंकि यहाँ की स्थिति वहाँ से [illegible] है। बेशक इस प्रकार की खेती के लिए किसानों को बहुत समझाना-बुझाना पड़ेगा।

देशी राज्य तथा भारत-सरकार

भारत-सरकार और देशी रियासतों के बीच इधर कुछ समय से राजनैतिक एवं आर्थिक प्रश्नों के सम्बन्ध में मतभेद बढ़ गया है। वह मतभेद कैसा है, इसका परिचय ग्वालियर राज्य के राजनैतिक सचिव एवं नरेन्द्र-मण्डल के मन्त्रियों की समिति के अध्यक्ष सर मनुभाई मेहता ने दिया है, जो 'जागृति' में इस रूप में छपा है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस विवाद के विषय में, कि भारतीय रियासतों में टैक्स कम होने के कारण ब्रिटिश भारत से पूँजी खिंचकर रियासतों में पहुँच रही है, मैं कहूँगा कि टैक्स कम होना ही इसका एकमात्र कारण नहीं है। मैसोर में ब्रिटिश भारत के समान टैक्स होते हुए भी प्राकृतिक सुविधाओं की वजह से वहाँ अनेक कारख़ाने खुल गये हैं। रियासतें यह नहीं चाहतीं कि वे ब्रिटिश भारत को नुक़सान पहुँचाकर अपने यहाँ कारख़ाने स्थापित करें; लेकिन, बिरला-परिवार व डालमिया आदि रियासती प्रजाजनों को रियासतों में भी कुछ पूँजी लगाने से वे रोकना नहीं चाहतीं।

"केन्द्रीय सरकार ने रियासतों से माँग की है कि टैक्स की कमी को पूरा करने का कार्य ४ वर्ष में हो जाना चाहिए। परन्तु रियासतें चाहती हैं कि रियासतों में नये उद्योगों की स्थापना का ध्यान रखते हुए यह टैक्स की कमी १२ वर्ष में पूरी की जानी चाहिए। रियासतें औद्योगिक व आर्थिक नीति के निर्माण में भारत-सरकार को योग देने के लिए तैयार हैं, किन्तु इसमें उनसे परामर्श लेना भी आवश्यक है। विगत दो वर्षों में राजनीतिक व आर्थिक विभागों से रियासतों का कोई समझौता नहीं हो सकता है।

"केन्द्रीय सरकार ने भारतीय रियासतों की औद्योगिक उन्नति को रोकने का पर्याप्त प्रयत्न किया है। ग्वालियर में स्थापित किये जानेवाले एक कारख़ाने के लिए ब्रिटिश भारत से पूँजी नहीं लेने दी गई, और बाद में उक्त कारख़ाने के माल की चीज़ों पर ब्रिटिश भारत में पाबन्दी लगाई गई। सिन्ध से एक कारख़ाने को ग्वालियर में स्थानान्तरित नहीं करने दिया गया। केन्द्रीय सरकार ने निजी हस्तक्षेप द्वारा ग्वालियर रियासत को चीनी के उत्पादन पर चुङ्गी लगाने के लिए बाध्य किया, जब कि रियासत इस उद्योग की उन्नति करने के लिए अभी कुछ वर्ष यह चुङ्गी लगाना नहीं चाहती थी।

"रेलवे की भूमि के बारे में भी रियासतों वा सर्वोच्च सत्ता के बीच मतभेद है। रेलों के निर्माण में रियासतों का भाग होने से रेलवे भूमि पर उन्हें कोई आर्थिक या क़ानूनी अधिकार प्राप्त नहीं है।"

"रियासतें सन्धियों के अन्तर्गत मिले हुए अपने अधिकारों में परिवर्तन करने के विरुद्ध हैं। वे रियासतों की सरकारों में प्रजा का हिस्सा देने के लिए तैयार हैं, किन्तु वे किसी अन्य व्यक्ति के क्रम से अपने अधिकारों में तब्दीली नहीं करना चाहतीं। रियासतों के विचार में अभी पूर्ण उत्तरदायी सरकारें क़ायम करने का समय नहीं आया है। कुछ रियासतों में आंशिक उत्तरदायित्व दिया गया है और दिया जा रहा है।

"रियासतों में रेज़ीडेंटों का पद उड़ा देना चाहिए।"

श्रीमती विजयालक्ष्मी पण्डित की सदिच्छा

सेनफ़्रांसिस्को के समय अमरीका पहुँचकर श्रीमती विजयालक्ष्मी पण्डित ने स्वदेश के सम्बन्ध में जो महत्त्वपूर्ण आन्दोलन किया था एवं भारत-विरोधी प्रचार को जिस ढङ्ग से विफल किया था, वह सब देशवासियों को ज्ञात है। उन्हीं ने ब्रिटिश सरकार की भारत-सम्बन्धी नई नीति के सम्बन्ध में, न्यूयार्क में, अपना एक वक्तव्य दिया है, जिसका सारांश 'साप्ताहिक' भारत में छपा है। श्रीमती पण्डित कहती हैं—

जो कोई भी भारत की परिस्थिति के विषय में जानकारी रखता है उसे इन प्रस्तावों से कोई प्रसन्नता नहीं होगी। चुनाव बहुत पहले ही होने चाहिए थे इसलिए उनके अन्ततः होने के कारण ख़ुश होने का कोई कारण नहीं है। मेरा विश्वास है कि श्री एटली के कथनानुसार वे मुक्त वातावरण तथा ईमानदारी के साथ होंगे।

हम लोगों में से जिन्होंने १९३६ में चुनावों में भाग लिया था वे जानते हैं कि ईमानदारी से चुनाव होने देने के मार्ग में किस प्रकार की बाधायें उपस्थित की गई थीं। किन्तु फिर भी कांग्रेस जीत गई थी और मुझे आशा है कि वह इस बार पुनः विजयी होगी।

जिन कठिनाइयों और मुसीबतों से होकर भारत को गुज़रना पड़ा है, उसे देखते हुए समय का तक़ाज़ा है कि देश के भाग्य का सूत्र उन्हीं लोगों के हाथों में हो, जो देश के वास्तविक प्रतिनिधि हैं और जो देश का हित-साधन आत्मविश्वास और साहस के साथ कर सकने में समर्थ हैं। भारत संयुक्त-राष्ट्रों के बीच अपना बराबरी का स्थान ग्रहण करे और एशिया के देशों की आकांक्षाओं का प्रतीक हो। यह आज जितना आवश्यक है उतना पहले कभी नहीं था।

भविष्य में युद्ध बन्द करनेवाला एटम बम नहीं होगा, बल्कि युद्ध का अन्त करनेवाली होगी एक नवीन व्यवस्था जिसकी आधारशिला विश्वास होगी और जो न केवल राष्ट्रों की ही बल्कि प्रत्येक व्यक्ति की स्वतन्त्रता को उसका जन्मसिद्ध अधिकार स्वीकार करेगी। ब्रिटिश सरकार की ईमानदारी और भी अच्छी तरह साबित होती यदि उसने वायसराय की घोषणा के पूर्व ही नागरिक स्वतन्त्रता दे दी होती। मुझे दुःख है कि जिस आवश्यक भावना की इस समय ज़रूरत थी, उसका भारत के प्रति ब्रिटिश सरकार के रुख़ में पूर्णतया अभाव है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय नोट

संसार में शान्ति की स्थापना

सेनफ्रांसिस्को कान्फ़रेंस में संसार में शान्ति स्थापित करने का कार्य संसार की चार प्रमुख महाशक्तियों को सौंपा गया था। बाद को उन महाशक्तियों में फ्रांस भी शामिल कर लिया गया और अब वह महान् दायित्वपूर्ण कार्य संसार की पाँच प्रमुख महाशक्तियों के सिर पर आ गया है। परन्तु अमरीका के अध्यक्ष ट्रूमैन साहब के हाल के एक भाषण से प्रतीत होता है कि उनका अमरीका इस महान् दायित्व के भार को वहन करने के लिए सदैव अधिक तत्परता के साथ क्रियाशील मिलेगा। इसमें सन्देह नहीं कि इस महायुद्ध में अमरीका ने अपनी महत्ता का कहीं अधिक परिचय दिया है और यदि वह इस महान् कार्य के सँभालने की उत्सुकता दिखलावेगा तो यह बात उसके लिए सर्वथा स्वाभाविक ही होगी। कदाचित् इसी कारण ट्रूमैन साहब ने अपने उस भाषण में यह भी कहा है कि परमाणु बम का रहस्य किसी को नहीं बताया जायगा। अमरीका उस अमोघ अस्त्र को केवल अपने ही हाथों में रखना चाहता है, जिससे वह संसार में शान्ति की स्थापना करने के दायित्व-सम्बन्धी अपने कर्तव्य का समुचित रूप से पालन कर सके और कदाचित् इसी लिए अमरीका यह भी चाहता है कि प्रशान्त एवं अटलांटिक दोनों महासागरों में उसे आवश्यक सैनिक अड्डे दिये जायँ, जिससे उसको शान्ति-स्थापना-सम्बन्धी कार्य के लिए पूरी-पूरी सुविधा प्राप्त रहे। साथ ही उसका संसार के बाज़ारों में व्यापक रूप से रोज़गार-धन्धा फैल जाय। चाहे जो हो, ट्रूमैन साहब की संसार की भलाई-सम्बन्धी भावना का सभी वर्ग के लोग स्वागत करेंगे। उनके उक्त भाषण के ये शब्द कि 'संसार को विनाश से बचाने के लिए अमरीकनों को सहयोग करना चाहिए। हम अब किसी दूसरे विश्व-युद्ध की विभीषिकाओं को सहन नहीं कर सकते। हम कोई दूसरा युद्ध नहीं लड़ सकते, जब तक कि उसमें समस्त संसार सम्मिलित न हो और ऐसे युद्ध का अर्थ है हमारी सभ्यता का अन्त जैसा कि हम सब जानते हैं।' सर्वथा अभिनन्दनीय हैं। अब रह गई उनके देशवासियों की अपने देश की वाणिज्य-व्यवसाय के विस्तार की भावना की बात, सो लोगों को समझना चाहिए कि वह उक्त महान् दायित्व के भार के सँभालने का एक आवश्यक साधन है। आज के अस्त-व्यस्त संसार में शान्ति और [illegible] की जो व्यापक माँग है, उसकी पूर्ति के लिए यदि अमरीका [illegible] उसके चार साथी राष्ट्र आगे आयेंगे तो इससे उनका गौरव [illegible] बढ़ेगा। युद्ध से त्रस्त, दुखी तथा पददलित संसार [illegible] नेतृत्व की ओर टकटकी लगाये देख रहा है। परन्तु [illegible] पड़ता है कि संसार उनकी इस विजय के बाद भी जैसा का [illegible] उत्पीड़ित, शान्ति से वञ्चित तथा दैन्य का शिकार बना [illegible] है। यदि इन महाव्याधियों से उसका शीघ्र ही त्राण न [illegible] गया तो यही कहा जायगा कि प्रमुख महान् शक्तियाँ सद्भाव [illegible] से अपने कर्तव्य का पालन नहीं कर रही हैं। सम्भवतः [illegible] स्थिति को देखकर ट्रूमैन साहब ने उस दिन अपना उक्त [illegible] पूर्ण भाषण किया है। परन्तु उन्होंने अपने भाषण में इस [illegible] ज़रा भी ध्यान नहीं दिया है कि संसार के कितने देश पूर्ण [illegible] तथा अर्द्ध-पराधीन हैं। और इन देशों के लोकनेता अपने [illegible] को स्वतन्त्र बनाने के लिए कितने उत्सुक और व्यग्र हैं। [illegible] स्वाधीनता के लिए अहर्निश विकल और व्याकुल देशों [illegible] उनका अमोघ परमाणु बम कितने दिनों तक पराधीन [illegible] रखने को विवश किये रह सकता है? क्या उनकी संसार [illegible] शान्ति-सम्बन्धी व्यापक भावना का ऐसा ही रूप होगा? [illegible] जानती है कि जब तक संसार के छोटे-बड़े सभी राष्ट्र अपने [illegible] सभी बातों में पूर्ण स्वतन्त्र नहीं पायेंगे तब तक संसार में [illegible] की स्थापना कभी नहीं हो सकती। यह बात दूसरी है कि [illegible] महती शक्तियों की भयदायक प्रबल शक्ति के आतङ्क से [illegible] के छोटे-बड़े, स्वतन्त्र-अर्द्धस्वतन्त्र तथा पराधीन देश शान्ति [illegible] आवरण लपेटकर चुपचाप पड़े रहें। परन्तु यह शान्ति स्वाभाविक [illegible] शान्ति नहीं होगी वरन् यही शान्ति भविष्य के लोकों [illegible] युद्ध का मूल कारण होगी। और यह स्थिति ऐसी है, [illegible] पाँचों महाशक्तियों के सूत्रधार जानते हैं परन्तु उनकी अपनी [illegible] महत्त्वाकांक्षायें उन्हें इस जानकारी से लाभ नहीं उठाने दे [illegible] हैं और जब तक महाशक्तियाँ अपनी इस स्थिति से ऊपर [illegible] उठेंगी तब तक संसार की व्यापक शान्ति-सम्बन्धी [illegible] सद्भावना अपना सच्चा स्वरूप कदापि न प्रकट कर सकेगी। पाँचों महाशक्तियों के सूत्रधारों की सद्भावना की इसी एक [illegible] पर परीक्षा होगी। क्या ही अच्छा होता, यदि वे [illegible] इस परीक्षा में खरी उतर जातीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लन्दन की कान्फ़रेंस की विफलता

प्रसिद्ध पोट्सडम सम्मेलन के त्रिराष्ट्रनायकों के निर्णय से यह प्रकट हुआ था कि लन्दन में पाँच महाशक्तियों के वैदेशिक विभाग के मन्त्रियों की जो सभा बैठेगी, वह योरप के सभी विवादग्रस्त प्रश्नों को बुद्धिमत्ता के साथ हल कर देगी। खेद के साथ कहना पड़ता है कि कोई तीन सप्ताह तक उस सभा की लन्दन में बैठकें होती रहीं किन्तु ट्रीस्ट तथा फ़िनलैंड के शान्तिपत्र के प्रश्न को छोड़कर और किसी भी विवादग्रस्त समस्या को वह सभा हल नहीं कर सकी। यही नहीं, कहा तो यह जाता है कि उक्त सभा के सदस्यों में परस्पर भारी मतभेद हो गया है। सभा की सारी कार्यवाही गुप्त रक्खी गई है और यह नहीं प्रकट हुआ है कि किस प्रश्न पर कहाँ किसका किससे कैसा मतभेद है। तथापि अमरीकन, रूसी एवं ब्रिटेन के प्रतिनिधियों के जो वक्तव्य पत्रों में प्रकाशित हुए हैं, उनसे प्रकट होता है कि मतभेद का मूल कारण अपनी-अपनी प्रभुता बढ़ाने का है और इस सम्बन्ध में रूसी प्रतिनिधि की धींगाधींगी स्पष्ट है। रूस चाहता है कि योरप के जिन देशों पर उसकी सेना ने अधिकार किया है, उनकी व्यवस्था करने का एकमात्र अधिकार उसी को रहे। हाँ, वह इस सम्बन्ध में ब्रिटेन और अमरीका की सलाह सुन सकता है। इसके सिवा वह यह भी चाहता है कि इटली के उपनिवेशों और जापान के नियन्त्रण में वह भी साझीदार बनाया जाय और यह भी ऐसी बात है, जो न ब्रिटेन को स्वीकार हो सकती है न अमरीका को। इस सम्बन्ध में अमरीका ब्रिटेन का इस उद्देश्य में साथ दे रहा है कि सुदूरपूर्व जापान की व्यवस्था में वह अपना एकाधिकार चाहता है। इसी कारण अमरीका के प्रतिनिधि ने ब्रिटेन के प्रतिनिधि के साथ यह आग्रह किया कि पाँचों महाशक्तियों के प्रतिनिधियों की सहमति से सभी प्रश्न हल होने चाहिएँ। रूसी प्रतिनिधि ने इस बात का यह कहकर विरोध किया कि पोट्सडम के निर्णय-पत्र पर जिन राष्ट्रों के प्रतिनिधियों ने हस्ताक्षर किये हैं, वही राष्ट्र इन प्रश्नों का निर्णय कर सकते हैं। बस, इसी बात पर उक्त सभा भङ्ग हो गई। अब भविष्य में सम्भवतः फिर उसकी बैठक होगी अथवा त्रिराष्ट्रनायकों का सम्मेलन होगा। चाहे जो हो, यह सारा झगड़ा शान्तिपूर्वक निपटा लिया जायगा। क्योंकि पाँचों महाशक्तियों के सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण हैं और वे चाहते हैं कि सारे जटिल प्रश्न समझौते की मनोवृत्ति से ही निपटा लिये जायँ। ऐसी सद्भावना के अस्तित्व में होने के कारण यह विश्वास करना ठीक ही है कि किसी प्रकार का दूसरा सम्मेलन जब होगा तब योरप की ये सारी समस्यायें दृढ़ता के साथ हल कर ली जायँगी। रूस भी ब्रिटेन और अमरीका की तरह प्रारम्भ से ही महत्त्वाकांक्षी रहा है। वह भी भूमध्यसागर, अटलांटिक, प्रशान्तमहासगर, मुस्लिम देशों में सभी जगह अपना दौरदौरा क़ायम करना चाहता है। और उसका यह मनोभाव उसके आज के लोकतन्त्रवादी सिद्धान्तों के प्रतिकूल है। तथापि वह भी साम्राज्यवाद की भावना में बह चला है। सो उसकी यह प्रगति कैसे बढ़ने दी जा सकेगी? उसे अवश्य ही अमरीका, ब्रिटेन एवं फ्रांस की दृढ़ता के आगे झुकना पड़ेगा। तभी योरप की न्यायपूर्वक शान्ति-व्यवस्था की जा सकेगी और संसार में शान्ति की स्थापना हो सकेगी। लन्दन की सभा की असफलता का कारण यह है कि धींगाधींगी करके जो कुछ मिल सके ले लो नहीं तो अन्त में वही करना पड़ेगा, जो पञ्च कहेंगे। सेनफ्रांसिस्को की कान्फ़रेंस में भी ऐसा ही हुआ था। पाँच महाशक्तियों के परराष्ट्रमन्त्रियों की सभा में भी यही होगा। ऐसी दशा में आशङ्का की कोई बात नहीं है और योरप की सभी समस्यायें सरलता से हल हो जायँगी। यह ज़रूर सच है कि ये पाँचों महाशक्तियाँ जो कुछ भी करेंगी, अपने लाभालाभ का ध्यान रखकर ही करेंगी। इस सम्बन्ध में न्यूज़ीलैंड के प्रधान मन्त्री मि० पीटर फेसी ने बहुत ही महत्त्व की बात कही है। उन्होंने कहा है—'यदि रूस, ब्रिटेन और अमरीका अपना प्रभुत्व स्थापित करना चाहेंगे तो सङ्कट अवश्य उत्पन्न होगा। छोटे राष्ट्रों के साथ न्याय का व्यवहार होना चाहिए। यद्यपि सम्मेलन की विफलता से हमें दुःख है किन्तु यह अच्छी बात है कि जनतन्त्रवादी विचारों की रक्षा के कारण ही ऐसा हुआ है। भगवान् करे ऐसा ही हो, क्योंकि ऐसा होने में ही संसार का कल्याण है।

भावी चुनाव-संग्राम

ब्रिटेन की मज़दूर दल की सरकार ने भारत की राजनैतिक समस्या के हल करने में अपने वास्तविक साहस का परिचय नहीं दिया है। अन्तर्राष्ट्रीय मसलों के हल करने में वह काफ़ी से अधिक साहस का परिचय दे रही है, परन्तु भारतीय समस्या के हल करने में उसने द्रविड़ प्राणायाम का सहारा लिया है। ब्रिटिश सरकार जानती है कि भारत में राष्ट्रीयतावाद का सम्प्रदायवाद से द्वंद्व छिड़ा हुआ है। अतएव उसने यही उचित समझा कि भारतीय आपस में निपटकर अपना शासन-विधान स्वयं बना लें, परन्तु यह बात उतनी सरल नहीं है, जितनी ऊपर से दिखाई देती है। राष्ट्रीयतावादी भारत ने और कोई उपाय न देखकर सरकारी प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया है और वह केन्द्रीय तथा प्रान्तीय असेम्बलियों के चुनाव में समुचित रूप से भाग लेगा। उधर सम्प्रदायवादी भारत भी राष्ट्रीयतावाद से टक्कर लेने की तैयारी कर रहा है। राष्ट्रीयतावादी भारत देश की स्वाधीनता के लिए चुनाव लड़ेगा और सम्प्रदायवादी भारत अपने-अपने सम्प्रदाय के हितों के लिए। उस दिन बम्बई में भाषण करते हुए पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने यह बात स्पष्ट कर दी है कि स्वतन्त्र भारत में समाजवादी शासन-व्यवस्था प्रचलित होगी। मुख्य-मुख्य उद्योग-धन्धों का राष्ट्रीयकरण किया जायगा तथा ज़मींदारी-प्रथा तोड़ दी जायगी। सम्प्रदायवादी भारत दो भागों में विभक्त है—एक मुसलिम लीग और दूसरा हिन्दूमहासभा। मुसलिम लीग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत में मुसलमानों का पाकिस्तान स्थापित करना चाहती है तथा यह दावा करती है कि वही मुसलमानों की एकमात्र संस्था है। उसके इन दावों का विरोध करने के लिए राष्ट्रीयतावादी मुसलमान संस्थायें समवेत हो रही हैं। अहरार, ख़ाकसार, मोमिन, शिया, कृषकपार्टी, जमायतुल-उलेमा, ख़ुदाई ख़िदमतगार आदि-आदि संस्थाओं के मुसलमान उम्मेदवार लीग के उम्मेदवारों के विरोध में खड़े होंगे। उधर हिन्दू महासभा तथा सानतनी दल आदि के उम्मेदवार अपने सम्प्रदाय की हित-रक्षा के लिए कांग्रेसी उम्मेदवारों के विरोध में खड़े किये जायँगे। इनके सिवा वर्गवादी, रायवादी आदि कुछ राजनैतिक संस्थायें एवं हरिजन लोग भी अपने-अपने उम्मेदवार खड़े करेंगे। इस प्रकार भारत का इस बार का चुनाव-संग्राम बड़ी धूमधाम के साथ होगा। परन्तु यह चुनाव-संग्राम पुराने मताधिकार के आधार पर ही होगा, जो बैरिस्टर आसफअली के कथनानुसार देश के केवल २५ प्रतिशत निवासियों को मत देने का अधिकार देता है। और ब्रिटिश सरकार ने ऐसे ही पुराने मताधिकार को ही भारत का भावी विधान बनाने का अधिकार दे डाला है। ऐसी दशा में यह स्पष्ट है कि चुनाव में उन्हीं दलों का बहुमत होगा, जिनका बहुमत पिछली असेम्बलियों में रहा है। सम्भव है कि कांग्रेस अपने विपक्षी उम्मेदवारों के सामने अपनी कुछ जगहें खो दे और उसके विरोधी उम्मेदवार इने-गिने स्थानों से चुन लिये जायँ। इसी प्रकार सम्भव है कि मुसलिम लीग कहीं-कहीं हार खा जाय और कुछ राष्ट्रीयतावादी मुसलमान चुन लिये जायँ परन्तु इसकी आशा नहीं है कि कांग्रेस या मुसलिम लीग इस चुनाव में विलायत के अनुदार-दल की तरह बुरी हार खा जायँ। कहने का मतलब यह है कि इस चुनाव के फलस्वरूप केन्द्रीय असेम्बली में कांग्रेसी एवं लीगी सदस्य ही अधिक संख्या में पहुँचेंगे। हाँ, प्रान्तीय असेम्बलियों में लीगी सदस्यों के बहुसंख्या में पहुँचने की उतनी आशा नहीं है। पिछले चुनाव में उनकी जो स्थिति रही है, बहुत कुछ वही स्थिति इस बार भी रहेगी। परन्तु विधान-निर्माण-सभा का तो सम्बन्ध केन्द्रीय असेम्बली के सदस्यों से ही होगा और तब उस सभा में पहले ही की तरह कांग्रेस और मुसलिम लीग का वहाँ भी सङ्घर्ष उपस्थित होगा। इस सम्भावना के रोकने को ब्रिटिश सरकार ऐसा कौन उपाय ग्रहण करेगी, जिससे विधान-सम्मेलन बिना किसी विघ्न-बाधा के हो सके, यह प्रकट नहीं है। परन्तु जब सरकार ने राजनैतिक समस्या के हल करने के लिए इस मार्ग को ग्रहण किया है तब उसने अवश्य ही उस परिस्थिति के निराकरण करने का कोई उपाय अवश्य ही सोच लिया होगा। इस समय हमारे लोकनेता अन्य सब बातों की ओर से ध्यान हटाकर एकमात्र चुनाव लड़ने की ओर ही अपना ध्यान लगाये हुए हैं। कदाचित् उन्होंने यही समझ लिया है कि चुनाव में विजय प्राप्त करके वे अपने उद्देश्यों की भले प्रकार पूर्ति कर सकेंगे। युद्ध-जन्य घोर कष्टों से पीड़ित एवं दुखी अपने देश की सेवा करने के लिए उन्हें यही एक मार्ग है। इसमें सन्देह नहीं कि यदि राष्ट्रीय भारत इस चुनाव-संग्राम में विजयी हो गया और केन्द्रीय एवं प्रान्तीय असेम्बलियों में उसका आवश्यक बहुमत हो तो भारत का दुःख-दर्द तो दूर होगा ही, साथ ही उसको प्रत्याशित स्वराज्य भी मिल जायगा।

चीन का भाग्योदय

विजयी राष्ट्रों में एकमात्र चीन ही ऐसा है जिसे युद्ध तक संग्राम में जूझकर और विजय प्राप्त करके भी शान्ति नहीं हुई है। विश्व-युद्ध के उपराम के अनन्तर अन्य विजयी राष्ट्र स्वदेशीय और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के सुलझाने में व्यस्त हैं और उन्हीं के अनुसार चीन को भी अपनी स्थिति गौरव को दृढ़ करने में लग जाना चाहिए था वहाँ वह समस्याओं से ही छुटकारा नहीं पा रहा है। प्रख्यात देशभक्त डाक्टर सन-यात-सेन ने बीसवीं सदी के द्वितीय दशक में चीन में एक राज्यक्रान्ति की थी जिसे वहाँ के प्रान्तीय सैनिक शासकों ने सुफल प्राप्त नहीं करने दिया था। उन्हीं नरश्रेष्ठ ने चीन में शताब्दी के तृतीय दशक में प्रजातन्त्र-सरकार की स्थापना की। उनकी मृत्यु के उपरान्त वर्तमान चीन के सर्वेसर्वा मार्शल चाङ्ग-काई-शेक ने उस सरकार को सारे देश में व्यापक बनाने का असफल प्रयत्न किया। अब वह सरकार इस महती के अनन्तर भी देश में ऐक्य स्थापित करने का प्रयत्न कर रही है। चाहिए यह था कि जापान के हार जाने पर सारा चीन एक झण्डे के नीचे खड़ा होकर अपने महान् देश के पूर्व-गौरव की स्थापना में लग जाता और इस प्रकार संसार के पाँच महान् राष्ट्रों में अपनी स्थिति के अनुरूप अपना उचित स्थान ग्रहण करता परन्तु इस चाह की पूर्ति होने में अभी विलम्ब दिखाई देता है। निस्सन्देह मार्शल चाङ्ग-काई-शेक इस चाह की पूर्ति करने के प्रयत्न में लगे हैं। युद्ध से छुट्टी पाने के बाद ही उन्होंने चीन में लोकतन्त्रात्मक शासन-व्यवस्था स्थापित करने की घोषणा कर दी थी। निजी फ़ौजों के तोड़ देने का आदेश भी दे दिया था। वर्गवादी नेता से समझौता करने की बातचीत भी शुरू कर दी थी। परन्तु अभी तक इस दिशा में आवश्यक सफलता प्राप्त हुई। युद्ध के कारण उसकी शक्ति भी ठीक तरह से नहीं हो पाई है अन्यथा उत्तरी चीन में अमरीकन सेनाओं को शान्ति-व्यवस्था करने के लिए न आना पड़ता। इसका मतलब यह है कि जहाँ अन्य महाशक्तियाँ अपने-अपने राष्ट्रों को सुदृढ़ता प्रदान करने में संलग्न हैं, अपने हितों की रक्षा के लिए सजगता से कार्य कर रही हैं वहाँ चीन अभी अपने को ही नहीं सँभाल सका है। उसकी राष्ट्रीय सरकार का मुख्य चीन पर ही अभी तक प्राधान्य स्थापित नहीं हो सका तब वह अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों की बातों में अपना उचित स्थान ले! यों चीन एक महान् राष्ट्र है और यदि घर के झगड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीय सरकार शीघ्र ही दबा लेने में सफल-मनोरथ हो गई दक्षिणी सीमा से लेकर मञ्चूरिया तक उसकी प्रभुता स्थित हो गई तो वह सचमुच ही चीन का भाग्योदय करने का स्वाभाविक गौरव प्राप्त कर सकेगी। चीन के अभ्युदय के मार्ग में सबसे अधिक बाधक वहाँ का वर्गवादी दल रहा है, जिसकी चार प्रान्तों में व्यवस्थित राज्यसत्ता तक क़ायम हो गई है। प्रसन्नता की बात है, उस दल के नेता के साथ समझौते का जो चालाप छिड़ा था, उसमें बहुत कुछ सफलता प्राप्त हुई है। सम्बन्ध से मार्शल च्यांग-काई-शेक ने जो वक्तव्य छपवाया वह यह है—"यद्यपि प्रमुख राजनीतिक प्रश्नों पर समझौता नहीं हो सका है, पर दोनों पक्षों ने रियायतें की हैं। समझौते की वार्ता जारी रहेगी, पर अब चीन की एकता 'सर्वदल राजनीतिक सलाहकारी समिति' तथा 'प्रतिनिधि, फौजी समिति' पर निर्भर करती है। केन्द्रीय सरकार ने सबसे बड़ी रियायत यह की है कि उसने जन-सम्मेलन स्थगित कर दिया है तथा कम्यूनिस्टों ने अपनी फ़ौजें ४८ डिवीज़न से घटाकर २० डिवीज़न करना स्वीकार कर लिया है।" जहाँ गृह-युद्ध की संभावना थी, वहाँ यह समझौता सर्वथा अभिनन्दनीय ही होगा क्योंकि मार्शल च्यांग-काई-शेक चीन में शान्ति एवं एकता की स्थापना करना चाहते हैं। उनका कहना कि देश में कि राजनीतिक स्वाधीनता को प्रोत्साहन दिया जायगा। सभी पार्टियाँ क़ानूनी मान ली जायँगी। नगरों तथा कस्बों में जन-समितियाँ सङ्गठित की जायँगी। राष्ट्रीय परिषद् शीघ्र बुलाई जायगी। ऐसा हो हो क्योंकि चीन के भाग्योदय का यह शुभ लक्षण है। भगवान् करे चीन प्रजातान्त्रिक भावनाओं का प्रतीक बनकर एशिया का एक गौरवपूर्ण आदर्श राष्ट्र बने।

भारत को समृद्ध बनाने का प्रयत्न

यह जानकर किसे प्रसन्नता न होगी कि हमारी सरकार देश के उद्योग-धन्धों को उन्नत करने के लिए कितनी उत्सुक है। उसने इस सम्बन्ध में जो योजनायें बनाई हैं, उनका उल्लेख उसके योजना और उन्नति विभाग के सदस्य सर आर्देशर दलाल ने अपने एक वक्तव्य में हाल में किया है। उन्होंने बताया है कि जिन योजनाओं को कार्य का रूप देने का निश्चय किया गया है, वे ये हैं—

(१) जहाज़ बनाने के कारख़ाने खोलना, (२) हवाई जहाज़ बनाने के कारख़ाने खोलना, (३) ऐसा आर्थिक कारपोरेशन बनाना जो औसत दर्जे के और बड़े कारख़ानों को मदद दे सके, (४) सूतों में भी इसी प्रकार के कारपोरेशन बनाना तथा (५) एक सेन्ट्रल बोर्ड बनाना जो यह निश्चित करेगा कि किसको कितनी मदद की ज़रूरत है।

दलाल साहब ने यह भी बताया है कि सरकार बाहर से बड़ी-बड़ी मशीनें मँगवाने का कितनी तत्परता के साथ यत्न कर रही है। उन्होंने कहा है—

विदेशों से बड़ी-बड़ी मशीनें मँगाने के लिए अभी तक ६५१ दरख़्वास्तें मञ्जूर की जा चुकी हैं, जिनमें ३४ करोड़ ९० लाख की मशीनरी के लिए आर्डर दिया गया है। भारत-सरकार ने शीघ्र ही आवश्यक सामान मुहैया करवाने के लिए एक विशेष आफ़िसर की नियुक्ति कर दी है। यह सब बहुत ठीक है, पर इसे सन्तोषजनक नहीं कहा जा सकता। क्योंकि अन्य देश इस सम्बन्ध में जो कुछ कर रहे हैं, उसकी तुलना में यह कुछ भी नहीं है। उदाहरण के लिए रूस के सम्बन्ध में अभी पिछले दिनों प्रकाशित हुआ है कि वहाँ की एक समिति ने उत्तरी ध्रुव के हिम के नीचे छिपी हुई प्राकृतिक सम्पत्ति की खोज करने के लिए बारह दल भेजे हैं। इस समिति को पेचोरा की घाटी में कोयले की बड़ी-बड़ी खानें मिल ही गई हैं। इगारका बन्दरगाह के निकट से भी कोयला और ताँबा निकाला जा रहा है। तेल की भी खोज की जा रही है। तैमोर प्रायद्वीप में भी कई दल खोज का काम कर रहे हैं और उन्होंने कई गज़ मोटी बर्फ़ की तह हटाकर कोयला, नमक और तेल की खानें तलाश कर ली हैं। यह सब पढ़कर हमारा ध्यान भारत की अतुल और अक्षय्य प्राकृतिक सम्पत्ति की ओर आकर्षित होता है।

हमारी सरकार के पास भी ऐसे विशेषज्ञ हैं, जो भारत के खुले मैदानों में तथा पहाड़ों में ऐसी खोजें कर रहे हैं। परन्तु हमें उसका पता नहीं है।

क्या ही अच्छा होता, यदि हमारी सरकार भी रूस की सरकार की तरह भारत को समृद्ध बनाने के लिए सभी क्षेत्रों में क्रियाशील तथा अधिक तत्परता के साथ काम करती हुई दिखलाई पड़ती।

फिलिस्तीन की विकट समस्या

जान पड़ता है, फिलिस्तीन की यहूदी समस्या ने फिर उग्र रूप धारण कर लिया है। ब्रिटिश सरकार ने फिलिस्तीन को तीन भागों में विभक्त कर जैसे-तैसे अरबों के असन्तोष को दूर करने में थोड़ी-बहुत सफलता अवश्य प्राप्त कर ली थी और यदि उसी नीति का अनुसरण किया जाता तो सम्भव था कि इस समस्या के हल करने का कोई दृढ़ आधार मिल जाता। परन्तु हाल में अमरीका के अध्यक्ष ट्रूमैन साहब के ब्रिटिश सरकार से यह आग्रह करने पर कि जर्मनी से निर्वासित एक लाख यहूदियों को फिलिस्तीन में जा बसने की अनुमति दी जाय सारा अरब क्षुब्ध हो उठा है। यह कौन नहीं जानता है कि फिलिस्तीन एक छोटा-सा प्रदेश है और वहाँ अरब, यहूदी आदि लोग बसते हैं अर्थात् वह जनशून्य नहीं है। ऐसी दशा में एक बसे-बसाये देश में बाहर से लोगों को और सो भी एक विशाल संख्या में लाकर बसाना कहाँ तक उपयुक्त है, यह समझना बहुत कठिन है। फिलिस्तीन के अरब क्या, अन्य पड़ोसी प्रदेशों के अरब भी नहीं चाहते कि फिलिस्तीन में बाहर से यहूदी लाकर बसाये जायँ। इधर संसार के यहूदियों की यह माँग है कि उनको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके पूर्वजों के देश में बसने की खुली छुट्टी दे दी जाय। इन दोनों परस्पर विरोधी बातों ने एक विकट अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति उत्पन्न कर दी है और वह इस बात से और बढ़ गई है कि जो यहूदी और अरब फिलिस्तीन में निवास करते हैं वे सशस्त्र सङ्घर्ष करने के लिए भीतर ही भीतर पूरी तैयारी कर चुके हैं। फिलिस्तीन ब्रिटिश सरकार के नियन्त्रण में है। अतएव वहाँ शान्ति स्थापित रखने के लिए उसे वहाँ सेनाओं की कुमक भेजनी पड़ी है, जिससे जान पड़ता है कि फिलिस्तीन की स्थिति भयावह हो गई है। उधर अमरीका यहूदियों को वहाँ भेजने की अपनी माँग को नहीं छोड़ रहा है। इस सम्बन्ध में अरब-सङ्घ के सभापति अब्दुर्रहमान अज़ाम का कहना है—'यदि फिलिस्तीन में अधिक यहूदी बसाये गये तो अरब निवासी युद्ध के लिए चेतावनी देते हैं। हम शान्ति चाहते हैं किन्तु इसके लिए हम युद्ध के लिए भी तैयार हैं।' श्री अब्दुर्रहमान साहब हाल में प्रधान मन्त्री एटली साहब से मिले थे। नहीं कहा जा सकता कि उनसे उनकी इस सम्बन्ध में क्या बातचीत हुई है परन्तु उन्होंने इस बात का उल्लेख किया है कि अमरीका के अध्यक्ष ट्रूमैन साहब का फिलिस्तीन के सम्बन्ध में अरब का रुख़ ठीक नहीं है क्योंकि स्वर्गीय रूज़वेल्ट साहब तथा स्वयं ट्रूमैन साहब भी अरबों को यह वचन दे चुके हैं कि बिना अरबों की सलाह के फिलिस्तीन में कोई नई बात नहीं की जायगी। ब्रिटिश सरकार भी इस सम्बन्ध में यथासमय अपना निश्चित मत प्रकाशित करेगी। तथापि जैसी परिस्थिति है, उसको देखते हुए यही प्रतीत होता है कि फिलिस्तीन का मसला अकेले ब्रिटिश सरकार के सुलझाये नहीं सुलझ सकेगा। देखना है कि फिलस्तीन की विकट समस्या का हल कैसे होता है?

घूसख़ोरी की महाव्याधि

भारत में अँगरेज़ी शासन के फलस्वरूप जहाँ बहुत-सी अच्छाइयाँ आई हैं, वहाँ बहुत-सी बुराइयाँ भी आ गई हैं। और उन बुराइयों में घूसख़ोरी ने 'हक़' का रूप धारण कर लिया है। किसी भी सरकारी विभाग में चले जाइए, आपका काम तब तक नहीं होगा, जब तक आप वहाँ का निर्दिष्ट हक़ नहीं दे देंगे। लड़ाई के दिनों में तो इस व्याधि ने महाव्याधि का रूप धारण कर लिया था। यहाँ तक कि स्वयं भारत-सरकार भी बिलला उठी। फलतः उसने बहुत-से घूसख़ोर पकड़े और उन्हें समुचित दण्ड भी दिया। बाद को जब बङ्गाल की शासन-रिपोर्ट प्रकाशित हुई तब उसमें इस बात को भले प्रकार सिद्ध कर दिया कि घूसख़ोरी ने कितना अधिक व्यापक तथा भीषण रूप धारण कर लिया है। घूसख़ोरी की इस भयावह स्थिति की ओर हमारे लोकनेताओं का भी ध्यान आकृष्ट हुआ है। वे अपने सार्वजनिक भाषणों में घूसख़ोरी, नफ़ाख़ोरी आदि की निन्दा करके ही सन्तुष्ट नहीं हो जाना चाहते, किन्तु जान ऐसा पड़ता है कि जिन्होंने इन कर्मों को पिछले दिनों बड़े हौसले के साथ किया है, उनकी खोज-ख़बर रखने के लिए भी वे यत्नवान हैं। राष्ट्रपति मौलाना अबुलकलाम आज़ाद ने तो यहाँ तक कहा है कि युद्धकाल में जिन अफ़सरों ने लोगों की कठिनाइयाँ बढ़ाया तथा सन्देहात्मक नीति से काम लिया है, वे खोजे किये जायँगे। पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने भी कहा है कि जिन उच्चाधिकारियों ने अपने अधिकार का दुरुपयोग किया अथवा जिन्होंने कंट्रोल की ओट में मुट्ठी गर्म की, उनको क्षमा नहीं किया जायगा। इन नेताओं के ऐसा कहने में पीड़ित लोगों ने इन्हें घूसख़ोरी आदि की घटनायें बताकर कर दी हैं। मौलाना आज़ाद को ऐसी जो सूचनायें मिली हैं, उनका एक उदाहरण 'वर्तमान' ने अपने एक विशेष में इस प्रकार दिया है—

'एक विशिष्ट प्रकार के सामान को मँगाकर भारत में बेचने वाली एक विशिष्ट फ़र्म थी। इस फ़र्म के माल के दामों का निर्धारण करने के लिए ६० लाख रुपये की रिश्वत दी गई जिसका भाव शान्तिकालीन भावों के मुक़ाबले ६ गुने निर्धारित कर दिये गये। इस रक़म में से आधा तो उस आयातवाली कम्पनी ने लिया और आधा अन्य थोक-विक्रेताओं ने। चतुर सरकारी व्यक्तियों ने रक़म को नक़दी या बैंक की मार्फ़त न लेकर हीरों के पासों के रूप में लिया। सारी कार्रवाई इस प्रकार से की गई कि कोई नाम-निशान न रह पाये।

इस तरह की घटनाओं की अनगिनत सूचनायें लोकनेताओं को मिलेंगी, जिनका विवरण एकत्र करना तथा उन पर विचार करना कुछ लोकनेताओं से नहीं, किन्तु सार्वजनिक जाँच-कमेटियों के द्वारा ही हो सकता है। सच बात तो यह है कि यहाँ की राशि में ही घुन लग गया है। घूसख़ोरी की महाव्याधि से सारा देश पीड़ित है। यहाँ तक पीड़ित है कि कराह तक नहीं निकल पाती है। सरकार इच्छा करके भी इस महाव्याधि का कभी उन्मूलन नहीं कर पाई है। देखना है, हमारे देश के नेता इस महाव्याधि के उन्मूलन का कब, कैसा प्रयत्न करते हैं।

जापान की दण्ड-व्यवस्था

जापान के आत्मसमर्पण करने के बाद ब्रिटिश और अमरीकी सेनायें जापान में उतरकर अमरीका के प्रसिद्ध विजयी सेनापति जनरल मैकार्थर के नेतृत्व में वहाँ ऐसी व्यवस्था प्रवर्तित करने में संलग्न हैं कि जापान की सैनिक भावना सदा के लिए नष्ट हो जाय और वह एक शान्ति-प्रिय और शिष्ट देश बनकर संसार में अपना उचित स्थान ग्रहण करे। जनरल मैकार्थर इस समय के जापान के सर्वेसर्वा हैं और वे जैसे दृढ़ निश्चय के सैनिक हैं वैसे ही वे जापान में अपनी नीति को दृढ़ता के साथ परिचालित करने में व्यस्त हैं। आत्मसमर्पण के समय जापान का मन्त्रिमण्डल सङ्गठित हुआ था, उसने अब इस्तीफ़ा दे दिया है क्योंकि जनरल मैकार्थर ने मन्त्रिमण्डल के एक सदस्य को पदच्युत करने का आदेश दिया था। अब जो नया मन्त्रिमण्डल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिडेहारा के प्रधानमन्त्रित्व में सङ्गठित हुआ है, वह जनरल मैकार्थर से पूर्ण रूप से सहयोग करने के लिए प्रतिज्ञाबद्ध हो चुका है। प्रधान मन्त्री बैरन शिडेहारा प्रसिद्ध उदारदली नेता हैं और वे प्रारम्भ से ही जापानी सैनिकवाद के विरोधी रहे हैं। प्रधान मन्त्री का पद ग्रहण करते हुए उन्होंने स्पष्ट कह दिया है कि जापान का भविष्य इसी में है कि वे जापानी ढङ्ग से प्रजातन्त्रवाद की नीति पर चलें। सो जापान में अब जनरल मैकार्थर के नेतृत्व में वहाँ के सैनिकवाद को कुचल करके लोकतन्त्र की स्थापना की जायगी। इस सम्बन्ध में उस दिन जापानी प्रेस्वो-द्वारा अमरीकन परराष्ट्र-विभाग के सुदूर पूर्व के एक अधिकारी मि० जान कार्टर विसेंट ने उन कुछ बातों का उल्लेख किया है, जो जापान में शीघ्र ही कार्य-रूप में परिणत की जायँगी। वे बातें इस प्रकार हैं—(१) जापानी ख़ुफ़िया पुलिस भङ्ग कर दी जायगी। उसके स्थान में अमरीकन ढङ्ग की सिविल पुलिस स्थापित की जायगी। (२) सभी युद्ध-अपराधी गिरफ़्तार किये जायँगे और उन पर मुक़दमें चलाये जायँगे। मन्त्रिगण भी न बच सकेंगे। जर्मनी में जो मानदण्ड लागू है, वही जापान में भी लागू होगा। (३) जापान की सभी बड़ी-बड़ी उद्योग-संस्थायें तोड़ दी जायँगी। (४) जापान के उन्हीं भूखण्डों के निवासियों के लिए जहाँ महामारी तथा अशान्ति होगी, भोजन की व्यवस्था की जायगी। शेष देश के निवासियों को अपने भोजन की व्यवस्था ख़ुद करनी होगी। (५) जापानी सम्राट् के पद में आमूल परिवर्तन किया जायगा। (६) जापान पर तब तक अधिकार रक्खा जायगा, जब तक सारी जापानी सेना तोड़ न दी जायगी तथा इस बात का आश्वासन न मिल जायगा कि जापानी लोग लोकतन्त्र के मार्ग के अनुगामी हो गये हैं।

जापान की दण्ड-व्यवस्था का प्रारम्भिक रूप इस प्रकार प्रकाश में आया है। भविष्य में उसके साथ कैसा व्यवहार होगा, उसके साथ कैसी सन्धि की जायगी तथा उसे लड़ाई का कितना हर्जाना देना होगा, यह सब बातें समय आने पर प्रकट होंगी। तथापि यह एक जानी हुई बात है कि जर्मनी की तरह जापान से भी उसका उग्र सैनिकवाद सदा के लिए मिटा दिया जायगा, जिससे वह भविष्य में कभी सिर न उठा सके। जापान ने शान्ति भङ्ग करके जो वर्षों तक अनर्थ करता रहा है, उसका समुचित दण्ड विजयी-राष्ट्र उसे व्यवस्थापूर्वक दे रहे हैं।

हिन्दी के सम्बन्ध में एक अनोखा प्रस्ताव

हिन्दी के एक नेता बताये जानेवाले लेखक महोदय ने हाल में एक अनोखा प्रस्ताव कर डाला है। उनका कहना है कि महात्मा गांधी बहुत बड़े आदमी हैं। अतएव उन्होंने हिन्दी को जो नई परिभाषा बताई है, उसे हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन को मान लेना चाहिए। हिन्दी के इन हितैषी लेखक महोदय का यह प्रस्ताव कितना तर्कपूर्ण है, इस सम्बन्ध में हमें कुछ नहीं कहना है। हमें इस सम्बन्ध में केवल यही कहना है कि जो हिन्दी सदियों से भारत के संयुक्त प्रान्त, बिहार, मध्यप्रदेश, मध्यभारत, राजपूताना आदि प्रान्तों के एक विशाल भूखण्ड के १८ करोड़ निवासी बोल और लिख रहे हैं, उसे केवल इस कारण कि महात्मा गांधी जैसे महान् पुरुष चाहते हैं कि उसे उर्दू का जामा पहना दिया जाय कैसे सम्भव हो सकता है। भाषायें इस तरह न कभी बनाई गई हैं न बिगाड़ी गई हैं। महात्मा गांधी के पहले भी इस देश में अनेक साधु-सन्त हो चुके हैं, जिन्होंने हिन्दी के साथ ऐसी ही धींगाधींगी करने का प्रयत्न किया था परन्तु उनकी वैसी धींगाधींगी उनके जीवन के साथ ही समाप्त हो गई। उक्त लेखक महोदय जिस केन्द्र में बैठकर अपनी प्यारी हिन्दी को विकेन्द्र करने का वर्षों से उपक्रम कर रहे हैं, वहीं एक ऐसे सन्त हुए थे, जो राजमान्य और जनमान्य थे। परन्तु उनकी विकृत हिन्दी अर्थात् उर्दू-मिश्रित हिन्दी की रचनाओं का आज कोई नाम भी नहीं जानता है। भाषा जनता की वस्तु है, किसी विशिष्ट व्यक्ति की नहीं। उपर्युक्त विशाल भूखण्ड के निवासियों की हिन्दी भाषा की अपनी संस्कृति एवं अपनी परम्परायें हैं, जिनके प्रवाह ने अपनी स्वाभाविक गति से विकसित होकर हिन्दी को वर्तमान रूप प्रदान किया है। और उसका यह रूप इतना ठोस, परिमार्जित एवं सुसंस्कृत हो चुका है कि उस पर बाहरी धक्के का, वह चाहे कितना ही भारी क्यों न हो, रत्ती भर भी प्रभाव नहीं पड़ सकता। उन लेखक महोदय के जैसे धुरीण व्यक्ति चाहे प्रयत्न करके भी देख लें, उनके वैसे सतत प्रयत्नों का भी वही परिणाम होगा, जो पहले के सन्तों के प्रयत्नों का हुआ है। तुलसी जैसे महान् भाषा निर्माताओं से निर्मित एवं आज के हजारों लेखकों एवं कवियों से परिपोषित हिन्दी की जड़ें इतनी गहराई तक पहुँच चुकी हैं कि वह सदियों तक हिलाये न हिल सकेगी। यदि यह बात भी न हुई होती, यदि हिन्दी का उसका आज का-सा वैभवपूर्ण साहित्य निर्मित न हो चुका होता तो भी राष्ट्रीयतावाद से इस जाग्रत् युग में अपनी मातृभाषा की 'सुन्नत' कराने के लिए १८ करोड़ हिन्दीभाषी कदापि तैयार न होते। यों ऐसे बहके व्यक्ति सभी समाजों में पाये जाते हैं, जो लोकमत के विरुद्ध अपनी बात कहकर अपना महत्त्व स्थापित करनेका प्रयत्न करते हैं। उन सज्जन का उक्त प्रस्ताव हम इसी कोटि में मानते हैं।

डच द्वीप और इंडोचीन

जापान के हथियार डाल देने पर उसने जिन देशों पर अधिकार कर लिया था, यह स्वाभाविक ही था कि उन्हें उनके पहले के स्वामी फिर अपने अधिकार में कर लें। अतः चीन को उसके खोये हुए प्रान्तों के साथ-साथ मञ्चूरिया भी मिल गया। ब्रिटेन ने ब्रह्मदेश का अधिकांश पहले ही जीत लिया था। अतएव उसके शेष भाग तथा मलाया प्रायद्वीप आदि पर उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिकार कर लिया। कोरिया को अमरीका ने स्वाधीन राज्य घोषित कर दिया और कुछ-कुछ दबी ज़बान से थाई देश अर्थात् स्याम को भी उसने स्वतन्त्र देश मान लिया। अब रह गये डच द्वीप-पुञ्ज तथा इंडोचीन! इन पर इनके पहले के स्वामियों को अधिकार करना था। परन्तु वे इस कार्य के लिए प्रस्तुत नहीं थे। फलतः यह कार्य-भार ब्रिटिश सरकार ने अपने ऊपर ले लिया ताकि उन देशों की जापानी सेनायें निःशस्त्र कर दी जायँ। साथ ही उन पर उनके पहले के स्वामियों का भी अधिकार करा दिया जाय। परन्तु डच द्वीपों में एवं फ्रांस के इंडोचीन में राष्ट्रीयता का व्यापक आन्दोलन छिड़ा हुआ मिला। डच द्वीपों में वहाँ के राष्ट्रीय नेता डा० सोकारनो ने तो अपनी प्रजातन्त्र सरकार तक स्थापित कर ली है, जिसे ब्रिटिश सैनिक अधिकारी नहीं मान रहे हैं। यही नहीं, डच सरकार भी इसकी कोई बात सुनने को तैयार नहीं है। भारतीय सेनाओं ने ब्रिटिश सरकार के आदेशानुसार जावा की राजधानी पर अधिकार कर लिया है और वे वहाँ जापानियों को निरस्त्र कर रही हैं। इसी प्रकार इंडोचीन में भारतीय सेनायें उतारी गई हैं। साथ ही फ्रेंच नौसेना भी वहाँ जा पहुँची है। अनाम के स्वतन्त्रतावादी सङ्गठन से फ्रांसीसियों का भीषण सङ्घर्ष भी हो चुका है और अब उनके नेताओं से फ्रेंच-सरकार के प्रतिनिधियों से वार्त्तालाप हो रहा है। इस सिलसिले में सबसे महत्त्व की बात यह है कि डच द्वीपों के राष्ट्रीयतावादी आन्दोलन का समर्थन आस्ट्रेलिया के मज़दूरों ने हड़ताल करके किया है। उन्होंने डच द्वीपों को भेजे जानेवाले फ़ौजी सामान को जहाज़ों पर [illegible] से इनकार कर दिया। कहा जाता है कि अमरीका में भी [illegible] डच सेनायें डच द्वीपों को भेजी जाने लगीं, तब वहाँ के [illegible] ने हड़ताल कर दी। कहने का मतलब यह है कि जनमत [illegible] द्वीपों के आन्दोलनकारियों के साथ है परन्तु साम्राज्यवादी [illegible] अपने उद्देश्य के आगे जनमत को ठुकरा देने में अभ्यस्त [illegible] अतएव वे इसी प्रयत्न में हैं कि डच द्वीपों पर डचों का [illegible] इंडोचीन पर फ्रांसीसियों को पहले की तरह अधिकार हो [illegible] अब रहा वहाँ का जन-आन्दोलन! सो उसकी ओर ध्यान [illegible] उनका काम नहीं है। यह काम उनके पहले के शासकों का [illegible] जिन्हें जापानियों ने मार भगाया था। मित्र होने के नाते [illegible] अपने मित्रों को जापान को परास्त कर उन्हें पुनः अधिकार [illegible] करने का प्रयत्न कर रहे हैं। और इस प्रयत्न में उनका [illegible] के राष्ट्रीयतावादियों से सशस्त्र सङ्घर्ष छिड़ गया है। इसमें [illegible] नहीं कि वे प्रबल मित्रराष्ट्रों द्वारा कुचल दिये जायँगे और [illegible] उनके पहले के स्वामियों का अधिकार करा दिया जायगा। [illegible] अपने प्रजाजनों के साथ जैसा चाहें, वैसा व्यवहार करने [illegible] स्वतन्त्र होंगे। किसी समय उनकी यह सत्ता चल सकती [illegible] परन्तु आज संसार में जनतन्त्र की जो बाढ़ आई है, वह [illegible] सत्ता को कोई महत्त्व नहीं देता है। सभी पराधीन देश [illegible] स्वतन्त्रता के लिए आकुल-व्याकुल ही नहीं हैं, किन्तु उसको [illegible] करने के लिए वे यत्नशील हैं। डच द्वीपों में तथा इंडोचीन [illegible] जो हो रहा है वह उक्त भाव का ही प्रतीक है।

——

Printed & Published by A. Bose, at the Indian Press, Ltd., Benares Branch, Benares.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाहित स्त्री-पुरुषों के जानने योग्य

ऑपरेशन तथा इन्जेक्शन ज़रूरी नहीं है

अप्राकृतिक रहन-सहन तथा मिथ्या आहार-विहार के कारण हमारे देश की नारियाँ अधिकांश ऐसी मिलेंगी जो एक न एक रोग से ग्रस्त हो निराश जीवन व्यतीत कर रही हैं। अधिकतर गर्भाशय का मोटा हो जाना तथा उस पर चर्बी आ जाना एक आम रोग हो गया है जो गर्भ धारण करने में बाधक होता है तथा अन्य भयंकर रोगों की जिससे उत्पत्ति भी होती है। ऐसी अवस्था में प्रायः ऑपरेशन कराने से भी बहुत कम रोगियों को सफलता प्राप्त होती है।

यदि आपको ऑपरेशन कराने में असुविधा है या ऑपरेशन की अपेक्षा औषधियों द्वारा कष्ट दूर करने के अधिक पक्ष में हैं तो शास्त्रोक्त अंगूरों का ताज़ा रस, अशोक, अर्जुन, दशमूल, त्रिफला तथा अन्य श्रेष्ठ औषधियों से प्रस्तुत—मूँगा जिसका प्रधान अंग १५ वर्षों से प्रचलित **गौड़ की नारी-सुधा कॉर्डियल** सेवन करें।

नारी-सुधा एक माहवारी से दूसरी माहवारी तक सेवन करने से बिना ऑपरेशन गर्भाशय की चर्बी, उसका मुटापा तथा फूहड़पन नष्ट हो जाता है और सहज ही गर्भ की स्थिति हो जाती है। जहाँ इन्जेक्शन लिकोरिया (सफ़ेदे का गिरना) रोकने में असफल होते हैं वहाँ कुछ ही ख़ुराकों में यह सदैव के लिए ठीक हो जाता है। कमज़ोरी से गर्भाशय अपनी जगह से हट जाता है तथा गर्भपात होते रहते हैं—एक बोतल के सेवन से युक्त स्थान दृढ़ हो जाता है, फिर गर्भपात कभी नहीं होते। मासिक धर्म महीने में दो बार या दो महीने में एक बार के बजाय ठीक समय पर आकर हँसते-खेलते होने लगते हैं, जिससे हिस्टेरिया (बेहोशी) के दौरे होने बन्द हो जाते हैं। ख़ूब भूख लगती है, ख़ून एक बड़ी मात्रा में बनने लगता है। दिल की धड़कन, कमर-टाँगों का ठहरा हुआ दर्द केवल चौथे दिन दूर हो जाते हैं। जापे का संकट सहन करने तथा बाद की कमज़ोरी शीघ्र दूर करने की यह विशेष औषधि है। **नारी-सुधा** की २६ ख़ुराकों की एक बोतल का मूल्य—पेकिंग, वी० पी० व्यय से पृथक्—तीन रु० पाँच आने है। आवश्यकता होने पर इस मासिक पत्रिका का हवाला देकर

कुमार कुमार एन्ड को०

पोस्ट बाक्स नं० ११९ देहली

मँगाइए—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

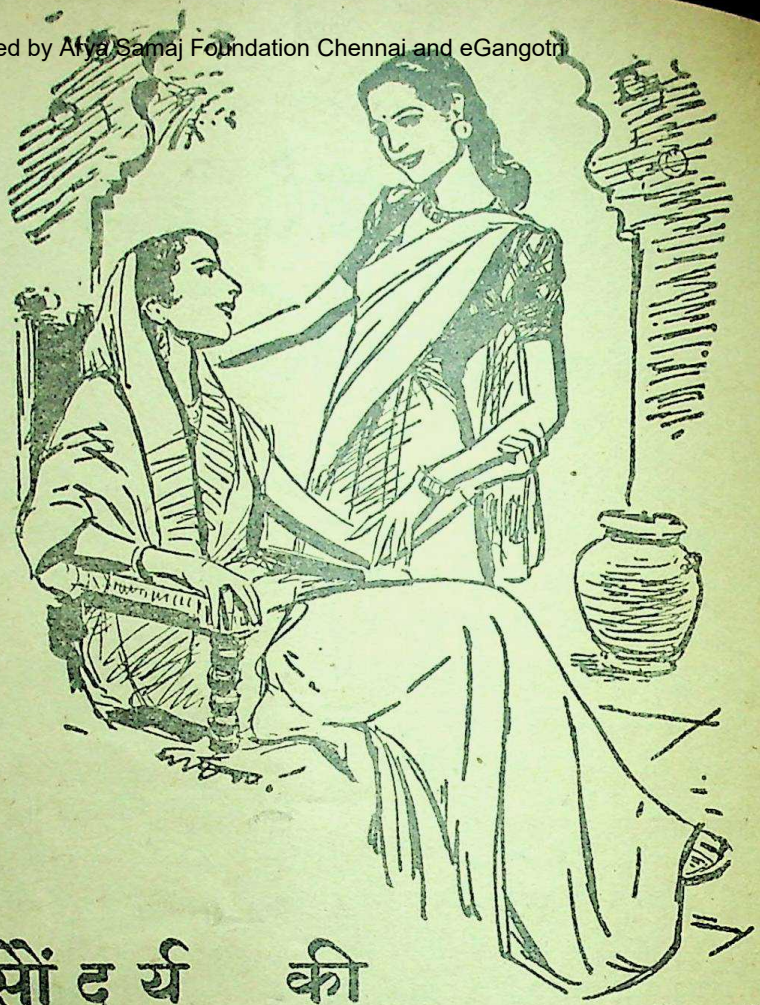

सौंदर्य की दो पीढ़ियाँ

यद्यपि इनकी उम्र में बीस साल का फ़र्क है, फिर भी माँ के सौन्दर्य में उतनी ही ताज़गी और उसकी त्वचा उतनी ही गुलाबी और मुलायम है जितनी कि उसकी सोलह वर्षीय बेटी की। इसका भेद यह है कि माँ ने, अपनी माँ की सलाह पर, बचपन से ही पियर्स साबुन और साफ़ पानी से अपनी कोमल त्वचा की रक्षा की। आज उसकी सुन्दर बेटी उसी तरीके से अपनी त्वचा की रक्षा करती है। इसलिये बीस वर्ष के बाद उसकी त्वचा भी निस्सदेह उसी तरह सुन्दर और ताज़ा रहेगी जिस तरह आज उसकी माँ की त्वचा है।

चालीस साल से हिन्दुस्तान की सुन्दरियों ने पियर्स साबुन को ही इस्तेमाल किया है। स्वाभाविक सुगन्ध और रेशमी झाग के कारण यह साबुन साधारण साबुनों से कहीं बढ़चढ़ कर है।

पिअर्स साबुन

सौन्दर्य का सेवक

TG. 38-173 HI

A. & F. PEARS, ISLEWORTH, ENGLAND

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री रत्नागिरी जी का अद्भुत चमत्कार

जिसने समस्त संसार को चकित कर दिया

रक्त, बल, वीर्य, उत्साह तथा उमङ्ग ही जीवन सफल बना सकती है।

ध्यान देने योग्य अमूल्य उपहार

अपूर्व कायापलट (रजिस्टर्ड)

निःस्वार्थ संसारसेवी भारतीय महात्माओं ने औषध-विज्ञान को नई महान् खोजों और अमूल्य रत्नों से अलंकृत किया है। आधुनिक चिकित्सक मर्ज़ और मरीज़ जब दोनों को लाइलाज घोषित करके शर्मिन्दा नहीं होते, वहाँ इन्हीं महात्माओं की बिना दाम की जड़ी-बूटियाँ मुर्दों को भी जिला सकने में समर्थ हुई हैं। ऐसी सच्ची घटनायें आये दिन एक न एक पढ़ने और सुनने में आया करती हैं।

बीस वर्ष पूर्व कल्लाती पहाड़ी पर विचरण करनेवाले स्वामी रत्नागिरी जी महाराज की सेवा एक बूढ़ा ग्वाला करने लगा। महाराज को एक दिन उस वृद्ध की कमज़ोरी पर दया आ ही गई और उन्होंने निम्नलिखित योग की ६ मात्रायें उस बूढ़े को दीं। नासमझी के कारण छहों मात्रायें एक साथ खा जाने से वह वृद्ध ग्वाले में अपूर्व शक्ति आ गई और रत्नागिरी जी के परिश्रम-पूर्वक इलाज करने पर भी बुढ़ापे के बावजूद उसे तीन ब्याह करने पड़े। इस पर राजा, रईस, नवाब और रसिक जन इस योग को जानने के लिए आतुर हो उठे। नवाब बहावलपुर ने हाजी हयात मोहम्मदख़ाँ साहब नें बाबा जी की बहुत सेवा करके इसे प्राप्त कर लिया और लाहौर के पं० ठाकुरदत्त शर्मा को बतलाया। शर्मा जी ने इसे प्रथम तथा दो अन्य मिलाकर तीनों से उत्तम बाजीकरण बतलानेवाले को एक हज़ार रुपये का नक़द इनाम देने की घोषणा की। इसे आज बीस साल के लगभग हो गये किन्तु अभी तक कोई पुरस्कार विजय नहीं कर सका। मथुरा के ख्यातिप्राप्त बाबू हरिदास जी ने इसे चिकित्सा-चन्द्रोदय में छपवाया और हमने भी स्वयं बनाकर कई दुर्बल, नपुंसक, वीर्य-विकारी रोगियों पर बरता। तत्काल आश्चर्य-चमत्कार देख जन-साधारण के लाभार्थ अनेक पत्र-पत्रिकाओं में छपवा दिया। आप भी बनाकर लाभ उठावें।

योग—शुद्ध बुरादा फ़ौलाद २० तोला, शुद्ध श्वेत मल्ल १ तोला, शुद्ध कपूर १॥ माशा, एक घण्टा घृतकुमारी में घोटकर, मिट्टी के कुज्जे में मज़बूत बन्द कर पाँच सेर कण्डों में फूँके। दुबारा एक तोला हरताल बर्की शुद्ध १॥ माशा कपूर शुद्ध में तीसरी बार गन्धक आमलासार शुद्ध १ तोला कपूर १॥ माशा में चौथी बार शुद्ध संस्कारित पारद १ तोला, कपूर १॥ माशा को ऊपर की भाँति १६ आँच दे। फिर उसको, मलाई में डालकर बराबर इन्द्रबधू [illegible] जलाये जब इन्द्रबधू जलकर राख हो जावे तो हवा देकर उड़ा दे। बस अपूर्व कायापलट तैयार है। चार-चार चावल सायं मक्खन, मलाई के साथ खावें ऊपर मिश्री मिला दूध पीवें।

मथुरा के हरिदास जी लिखते हैं—इस योग के सेवन से एक हफ़्ते में एक आदमी का वज़न चार पौंड बढ़ गया, दूसरे का चेहरा लाल सुर्ख़ हो गया। भूपाल के वैद्यराज पं० बालकृष्ण शर्मा ने ३५० रोगियों पर बरता और आशा से अधिक गुणकारी पाया। रत्नाकर-सम्पादक श्री छोटेलाल जैन आयुर्वेदाचार्य ने गृहचिकित्सा पथ-प्रदर्शक में छापा कि इतना प्रचण्ड गुणकारी योग दूसरा नहीं देखा। श्री धर्मेन्द्र विद्यावतंस सिद्धान्त-शास्त्री अधिष्ठाता गुरुकुल बरला ज़िला मुज़फ़्फ़रनगर ने लिखा है—"अपूर्व कायापलट" नामक औषध सेवन कर रहा हूँ। जैसी प्रशंसा वैसा ही गुण है। बहुत लाभ हुआ। श्री चिरञ्जीलाल जैन आयुर्वेदशास्त्री मालिक कल्याण औषधालय बाह (आगरा) का कहना है कि मैंने २२५ रोगी अपूर्व कायापलट द्वारा जो कि धातु-विकार, नपुंसकता, बवासीर, रक्त-विकार आदि रोगों से ग्रसित थे, पूर्ण स्वस्थ किये।

हमारा दावा है कि केवल सात दिन सेवन से शरीर में रक्त दौड़ता नज़र आयेगा। २१ दिन में चेहरा लाल काश्मीरी सेब की तरह चमकने लगेगा। ४० दिन में नपुंसकता, मधुमेह, डायब्टीज़, निर्बलता दूर हो जाती है। स्त्रियों के प्रदर दूर हो गर्भधारण शक्ति आती है। जिगर व मेदे की शक्ति बढ़ाकर भूख दूनी करता है। कफ, तिल्ली की ख़राबी, खाँसी, नजला, ज़ुकाम, बदन दुखना, ख़ून का पतलापन, आँखों का पीलापन, चिनगारी-सा उड़ते दीखना, बार-बार थूक गिरना, दमा तथा हर तरह की कमज़ोरी तुरन्त दूर कर नव-जीवन का संचार करता है। जाड़ा, गरमी, बरसात सभी मौसमों में एक-सा लाभ करता है। योग भली भाँति समझाकर लिखा है। फिर भी यदि आप न बना सकें तो बनी-बनाई १६ आँच दी हुई ४० दिन की ८० मात्रा डाक-ख़र्च सहित ६॥।=) में हम भेज देंगे। डाक-ख़र्च माफ़, पैकिंग, मनीआर्डर-फ़ीस अलग। कोई बात समझ में न आवे तो जवाबी कार्ड भेजकर उत्तर मँगा लें।

पता—रूपबिलास कम्पनी,

(रसायनशाला) नं० ४६७, घनकुट्टी, कानपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर थाली से उन्हें ज्यादा स्फूर्ति दीजिये !

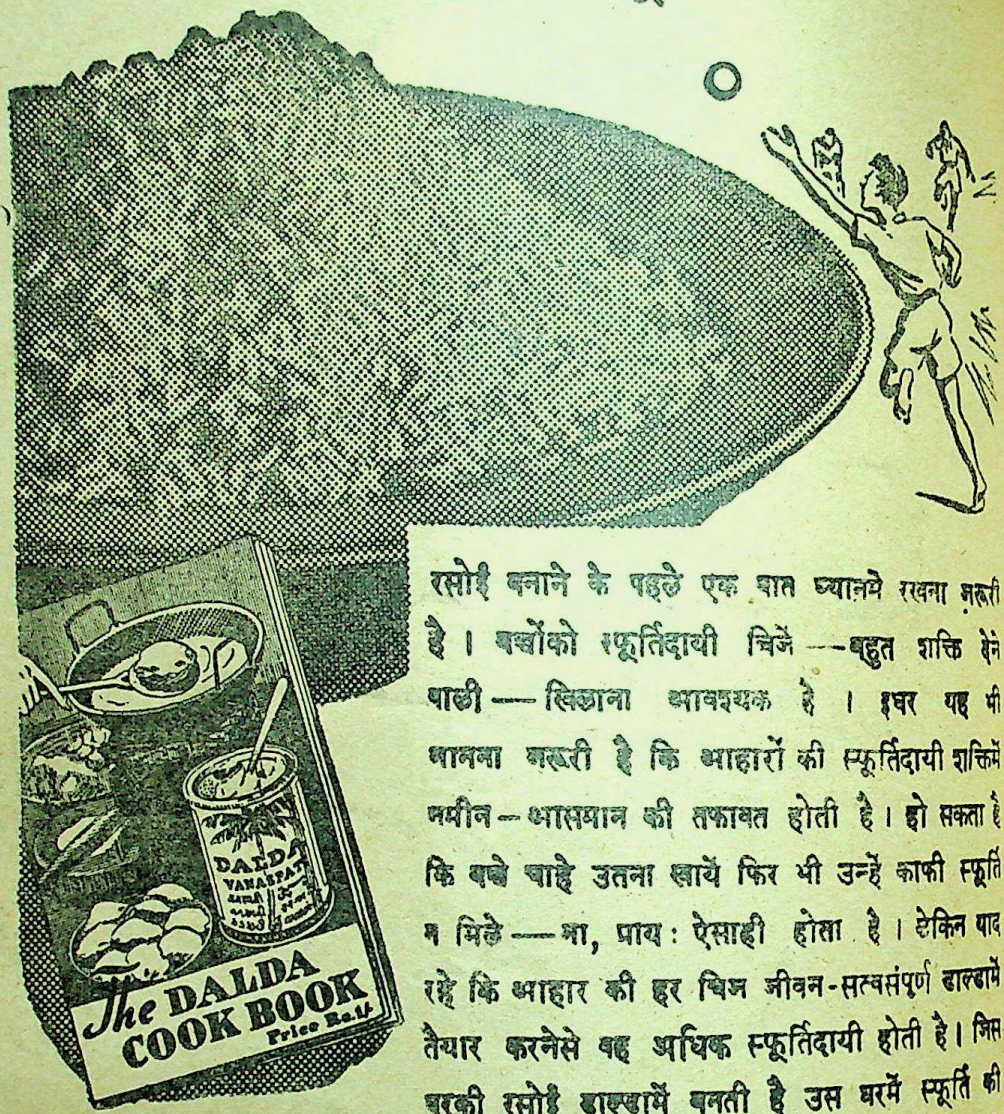

रसोई बनाने के पहले एक बात ध्यानमें रखना ज़रूरी है। बच्चोंको स्फूर्तिदायी चिजें —बहुत शक्ति देने वाली— खिलाना आवश्यक है। इधर यह भी जानना ज़रूरी है कि आहारों की स्फूर्तिदायी शक्तिमें ज़मीन—आसमान की तफावत होती है। हो सकता है कि बच्चे चाहे उतना खायें फिर भी उन्हें काफी स्फूर्ति न मिले—या, प्रायः ऐसाही होता है। लेकिन याद रहे कि आहार की हर चिज जीवन-सत्वसंपूर्ण डाल्डामें तैयार करनेसे वह अधिक स्फूर्तिदायी होती है। जिस घरकी रसोई डाल्डामें बनती है उस घरमें स्फूर्ति की कमी रहनेकी कोई संभावना नहीं क्योंकि रसोई की यह चीज प्रकृतिके बढ़ीया शक्तिदायी अन्नांश देती है और आहारों को ज्यादा रसीले बनाती है। अलावा इसके वह केवल वनस्पति से बनती है।

सबसे बढिया शक्तिदायी चीजें कौनसी हैं इसकी जानकारी हर एक स्त्रीको होनी ही चाहिये।

डाल्डा कुक बुक (अंग्रेजी) में आहार के बारेमें जानकारी बातें और १५० से अधिक आहारोंका बयान किया गया है। Dept. E314 P. O. Box No. 353, Bombay के पते पर पत्र लिखने के पोस्टल स्टाम्प भेजिये।

पोषक-तत्व संपन्न **डालडा** स्फूर्ति के लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खिलौनों के साथ खेलने से वे अपने हाथों को बुधि से चलाने की आदत बना रहा है। उसकी माँ उसका ध्यान करते हुए जानती है कि उसकी सिखाई हुई आदत—लायफ़बॉय का रोज़ाना इस्तेमाल—जो गंदगी के ख़तरे से जो उसके खिलौनों में तथा घर में लगा रहता है—उसे खेलते समय भी सुरक्षित रखती है।

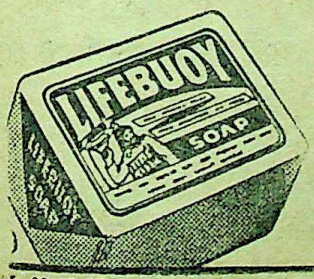

लाइफबॉय का व्यवहार करना
एक पक्की आदत है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीम
टूथ पेस्ट

नीम टूथ पेस्ट भारतवर्ष क्या विदेशी जनता की प्रशंसा प्राप्त कर अपनी उपयोगिता पूर्णतया प्रमाणित कर चुका है।

अथवा

मार्गोफ्रिस

दंतमंजन

ये दोनों ही चीज़ें उच्च कोटि की हैं।

दी कलकत्ता केमिकल कं० लि०,

पण्डितिया रोड, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस तरह धोने से पटरवे जाने के नुकसान से बचाव होता है

छेद, उधेड़ या फट जाना..... यदि कपड़ों को स्वच्छ करने के लिए उन्हें पुराने तरिके से कूटा जायगा तो कपड़ों को ऐसा अनावश्यक (और खर्चीला) नुकसान पहुँचता रहेगा।

1

इन चित्रों को देखिये, ये आपको बिना नुकसान पहुँचाए कपड़ों को धोने का तरीका बताती हैं।

2

3

4

(१) जिस कपड़े को धोना हो उसे पहले खूब भिगो लीजिए। यह आप नल के नीचे, डब में, तालाब में या नदी में कर सकते हैं–इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। (२) जब कपड़े को खूब भिगो चुकें तो सारे कपड़ें में सनलाईट साबुन मलें। जो भाग अधिक मैला हो वहाँ सनलाइट जरा ज्यादा मलें। (३) साबुन लगे हुए कपड़े को हाथों से धीरे–धीरे गूँथिये। (इसे कूटिये नहीं) तबतक गूँथिये (ठीक उसी तरह जैसे रोटी का आटा गूँथा जाता है) जब तक साबुन की झाक कपड़े के हरेक तन्तु में प्रवेश पाजाए। कपड़े को जोर से रगड़ने की या बुरीतरह कूटनेकी अवश्यकता ही नहीं है। सनलाइट का "स्वयंकाम करनेवाला" फेन सरलता से सारे मैल को बाहर निकाल देगा–यदि आपको यह विश्वास हो जाये की गूँथने से यह फेन कपड़े के मैल में घुस चुका है। इस शक्तिशाली फेन में जो साबुन है वह मैल को धूते ही तत्काल फुला देता है। फेन उसे जज़्ब कर लेता है। ऐसे जब आप कपड़े को खूब धोएँगे तो फेन के साथ २ सब मैल निकल जायेगा। (४) फेन–जिसमें की अब सारा मैल आचुका है–छुटाने के लिए कपड़े को खूब मलकर धो डालिए।

ऐसे सनलाइट के तरीक़े से धोए हुए कपड़े बहुत समय तक चलते हैं।

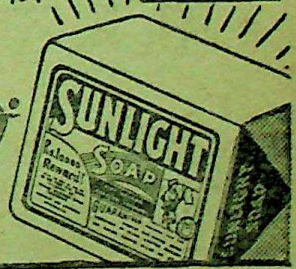

सनलाइट साबुन कपड़ों की बचत करता है

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक सरल रहस्य

टाम्को कोकोनट हेयर आयल की मालिश बालों की जड़ों का पोषण करती है। प्रति सप्ताह टाम्को कोकोनट आयल शेम्पो से धोने से बालों की सफ़ाई और स्वाभाविक चमक बनी रहती है। किन्तु इन दिनों यातायात की कठिनाई के कारण इनका सर्वदा मिलना कभी सम्भव न हो।

अतः केवल आवश्यकतानुसार ख़रीदकर और उसे सावधानी से प्रयोग करते हुए आप अपनी सहायता दे सकते हैं।

दी टाटा आयल मिल्स कं० लिमिटेड,

जवाहर स्क्वायर, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फोन :—७३६२ तार :—गोंडल्स प्रेस

हमारी नवीन और आकर्षक योजना

अधिकृत पूँजी	१०००००
साधारण शेयर	२५)
आजीवन साहित्य-सदस्य शेयर	१००)

हमारा एक आजीवन साहित्य-सदस्य शेयर खरीदने पर आपको हमारे सब प्रकाशनों की एक-एक प्रति तथा एक मासिक पत्र निःशुल्क मिलेगा। विस्तृत विवरण के लिए हमें लिखिये।

हमारे प्रकाशनों की सूची

उपन्यास

१—स्वाधीनताके पथ पर (श्री गुरुदत्त) मूल्य ६)
२—पथिक " ६)
३—उन्मुक्त प्रेम " ६)
४—राजसी कलाकार (प्रेस में) (श्री सीतेश) १।)
५—आयुष्मती (प्रेस में) (श्रीमती प्रभादेवी) १॥

कहानी

१—अध्यापिका (श्री रामप्रताप गोंडल) १।)
२—यहाँ आँसू बहाना है मना (श्री राधेश्याम मिश्र) १।।)
३—मालनियाँ ऐसी बनी (प्रेस में) (श्रीरामशरण शर्मा) १॥)

नाटक

१—तपस्विनी (श्रीमती प्रकाश गोंडल) १॥)

कविता

१—जौहर (श्री सुधीन्द्र) २)
२—चित्तौड़ (श्री परदेशी) १)

मनोविज्ञान

१—बच्चों की आदतों का विकास (श्री राममूर्ति मेहरोत्रा) २)

समाजोपयोगी

१—विवाह और विच्छेद (श्री रा० प्र० गोंडल) ॥)

स्वास्थ्य

१—भोजन (श्री गुरुदत्त) ।=)

ENGLISH

1. Bio. Economic Proble of India Rs. 3/-
(By Dr. A. Nader, M. A., Ph. D)

2. Humanismor The Human Religion
(By Swami Krishnanand Rs. 2/-.

विद्या-मन्दिर लिमिटेड,

१२।९० 'कनाट सरकस', नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यूटेक्स

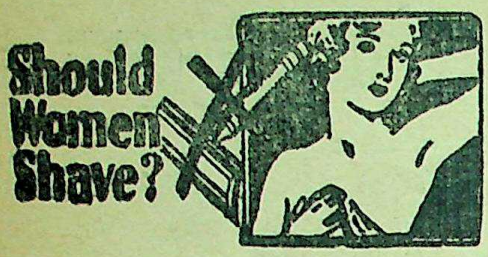

कृपया ध्यान दें

अब आप केवल ३ मिनट में भद्दे तथा अनावश्यक बालों को
ना छुए, पाउडर पेस्ट के लगाये, जिनसे बाल और जल्दी तथा
। निकलते हैं, बड़ी सरलता पूर्वक नष्ट कर सकते हैं। न्यूटेक्स
डस्टीट के एक आविष्कारक का सनसनीपूर्ण आविष्कार है
सने कई वर्ष तक स्थायी तथा सुखद तरल पदार्थ के आविष्कार
व्यतीत कर दिया। उसकी खोज का परिणाम जायज़ था जो
अब न्यूटेक्स में मिलाया जाता है और जिससे बालों की जड़ें
ह बड़े सस्ते, सुन्दर तथा सुरक्षित रूप से बहुत जल्द साफ़ हो
ती हैं, किसी भी प्रकार की जलन नहीं होती और न गन्ध ही
ाती है।

सभी औषध-विक्रेताओं के यहाँ मिलती है। आप नीचे पते
मँगावें।

न्यूटेक्स (इंडिया) कं०,
प्रिंसेस स्ट्रीट, बम्बई।

आरोग्य वर्द्धक
५० साल से दुनिया भर में मशहूर

मदनमंजरी गोलियां

क़ब्ज़ियत दूर करके पाचन-शक्ति बढ़ाती हैं, दिल व दि
को ताक़त देती हैं और नया खून व शुद्ध वीर्य पैदा करके
बुद्धि व आयु बढ़ाती हैं। क़ी० ४० गोलियों की डि० रु०

मदनमंजरी फ़ार्मेसी जामनगर (काठियावाड़)
इलाहाबाद एजंट—मदन स्टोर्स कैमिस्ट और एल० ए
धोलकिया ब्रदर्स जोन्स्टनगंज

हकीम तुलसीप्रसाद अग्रवाल अलीगढ़ की
असली-मीठी
मुफ़्त
२०
प्रतिशत
आमदनी
नामवरों
भेजना
स्वास्थ्य
साधन
पुस्तक
मुफ़्त
भेजना

बालजीवन बुटी

बच्चों की हर एक बीमारी को दूर करती
कमज़ोर बच्चों को ताक़तवर बनाती।
ज़रा सी रोज़ाना चटा देने से बच्चे कभी बीमार
नहीं होंगे, दाँत आसानी से निकल आवेंगे।
— मू० शी० ७ दर्जन २॥) डा० व्य० अ०
सब जगह बिकती है, नक़ली घुट्टियों से बचो
नए सौदागर नमूना मुफ़्त मगावें।
पता. बाल जीवन कार्यालय अलीगढ़ यू०पी०

अब मैं अपने पति की प्रिय बन गई

रूप-विलास (रजिस्टर्ड)

जब मैं विवाह के अवसर पर अपने पति-गृह गई तब मेरे पतिदेव हमारे भद्दे तथा काले चेहरे को देखकर मुझसे घृणा करने लगे। मैंने अपनी सहेलियों की सलाह से **रूप-विलास** का उबटन लगाना शुरू किया। कुछ ही दिनों बाद मेरा चेहरा गुलाब के फूल की भाँति दमकने लगा और आज मैं अपने पति की प्रिय बन गई। इसके लगाने से मुँहासा, झाँई, चेचक, काले-काले दाग़, फुंसी, ख़ुश्की, बदरौनक़ी, झुर्रियाँ वग़ैरह जल्द आराम होती हैं और थोड़े ही दिनों के लगाने से मलीन मुख चमकदार होकर चेहरे पर गुलाबी छटा दमकने लगती है। यदि आप अपना चेहरा ख़ूब-सूरत बनाना चाहते हैं तो २५ वर्ष का प्रचलित जगत्प्रसिद्ध रजिस्टर्ड **रूप-विलास** उबटन लगाइए। विवाह-शादियों पर वर-वधू का सौन्दर्य बढ़ाने के लिए यह बहुत ही उपयोगी साबित हुआ है और इसकी ख़ुशबू इतनी प्यारी है कि तबियत को मस्त करती है। क़ीमत एक डिब्बा २–) तीन डिब्बा ५॥) डाक-ख़र्च माफ़, पैकिंग ख़र्च अलग।

रूप-विलास कम्पनी धनकुट्टी नं० ४२७ कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूरदर्शी पिता का सुखी पुत्र

इसकी शिक्षा और सफलता का अच्छा प्रबन्ध हो गया है....

यह अभी केवल नन्हा बालक है; किन्तु इसका पिता दूरदर्शी है और वह जानता है कि पढ़ाने-लिखाने में पैसा ख़र्च होगा; इसलिए उसने बुद्धिमानी से इसकी पढ़ाई के लिए पैसा जमा करा दिया है। इस रक़म में १२ वर्ष में ब्याज से ५० प्रति शत वृद्धि हो जायगी, जिसके आधार पर बड़े होने पर विश्वविद्यालय में इसका ख़र्च भली भाँति पूरा हो जायगा और पूर्ण तथा लाभजनक शिक्षा प्राप्त करके यह विश्वास तथा आशा के साथ संसार-क्षेत्र में प्रवेश कर सकेगा।

यह अपने पिता के प्रति कितना ऋणी होगा कि उसने नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेटों में अपनी बचत की रक़म लगा कर बड़ी समझदारी से काम लिया। क्या आप अपने पुत्र के लिए ऐसा कर सकेंगे? यह आप पर निर्भर करता है।

छोटी छोटी रक़में बचाने वाले ५ रुपये का सर्टीफिकेट अथवा ४ आने, ८ आने या १ रुपये के स्टाम्प सरकार द्वारा अधिकृत किसी एजेण्ट अथवा सेविंग्स ब्यूरो या डाकखाने से ख़रीद सकते हैं।

बुद्धिमान माता-पिता के दल में आप भी सम्मिलित हो जाइए और अपनी आमदनी की बचत

नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेट में लगाइए।

★ १२ वर्ष में १० रुपये के १५ रुपये हो जाते हैं।

★ ४½ प्रति शत साधारण ब्याज, इनकम टैक्स माफ़।

★ जमा हुए ब्याज के सहित **दो** साल बाद इन्हें भुनाया जा सकता है (५ रुपये के सर्टीफिकेट को १८ महीने बाद)।

AAA 124—HINDI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैज़ा, मलेरिया, इन्फ्लुएंज़ा, टाइफाइड
आदि बीमारियों में बचानेवाला।

१ औं० शीशी ॥), दर्जन ५॥=), डा० ख़० अलग

युकॅलिप पेन बाम } सूचीपत्र मुफ़्त { युकॅलिप दाद का मरहम

खांडालेकर बन्धु, बम्बई ४.

प्रकाशित हो गई

मार्क्स का दर्शन

[लेखक—भूपेन्द्र सान्याल]

(स्वर्गीय शचीन्द्रनाथ सान्याल के भाई, अखिलभारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य, युक्तप्रान्तीय ट्रेड यूनियन के भूतपूर्व सभापति, 'समाजवाद की ओर' आदि के प्रणेता।) मूल्य ॥)

प्रकाशक, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

हृदय की सर्दी (सर्दी और कफ)—लापरवाही करने से मामूली हृदय की सर्दी फेफड़े की सूजन (ब्रांकैटिस) हो जायगी। इससे बचे रहने का रास्ता बड़ा आसान है। थोड़ा-सा अमृतांजन लेकर छाती पर मलिए। बस, उसकी गरमी सीधे हृदय तक पहुँचती है और कफ को पिघला देती और तुरंत आराम मिलता है।

अमृतांजन—हमेशा सर्दी से सर्दी आराम पहुँचाता है।

अमृताञ्जन लिमिटेड, बम्बई और मद्रास

शाखा :—कलकत्ता, कराची, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

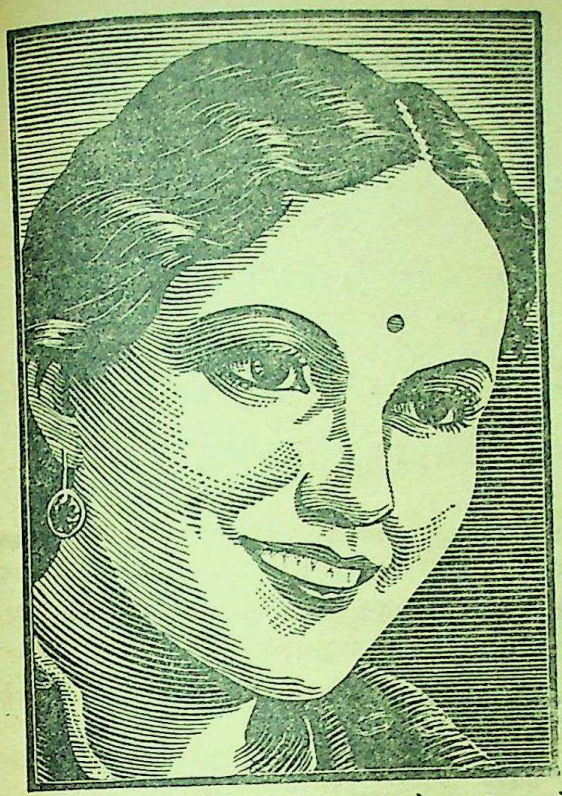

चर्म स्वास्थ से ही चर्म-सौन्दर्य बढ़ता है!

रैक्सॉना से चर्म स्वास्थ की रक्षा कीजिए

आपकी त्वचा तभी सुन्दर हो सकती है जबकि वह स्वास्थ हो और इसको स्वास्थ ही बनाए रखना चाहिए, नहीं तो वह सौन्दर्य शीघ्र जाता रहेगा। त्वचा को स्वास्थ और सुन्दर रखने के लिए ही सुन्दर, हरेरंग के और आसानी से फेन देने वाले टॉयलट साबुन रैक्सॉना का आविष्कार हुआ है। यह चर्म-किटाणुविनाशक 'कैडिल' की मिलावट से बनाया जाता है, जो कि ताज़गी और स्वास्थ्यदायक है। रैक्सॉना की झाग इस स्वास्थ्यदायक 'कैडिल' को शीघ्र ही शरीर के रुओं में पहुँचा देती है। जहाँ यह अपना काम करता है झाग शरीर पर जमा हुई धूल और पसीने को साफ़ करके त्वचा को स्वस्थ और सुरक्षित रखती है। चर्म-स्वास्थ्य के लिए सदैव रैक्सॉना से स्नान कीजिये।

बच्चों के लिए रैक्सॉना . . . रैक्सॉना की झाग इतनी कोमल और स्फूर्तिदायक होते है कि बच्चों की कोमल त्वचा के लिए तो यह आदर्श है। डाक्टर इस को इस्तेमाल करने की हिदायत करते हैं। याद रखिए रैक्सॉना का 'कैडिल' बच्चे की चर्म की फुन्सी फोड़ों से रक्षा करेगा।

★ रैक्सॉना में मिलाया गया कैडिल किटाणु-विनाशक, स्वास्थ-दायक और ताजगी देनेवाले तेलों का मिश्रण है जोकि चर्म को स्वास्थरखने में बहुत गुणकारी सिद्ध हुआ है। साइंसदानों ने भी इसके गुणों के कारण इसकी सराहना की है।

रैक्सॉना मरहम प्रयोग कीजिए। फुन्सी, फोड़े, ऐकजीमा, मुँहासे, आँख की कलौंस, झुर्रियाँ, दाद रे आदि सभी चर्म रोगों में रैक्सॉना मरहम लगाये। यद्यपि अभी सप्लाई कम है फिरभी बहुत से दूकानदारों के यहाँ तिकोने टिन मिल सकते है।

REXONA PROPRIETARY LIMITED

RP. 27-23 HL

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधासिंधु-बालसुधा

एवं प्रख्यात निजी पेटेंट तथा शुद्ध आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माता

सुख-संचारक कम्पनी, लि०,

सुख-संचारक बिल्डिंग, सुख-संचारक पोस्ट आफ़िस,

मथुरा

युक्त प्रांत में

अपने ढंग का एकमात्र विश्वसनीय विशालकाय कार्यालय

हमारी विशेषताएँ

१—हमारा अपना निजी ५५वर्षीय अनुभव।

२—औषधें वैद्यक की ऊँचे से ऊँची उपाधि प्राप्त विशेषज्ञ और अनुभवी वैद्यराज, उपवैद्यराज के निरीक्षण में निर्माण होती हैं।

३—अप्राप्य व दुष्प्राप्य खनिज एवं वनौषधियों के प्राप्त करने के संगठित साधन।

४—कड़ी, गठीली वनस्पतियों के चूर्ण-विचूर्ण करने, गोलियाँ, टिकियाँ बनाने व कार्क फिट करने और अन्य विभिन्न कार्यों के लिये आधुनिक पद्धति की मशीनें।

५—औषधियों का अधिक परिमाण में तैयार करने तथा इकट्ठा सामान मँगाने के कारण सस्ती और सर्वोत्तम तैयार होना।

विशेष विवरण के लिए बृहत् सूचीपत्र मुफ़्त मँगाइए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

176273

बुद्धि से काम लीजिए

अच्छी पुस्तकों का चुनाव साधारण काम नहीं है। इसमें यदि आप अपनी बुद्धि का उपयोग न करेंगे, तो गाढ़ी कमाई के पैसों से खरीदी हुई पुस्तकें फेंक देनी होंगी। ऐसा न हो इसलिए हम काव्य और साहित्य की चुनी हुई पुस्तकें आपके सामने उपस्थित कर रहे हैं।

काव्य की पुस्तकें

गोस्वामी तुलसीदास—संक्षिप्त रामचरितमानस (सचित्र)—यह रामचरितमानस का संक्षिप्त संस्करण है। संक्षेप ऐसी चतुराई से किया गया है कि कहीं भी कथा-भाग टूटने नहीं पाया। मँझोले आकार के ३०० पृष्ठों में यह समाप्त हुआ है। पुस्तक सचित्र और सजिल्द है। मूल्य १) एक रुपया।

अयोध्याकाण्ड (मूल)—रामायण-प्रेमियों के सुभीते के लिए यह काण्ड अलग प्रकाशित किया गया है। यह पुस्तक अनेक स्थानों के शिक्षाविभाग-द्वारा स्वीकृत है। इससे यह विद्यार्थी तथा साधारण जनता सभी के काम की चीज़ है। मूल्य ।) एक रुपया। सटीक मूल्य २॥≈) दो रुपये ग्यारह आने।

सुन्दरकाण्ड (मूल)—रामायण-प्रेमियों के सुभीते के लिए यह काण्ड असली रामचरितमानस से अलग छापा गया है। मूल्य ।≈) सात आने।

अरण्यकाण्ड (मूल)—रामायण-प्रेमियों के सुभीते के लिए यह काण्ड भी असली रामचरितमानस से अलग छापा गया है। मूल्य ।≈) सात आने।

विनयपत्रिका (सटीक)—गोस्वामी तुलसीदास की रचनाओं में विनयपत्रिका का स्थान बहुत उच्च है। इसमें गोस्वामीजी के विनय-सम्बन्धी पद्यों का संग्रह है। इसके टीकाकार हैं पण्डित जगन्नाथ भट्ट। मूल्य ४) चार रुपये।

कुण्डलिया रामायण—गोस्वामी तुलसीदासजी की यह सुन्दर रचना पिछले दिनों खोज में मिली है। इसमें उनकी अन्यान्य रचनाओं की भाँति सरस कुण्डलिया छन्दों में रामचरितमानस के सातों काण्डों की कथा दी गई है। मूल्य ४) चार रुपये।

मानससूक्तावली—रामचरितमानस में आये हुए कण्ठस्थ करने के योग्य चौपाइयों और दोहों का संग्रह। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

तुलसी-रत्नावली—गोस्वामीजी के समस्त ग्रन्थों का अध्ययन कर इसके विद्वान् संपादक ने कुछ रत्न ढूँढ़ निकाले हैं उन्हीं का यह संग्रह है। दूसरे शब्दों में गोस्वामीजी की समस्त रचनाओं का यह निचोड़ है। मूल्य १॥) एक रुपया आठ आने।

संक्षिप्त पद्मावत—(रायबहादुर बाबू श्यामसुन्दरदास, बी०ए०-द्वारा सम्पादित) मलिक मुहम्मद जायसी के पद्मावत का संक्षिप्त संस्करण। मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने।

संक्षिप्त सूरसागर—इसमें महाकवि सूरदास के पदों का संग्रह है। इसका एक-एक पद भक्ति तथा प्रेम के रस से ओतप्रोत है। मूल्य ३।-) तीन रुपये पाँच आने।

चारण—इस पद्यमय पुस्तक में प्राकृतिक दृश्यों के मनोरञ्जक वर्णनों के अतिरिक्त राजपूताना के कुछ प्रसिद्ध वीरों का गुणगान किया गया है। मूल्य ।-) पाँच आने।

वीणा-ग्रन्थि—हिन्दी के युगान्तरकारी श्री सुमित्रानन्दन पन्त की दो पुस्तकों का सम्मिलित संस्करण। वीणा मौलिक कविताओं का संग्रह है। और ग्रन्थ में कवि ने एक छोटे-से कथानक को अपनी कल्पना द्वारा विकसित कर एक खण्डकाव्य की रचना की है। मूल्य २) दो रुपये।

कविवर पण्डित सोहनलाल द्विवेदी-रचित
चार काव्य-ग्रन्थ

भैरवी—इसकी राष्ट्रीय कवितायें राष्ट्र-प्रेमियों के गौरव की वस्तु हैं। यहाँ तक कि पण्डित जवाहरलाल नेहरू तक ने इन्हें पसन्द किया है और खादी-प्रतिष्ठानों में इसकी हज़ारों प्रतियाँ बेची

मैनेजर बुकडिपो—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। विद्वानों की सम्मति है कि भैरवी 'गांधीयुग' का सर्वश्रेष्ठ काव्य है। मूल्य २॥≡) दो रुपये ग्यारह आने।

वासवदत्ता—हिन्दी का एक आधुनिक काव्य। इस काव्य की विद्वानों ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। मूल्य २) दो रुपये।

विषपान—समुद्र-मन्थन की पौराणिक कथा के आधार पर कवि ने इस खण्ड-काव्य की रचना की है। भाषा में प्रवाह तथा ओज और पात्रों का सजीव चित्रण कवि की ख़ास विशेषता है। मूल्य १) एक रुपया।

पूजागीत—द्विवेदी जी की नवीनतम राष्ट्रीय कविताओं का संग्रह। कविता का प्रत्येक शब्द हृदय में स्फूर्ति उत्पन्न करता है। पीले फ़ेदरवेट काग़ज़ पर सुन्दर छपाई हुई है। मूल्य २) दो रुपये।

हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ कवि ठाकुर गोपालशरणसिंहजी की कृतियाँ—

माधवी—माधवी का यह नया संस्करण बड़ी ही सज-धज के साथ और बड़े आकार में प्रकाशित हुआ है। मूल्य २) दो रुपये।

ज्योतिष्मती—इस संग्रह में ठाकुर साहब की नवीन प्रकार की कवितायें संगृहीत की गई हैं, जो हिन्दी-साहित्य में अपना विशेष स्थान रखती हैं। ख़ास कर इसमें संग्रह किये गये छोटे-छोटे गीत बहुत ही मधुर और भावपूर्ण हैं। मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने।

मानवी—इस संग्रह में प्रकाशित कविताओं के द्वारा ठाकुर साहब ने भारतीय नारी के सुख-दुःखमय जीवन का बड़ा ही सुन्दर और मार्मिक चित्रण किया है। मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने।

संचिता—इस संग्रह में ठाकुर साहब ने अपनी सन् १९१४ से लेकर सन् १९३९ तक की सब प्रकार की रचनाओं का समावेश किया है। इस एक ही पुस्तक के द्वारा ठाकुर साहब के कवि-जीवन के क्रम-विकास का उत्तमतापूर्वक अध्ययन किया जा सकता है। संग्रह में कुल ७१ कवितायें हैं। मूल्य ३) तीन रुपये।

सुमना—'सुमना' ठाकुर साहब का सबसे नवीन संग्रह है जिसमें ५३ गीत हैं जिनमें प्रकृति के प्रति उनका असीम अनुराग शब्द-शब्द-द्वारा व्यञ्जित होता है। इस प्रकार के सरस भाव-पूर्ण गीत हिन्दी-साहित्य में अन्यत्र न मिलेंगे। मूल्य २) दो रुपये।

पद्यमाला—इस पुस्तक में अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के बारहवें अधिवेशन के सभापति हास्यरसावतार [illegible] पण्डित जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी, साहित्यभूषण की फुटकर कविताओं का संग्रह किया गया है। मूल्य १) एक रुपया।

मधुस्रवा—लेखक, राजाराम श्रीवास्तव बी० एल०-एल० बी०। इस अनुपम और नवीन शैली की [illegible] पुस्तक में जीवन में मधु बरसाने की पूरी-पूरी क्षमता है। [illegible] भी इसकी रचनाओं को पढ़कर जीवन को रस-सिक्त कर [illegible] मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

एकादशी—लेखक, श्रीयुत नत्थाप्रसाद दीक्षित 'मिलिन्द'। इस पुस्तक में मिलिन्द जी की १२ कमनीय कविताओं का संग्रह किया गया है। ये सभी कवितायें पौराणिक आख्यायिकाओं के आधार पर नये ढङ्ग से लिखी गई हैं। मूल्य केवल १।-) एक रुपया पाँच आने।

मञ्जीर—लेखक, श्री गिरिजाकुमार माथुर। इसमें नवयुवक कवि की भावपूर्ण ४३ रचनायें संगृहीत हैं जिन्हें पढ़कर हृदय फड़क उठता है। मूल्य १) एक रुपया।

वेणुकी—लेखिका, श्रीमती तारा पाण्डेय। इस पुस्तक में श्रीमती तारा पाण्डेय की ६२ कविताओं का संग्रह किया गया है। इसमें संगृहीत कविताओं में भावुकता है और है सहृदयता का वेदनामय झङ्कार। मूल्य १) एक रुपया।

दैत्यवंश—लेखक, श्रीयुत हरदयालुसिंह। इसमें हिरण्यकश्यप से लेकर स्कन्द तक दैत्यवंश के प्रभावशाली नरेशों का वर्णन ब्रजभाषा के ललित छन्दों में पुरानी शैली के अनुसार किया गया है। इस पुस्तक पर देव-पुरस्कार दिया जा चुका है। मूल्य ३।-) तीन रुपये पाँच आने।

मधूलिका—प्रगतिवादी कवि श्री रामेश्वर शुक्ल 'अञ्चल' की मनोरम कविताओं का संग्रह। मूल्य २) दो रुपये।

कविता-कलाप—हिन्दी के ख्यातनामा कवि स्वर्गीय पण्डित नाथूरामशङ्कर शर्मा, पण्डित कामताप्रसाद गुरु, बाबू मैथिलीशरण गुप्त तथा स्वर्गीय आचार्य पण्डित महावीरप्रसाद द्विवेदी की [illegible] हुई सरस कविताओं का सचित्र संग्रह। मूल्य ४) चार रुपये।

द्विवेदी काव्यमाला—आचार्य पण्डित महावीरप्रसाद द्विवेदी की अमर कविताओं का पूर्ण संग्रह।

शनि भगवान् की कथा—इसमें ललित छन्दों में शनि भगवान् की महिमा का वर्णन किया गया है। मूल्य ॥) आठ आने।

नीरजा—सुप्रसिद्ध कवयित्री श्रीमती महादेवी वर्मा की [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविताओं का संग्रह। इस पुस्तक के लिए लेखिका को हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन से ५००) का सेक्सरियापुरस्कार मिला है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

तक्षशिला काव्य—सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान तक्षशिला के अतीत गौरव का वर्णन। इसमें ओज, प्रसाद तथा माधुर्य्य आदि काव्योचित गुणों का समुचित रूप से समावेश किया गया है। मूल्य ३) तीन रुपये।

कौमुदी—श्रीयुत बालकृष्णराव आई० सी० एस० की कमनीय कविताओं का संग्रह। मूल्य ॥≡) ग्यारह आने।

मेघदूत—राजा लक्ष्मणसिंह द्वारा अनुवादित तथा बाबू श्यामसुन्दरदास द्वारा सम्पादित मेघदूत का सर्वोत्तम संस्करण। मूल्य ॥।-) तेरह आने।

किङ्किणी—इस पुस्तक के लेखक श्री राजाराम श्रीवास्तव की उत्तमोत्तम फुटकर कविताओं का संग्रह किया गया है। कविताओं की भाषा इतनी मधुर और कल्पना की उड़ान इतनी आकर्षक है कि पाठक कुछ क्षण के लिए उसमें अपनी सुध-बुध भूले बिना नहीं रहता। मूल्य ॥।) बारह आने।

लक्ष्मणशक्ति—इसी लेखक द्वारा रचित एक खण्डकाव्य। इसकी कथा का आधार रामायण का युद्ध-काल है जिसमें लक्ष्मण मूर्छित हो गये थे। भाषा सुलझी हुई और मुहाविरेदार है। मूल्य ॥।) बारह आने।

साहित्य-समालोचना

तुलसी के चार दल (प्रथम और द्वितीय भाग)—गोस्वामी तुलसीदास के रामलला नहछू, बरवै रामायण, पार्वती-मंगल तथा जानकी-मङ्गल का आलोचनात्मक परिचय तथा इन चारों ग्रंथों की अध्ययनपूर्ण टीका। मूल्य प्रथम भाग का ३) तीन रुपये, द्वितीय भाग का २॥≡) दो रुपये ग्यारह आने।

हिन्दी-भाषा की उत्पत्ति—पुस्तक का विषय उसके नाम से स्पष्ट है। इसमें हिन्दी-भाषा की उत्पत्ति के विवेचन के अतिरिक्त और भी अनेक भारतीय भाषाओं पर विचार किया गया है। मूल्य ॥) आठ आने।

बाबू श्यामसुन्दरदास की कुछ पुस्तकें

रूपक-रहस्य—नाट्य-शास्त्र-सम्बन्धी एक उत्कृष्ट श्रेणी का ग्रन्थ। मूल्य २॥≡) दो रुपये ग्यारह आने।

सचित्र हिन्दी-कविद-रत्नमाला—(दो भाग) पहले भाग में भारतेन्दु से लेकर वर्तमान समय तक के हिन्दी के नामी चालीस लेखकों और सहायकों के सचित्र और संक्षिप्त जीवनचरित दिये गये हैं; और दूसरे भाग में पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी तथा पं० माधवराव सप्रे, बी० ए० आदि विद्वानों के तथा विदुषी स्त्रियों के जीवनचरित छापे गये हैं। हिन्दी में यह पुस्तक अपूर्व है। पहले भाग का मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने। दूसरे भाग का २॥≡) दो रुपये ग्यारह आने।

मेरी आत्म-कहानी—काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा के जन्म-दाता बाबू श्यामसुन्दरदास जी की आत्म-कहानी एक प्रकार से हिन्दी-साहित्य के वर्तमान युग का इतिहास है। इस पुस्तक में बाबू साहब ने केवल अपनी जीवन-घटनाओं का विवरण ही नहीं लिखा वरन् अपने समय के उन सभी साहित्य-सेवियों के कार्यों की विवेचना भी की है, जिन्होंने हिन्दी-साहित्य की अभिवृद्धि में योगदान किया है। मूल्य २) दो रुपये।

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ—लेखक, पण्डित उमेशचन्द्र मिश्र। इस पुस्तक में विश्वकवि श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर की प्रामाणिक जीवनी और उनकी समस्त कृतियों—कविता-संग्रह, नाटक-नाटिका, कहानियाँ, उपन्यास, यात्रा-वर्णन, विज्ञान के ग्रंथ, निबन्ध, साहित्यिक समालोचना, चित्रकला आदि—का विवेचनात्मक परिचय दिया गया है। उदाहरणों में कवि की प्रायः समस्त सुप्रसिद्ध और चुनी हुई रचनायें आ गई हैं। फुटनोट में उनके सरल अर्थ दिये गये हैं। इसके द्वारा आप रवीन्द्रनाथ और उनकी काव्य-कृतियों का पूरा-पूरा परिचय प्राप्त कर सकते हैं। विश्वभारती (शान्तिनिकेतन) के विद्वानों ने भी इसकी प्रशंसा की है। मूल्य केवल ५) पाँच रुपये।

द्विवेदीमीमांसा—लेखक, श्रीयुत प्रेमनारायण टण्डन। हिन्दी के नवीन युग की धाराओं और प्रवृत्तियों के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। साधारण पाठकों के अतिरिक्त सम्मेलन के परीक्षार्थियों व विश्वविद्यालयों के छात्रों के लिए भी यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। मूल्य दो रुपये।

देवदर्शन—देवपुरस्कार-विजेता श्री हरदयालुसिंह द्वारा सम्पादित व्रजकाव्य-समीक्षायें—इसमें व्रजभाषा के प्रख्यात कवि देव की जीवनी और उनके समस्त काव्यों का आलोचनात्मक परिचय दिया गया है। व्रजकाव्य के प्रेमियों के अतिरिक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य के विद्यार्थियों के लिए भी यह पुस्तक बहुत उपयोगी है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपये पाँच आने।

पूर्ण-पराग—इसमें व्रजभाषा के प्रसिद्ध आधुनिक कवि श्री देवीप्रसाद 'पूर्ण' की जीवनी और उनके काव्य का समालोचनात्मक परिचय है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपये पाँच आने।

मतिराम-मकरन्द—इसमें काव्यालोचन के साथ-साथ कवि मतिराम के ३ प्रसिद्ध ग्रंथों—मतिराम-सतसई, ललित-ललाम और रसराज का संक्षिप्त सरस संग्रह भी कर दिया गया है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

बिहारी-विभव—इसमें महाकवि बिहारी की कविता का आलोचनात्मक परिचय, उनकी जीवनी तथा सतसई के चुने हुए दोहे सङ्कलित हैं। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपये पाँच आने।

भूषण-भारती—इसमें महाकवि भूषण की जीवनी और उनके समस्त काव्य-ग्रन्थों का विवेचनात्मक परिचय दिया गया है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपये पाँच आने।

महादेवी का विवेचनात्मक गद्य (द्वि० सं०)—संकलनकर्त्ता श्री गंगाप्रसाद पाण्डेय, एम० ए०। साहित्य की नवीन शैली का अध्ययन करनेवालों के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य २।।।) दो रुपये बारह आने।

आल्हा—लेखक, चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा। इस पुस्तक में महोबे के प्रख्यात वीर आल्हा और ऊदल का जीवन-चरित और समस्त लड़ाइयों का वर्णन रोचक व सरस भाषा में दिया गया है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य ३।-) तीन रुपये पाँच आने।

सीताराम-संग्रह—अर्थात् रायबहादुर लाला सीतारामजी के समग्र काव्यों और नाटकों का सरस संग्रह। प्रस्तुत पुस्तक में लालाजी के समग्र काव्यों और नाटकों के अनुवादों का सरस संग्रह है। पुस्तक के आरम्भ में लालाजी का परिचय और उनकी रचनाओं की आलोचना दी गई है। मूल्य २।≈) रुपये ग्यारह आने।

साहित्य-समीक्षा—इस पुस्तक में हिन्दी के सुप्रसिद्ध [illegible] श्रीयुत कालिदास कपूर, एम० ए०, एल० टी० के साहित्यिक [illegible] समालोचनात्मक लेखों का संग्रह किया गया है। मूल्य [illegible] एक रुपया।

हास्य-कौतुक—कवीन्द्र रवीन्द्र ने इस पुस्तक में विनोद[illegible] भाषा में मानव-चरित के बहुत ही उत्तम-उत्तम चित्र आङ्कित [illegible] हैं। मूल्य ।।) आठ आने।

मौलाना हाली और उनका काव्य—उर्दू के श्रेष्ठ [illegible] मौलाना हाली का जीवनचरित और उनकी चुनी हुई [illegible] का संग्रह। प्रत्येक कविता का अर्थ सरल हिन्दी में [illegible] गया है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

कवि और काव्य—श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी ने काव्य [illegible] गुण-दोष से सम्बन्ध रखनेवाले कितने ही उपयोगी विषयों का [illegible] विशद रूप से विवेचन किया है। मूल्य १।-) एक रु[illegible] पाँच आने।

कहानी कैसे लिखनी चाहिए—सफल कहानी-लेखक [illegible] की इच्छा रखनेवालों के लिए इसमें बहुत-सी ज्ञातव्य बातें लि[illegible] गई हैं। मूल्य ।।≈) ग्यारह आने।

हिन्दी ग्रामर—(ई० ग्रीव्स कृत) एक अँगरेज़ [illegible] लिखित यह हिन्दी का व्याकरण भाषा-विज्ञान की दृष्टि से [illegible] ही महत्त्वपूर्ण है। हिन्दी न जाननेवाले विदेशी को हि[illegible] सीखने में इससे मदद तो होगी ही साथ ही हिन्दी भाषा-वि[illegible] के विद्यार्थी भी इससे लाभ उठा सकते हैं। मूल्य ८।।≈) [illegible] रुपये ग्यारह आने।

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ-रचित गीताञ्जलि—अनुवादक, [illegible] सूर्यनारायण चौबे। गीताञ्जलि का सरल हिन्दी अनुवाद [illegible] इसके द्वारा हिन्दी-पाठकों को गीताञ्जलि के भाव हृदयङ्गम [illegible] में सरलता होगी। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

मैनेजर बुकडिपो—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेज व बढ़िया सुगन्ध, गहरा रंग और कम दाम इन सबने मिलकर लिपटन की जाकूजा को बाजार भर की सर्वश्रेष्ठ चाय बना रक्खा है।

लिपटन की
जाकूजा चाय

सर्वोत्तम भारतीय चूरा चाय

LTK 84 !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी झंझटें बहुत हैं

बेचारी गृहिणी पर आजकल दया आती है, उसका जीवन चिन्ताओं व झंझटों से भर गया है। अन्न हद से ज्यादा मँहगा—कपड़ों व जलावन की समस्या निपटने में नहीं आती—बच्चों को स्कूल और पति को काम पर भेजना कुस्वप्न-सा हो गया है। परन्तु अभी भी उसकी एक सच्ची सखी बच गई है जो हमेशा उसका साथ देगी। उस सखी का नाम है, चाय।

वह कितनी ही थकी माँदी या चिन्ताग्रस्त क्यों न हो, चाय उसके बोझ को हलका कर देगी, दुश्चिन्ताओं का अन्त कर देगी, भविष्य का सामना हँसते हँसते करने के लिये उसे नई आशा, नया बल प्रदान करेगी; चिन्ता छोड़, उसकी विचार-धारा आने वाले सुखद समय की कल्पना में प्रवाहित होने लगेगी।

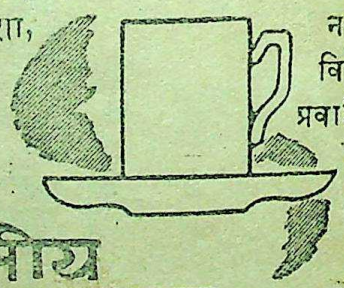

भारतीय

वक्त पड़ने पर **चाय** का सहारा लीजिये

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

IK 236

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

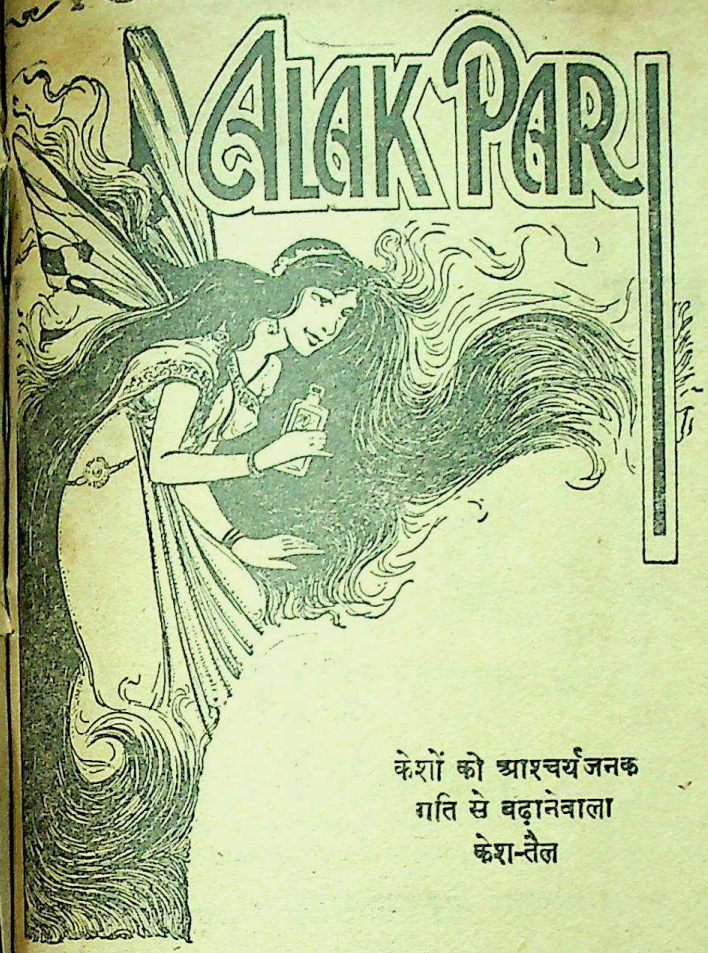

केशों को आश्चर्यजनक
गति से बढ़ानेवाला
केश-तैल

शुद्ध बादामरोग़न पर बना

अलकपरी

केशों में प्रतिमास ३-४ इञ्च वृद्धि।
६ महीने में एड़ी-चुम्बी केश।

'अलकपरी' का कोर्स

पहले सप्ताह में रूसी-ख़ुश्की दूर हो जाती है।
दूसरे सप्ताह में केशों का झड़ना और उनके सिरों का फटना रुकता है।
तीसरे सप्ताह में नये केश उगते दिखाई देते हैं।
चौथे सप्ताह के अन्त तक केश ३-४ इञ्च बढ़ जाते हैं।
फिर प्रतिमास इसी औसत से बढ़ते रहते हैं।

६ महीने में केश एड़ी-चुम्बी बन जाते हैं।

मूल्य एक शीशी का २॥) है जो एक महीने को काफ़ी होती है। डाक-ख़र्च व पैकिङ्ग पृथक्। ६ से अधिक शीशियाँ डाक से नहीं भेजी जायँगी। अधिक के लिए ५) पेशगी भेजिए और अपने रेलवे स्टेशन का नाम लिखिए।

प्रतिष्ठित महिलाओं की सम्मतियाँ—

'अलकपरी' से बहुत लाभ है। १ शीशी और तुरन्त भेजिए।
१५-७-४५ कृष्णाकुमारी, धर्मशाला (पंजाब)।

Alak Pari is proving of much use to me. Please send me three more bottles.
4-8-45 Mrs. S. Mandal, 45, The Mall, Lahore.

'अलकपरी' में केशों को बढ़ाने के लिए विद्युत् की शक्ति वर्त्तमान है। मैंने इसे केशों के लिए आश्चर्यजनक उपकारी पाया है। कृपया ३ शीशियाँ तुरंत भेजें।
७-८ ४५ सत्यवती देवी, पासना, जौनपुर।

'अलकपरी' की ५ शीशियाँ इस्तेमाल कीं। बहुत लाभकारी तेल है। कृपया ३ बोतलें शीघ्र भेजें।
३०-८-४५ शान्तिकुमारी, कोटखाई, शिमला

व्यवस्थापिका—'अलकपरी', नया कटरा, इलाहाबाद।

हमारे एजेन्ट—

नई दिल्ली—रायल स्टोर्स, ३३, गोल बाज़ार।
मेरठ—त्यागी ब्रदर्स, बेली बाज़ार।
बरेली—यूनाइटिड कमर्शियल सिंडीकेट, भूर।
आगरा—प्रियादास घनश्यामदास परफ़्यूमर्स, काश्मीरी बाज़ार।
लखनऊ—भोलानाथ सीताराम अमीनाबाद पार्क।
जबलपुर—बाबूलाल राजाराम चौरसिया, गोविंदगंज।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

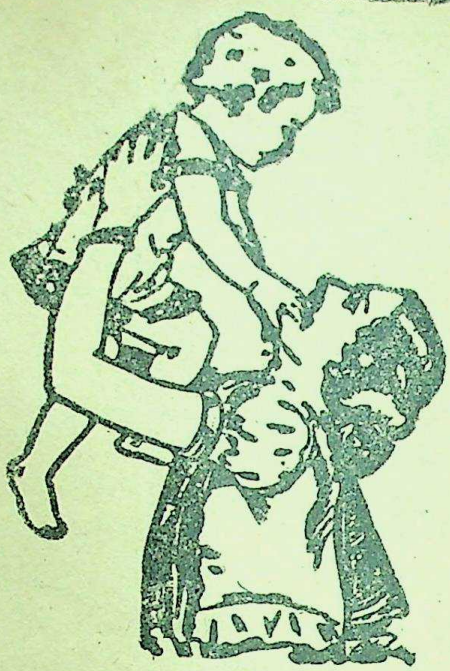

कमज़ोर और कृष बच्चे डोंगरे-बालामृत के इस्तेमाल से ताक़तवर, पुष्ट और चुस्त बनते हैं।

निर्बल, निश्चेतन और निराश क्यों रहते हो ?

भोजन को पचानेवाला, ख़ून को बढ़ानेवाला, पाण्डु और अन्य रोग के बाद की निर्बलता को नष्ट करनेवाला

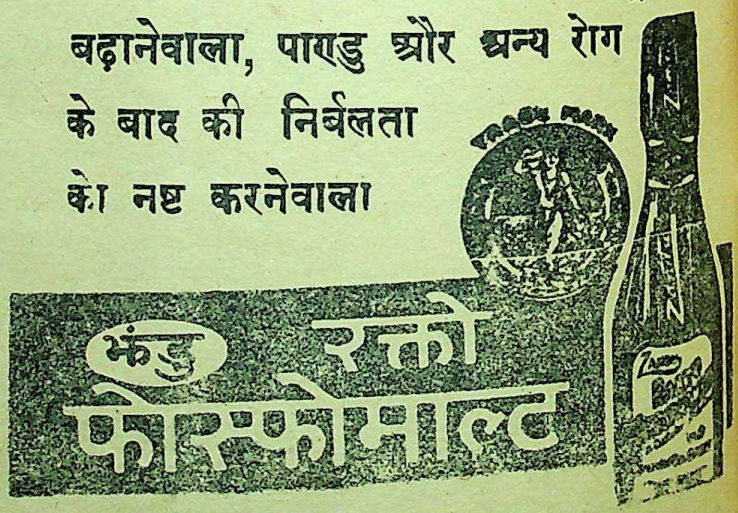

सुमधुर शक्तिवर्धक, अमूल्य औषधि अवश्य सेवन करें

झण्डु फ़ार्मास्युटिकल वर्क्स लि०, बम्बई नं० १४

इलाहाबाद के चीफ़ एजेन्ट—एल० एम० घोलकिया एण्ड ब्रादर्स, ४३ जान्स्टनगंज।

दिल्ली और यू० पी० के सोल एजेन्ट—कान्तिलाल आर० पारीख, चाँदनी चौक, देहली।

यू० पी० एजेंट—कान्तिलाल आर० पारीख, चाँदनी चौक, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

BENGALI SERIES NO:5

केशों की शोभा बिना सारी सुन्दरता फीकी पड़ जाती है

☆

इसीलिये केशोंको सजाने व संवारनेके नित्य नये तरीके निकलते आ रहे हैं और निकलते जायगे। इस विशाल भारतवर्षमें विभिन्न रुचिके लोग हैं और आज ७० वर्षोंसे जवाकुसुम, हर तरहके लोगोंको पसन्द आता रहा है। हमारे देशमें धूल-धक्कड़के मारे बालोंकी जड़में गर्दा बैठ जाता है। फिर गर्मी इतनी तेज पड़ती है कि मस्तिष्कके स्नायु बहुत जल्द गर्म हो जाते हैं। इन दोनों कारणोंसे ही बालोंकी स्वाभाविक कमनीयता और मजबूती नष्ट होती है।

आयुर्वेदोक्त जड़ी-बूटियोंसे बना जवाकुसुम बड़ी आसानीसे मैलको निकाल देता है और बालोंकी जड़को मजबूत बनाता है। इसके स्निग्ध स्पर्शसे मस्तिष्क शीतल हो जाता है।

७० वर्षकी सुप्रसिद्धिका समृद्ध

जवाकुसुम

केशोंकी शोभा बढ़ाता व मस्तिष्क शीतल रखता है

JM-3-H

सी० के० सेन एण्ड कं० लि०

जवाकुसुम हाउस — कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुन्दर चहरे को

और भी सुन्दर बनाने के लिये

कान्ति सोप के सौन्दर्य वर्धक और खुशबूदार फेन को अपनी चमड़ीपर नियमित रूपसे मलने का नियम बनाइये।

बालों को मोहक व शानदार बनाने के लिये स्वस्तिक शिकाकाई सोप का इस्तेमाल कीजिये। यह बाल धोनेका आदर्श साबुन है।

SWASTIK

स्वस्तिक ऑइल मिल्स लिमिटेड, बम्बई १५

National Advtg. Serv.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्माजी का चमत्कार

प्रेमबटी ने अपनी ख़ूबी से सारी दुनिया में तहलक़ा मचा दिया

कांग्रेस की राय

(प्रेमबटी वास्तव में एक अद्वितीय औषधि है, पहिले हमें इस औषधि पर इतना विश्वास न था, किन्तु जब हमने इसका स्वयं परीक्षण किया तब हम इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि यह औषधि विज्ञापन में दिये गये तमाम रोगों की केवल एकमात्र अचूक औषधि है। हम आशा करते हैं कि भविष्य में यह कम्पनी इससे भी उत्तम औषधियों का निर्माण कर जनता को लाभ पहुँचायेगी।—कांग्रेस देहली)

भारत के योगियों ने वनों और पर्वतों की कन्दराओं में रहकर वह चमत्कार दिखलाये हैं जिससे बड़े-बड़े वैज्ञानिक और चिकित्सक हैरत में आ गये हैं। आधुनिक चिकित्सकों को जब कोई रोग की औषधि से सफलता नहीं मिलती तब वह लाइलाज घोषित कर देते हैं। परन्तु महात्मा लोग जड़ी-बूटियों की सहायता से मुर्दे को भी जिला देने का दावा करते हैं। भाइयो, इसे ध्यान से पढ़ो तथा अपने इष्ट मित्रों को सुनाओ। यह लेख जो लिखा गया है, कोई गप्प नहीं है बल्कि मेरे जीवन की चन्द घटनायें हैं जो आपके सम्मुख रखता हूँ। मेरा जन्म एक धनी परिवार में हुआ। अपने पिता का लाड़ला पुत्र होने के कारण मैं धन और व्यसन में घिरा रहता था, लेकिन फिर भी मैं सुखी नहीं था। कुसङ्गत में पड़कर मुझे जरियान और प्रमेह रोग हो गया। पहले तो एक दो साल मैंने लोकलाज के कारण अपना भेद छिपाये रखा परन्तु रोग ने भयानक सूरत अख़्तियार कर ली, अब मैं घबड़ा उठा, संसार में चारों ओर अँधेरा मालूम होने लगा तब मेरी आँखें खुलीं। इलाज शुरू किया गया, बड़े-बड़े डाक्टरों, हकीमों, वैद्यों के फ़ीस रूप में रुपये और क़ीमती दवाइयों के ख़रीदने में पानी की तरह रुपया बहाने लगा, फिर भी मैं निराश ही रहा। अब मैं घबरा उठा और चारों तरफ़ से अन्धकार दिखलाई देने लगा और सोचने लगा कि इस दुःखमय जीवन से मर जाना बेहतर है।

पर यह बीस साल पहले की बात है। अब आज मैं ख़ुश हूँ। आज उस परमात्मा की कृपा से आरोग्य हूँ और मेरे तीन स्वस्थ बच्चे भी हैं जो बिलकुल आरोग्य हैं।

हुआ क्या! मुझमें इतना परिवर्तन कैसे हो गया! यह जानकर आपको आश्चर्य होगा कि मैंने एक दवा सेवन की! जो दवा मैंने सेवन की, वह एक महान् त्यागी परोपकारी साधु की बनाई हुई थी, जो समय काटने के लिए गाँव से कुछ दूर एक मठ के खेड़े पर रम रहे थे। यह मेरा सौभाग्य था कि और लोगों के साथ मैं भी दर्शनों के लिए जा पहुँचा। दैवी शक्ति से मेरे दुःखी जीवन के पिछले अध्याय उनके हृदय-पट पर खिंच गये और मेरी आँखों ने हृदय का सारा भेद अपने आप उस महान् पुरुष पर प्रकट कर दिया। मेरी कच्ची उम्र पर महात्मा को दया आई और उन्होंने मुझे कुछ जड़ी-बूटियाँ एकत्र करने की आज्ञा दी। मैंने वैसा ही किया और तब उनके सम्मुख ही मुझे उनके आदेश और निजी देख-रेख में 'प्रेमबटी' तैयार करनी पड़ी। यद्यपि मुझसे ४० दिन लगातार 'प्रेमबटी' का सेवन करने को कहा गया था, तथापि केवल बीस दिन के सेवन से ही मुझमें परिवर्तन हो गया। मेरी कमज़ोरी और तमाम गुप्त बीमारियाँ जड़ से दूर हो गईं। पीले और उदास मुख पर लाली दौड़ने लगी, आँखों में उन्माद झूमने लगा और हृदय में जवानी का जोश उमड़ आया। महात्माजी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के साथ ही अपने वादे को पूरा करने के लिए दुःखी जनों के निमित्त पिछले बीस साल से लगातार मैं इस प्रयोग को मुफ़्त बाँट रहा हूँ। यह अनेक पत्र-पत्रिकाओं में भी छप चुका है। मुझे हर्ष है कि इस अमृत-तुल्य प्रयोग ने सैकड़ों की प्राण-रक्षा की, हज़ारों को मौत के मुँह से निकाला और लाखों का इससे भला हुआ। महात्मा-प्रदत्त 'प्रेमबटी' का नुस्ख़ा इस प्रकार है; नोट कर लें—

शुद्ध त्रिफला ५ तोला, त्रिकुट चूर्ण ५ तोला, शुद्ध सूर्यतापी शिलाजीत ५ तोला, शुद्ध बङ्ग भस्म ६ माशा, असली सूर्य-मुखी केसर ३ माशा, असली अकरकरा ६ माशा, असली नेपाली कस्तूरी ३ रत्ती। इन सब औषधियों को कूट-छानकर खरल में डालकर ऊपर से शीतल चीनी का तेल २० बूँद, सन्दल तेल २० बूँद, बिरोजे का तेल २० बूँद एक-एक करके मिलाये। उसके बाद ताज़ी ब्राह्मी बूटी के अर्क़ में १२ घण्टा घोंटकर झरबेरी बेर के बराबर गोलियाँ बनावें और छाया में सुखा लें। एक-एक गोली सुबह-शाम पाव भर गाय के दूध में एक तोला शक्कर मिलाकर सेवन करें। इसकी प्रशंसा हम अपने ही मुँह से नहीं करते बल्कि बड़े-बड़े वैद्यों, डाक्टरों, हकीमों, सेठ साहूकारों तथा रईसों, ज़मींदारों, सरकारी आफ़िसरों तक ने इसकी सराहना की है। वैद्यराज श्रीजमुनादत्त शर्मा, झोंकर का कहना है कि यह बटी धातु का पतलापन, १० प्रकार के प्रमेह के लिए अक्सीर है।

'प्रेमबटी' में कोई हानिकारक चीज़ नहीं पड़ती और गुणकारी चीज़ें नुस्ख़े से ही प्रकट हैं। यह औषध वीर्य का पतलापन, सभी प्रकार के प्रमेह, पेशाब के साथ चूने की तरह वीर्य का जाना, पाख़ाने के समय धातु का जाना, स्वप्नदोष, सुस्ती, कमज़ोरी, नामर्दी, गठिया, ग्लीज़, मधुमेह, सूज़ाक, जवानी में बुढ़ापे की-सी हालत हो जाना, असली ताक़त की कमी, स्मरण-शक्ति कमज़ोर पड़ जाना तथा स्त्रियों के भी प्रदर-सम्बन्धी रोग दूर करके अत्यन्त ताक़त देती है और नस-नस में नवजीवन का सञ्चार करती है। अन्त में उन भाइयों को जिन्हें फ़ुरसत नहीं मिलती या शुद्ध औषधि प्राप्त नहीं कर सकते यह प्रयोग स्वयं बनाकर दाम के दाम में भेजने की व्यवस्था की है। ४० दिन के लिए पूरी ख़ुराक विधिवत् ८० गोलियों का मूल्य ५॥=) रु० और २० दिन के लिए ४० गोलियों के दाम ३=) डाकख़र्च ॥।-)

पता—बाबू श्यामलालजी रईस, प्रेमबटी आफ़िस नं० (S. A.) धनकुट्टी, कानपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् १९५७ का आनंद-दिवस
जिसका आयोजन
सन् १९४५ में हुआ था

"क्या मैं अपने बच्चों के विवाह का ख़र्च उठा सकूँगा ?" इस प्रश्न का उत्तर इस बात पर निर्भर करता है कि आप इस समय क्या उपाय करते हैं।

छोटी छोटी रक़में बचाने वाले ५ रुपये का सर्टीफिकेट अथवा ४ आने, ८ आने या १ रुपये के स्टाम्प सरकार द्वारा अधिकृत किसी एजेण्ट अथवा सेविंग्स ब्यूरो या डाकखाने से खरीद सकते हैं।

शादी-विवाह में रुपया खर्च होता है और वर्षों पहिले बचत की योजना बना कर और बचत के रुपये को समझदारी से लगा कर ही आप इस बात का निश्चय कर सकते हैं कि आपके बच्चे बड़े होने पर सुचारु रूप से सुखी जीवन प्रारम्भ करें।

नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेट

★ १२ वर्ष में १० रुपये के १५ रुपये हो जाते हैं।
★ ४½ प्रति शत साधारण ब्याज, इनकम टैक्स माफ़।
★ जमा हुए ब्याज के सहित दो साल बाद इन्हें भुनाया जा सकता है (५ रुपये के सर्टीफिकेट को १८ महीने बाद)।

AAA 126—BTNDM

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्वकाल में प्रातःकालीन सूर्य की रश्मियों के बीच राजघराने की एक रमणी प्रस्तर-निर्मित एकान्त ताल के शीतल जल में स्नान कर रही है। उसके शरीर पर मधुर, सुगन्धयुक्त तेल का लेप करने के पूर्व दासी उसे उसकी बुकनी से प्रस्तुत उबटन लगाती थी; क्योंकि इस प्राचीन काल में साबुन का किसी ने नाम भी नहीं सुना था। आजकल हमाम साबुन की सुविधायें और आनन्द सभी को प्राप्त हैं। हमाम साबुन के मुलायम घने फेन में मैल दूर करने एवं ताज़गी पहुँचानेवाले जो तत्त्व वर्तमान हैं, उनकी कल्पना स्वप्न में भी उस सुन्दर रमणी ने अपने हरम के उद्यान में नहीं की थी।

हमाम

आपके नहाने के लिए बड़ा साबुन

टाम्को सेल्स डिपार्टमेन्ट, जवाहर स्क्वायर, इलाहाबाद।

दी टाटा आयल मिल्स कं० लि०, टाटापुरम् और बम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री रत्नागिरी जी का अद्भुत चमत्कार

जिसने समस्त संसार को चकित कर दिया

रक्त, बल, वीर्य, उत्साह तथा उमङ्ग ही जीवन सफल बना सकती है।

ध्यान देने योग्य अमूल्य उपहार

अपूर्व कायापलट (रजिस्टर्ड)

निःस्वार्थ संसारसेवी भारतीय महात्माओं ने औषध-विज्ञान को अपनी महान् खोजों और अमूल्य रत्नों से अलंकृत किया है। आधुनिक चिकित्सक मर्ज़ और मरीज़ जब दोनों को लाइलाज घोषित करके शर्मिन्दा नहीं होते, वहाँ इन्हीं महात्माओं की बिना दाम की जड़ी-बूटियाँ मुर्दों को भी जिला सकने में समर्थ हुई हैं। ऐसी सच्ची घटनायें आये दिन एक न एक पढ़ने और सुनने में आया करती हैं।

बीस वर्ष पूर्व कल्लाती पहाड़ी पर विचरण करनेवाले स्वामी रत्नागिरी जी महाराज की सेवा एक बूढ़ा ग्वाला करने लगा। योगिराज को एक दिन उस वृद्ध की कमज़ोरी पर दया आ ही गई और उन्होंने निम्नलिखित योग की ६ मात्रायें उस बूढ़े को दीं। नासमझी के कारण छहों मात्रायें एक साथ खा जाने से उस वृद्ध ग्वाले में अपूर्व शक्ति आ गई और रत्नागिरी जी के परिश्रम-पूर्वक इलाज करने पर भी बुढ़ापे के बावजूद उसे तीन विवाह करने पड़े। इस पर राजा, रईस, नवाब और रसिक जन महान् योग को जानने के लिए आतुर हो उठे। नवाब बहावलपुर के ससुर हाजी हयात मोहम्मदख़ाँ साहब ने बाबा जी की बहुत सेवा करके इसे प्राप्त कर लिया और लाहौर के पं० ठाकुरदत्त शर्मा को बतलाया। शर्मा जी ने इसे प्रथम तथा दो अन्य लिखकर तीनों से उत्तम बाजीकरण बतलानेवाले को एक हज़ार रुपये का नक़द इनाम देने की घोषणा की। इसे आज बीस साल के लगभग हो गये किन्तु अभी तक कोई पुरस्कार विजय नहीं कर सका। मथुरा के ख्यातिप्राप्त बाबू हरिदास जी ने इसे चिकित्सा-चन्द्रोदय में छपवाया और हमने भी स्वयं बनाकर सैकड़ों दुर्बल, नपुंसक, वीर्य-विकारी रोगियों पर बरता। तत्काल लक्षण-चमत्कार देख जन-साधारण के लाभार्थ अनेक पत्र-पत्रिकाओं में छपवा दिया। आप भी बनाकर लाभ उठावें।

योग—शुद्ध बुरादा फ़ौलाद २० तोला, शुद्ध श्वेत मल्ल १ तोला, शुद्ध कपूर १॥ माशा, एक घण्टा घृतकुमारी में घोटकर, मिट्टी के कुज्जे में मज़बूत बन्द कर पाँच सेर कण्डों में फूँके। दुबारा एक तोला हरताल बर्की शुद्ध १॥ माशा कपूर शुद्ध में तीसरी बार गन्धक आमलासार शुद्ध १ तोला कपूर १॥ माशा में चौथी बार शुद्ध संस्कारित पारद १ तोला, कपूर १॥ माशा को ऊपर की भाँति १६ आँच दे। फिर उसको कढ़ाई में डालकर बराबर इन्द्रबधू डाल दे और नीचे आग जलावे, जब इन्द्रबधू जलकर राख हो जावे तो हवा देकर उड़ा दे। [illegible] अपूर्व कायापलट तैयार है। चार-चार चावल सायं मक्खन, मलाई के साथ खावें ऊपर मिश्री मिला दूध पीवें।

मथुरा के हरिदास जी लिखते हैं—इस योग के सेवन से [illegible] हफ़्ते में एक आदमी का वज़न चार पौंड बढ़ गया, दूसरे का चेहरा लाल सुर्ख़ हो गया। भूपाल के वैद्यराज पं० बालकृष्ण शर्मा ने ३५० रोगियों पर बरता और आशा से अधिक गुणकारी पाया। रत्नाकर-सम्पादक श्री छोटेलाल जैन आयुर्वेदाचार्य ने गृहचिकित्सा पथ-प्रदर्शक में छापा कि इतना प्रचण्ड गुणकारी दूसरा नहीं देखा। श्री धर्मेन्द्र विद्यावतंस सिद्धान्त-शास्त्री [illegible] ष्ठाता गुरुकुल बरला ज़िला मुज़फ़्फ़रनगर ने लिखा है—"अपूर्व कायापलट" नामक औषध सेवन कर रहा हूँ। जैसी प्रशंसा वैसा ही गुण है। बहुत लाभ हुआ। श्री चिरञ्जीलाल [illegible] आयुर्वेदशास्त्री मालिक कल्याण औषधालय बाह (आगरा) का कहना है कि मैंने २२५ रोगी अपूर्व कायापलट द्वारा [illegible] कि धातु-विकार, नपुंसकता, बवासीर, रक्त-विकार आदि रोगों से ग्रसित थे, पूर्ण स्वस्थ किये।

हमारा दावा है कि केवल सात दिन सेवन से शरीर में [illegible] दौड़ता नज़र आयेगा। २१ दिन में चेहरा लाल काश्मीरी सेब की तरह चमकने लगेगा। ४० दिन में नपुंसकता, मधुमेह, डायब्टीज़, निर्बलता दूर हो जाती है। स्त्रियों के प्रदर दूर [illegible] गर्भधारण शक्ति आती है। जिगर व मेदे की शक्ति बढ़ाकर भूख दूनी करता है। कफ, तिल्ली की ख़राबी, खाँसी, नज़ला, ज़ुकाम, बदन दुखना, ख़ून का पतलापन, आँखों का पीलापन, चिनगारी-सा उड़ते दीखना, बार-बार थूक गिरना, दमा [illegible] हर तरह की कमज़ोरी तुरन्त दूर कर नव-जीवन का संचार करता है। जाड़ा, गरमी, बरसात सभी मौसमों में एक-सा लाभ करता है। योग भली भाँति समझाकर लिखा है। फिर भी यदि आप न बना सकें तो बनी-बनाई १६ आँच दी हुई ४० दिन की ८० मात्रा डाक-ख़र्च सहित ६॥।=) में हम भेज देंगे। डाक-ख़र्च माफ़, पैकिंग, मनीआर्डर-फ़ीस अलग। कोई बात समझ में न आवे तो जवाबी कार्ड भेजकर उत्तर मँगा लें।

पता—रूपबिलास कम्पनी,

(रसायनशाला) नं० ४६७, धनकुट्टी, कानपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

१—जापान क्यों पराजित हुआ ?—श्रीयुत सन्त निहालसिंह २८१
२—तूने क्या सपना देखा है ! (कविता)—श्रीयुत आरसीप्रसादसिंह २८९
३—एक रात—श्रीयुत पदुमलाल पुन्नालाल बख़्शी, बी० ए० ... ... २९०
४—प्रभात में ही—सुश्री शबनम बाला ... २९३
५—महाभारत पर विचार—श्रीयुत चाँदमल अग्रवाल 'चन्द्र' २९४
६—मैं गिर गया था—श्रीयुत भगवतीप्रसाद पान्थरी २९८
७—'विकस्वर' अलङ्कार का द्वितीय भेद—पण्डित काशीनाथ रा० तिलक ३०१
८—दीपक की मैं कम्पित ज्वाला ! (कविता)—श्रीयुत देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त' ... ३०२
९—प्रसाद का कवि—पण्डि चन्द्रवली पाण्डेय, एम० ए० ... ... ३०३
१०—लङ्का एवं जावा की प्राचीन संस्कृति—श्रीयुत 'मलिन्द' ३०७
११—दो रूप (कविता)—श्रीयुत आरसीप्रसाद सिंह ३१२
१२—"घना, डाँडी का सवड़ूमा ?"—श्रीयुत भगवतीप्रसाद जोशी 'गढ़वाली' ... ३१३
१३—आधुनिक मराठी काव्य की रूपरेखा—श्रीयुत बालाधर राव जोशी, बी० ए० ... ३१६
१४—वेदों में गणेश जी—पण्डित लालविहारी मिश्र ३१८
१५—निर्वासित—पण्डित इलाचन्द्र जोशी ... ३२१
१६—गीत (कविता)—श्रीयुत गोपाल शर्मा, बी० ए० ३२५
१७—नई पुस्तकें ३२६
१८—सामयिक साहित्य ३२८
१९—सम्पादकीय नोट ३३१

चित्र-सूची

१—जापान क्यों पराजित हुआ सम्बन्धी १० चित्र २८२-८८
२—लङ्का एवं जावा की प्राचीन संस्कृति सम्बन्धी १५ चित्र ३०७-१

श्री सोहनलाल द्विवेदी लिखित—

कुणाल

प्रत्येक पुरुष, युवती के पढ़ने योग्य अभिनव ! काशित खंड काव्य

अशोक, तिष्यरक्षिता और कुणाल के चरित्र-चित्रण में—खासकर कुणाल के चरित्र-चित्रण में—कवि ने कमाल किया है।

शब्द-सौकुमार्य के साथ ही भावोत्कर्ष तथा नपे-तुले शब्दों का प्रयोग भी द्विवेदी जी की कविता को उच्च बनाता है।

—महापण्डित राहुलसांकृत्यायन

सचित्र सजिल्द मूल्य १।)

मिलने का पता—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है।

हमारे यहाँ की बनी क्रीमोला टाफ़ी
फ्रूट ड्राप्स तथा
रेशमी मिठाइयों का स्वाद लीजिए।
सभी दूकानों में मिलती हैं।

निर्माता—इण्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस,
इंडियन प्रेस बिल्डिंग,
इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाइयो!...

चर्म-स्वास्थ्य के लिये रैक्सॉना प्रयोग कीजिये

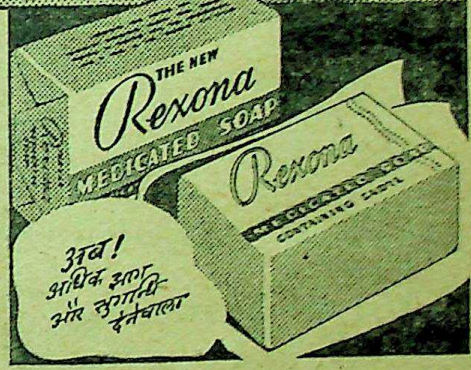

जल्दी में यह धारण मत न बनाइये कि रैक्सॉना केवल स्त्रियों के रंग को निखारने वाला एक नया साबुन है। चर्म स्वास्थ का महत्त्व जाननेवालों सब के लिए रैक्सॉना एक ज़रूरी टॉयलेट साबुन है। यह ऐसा ताज़गी और स्फूर्तिदायक साबुन है जिसे इस्तेमाल कर के पुरुषों को आनंन्द आता है। इस आकर्षक, हरे, और शीघ्र फेन देनेवाले साबुनका ये सबसे बड़ा लाभ है कि यह स्वास्थदायक और चर्म-किटाणुविनाशक 'कैडिल' से बनाया गया है। रैक्सॉना का शीघ्र बननेवाला ज्यादा फेन स्फूर्ति और स्वास्थदायक 'कैडिल' को शरीर के प्रत्येक रुओं में—जहाँसे सब चर्मरोग और दाग प्राय: शुरू होते हैं—पहुँचा देता है ऐसे आपकी सारी त्वचा किटाणुरहित, मुलायम, और साफ़ हो जाती है। अब आप जान सकते हैं कि नियमित रूप से रैक्सॉना का प्रयोग करने से आप निश्चित ही अपने चर्म को स्वास्थ और सुरक्षित रख सकते हैं। इसलिए इस हरे, और शीघ्र फेन देने वाले साबुन को इस्तेमाल करना शुरूकर दीजिए—और करते रहिए।

नोट—यह याद रखिए कि शारीरिक सौन्दर्य का एक मात्र आधार है चर्म-स्वास्थ। और एक पुरुष कोभी चर्म को आकर्षक बनाने का उतना ही अधिकार है जितना कि एक स्त्री को।

रैक्सॉना बच्चे के लिए आदर्श साबुन है। रैक्सॉना का कैडील शरीर के दर्दों को मिटता है और शरीर को सुखेपनसे बचाता है।

★ रैक्सॉना में मिलाया गया कैडिल किटाणु-विनाशक, स्वास्थ-दायक और ताजगी देनेवाले तेलों का मिश्रण है जोकि चर्म को स्वास्थरखने में बहुत गुणकारी सिद्ध हुआ है। साइंसदानों ने भी इसके गुणों के कारण इसकी सराहना की है।

रैक्सॉना मरहम प्रयोग कीजिये।

फुन्सी, फोड़े, ऐकज़ीमा, मुँहासे, आँख की कलौंस, झुर्रियाँ, ददौरे आदि सभी चर्म रोगों में रैक्सॉना मरहम लगाये। यद्यपि अभी सप्लाई कम है फिरभी बहुत से दूकानदारों के यहाँ यह तिकोने टिन मिल सकते हैं।

REXONA PROPRIETARY LIMITED

RP. 28-23-40 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत के प्रसिद्ध साबुन की नयी आकृति

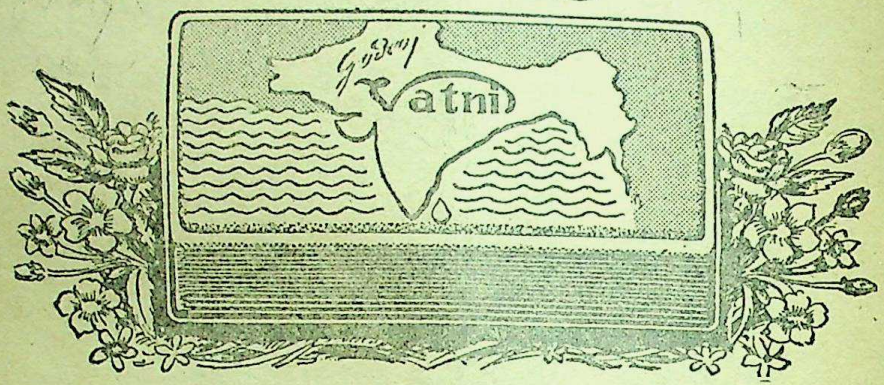

आपके मनपसन्द लम्बगोल 'वतनी' साबुन की पुरानी आकृतिमें सुन्दर परिवर्तन किया है। इस नये रूपके वज़नमें और विशिष्ट गुणोंमें कुछ भी घाटा नहीं है। आप इस हरी और सफेद दफ्तीके डिब्बेमें ठीक सटे हुए साबुनके रत्नको इसके परिचित छापसे पहचान लेंगे।

यह साबुन और इस का हरी व सफ़ेद दफ्ती का डिब्बा इन छापों के बिना असल नहीं।

छोटा वतनी Vatni (नयी आकृति): बड़े साबुन के अनुसार दफ्ती के डिब्बे में अलग मिल सकती है।

गोदरेज के दूसरे प्रसिद्ध चाबी छाप, टायलेट साबुनो:

Godrej गोदरेज
चाबी छाप
ग्लीसरीन

No. 1	Sandal	Limda	Khus
नं. १	सॅन्दल	लिमडा	खस

Shaving Stick	Shaving Round
शेविंग स्टिक	शेविंग 'राऊँड'

गो द रे ज सो प्स, लि०
बम्बई: पी० ओ० जेकब सर्कल; कलकत्ता:
१०२, क्लाइव स्ट्रीट; पटना स्टेशन रोड।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक—देवीदत्त शुक्ल : उमेशचन्द्र मिश्र

दिसम्बर १९४५ मार्गशीर्ष २००२; भाग ४६, खण्ड २ संख्या ६, पूर्ण संख्या ५५१

जापान क्यों पराजित हुआ ?

श्रीयुत सन्त निहालसिंह

मेरे सामने एक मेज़ है। उस पर एक मासिक पत्रिका है। इस पत्रिका की प्रकाशक एक अँगरेज़ संस्था है। अँगरेज़ इसका सम्पादक है और यह राजधानी—लन्दन—से प्रकाशित होती है। यह उदार विचारों की पोषक है और इसका दृष्टिकोण सार्वभौम है। समसामयिक व्यक्तियों और विषयों की इसमें चर्चा होती है, इसी लिए इसका नाम 'कंटेम्परेरी रिव्यू' है जो कि सर्वथा उपयुक्त है।

इस पत्रिका का जो अङ्क मेरे सामने रक्खा है उसका ३४१वाँ पृष्ठ खुला हुआ है। यहाँ से एक लेख प्रारम्भ होता है, जिसका शीर्षक है—'एशिया जापानियों के लिए'। समस्त लेख में यह पड़ताल की गई है कि जापान का एशिया के सम्बन्ध कैसा रुख़ है। अतिपूर्व में स्थित सम्बन्धित महाद्वीपों के साथ उस साम्राज्य के सम्बन्ध कैसे हैं, इस पर भी विचार किया गया है। साथ ही उसकी महत्त्वाकांक्षाओं, आडम्बरपूर्ण घोषणाओं और नीतियों का भी परीक्षण हुआ है।

लेख की शैली अतिस्पष्ट है। वस्तुतः वह एक प्रकार की चुनौती-सी है। और यह चिनौती है उन मनुष्यों के लिए जो यह समझ बैठे थे कि पूर्व के अन्तिम किनारे से एक आन्दोलन उठेगा जो एशिया के मध्य तक पहुँचेगा। उस आन्दोलन का शीर्षक हुआ था—'एशिया एशियावालों के लिए'। इस वाक्यांश की रचना सम्भवतः बहुत पहले हो चुकी थी, यद्यपि यह प्रसिद्ध १९०४-०५ में हुआ। जापान से करारी हार खाकर रूस ने उन दिनों घुटने टेक दिये थे और 'आर्त्तवाणी' करने लगा था। फलतः उन दिनों ऐसी सम्भावनायें की जा रही थीं।

(२)

निर्धारित कारणों का उक्त लेख में संक्षेप में वर्णन हुआ है। कुछ शब्दों में उन्हें इस प्रकार दिया जा सकता है—

'जापान ने उस महान् अवसर को खो दिया है जो उसे उसकी जल और स्थल की विजय ने प्रदान किया था। जब तक एशिया पर उसका जादू काम कर रहा था, वह स्वयं को परामर्शदाता या नेता के रूप में प्रतिष्ठित कर सकता था। विश्वास उत्पन्न करके और प्रेम-भावना बढ़ाकर वह एशियाई राष्ट्रों के सङ्घ का मुखिया बन सकता था। पर जापान को जहाँ सम्मान, प्रेमभाव और अपनत्व बढ़ाना चाहिए था वहाँ उसने सन्देह को जाग्रत् किया, अविश्वास बढ़ानेवाला आचरण किया, द्वेष और शत्रुता के कार्य किये और झगड़े-फसादों को उभारा।

'कोरिया में विद्रोह की आग धधक उठी। वहाँ की जनता को ऐसा लगा कि 'जापानी संरक्षण' के नाम पर देश को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत बड़ा मूल्य चुकाना पड़ेगा। उसे अपनी राष्ट्रीय स्वाधीनता से वञ्चित होना पड़ेगा। कोरिया का प्रत्येक दिशा में और

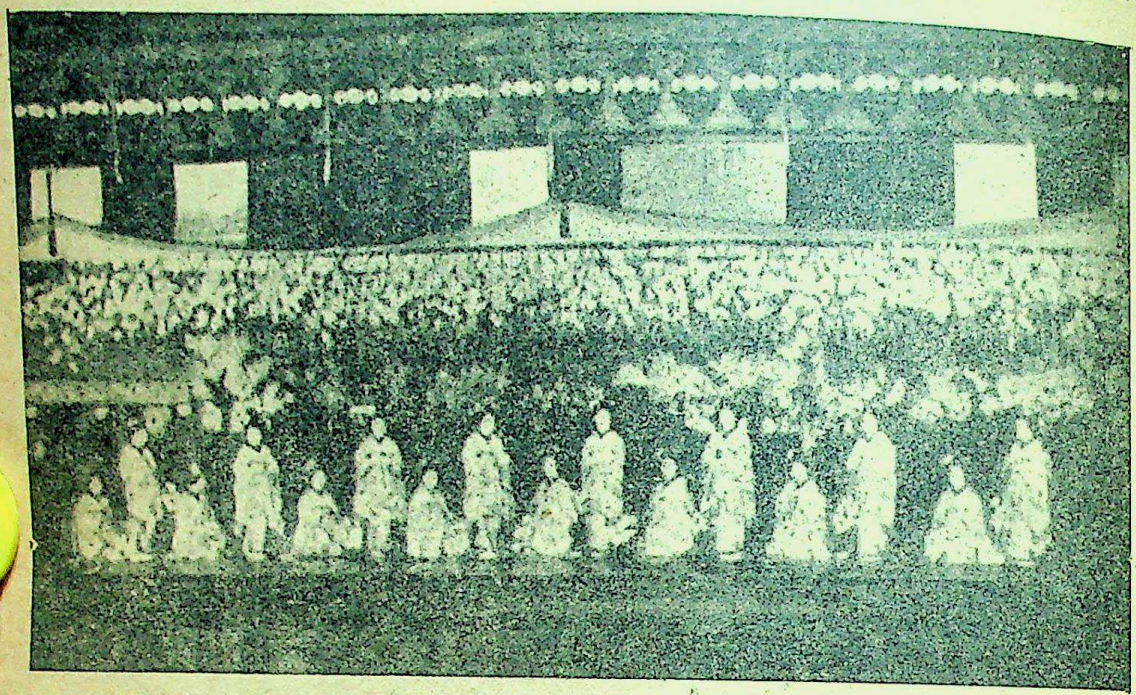

युद्ध से पूर्व—पुष्पाभरण जापानी महिलायें उत्सव मना रही हैं

अतिशीघ्रता के साथ जापानीकरण हो रहा है। भाषाओं, रस्म-रवाजों और आदर्शों का जहाँ तक सम्बन्ध है, जापान कोरिया को निगलता जा रहा है। जापानीकरण के इस अनुक्रम के विरोध में कोरिया के देशभक्तों ने विद्रोह का झण्डा उठाया। उनके 'संरक्षकों' ने उन्हें बाग़ी ठहराया। हज़ारों की संख्या में उनका वध कर डाला गया।

'उन्हीं दिनों चीन-निवासी जापानी सूती माल को जला रहे थे। वे समझदार थे। यदि वे अपने सङ्गठन का नाम 'जापान का बायकाट' रखते तो 'संरक्षक' को उनसे झगड़ने का अवसर मिलता। पर उन्होंने अपने सङ्गठन का नाम 'राष्ट्रीय अ[illegible] लीग' रक्खा। उस आन्दोलन को चलाते हुए चीनियों के [illegible] पर वही [illegible] और दैवी [illegible] मुसकान परिलक्षित होती थी [illegible] चीनियों [illegible] स्वाभाविक [illegible] है। बायकाट वैसा ही सफलता-पूर्वक चला, जैसा कि तब चला जब उसका नाम 'जापान का बायकाट' रखा जाता। 'घटनावश चीन में आये हुए रुई के और दूसरे प्रकार के जापानी माल में आग लग गई। चीनी जनता इस खेल को अच्छी तरह समझती थी। वह सम्पूर्ण शक्ति से आन्दोलन में जुटी रही।

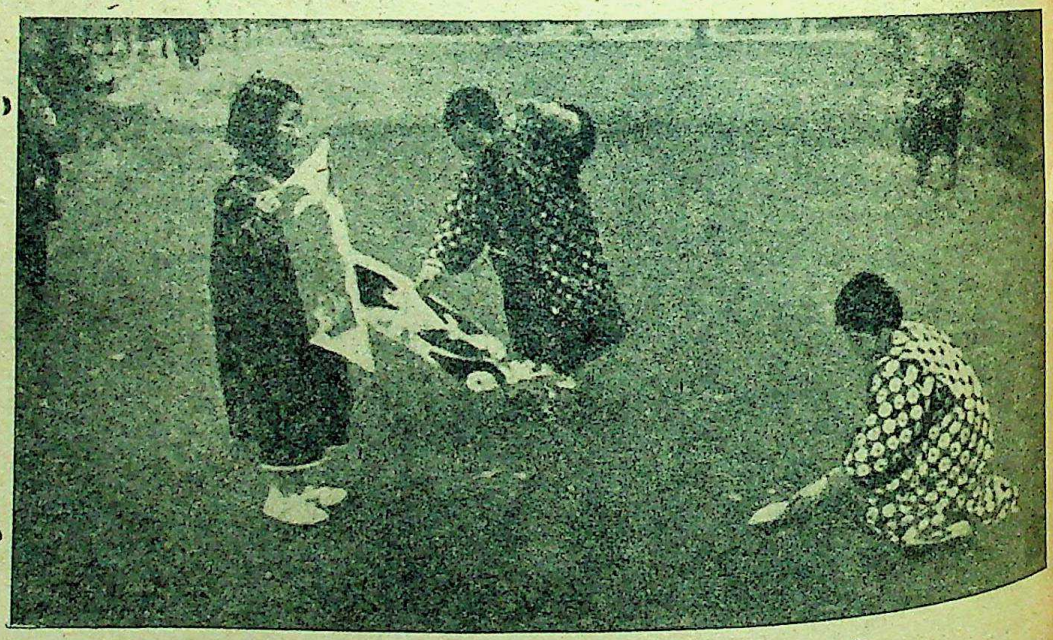

युद्ध से पूर्व—जापानी बालिकायें पतङ्ग उड़ा रही हैं

(३)

जापान ने देखा कि भारत उसका स्वागत करने के लिए दिल से तैयार नहीं है। सूर्योदय का वह देश और हमारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृभूमि व्यापार-सम्बन्धी मामलों में परस्पर प्रतिद्वन्द्वी थे। भारत नींद से जाग रहा था और औद्योगिक प्रतिस्पर्धा पर यहाँ अधिक ज़ोर दिया जा रहा था। हमारे देशवासी, प्रमुखतः उद्योग-व्यवसायी, जापान के उन रहस्यों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए उत्सुक थे जिनके बल पर जापान ने अल्पकाल में ही इतनी सफलता प्राप्त कर ली थी। ये लोग टोकियो तथा दूसरे जापानी केन्द्रों की ओर दौड़े। मन में यह अभिलाषा लेकर ये लोग जापान गये थे कि वहाँ से उन कलाओं और हुनरों के

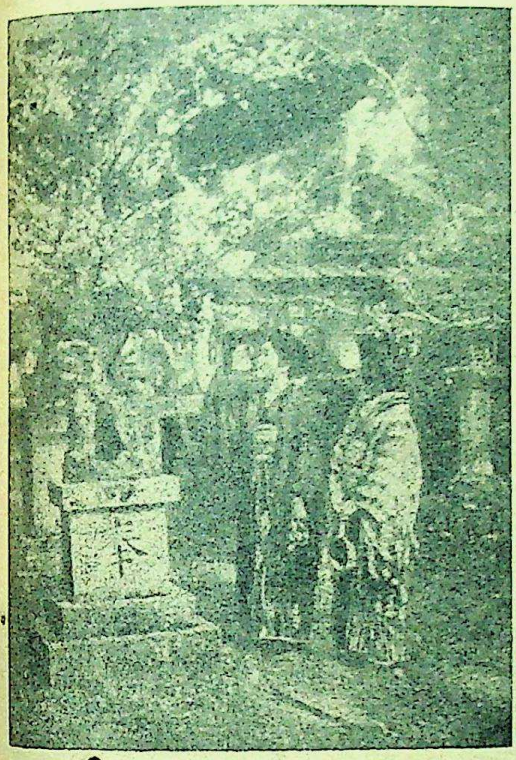

युद्ध से पूर्व—चेरी ब्लासम पुष्पोद्यान में जापानी रमणियाँ

विशेषज्ञ बनकर लौटेंगे जिनके कारण जापान ने पश्चिम को भी मात कर दिया है। वस्तुतः पूर्व के सभी निवासियों की ऐसी इच्छा थी कि वे जापान के अधीनस्थ हुए बिना ही उसके गुप्त औद्योगिक रहस्यों को जान लें। कारण, उन्हें भय था कि जापान उनका शोषण अवश्य करेगा। कोरिया की घटना ने उन्हें सिखा दिया था कि मिकाडो के ये चेले अलिफ़लैला की कहानी के उस बुड्ढे के समान है जिसे एक मनुष्य ने दया करके अपने कन्धे पर बिठा लिया था और फिर कन्धे से उतार सकना उसके लिए एक कठिन समस्या बन गई थी।'

'कंटेम्परेरी रिव्यू' के जिस अङ्क के उक्त लेख में एशिया के अन्य देशों के साथ जापान के सम्बन्ध की इस प्रकार पड़ताल की गई थी, उसकी तिथि पर मैंने निगाह डाली। वह अङ्क भी सितम्बर में प्रकाशित हुआ था—पर वह सितम्बर था सन १९१० का।

आज से ठीक ३५ वर्ष पूर्व लिखे गये वे शब्द एक छोटे-से विरामचिह्न का परिवर्तन किये बिना ही आज भी दुहराये जा सकते हैं। यदि उन्हीं शब्दों को दुहरा दिया जाय तो हमें उस मूलगत कारण का पता चल जायगा जिससे जापान आज पीठ के बल भूमि पर पड़ा हुआ बिना किसी चूँ-चरा के उन समस्त आज्ञाओं को शिरोधार्य कर रहा है जो उसे अमरीकन सेनापति जनरल मेकआर्थर और उनके सहकारियों-द्वारा दी जाती हैं।

'कंटेम्परेरी रिव्यू' में उस लेख के लेखक के नाम के स्थान पर अङ्कित है—'सेंट निहालसिंह'।

अख़बार बेचनेवाला एक जापानी लड़का

(४)

रूस से लड़कर विजय पा जाने पर जापान ने मूर्खतापूर्ण आचरण करना प्रारम्भ कर दिया था। विजयी होने पर वह उन चीनियों को हृदय से लगा सकता था जो हज़ारों की संख्या में टोकियो पहुँचे थे। तत्काल और उसी स्थान पर प्राप्त अपने ज्ञान के आधार पर मैं लिख सकता हूँ कि उन चीनियों में विभिन्न परिस्थितियों की स्त्रियाँ और पुरुष थे। अधिक संख्या नवयुवकों की थी। जो नई जवानी की सीमा पार भी कर चुके थे उनमें भी बहुत अधिक उत्साह था।

चीन-स्थित उन सामरिक केन्द्रों से जो पिछले दिनों तक चीन के आधिपत्य में थे—यद्यपि उन पर चीन का सीधा शासन नहीं था—नाटे जापानियों ने भारी-भारी तोपों का आश्चर्यजनक सफलता और कौशल के साथ प्रयोग किया था। यह देखकर चीनी नवयुवकों और नवयुवतियों के हृदय उत्साह से भर गये थे। उनके मस्तिष्कों में केवल एक विचार था। वह यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि वे यह सीखना चाहते थे कि किस प्रकार एक पीली जाति, जो पुरानी रूढ़ियों और पूर्वीय अन्धविश्वासों से अब तक चिपकी हुई है, उस योरपीय जाति को हरा सकी, जो ईसाई है।

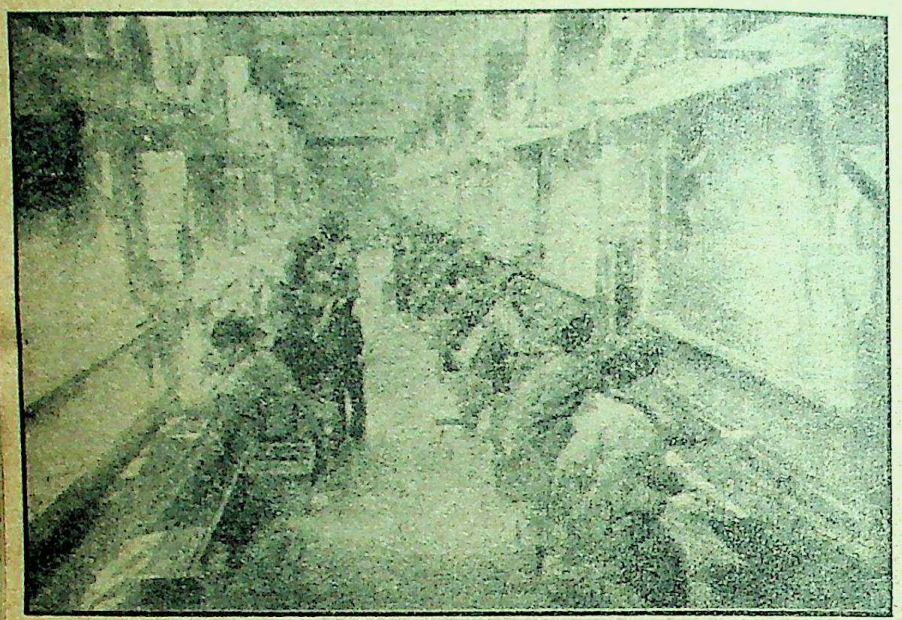

युद्धपूर्व—जापान में सूती वस्त्रों का एक कारख़ाना

यदि वे चीनी विद्यार्थी, जिनकी संख्या कई हज़ार थी, उन रहस्यों से अवगत हो जाते जो जापान की सफलता के मूल में थे, तो वे अपने देश में पहुँचकर जापानियों के शक्तिशाली प्रचारक बनते। उनमें का प्रत्येक चीनी-जापानी ऐक्य और सहयोग का पक्का हिमायती होता। वे युवतियाँ और युवक उस काल के चीन के—जो 'मांचू-साम्राज्य' कहलाता था—सभी विभागों में काम करते।

पर ऐसा हुआ नहीं। क्यों?

प्रमुख कारण यह था कि जापानी विजय के मद में चूर हो गये थे। समुद्री और स्थल की लड़ाई में उन्हें विजय मिली थी—और वह भी रूस-जैसे देश से लड़कर!

और न केवल रूसियों पर, चीनियों पर भी उन्हें विजय प्राप्त हुई थी, जो एक बहुत बड़ी बात थी। समुद्र का जो भाग युद्धस्थल बना था वह एक ओर जापान की सीमा स्पर्श करता था और दूसरी ओर चीन की। स्थल-युद्ध तो चीनी भूमिभाग में ही हुआ था—उस भूमिभाग में जो पिछले वर्ष तक 'पुष्पबहुल-साम्राज्य' का, चीनी अपने देश को उसी नाम से पुकारते थे, एक भाग था।

कुछ ऐसे कारण और भी थे जिनसे जापानियों के [illegible] न्माद में वृद्धि हो गई थी। इन कारणों में कुछ [illegible] और कुछ विप्रकृष्ट। उन अगणित द्वीपों और द्वीपकों में [illegible] खिंचे हुए धनुष के आकार में [illegible] महासागर में फैले हैं और पीत सागर [illegible] दूसरे ओरवाले विस्तृत भूभाग में कभी-[illegible] अनबन हो जाती थी जो जब-तब उग्र [illegible] धारण कर लेती थी। फलतः [illegible] प्रसिद्ध विद्रोह धधक उठा।

(५)

उस विद्रोह का विस्फोट उसी [illegible] आकस्मिक रूप में हुआ जिस प्रकार देवराज [illegible] जब चाहते हैं, नीलाकाश से पृथ्वी पर [illegible] कर देते हैं। एक उदाहरण नीचे दे रहे हैं—

मैं टोकियो में एक पत्रकार की [illegible] में, जिसकी फ़र्श पर गुलगुले गद्दे [illegible] 'कुशन' पर बैठा था। पत्रकार महा[illegible] का नाम था जी० साकुराई। वे लब्ध[illegible] लेखक थे। उनका झुकाव समाजवाद की [illegible] था और उनकी क़लम में काफ़ी ज़ोर था। वे अपना एक [illegible] निकालते थे जिसका नाम था—'शिन कोरोन' (नया विचार)।

मैं अपने साथ एक युवक को भी जापान ले गया था [illegible] हैदराबाद (दक्षिण) का निवासी था। उसका पिता [illegible]

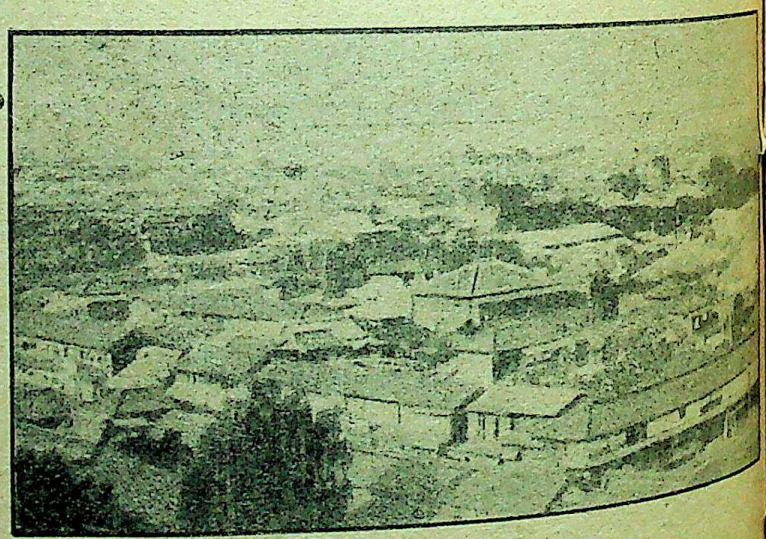

टोकियो का एक दृश्य

साहब की सेना में कर्नल था। सैनिक का पेशा—जिसमें [illegible] आना-पाई की अपेक्षा वर्दी की अकड़ अधिक रहती है, उसे [illegible] नहीं था। उसे पसन्द थे चित्रकार के ब्रश! यदि एक [illegible] ज़ादे जो निज़ाम सरकार के यहाँ पोस्टमास्टर जनरल के [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और उसके मित्र थे, उसकी सहायता न करते तो वह कदापि जापान नहीं पहुँच सकता था। और यदि वहाँ पहुँच भी जाता तो भूखों मर जाता। मैंने साकुराई से प्रार्थना की वे मेरे उस मित्र के लिए कुछ काम दिला दें।

मेरे उस सहयोगी पत्रकार ने तुरन्त उत्तर दिया—"अच्छी बात है। अपने साथी से कहिए कि वह मेरी पत्रिका के लिए चित्र बनाया करे। यदि वे चित्र मेरी पत्रिका के लिए उपयुक्त होंगे तो मैं उन्हें छापूँगा और पारिश्रमिक दूँगा।"

जापान में पाइन के वृक्षों के बीच से फ़्यूजी पर्वतशिखर का एक दृश्य

"आप इस तरह के चित्र चाहते होंगे?" मेरे साथी ने बड़ी शीघ्रता से कहा जैसे बन्दूक़ से गोली निकलती है। फिर देखते-देखते उसने जेब से एक पुराना लिफ़ाफ़ा निकाला। उसके बाद पैंट की जेब से एक पैंसिल खोज निकाली और लिफ़ाफ़े के पीछे भाग पर कुछ रेखायें खींचीं। उस लिफ़ाफ़े को पत्रकार के सामने उपस्थित करते हुए उसने कहा—"मेरे मित्र मिस्टर ने आपकी पत्रिका के लिए 'जापान में विदेशी छात्र'—शीर्षक जो लेख लिखा है उसे सचित्र करने के लिए आप इसका उपयोग कर सकते हैं।"

"यह आकृति मुझे पसन्द है। और यह भी।" दो आकृतियों की ओर सङ्केत करते हुए पत्रकार ने कहा। "पर यह यहाँ क्यों?" चीनी छात्र की एक आकृति की ओर सङ्केत करते हुए उसने कहा। "क्यों?" मैंने प्रश्न किया, "ड्राइंग तो ठीक बनी है। आकृति ठीक चीनी मनुष्य की है।"

"झगड़े की चीज़ ठीक यही है। आप हिन्दुस्तानी अच्छे हैं। हिन्दुस्तानियों को मैं पसन्द करता हूँ। चीनियों को नहीं। चीनी हमें अच्छे नहीं लगते।"

इन शब्दों को जापानी पत्रकार ने इस ढङ्ग से कहा था कि वे आज तक मेरी स्मृति में ताज़े हैं। उनमें ठोस द्वेष की भावना भरी हुई थी। मुझे लगा, जैसे मेरे कान जल रहे हैं।

(६)

यह सत्य है कि जापानी भारतीय छात्रों और भारतीय व्यापारियों का आदर करते थे। साकुराई स्वयं 'इंडो-जापानीज़ एसोशिएशन' के मन्त्री थे। काउंट (पश्चात् मार्किस) आक्यूमा जो एक पीढ़ी पूर्व वैदेशिक मन्त्री थे, पश्चात् प्रधान मन्त्री रहे थे, उसके प्रधान थे।

फिर भी मुझे ऐसा लगता था कि हम भारतीय किसी विशेष उद्देश्य को लेकर सिखाये-पढ़ाये जा रहे हैं। हमें सिखाने-पढ़ाने में जापानियों का कोई विशेष लक्ष्य है।

कुछ ही दिन बाद यह स्पष्ट हो गया। आक्यूमा एक या दो साल बाद कोबे गये। कोबे जापान के सबसे बड़े द्वीप के किनारे में—जिसे जापानी मुख्य जापान मानते हैं—प्रमुख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन्दरगाह है। उन दिनों वह प्रख्यात व्यापार-केन्द्र था। वहाँ भारतीयों के ऐसे अनेक परिवार थे जो आयात-निर्यात का व्यापार करते थे। उनमें अधिकांश सिन्धी और बोहरा थे। कुछ गुजराती और काठियावाड़ी भी थे। निर्यात-व्यापारियों से अपने स्वभावानुसार स्पष्टता से बातचीत करते हुए आक्यूमा ने उनका ध्यान ब्रिटेन के 'राजनीतिक नियन्त्रण' की ओर आकृष्ट किया और बतलाया कि उस अधिकार का प्रयोग करके किस प्रकार ब्रिटेन भारत का व्यापारिक शोषण कर रहा है। आक्यूमा ने यह भी कहा कि जापान यह चाहता है कि भारत को इस प्रकार के शोषण से बचाया जाय। क्योंकि सबसे पहिली बात यह है कि भारत एक एशियाई देश है जहाँ से बुद्धधर्म का जन्म हुआ था। उसने जापानियों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि ओसाका में तैयार सूती माल अधिकाधिक मात्रा में कोबे से बाहर भेजा जाना चाहिए। जापानी एजेंटों को चाहिए कि वे ब्रिटेन-द्वारा अधिकृत देशों में अधिक-से-अधिक संख्या में पहुँचें, वहाँ की प्रत्येक मण्डी में जायँ और कोबे तथा अन्य जापानी बन्दरगाहों के लिए आर्डर बुक करें।

जापान उन दिनों ब्रिटेन का मित्र था। उसने योरप और अमरीका के चरणों में बैठकर शिक्षा प्राप्त की थी। एक चतुर शिष्य के रूप में उसने यह सीख लिया था कि मित्रता को पार्थिव लाभ से बाधक नहीं होने देना चाहिए।

(७)

हम सब को ज्ञात है—और सबसे अधिक ताता लोगों को कि इस योजना को कैसी तत्परता और सफलता के साथ गया था।

मुझे स्मरण है, एक बार एक जहाज़ पर, जो मुझे ले जा रहा था, मेरी भेंट आर० डी० ताता से हुई। व्यापारी-सम्राट् ने मुझे बतलाया कि कुछ ही दिन पहले भारत से चीन को बहुत अधिक परिमाण में सूत जाया करता अब वह बाज़ार जापान ने अपने हाथ में कर लिया है। का वह व्यवसाय अब सर्वथा स्थगित हो गया है। उस में उतना लाभ नहीं था कि ताताओं की उसमें दिलचस्पी

व्यवसाय-क्षेत्र में की आक्रामक नीति ब्रिटेन ने भी अनुमत था। जापान से आनेवाला सूतीमाल वर्ष-प्रतिवर्ष बढ़ता था। लङ्काशायर के खपत कम होती जा रही गत महायुद्ध के ब्रिटेन ने एक उपाय-द्वारा पूर्व-परिचित को पुनः प्राप्त करने की की। भारत सरकार कुछ व्यक्ति चुने गये। दिनों की भारत सरकार न केवल आदेश सीधे से मिलते थे, उसके भी अधिकांश अभारतीय थे। वे प्रतिनिधि कान्फ़रेंस में सम्मिलित वे ब्रिटेन और उसके अधिकृत देशों को विशेष रियायतें देने राज़ी हो गये। उन्होंने यह निश्चय किया कि इन देशों से माल भारत भेजा जायगा उस पर उस माल की अपेक्षा जो तथा अन्य देशों से भारत भेजा जायगा, कम महसूल

पर इस प्रयत्न से भी लङ्काशायर की रक्षा न हो ओसाका का रुई का माल अँगरेज़ी माल को भारतीय निकाल बाहर करने में निरन्तर सफल होता रहा। करने में किस प्रकार सफल हो सका, यह सब बताने के अधिक स्थान चाहिए, जो कि इस समय मैं नहीं दे क्योंकि प्रस्तुत लेख से उसका विशेष लगाव नहीं है।

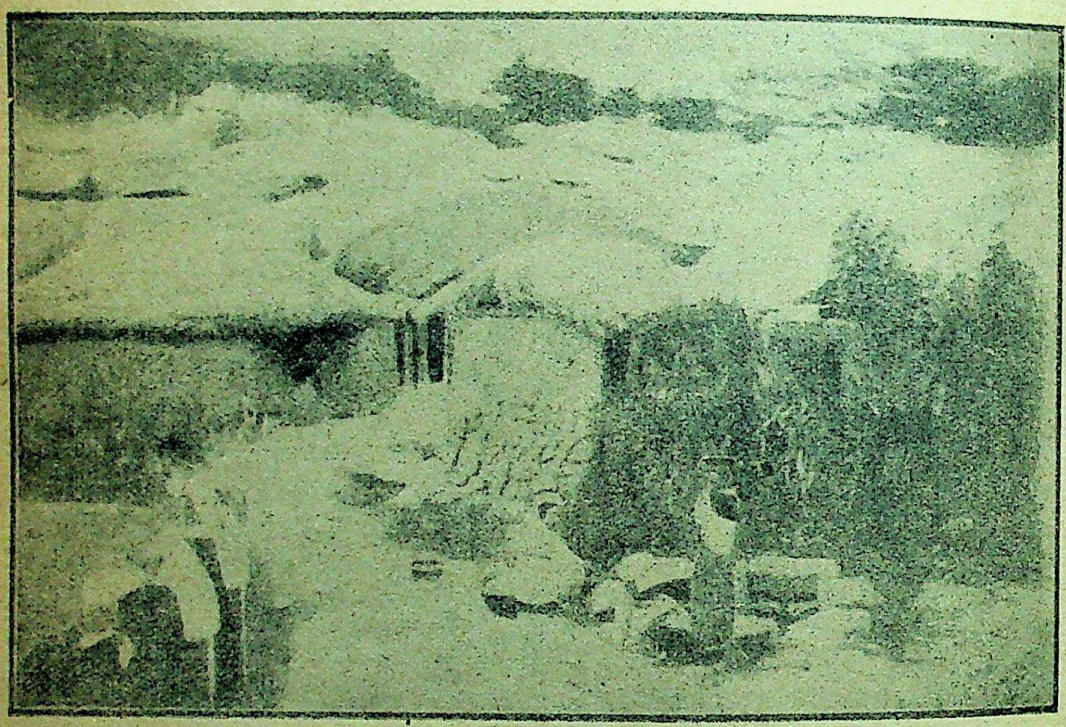

कोरिया के एक गाँव का दृश्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(८)

अमरीकन भी जापानियों से परेशान थे। उन्होंने एक विशाल औद्योगिक-प्रणाली का निर्माण किया था। उस प्रणाली का उत्तरोत्तर विस्तार किया जा रहा था। देश में जो माल

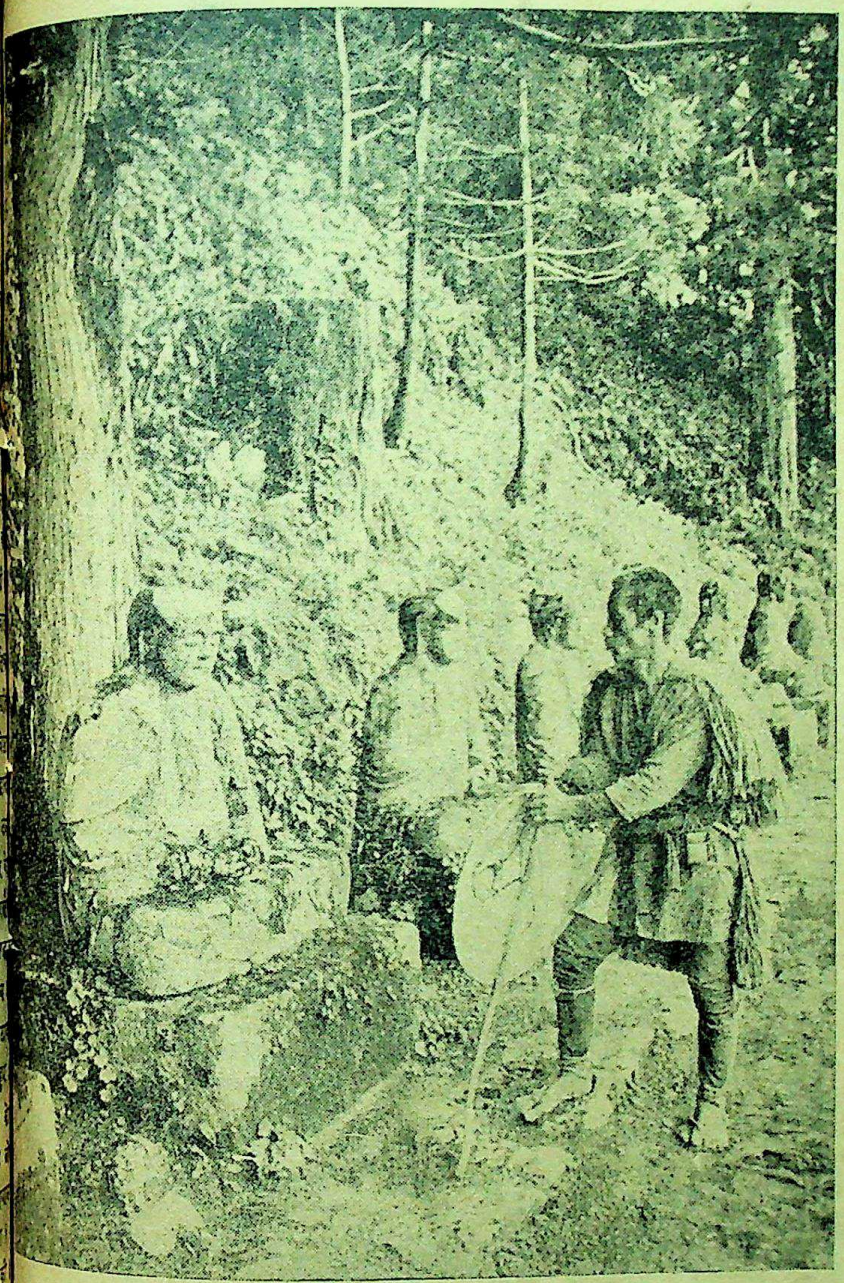

'ध्यानमग्न'—निक्को की एक मूर्त्ति

नहीं खप पाता, उसका निर्यात आवश्यक है। यदि जापान की योजना सफल हो जाती तो अमरीकन कारख़ानेदारों को चीन में माल बेच पाना दुर्भर हो जाता। चीन की जन-संख्या ४० करोड़ थी और चीन-निवासी यद्यपि व्यक्तिगत रूप से ग़रीब हैं पर सामूहिक रूप से वे बहुत अधिक माल ख़रीद सकते हैं।

ज्यों ही जापान का इरादा समझ में आया, वाशिंगटन की केन्द्रीय सरकार ने तुरन्त और दृढ़ता के साथ कार्यवाही की। उसने जापान से साफ़-साफ़ कह दिया कि चीन का दरवाज़ा प्रत्येक आगन्तुक के लिए खुला रहना चाहिए। कूटनीति के क्षेत्रों में इसे 'ओपन डोर पॉलिसी' कहा जाता है।

जिन दिनों यह क़दम उठाया गया था, मैं संयुक्त राज्य अमरीका में ही था। मैं वहाँ सीधा जापान से उन दिनों गया था जब इस लेख के अधिकांश पाठकों का जन्म ही हुआ होगा।

अपने व्यक्तिगत ज्ञान के आधार पर मैं यह निश्चय-पूर्वक कह सकता हूँ कि अमरीका की राजधानी से जो स्पष्ट भाषण किया गया था उसे प्रत्येक ऐसे राष्ट्र ने, जो माल बनाकर दूसरे देशों को भेजता था, पसन्द किया था। साथ ही सबने उसका समर्थन भी किया था।

(९)

जापान में जो दल उन दिनों शक्तिशाली था उससे संयुक्त राज्य अमरीका, कनाडा और ब्रिटेन के व्यक्ति एक और कारण से घृणा करते थे। जापान के उस दल ने गोरी जातियों की उस नीति को अस्वीकार कर दिया था जिसके अनुसार उन क्षेत्रों में से, जिन्हें स्वयं गोरी जातियों ने अपने लिए सुरक्षित कर रक्खा था, एशियाई जातियों को निकाल दिया जाना चाहिए था। इसके साथ ही वह दल फ़ारमोसा, कोरिया, दक्षिणी मञ्चूरिया और सखालीन के दक्षिणी भाग के शोषण मात्र से ही सन्तुष्ट न था, न वह शान्तिपूर्ण ढङ्ग से अन्य एशियाई क्षेत्रों में प्रवेश करने से सन्तुष्ट था; वह तो चीन को अपने अधीनस्थ राज्य के रूप में देखना चाहता था। प्रथम महायुद्ध में दृढ़ निश्चय के साथ यह विचार अग्रसर हुआ। उन दिनों मैं ब्रिटेन में था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पश्चिमी जातियाँ उन दिनों जीवन और मृत्यु के प्रश्न में उलझी हुई थीं। जापानियों ने समझा कि वे चीन को टोकियो में निर्मित माँगों को—जिनकी संख्या २१ थी—स्वीकार करने को बाधित कर सकेंगे।

इतना सब होने पर भी, उस व्यक्ति ने, जो उन दिनों [illegible] का कर्णधार था, जापान की २१ माँगों को ठुकरा दिया। [illegible] इस प्रतिरोध के लिए चीनियों को सारे संसार का नैतिक [illegible] प्राप्त था।

बैंगनी रङ्ग के 'विस्टेरिया' फलों से अलंकृत एक उद्यान का दृश्य

विजयी राष्ट्रों के वे प्रतिनिधि [illegible] ११ नवम्बर १९१८ को युद्धविराम [illegible] सन्धि पर हस्ताक्षर हो जाने के [illegible] पश्चात् वार्साई में एकत्र हुए [illegible] यदि बुद्धि से काम लेते तो [illegible] की जीवनधारा को बिलकुल परिवर्तित [illegible] कर सकते थे। उन्हें तभी जापान [illegible] से कह देना चाहिए था कि वह चीन [illegible] से दूर रहे। पर उनमें इतनी [illegible] नहीं थी। चीन को उन्होंने जापान [illegible] की दया पर छोड़ दिया।

कुछ वर्ष पश्चात् जापान [illegible] प्रसारवादियों ने चीनी प्रजातन्त्र [illegible] मञ्चूरिया को पृथक् करने का साहस [illegible] कर डाला। उसने एक गुड़िया राज्य [illegible] की स्थापना कर दी। हेनरी [illegible] ई-या-जो मांचू-वंश का था—[illegible] जापानियों के हाथ का अस्त्र बनकर [illegible] उस राज्य के प्रधान के रूप में [illegible] सँभालने लगा। वह नाममात्र प्रधान [illegible] था। शासन का सारा कार्य [illegible] लोग ही करते थे जो पीतसागर के उस [illegible] ओर के निवासी थे।

(१०)

'लीग ऑफ़ नेशन्स' के [illegible] इस प्रकार के हस्तक्षेप के विरुद्ध [illegible] अनुशासनात्मक कार्यवाही करने के [illegible] लिए प्रतिज्ञाबद्ध थे। उनसे जापान [illegible] के इस कार्य में हस्तक्षेप करने की [illegible] प्रार्थना की गई। ब्रिटेन और अन्य [illegible] राष्ट्रों ने भी चीन की इस माँग का [illegible] समर्थन किया। पर लीग ने इस [illegible] मामले में दख़ल देने से इनकार [illegible] कर दिया। किसी ने कुछ नहीं किया। केवल [illegible] ख़र्च होता रहा।

चीन में उसके कुछ ही पूर्व राज्यक्रान्ति हो चुकी थी। उसे निर्बल और आचार-हीन मांचू-वंश के आधिपत्य से छुटकारा मिल गया था। प्रजातन्त्र, जो अभी-अभी अधिकार में आया था, निरा बच्चा था; साथ ही वह अनेक बालरोगों से पीड़ित भी था।

जापानी शासन के सञ्चालकों का साहस इससे और [illegible] बढ़ गया। वे और अधिक छेड़-छाड़ करने को उद्यत हो गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह हुआ कि अब से आठ वर्ष पूर्व उन्होंने वह कृत्य कर डाला जिसे निर्ममता से 'चीनी घटना' कहा गया था। यह वस्तुतः चीन के साथ दूसरे युद्ध का प्रारम्भ था। वह युद्ध आठ वर्ष तक चला। उस युद्ध में इतने मनुष्य मौत के घाट उतारे गये कि यदि तैमूर, नादिरशाह, महमूद ग़ज़नवी और चंगेज़ खाँ की आत्मायें क़ब्रों से उठकर देख सकतीं तो सिहर उठतीं। नगरों, क़सबों और गाँवों का विनाश, सामाजिक और व्यक्तिगत सम्पत्ति की हानि, बलात्कार और लूटमार की घटनायें—यह सब कुछ दिल को दहला देनेवाला था।

इस रक्तपातपूर्ण सङ्घर्ष के चलते हुए चीन को नाममात्र सहायता ही मिली। वह भी छिपे-छिपे। विन्स्टन स्पेन्सर चर्चिल भी, जिनकी सिंह-गर्जना ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री के सरकारी निवास से भारत में प्रायः सुन पड़ती थी, आक्रमण के प्रारम्भिक दिनों में आक्रमणकारी जापानियों पर नहीं झपट सके। यही नहीं, उन्होंने उस मार्ग को बन्द कर देने का भी आदेश दे दिया जो ब्रह्मा से चीन को जाता था। आक्रमणकारियों की यही माँग थी। वे जानते थे कि इसी मार्ग से होकर चीन को वह युद्ध-सामग्री पहुँच रही है जिसका उपयोग चीनी आत्मरक्षार्थ कर रहे हैं।

चीन-जापान-युद्ध के प्रारम्भिक भाग में अमरीका भी सरकारी तौर पर या सीधे-सीधे चीन की सहायता करने नहीं आया। हाँ, कुछ अमरीकन स्वयंसेवकों के रूप में अवश्य वायुयुद्ध में सम्मिलित हुए। वह भी ऐसे समय पर, जब चीन बहुत अधिक थक चुका था। उसके बाद अमरीकन अधिकारियों ने युद्ध-सम्बन्धी कुछ विशेष वस्तुओं के भेजने पर रोक लगाई। पेट्रोल, जिसकी आवश्यकता जापान को अपने लड़ाकू वायुयानों, टैंकों और ट्रकों के लिए बहुत अधिक थी, उनमें से एक वस्तु थी। दूसरी वस्तु थी धातुओं की कतरन, जिसे गलाकर जापानी युद्ध के अस्त्र-शस्त्र बनाते थे।

(११)

यह कार्य सीधा न होने पर भी बहुत प्रभावशाली सिद्ध हुआ। जापानी युद्ध-सञ्चालक रुष्ट हो गये। इसने उन्हें सम्भवतः निराश भी कर दिया।

जापान-द्वारा पर्लहार्बर में स्थित अमरीकन बेड़े पर आक्रमण सम्भवतः ऐसे व्यक्तियों का कार्य था जिनका दिमाग़ बिगड़ गया था। इसने संयुक्त राज्य को भी युद्ध में उतार दिया। ब्रिटेन भी कूद पड़ा। भारत को भी उसमें सम्मिलित होना ही पड़ा। ब्रिटेन के अन्य उपनिवेशों के सम्बन्ध में भी यही बात हुई। ब्रिटेन-द्वारा प्रजातन्त्र-प्राप्त अन्य देश भी तुरन्त युद्ध-क्षेत्र में आ गये। आस्ट्रेलिया उनमें सबसे आगे था, क्योंकि वह अपेक्षाकृत जापान के अधिक निकट था और उसके सम्बन्ध भी जापान से मैत्रीपूर्ण नहीं थे।

जापान के युद्ध-सञ्चालक आज भूलुंठित हैं। उनमें से अनेक मिट्टी में कई फ़ुट नीचे पहुँच चुके हैं। उनकी क़ब्रें गालियों का लक्ष्य बन रही हैं। कुछ ही समय बाद उनके दूसरे साथी भी उनका पड़ोस आबाद करने पहुँच जायँगे।

जो जापानी युद्ध-अपराधियों के रूप में दण्डित होने से बच जायँगे उन्हें अपनी व्यक्ति और सम्पत्ति पर लगाये गये जुर्माने की भारी रक़में चुकानी पड़ेंगी। वे सम्पूर्ण रूप से विजेताओं की दया पर निर्भर रहेंगे। सबसे अधिक वह जापानी सम्राट् जिसे जापानी 'देवपुत्र' कहते और मानते थे।

सम्पूर्ण पराजय के अपमान-स्वरूप जापानी स्त्रियाँ और पुरुष, जो कल तक बढ़-बढ़कर बातें करते थे, आज केवल वही कर सकेंगे और उसी प्रकार रह सकेंगे, जैसी उन्हें आज्ञा दी जायगी। वे वही सामान बना सकेंगे जिसकी आवश्यकता उनके निजी और घरेलू उपयोग के लिए होगी। उसमें से कुछ प्रतिशत ही निर्यात हो सकेगा। वह भी विजेता अधिकारियों की इच्छा के अनुसार। जापानी जहाज़ उस सामान को ढो भी नहीं सकेंगे। वह विशाल व्यापारिक जहाज़ी बेड़ा, जो नागासाकी में खड़ा किया गया था, नष्ट कर डाला गया है। उसके रक्षक बेड़े की भी वही दुर्गति हुई है।

ऐसा महान् परिवर्त्तन उपन्यास या रङ्गमञ्च के बाहर कदाचित् ही हुआ होगा।

तूने क्या सपना देखा है !

श्रीयुत आरसीप्रसादसिंह

तू ने क्या सपना देखा है ?
क्या देखा ? किसको है देखा ?
यह कैसी होठों पर रेखा ?
अकस्मात् सपने में तूने
क्या कोई अपना देखा है ?
लाल-लाल आँखें हैं रोई,
पलकें, जैसे, तिल-सी धोई,

तूने क्या प्रज्वलित वह्नि में
सोने का तपना देखा है !
बातें हैं तेरी पागल-सी,
निर्मल जैसे गंगाजल-सी,
यह जो चमत्कार-सो लगता,
क्या कोई सपना देखा है !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक रात

श्रीयुत पदुमलाल पुन्नालाल बख़्शी, बी० ए०

ज्येष्ठ का सन्ध्याकाल, नदी का निर्जन तट, आम्र-मञ्जरी के सौरभ से युक्त पवन की मन्द गति, विहङ्गों का कलरव, ये सब बातें ऐसी हैं कि किसी भी २४ वर्ष के नवयुवक के हृदय में प्रेम का उल्लास उत्पन्न कर दें। परन्तु जब नरेन्द्र लाल साहब के श्रीनिकेतन से निकला तब वह एक औत्सुक्यपूर्ण, व्यग्रतापूर्ण आकांक्षा को लेकर बाहर आया। उस दिन लाल साहब के यहाँ शिवगढ़ के राजकुमार के सत्कार में एक विशेष प्रीति-भोज का आयोजन किया गया था। उसमें वह भी निमन्त्रित हुआ था। वहाँ जाने पर जब राजकुमार से उसका परिचय कराया गया तब उसे मालूम हुआ कि राजकुमार का भी नाम ठाकुर नरेन्द्रसिंह है। परिचय कराते समय लाल साहब ने हँसकर कहा—"आप लोगों में केवल नाम का ही सादृश्य नहीं है, रूप का भी सादृश्य है। कहीं ऐसा न हो कि रुडोल्फ़ रैसिंडिल की तरह आप लोग भी किसी घटना-चक्र में पड़ जायँ।" सब लोग इस बात पर हँस पड़े थे। पर प्रीति-भोज के बाद सुरा के साथ सङ्गीत के माधुर्य का उपभोग कर जब नरेन्द्र बाहर आया तब उसके मस्तिष्क में विभिन्न भावों का एक विप्लव मचा हुआ था। उसके हृदय में क्रोध था, ग्लानि थी, असन्तोष था, विद्रोह था। उसे अपनी हीनता के कारण अपने नाम पर भी लज्जा होने लगी। नाम तो सार्थक है शिवगढ़ के राजकुमार का। वह सचमुच नरेन्द्र है। उसके पास वैभव है, शक्ति है, अधिकार है। पर वह नाम मात्र का नरेन्द्र है। वह तो इन सभी बातों में हीन है। पर उसकी इस हीनता का कारण क्या है? क्या उसमें पौरुष नहीं है, क्या उसमें क्षमता नहीं है, क्या उसमें बुद्धि, विद्या और योग्यता का अभाव है? फिर संसार की यह कैसी नीति है! ईश्वर का यह कैसा न्याय है। कुल में जन्म लेना तो दैवायत्त बात है। राजकुमार केवल अपनी पैतृक सम्पत्ति के ही कारण उच्च पद पर आरूढ़ हैं। उनमें ऐसी कौन विशेष क्षमता है कि जो नरेन्द्र में नहीं है। नरेन्द्र उनसे अधिक शिक्षित है और अधिक योग्य। यदि उसे कोई अवसर मिले तो रुडोल्फ़ रैसिंडिल की तरह वह भी सचमुच अपनी योग्यता और महत्ता प्रदर्शित कर सकता है। पर ऐसा अवसर उसे मिलना सम्भव नहीं है। रुडोल्फ़ रैसिंडिल तो एक लेखक की कल्पना है। संसार की सम्पत्ति और ऐश्वर्य, शक्ति और प्रभुत्व पर कुछ लोगों ने अपना ऐसा आधिपत्य स्थापित कर लिया है कि उसके समान लोग उससे वञ्चित ही रहते हैं। नरेन्द्र चुपचाप नदी-तट पर बैठकर यथार्थ जगत् की आलोचना में व्यस्त हो गया।

अन्य स्थानों की तरह उसके ग्राम में भी एक बड़ों का [illegible] है और एक छोटों का। उन दोनों के संसार में बड़ा [illegible] है। संसार में जो कुछ स्पृहणीय है उस पर इन [illegible] अनायास ही अधिकार हो गया है। ये बड़े लोग मानो [illegible] के देव हैं। स्वर्ग के देव की तरह इनकी अपनी [illegible] नहीं है। केवल स्वर्ग में जन्म पा लेने के कारण वे देव [illegible] हैं। शक्ति की परीक्षा में दैत्यों से उनका बारम्बार पराभव [illegible] है। फिर भी किसी महादेव की कृपा से वे देव ही [illegible] हैं। सुरा, सङ्गीत और सौन्दर्य में लिप्त रहकर वे लोग [illegible] के शाह की तरह सदैव शङ्कित रहते हैं। जो छोटे हैं [illegible] जीवन तो बड़ों पर निर्भर है। छोटों के लिए सभी एक [illegible] हैं। सभी की सेवा में वे निरत रहते हैं। सभी को [illegible] करने में ही उनके जीवन की सार्थकता है। पर अब एक [illegible] वर्ग का समाज हो गया है जो यथार्थ में बड़ों का अनुचर [illegible] है। मध्यम श्रेणी के ये लोग सभी बातों में बड़ों का अनुकरण किया करते हैं। यदि दैवयोग से उनकी श्रीवृद्धि हो [illegible] बड़ों के समाज में बैठकर छोटों के प्रति वही अत्यन्त उपेक्षा [illegible] भाव प्रकट करते हैं। सच पूछो तो ग्राम्य-देवों की तरह अपने को देवों से भी अधिक पूजा का पात्र समझते हैं और [illegible] भी देवों की अपेक्षा ग्राम-देवों से अधिक त्रस्त और [illegible] रहते हैं। वे लोग यही समझते हैं कि ग्राम में जो उत्पात [illegible] हैं, उनके कारण वेही उपदेव हैं। अपने पद के क्षुद्र गौरव [illegible] उन्मत्त होकर वे केवल अन्याय और अत्याचार करने में ही [illegible] महत्ता समझते हैं। इससे लोग उन्हीं की अधिक पूजा [illegible] हैं। जीवन की कृत्रिमता मध्यमवर्ग के ही समाज में [illegible] असन्तोष की भावना उसी वर्ग के महत्त्वाकांक्षी लोगों में [illegible] वहीं गौरव के लिए षड्यन्त्र होता है, वहीं ज्ञान का प्रदर्शन [illegible] है, वहीं मिथ्या निन्दा और मिथ्या स्तुति होती है, वहीं [illegible] आलोचना होती है, वहीं वैमनस्य और विद्रोह की भावना [illegible] है। अनुकूल स्थिति आने पर कितने ही लोग प्यादे से [illegible] हो जाते हैं तब उनकी चाल टेढ़ी हो जाती है। बड़े तो [illegible] में लिप्त रहते हैं पर ये लोग मिथ्या गौरव के दर्प में ही [illegible] रहते हैं। बड़ों की कृपा पर जीवित रहकर भी वे अपनी [illegible] को प्रदर्शित करने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। मनुष्य [illegible] जीवन शतरञ्ज का खेल-सा है। सभी अपना स्थान [illegible] रहते हैं। सभी शाह के लिए व्यग्र रहते हैं। सभी शह [illegible] शाह पर अपना प्रभाव डालकर अपना गौरव स्थापित [illegible] चाहते हैं। कभी ऊँट आगे बढ़ता है तो कभी हाथी [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनता है; कभी वज़ीर को हटाकर घोड़ा ही उसका स्थान ले लेता है। कभी प्यादा ही खड़ा होकर अपनी महत्ता प्रकट करता है। जब जैसा अवसर आता है तब वैसा प्रभुत्व या वैभव का पद किसी को भी मिल जाता है। पर यह कहना बहुत कठिन है कि कब कौन बड़ा और प्रभुताशाली होता है और कौन कब छोटा या प्रभावशून्य हो जाता है।

लक्ष्मी चञ्चला है कि नहीं, यह कोई नहीं जानता। पर यह बात तो निश्चित है कि मनुष्य का जीवन जल-प्रवाह की तरह चञ्चल है; वह कभी रुकता नहीं। उसमें स्थिरता नहीं है। उसे जिस पथ से जाना है वह उसी पथ से जायगा ही। यदि उसके मार्ग में पहाड़ है तो मार्ग न मिलने पर वह उसे तोड़-फोड़ डालेगा। जिसे लोग अपना भाग्य कहते हैं, वह उनका यह निर्दिष्ट जीवन-पथ ही है।

नरेन्द्र का भी जीवन-पथ निर्दिष्ट हो गया है। नरेन्द्र अपने जीवन की बातें सोचने लगा। नरेन्द्र के जीवन में अब तक जो लोग आये हैं वे सभी हेय हैं, तुच्छ हैं, नीच हैं। कितनी तुच्छ उनकी भावनायें हैं, कितनी नीच उनकी प्रवृत्तियाँ हैं। लोलुपता, लम्पटता और धूर्तता से उनका यह समाज दूषित हो गया है। व्यभिचार और अनाचार की तो कोई सीमा नहीं है। फिर भी ऐसे लोग अपने महत्त्व का गर्व करते हैं।

नरेन्द्र ने एक दीर्घ निश्वास लिया। तो क्या उसका जीवन यों ही व्यतीत हो जायगा। क्या उसके जीवन में कोई महत्त्वपूर्ण घटना न होगी? बड़ों का कृपापात्र बनकर, उनकी सेवा कर, उनका दासत्व स्वीकार कर अपना जीवन निर्वाह करने में क्या कोई पुरुषार्थ है? दस घण्टे दफ़्तरों में काम कर और फिर दो घण्टे इधर-उधर गप मारकर क्या जीवन सरस बनाया जा सकता है। जीवन में यथार्थ रस कहाँ है, यथार्थ गरिमा कहाँ है; इसी चिन्ता में न जाने वह कितनी देर तक लीन रहा, यह वह स्वयं न जान सका। सूर्यास्त हो गया, अन्धकार फैल गया, पक्षियों का कलरव बन्द हो गया, चारों ओर निस्तब्धता छा गई, पर नरेन्द्र अपनी ही चिन्ता में मग्न था।

सहसा उसे ऐसा जान पड़ा कि मानों उसे कोई पुकार रहा, —ठाकुर साहब, ठाकुर साहब, ठाकुर नरेन्द्रसिंह साहब। नरेन्द्रसिंह चौंक पड़ा। उसने उठकर आवाज़ दी—"कौन है? यहाँ हूँ।" दो आदमी उसकी आवाज़ सुनकर उसके पास आये। एक ने कहा—"लाल साहब के मकान से हम लोग आपका पता लगाते-लगाते हैरान हो गये हैं, चलिए।" नरेन्द्रसिंह चकित होकर कहा—"कहाँ चलना होगा?" एक ने कहा—"यह आप अभी मत पूछिए। मैं सब बातें निश्चिन्त होकर बतलाऊँगा। अभी आप कृपा कर मेरे साथ चले चलिए। वह मोटर खड़ी है।" नरेन्द्रसिंह को बड़ा आश्चर्य हुआ। किसको आज उसकी इतनी ज़रूरत हो गई है कि वह इस प्रकार उसको आग्रह बुला रहा है। कुछ कौतूहल और कुछ विस्मय के साथ वह खड़ा हुआ और उनके साथ गया। सड़क पर एक मोटर खड़ी थी। वह अपरिचित व्यक्ति नरेन्द्रसिंह को उसमें सादर बैठाकर स्वयं बैठ गया। उसके बाद उसने अपने साथी दूसरे व्यक्ति से कहा—"आपको मेरे कारण जो कष्ट हुआ उसके लिए मैं क्षमा माँगता हूँ। यदि आप न मिलते तो न जाने कब तक मैं ठाकुर नरेन्द्रसिंह साहब के लिए भटकता फिरता।" यह कहकर उसने उस व्यक्ति के हाथ में कुछ दिया। उसके बाद मोटर रवाना हुई। नरेन्द्र कुछ देर तक चुपचाप बैठा रहा। फिर उसने उस व्यक्ति से पूछा—"आख़िर आप मुझे कहाँ लिये जा रहे हैं?" उसने कहा—"मैं ऐसी जगह आपको ले जा रहा हूँ, जहाँ जाने में ही आपका लाभ है।" नरेन्द्रसिंह ने कहा—"ख़ैर, लाभ और हानि की बात तो आप ही जानते हैं, पर आपका जब इतना आग्रह है तब मुझे जाने में आपत्ति नहीं है। पर लाल साहब के यहाँ मुझे ग्यारह बजे फिर जाना है। ग्यारह बजे तक हम लौट तो आवेंगे? यदि नहीं तो कम से कम उन्हें ख़बर तो भिजवा दीजिए कि नरेन्द्रसिंह नहीं आ सकेंगे, नहीं तो उन्हें बुरा मालूम होगा। वे अपने मन में न जाने क्या समझेंगे।" उस व्यक्ति ने कहा—"आप इसकी चिन्ता मत कीजिए। मैंने पहले ही ख़बर भिजवा दी है। उन्हीं का नौकर तो मुझे आपके पास ले आया था, नहीं तो मैं और भटकता।" नरेन्द्रसिंह चुप हो गया। मोटर तेज़ी के साथ जा रही थी। ऐसा मालूम पड़ता था कि वह ४० मील फ़ी घण्टे के हिसाब से जा रही है। वह कुछ सोच नहीं सका, समझ नहीं सका। उसके लिए यह यात्रा अचिन्तनीय थी। एक अज्ञात आशङ्का से उसका हृदय धड़कने लगा। पर उसमें भय नहीं, तीव्र कौतूहल का ही भाव था। अन्धकारमय पथ से यह मोटर उसको न जाने किस अज्ञात, रहस्यमय प्रदेश को ले जा रही थी। उसका अपरिचित सहचर उसको किस कार्य का गुरुतर भार सौंपने के लिए इतना व्यग्र और उद्विग्न होकर आया है। अभी तक वह अपने नगरवासियों से एक उपेक्षापूर्ण मान ही पाता आया है। पर आज कोई तो उसकी व्यक्तिगत महत्ता को स्वीकार कर उसको सादर साग्रह और सोद्वेग ले जा रहा है। इसी प्रकार आशङ्का और उल्लास, दर्प और कौतूहल से युक्त होकर वह अपने ही विचारों में इतना लीन हो गया कि वह यह भी नहीं जान सका कि वह कितनी दूर आ गया। सहसा घर्र-घर्र कर मोटर रुक गई। उस व्यक्ति ने ड्राइवर से पूछा—"क्या हुआ? मोटर कैसे रुक गई?" ड्राइवर ने उत्तर दिया—"टायर फट गया।" मोटर खड़ी कर ड्राइवर नीचे उतरा। इतने में चार आदमी एक दम उन पर झपट पड़े। इन दोनों को उन लोगों ने बाँध दिया। इसके बाद उन्होंने नरेन्द्र से कहा—"आप नीचे उतरकर दूसरी मोटर में बैठिए।" नरेन्द्र ने चकित होकर पूछा—"क्यों, क्या बात है?" उसने कहा—"आपको पता नहीं कि आप कितने बड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सङ्कट में पड़ गये थे। ये लोग आपके शत्रु हैं; आपको धोखा देकर ले जा रहे थे।" नरेन्द्र को और भी आश्चर्य हुआ। उसने पूछा—"मुझे ये लोग क्यों धोखा देकर ले जा रहे थे?" उसने कहा—"अभी सब बातें बतलाने का समय नहीं है। अभी एक-एक क्षण बहुमूल्य है, समय आने पर हम आपको सब बातें समझा देंगे।" नरेन्द्र विस्मय-विमुग्ध होकर उन लोगों के साथ दूसरी मोटर पर जा बैठा। मोटर फिर रवाना हुई। कुछ समय के बाद वह एक विशाल अट्टालिका के भीतर घुसी। वहाँ भीतर जाकर वह रुकी। वे लोग उतरे और नरेन्द्र को भी उतारा। नरेन्द्र ने देखा कि चारों ओर खूब रोशनी हो रही है। चार-पाँच व्यक्ति वहाँ खड़े हुए हैं। उन्हीं में से एक ने नरेन्द्र से कहा—"चलिए, हम लोग अभी तक आपकी प्रतीक्षा में खड़े थे। रास्ते में कोई दुर्घटना तो नहीं हुई।" नरेन्द्र के कुछ कहने के पहले ही जो व्यक्ति उसके साथ आया था, उसने कहा—"दुर्घटना! शत्रुदल के लोग पहले ही पहुँच गये थे और इन्हें मोटर पर ले जा रहे थे। मैंने बड़ी कठिनाई से इनका उद्धार किया।" उस व्यक्ति ने कहा—"खैर, अब आप भीतर चलिए, अधिक विलम्ब मत कीजिये।" नरेन्द्र उस व्यक्ति के साथ भीतर गया। वहाँ उसने देखा कि विवाह का मण्डप बना हुआ है। उसके नीचे एक कन्या बैठी हुई है। एक दासी भी उसके पास खड़ी है। उस व्यक्ति ने नरेन्द्र को एक आसन पर बैठा दिया और पण्डित को विवाह कराने की आज्ञा दी। नरेन्द्र चकित हो गया। उसने कहा—"यह क्या हो रहा है? मेरी तो समझ में कुछ नहीं आ रहा है।" उस व्यक्ति ने कुछ रुष्ट होकर कहा—"यह आपकी समझ का दोष है। हम लोग ठाकुर हैं, एक बात निश्चित करने के बाद उसे फिर भङ्ग नहीं करते। आपको इसी कन्या से विवाह करना पड़ेगा। इसलिए अभी आप चुपचाप मेरी आज्ञा के अनुसार काम करते जाइए। अभी सोचने-समझने का कष्ट मत उठाइए।" उसकी दृष्टि कन्या की ओर गई। वह अपूर्व सुन्दरी थी। वह चुप हो गया। दो-घण्टे के बाद विवाह समाप्त होने पर दासी वधू को लेकर एक कमरे में गई। नरेन्द्र को एक व्यक्ति दूसरे कमरे में ले गया। वहाँ उसे बैठाकर वह चला गया। नरेन्द्र एकान्त में अपने इस आकस्मिक भाग्य-परिवर्तन पर सोचने लगा। प्रेम का यह सौन्दर्यमय जाल भाग्य ने उसके जीवन-पथ में किस तरह बिछा दिया। भावों की तरङ्गें उसके हृदय को आन्दोलित कर रही थीं। इतने में बाहर से किसी ने पुकारा—"आप ज़रा बाहर तो आइए।' नरेन्द्र बाहर आया। वहाँ उसने उन्हीं दो व्यक्तियों को देखा। वे दोनों उसको एक दूसरे कमरे के भीतर ले गये। वहाँ एक ने पूछा—"आपका नाम क्या है?" नरेन्द्रसिंह ने कहा—"मेरा नाम ए-0. मेरा नाम नरेन्द्रसिंह है।" दूसरे व्यक्ति ने कहा—"देखिए, पहले ही मैंने कहा था।" पहले व्यक्ति ने रुष्ट होकर कहा—"तुम कुछ नहीं समझते, चुप रहो।" इसके बाद उस व्यक्ति ने फिर नरेन्द्र से पूछा—"क्या आप कभी शिवगढ़ गये हैं।" नरेन्द्र ने कहा—"मैं कभी शिवगढ़ नहीं गया। पर हाँ शिवगढ़ के राजकुमार को मैं जानता हूँ। लाल साहब के प्रीति-भोज में मैंने उनको देखा था।" नरेन्द्र की यह बात सुनकर वह आदमी उठा और अपने साथी के साथ बाहर आया। उसने उस कमरे के दरवाज़े को बाहर से बन्द कर दिया। नरेन्द्र कुछ घबड़ा गया। वह भी कुछ शङ्कित होकर दरवाज़े के पास आ उसकी बातें सुनने लगा। एक ने कहा—"यह तो बड़ी भूल हुई। राजकुमार के स्थान में हम किसी दूसरे को ले आये और उसका विवाह विमला से कर दिया। अब क्या किया जायगा?" दूसरे ने कहा—"मेरी समझ में नहीं आता कि तुम लोगों ने ऐसी भूल क्यों की।" पहले व्यक्ति ने कहा—"पर ठाकुर जोरावरसिंह इसी को पकड़कर अपनी मोटर में ले जा रहे थे। हम लोगों ने ठाकुर जोरावरसिंह से ही इसे छुड़ाया।" दूसरे व्यक्ति ने कहा—"जान पड़ता है कि ठाकुर जोरावरसिंह ने तुम लोगों को खूब उल्लू बनाया। पर अब क्या किया जाय? लोगों को यह बात मालूम हो जायगी तो बड़ा अनर्थ होगा।" पहले व्यक्ति ने कहा—"यही तो मैं भी सोच रहा हूँ।" दूसरे व्यक्ति ने कहा—"और कोई उपाय नहीं है, इसको अब मार डालना ही पड़ेगा।" उनकी ये बातें सुनकर नरेन्द्र काँप उठा। वह चुपचाप दरवाज़े से हटकर कमरे में आया। क्षण भर भय ने उसको निश्चेष्ट कर दिया। मृत्यु का भीषण दृश्य उसकी दृष्टि के सामने आ गया। प्रेम की प्रतिमा लुप्त हो गई। सुकोमल भावों की तरङ्गें न जाने कहाँ विलीन हो गईं। सुख का मोह न जाने कैसे लुप्त हो गया। न जाने कितनी यन्त्रणा सहकर उसके प्राण जायँगे। जो हत्या के लिए कटिबद्ध है, उससे दया की याचना करने से क्या लाभ! उसने कोई अपराध नहीं किया, किसी का अनिष्ट नहीं सोचा। पर आज न जाने किसके किस दोष से आज उसे मृत्यु का दण्ड भोगना पड़ेगा। ये लोग कौन हैं, ये कितने क्रूर, नृशंस और निर्दय हैं। किस तरह इन हत्यारों से वह अपनी रक्षा करे यही वह सोचने लगा। उसके पास कोई हथियार नहीं था। बाहर भाग निकलने का कोई साधन भी नहीं था। जिसको उसने प्रेम का जाल समझा था वह तो मृत्यु का जाल हो गया। वह बिलकुल घबड़ाकर भगवान् का स्मरण करने लगा। सहसा खट की आवाज़ हुई। उसने पीछे लौटकर देखा—दीवाल में एक दरार सी दिखाई दी। वह विस्मित होकर उसकी ओर देखने लगा। वह दरार क्रमशः बढ़ती गई। तब उसे मालूम हुआ कि उस दीवाल में कोई गुप्त दरवाज़ा है। साहस करके नरेन्द्र आगे बढ़ा। वहाँ उसने उसी युवती को देखा जिसका उसका विवाह हुआ था। उसने ओंठ पर उँगली रखकर उसे

CC-0. Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहने का इशारा किया और फिर उसे पीछे-पीछे आने को कहा। नरेन्द्र मन्त्रमुग्ध की तरह उसके साथ जाने लगा। कुछ दूर तक जाने के बाद फिर एक छोटा-सा दरवाज़ा मिला। दोनों उस दरवाजे को लाँघ कर बाहर आये। उस युवती ने कहा—"अब हम लोग यहाँ से भाग चलें। यहाँ रहने पर तुम्हें ज़रूर मार डालेंगे। उन्होंने धोखे से तुम्हारे साथ मेरा विवाह कर दिया है। पर कुछ भी हो, अब तुम मेरे पति हो; अब मैं तुम्हारी रक्षा करूँगी या तुम्हारे साथ प्राण दे दूँगी।" फिर दोनों वहाँ से भाग निकले। बड़ी देर तक दोनों नदी के किनारे दौड़ते-दौड़ते बहुत दूर चले आये। बिलकुल थक जाने पर दोनों वहीं बैठ गये। उस युवती ने कहा—"अभी हम लोगों का सङ्कट दूर नहीं हुआ है। वे लोग हम लोगों की खोज करते होंगे। कोई न कोई इधर अवश्य आयगा। अगर किसी तरह हम लोग किसी शहर तक पहुँच जाते तो हम लोगों की प्राण-रक्षा हो जाती। इसलिए चलो अब फिर चलें।" वे दोनों फिर दौड़े। कुछ दूर दौड़ने के बाद उस युवती ने कहा—"देखो, वे लोग आ रहे हैं।" नरेन्द्र ने पीछे मुड़कर देखा—सचमुच चार आदमी बड़ी तेज़ी से दौड़ते हुए आ रहे थे। नरेन्द्र ने कहा—"अब क्या किया जाय? वे लोग तो अब बिलकुल थक गये हैं। वे लोग हमें पकड़ लेंगे।" उस युवती ने कहा—"मैं अपने प्राण देकर तुम्हारी रक्षा करूँगी। बात यह है कि मेरे ही कारण वे लोग तुम्हारी हत्या करना चाहते हैं। यदि मैं ही न रहूँगी तो वे लोग तुम्हें व्यर्थ क्यों मारेंगे।" यह कहकर उसने नरेन्द्र के पैर छुए और फिर एकदम नदी में कूद पड़ी। नरेन्द्र घबड़ाकर चिल्लाने लगा—"बचाओ, बचाओ।"

सहसा किसी ने नरेन्द्र को धक्का देकर कहा—"उठ उल्लू, शराब पीकर यहाँ पड़ा है। हम लोग तुझे खोजते खोजते हैरान हो गये।" नरेन्द्रसिंह ने आँख खोलकर देखा कि उसके मित्र हरनामसिंह और विजयसिंह खड़े हैं। नरेन्द्रसिंह उठ खड़ा हुआ और एक दीर्घ निश्वास लेकर बोला—"अरे, तो वह केवल स्वप्न था, बिलकुल मिथ्या। प्रेम का वह उल्लास, भय का वह आतंक, मृत्यु की वह आशङ्का, त्याग का वह गौरव, सभी कुछ मिथ्या ही था।" पर उन्हें वह मिथ्या कैसे कह सकता है। उसने तो उन सबका अनुभव अवश्य किया है। वे सब क्षणिक अवश्य थे पर उनके अस्तित्व में वह कैसे सन्देह कर सकता है। इसी तरह संसार के सुख-दुःख, यश-अपयश, संयोग-वियोग भी तो अनित्य हैं।" व्यतीत हो जाने पर वह सभी स्वप्न की तरह ज्ञात होता है। कुछ भी हो, उसे तो ऐसा जान पड़ा कि इन कुछ क्षणों में ही उसने जीवन का यथार्थ रस पा लिया।

——

प्रभात में ही

सुश्री शबनम बाला

'जिसे देखा उसी ने मुँह फेर लिया; जिसे प्यार किया उसी ने ठुकरा दिया; जिसके आगे दामन पसारा उसी ने घृणा की; जिसको सजाना चाहा उसी ने लूट लिया।

निरन्तर चला चल रे मन! जहाँ श्मशान की-सी सुन्दरता पर नीरवता का दृढ़ प्रासाद अपनी अनोखी छटा दिखला रहा हो! जहाँ की रानी विद्युत् कभी-कभी काली-काली घनघोर घटाओं के घूँघट में से झाँककर मुस्करा देती हो! जहाँ भयानक घोर अँधेरी रात्रि अपनी रानी के आगमन की सूचना में ही हँस देती हो! जहाँ उलूक पक्षी सुहागरात मनाने के लिए किसी के विरह में तड़प-तड़पकर पुकार उठता हो और पवन तब अपने हृदय के उल्लास को न रोककर साँय-साँय की मधुर तानें छेड़ देता हो।

रे मन! यही है विश्राम का स्थान। यही है निराश की आस! यहीं है यौवन का खिला कुसुम! डाल दे यहीं डेरा।

क्या होगा अब आगे चलकर? यहाँ कौन आयेगा तुझसे मुँह फेरने! यहाँ कौन आयेगा तुझे ठुकराने! अरे! यहाँ भी तुझसे कोई घृणा करने आयेगा? विश्वास रख रे मन! यहाँ कोई तुझे लूटने न आयेगा।

पीड़ा रोना है और रोना गाना है। मत गा रे मन! संसार सुनेगा।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाभारत पर विचार

श्रीयुत चाँदमल अग्रवाल 'चन्द्र'

'सरस्वती' के गत नवम्बर, दिसम्बर ('४४) व फरवरी ('४५) के अङ्कों में पण्डित अम्बिकाप्रसादजी वाजपेयी ने 'महाभारत' पर एक नये दृष्टिकोण से विचार कर अच्छा प्रकाश डाला है। 'महाभारत के अन्य आलोचकों का जिस पहलू पर ध्यान नहीं गया', उस पहलू पर वृद्ध मनस्वी लेखक ने विचार किया है। नवम्बर के अङ्क का पूर्णांश व दिसम्बर के अङ्क का अर्द्धांश केवल यह साबित करने में लिखा गया जान पड़ता है कि 'महाभारत' एक व्यक्ति की कृति नहीं (अर्थात् वह केवल वेदव्यास-कृत नहीं है); अपितु तीन अथवा अधिक महानुभावों की संयुक्त रचना है—व्यास, वैशम्पायन व सौत्ति उग्रश्रवा आदि। जो हो, इस लेख में हमें उससे कोई प्रयोजन नहीं। यहाँ तो केवल इसी पर विचार करना है कि कुरुक्षेत्र के भयङ्कर युद्ध व नर-संहार के लिए उक्त विद्वान् लेखक ने जो महात्मा भीष्म व आचार्य द्रोण को तथा धर्मज्ञ श्रीकृष्ण* को दोषी ठहराया है सो कहाँ तक न्याय-सङ्गत है।

पण्डितजी का कथन है कि "धृतराष्ट्र झूठमूठ के राजा बना दिये गये और उस समय के भीष्म आदि मन्त्रियों ने भी धृतराष्ट्र को गद्दी से हटाकर युधिष्ठिर को सिंहासन पर बैठाने का अपने कर्तव्य का पालन नहीं किया। इसी से कुरुक्षेत्र का महा-भयङ्कर युद्ध हुआ।" इसका उत्तर उक्त कथन के ऊपर की ही सतरों में (उसी लेख में) निहित है। उद्योगपर्व के १४८वें अध्याय में द्रोणाचार्य जी के शब्दों से विदित होता है कि—"वीर पाण्डु छोटे भाई विदुर और बड़े भाई धृतराष्ट्र को राज्य का सब काम सौंपकर आप दोनों स्त्रियों को साथ ले वन को चले गये। बुद्धिमान् विदुर विनीत भाव से सिंहासन के नीचे बैठकर धृतराष्ट्र की सेवा करने और चँवर डुलाने लगे। सारी प्रजा भी महाराज धृतराष्ट्र को राजा समझकर उनका सम्मान करने लगी।" दासी-पुत्र होने से विदुर का तो सिंहासन पर कोई अधिकार था ही नहीं। इस तरह धृतराष्ट्र का एकाधिपत्य स्थापित हो चुका था। जब यों धृतराष्ट्र के राजत्व पद की जड़ें जम चुकी थीं; जब कि दुर्योधन की आदतें सबको अवगत थीं—उसके दुराग्रह से सब परिचित थे,—तब 'महाराज धृतराष्ट्र को गद्दी से हटाकर युधिष्ठिर को सिंहासन पर बैठाना'—भीष्मादि के लिए क्या इतना आसान था? वह भी तब, जब उनके लिए कौरव और पाण्डव दोनों ही समान थे? और क्या दुर्योधन—उसका राज्याधिकार छीने जाने पर—यों ही बैठ जाता? गृह-कलह की यह अग्नि—यह युद्धाग्नि क्या उसी समय नहीं भभक उठती? दुर्योधन किसी की माननेवाला नहीं था। वह अपनी ऐंठ का पक्का था—मृत्युपर्यन्त अपने शब्दों पर अड़ा रहा। उसे विदुर, भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य व कृष्ण आदि ने लाख समझाया, धृतराष्ट्र ने कितनी ही बार अनुनय-विनय की, माता गान्धारी ने हज़ार सर पटका, परशुराम और कण्व-से ऋषि-मुनियों ने हित-हित सुझाया, डराया-धमकाया—पर सब व्यर्थ। उसकी एक ही रट थी—

"बिना युद्ध न कदापि"—एक था यह ही उत्तर।

"दूँगा केशव! भूमि, सुई की नोक बराबर"॥

उसे अपने बल पर भरोसा था—घमण्ड था। वह सबकी उपेक्षा करता रहा। सन्धि-प्रयत्न के लिए विराट नगर में की गई राजाओं की सभा में विचार-विमर्श करते समय राजा द्रुपद ने यह पहले ही कह दिया था कि "दुर्योधन शान्ति से राज्य नहीं देगा। पुत्र के मोहवश धृतराष्ट्र भी उसी का अनुसरण करेंगे।"

भीष्मजी 'दुर्योधन के कार्यों की समय-समय पर केवल मौखिक आलोचना कर शान्त' नहीं हो गये—जैसा कि श्रीमान् वाजपेयी जी ने कहा है—वरन् कितनी ही बार उसका उन्होंने घोर विरोध भी किया। उद्योगपर्व इससे भरा पड़ा है। श्रीकृष्ण के सन्धि-दूत की अवस्था में दुर्योधन ने जो कुमन्त्रणा की थी उसके प्रतिवाद स्वरूप पितामह भीष्म कितने उत्तेजित हो गये थे और कितने ज़ोरदार शब्दों में दुर्योधन का उन्होंने विरोध किया था सो देखिए—

"धृतराष्ट्र! मालूम होता है, तुम्हारे इस मन्दमति पुत्र को भौत ने घेर लिया है। इसके सुहृद और सम्बन्धी कोई हित की बात बताते हैं तो भी यह अनर्थ को ही गले लगाना चाहता है। यह पापी तो कुमार्ग में चलता ही है, इसके साथ तुम भी अपने हितैषियों की बात पर ध्यान न देकर इसी की लीक पर चलना चाहते हो। तुम नहीं जानते हो कि यह दुर्बुद्धि यदि श्रीकृष्ण के मुक़ाबले में खड़ा हो गया तो एक क्षण में ही अपने सब सलाह-कारों के सहित नष्ट हो जायगा। इस पापी ने धर्म को तो एक-दम तिलाञ्जलि दे दी है। इसका हृदय बड़ा ही कुटिल है। मैं इसकी ये अनर्थपूर्ण बातें बिल्कुल नहीं सुन सकता।" ऐसा कहकर पितामह भीष्म अत्यन्त क्रोध में भरकर उसी समय सभा से उठकर चले गये।

(उद्योगपर्व)

सच तो यह है कि धृतराष्ट्र मोहवश पुत्र को—जो सारे झगड़े की जड़ था—त्याग नहीं सकते थे और न उनमें उसके हठ को दबाने की या उसके विरुद्ध जाने की शक्ति ही (मोहवश) रह गई थी। प्रत्येक बार 'तात', 'बेटा दुर्योधन', 'भैय्या दुर्योधन' आदि सम्बोधनों के द्वारा समझाने से माननेवाला वह जीव नहीं

* श्रीकृष्ण को इसी हद तक कि गीता-द्वारा उन्होंने अर्जुन को 'मारकूट' कर इस नर-संहार के लिए अग्रसर किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

। उसे तो श्रीकृष्ण की सलाह के अनुसार बलपूर्वक दबाया
ना ही उचित होता। राजा द्रुपद ने इस सम्बन्ध में भी
ना मन्तव्य पहले ही प्रकट कर दिया था—"दुर्योधन के
ने मीठे वचन तो कभी नहीं बोलने चाहिए। मेरा ऐसा
ार है कि वह दुष्ट मीठी बातों से क़ाबू में आनेवाला नहीं है।"
ष्ण की समयोचित सलाह कि—"कुल की रक्षा के लिए
पुरुष को, ग्राम की रक्षा के लिए एक कुल को × × × ×
देना चाहिए। इसलिए आप भी दुर्योधन को क़ैद
पाण्डवों से सन्धि कर लीजिए। इससे आपके कारण
सब क्षत्रियों का नाश तो नहीं होगा।"— सुनकर भी
ाष्ट्र ने वही नरमी का रुख़ धारण कर (विदुर से कहा—
! तुम परम बुद्धिमती गान्धारी के पास जाओ और उसे
लिवा लाओ। मैं उसके साथ दुरात्मा दुर्योधन को
ाऊँगा।")—उसे समझाने ही का असफल प्रयत्न किया—
ता का व्यवहार नहीं। और भीष्म, दोण, कृपादि—चूँकि
ाष्ट्र को राजा मान चुके थे,—मन्त्री की हैसियत से उचित
ा देते हुए उनकी आज्ञा का पालन करना या उनके लिए
ना-मरना अपना कर्तव्य समझते थे। उनका युद्धारम्भ पर
ाज युधिष्ठिर से यह कहना कि मनुष्य धन का दास है, धन
का दास नहीं, आदि भी यही अर्थ रखता है। राज्य
ों' का था सही; किन्तु उसका परित्याग कर भीष्म
किसी प्रकार का अधिकार फिर नहीं जताना चाहते थे।
अन्य (वेतनोपभोगी) मन्त्रियों की ही भाँति राज्य की
करते रहे।

यह कहना कि यदि दुर्योधनादि कौरव जानते कि भीष्म-द्रोण
ी ओर से न लड़ेंगे तो वे कभी युद्ध छेड़ने का साहस न करते;
कर्ण और शकुनि के बल पर युद्ध न जीता जायगा—
दुर्योधन को मालूम था'—एक भ्रम-मात्र है। दुर्योधन
नहीं था; वह अपने को पाण्डवों की अपेक्षा अधिक बल-
समझता था*। यद्यपि भीष्म-द्रोण उसकी सेना के
थे, तथापि केवल उन्हीं के भरोसे उसने युद्ध नहीं ठाना
क्योंकि उसके पितामह व गुरु उसकी ओर से लड़ने पर भी
पाण्डवों का ही भला चाहेंगे—यह वह जानता था।
बार उसने यह प्रकट रूप में कह भी दिया था।
रणार्थ—

सञ्जय के धृतराष्ट्र को पाण्डवों का सन्देश समझाने पर धृतराष्ट्र
सुनकर दुर्योधन ने उनसे कहा था—
महाराज! आप डरें नहीं। हमारे विषय में कोई चिन्ता
भी आवश्यकता नहीं है। हम काफ़ी शक्तिमान् हैं और
को संग्राम में परास्त कर सकते हैं। × × × × महाराज!
अब युधिष्ठिर भी मेरे प्रभाव से ऐसे डर गये हैं कि नगर न माँग-
कर केवल पाँच गाँव माँगने लगे हैं। आप जो कुन्ती-पुत्र
भीम को बड़ा बली समझते हैं, यह भी आपका भ्रम
ही है। आपको अभी मेरे प्रभाव का पूरा-पूरा पता नहीं है।
इस पृथ्वी पर गदा-युद्ध में मेरे समान कोई नहीं है, न
कोई पहले था और न आगे ही होगा। जिस समय रणभूमि
में भीम के ऊपर मेरी गदा गिरेगी, उस समय उसके सारे
अङ्ग चूर-चूर हो जायँगे और वह मरकर धरती पर जा पड़ेगा।
इसलिए इस महान् युद्ध में आप भीमसेन का भय न करें।
आप उदास न हों, उसे तो मैं अवश्य मार डालूँगा। × × ×
मैं तो कर्ण को भी भीष्म, द्रोण और कृपाचार्य के समान ही
समझता हूँ। संशप्तक क्षत्रियों का दल भी ऐसा ही पराक्रमी
है। वे तो अर्जुन को मारने में अपने को ही पर्याप्त समझते
हैं। अतः उसके वध के लिए मैंने उन्हें ही नियुक्त कर दिया
है। राजन्! आप व्यर्थ ही पाण्डवों से इतना क्यों डरते हैं?
बताइए तो, भीमसेन के मारे जाने पर फिर हमसे युद्ध करनेवाला
उनमें कौन है? यदि आपको कोई दीखता है तो मुझे बताइए।
शत्रुओं की सेना के तो पाँचों भाई पाण्डव तथा धृष्टद्युम्न और
सात्यकि—बस ये ही सात वीर प्रधान बल हैं। × × × फिर
हमारी हार कैसे होगी! अतः इन सब बातों से आप मेरी
सेना की सबलता और पाण्डवों की सेना की दुर्बलता समझकर
घबरायें नहीं।"

दूसरी बार भीष्म पितामह से—जब उनकी फटकार सुन
कर्ण शस्त्रादि रखकर सभा से चला गया था—उसने (दुर्योधन
ने) स्पष्ट शब्दों में कह दिया था—"पितामह! पाण्डव लोग और
हम अस्त्रविद्या, योद्धाओं के संग्रह तथा शस्त्र-सञ्चालन की फ़ुर्ती
और सफ़ाई में समान ही हैं और हैं भी दोनों मनुष्य जाति के
ही; फिर आप ऐसा कैसे समझते हैं कि पाण्डवों की ही विजय
होगी? मैं आप, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, बाह्लीक अथवा अन्य
राजाओं के बल पर यह युद्ध नहीं ठान रहा हूँ। पाँचों पाण्डवों
को तो मैं, कर्ण और भाई दुःशासन—हम तीन ही अपने पैने
बाणों से मार डालेंगे।"

क्या इससे बढ़कर और कोई स्पष्ट प्रमाण चाहिए? यदि
भीष्म, द्रोण और कृपाचार्य के बल-बूते पर ही उसने युद्ध छेड़ा
होता तो इन महारथियों के पतन के बाद वह अवश्य सन्धि के
लिए प्रयत्नशील होता पर जिसका उसे अत्यधिक भरोसा था,
उस कर्ण की मृत्यु के पश्चात् भी कभी उसने सन्धि का विचार
तक नहीं किया। दुर्योधन महाभारत-नाट्य का एक ज़बर्दस्त
पात्र है। अस्तु, इससे यह सिद्ध हो जाता है कि भीष्म और
द्रोण—दुर्योधन को अनेक बार समझाने बुझाने के बाद और अर्जुन
के पराक्रम की प्रशंसा करने के बाद दुर्योधन की 'टेढ़ी दुम' पर
लीकर—युद्ध करने से साफ़ इनकार कर देते, तब भी यह महा-
संग्राम तो होकर ही रहता; उलटे ये वीर-पुङ्गव युद्ध से विमुख

* कौरवों ने सबल होने पर ही उनका (पाण्डवों का) धन
पा—उद्योगपर्व (बलराम जी का कथन)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होने के कारण निन्दा के पात्र होते—'कायर' और 'नामर्द' की उपाधियों से विभूषित किये जाते। जिस प्रकार भगवान् राम को—यह जानते हुए भी कि सीता पवित्र है-निर्दोष है—लोकापवाद के कारण उसका त्याग—घोर मानसिक यातनायें सहकर—करना पड़ा था; उसी प्रकार भीष्मादि गुरुजनों को यह जानते हुए कि इसका पक्ष असत्य का है—दुर्योधन की ओर से अपकीर्ति के भय के कारण—कर्तव्य की प्रेरणा से युद्ध करना पड़ा। इतने पर भी श्री वाजपेयीजी अगर भीष्म पितामह और द्रोणाचार्य को 'अक्षम्य अपराधी' ठहराना चाहें तो आश्चर्य के सिवा और क्या हो सकता है?

दुर्योधन को अपनी मनमानी करने से न रोकने के कारण ही यदि भीष्मादि दोषी ठहराये जा सकते हैं तो हम कहेंगे कि इस अनर्थ के लिए सबसे बड़े दोषी पाण्डव हैं—स्वयं युधिष्ठिर हैं। ख़ुद यह जानते व मानते हुए कि—"यद्यपि धर्म और अधर्म नित्य रहनेवाले हैं, तथापि आपत्तिकाल में इनका अदल-बदल भी होता है" (उद्योगपर्व)—जुए में हारे हुए अपने वचन की रक्षा के लिए अपनी ही स्त्री के सतीत्व पर किये गए आक्रमणों को 'कायर' की भाँति सहते रहे—उसे नग्न करने के प्रयत्न को 'निर्लज्ज' की तरह देखते रहे—यद्यपि उस समय भी युद्ध करने की पाण्डवों में शक्ति थी। द्रौपदी उनकी धर्मपत्नी थी न कि ख़रीदी दासी। जुए में उसे दाँव पर लगाना ही अधर्म था—अनधिकार-चेष्टा थी। उस पर उन अधर्म-युक्त हारे हुए वचनों को उसके मानापमान से अधिक महत्त्व देना पहले सिरे की 'मूर्खता' थी—'नपुंसकता' थी। द्रोणाचार्य से यह प्रतिज्ञा करवाकर कि यदि अर्जुन को रणक्षेत्र से किसी प्रकार दूर ले जाया जाय तो युधिष्ठिर को वे पकड़ लायँगे ताकि वह पुनः जुए में उन्हें हराकर बिना युद्ध के ही अपने राज्य को कण्टक-रहित कर ले—दुर्योधन उनकी इसी 'मूर्खता' का फ़ायदा दुबारा उठाना चाहता था। अत्यधिक अत्याचार सहना अत्याचारी का हौसला बढ़ाना है—पाप है।

दुर्योधन केवल बलवान् ही नहीं था; अपितु एक छँटा हुआ राजनीतिज्ञ भी था। जब-जब भी उसने भीष्म पितामह और द्रोणाचार्य से यह कहा है कि 'मैंने आपके भरोसे पर युद्ध छेड़ा है। युद्ध के पहले यदि यह कह देते कि आप पाण्डवों से नहीं लड़ सकते तो मैं कदापि संग्राम न छेड़ता, आदि'—उन्हें उत्तेजित कर सिर्फ़ अपना मतलब साधने की ही इच्छा से। उसमें सचाई का अंश न्यून मात्रा में होता था। यह उसकी कूटनीति का सुन्दर उदाहरण-मात्र है। भीष्म पितामह तो अन्त तक यही चाहते रहे और प्रयत्न भी करते रहे कि आपस में मेल हो जाय—युद्ध न हो। मरते समय भी सब राजाओं को बुलाकर उन्होंने यही उपदेश दिया था कि—"तात! मेरे मरने के साथ ही इस युद्ध की समाप्ति कर दो, शान्त हो जाओ। मेरा कहा मानो; इसी में तुम्हारा और तुम्हारे कुल का कल्याण है। × × × अब तुम लोगों में परस्पर प्रेम-भाव बढ़े और बचे-खुचे राजाओं के जीवन की रक्षा हो। × × × सभी राजा एक दूसरे से प्रेमपूर्वक मिलें × × × यदि मोहवश या मूर्खता के कारण तुम मेरी इस समयोचित बात पर ध्यान न दोगे तो अन्त में पछताना पड़ेगा। सबका नाश हो जायगा।" परन्तु इसका दुर्योधन के मन पर कोई असर नहीं हुआ। उसे 'यह बात ठीक इसी तरह पसन्द नहीं आई, जैसे मरनेवाले मनुष्य को दवा पीना अच्छा नहीं लगता'। जब भीष्म जी ने देखा कि युद्ध रोकने के उनके सारे प्रयत्न असफल रहे तो कर्ण को अन्तिम सन्देश देते हुए उन्होंने फिर कहा—"अब मुझे निश्चय हो गया है कि पुरुषार्थ से दैव के विधान को पलटा नहीं जा सकता। पाण्डव तुम्हारे सहोदर भाई हैं, यदि तुम मेरा प्रिय करना चाहो तो उनके साथ मेल कर लो। मेरे ही साथ इस वैर का अन्त हो जाय और भूमण्डल के सभी राजा आज से सुखी हों।" क्या इससे बढ़कर कर्तव्य-पालन, आत्मत्याग और शान्ति की कामना हो सकती है? भीष्म जी आत्म-प्रशंसक नहीं थे, फिर भी उन्होंने अन्त में स्पष्ट रूप से यह कह ही दिया कि "कर्ण! मैंने शान्ति के लिए महान् प्रयत्न किया है; किन्तु इसमें सफल न हो सका। यह तुमसे सच कह रहा हूँ।" (भीष्मपर्व)

अतः यह निःसङ्कोच कहा जा सकता है कि भीष्म-सा चरित्र अन्यत्र दुर्लभ है। भीष्म पितामह और द्रोणाचार्य को महाभारत युद्ध के लिए दोषी ठहराना ठीक वैसे ही अनुचित होगा जैसे सूर्य को अन्धकार के लिए!

भीष्म और द्रोण से निबटने के बाद पण्डित जी श्रीकृष्ण पर बरस पड़े हैं। "गीता का उपदेश देने पर भी अर्जुन की मनोदुर्बलता देख,—'सब गुड़ गोबर न हो जाय' इस ख़याल से—अपना अमोघ अस्त्र—

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥

चलाकर उसे इस भयङ्कर नर-संहार के लिए प्रवृत्त कर दिया।" "परन्तु सोचना यह है कि क्या श्रीकृष्ण को उस समय इससे भिन्न कुछ करना चाहिए था? कृष्ण के मतानुसार कर्म ही श्रेष्ठ है। कर्म को त्यागकर केवल संन्यास आदि को जो लोग उत्तम मानते हैं, वे दुर्बल हैं; उनके कथन का कोई मूल्य नहीं।" × × × "लुटेरा छिपे रहकर धन चुराकर ले जाय अथवा सामने आकर बलपूर्वक डाका डाले—दोनों ही दशा में वह निन्दा का पात्र है? सञ्जय! तुम्हीं बताओ, दुर्योधन और उन चोर डाकुओं में क्या अन्तर है?" इस प्रकार पाण्डवों का सर्वस्व लुट जाने पर, जब कि धर्मराज का भी यह मत रहा है—

"अधिकार खोकर बैठ रहना यह महा दुष्कर्म है" (गुरुजी)—अर्जुन अपने कर्तव्य से, कायर की नाईं विमुख हो रहा था। उस समय उसे युद्ध के लिए उत्साहित न किया जाता तो क्या लँगोटी लगाकर वन में जाने दिया जाता?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'शान्ति' सुनने में 'युद्ध' की अपेक्षा भली लगती है, तथापि उसका महत्त्व हो सकता है। जल की अपेक्षा दूध मूल्यवान् है सही, किन्तु दूध में मछली जीवित नहीं रह सकती—उसे पानी ही चाहिए।

"यज्जीवन जीवन तो दुग्धीं वांचेल काय हो मीन ?"

(महाराष्ट्र कवि मोरोपन्त)

'जो दोष अवध्य का वध करने में है, वही वध्य का वध करने में भी है'—शास्त्र के इस मतानुसार यदि कृष्ण दुर्योधन उसके असत्-पक्षीय राजाओं के वध का आयोजन न करते तो पाण्डव क्या पाप के भागी न होते ?

सन्धि के लिए प्रस्थान करते हुए श्रीकृष्ण से द्रौपदी कहती है—"× × × हाय ! पाण्डव, यादव और पाञ्चाल वीरों के होते हुए मैं इन पापियों की सभा में दासी की दशा में पहुँच गई। ऐसी दशा में देखकर भी पाण्डवों को न तो क्रोध ही आया और न इन्होंने कोई चेष्टा ही की। इसलिए मैं तो यही कहती हूँ कि यदि दुर्योधन एक मुहूर्त भी जीवित रहता है तो अर्जुन की धनुर्धरता और भीमसेन की बलवत्ता को धिक्कार है। × ×" फिर अपने केशों को दिखाकर वह कहती है—"कमलनयन कृष्ण ! शत्रुओं से सन्धि करने की तो आपकी इच्छा है, किन्तु अपने इस सारे प्रयत्न में आप दुःशासन के हाथों से खींचे गये इस केश-पाश को न भूल जाना। यदि भीम और अर्जुन निर्बल होकर आज सन्धि के लिए ही उत्सुक हैं तो अपने महारथी पुत्रों के सहित मेरे वृद्ध पिता कौरवों से संग्राम करेंगे तथा अभिमन्यु के साथ मेरे पाँच पुत्र उनके साथ जूझेंगे। यदि मैंने दुःशासन की काली भुजा को कटकर धूलि-धूसरित होते न देखा तो मेरी छाती कैसे ठण्ढी होगी ? इस प्रज्वलित अग्नि को हृदय में लेकर प्रतीक्षा करते मुझे तेरह वर्ष बीत गये हैं। आज दुर्योधन के वाग्बाण से बिंधकर मेरा कलेजा फटा पड़ता है। अहो ! अभी ये धर्म की ही बातें करते हैं ?" इतना कहते-कहते फूट कर रो पड़ती है और उसके ओंठ काँपने लगते हैं। (उद्योगपर्व)

क्षत्रियों के त्याग की (युद्ध की) 'मुँह से भले ही प्रशंसा करें; किन्तु व्यवहार में समर्थन न करनेवालों' से हम यह पूछते हैं कि क्या अपनी गृह-देवियों के उपर्युक्त हृदय को बेधनेवाले वचन सुनकर भी केवल मौखिक विरोध कर—नर-संहार के भय से—कायरों की भाँति 'शान्ति-शान्ति की रट लगाये घर में बैठने की सलाह वे उन वीरों से करते हैं ! आज भी माँ-बहनों पर किये गये अत्याचारों की अनेक घटनायें आये दिन पढ़ने-सुनने में आती हैं; किन्तु वही सिर्फ़ शाब्दिक विरोध होकर 'शान्ति' स्थापित हो जाती है। यह हमारी कायरता की द्योतक है, उदारता की नहीं। जब तक 'मुँह से चाहे निन्दा कर (जैसा कि 'महाभारत' में अनेक स्थलों पर भीष्म, युधिष्ठिर, श्रीकृष्ण व अर्जुनादि ने की है)—ऐसे अत्याचारों के विरुद्ध युद्ध का व्यवहार में समर्थन' किया जाता था, तभी तक भारत अपनी इज़्ज़त बचाये हुए था। परन्तु 'मुँह से इसकी प्रशंसा करनेवाले, किन्तु व्यवहार में समर्थक' नहीं रहे, तभी से न यह इतना पतित हुआ है। तो भी श्रीकृष्ण ने उस नर-संहार को रोकने का काफ़ी प्रयत्न किया था। विदुरजी से बातचीत करते हुए उन्होंने इसे स्पष्ट कर दिया है कि—"इस प्रकार हित-प्रयत्न करने पर भी यदि दुर्योधन मेरी बात न माने तो भी मैं अपने कर्तव्य से उऋण हो जाऊँगा। 'श्रीकृष्ण सन्धि करा सकते थे तो भी उन्होंने क्रोध के आवेश में आये हुए कौरव-पाण्डवों को रोका नहीं' यह बात मूढ़-अधर्मी न कहें, इसलिए मैं यहाँ सन्धि कराने आया हूँ। दुर्योधन ने यदि मेरी धर्म और अर्थ के अनुकूल हित की बात सुनकर भी उस पर ध्यान न दिया तो वह अपने किये का फल भोगेगा।"—(उद्योगपर्व)

'महाभारत' में विश्व-दर्शन है। जहाँ एक ओर श्रेष्ठ पुरुषों के दोष बतलाये गये हैं, वहीं दूसरी ओर दुष्टों के भी गुण दर्शाये गये हैं। जिन श्रीकृष्ण के प्रत्येक शब्द पर दुनिया मिटती-बनती है, उन्हीं की 'शस्त्र न पकड़ने' की प्रतिज्ञा भङ्ग होती है; जिन धर्मराज के वचनों की सत्यता पर शत्रु तक विश्वास करते हैं, उन्हीं के मुख से 'नरो वा कुञ्जरो' निकलता है, जिस अर्जुन का जीवन युद्ध करते बीता उसके हृदय में मानवोचित कायरता या मोह का उद्भव होता है; दुर्योधन जैसे दुष्ट और पापी में भी अपनी बात पर अड़े रहने का पानी है—कायरता का लेशमात्र नहीं; कर्ण में जहाँ आत्म-प्रशंसा व कपट-मन्त्रणा आदि दोष हैं, वहीं शूरता के साथ ही अपने प्राण तक होमने की—दान दे देने की—उदारता है; भीष्म और द्रोण में सारे श्रेष्ठ गुण होने पर भी दुर्योधन को बल-प्रयोग-द्वारा अपने कुकर्मों से रोकने में कमज़ोरी है; तो युयुत्सु में सत्य की ओर निःसङ्कोच जा मिलने का साहस है। और सच पूछा जाय तो इसी में 'महाभारत' काव्य की और उसके पात्रों की सफलता भी है। इस अपूर्णता में ही, मानव की पूर्णता है। अनेक कथा-उपकथाओं-द्वारा इसमें धर्मज्ञान के साथ ही साथ संसार के अन्तर्बाह्य का दर्शन कराया है। अब उसे चाहे 'भानमती का पिटारा' समझें, चाहे 'विश्व का ख़ज़ाना'।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं गिर गया था

श्रीयुत भगवतीप्रसाद पान्थरी

मैं अपने कमरे में जाकर आहत-सा बिस्तरे पर लेट गया। मेरे हृदय में पीड़ा हो रही थी और मैं छटपटा रहा था। किन्तु किसी शारीरिक वेदना अथवा व्यथा से मैं पीड़ित था सो बात नहीं। वस्तुतः मेरी आकांक्षा पर आघात किया गया था और इसी कारण आकांक्षा को पोषित करनेवाला मेरा हृदय व्यथा से तड़प रहा था। कारण यह था कि तब मैंने बी० ए० पास किया था और मेरी इच्छा थी कि मैं आगे पढ़ूँ। एम० ए० पास करने की मेरी बड़ी प्रबल आकांक्षा थी जिसे मैं पूरा करना चाहता था, चाहे कितनी ही कठिनाइयाँ आगे आकर क्यों न पड़ें।

परन्तु पिताजी ने बिलकुल ना कर दी थी। वे क़तई नहीं चाहते थे कि मैं आगे पढ़ाई चलाकर व्यर्थ घर का पैसा बाहर फेंकता फिरूँ। कारण, वे जानते थे कि जितना पढ़ाई-बढ़ाई में ख़र्च करूँगा उतना भी शायद ही कमा सकूँगा। उनका कहना था कि आजकल पढ़ाई की कोई क़दर नहीं रह गई है और नौकरी मिलना दुश्वार होता जा रहा है। इसलिए सिर पर राख डालने के लिए पढ़ने से मतलब क्या? ऐसा पढ़ना तो शराब की भाँति अय्याशी के लिए पढ़ना और घर को बरबाद करना है। रही नौकरी-चाकरी की बात सो उसके लिए बी० ए० क्या कम है? उन्होंने मुझे स्पष्ट कहकर जता दिया कि यदि तुम्हारे भाग्य में ऐश्वर्य होगा तो बी० ए० होने से ही तुम्हें सौ-दो सौ की मज़े की नौकरी मिल जायगी और इस बात के प्रमाण में उन्होंने कई ऐसे बी० ए० गिना दिये जो उससे भी अधिक कमा रहे थे। साथ ही उन्होंने कई ऐसे एम० ए० पासवालों का नाम भी लिया जिनमें से कुछ बेकार थे और कुछ को पचास-साठ प्रतिमास ही मिलता था। परन्तु पिताजी जिस रूप से यह विवेचना कर रहे थे वह मेरे दिल में घर न कर सकी क्योंकि मैं तो उस समय पढ़ाई को आवश्यक समझता था और मेरी हार्दिक इच्छा थी कि मैं विद्वानों की श्रेणी में आ जाऊँ। नौकरी के सौ दो सौ रुपये का तो तब मुझे ध्यान ही न था। इस कारण मैं अपने विचार पर डटा रहा। किन्तु जब उन्होंने क़तई ना कर दी तो मैं दुःखी होकर अपने कमरे में जाकर बिस्तरे पर लेट गया।

मेरी आँखों में उस समय असहायता और लाचारी के आँसू भरे हुए थे। कुचली हुई आकांक्षा तड़पकर करवटें बदल रही थी। तभी माँ आई। माँ ने मेरी तरफ़ देखते ही ताड़ लिया कि मैं पिताजी के इनकार से ही दुखी होकर पड़ा हुआ हूँ। माँ ने रसोई से ही पिताजी की और मेरी पढ़ाई की बाबत हुई सारी बातें सुन रक्खीं थीं। इस तरह मेरे इस प्रकार पड़े रहने का सारा रहस्य उसे मालूम था।

माँ ने कोमलता से भीतर पाँव रखते ही पुकारा। उसकी आवाज़ में ममता की तरलता थी और ओठों पर सहानुभूति का अनुराग। वे बोलीं—"सुन्ने, बेवक्त कैसे पड़े हो, इस तरह...." यद्यपि मैं बी० ए० पास कर चुका था और स्वयं अपने आपको काफ़ी बड़ा समझने लगा था किन्तु माँ की निगाहों में मालूम पड़ता था मानों अब भी मैं उनके स्नेह से आविल गोद में नाचने खेलनेवाला एक खिलौना ही हूँ। इसी कारण माँ मुझे सुन्ने कहकर पुकारती थी। मैंने माँ की आवाज़ सुनते ही कहा—"कुछ नहीं।" और फिर चुप हो गया। वस्तुतः तब मेरे हृदय और मस्तक में नैराश्य का कुहासा-सा छाया हुआ था और इस कुहासे के अन्धकार से भाग निकलने के लिए किसी प्रकार आशा की किरण पाने की खोज में मैं व्यस्त था। उस समय मैं किसी से भी बात न करना चाहता था।

किन्तु माँ को मेरी अन्यमनस्कता में केवल बच्चे का स्वाभाविक प्यार ही दिखाई पड़ा और मेरी चुप्पी से नाराज़ होने के बजाय इससे और आकुल होकर माँ आगे सरक आई और मुँह पर की ओढ़ना हटाया और पहले माथे पर हाथ रक्खा, फिर कलाई टटोली। परन्तु जब बुख़ार या सिर-दर्द का कोई चिह्न न पा सकी तो हँसकर बोली—"क्या बात है.....कह न सुन्ने क्यों पड़े हो? माँ मेरी रोई हुई आँखों की ललाई देख चुकी थी और समझ चुकी थी कि इसकी इच्छा आगे पढ़ने की है और पिताजी इसका विरोध कर रहे हैं। किन्तु यह सब समझ बूझकर भी माँ मुझे चुप देख न समझने का अभिनय करती हुई गम्भीर होकर बोली—"तो लड़कियों की तरह रोने से क्या हो सकता है। अरे तू तो लड़का है.....हम स्त्रियों की तरह कच्चा दिल लेकर क्या करेगा?" और न जाने क्यों माँ के इन शब्दों को सुन मेरी आँखें चू पड़ीं। साथ ही मैंने देखा माँ की आँखें भी सजल हो रहीं थीं।

माँ मेरे सिरहाने पर आकर बैठ गई और अपनी साड़ी के अञ्चल से मेरे आँसू पोंछते हुए बोली—"तू पढ़ना चाहता है तो पढ़.....तेरे बाबा न देंगे ख़र्च तो मत दें, मैं अपने गहने-गुरिये बेंच-खोंचकर तेरे लिए भेज सकती हूँ।" फिर एक हल्का निश्वास छोड़ क्षण भर कुछ सोच माँ फिर बोली, "और यह कुछ है किसके लिए.....आज आयेगा तो तेरे ही काम आयेगा कल आयेगा तो तेरे ही—मुझे यह सब कुछ छाती पर रखकर थोड़े ही ले जाना है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मां तो इतना कहकर चुप हो गई—किन्तु मेरे आँसू बन्द न हुए। मैं रोता ही रहा। परन्तु इस समय मैं अपने दुःख के कारण न रो रहा था, प्रत्युत माँ की ममता ने मेरे हृदय के दुःख को अपनी उष्णता से तरल कर दिया था और वह स्नेह ही इस समय पानी बनकर मेरे दृगों से बाहर निकल रहा था। परन्तु मुँह से मैं कुछ भी न कह पा रहा था। माँ इन आँसुओं को मेरे निजी दुःख और आवेग का प्रतिफल ही समझ रही थी। वे आकुल हो माँ मुझे बहुत प्रकार से समझाने लगीं। फिर हिलते अधरों, भीगी आँखों को अपने स्नेह-तरल चुम्बनों से नहलाते हुए प्यार किया, आँसू पोंछे, पानी लाकर भीतर ही बिठलाकर मुँह धुलवाया और साथ ही खाना खिलाने को रसोई में ले गई।

उस समय मैं कैसा सुखी हो रहा था! मैंने मन ही मन परमात्मा को धन्यवाद दिया कि तेरी कृपा से दुःख और आपत्तियों में सान्त्वना देने के लिए माँ मौजूद है।

उस रोज़ फिर माँ ने खाना खाते समय पिताजी से मेरे आगे पढ़ने की सिफ़ारिश की, किन्तु पिताजी नहीं माने। उलटे माँ को ही डाँट खानी पड़ी कि पढ़ने-लिखने के मामले में वह क्या कर सकती है!

पर प्रश्न केवल पढ़ने-लिखने के बारे में जानने का थोड़े ही था। प्रश्न तो बच्चे की इच्छा या आकांक्षा पहचानने का था।

अस्तु, पिताजी नहीं माने—और मैं भी न माना।

× × ×

अन्ततः मैं कालिज को चल दिया। ख़र्च-वर्च का कोई सवाल न था। पिताजी नाराज़ थे ही। घर से ख़र्च आना बन्द हो गया। मैंने भी अपने स्वाभिमान में पत्र भेजने बन्द कर दिये और मन में ठान बैठा कि घर से कुछ नहीं माँगाऊँगा। कालिज आते समय माँ फिर मुझे अपने गहने दे रही थी किन्तु इस बात को सुनकर मेरी आत्मा झनझना उठी थी। मैंने माँ को समझा दिया कि वह चिन्ता न करे, राम की कृपा से सब ठीक हो जायगा। परन्तु जब माँ अड़ गई कि "कैसे होगा—?" तो मैंने झूठ-मूठ भुलावा देने के लिए कह दिया, "प्रोफ़ेसर मुझे बहुत प्यार करता है। उसकी चिट्ठी आई है कि मेरी फ़ीस माफ़ हो जायगी और मैं उनके यहाँ रहा करूँगा।" इस प्रकार माँ को विश्वास दिलाकर मैं कालिज आया।

किन्तु कालिज पहुँचने पर मैंने अपने को बड़ी ही विचित्र दशा में पाया। वास्तविकता जब सामने दिखलाई दी तब मालूम हुआ कि कोरे अभिमान से अब काम नहीं चलेगा। मुझे तो मुझे कालिज में नाम लिखाने की फ़ीस का ही सामना करना पड़ा। ख़ैर, एक दोस्त से उधार लेकर वह तो कर लिया। परन्तु अब हर महीने बारह रुपये पढ़ाई की फ़ीस और पाँच रुपये के क़रीब होस्टल की फ़ीस का और फिर खाने-पीने के ख़र्च आदि का सवाल उठा। बड़ी मुसीबत थी। सोचा पिताजी को लिख दूँ; क़लम हाथ में उठाई; किन्तु स्वाभिमान ने आगे आकर हाथ रोक दिया।

किसी तरह १५) रुपये के एक ट्यूशन का प्रबन्ध हो गया। अब १२) रुपये मासिक फ़ीस की कठिनाई तो दूर हो गई। रहा कमरा, वह भी एक मित्र के साथ रहकर काम चलाने लगा। १५) रुपये में से ३) रुपये कुल बच पाते थे और उन्हीं ३) रुपयों में किसी तरह काम चलाना था। इसी बीच परमात्मा की कृपा से संस्कृत कालिज के एक लड़के के साथ, जो मेरे ज़िले का ही रहनेवाला था, भेंट हो गई। वह भी ग़रीब था और स्वयं अपने कमरे में अपना भोजन बनाया करता था। मैंने भी उसके साथ ही खाने-पीने का प्रबन्ध कर लिया।

हम दोनों मिलकर अपने दो-दो, तीन-तीन रुपये मिलाकर सामान लाते और साथ-साथ खाते-पकाते। पाँच-छः रुपये में कठिनता से लकड़ी से लेकर आटा-दाल का सामान जुट पाता। दशा यह थी कि जब हम खाने बैठते तो मेरी नज़र भात की देगची पर ही रहा करती और मैं सोचा करता—"यदि यह थोड़ा-सा भात मुझको और दे देता.....!" किन्तु वह बेचारा मेरे भाग का आधा पहले ही दे चुका था। अतः एक आध करछी भी मुझे और कहाँ से मिल सकती थी और फिर उसकी दशा भी तो मेरे ही जैसी थी। मैं अधूरी इच्छा लेकर ही उठ खड़ा होता। अभिप्राय यह कि मेरा पेट कभी भर ही न पाता और खाने की लालसा खाने के बाद भी बनी ही रहती। इस पर एक और कठिनाई यह थी कि इसी साल जब ख़र्च-वर्च की कमी थी—भूख बढ़ चली थी। वैसे जब काफ़ी रुपये घर से आया करते थे तब भूख-प्यास का कहीं पता भी न चलता था। परन्तु अब दशा और ही थी। मेरी भूख नित्य और प्रत्येक समय बनी रहती; यहाँ तक कि जब होस्टल में मैं लड़कों की खाई हुई थालियों पर लापरवाही से छोड़ा हुआ भात और रोटी की जूठन देखता तो मेरा मन ललच उठता। मैं यह भी सोचने लगता कि "इनके पास इतना फेंकने को भी है और एक मैं हूँ कि पेट भी भरना कठिन हो रहा है।" इस समय मैं भूखा ही फिरा करता और कहीं भी—होस्टल के रसवाड़ों या रेस्टोरां में—खाने के किसी सामान को देखकर ललच उठता। अब मुझे पता लगा कि भूख क्या चीज़ है। मैं उन दिनों को याद करता जब घर पर माँ पेट भर जाने पर भी खाना खिलाते समय स्नेह के मारे 'एक रोटी और, एक रोटी और' कहकर एक प्रकार से मुझे चिढ़ा डालती थी। मेरी परस्थिति भूख से भयङ्कर हो गई थी। कभी तो मुझे दो मुट्ठी भर चूड़ों पर ही गुज़र करनी पड़ती जो घर से कालिज आते समय माँ ने मेरे सामान के साथ रख दिये थे। कालेज आने पर मैंने उन चूड़ों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को प्राण की भाँति सँभाल कर रक्खा था जब मुझे बहुत भूख लगती थी तब चुपके से कमरे के साथी की दृष्टि बचाकर लेटे-लेटे मुँह ढाँक कर उन्हें खाता था।

इस स्थिति ने मेरी विचित्र दशा कर दी। उन भिखमङ्गों और भूखे बच्चों को, जिन्हें मैं पहिले सहानुभूति की आँखों से देखा करता था, होस्टल की जूठन की ढेरी के आसपास मँडराते देखकर मुझे एक प्रकार का भय-सा होने लगा था। बात यह थी कि उनकी स्थिति में मुझे अपनी दुरवस्था की झलक दिखलाई देती थी। भूख ने ही तो उन बेचारों को इस अवस्था में पहुँचाया है। और मैं सोचता कि मेरी भी यदि यही दशा रही तो वहीं मैं भी इन्हीं की तरह.....। इससे आगे सोचने से मुझे भय लगता था। मैं वहाँ से हट जाता। मुझमें ग़रीबी के इन दृश्यों को देखने का साहस ही नहीं रह गया था।

यह दशा थी मेरी। किन्तु फिर भी अपने साथियों में किसी को ज़रा भी मैंने अपनी इस हालत का पता न लगने दिया। मुझे दूसरों के सामने गिड़गिड़ाना पसन्द न था—मैं अपने स्वाभिमान को गिरने न देना चाहता था।

एक दिन की बात है—कालिज की एक किताबों की दुकान पर बहुत से लड़के किताबें ख़रीद रहे थे। उन्हें देख मेरा जी भी किताबों को देखने के लिए ललच उठा। ख़रीदने के लिए पैसे तो थे नहीं, पहिले सोचा कि वहाँ जाकर क्या करूँगा, परन्तु मन न माना और मैं दुकान में पहुँच ही गया। कुछ लड़के किताबें ख़रीद रहे थे और कुछ केवल दाम पूछकर लौटते जा रहे थे। मैं भी दुकान की एक तरफ़ जाकर खड़ा हो गया और किताबें देखने लगा। अचानक मेरे पैरों से एक काग़ज़-सा टकराया। मैंने उधर देखा, दस रुपये का एक नोट था।

मेरा शरीर सिहर उठा और यद्यपि मेरा हृदय धड़क रहा था, मैंने उस नोट को पैर से ही ऊपर उठाकर चुपके से हाथ में छिपा लिया। उस समय यह निश्चय न कर सका कि इस नोट का क्या करूँ—अपने पास रख लूँ या दुकानदार को वापस कर दूँ।

मैं इसी सोच-विचार में था कि एक लड़का दुकान में आया और उसने लाला से पूछा कि क्या उसका एक दस रुपये का नोट उनके यहाँ छूट गया था? लाला ने 'ना' में जवाब दिया। मैं यह सब सुन रहा था, किन्तु मैं अपनी ही उधेड़बुन में था। दस रुपये उस समय मेरे लिए कम न थे। रुपये के नोट से मैं कई दिन तक अपनी भोजन-सम्बन्धी को दूर कर सकता था।

किन्तु दूसरी ओर इस नोट से मेरे हृदय पर कुछ सा प्रभाव पड़ रहा था। ज्ञात होता था जैसे वह नोट एक शीशे का डला है जो अपने बोझ से मेरे दिल को है और जिसके बोझ का दबाव न सह सकने के कारण मेरा तेज़ी से धड़कता हुआ हाँफ-सा रहा है।

मैं इसी द्वन्द्व में था कि वह लड़का दुकान छोड़कर दिया। सहसा किसी अप्रत्यक्ष शक्ति ने मेरे द्वन्द्व में पड़े को धक्का-सा दिया और पता नहीं क्या विचार मेरे हृदय में कि मैं मन्त्रमुग्ध की तरह खिंचा हुआ-सा जिधर वह लड़का था उसी ओर चल दिया। मैंने उसे पहचान लिया बाहर आते ही मैंने देखा कि वह पास ही अपने एक दोस्त के खड़ा है। मैं सीधा उसके पास गया और उससे "दुकान में क्या नोट तुम्हारा ही छूट गया था?" 'हाँ' कहा और मैंने झट से उसके हाथ में वह नोट थमा और हलके पैरों अपने कमरे को लौट आया। उस समय शरीर से पसीना छूट रहा था।

नोट लौटा देने के बाद यद्यपि मेरे मन का बोझ काफ़ी हो गया था परन्तु फिर भी मेरे हृदय को पूरी शान्ति नहीं थी। बारम्बार मेरे हृदय में यह विचार कर ठेस लगती थी कि "आख़िर तूने वह नोट चुपके से उठाकर रख ही तो लिया और उसका उपयोग करने की भी सोच ली थी। इसलिए तू तो गिर चुका.....।"

किन्तु क्या आपका हृदय भी यह समझता है कि मैं सचमुच गिर गया था.....और आप यह नहीं सोचते कि प्रत्येक मनुष्य स्वभावतः आत्मा के निर्देशों का अनुगामी होता है। अत्यन्त भाविक परिस्थितियों में ही मनुष्य को गिरना पड़ता है। हमको सँभलने के लिए बहुत कम अवसर मिलते हैं।

यह बात ठीक भी हो—तब भी मैं इसे भुला नहीं पाता कि उस समय मैं गिर गया था, यद्यपि गिरते ही भगवान् ने मुझे सँभाल अवश्य लिया।

——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

'विकस्वर' अलङ्कार का द्वितीय भेद

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पण्डित काशीनाथ रा० तिलक

काव्य के अङ्गभूत उसकी शोभा बढ़ानेवाले अलङ्कार का काव्य में विशेष महत्त्व है। यह तो नहीं कहा जा सकता कि अलङ्कार के विना काव्य का निर्माण नहीं किया जा सकता पर निर्विवाद सत्य है कि काव्य में चमत्कार उक्ति-वैचित्र्य से उत्पन्न होता है। वेद में भी उपमा, रूपक आदि अलङ्कार पाये जाते हैं। जिस प्रकार प्राचीन वैदिक छन्दों के लक्षण बताने-वाला पिङ्गलसूत्र नाम का ग्रन्थ उपलब्ध है उसी प्रकार प्राचीन वैदिक अलङ्कारों के लक्षण बतानेवाला कोई ग्रन्थ इन दिनों उपलब्ध नहीं है। भरत मुनि का नाट्यशास्त्र ही इस विषय का प्रथम ग्रन्थ कहा जा सकता है। इसमें उपमा, दीपक, रूपक और यमक—इन चार अलङ्कारों का ही निर्देश किया गया है। इसके बाद अग्निपुराण में ७ शब्दालङ्कारों और १५ अर्थालङ्कारों का उल्लेख मिलता है। तदनन्तर विक्रम की पञ्चम शताब्दी से सप्तदश शताब्दी तक अलङ्कारों की संख्या में वृद्धि प्रारम्भ होती है और बढ़ते-बढ़ते उनकी संख्या, पण्डित राज के समय में, १८० से ऊपर पहुँच जाती है।

अलङ्कारों की संख्या या उनकी नवीनता के सम्बन्ध में आचार्यों में सदा से मतभेद चला आया है। यदि एक आचार्य किसी नये अलङ्कार की सृष्टि करता है तो दूसरा आचार्य उसके सिद्धान्त का खण्डन करता हुआ उक्त अलङ्कार का किसी अलङ्कार के अन्तर्गत होना सिद्ध करता है।

'विकस्वर' का उल्लेख सर्वप्रथम जयदेव ने अपने 'चन्द्रालोक' में किया है। अप्पय दीक्षित ने भी 'कुवलयानन्द' में उसको स्थान दिया है। इसका लक्षण सेठ कन्हैयालाल पोद्दार ने अपने 'काव्य-कल्पद्रुम' के 'अलङ्कारमञ्जरी' नामक द्वितीय भाग में इस प्रकार दिया है—

"विशेष का सामान्य से समर्थन करके फिर उस सामान्य का विशेष-द्वारा समर्थन किये जाने को 'विकस्वर' अलङ्कार कहते हैं।" दूसरा समर्थन उपमान-वाक्य द्वारा या 'अर्थान्तरन्यास'-द्वारा किया जाता है।

यथा—बड़ी विपति पाण्डवन पै खोई हारि सुबाम।
दुख न गनत कछु सतपुरुष ज्यों हरिचँद, नल, राम।

पूर्वार्ध में एक विशेष वर्णन है। "दुख न गनत कछु सतपुरुष" इस सामान्य से उसकी पुष्टि की गई है। उस सामान्य की पुष्टि 'ज्यों हरिचँद, नल, राम' इस विशेष से की गई है।

पर रुय्यक ने अपने 'अलङ्कारसर्वस्व' में इस प्रकार के उदाहरण 'अर्थान्तरन्यास' में दिखाये हैं। पण्डितराज ने 'विकस्वर' के प्रथम प्रकार को 'उदाहरण' अलङ्कार के और द्वितीय प्रकार को 'अर्थान्तरन्यास' के अन्तर्गत माना है। वस्तुतः 'विकस्वर' अलङ्कार 'अर्थान्तरन्यास' और 'उदाहरण' के अन्तर्गत ही है। (अ० मं० पृष्ठ ३२४)

यदि ये आचार्य—रुय्यक, पण्डितराज और पोद्दार—विकस्वर की स्वतन्त्र सत्ता स्वीकार नहीं करते हैं तो मेरा उनसे मतभेद है। कारण, 'विकस्वर'—विकसनशील—नाम ही उसकी स्वतन्त्रसत्ता की घोषणा कर रहा है। अर्थान्तरन्यास और उदाहरण में समर्थन केवल एक बार होता है पर विकस्वर में एक बार के समर्थन से सन्तुष्ट न होकर उसका दुबारा समर्थन किया जाता है। इस प्रकार द्विवार समर्थन ही उसको 'अर्थान्तरन्यास' और उदाहरण से पृथक् करता है*।

जब प्रबल उक्तियों के आधार पर 'उदाहरण' और 'अर्थान्तरन्यास' को 'दृष्टान्त' से पृथक् आचार्यों ने माना है† तब दुबारा समर्थन-रूपी प्रबल युक्ति के बल पर 'विकस्वर' को 'अर्थान्तरन्यास' और 'उदाहरण' से पृथक् मानना ही युक्तियुक्त प्रतीत होता है। अन्यथा द्विवार के समर्थन का स्वारस्य ही नष्ट हो जायगा। इससे पाठकों को अवश्य यह निश्चय हो गया होगा कि 'विकस्वर' एक स्वतन्त्र अलङ्कार है और उसे अन्य अलङ्कारों के अन्तर्गत नहीं माना जा सकता।

कुछ दिन हुए, मैं श्रीमद्भागवत का स्वाध्याय कर रहा था। उसके प्रथम स्कन्ध के तृतीय अध्याय के १ से २८ श्लोकों को पढ़कर 'विकस्वर' अलङ्कार की ओर मेरा ध्यान आकृष्ट हुआ। पर जब मैंने 'अलङ्कार-मञ्जूषा' देखी तब इस प्रकार का उदाहरण मुझे उसमें न मिला। बात जहाँ की तहाँ रह गई। कुछ दिन बाद मन में कल्पना उठी यदि 'विकस्वर' के द्वितीय भेद का लक्षण निम्नलिखित प्रकार से किया जाय तो ये श्लोक उसके उदाहरण रूप में उपस्थित किये जा सकते हैं। वह लक्षण यह है—'सामान्य का विशेष से समर्थन करके उस विशेष का सामान्य-द्वारा समर्थन किये जाने पर 'विकस्वर' का द्वितीय भेद होता है।' उदाहरण के लिए भागवत के उक्त श्लोक उपस्थित किये जा सकते हैं।

उन श्लोकों का भावार्थ यह है कि परपुरुष अर्थात् श्रीकृष्ण ने माया के विशुद्ध सत्त्वगुण का आश्रय लेकर महदादि गुणों से षोडशकलावाला पौरुष रूप धारण किया। प्रलय काल में वह योगनिद्रा से मग्न शेषशय्या पर शयन कर रहा था। उसकी नाभि से ब्रह्मा की उत्पत्ति हुई। उसके ही अङ्गों में चौदह लोकों की कल्पना की गई। उस विराट् रूप को योगीजन दिव्य चक्षु से देखते हैं। वह अव्यय बीज नाना अवतारों का कारण

---

* देखो 'अलङ्कार-मञ्जूषा', पृष्ठ ७८, ३१५, ३२४
† देखो 'अलङ्कार-मञ्जूषा', पृष्ठ ३२१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। उसने ही ब्रह्मा, बराह, नारद, नर-नारायण, कपिल आदि रूपों को धारण किया। ये उपर्युक्त अवतार उसी परम पुरुष के अंश (कला) के हैं। भगवान् श्रीकृष्ण असुरों से पीड़ित संसार की युग-युग में अवतार लेकर रक्षा करते हैं।

पुरुषोत्तम या श्रीकृष्ण उस भगवान् का नाम है जो माया के शुद्ध सत्त्वगुण का आश्रय लेकर संसार की रक्षा के लिए हरि रूप में योगनिद्रा लेता है। "यही नाना अवतारों का कारण है।" यह सामान्य कथन है। इसका समर्थन विशेष के द्वारा किया गया है। अर्थात् "नर-नारायण, नृसिंह, परशुराम आदि के रूप में उसी ने अवतार लिया है। इस विशेष की पुष्टि फिर सामान्य के द्वारा हुई है। अर्थात् "भगवान् कृष्ण असुर-तापित जग की रक्षा युग-युग में अवतार लेकर करते हैं।"

इस प्रकार यह 'विकस्वर' का द्वितीय भेद हो जाता है। दोनों के ऊपर किये गये लक्षणों में भिन्नता विद्यमान है। इस कथन की पुष्टि में 'पर्याय' अलङ्कार के दोनों भेदों के लक्षण उपस्थित किये जा सकते हैं। उनमें भी इसी प्रकार की भिन्नता विद्यमान है। 'पर्याय' अलङ्कार वह है जिसमें एक वस्तु की क्रमशः अनेक में स्वतः स्थिति हो अथवा दूसरे के द्वारा की जाय। अनेक वस्तुओं की एक आधार में स्वतः स्थिति हो अथवा दूसरे के द्वारा की जाय, उसे 'द्वितीय पर्याय' कहा गया है। यदि पर्याय के उपर्युक्त दोनों भेद विद्वानों के निकट आदृत हैं तो मेरे द्वारा ऊपर दिये गये 'विकस्वर' के दोनों भेदों को भी स्वीकार कर लेने में उन्हें कोई आपत्ति न होनी चाहिए। यह केवल 'विकस्वर' अलङ्कार की संख्याभेद में वृद्धि है। ऐसा पहिले भी होता रहा है। अलङ्कार-शास्त्र के विद्वानों को यह बात अज्ञात नहीं है। आशा है, पूर्वाचार्यों का पथानुसरण समझकर विद्वान् मेरी इस धृष्टता को क्षमा करेंगे और इस पर अपना-अपना अभिमत प्रकट करने की कृपा करेंगे। श्रीमद्भागवत के उक्त श्लोकों का भाव केवल एक दोहे में इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है जो मेरे निर्देशित विकस्वर अलङ्कार के द्वितीय भेद का उदाहरण बन सकता है—

अवतारन को बीज विभु सचराचर पति कोय।
राम, कृष्ण, नरसिंह ह्वै हरि रक्षत जग जोय॥

दीपक की मैं कम्पित ज्वाला!

श्रीयुत देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'

राजमहल में जलनेवाले दीपक की मैं कम्पित ज्वाला;
देखा करती सामन्तों का वैभव-विप्लव सदा निराला।

यहाँ दान का और धर्म का सदावर्त सबको ललचाता;
किन्तु जगत् क्या जाने क्यों यह मोहक नाटक खेला जाता!
सामन्तों की स्पर्द्धा को कब, सीधा-सादा मानव जाने;
निज श्रेणी के सामन्तों पर इनका घातक लाघव जाने!
दान-धर्म के अहङ्कार की विस्फोटक यह अन्तर्ज्वाला;
राज-महल में जलनेवाले दीपक की मैं कम्पित ज्वाला।

घोर नीचता और कुटिलता, सामन्तों की अपनी थाती,
पैसों से देवत्व प्राप्त कर फूली रहती इनकी छाती।
वह देवत्व कि जिसमें रहती सदा आसुरी ही अभिलाषा,
कुचली जाती निर्ममता से जहाँ सुनहरी सबकी आशा।
रोनेवालों पर हँसता है इनका अन्तस्तल मतवाला,
राजमहल में जलनेवाले दीपक की मैं कम्पित ज्वाला।

भालों की नोकों पर होती, यहाँ लगानों की भरपाई,
जिसके बल पर बजती रहती इनके महलों में शहनाई!
और जाम पर जाम ढुलकते साक़ी के हाथों मतवाले,
रुनझुन-रुनझुन पायल बजते मस्ती को उकसानेवाले।
दूर खेत पर खड़े कृषक पर समझें क्या मस्ती की ज्वाला;
राज-महल में जलनेवाले दीपक की मैं कम्पित ज्वाला।

इन महलों से दूर वनों में झोपड़ियों में रहनेवाले
दीन कृषक क्या समझ सकेंगे जीवन के ये रङ्ग निराले!
भूखे-नङ्गे रहकर वे तो पशुओं के सँग स्वेद बहाते,
खेतों में निज हल को लेकर अपना जीवन सदा खपाते।
उन्हें क्या पता, उनके श्रम से निर्मित होती यह मधुशाला;
राज-महल में जलनेवाले दीपक की मैं कम्पित ज्वाला।

देख रही मैं इन महलों की, युग-युग से मोहक मधुशाला,
देख रही मैं इन महलों के सामन्तों की अन्तर्ज्वाला।
सामन्तों की रङ्गीनी में भोग-विलास उभर इतराता,
आत्मशक्ति, अभिमान सभी कुछ इसमें ही तो मिटता जाता।
खोकर यह सब पिटता इनकी मानवता का चरम दिवाला,
राज-महल में जलनेवाले दीपक की मैं कम्पित ज्वाला।

सामन्तों की मनोदशा पर मुझको सदा तरस है आता,
देख रही, दुश्मन के भय से, नहीं नींद से इनका नाता।
खून चूसते ये अधीन का, अँगुली कौन उठानेवाला!
इनके दुख पर हँसती दुनिया, किन्तु न कोई रोनेवाला।
इतनी विषम कहानी इनकी, दिल में सदा प्रकम्पित ज्वाला,
राज-महल में जलनेवाले दीपक की मैं कम्पित ज्वाला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसाद का कवि

पण्डित चन्द्रबली पाण्डेय, एम० ए०

प्रान्तदर्शीप्रसाद की प्रतिभा को परख पाना इस हेतु कठिन गया है कि वस्तुतः हम उनके 'पौस्तक' ज्ञान को बहुत कुछ तिभ' ज्ञान मान बैठे हैं और उनकी अनुमिति को पक्की नुभूति समझते हैं। यही कारण है कि जब कभी प्रसाद को तक की भूमि पर खड़ा किया जाता और उनकी आधार-शिला ज्ञान की टाँकी से देखा जाता है तो वह ठोस नहीं ठहरती एक ही ठोकर में छितरा जाती है। कहते हैं कि प्रसाद ने 'कामायनी' में काव्य को उगा दिया है और ऐसा रहस्य खा दिया है कि बस कुछ पूछिए न, क्या कोई ऐसी रचना गा! ठीक है, परन्तु हमारा भी कुछ कहना है। आपकी में 'कामायनी' चाहे जो कुछ हो पर हमारी दृष्टि में तो भी 'कुमारसम्भव' की भाँति 'मानव' सम्भव ही है। 'मानव' ही कल्याण हुआ वा नहीं जो 'कुमार' से, इसे आप भी भाँति देख सकते हैं और यह भी बता सकते हैं कि प्रसाद की दृष्टि में शाश्वत आनन्द कहाँ हैं। किन्तु सच तो कहें इस 'सारस्वत-नगर' की सुख-शान्ति के लिये प्रसादजी की क्या है! महाकवि कालिदास ने कुमारसम्भव का अथ स्ति' से किया था और पर्वतराज हिमालय में 'हिम' को 'दोष' रूप में देखा था। प्रसाद जी से और कुछ तो हुआ नहीं, इतना अवश्य उनसे हो गया कि उनकी नियति-रचना मायनी का श्रीगणेश 'हिम' से हो गया। क्रान्तदर्शी 'अस्ति' वाणी प्रान्तदर्शी 'हिम' की वर्षा बन गई। प्रसाद जी हते हैं—

"हिम-गिरि के उत्तुङ्ग शिखर पर
बैठ शिला की शीतल छाँह,
एक पुरुष, भीगे नयनों से,
देख रहा था प्रलय-प्रवाह!"

देखने में तो यह पद्य बहुत सुन्दर है। 'हिम' अलग 'गिरि' गया, मानों इस अलगाव से ऊँचाई को और भी ऊँचा दिखाया है और 'हिम' तथा 'गिरि' दोनों को अलग-अलग महत्त्व गया है। यही बात 'प्रलय-प्रवाह' के विषय में भी जा सकती है और कहा जा सकता है कि प्रसाद जी बताना हते हैं कि वह पुरुष 'भीगे नयनों' से केवल 'प्रवाह' ही नहीं रहा था अपितु 'प्रलय' भी देख रहा था। इसी से तो के कवि ने 'प्रलय-प्रवाह' न लिखकर 'प्रलय प्रवाह' लिख ! ठीक है, और ठीक है यह भी कि इसी से कवि ने शिला की शीतल छाँह' का व्यवहार किया है। कारण कि गहरी देख स्थिर रूप से 'शिला की शीतल छाँह' में ही हो है कुछ इधर-उधर धूप में नहीं। कोई भी व्यक्ति इसी गङ्गाजी की बाढ़ भी तो देखता है? सब सही और यह भी सही कि इसी 'प्रवाह' के प्रभाव से 'भीगे नयन' भी काव्य में उतर आए हैं। सब विधि तो बैठ गई, और बज गई 'श्रद्धा' की दुन्दुभी भी चारों ओर। किन्तु सच तो कहें यह सब कुछ आपने कहा है किस मुख से? 'श्रद्धा' वा 'बुद्धि' के? यदि 'श्रद्धा' के मुँह से कहा है तो ऐसे श्रद्धालु बने रहें और यदि 'बुद्धि' के 'मुख' से सुना है तो कुछ हमारी भी सुन लें। हमारा भी इस विषय में कुछ कहना है।

स्मरण रहे, कालिदास ने 'हिम' को 'हिमालय' में दोष की दृष्टि से देखा है और अपनी दृष्टि से अपने ढङ्ग पर उसका समाधान भी कर दिया है और ऐसा सजीव समाधान कर दिया है कि वह सभी को रुच गया है। भला कौन ऐसा अभागा पण्डित होगा जो जब-तब उसका व्यवहार न करे।

'एको हि दोषो गुण सन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः' को आप 'किसी के भी मुख से सुन सकते हैं'। पर यदि नहीं सुन सकते हैं तो इसका समाधान कि कवि कालिदास ने 'हिम' को 'दोष' क्यों ठहराया। क्या हिमालय की शोभा 'हिम' से नहीं होती? निवेदन है—होती है और खूब होती है। परन्तु ध्यान से देखिए तो पता चले कि प्रसङ्ग 'सौभाग्य' का है कुछ किसी 'शोभा' का नहीं, ध्यान रहे, हिम दृष्टि को शोभाकर है कुछ सृष्टि को नहीं। किन्तु प्रसाद जी करते क्या हैं? यही न कि इस 'हिम' को अपना अथ बनाते हैं? वादी बोल उठेगा, हाँ। तभी तो हमारा कहना है कि प्रसादजी कवि अशिव को शिव और असुन्दर को सुन्दर बनाता है। और यहाँ तक कि 'कामायनी' में किसी प्रकार का लिङ्ग-भेद ही नहीं रह जाता। सब सही और यह भी सही कि इसी अद्वयता को दिखाने के लिए प्रसादजी के कवि ने यह भी लिख दिया है—

"नीचे जल था; ऊपर हिम था,
एक तरल था, एक सघन;
एक तत्त्व की ही प्रधानता
कहो उसे जड़ या चेतन।"

किन्तु इस 'ऊपर हिम था' का अर्थ हुआ क्या? किसके ऊपर? 'हिम गिरि के उत्तुङ्ग शिखर' के ऊपर ही न? क्योंकि उसी की 'बैठ शिला की शीतल छाँह' का तो पद्य में विधान हुआ है? तो क्या वह सघन हिम मेघ के रूप में आकाश में था? और क्या यह कभी सम्भव भी है कि इस 'ऊपर हिम था' का अर्थ 'जल' अथवा 'प्रलय-प्रवाह' के ऊपर भी लगे कठिनता की इति यहीं नहीं होती। 'सघन' तो वह है ही, प्रसाद जी का कवि इतना और भी बताता है—

'एक तत्त्व की ही प्रधानता'।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो 'प्रधानता' का अर्थ क्या ? विकार, परिणाम अथवा विवर्त ? अथवा सब कुछ और कुछ भी नहीं ? कह सकते हैं—तत्त्व का अर्थ यहाँ है 'जल' तत्त्व। जल के अतिरिक्त यहाँ और कोई तत्त्व प्रधानरूप से विराजमान न था तो ठीक। परन्तु क्या यही प्रसाद का कवि भी कहता है ? सुनिए—

"दूर दूर तक विस्तृत था हिम
स्तब्ध उसी के हृदय समान;
नीरवता सी शिला चरण से
टकराता फिरता पवमान।"

कहिए तो सही 'हिम' का यह 'दूर-दूर विस्तार' कहाँ था और कहाँ कौन टकराता था किससे ? कवि कहता है—

"उसी तपस्वी से लम्बे, थे
देवदारु दो चार खड़े;
हुए हिम-धवल, जैसे पत्थर
बनकर ठिठुरे रहे अड़े।"

अरे! यह 'अड़े देवदारु' यहाँ 'हिमठिठुरे' खड़े रहे। उसी पुरुष के 'भीगे नयनों' के सामने अथवा 'प्रलय-प्रवाह' में ? हाँ, हाँ, 'बैठ शिला की शीतल छाँह' भी तो यहीं है! अच्छा तो इस 'शीतल छाँह' का अर्थ क्या ? और सच तो कहें 'हिमगिरि के 'उत्तुङ्ग शिखर' पर देवदारु होता भी है ? सुनिए कोई हिन्दी का नाटककार इस विषय में क्या कहता है। वह स्पष्ट लिखता है—

"बहुत क्या कहें एक पर्वत के देखने मात्र से तीनों ऋतु आँख के सामने आ जाती हैं। एक पहाड़ को जड़ में से देखो तो गर्म देश के आम, इमली आदि पेड़ मौजूद हैं। बीच में से देखो तो सर्द देश के बाल, बरास, चील, देवदारु आदि दिखाई देते हैं और ऊपर बर्फ़ की हद के पास जाकर देखो तो भोजपत्र के सिवाय कुछ भी नहीं दिखाई देता। (रणधीर और प्रेम मोहिनी, निवेदन, १८७७ ई०, पृ० ७-८)

लाला श्रीनिवासदास की बात न रुचे तो कालिदास के कथन पर ध्यान दें और देखें कि वास्तव में वस्तु-स्थिति क्या है, कहते हैं—

"भूर्जेषु मर्मरीभूताः कीचकध्वनिहेतवः
गङ्गाशीकरिणो मार्गे मरुतस्तं सिषेविरे ॥४-७३॥

वहाँ भोजपत्रों में मर्मर करता हुआ, पहाड़ी बाँसों के छेदों में घुसकर बाँसुरी-सी बजाता हुआ और गङ्गा जी की फुहारों से ठण्ढा हुआ वायु रघु की सेवा कर रहा था।"

यह तो रही 'भोजपत्र' की बात। अब 'देवदारु' की भी सुन लीजिए।

"तस्योत्सृष्टनिवासेषु कण्ठरज्जुक्षतत्वचः
गजवर्ष्म किरातेभ्यः शशंसुर्देवदारवः ॥ ४-७६ ॥

जब रघु ने वहाँ से अपनी सेना का पड़ाव हटा लिया तब वहाँ देवदारु की ऊँची-ऊँची शाखाओं पर हाथियों के गलों की साँकलों से बनी हुई रेखाओं को देखकर ही जङ्गली किरातों ने रघु के हाथियों की ऊँचाई का अनुमान किया ॥ ४-७६ ॥"

कालिदास के रघुवंश के इस वर्णन के साथ कुमारसम्भव के प्रथम सर्ग के ६ और १४ श्लोक को देखें और यह मान लें कि 'हिमगिरि के उत्तुङ्ग शिखर पर' देवदारु नहीं होता और यदि उँचाई पर कोई वृक्ष होता भी है तो वह भोजपत्र का ही, 'देवदारु' का नहीं। परन्तु प्रसाद जी का कवि यहीं नहीं रुका। उसने तो अपने प्रातिभ ज्ञान से यह भी लिख दिया।

"बँधी महा-वट से नौका थी
सूखे में अब पड़ी रही;
उतर चला था वह जल-प्लावन,
और निकलने लगी मही।"

पता नहीं किस 'हिमगिरि' के किस 'महा-वट' में किस 'मनु' की कब 'नाव बँधी थी' कि प्रसादजी के कवि ने चट्टान उसे हिम गिरि के उत्तुङ्ग शिखर पर' जमा दिया है। जहाँ तक देखने में आता है किसी 'हिम गिरि के उत्तुङ्ग शिखर पर' कोई 'महा-वट' न होगा। कारण वह शीत देश का वृक्ष नहीं, उष्ण देश का आता है। हाँ, इस 'महा-वट' में 'महा' का अर्थ कुछ और ही हो और यह किसी अपूर्व देश की बात हो तो उसकी हम नहीं कह सकते।

सम्भव है, आप सोचते हों कि 'उत्तुङ्ग शिखर' का अर्थ ऊँचा मात्र हैं, पर नहीं, स्वयं प्रसाद का कवि कहता है—

"किन्तु उसी ने ला टकराया
इस उत्तर-गिरि के शिर से,
देव-सृष्टि का ध्वंस अचानक
श्वास लगा लेने फिर से।"

अब आप ही कहें इस 'शिर से' का सङ्केत क्या है? 'उत्तुङ्ग शिखर' ही अथवा कुछ और ?

'महा-वट' की बाधा सामने आई नहीं कि वादी बोल उठा—शतपथ में भी तो 'वृक्ष' का उल्लेख है और पुराण भी तो किसी प्रलय में किसी वट-वृक्ष का निर्देश करता है फिर 'प्रसाद' पर ही इतना प्रकोप क्यों ? प्रसाद तो आनन्दवादी ठहरे। उन पर 'विवेक' की यह बौछार क्यों ? निवेदन है—भूल हुई। पर कृपया कहिए तो सही 'कामायनी' के इस कथन में क्या है—आनन्द या विवेक ? श्रद्धा वा बुद्धि ? सुनिए, प्रसाद का कवि कहता है—

"काला शासन-चक्र मृत्यु का
कब तक चला न स्मरण रहा।
महा मत्स्य का एक चपेटा
दीन पोत का 'मरण रहा।'
किन्तु उसी ने ला टकराया
इस उत्तर-गिरि के शिर से,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देव-सृष्टि का ध्वंस अचानक
श्वास लगा लेने फिर से।"

कामायनी की इस कथा में 'चपेटा' का क्या महत्त्व है इसे समझने लाकर कुछ इस भाव पर भी ध्यान दीजिए। महाभारत का कहता है—

"हे महाराज! उनके पश्चात् मनु ने उसके कहने के अनुसार सब जगत् की वस्तुमात्र के बीज इकट्ठा किये। फिर एक दिन नाव में बैठकर घोर तरङ्गवाले समुद्र में तरने लगे। तदन्तर मनु ने उस मत्स्य का ध्यान किया। मनु के ध्यान करते ही वह मत्स्य एक सींग धारण करके मनु के पास पहुँचा...जब मनु ने उसके सींग में वह रस्सी बाँधी, तब वह वेग से उस नाव को समुद्र में खींचने लगा।.....हे कुरुनन्दन! इस प्रकार नाव को खींचते खींचते वह हिमाचल के सब से ऊँचे शिखर पर पहुँचा। वहाँ पहुँचकर उसने कुछ हँसकर ऋषियों से कहा, आप लोग बहुत शीघ्र इस नाव को हिमाचल के शिखर में बाँध दीजिए, विलम्ब करना उचित नहीं है।" वनपर्व का यह उपाख्यान प्रसाद के कवि का आधार रहा है अथवा नहीं, इसे कह जाने। हमें कहना तो यह है कि यहाँ 'मत्स्य' की यह लीला कुछ विचित्र-सी लगती है और 'बुद्धि' की अपेक्षा 'श्रद्धा' पर ही अधिक अवलम्बित है। किन्तु प्रसाद जी का 'चपेटा' कुछ और भी विलक्षण हो गया है। अवश्य ही उसमें 'नेता' की 'नियति' का हाथ है। पर वह हाथ 'श्रद्धा' नहीं बुद्धि की ओर ही हाथ बढ़ाता है। कह सकते हैं—भारत की न कहो, शतपथ की कहो। अच्छा, तो शतपथ को ही लो और देखो कि उसका पक्ष क्या है। वह कहता है—

"तमेवं भूत्वा समुद्रमभ्यवजहार। स यतिर्थी तत्समा परिदेश—ततिर्थी समां नावमुपकल्प्योपासाञ्चक्रे। स औघ उत्थिते तमापेदे। तं स मत्स्य उपन्यापुप्लुवे। तस्य शृङ्गे नावः प्रति मुमोच। तेनैतमुत्तरं गिरिमतिदुद्राव ॥ ५ ॥ स होवाच—'अपीपरं वै त्वा, वृक्षे नावं प्रतिबन्धीष्व।" (८ अ०, ब्रा०)

शतपथ में 'मत्स्य' का जो रूप सामने आता है वही पुराण और भारत में भी है। हाँ, यहाँ इतना अवश्य प्रसाद के कवि के पक्ष में है कि यहाँ भी 'वृक्ष' का ही नाम लिया गया है। किन्तु ध्यान रहे कि यहाँ न तो 'हिमगिरि' का 'उत्तुङ्ग शिखर' और न 'महा-वट' ही। 'महा-वट' की बात उठा प्रसादजी के कवि ने जो विवेक का मुँह बन्द किया था वह श्रद्धा का घूँघट भी नहीं खोल सकता। कारण कि प्रसादजी का कवि नाव को चपेटा से बहाता और नियतिवश बुद्धि की प्रेरणा से 'उत्तुङ्ग शिखर पर' पहुँचा देता है।

प्रसादजी का कवि प्रकृति के क्षेत्र में कितना खरा उतरा और कहाँ तक उसने अपने श्रद्धाश्रित आनन्दवाद का प्रचार किया यह प्रकट हो गया, पर अभी तक यह व्यक्त न हो सका कि वे शिला की शीतल छाँह' का रहस्य क्या है, सो किसी छायाजीवी छायावादी के लिए तो यह 'छाँह' ही पर्याप्त है। और किसी विलक्षण लक्षणावादी के लिए यह 'शीतल' भी। परन्तु सोचिए तो सही इस 'शिला की शीतल छाँह' की उपयोगिता क्या है। क्या 'हिमगिरि के उत्तुङ्ग शिखर पर भी शिला' की शीतल छाँह पर ही बैठने की आवश्यकता पड़ेगी और यह शीतलता ही आनन्द की जननी बनेगी? 'शिला की शीतल छाँह' और सो भी 'हिमगिरि के उत्तुङ्ग शिखर पर'? हाँ जी, विवेक का प्राण तो निकल ही गया, अब चाहे जिस श्रद्धा का पेट भरे!

'शिला की शीतल छाँह' में 'छाँह' और 'शीतल' दोनों ही भव्य हैं, दिव्य हैं और हैं सचमुच आनन्द के विधायक; परन्तु किसके लिए और कहाँ, कुछ इसका भी तो विचार होना चाहिए! नहीं, विचार बुद्धि का बालक है और उसके रहते आनन्द की प्राप्ति हो नहीं सकती। उसको दूर करो और फिर श्रद्धा के बहाने खुल खेलो। 'शिला की' कुछ न पूछो। इस 'शिला की छाँह' का अर्थ क्या होगा, इसे प्रकट रूप में अभिधा के आधार पर तो कोई कह नहीं सकता और न कोई चित्रकार इसे चीत ही सकता है। हाँ, श्रद्धा के सहारे और लक्षणा के आधार पर चाहे जो मैदान मारे और अपने विवेक की अर्थी निकाले।

'देख रहा था प्रलय प्रवाह' में भी यही बात है। इस 'देख रहा था' से चित्त की किस वृत्ति का पता चलता है और सो भी किस रूप में। स्मरण रहे प्रसाद के कवि की नौका में मनु के अतिरिक्त कोई भी नहीं है और नहीं है किसी का कोई बीज भी। फिर भी उसकी 'कामायनी' की कृपा से सारी सृष्टि हो जाती है और स्वयं कामायनी भी श्रद्धा के रूप में न जाने कहाँ से और कब से 'गन्धर्वों के देश में ललित कला का ज्ञान' सीख रही थी और साथ ही कर रही थी 'घूमने का अभ्यास' भी कोई कुछ भी कहता रहे, हमारा विवेक और हमारा ज्ञान तो यही कहता है कि यह और कुछ नहीं, वास्तव में काशी में गङ्गाजी का बाढ़-दर्शन है और यह है वस्तुतः यहीं का 'घूमने का अभ्यास' तथा यहीं का 'गन्धर्वों का ललित-कला का ज्ञान' भी। इसे अब यहाँ से उठाकर हिमालय के प्रदेश में पहुँचा देना सचमुच प्रसाद के कवि का ही काम है। नहीं तो कोई विवेकी कवि विवेक रहते ऐसा दिव्याचार कैसे कर सकता है और कैसे कर सकता है इतने पर भी ऐसा आनन्द का कोलाहल। कलह तो हम इसे कह नहीं सकते। 'भीगे नयनों से' क्या कहें; तो भी इतना तो कहना ही होगा कि यदि प्रसाद का कवि सचमुच कवि होता, कर्त्ता नहीं, तो इस प्रकार की रचना कदापि न करता और कामायनी का अन्त हो जाता निश्चय ही इन पंक्तियों से—

"यह क्या! श्रद्धे! बस तू ले चल,
उन चरणों तक, दे निज सम्बल;
सब पाप पुण्य जिसमें जल-जल,
पावन मन जाते हैं निर्मल;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिटते असत्य से ज्ञान लेश,
समरस अखण्ड आनन्द वेश !"

किन्तु प्रसाद के कवि से ऐसा न हो सकेगा। कारण बुद्धिवाद के अतिरिक्त और क्या है? 'एक पुरुष भीगे नयनों से देख रहा था प्रलय-प्रवाह।' सो तो ठीक ही है, पर 'भीगे नयनों से' क्यों? क्या जल की शीतल फुहार के कारण? नहीं प्रसाद का कवि मुसकराकर बोल उठेगा—हृदय में वेदना जो है। पर कैसी वेदना और किस की वेदना? सच है, मनु वियोगी हैं और वियोग से है दग्धहृदय। किसी दग्धहृदय के नयन आँसू से भीगे नहीं तो और क्या होंगे और उसे 'शीतल छाँह नहीं तो और क्या चाहिए। सत्य और ध्रुव सत्य। किन्तु इसका प्रयोग कैसा! क्या यही इसका प्रकरणप्राप्त अर्थ है? क्या 'देख रहा था' से इसी की व्यञ्जना होती है और यही स्पष्ट हो जाता है 'बैठ' से? मनु की प्रवृत्ति इस समय कैसी कुछ रही होगी इसका कुछ आभास प्रसाद की इन पंक्तियों से चल जाता है—

"और सोचकर अपने मन में,
जैसे हम हैं बचे हुए;
क्या आश्चर्य और कोई हो
जीवन लीला रचे हुए।"

तो क्या आश्चर्य की बात नहीं है कि प्रसाद का कवि इस भाव पर तनिक भी कान नहीं देता और उलटे लिख जाता है कि 'बैठ शिला की शीतल छाँह'। क्या यह कार्य शिला की शीतल छाया में बैठने से ही ठीक होगा और इसके लिए ठीक होगी 'देख रहा था' की तन्मयता ही! क्षमा करें, हमें तो मनु का यहाँ यह रूप दिखाई नहीं देता। हाँ इसमें साधक का यह रूप अवश्य है—

"प्रज्ञाप्रासादमारुह्य अशोच्यः शोचतो जनान्।
भूमिष्ठानिव शैलस्थः सर्वं प्राज्ञोऽनुपश्यति॥"

किन्तु खेद है, मनु 'अशोच्य' नहीं 'प्राज्ञ' नहीं। हाँ, 'शैलस्थ' अवश्य हैं। नहीं तो हम प्रसाद के कवि के इस उद्गार को सर्वथा साधु समझते और 'शीतल छाँह' की प्रशंसा भी जी खोलकर मन भर करते। 'कामायनी' मे 'प्रज्ञाप्रसाद' कहाँ! वहाँ तो सिरे से बुद्धि का विरोध और 'श्रद्धा' का गुणगान है।

योग की प्रक्रिया से कामायनी का क्या सम्बन्ध है और किस प्रकार कामायनी प्रतिपादित करती है प्रत्यभिज्ञानवाद को, इसका प्रदर्शन तो 'प्रसाद का आनन्दवाद' में ही सम्यक् हो सकेगा तो भी संक्षेप में यहाँ इतना कह देना अलं होगा कि वस्तुतः कामायनी के अन्तिम दो सर्ग—रहस्य और आनन्द—इसी के द्योतक हैं। विचार करने की बात है कि कामायनी का आरम्भ 'हिमगिरि के उत्तुंङ्ग शिखर' से क्यों होता और क्यों उसका पर्यवसान भी उसी के 'मानस' पर होता है। 'समरस', 'संवेदन', 'स्पन्दन', 'प्रकाश' प्रभृति शब्दों के द्वारा प्रसाद जी ने जो रहस्य दिखाया है इसका रहस्य यहीं है कि प्रसाद जी का कवि कुछ काश्मीरी शैव सिद्धान्त से परिचित और प्रत्यभिज्ञानवाद से कुछ अभिज्ञ है अन्यथा उनकी झड़ी से कोई लाभ नहीं। जो हो, कहना तो हमें यहाँ यह है कि प्रसादजी के कवि ने कामायनी की रचना में जो रूप पकड़ा है वह 'आनन्द' का नहीं, 'विवेक' का है। हाँ, यह कहा और स्पष्ट कहा जा सकता है कि प्रसाद के कवि ने कामायनी में वह कर दिखाया है जो आज तक किसी से न हो सका है और सम्भवतः आगे भी नहीं हो सकेगा। किन्तु यह सफलता है किस कोटि का? क्या हमें 'आनन्द' की प्राप्ति के लिए बोरियाबँधना बाँधकर कैलास-यात्रा करनी चाहिए और यहीं कामायनी-जैसी पोथी का अध्ययन कर उसका उपभोग न करना चाहिए! कोई कुछ भी कहता रहे पर विवेक तो डङ्के की चोट पर प्रसाद के कवि से यही कहेगा—मूल काटि तैं पल्लव सींचा। आप कह सकते हैं कि जब पल्लव में आनन्द का बास है तब मूल को क्यों सींचा जाय, परन्तु आनन्द मुँह खोलकर कहेगा—बावरे! कुछ अपनी भी सुधि है। हम कहाँ नहीं हैं जो हमें हिमगिरि के उत्तुङ्ग शिखर पर ढूँढ़ रहे हो। आँख खोलो और देखो तो कहाँ नहीं समरस का विलास है। सृष्टि में समरस का साक्षात्कार तो तभी होगा जब दृष्टि में भी हो। अरे जब दृष्टि में पोथी बसी है तब सृष्टि में समरसता कहाँ है? भला कोई शब्दों को पकड़ कर रससिद्ध कवि बन सका है जो प्रसाद जी के कवि को बाँसों उछाल रहे हो! प्रसाद जी का कवि वस्तुतः कामायनी में रसकवि नहीं, और चाहे जो हो। उसमें जहाँ वाद नहीं वहाँ रस है पर जहाँ वाद है वहाँ वितण्डा, जल्प भी नहीं। तो भी वह 'कामायनी' तो है ही 'बुहुक' न सही; नियति की बात ठहरी।

——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

लङ्का एवं जावा की प्राचीन संस्कृति

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीयुत 'मलिन्द'

[जावा और लङ्का—जो किसी समय बृहत्तर भारत के अङ्ग रह चुके हैं—आजकल समाचार-पत्रों की चर्चा के अन्यतम बन रहे हैं। कारण यह है कि इधर युद्धोत्तर-काल में जावा में राजनैतिक जागर्त्ति के विशेष लक्षण दिखाई दे रहे हैं। इसी तरह डगमगाती-जुलती अवस्था लङ्का की है। इन दोनों द्वीपों पर भारतीय संस्कृति का कितना अधिक प्रभाव है, हमारे भारतीय पाठकों के लिए इसका ज्ञान न केवल रोचक, गौरव का विषय भी है।—सम्पादक]

अपनी पुस्तक 'दि आर्ट्स ऐंड क्रैफ़्ट्स ऑफ़ इंडिया एंड सीलोन' में डाक्टर आनन्दकुमार स्वामी ने स्पष्ट शब्दों लिखा है कि "नृवंश-शास्त्र एवं संस्कृति के दृष्टिकोण से लङ्का भारत का एक सम्पूर्ण-अंग है।" शिक्षित-जनों के बीच बहुत कम लोग ऐसे हैं जो लङ्का-द्वीप के प्राचीन निवासियों के साथ अपना वंश चलाने को तैयार होंगे। फिर भी, यह सत्य है कि द्वीप-वासी सच्चे हिन्दू हैं। हाँ, थोड़े से सिन्धु-गङ्गा के मैदान की ओर से तीसरी शती के पूर्व वहाँ पहुँचे दक्षिण भारत के तामिल देश से दूसरी सदी के पूर्व पहुँचकर अपना चिह्न छोड़ गए। वे हिन्दू थे और उस समय की संस्कृत के स्थान में पाली बोलने लगे। एवं थोड़े लोग सर्वोन्नत सभ्यता के भागीदार भी। प्रारम्भिक एशियाई-संस्कृति एक समय भूमध्य-सागर से लेकर चीन और लङ्का तक फैली हुई थी।"

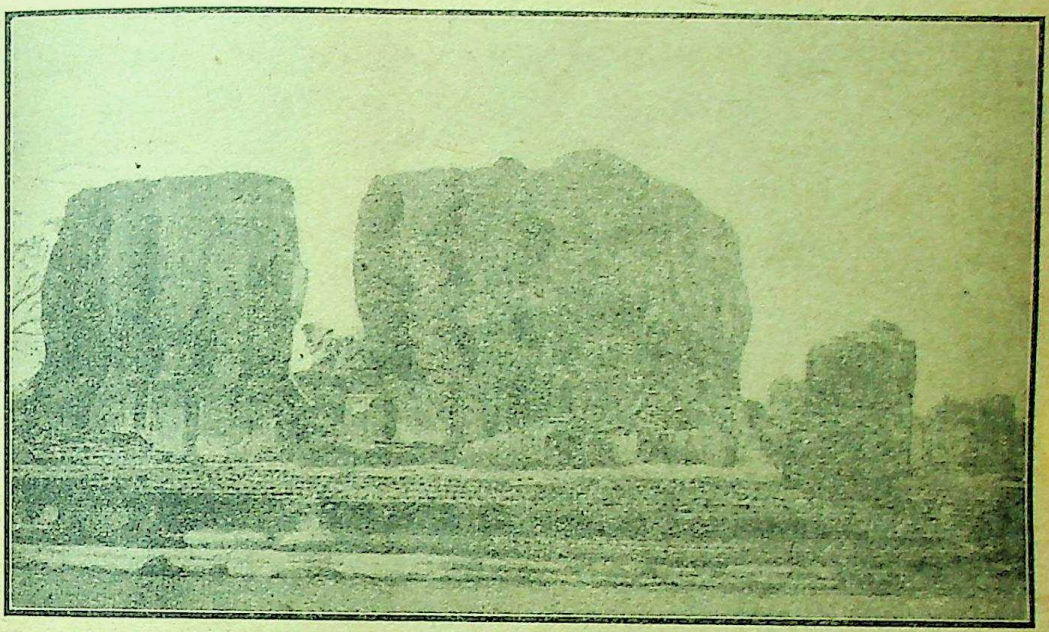

लङ्का की पुरातन राजधानी कान्दी के ध्वंसावशेष

सिंहालियों एवं उनके उत्तरी भारत-स्थित वंशजों में बराबर सम्पर्क बना रहा है और जब चौथी सदी के अन्तिम वर्षों में लङ्का के राजा तिष्य को शासन के अधिकार प्राप्त हुए तब उसने (सिंहल-अनुश्रुति के अनुसार) बहुत से रत्न और उपहार लेकर अपना एक दूत-मण्डल

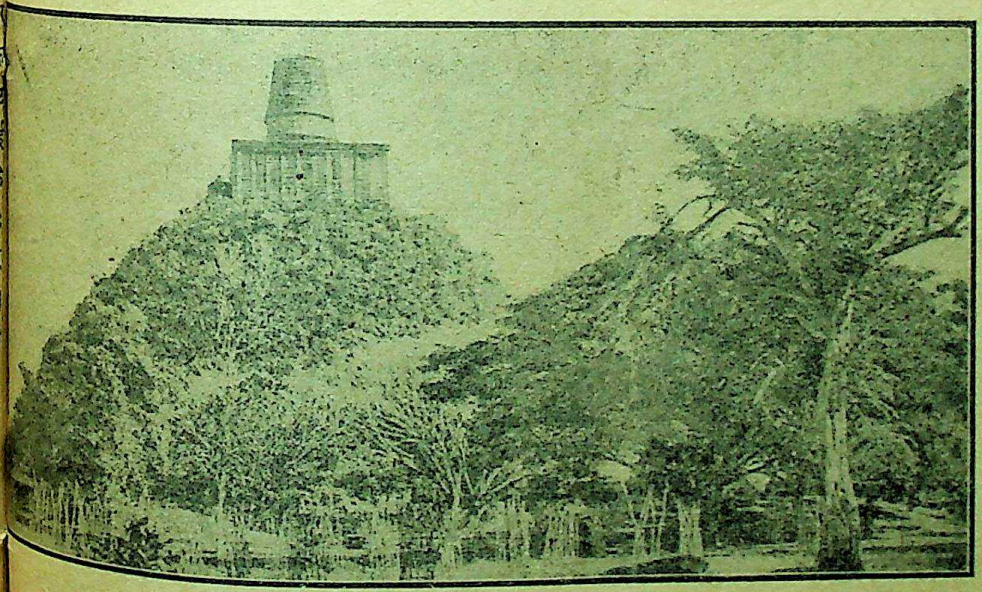

अनुराधपुर का दागोवा—अवयागिरि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भेजा जो ताम्रलिप्ति बन्दरगाह में पहुँचकर, सात दिन बाद, अशोक के दरबार में पाटलिपुत्र में उपस्थित हुआ। अशोक ने बदले में नाना तीर्थों का जल भेजा, तिष्य का पुनः राज्याभिषेक कराया और उसे बौद्ध-धर्म स्वीकार करने का सन्देश भेजा। इस कार्य के लिए अशोक ने अपने पुत्र महेन्द्र को, जो भिक्षु था, सिंहल भेजा था। वहाँ राजा तिष्य ने उसका

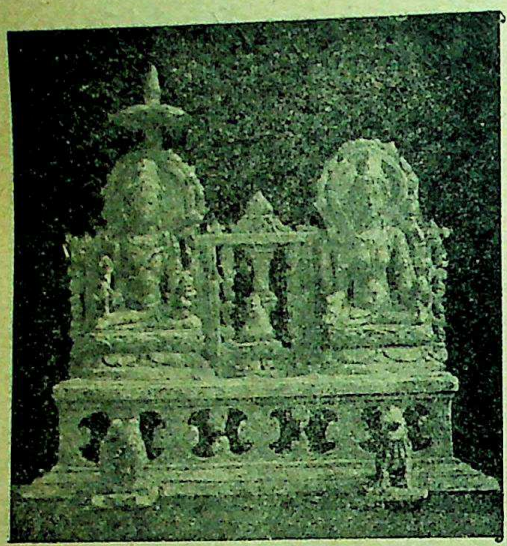

मध्य जावा में शिव-पार्वती की एक मूर्ति

बड़ा स्वागत किया। बाद में महेन्द्र ने अपनी बहन सङ्घमित्रा को भी बोधिवृक्ष की एक शाखा लेकर वहाँ बुलाया। अशोक स्वयं स-समारोह, बोधिवृक्ष की शाखा काट पाटलिपुत्र लाया, जो राजभिक्षुणी सङ्घमित्रा के साथ गङ्गा की राह ताम्रलिप्ति और

पुराना भारतीय जलयान—जिससे बृहत्तर भारत से व्यापार होता था

वहाँ से समुद्र-द्वारा सिंहल पहुँचाई गई। वह शाखा, उस धर्म के साथ-साथ उस द्वीप में ख़ूब फूली-फली और मातृभूमि से लुप्त हो जाने पर भी वहाँ आज तक बनी हुई है।

बौद्ध-धर्म के साथ-साथ बौद्ध-संस्कृति और कला भी [illegible] पहुँची, यद्यपि धर्म से संस्कृति को दूर समझना मूर्खता ही है।

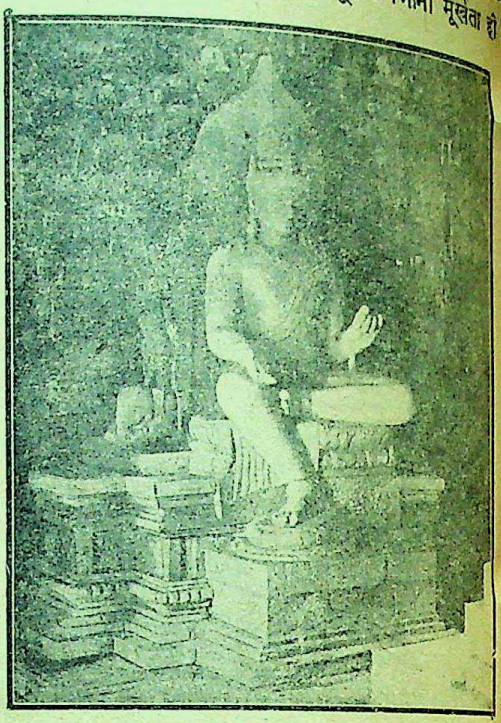

जावा में अवलोकितेश्वर की मूर्ति

मिहिन्तल की पहाड़ी पर, भूमि से एक हज़ार फ़ुट की ऊँचाई पर, एक मठ बनाया गया जहाँ राजा तिष्य ने बौद्धधर्म के

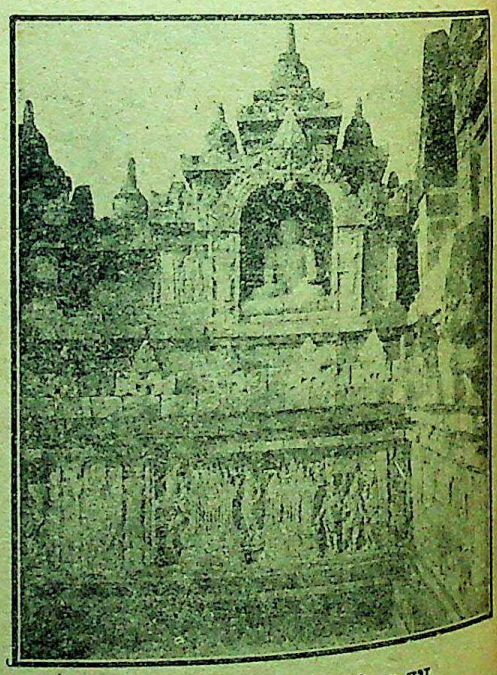

बोरबोदूर मन्दिर का प्रदक्षिण पथ

ग्रहण किया। वहाँ जो शिल्प एवं मूर्तिकला के [illegible] कार्य हुए हैं वे अनिरुद्धपुर के राजमहल तक फैल चुके हैं [illegible] दुनिया की कलात्मक विचित्रताओं में से एक हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राची और प्रतीची के बीच, एशियाई समुद्रों में, लङ्का का स्थान बहुत अंशों तक माध्यमिक है। अरब और

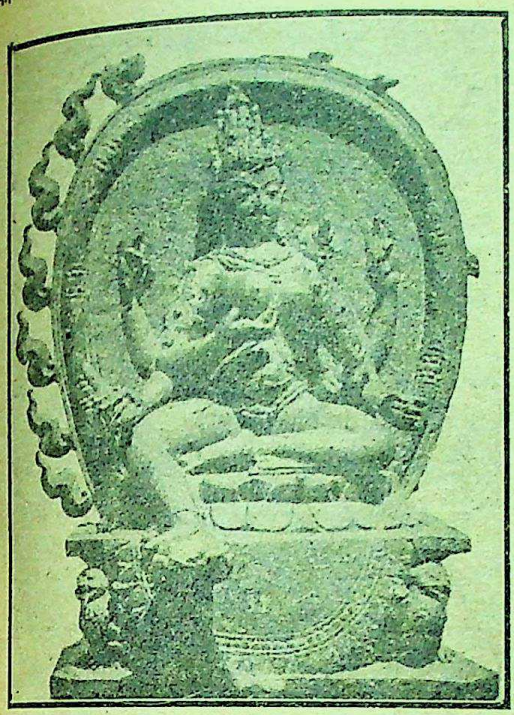

बौद्ध देवी-मूर्ति—तारा

रिया के बीच होनेवाले व्यवसायों से हम परिचित हैं। अन्य द्वीपीय देशों में लङ्का ने व्यवसाय में जो उन्नति की थी वह

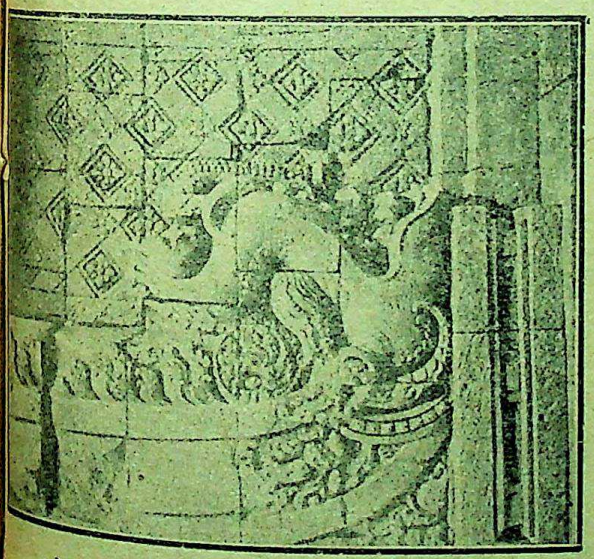

बोरबोदूर के एक तोरण में उत्कीर्ण मकर-मूर्ति

क्षेत्र की दौड़ान में दूसरा नहीं कर सका है। लङ्का-द्वीप की व्यापार-सम्पत्ति और धार्मिक-भावना के साथ कला-कौशल के उत्तम उत्साह ने अद्वितीय मन्दिरों, मठों, पुस्तकालयों, प्रासादों, मूर्तियों एवं पत्थर पर खोद कर बनाये गये चित्रों के अभूतपूर्व निर्माण में पूर्ण सहयोग दिया। फलतः उस समय की गौरव-गरिमा आज भी हमारे लिए आश्चर्य का कारण बनी हुई है।

जावा में गरुड़वाहन विष्णु

सम्राट् अशोक के राज्य में प्रश्रय पाकर बौद्ध-धर्म फूला फला, साथ ही मिट्टी और काठ का युग बीता और धार्मिक कला ने ईंटों के आधार पर राजगीरी में अपने को विकसित किया सैद्धान्तिक मतभेद के कारण ब्राह्मणधर्म को ठेस पहुँचाकर भी

रामचन्द्र की मृगया

राजगीरी ने हिन्दू कलाओं को प्रतीक मानकर, अपने बाह्याडम्बर में श्रीवृद्धि की। पवित्र-धर्मोपदेशों में मूर्ति एवं चित्रकला के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्जित माना गया था पर शीघ्र ही बौद्ध-संस्कृति के विकास में संलग्न मूर्ति एवं चित्रकार आगे चलकर महन्त बन बैठे।

ऊपर—लङ्का के आधुनिक निवासी। नीचे—लङ्का के पुराने निवासी

मि० हैवेल ने 'दि ऐंशेंट ऐंड मेडीवियल आर्कीटेक्चर आफ़ इंडिया'

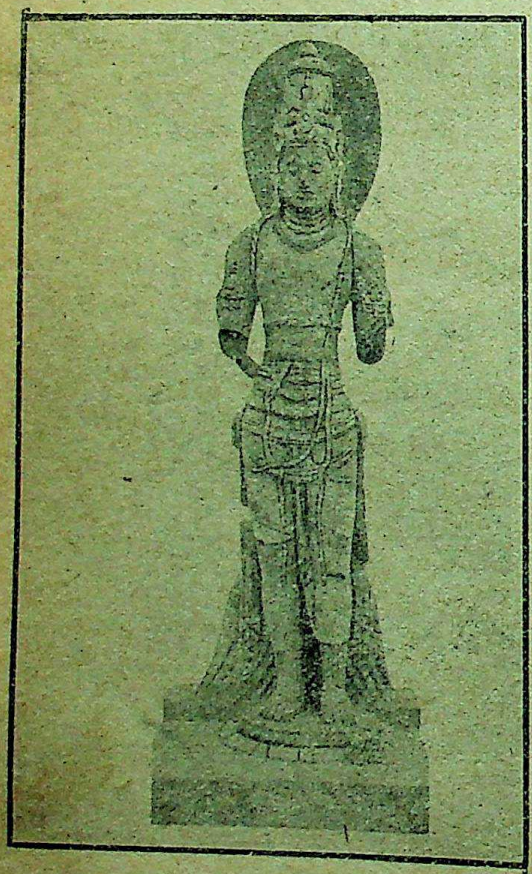

जावा की एक विष्णुमूर्ति

नामक पुस्तक में यह बात बतलाने का प्रयत्न किया है कि अजन्ता के मठों में ईसा से पूर्व दूसरी सदी से लेकर सातवीं सदी तक बौद्ध-कला के सनातन विकास का प्रगतिशील चिह्न स्पष्ट अङ्कित है। इसी प्रकार की शिल्प एवं मूर्ति-कला का मिलता-जुलता प्रणयन हम लङ्का में भी पाते हैं। पर एक बात है कि साधारण ढङ्ग के विकास से लेकर 'गुप्त-शैली' (चौथी सदी से सातवीं सदी) तक के अनूठेपन का प्रकाशन उन भग्नावशेषों से हो जाता है जो अनुराधपुर में पाये गये हैं। हिन्दू-पुनरुत्थान का युग उत्तमता के लिए प्रसिद्ध है। इस युग के कला-कौशल की प्रसिद्धि में लङ्का के अतिरिक्त जावा, एलोरा एवं ममलपुरम् की मूर्ति-कला का भी बड़ा हाथ रहा है।

जावा में ब्रह्ममूर्ति

लङ्का में पाये गये ध्वंसावशेषों से पता चलता है कि एक समय उत्तरी भारत लङ्का एवं जावा के बीच कला अपने चरम उत्कर्ष पर थी एवं 'जीवन ही धर्म है' इस एशियाई विचार का प्रतिनिधित्व करती थी। अनुराधपुर में पाई गई बुद्ध की एक अद्वितीय प्रतिमा के विषय में मि० हैवेल का मत है कि—"इस मूर्ति में जीवन की महाधारा का उतना ही सुन्दर चित्रण हुआ है जैसा कि हम अजन्ता और सिगरी के सिंहल-स्कूल की उत्तमोत्तम चित्र-कला में पाते हैं।"

लङ्का-स्थित सिगरी के पहाड़ी दुर्ग के दुरारूढ़ भागों पर चित्रित चित्रकारी बहुत अंशों में अजन्ता-स्कूल के समान है। यह ज्ञातव्य है कि पाँचवीं सदी में इसी दुर्ग में आकर पितृ-घातक राजा काश्यप रहा था। सिगरी की चित्र-कला का विकास अन्य द्वीपों से भिन्न सर्वथा मानवीय रहा है। सन् १८१५ में लङ्का में अँगरेज़ों के व्यवसाय ने सिंहल-प्रतिमा को टेढ़ी राह जाने दिया, पर द्वीप की परम्परागत-संस्कृति ने फिर अँगड़ाई ली है और कान्दी (जो सोलहवीं सदी में राजधानी रह चुका है) के कला-कौशल पुनः संस्कृति के प्राचीन ग्रन्थ में एक नवीन पृष्ठ जोड़ रहे हैं।

भारत और आस्ट्रेलिया के बीच दो-तिहाई दूरी पर जावा द्वीप स्थित है जो मोटे तौर से एशियाई संस्कृति का सन्धि-स्थल है और जहाँ बौद्ध-प्रभाव के साथ-साथ हिन्दू-प्रभाव का प्राधान्य रहा है। सुदूर पूर्वीय देशों से व्यापार करनेवाले 'वैष्णवों' के लिए जावा ठहरने की जगह (पड़ाव) रहा है। बहुत से व्यापारियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[illegible] में बस जाने का पता चला है। और दूसरी शताब्दी तक [illegible]दुओं के उपनिवेश वहाँ रहे हैं, इसके भी प्रमाण मिले हैं। [illegible]याई संस्कृति की उच्चता के कारण हिन्दू-उपनिवेश शासक [illegible] बैठे, पर शक्ति पर अवलम्बित न होने के कारण उनका शासन [illegible]क्रम का कारण बन गया। आगे चलकर पुनः बौद्ध-धर्म के [illegible] में दूसरा सांस्कृतिक प्रहार हुआ।

'आर्य' में प्रकाशित [illegible]ने लेख 'ए डिफेंस [illegible] इंडियन कल्चर' [illegible] श्री अरविन्द घोष ने [illegible] स्पष्ट कर दिया है [illegible] अपनी संस्कृति के [illegible]स्तार के लिए भारत [illegible] भगीरथ प्रयत्न किये। [illegible]ने पूर्वीय जगत् को [illegible]द्धिक विचारों से [illegible]जित कर, अपनी [illegible]ध्यात्मिक, कलात्मक [illegible] मानस-शक्तियों की [illegible] जमाई। समुद्री [illegible]ओं के सहारे सुदूर-[illegible] द्वीप-समूहों में [illegible]तीय-संस्कृति ने अपना [illegible]स्तार ढूंढ़ा और [illegible]तीय धर्म, कला-कौशल, शिल्प-विद्या, काव्य, विचार, जीवन [illegible] आचार-विचार ने धीरे-धीरे अपने पाँव पसारे।"

अन्य स्थानों के ही सदृश जावा में भी, सृजन-शक्ति का [illegible] विकास जीवन और कला में हुआ। चीनी यात्रियों-द्वारा [illegible]ते परम्परागत-विचार-धारायें बताती हैं कि झुण्ड के झुण्ड [illegible] वहाँ शारीरिक एवं आध्यात्मिक सुख प्राप्त करते थे। [illegible] की उपासना के लिए भारतीय शैली के भव्य मन्दिर बने थे। सुमात्रा में पाये गये एक चित्रित शिला-लेख से पता चला है कि जावा के किसी राजा ने पञ्चोद्यानी बुद्ध के प्रति सम्मान प्रकट करने के हेतु सात मञ्जिलों का एक मन्दिर बनवाया था। डा० कालिदास नाग लिखते हैं—"जब भाग्य-विधाता प्रवासी हिन्दुओं के अनुकूल थे, उन्होंने श्री विजय के सुमात्रा-साम्राज्य की स्थापना की थी जिसकी वैजयन्ती लगभग एक हज़ार वर्ष तक फहराती रही थी। सुमात्रा के शैलेन्द्रवंश के हिन्दू राजाओं ने ही आठवीं या नवीं शताब्दी में बोरोबूदर का महान् मन्दिर बनवाया था जो शिल्पकारी का एक अद्भुत नमूना है। बङ्क-द्वीप में पाये गये संस्कृत लेखों से पता चला है कि सन् ६८६ में श्री विजय ने जावा पर चढ़ाई करने को अपनी सेना भेजी थी।" (प्राचीन विशाल भारत की यात्रा—जनवरी १९२८ का 'विशालभारत')

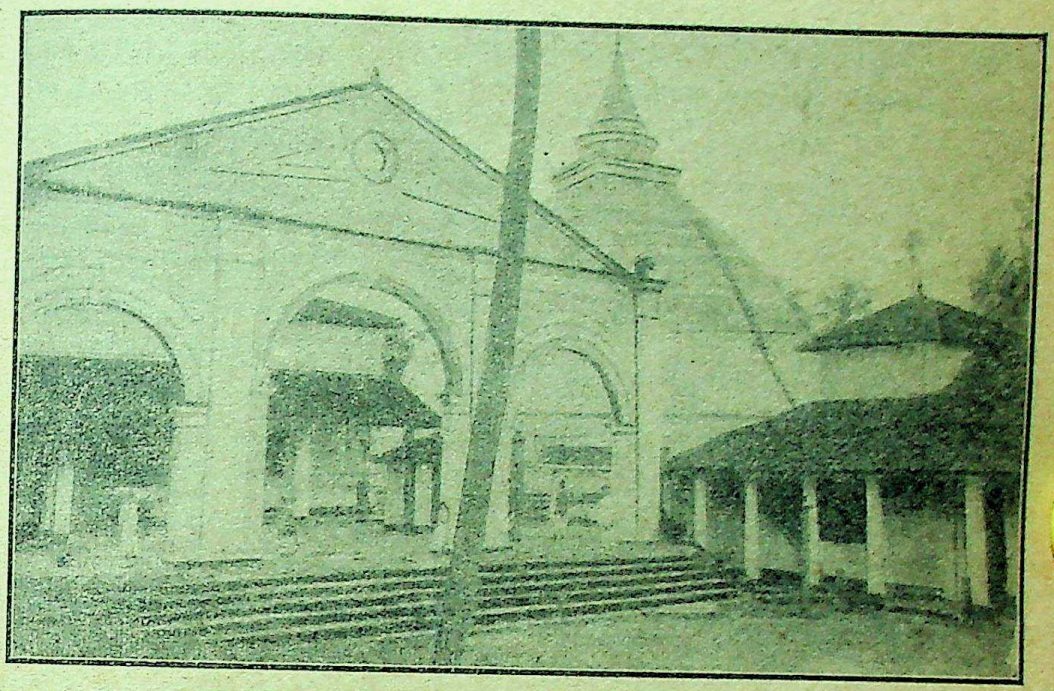

कोलम्बो में एक प्राचीन बौद्ध विहार

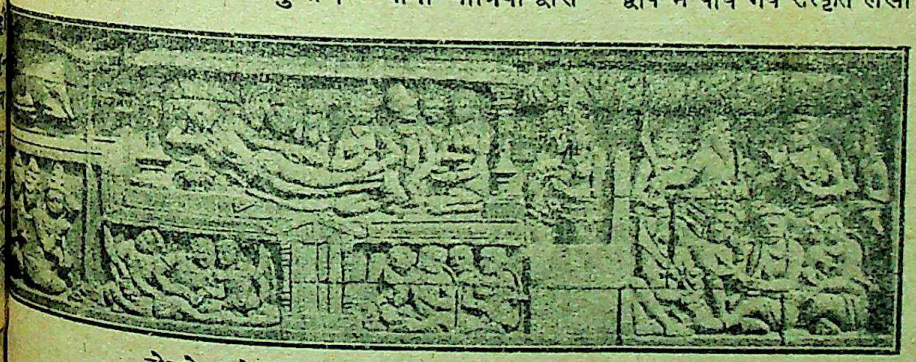

बोरबोदूर के मन्दिर में चित्रित 'मायादेवी का स्वप्न'

सदियों तक, जावा की प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता विस्मृति के अन्धकार में भटकती रही। सौ वर्ष पूर्व जब खुदाई का कार्य हुआ, जावा की मूर्तियाँ एवं मन्दिर अपने पूर्व रूप को पुनः प्राप्त हो गये। अभी हाल तक ध्वंसावशेषों से नई-नई बातों का पता चलता रहा है जिनको जानकर वैज्ञानिक, कलाकार एवं पुरातत्त्ववेत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रङ्ग हैं। जावा-स्थित अँगरेज़-शासक सर स्टेफ़ोर्ड रैफ़ल्स (१८११-१८१६) ने एक बार लिखा था—"जावा के मध्यदेश में स्थित मन्दिर कला के ऐसे अनूठे उदाहरण हैं जिनको देखकर इजिप्ट के पिरामिडों-सा आश्चर्य होता है।"

फ़ाहियान के समय सन् ४१४ में जावा की धार्मिक दशा ऐसी थी कि देश में ब्राह्मणों एवं मूर्ति-पूजकों की संख्या बौद्ध-भिक्षुओं से बहुत ज़्यादा थी। आगे चलकर बौद्ध-भिक्षुओं की संख्या बढ़ी अवश्य, पर बौद्ध धर्म कभी प्रभावशाली हो सका—इसमें विद्वानों को सन्देह है। यह कथन अधिक स्पष्ट है कि बौद्धधर्म के साथ-साथ हिन्दू धर्म (वैष्णव एवं शैव मत) का भी अस्तित्व बना रहा। दिसम्बर, १९२७ के 'टुमारो' में प्रकाशित लेख रेलिक्स आफ़ ऐंशेंट हिन्दू कल्चर इन जावा' में मि० जे० हाइडकोपर ने यह सुझाव रक्खा था कि—"जावा के मन्दिरों को देखने से पता चलता है कि वहाँ दो धर्मों का अस्तित्व साथ-साथ रहा है। बौद्ध-मन्दिरों में शैव प्रतीक एवं शैव मन्दिरों में बोधिसत्त्व के चित्र इसके ज्वलन्त प्रमाण हैं। मध्य जावा की सभ्यता के अवशेषों से जो गन्ध निकलती है वह समय की धार्मिक-शान्ति का पता बताती है। शैव मत (और कुछ अंशों तक वैष्णव मत भी) एवं बौद्ध धर्म ने एक दूसरे को बहुत कुछ दिया है। चुपवत्तू से प्राप्त एक बौद्ध स्तूप शिवलिङ्ग के रूप में है। उसी प्रकार से तेरहवीं सदी के एक जावा के राजकुमार का नाम हम, शिव-बुद्ध पाते हैं। जावा में ऐसी बातें प्रचलित हैं कि शिव के ही प्रतिरूप बुद्ध हैं।" बोरोबूदर के मन्दिर में बुद्ध, शिव एवं विष्णु की प्रतिमायें साथ-साथ अवस्थित हैं।

जैसा पहले कहा जा चुका है, जावा की शिल्प एवं मूर्तिकला लङ्का, एलोरा एवं ममलपुरम् से सम्बन्ध रखती है। हैवेल साहब का मत है कि अजन्ता की चित्रकारी ही जावा के पत्थरों पर मूर्ति का रूप ले निखर उठी है। चौदहवीं शताब्दी में जावा द्वीप पर मुसलमानों का अधिकार हो गया। उसके साथ ही भारत-जावा-मिश्रित 'प्लास्टिक आर्ट' भी अपने अन्तिम आलोक के साथ भभककर रह गया।

मध्य जावा के निवासियों को अपनी संस्कृति का बड़ा अभिमान है और वे अपनी भाषा और कला को ही सर्वोत्तम समझते हैं। वे अपने को जावा का 'आर्य' मानते हैं और अन्य प्रान्तों की भाषा का मज़ाक़ उड़ाया करते हैं।

जावा में शिल्प एवं मूर्तिकला के साथ-साथ एक प्रकार से भारतीय-नाट्य का भी अस्तित्व रहा है। पिछले मुस्लिम शासकों के वंशज, शाही घराने के लोग, इस नाट्य को प्रोत्साहित करते हैं एवं शाहज़ादे और शाहज़ादियाँ तक इसमें भाग लेती हैं।

जावा के निवासी नाट्य-कला में बड़े चतुर हैं। उनका 'ब्रन-जोयड़ा' (भारत-युद्ध) नृत्य देखने से पता चलता है कि ये लोग स्वभावतः नृत्य-कला जानते हैं। आश्चर्य का विषय है कि उन्हें सङ्गीत, तालमय नृत्य एवं इंगितों की शिक्षा कौन देता है। इनके हाव-भाव से जो गम्भीर अर्थ प्रकट होते हैं वे सराहनीय हैं। कहते हैं कि परम्परा ही इनकी शिक्षक है।

संस्कृत के गौरव-ग्रन्थों (महाभारत एवं रामायण आदि) से वे अपने नाट्य का विषय चुनते हैं। समय की दौड़ाने मुसलमानों के धार्मिक जोश ने हिन्दू-प्रतिमाओं को विनष्ट कर डाला फिर भी जावा-नाट्य में हम हिन्दू-नाटकों का प्रतिबिम्ब पाते हैं जिसके हिन्दू-पात्रों का अभिनय मुसलमान करते हैं। भारत के परम्परागत नाटकों के समान जावा के नाटक दूसरे शब्दों में नृत्य-कला के विस्तृत रूप हैं।

अस्तु, हम इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण पाते हैं कि न केवल शिल्प, मूर्ति एवं चित्रकला में ही अपितु नाट्य सङ्गीत एवं नृत्य-कला में भी एशियाई अनुभूति सुदूर के समुन्नत देशों में अमर रही है जो हमारे लिए गर्व का विषय है।

दो रूप

श्रीयुत आरसीप्रसाद सिंह

निकल ध्यान से मेरे जा तू!
चण्डी, काली और कराली,
कुत्सा, कुद्रूपा, कङ्काली।
इतना तेरा रूप भयङ्कर!
मुण्डमाल हाथों में खप्पर!
मेरा मन स्वीकार न करता।
किसी तरह भी प्यार न करता।
आ कमला, मा लक्ष्मी, स्वागत!
मैं अपत्य तेरा, शरणागत।

कोटि-कोटि-जन-गण-गुण-छन्दित,
कोटि-कोटि प्राणों से वन्दित।
तू ही तो मा, शारद हासिनि!
कोमल श्वेत कमल-दल-वासिनि!
तेरी छवि कह सकता कौन!
जहाँ स्वयं वाणी ही मौन!
थके न लोचन भरे न भुज मन,
एक दृष्टि से सार्थक जीवन!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"धना, डांडी का सव ड्डमा !"

श्रीयुत भगवतीप्रसाद जोशी 'गढ़वाली'

तपोवन के उत्तरीय आँचल में अस्तोन्मुख भास्कर की अन्तिम ताम्र रश्मियाँ निकलकर एक पहाड़ी घसियारी के साथ अठखेलियाँ कर रही थीं। एक ऊँची-नीची, देवदारु वन से आच्छादित पहाड़ी और उसके नीचे कलकल निनाद करती हुई पतली नदी, गड़बड़-गड़बड़ गाती हुई, ढेलों और गोल-मटोल पत्थरों को बहाती हुई, बह रही थी। चौकन्ने सचेत ख़रगोशों के बच्चे टिकुर-टिकुर इधर-उधर देखते हुए पिग-पिग घास में मुँह मार रहे थे। एक वन-बिलाव, नाक को बार-बार सिकोड़-कर सूँघता हुआ, अपने शिकार की टोह ले रहा था। लाल 'बुरांश' के फूलों से लदे वृक्ष सान्ध्य-समीर से विडोलित हो रहे थे। बाला घास काटने में तन्मय होकर गीत गा रही थी। उसके कानों में वासन्ती सरसों के फूलों के झूमर थे और वेणी में चमेली के पुष्पों की माला गुँथी थी।

सन्ध्या की नीरवता को भङ्ग करती हुई एक गीत की कुछ पंक्तियाँ, स्वरों के आरोह-अवरोह के साथ, उसने सुनीं। दूर पर कोई गा रहा था—

"कभी-कभी आई जाणों धना,
डांडी का सव ड्डमा !
तू हिंसरा की-सी गुँदकी छई,
तू धुँआ से भी हलकी छई,
तू पाणी से भी पतली छई,
तू फ्यूंली की-सी फूल, धना, डांडी का सव ड्डमा !"

अर्थात्—"हे सुन्दरी ! तू कभी-कभी पर्वत की शीतल छाया में आ जाया कर। क्योंकि तू हिंसर (एक मीठा पहाड़ी फल) के समान मधुर है, धुएँ से भी हलकी है और जल से भी पतली है। हे धना ! तू 'फ्यूंली' (एक पुष्प विशेष) के फूल सी सुन्दर है—तभी तो कहता हूँ—कभी-कभी पर्वत की शीतल छाया में आ जाया कर !"

ध्वनि निकट ही निकट आ रही थी। धीरे-धीरे दूर पहाड़ी पथ पर घोड़े की टापों के शब्द सुनाई दिये। बाला एकटक उसी ओर देख रही थी। शब्द उसी की ओर आ रहा था। धीरे-धीरे एक अश्व उसके पास आकर रुक गया और सैनिक वर्दी से सुसज्जित गौरवर्ण एक युवक उससे उतर पड़ा।

बाला ने हास्यमुद्रा से उसकी ओर देखा और सलज्ज स्वर में पूछा—"तुम्हीं गा रहे थे ?"

"हाँ, मैं ही था, धना।" युवक की मुस्कराहट अनायास गम्भीरता में परिणत हो गई। उसने कहा—"धना, मैं आज तुझसे विदा लेने आया हूँ।"

आकाश में असंख्य तारे जगमगाने लगे। धौली में लकड़ी के बड़े-बड़े शहतीर हरद्वार की ओर बहे जा रहे थे। उसके तट पर एक टिटहरी का जोड़ा—'टिट्ही-टिट्ही-टिट्टिही' करता हुआ मँडराकर मानो रात पड़ने का सङ्केत दे रहा था।

"कैसी विदा ?" बाला के हाथ से घास का पुलिन्दा छूट गया। कुछ ठहरकर उसने कहा—"तो क्या तुम विदेश जा रहे हो ? और ऐसे समय जब कि देश शत्रु के आक्रमण से ध्वस्त हो रहा है ! तुम सेनापति हो, तुम्हें अपना देश मुक्त करना है; ऐसे समय में तुम कैसे जा सकते हो ?"

"नहीं, अब मैंने अपना विचार बदल दिया है। आज समस्त संसार जानता है कि मेरे सेनापतित्व में सैनिकों ने कितनी वीरता से शत्रु को कई स्थानों पर पराजय दी है। हिमालय की शत्रु-रक्त-प्लावित घाटियाँ, प्रशस्त मैदान और मा भागीरथी की रक्तरञ्जित बालुका आज मेरी साक्षी है।"

"तुम्हारा प्रबल प्रताप कौन नहीं जानता !"

"सत्य है; किन्तु मेरे स्वदेशवासी ही आज मुझे घमण्डी कहते हैं—मुझसे घृणा करते हैं। वे मुझे सेनापतित्व से च्युत करना चाहते हैं। मैं जा रहा हूँ भागीरथी के उस पार उत्तरा-पथ और एक दिन विहङ्गम शत्रुवाहिनी लेकर अभिमानी देश को ध्वस्त कर दूँगा।"

"परन्तु, क्या तुम अपनी जननी जन्मभूमि से विश्वासघात करोगे ? क्या वह तुम्हारी माता नहीं ? क्या उसकी सन्तान तुम्हारे बन्धु नहीं ? अज्ञानी न बनो, सरदार न सही, तो एक सैनिक बनकर देश की रक्षा करो।"

"नहीं, आज मेरे हृदय में प्रतिशोध की आग धधक उठी है—मैं जाता हूँ, अवश्य जाऊँगा।" युवक ठहका मारकर, घोड़े पर आरूढ़ होकर, विक्षिप्त की भाँति उड़ चला। केवल एक बार उसने हाथ हिलाकर कहा—"अच्छा, जय बदरी-विशाल की।"

धना के नयनों में एक भी आँसू न था; वहाँ था घृणा, क्रोध और अपमान का भाव। उसने कहा—"तुम कभी सुखी नहीं हो सकते, अब भी समय है लौट जाओ; देशद्रोही न बनो।" किन्तु उसकी ध्वनि केवल पर्वतखण्डों ही में प्रतिध्वनित होकर रह गई।

दो पर्वतों के मध्य से पूर्णिमा का चन्द्र उदय हो रहा था। धना ने पीत आभा में देखा—दूर पर्वतों और वनों को लाँघता हुआ एक अश्वारोही भागीरथी की ओर बढ़ा जा रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक झाड़ी की घनी छाया में एक उलूक बोल रहा था। धौली में निरन्तर शहतीर बहे जा रहे थे।

× × ×

"तुम्हारे जैसे वीर का सहयोग पाकर आज मैं प्रसन्न हूँ सरदार, तुम्हारे देशवासियों ने तुम्हारा मूल्य नहीं समझा; यह उनकी मूर्खता है, कृतघ्नता है। उनके अपराध का दण्ड यही है कि उनके अभिमान को चूर कर दिया जाय। आगे बढ़ो, यह खड्ग और मुकुट धारण करो; आज से तुम मेरी सेना के सेनापति हुए।" कहते हुए विपक्षी नरेश ने उसे खड्ग और मुकुट प्रदान किया।

दरबारियों ने सिर झुकाकर और तलवारें माथे से लगाकर सेनापति का अभिवादन किया। सभा-मण्डप सेनापति के जय-नाद से उद्घोषित हो उठा।

सरदार मानों अब भी स्वप्न देख रहा था। उसकी आँखें इस समय धना के ही चारों ओर मँडरा रही थीं। उस पहाड़ी छोकरी का, जिसका उसके सिवाय कहीं कोई न था; जो सन्ध्या तक वन में रहकर उसकी प्रतीक्षा किया करती थी। जिसकी एक मुसकान का मूल्य उसके लिए इन सभी सम्मानोपकरणों से अधिक था, जो प्रति दिन कहा करती थी कि 'सरदार' युद्ध में यदि तुम्हें कुछ हो गया तो मैं कहीं की न रहूँगी।

उसने विशाल सेना को सङ्गठित करके शीघ्र ही आक्रमण की योजना तैयार कर ली।

एक दिन एक बलवान् पहाड़ी अश्व पर सवार होकर, आगे-आगे विजयी सिकन्दर के समान तूर्य्यनाद करता हुआ, ऊँची-नीची पहाड़ियों, धवलहिम-पर्वतों और सघन वनमालाओं को चीरता हुआ वह स्वदेश की सीमा पर पहुँच गया।

× × ×

सन्ध्या हो गई थी। शिशिर के दिन और वह भी पहाड़ी प्रदेश का चिल्ला। सघन हिमशिखाओं से हिमबयार बह रही थी। अमावास्या की काली और भयानक रात थी। अन्धकार की घनघोर घटा पूरब से बढ़ती आ रही थी। अमा का कालदैत्य नभ में अपने भयानक डैने फैलाने लगा। हाथ को हाथ नहीं सूझता था।

धौली के किनारे असंख्य सैनिक शिविरों से प्रकाश की लघु किरणें घोर अन्धकार को विदीर्ण कर निकलना चाहती थीं, परन्तु ईश्वर ही जाने वे कहाँ तक अपने प्रयास में सफल हो सकी थीं। निर्जन वनों से सिंह की गर्जना व शार्दूल की दहाड़ के बीच कभी-कभी ग़रीब सियार की उआँ-उआँ भी सुनाई पड़ती थी जो भयानकता के बीच हास्य की रूपरेखा मात्र थी।

धौली के उस पार कुमाऊँ की पहाड़ियों पर कभी-कभी कुछ प्रकाश की किरणें 'दप्' करती हुई जल उठती थीं और फिर अकस्मात् ही बुझ जाती थीं। पहाड़ी लोग इन्हें टोलों का चलना कहते हैं। कहते हैं—अमावास्या की भयानक काली रात्रि में डाइनें और पिशाचिनें किसी सुनसान और तमपूर्ण पर्वत की गुफा में बैठकर अपने प्रेमी पिशाचों की प्रतीक्षा किया करती हैं और तब भयानक पिशाच आग के 'रांकों' (मशालों) को हिलाते हुए उनसे मिलने जाते हैं। फिर मिलन पर एक भयानक अट्टहास होता है जो पर्वत-पर्वत और घाटी-घाटी में गूँज उठता है।

ऐसी ही भयानक रात्रि में एक सुन्दरी नग्न खड्ग हाथ में लिये हुए शत्रु-शिविर के प्रथम द्वार पर पहुँची। उसके केश बिखरे हुए थे। वस्त्राभरण अस्त-व्यस्त थे। वदन से तेज प्रकाश की अनोखी लपट फूट रही थी—'टोलों' से भी भयानक।

उसने द्वार पर ऊँघते हुए प्रहरियों से चिल्लाकर पूछा—"तुम्हारा सेनापति कहाँ है?" प्रहरी निद्रा से चौंक पड़े। उन्होंने अपनी छोटी-छोटी आँखों को बड़ी बनाने का प्रयास करते हुए पूछा—"वे विश्राम कर रहे हैं, तुमसे प्रयोजन?"

"इधर देखो—इधर", उसने भृकुटि चढ़ाते हुए आदेश के भाव से कहा—"जाओ, अपने सेनापति को सूचित करो कि धना आई है और उससे मिलना चाहती है, समझे!"

प्रहरियों ने उसके हाथ में चमचमाती तलवार देखी। उनके रोंगटे खड़े हो गये। शक्ति के सामने झुक जाना पड़ा। वे बोले—"अच्छा ठहरिए, अभी सूचित करते हैं।" सेनापति तन्द्रा में पड़ा था। स्वप्न चल रहा था—

'सारा देश जीत लिया गया है। वहाँ के अभिमानी सरदार सब हथकड़ी-बेड़ियों से जकड़े उसके सामने सिर झुकाये खड़े हैं। धना उसकी बाहुओं को अपनी कोमल बाहुओं में डाले हँसती हुई कह रही है—"प्यारे, तुमने बहुत अच्छा किया; आज सारा देश ध्वस्तप्राय है। अब इन कुत्तों को मारो और मुझे रानी बनने का सौभाग्य प्रदान करो।"

ओह! उस पहाड़ी छोकरी की आम की फाँकों ऐसी आँखें कितनी रसीली हैं। दिल चाहता है, वह उन्हीं को देखता रहे। उसके सारे शरीर में सिहरन दौड़ रही थी।"

हठात् कोलाहल-सा सुनकर उसका सुख-स्वप्न टूट गया। उसने देखा—उसके सामने मोटे ऊनी लबादों को पहिने दो प्रहरी खड़े हैं।

"क्यों क्या है? सब कुशल तो है न!" उसने विस्मय से पूछा।

"वीरश्रेष्ठ!" एक प्रहरी ने अभिवादन करते हुए कहा—"आपसे मिलने को एक युवती बाहर खड़ी है। कहती है—मैं धना हूँ, सेनापति से अभी मिलना चाहती हूँ और उसके..." वे काँप रहे थे।

"अरे, बस इतनी ही-सी बात!" वह झटपट उठ खड़ा हुआ—"चलो मैं आता हूँ।" वह सोचता था—धना उसे कितना चाहती है। उसके बिना उसे कितना बुरा लगा होगा। वह उससे कहेगी—"ओह! तुम कितने निर्दयी हो, मुझे अकेला छोड़कर चले आये।" वह लज्जित होकर क्षमा माँग लेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह उससे लिपट जायगी। कहेगी—"अब तो मुझे न छोड़ोगे न!" परन्तु वह नहीं जानता था—स्त्री में इसके अतिरिक्त कुछ और हो सकता था। बल, पौरुष और वीरता तो उसके विचार से पौरुषिक थे, जिन पर उसी का सर्वाधिकार है।

जैसे ही उसने धना को देखा—वह उसकी ओर बाहें पसार-कर लिपटने दौड़ा। परन्तु, ओह! यह क्या—उसके लाल-लाल नेत्र और हाथ में नङ्गी तलवार!

"यह तलवार...!" वह विस्मय से सहम गया।

"हाँ, देशद्रोही शत्रु के लिए यह उपहार!" उसने कहा—"शत्रुसेनापति! उठाओ तलवार! तुमने पुरुषों ही की तलवार से खेल खेला है; आओ आज स्त्री से भी दो-दो हाथ हो जायँ।"

"तुम भूलती हो धना, मैं...मैं हूँ तुम्हारा प्रे..."

"क्यों किसी का नाम कलङ्कित करते हो? मेरा प्रेमी तो सेना लेकर आज भी मातृभू की रक्षा के लिए पर्वत-पर्वत, घाटी-घाटी में गरज रहा है। तुम्हें नहीं सुन पड़ती उसकी दहाड़! और तुम हो शत्रु! आततायी!"

सरदार ने नारी की ऐसी भव्य मूर्ति पहले न देखी थी। उसकी आँखों से पश्चात्ताप के आँसू बह रहे थे। बोला—"धना, वास्तव में मैं देशद्रोही हूँ। पर अब न तो मैं इस पक्ष से ही विश्वासघात कर सकता हूँ और न स्वदेश ही काला मुँह लेकर जा सकूँगा। ऐसे समय में उपाय!"

"उपाय! उपाय सरल, बहुत सरल है, सेनापति! अगर तुम्हें अब भी स्वदेश में श्रद्धा है तो धौली के शीतल जल में डुबकी लगाकर मातृभूमि के लिए बलिदान कर दो! अथवा तलवार लेकर मेरे साथ रक्त का फाग खेलो। दोनों में से शीघ्र ही चुन लो; मुझे अधिक अवकाश नहीं। समझे!" उसके स्वरों में कठोरता थी और उसके नयन अन्धकार में धूम्रकेतु के समान चमक रहे थे।

सरदार ने कुछ उत्तर नहीं दिया और न वह उस प्रकाश-मयी नारी को ही भर आँख देख सका। फिर भी उसके पग अज्ञात की ओर बढ़ चले।

दूर खेमों से उत्तरापथ के सरदारों ने देखा—उनका सेनापति धौली नदी के किनारे एक कँगूरे पर खड़ा था। नदी के जल में एक 'छप्' की ध्वनि हुई और फिर वह धौली के गड़बड़-गड़बड़ के बीच लुप्त हो गई। उन्होंने प्रकाश में देखा—लकड़ी के बड़े-बड़े शहतीर, लहरों को चीरते हुए, हरद्वार की ओर बहे जा रहे थे।

धना की तलवार अब भी चमक रही थी। परन्तु उसके प्रकाशवान् नयन बुझ-से गये। उसने भी कँगूरे पर खड़े सरदार को देखा था और 'छप्' का शब्द भी सुना था। वह भूमि पर गिर पड़ी। एक दूसरी ही नारी अब उसके हृदय में जाग उठी थी। उसने सुना कोई दूर पर्वत से स्वरों के आरोह-अवरोह के साथ गा रहा था—

"कभी-कभी आई जाणो धना!
डांडी का सवड़मा?.....
धना, डांडी का सवड़मा?"

धीरे-धीरे गीत मन्द पड़ गया। वह विक्षिप्त-सी होकर सघन वनाञ्चल में लुप्त हो गई। वहाँ रह-रहकर सिंह गरज उठता था और बीच में ग़रीब सियार भी चिहाड़ उठता था। फिर वहाँ से निकलते हुए, उसे कभी किसी ने नहीं देखा।

× × × ×

उसी देवदारु वन के समीप, उन ऊँची-नीची पहाड़ियों के निकट, एक समीप के गाँव की दूकान है। वहाँ का दूकानदार कभी-कभी आज भी पूर्णिमा की सुहावनी रात्रि में एक पहाड़ी सुन्दरी को घास काटते हुए देखता है। सुन्दर पीत पुष्पों के झूमर कानों में और चमेली के फूलों से गुँथी वेणी। वह सुनता है—कोई दूर पर्वत से गा उठता है—

"कभी-कभी आई जाणो धना!
डांडी का सवड़मा!
धना, डांडी का सवड़मा!"

ध्वनि पास आती जाती है और दूर पहाड़ी मार्ग से घोड़े के टापों के शब्द सुन पड़ते हैं। टाप निकट ही निकट आते जाती है। एक अश्वारोही आता हुआ दिखाई देता है और फिर वे दोनों वन में लुप्त हो जाते हैं।

—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक मराठी काव्य का रूप-रेखा

श्रीयुत बालाधर राव जोशी, बी० ए०

आधुनिक मराठी-काव्य का आरम्भ हम साधारणतया उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त से मान सकते हैं। प्राचीन काव्य में काव्य-शैली और विषय दोनों में महत्त्वपूर्ण अन्तर है। ऐहिकता के प्रति उपेक्षा, ईश्वर-दर्शन का ध्येय, पौराणिक स्त्री-पुरुषों के चित्रण की रुचि, अभिव्यक्ति की सरलता और स्वाभाविक अनुभूति, आदि प्राचीन काव्य के गुण हैं। परन्तु आधुनिक काव्य के आरम्भ के साथ ही काव्य के अन्तरङ्ग और बहिरङ्ग दोनों में सुस्पष्ट अन्तर पड़ जाता है। आधुनिक मराठी काव्य की पहली विशेषता यह है कि वह वस्तुता और ऐहिकता की ओर अधिक उन्मुख है। घरेलू मामलों, व्यावहारिक सुख-दुःखों और साधारण परिस्थितियों के प्रति आस्था मराठी कवियों ने हमेशा दिखलाई है। यह बात नहीं कि मराठी कवियों ने कल्पना-विलास और गूढ़ चिन्तन प्रकट नहीं किया है। गोविन्दाग्रज का, जो मराठी साहित्य के अग्रगण्य नाटककार भी हैं, सारा काव्य अद्भुत एवं रमणीय कल्पनाओं से और शब्द-चमत्कारों से ही भरा है। तथापि साधारणतया हम कह सकते हैं कि मराठी जनता का मनःपिण्ड ही इतना वस्तुतावादी और व्यावहारिक है कि वह कल्पना-प्रचुर सृजन पसन्द नहीं करता। वह जीवन की साधारण परिस्थितियों और अनुभूतियों की कलात्मक अभिव्यञ्जना को ही अधिक पसन्द करता है। इसी कारण मराठी काव्य सामाजिक जीवन से अधिक संसृष्ट रहता है। वह एकदम व्यक्तिवादी नहीं है। मराठी जनता साधारणतया अधिक पुरोगामी और सुधारवादी है। इस कारण मराठी काव्य भी सुधार-वादी है। "अभागी कमल", "सुधारक" आदि काव्य सामाजिक समस्याओं पर ही मुख्यतया लिखे गये हैं। मराठी काव्य जीवनवादी है, परन्तु यह जीवनवाद जीवन एवं तीव्र अनुभूतियों पर ही आधारित है। आज-कल जिसे हम प्रगतिवाद कहते हैं, (प्रगतिवाद को मराठी में पुरोगामीवाद के नाम से पुकारा जाता है,) वह मराठी में भी मौजूद है, पर उसका भी आधार यथार्थ जीवनवाद है। हिन्दी में इधर हमने तथाकथित प्रगति-वाद की कई रचनायें देखीं, परन्तु ऐसा प्रतीत हुआ कि किसी कम्यूनिस्ट पुस्तक के उद्धरणों का लेखक ने कृत्रिम अनुवाद मात्र कर दिया है। सफल और सच्चा काव्य वही है जो पाठकों के दिल में अपेक्षित रस-सञ्चार करे। यह रस-सञ्चार तभी होता है जब कि निरूप्य वस्तु के अन्तरङ्ग में सहृदय कलाकार पूर्ण रूप से पैठ जाता है। यह बात नहीं कि मराठी काव्य में रसहीन रचनायें नहीं हैं, परन्तु साधारणतया मराठी काव्य—चाहे वह आधुनिक अर्थ में प्रगतिशील हो या न हो—जीवन्त रसानुभूतियों पर आधारित होता है। यद्यपि हिन्दी की तरह मराठी में प्रगति-वाद के प्रचण्ड नारे नहीं लगाये जाते हैं, फिर भी उसकी आस्था और प्रवृत्ति ग़रीब श्रमजीवियों की ओर अधिकाधिक बढ़ रही है। कुसुमाग्रज की निम्नलिखित पद्य-पंक्तियाँ कितनी मर्मस्पर्शी और यथार्थ हैं—

"भाकरीचा घांस शोधायांस आला योजनें
आणि अंतीं मृत्युच्या घांसात वेडा सांपडे।"
"आर्त डोळ्यांतून सारीं आटलेलीं आंसवे
आंत दावाग्नींच पेटे ओढ घेई आंतड़े॥"

(भावार्थ—बेचारा रोटी के लिए कोसों दूर से आया, लेकिन हाय! वह मौत के मुँह में पड़ गया। उसकी तृष्णाकुल आँखों के आँसू सूख गये हैं। उसके पेट में दावानल धधक उठा है और उसकी अँतड़ियाँ दूरस्थ घर की ओर आकर्षित हो रही हैं।)

यशवन्त का घोड़ा, जो शोषितों और दलितों का प्रतिनिधि है, यह करुणाजनक शिकायत करता है :—

"विघ्नामधोनी वांचवा। कर्तृत्व सारे दाखवा
या हांकणाऱ्याच्या नसे। पर्वा नयाची अंतरीं।
त्या बक्षिसाच्या पोतड्या। हांसून मोतद्दार घे
माझ्या तनूच्या चिंधड्या। कोणी हि पाहे ना परी।"

(मैं अपनी पूरी कुशलता दिखलाकर मालिक को आपत्ति से बचाता हूँ। लेकिन इस वाहक को मेरे प्रति ज़रा भी सहानुभूति या चिन्ता नहीं। वाहक विपुल पुरस्कार पाता है, लेकिन मेरी पीठ का दारुण कशाघात कोई भी नहीं देखता।)

बरसात में समस्त सृष्टि को सम्पन्न और प्रसन्न बताकर भी अन्त में खेदवश गिरीश पूछते हैं :—

"निवली रानें गुरे-वासरें
निवली रानें रान-पांखरे
धनी अंतरीं निवले सारे
शेतकऱ्यांच्या पोटामधला निवेल कधिं पण जाळू!"

(बरसात में पशुओं, वनों और विहगों को शान्ति और प्रसन्नता मिली है। अमीरों की तबियत भी ख़ुश है, लेकिन हाय! किसानों के पेट की आग कब बुझेगी?)

हिन्दी काव्य की तरह मराठी काव्य छन्द के बारे में अधिक पुरोगामी नहीं है। यद्यपि इधर मराठी में कविवर 'अनिल' के नेतृत्व में (भग्नदूत) मुक्त छन्द का प्रचलन हुआ है, परन्तु वह अभी सन्तोषजनक एवं व्यापक मान्यता नहीं मिली है। संस्कृत के शार्दूलविक्रीडित, वसन्ततिलक, द्रुतविलम्बित आदि छन्दों का प्रयोग मराठी काव्य में बराबर होता है। मराठी में 'सुनीत' नाम का, जिसे अँगरेज़ी में 'सॉनेट' कहते हैं, एक काव्य-प्रकार है। इसमें ख़ास प्रकार की भावाभिव्यक्ति होती है। इसके लिए शार्दूलविक्रीडित छन्द ही सबसे उपयुक्त माना जाता है। डा० माधवजूलियन का 'विरहतरङ्ग' तथा 'सुनीताञ्जलि', दो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुख्य काव्य शार्दूलविक्रीडित में लिखे गये हैं। इसके अतिरिक्त मराठी काव्य में ओवी, अभङ्ग आदि असली मराठी छन्दों का भी प्रयोग होता है। भक्ति-प्रधान रचना के लिए अभङ्ग उपयुक्त माना जाता है। फिर भी मराठी काव्य में नवीन छन्दों और लयों का भी प्रचलन हो रहा है। इन छन्दों में गेयता, अनेकरूपता और हृदयाकर्षकता है।

मराठी काव्य में हिन्दी काव्य की तरह वादों का प्रचण्ड आडंबर नहीं है। उसमें रहस्यमयी, भोगवादी और छायावादी सभी तरह की रचनायें मिलती हैं परन्तु उसमें किसी प्रकार का वाद या पन्थ नहीं है। दिवङ्गत भास्करराव तांबे, गुप्त तथा बालगंगाधर खाण्डे आदि सुकवियों ने तत्त्वचिन्तनात्मक काव्य लिखे हैं परन्तु उनका कोई मतवाद नहीं। मौजूदा परिस्थितियों में से अच्छी-बुरी संवेदनायें ग्रहण करते हुए रास्ता निकालना और उस रास्ते पर अग्रसर होते रहने का स्फूर्तिदायी सन्देश देना ही मराठी कवियों को अच्छा लगता है। उनको जीवन के यथार्थतम रूपों से अधिक प्रेम है। शोषण और अत्याचार के नाश पर आधारित समाजवादी जीवन-पद्धति की स्थापना के वे पक्षपाती हैं।

मराठी काव्य की शैली साधारणतया परिष्कृत, ध्वन्यात्मक, सरल और प्रभावशाली है। उसमें हिन्दी काव्य-शैली की तरह शब्दाडम्बरवादी अलङ्करण नहीं है। सुबोधता उसका पहला गुण है। उसमें व्यर्थ का शब्दाडम्बर और प्रतीक पद्धति नहीं हैं। इसी कारण उसका शीघ्र बोध होकर अपेक्षित प्रभाव पड़ता है। मराठी कवि भावाभिव्यक्ति की सुविधा के लिए नये-नये शब्दों और क्रियाओं के गढ़ने में भी अग्रसर हैं। मराठी कवि इस बात का साधारणतया ख़याल रखते हैं कि ऊपरी शब्दालङ्कारों की जालमालाओं से अन्तस्थ रसप्रवाह स्तब्ध या आच्छन्न न हो जाय। तथापि मराठी काव्य में, 'कोमल कान्तपदावली' नहीं मिलेगी। यह बात अलग है कि कुछ कवियों ने पदलालित्य दिखलाया है परन्तु साधारणतया माधुर्य मराठी काव्य की विशेषता नहीं बन सका। उसकी विशेषता है, प्रभावशाली ओज। शायद यह आदि के पहाड़ी प्रदेशों में रहनेवाले महाराष्ट्रों का एक स्वाभाविक गुण हो।

मराठी काव्य का विषय-क्षेत्र भी काफ़ी व्यापक है। वैसे हर एक साहित्य में प्रेम को सर्वाधिक प्रश्रय मिलता है। मराठी काव्य इसका अपवाद नहीं है। आधुनिक काल में डा० बालजुलियन ने सबसे अधिक प्रेमगीत लिखे हैं। एक कठोर आलोचक ने उनको इस कारण बहुत फटकारा है। कौटुम्बिक काव्य लिखने में स्व० भास्करराव तांबे, मायदेव, गिरीश आदि सिद्धहस्त हैं। राष्ट्रीय काव्य-निर्माताओं में ब० सावरकर, दरेकर आदि प्रमुख हैं। शिशु-सम्बन्धी कवितायें मायदेव, यशवन्त, दिवाकर टेकाडे आदि ने लिखी हैं। तात्पर्य यह कि मराठी में हर तरह की कवितायें कम अधिक मात्रा में लिखी जाती हैं। आजकल लड़ाई और उसकी अनेक परिस्थितियों पर सुन्दर कवितायें लिखी जा रही हैं।

हमने साधारणतया मराठी काव्य की विशेषताओं की एक स्थूल रेखा यहाँ प्रस्तुत की है। अब हम आधुनिक श्रेष्ठ कवियों का स्वल्प परिचय देकर प्रस्तुत लेख समाप्त करेंगे।

यशवन्त आधुनिक मराठी साहित्य के बहुप्रसवी, प्रतिभाशाली कवि हैं। इनके दर्जनों काव्यग्रन्थ हैं। इनका दृष्टिकोण सुधारवादी, नास्तिक और प्रगतिशील है। अभी इन्होंने "काव्य-किरीट" नामक एक काव्य ख़ास कर बड़ौदानरेश के गौरव के उपलक्ष्य में लिखा है, जिसमें भी ग़रीब प्रजाजनों की आकांक्षाओं को स्पष्टतम शब्दों में व्यक्त किया गया है। यशवन्त के काव्य की विशेषतायें हैं—भाव-सौन्दर्य, कल्पना-विलास और परिष्कृत एवं प्रभावशाली भाषाशैली। उनकी "आई" आदि कवितायें केवल मराठी में ही नहीं बल्कि किसी भी साहित्य में अपनी उत्कृष्ट भाव-सुन्दरता के कारण, भूषणास्पद होने लायक़ हैं।

स्व० माधवजूलियन मराठी काव्य के नवयुग-प्रवर्तक पण्डित कवि हैं। गहरी सहृदयता, कलात्मक प्रसाधन, उर्दू के तमाम छन्दों का उत्कृष्ट प्रयोग, कल्पनाभिरामता, अद्भुत शब्द-भाण्डार और अलौकिक भाषा-प्रभुत्व आदि उनके काव्य के गुण हैं। उनके काव्य में प्रेम-भङ्ग की पीड़ा, स्वप्नरञ्जन और प्रगतिशीलता अधिक है। उनके काव्य काफ़ी लोकप्रिय हैं।

गिरीश :—रचना-सौष्ठव, गेयता और प्रसाद से इनका काव्य मण्डित है। इनका दृष्टिकोण समाजवादी और सुधारवादी है। शोषित जनता के प्रति इनको गहरी सहानुभूति है। गिरीश किसी भी वस्तु का सचित्र वर्णन इसलिए कर सकते हैं कि उनमें सहृदयता और मार्मिक निरीक्षण की शक्ति है। उनकी रचना-शक्ति सराहनीय है। अभी उनका 'मानसमेघ' नामक एक सुन्दर काव्यसंग्रह प्रकाशित हुआ है।

सावरकर :—साधारणतया ब० सावरकर हिन्दूमहासभा के भूतपूर्व अध्यक्ष और एक राजनैतिक नेता के रूप में ही सब को ज्ञात हैं। लेकिन महाराष्ट्र के बाहर की जनता इस बात को बहुत कम जानती है कि सावरकर जी मराठी के महान् राष्ट्रीय कवि हैं। उन्होंने मराठी का काव्य-क्षेत्र राष्ट्रीय और ओजस्वी काव्यों से असाधारण रूप से समृद्ध किया है। "वैनायक" छन्द के प्रचार का श्रेय सावरकर जी को ही है। सावरकर जी की राष्ट्रीयता मुख्यतया हिन्दुत्ववादी विचार-धारा से रञ्जित है। इस कारण उनके काव्य में हिन्दुत्व के प्रति जाज्वल्य अभिमान, पराधीनता की घोर चिढ़, भारत के अतीत के प्रति ऊँचा गौरव और राजनैतिक स्वाधीनता की उत्कट चाह मौजूद है। एक कविता में उन्होंने मृत्यु-देव से प्रार्थना की है कि मुझे हिन्दू के रूप में ही उठा ले जाना। "अखिल हिन्दू विजयध्वज हा उभवुं या पुन्हा" यह ध्वजगीत, जो हिन्दूमहासभा के अधिवेशनों और सभाओं में अक्सर गाया जाता है, सावरकर जी का बनाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। उनके काव्य में भावनाओं का इतना प्रचण्ड आवेग है कि पाठकों की सुस्त नसों में एक बार ज़ोरों से रक्ताभिसरण शुरू हो जाता है। ऐसी भावनोद्दीपक कविताओं में "सागरा! जीव तळमळला" (अर्थात् हे समुद्र, मेरा प्राण दुखी होता है) कविता, जो उन्होंने हिन्दुस्तान का किनारा छोड़ते समय लिखी थी, उल्लेखनीय है।

स्व० भास्करराव तांबे :—भास्करराव इस बात के ज्वलन्त उदाहरण हैं कि थोड़ी-सी किन्तु भावपूर्व कविताओं के बल पर चिरस्थायी कीर्ति और श्रेष्ठता प्राप्त की जा सकती है। यशवन्त गिरीश और माधवजूलियन आदि कवियों की तुलना में भास्करराव की कविताओं की संख्या बहुत थोड़ी है। इसके अतिरिक्त भास्करराव को अधिक दिन तक जीने का भी सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ। फिर भी भावना-स्पर्शिता, ध्वन्यात्मक अभिव्यक्ति, छन्दों की गेयता और दार्शनिक विचारों की आभा से उन्होंने अल्प-काल में और अल्पसंख्यक रचनाओं के द्वारा ही बड़े कवियों के साथ स्थान प्राप्त किया है। किंबहुना, भास्करराव के गीत अधिक लोकप्रिय और प्रभावोत्पादक सिद्ध हुए हैं। भास्करराव की कविता उनके जीवन के क्रमिक विकास के साथ अग्रसर होती और परिणाम-स्वरूप अनुकूल संवेदनाओं को ग्रहण करती चलती है। इसी लिए उसमें शिशु की मुग्धता, यौवन की कामुकता और वार्धक्य की विचारशीलता देख पड़ती है। "मेरी पहेली" कविता में भास्करराव अपनी प्रेयसी से पूछते हैं—

"गुलाब माझया हृदयीं फुलला
रंग तुझ्या गालांवर खुलला
कांटा माझया पायीं रुपला
शूल तुझ्या उरिं कोमल कां?"

(भावार्थ :—मेरे दिल में जब गुलाब खिला तब उसका रंग तुम्हारे गालों पर क्यों फूट पड़ा? जब कि मेरे पैरों में कांटा चुभा तब उसकी व्यथा तुम्हारे उर में क्यों हुई?)

लेकिन मृत्यु को आसन्न देखकर जराजीर्ण भास्करराव का दार्शनिक विषाद यों है—

"ढळला रे! ढळला दिन सखया!
सन्ध्या छाया भिवनिति हृदया,
अता मधूचें नाव कासया
लागले नेत्र रे! पैल तिरीं!"

(हे प्यारे, अब दिन ढल चुका है, सन्ध्या की छाया डरावनी लगती है। ऐसे समय तुम मधु का नाम क्यों लेते हो? क्योंकि मेरे नेत्र अब दुनिया के दूसरे छोर पर केन्द्रित हैं।)

वेदों में गणेश जी

पण्डित लालविहारी मिश्र

गणेशजी की अवैदिकता के सम्बन्ध में बहुत दिनों से प्रश्न उठते आ रहे हैं। इधर श्रीयुत सम्पूर्णानन्दजी के हाथों में आकर यह प्रश्न बड़ा व्यापक एवं मोहक बन गया है। इन्होंने इस सम्बन्ध में सबसे पहले "ब्राह्मण, सावधान!" में लिखा है, बाद में 'गणेश' नाम की एक स्वतन्त्र पुस्तक ही लिख डाली है। "ब्राह्मण, सावधान!" में गणेश जी के सम्बन्ध में जो भी कुछ लिखा गया है, "गणेश" में प्रायः उसी का विस्तार हुआ है। अतः यहाँ मैं "ब्राह्मण, सावधान!" के शब्दों में उनके मन्तव्यों को उद्धृत कर अपना विचार प्रस्तुत करता हूँ।

आपने लिखा है—"प्रायः इतना ही गड़बड़ गणेश जी के सम्बन्ध में है। उनकी गणना वैदिक देवों में नहीं है, परन्तु वह सर्वत्र पुजते हैं और उनके लिए 'गणानान्त्वा' मन्त्र पढ़ा जाता है। यह मन्त्र यजुर्वेद के अश्वमेधाध्याय से लिया गया है और वहाँ इसके द्वारा यजमान की पत्नी मेध होनेवाले घोड़े को सम्बोधन करती है। यदि सचमुच वेदों का अध्ययन होता तो शब्दसाम्य के बल पर यह घोड़े वाला मन्त्र गणेश जी के माथे न मढ़ा जाता।"

गणानान्त्वा मन्त्र का गणपति-परकत्व

"गणानान्त्वा" मन्त्र का सचमुच अश्वमेध में विनियोग है पर इतने से गणेश-पूजन में इसके विनियोग का खण्डन नहीं होता। यह आफ़त तो तब आती, जब एक स्थल में विनियुक्त मन्त्र का अन्यत्र विनियोग बाधित होता। पर ऐसी बात तो नहीं। 'शन्नो देवी' मन्त्र का ही अनेक कार्यों में विनियोग है—(क) वया होम के बाद मार्जन में—शम्भुमयो भूम्यां चालयन्ति मार्जयन्ति, (ख) वास्तुसंस्कार कर्म में जलपूर्ण घट से भूमि-मार्जन में—शम्भुमयोभूम्यां निष्पादयति। (ग) आदित्याख्या शान्ति में, इत्यादि। इसी तरह "गणानान्त्वा" मन्त्र के अश्वमेध में विनियुक्त होने पर भी गणपति-पूजन में विनियोग होने के कारण यह गणपति-परक भी है।

श्री पराशरजी ने इस मन्त्र का गणपति-पूजन में विनियोग बड़े स्पष्ट शब्दों में किया है—गणानान्त्वेति मन्त्रेण गणेशम् येत्सुधीः।

आचार्य आश्वलायन ने भी 'गणानान्त्वा' मन्त्र से गणपति-पूजा का विधान बतलाया है। गृह्य परिशिष्ट में चैत्य यज्ञ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋचाओं के उल्लेख के बाद पूजा-यज्ञ की विधि को बता यह बताया है कि चैत्य कौन-कौन हैं—"अथाहोमोऽहरहश्चैत्ययज्ञः। गणपतिर्वा स्कन्दो वा सूर्यो वा सरस्वती वा गौरी वा गौरीपति श्रीपतिर्वाऽन्योवायोऽभिमतस्त एते यथारुचि समस्ता वेज्यन्ते।"

इस तरह चैत्यों में गणेश जी का ज़िक्र कर उनके पूजन के नियमों के निर्देश के अवसर पर यह बतला दिया है कि गणेश जी की पूजा 'गणानान्त्वा' मन्त्र से करे—'अथ मन्त्राः—' गणानामिति गणपतेः। कुमारश्चिति पितरमिति स्कन्दस्य। सुवर्णेन रजसेत्यादित्यस्य। पावका नः सरस्वतीति सरस्वत्याः। सुरभिरस इति शक्तेः। त्र्यम्बकं यजामह इति रुद्रस्य। गन्धद्वारा मे श्रियः। इदं विष्णुरिति विष्णोः।"

इन दो अभियुक्तों के उद्धरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि 'गणानान्त्वा' मन्त्र से गणेश की पूजा किसी अराजकता या अनभिज्ञता की प्रत्यायिका नहीं।

'गणेशजी वैदिक देवता हैं'

महर्षि पराशर के 'गणानान्त्वेति मन्त्रेण गणेशमर्चयेत्सुधीः' इन शब्दों से स्पष्ट हो जाता है कि गणेशजी वैदिक देवता हैं। रही बात यह है कि गणेशार्थवशीर्ष जैसे रहस्यादेशक ग्रन्थ के लिए इस सवाल की कोई गुञ्जाइश ही नहीं। इस ग्रन्थ की प्राचीनता का जो प्रश्न उठाया जाता है, उसका भी कोई हल नहीं। क्योंकि स्मृतियों में 'अथर्वशिर' का उल्लेख मिलता है। शङ्खस्मृति ने वेद के उन पवित्र सूक्तों के वर्णन के अवसर पर, जिनके जप-हवन से मानव सर्वदा पावन बन जाते हैं, अथर्वशिर, का भी उल्लेख किया है—'शतरुद्रियमथर्वशिरस्त्रिसुपर्णं महाव्रतम्।' 'अथर्वशिर' अनेक हैं, उनमें गणपत्यथर्वशीर्ष भी है।

इसके अलावा कृष्ण यजुर्वेदीय तैत्तरीय आरण्यक में गणेशजी के लिए मन्त्र आया है—

'तत्पुरुषाय विद्महे, वक्रतुण्डाय धीमहि।
तन्नो दन्तिः प्रचोदयात्।'

यह गणेश गायत्री है। इस श्रुति ने तो 'वक्रतुण्ड' और 'दन्ति' का प्रयोग कर गणेशजी के उस रूप का भी सङ्केत कर दिया है, जो आगमों में प्रसिद्ध है और जो पौराणिकों की ज़्यादती मानी जाती है।

'तत्पुरुषाय' श्रुति का विमर्श

किन्तु आप की दृष्टि में यह मन्त्र प्रामाणिक नहीं। आपने कई अनुपपत्तियाँ इस पर दी हैं। उन पर विचार कर लेना उचित है।

आपने लिखा—"इसके सम्बन्ध में दो बातें विचारणीय हैं, एक तो यह कि वेदों के संहिता भाग में सहस्रों मन्त्र हैं। ऋग्वेद में ११००० हैं। परन्तु, दन्ति या वक्रतुण्ड के नाम का कहीं भी नहीं है।...ब्राह्मणों में वैसे ही मन्त्र होने चाहिएँ जैसे संहिता में हों, क्योंकि ब्राह्मणों में संहिता की ही व्याख्या-सी होती है। (पृष्ठ ४७)" इसके पहिले लिखा है कि "वेदों में गणपति शब्द तो आता है पर गणेश के लिए नहीं।" (पृ० ४६)

इस सम्बन्ध में मुझे तीन बातें कहनी हैं। एक तो यह कि संहिता में गणेश जी के लिए गणपति नाम पर मन्त्र आये हैं। एक उदाहरण "गणानान्त्वा गणपतिं" मन्त्र है, जिसमें पराशर जी की स्पष्ट सम्मति दिखलाई जा चुकी है। इन महर्षि के अधिकार के सम्बन्ध में इतना ही दिखलाना पर्याप्त होगा कि, जिस तरह अभिमन्यु ने गर्भ में व्यूहभेदन पढ़ा था, उसी तरह इन्हें गर्भ में ही वेदों का पाठ विशुद्ध रूप से अभ्यस्त था, जिससे स्वयं वशिष्ठ जी को विस्मित होना पड़ा था। यजुर्वेद ने 'गणपतये स्वाहा २०।३०' इस मन्त्र-द्वारा गणपति के नाम से इन्हें आहुति भी दी है।

दूसरी बात यह है कि, जब इस तरह से यह सिद्ध हो चुका कि संहिता में गणपति नाम से गणेश जी का ज़िक्र है, तब 'वक्रतुण्ड' या 'दन्ति के नाम पर कोई मन्त्र न भी मिले तो कोई हानि नहीं। यह कोई ज़रूरी नहीं कि प्रत्येक देवता के पर्यायवाची प्रत्येक शब्द संहिता में आ ही जायँ। संहिता भर में गङ्गा जी का ज़िक्र बस दो मन्त्रों में है, इनके पर्यायवाची शब्द तो वहाँ मिल ही कैसे सकते हैं, तो बस यही एक निर्बल आधार क्या 'त्रिपथगा' की अवैदिकता का सबूत होगा! श्री ज्ञानेश्वरी में "विठ्ठल" शब्द एक बार भी नहीं आया। यदि इसी आधार पर हम यह राय क़ायम कर लें कि ज्ञानेश्वर उनके उपासक न थे, तो क्या यह उनके साथ हमारा अन्याय न होगा; जब कि इसके पर्यायवाची बहुत-से शब्द सीधे उनके हृदय की देन हैं! (देखिए ज्ञानेश्वरी ६, ५२१; १२, २४१, २४४; ४, ८; १८, १४, १७)।

तीसरी बात यह है कि ब्राह्मण संहिता की व्याख्या-मात्र नहीं हैं। यह तो आपके 'सी' शब्द से भी व्यक्त हो रहा है।

इसके आगे आपने लिखा—"आरण्यक के जिस भाग में यह मन्त्र आया है उसमें जो मन्त्र हैं वे अन्यत्र कहीं नहीं मिलते।"

यदि इस भाग से आपका मतलब इस नारायणोपनिषद् के पहले अनुवाक से है तब तो यह कहना बिल्कुल सङ्गत नहीं कि "इसमें जो मन्त्र हैं वे अन्यत्र कहीं नहीं मिलते!" क्योंकि इसी अनुवाक में 'इमंमे गङ्गे यमुने सरस्वति" मन्त्र आया है जो ऋग्वेद में भी मिलता है (देखिए १० मं० सू० मं०) और जिसका कि निरुक्त ने (९-२६) भी उल्लेख किया है। इसी तरह इसी अनुवाक का "ऋतं च सत्यञ्चाभीद्धात्" मन्त्र ऋग्वेद के दशवें मण्डल के पहिले सूक्त में मिलता है।

और यदि इस भाग से आपका मतलब इस अनुवाक के गायत्रीरूपात्मक कुछ मन्त्रों से है, तब भी यह कथन सङ्गत नहीं कि "इसमें जो मन्त्र हैं वे अन्यत्र कहीं नहीं मिलते", क्योंकि 'तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि, तन्नो दन्तिः प्रचोदयात्' मन्त्र कुछ हेर-फेर के साथ मैत्रायणी संहिता में उपलब्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है—"तत्कण्टाय विद्महे हस्तिमुखाय धीमहि तन्नो दन्तिः प्रचोदयात्।" और इस पक्ष में आपके उत्तर ग्रन्थ का विरोध भी पड़ता है। आपने गायत्रीरूपात्मक यहाँ के सभी मन्त्रों को, जिनमें दुर्गा का भी मन्त्र आया है, प्रक्षिप्त माना है। परन्तु इसी अनुवाक में दुर्गादेवी के लिए एक ऐसा भी मन्त्र आया है, जिससे उनका स्पष्ट प्रतिपादन हो जाता है—

"तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम्!"
दुर्गां देवीं शरणमहं प्रपद्ये।

यही मन्त्र ऋग्वेद के खिल में भी आया है।

'तत्पुरुषाय विद्महे' आदि मन्त्र प्रक्षिप्त नहीं

आगे आपने लिखा है कि—"सायण ने इनको खिल मन्त्र माना है। इस जगह एक मन्त्र नन्दी के लिए और एक गरुड़ के लिए और एक दुर्गा या दुर्गी के लिए आया है। इन बातों को देखकर विद्वज्जन को कहना पड़ता है कि—"इत ऊर्ध्वं तेषु तेषु देशेषु श्रुतिपाठा अत्यन्त विलक्षणाः"—इसके बाद तत्तत् स्थान में अत्यन्त विलक्षण श्रुतिपाठ मिलते हैं। इन बातों से यह अनुमान होता है कि यह अंश प्रक्षिप्त है। पुराने विद्वान् निष्पक्ष विचारक थे, उनको आरण्यक में दुर्गा, नन्दी और दन्ती के मन्त्र खटके, उन्होंने अपनी शङ्का स्पष्ट लिख दी।..... आप लकीर पीटते हैं इसलिये आपको सब कुछ प्रमाण है।" (पृष्ठ ४७)।

यह ठीक है कि सायण ने नारायणोपनिषद् को, जिसमें 'तत्पुरुषाय विद्महे' आदि मन्त्र आये हैं, खिल माना है। पर इससे यह कभी व्यक्त नहीं होता कि यह प्रक्षिप्त या अप्रामाणिक है। सायण ने यहीं पर एक खिल की परिभाषा भी दी है, जिससे स्पष्ट हो जाता है कि वे खिल को सर्वथा प्रमाण मानते हैं। खिल की जो यहाँ परिभाषा दी है, उससे उनका यह भी आशय है कि लोगों में इसके प्रामाण्य के सम्बन्ध में कोई सन्देह न हो। उन्होंने लिखा है—"कर्मोपासन ब्रह्मकाण्डेषु त्रिष्वपि यद्वक्तव्यमवशिष्टं तस्य सर्वस्याभिधानेन प्रकीर्णरूपत्वं खिलत्वम्" तीनों काण्डों में जो वक्तव्य बच जाता है, उसका खिल में सङ्कलन रहता है, यही खिल का खिलत्व है। इस तरह सायण ने खिल का लक्षण कर इसकी उपादेयता भी व्यक्त कर दी है। खिल की एक दूसरी परिभाषा महाभारत में मिलती है—परशाखीयं स्वशाखायामपेक्षावशात् पठ्यते तत्खिलमुच्यते (म० भा० शा० ३२)

इसका तात्पर्य यह है कि अपनी शाखा में अपेक्षातः दूसरी शाखा के जो मन्त्रादि पढ़ने पड़ते हैं उसी का सङ्कलन खिल होता है। इस परिभाषा से खिल भाग की अप्रामाणिकता नहीं व्यक्त होती। सायण के 'इत ऊर्ध्वं तेषु तेषु' वाले वाक्य से आपने जो यह प्रमाणित करने की चेष्टा की है कि 'सायण' को "तत्पुरुषाय" आदि मन्त्र खटके हैं, वे इन मन्त्रों को सन्देह की नज़र से देखते हैं, यह भी उचित नहीं है। सत्य इसके विरुद्ध विपक्ष में है।

सायणाचार्य ने अपनी व्याख्या के प्रारम्भ के पहले यह बतला देना आवश्यक समझा कि कौन-सा पाठ उनकी व्याख्या का माध्यम होगा। क्योंकि इस उपनिषद् के विभिन्न देशों में पाठ-भेद बहुत हैं और प्रामाणिकता उन सबको प्राप्त है—"तदीय पाठसम्प्रदायस्तु देशविशेषेषु बहुविध उपलभ्यते। तत्र यद्यपि शाखाभेदः कारणं तथापि तैत्तरीय शाखाध्यायकैस्तत्तद्देशेषु वासिभिः शिष्टैरादृतत्वात् सर्वोऽपि पाठ उपादेय एव।" इसके बाद उन-उन देशों के शाखाभेद का परिगणन करते हुए सायण ने स्पष्ट कर दिया कि मेरी व्याख्या का माध्यम द्राविड़ पाठ होगा किन्तु आन्ध्रादि पाठभेदों की भी सूचना यथासम्भव देता चलूँगा—"तत्र वयं पाठान्तराणि यथासम्भवं सूचयन्तश्चतुःषष्ठिपाठं प्राधान्येन व्याख्यास्यामः।" और इसी सूचना के अनुसार उन्होंने बीस ऋचाओं तक पाठान्तर की सूचना भी दे दी। परन्तु इसके बाद उन्हें बहुत से पाठभेद दीखे, जिनको सूचित करते चलना सम्भव न था। तब पूर्व प्रतिज्ञा का अवसान सूचित करने की दृष्टि से लिखा कि इसके बाद आन्ध्र, कर्नाटकादि देशों के श्रुतिपाठों में बड़ा अन्तर आ गया है, अतः अब मैं केवल द्राविड़ पाठ का ही आदर कर व्याख्या करता हूँ क्योंकि विज्ञानात्मप्रभृति पूर्व निबन्धकारों ने द्राविड़ पाठ का ही विशेष आदर किया है (अब मुझसे यह आशा न रक्खें कि मैं सभी पाठान्तरों की सूचना दे सकूँगा।—"इत ऊर्ध्वं तेषु तेषु देशेषु श्रुतिपाठा अत्यन्त विलक्षणाः। तत्र विज्ञानात्मप्रभृतिभिः पूर्वनिबन्धकारैर्द्राविडपाठस्यादृतत्वाद् वयमपि तमेवादृत्य व्याख्यास्यामः।"

अतः 'इत ऊर्ध्वं' प्रतीक से, जो पूर्वापर के बिना सचमुच भ्रामक प्रतीत हो रहा था, यह सिद्ध करना कि सायणाचार्य को दन्ती आदि के मन्त्र खटके हैं, कभी उचित नहीं। बल्कि यह कहा जा सकता है कि सायण को यह पाठ अवश्य अभिप्रेत है क्योंकि यह वही द्राविड़ पाठ है जिसका उन्होंने अधिक आदर किया है। सायण को यही पाठ केवल अभिप्रेत नहीं वरन् वह तो सभी पाठ को उपादेय बतलाते हैं—'सर्वोऽपि पाठ उपादेय एव।' इसी तरह 'आदृतत्वाद्वयमपि तमेवादृत्य' इस पद के स्वारस्य पर भी ध्यान देना चाहिए।

सायणाचार्य तो स्वयं गणेश के पक्के पुजारी हैं। अपने प्रत्येक ग्रन्थ के प्रारम्भ में सबसे पहले नियमतः वे इनकी वन्दना में यह श्लोक पढ़ते हैं—

'वागीशाद्याः सुमनसः सर्वार्थानामुपक्रमे।
यं नत्वा कृतकृत्याः स्युस्तं नमामि गजाननम्॥'

इसी तरह मिताक्षराकार ने, जो सायण के पहले के हैं, 'तत्पुरुषाय विद्महे' मन्त्र गणेशजी की नति के लिए लिखा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मन्त्र की मान्यता में कोई भी अनुपपत्ति नहीं। ...णाचार्य ने अथर्ववेद भाष्य के उपोद्घात में उपवर्षाचार्य 'नक्षत्रकल्पो वैतानस्तृतीयः संहिताविधिः। तुर्य आङ्गिरसः ...शान्तिकल्पस्तु पञ्चमः' यह उद्धरण देकर इन पाँचो ...रणों में प्रतिपाद्य कर्म की तालिका दे दी है। शान्तिकल्प ...तालिका में उन्होंने स्पष्ट शब्दों में विनायक के लिए हवन-पूजा ...विधान बतलाया है—शान्तिकल्पेऽपि प्रथमं वैनायकग्रह-...तिलक्षणानि। तच्छान्तये सम्भाराहरणम्। अभिषेकः वैना-...होमाः। तत्पूजाविधानम्।

अतः सायण की मान्यता गणेशजी की वैदिकता के सम्बन्ध ...स्पष्ट है।

महाभागवत ज्योतिपन्त ने तो महागणपति का प्रत्यक्ष भी किया था। उनके जीवन की अनेक घटनाएँ इस तत्त्व की सचाई की साक्षी हैं। महाराष्ट्र के बाल-सन्त ज्ञानेश्वर ने, जिनने वहाँ के अणु-अणु में आध्यात्मिक मस्ती भर दी है और जिनकी जीवनी मनुष्यों के लिए एक विस्मयकर कहानी है, ज्ञानेश्वरी के प्रारम्भ में बड़ी मधुर भाषा में गणपति-रहस्य का संकेत किया है।

इस तरह सन्तों की दिव्य अनुभूतियाँ भी जब इस पक्ष में हैं, तब उनसे टकरानेवाले अशास्त्रीय तर्क का तक़ाज़ा हमें न सुनना चाहिए।

——

निर्वासित

पण्डित इलाचन्द्र जोशी

[इंटरवल के बाद नीलिमा और महीप तांगे पर बैठकर अलफ़्रेड पार्क में गये। नीलिमा अपनी माँ से झगड़ा करके और यह कहकर ...थी कि मैं ठाकुर साहब से विवाह न करूँगी। महीपके साथ वह पार्क में एक बेंच पर बैठ गई। वह महीप के गले में दायाँ हाथ डाले और ...कन्धे पर अपना खुला हुआ सिर रक्खे हुए मोहमग्न-सी थी और अपने घर भी जाना नहीं चाहती थी। अन्त में दोनों स्टेशन पर गये। ...ने कानपुर के दो टिकट ख़रीदे। पुलिस के एक कर्मचारी को इन पर सन्देह हो गया और वह इन्हें लेकर श्रीमती खन्ना के पास पहुँचा। ...खन्ना ने पुलिसवाले को लौटा दिया तथा नीलिमा को अपने साथ घर के भीतर ले जाकर द्वार बन्द कर लिया। महीप चला आया।

चवालीसवाँ परिच्छेद

पूर्वोक्त घटना के दूसरे ही दिन ठाकुर साहब लौट आये। ...भी उनके साथ ही थी। महीप ने दूर से एक बार रूपा ...ओर ग़ौर से देखा—ऐसा लगता था जैसे क़ब्र से कोई प्रेतात्मा ...आई हो और इस चिन्ता से उन्मन हो कि जिस क़ब्र में ...थी वह कहाँ छूट गया। देखकर महीप का हृदय ...उठा।

ठाकुर साहब के लौट आने के बाद से शारदा देवी भी इस ...व्यस्त हो उठीं कि महीप से एकान्त में बातें करने का ...अवकाश या अवसर ही उन्हें प्राप्त नहीं होता था। जब ठाकुर ...कभी अकेले मोटर पर चले जाते, तब हेमा शारदा देवी ...घेरे रहती। महीप यह जानने के लिए अत्यन्त अधीर हो ...था कि ठाकुर साहब के लौटने पर शारदा देवी अपनी ...विद्या-द्वारा धीराज की मृत्यु के सम्बन्ध में यथार्थ बात ...पता लगाने में किस हद तक सफल हुई हैं। पर कई दिनों ...शारदा देवी से खुलकर बातें करने का कोई सुयोग प्राप्त न ...सका। और उधर नीलिमा के सम्बन्ध में भी कोई बात ...करने की सुविधा नहीं रही। स्टेशनवाली घटना के बाद ...को श्रीमती खन्ना के मुख़ातिब होने का नैतिक साहस नहीं रह गया था। इसके अलावा उसे किसी ज़रिये से इस बात का पता लग गया था कि जब से ठाकुर साहब लौटकर आये हैं, तब से खन्ना-परिवार से वह दिन में तीन-तीन बार भेंट करते हैं।

एक दिन सूर्यास्त के बाद वह अपने कमरे के बाहर, पिछवाड़े की तरफ़, चारपाई पर लेटा हुआ था। सहसा पीछे से किसी के पाँवों की अस्पष्ट आहट सुनकर वह उठ बैठा। शारदा देवी बहुत ही क्षीण मुसकान का आभास मुख पर झलकाती हुई आ खड़ी हुईं। चारपाई के पास ही एक कुर्सी पड़ी हुई थी, जिसकी बाँह टूटी हुई थी। शारदा देवी आते ही बिना तकल्लुफ़ के उस पर बैठ गईं और अत्यन्त धीमे स्वर में बोलीं—"कहिए, आज इस समय लेटे कैसे हैं। तबीअत कुछ ख़राब है क्या?"

"जी नहीं, मैं रोज़ ही इस समय यहाँ लेट कर आराम किया करता हूँ।"

"आज-कल शाम को क्या आप कभी बाहर नहीं निकलते?"

"जी नहीं।"

"कब से?"

"जब से ठाकुर साहब आये हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"स्वाभाविक ही है!"—एक अर्थ-भरी मुद्रा से शारदा देवी ने कहा।

महीप उस मुद्रा से कुछ विचलित हो उठा। उसने कहा—"क्यों, स्वाभाविक क्यों है?"

"इसलिए कि ठाकुर साहब के आ जाने से अब आपको नीलिमा के साथ स्टेशन का चक्कर लगाने की सुविधा नहीं मिल सकती।"—आश्चर्यजनक ढिठाई से शारदा देवी बोलीं।

महीप चौंक उठा—"तब आप तक यह ख़बर पहुँच चुकी है! क्या आप यह बताने की कृपा करेंगी कि किस ज़रिये से आपको इस बात का पता लगा?"

"ठाकुर साहब ने मुझे बताया है।"

"ओह, ठीक!" कहकर महीप कुछ समय के लिए उन्मन हो उठा। उसके बाद सहसा, बिना किसी भूमिका के, बोल उठा—"धीराजसिंह की मृत्यु-सम्बन्धी घटना पर कुछ प्रकाश पड़ा?"

शारदा देवी सहसा अत्यन्त गम्भीर हो उठीं और सजग दृष्टि से एक बार चारों ओर देखकर बहुत ही धीमी आवाज़ में उन्होंने कहा—"मेरा अनुमान सत्य जान पड़ता है। बुधई ने, जो शिकार-पार्टी के साथ था, मुझे बताया है कि धीराजसिंह की मृत्यु किसी की गोली लगने से हुई है, और गोली लगने पर धीराजसिंह ने मृत्यु के ठीक पहले अपने ख़ून से एक कपड़े पर कुछ लिखा था। क्या लिखा था, इस बात का पता अभी तक किसी को नहीं है। पर ज्योंही उन्होंने लिखना समाप्त किया त्योंही ठाकुर लक्ष्मीनारायणसिंह दौड़े हुए उनके पास जा पहुँचे और उन्होंने चुपके से वह रक्ताक्षरों से युक्त कपड़ा अपने पास छिपाकर रख लिया। बुधई दूर से चुपचाप यह दृश्य देख रहा था। पर उसने देखा अनदेखा कर दिया—सम्भवतः कायरतावश। पर बुधई का कहना है कि ठाकुर धीराजसिंह को गोली कैसे लगी, यह वह नहीं जानता। गोली की आवाज़ सुनने पर उसका ध्यान उस ओर आकर्षित हुआ था!"

महीप मर्माहत-सा होकर बैठा रहा। कुछ क्षणों के लिए उसमें ऐसी अन्यमनस्कता आ गई कि वह शून्य दृष्टि से न मालूम क्या देखता रहा।

कुछ देर बाद शारदा देवी उस गहन-गम्भीर मौन वातावरण को अत्यन्त निर्भयता से बेधती हुई बोल उठीं—"आज मैं आपको एक महत्त्वपूर्ण समाचार सुनाने के लिए आई हूँ। इसी महीने की २० तारीख़ को नीलिमा के साथ ठाकुर लक्ष्मीनारायणसिंह का विवाह निश्चित हो चुका है।"

इस बार महीप सचमुच जैसे उछल पड़ा। वह अकचकाता हुआ सीधी तरह से बैठ गया और भ्रान्त दृष्टि से बोला—"आप यह क्या कहती हैं! क्या यह पक्की ख़बर है या कोई उड़ती हुई अफ़वाह आपके सुनने में आई है?"

"यह अफ़वाह नहीं है, जनाब, यह ध्रुव सत्य है। आपको अब अन्तिम रूप से इस स्थिति का सामना करने के लिए तैयार हो जाना चाहिए, या तो डेरा-डण्डा उठाकर चल दीजिए या..."

"या क्या?"—शारदा देवी को रुकते देखकर महीप ने पूछा। उसके चेहरे पर जैसे किसी ने स्याही पोत दी हो। उसने फिर अन्यमनस्कता के अँधेरे में अपने को गर्क़ कर दिया। कुछ देर तक न जाने किस भँवर के बीच कैसे ग़ोते खाता रहा। बाद में अचानक बोल उठा—"ठीक है, मुझे अवश्य इस स्थिति का सामना करने के लिए तैयार हो जाना होगा। माफ़ कीजिएगा, मुझे एक ज़रूरी काम से बाहर जाना है। आज्ञा करता हूँ, कल आपसे फिर इसी समय इसी स्थान में भेंट हो सकेगी। इस समय आज्ञा दीजिए।" यह कहकर वह कपड़े बदलने के लिए भीतर चला गया।

कुछ देर बाद कपड़े बदलकर वह जब बाहर निकला, तब शारदा देवी वहाँ से चली गई थीं। महीप बँगले से बाहर निकलकर कहीं चला गया।

नीलिमा उस रात अपनी अस्वाभाविक और असामान्य मनोदशा के कारण जिस घटना-चक्र के फेर में पड़ गई थी और उस असाधारण घटना-चक्र के ही कारण महीप को अपना 'हसबैंड' बताकर जो एक नई उलझन उसने अपने और साथ ही महीप के मन में उत्पन्न कर दी थी उससे वह दो ही दिन बाद अपने को मुक्त करने में आश्चर्यजनक रूप से सफल हो गई। उसकी माँ ने उस रात उसे एकान्त में ले जाकर न जाने क्या मन्त्र पढ़ाया जिसने उसकी उस दिन की और रात की—स्टेशन में अपने अस्वाभाविक व्यवहार की—समस्त ग्लानि को चीनी मिट्टी की तश्तरी में लगी हुई राख की तरह धोकर ऐसा साफ़ कर दिया कि उसका लेशमात्र दाग़ भी उसके हृदय में रह नहीं पाया। वास्तव में माँ के स्नेह के सुमधुर पीड़न के अठगुने रूप में वापस पाने के इरादे से ही जैसे उसके अन्तर्मन ने वह जाल रचा था, जिसने तनिक-सी बात का बहाना पकड़ कर उसे माँ की तरफ़ से विद्रोही बना डाला था। यही कारण था कि वह जब महीप के पास गई थी, तब फिर उस रात महीप के पास लौटने की प्रवृत्ति उसके मन में किसी प्रकार नहीं जाग पाती थी। यही कारण था कि महीप के व्यक्तित्व का ऐसा जादू उस रात पार्क में उसके ऊपर चल गया था कि वह अपने को उसके प्रति पूर्णतया समर्पित करने की सीमा तक पहुँच चुकी थी। उसका अन्तर्मन उसके साथ एक विचित्र तृशंसतापूर्ण और साथ ही कौतुकप्रद खेल खेल रहा था, जो उसके साथ के दूसरे व्यक्ति को पूर्णतया ले डूबने के लिए उतारू हो उठा था। अज्ञात से जिस निद्रा-विचरण की-सी अवस्था में वह महीप के साथ स्टेशन तक गई थी उसमें उसे अपनी अन्तश्चेतना का उस कूट और क्रूर क्रीड़ा का कोई भान नहीं हो पाया था। स्टेशन पहुँचने तक उसकी मानसिकता इस स्थिति में थी कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगता था जैसे अनन्तकाल तक असीम देश तक वह बराबर इसी प्रकार महीप के साथ चलती रहेगी—निर्द्वन्द्व और निर्मुक्त बन्धन से बिना किसी भी पारिवारिक, सामाजिक अथवा मानसिक बन्धन का अनुभव रञ्चमात्र भी किये हुए। समस्त विश्व में, अनन्तकाल में जैसे महीप ही उसके जीवन का एक मात्र सहयात्री, एकमात्र नियन्ता और एकमात्र आत्मीय है, यह विश्वास उस समय उसके मन की उस उप-साधारण अवस्था में ऐसी प्रबलता से जमा हुआ था कि लगता था, जैसे वह जीवन में कभी किसी काल में टल ही नहीं सकता।

पर स्टेशन पहुँचते ही जब ताँगे की गति रुकी, तब सहसा नीलिमा के मन की अति-प्राकृत दशा की गति भी स्थगित हो गई। उसका जो उप-साधारण व्यक्तित्व कुछ अजीब से मनोवैज्ञानिक कारणों से उस दिन उभर उठा था वह बड़ी तीव्र गति से विलीन होने लगा—जैसे कोई विमान आकाश में मीलों ऊपर—स्ट्रेटास्फेयर में—उड़ान भरने के बाद सहसा सीधे नीचे उतरने को बाध्य हुआ हो और उस उद्देश्य से बड़ी तेज़ी से नीचे खाता चला जा रहा हो। उस ग़ोताख़ोरी की मध्यावस्था में उसके मन की आँखें जिन अजीब ढङ्ग से बदलते हुए संप्रेक्षणों—'पर्सपेक्शनों'—में वास्तविक तथा काल्पनिक दृश्यों को देख रही थीं, उनकी अनुभूति नीलिमा को विचित्र और विभ्रामक लग रही थी। जब महीप टिकट ख़रीदने गया और नीलिमा वहाँ यात्रियों की भीड़ के बीच में एक स्थान पर खड़ी रही तब उसे (नीलिमा को) अचानक ऐसा लगा कि उसका जो विमान कुछ ही क्षण पहले 'स्ट्रेटास्फेयर' में उड़ान भर रहा था वह धरती पर टकराकर चकनाचूर हो गया है। उसकी माँ ने न जाने टेलीपैथी की किस चुम्बक-शक्ति से 'राकेट' से भी तीव्र गति से चलनेवाला कौन अस्त्र उसके उस मनोविमान पर फेंका था! क्योंकि उस दिन सन्ध्या से ही उसका जो दूसरा व्यक्तित्व जाग्रत हुआ था वह जब एक विस्फोट के साथ सहसा विलीन हो गया तब तत्काल बिजली की तरह उसकी आँखों के आगे सर्वत्र माँ ही रूप विभासित हो उठा और एक मात्र माँ की ही चिन्ता सजीव रूप धारण करके उसके सारे मन को चारों ओर से घनी बादलों की तरह छा दिया। यही कारण था कि महीप टिकट ख़रीदकर उसके पास पहुँचा तब वह चीख़ मार उठी; उसका प्रतिदिन के जीवन का वही साधारण व्यक्तित्व कराह उठा जिसमें एक पल के लिए भी माँ के स्नेह-बन्धन से मुक्त होने का साहस कभी नहीं हुआ, कभी इच्छा ही नहीं हुई। उसकी सारी बहिरात्मा गुहार मार उठी—माँ! माँ! माँ! माँ से जीवन में पहली बार भयङ्कर विद्रोह करके वह चली गई थी उसके सहस्र कर जैसे अपने को चारों ओर फैलाकर विह्वल और विकल अनुनय के साथ जैसे कह रहे थे—"आ जा आ जा! तेरे लिए इस जीवन में एकमात्र इन्हीं हाथों का आश्रय है; एकमात्र माँ की गोद ही ऐसा स्थान है जहाँ नाना विरोधी और विषम चक्रों से भरे इस जीवन में तू अपने चिर दिन के अभ्यास के अनुसार सहूलियत से बैठ सकती है और आराम से करवट ले सकती है। इसे छोड़कर इतनी देर तक तू व्यर्थ के किन भ्रामक स्वप्नों, महत्त्वाकांक्षा की किन मरीचिकाओं से भरे लोक में भटकती रही? आ जा, बेटी, आ जा!"

नीलिमा उस एकान्त आग्रहपूर्ण आह्वान की उपेक्षा नहीं कर सकी। जब महीप ने टिकट ख़रीदने के बाद उसे प्लेटफ़ार्म के भीतर चलने के लिए कहा तब उसके मन की ठीक वह दशा हो रही थी जैसी चन्द महीने के बच्चे की नींद टूटने पर—किसी अस्पष्ट छायालोक का स्वप्न भङ्ग होने पर—होती है, और वह कुछ समय के लिए जागरण-लोक की नई परिस्थिति से अपने मन का ठीक संयोजन न कर पाने के कारण अर्द्धचेतनावस्था में माँ के स्पर्श की अज्ञात लालसा से बिलखने लगता है। यही कारण था कि उस क्षण के लिए वास्तविकता के दृष्टिकोण से महीप की परिस्थिति को (और साथ ही उतने आदमियों की भीड़ में स्वयं अपनी यथार्थ स्थिति को) समझने की समर्थता उसमें नहीं रह गई थी। उसने चिल्लाकर और रोकर महीप को जिस अस्वाभाविक और अवमाननापूर्ण परिस्थिति में डाल दिया था वह जान-बूझकर नहीं, बल्कि अर्द्धचेतन मन की प्रतिक्रियात्मक प्रवृत्तिवश। बाद में जब पुलिस कर्मचारी ने टोका तब नीलिमा के मन की प्रतिक्रिया ने एक दूसरी ही दिशा पकड़ ली। महीप की तौहीनी का यथार्थ रूप उसके सामने आ गया और वह पूर्णतया 'सचेत' हो उठी। उस 'सचेत' अवस्था में उसने तात्कालिक विपत्ति से छुटकारा पाने के उद्देश्य से ही महीप को अपना 'हसबैंड' बनाया था, सन्देह नहीं; पर बाद में 'हसबैंड' शब्द का जादू उसके मन पर कुछ दूसरा ही प्रभाव डालने लगा। अपने मन की 'सचेत' अवस्था में भी उसने यह सङ्कल्प किया था कि वह अपनी माँ के आगे भी सच्चे हृदय से यह स्वीकार कर लेगी कि महीप को उसने अपना 'हसबैण्ड' मान लिया है और अपने इस सङ्कल्प को कार्यरूप में परिणत करके रहेगी। पर माँ से जब वह मिली और उन्होंने अपने मातृ-हृदय की आकुल विह्वलता से जब अपनी अन्तर्वेदना उसके आगे आँसुओं से पिघलते हुए शब्दों में व्यक्त की, तब वह स्वयं भी फिर एक बार पिघल उठी। वास्तव में उसका अन्तर्मन पहले से ही पिघलने के लिए तैयार बैठा था, केवल उसके लिए अधिक से अधिक विह्वलतापूर्ण वातावरण तैयार करने का कुचक्र रच रहा था। अपना यह मनोविश्लेषण नीलिमा ने दूसरे दिन रात में सोने के पूर्व पलँग पर लेटे-लेटे स्वयं किसी हद तक कर लिया था। उसके बाद जब दूसरे दिन ठाकुर लक्ष्मीनारायणसिंह कई दिनों के बाद उससे मिले, तब उसने आश्चर्य के साथ इस बात पर ग़ौर किया कि केवल कुछ ही दिनों की अनुपस्थिति में ठाकुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहब में एक आश्चर्यजनक परिवर्तन हो गया है—ऐसा परिवर्तन जो पहली ही दृष्टि में अपना प्रभाव छोड़े बिना नहीं रह सकता। उसकी मार्मिक रूप से अनुभूतिशील आँखों ने देखा कि ठाकुर साहब की आँखों की अभिव्यक्ति में एक अस्पष्ट व्यंग्य और क्रूरता का जो भाव सब समय उनकी सहज मुसकान के क्षणों में भी वर्तमान रहता था उसके स्थान पर एक करुण, कोमल और स्निग्ध भाव की छाया सहज रूप से भासमान हो रही है। इतने वर्षों से ठाकुर साहब के प्रति अपने जिस अज्ञात खिंचाव के विरुद्ध वह भीतर ही भीतर लड़ाई लड़ती जाती थी, वह आज उसे पहली बार प्रीतिकर लगा और उसे उसने सहज स्वाभाविक रूप से ग्रहण किया। आज ठाकुर साहब को देखते ही उसे अपना वह व्यक्तित्व अत्यन्त उपेक्षणीय, तुच्छ और हास्यास्पद लगा जो पार्क में महीप के प्रति पूर्णतया आत्म-समर्पण करने के लिए प्रायः तैयार हो उठा था। सच तो यह है कि उसके सचेत मन में अपने व्यक्तित्व के उस स्वरूप की स्मृति ही नहीं जगी। अपने अनजान ही में जब उसने एक बार ठाकुर साहब के इस बार के व्यक्तित्व की तुलना महीप के व्यक्तित्व से की, तो उसको महीप का अकालपक्व शिशु-रूप उसे अत्यन्त हास्यास्पद लगने लगा। पार्क में महीप ने हिमालय के जिस विजन देवदारु-वन की रूपकमयी कल्पना के जादू से नीलिमा के भीतर एक निराले रहस्यलोक का द्वार उद्घाटित करके अपने व्यक्तित्व के जिस गहन और व्यापक रूप का परिचय दिया था, ठाकुर साहब से भेंट होने पर उसकी स्मृति न उसके अन्तर्मन में जगी न सचेत मन में। पार्क में जो अगाध रहस्यमय क्षण उसने उस रात महीप के साथ बिताये थे उनमें किसी अनन्त व्यापी मोहमहिमायुक्त जगत् की प्रतिच्छवि भासमान हो उठी थी, सन्देह नहीं; पर वे क्षण अनन्त की उस सम्पूर्ण प्रतिच्छवि के साथ ही उसी रात पूर्ण रूप से न जाने कहाँ विलीन हो गये थे और नीलिमा अपने सचेत व्यक्तित्व में अपनी सुषुप्तावस्था या स्वप्नावस्था के उन क्षणों का कोई भी छायाभास, तनिक-सा भी दाग़, नहीं पा रही थी। उसके भीतर यह धारणा जग ही नहीं पाती थी। उसके उस रात के असाधारण व्यवहार ने महीप के अन्तर्मन में सम्भवतः कोई ऐसा गहरा प्रभाव छोड़ दिया हो, जिसका चिह्न—सुखकर अथवा अप्रीतिकर जैसे भी हो—उसकी मृत्यु तक न मिटने पावे।

अपने मन की तत्कालीन अपेक्षाकृत स्वस्थ और स्थिर अवस्था में जब वह वर्तमान के धुमैले पर्दे के पार किसी एक छिद्र से जीवन के नये, सुन्दर, सुखद और उज्ज्वल रूप की झाँकी देख रही थी तब एक दिन अचानक उस सारे दृश्य को ज्वालामुखी के विस्फोट से उत्पन्न कालिख से भी गाढ़े, काले धुँये के बादलों से ढकता हुआ एक गुमनाम पत्र—नागरी अक्षरों में टाइप किया हुआ—उसके पास पहुँचा। 'फ़ुलस्केप साइज़' के दो-तीन पन्नों में वह पत्र समाप्त हुआ था। वह पत्र न किसी को सम्बोधित करके लिखा गया था, न उसके नीचे किसी के हस्ताक्षर थे। उस पत्र को पढ़ने पर नीलिमा को ऐसा लगा जैसे उसके सारे शरीर में सहस्रों छोटी-छोटी तीखी सुइयाँ गड़ गई हों। अपने कमरे के किवाड़ भीतर से बन्द करके अपने पलँग पर बैठकर उसने एकान्त में कई बार हृदय को दहला देनेवाला वह पत्र पढ़ा। जितनी ही बार वह पढ़ती थी उतनी ही उसकी बेचैनी भी बढ़ती जाती थी, तथापि वह फिर-फिर उसे पढ़ने का लोभ संवरण नहीं कर पाती थी। पढ़ते-पढ़ते जब वह थक गई तो पत्र को सिरहाने रखकर और सिर पर दाहिना हाथ रखकर चित लेट गई। "भगवान्! क्या यह सम्भव है? नहीं, नहीं! यह घोर अनर्थ—कभी नहीं!" और यह सोचते हुए, न चाहने पर भी, उसकी भीतरी आँखों के आगे ठाकुर लक्ष्मीनारायणसिंह की वह छवि अत्यन्त गाढ़े और उज्ज्वल रङ्गों में परिस्फुट हो उठी जो पिछले कुछ वर्षों में उनकी सरल मुस्कान भरे मुखड़े के भीतर अत्यन्त क्रूर व्यंग्य की समूर्त अभिव्यक्ति के रूप में बीच-बीच में भासित हो उठती थी—जिसे भूलने के लिए नीलिमा बार-बार छटपटाती रहती थी। आज वह छाया-छवि 'इनलार्ज्ड' किन्तु सुस्पष्ट फोटो की तरह उसकी कल्पना की आँखों के आगे जैसे अत्यन्त निष्ठुर परिहास करती हुई नाचने लगी।

इस पत्र में भूमिका के तौर पर जो कुछ लिखा था उसका सारांश यह है—"ठाकुर लक्ष्मीनारायणसिंह से तुम्हारा विवाह तय हो चुका है, पर यदि तुम इस अत्यन्त वीभत्स और विषधर नाग की घातक लपेटों से अपने को छुड़ाना चाहो तो अब भी उसके लिए समय है। इस नाग की काली करतूतों से तुम तनिक भी परिचित नहीं हो। यदि उसकी एक भी करतूत से तुम अच्छी तरह परिचित हो जाओ तो तुम्हारा रक्त जमकर बर्फ़ बन जायगा; तुम्हारे रोंगटे सुई की नोक की तरह खड़े हो जायँ और इस बात का पता चल जायगा कि एक नृशंस नारकी आत्मा वर्षों से किस प्रकार के कूट और आतङ्ककारी उपायों से समाज के चुने हुए निरीह प्राणियों को अपनी सर्वशोषी अन्धगुहा के भीतर घसीटती चली जा रही है। उसकी पिछली करतूतों का पता तुम्हें बाद में लग जायगा। अभी केवल इतना ही जान लो कि ठाकुर धीराजसिंह की हत्या इसी नाग ने की है। शिकारपार्टी में जिस 'दुर्घटना' के कारण धीराजसिंह की मृत्यु हुई वह इसी मानववेषधारी शैतान की पूर्व-निश्चित योजना के अनुसार घटी थी।"

इसके बाद पत्र में विस्तार के साथ धीराजसिंह की हत्या का वर्णन किया गया था। नीलिमा पत्र को पढ़ते हुए बार-बार आतङ्क से सिहर उठती थी। आधी रात में किसी एकान्त स्थान में भूत की कहानी सुननेवाले बच्चे की तरह मारे भय के उसके रोयें खड़े हो उठते थे, तथापि उस कहानी में उसकी दिलचस्पी भी बेहद बढ़ती जाती थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
76278

नीलिमा ने वह गुमनाम पत्र एक अत्यन्त गुप्त स्थान में रख लिया और घर में किसी से उसकी कोई चर्चा नहीं की। दूसरे दिन जब ठाकुर लक्ष्मीनारायणसिंह उसके पास आये तब उसने खुफिया पुलिस के किसी चालाक और अनुभवी अफ़सर की तरह ऐसी पैनी और मर्मभेदी दृष्टि से उनके मुख को बाहरी पर्दे के भीतर से झाँकनेवाले रूप का परीक्षण किया कि ठाकुर साहब विचलित हो उठे। अपनी माँ और प्रतिमा के बीच में जब तक वह ठाकुर साहब के साथ बैठी रही तब तक एक शब्द भी न बोली। बाद में दोनों (श्रीमती खन्ना और प्रतिमा) उठकर चली गईं। इधर कुछ दिनों से दोनों ने—परोक्षतः आपस में गुप्त परामर्श करके—यह नियम बना लिया था कि नीलिमा और ठाकुर साहब को अधिक से अधिक समय एकान्त में बातें करने के लिए छोड़ दिया जाय।

आज ठाकुर साहब को एकान्त में पाकर नीलिमा पहली बार एक विचित्र-सी बेचैनी और सङ्कोच का अनुभव करने लगी। वह सङ्कोच प्रेम-जनित निकटता के कारण सम्भवतः उतना नहीं था, जितना उसके भीतर अवरुद्ध क्रोध और भय से सम्मिलित रासायनिक भावना के कारण; पर उस रासायनिक मिश्रण में विस्फोट होते देर न लगी और नीलिमा की जीभ एकदम जड़-सी बनी हुई थी वह सहसा बड़े वेग से बोल पड़ी। उसने जो पहली बात कही वह यह थी—"आपकी शिकार-पार्टी के सारे भीतरी भेद मेरे आगे खुल गये हैं।"

यह बात आकस्मिक बम-विस्फोट की तरह ठाकुर साहब के कानों में गरज उठी। उनका चेहरा इस क़दर सिकुड़कर स्याह हो उठा, जैसे सब कुछ चाट जानेवाली ज़हरीली 'मस्टर्ड' उन्हें लग गई हो। क्षण भर के लिए उन्हें ऐसा लगा जैसे उनका दम घुटा जा रहा है। उसके बाद प्रायः रोनी-सी सूरत बनाते हुए उन्होंने तनिक तीव्र स्वर में कहा—"शिकार-पार्टी का भेद! कैसा भेद?"

"आप चूँकि अच्छी तरह जानते हैं कि वह भेद क्या है, इसलिए उसे खुलासा करने की कोई आवश्यकता मैं नहीं समझती।"

ठाकुर साहब अत्यन्त उत्तेजित हो उठे। बोले—'देखो नीलिमा, पहेली-भरे शब्दों में बातें करने की अपनी आदत छोड़ो और साफ़-साफ़ समझाओ कि तुम्हारी बात का आशय क्या है?"

इस बार ठाकुर साहब की विस्मय-भरी उत्सुकता नीलिमा को ऐसी स्वाभाविक लगी कि अधिक घुमाव-फेर के चक्कर में पड़ना उसने उचित नहीं समझा। वह एक बार चारों ओर सजग दृष्टि से देखकर धीरे से बोली—"ठाकुर धीराजसिंह की हत्या से सम्बन्धित घटना से मेरा मतलब है।"

"हत्या! यह किसने तुमसे कहा कि धीराजसिंह की हत्या की गई है?"

नीलिमा सहसा उठ खड़ी हुई और भीतर से कमरे के दरवाज़े की सिटकनी लगाकर उसने एक आलमारी खोली और उसके भीतर से वही गुमनाम पत्र निकालकर उसने ठाकुर साहब के हाथ में दे दिया। और बोली—"पढ़िए।"

ठाकुर साहब अपनी इन्द्रियों की सम्पूर्ण शक्तियों को बटोर-कर पत्र पढ़ने लगे। जब वह पत्र पढ़ रहे थे तब नीलिमा फाँसी की सज़ा देने के लिए तैयार बैठे हुए जज की दृष्टि से उनके प्रत्येक हाव-भाव पर बड़ी बारीकी से ग़ौर कर रही थी कि कौन रङ्ग आता है और कौन जाता है।

——

गीत

श्रीयुत गोपाल शर्मा, बी० ए०

क्रियाशील विश्वास बनाओ।
कालपत्र पर कार्य-कलम से—
गौरवमय इतिहास रचाओ।

युग-युग से तुमने जो बोया,
अश्रु सींचकर जिसे भिगोया,
जो दुर्दैव धरा में सोया,
क्रिया-किरण से उसे जगाकर
आज स्वत्व-अङ्कुर उपजाओ।

छिन्न-भिन्न कर भय के बन्धन,
चीर-फेंक सब कनक-आभरण,
लगा भाल पर बलि का चन्दन,
सब ध्वज एक रज्जु में सीकर
जय का बन्दनवार सजाओ।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

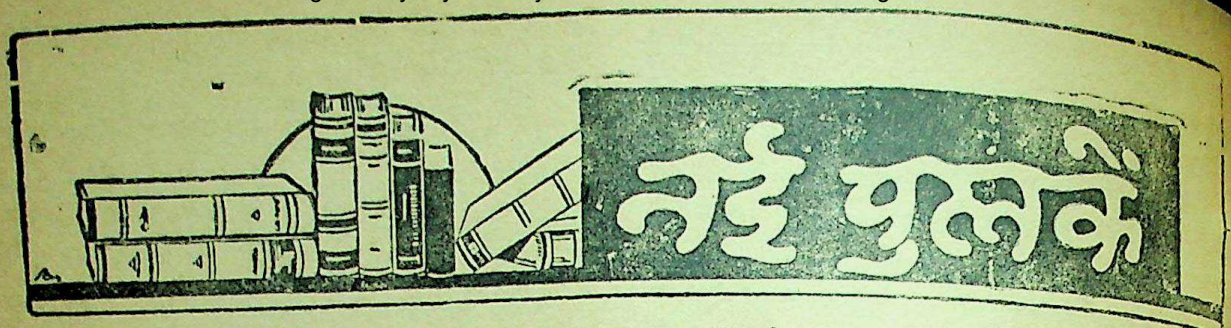

१—मातृवन्दना (दूसरा संस्करण)—लेखक, पण्डित भगवतप्रसाद शुक्ल; प्रकाशक, व्यवस्थापक—भारतीय ग्रन्थमाला, वृन्दावन या प्रयाग। पृष्ठ-संख्या ६०। आकर २०"×३०" सोलह पेजी। मूल्य छः आने।

इस पुस्तक में आठ दर्शनों में निम्नलिखित टेकों पर स्वदेश-प्रेम से ओत-प्रोत कविताएँ दी गई हैं :—

(१) प्यारी माता जीवनदाता, तू सर्वस्व हमारी है।
(२) जय माँ, जय जय मातृभूमि, तू सब की मातु हमारी है।
(३) भारत मातु हमारी तू है, प्राणों से भी प्यारी तू है।
(४) शुभरूप मृदुमनोहर कमनीय कान्तिवाली।
(५) तुझको सुखी बनाऊँगा, तब तेरा पुत्र कहाऊँगा।
(६) करो मिल मातृभूमि गुणगान।
(७) संसार सौख्यकारी तेरा स्वरूप होगा।
(८) भारत माँ सब भाँति सुखारी, कर दो जगदाधार प्रभो।

कविता पढ़ने में आनन्द आता है और राष्ट्रीय भाव जाग्रत् होते हैं। भाषा भी बहुत सरल है और विचार उच्चकोटि के हैं। इसका प्रचार नवयुवकों में विशेष रूप से होना चाहिए। भारत माता के पुजारियों को तो इसका नित्य पाठ करना चाहिए। इससे देशभक्ति बढ़ेगी और जनता में अपनी दशा सुधारने का उत्साह उत्पन्न होगा।

हमें यह जानकर प्रसन्नता हुई कि हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की ओर से पञ्जाब और कश्मीर में होनेवाली कोविद परीक्षा के पाठ्यक्रम में इसे स्थान मिल गया है। 'राष्ट्रभाषा-प्रचार समिति वर्धा' और 'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार समिति' को भी अपनी परीक्षाओं के पाठ्य ग्रन्थों में इस पुस्तक को स्थान देना चाहिए। हम चाहते हैं कि यह पुस्तक भारत के प्रत्येक स्थान में घर-घर में पहुँचे और इसके द्वारा मातृवन्दना की भावना का खूब प्रचार हो।

—दयाशङ्कर दुबे

२—शकुन्तला की विदाई (खण्डकाव्य)—लेखक, श्री पोद्दार रामावतार 'अरुण' और प्रकाशक, श्री युगल किशोर झा, तारामण्डल, मुजफ्फरनगर हैं। पद-संख्या—८९; मूल्य ।।।) है।

पुस्तक की छपाई तथा गेटअप सुन्दर है। भाषा सरल, सुन्दर तथा सुगम्य है। पदों में सुन्दर प्रवाह है। करुणरस-प्रधान होने के कारण सहज ही चित्ताकर्षक है। पुस्तक में 'प्रसाद' गुण का बाहुल्य है जैसे—

इनके जीवन में भी वसन्त
इनके अन्तर में भी अनन्त
इनकी आँखों में भी करुणा का पानी
इनमें भी है दर्शन-चिन्तन
इनके भी मृदु कम्पन सिहरन
इनकी बोली में भी इतिहास कहानी।

यद्यपि कपोत और कपोती की कथा का कोई प्रमाण महाकवि कालिदास की रचना से नहीं मिलता तथापि कवि अपने इस कार्य में श्लाघ्य है। एक ही दृश्य-द्वारा दोनों—महात्मा कण्व तथा शकुन्तला—पर प्रभाव डाल देना कवि की सफलता का द्योतक है। यह स्थल मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से सुन्दर बन पड़ा है।

शकुन्तला की विदा के समय कण्व की विह्वलता, सखियों की खिन्नता, मृगों की विकलता और लता-वृक्षादिका उन्मन भाव पद्यों में बड़ी चतुराई से चित्रित किये गये हैं। शकुन्तला फूलों और वृक्षों तक से विदा माँगती हैं और कहती है—

दो विदा आज अब हे उदार
मिल लो मुझसे बस एक बार।

—कालिकाप्रसाद त्रिपाठी

३—मरुकुञ्ज (क्षयरोग का निवारण)—लेखक, श्रीयुत मथुरादास त्रीकम जी हैं। प्रकाशक, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद है। पृष्ठ-संख्या १०८ और मूल्य १।) है। मूल पुस्तक गुजराती में है। श्री काशिनाथ त्रिवेदी ने इसका हिन्दी अनुवाद किया है।

क्षय जैसे भयङ्कर रोग पर हिन्दी में अब तक कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें कुछ विशेष महत्त्व की भी हैं। प्रस्तुत पुस्तक उनमें से एक है। इसमें एक ऐसी विशेषता है जिसकी ओर ध्यान सहज ही आकृष्ट हो जाता है। वह विशेषता यह है कि इस सम्बन्ध की अन्य पुस्तकें जहाँ चिकित्सकों-द्वारा लिखी गई हैं और उनमें रोगियों के लिए पथ्य और चर्या का उपदेश एक डाक्टर के दृष्टिकोण से किया गया है वहाँ इस पुस्तक का सङ्कलन एक ऐसे महानुभाव-द्वारा हुआ है जो स्वयं इस रोग के चपेट में आकर काफ़ी भुगत चुके हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार अन्य एतत्सम्बन्धी पुस्तकों में जहाँ हमें चिकित्सकों का अनुभव प्राप्त होता है वहाँ इस पुस्तक-द्वारा हमें रोगी के अनुभवों की विस्तृत जानकारी होती है। श्री मथुरादास त्रीकम जी क्षयरोग से ग्रस्त होकर स्वास्थ्यलाभ के लिए एक अरसे तक सेनेटोरियम में रह चुके हैं। वहाँ रहते हुए आपने न केवल अन्य क्षयरोगियों से बातचीत की, इस रोग पर अनेक पुस्तकें भी पढ़ीं और उनके सत्परामर्शों पर आचरण किया। इस प्रकार यह पुस्तक उनके स्वतन्त्र वाचन, अनुभव और निरीक्षण का परिणाम है।

लेखक महोदय ने ठीक ही कहा है कि "तपेदिक़ या क्षय का नाम सुनते ही बीमार और उसके रिश्तेदारों का दिल दहल उठता है पर सच बात यह है कि यदि शुरू से ही इस रोग को पहिचान लिया जाय और रोगी की ठीक-ठीक देखभाल की जाय तो रोग निस्सन्देह निवृत हो जाता है।"

पुस्तक के प्रारम्भ में रोग की पहिचान पूरी तरह दी गई है। फिर उसकी चिकित्सा और परिचर्या का विवरण दिया गया है। चिकित्सा में औषधों पर निर्भर न रहकर प्राकृतिक रहन-सहन और स्वाभाविक दिनचर्या पर अधिक ज़ोर दिया गया है। अन्तिम अध्यायों में शस्त्र क्रिया और अनेक अन्य आधुनिक उपचारों की भी व्याख्या की गई है। संक्षेप में क्षय-सम्बन्धी समस्त उपयुक्त सूचनाओं का इस पुस्तक में समावेश हो गया है। शैली सुबोध और सरल है। मेरा विश्वास है कि यह पुस्तक क्षयरोगियों और क्षय-चिकित्सकों के निकट समान रूप से उपयोगी है।

—'पण्डित'

४—उन्मुक्त प्रेम (उपन्यास)—लेखक, श्री गुरुदत्त और प्रकाशक, विद्या मन्दिर लिमिटेड, नई दिल्ली हैं। पृष्ठ-संख्या ४५८ और मूल्य ६) छः रुपये है।

प्रस्तुत उपन्यास की पृष्ठभूमि उस पाश्चात्य और नवीनतम विचार-धारा को लेकर निर्मित की गई है जिसके अनुसार स्त्री-पुरुष के सम्मिलन के लिए न तो कोई मर्य्यादा ही मानी जाती है और न किसी सांस्कृतिक अथच सामाजिक नियन्त्रण की ही कोई आवश्यकता समझी जाती है। प्रेम के नाम पर मानव की पाशविक प्रवृत्तियों के इस उन्मुक्त प्रवाह को न तो पाश्चात्य देशों के लिए ही कल्याणकारी कहा जा सकता है, और न भारतीय समाज के लिए ही। बल्कि भारतीय संस्कृति का जहाँ तक सम्बन्ध है, ऐसी विचार-धारा किसी ज़हर के बुझे हुए तीर से कम घातक नहीं कही जा सकती।

उपन्यास के प्रधान नायक बिहारीलाल को एक कम्यूनिस्ट (समाजवादी) के रूप में चित्रित किया गया है। इसके चरित्र-चित्रण में उपन्यासकार ने जो विशेषता दर्शाई है, वह यही कि अपनी शिक्षिता और सुन्दरी पत्नी विमला की वह पूर्णरूपेण उपेक्षा कर दो अन्य नवयुवतियों से न केवल अपनी घनिष्ठता स्थापित करता है, प्रत्युत उनके साथ विवाह भी करता फिरता है। डाक्टर खन्ना की पुत्री प्रेमा और वजीरस्तानी हकीम की पुत्री नरगिस से घटना-क्रम के सिलसिले में बिहारीलाल अपना विवाह कर लेता है; लेकिन दोनों ही इसका परित्याग भी कर देती हैं। तब एक तीसरी महिला मिस कापर के साथ वह विवाह तो नहीं करता; लेकिन उसके साथ उसका उन्मुक्त प्रेम अवश्य हो जाता है।

प्रधान पात्री प्रेम का चरित्र-चित्रण भी इसी तरह का चौंका देनेवाला है। वह भी उन्मुक्त प्रेम के प्रवाह में बहती हुई ऐसी नारी चित्रित की गई है, जो किसी भी पुरुष से जब जी चाहा प्रेम करने लगती है। विवाह नाम के सामाजिक विधान का उसकी दृष्टि में कोई महत्त्व ही नहीं। पहले वह बिहारीलाल की पत्नी बनती है। बाद में एक पूँजीपति सेठ धन्नाराम की पत्नी बन जाती है।

उपन्यास की इस मूल विचार-धारा से हम सहमत नहीं। फिर इसके कथानक में भी हमें कोई मौलिकता नज़र नहीं आई। यशपाल के 'देशद्रोही' का प्रभाव इस कथानक में यत्र-तत्र स्पष्ट प्रतिबिम्बित है। वही मिल-मालिकों और मज़दूरों का झगड़ा, वही हड़तालें और वही उन्मुक्त प्रेम जो 'देशद्रोही' में है, इस उपन्यास में भी दूसरे चोगे को पहिनकर हमारे सामने आता है।

नवीनता को अपनाने के हम विरोधी नहीं। लेकिन ज़हरीली और घातक नवीनता के हम हिमायती नहीं। भारतीय संस्कृति में साँस लेनेवाले युवकों और युवतियों के लिए यह उपन्यास एकदम अकल्याणकारी सिद्ध होगा। 'स्वाधीनता के पथ पर' जैसे उपन्यास के यशस्वी लेखक का यह दिशा-परिवर्तन हमें तनिक भी प्रभावित नहीं कर सका।

—देवीदयालु चतुर्वेदी 'मस्त'

——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

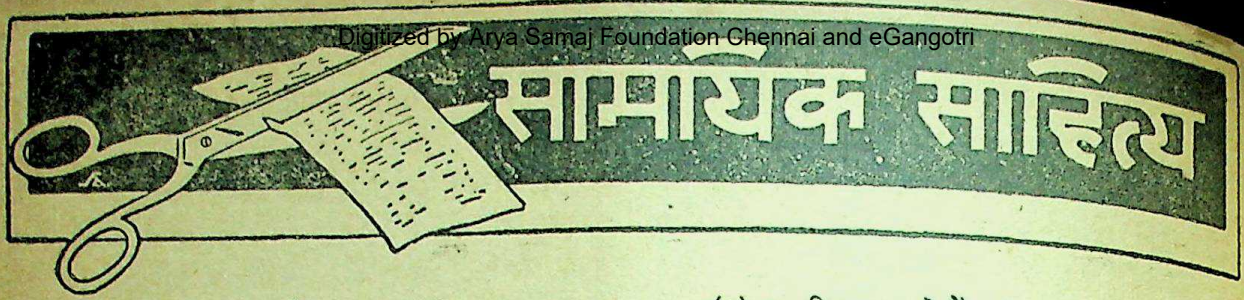

अमरीका की वैदेशिक नीति

अमरीका के प्रधान ट्रूमैन साहब ने अपनी वैदेशिक नीति के सम्बन्ध में जो महत्त्वपूर्ण घोषणा की है, यदि उसका दृढ़ता से पालन किया गया तो उसके द्वारा संसार में व्यापक शान्ति स्थापित हो सकेगी। उनके वक्तव्य का विवरण पत्रों में प्रकाशित हुआ है जो यह है—

(१) स्वार्थपूर्ण लाभ या प्रादेशिक प्रसार की ताक में हम नहीं हैं। छोटे या बड़े किसी भी राष्ट्र के विरुद्ध हमारी आक्रमणात्मक योजना नहीं। किसी भी राष्ट्र के शान्तिवादी लक्ष्य से सङ्घर्ष के लिए हमारा कोई लक्ष्य नहीं।

(२) जिन सभी देशों के स्वशासनाधिकार और स्वतन्त्रतायें छिन गई हैं, उन्हें वे अन्ततः वापिस कर दी जायँगी, इसमें हम विश्वास करते हैं।

(३) संसार के किसी भी मैत्रीपूर्ण अङ्ग के क्षेत्र-सम्बन्धी परिवर्तन को हम तब तक स्वीकार नहीं कर सकते जब तक कि वहाँ की जनता स्वतन्त्र रूप से अपनी इच्छायें प्रकट करके इससे अपनी सहमति प्रकट न कर चुकी हो।

(४) हमारा विश्वास है कि जो देश स्वशासन के लिए तैयार हैं, उन्हें बिना किसी विदेशी राष्ट्र के हस्तक्षेप के ही अपनी इच्छा के अनुसार अपनी सरकार बनाने की अनुमति दी जाय। योरप, एशिया और अफ्रिका तथा पश्चिमी गोलार्द्ध में सर्वत्र यही नियम रहेगा।

(५) युद्ध-काल के अपने मित्रों के साथ सहयोग के रूप में हम शत्रु-देशों को अपने इच्छानुसार शान्तिपूर्ण प्रजातन्त्रवादी सत्तायें स्थापित करने में सहायता देंगे और हम एक ऐसा संसार बनाने का प्रयत्न करेंगे जिसमें नाज़ीवाद और फ़ासिस्टवाद तथा 'सैनिक आक्रमण प्रवृत्ति' का अस्तित्व न होगा।

(६) किसी विदेशी राष्ट्र-द्वारा किसी राष्ट्र पर लादी गई सरकार को हम स्वीकार नहीं कर सकते। कुछ दशाओं में ऐसी सरकारों का लादे जाने को रोकना असम्भव होगा, पर अमरीका ऐसी किसी सरकार को स्वीकार नहीं करेगा।

(७) हमारा विश्वास है कि जो समुद्र, नदी तथा जल-मार्ग एक से अधिक देशों से होकर गुज़रते हैं, उन पर यात्रा के लिए सभी देशों को स्वतन्त्रता रहनी चाहिए।

(८) हम विश्वास करते हैं कि जो देश राष्ट्रसङ्घ-द्वारा स्वीकृत हैं, उन्हें संसार के व्यापार और कच्चे माल की सुविधा मिलनी चाहिए।

(९) हम विश्वास करते हैं पश्चिमी गोलार्द्ध के स्वतन्त्र राष्ट्रों को बाहर के किसी हस्तक्षेप के बिना ही अपनी समस्याओं के समाधान में पड़ोसियों के रूप में सङ्गठित रूप से लग जाना चाहिए।

(१०) हमारा पूरा विश्वास है कि सारे संसार में जीवन-यापन की दशा में सुधार के लिए छोटे-बड़े सभी राष्ट्रों के पारस्परिक सहयोग तथा भय और अभाव से मुक्ति की स्थापना की बड़ी आवश्यकता है।

(११) संसार के शान्तिप्रिय क्षेत्रों में धार्मिक और भाषण-सम्बन्धी स्वतन्त्रता के प्रोत्साहन के लिए हम प्रयत्न जारी रक्खेंगे।

(१२) हमें दृढ़ विश्वास है कि संसार में शान्ति बनाये रखने के लिए एक मित्रराष्ट्रीय सङ्घ की आवश्यकता है जिसमें संसार के सभी शान्तिप्रिय देश हों और जो आवश्यकता पड़ने पर शक्ति का प्रयोग करने को तैयार हों।

कांग्रेस-उच्चसत्ता की घोषणा

केन्द्रीय असेम्बली के चुनाव के सिलसिले में कांग्रेस की कार्यसमिति के आदेशानुसार कांग्रेस-उच्चसत्ता ने एक लम्बा घोषणा-पत्र प्रकाशित कराया है, जिससे प्रकट होता है कि चुनाव में विजय प्राप्तकर, असेम्बली में पहुँचकर वह क्या करेगी। वह घोषणा 'सैनिक' में प्रकाशित हुई है, जिसका मुख्य अंश यह है—

कांग्रेस ने एक ऐसे स्वतन्त्र और प्रजातन्त्र राज्य की कल्पना की है जिसके विधान में समस्त नागरिकों के मौलिक और नागरिक अधिकारों को संरक्षण दिया जायगा।

यह विधान उसकी राय में एक संघीय विधान होना चाहिए जिसमें सम्मिलित होनेवाले प्रदेशों को बहुत कुछ स्वतन्त्रता रहेगी और उसकी धारासभायें आम बालिग़ मताधिकार के आधार पर चुनी जायँगी।

हिन्दुस्तान की सबसे ज़रूरी समस्या ग़रीबी को दूर करना और लोगों के रहन-सहन का दर्जा ऊँचा उठाना है। जनता की भलाई और उन्नति के लिए ही कांग्रेस ने अपने रचनात्मक कार्यक्रम पर विशेष ध्यान दिया है। आज जनता की बेहतरी और प्रगति की कसौटी पर ही वह प्रत्येक प्रस्ताव और प्रत्येक परिवर्तन का निश्चय करती है। देश की सम्पत्ति को बढ़ाने और उसे अन्य देशों पर निर्भर न रखकर आत्म-विकास का लक्ष्य प्रधान करने के लिए यहाँ के उद्योग और कृषि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यातायात और अन्य सार्वजनिक उपयोगिता के साधनों का आधुनिक ढङ्ग से तेज़ी से विकास किया जायगा।

परन्तु यह सब हमारे देश की आम जनता को लाभ पहुँचाने और उसके आर्थिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक स्तर को ऊँचा उठाने को मुख्य उद्देश्य और सर्वोपरि कर्तव्य मानकर किया जाना चाहिए, ताकि देश में बेरोज़गारी न रहे और व्यक्ति की प्रतिष्ठा बढ़ सके। इस उद्देश्य के लिए यह आवश्यक है कि सम्पत्ति का केवल थोड़े-से व्यक्तियों या वर्गों के हाथों में सञ्चय होने से रोका जाय; निहित स्वार्थों को समाज के विकास में बाधक न बनने दिया जाय। खनिज पदार्थों और यातायात के साधनों तथा भूमि के उत्पादन और वितरण के मुख्य तरीक़ों, दस्तकारी और राष्ट्रीय जीवन के अन्य विभागों पर सामाजिक नियन्त्रण करने के लिए समाज की प्रगति को उसके सभी क्षेत्रों में योजना-बद्ध रूप दिया जाय ताकि स्वाधीन भारत एक सहकारी सङ्गठन के रूप में प्रगति कर सके।

अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में कांग्रेस समस्त स्वाधीन देशों-द्वारा एक विश्व-सङ्घ बनाने का समर्थन करती है। जब तक ऐसा कोई सङ्घ नहीं बन जाता, हिन्दुस्तान को सारे देशों और ख़ास तौर से अपने पूर्व, पश्चिम और उत्तर के पड़ोसी देशों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाने चाहिएँ। सुदूरपूर्व, दक्षिण-पूर्वी एशिया और पश्चिमी एशिया से हिन्दुस्तान के गत कई हज़ार वर्षों से व्यापारिक और सांस्कृतिक सम्बन्ध रहे हैं और आज़ाद होते ही वह अनिवार्य रूप से उन सम्बन्धों को नये सिरे से बनायेगा। व्यापार और तिजारत के भविष्य को देखते हुए इन देशों के साथ निकट सम्बन्ध क़ायम करना आवश्यक है। हिन्दुस्तान, जिसने अहिंसात्मक आधार पर अपनी आज़ादी की लड़ाई लड़ी है, सदा विश्व-शान्ति और सहयोग का पक्ष लेगा। वह अन्य गुलाम देशों और जातियों की स्वतन्त्रता की भी हिमायत करेगा, ताकि उन्हें स्वतन्त्रता मिलने और साम्राज्यवाद का अन्त होने पर ही सर्वत्र शान्ति स्थापित हो सकती है।

८ अगस्त १९४२ को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने जो प्रस्ताव पास किया था और जो तभी से हिन्दुस्तान के इतिहास में प्रसिद्ध है। कांग्रेस उस प्रस्ताव की माँगों और चुनौती पर आज भी दृढ़ है। इसी प्रस्ताव के आधार पर ही और उसके नारे के साथ कांग्रेस केन्द्रीय और प्रान्तीय चुनावों के मैदान में उतर रही है।

आज़ाद हिन्द सेना

स्वर्गीय सुभाषचन्द्र बोस ने, जिनकी हवाई-दुर्घटना के कारण मृत्यु हो गई है, जापानियों के अधिकृत सिङ्गापुर में भारतीयों की एक सेना सङ्गठित की थी, जिसने जापानियों के आत्मसमर्पण करने के साथ आत्म-समर्पणकर दिया है। बारिस्टर आसफ़अली के कथनानुसार उसमें सैनिकों की संख्या ३० हज़ार थी। इस सेना के नेताओं तथा सैनिकों पर भी दिल्ली में एक फ़ौजी अदालत में मुक़दमा चलाया जा रहा है। इस सेना के सम्बन्ध का विवरण देशी पत्रों में छपा है। उसी के आधार पर 'हिन्दी मिलाप' में जो एक विवरण छपा है, वह इस प्रकार है—

रंगून का एक प्रसिद्ध मुसलमान करोड़ पति सुभाष बोस से मिलने आया। तब श्री बोस ने कहा कि हम एक बैङ्क खोलना चाहते हैं जिसका नाम आज़ाद हिन्द बैङ्क होगा। मुसलमान करोड़पति ने पूछा—इसके लिए कितने रुपये की आवश्यकता होगी?" तब श्री बसु ने कहा—"५० लाख की।" मुसलमान करोड़पति ने कहा—"यह मैं देता हूँ, आप बैंक स्थापित करें।" तब बैंक खोला गया जिस की तीन ब्रांचें भी खोली गईं। जब जापानी सरकार रंगून से चली गई, तब भी बैङ्क चलता रहा और जब रंगून पर ब्रिटिश क़ब्ज़ा हो गया, उस समय बैंक के पास ३५ लाख रुपया था जिस पर ब्रिटिश सरकार ने अधिकार कर लिया। कार्यालय में काम करनेवाले एक नवयुवक के हृदय में यह अभिलाषा थी कि वह सुभाष बाबू को कोई अच्छी-सी वस्तु भेंट करे। उसने एक चाँदी का फूलदान भेंट किया जिसे सुभाष बोस ने एक हज़ार में बेंच कर रुपया सेना के ख़र्च के लिए दे दिया। सुभाष बोस के जन्म-दिन पर यह घोषणा की गई कि इन्हें सोने से तोला जायगा और वह सोना भारतीय स्वतन्त्र सेना को दे दिया जायगा। सोना इकट्ठा होना शुरू हुआ और बहुत-सी स्त्रियों ने अपने आभूषण उतार कर दे दिये। एक स्त्री ने अपने पास कुछ न रक्खा। सेना पर १५ करोड़ रुपया ख़र्च किया गया। इसके अतिरिक्त अस्पतालों और प्रचार करने के लिए अलग ख़र्च होता रहा है।

२१ अक्तूबर १९४३ में आज़ाद हिन्द सेना की अस्थायी सरकार बनाई गई और श्री बोस इसके बड़े अफ़सर नियुक्त किये गए। इस सरकार को ऐसे तमाम देशों ने स्वीकार किया जो ब्रिटेन के विरुद्ध थे। २३ अक्तूबर को इस सरकार ने ब्रिटेन और अमरीका के विरुद्ध युद्ध-घोषणा कर दी। ८ फ़रवरी को इस फ़ौज ने भारत की सीमा पार करली और जापानी सेना की सहायता से इसने इम्फाल को घेर लिया और कई ग्रामों पर अधिकार कर लिया। वर्षा की अधिकता और हवाई जहाज़ों की कमी के कारण इसे आगे बढ़ने में सफलता न मिली और उसके बाद ब्रिटिश सरकार ने वर्मा में एक बड़ा हमला कर दिया जिससे इसकी हार पर हार होने लगी।

देशी राज्यों का औद्योगीकरण

भारत के देशी राज्य बहुत पिछड़े हुए माने जाते हैं। परन्तु जान पड़ता है कि उनके सूत्रधारों पर भी नये युग का प्रभाव पड़ा है और वे भी अपनी आर्थिक एवं सामाजिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवस्था को समय के अनुरूप बना लेना चाहते हैं। उनके इस मनोभाव का प्रकाशन उस वक्तव्य से होता है जो पटियाला राज्य के श्री एच० एस० मलिक ने प्रकाशित कराया है। श्री मलिक देशी नरेशों-द्वारा नियुक्त व्यापार प्रतिनिधि-मण्डल के नेता के रूप में लंदन गये हैं, जहाँ उन्होंने अपना उक्त वक्तव्य किया है, जो 'वतमान' में इस रूप में छपा है—

"मैं अधिकांश ब्रिटिश औद्योगिकों और सरकारी विभागों से भेंट कर चुका हूँ। मैंने पूँजीगत मशीनों के लिए बात की है। हमें सब प्रकार की मशीनों की आवश्यकता है जिनमें जल विद्युत्, विशाल प्रेस, काँच निर्माण करने की मशीनें, चीनी साफ़ करने और तेल निकालने की मिलें सम्मिलित हैं। किसी विशाल औद्योगिक देश को जिन मशीनों की आवश्यकता होती है, वे सभी हमें चाहिएँ।

"हम बहुत-सा इस्पात भी ख़रीद रहे हैं और उसे भेजने में प्राथमिकता पाने का मैं प्रबन्ध कर रहा हूँ। हमें आशा है कि हम अपनी बहुत-सी आवश्यक वस्तुयें इंगलैंड में ख़रीद सकेंगे। परन्तु जो कुछ हमें इँगलैंड में नहीं मिलेगा उसे हमें अन्यत्र से ख़रीदना होगा।

"कितने रुपयों का माल ख़रीदा जायगा, यह तो जहाज़ से भेजते समय उन वस्तुओं के जो दाम होंगे उन पर निर्भर होगा, परन्तु अभी इतना कह सकता हूँ कि यह लाखों की संख्या में होगा। आशा है, मैं वापस जाकर अपने देशवासियों को बता सकूँगा कि मैं सफल होकर लौटा हूँ।

"मेरा विश्वास है कि औद्योगिक भारत का भविष्य बड़ा उज्ज्वल है और मेरे विचार से यदि ब्रिटिश औद्योगिकों ने हमारी सहायता की तो भविष्य में ब्रिटेन को भारत के साथ व्यापार करने में बड़ा लाभ होगा।"

पराधीन देशों का सङ्घ

कुछ दिन हुए लंदन में एशिया के पराधीन देशों के नेताओं की एक सभा हुई थी। उसमें अन्य बातों के साथ इस बात पर भी विचार किया गया था कि उनका एक सङ्गठन स्थापित किया जाय, जो सबकी पराधीनता का अभिशाप दूर करने का सम्मिलित प्रयत्न करे। इसी बात को ध्यान में रखकर ब्रह्म देश की स्वतन्त्रता लीग के नेता श्रीयुत आँगसेन ने एक वक्तव्य द्वारा अपनी योजना का निर्देश किया है, जिसका सारांश 'हिन्दी मिलाप' में इस प्रकार छपा है—

यह कान्फ़रेंस इन देशों की स्वतन्त्रता के लिए संयुक्त मोर्चे की स्कीम तैयार करेगी। इसमें भारत, बर्मा, मलाया, स्याम, हिन्दचीन, लङ्का, फिलिपाइन, चीन और यदि प्रजातन्त्र स्थापित हो तब जापान को भी निमन्त्रित किया जायगा। दक्षिण-पूर्वीय एशिया के देशों में एकता आवश्यक है। यह कान्फ़रेंस इन देशों के आपसी सम्बन्धों, आर्थिक व राजनैतिक, का निरीक्षण कर उनके बारे में निर्णय करेगी। यद्यपि चीन, जापान और सम्भवतया फिलिपाइन की समस्यायें कुछ भिन्न हैं; लेकिन एशिया के दो राजनैतिक भाग बनाने की योजना मुझे पसन्द नहीं। चूँकि हममें बहुत कुछ समानता है, इसलिए हमें साथ ही रहना चाहिए। इंडोनेशिया ने हमें दिखा दिया है कि एकता से क्या कुछ हो सकता है। हम भारत में एकता देखना चाहते हैं तथा भारत और बर्मा में सहयोग भी। इन दोनों देशों के आर्थिक और राजनैतिक क्षेत्र एक समान हैं। जहाँ तक भारतीयों का प्रश्न है वे बर्मा बन कर बर्मा में रह सकते हैं लेकिन यदि वे विशेषाधिकार चाहें तब उन्हें न मिलेंगे। हम किसी के भी विशेषाधिकार के पक्षपाती नहीं, भले ही वह ब्रिटेन हो या भारत या स्वयं बर्मा। भारतीय नेताओं में गाँधीजी व नेहरू से मैं मिला हूँ। भारत से हमें सदैव राजनैतिक भावना प्राप्त हुई है। लेकिन अब हमने अपने आपको अपनी अवस्था के अनुसार ढाल लिया है। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि हम स्वतन्त्रता के युद्ध में भारत के साथ नहीं चलना चाहते। भारतीय नेताओं का हम स्वागत करेंगे। हम अपनी आज़ादी के युद्ध में उनके योग की प्रार्थना करेंगे। लेकिन हम चाहते हैं कि भारत के विभिन्न वर्णों में एकता हो। यह भारत की सबसे बड़ी आवश्यकता है। पाकिस्तान यदि आवश्यक हो तो स्वीकार किया जाय। लेकिन यह दुर्भाग्य होगा। जहाँ तक इस प्रश्न का सम्बन्ध है भारतीय ही इसका हल सोचें।

—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व का कल्याण

संसार की तीनों प्रधान महाशक्तियाँ हृदय से चाहती हैं कि संसार में शीघ्र से शीघ्र स्थायी शान्ति स्थापित हो जाय। परन्तु अन्तर्राष्ट्रीय जटिल समस्याओं के एवं युद्ध-जनित उभ्फलनों के समझाने में उनमें आपस में इतना मतभेद बढ़ गया है कि वे एक दूसरे को अविश्वास की दृष्टि से देखने लगी हैं। यही नहीं, उनके पारस्परिक स्वार्थ भी एक दूसरे से इतना विरुद्ध हैं कि उनमें समझौता होने के स्थान में तनातनी उत्पन्न हो गई है। उधर परमाणु बम के रहस्य को गुप्त रखने की भावना ने भी उनकी मित्रता को ख़तरे में डाल दिया है। यह एक ऐसी विषम परिस्थिति है, जिसके कारण न तो सेनफ्रांसिस्को कान्फ़रेंस की योजनायें ही कार्य का रूप ग्रहण करने का अवसर पाती हैं और न पोट्सडम का प्रसिद्ध समझौता ही अपना सुफल प्रकट करता है। इसके विपरीत संसार आज तीसरे महायुद्ध की कल्पना में अधिक व्यस्त दिखाई दे रहा है। कभी कहा जाता है कि रूस मध्य एशिया के दुर्गम स्थानों में परमाणु बम से भी अधिक भीषण आग्नेय अस्त्र का निर्माण कर रहा है; कभी कहा जाता है कि स्पेन में जर्मन वैज्ञानिकों ने पहुँचकर परमाणु बम बना लिया है और वे उपयुक्त अवसर की ताक में बैठे हैं; कभी कहा जाता है कि दक्षिण अमरीका में पहुँचकर नाज़ी वैज्ञानिक परमाणु बम जैसे अमोघ अस्त्र तैयार कर रहे हैं तथा विश्व-विजय की तैयारी की नई योजनायें निर्धारित कर रहे हैं। यद्यपि ये सब निराधार किंवदन्तियाँ ही हैं तथापि इनका तथा ऐसी अन्य कल्पनाओं का संसार की महाशक्तियों पर काफ़ी अधिक प्रभाव पड़ता दिखाई दे रहा है। यदि ऐसा न होता तो सर्वशक्तिसम्पन्न अमरीका के अध्यक्ष ट्रूमैन साहब को अपनी कांग्रेस को यह संदेश देने की क्या आवश्यकता थी कि अमरीका के प्रत्येक युवक को एक वर्ष तक सैनिकशिक्षा अनिवार्यतः ग्रहण करनी होगी? इसी प्रकार विजयी रूस को भी वहाँ के पत्रकार इस बात की सलाह क्यों देते कि वह अपनी सैनिक-शक्ति जैसी की तैसी बनाये रहे? और जब ये दोनों महाशक्तियाँ अपनी प्रबल शक्ति बनाये रखने में ही संसार का कल्याण समझेंगी तब ग्रेट ब्रिटेन एवं उसके दूसरे साथी अपनी-अपनी सैनिक-शक्ति सुदृढ़ बनाये रखने में किसी से पीछे कैसे रह सकते हैं? यह सैनिकवाद यदि अपना प्रभाव इसी तरह बनाये रहेगा और इसके पोषक यह कहकर कि स्वन्तत्रता और विश्वशान्ति के लिए इसकी आवश्यकता है, अपना शक्ति-संग्रह दृढ़ से दृढ़तर बनाने में संलग्न रहेंगे तो इसकी क्या गारंटी है कि यह सञ्चित अग्निज्वाला किसी दिन संसार को भस्मीभूत करने के काम में नहीं प्रवृत्त होगी। हम जानते हैं, पहले महायुद्ध की समाप्ति के बाद जिस राष्ट्रसङ्घ की स्थापना की गई थी उसके हाथ में कोई शक्ति नहीं दी गई थी। इसी कारण वह अपने उद्देश्यों में बराबर असफल रहा। अतएव इस द्वितीय महायुद्ध के बाद विजयी महाशक्तियाँ उस भूल को पुनः नहीं होने देंगी और सेनफ्रांसिस्को कान्फ़रेंस में ऐसी योजना भी बना ली गई है, परन्तु आज जो विषम परिस्थिति उत्पन्न हो गई है, वह उतनी आशाप्रद नहीं है। हम देख रहे हैं कि युद्ध-जनित योरप की सारी जटिल समस्यायें अभी तक जैसी की तैसी उलझी पड़ी हैं। इसके सिवा युद्ध से त्रस्त और ध्वस्त योरप के सारे देश अत्यधिक सङ्कटग्रस्त हैं तथा भूखों मर रहे हैं। परन्तु विजयी राष्ट्रों के राजनीतिज्ञ अभी तक एक भी समस्या का निराकरण नहीं कर सके हैं और वहाँ की सारी समस्यायें अनिश्चित, अव्यवस्थित और भयानक भविष्य की सूचक बनी हुई हैं। यदि यह अवस्था अधिक समय तक बनी रहने दी गई तो इसका परिणाम अत्यन्त भीषण होगा। योरप की इस अस्थिर राजनैतिक अवस्था का ही यह परिणाम है कि संसार के अन्य भागों में एक के बाद दूसरे नये प्रश्न उठते जा रहे हैं और उनका समाधान होता नहीं दिखाई दे रहा है। पहले महायुद्ध की समाप्ति के बाद संसार को आज जैसी अनिश्चित और अशान्तिपूर्ण दुरवस्था का सामना नहीं करना पड़ा था। अतः यह अत्यन्त आवश्यक है कि विश्व-शान्ति के ठेकेदार इस विषम परिस्थिति का निराकरण अधिक से अधिक सावधानी एवं दृढ़ता के साथ करें। क्योंकि ऐसा होने ही में उनका एवं विश्व का कल्याण है।

मानस ही हमारा आदर्श महाकाव्य है

उत्तर भारत के हिन्दी-भाषी भूखण्ड में रामचरितमानस का अत्यधिक प्रचार है। प्रचार ही नहीं, इस भूखण्ड के सभी आबालवृद्ध-वनिता उसका वेद की भाँति आदर करते हैं। वस्तुतः इस महाकाव्य ने इस भूखण्ड की इसके अति सङ्कटकाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में रक्षा की थी। यदि तुलसीदास ने इसकी रचना करके इस भूखण्ड के निवासियों में अपनी प्राचीन संस्कृति के प्रति श्रद्धा न उत्पन्न की होती, उनको उनके कर्तव्य का बोध न कराया होता तो आज पञ्जाब और बङ्गाल की तरह इस प्रान्त की व्यवस्थापिका सभा में हम हिन्दुओं को अल्पमत में पाते। यही क्यों, आज कांग्रेस के मत का जितना अधिक आदर इस भूखण्ड में किया जाता है, उतना भारत के अन्य प्रान्तों में नहीं। इस भूखण्ड की प्रबुद्धता में तुलसी का मानस अपना विशेष हाथ रखता है। खेद के साथ कहना पड़ता है कि कुछ लोग—विशेष कर हिन्दी के एक महारथी ही—हमारे उसी महान् काव्य को आदर से हीन ठहराने का जब-तब प्रयत्न किया करते हैं। उनका कहना है कि आज के युग के लिए तुलसी का मानस हमारा आदर्श महाकाव्य नहीं हो सकता। इसके साथ वे यह बतलाने की कृपा नहीं करते कि अमुक काव्य हमारा आदर्श हो सकता है। यदि वे नाम-निर्देश कर देते तो हम भी तुलना करके जान सकते कि तुलसी के मानस में किन बातों की कमी है। जब तक वे वैसा कोई आदर्श काव्य लाकर उपस्थित नहीं करते तब तक तुलसी का यह महाकाव्य हिन्दी-भाषियों के लिए आदर्श काव्य क्या आगम के रूप में सम्मानित बना रहेगा। और किसी को इसकी ओर अँगुली उठाने का अधिकार नहीं होगा। वस्तुतः यह महती रचना हिन्दी-भाषी-भूखण्ड के लिए राष्ट्रीय रचना के रूप में ही समादृत बनी रहेगी। भाषा और भाव दोनों दृष्टियों से तुलसी ने इसको राष्ट्रीयता के रूप में रचा है और समाज पर उसका तादृश प्रभाव भी पड़ा है। आज के इस नये युग में जब प्रगतिवाद पराई वस्तु की ही ओर लोलुप दृष्टि से देखना अपना आदर्श मानता है, तब भी तुलसी का यह मानस समाज पर अपना एकाधिकार बनाये हुए है। अतएव मानना ही पड़ेगा कि तुलसी की यह अमर रचना हिन्दी-भाषी आस्तिक जनता के लिए तब तक आदर्श-रूप बनी रहेगी, जब तक हिन्दी का वर्तमान राष्ट्रीय रूप अपना अस्तित्व बनाये रह सकेगा।

चीन की अन्तःकलह

जिस बात की आशङ्का थी, आख़िर वह घटित होकर ही रही। चीन के दुर्भाग्य ने उसका साथ नहीं छोड़ना चाहा। आठ वर्ष के संहारकारी युद्ध की समाप्ति के बाद वह गृह-युद्ध के रूप में पुनः प्रकट हुआ है। चीन की गृह-कलह आज की नहीं है। जिस दिन मंचू राजघराने को पदच्युत करके परम देश-भक्त डाक्टर सन-यात-सेन ने चीन में प्रजातन्त्र राज्य की घोषणा की थी, उसके साथ ही वहाँ के स्वार्थी शक्ति सम्पन्न प्रान्तिक शासकों ने उनके उस राष्ट्रोद्धारक सत्कार्य का विरोध करने का निश्चय कर लिया था। फलतः उन्होंने स्वार्थजन्य जिस अन्तःकलह की नींव डाली, वह गत तीस वर्ष से चीन का सर्वनाश करने का सतत प्रयत्न करती जा रही है। यद्यपि आज की गृहकलह का रूप पिछली गृहकलह से भिन्न है तथापि उसे हम उसका विकसित रूप ही कह सकते हैं। चीन पर जापान के आक्रमण से पहले ही चीन में वर्गवादियों का सङ्गठन प्रारम्भ हो गया था। वर्गवादियों में चीनी मुसलमानों की बहुसंख्या है। जैसे भारत में मुसलमान पाकिस्तान की स्थापना करके गृहकलह का बीज-वपन करना चाहते हैं, वैसे ही चीन के वर्गवादी एक अपना स्वतन्त्र राज्य स्थापित करना चाहते हैं। इन वर्गवादियों का राष्ट्रीय चीन-सरकार से प्रारम्भ से ही संघर्ष सङ्घर्ष होता आया है। इस महायुद्ध के काल में यद्यपि वर्गवादियों ने राष्ट्रीय सरकार से सङ्घर्ष नहीं किया तथापि जापान से लड़ाई लड़ते रहने के बहाने वे अपनी सामरिक शक्ति को निरन्तर बढ़ाते रहे। महायुद्ध की समाप्ति के बाद राष्ट्रीय सरकार के प्रधान मार्शल च्यांग-काई-शेक ने इस सद्भावना से कि चीन में एक सर्वव्यापक प्रजातन्त्र सरकार की स्थापना हो, वर्गवादी नेताओं से समझौता करने का उपक्रम किया, परन्तु वे अपने प्रयत्न में सफल नहीं हुए। और यद्यपि वे अभी इस सम्बन्ध में निराश नहीं हुए हैं और वर्गवादी नेताओं से समझौते का उनका प्रयत्न बराबर जारी है तथापि वर्गवादियों से उनका सशस्त्र सङ्घर्ष भी हो गया है, जिसने इतना व्यापक रूप धारण कर लिया है कि चीन के ग्यारह प्रान्तों में चीन-सरकार से वर्गवादियों का यथाविधि युद्ध हो रहा है। इस युद्ध में वर्गवादी आक्रमणकारी के रूप में हैं। मज़ा यह है कि दोनों दलों ने एक दूसरे के विरुद्ध युद्ध की घोषणा नहीं की है। कहा यह जाता है कि वर्गवादियों को मञ्चूरिया पर अधिकार करनेवाली रूसी सेनाओं-द्वारा जापानियों से छीने हुए अच्छे से अच्छे हथियार प्राप्त हो गये हैं। यह भी पत्रों में छपा है कि उत्तरी चीन में राष्ट्रीय सरकार की सेनाओं के पहुँचाने में अमरीकन जहाज़ों ने पूरी मदद की है। अर्थात् इस बात का लोग अनुमान करने लगे हैं कि रूस भीतर ही भीतर वर्गवादियों की सहायता कर रहा है और संयुक्त राष्ट्र उसी प्रकार चीन की राष्ट्रीय सरकार की। यदि ऐसा हुआ तो चीन की यह गृहकलह अति भयानक अन्तर्राष्ट्रीय रूप ग्रहण कर लेगी। और यदि इसकी सम्भावना न भी हो तो भी सेनफ्रांसिस्को के निर्णयों के अनुसार तीनों महाशक्तियों को चीन के इस अन्तःकलह को शान्त करने के लिए जल्दी से जल्दी हस्तक्षेप करना चाहिए। वस्तुतः अब हथियार का प्रयोग करना कम-से-कम चीन में तो एकदम बन्द हो जाना चाहिए। चीन संसार का एक महान् राष्ट्र है और संसार के कल्याण के लिए वहाँ एकदम शान्ति की स्थापना का हो जाना परम आवश्यक है। यदि उसको इस गृहकलह को बढ़ने दिया जायगा तो इससे चीन का ही नहीं किन्तु संसार का भी बहुत बड़ा अहित होगा। राष्ट्रीय सरकार के सूत्रधारों ने अपनी घोषणाओं-द्वारा बार-बार सद्भावना का ही परिचय दिया है। ऐसी दशा में वहाँ के वर्गवादी सङ्गठन के सूत्रधारों को राह पर लाने के लिए तीनों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्तियों के अधिनायकों को अपनी सद्बुद्धि का प्रयोग करना चाहिए।

पराधीन देशों का सङ्घ

लोकसंहारक द्वितीय महायुद्ध समाप्त हो गया। कहा जाता है कि यह महाभयानक युद्ध संसार के छोटे-बड़े राष्ट्रों की स्वाधीनता के लिए लड़ा जा रहा है। इसमें सन्देह नहीं कि इस युद्ध में विजय के फलस्वरूप संसार के उन छोटे-बड़े राष्ट्रों की स्वाधीनता की रक्षा हुई है, जिनकी स्वाधीनता अपहृत हो गई थी। परन्तु इस विजय को प्राप्त कराने में संसार के उन राष्ट्रों ने जितनी से कम सहयोग नहीं किया, जो अर्द्धस्वतन्त्र तथा पराधीन हैं। यह सच है कि विजय प्राप्त करने के बाद अर्द्धस्वतन्त्र देशों तथा उपनिवेशों को स्वतन्त्र करने का वचन दिया गया है परन्तु पराधीन देश जैसे के तैसे ही रहने दिये गये हैं। उनके सम्बन्ध में विजयी महाशक्तियों ने मुँह तक नहीं खोला है। और यदि कुछ कहा भी है तो यही कहा है कि पराधीन देशों की समस्या आन्तरिक मामलों के अन्तर्गत है और वह उसी दृष्टिकोण से हल की जायगी। इस सङ्केत को पाकर पराधीन देश क्षुब्ध और असन्तुष्ट हो उठे हैं। क्योंकि उन्हें अपनी बहुमूल्य सेवाओं का उचित पुरस्कार इस द्वितीय महायुद्ध में भी नहीं मिल रहा है। अतएव उनके स्वाभिमान को धक्का लगना स्वाभाविक है। फलतः उनके प्रतिनिधियों ने लन्दन में एक सभा करके अपने क्षोभ का कुछ ही परिचय भी दे डाला है। अब जान पड़ता है कि वे अधिक सावधानी से काम करना चाहते हैं क्योंकि उन्हें जनता पसन्द नहीं है। इसके लिए उनके प्रतिनिधियों ने एक योजना भी बनाई थी, जिसका आभास लन्दन की उस सभा में ही दे दिया गया है। उस योजना का सारांश यह है कि संसार के सभी पराधीन देश—और वे पराधीन देश एशिया में ही अधिक संख्या में हैं—अपना एक सङ्घ बनायें, जिसमें सभी पराधीन देश के प्रतिनिधि सम्मिलित होकर पराधीनता के कलङ्क से मुक्त होने की व्यवस्था करें। इस सम्बन्ध में ब्रह्मदेश के स्वातन्त्र्य-सङ्घ के नेता श्री यू आग सान ने हाल ही में एक वक्तव्य दिया है, जिसका समर्थन भारतीय कांग्रेस के राष्ट्रपति मौलाना अबुलकलाम आज़ाद ने एक वक्तव्य निकाल कर किया है। वक्तव्य का समर्थन करते हुए मौलाना आज़ाद ने कहा है कि 'भारतवर्ष यह समझता है कि सारे ग़ुलाम देशों का भाग्य एक दूसरे से जुड़ा हुआ है और स्वाधीनता के लिए उनका आन्दोलन सर्वत्र एक समान है क्योंकि सबकी माँग एक है। सारे ग़ुलाम देश स्वाधीन होना चाहते हैं। हिन्दुस्तान के बहुत से राजनीतिज्ञों का यह विचार है कि एशिया के सारे आज़ाद और ग़ुलाम देशों को मिलकर आज़ादी के लिए कोशिश करनी चाहिए।

'पूर्व के अन्य ग़ुलाम देशों को भी इस प्रस्ताव से अवगत कराना चाहिए। भौगोलिक दृष्टिकोण से भारत इन सारे शोषित देशों के केन्द्र में स्थित है और औपनिवेशिक जनता के स्वातन्त्र्य आन्दोलन की कुञ्जी भी भारत के पास है। फलतः यह कान्फ़रेंस भारत में होनी चाहिए।'

मौलाना आज़ाद का कहना यथार्थ है। भारत संसार का सबसे बड़ा ग़ुलाम देश है। उसे इस सङ्घ को सङ्गठित करने में प्रमुख भाग लेना चाहिए।

चुनाव-संग्राम

केन्द्रीय असेम्बली के चुनाव का आन्दोलन प्रारम्भ हो गया है। कांग्रेस ने चुनाव-आन्दोलन ज़ोरों के साथ उठाया है। यद्यपि उसका सङ्गठन अभी पहले की स्थिति में नहीं आ सका है तथापि अपनी लोकप्रियता के कारण उसे काफ़ी अधिक सफलता मिल रही है। ग़ैर-मुसलिम निर्वाचन-क्षेत्रों में उसके ५० प्रतिशत सदस्य निर्विरोध चुन लिये गये हैं। शेष स्थानों में उसके उम्मेदवारों का हिन्दू-महासभा आदि के उम्मेदवारों से सङ्घर्ष होगा। परन्तु इन स्थानों में भी यही आशा की जाती है कि अधिकांश कांग्रेसी उम्मेदवार ही जीतेंगे। हिन्दू-महासभा आदि के उम्मेदवारों के जीतने की आशा इसलिए भी कम है कि उनका कांग्रेसी-विचारधारा से, राष्ट्रीयता के दृष्टिकोण से, अधिक मतभेद नहीं है। साथ ही यह भी है कि ये उम्मेदवार लोकसेवा में कांग्रेस की अपेक्षा अधिक महत्त्व का स्थान नहीं रखते। ऐसी दशा में इन उम्मेदवारों के हार जाने की ही विशेष सम्भावना है। परन्तु मुसलिम निर्वाचन-क्षेत्र में, जान पड़ता है, कड़ा सङ्घर्ष होगा। लीग-विरोधी राष्ट्रीयतावादी मुसलमानों ने चुनाव का जो आन्दोलन प्रारम्भ किया है, उसमें लीगी पक्ष के मुसलमान प्रायः बाधा डालने का प्रयत्न कर रहे हैं। कहीं-कहीं तो मार-पीट और छुरेबाज़ी भी हुई है। परन्तु राष्ट्रीयतावादी मुसलमान अपने निश्चय पर दृढ़ हैं और वे लीग के उम्मेदवारों का प्रत्येक निर्वाचन-क्षेत्र में मुक़ाबला करने की तैयारी कर चुके हैं। यह पहला ही अवसर है, जब चुनाव में लीग के उम्मेदवारों का इस प्रकार व्यापक विरोध किया जा रहा है। इससे जान पड़ता है कि मुसलिम जनता पर लीग का अब वैसा प्रभाव नहीं है और न वह उतनी लोकप्रिय ही रह गई है। राष्ट्रीयता-विरोधी भावधारा ग्रहण करने के कारण भी लीग आज मुसलमान-जनता में अपनी लोकप्रियता बहुत कुछ गँवा चुकी है। यह एक प्रकट बात है कि जिन प्रान्तों में मुसलमान अधिक संख्या में बसते हैं, वहाँ लीग पिछले चुनाव में भी सफलता नहीं प्राप्त कर सकी थी। इस बार के चुनाव में तो उसकी उन प्रान्तों में और भी अधिक पराजय की सम्भावना है। क्योंकि स्वयं मुसलमानों के अनेक दल दृढ़ता के साथ प्रत्येक प्रान्त में अपने उम्मेदवार खड़े करके लीग का विरोध कर रहे हैं। फलतः देश के सभी दल चुनाव के संग्राम में व्यस्त हैं। यहाँ तक कि उन्हें इस बात की भी परवा नहीं कि उनके देशवासी युद्धजनित प्रतिबन्धों के कारण वर्षों से किस प्रकार की भयावह परिस्थिति में पड़े हैं और उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रति भी उनका कुछ कर्तव्य है या नहीं। हाँ, यह ज़रूर है कि उनकी चुनाव-घोषणाओं में तरह-तरह के वादे किये जा रहे हैं। लीग का तो अपना पाकिस्तान का ही नारा है परन्तु राष्ट्रवादी मुसलमान कांग्रेस की स्वाधीनता की माँग के साथ हैं। कांग्रेस शासन-भार ग्रहण करके क्या करेगी, उसकी इस सम्बन्ध की घोषणा की टीका करते हुए उसके एक प्रमुख नेता श्री पट्टाभि सीतारमैया ने लिखा है कि—

"प्रत्येक व्यक्ति को शस्त्र रखने का अधिकार होगा और इसमें लाइसेंस प्रणाली हटाकर रजिस्ट्री प्रणाली चलाई जायगी।

"कांग्रेस का पहिला कार्य गाँवों का पुनरुद्धार होगा। उद्योग और शिक्षा की सुविधायें गाँवों में प्राप्त होंगी। गाँव वालों को उनकी खोज में भटकना न पड़ेगा।

"कांग्रेस के नियन्त्रण में पुलिस आज की तरह आतङ्क और घृणा की वस्तु न होगी वरन् वह जनता की मित्र, पथप्रदर्शक और सेवक होगी। उसका नाम और वर्दी तक बदल जायँगी। उनकी वर्दी खद्दर की होगी, सम्भवतः अमरीकन रङ्ग और ढङ्ग की। वह उनके सेवाभाव का बाह्य प्रतीक होगी।

"उद्योग और ख़ासकर वस्त्र-उद्योग के सम्बन्ध में मिलों को २० नम्बर से ऊँचे सूत बुनने की ही आज्ञा होगी। इससे मिलों और हाथ बुने वस्त्रोद्योग की प्रतिद्वन्द्विता दूर हो जायगी।

"शिक्षाक्षेत्र में अनिवार्य, निःशुल्क प्रारम्भिक—प्रायमरी शिक्षा, राष्ट्र के लिए उपयोगी माध्यमिक शिक्षा की नवयोजना और विश्व-विद्यालयों की परीक्षाओं की समाप्ति कांग्रेस के कार्यक्रम के अन्तर्गत रहेंगे।

"कांग्रेस सभी नागरिकों के स्वास्थ्य, भोजन, शिक्षा, काम और गृह की व्यवस्था करने की ओर ध्यान देगी।

"कांग्रेस का कार्य दुरूह अवश्य है क्योंकि उसे सारे विशेषाधिकारों की धारा के विरुद्ध नैतिक आधार लेकर ही न्याय और समानता के शिखर की चढ़ाई चढ़ना है।"

देखना है कि कांग्रेसकी महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति कब कहाँ होती है। क्योंकि इस समय तो देश में भयावह राजनैतिक अनैक्य का द्वन्द्व मचा हुआ है और साधारण जन-समूह व्यापक दारिद्र्य-महाव्याधि से पीड़ित होकर निर्जीव-सा हो रहा है। कांग्रेस ने यद्यपि उपर्युक्त महत्त्व की बातों का वादा किया है परन्तु उसने इस बात का कहीं भी सङ्केत नहीं किया है कि जिन मौलिक सिद्धान्तों पर उसका अन्य दलों से मतभेद है, उनका वह अधिकार ग्रहण करने पर किस प्रकार समाधान करेगी। मतदाताओं का भी इस महत्त्व की बात की ओर उतना ध्यान नहीं है। ऐसी दशा में देश का भविष्य कैसा होगा, उसका अनुमान दल-विशेष की चुनाव सम्बन्धी घोषणाओं से नहीं किया जा सकता। उसका पता तो चुनाव-द्वन्द्व के समाप्त हो जाने तथा कांग्रेस के अधिकार ग्रहण करने पर लगेगा।

युद्धोत्तरकालीन निर्माण की एक और योजना

भारत सरकार ने अपनी युद्धोत्तरकालीन निर्माण की योजनाओं का प्रकाशन धीरे-धीरे प्रारम्भ कर दिया है। उद्योग-सम्बन्धी योजना के प्रकाशन के बाद उसने अब यातायात-सम्बन्धी योजना का प्रकाशन किया है। इस योजना के अनुसार भारत में अगले सात वर्ष के भीतर ५ हज़ार मील लम्बी रेलवे लाइन बिछ जायगी। इस कार्य में सरकार का ६० करोड़ रुपया व्यय होगा। इसके अतिरिक्त सड़कों के कूटने के लिए सरकार ने २ करोड़ रुपए के मूल्य के एंजिन इँगलैंड से मँगवाए हैं। इस प्रकार सरकार यातायात की अधिक से अधिक सुव्यवस्था करने की ओर ध्यान दे रही है। निस्सन्देह उसकी इन योजनाओं के पूर्ण हो जाने पर देश के उद्योग-धन्धे उन्नत होंगे। साथ ही जनता को भी यातायात के लिए विशेष सुविधायें प्राप्त हो जायँगी। परन्तु ये सब अभी दूर की बातें हैं। आज तो यातायात की जो कठिनाइयाँ लोगों को झेलनी पड़ रही हैं, उनकी ओर सरकार उतना ध्यान नहीं दे रही है। अर्थात् वह तत्सम्बन्धी युद्ध के पहले की स्थिति अभी तक नहीं ला सकी है, जिसके कारण जनता को कहीं अधिक असुविधायें उठानी पड़ रही हैं। यातायात की तो बात अलग रही, जीवन के अत्यधिक आवश्यक अन्न-वस्त्र की महार्घता और दुर्लभता वर्षों से जनता को घोर कष्ट दे रही है। इस ओर भी सरकार का जैसा चाहिए, वैसा ध्यान नहीं है। सरकार की 'मूल्य-नियन्त्रण-व्यवस्था' के कारण जो सङ्कट उपस्थित है, वह अत्यन्त ही कष्टकर है। इसके प्रमाण देने की यहाँ कोई ज़रूरत नहीं है। आश्चर्य तो यह है कि सरकार की तरह हमारे राष्ट्रीय कार्यकर्ता भी इस दुरवस्था की ओर आवश्यक ध्यान नहीं दे रहे हैं। हाँ, हाल में सरकार के भोजन-सदस्य ने यह वक्तव्य निकालकर जनता को थोड़ा-बहुत आश्वासन दे दिया है कि सन् १९४६ में भारत में बाहर से एक लाख साठ हज़ार टन चावल आयेगा। और इसके सिवा वर्ष के पूर्वार्द्ध में प्रति मास एक लाख टन गेहूँ भी आया करेगा। सरकार की यह योजना यदि कार्य में परिणत हो गई तो देश का अन्न की महार्घता का कष्ट कदाचित् कुछ कम हो जायगा। सरकार की निर्माण कार्य की भविष्य की योजनायें निस्सन्देह महत्त्वपूर्ण हैं और उनका स्वागत सारा देश करेगा, परन्तु इस समय अन्न-वस्त्र की महार्घता एवं दुर्लभता आदि के कारण वर्षों से देशवासियों को जो घोर कष्ट मिल रहा है, उसकी ओर सरकार का एवं लोकनेताओं का भी ध्यान सबसे पहले जाना चाहिए। युद्धकालीन प्रतिबन्धों को क्रमशः ढीला करते जाने से युद्ध के पहले की स्थिति देश में शीघ्र ही लाई जा सकती है, जिससे देशवासियों का जीवन सुखमय हो सकता है। भविष्य की योजनाओं की ओर जितना ध्यान देना आवश्यक है, उससे कहीं अधिक आवश्यक है देश में जल्दी से जल्दी युद्ध के पहले की स्थिति ला देना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदयपुर का सम्मेलन

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का तेंतीसवाँ वार्षिक अधिवेशन गत मेवाड़ की वीरभूमि उदयपुर में धूमधाम से मनाया गया। अधिवेशन के सभापति बम्बई की प्रान्तीय सरकार के भूतपूर्व गुजराती के प्रसिद्ध साहित्यिक श्री कन्हैयालाल माणिकलाल बनाये गये थे। इस अवसर पर उन्होंने अध्यक्ष-पद से महत्त्वपूर्ण भाषण पढ़ा है, वह सर्वथा उनकी कीर्ति के रूप ही हुआ है। उससे हिन्दीवालों का काफ़ी अधिक प्रदर्शन होता है। इस बार का यह अधिवेशन एक विशेष कार के वायुमण्डल में हुआ था और लोगों को आशङ्का थी कहीं अधिवेशन के मौलिक सिद्धान्तों में आमूल परिवर्तन ही हो जाय। बात यह थी कि महात्मा गांधी ने हिन्दुस्तानी के को उठाकर सम्मेलन से त्यागपत्र दे दिया है। यह बात के अनुयायियों और भक्तों को अखर गई है। उन्होंने एक कार का आन्दोलन खड़ा कर दिया है कि सम्मेलन महात्मा की राष्ट्रभाषा की परिभाषा को मान ले। कहा जाता है महात्माजी की परिभाषा के पक्षपाती पूरी तैयारी के साथ यपुर गये थे, परन्तु जब विषय-निर्वाचिनी समिति में सम्बन्धी प्रस्ताव इन्दौर के सरदार किबे ने उपस्थित किया उसका दोनों पक्षों ने ज़ोरदार विरोध किया। परन्तु महात्मा की राष्ट्रभाषा-सम्बन्धी नई परिभाषा नहीं स्वीकृत हुई और कार का उक्त प्रस्ताव कुछ संशोधन के बाद पास हो गया। लन ने सन् १९३५ में इन्दौर में महात्मा गांधी के सभापतित्व ष्ट्रभाषा की परिभाषा स्वीकार करके जो भूल की थी, उसका यपुर के सम्मेलन के अधिवेशन में पूर्ण रूप से संशोधन हो। इस अधिवेशन में सम्मेलन के सूत्रधारों ने उसके शों का दृढ़ता से इसलिए पालन किया है कि हिन्दी-भाषी मत की यही माँग थी। महात्मा गांधी के प्रभाव में आकर भूल वर्षों करते रहे, उसका इस प्रकार उदयपुर में धन करके उन्होंने हिन्दी भाषा की पूर्ण रूप से रक्षा की है। सच है कि महात्मा गांधी के प्रभाव के कारण राष्ट्रभाषा रों के प्रचार-कार्य में अवश्य बाधा पहुँचेगी परन्तु यदि उसके कार धैर्य धारण करेंगे और भाषा-सम्बन्धी अपने मौलिक न्तों की रक्षा करते हुए हिन्दी के प्रचार-कार्य में संलग्न तो एक दिन उनको वह अवसर अवश्य प्राप्त होगा जब देश में हिन्दी ही राष्ट्रभाषा के रूप में ग्रहण की जायगी। जानी हुई बात है कि महात्मा गांधी की कृत्रिम हिन्दुस्तानी उनके दोनों लिपियों के सीखने के आग्रह को न हिन्दू कार करेंगे और न मुसलमान ही। वह उनके उन्हीं भक्तों बीच प्रचलित होकर रह जायगी, जिनको अपने जीवन के हार में उसकी उतनी आवश्यकता नहीं पड़ती है। अतएव ी को सारे देश में राष्ट्रभाषा के रूप में प्रचलित होने का सदैव कार प्राप्त रहेगा। आवश्यकता है केवल यह कि सम्मेलन अपने निश्चय पर अटल रहे और दृढ़ता के साथ अपने कार्यक्रम को अग्रसर करता रहे। यहाँ यह उल्लेख करना आवश्यक है कि सम्मेलन के प्राण श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन ने इस अवसर पर हिन्दी की रक्षा करने में जिस दृढ़ता का परिचय दिया है, उसके लिए हिन्दी-भाषी उनके सदैव कृतज्ञ रहेंगे।

सुदूरपूर्व के प्रवासी भारतीयों की दुरवस्था

मलाया प्रायद्वीप, भारतीय द्वीपपुञ्ज, थाई देश, हिन्दचीन आदि देशों में महायुद्ध के पहले से ही बहुसंख्यक भारतीय बसे हुए हैं। युद्धकाल में इन देशों पर जापानियों का अधिकार हो जाने से, ब्रिटिश प्रजाजन होने के कारण, इन भारतीयों को घोर से घोर कष्ट सहन करना पड़ा होगा। अब युद्ध समाप्त हो जाने से इन्हें सारे सङ्कटों से मुक्त हो जाना चाहिए था, परन्तु इनकी आज वहाँ क्या अवस्था है, इसका कोई पता नहीं मिल रहा है। उस दिन माननीय पण्डित हृदयनाथ कुञ्जरू ने इन प्रवासी भारतीयों के सम्बन्ध में स्पष्ट शब्दों में चिन्ता प्रकट की थी और सरकार से इस बात की माँग की थी कि वह इन प्रवासी भारतीयों की वर्तमान अवस्था का जनता को परिचय दे। उन्होंने यह भी कहा था कि उन्हें ज्ञात हुआ है कि मलाया के प्रवासियों के लोकप्रिय नेता श्री राघवन तथा श्री मेनन क़ैद करके जेल में बन्द कर दिये गये हैं एवं वहाँ के अन्य बहुतेरे लोग जेलों में बन्द हैं। इस प्रकार उन्होंने मलाया के प्रवासियों की अवस्था का आभास दिया है। 'भारत' के विशेष संवाददाता ने हिन्दचीन के प्रवासी भारतीयों का जो विवरण अपने पत्र में छपवाया है, उससे वहाँ के प्रवासियों की दुरवस्था का बहुत कुछ पता चल जाता है वह संक्षिप्त रूप में इस प्रकार है—

'युद्धकाल में भारतीयों ने जापानियों के तत्त्वावधान में चलाये गये भारत के स्वातन्त्र्य आन्दोलन में भाग लिया था। फलतः हिन्दचीन की नई सरकार भारतीयों के विपक्ष में है। भोजन-सम्बन्धी राशन-कार्डों के बँटवारे में भारतीयों के साथ अन्याय किया जा रहा है। दूसरी बात यह है कि हिन्दचीन में भारतीय फ़ौजें, अनामियों के ख़िलाफ़ लड़ रही हैं। इसलिए यहाँ के निवासी भी हिन्दुस्तानियों के विरुद्ध हो गये हैं। अनामियों ने बहुतेरे हिन्दुस्तानियों के घरों को लूट लिया है और बहुत से भारतीय स्त्री-बच्चे भगा लिये गये हैं।

'हिन्द-चीन की फ्रेंच सरकार और वहाँ के निवासी दोनों ही हिन्दुस्तानियों के ख़िलाफ़ हैं। ऐसी स्थिति में उनके हितों की रक्षा के लिए भारत-सरकार को शीघ्र प्रबन्ध करना चाहिए।

'फ्रेंच-सरकार यह नहीं चाहती कि भारत-सरकार की ओर से भारतीयों के हितों की रक्षा के लिए यहाँ कोई अलग प्रबन्ध हो और वह चाहती है कि हिन्दुस्तानियों के मामले का भी निर्णय वही करे। चीनी नागरिकों की भाँति हिन्दुस्तानियों में भी फ्रेंच सरकार कूटनीति से ही है और साम्प्रदायिकता का बीज बोया जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा है। मुसलमानों, सिंहानियों और तामिलों में फूट फैलाने की कोशिश हो रही है।

'मैं समझता हूँ कि हिन्दचीन-स्थित जो भारतीय स्वदेश लौटना चाहते हैं उन्हें जाने की सुविधा फ्रेंच सरकार देगी।

'किन्तु उनके घर लौटने में एक बड़ी कठिनाई उपस्थित हो गई है। नई फ्रेंच सरकार ने यह आदेश दिया है कि जो भारतीय घर लौटना चाहते हैं वे एक सीमित रक़म से अधिक धन अपने साथ नहीं ले जा सकते। वे अपने घर भी रुपए नहीं भेज सकते। पिछले ५ वर्षों से उन्होंने अपने घर रुपया नहीं भेजा है और भारतीय व्यावसायिक कम्पनियों से उन्हें जो रुपए पाने हैं वे भी उन्हें अभी तक नहीं मिल पाये हैं।'

इस विवरण से प्रवासी भारतीयों की आज की दुरवस्था के मूल कारण का पता लग जाता है। उपर्युक्त प्रत्येक देश के अधिकारियों की यह धारणा है कि वहाँ के इन प्रवासी भारतीयों ने आज़ाद हिन्द सेना के सङ्गठन से सक्रिय सहयोग किया है और वे दण्ड एवं तिरस्कार दोनों के पात्र हैं। ऐसी दशा में ऐसे भी कितने ही प्रवासी इस भीषण धारणा के शिकार हो सकते हैं जो सर्वथा निर्दोष हैं। अतएव इस बात की नितान्त आवश्यकता है कि सुदूर पूर्व के भारतीयों की अवस्था की ओर भारतीय लोकनेता ध्यान दें और जहाँ तक सम्भव हो, उनको सङ्कट से मुक्त करने की चेष्टा करें।

अमरीका में भारतीयों को नागरिकता का अधिकार

श्वेताङ्ग संसार के किसी भी देश में जाकर बस सकते हैं, अपना वाणिज्य-व्यवसाय कर सकते हैं और यदि उनकी परिभाषा के अनुसार वह देश असभ्य हुआ तो उस पर अधिकार कर उसके स्वामी भी बन सकते हैं; परन्तु अन्य देशों के लोग, जो श्वेताङ्ग नहीं हैं, उनके देश में घूमने-फिरने को भले ही चले जायँ, वे वहाँ नागरिकता के अधिकार कदापि नहीं प्राप्त कर सकते। श्वेताङ्गों के देशों में अमरीका अधिक उदार समझा जाता है। वहाँ का शासन भी जनतन्त्र के सिद्धान्तों पर निर्मित बताया जाता है। किन्तु अश्वेताङ्ग जाति के लोग वहाँ के नागरिक बहुत कठिनाई से ही बन पाते हैं। पिछले महायुद्ध में अमरीका के लोग एशियाई देशों के निवासियों के घनिष्ठ सम्पर्क में आये हैं। युद्ध में उन्होंने एशियावासियों के शौर्य का एवं उदात्त भावनाओं का परिचय प्राप्त किया है। फलतः वे उनकी सहायता के कृतज्ञ हुए हैं और उन्होंने उनके प्रति मानवता का व्यवहार करना भी उचित समझा है। यही कारण है कि अमरीका की सरकार ने युद्धकाल में ही चीन के निवासियों को अपने देश की नागरिकता के अधिकार दिये थे और अब उसने वही सद्व्यवहार भारतीयों के साथ करने का निश्चय प्रकट किया है। इसके लिए वहाँ की प्रतिनिधि सभा ने एक क़ानून बनाया है, जिसके अनुसार भारतीयों को यह अधिकार दिया गया है कि वे प्रतिवर्ष १०० की संख्या में जाकर वहाँ बस सकेंगे। उसी क़ानून से वहाँ के पहले से बसे हुए ४००० भारतीयों को नागरिकता का अधिकार प्राप्त हो गया है। निस्सन्देह अमरीका के श्वेताङ्गों के इस सद्व्यवहार के लिए चीनी और भारतीय दोनों ही कृतज्ञ होंगे और इन प्रतिबन्धों के हट जाने से अमरीका जाकर प्राप्त अधिकारों का सदुपयोग ही करेंगे; परन्तु यहाँ यह जान लेना अनुपयुक्त न होगा कि अमरीका की सरकार ने जो यह उदारता दिखाई है, उसका विशेष कारण है। वह जानती है कि जर्मनी और जापान पूर्ण रूप से पंगु बना दिये गये हैं। संसार के व्यावसायिक क्षेत्र में उसे उनके स्थान की पूर्ति करनी है। चीन तथा भारत दोनों ही देशों में जर्मनी और जापान का पहले बहुत भारी व्यापार होता था। अब जब उन दोनों देशों के स्थान को अमरीका ग्रहण करेगा, तब उसके लिए यह आवश्यक ही है कि वह भारत और चीन की सहानुभूति को प्राप्त करे। फलतः उसने यह सरल और सस्ता मार्ग ग्रहण किया है। फिर भी भारतवासी उस सद्व्यवहार के लिए अमरीका की प्रशंसा करेंगे। भारतीयों को चाहिए कि इस रियायत से उचित लाभ उठाकर अपने देश के गौरव को बढ़ायें।

——

Printed & Published by A. Bose, at the Indian Press, Ltd., Benares Branch, Benares,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाहित स्त्री-पुरुषों के जानने योग्य

ऑपरेशन तथा इन्जेक्शन ज़रूरी नहीं है

अप्राकृतिक रहन-सहन तथा मिथ्या आहार-विहार के कारण हमारे देश की नारियाँ अधिकांश ऐसी मिलेंगी जो एक न एक रोग से ग्रस्त हो निराश जीवन व्यतीत कर रही हैं। अधिकतर गर्भाशय का मोटा हो जाना तथा उस पर चर्बी आ जाना एक आम हो गया है जो गर्भ धारण करने में बाधक होता है तथा अन्य भयंकर रोगों की जिससे उत्पत्ति भी होती है। ऐसी अवस्था में प्राय: ऑपरेशन कराने से भी बहुत कम रोगियों को सफलता प्राप्त होती है।

यदि आपको ऑपरेशन कराने में असुविधा है या ऑपरेशन की अपेक्षा औषधियों द्वारा कष्ट दूर करने के अधिक पक्ष में हैं तो शास्त्रोक्त अंगूरों का ताज़ा रस, अशोक, अर्जुन, दशमूल, त्रिफला तथा अन्य श्रेष्ठ औषधियों से प्रस्तुत—मूँगा जिसका प्रधान अंग १५ वर्षों से प्रचलित **गौड़ की नारी-सुधा कॉर्डियल** सेवन करें।

नारी-सुधा एक माहवारी से दूसरी माहवारी तक सेवन करने से बिना ऑपरेशन गर्भाशय की चर्बी, उसका मुटापा तथा बाँझपन नष्ट हो जाता है और सहज ही गर्भ की स्थिति हो जाती है। जहाँ इन्जेक्शन लिकोरिया (सफ़ेदे का गिरना) रोकने में असफल होते हैं वहाँ कुछ ही ख़ुराकों में यह सदैव के लिए ठीक हो जाता है। कमज़ोरी से गर्भाशय अपनी जगह से हट जाता है गर्भपात होते रहते हैं—एक बोतल के सेवन से युक्त स्थान दृढ़ हो जाता है, फिर गर्भपात कभी नहीं होते। मासिक धर्म में दो बार या दो महीने में एक बार के बजाय ठीक समय पर हँसते-खेलते होने लगते हैं, जिससे हिस्टेरिया (बेहोशी) के होने बन्द हो जाते हैं। ख़ूब भूख लगती है, ख़ून एक बड़ी में बनने लगता है। दिल की धड़कन, कमर-टाँगों का ठहरा दर्द केवल चौथे दिन दूर हो जाते हैं। जापे का संकट सहन तथा बाद की कमज़ोरी शीघ्र दूर करने की यह विशेष है। **नारी-सुधा** की २६ ख़ुराकों की एक बोतल का —पैकिंग, वी० पी० व्यय से पृथक्—तीन रु० पाँच आने है। आवश्यकता होने पर इस मासिक पत्रिका का हवाला देकर

कुमार कुमार एन्ड को०

पोस्ट बाक्स नं० ११९ देहली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्षिक बाल-सखा

अपनी सन्तान को सन्तुष्ट रखने का यत्न सभी माता-पिता करते हैं। सन्तान को प्रसन्न देख माता-पिता के आनन्द का ठिकाना नहीं रहता। बच्चों को प्रसन्न रखने के लिए बढ़िया भोजन, कपड़े और खेल-कूद का सामान अपनी हैसियत के अनुसार सभी जुटाते हैं। लेकिन उनको सन्तुष्ट रखने का सबसे उत्तम साधन है उनको अच्छा साहित्य पढ़ने को देकर उनकी बुद्धि को विकसित करना।

इस काम में माता-पिताओं की सहायता करने के लिए हमने बाल-सखा का 'वार्षिक अङ्क' निकालना आरम्भ कर दिया है। सन् १९४६ के वार्षिकाङ्क में ऐसी सामग्री रहेगी, जिसको पढ़कर बालक फूले नहीं समायेंगे। बढ़िया कविताएँ, अच्छी कहानियाँ, वैज्ञानिक लेख, देश-विदेश की यात्रा, भ्रमण, उपन्यास और हास-परिहास आदि की ऐसी सामग्री रहेगी जिसको पढ़ने से बालकों की ज्ञान-वृद्धि होगी और मनोरञ्जन तो होगा ही। इसे बालक मिठाई और खिलौने से भी अधिक पसन्द करेंगे। चित्रों की अधिकता रहेगी ही।

वार्षिक बाल-सखा की माँग बहुत रहती है। कुछ घरों में तो एक से अधिक प्रतियाँ ली जाती हैं। इसमें अच्छे काग़ज़ के ३०० से भी अधिक पृष्ठ रहेंगे। लगभग चौथाई भाग रङ्गीन छपेगा। हिन्दी में यह वार्षिकाङ्क अनोखी वस्तु होगा। इसलिए आप अपने वार्षिक अङ्क की प्रति के लिए अभी से रजिस्टर में नाम लिखा लीजिए जिससे प्रतियों के बिक जाने पर आपको निराश न होना पड़े।

मूल्य ३) तीन रुपये: ग्राहकों से २॥) दो रुपये आठ आने

मैनेजर :—

बाल-सखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

हिन्दी साहित्य: बीसवीं शताब्दी

(नवीन संस्करण)

वर्तमान साहित्य की वैज्ञानिक समीक्षा करनेवाली प्रमुख पुस्तक

महावीरप्रसाद द्विवेदी, रामचन्द्र शुक्ल, मैथिलीशरण गुप्त, प्रेमचन्द, प्रसाद, निराला, पन्त, महादेवी वर्मा, जैनेन्द्र कुमार आदि साहित्यिकों पर विवेचनात्मक १९ लेख।

लेखक—अध्यापक श्री नन्ददुलारे वाजपेयी

भूमिका में वर्तमान साहित्य का परिचय और प्रत्येक धारा के कवियों तथा लेखकों का समीक्षात्मक उल्लेख है। पुस्तक में काव्य, कला और साहित्य के स्थायी प्रतिमानों के आधार पर इस शताब्दी के प्रमुख साहित्यिकों की मीमांसा की गई है। वर्तमान युग की सभी रचना-धाराओं का सन्निवेश इस पुस्तक में है।

साहित्यिक और कलात्मक विवेचन की यह पुस्तक उच्च श्रेणी के विद्यार्थियों और साहित्यिकों के लिए अनिवार्य है। मूल्य पाँच रुपये

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

के एजेंट—इंडियन बुकडिपो, लखनऊ

सर्व-मंगला

दस्त, क़ै, पेट-दर्द (हैजा) इत्यादि की अचूक दवा। कुछ मात्राएँ सेवन करते ही सभी उपद्रव दूर हो जाते हैं। इसकी एक शीशी घर में रखकर अचानक होनेवाली मृत्यु तथा लम्बे ख़र्च को रोका जा सकता है। मूल्य प्रति शीसी १) नमूना ।-) दर्जन ९) और २॥।-) मात्र एजेन्टों की सर्वत्र आवश्यकता है। दरिद्र नारायण की सेवा में उपयुक्त मात्रा मुफ़्त।

पता—डाक्टर जे० एम० प्रसाद,

पो० मोकामा (पटना)

मञ्जीर—लेखक, श्री गिरिजाकुमार माथुर। इसमें नवयुवक कवि की भावपूर्ण ४३ रचनायें संगृहीत हैं जिन्हें पढ़कर हृदय फड़क उठता है। मूल्य १) एक रुपया।

वेणुकी—लेखिका, श्रीमती तारा पाण्डेय। इस पुस्तक में श्रीमती तारा पाण्डेय की ६२ कविताओं का संग्रह किया गया है। इसमें संगृहीत कविताओं में भावुकता है और है सहृदयता का वेदनामय झङ्कार। मूल्य १) एक रुपया।

मैनेजर बुकडिपो—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीम
टूथ पेस्ट

नीम टूथ पेस्ट भारतवर्ष क्या विदेशी जनता की प्रशंसा प्राप्त कर अपनी उपयोगिता पूर्णतया प्रमाणित कर चुका है।

अथवा

मार्गोफ्रिस

दंतमंजन

ये दोनों ही चीजें उच्च कोटि की हैं।

दी कलकत्ता केमिकल कं० लि०,

पण्डितिया रोड, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्यारी बहिनो !

न तो मैं कोई नर्स हूँ, न कोई डाक्टर हूँ और न वैद्यक ही जानती हूँ, बल्कि आप ही की तरह एक गृहस्थी स्त्री हूँ। विवाह के एक वर्ष बाद दुर्भाग्य से मैं लिकोरिया (श्वेत प्रदर) और मासिक-धर्म के दुष्ट रोगों में फँस गई थी। मुझे मासिक-धर्म खुलकर न आता था। अगर आता था तो बहुत कम और दर्द के साथ, जिससे बड़ा दुख होता था। सफ़ेद पानी (श्वेत प्रदर) अधिक जाने के कारण मैं प्रतिदिन बहुत कमज़ोर होती जा रही थी, चेहरे का रङ्ग पीला पड़ गया था, घर के कामकाज से जी घबराता था, हर समय सर चकराता, कमर दर्द करती और शरीर टूटता रहता था। मेरे पतिदेव ने मुझे सैकड़ों रुपये की औषधियाँ सेवन कराईं, परन्तु किसी से रत्ती भर लाभ न हुआ। इसी प्रकार मैं लगातार दो वर्ष तक बड़ा दुख उठाती रही। सौभाग्य से एक संन्यासी महाराज हमारे दर्वाज़े पर भिक्षा के लिए आये। मैं दर्वाज़े पर आटा डालने आई तो महात्मा जी ने मेरा मुख देखकर कहा—बेटी, तुझे क्या रोग है जो इस आयु में ही चेहरे का रङ्ग रुई की भाँति सफ़ेद हो गया है? मैंने सारा हाल कह सुनाया। उन्होंने मेरे पति को अपने डेरे पर बुलाया और उनको एक नुस्ख़ा बतलाया, जिसके केवल १५ दिन के सेवन करने से ही मेरे तमाम गुप्त रोगों का नाश हो गया। ईश्वर की कृपा से अब मैं कई बच्चों की माँ हूँ। मैंने इस नुस्ख़े से अपनी सैकड़ों बहिनों को अच्छा किया है और कर रही हूँ। अब मैं इस अद्भुत औषधि को अपनी दुखी बहिनों की भलाई के लिए असल लागत पर बाँट रही हूँ। इसके द्वारा मैं लाभ उठाना नहीं चाहती क्योंकि ईश्वर ने मुझे बहुत कुछ दे रखा है। एक बहिन के लिए पन्द्रह दिन की दवा तैयार करने पर २॥।=) दो रुपये चौदह आने असल लागत ख़र्च होती है और महसूल डाक अलग है।

यदि कोई बहिन इस दुष्ट रोग में फँस गई हो तो वह मुझे ज़रूर लिखे। मैं उसको अपने हाथ से औषधि बनाकर वी० पी० पार्सल द्वारा भेज दूँगी। यह मेरा प्रण है कि मैं किसी बहिन से दवा की क़ीमत अपनी असल लागत से एक पैसा भी ज़्यादा न लूँगी।

ज़रूरी सूचना—मुझे केवल स्त्रियों की इस दवाई का ही नुस्ख़ा मालूम है, इसलिए कोई बहिनें मुझे किसी और रोग की दवाई के लिए न लिखें।

प्रेमप्यारी अग्रवाल, नं० [१२] बुढलाडा, जि० हिसार [पञ्जाब]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थापना] जुकाम, सर्दी पर अकसीर उपाय !! १९२६

हैज़ा, मलेरिया, इन्फ्लुएंज़ा, टाइफाइड
आदि बीमारियों में बचानेवाला।

१ औं० शीशी ॥), दर्जन ५॥=), डा० ख़० अलग

युकॅलिप } सूचीपत्र मुफ़्त { युकॅलिप
न बाम } { दाद का मरहम

खांडालेकर बन्धु, बम्बई ४.

प्रकाशित हो गई

मार्क्स का दर्शन

[लेखक—भूपेन्द्र सान्याल]

(स्वर्गीय शचीन्द्रनाथ सान्याल के भाई, अखिलभारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य, युक्तप्रान्तीय ट्रेड यूनियन के भूतपूर्व उप-सभापति, 'समाजवाद की ओर' आदि के प्रणेता।) मूल्य २) रु०

प्रकाशक, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

हृदय की सर्दी (सर्दी और कफ)—लापरवाही करने से मामूली हृदय की सर्दी फेफड़े की सूजन (ब्रांकैटिस) हो जाती है। इससे बचने का रास्ता बड़ा आसान है। थोड़ा-सा अमृतांजन लेकर छाती पर मलिए। बस, उसकी गरमी सीधे हृदय तक पहुँचती है और उसे निरोग रखती और पूर्ण आराम पहुँचाती है।

अमृतांजन—हमेशा सर्दी से सर्दी आराम पहुँचाता है।

अमृतांजन लिमिटेड, बम्बई और मद्रास

शाखा :—कलकत्ता, कराची, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधासिंधु-बालसुधा

एवं प्रख्यात निजी पेटेंट तथा शुद्ध आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माता

सुख-संचारक कम्पनी, लि०,

सुख-संचारक बिल्डिंग, सुख-संचारक पोस्ट आफ़िस,

मथुरा

युक्त प्रांत में

अपने ढंग का एकमात्र विश्वसनीय विशालकाय कार्यालय

हमारी विशेषताएँ

१—हमारा अपना निजी ५५वर्षीय अनुभव।

२—औषधें वैद्यक की ऊँचे से ऊँची उपाधि प्राप्त विशेषज्ञ और अनुभवी वैद्यराज, उपवैद्यराज के निरीक्षण में निर्माण होती हैं।

३—अप्राप्य व दुष्प्राप्य खनिज एवं वनौषधियों के प्राप्त करने के संगठित साधन।

४—कड़ी, गठीली वनस्पतियों के चूर्ण-विचूर्ण करने, गोलियाँ, टिकियाँ बनाने व कार्क फिट करने और अन्य विभिन्न कार्यों के लिये आधुनिक पद्धति की मशीनें।

५—औषधियों का अधिक परिमाण में तैयार करने तथा इकट्ठा सामान मँगाने के कारण सस्ती और सर्वोत्तम तैयार होना।

विशेष विवरण के लिए बृहत् सूचीपत्र मुफ़्त मँगाइए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यूटेक्स

कृपया ध्यान दें

अब आप केवल ३ मिनट में भद्दे तथा अनावश्यक बालों को क्षुर, पाउडर पेस्ट के लगाये, जिनसे बाल और जल्दी तथा निकलते हैं, बड़ी सरलता पूर्वक नष्ट कर सकते हैं। न्यूटेक्स लिमिटेड के एक आविष्कारक का सनसनीपूर्ण आविष्कार है कई वर्ष तक स्थायी तथा सुखद तरल पदार्थ के आविष्कार प्रतीत कर दिया। उसकी खोज का परिणाम जायज़ था जो अब न्यूटेक्स में मिलाया जाता है और जिससे बालों की जड़ें बड़े सस्ते, सुन्दर तथा सुरक्षित रूप से बहुत जल्द साफ़ हो हैं, किसी भी प्रकार की जलन नहीं होती और न गन्ध ही है।

सभी औषध-विक्रेताओं के यहाँ मिलती है। आप नीचे पते पर।

न्यूटेक्स (इंडिया) कं०,

प्रिंसेस स्ट्रीट, बम्बई।

आरोग्य वर्द्धक

५० साल से दुनिया भर में मशहूर

मदनमंजरी गोलियां

क़ब्ज़ियत दूर करके पाचन-शक्ति बढ़ाती हैं, दिल व दिमाग़ को ताक़त देती हैं और नया खून व शुद्ध वीर्य पैदा करके बल, बुद्धि व आयु बढ़ाती हैं। क़ी० ४० गोलियों की डि० रु० १।)

मदनमंजरी फ़ार्मेसी जामनगर (काठियावाड़)

इलाहाबाद एजंट—मदन स्टोर्स कैमिस्ट और एल० एम० धोलकिया ब्रदर्स जोन्स्टनगंज

हकीम तुलसी प्रसाद जयपाल अलीगढ़ की

असली-मीठी

बालजीवन घुट्टी

मुफ़्तली २० प्रतिष्ठित लगाकर नामवरों भजन स्वास्थ्य साहित्य पुस्तक सूफ़ल भजगा

बच्चों की हर एक बीमारी को दूर करती कमज़ोर बच्चों को ताक़तवर बनाती. ज़रा सी रोज़ाना चटा देने से बच्चे कभी बीमार नहीं होंगे. दाँत आसानी से निकल आवेंगे।

— मू० सी० ७ दर्जन २॥) डा० व्य० अ० —

सब जगह बिकती है. नक़ली घुट्टियों से बचो. नए सौदागर नमूना मुफ़्त मंगावें।

पता: बाल जीवन कार्यालय अलीगढ़ यू० पी०

अब मैं अपने पति की प्रिय बन गई

रूप-विलास (रजिस्टर्ड)

जब मैं विवाह के अवसर पर अपने पति-गृह गई तब मेरे पतिदेव हमारे भद्दे तथा काले चेहरे को देखकर मुझसे घृणा करने लगे। मैंने अपनी सहेलियों की सलाह से **रूप-विलास** का उबटन लगाना शुरू किया। कुछ ही दिनों बाद मेरा चेहरा गुलाब के फूल की भाँति दमकने लगा और आज मैं अपने पति की प्रिय बन गई। इसके लगाने से मुँहासा, झाँई, चेचक, काले-काले दाग़, फुंसी, ख़ुश्की, बदरौनक़ी, झुर्रियाँ वग़ैरह जल्द आराम होती हैं और थोड़े ही दिनों के लगाने से मलीन मुख चमकदार होकर चेहरे पर गुलाबी छटा दमकने लगती है। यदि आप अपना चेहरा ख़ूब-सूरत बनाना चाहते हैं तो २५ वर्ष का प्रचलित जगत्प्रसिद्ध रजिस्टर्ड **रूप-विलास** उबटन लगाइए। विवाह-शादियों पर वर-वधू का सौन्दर्य बढ़ाने के लिए यह बहुत ही उपयोगी साबित हुआ है और इसकी ख़ुशबू इतनी प्यारी है कि तबियत को मस्त करती है। क़ीमत एक डिब्बा २–) तीन डिब्बा ५॥) डाक-ख़र्च माफ़, पैकिंग ख़र्च अलग।

रूप-विलास कम्पनी धनकुट्टी नं० ४२७ कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गरम स्वेटर और आफिसकोट

हमारे नये मँगाये गये स्वेटर और आफिसकोट अच्छी क्वालिटी, रङ्गीन और आकर्षक, मोटे और गरम हैं। अधिक ठंढमें यह उपयोगी है। केवल वितरण की दृष्टिसे हम इन्हें न्यूनतम मूल्य में बेच रहे हैं। पूरा साइज पूरी बाँहका ६) सर्वोत्तम ७) आधी बाँहका ४॥=) सर्वोत्तम ५॥-) छोटा साइज पूरी बाँहका ४॥) सर्वोत्तम ५) आधा बाँहका ३॥) सर्वोत्तम ४) पूरे साइजका आफिसकोट १०) सर्वोत्तम १२) छोटा साइज ७) सर्वोत्तम ९) पैकिंग डाकख़र्च १।) एक साथ दो लेनेपर डाकख़र्च माफ। कृपया अपने शरीरकी नाप भेजिये दो स्वेटर के लिए २) अग्रिम अनिवार्य।

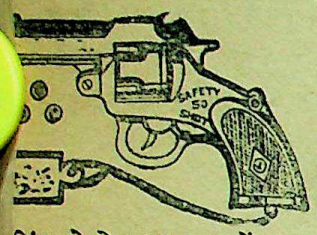

आटोमेटिक पाकेट रिवाल्वर साइज व आवाज़ में असली के समान। ६ फ़ायर एक साथ। लाइसेंस की ज़रूरत नहीं। नं० ४, ८॥) नं० ७, ९॥) नं० १०, ११) स्पेशल, १३) सबसे उम्दा १४) पैकिंग पोस्टेज १।) साथ में २५ कारतूस व एक डमीवाच फ्री। होम प्रिंटिङ्ग पाकेट प्रेस—नाम, पता चिट्ठियाँ, लेबिल और प्रोग्राम आदि इसके द्वारा घर पर ही बहुत साफ़ छापे जा सकते हैं। क़ीमत नं० १ का ३), नं० २ की ३॥) ; नं० ३ की ४) ; स्पेशल ५।) ; सबसे बढ़िया ७) पैकिंग और पोस्टेज ॥=) हर एक आर्डर के साथ १ डमी रिस्टवाच मुफ़्त।

पता—फ्रेञ्च कमर्शियल स्टोर्स पो० बाक्स नं० १२२१६, कलकत्ता (सेक्शन ३०१)

काश्मीर का उपहार

असली केसर ३॥) तोला से ५) तक। हींग, [illegible]०) रुपये सेर। शिलाजीत ३ तोला ३) सूर्यतापी।

कमल मधु, मोतियाबिन्द, कुकर दृष्टि-क्षीणता, आँखों के सामने धुन्ध छाना आदि नेत्र-विकारों के लिये अमोघ और चमत्कारी औषधी। २ ड्रम का [illegible]।) व चार ड्रम का ४) स्पेशल पोटेन्सी १०)।

कटयाल कम्पनी (P)

श्रीनगर (काश्मीर)

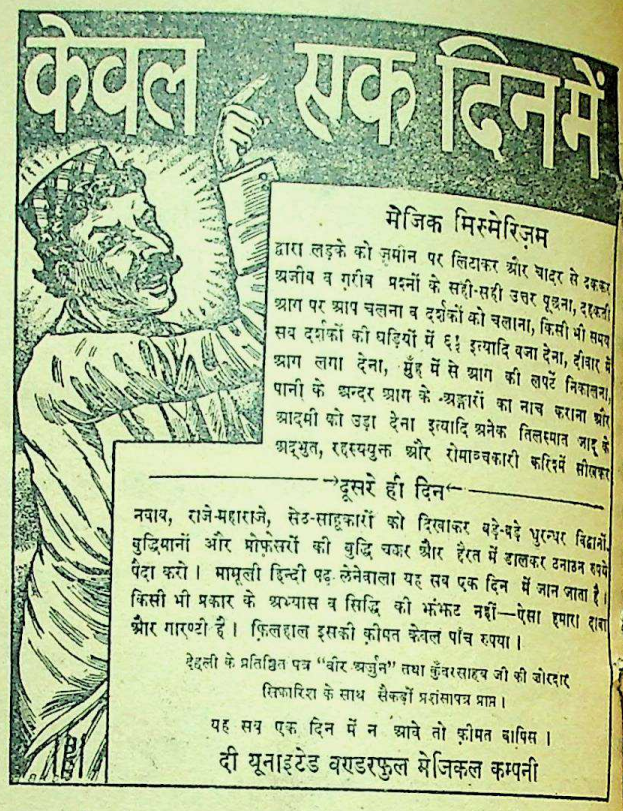

विभाग नम्बर २६, मुरादाबाद यू० पी०

पाठक इस विशेषांक की अत्यंत आतुरता से बाट जोह रहे हैं।

उद्यम

डेअरी विशेषांक

१५ जनवरी को प्रकाशित होगा

खालिस और सस्ता दूध कहाँ मिलेगा ! यही एक प्रश्न आज प्रत्येक छोटे बड़े शहर निवासी एक दूसरे से पूछते हैं। प्रस्तुत डेअरी विशेषांक की सहायता से यह प्रश्न अत्यंत विश्वासपूर्वक हल किया जा सकेगा।

इस लाभदायक व्यवसाय को कोई भी अल्प पूंजी में आसानी से कर सकता है। फिलहाल इस धंधे को करनेवाले अथवा करने की इच्छा रखने वाले व्यक्तियों को प्रस्तुत डेअरी विशेषांक से काफी सहायता मिलेगी।

डेअरी विशेषांक की कीमत रजि० डा० व्यय सहित रु० १।) है। 'उद्यम' का वार्षिक मुल्य रु० ५॥) भेजकर शीघ्र ही ग्राहक बनने वालों को डेअरी अङ्क अवश्य ही मिलेगा। शीघ्रता कीजिये।

हिन्दी उद्यम मासिक, धर्मपेठ, नागपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई पुस्तकें

शैतान का खेल

सचित्र पुस्तक है। इसमें एक बोतल में बन्द भूत का रञ्जक क़िस्सा है। यह भूत उस व्यक्ति की सब इच्छायें करता था जिसके क़ब्ज़े में यह बोतल रहती थी। इस तल को क़ब्ज़े में रखने में और तो सब सुभीता था, एक ही ठिनाई थी कि मरते समय जिसके अधिकार में बोतल रहती उसे क में गिरना पड़ता। यह बोतल जितने में मोल ली जाय से कम दाम में बेचने की शर्त थी। इस प्रकार यह बोतल हुत लोगों के पास रही, पर सभी इसे दूसरों के हाथ बेचने फिक्र में रहते थे, य पि उन्हें किसी चीज़ की कमी न थी। रोचक कहानी है। एक बार हाथ में लेने पर बिना माप्त किये पुस्तक छोड़ने को जी नहीं चाहता। बढ़िया ज़, उत्तम छपाई। मूल्य केवल ।।।) बारह आने।

विचित्र जीव-जन्तु

यह भी सचित्र पुस्तक है। इसमें दुनिया के एक से एक जीव जीव-धारियों का सरल भाषा में वर्णन है। इसके पढ़ने जानकारी बढ़ती और मनोरञ्जन होता है। बालकों के लिए बहुत ही उपयोगी है। मूल्य केवल ।=) छः आने।

विष-पान

यह सुकवि सोहनलालजी की सुन्दर रचना है। इसमें समुद्र- न से उत्पन्न विष की पौराणिक कथा का कवितावद्ध मनोहर न है। छपाई-सफ़ाई सुन्दर है। आवरण-पृष्ठ पर शङ्करजी का, को पीने का भावपूर्ण चित्र है। मूल्य १) एक रुपया।

पूजागीत

यह युगकवि सोहनलालजी की ऐसी रचना है जिसमें प्रसन्नता, ीवता, प्रभावोत्पादकता रहने से पढ़नेवाले को कविता का रस ता है। इसमें एक से एक बढ़ कर ५६ गीतों का संग्रह इस पूजागीत का बहुत आदर है। कविता-प्रेमियों को ह संग्रह अवश्य करना चाहिए। मूल्य केवल २) दो रुपये।

झरना

इस में पण्डित सोहनलालजी की बालकोपयोगी २३ कविताएँ मातृभूमि, जय-जय स्वदेश, हवा का झोंका, तुम बढ़ो ही अकेले, सुनहली धूप, लहर, सब पर जल बरसाता ल, दूर्वा का गीत और नीम का पेड़ आदि सुन्दर कवितायें अच्छे काग़ज़ पर अच्छी स्याही में छपी पुस्तक का मूल्य केवल बारह आने।

अमर जीवन

(दो भागों में)

इसमें संसार के सुप्रसिद्ध व्यक्तियों—कवीन्द्र रवीन्द्र, अल्फ्रेड नोबेल, हेनरी फ़ोर्ड, जगदीशचन्द्र बसु, महात्मा गांधी, ताता, सर सैयद अहमद और आशुतोष मुकर्जी आदि के जीवनचरित का संक्षेप में वर्णन है। मूल्य प्रत्येक का ।=) छः आने।

अमर ज्योति

कहानियों का संग्रह है जिसमें अनुशोचना, तावीज़, चरित्रम्, नहीं, अमर ज्योति आदि तेरह सुन्दर कहानियाँ हैं। इन कहानियों से पढ़नेवालों का मनोरञ्जन इस कारण होगा कि लेखक ने किसी मतवाद का आग्रह न करके कथा का चित्रण किया है। पूँजीपतियों और मज़दूरों के सङ्घर्ष, साम्राज्यवाद या समाजवाद आदि की उलझन में पाठक को नहीं पड़ना पड़ेगा। मूल्य केवल १ एक रुपया।

देवयानी

यह नाटिका कुमारी तारा वाजपेयी की रचना है। इसमें शुक्राचार्य की बेटी देवयानी के कन्यात्व का आदर्श बड़ी सफलता से उपस्थित किया गया है। कथा महाभारत से ली गई है। इसमें आर्यों के व्यापक वैवाहिक सम्बन्ध के इस एक अपवाद—क्षत्रिय वर और कन्या ब्राह्मणपुत्री—का स्पष्टीकरण बड़ी सतर्कता से हुआ है। पुस्तक अपने ढङ्ग की अनूठी है। मूल्य केवल १) एक रुपया।

जीवन-कण

यह आशुकवि जगमोहननाथ अवस्थी की सुन्दर रचनाओं का संग्रह है। आपकी रचनाओं में निर्भयता है, राष्ट्रीयता है और कवि की ईमानदार छटपटाहट है। इस संग्रह की कवितायें समाज की भयङ्कर परिस्थितियों और घोर वातावरण के कारण जीवन को पहेली मानकर लिखी गई हैं। इसमें वैषम्य, भिखारिन, जेल, दीपावली आदि श्रेष्ठ २२ रचनायें संगृहीत हैं। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल ।।=) दस आने।

मार्क्स का दर्शन

यह श्रीयुक्त भूपेन्द्रनाथ सन्याल का लिखा हुआ है यह 'दर्शन' सर्व साधारण के लए है। ख़ास कर मज़दूर और शोषित वर्ग के लोग इसे अवश्य पढ़ें। मार्क्स का दर्शन क्रान्ति से ओत-प्रोत है। मार्क्स ने अपने दार्शनिक सिद्धान्तों द्वारा मज़दूर श्रेणी के स्वार्थ की पुष्टि की है। बढ़िया काग़ज़ पर छोटे टाइपों में छपी सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २) दो रुपये।

मैनेजर बुकडिपो—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूबिया

इस में रूस की ज़ारशाही के समय की दशा का चित्रण बड़ी सुन्दरता से किया गया है। पति-पत्नी के प्रेम का अनोखा चित्र-सा खींचा गया है। पुस्तक में कई चित्र हैं। जिल्द के ऊपर रङ्गीन चित्र है। मूल्य २) दो रुपये।

बड़ी दीदी

यह नामी उपन्यास-लेखक शरद बाबू की रचना है। इसमें सामाजिक दशा का चित्रण है। किसी भले घर का लड़का रूठकर घर से चल दिया और दूर गाँव में जाकर एक मालदार विधवा युवती को पढ़ाने की नौकरी करने लगा। दोनों के मन में प्रेम का उदय हुआ तो मास्टर अपने घर चला गया। बाद को एक अकल्पित ढङ्ग से उस विधवा से इस पुराने मास्टर की भेट हुई जहाँ पुरानी बीमारी से उसका प्राणान्त हो गया। बड़ा ही प्रभावोत्पादक कथानक है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

वञ्चिता

यह रोमाञ्चकारी ऐतिहासिक उपन्यास है। अकबर के ज़माने की घटना के आधार पर इसकी रचना हुई है। इसमें बड़ी-बड़ी गुत्थियाँ हैं। दरबार के दाँव-पेंच, जासूसी चालें और प्रलोभन के बखेड़े हैं। विजय ने मित्र चम्पालाल के प्राण बचाने का पूरा उद्योग किया, किन्तु ज़रा-सी देर ने काम बिगाड़ दिया। इससे दोनों मित्र साथ ही 'जल जङ्गल' हाथी के पैर से कुचले जाकर परलोक के यात्री बने। बेचारी नन्दा अपने प्रियतम विजय से वञ्चिता होकर उसकी याद में घुल-घुलकर जीवन बिताने को रह गई। मूल्य ३॥) तीन रुपये आठ आने।

चन्द्रशेखर

यह सुप्रसिद्ध उपन्यास-लेखक बङ्किम बाबू की प्रसिद्ध रचना है। इसकी कथा बड़ी विचित्र है। घटना है बङ्गाल के अन्तिम नवाब मीर क़ासिम के समय की। नवाब और अँगरेज़ों के बीच हुए सङ्घर्ष का भी वर्णन इसमें है। कथा के नायक चन्द्रशेख का उदार चरित्र अनूठा है। यह लेखक का बहुत ही प्रशंसित उपन्यास है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

माधवी-कङ्कण

यह सुप्रसिद्ध बाबू रमेशचन्द्र दत्त का लिखा ऐतिहासिक उपन्यास है। इसमें मुग़लों के समय की दशा के चित्रण के साथ-साथ प्रेमी-प्रेमिका की बड़ी विचित्र कथा है। यह उपन्यास बहुत लोकप्रिय है। इसका नया संस्करण अभी तैयार हुआ है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

देशान्वेषण की सरल कथाएँ

इसमें उन ३२ कर्मवीरों के अन्वेषण-कार्यों का वर्णन है जिन्होंने अपनी जान जोखिम में डालकर अङ्गीकार किये कार्य को पूरा किया। तेरहवीं शताब्दी के मार्कोपोलो से लेकर उन्नीसवीं शताब्दी के कप्तान एमेंडसेन और कप्तान स्कॉट तक की दुर्गम यात्राओं का वर्णन इस पुस्तक में है। ऐसी पुस्तकों के पढ़ने से साहस बढ़ता और विविध जानकारी होती है। मूल्य ।॥-) केवल तेरह आने।

सचित्र महाभारत

यह स्वर्गीय आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी का सम्पादित प्रसिद्ध ग्रन्थ है जिसके कई संस्करण हाथोंहाथ बिक गये हैं। इसमें सम्पूर्ण महाभारत की कथायें बड़ी सुन्दर भाषा में दी गई हैं। इसके पढ़ने से महाभारत की बहुत-सी बातें मालूम हो जाती हैं। अच्छा काग़ज़, बढ़िया छपाई और सुन्दर जिल्द। अनेक पृष्ठ के चित्र हैं जिनमें से ११ रङ्गीन हैं। बड़े आकार के सवा तीन सौ से ऊपर पृष्ठ हैं। मूल्य केवल ६) छः रुपये।

विश्व-कवि रवीन्द्रनाथ

हिन्दी में विश्वकवि रवीन्द्रनाथ के विषय में अब तक जितनी पुस्तकें लिखी गई हैं उनमें यह सबसे बड़ी है। इसमें रवीन्द्रनाथ की अन्तिम रचनाओं तक की चर्चा आ गई है। अनेक स्थानों से पुष्परस लाकर यह मधुचक्र बनाया गया है। रवीन्द्रनाथ कवि, लेखक, नाट्यकार, कहानी और उपन्यासों के लेखक सब कुछ थे। उनको समझने में यह पुस्तक बड़ा काम देगी। हिन्दी के नामी पत्रों और विद्वानों ने इस पुस्तक की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल ५) पाँच रुपये।

बाघ और भालू की कहानी

यह बालकों के बड़े काम की है। इसमें एक देशी बाघ और एक विदेशी भालू की कहानी है। दोनों कहानियाँ बाल आख्यायिका उपन्यास की तरह विचित्र तो हैं पर कल्पित नहीं हैं। इनको पढ़ने से बालक-बालिकाएँ जीव-जन्तुओं के काम काज और उनकी समझदारी का कुछ परिचय पावेंगी। मनोरञ्जन तो होगा ही। पुस्तक सचित्र है और दो रङ्गों में छपी है। मूल्य केवल ।=) छः आने।

फ्रांस का इतिहास

इसमें ईसा पूर्व २२५ से लेकर सन् १९२० ईसवी तक का इतिहास है। इसमें वहाँ की राज्यक्रान्ति के राजदरबार, फ्यूडल प्रणाली, स्वतन्त्र राजतन्त्र, शतवर्षीय युद्ध, योरप में फ्रांस का प्रसार, राजवंश के उद्धार, सन् १८४८ की क्रान्ति, राष्ट्रीय

मैनेजर बुकडिपो—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रजातन्त्र आदि का वर्णन उत्तमता से किया गया है। में चित्र भी हैं। अच्छे काग़ज़ पर छपे साढ़े चार सौ की सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल ४) चार रुपये।

स्वदेश-विदेश-यात्रा

यह श्रीयुक्त सन्तरामजी, बी० ए० और श्रीमती रामेश्वरी की प्रसिद्ध रचना है। देश-देशान्तर की यात्रा करने से लाभ होते हैं। व्यवहार-ज्ञान और सामान्य बुद्धि की वृद्धि है। परन्तु पर्यटन का सुबीता सबको सुलभ नहीं होता। रुचि भी थोड़े लोगों को होती है। ऐसे लोगों को विषयक पुस्तकें पढ़ने से बड़ा लाभ हो सकता है। इस में कश्मीर और कुल्लू की सैर तथा आस्ट्रेलिया की का वर्णन है। पुस्तक सचित्र है। अच्छे काग़ज़ पर पौने दो सौ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य केवल १॥≡) रुपया ग्यारह आने।

आल्हा

आल्हा का थोड़ा बहुत क़िस्सा सभी हिन्दी-प्रेमी जानते हैं, पर का ब्योरेवार वर्णन थोड़े लोगों को ही मालूम होगा। चतुर्वेदी प्रसाद शर्मा की कृपा से यह कथा हिन्दीवालों को सुलभ है। इसमें परमाल का ब्याह, संयुक्ता का स्वयंवर, माड़ौ लड़ाई, आल्हा और मलखान का ब्याह, दिल्ली की लड़ाई, गढ़ का युद्ध आदि कितनी लड़ाइयां और विवाहों का है। बड़े आकार के सवा तीन सौ से ऊपर पृष्ठों की सजिल्द का मूल्य केवल ३.-) तीन रुपये पाँच आने।

जानवरों की मज़ेदार कहानियाँ

इसमें मोर और कौआ, लोमड़ी और गधा, चालाक बुढ़िया, की चिड़िया, सिंह और गीदड़, राजकुमार और सोने की ा, चिड़िया और बुढ़िया तथा चालाक गीदड़ की कहानियाँ इनको पढ़कर लड़के और लड़कियाँ सभी प्रसन्न होते हैं। रङ्गीन आवरण पृष्ठ है। मूल्य केवल ।।≡) ग्यारह आने।

सच्चा सेवक

छोटा-सा नाटक है जिसमें सेवक के गुण सुन्दरता से दिखाये है। यह नाटक अभिनय करने के लिए लिखा गया है खेला भी गया है। स्कूलों में उत्सव के समय छात्र इसका अभिनय करके प्रशंसा पाते हैं। मूल्य ।-) पाँच आने।

तुलसी-रत्नावली

इसका संकलन, प्रिंसिपल केदारनाथ गुप्त, एम० ए० ने किया है। इसमें गोस्वामी तुलसीदासजी के अमूल्य ग्रन्थों—रामचरितमानस, विनयपत्रिका, कवितावली, दोहावली, गीतावली आदि—से रत्न चुने गये हैं। अनेक ग्रन्थों से अमूल्य रत्नों का संग्रह करना सचमुच बड़ा कठिन काम होता है। जो लोग गोस्वामी जी के समस्त ग्रन्थ न तो ले सकते हैं और न उनका अध्ययन कर सकते हैं उनको इस संग्रह से बड़ा लाभ होगा। मूल्य केवल १॥ एक रुपया आठ आने।

माँ और बच्चा

इसके लेखक नामी चिकित्सक डाक्टर बोधराज चोपड़ा, एम० बी०, सी-एच० बी० (एडिनबरा) हैं। यह पुस्तक अपने सङ्ग की अनुपम है। इसके ११ प्रकरणों में छोटे बच्चों की मृत्यु और उसके कारण, गर्भिणी माता, जन्म के समय से बालक की रक्षा, बच्चों को दूध पिलाना, दूध पिलाने वाली दाई, दूध छुड़ाना आदि आवश्यक विषयों की शिक्षा दी गई है। स्त्रियों की मृत्यु और रोगों को कम करने तथा छोटे बच्चों को मृत्यु से बचाने की दृष्टि से पुस्तक लिखी है। यों लेखक ने मनुष्यमात्र का उपकार किया है। अच्छे काग़ज़ पर छपी ढाई सौ से भी अधिक पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २) दो रुपये।

गोस्वामी तुलसीदास-संक्षिप्त रामचरितमानस (सचित्र)

यह रामचरितमानस का संक्षिप्त संस्करण है। संक्षेप ऐसी चतुराई से किया गया है कि कहीं भी कथा-भाग टूटने नहीं पाया। मँझोले आकार के ३०० पृष्ठों में यह समाप्त हुआ है। पुस्तक सचित्र और सजिल्द है। मूल्य १) एक रुपया।

अयोध्याकाण्ड (मूल)

रामायण-प्रेमियों के सुभीते के लिए यह काण्ड अलग प्रकाशित किया गया है। यह पुस्तक अनेक स्थानों के शिक्षाविभाग-द्वारा स्वीकृत है। इससे यह विद्यार्थी तथा साधारण जनता सभी के काम की चीज़ है। मूल्य १) एक रुपया। सटीक मूल्य २॥≡) दो रुपये ग्यारह आने।

सुन्दरकाण्ड (मूल)

रामायण-प्रेमियों के सुभीते के लिए यह काण्ड असली रामचरितमानस से अलग छापा गया है। मूल्य ।≡) सात आने।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरण्यकाण्ड (मूल)

रामायण-प्रेमियों के सुभीते के लिए यह काण्ड भी असली रामचरितमानस से अलग छापा गया है। मूल्य ।≡) सात आने।

विनयपत्रिका (सटीक)

गोस्वामी तुलसीदास की रचनाओं में विनयपत्रिका का स्थान बहुत उच्च है। इसमें गोस्वामीजी के विनय-सम्बन्धी पद्यों का संग्रह है। इसके टीकाकार हैं पण्डित रामेश्वर भट्ट। मूल्य ४) चार रुपये।

कुण्डलिया रामायण

गोस्वामी तुलसीदासजी की यह अमर रचना पिछले दिनों खोज में मिली है। इसमें उनकी अन्यान्य रचनाओं की भाँति सरस कुण्डलिया छन्दों में रामचरित-मानस के सातों काण्डों की कथा दी गई है। मूल्य ४) चार रुपये।

मानससूक्तावली

रामचरितमानस में आये हुए कण्ठस्थ करने के योग्य चौपाइयों और दोहों का संग्रह। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

संक्षिप्त पद्मावत

(रायबहादुर बाबू श्यामसुन्दरदास, बी० ए० द्वारा सम्पादित) मलिक मुहम्मद जायसी के पद्मावत का संक्षिप्त संस्करण। मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने।

संक्षिप्त सूरसागर

इसमें महाकवि सूरदास के पदों का संग्रह है। इसका एक-एक पद भक्ति तथा प्रेम के रस से ओतप्रोत है। मूल्य ३।-) तीन रुपये पाँच आने।

चारण

इस पद्यमय पुस्तक में प्राकृतिक दृश्यों के मनोरञ्जक वर्णनों के अतिरिक्त राजपूताना के कुछ प्रसिद्ध वीरों का गुणगान किया गया है। मूल्य ।-) पाँच आने।

वीणा-ग्रन्थि

हिन्दी के युगान्तरकारी श्री सुमित्रानन्दन पन्त की दो पुस्तकों का सम्मिलित संस्करण। वीणा मौलिक कविताओं का संग्रह है। और ग्रन्थ में कवि ने एक छोटे-से कथानक को अपनी कल्पना द्वारा विकसित कर एक खण्डकाव्य की रचना की है। मूल्य २) दो रुपये।

भैरवी

इसकी राष्ट्रीय कवितायें राष्ट्र-प्रेमियों के गौरव की वस्तु हैं। यहाँ तक कि पण्डित जवाहरलाल नेहरू तक ने इसे पसन्द किया है और खादी-प्रतिष्ठानों में इसकी हज़ारों प्रतियाँ बिकी हैं। विद्वानों की सम्मति है कि भैरवी 'गांधीयुग' का सर्वश्रेष्ठ काव्य है। मूल्य २।≡) दो रुपये ग्यारह आने।

वासवदत्ता

हिन्दी का एक आधुनिक काव्य। इस काव्य की विद्वानों ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। मूल्य २) दो रुपये।

हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ कवि
ठाकुर गोपालशरणसिंहजी की कृतियाँ

माधवी

माधवी का यह नया संस्करण बड़ी ही सज-धज के साथ और बड़े आकार में प्रकाशित हुआ है। मूल्य २) दो रुपये।

ज्योतिष्मती

इस संग्रह में ठाकुर साहब की नवीन प्रकार की कविताएँ संगृहीत की गई हैं, जो हिन्दी-साहित्य में अपना विशेष स्थान रखती हैं। ख़ास कर इसमें संग्रह किये गये छोटे-छोटे गीत बहुत ही मधुर और भावपूर्ण हैं। मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने।

मानवी

इस संग्रह में प्रकाशित कविताओं के द्वारा ठाकुर साहब ने भारतीय नारी के सुख-दुःखमय जीवन का बड़ा ही सुन्दर और मार्मिक चित्रण किया है। मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने।

संचिता

इस संग्रह में ठाकुर साहब ने अपनी सन् १९१४ से लेकर सन् १९३९ तक की सब प्रकार की रचनाओं का समावेश किया है। इस एक ही पुस्तक के द्वारा ठाकुर साहब के कवि-जीवन के क्रम-विकास का उत्तमतापूर्वक अध्ययन किया जा सकता है। संग्रह में कुल ७१ कवितायें हैं। मूल्य ३) तीन रुपये।

सुमना

'सुमना' ठाकुर साहब का सबसे नवीन संग्रह है जिसमें ५३ गीत हैं जिनमें प्रकृति के प्रति उनका असीम, अनुराग शब्द-द्वारा व्यञ्जित होता है। इस प्रकार के सरस भावमय गीत हिन्दी-साहित्य में अन्यत्र न मिलेंगे। मूल्य २) दो रुपये।

मैनेजर बुकडिपो—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस्वती

सचित्र

मासिक पत्रिका

भाग ४६, खण्ड २

जुलाई से दिसम्बर

१९४५

सम्पादक

देवीदत्त शुक्ल

उमेशचन्द्र मिश्र

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

वार्षिक मूल्य साढ़े चार रुपये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

1R879

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख सूची

म्बर	नाम		लेखक		पृष्ठ
१	अतीत के दो चिह्न	...	(१) पण्डित हनुमान् शर्मा, (२) रावत चतुर्भुजदास चतुर्वेदी	...	१३७, १३९
२	आगाह और उर्दू की भाषा	...	पण्डित चन्द्रबली पांडे, एम० ए०	...	६३
३	आत्मनिर्भर (कविता)	...	श्रीयुत देवशङ्कर त्रिवेदी, एम० ए०	...	२०१
४	आँधी	...	श्रीयुत नारायण श्यामराव चिताम्बरे	...	७९
५	आधुनिक मराठी काव्य की रूपरेखा	...	श्रीयुत बालाधर राव जोशी, बी० ए०	...	३१६
६	आलोक (कविता)	...	श्रीयुत महावीरसिंह 'वीर', बी० ए०	...	२०६
७	उपेक्षितों की दुनिया	...	श्रीयुत कृष्णचन्द्र शर्मा, बी० ए०	...	२५५
८	एक रात	...	श्रीयुत पदुमलाल पुन्नालाल बख़्शी, बी० ए०	...	२९०
९	कवि (कविता)	...	श्रीयुत उमेशचन्द्र 'मधुकर', बी० ए०	...	१०
०	कवि-सम्मेलन	...	श्रीयुत पदुमलाल पुन्नालाल बख़्शी, बी० ए०	...	२०३
१	कवि से (कविता)	...	श्रीयुत अनुरञ्जन, बी० ए० आनर्स,	...	२४७
२	कांग्रेस किधर को	...	पण्डित आत्मस्वरूप शर्मा	...	११३
३	क्षितिज के पार	...	कुमारी प्रभा पारीक, बी० ए०	...	६१
४	गणेश	...	पण्डित काशीनाथ रा० तिलक	...	१२९
५	गर्वीला गुलाब	...	कुमारी प्रभा पारीक	...	१०
६	गायक (कविता)	...	श्रीमती शकुन्तला सिरोठिया	...	३७
७	गायों का चरवाहा	...	श्रीयुत रघुनाथसिंह 'विनीत'	...	१०१
८	गीत (कविता)	...	कुमारी शैल रस्तोगी	...	१४५
९	गीत (कविता)	...	श्रीयुत रामेश्वर शुक्ल 'अञ्चल', एम० ए०	...	१५५
०	गीत (कविता)	...	श्रीयुत नीरज	...	१७८
१	गीत (कविता)	...	श्रीयुत छोटेलाल भारद्वाज	...	२३९
२	गीत (कविता)	...	श्रीयुत शीतलासहाय श्रीवास्तव	...	२६०
३	गीत (कविता)	...	श्रीयुत गोपाल शर्मा, बी० ए०	...	३२५
४	चण्डीदास की विरहिणी राधा	...	पण्डित हजारीप्रसाद द्विवेदी	...	२२९
५	चितायें	...	कुमारी प्रभा पारीक, बी० ए०	...	५
६	चित्र की चोरी	...	श्रीयुत धर्मवीर, एम० ए०	...	११९
७	जापान क्यों पराजित हुआ	...	श्रीयुत सन्त निहालसिंह	...	२८१
८	'डैनटूट साहस'	...	श्रीयुत दुर्गाप्रसादसिंह	...	२४०
९	तक्षशिला—तब और आज	...	पण्डित कृष्णदत्त वाजपेयी, एम० ए०	...	२३५
०	तूने क्या सपना देखा है (कविता)	...	श्रीयुत आरसीप्रसादसिंह	...	२८६
१	दीपक की मैं कम्पित ज्वाला (कविता)	...	श्रीयुत देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'	...	३०२
२	दो रूप (कविता)	...	श्रीयुत आरसीप्रसाद सिंह	...	३१२
३	"धना, डाँडी का सवड़ूमा"	...	श्रीयुत भगवतीप्रसाद जोशी 'गढ़वाली'	...	३१३
४	नई पुस्तकें	...		९७, १५६, २१२, २६९,	३२६
५	नियम (कविता)	...	पण्डित नारायणलाल कटरियार	...	२१
६	निर्झरिणी	...	श्रीमती शकुन्तला सिरोठिया	...	९१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नम्बर	नाम		लेखक	पृष्ठ
३७	निर्वासित	...	पण्डित इलाचन्द्र जोशी	४१, ९२, १४१, १९४, २६१, ३१
३८	नौकरों का राशन	...	कुमारी तारा डी० पोतदार, एम० ए०	... १७
३९	न्याय	...	प्रोफ़ेसर हरिशङ्कर श्रीवास्तव, एम० ए०	... २०७
४०	प्रतिज्ञा	...	कुमारी तारा डी० पोतदार, एम० ए०	... ७०
४१	पत्रकार से नाटककार	...	स्वर्गीय हरिकृष्ण जौहर	...
४२	पत्रकार से नाटककार	...	स्वर्गीय हरिकृष्ण जौहर	...
४३	परलोकगत रायबहादुर बाबू श्यामसुन्दरदास		चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा	...
४४	प्रतिरोध (कविता)	...	श्रीयुत 'अरुण'	... २२५
४५	प्रभात में ही	...	सुश्री शबनम बाला	... २११
४६	प्रशान्त का युद्ध	...	पण्डित रमादत्त शुक्ल	... २९३
४७	प्रशान्त की अखेट भूमि	...	श्रीयुत नरोत्तमप्रसाद नाग	... २४३
४८	प्रसाद का कवि	...	पण्डित चन्द्रबली पाण्डेय, एम० ए०	... ३०
४९	बरसातों का क्या कहना (कविता)	...	श्रीयुत रामानुजलाल श्रीवास्तव	... ३०३
५०	बादल गीत (कविता)	...	श्रीयुत बैजनाथप्रसाद सिनहा 'विस्मृत'	... २६०
५१	ब्रिटिश राजनैतिक जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन		श्रीयुत आशाराम, एम० ए०	... २४२
५२	भक्ति और सिद्धि	...	पण्डित हजारीप्रसाद द्विवेदी	... १७९
५३	भारत में अङ्कपरिगणन-सम्बन्धी अज्ञान	...	प्रोफ़ेसर प्रेमचन्द्र मलहोत्र	... ११५
५४	'भोजपुरी' में एक ग्रामीण नायिका के उद्गार		श्रीयुत महेश्वरप्रसाद	... १३६
५५	मञ्जुश्री	...	कुमारी प्रभा पारीक, बी० ए०	... १५३
५६	मसूरी-देहरादून से (कविता)	...	कुँवर आर्पी, एम० ए०	... २४८
५७	महाराष्ट्र का काश्मीर	...	श्रीयुत गो० प्र० नेने	...
५८	माता-पिता	...	श्रीयुत रामचन्द्र तिवारी	... ६
५९	मिट्टी का मानव	...	श्रीयुत मदनमोहन 'राकेश'	... २
६०	मेरा उपन्यास	...	श्रीयुत पदुमलाल पुन्नालाल बख़्शी, बी० ए०	... १८
६१	मैं गिर गया था	...	श्रीयुत भगवतीप्रसाद पान्थरी	... २५१
६२	रवीन्द्रनाथ की हिन्दी-सेवा	...	पण्डित हजारीप्रसाद द्विवेदी	... २९०
६३	रायबहादुर डाक्टर श्यामसुन्दरदास	...	पण्डित लक्ष्मीप्रसाद पाण्डेय	... १६
६४	रिक्शावाला (कविता)	...	प्रोफ़ेसर विद्याभाकर 'अरुण'	... १४
६५	रियासतें—उनकी आर्थिक समृद्धि और तत्सम्बन्धी समस्यायें		श्रीयुत राजमल संघी, बी० ए०	... १७
६६	रूस में सहशिक्षा का विरोध	...	श्रीयुत सत्यप्रकाश मित्तल	... १
६७	रोमन लिपि	...	श्रीयुत रविशङ्कर शुक्ल	... १५
६८	लङ्का एवं जावा की प्राचीन संस्कृति	...	श्रीयुत 'मलिन्द'	... १९
६९	वनस्थली—एक आदर्श महिला-विद्यापीठ	...	श्रीमती किरणमयी देवी	... ३०७
७०	वान-ली-चांग-चेङ्ग	...	पण्डित उमेशचन्द्र मिश्र	... १८
७१	वेदों में गणेश जी	...	पण्डित लालबिहारी मिश्र	... १३
७२	व्यर्थमान (कविता)	...	श्रीमती शकुन्तला सिरोठिया	... ३१
७३	व्यवधान (कविता)	...	श्रीयुत ब्रह्मानन्द त्रिपाठी	... १९
७४	शान्ति के अग्रदूत	...	श्रीयुत गौरीशङ्कर मिश्र 'द्विजेन्द्र', बी० ए०	... १८३
७५	सम्पादकीय नोट	...		४९, १०६, १६२, २१ [illegible] २७४, ३३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नम्बर	नाम		लेखक	पृष्ठ
७६	—सम्बोधन (कविता)	...	श्रीयुत आरसीप्रसादसिंह	
७७	—ससुराल का घड़ियाल	...	महन्त धनराजपुरी ...	
७८	—सामयिक साहित्य	...		४५, १०४, १५९, २१४, २७१, ३
७९	—सूफ़ी प्रेम-गाथाओं की परम्परा और उसका न्त		श्रीयुत रामशरणसिंह 'दिनेश'	
८०	—सूरदास और 'साहित्यलहरी'	...	श्रीयुत व्रजेश्वर वर्मा, एम० ए० ...	
८१	—सेन फ्रांसिस्को कान्फ्रेंस	...	श्रीयुत आशाराम अनिल, एम० ए० ...	
८२	—स्वप्न (कविता)	...	श्रीयुत गङ्गाप्रसाद 'कौशल' ...	
८३	—स्वर्गीय लाला दूनीचन्द	...	श्रीयुत शिवकुमार विद्यालङ्कार ...	
८४	—हमारे भोजन की समस्या	...	श्रीयुत परिपूर्णानन्द वर्मा ...	
८५	—हिन्दूजाति का वह महान् नेता	...	श्रीयुत सन्त निहालसिंह ...	
८६	—होली	...	कुमारी विपुलादेवी ...	

चित्र-सूची

नम्बर	नाम		पृष्ठ
१	—प्रतीत के २ चिह्न सम्बन्धी ६ चित्र	...	१३७-१४
२	—कांग्रेस किधर को सम्बन्ध १५ चित्र	...	११३-११
३	—चित्र की चोरी सम्बन्धी चित्र	...	१२०-१२
४	—जापान क्यों पराजित हुआ सम्बन्धी १० चित्र	...	२८२-२८
५	—तक्षशिला—तब और आज सम्बन्धी ३ चित्र	...	२३६-२३
६	—परलोकगत रायबहादुर बाबू श्यामसुन्दरदास-सम्बन्धी ३ चित्र	...	२२६-२२
७	—प्रशान्त का युद्ध सम्बन्धी ९ चित्र	...	२४३-२४
८	—प्रशान्त की आखेट भूमि सम्बन्धी ८ चित्र	...	३०-३२, ३५-३
९	—ब्रिटिश राजनैतिक जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्त्तन सम्बन्धी २ चित्र	...	१७९-७
१०	—महाराष्ट्र का काश्मीर सम्बन्धी ९ चित्र	...	६६-६
११	—मेजर एटली	...	१६१
१२	—रवीन्द्रनाथ की हिन्दीसेवा सम्बन्धी ५ चित्र	...	१६९-७
१३	—रायबहादुर डाक्टर श्यामसुन्दरदास सम्बन्धी २ चित्र	...	१४६-१४
१४	—रा कवि मैथिलीशरण गुप्त	...	१६४
१५	—लङ्का एवं जावा की प्राचन संस्कृति सम्बन्धी १५ चित्र	...	३०९-३१
१६	—वनस्थली—एक आदर्श महिला विद्यापीठ सम्बन्धी ३ चित्र	...	१८-२
१७	—वान-ली-चांग-चेङ्ग सम्बन्धी ६ चित्र	...	१३३-१३
१८	—स्वर्गीय लाला दूनीचन्द	...	३
१९	—स्वर्गीय हरिकृष्ण जौहर	...	३
२०	—सेनफ्रान्सिस्को-कान्फ़रेंस सम्बन्धी ६ चित्र	...	७३-७
२१	—हमारे भोजन की समस्या सम्बन्धी ५ चित्र	...	१७५-७
२२	—हिन्दू जाति का वह महान् नेता सम्बन्धी ५ चित्र	...	५८-६

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार
112879

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Checked
1998-2008

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri